'नया हिन्द' के पाठकों से

[illegible] अगस्त हमारी आज़ादी का दिन है. इन दो बरस के [illegible] बरस के [illegible] सामने आये हैं और बहुत से [illegible] ने नया [illegible] दिया है. ऐसे अवसर पर हम चाहते हैं कि [illegible] का वह [illegible] और उनकी वह सलाह जो ३० जनवरी [illegible] को लिखकर दी थी हम अपने पाठ- [illegible] होगा.

[illegible] भी [illegible] सलाह पर एक बड़ी अ[illegible] है, हो सकता है कि वह व्याख्य[illegible] से भी [illegible] की हो. अगले नम्बर में हम उसे पू[illegible] जुलाई और अगस्त का अंक एक मिला जुला अंक है

[illegible] پاٹھکوں سے

۱۵ اگست ہماری آزادی کا دن ہے۔ ان دو برس کے [illegible] کے سامنے آئے ہیں اور [illegible] ہے۔ ایسے اوسر پر ہم [illegible] اور ان کی وہ [illegible] کو لکھکر [illegible]

ایک بڑی اچھی اور قیمتی ویاکھیا بھی لکھی ہے۔ ہو سکتا ہے وہ ویاکھیا ڈیڑھ سو پنّے کی یا اس سے بھی زیادہ کی ہو۔ اگلے نمبر میں ہم اسے پورا دینگے۔ اس لئے جولائی اور اگست کا انک ایک ملا ہوا انک ہوگا جسے ہم ۱۵ اگست تک پاٹھکوں کی سیوا میں پہنچا دینے کی کوشش کرینگے۔

— ایڈیٹر

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ६ जून'४९ नम्बर ६

جلد ۶ ۱۹۴۹ء نمبر ۶

...ात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
...या हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

ذات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
نیا ہند پہنچے گا گھر گھر لیے پریم کی جھولی

मेरी खुशियाँ

(भाई मसऊद हुसैन)

भाग गई जो मेरी खुशियाँ
बादल के सीने में झमकीं
तारों की आँखों से चमकीं
चाँद के माथे पर वह दमकीं
भाग गई जो मेरी खुशियाँ ... गयाँ है

میری خوشیاں

(بھائی مسعود حسین)

بھاگ گئیں جو میری خوشیاں
بادل کے سینے میں جھمکیں
تاروں کی آنکھوں سے چمکیں
چاند کے ماتھے پر وہ دمکیں
بھاگ گئیں جو میری خوشیاں

त्याग

कलियों के होंठों पर झलकीं,
या उनकी आँखों से छलकीं
पलकों पर नाचीं फिर ढलकीं,
भाग गईं जो मेरी खुशियाँ
चंचल लहरों में वह लहकीं
फूलों के गालों से महकीं
बन नन्हीं चिड़ियाँ वह चहकीं
भाग गईं जो मेरी खुशियाँ

त्याग

(भाई अमजद हैदराबादी)

हर चीज़ का खोना भी बड़ी दौलत है
बेफिकरी से सोना भी बड़ी दौलत है
इफ़लास ने सख्त मौत आसाँ करदी
दौलत का न होना भी बड़ी दौलत है

इफ़लास=ग़रीबी

تیاگ

کلیوں کے ہونٹوں پر جھلکیں،
یا ان کی آنکھوں سے چھلکیں
پلکوں پر ناچیں پھر ڈھلکیں،
بھاگ گئیں جو میری خوشیاں
چنچل لہروں میں وہ لہکیں
پھولوں کے گالوں سے مہکیں
بن ننھی چڑیاں وہ چہکیں
بھاگ گئیں جو میری خوشیاں

تیاگ

(بھائی امجد حیدرآبادی)

ہر چیز کا کھونا بھی بڑی دولت ہے
بے فکری سے سونا بھی بڑی دولت ہے
افلاس نے سخت موت آساں کر دی
دولت کا نہ ہونا بھی بڑی دولت ہے

افلاس = غریبی

इन्क़लाब क्या होता है ?

(भाई अब्दुलहलीम अन्सारी)

इन्क़लाब, तक़ाज़ा होता है वक़्त का, जो अपने वक़्त पर पूरा हो कर रहता है यानी क्रान्ति वक़्त की शक्ति होती है.

इन्क़लाब, नारा होता है दलित (मज़लूम) का, जो जब बुलन्द होता है, बादल बनकर ऊपर उठता है —और जब गिरता है, बिजली बनकर नीचे गिरता है, चीख कर और चमक कर, गरज कर और नारा लगाकर,—जिससे ज़ालिमों के दिल दहल जाते हैं और साम्राजियों के महल गिर जाते हैं.

बिजली की कड़क और कोंध, इन्क़लाब का नारा है—बादल की गरज, इन्क़लाब का गुस्सा और ग़ज़ब है.

चाँद और सूरज की किरन में, सुबह और शाम की पवन में इन्क़लाब का प्रचार है—और फ़ितरत (प्रकृति) ! इन्क़लाब की पालनहार है.

इन्क़लाब ! आकश के पर्दों को चाक करके बाहर आता है. लमहे लमहे अपना काम और करतब दिखाता है. समय-समय क्रिया बदलता है. समाँ बदलता है, दुनिया का हाल और रंग बदलता है. ज़माने का रूप और रंग बदलता है.

मौसम की तब्दीलियाँ इन्क़लाब की खुली निशानियाँ हैं. दिन की रोशनियाँ और रात की अंधेरियाँ इन्क़लाब …

…ہے

… (انصاری)

…ضا ہوتا ہے وقت کا، جو اپنے وقت پر پیدا ہو کر
…نی وقت کی سکتی ہوتی ہے۔

… نعرہ ہوتا ہے دلیت (مظلوم) کا، جو جب بلند
…، بادل بن کر اوپر اٹھتا ہے۔ اور جب گرتا ہے، بجلی بن کر
…تا ہے، چیخ کر اور چمک کر، گرج کر اور نعرہ لگا کر۔ جس سے
…وں کے دل دہل جاتے ہیں اور سامراجیوں کے محل گر جاتے ہیں۔

بجلی کی کڑک اور کوندھ، انقلاب کا نعرہ ہے۔ بادل کی گرج،
…لاب کا غصہ اور غضب ہے۔

چاند اور سورج کی کرنوں میں، صبح اور شام کی پون میں انقلاب
کا پرچار ہے۔ اور فطرت (پرکرتی)! انقلاب کی پالن ہار
ہے۔

انقلاب! آکاش کے پردوں کو چاک کر کے باہر آتا ہے۔
لمحے لمحے اپنا کام اور کرتب دکھاتا ہے۔ سمے سمے … بدلتا ہے
سماں بدلتا ہے، دنیا کا حال اور رنگ بدلتا ہے۔ زمانے
کا روپ اور ڈھنگ بدلتا ہے۔

موسم کی تبدیلیاں انقلاب کی کھلی نشانیاں ہیں۔ دن کی …
اور رات کی اندھیریاں انقلاب کی کارگزاریاں ہیں

—तख़्त और ताज की उलट पुलट और हुकूमतों की कायापलट में इन्क़लाब की मुस्कराहट देखो—इन बिगड़ी बिगड़ी सूरतों से इन्क़लाब का पैग़ाम लो. इन मिटी-मिटी मूरतों से उनकी बीती सुनो.

ख़ून और संग्राम में इन्क़लाब आबाद है. प्रेम और मोहब्बत में इन्क़लाब की दास्तान है. और यह भी इन्क़लाब का एक राज़ है कि शान्ति में क्रान्ति है और क्रान्ति में ज़िन्दगी है.

इन्क़लाब, एक असर होता है जो वातावरण पर छा कर रहता है.

इन्क़लाब, एक आवाज़ होती है, जो तबदीली को दावत देती है और जो तबदीली लाकर रहती है .

इन्क़लाब, संसार का मेमार होता है और सृष्टि का सुधारक.

इन्क़लाब, प्रकृति का संदेश होता है और संदेश का प्रचारक.

इन्क़लाब, भगवान का बनाया विधान होता है. ख़ुदा का मंशा और फ़रमान होता है, इसलिये हर कस और नाकस हर छोटे बड़े को उसे मानना पड़ता है चाहे दिल के साथ या बे दिली के साथ.

इन्क़लाब का अपना अलग रंग होता है और अपना उसका प्रोग्राम !

रंग ! इन्क़लाबी रंग

प्रोग्राम ! क़ामीरी प्रोग्राम

इन्क़लाब जहाँ जाता है अपना झंडा लहराता है. जहां जाता है अपना मसावा नारा लगाता है. वह हर जगह और हर स्थान अपना रंग जमा कर रहता है. वह हर देश और हर मुक़ाम अपना

—تخت اور تاج کی اُلٹ پلٹ اور حکومتوں کی کایا پلٹ میں انقلاب کی مسکراہٹ دیکھو— ان بگڑی بگڑی صورتوں سے انقلاب کا پیغام لو. ان مٹتی مٹتی مورتوں سے ان کی بیتی سنو.

خون اور سنگرام میں انقلاب آباد ہے. پریم اور محبت میں انقلاب کی داستان ہے. اور یہ بھی انقلاب کا ایک راز ہے کہ شانتی میں کرانتی ہے اور کرانتی میں زندگی ہے.

انقلاب، ایک اثر ہوتا ہے جو واتاورن پر چھا کر رہتا ہے.

انقلاب، ایک آواز ہوتی ہے، جو تبدیلی کو دعوت دیتی ہے اور جو تبدیلی لا کر رہتی ہے.

انقلاب، سنسار کا معمار ہوتا ہے اور سرشٹی کا سدھارک.

انقلاب، پرکرتی کا سندیش ہوتا ہے اور سندیش کا پرچارک.

انقلاب، بھگوان کا بنایا ودھان ہوتا ہے. خدا کا منشا اور فرمان ہوتا ہے، اسی لئے ہر کس اور ناکس ہر چھوٹے بڑے کو اُسے ماننا پڑتا ہے چاہے دل کے ساتھ یا بے دلی کے ساتھ.

انقلاب کا اپنا الگ رنگ ہوتا ہے اور اپنا اس کا [illegible]

[illegible]

انقلابی رنگ

[illegible] پروگرام

[illegible] جاتا ہے اپنا جھنڈا لہراتا ہے. جہاں جاتا ہے اپنا [illegible] لگاتا ہے. وہ ہر جگہ اور ہر استھان اپنا [illegible] جما کر رہتا ہے. وہ ہر دیش اور ہر مقام، اپنا

पैग़ाम चलाकर रहता है और अपना पैग़ाम फैला कर रहता है.

इन्क़लाब ! बेख़ौफ़ और निडर होता है. वह अपने मिशन का ख़ुद ... होता है और जज़्बाती फ़ौज का कमान्डर !

इन्क़लाब ! वक़्त की पुकार होता है. और पुकार उसकी ललकार होती है.

इन्क़लाब ! इन्तक़ाम की तलवार होती है. लाल जिसकी धार होती है—यह इन्क़लाब ख़ूनी इन्क़लाब कहलाता है.

इन्क़लाब ! जनता का सैलाब होता है. जज़्बात का तूफ़ान होता है, मसावात (बराबरी) का अलमबरदार होता है. और लाल इसका निशान होता है.

इन्क़लाब का जन्म ! ज़ालिम साम्राज की ठोकर से ग़रीब के शरीर से जो चिन्गारी निकलती है उसी चिन्गारी से क्रान्ति की लौ भड़कती है यानी इन्क़लाब जन्म लेता है. और मज़लूम की ठंडी आह से इन्क़लाब रूप भरता है—पस मालूम हुआ, इन्क़लाब गर्म आंच से भी जन्म लेता है और ठंडी सांस से भी !

किसी भी ज़ालिम और फूट डालने वाली हुकूमत की सख़्ती और मक्कारी से क्रान्ति को शक्ति मिलती है. ज़ुल्म की ज़्यादती और ना इन्साफ़ी से इन्क़लाब के मिज़ाज को गर्मी पहुँचती है. जिससे उसके दिल में आग लगती है और [illegible] है. इसी खौलते ख़ून से उसमें ज़िन्दगी [illegible] है और उसकी रग-रग में नई जान पड़ती [illegible]

پیغام چلا کر رہتا ہے اور اپنا پیغام پھیلا کر رہتا ہے.

انقلاب! بے خوف اور نڈر ہوتا ہے. وہ اپنے مشن کا خود ... ہوتا ہے اور جذباتی فوج کا کمانڈر!

انقلاب! وقت کی پکار ہوتی ہے. اور پکار اسکی للکار ہوتی ہے.

انقلاب! انتقام کی تلوار ہوتی ہے. لال جس کی دھار ہوتی ہے — یہ انقلاب خونی انقلاب کہلاتا ہے.

انقلاب! جنتا کا سیلاب ہوتا ہے. جذبات کا طوفان ہوتا ہے. مساوات (برابری) کا علم بردار ہوتا ہے. اور لال اس کا نشان ہوتا ہے.

انقلاب کا جنم! ظالم سامراج کی ٹھوکر سے غریب کے شریر سے جو چنگاری نکلتی ہے اسی چنگاری سے کرانتی کی لو بھڑکتی ہے یعنی انقلاب جنم لیتا ہے. اور مظلوم کی ٹھنڈی آہ سے انقلاب روپ بھرتا ہے — پس معلوم ہوا، انقلاب گرم آنچ سے بھی جنم لیتا ہے اور ٹھنڈی سانس سے بھی!

کسی بھی ظالم اور پھوٹ ڈالنے والی حکومت کی سختی اور مکاری سے کرانتی کو شکتی ملتی ہے. ظلم کی زیادتی اور نا انصافی سے انقلاب کے مزاج کو گرمی پہونچتی ہے. جس سے اس کے دل میں آگ لگتی ہے اور خون اس کا کھولتا ہے. اس کھولتے خون سے اس میں زندگی کی نئی لہر دوڑتی ہے اور اس کی رگ رگ میں نئی جان پڑتی ہے. اسی جان دار تحریک یا آندولن کو انقلاب کی جان کہتے ہیں.

जज़्बात के टकराव से जो भाव [illegible] है वही इन्क़लाब को उत्पन्न करने वाला होता है.

राय के इख़्तलाफ़ से जो जज़्बा उभरता है वही इन्क़लाब का दम भरता है.

इन्क़लाब के नाम से जो शक्ति काम करती है वही इन्क़लाब की तहरीक बनती है. इन्क़लाब की तहरीक ग़रीबों की ईद होती है. सरफ़रोशों का मेला होता है. जिसमें ग़रीबों, कमज़ोरों, दुखियारों और मजबूरों के नाम पर लोगों को दावत दी जाती है घर घर नेवता फिरता है, कुटुम्ब कुटुम्ब इन्क़लाब का ढोल पिटता है. आख़िर यह कि कमज़ोरों की ताक़त और बहावट इन्क़लाब को अपने साथ लेकर आगे चलती है. जिससे अत्याचारों की महफ़िल में हलचल मचती है और उनके ऐश में गड़बड़ पड़ती है.

इन्क़लाब का सम्बन्ध अधिकतर, ग़रीबों और मज़लूमों से होता है. दुखियारों और सितम के मारों से होता है. ग़रीब चूँकि अल्ला से क़रीब होते हैं इसलिये जब इन्क़लाब आता है. आसमान से उसको मदद मिलती है भगवान की उस पर दया होती है. समाज से उसको ताक़त पहुँचती है.

इन्क़लाब एक प्रबन्ध और निज़ाम का नाम है जो पुराने ढाँचों को बदल कर नई तामीर खड़ी करता है,

इन्क़लाब, तामीर और सुधार का कारिन्दा है जो भद्दे-भद्दे नक़्श मिटा कर सुन्दर-सुन्दर चित्र उभारता है, यानी यह कि इन्क़लाब का काम निर्माण और सुधार है—इन्क़लाब चूँकि ज़ात का मेमार (राज) होता है इसलिये क़ानून और सरकार उसका औज़ार होता है.

انقلاب کیا ہوتا ہے؟

جذبات کے ٹکراؤ سے جو بہاؤ پیدا ہوتا ہے وہی انقلاب کو پیدا کرنے والا ہوتا ہے۔

رائے کے اختلاف سے جو جذبہ ابھرتا ہے وہی انقلاب کا دم بھرتا ہے۔

انقلاب کے نام سے جو شکتی کام کرتی ہے وہی انقلاب کی تحریک بنتی ہے۔ انقلاب کی تحریک غریبوں کی عید ہوتی ہے۔ سرفروشوں کا میلا ہوتا ہے۔ جس میں غریبوں، کمزوروں، دکھیاروں اور مجبوروں کے نام پر لوگوں کو دعوت دی جاتی ہے گھر گھر نیوتا پھرتا ہے، کنبے کنبے انقلاب کا ڈھول پٹتا ہے۔ آخر یہ کہ کمزوروں کی طاقت اور بہاوٹ انقلاب کو اپنے ساتھ لے کر آگے چلتی ہے۔ جس سے اتیاچاروں کی محفل میں ہلچل مچتی ہے اور ان کے عیش میں گڑبڑ پڑتی ہے۔

انقلاب کا سمبندھ ادھک تر، غریبوں اور مظلوموں سے ہوتا ہے۔ دکھیاروں اور ستم کے ماروں سے ہوتا ہے۔ غریب چوں کہ اللہ سے قریب ہوتے ہیں اس لئے جب انقلاب آتا ہے۔ آسمان سے اس کو مدد ملتی ہے بھگوان کی اس پر دیا ہوتی ہے۔ سماج سے اس کو طاقت پہنچتی ہے۔

انقلاب ایک پربندھ اور نظام کا نام ہے جو پرانے ڈھانچے کو بدل کر نئی تعمیر کھڑی کرتا ہے۔

انقلاب، تعمیر اور سدھار کا کارندہ ہے جو بھدے بھدے نقش مٹا کر سندر سندر چتر ابھارتا ہے، یعنی یہ کہ انقلاب کا کام نرمان اور سدھار ہے۔ انقلاب چوں کہ ذات کا معمار (راج) ہوتا ہے اس لئے قانون اور سرکار اس کا اوزار ہوتا ہے۔

इन्क़लाब ! हुस्न परवर और जिद्दत पसन्द (नवीनता पसन्द) है. इन्क़लाब सुन्दरता का मतवाला और शबाब (जवानी) का प्यासा है. इसलिये वह हर चीज़ में शबाब ही शबाब चाहता है, और जवानी ही जवानी,—वह दुनिया को इन्क़लाब का पैग़ाम देकर बूढ़ी दुनिया में जवानी की नई रूह फूँकना चाहता है और उसके नग नग में शबाब की स्पिरिट दौड़ा देना चाहता है. यही उसका काम है और इसी लिये वह हर वक़्त जवान है. वह चूँकि जवान है इसलिये जवान उम्मीदों और जवान उमंगों का ज़ख़ीरा वह अपने साथ रखता है—वह समाज को शबाब का जाम पिलाकर और मुस्तक़बिल(भविष्य)की शान [illegible] कर देता है, इन्क़लाब के मस्ताने और मतवाले इसी नशे में मस्त होकर और झूम-झूम कर आगे बढ़े चले जाते हैं. बड़े-बड़े तूफ़ानों से वह टकराते हैं. बड़े-बड़े शैतानों से वह टकराते हैं. आगों में वह कूद जाते हैं. पानी में वह डूब जाते हैं. और फिर उभर आते हैं. पहाड़ों को वह तराशते हैं. पानी को वह काटते हैं. फ़िज़ा को वह नापते हैं. सितारों को वह तोड़ते हैं. अंगारों को वह झेलते हैं—ग़रज़ बड़े-बड़े काम और जतन इसी धुन और लगन में वह कर जाते हैं. पर हिम्मत नहीं हारते.

इन्क़लाब का मिज़ाज बड़ा गर्म और टेढ़ा होता है और ख़ुद वह बड़ा जोशीला होता है जैसे आग का बगूला !

इन्क़लाब बड़ा तेज़ और ज़हरीला होता है जैसे [illegible] हलाकत ख़ेज़ (हत्यारा) होता है जैसे [illegible]

इन्क़लाब बड़ा [illegible] और [illegible]

انقلاب حسن پرور اور جدت پسند (نوینتا پسند) ہے، انقلاب سندرتا کا متوالا اور شباب (جوانی) کا پیاسا ہے۔ اس لئے وہ ہر چیز میں شباب ہی شباب چاہتا ہے، اور جوانی ہی جوانی ـــ وہ دنیا کو انقلاب کا پیغام دے کر بوڑھی دنیا میں جوانی کی نئی روح پھونکنا چاہتا ہے اور اس کے رگ رگ میں شباب کی اسپرٹ دوڑا دینا چاہتا ہے۔ یہی اس کا کام ہے اور اسی لئے وہ ہر وقت جوان ہے۔ وہ چونکہ جوان ہے اس لئے جوان امیدوں اور جوان امنگوں کا ذخیرہ وہ اپنے ساتھ رکھتا ہے۔ وہ سماج کو شباب کا جام پلا کر اور مستقبل (بھوشیہ) کی شان بتا کر مست کر دیتا ہے، انقلاب کے مستانے اور متوالے اسی نشے میں مست ہو کر اور جھوم جھوم کر آگے بڑھتے چلے جاتے ہیں۔ بڑے بڑے طوفانوں سے وہ ٹکراتے ہیں۔ بڑے بڑے شیطانوں سے وہ ٹکراتے ہیں۔ آگوں میں وہ کود جاتے ہیں۔ پانی میں وہ ڈوب جاتے ہیں۔ اور پھر ابھر آتے ہیں۔ پہاڑوں کو وہ تراشتے ہیں۔ پانی کو وہ کاٹتے ہیں۔ فضا کو وہ ناپتے ہیں۔ ستاروں کو وہ توڑتے ہیں۔ انگاروں کو وہ جھیلتے ہیں ـــ غرض بڑے بڑے کام اور جتن اسی دھن اور لگن میں کر جاتے ہیں۔ پر ہمت نہیں ہارتے۔

انقلاب کا مزاج بڑا گرم اور ٹھنڈا ہوتا ہے اور خود وہ بڑا جوشیلا ہوتا ہے جیسے آگ کا بگولہ!

انقلاب بڑا تیز اور زہریلا ہوتا ہے جیسے بجلی ـــ بڑا ہلاکت خیز (ہتیارا) ہوتا ہے جیسے ایٹم بم!

انقلاب بڑا [illegible] اور خوفناک ہوتا ہے جیسے بادل کی گرج، بجلی کی کڑک۔

इन्क़लाब बड़ा ताक़तवर और बे परवाह होता है जैसे तूफ़ान और सैलाब (बाढ़)—इसी लिये उसकी रोकथाम मुशिकिल काम है.

इन्क़लाब, एक तमाशा होता है जो दम के दम में क्या क्या रंग दिखाता है ?

इन्क़लाब, एक तिलिस्म (जादू) होता है जो आनन फ़ानन दुनिया का नक़्शा बदल देता है. राज बदल देता है. बिसात बदल देता है. बिसात के मोहरे चेहरे बदल देता है. शाह और वज़ीर बदल देता है गुलाम और पैदल बदल देता है.

इन्क़लाब का इरादा मज़बूत होता है जैसे फ़ौलाद और हौसला उसका बुलन्द होता है जैसे पर्बत !

इन्क़लाब बड़ा मज़बूत, जीदार और बाहिम्मत होता है. वह अपनी हिम्मत के बूते पर पर्बत से टकराता है और अपने शबाब के घमंड पर आकाश से ऊंची बातें लगाता है. वह कभी कभी हमारी निगाह से ग़ायब भी हो जाता है लेकिन फिर आ जाता है. मालूम हुआ वह जनम पे जनम लेता है और ज़िन्दगी पे ज़िन्दगी पाता है—ठीक है ! इन्क़लाब नाम है शबाब का—और आवागमन दूसरा नाम है इन्क़लाब का,

इन्क़लाब दो क़िस्म का होता है. एक वह जिसका पालन क़ुदरत करती है यानी जिसका प्रबन्ध प्रकृति अपने ज़िम्मे रखती है. उस पर ज़्यादा बातचीत बेकार, क्योंकि वह अटल होता है और क़ुदरत के क़ानून के आधीन.

انقلاب بڑا طاقتور اور بے پرواہ ہوتا ہے جیسے طوفان اور سیلاب (باڑھ)— اسی لئے اس کی روک تھام مشکل کام ہے۔

انقلاب، ایک تماشہ ہوتا ہے جو دم کے دم میں کیا کیا رنگ دکھاتا ہے؟

انقلاب، ایک طلسم (جادو) ہوتا ہے جو آناً فاناً دنیا کا نقشہ بدل دیتا ہے۔ راج بدل دیتا ہے۔ بساط بدل دیتا ہے۔ بساط کے مہرے چہرے بدل دیتا ہے۔ شاہ اور وزیر بدل دیتا ہے غلام اور پیدل بدل دیتا ہے۔

انقلاب کا ارادہ مضبوط ہوتا ہے جیسے فولاد اور حوصلہ اس کا بلند ہوتا ہے جیسے پربت!

انقلاب بڑا مضبوط، جی دار اور باہمت ہوتا ہے۔ وہ اپنی ہمت کے بوتے پر پربت سے ٹکراتا ہے اور اپنے شباب کے گھمنڈ پر آکاش سے اونچی باتیں لگاتا ہے۔ وہ کبھی کبھی ہماری نگاہ سے غائب بھی ہو جاتا ہے لیکن پھر آ جاتا ہے۔ معلوم ہوا وہ جنم پہ جنم لیتا ہے اور زندگی پہ زندگی پاتا ہے— ٹھیک ہے! انقلاب نام ہے شباب کا— اور آواگون دوسرا نام ہے انقلاب کا،

انقلاب دو قسم کا ہوتا ہے۔ ایک وہ جس کا پالن قدرت کرتی ہے یعنی جس کا پربندھ پرکرتی اپنے ذمے رکھتی ہے۔ اس پر زیادہ بات چیت بے کار، کیونکہ وہ اٹل ہوتا ہے اور قدرت کے قانون کے آدھین۔

दूसरा इन्क़लाब वह होता है जिसको कोई लीडर या डिक्टेटर लेकर चलता है, जनता की भेंट देकर और बड़ी से बड़ी कुर्बानी देकर—या अपना मक़सद हासिल करने के लिये वह नया इन्क़लाब लाना चाहता है—ख़ुद ग़रज़ लीडर, इन्क़लाब के झंडे तले जिस क्रान्ति का शोर मचाते हैं और जिस इन्क़लाब के नारे लगाते हैं उसमें अक्सर लोग धोका खा जाते हैं. वजह यह कि जिस तरह सियासत अपना विश्वास जनता के दिल से खो बैठी है इसी तरह इन्क़लाब भी अपनी बात खोटी कर चुका है.

अभी-अभी हमने बहुत से इन्क़लाब देखे और इन्क़लाब के बहुत से विकास देखे, राजनैतिक भी और सामाजिक भी,——

नतीजा मालूम !

सही और सच्चे इन्क़लाब का काम है घर-घर शांती लाना, घर घर रोशनी पहुँचाना—आराम पहुँचाना—आनन्द पहुँचाना. जीवन जीवन ज़िन्दगी बख़्शना और जीवन में अमृत की धारें दौड़ाना—

समाज के दुख दर्द का इलाज करना और अवाम के रहन-सहन का ठिकाना करना कपड़े लत्ते का इन्तज़ाम करना. रोटी पानी का प्रबन्ध करना—ज़बान की पासदारी रखना और अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करना. दिलों की कदूरत (द्वेष) दूर करना, दिमाग़ों का दलिद्दर निकाल फेंकना प्रेमका प्यास बढ़ाना. जीवन में मिठास पैदा करना. हमदर्दी का भाव उभारना, सदाचार में सुन्दरता लाना. अमीर ग़रीब का फ़र्क़ मिटाना, इन्सानियत की सभा सजाना और उस सभा में सब को बराबर बराबर बिठाना यह तमाम चीज़ें इन्क़लाब के लवाज़मात (साज़ सामान)

([illegible])

دوسرا انقلاب وہ ہوتا ہے جس کو کوئی لیڈر یا ڈکٹیٹر لے کر چلتا ہے، جنتا کی بھینٹ دے کر اور بڑی سے بڑی قربانی دے کر — یا اپنا مقصد حاصل کرنے کے لئے وہ نیا انقلاب لانا چاہتا ہے — خود غرض لیڈر، انقلاب کے جھنڈے تلے جس کرانتی کا شور مچاتے ہیں اور جس انقلاب کے نعرے لگاتے ہیں اس میں اکثر لوگ دھوکا کھا جاتے ہیں۔ وجہ یہ کہ جس طرح سیاست اپنا وشواس جنتا کے دل سے کھو بیٹھی ہے اسی طرح انقلاب بھی اپنی بات کھوٹی کر چکا ہے۔

ابھی ابھی ہم نے بہت سے انقلاب دیکھے اور انقلاب کے بہت سے وکاس دیکھے، راج نیتک بھی اور سماجک بھی،——

نتیجہ معلوم!

صحیح اور سچے انقلاب کا کام ہے گھر گھر شانتی لانا، گھر گھر روشنی پہونچانا — آرام پہونچانا — آنند پہونچانا۔ جیون جیون زندگی بخشنا اور جیون میں امرت کی دھاریں دوڑانا —

سماج کے دکھ درد کا علاج کرنا اور عوام کے رہن سہن کا ٹھکانا کرنا کپڑے لتے کا انتظام کرنا۔ روٹی پانی کا پربندھ کرنا — زبان کی پاسداری رکھنا اور اپنی ذمے داری پوری کرنا دلوں کی کدورت (دویش) دور کرنا، دماغوں کا دلدر نکال پھینکنا پریم کی پیاس بڑھانا۔ جیون میں مٹھاس پیدا کرنا۔ ہمدردی کا بھاؤ ابھارنا، سداچار میں سندرتا لانا۔ امیر غریب کا فرق مٹانا۔ انسانیت کی سبھا سجانا اور اس سبھا میں سب کو برابر برابر بٹھانا یہ تمام چیزیں انقلاب کے لوازمات (ساز سامان)

में आती हैं. अगर इन्क़लाब के नाम के साथ यह सब चीज़ें इन्साफ़ और मसावात के नाम पर पूरी होती हैं तो वह इन्क़लाब कामयाब इन्क़लाब है और ऐसा ही इन्कलाब, इन्क़लाब की सही तारीफ़ में आता है.

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और इनका हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंग्रेजी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

میں آتی ہیں۔ اگر انقلاب کے نام کے ساتھ یہ سب چیزیں انصاف اور مساوات کے نام پر پوری ہوتی ہیں تو وہ انقلاب کامیاب انقلاب ہے اور ایسا ہی انقلاب، انقلاب کی صحیح تعریف میں آتا ہے۔

مسلم دیش بھکت

(شری رتن لال بنسل)

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال اور ان کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی ان کے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی۔

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے ۱۸۵۷ء سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انھوں نے ہندستان اور دیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے۔ قیمت ایک روپیہ ۱۲ آنہ

— منیجر، 'نیا ہند'،

۴۸ باقی کا باغ الہ آباد

शेरशाह

(सेठ गोविन्द दास)

पात्र—स्थान-समय

मुख्य पात्र—

फ़रीद—बाद में शेरख़ाँ, बाद में शेरशाह

निज़ाम—फ़रीद का छोटा भाई

हसन—फ़रीद का पिता

ब्रह्मादित्य गौड़—फ़रीद का मित्र

रहमान—निज़ाम का नौकर

ईसा ख़ाँ सरवानी—एक पठान अमीर

लाडबानू—बाद में लाड मलिका, चुनार के सुबेदार ताजा ख़ाँ की बेगम, बाद में शेरशाह की बेगम

नसीम—लाड मलिका की मैना

हुमायूं—मुग़ल सम्राट

स्थान

सहसराम—बिहार प्रान्त में एक क़सबा

जौन पुर

आगरा

बिहार शरीफ़—बिहार प्रान्त की राजधानी

पात्र = नाटक मे काम करने वाले. स्थान = जगह. मुख्य पात्र = खास काम करने वाले.

شیر شاہ

(سیٹھ گوبند داس)

پاتر۔ استھان۔ سمے

مکھیہ پاتر—

فرید — بعد میں شیر خاں، بعد میں شیر شاہ

نظام — فرید کا چھوٹا بھائی

حسن — فرید کا پتا

برہمادیہ گوڑ — فرید کا متر

رحمان — نظام کا نوکر

عیسیٰ خاں سکھانی — ایک پٹھان امیر

لاڈ بانو — بعد میں لاڈ ملکہ، چنار کے صوبے دار تاج خاں کی بیگم، بعد میں شیر شاہ کی بیگم

نسیم — لاڈ ملکہ کی مینا

ہمایوں — مغل سمراٹ

استھان

سہسرام — بہار پرانت میں ایک قصبہ

جون پور

آگرہ

بہار شریف — بہار پرانت کی راجدھانی

پاتر = ناٹک میں کام کرنے والے۔ استھان = جگہ۔ مکھیہ پاتر = خاص کام کرنے والے۔

चुनार

रोहतास गढ़

शाहया }
चौसा } बिहार प्रान्त के दक्षिण में दो गाँव

गौड़—बंगाल की राजधानी

क़न्नौज

दिल्ली

समय

सन् १५११ से १५४१ ईस्वी तक.

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—सहसराम में हसन के मकान में निज़ाम का कमरा

समय—प्रात: काल

[एक छोटा सा कमरा है. कमरे के तीन ओर की दीवालें दिखती हैं, जो सफ़ेद पुती हुई हैं. दीवालों में कुछ छोटे छोटे दरवाज़े हैं, जिनकी चौखटें और किवाड़ भद्दे से हैं. छत पर कपड़े की चाँदनी है और उससे कुछ काँच की हाँडियाँ लटक रही हैं. ज़मीन पर क़ालीन है, जिसका रंग बदरंग हो गया है. क़ालीन पर सफ़ेद चादर से ढकी हुई गद्दी है और गद्दी पर श्वेत खोलियों से आच्छादित कुछ मसनद.

अंक=ऐक्ट. दृश्य=मंज़र, सीन. प्रात:काल=सुबह का वक़्त. श्वेत=सफ़ेद. आच्छादित=ढाँकी हुई.

چنار

رہتاس گڈھ

شاہ یا }
چوسا } بہار پرانت کے دکشن میں دو گاؤں

گوڑ۔ بنگال کی راجدھانی

قنوج

دلی

سمے

[illegible] سے ۱۵۴۱ عیسوی تک۔

پہلا انک

پہلا درشیہ

استھان۔ سہسرام میں حسن کے مکان میں نظام کا کمرا

سمے۔ پراتہ کال

[ایک چھوٹا سا کمرا ہے۔ کمرے کے تین اور کی دیواریں دکھتی ہیں، جو سفید پتی ہوئی ہیں۔ دیواروں میں کچھ چھوٹے چھوٹے دروازے ہیں، جن کی چوکھٹیں اور کواڑ بھدے سے ہیں۔ چھت پر کپڑے کی چاندنی ہے اور اس سے کچھ کانچ کی ہانڈیاں لٹک رہی ہیں۔ زمین پر قالین ہے، جس کا رنگ بدرنگ ہو گیا ہے۔ قالین پر سفید چادر سے ڈھکی ہوئی گدی ہے اور گدی پر شویت کھولیوں سے آچھادت کچھ مسند۔

انک = ایکٹ۔ درشیہ = منظر، سین۔ پراتہ کال = صبح کا وقت۔ شویت = سفید۔ آچھادت = ڈھانکی ہوئی۔

[दीवारों पर फ़रीद की कई तस्वीरें लगी हुई हैं; वह सब हाथ से बनाई गई हैं और सब में उसकी अवस्था लगभग सोलह वर्ष की होते हुए भी तस्वीरें अलग अलग ढंग की हैं. कुछ चित्र प्राकृतिक दृश्यों के भी लगे हैं. निज़ाम बैठा हुआ फ़रीद का ही एक चित्र और बना रहा है. निज़ाम के निकट कई प्याले रक्खे हैं, जिनमें भिन्न भिन्न प्रकार के रंग घुले हुए हैं और क़लमें पड़ी हुई हैं. निज़ाम की अवस्था सोलह वर्ष के लगभग है. वह गोरे रंग का ऊँचा, पूरा, किन्तु कुछ दुबला, बहुत ही सुन्दर लड़का है; वय से वह कुछ ज़्यादा का जान पड़ता है. सिर पर पट्टे हैं और ऊपर के ओठ पर रेख निकल रही है. वह सफ़ेद कुरता और पायजामा पहने हुए है. चित्र बनाते हुए वह गा भी रहा है.]

गीत

संसार में कैसे जीना है
बस प्रेम का प्याला पीना है
जब प्रेम नहीं तो कुछ भी नहीं
यह नियम नहीं तो कुछ भी नहीं
संसार में कैसे जीना है

मैं प्रेम सिखाऊँगा सब को
इस राह पे लाऊँगा सब को
संसार में कैसे जीना है

प्राकृतिक = क़ुदरती.

[دیواروں پر فرید کی کئی تصویریں لگی ہوئی ہیں! یہ سب ہاتھ سے بنائی گئی ہیں اور سب میں اس کی اوستھا لگ بھگ سولہ ورش کی ہوتے ہوئے بھی تصویریں الگ الگ ڈھنگ کی ہیں۔ کچھ چتر پراکرتک درشیوں کے بھی لگے ہیں۔ نظام بیٹھا ہوا فرید کا ہی ایک چتر اور بنا رہا ہے۔ نظام کے نکٹ کئی پیالے رکھے ہیں، جنہیں بھن بھن پرکار کے رنگ گھلے ہوئے ہیں اور قلمیں پڑی ہوئی ہیں۔ نظام کی اوستھا سولہ ورش کے لگ بھگ ہے۔ وہ گورے رنگ کا اونچا، پورا، کنتو کچھ دبلا، بہت ہی سندر لڑکا ہے۔ عمر سے وہ کچھ زیادہ کا جان پڑتا ہے۔ سر پہ پٹے ہیں اور اوپر کے اوٹھ پہ ریکھ نکل رہی ہے۔ وہ سفید کرتا اور پائجامہ پہنے ہوئے ہے۔ چتر بناتے ہوئے وہ گا بھی رہا ہے۔]

گیت

سنسار میں کیسے جینا ہے
بس پریم کا پیالا پینا ہے
جب پریم نہیں تو کچھ بھی نہیں
یہ نیم نہیں تو کچھ بھی نہیں
سنسار میں کیسے جینا ہے

میں پریم سکھاؤں گا سب کو
اس راہ پہ لاؤں گا سب کو
سنسار میں کیسے جینا ہے

پراکرتک = قدرتی.

मैं रंग जमाये जाता हूँ
तस्वीर बनाए जाता हूँ
संसार मे कैसे जीना है

[हसन का प्रवेश. हसन की उम्र क़रीब पचपन साल की है. वह गेहुँए रंग का, ऊँचा-पूरा, मोटा-ताज़ा आदमी है. सर पर पट्टे हैं, चेहरे पर बड़ी बड़ी मूँछें और लम्बी दाढ़ी. बाल यत्र तत्र श्वेत हो चले हैं. वह सफ़ेद रंग का अँगरखा और पायजामा पहने है. सर पर मुसलमानी ढंग की पगड़ी लगाए है हसन को देखकर निज़ाम गाना और चित्र बनाना बन्द कर खड़ा हो जाता है.]

हसन—जा रहा हूँ, बेटा, और अहद करके जा रहा हूँ कि बिना फ़रीद को लिये वापस न लौटूँगा

निज़ाम—ख़ुशी की बात है, अब्बा, पर अफ़सोस यही है कि आपको जाते जाते इतना वक़्त लग गया. उन्हें गये दस साल गुज़र गये, अब्बा.

हसन—(लम्बी साँस लेकर) हाँ, मुद्दत दराज़ के बाद जा रहा हूँ इसमें शक नहीं, लेकिन, बेटा, पहले तो उसका पता ही न लगा. जब मुशकिल से पता चला कि वह जौन पुर में है, तब यहां जागीर की इतनी झंझटें बढ़ीं कि निकलना ही न हो सका. पता लगने के बाद ख़त तो न जाने कितने भेजे.

[निज़ाम कोई उत्तर न देकर घृणा से हँस देता है.]

हसन—(ध्यान पूर्वक निज़ाम को देखते हुए) तू समझता है, मैं उससे मुहब्बत नहीं करता ?

प्रवेश=दाख़िल. यत्र तत्र=जहाँ तहाँ. मुद्दत दराज़=लम्बी मुद्दत. घृणा=नफ़रत.

میں رنگ جمائے جاتا ہوں
تصویر بنائے جاتا ہوں
سنسار میں کیسے جینا ہے

[حسن کا پرویش۔ حسن کی عمر قریب پچپن سال کی ہے۔ وہ گیہویں رنگ کا، اونچا پورا، موٹا تازہ آدمی ہے۔ سر پر پٹے ہیں، چہرے پر بڑی بڑی مونچھیں اور لمبی داڑھی۔ بال یتر تتر شویت ہو چلے ہیں۔ وہ سفید رنگ کا انگرکھا اور پائجامہ پہنے ہے۔ سر پر مسلمانی ڈھنگ کی پگڑی لگائے ہے حسن کو دیکھ کر نظام گانا اور چتر بنانا بند کر کھڑا ہو جاتا ہے۔]

حسن— جا رہا ہوں بیٹا، اور عہد کر کے جا رہا ہوں کہ بنا فرید کو لئے واپس نہ لوٹوں گا۔

نظام— خوشی کی بات ہے، ابا، پر افسوس یہی ہے کہ آپ کو جاتے جاتے اتنا وقت لگ گیا۔ انہیں گئے دس سال گذر گئے، ابا۔

حسن— (لمبی سانس لے کر) ہاں، مدت دراز کے بعد جا رہا ہوں اس میں شک نہیں، لیکن، بیٹا، پہلے تو اس کا پتہ ہی نہ لگا۔ جب مشکل سے پتہ چلا کہ وہ جون پور میں ہے، تب یہاں جاگیر کی اتنی جھنجھٹیں بڑھیں کہ نکلنا ہی نہ ہو سکا۔ پتہ لگنے کے بعد خط تو نہ جانے کتنے بھیجے۔

[نظام کوئی اتر نہ دے کر گھرنا سے ہنس دیتا ہے۔]

حسن— (دھیان پوروک نظام کو دیکھتے ہوئے) تو سمجھتا ہے، میں اس سے محبت نہیں کرتا؟

پرویش = داخل۔ یتر تتر = جہاں تہاں۔ مدت دراز = لمبی مدت۔ گھرنا = نفرت۔

[निज़ाम फिर भी कुछ न कह उसी प्रकार हंस देता है.]

हसन—(निज़ाम की ओर उसी तरह देखते हुए) बाप का दिल तू क्या जाने, निज़ाम ? बाप होने पर ही बाप का दिल जाना जा सकता है. रोज़ रोज़ उसकी तसवीरें बनाकर तू समझता है कि तू उसे मुझसे ज्यादा चाहता है ? मैं तुझ जैसा मुसव्विर नहीं, न शायर हूँ. लेकिन बेटा, उसकी तसवीर खिची हुई है मेरे दिल पर, उसके गाने गाया करती है मेरी रूह. इन दस सालों में एक दिन भी मैं चैन से सो नहीं सका हूँ; एक वक्त भी पेट भर खाना नहीं खा सका हूँ. हाँ इतना ज़रूर है कि मेरे लिये जैसा फरीद है वैसा ही तू और तेरे दोनों छोटे भाई. मुझे सबके ही आराम व तकलीफ़ की तरफ देखना पड़ता है. जागीर को न देखूं तो तुम सब खाओ क्या, पहनो क्या, रहो कहाँ ? गुज़श्ता सालों मे जागीर में जो झंझटें रही है उनके सबब से इसके पहले सहसराम छोड़ना ही मेरे लिये गैर मुमकिन था.

निज़ाम—मैं तो इतना ही कह सकता हूँ अब्बा, कि अगर आज आप न जाते तो मैंने जाना तय कर लिया था.

हसन—(कुछ क्रुद्ध हो) और तू समझता है कि तेरे जाने से वह आ जाता ? मेरे खत उसे ला न सके और तू उसे ले आता.

निज़ाम—अगर वह न आते तो मैं वहीं रह जाता.

हसन—(और क्रोध से) तू भी वैसा ही गुस्ताख होता जा रहा है जैसा कि वह हो गया था. 'वहीं रह जाता' रह जाता तो मालूम होता ! उसी को खाने और पहनने के लाले पड़े होंगे; तुझे वह खिलाता पिलाता, यह तनज़ेब और चिकन पहिनाता ! तुम्हीं

गुज़श्ता = पिछले कज़ = गाने की [illegible] गरसत.

[نظام پھر بھی کچھ نہ کہہ اسی پرکار ہنس دیتا ہے۔]

حسن — (نظام کی اور اسی طرح دیکھتے ہوئے) باپ کا دل تو کیا جانے، نظام؟ باپ ہونے پر ہی باپ کا دل جانا جا سکتا ہے۔ روز روز اس کی تصویریں بنا کر تو سمجھتا ہے کہ تو اسے مجھ سے زیادہ چاہتا ہے؟ میں تجھ جیسا مصور نہیں، نہ شاعر ہوں۔ لیکن بیٹا، اس کی تصویر کھنچی ہوئی ہے میرے دل پر، اس کے گانے گایا کرتی ہے میری روح۔ ان دس سالوں میں ایک دن بھی میں چین سے سو نہیں سکا ہوں؛ ایک وقت بھی پیٹ بھر کھانا نہیں کھا سکا ہوں۔ ہاں اتنا ضرور ہے کہ میرے لئے جیسا فرید ہے ویسا ہی تو اور تیرے دونوں چھوٹے بھائی۔ مجھے سب کے ہی آرام و تکلیف کی طرف دیکھنا پڑتا ہے۔ جاگیر کو نہ دیکھوں تو تم سب کھاؤ کیا، پہنو کیا، رہو کہاں؟ گذشتہ سالوں میں جاگیر میں جو جھنجھٹیں رہی ہیں ان کے سبب سے اس کے پہلے سہسرام چھوڑنا ہی میرے لئے غیر ممکن تھا۔

نظام — میں تو اتنا ہی کہہ سکتا ہوں ابا، کہ اگر آج آپ نہ جاتے تو میں نے جانا طے کر لیا تھا۔

حسن — (کچھ کردہ ہو) اور تو سمجھتا ہے کہ تیرے جانے سے وہ آ جاتا؟ میرے خط اسے لا نہ سکے اور تو اسے لے آتا۔

نظام — اگر وہ نہ آتے تو میں وہیں رہ جاتا۔

حسن — (اور کرودھ سے) تو بھی ویسا ہی گستاخ ہوتا جا رہا ہے جیسا کہ وہ ہو گیا تھا۔ 'وہیں رہ جاتا' رہ جاتا تو معلوم ہوتا! اسی کو کھانے اور پہننے کے لالے [illegible] ہونگے؛ تجھے وہ کھلاتا پلاتا، یہ تنزیب اور چکن پہناتا! تمہیں

گذشتہ = پچھلے۔ گنڈ = غصے کی حالت۔ کرودھ = غصہ۔

लोगों के लिये दिन रात मरा जा रहा हूँ, कभी तीसरे पहर खाता हूँ तो कभी शाम को, कभी फ़ाक़ा ही हो जाता है; कभी आधी रात को सोता हूँ तो कभी पूरी की पूरी रात जागते-जागते ही गुजर जाती है, और कैसे एहसान-फ़रामोश निकले तुम दोनो भाई ?

[हसन का पैर पटकते हुए जल्दी से प्रस्थान. निज़ाम कुछ देर तक उसी ओर देखता है जिस तरफ़ से हसन गया है. एकाएक उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं. कुछ रुक कर कुरते की जेबसे रुमाल निकाल वह आँखे पोंछ डालता है. कुछ देर पश्चात वह घूमते हुए एक एक कर फ़रीद के सब चित्रों को देखता है और गाना आरम्भ करता है.]

गाना

तुम्हारी जुदाई मुसीबत है मुझको
यह दुनिया में अच्छी क़ियामत है मुझको
तुम्हारे लिये क्या से क्या हो गया हूँ
हक़ीक़त यही है कि मैं खो गया हूँ
इन आँखों से दिन रात आँसू हैं जारी
यह तस्वीर कहती नहीं कुछ तुम्हारी
मेरे दर्द का दुख का चारा यही है
मेरी ज़िन्दगी का सहारा यही है
बहुत याद अब तेरी आता है मुझको
कहूँ किस तरह अब सताती है मुझको

प्रस्थान = जाना. पश्चात = बाद. आरम्भ =

لوگوں کے لئے دن رات مرا جا رہا ہوں، کبھی تیسرے پہر کھاتا ہوں تو کبھی شام کو، کبھی فاقہ ہی ہو جاتا ہے؛ کبھی آدھی رات کو سوتا ہوں تو کبھی پوری کی پوری رات جاگتے جاگتے ہی گزر جاتی ہے۔ اور کیسے احسان فراموش نکلے تم دونوں بھائی؟

[حسن کا پیر پٹکتے ہوئے جلدی سے پرستھان۔ نظام کچھ دیر تک اسی اور دیکھتا ہے جس طرف سے حسن گیا ہے۔ ایکایک اس کی آنکھوں میں آنسو آ جاتے ہیں۔ کچھ رک کر کرتے کی جیب سے رومال نکال وہ آنکھیں پونچھ ڈالتا ہے۔ کچھ دیر پشچات وہ گھومتے ہوئے ایک ایک کر فرید کے سب چتروں کو دیکھتا ہے اور گانا آرمبھ کرتا ہے۔]

گانا

تمہاری جدائی مصیبت ہے مجھ کو
یہ دنیا میں اچھی قیامت ہے مجھ کو
تمہارے لئے کیا سے کیا ہو گیا ہوں
حقیقت یہی ہے کہ میں کھو گیا ہوں
ان آنکھوں سے دن رات آنسو ہیں جاری
یہ تصویر کہتی نہیں کچھ تمہاری
میرے درد کا دکھ کا چارہ یہی ہے
میری زندگی کا سہارا یہی ہے
بہت یاد اب تیری آتی ہے مجھ کو
کہوں کس طرح اب ستاتی ہے مجھ کو

پرستھان = جانا۔ پشچات = بعد۔ آرمبھ = شروع۔

[गाते-गाते निज़ाम फिर बैठ कर जो चित्र बना रहा था, उसी को बनाने लगता है]

लघु-यवनिका[1]

दूसरा दृश्य

स्थान— जौनपुर में फ़रीद के मकान का एक कमरा .

समय— दोपहर .

[कमरे की बनावट सहसराम के निज़ाम के कमरे के सदृश होते हुए भी यह उससे बहुत बड़ा है और चौखट दरवाजे वैसे छोटे तथा भद्दे नहीं. सजावट भी वहाँ से अधिक है. गद्दी पर मसनद के सहारे फ़रीद बैठा हुआ है. वह हुक़्क़ा पी रहा है. उसकी अवस्था लगभग पच्चीस वर्ष की है. वह गेहुएँ रंग का ऊँचा-पूरा, दुहरे शरीर का व्यक्ति है. सहसराम में निज़ाम की बनाई हुई तसवीरों से उसका मुख मिलता अवश्य है, परन्तु मूँछें कुछ बड़ी हो जाने तथा खसखसी दाढ़ी रख लेने के कारन उसमें यथेष्ट अन्तर पड़ गया है; फिर अवस्था भी दस वर्ष बढ़ गई है. वह क़ीमती तनज़ेब का, बहुत अच्छा सिला हुआ अँगरखा और पायजामा पहने हुए है. सर खुला हुआ है जिस पर पट्टे हैं. उसके निकट ही ब्रह्मादित्य गौड़ बैठा हुआ है. ब्रह्मादित्य की अवस्था फ़रीद से कुछ कम दिखती है. वह गौर वर्ण ऊँचा-पूरा, कुछ मोटा व्यक्ति है. सर के बाल छोटे छोटे हैं और छोटी छोटी मूँछें. वह अँगरखा और धोती पहने है; गले में दुपट्टा लिये है और सर पर गोल पगड़ी लगाये है. ललाट पर उसके त्रिपुन्ड (तिलक) है.]

---

[1] लघु यवनिका = आधा परदा.

[گاتے گاتے نظام پھر بیٹھ کر جو چتر بنا رہا تھا اسی کو بنانے لگتا ہے]

لگھو یونکا[1]

دوسرا درشیہ

استھان — جون پور میں فرید کے مکان کا ایک کمرا.

سمے — دوپہر

[کمرے کی بناوٹ سہسرام کے نظام کے کمرے کے سدرش ہوتے ہوئے بھی یہ اس سے بہت بڑا ہے اور چوکھٹ دروازے ویسے چھوٹے تتھا بھدے نہیں. سجاوٹ بھی وہاں سے ادھک ہے. گدی پر مسند کے سہارے فرید بیٹھا ہوا ہے. وہ حقہ پی رہا ہے. اس کی اوستھا لگ بھگ پچیس ورش کی ہے. وہ گیہوئیں رنگ کا اونچا پورا، دوہرے شریر کا ویکتی ہے. سہسرام میں نظام کی بنائی ہوئی تصویروں سے اس کا مکھ ملتا اوشیہ ہے، پرنتو مونچھیں کچھ بڑی ہو جانے تتھا خشخشی داڑھی رکھ لینے کے کارن اس میں یتھیشٹ انتر پڑ گیا ہے؛ پھر اوستھا بھی دس ورش بڑھ گئی ہے. وہ قیمتی تنزیب کا، بہت اچھا سلا ہوا انگرکھا اور پاجامہ پہنے ہوئے ہے. سر کھلا ہوا ہے جس پر پٹے ہیں. اس کے نکٹ ہی برہمادتیہ گوڑ بیٹھا ہوا ہے. برہمادتیہ کی اوستھا فرید سے کچھ کم دکھتی ہے. وہ گور ورن اونچا پورا کچھ موٹا ویکتی ہے. سر کے بال چھوٹے چھوٹے ہیں اور چھوٹی چھوٹی مونچھیں. وہ انگرکھا اور دھوتی پہنے ہے؛ گلے میں دوپٹہ لئے ہے اور سر پر گول پگڑی لگائے ہے. للاٹ پر اس کے ترپنڈ (تلک) ہے.]

---

[1] لگھو یونکا = آدھا پردہ.

फ़रीद—हाँ, आज दसवाँ साल ख़त्म होता है, पंडित.

ब्रह्मादित्य—और यह दस वर्ष आपको दस दिनों के सदृश जान पड़ते होंगे.

फ़रीद—दस दिनों के मानिन्द तो क्या, लेकिन वक़्त बहुत जल्द गुज़रा, इसमें शक़ नहीं. घर छोड़ने के पहले दिन और हफ़्ते ही नहीं, महीनों दिल बेताब सा रहा. न जाने क्या क्य सोचा, कैसे कैसे ख़याल आये. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) जब कभी नई माँ कुछ, कह देती, तबियत होती फ़ौरन भाग चलूँ, पर बच्चा ही था, न जाने कैसी कैसी मुसीबतें उठानी पड़ें, यह सोच, फिर रुक जाता, पंडित, कितना अच्छा हुआ कि हिम्मत कर चला आया.

ब्रह्मादित्य—इसमें कोई सन्देह है ? जौनपुर आपके लिये बड़ी से बड़ी पाठशाला सिद्ध हुआ.

फ़रीद—बेशक दुनिया का शायद कोई मदरसा मुझे ऐसी तालीम न दे सकता था, जैसी जौनपुर ने दी. पढ़ा, लिखा, इतना ही नहीं, पर इस सूबे का सच्चा सवाल समझ लिया. यह सूबा खेती करने वालों का है. उनकी भलाई ही सूबे की सच्ची ख़िदमत है. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) वह पैदा करते हैं और हुकूमत उनकी हिफ़ाज़त. हुकूमत का फ़र्ज़ है यह देखना कि उनके पैदायश के काम में तरक़्क़ी हो और वह चैन से रहें. इसी लिये काश्तकारों की पैदायश का कुछ जुज़ सलतनत को मिलता है. कम से कम वसूल कर उसके ज़्यादा से ज़्यादा हिस्से को आम लोगों की बहबूदी और आराम के लिये ख़र्च करना ही फ़र्ज़ मन्सबी है.

बहबूदी = भलाई. उत्पत्ति = पैदावार.

فرید — ہاں، آج دسواں سال ختم ہوتا ہے، پنڈت۔

برہمادتیہ — اور یہ دس برس آپ کو دس دنوں کے سدرش جان پڑتے ہونگے۔

فرید — دس دنوں کے مانند تو کیا، لیکن وقت بہت جلد گذرا، اس میں شک نہیں۔ گھر چھوڑنے کے پہلے دن اور ہفتے ہی نہیں، مہینوں دل بیتاب سا رہا۔ نہ جانے کیا کیا سوچا، کیسے کیسے خیال آئے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) جب کبھی نئی ماں کچھ کہہ دیتی، طبیعت ہوتی فوراً بھاگ چلوں، پر بچہ ہی تھا، نہ جانے کیسی کیسی مصیبتیں اٹھانی پڑیں، یہ سوچ، پھر رک جاتا، پنڈت۔ کتنا اچھا ہوا کہ ہمت کر چلا آیا۔

برہمادتیہ — اس میں کوئی سندیہہ ہے؟ جونپور آپ کے لئے بڑی سے بڑی پاٹھ شالا سدھ ہوا۔

فرید — بے شک دنیا کا شاید کوئی مدرسہ مجھے ایسی تعلیم نہ دے سکتا تھا، جیسی جونپور نے دی۔ پڑھا، لکھا۔ اتنا ہی نہیں، پر اس صوبے کا سچا سوال سمجھ لیا۔ یہ صوبہ کھیتی کرنے والوں کا ہے۔ ان کی بھلائی ہی صوبے کی سچی خدمت ہے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) وہ پیدا کرتے ہیں اور حکومت ان کی حفاظت۔ حکومت کا فرض ہے یہ دیکھنا کہ ان کے پیدائش کے کام میں ترقی ہو اور وہ چین سے رہیں۔ اسی لئے کاشتکاروں کی پیدائش کا کچھ جز سلطنت کو ملتا ہے۔ کم سے کم وصول کر اس کے زیادہ سے زیادہ حصے کو عام لوگوں کی بہبودی اور آرام کے لئے خرچ کرنا ہی فرض منصبی ہے۔

ब्रह्मादित्य—परन्तु आपके आने के पहले यहाँ क्या हो रहा था ? उत्पत्ति करने वाले किसानों और रक्षा करने वाले राज्य का परस्पर कैसा सम्बन्ध था ? अगणित के परिश्रम पर उँगलियों पर गिने जाने वाले मनमाने सुख भोग रहे थे, और यह अगणित को दुखी रख कर. किसान अपने कर्त्तव्यों का पालन कर रहे थे, पर राज कर्मचारी नहीं, रक्षक भक्षक बने हुए थे. उत्पन्न करने वालों के पास न पूरा भोजन था न वस्त्र न सुविधाजनक घर था. पर इतने पर भी राज कर्मचारियों को किसी भी वस्तु की कमी न थी.

फ़रीद—अहलेकार अपने फ़र्ज़ को ठीक तरह अदा करे, इसी काम की तो ज़रूरत थी, पंडित. और ज्यों ही यह हुआ त्यों ही दस साल में क्या हो गया !

ब्रह्मादित्य—सूबेदार से जितना काम आपको मिला और आपने जिस योग्यता से किया, उससे एक बात और सिद्ध हो जाती है.

फ़रीद—क्या ?

ब्रह्मादित्य—यह कि यदि आपको अवसर मिले तो आप इसी प्रकार सारे देश का प्रबन्ध कर सकते हैं.

फ़रीद—(मुस्करा कर) तमाम मुल्क का इन्तज़ाम ! न मालूम तुमने मुझ जैसे नाचीज़ से क्या-क्या उम्मीदें बाँध रखी हैं.

ब्रह्मादित्य—इसका कारण है.

फ़रीद—क्या ?

ब्रह्मादित्य—कार्य के लिये अत्यधिक तत्परता और त्याग के अतिरिक्त आपमें भेद भाव नहीं, आप के लिये जैसे मुसलमान हैं

अगणित = अनगिनत.

برہمادتیہ — پرنتو آپ کے آنے کے پہلے یہاں کیا ہو رہا تھا؟ اُتپتی کرنے والے کسانوں اور رکشا کرنے والے راجیہ کا پرسپر کیا سمبندھ تھا؟ اگنت کے پرشرم پر انگلیوں پر گنے جانے والے من مانے سکھ بھوگ رہے تھے، اور یہ اگنت کو دکھی رکھ کر۔ کسان اپنے کرتویوں کا پالن کر رہے تھے، پر راج کرمچاری نہیں۔ رکشک بھکشک بنے ہوئے تھے۔ اُتپن کرنے والوں کے پاس نہ پورا بھوجن تھا، نہ وستر نہ سودھاجنک گھر تھا۔ پر اتنے پر بھی راج کرمچاریوں کو کسی بھی وستو کی کمی نہ تھی۔

فرید — اہلکار اپنے فرض کو ٹھیک طرح ادا کرے، اسی کام کی تو ضرورت تھی، پنڈت۔ اور جیوں ہی یہ ہوا تیوں ہی دس سال میں کیا ہو گیا!

برہمادتیہ — صوبیدار سے جتنا کام آپ کو ملا اور آپ نے جس یوگیتا سے کیا، اس سے ایک بات اور سدھ ہو جاتی ہے۔

فرید — کیا؟

برہمادتیہ — یہ کہ یدی آپ کو اوسر ملے تو آپ اسی پرکار سارے دیش کا پربندھ کر سکتے ہیں۔

فرید — (مسکرا کر) تمام ملک کا انتظام! نہ معلوم تم نے مجھ جیسے ناچیز سے کیا کیا امیدیں باندھ رکھی ہیں۔

برہمادتیہ — اس کا کارن ہے۔

فرید — کیا؟

برہمادتیہ — کاریہ کے لئے اتیادھک تتپرتا اور تیاگ کے اترکت آپ میں بھید بھاؤ نہیں، آپ کے لئے جیسے مسلمان ہیں

اگنت — ان گنت۔

वैसे ही हिन्दू.

फ़रीद—हिन्दू मुसलमानों का फ़र्क़ तो मेरी समझ में ही नहीं आता. सच्चे ख़ादिम के दिमाग़ में हिन्दू-मुस्लिम सवाल नहीं उठ सकता. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ फेंकते हुए, खेती मुसलमान भी करते हैं और हिन्दू भी; चाहे एक मस्जिद में नमाज़ पढ़े और दूसरे मन्दिर में पूजा करें. फिर मेरे तो सबसे बड़े दोस्त, तुम, हिन्दू हो, जिसकी मदद के बिना मैं कुछ भी न कर सकता था.

ब्रह्मादित्य—एक बात मैंने आपमें और देखी है; जानते हैं?

फ़रीद—कौन सी ?

ब्रह्मादित्य—भेद भाव से रहित इस सेवा में आपको एक विचित्र प्रकार का सुख मिलता है, एक अद्भुत ढंग का सन्तोष होता है—आप इस कार्य में ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि अपने घर द्वार और जागीर को ही नहीं, अपने आपको भी भूल जाते हैं.

फ़रीद—(कुछ सोचते हुए) शायद तुम ठीक कहते हो, पंडित. पर फिर भी ऐसे वाक़ये कम नहीं आते जब मुझे सहसराम की याद आ जाती है.

ब्रह्मादित्य—पर पहले ऐसा नहीं था. अब तो अधिकतर यह इस लिये होता है कि जो आपने जौनपुर में किया वही आप अपनी जागीर में करना चाहते हैं.

[एक नौकर का प्रवेश.]

नौकर—(सलामकर)हुज़ूर के वालिदे बुज़ुर्ग तशरीफ़ ला रहे हैं !

ویسے ہی ہندو۔

فرید — ہندو مسلمانوں کا فرق تو میری سمجھ میں ہی نہیں آتا۔ سچے خادم کے دماغ میں ہندو مسلم سوال نہیں اٹھ سکتا۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں پھینکتے ہوئے) کھیتی مسلمان بھی کرتے ہیں اور ہندو بھی؛ چاہے ایک مسجد میں نماز پڑھے اور دوسرے مندر میں پوجا کریں۔ پھر میرے تو سب سے بڑے دوست، تم، ہندو ہو، جس کی مدد کے بنا میں کچھ بھی نہ کر سکتا تھا۔

برہمادتیہ — ایک بات میں نے آپ میں اور دیکھی ہے: جانتے ہیں؟

فرید — کون سی؟

برہمادتیہ — بھید بھاؤ سے رہت اس سیوا میں آپ کو ایک وچتر پرکار کا سکھ ملتا ہے، ایک ادبھت ڈھنگ کا سنتوش ہوتا ہے — آپ اس کاریہ میں ایسے تلین ہو جاتے ہیں کہ اپنے گھر دوار اور جاگیر کو ہی نہیں، اپنے آپ کو بھی بھول جاتے ہیں۔

فرید — (کچھ سوچتے ہوئے) شاید تم ٹھیک کہتے ہو، پنڈت۔ پر پھر بھی ایسے واقعے کم نہیں آتے جب مجھے سہسرام کی یاد آ جاتی ہے۔

برہمادتیہ — پر پہلے ایسا نہیں تھا۔ اب تو ادھک تر یہ اس لیے ہوتا ہے کہ جو آپ نے جونپور میں کیا وہی آپ اپنی جاگیر میں کرنا چاہتے ہیں۔

[ایک نوکر کا پرویش]

نوکر — (سلام کر) حضور کے والد بزرگ تشریف لا رہے ہیں!

اتیرکت = علاوہ۔ ادبھت = عجیب۔ تلین = محو۔

फ़रीद—(चौंक कर खड़े होते हुए) वालिद.........वालिद... ....
(नौकर से) हुक़्क़ा उठा कर लेजा.

[ब्रह्मादित्य भी खड़ा होजाता है. नौकर हुक़्क़ा उठा कर जाता है. हसन का शीघ्रता से प्रवेश. फ़रीद जल्दी से आगे बढ़ ज़मीन तक झुककर हसन के क़दम लेता है. हसन उसे गले लगा लेता है. ब्रह्मादित्य हसन को सलाम करता है. हसन सलाम का उत्तर देता है.]

हसन—बेटा, इतने संगदिल हो गये कि इतने ख़तूत पर भी न आये और आख़िर इस बुढ़ापे में मुझे खिंचकर आना पड़ा.

फ़रीद—संगदिल.........संगदिल तो क्या, अब्बा, लेकिन सूबेदार ने यहाँ इतना काम सौंप रक्खा है कि आने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती. आप अच्छे तो हैं?

हसन—हाँ, ज़िन्दा हूँ.

[सब लोग बैठते हैं.]

ब्रह्मादित्य—आपके साहब ज़ादे ने तो जौनपुर की काया ही पलट दी है.

हसन—ऐसा! बहुत ख़ुशी हुई मुझे यह सुनकर.

फ़रीद—पर अब्बा जान, जो कुछ मैं यहाँ कर सका वह सब इनके सबब से.

हसन—यह तुम्हारे दोस्त हैं?

फ़रीद—सबसे बड़े!

हसन—(चारों तरफ़ देखते हुए) यहाँ कोई तकलीफ़ तो तुम्हें नज़र नहीं आती.

फ़रीद—बहुत आराम से हूँ.

فرید — (چونک کر کھڑے ہوتے ہوئے) والد......... والد.........
(نوکر سے) حقہ اٹھا کر لے جا۔

[برہمادیتہ بھی کھڑا ہو جاتا ہے۔ نوکر حقہ اٹھا کر جاتا ہے۔ حسن کا شیگھرتا سے پرویش۔ فرید جلدی سے آگے بڑھ زمین تک جھک کر حسن کے قدم لیتا ہے۔ حسن اسے گلے لگا لیتا ہے۔ برہمادیتہ حسن کو سلام کرتا ہے۔ حسن سلام کا اتر دیتا ہے۔]

حسن — بیٹا، اتنے سنگدل ہو گئے کہ اتنے خطوط پر بھی نہ آئے اور آخر اس بڑھاپے میں مجھے کھنچ کر آنا پڑا۔

فرید — سنگدل..... سنگدل تو کیا، ابا، لیکن صوبے دار نے یہاں اتنا کام سونپ رکھا ہے کہ آنے کی فرصت ہی نہیں ملتی۔ آپ اچھے تو ہیں؟

حسن — ہاں، زندہ ہوں۔

[سب لوگ بیٹھتے ہیں]

برہمادیتہ — آپ کے صاحبزادے نے تو جون پور کی کایا ہی پلٹ دی۔

حسن — ایسا! بہت خوشی ہوئی مجھے یہ سن کر۔

فرید — پر ابا جان، جو کچھ میں یہاں کر سکا وہ سب ان کے سبب سے۔

حسن — یہ تمہارے دوست ہیں؟

فرید — سب سے بڑے!

حسن — (چاروں طرف دیکھتے ہوئے) یہاں کوئی تکلیف تو نہیں نظر نہیں آتی۔

فرید — بہت آرام سے ہوں۔

हसन—लेकिन अब तो तुम्हारे आराम में खलल पड़ेगा, तुम्हें सहसराम चलना है.

फरीद—क्यों, सहसराम में सब अच्छे तो हैं ? निज़ाम तो अच्छा है ?

हसन—हाँ, सब अच्छे हैं, पर जब तक कोई बुरी बात नहो, तब तक क्या घर लौटा नहीं जाता ?

फरीद—नहीं, सो तो नहीं, पर ....

हसन—(बीच ही में) बेटा, मैं बूढ़ा हो रहा हूँ. मुझसे अब जागीर का काम नहीं होता. तुम्हीं सब से बड़े हो. तुम्हीं को अब जागीर देखनी है, तुम्हीं को घर. जागीर की झंझटों के सबब से ही तो मैं अब तक आ नहीं सका. तुम्हारे दोस्त कहते हैं कि तुमने जौनपुर* की काया पलट दी. यहीं चलकर अपनी जागीर में करो. यहाँ तो सब कुछ दूसरों के लिये करते हो. वहाँ अपने लिये करोगे.

[फरीद कुछ न कहकर ब्रह्मादित्य की ओर देखता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

हसन—उनकी तरफ क्या देखते हो ? वह तुम्हारे ऐसे दिली दोस्त हैं तो वह भी तुम्हारे साथ चलेंगे. बिरहमन जान पड़ते हैं.

ब्रह्मादित्य—जी हाँ, ब्राह्मण हूँ.

हसन—तो अलहदा मकान का इन्तज़ाम हो जायगा. और सारे सगे सामान का भी. यहाँ कोई काम होगा तो दरम्यान में यहाँ भी आप आ सकते हैं. (कुछ रुक कर फरीद से) और फिर निज़ाम तो तुम्हारे बिना दीवाना हो जायगा.

निस्तब्धता = खामोशी.

حسن — لیکن اب تو تمہارے آرام میں خلل پڑے گا، تمہیں سہسرام چلنا ہے۔

فرید — کیوں، سہسرام میں سب اچھے تو ہیں؟ نظام تو اچھا ہے؟

حسن — ہاں، سب اچھے ہیں، پر جب تک کوئی بری بات نہ ہو، تب تک کیا گھر لوٹا نہیں جاتا؟

فرید — نہیں، سو تو نہیں، پر ....

حسن — (بیچ ہی میں) بیٹا، میں بوڑھا ہو رہا ہوں۔ مجھ سے اب جاگیر کا کام نہیں ہوتا۔ تمہیں سب سے بڑے ہو۔ تمہیں کو اب جاگیر دیکھنی ہے، تمہیں کو گھر۔ جاگیر کی جھنجھٹوں کے سبب سے ہی تو میں اب تک آ نہیں سکا۔ تمہارے دوست کہتے ہیں کہ تم نے جونپور کی کایا پلٹ دی۔ یہیں چلکر اپنی جاگیر ٹھیک کرو۔ یہاں تو سب کچھ دوسروں کے لئے کرتے ہو۔ یہاں اپنے لئے کرو گے۔

[فرید کچھ نہ کہکر برہمادتیہ کی اور دیکھتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

حسن — ان کی طرف کیا دیکھتے ہو؟ وہ تمہارے ایسے دلی دوست ہیں تو وہ بھی تمہارے ساتھ چلیں گے۔ برہمن جان پڑتے ہیں۔

برہمادتیہ — جی ہاں، برہمن ہوں۔

حسن — تو علیحدہ مکان کا انتظام ہو جائے گا۔ اور سارے سامان کا بھی۔ یہاں کوئی کام ہوگا تو درمیان میں یہاں بھی آپ آ سکتے ہیں۔ (کچھ رک کر فرید سے) اور پھر نظام تو تمہارے بنا دیوانہ ہو جائے گا۔

نستبدھتا = خاموشی۔

फ़रीद—अच्छा, वह मुझे बहुत याद करता है ?

हसन—याद तो तुम्हें सभी करते हैं. तुम्हारी वालिदा क्या तुम्हें कम याद करती हैं ? सुलेमान और अहमद भी, ऐसा कोई दिन नहीं, जब तुम्हें न पूछते हों. ख़ुदा जानता है. तुम्हारे आने के बाद नींद और खाना दोनों मेरे लिये हराम हो गये थे. पर निज़ाम की तो बात ही कुछ अलग है.

फ़रीद—अच्छा !

हसन—वह मुसव्विर और साथ ही शायर हो गया है. दिन रात तुम्हारी तस्वीरें बनाया करता है. और तुम्हीं पर शायरी.

फ़रीद—ओफ़ ! ओह !

[कुछ देर कोई कुछ नहीं बोलता.]

हसन—हाँ, तो हुक्म दो नौकर को कि असबाब बांधे (ब्रह्मादित्य से) और आप भी तैयार होइये पंडित जी.

फ़रीद—लेकिन, अब्बा जान, मुझे सूबेदार से इजाज़त लेनी होगी ; मैं उनका नौकर हूँ.

ब्रह्मादित्य—(मुस्कराते हुए) यद्यपि सूबेदार इन्हें बहुत चाहते हैं पर घर जाने की आज्ञा लेने में कोई कठिनाई न होगी.

[हसन और फ़रीद दोनों दो प्रकार की दृष्टियों से ब्रह्मादित्य की ओर देखते हैं.]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—सहसराम में निज़ाम का कमरा

فرید — اچھا، وہ مجھے بہت یاد کرتا ہے؟

حسن — یاد تو تمہیں سبھی کرتے ہیں۔ تمہاری والدہ کیا تمہیں کم یاد کرتی ہیں؟ سلیمان اور احمد بھی، ایک کوئی دن نہیں، جب تمہیں نہ پوچھتے ہوں۔ خدا جانتا ہے۔ تمہارے آنے کے بعد نیند اور کھانا دونوں میرے لئے حرام ہو گئے تھے۔ پر نظام کی تو بات ہی کچھ الگ ہے۔

فرید — اچھا!

حسن — وہ مصور اور ساتھ ہی شاعر ہو گیا ہے۔ دن رات تمہاری تصویر بنایا کرتا ہے۔ اور تمہیں پر شاعری۔

فرید — اُف! اُوہ!

[کچھ دیر کوئی کچھ نہیں بولتا۔]

حسن — ہاں، تو حکم دو نوکر کو کہ اسباب باندھے (برہمادیتہ سے) اور آپ بھی تیار ہوئیے پنڈت جی۔

فرید — لیکن، ابا جان، مجھے صوبے دار سے اجازت لینی ہوگی؛ میں ان کا نوکر ہوں۔

برہمادیتہ — (مسکراتے ہوئے) یدّپی صوبے دار انھیں بہت چاہتے ہیں پر گھر جانے کی آگیا لینے میں کوئی کٹھنائی نہ ہوگی۔

[حسن اور فرید دونوں دو پرکار کی درشٹیوں سے برہمادیتہ کی اور دیکھتے ہیں]

لگھو یونیکا

تیسرا درشیہ

समय—प्रातः काल.

[दिवारों पर फ़रीद की पुरानी तसवीरों के साथ अब नये चित्र भी लग गये हैं. निज़ाम बैठा हुआ फ़रीद का एक चित्र और बनाते हुए गा रहा है.]

गीत

रहेगा दूर कब तक मेरे भाई
मुसीबत हो गई तेरी जुदाई
तेरा ही ध्यान है दिन रात मुझको
नहीं है और कोई बात मुझको
मुझे दीदार तू अपना दिखाजा
बहुत दिन हो गये आजा अब आजा
तुझे देखूँ तो मैं आराम पाऊँ
गले से और सीने से लगाऊँ

[फ़रीद का प्रवेश. फ़रीद को देख निज़ाम चित्र बनाना और गाना बंद कर, खड़े हो, उसकी ओर बढ़ता है. दोनों आकर गद्दी पर बैठते हैं]

फ़रीद—(जो चित्र बन रहा है, उसे देखते हुए) मेरी एक और तसवीर बन रही है, निज़ाम ?

[निज़ाम कुछ न कहकर फ़रीद की ओर देखता है. फ़रीद का सर झुका जाता है. कुछ देर निस्तब्धता]

फ़रीद—(सर उठाते हुए) निज़ाम, तुम मुझे कितना चाहते हो !

سمے — پرات: کال۔

[دیواروں پر فرید کی پرانی تصویروں کے ساتھ اب نئے چتر بھی لگ گئے ہیں۔ نظام بیٹھا ہوا فرید کا ایک چتر اور بناتے ہوئے گا رہا ہے۔]

گیت

رہے گا دور کب تک میرے بھائی
مصیبت ہو گئی تیری جدائی
تیرا ہی دھیان ہے دن رات مجھکو
نہیں ہے اور کوئی بات مجھکو
مجھے دیدار تو اپنا دکھا جا
بہت دن ہو گئے آجا اب آجا
تجھے دیکھوں تو میں آرام پاؤں
گلے سے اور سینے سے لگاؤں

[فرید کا پرویش۔ فرید کو دیکھ نظام چتر بنانا اور گانا بند کر، کھڑے ہو، اس کی اور بڑھتا ہے۔ دونوں آکر گدی پر بیٹھتے ہیں]

فرید — (جو چتر بن رہا ہے، اسے دیکھتے ہوئے) میری ایک اور تصویر بن رہی ہے، نظام؟

[نظام کچھ نہ کہکر فرید کی اور دیکھتا ہے۔ فرید کا سر جھکا جاتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا]

فرید — (سر اٹھاتے ہوئے) نظام، تم مجھے کتنا چاہتے ہو!

[निज़ाम फिर भी कुछ नहीं कहता. फ़रीद का सर फिर झुक जाता है. कुछ देर फिर निस्तब्धता]

फ़रीद—(फिर सर उठाते हुए) शायद मेरा दिल तुम्हारे जैसा नहीं है, निज़ाम. इसमें शायद मुहब्बत ही नहीं है.

निज़ाम—(जल्दी से) नहीं-नहीं, ऐसा.........आपका ऐसा दिल हो नहीं सकता. मुहब्बत से ख़ाली दिल तो रेगिस्तान जैसा होता है, भाईजान; आपका दिल तो ऐसा सरसब्ज़ है कि जहाँ भी आप जाते हैं चारों तरफ़ सरसब्ज़ी ही सरसब्ज़ी नज़र आने लगती है. जौनपुर में जो हुआ था उसे सुना ही था पर यहाँ आपके लौटने पर जो हुआ है उसे भी देख रहा हूँ.

फ़रीद—(विचारते हुए) लेकिन, निज़ाम मैं देखता हूँ, जितना तुम मुझे चाहते हो, उतना मैं तुम्हें नहीं. जिस वक़्त मैं जौनपुर गया, उस वक़्त तुम बच्चे थे. आड़ी टेढ़ी लकीरें तब भी अक्सर खींचते रहते थे. कुछ गुनगुनाने की भी आदत थी. पर होश सँभालते ही मेरी एक पुरानी तस्वीर और अपनी याददाश्त पर मेरी कितनी तस्वीरें बना बना कर, मुझ पर शायरी लिख-लिख कर, तुमने मेरी जुदाई का वक़्त निकाला. अब यहाँ आया, देखा, मेरे साथ रहने के सिवा तुम्हें कोई बात ही अच्छी नहीं लगती. इस साथ से कभी-कभी, चाहे मैं ही ऊब उठता होऊँ, झुंझला पड़ता होऊँ, पर तुम.................

निज़ाम—(बीच ही में भर्राये हुए स्वर से) इसका सबब है, भाई साहब.

उत्सुकता = बेचैनी.

४

[نظام پھر بھی کچھ نہیں کہتا۔ فرید کا سر پھر جھک جاتا ہے۔ کچھ دیر پھر سناٹا]

فرید — (پھر سر اٹھاتے ہوئے) شاید میرا دل تمہارے جیسا نہیں ہے، نظام۔ اس میں شاید محبت ہی نہیں ہے۔

نظام — (جلدی سے) نہیں نہیں، ایسا...... آپ کا ایسا دل ہو نہیں سکتا۔ محبت سے خالی دل تو ریگستان جیسا ہوتا ہے، بھائی جان! آپ کا دل تو ایسا سرسبز ہے کہ جہاں بھی آپ جاتے ہیں چاروں طرف سرسبزی ہی سرسبزی نظر آنے لگتی ہے۔ جونپور میں جو ہوا تھا اسے سنا ہی تھا پر یہاں آپ کے لوٹنے پر جو ہوا ہے اسے بھی دیکھ رہا ہوں۔

فرید — (وچارتے ہوئے) لیکن، نظام میں دیکھتا ہوں، جتنا تم مجھے چاہتے ہو، اتنا میں تمہیں نہیں۔ جس وقت میں جونپور گیا، اس وقت تم بچے تھے۔ آڑی ٹیڑھی لکیریں تب بھی اکثر کھینچتے رہتے تھے۔ کچھ گنگنانے کی بھی عادت تھی۔ پر ہوش سنبھالتے ہی میری ایک پرانی تصویر اور اپنی یادداشت پر میری کتنی تصویریں بنا بنا کر، مجھ پر شاعری لکھ لکھ کر، تم نے میری جدائی کا وقت نکالا۔ جب یہاں آیا، دیکھا، میرے ساتھ رہنے کے سوا تمہیں کوئی بات ہی اچھی نہیں لگتی۔ اس ساتھ سے کبھی کبھی، چاہے میں ہی اوب اٹھتا ہوں، جھنجھلا پڑتا ہوں، پر تم......

نظام — (بیچ ہی میں بھرائے ہوئے سُر سے) اس کا سبب ہے، بھائی صاحب۔

اُتسکتا = بے چینی۔

फ़रीद—(उत्सुकता से) क्या ?

निज़ाम—(उसी प्रकार के स्वर में) आपके दिल में मुहब्बत की कमी नहीं, लेकिन उसे आपने बेशुमार निज़ामों में बाँट दी है.

[फ़रीद का सर झुक जाता है. निज़ाम उसकी तरफ़ देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

फ़रीद—(सर उठाते हुए) और तुम ऐसा नहीं कर सकते ?

निज़ाम—(गम्भीरता से सोचते हुए) शायद नहीं.

फ़रीद—यह क्यों ?

निज़ाम—(उसी प्रकार गम्भीरता से विचारते हुए) ठीक तो नहीं कह सकता, पर शायद इसलिये कि आपका दिल दरिया है और मेरा एक छोटा सा चश्मा.

[फ़रीद का सर फिर झुक जाता है. निज़ाम उसी की ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

फ़रीद—(सर उठाते हुए) पर अगर तुम ऐसा सोचते हो कि मेरा दिल भी रेगिस्तान न होकर सरसब्ज़ है, उसमे मुहब्बत है, साथ ही वह दरिया जैसा है, तो तुम भी अपना दिल वैसा ही बनाने की कोशिश क्यों नहीं करते ?

निज़ाम—(खेद की मुस्कराहट के साथ) भाई जान, इन चीज़ों को बनाने की क़ूवत आदमी में नहीं, वह तो परवरदिगार में ही है.

फ़रीद—(गम्भीरता से विचारते हुए) लेकिन आज मेरे दिल में एक बात उठ रही है.

निज़ाम—कौन सी ?

فرید۔ (اُتسکتا سے) کیا؟

نظام۔ (اسی پرکار کے سور میں) آپ کے دل میں محبت کی کمی نہیں، لیکن اسے آپ نے بے شمار نظاموں میں بانٹ دی ہے۔

[فرید کا سر جھک جاتا ہے۔ نظام اس کی طرف دیکھتا رہتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

فرید۔ (سر اٹھاتے ہوئے) اور تم ایسا نہیں کر سکتے؟

نظام۔ (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) شاید نہیں۔

فرید۔ یہ کیوں؟

نظام۔ (اسی پرکار گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) ٹھیک تو نہیں کہہ سکتا، پر شاید اس لئے کہ آپ کا دل دریا ہے اور میرا ایک چھوٹا سا چشمہ۔

[فرید کا سر پھر جھک جاتا ہے۔ نظام اسی کی اور دیکھتا رہتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

فرید۔ (سر اٹھاتے ہوئے) پر اگر تم ایسا سوچتے ہو کہ میرا دل بھی ریگستان نہ ہو کر سرسبز ہے، اس میں محبت ہے، ساتھ ہی وہ دریا جیسا ہے، تو تم بھی اپنا دل ویسا ہی بنانے کی کوشش کیوں نہیں کرتے؟

نظام۔ (کھید کی مسکراہٹ کے ساتھ) بھائی جان، ان چیزوں کو بنانے کی قوت آدمی میں نہیں، وہ تو پروردگار میں ہی ہے۔

فرید۔ (گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) لیکن آج میرے دل میں ایک بات اٹھ رہی ہے۔

نظام۔ کونسی؟

फ़रीद—मेरा दिल रेगिस्तान न होकर अगर सरसब्ज़ है, उसमें अगर मुहब्बत है, तो वह मुहब्बत शायद पाक मुहब्बत है.

निज़ाम—(अत्यन्त आश्चर्य से, कुछ अप्रसन्नता के स्वर में) पाक ! यह आप क्या कह रहे हैं ? मेरे दिल में आप की जो मुहब्बत है वह पाक न होकर क्या नापाक है ?

फ़रीद—(जल्दी से) नहीं-नहीं, मेरा यह ....यह मतलब नहीं, लेकिन...............लेकिन.....................(चुप हो जाता है.)

निज़ाम—(फ़रीद की ओर देखते हुए) लेकिन ?

[फ़रीद फिर भी कुछ नहीं बोलता. कुछ देर निस्तब्धता.]

फ़रीद—अच्छा, देखो, इस मसले पर फिर कभी ग़ौर करेंगे. इस वक़्त तो मैं तुम्हारे पास एक दूसरे ही ज़रूरी काम से आया था.

निज़ाम—हुक्म दीजिये.

फ़रीद—मैं सहसराम से फिर ऊब उठा हूँ. नई माँ के मिज़ाज में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, बल्कि रियाया के दिल में मेरे लिए जो एक तरह की हमदर्दी हो गई है, उससे उनकी नाराज़गी और ज़्यादा बढ़ गई है. वक़्त वक़्त पर हमारे ख़िलाफ़ यहाँ साज़िशें तक होती हैं, यह कई मरतबे मुझे ब्रह्मादित्य से मालूम हुआ है. यहाँ जितना काम हो सकता था, वह भी मैं कर चुका; इस लिये फिर एक दफ़ा फ़ाक़ामस्ती की धुन सवार हुई है.

निज़ाम—(आश्चर्य से) अच्छा फिर कहीं जाना चाहते हैं ?

फ़रीद—हाँ, इस दफ़ा हिन्दुस्तान के पायेतख़्त आगरा जाने के लिए सोच रहा हूँ.

فرید — میرا دل ریگستان نہ ہوکر اگر سرسبز ہے، اس میں اگر محبت ہے، تو وہ محبت شاید پاک محبت ہے.

نظام — (اتینت آشچریہ سے، کچھ اپرسنتا کے سور میں) پاک! یہ آپ کیا کہہ رہے ہیں؟ میرے دل میں آپ کی جو محبت ہے، وہ پاک نہ ہوکر کیا ناپاک ہے؟

فرید — (جلدی سے) نہیں نہیں، میرا یہ .... یہ مطلب نہیں، لیکن .... لیکن .... (چپ ہو جاتا ہے.)

نظام — (فرید کی اور دیکھتے ہوئے) لیکن؟

[فرید پھر بھی کچھ نہیں بولتا. کچھ دیر نستبدھتا.]

فرید — اچھا، دیکھو، اس مسئلے پر پھر کبھی غور کریں گے. اس وقت تو میں تمہارے پاس ایک دوسرے ہی ضروری کام سے آیا تھا.

نظام — حکم دیجئے.

فرید — میں سہسرام سے پھر اوب اٹھا ہوں. نئی ماں کے مزاج میں کوئی فرق نہیں پڑا، بلکہ رعایا کے دل میں میرے لئے جو ایک طرح کی ہمدردی ہو گئی ہے، اس سے ان کی ناراضگی اور زیادہ بڑھ گئی ہے. وقت وقت پر ہمارے خلاف یہاں سازشیں تک ہوتی ہیں، یہ کئی مرتبہ مجھے برہمادتیہ سے معلوم ہوا ہے. یہاں جتنا کام ہو سکتا تھا، وہ بھی میں کر چکا؛ اس لئے پھر ایک دفعہ فاقہ مستی کی دھن سوار ہوئی ہے.

نظام — (آشچریہ سے) اچھا پھر کہیں جانا چاہتے ہیں؟

فرید — ہاں، اس دفعہ ہندوستان کے پایۂ تخت آگرہ جانے کے لئے سوچ رہا ہوں.

निज़ाम—(जल्दी से) लेकिन मैं आपके साथ चलूंगा.

फ़रीद—तुम्हें तो चलना ही होगा. ऐसी हालत में तुम्हें यहाँ अकेला छोड़कर मैं थोड़े ही जाऊँगा; पर मुमकिन है इस नई ज़िन्दगी में तुम्हें तकलीफ़ें भी बरदाश्त करनी पड़ें.

निज़ाम—(गद्-गद् स्वर से) आपके साथ दोज़ख़ मे भी मैं आराम से रह सकता हूँ. और आपके बिना जन्नत भी मुझे दोज़ख़ से ज़्यादा बुरी मालूम होगी. आप समझते हैं बग़ैर आपके एक लमहा भी मैं कहीं आराम से गुज़ार सकता हूँ ?

लघु-यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—आगरे का एक उद्यान

समय—संध्या.

[दूर पर यमुना का प्रवाह दृष्टि गोचर होता है. उद्यान का एक भाग दिखाई दे रहा है. दृश्य डूबते हुए सूर्य के प्रकाश से आलोकित है. उद्यान के इस भाग को देखते ही यह ज्ञात हो जाता है कि उद्यान सोलहवीं शताब्दी का है. पीछे की ओर कुछ दूर पर उद्यान के बाहरी कोट का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ता है, जो हरी लताओं से आच्छादित है. उसके निकट ही ऊँचे-ऊँचे फलों के वृक्ष

उद्यान=बाग़. प्रवाह=रवानी. दृष्टिगोचर=नज़र आना. वृक्ष=पेड़.

نظام ـ (جلدی سے) لیکن میں آپ کے ساتھ چلوں گا.

فرید ـ تمہیں تو چلنا ہی ہوگا. ایسی حالت میں تمہیں یہاں اکیلا چھوڑ کر میں تھوڑے ہی جاؤں گا؛ پر ممکن ہے اس نئی زندگی میں تمہیں تکلیفیں بھی برداشت کرنی پڑیں.

نظام ـ (گد گد سور سے) آپ کے ساتھ دوزخ میں بھی میں آرام سے رہ سکتا ہوں. اور آپ کے بنا جنت بھی مجھے دوزخ سے زیادہ بری معلوم ہوگی. آپ سمجھتے ہیں بغیر آپ کے ایک لمحہ بھی میں کہیں آرام سے گذار سکتا ہوں؟

لگھو یونیکا

چوتھا درشیہ

استھان ـ آگرے کا ایک اُدیان

سمے ـ سندھیا

[دور پر یمنا کا پرواہ درشٹی گوچر ہوتا ہے. اُدیان کا ایک باغ دکھائی دے رہا ہے. درشیہ ڈوبتے ہوئے سوریہ کے پرکاش سے آلوکت ہے. اُدیان کے اس بھاگ کو دیکھتے ہی یہ گیات ہو جاتا ہے کہ اُدیان سولہویں شتابدی کا ہے. پیچھے کی اور کچھ دور پر اُدیان کے باہری کوٹ کا کچھ حصہ دکھائی پڑتا ہے جو ہری لتاؤں سے آچھادت ہے. اس کے نکٹ ہی اونچے اونچے پھلوں کے

اُدیان = باغ. پرواہ = روانی. درشٹی گوچر = نظر آنا. ورکش = پیڑ.

हैं. इसके पश्चात् फूलों की क्यारियाँ हैं, क्यारियों के चारों ओर पक्की, पर सकरी-सकरी सड़कें तथा बैठने के लिए यत्र तत्र छोटे छोटे पक्के चबूतरे हैं. बाईं ओर के एक चबूतरे पर चित्र बनाने का तिपाया रक्खा है, उस पर चित्रपट है. इस चित्रपट के उद्यान के दृश्य का ही एक अधूरा चित्र है. तिपाये के ठीक सामने लकड़ी की एक खाली चौकी रखी हुई है. इस चौकी के समीप ही लकड़ी की एक दूसरी चौकी पर काँच के अनेक प्यालों में भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग घुले हैं और चित्र बनाने की क़लमें पड़ी रहती हैं. दृश्य खुलते समय उद्यान के इस भाग में कोई नहीं दिखता. नेपथ्य में गान की ध्वनि सुन पड़ती है, जो समीप आती हुई मालूम होती है. शीघ्र ही दाहिनी ओर से काँच की एक सुराही में पानी लिये हुए निज़ाम आता है. निज़ाम आकर सुराही का पानी कुछ प्यालों में डाल, खाली चौकी पर बैठकर चित्र बनाना आरम्भ करता है. उसकी पीठ दाहिनी ओर हो जाती है. उसका गान चलता रहता है और कुछ ही देर में जान पड़ता है कि वह गान और चित्र बनाने में एक दम तल्लीन हो गया है.]

गीत

मैं प्रेम पुजारी बन जाऊँ
उस दर का भिखारी बन जाऊँ
यह प्रेम की दुनिया क्या कहिये
दिन रात उसी में बस रहिये
मैं प्रेम पुजारी बन जाऊँ

नेपथ्य = साइड.

ہیں۔ ان کے پشچات پھولوں کی کیاریاں ہیں۔ کیاریوں کے چاروں اور پکی، پر سکری سکری سڑکیں تتھا بیٹھنے کے لئے یتر تتر چھوٹے چھوٹے پکے چبوترے ہیں۔ بائیں اور کے ایک چبوترے پر چتر بنانے کا تپایا رکھا ہے، اس پر چترپٹ ہے۔ اس چترپٹ کے اُدیان کے درشیہ کا ہی ایک ادھورا چتر ہے۔ تپائے کے ٹھیک سامنے لکڑی کی ایک خالی چوکی رکھی ہوئی ہے۔ اس چوکی کے سمیپ ہی لکڑی کی ایک دوسری چوکی پر کانچ کے انیک پیالوں میں بھِن بھِن پرکار کے رنگ گھلے ہیں اور چتر بنانے کی قلمیں پڑی رہتی ہیں۔ درشیہ کھلتے سمے اُدیان کے اس بھاگ میں کوئی نہیں دکھتا۔ نیپتھیہ میں گان کی دھونی سن پڑتی ہے، جو سمیپ آتی ہوئی معلوم ہوتی ہے۔ شیگھر ہی داہنی اور سے کانچ کی ایک صراحی میں پانی لئے ہوئے نظام آتا ہے۔ نظام آکر صراحی کا پانی کچھ پیالوں میں ڈال، خالی چوکی پر بیٹھکر چتر بنانا آرمبھ کرتا ہے۔ اس کی پیٹھ داہنی اور ہو جاتی ہے۔ اس کا گان چلتا رہتا ہے اور کچھ ہی دیر میں جان پڑتا ہے کہ وہ گان اور چتر بنانے میں ایک دم تلین ہو گیا ہے۔]

گیت

میں پریم پجاری بن جاؤں
اس در کا بھکاری بن جاؤں
یہ پریم کی دنیا کیا کہئے
دن رات اسی میں بس رہئے
میں پریم پجاری بن جاؤں

نیپتھیہ = سائڈ۔

जीना है यही, मरना है यही
संसार में बस करना है यही
मैं प्रेम पुजारी बन जाऊँ.

[दाहिनी ओर से लाडबानू का चार सहेलियों के साथ प्रवेश. लाडबानू की अवस्था लगभग सोलह सत्रह वर्ष की है पर वह अवस्था से कुछ अधिक ही जान पड़ती है. वह गौर वर्ण की, ऊँची पूरी, भरे हुए शरीर की अत्यन्त सुन्दर युवती है. रेशमी शलवार पहने है और दुपट्टा ओढ़े है. उसके अंगों में देदीप्यमान रत्नों के आभूषण हैं. उसकी सहेलियों की उम्र भी सोलह और बीस वर्ष के बीच में है. दो शलवार पहने और दुपट्टा ओढ़े हैं और दो साड़ी तथा सलूका पहने हैं. चारों स्वर्ण के आभूषणों से अलंकृत हैं. पाँचों युवतियों की दृष्टि चित्रपट और चित्रकार की पीठ पर पड़ती है. लाड दाहिने हाथ की तर्जनी को ओंठो पर रखकर अपनी सहेलियों को चुप रहने का संकेत करती है. पहले कुछ देर पाँचों युवतियाँ खड़ी रह कर दूर से ही बनते हुए चित्र को देखती हुई निजाम का गान सुनती रहती हैं, फिर धीरे-धीरे निजाम की चौकी के निकट आकर, चुपचाप खड़ी हो, निकट से चित्र देखने लगती हैं. निजाम चित्र बनाने तथा गाने में इतना तल्लीन है कि उसे इन युवतियों के आने और इस प्रकार खड़े रहने का भान भी नहीं होता. कुछ देर में एक प्याले में कलम डालते हुए निजाम के हाथ का धक्का उस प्याले को लगता है और वह चौकी पर से पीछे की ओर गिर कर फूटता है. उसका रंग उचट कर लाड की शलवार पर पड़ता

देदीप्यमान = चमकते हुए.

جینا ہے یہی مرنا ہے یہی
سنسار میں بس کرنا ہے یہی
میں پریم پجاری بن جاؤں

[داہنی اور سے لاڈبانو کا چار سہیلیوں کے ساتھ پرویش. لاڈبانو کی اوستھا لگ بھگ سولہ سترہ ورش کی ہے پر وہ اوستھا سے کچھ ادھک ہی جان پڑتی ہے. وہ گور ورن کی، اونچی پوری، بھرے ہوئے شریر کی اتینت سندر یوتی ہے. ریشمی شلوار پہنے ہے اور دوپٹہ اوڑھے ہے. اس کے انگوں میں دیدیپیمان رتنوں کے آبھوشن ہیں. اس کی سہیلیوں کی عمر بھی سولہ اور بیس ورش کے بیچ میں ہے. دو شلوار پہنے اور دوپٹہ اوڑھے ہیں اور دو ساڑی تتھا سلوکا پہنے ہیں. چاروں سورن کے آبھوشنوں سے النکرت ہیں. پانچوں یوتیوں کی درشٹی چترپٹ اور چترکار کی پیٹھ پر پڑتی ہے. لاڈ داہنے ہاتھ کی ترجنی کو اونٹھوں پر رکھ کر اپنی سہیلیوں کو چپ رہنے کا سنکیت کرتی ہے. پہلے کچھ دیر پانچوں یوتیاں کھڑی رہ کر دور سے ہی بنتے ہوئے چتر کو دیکھتی ہوئی نظام کا گان سنتی رہتی ہیں، پھر دھیرے دھیرے نظام کی چوکی کے نکٹ جا کر، چپ چاپ کھڑی ہو، نکٹ سے چتر دیکھنے لگتی ہیں. نظام چتر بنانے تتھا گانے میں اتنا تلین ہے کہ اسے ان یوتیوں کے آنے اور اس پرکار کھڑے رہنے کا بھان بھی نہیں ہوتا. کچھ دیر میں ایک پیالے میں قلم ڈالتے ہوئے نظام کے ہاتھ کا دھکا اس پیالے کو لگتا ہے اور وہ چوکی پر سے پیچھے کی اور گر کر پھوٹتا ہے. اس کا رنگ اچٹ کر لاڈ کی شلوار پر پڑتا

دیدیپیمان = چمکتے ہوئے -

है. वह चीख सी उठती है—'उफ़' प्याले का गिरना, टूटना और लाड की चीख, तीनों प्राय: साथ-साथ होते हैं. निज़ाम चौंक कर उठता है. उसका गान बंद हो जाता है और वह पीछे की ओर घूम इन युवतियों को देखकर चकित सा रह जाता है. लाड की चारों सहेलियाँ खिलखिला कर हँस पड़ती हैं.]

निज़ाम—(लाडबानू से) माफ़ कीजिये गा, आपके कपड़े खराब हो गये.

[लाड निज़ाम के पीछे की ओर घूमते ही एकटक निज़ाम की तरफ़ देखने लगी थी. निज़ाम का यह पहला वाक्य पूरा होते होते उसकी दृष्टि नीचे की ओर झुक जाती है.]

निज़ाम—(कुछ रुक कर) मुझे मालूम ही नहीं हुआ कि कब आप सब तशरीफ़ लाईं, और किस वक़्त से इस तरह खड़ी होकर तसवीर देख रही थीं.

एक सहेली—लेकिन, मुसव्विर, तुम्हें इस क़ुसूर की सज़ा दी जायगी.

निज़ाम—(कुछ आश्चर्य से) सज़ा ! ....क़ुसूर ! .... हाँ, क़ुसूर तो मुझसे जरूर हुआ, पर अनजान में.

वही सहेली—क़ुसूर, क़ुसूर ही है, चाहे वह कैसे ही क्यों न हो.

निज़ाम—(कुछ गम्भीरता से) अगर यही बात है तो बन्दा सज़ा का हक़दार है.

वही सहेली—तो दूँ तुम्हें सज़ा ?

निज़ाम—सज़ा तो अहलकार देते हैं, क्या आपही सज़ा भी देंगी ?

ہے۔ وہ چیخ سی اٹھتی ہے۔ 'اُف' پیالے کا گرنا، ٹوٹنا اور لاڈ کی چیخ، تینوں پرایہ ساتھ ساتھ ہوتے ہیں۔ نظام چونک کر اٹھتا ہے۔ اس کا گانا بند ہو جاتا ہے اور وہ پیچھے کی اور گھوم ان یتیوں کو دیکھ کر چکیت سا رہ جاتا ہے۔ لاڈ کی چاروں سہیلیاں کھلکھلا کر ہنس پڑتی ہیں۔]

نظام۔ (لاڈ بانو سے) معاف کیجئے گا، آپ کے کپڑے خراب ہو گئے

[لاڈ نظام کے پیچھے کی اور گھومتے ہی ایک ٹک نظام کی طرف دیکھنے لگی تھی۔ نظام کا یہ پہلا واکیہ پورا ہوتے ہوتے اس کی درشٹی نیچے کی اور جھک جاتی ہے۔]

نظام۔ (کچھ رک کر) مجھے معلوم ہی نہیں ہوا کہ کب آپ سب تشریف لائیں، اور کس وقت سے اس طرح کھڑی ہو کر تصویر دیکھ رہی تھیں۔

ایک سہیلی۔ لیکن، مصور، تمہیں اس قصور کی سزا دی جائے گی۔

نظام۔ (کچھ آشچریہ سے) سزا!........قصور!........ہاں، قصور تو مجھ سے ضرور ہوا، پر انجان میں۔

وہی سہیلی۔ قصور، قصور ہی ہے، چاہے وہ کیسے ہی کیوں نہ ہو۔

نظام۔ (کچھ گمبھیرتا سے) اگر یہی بات ہے تو بندہ سزا کا حقدار ہے۔

وہی سہیلی۔ تو دوں تمہیں سزا؟

نظام۔ سزا تو اہلکار دیتے ہیں، کیا آپ ہی سزا بھی دیں گی؟

वही सहेली—जी हाँ, आपका जुर्म ऐसा है कि इसकी सजा देने के लिये मैं खुद को क़ाबिल अहलकार समझती हूँ.

निजाम—तो फिर कर दीजिये मेरा फैसला.

वही सहेली—तुम्हारी सजा है—(लाडबानू की ओर संकेत कर) हमारी इस सहेली की तस्वीर बना देना.

तीनों सहेली—(एक साथ) हाँ, हाँ, मुनासिब....मुनासिब सजा है.

लाड—(सकुचाते हुए) क्या तुम सब दीवानी हो गई हो ?

पहली सहेली—अहलकार का हुक्म कोई नहीं टाल सकता.

तीनों सहेली—(एक साथ) कोइ नहीं···कोई नहीं.

[चारों सहेलियाँ फिर खिलखिला कर हँस पड़ती हैं. इसके पश्चात् कुछ देर निस्तब्धता.]

पहली सहेली—(निजाम से) तुमने मेरा फैसला मंजूर किया है न, मुसव्विर ? (चित्रपट की अधूरी तस्वीर की ओर संकेत कर) हटाओ इसे, और बनाओ मेरी सहेली की तस्वीर.

लाड—लेकिन.........लेकिन.........

पहली सहेली—तुम चुप रहो, बानू.

[फिर कुछ देर निस्तब्धता.]

पहली सहेली—(निजाम से) तो शुरू करो.

निजाम—(हिचकिचाते हुए) पर.........पर, मैंने.........मैंने कुदरती नजारों और.........और मेरे भाई जान के सिवा और कभी किसी की तस्वीर नहीं बनाई.

पहली सहेली—यह तो गुनाह की सजा है. (कुछ रुक कर,

وہی سہیلی — جی ہاں، آپ کا جرم ایسا ہے کہ اس کی سزا دینے کے لئے میں خود کو قابل اہلکار سمجھتی ہوں۔

نظام — تو پھر کر دیجئے میرا فیصلہ۔

وہی سہیلی — تمہاری سزا ہے — (لاڈ بانو کی اور سنکیت کر) ہماری اس سہیلی کی تصویر بنا دینا۔

تینوں سہیلی — (ایک ساتھ) ہاں، ہاں، مناسب ..... مناسب سزا ہے۔

لاڈ — (سکوچاتے ہوئے) کیا تم سب دیوانی ہو گئی ہو؟

پہلی سہیلی — اہلکار کا حکم کوئی نہیں ٹال سکتا۔

تینوں سہیلی — (ایک ساتھ) کوئی نہیں ..... کوئی نہیں۔

[چاروں سہیلیاں پھر کھلکھلا کر ہنس پڑتی ہیں۔ اس کے پشچات کچھ دیر نستبدھتا۔]

پہلی سہیلی — (نظام سے) تم نے میرا فیصلہ منظور کیا ہے نا، مصور؟ (چترپٹ کی ادھوری تصویر کی اور سنکیت کر) ہٹاؤ اسے، اور بناؤ میری سہیلی کی تصویر۔

لاڈ — لیکن .... لیکن ....

پہلی سہیلی — تم چپ رہو، بانو۔

[پھر کچھ دیر نستبدھتا۔]

پہلی سہیلی — (نظام سے) تو شروع کرو۔

نظام — (ہچکچاتے ہوئے) پر ..... پر، میں نے ..... میں نے قدرتی نظاروں اور ..... اور میرے بھائی جان کے سوا اور کبھی کسی کی تصویر نہیں بنائی۔

हुए) और........और अगर मेहनताना चाहते हो तो यह लो. (हाथ निज़ाम की ओर बढ़ाती है. पर निज़ाम चुप खड़ा रहता है.) यह है सिर्फ़ पेशगी, मुसव्विर, पूरा मेहनताना तो हमारी सहेली देगी. तुम शायद जानते नहीं कि मैं तुम्हें किसकी तस्वीर बनाने के लिये कह रही हूँ. लाडबानू आगरे का सबसे दौलत मन्द साथ ही सबसे खूबसूरत शाहज़ादी है. (हाथ और आगे बढ़ाती है)

निज़ाम—(कुछ पीछे हटते हुए) गुस्ताखी माफ़ हो, सच्ची मुसव्विरी का मेहनताना सबसे दौलत मन्द शाहज़ादी क्या दुनिया का बड़े से बड़ा शहंशाह भी अदा नहीं कर सकता. फ़न की कीमत ही नहीं होती. लेकिन सज़ा मैं मंज़ूर कर चुका हूँ, आपका हुक्म सर आँखो पर.

पहली सहेली—शुक्रिया.

तीनों सहेली—(एक साथ) सब की तरफ़ से.

निज़ाम—(लाड से) आपको कम से कम तीन दिनो तक रोज़ाना यहाँ तशरीफ़ लाना होगा. चौथे दिन मैं तस्वीर दे सकूंगा.

सब सहेलियाँ—(एक साथ जल्दी से) हाँ, हाँ, हम सब तीन दिनो तक बराबर आयेंगी.

निज़ाम—(लाड से, जिस चौकी पर स्वयं बैठा था. उसकी ओर संकेत कर) आप इस पर तशरीफ़ रक्खें.

पहली सहेली—फिर तुम कहाँ बैठोगे ?

निज़ाम—मैं खड़े खड़े ज़्यादा अच्छी तरह से बना सकूँगा.

لاڈبانو کی اَور مڑکر، جلدی سے اس کے گلے سے ایک ہار اُتارتے ہوئے) اور........(اور اگر محنتانا چاہتے ہو تو یہ لو۔ ہاتھ نظام کی اَور بڑھاتی ہے۔ پر نظام چپ کھڑا رہتا ہے۔) یہ ہے صرف پیشگی، مصوّر، پورا محنتانا تو ہماری سہیلی دے گی۔ تم شاید جانتے نہیں کہ میں تمہیں کس کی تصویر بنانے کے لئے کہہ رہی ہوں۔ لاڈبانو آگرہ کی سب سے دولت مند ساتھ ہی سب سے خوبصورت شہزادی ہے۔ (ہاتھ اور آگے بڑھاتی ہے)

نظام—(کچھ پیچھے ہٹتے ہوئے) گستاخی معاف ہو، سچی مصوّری کا محنتانا سب سے دولت مند شہزادی کیا دنیا کا بڑے سے بڑا شہنشاہ بھی ادا نہیں کر سکتا۔ فن کی قیمت ہی نہیں ہوتی۔ لیکن سزا میں منظور کر چکا ہوں؛ آپ کا حکم سر آنکھوں پر۔

پہلی سہیلی—شکریہ۔

تینوں سہیلی—(ایک ساتھ) سب کی طرف سے۔

نظام—(لاڈ سے) آپ کو کم سے کم تین دونوں تک روزانہ یہاں تشریف لانا ہوگا۔ چوتھے دن میں تصویر دے سکوں گا۔

سب سہیلیاں—(ایک ساتھ جلدی سے) ہاں، ہاں، ہم سب تین دنوں تک برابر آئیں گی۔

نظام—(لاڈ سے، جس چوکی پر سوین بیٹھا تھا۔ اس کی اَور سنکیت کر) آپ اس پر تشریف رکھیں۔

پہلی سہیلی—پھر تم کہاں بیٹھو گے؟

نظام—میں کھڑے کھڑے زیادہ اچھی طرح سے بنا سکوں گا۔

[लाड सिर झुकाये हुए चुपचाप खड़ी रहती है; चौकी पर नहीं बैठती.]

पहली सहेली—(लाड को खींच कर जबरदस्ती चौकी की ओर ले जाते हुए) शादी होने जा रही है, और तस्वीर बनवाने में भी आती है इन्हें शर्म !

[तीनों सहेलियाँ भी पहली सहेली की सहायता करती हैं. लाडबानू जबरन चौकी पर बिठाई जाती है, पर वह सर झुका लेती है. चारों सहेलियाँ उसके निकट खड़ी हो जाती हैं. निज़ाम तिपाये को थोड़ा सा हटा कर, उसपर दूसरा काग़ज़ लगा, लाड की बग़ल में खड़ा होकर क़लम उठाता है.]

निज़ाम—(लाड की ओर देखते हुए) आप थोड़ा सर उठाकर अपने सामने के उस चम्पे के दरख़्त की तरफ़ देखिये.

चारों सहेली—(एक साथ) हाँ, उठाओ .... उठाओ सर.

निज़ाम—और यह यक़ीन रखियेगा कि कपड़ों पर पड़े हुए रङ्ग के दाग़ तस्वीर पर न आयेंगे.

[सहेलियाँ फिर खिलखिला कर हँसती हैं. लाडबानू जब फिर भी सर नहीं उठाती तब पहली सहेली उसकी ठुड्डी पकड़ कर उसका सर ऊँचा कर देती है. सहेलियाँ फिर हँस पड़ती हैं. इस बार निज़ाम भी मुस्कराने लगता है और वह लाड की तरफ़ देखते हुए क़लम चित्रपट पर चलाना आरम्भ करता है. अब सहेलियाँ कभी, लाड, कभी निज़ाम और कभी चित्रपट की ओर देखती हैं.]

लघु यवनिका

[لاڈ سر جھکائے ہوئے چپ چاپ کھڑی رہتی ہے؛ چوکی پر نہیں بیٹھتی]

پہلی سہیلی — (لاڈ کو کھینچ کر زبردستی چوکی کی اور لے جاتے ہوئے) شادی ہونے جا رہی ہے، اور تصویر بنوانے میں بھی آتی ہے انھیں شرم!

[تینوں سہیلیاں بھی پہلی سہیلی کی سہایتا کرتی ہیں۔ لاڈ بانو جبراً چوکی پر بیٹھائی جاتی ہے، پر وہ سر جھکا لیتی ہے۔ چاروں سہیلیاں اس کے نکٹ کھڑی ہو جاتی ہیں۔ نظام تپائے کو تھوڑا سا ہٹا کر، اس پر دوسرا کاغذ لگا، لاڈ کی بغل میں کھڑا ہو کر قلم اٹھاتا ہے۔]

نظام — (لاڈ کی اور دیکھتے ہوئے) آپ تھوڑا سر اٹھا کر اپنے سامنے کے اس چمپے کے درخت کی طرف دیکھئے۔

چاروں سہیلی — (ایک ساتھ) ہاں، اٹھاؤ .... اٹھاؤ سر۔

نظام — اور یہ یقین رکھئے گا کہ کپڑوں پر پڑے ہوئے رنگ کے داغ تصویر پر نہ آئیں گے۔

[سہیلیاں پھر کھلکھلا کر ہنستی ہیں۔ لاڈ بانو جب پھر بھی سر نہیں اٹھاتی تب پہلی سہیلی اس کی ٹھڈی پکڑ کر اس کا سر اونچا کر دیتی ہے۔ سہیلیاں پھر ہنس پڑتی ہیں۔ اس بار نظام بھی مسکرانے لگتا ہے اور وہ لاڈ کی طرف دیکھتے ہوئے قلم چتر پٹ پر چلانا آرمبھ کرتا ہے۔ اب سہیلیاں کبھی، لاڈ، کبھی نظام اور کبھی چتر پٹ کی اور دیکھتی ہیں۔]

لگھو یونیکا

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—आगरे में फ़रीद के मकान में फ़रीद का कमरा.

समय—प्रातःकाल.

[कमरा उस समय के अन्य कमरों के सदृश ही है; पर अब तक के देखे हुए सब कमरों से बड़ा और सबसे अधिक सजा हुआ. फ़रीद और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातें कर रहे हैं. फ़रीद हुक़्क़ा पी रहा है.]

फ़रीद—इतना वक़्त गुज़र जाने पर भी हम आगरे में कुछ न कर सके, पंडित.

ब्रह्मादित्य—हाँ, क्योंकि यहाँ हम हैं एक अमीर दौलत ख़ाँ के नौकर, जिसके हाथ में कोई अधिकार नहीं. जौनपुर के सदृश आप न यहाँ के सूबेदार के नौकर हैं, और न सहसराम के समान जागीर के मालिक.

फ़रीद—तो यह तय है कि बिना एख़्तियारात के आदमी समझने पर भी कुछ नहीं कर सकता.

ब्रह्मादित्य—इसमें क्या संदेह है ? यहाँ की भी समस्याएँ तो वही हैं जो जौनपुर और सहसराम की थीं. आपको अधिकार होते तो जौनपुर और ससहराम में किया हुआ कार्य आप यहाँ बहुत कम समय में कर डालते.

फ़रीद—(विचारते हुए) हाँ, क्योंकि यहाँ मेरी हालत मदरसे में शागिर्द न होकर उस्ताद की है, और इसमें तो शक ही नहीं कि जौनपुर, सहसराम और यहाँ, सब जगह, सवाल वही के वही हैं.

सदृश=तरह.

پانچواں درشیہ

استھان — آگرہ میں فرید کے مکان میں فرید کا کمرہ۔

سمے — پرات: کال۔

[کمرہ اس سمے کے انیہ کمروں کے سدرش ہی ہے؛ پر اب تک کے دیکھے ہوئے سب کمروں سے بڑا اور سب سے ادھک سجا ہوا۔ فرید اور برہمادیتہ بیٹھے ہوئے باتیں کر رہے ہیں۔ فرید حقہ پی رہا ہے۔]

فرید — اتنا وقت گذر جانے پر بھی ہم آگرہ میں کچھ نہ کر سکے، پنڈت۔

برہمادیتہ — ہاں، کیوں کہ یہاں ہم ہیں ایک امیر دولت خاں کے نوکر، جس کے ہاتھ میں کوئی ادھیکار نہیں۔ جون پور کے سدرش آپ نہ یہاں کے صوبےدار کے نوکر ہیں، اور نہ سہسرام کے سمان جاگیر کے مالک۔

فرید — تو یہ طے ہے کہ بنا اختیارات کے آدمی سمجھنے پر بھی کچھ نہیں کر سکتا۔

برہمادیتہ — اسمیں کیا سندیہہ ہے؟ یہاں کی بھی سمسیائیں تو وہی ہیں جو جون پور اور سہسرام کی تھیں۔ آپ کو ادھیکار ہوتے تو جون پور اور سہسرام میں کیا ہوا کاریہ آپ یہاں بہت کم سمے میں کر ڈالتے۔

فرید — (وچارتے ہوئے) ہاں، کیوں کہ یہاں میری حالت مدرسے میں شاگرد نہ ہو کر استاد کی ہے، اور اس میں تو شک ہی نہیں کہ جون پور، سہسرام اور یہاں، سب جگہ، سوال وہی کے وہی ہیں۔

سدرش = طرح۔

(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुँआ छोड़ते हुए) पंडित, हिन्दुस्तान के पायेतख़्त मे आकर तो मुझे यह पक्का यक़ीन हो गया कि इस मुल्क मे सब जगह सवाल यक साँ हैं.

ब्रह्मादित्य—और अब तो आप मेरा वह कहना भी मानेंगे कि यदि आप को अवसर प्राप्त हो तो आप समस्त देश में वही कर सकते हैं. जो आपने जौनपुर और अपनी जागीर में किया है.

फ़रीद—(गम्भीरता से विचारते हुए) शायद. लेकिन, पंडित, तुम न जाने मेरे लिए कैसे कैसे ख़्वाब देखा करते हो; मुझे कभी ऐसा मौक़ा नहीं मिल सकता.

ब्रह्मादित्य—हमारे संस्कृत में एक कवि ने कहा है...... 'पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः

फ़रीद—याने ?

ब्रह्मादित्य—याने यह कि पुरुष के भाग्य मे क्या है, यह भगवान भी नहीं जानता तो मनुष्य क्या जानेगा.

फ़रीद—(मुस्कराते हुए) हर बात में मुझे बढ़ावा देना यह तो तुम्हारा काम ही है.

ब्रह्मादित्य—(कुछ अप्रसन्न होकर) यह कह कर तो आप मेरा अपमान कर रहे हैं.

फ़रीद—(कुछ चिन्तित होकर) तुम्हारी बेइज़्ज़ती ! यह तुम क्या कह रहे हो ? (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुँआ छोड़ते हुए) अपने सबसे बड़े दोस्त की बेइज़्ज़ती ! कभी मुझसे यह हिमाक़त भी हो सकती है ?

(حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) پنڈت، ہندستان کے پایۂ تخت میں آکر تو مجھے یہ پکا یقین ہو گیا کہ اس ملک میں سب جگہ سوال یکساں ہیں۔

برہمادیتہ — اور اب تو آپ میرا وہ کہنا بھی مانیں گے کہ یدی آپ کو اوسر پراپت ہو تو آپ سمست دیش میں وہی کر سکتے ہیں، جو آپ نے جونپور اور اپنی جاگیر میں کیا ہے۔

فرید — (گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) شاید! لیکن، پنڈت، تم نہ جانے میرے لئے کیسے کیسے خواب دیکھا کرتے ہو؛ مجھے کبھی ایسا موقعہ نہیں مل سکتا۔

برہمادیتہ — ہمارے سنسکرت میں ایک کوی نے کہا ہے ...... پُرشسیہ بھاگیں دیوو نہ جانتی کتو منشیہ۔

فرید — یعنی؟

برہمادیتہ — یعنی یہ کہ پُرش کے بھاگیہ میں کیا ہے، یہ بھگوان بھی نہیں جانتا تو منشیہ کیا جانے گا۔

فرید — (مسکراتے ہوئے) ہر بات میں مجھے بڑھاوا دینا یہ تو تمہارا کام ہی ہے۔

برہمادیتہ — (کچھ اپرسن ہو کر) یہ کہہ کر تو آپ میرا اپمان کر رہے ہیں۔

فرید — (کچھ چنتت ہو کر) تمہاری بے عزتی! یہ تم کیا کہہ رہے ہو؟ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) اپنے سب سے بڑے دوست کی بے عزتی! کبھی مجھ سے یہ حماقت بھی ہو سکتی ہے؟

برہمادیتہ — یہ کہ آپ کو بڑھاوا دینا ہی میرا کام ہے تب [illegible]

तो मुझसे अधिक बुरा मनुष्य हो ही नहीं सकता. फिर तो मैं आपका परम मित्र न होकर यथार्थ में घोर शत्रु हूँ. समय-समय पर क्या मैं आपके दोषों की ओर भी संकेत नहीं करता रहता ?

फरीद—क्यों नहीं.

ब्रह्मादित्य—तो फिर आपने यह कैसे कहा कि हर बात में आप को बढ़ावा देना ही मेरा काम है. यदि एक ओर मैं आपका ध्यान दोषों की ओर खींचता हूँ, तो दूसरी ओर आपके गुणों को याद दिला कर आपको उत्साहित करते रहना भी मेरा कर्त्तव्य है. आपको मैं हिन्दुओं के कुछ ग्रन्थ रामायण, महाभारत आदि सुना चुका हूँ. आपको कर्ण और शाल्य का आख्यान स्मरण है ?

फरीद—हाँ, हाँ, अच्छी तरह. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) वही न, जिसमें अर्जुन से लड़ने को जाते वक़्त कर्ण के सारथी होते हुए भी शाल्य ने कर्ण की बुराइयों की झड़ी लगादी थी ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, वही. महाभारत में उसे कर्ण का तेजोवध कहा है. कृष्ण की सम्मति से युधिष्ठिर ने शाल्य से यह करने के लिये प्रार्थना की थी. फल यह हुआ कि युद्ध के पूर्व ही कर्ण का तेज क्षीण हो गया और वह अर्जुन से पूरे पराक्रम के साथ लड़ ही न सका. सच्चा मित्र, मित्र का तेजोवध नहीं कर सकता. उसका कार्य यदि दोष दिखाना है तो गुण भी; और गुण अधिक. हाँ गुण सच्चे होने चाहिये. मुझे आपमें जो सच्चे गुण दिखे हैं, उन्हीं की मैंने प्रशंसा की है; उन्हीं के कारण मैंने आपको उत्साह दिलाया है. वह गुण ही ऐसे हैं, जिनसे मेरा विश्वास है कि आप [illegible] में न आने

تو مجھسے اَدھک برا منشیہ ہو ہی نہیں سکتا. پھر تو میں آپکا پرم متّر نہ ہوکر یتھارتھ میں گھور شترو ہوں ۔ سمے سمے پر کیا میں آپ کے دوشوں کی اُور بھی سنکیت نہیں کرتا رہتا؟

فرید — کیوں نہیں.

برہمادیتہ — تو پھر آپ نے یہ کیسے کہا کہ ہر بات میں آپ کو بڑھاوا دینا ہی میرا کام ہے. یدی ایک اُور میں آپ کا دھیان دوشوں کی اُور کھینچتا ہوں، تو دوسری اُور آپ کے گنوں کو یاد دلا کر آپ کو اتساہت کرتے رہنا بھی میرا کرتویہ ہے. آپ کو میں ہندوؤں کے کچھ گرنتھ رامائن، مہابھارت آدی سنا چکا ہوں. آپ کو کرن اور شالیہ کا آکھیان سمرن ہے.

فرید — ہاں، ہاں، اچھی طرح. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) وہی نا. جس میں ارجن سے لڑنے کو جاتے وقت کرن کے سارتھی ہوتے ہوئے بھی شالیہ نے کرن کی برائیوں کی جھڑی لگا دی تھی؟

برہمادیتہ — ہاں، وہی. مہابھارت میں اسے کرن کا تیجودھ کہا ہے. کرشن کی سمّتی سے یدھشٹر نے شالیہ سے یہ کرنے کے لئے پرارتھنا کی تھی. پھل یہ ہوا کہ یدھ کے پوروہی کرن کا تیج چھین ہو گیا اور وہ ارجن سے پورے پراکرم کے ساتھ لڑ ہی نہ سکا. سچا متر، متر کا تیجودھ نہیں کر سکتا. اس کا کاریہ یدی دوش دکھانا ہے تو گن بھی؛ اور گن ادھک. ہاں گن سچے ہونے چاہئیے. مجھے آپ میں جو سچے گن دکھے ہیں، انھیں کی میں نے پرشنسا کی ہے؛ انھیں کے کارن میں نے آپ کو اتساہ دلایا ہے. وہ گن ہی ایسے ہیں، جن سے میرا وشواس ہے کہ آپ اس دنیا میں نہ جلنے

آکھیان = مباحثہ.

कथा-कथा कर सकेंगे. कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सूर्य के उदय होने पर ही उसका पूजन करते हैं, पर सच्चे ब्राह्मण उसके प्रकाश फैलने के पूर्व, उषःकाल मे ही उसे अर्घ्य दे लेते हैं.

[हाथ में एक खुली चिट्ठी लिये, आँसू बहाते हुए, विव्हल निजाम का शीघ्रता से प्रवेश.]

निजाम—(भर्राये हुए स्वर मे) भाई साहब !.......भाई साहब! अब्बा........अब्बा जान चल बसे!

[फरीद और ब्रह्मादित्य खड़े हो जाते हैं ! फरीद की आँखों मे आँसू भर आते हैं. तीनो कुछ देर तक चुपचाप खड़े रहते हैं.]

निजाम—(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर मे) तो हमे फौरन सहसराम चलना चाहिये.

फरीद—(रूमाल से आँखें पोंछते हुए) हाँ, चलना ही होगा.

निजाम—(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर में) असबाब बँधावने का इन्तजाम करूँ ?

ब्रह्मादित्य—(कुछ रुक-रुक कर) अच्छा, अभी बैठिये तो.

निजाम—(उसी प्रकार मुद्रा और स्वर में) यह वक़्त बैठने का है, पंडित जी ?

ब्रह्मादित्य—सभी वक़्त बैठने और खड़े रहने, दोनों के रहते हैं.

निजाम—(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर में) पंडित जी, यह वक्त तो चलने का है, फौरन से पेश्तर चलने का.

ब्रह्मादित्य—(दोनों भाईयो को बारी-बारी से देखते हुए) देखिये, केवल भावुकता में बहकर कोई काम करना अच्छा नहीं होता. मैं

अर्घ्य=पानी.

کیا کیا کر سکیں گے. کچھ وکتی ایسے ہوتے ہیں جو سوریہ کے اُدے ہونے پر ہی اس کا پوجن کرتے ہیں، پر سچے براہمن اس کے پرکاش پھیلنے کے پوروا، اُشہ کال میں ہی اُسے ارگھیہ دے لیتے ہیں.

[ہاتھ میں ایک کھلی چٹھی لئے، آنسو بہاتے ہوئے، وِہول نظام کا شیگھرتا سے پرویش.]

نظام — (بھرّائے ہوئے سور میں) بھائی صاحب....... بھائی صاحب! ابّا...... ابّا جان چل بسے!

[فرید اور برہمادیتیہ کھڑے ہو جاتے ہیں! فرید کی آنکھوں میں آنسو بھر آتے ہیں. تینوں کچھ دیر تک چپ چاپ کھڑے رہتے ہیں.]

نظام — (اسی پرکار کی مُدرا اور سور میں) تو ہمیں فوراً سہسرام چلنا چاہیے.

فرید — (رومال سے آنکھیں پونچھتے ہوئے) ہاں چلنا ہی ہوگا.

نظام — (اسی پرکار کی مُدرا اور سور میں) اسباب بندھوانے کا انتظام کروں؟

برہمادیتیہ — (کچھ رک رک کر) اچھا، ابھی بیٹھئے تو.

نظام — (اسی پرکار مُدرا اور سور میں) یہ وقت بیٹھنے کا ہے، پنڈت جی؟

برہمادیتیہ — سبھی وقت بیٹھنے اور کھڑے رہنے، دونوں کے رہتے ہیں.

نظام — (اسی پرکار کی مدرا اور سور میں) پنڈت جی، یہ وقت تو چلنے کا ہے، فوراً سے پیشتر چلنے کا.

برہمادیتیہ — (دونوں بھائیوں کو باری باری سے دیکھتے ہوئے) دیکھئے، کیول بھاوکتا میں بہہ کر کوئی کام کرنا اچھا نہیں ہوتا. میں

यथेष्ट समय तक आपकी जागीर मे रहकर सब कुछ देख आया हूँ. मेरी ही सम्मति से आप दूसरी बार जागीर छोड़ कर आगरा आए. आप लोगों के विरुद्ध वहां जैसे-जैसे षड्‌यंत्र रचे जाते थे, उनकी सूचना समय-समय पर मैंने (फ़रीद की ओर देख कर) आपको दी थी. जो होना था सो तो हो चुका. आप वहाँ जाकर ही क्या कर लेगें ? अब आपके पिता भी नहीं रहे. पिता के न रहने के कारण वहॉ जाने पर आप लोगों पर ऐसी आपत्ति भी आ सकती है जिसकी हम लोग कल्पना तक नहीं कर सकते. (कुछ रुक कर) बैठिये. बैठ तो जाइए.

[तीनों बैठ जाते हैं.]

फ़रीद— (विचारते हुए) पर चलना तो होगा, पंडित.

निज़ाम— (जल्दी से) ज़रूर, ज़रूर.

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से विचारते हुए) यदि चलना ही है तो सारा प्रबन्ध करके चलना होगा .

फ़रीद—क्या क्या इन्तज़ाम करने होंगे ?

ब्रह्मादित्य—(उसी प्रकार विचारते हुए) सब तो मैं यकायक नहीं बता सकता. पर सबसे पहले एक बात तो करनी ही होगी.

फ़रीद—क्या ?

ब्रह्मादित्य—आप बड़े हैं, पिता के पश्चात् जागीर पर आपका अधिकार है, अतः अपने मालिक दौलत ख़ाँ की मार्फ़त प्रयत्न कर आपके नाम जागीर का शाही फ़र्मान लेकर तब चलना होगा.

निज़ाम—(खड़े होते हुए) उफ़ ! तब.........तब तो हमारे चलने में बहुत वक़्त लगेगा.

یتھیشٹ سمے تک آپ کی جاگیر میں رہ کر سب کچھ دیکھ آیا ہوں . میری ہی سمتی سے آپ دوسری بار جاگیر چھوڑ کر آگرہ آئے . آپ لوگوں کے ورودھ وہاں جیسے جیسے شڈیتر رچے جاتے تھے، ان کی سوچنا سمے سمے پر میں نے (فرید کی اور دیکھ کر) آپ کو دی تھی. جو ہونا تھا سو تو ہو چکا. آپ وہاں جا کر ہی کیا کر لیں گے ؟ اب آپ کے پتا بھی نہیں رہے. پتا کے نہ رہنے کے کارن وہاں جانے پر آپ لوگوں پر ایسی آپتی بھی آ سکتی ہے جس کی ہم لوگ کلپنا تک نہیں کر سکتے. (کچھ رک کر) بیٹھئے، بیٹھ تو جائیے .

[تینوں بیٹھ جاتے ہیں]

فرید— (وچارتے ہوئے) پر چلنا تو ہوگا، پنڈت.

نظام— (جلدی سے) ضرور، ضرور.

برہمادیتہ— (گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) یدی چلنا ہی ہے تو سارا پربندھ کر کے چلنا ہوگا.

فرید— کیا کیا انتظام کرنے ہوں گے ؟

برہمادیتہ— (اسی پرکار وچارتے ہوئے) سب تو میں یکایک نہیں بتا سکتا. پر سب سے پہلے ایک بات تو کرنی ہی ہوگی .

فرید— کیا ؟

برہمادیتہ— آپ بڑے ہیں، پتا کے پشچات جاگیر پر آپ کا ادھیکار ہے، اتः اپنے مالک دولت خاں کی مارفت پریتن کر آپ کے نام جاگیر کا شاہی فرمان لے کر تب چلنا ہوگا.

نظام— (کھڑے ہوتے ہوئے) اُف ! تب ..... تب تو ہمارے چلنے میں بہت وقت لگے گا.

[illegible]

ब्रह्मादित्य—पर जैसी परिस्थिति है उसे देखते हुए मेरी समझ में ही नहीं आता कि जाने में जल्दी की आवश्यकता ही क्या है ?

[निजाम कोई उत्तर न देकर सर झुका लेता है. उसके आँसू अभी भी नहीं रुकते. फ़रीद और ब्रह्मादित्य दोनों उसकी ओर देखते हैं.]

लघु यवनिका

छठवाँ दृश्य

स्थान—आगरे का उद्यान.

समय— संध्या.

[दृश्य वही है जो चौथे दृश्य मे था. लाडबानू अपनी चारो सहेलियों के साथ इधर उधर घूम रही है. उसकी चाल और मुद्रा दोनों में बेचैनी दृष्टि गोचर होती है, परन्तु जान पड़ता है कि वह इस बेचैनी को प्रकट न होने देने का भरसक प्रयत्न कर रही है.

पहली सहेली—रोज़ाना इससे तो बहुत पेश्तर वह मुसव्विर आ जाया करता था !

दूसरी—बेशक !

तीसरी—हाँ, हाँ, कहीं पेश्तर.

चौथी—लेकिन आज वह आयगा जरूर. कल तस्वीर करीब क़रीब खतम हो चुकी थी. आज ही तो देने का वादा था.

पहली—पर तस्वीर उसने कमाल की बनाई है. कल ही ऐसा नजर आता था जैसे मुँह मे बोल रही हो

برہمادیتہ — پر جیسی پرستھتی ہے اُسے دیکھتے ہوئے میری سمجھ میں ہی نہیں آتا کہ جانے میں جلدی کی آوشیکتا ہی کیا ہے؟

[نظام کوئی اُتر نہ دے کر سر جھکا لیتا ہے۔ اس کے آنسو ابھی بھی نہیں رکتے۔ فرید اور برہمادیتہ دونوں اس کی اُور دیکھتے ہیں۔]

لگھو یونیکا

چھٹواں درشیہ

استھان — آگرہ کا اُدیان۔

سمے — سندھیا۔

[درشیہ وہی ہے جو چوتھے درشیہ میں تھا۔ لاڈبانو اپنی چاروں سہیلیوں کے ساتھ ادھر اُدھر گھوم رہی ہے۔ اس کی چال اور مُدرا دونوں میں بے چینی درشٹی گوچر ہوتی ہے، پرنتو جان پڑتا ہے کہ وہ اس بے چینی کو پرکٹ نہ ہونے دینے کا بھرسک پریتن کر رہی ہے۔]

پہلی سہیلی — روزانہ اس سے تو بہت پیشتر وہ مصور آجایا کرتا تھا!

دوسری — بے شک!

تیسری — ہاں، ہاں، کہیں پیشتر۔

چوتھی — لیکن آج وہ آئے گا ضرور۔ کل تصویر قریب قریب ختم ہو چکی تھی۔ آج ہی تو دینے کا وعدہ تھا۔

[illegible] نظر آتا تھا

दूसरी—और कल खतम कहाँ हुई थी ? पूर्ण होते होते तो और न जाने कैसी हो जावेगी.

तीसरी—मेरे एक रिश्तेदार भी मुसव्विर थे. मैंने उन्हें तस्वीर बनाते देखा है. कोई भी तस्वीर पूरी बना चुकने पर भी न जाने वह घन्टों तक उसमें क्या देखा करते थे. देखते देखते इधर उधर क़लम से छूते से जाते थे; हालाँ कि वह छोटी छोटी दुरुस्तियाँ अलग अलग न दिखाई देती थीं, लेकिन उनका यकजा नतीजा यह होता था कि तस्वीर में जान सी पड़ जाती थी.

चौथी—इसी कारगुज़ारी मे इस मुसव्विर को भी देर हुई होगी.

पहली—जो कुछ हो, इन्तज़ार तो हमें करना ही होगा. क्योंकि कल से तो शादी की रस्में शुरू हो जायेंगी, फिर तो शहज़ादी आ न सकेंगी. (लाड से) क्यों बानू ?

लाड—(बेचैनी को दबाने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए) मैं कुछ हीं न जानती.

पहली—ओ हो ! बड़ी भोली भाली ! क्या पूछना.

लाड—इसमें भोली भाली की क्या बात है ? तस्वीर बनवा कर एक आफ़त मोल ले ली. अब जब मिल नहीं रही है तब बेचैनी से सब की सब इधर से उधर घूम रही हो.

दूसरी—और तुम्हें थोड़े ही बेचैनी है ?

लाड—मुझे ? मुतलक़ नहीं.

तीसरी—तुम्हें दुहरी बेचैनी है, सुना, दुहरी.

دوسری — اور کل ختم کہاں ہوئی تھی؟ پورن ہوتے ہوتے تو اور نہ جانے کیسی ہو جائے گی۔

تیسری — میرے ایک رشتہ دار بھی مصوّر تھے۔ میں نے انھیں تصویر بناتے دیکھا ہے۔ کوئی بھی تصویر پوری بنا چکنے پر بھی نہ جانے وہ گھنٹوں تک اس میں کیا دیکھا کرتے تھے۔ دیکھتے دیکھتے ادھر اُدھر قلم سے چھوتے سے جاتے تھے؛ حالانکہ وہ چھوٹی چھوٹی درستیاں الگ الگ نہ دکھائی دیتی تھیں، لیکن اُن کا یکجا نتیجہ یہ ہوتا تھا کہ تصویر میں جان سی پڑ جاتی تھی۔

چوتھی — اسی کارگذاری میں اس مصوّر کو بھی دیر ہوئی ہوگی۔

پہلی — جو کچھ ہو، انتظار تو ہمیں کرنا ہی ہوگا۔ کیوں کہ کل سے تو شادی کی رسمیں شروع ہو جائیں گی۔ پھر تو شاہزادی آ نہ سکیں گی۔ (لاڈ سے) کیوں بانو؟

لاڈ — (بےچینی کو دبانے کا پورن پریتن کرتے ہوئے) میں کچھ نہیں جانتی۔

پہلی — او ہو! بڑی بھولی بھالی! کیا پوچھنا۔

لاڈ — اس میں بھولی بھالی کی کیا بات ہے؟ تصویر بنوا کر ایک آفت مول لے لی۔ اب جب مل نہیں رہی ہے تب بےچینی سے سب کی سب ادھر سے اُدھر گھوم رہی ہو۔

دوسری — اور تمھیں تھوڑے ہی بےچینی ہے؟

لاڈ — مجھے؟ مطلق نہیں۔

تیسری — تمھیں دُہری بےچینی ہے، سُنا، دُہری۔

लाड—(खीझकर) दुहरी ? क्या मतलब है तुम्हारा ?

तीसरी—(मुस्कराते हुए) मेरा मतलब है कि हमें सिर्फ़ तस्वीर देखने की बेचैनी है और तुम्हें तस्वीर और मुसव्विर दोनों के देखने की.

[चारों खिलखिला कर हँस पड़ती हैं.]

लाड—(दाहिनी ओर बढ़ती हुई, कुछ क्रोध से) चलो, हम चलेंगी; मुझे तस्वीर नहीं चाहिये.

[चारों सहेलियाँ झपट कर लाड को पकड़ लेती हैं.]

तीसरी—लो, तुम तो मज़ाक़ मज़ाक़ में नाराज़ हो गईं.

चौथी—(लाड की ओर कातर दृष्टि से देखते हुए) क्यों, नाराज़ हो गयीं ?

दूसरी—सचमुच नाराज़ हो गयीं ?

पहली—भला कहीं सहेलियों से भी नाराज़ हुआ करते हैं ?

[लाडबानू प्रयत्न कर हँस पड़ती है, परन्तु वह प्रयत्न करके हँसी है, यह उसकी हँसी से ज्ञात हो जाता है.]

पहली—(कुछ ठहर कर) अच्छा देखो, हम सब कोई अच्छा सा गाना गायें; तब तक वह ज़रूर ही आ जायगा.

तीनों—(एक साथ) यह ठीक है. यह ठीक है.

[गान आरंभ होता है, पहली पंक्ति पहली सहेली गाती है, दूसरी सब मिल कर और दूसरी पूरी होने पर पहली भी सब मिल कर. अब एक एक अन्तरा एक एक गाती है और फिर पहली और दूसरी पंक्तियाँ सब मिलकर. लाडबानू भी इस गान में सहेलियों

لاڈ۔ (کھیجھ کر) دُہری ؟ کیا مطلب ہے تمھارا ؟

تیسری۔ (مسکراتے ہوئے) میرا مطلب ہے کہ ہمیں صرف تصویر دیکھنے کی بےچینی ہے اور تمھیں تصویر اور مصور دونوں کے دیکھنے کی۔

[چاروں کھلکھلا کر ہنس پڑتی ہیں۔]

لاڈ۔ (داہنی اور بڑھتی ہوئی، کچھ کرودھ سے) چلو، ہم چلیں گی؛ مجھے تصویر نہیں چاہئے۔

[چاروں سہیلیاں جھپٹ کر لاڈ کو پکڑ لیتی ہیں]

تیسری۔ لو، تم تو مذاق مذاق میں ناراض ہوگئیں۔

چوتھی۔ (لاڈ کی اور کاتر درشٹی سے دیکھتے ہوئے) کیوں، ناراض ہوگئیں ؟

دوسری۔ سچ مچ ناراض ہوگئیں ؟

پہلی۔ بھلا کہیں سہیلیوں سے بھی ناراض ہوا کرتے ہیں ؟

[لاڈ بانو پریتن کر ہنس پڑتی ہے، پرنتو وہ پریتن کرکے ہنسی ہے، یہ اُس کی ہنسی سے گیات ہو جاتا ہے۔]

پہلی۔ (کچھ ٹھہر کر) اچھا دیکھو ہم سب کوئی اچھا سا گانا گائیں؛ تب تک وہ ضرور ہی آجائے گا۔

تینوں۔ (ایک ساتھ) یہ ٹھیک ہے۔ یہ ٹھیک ہے۔

[گان آرمبھ ہوتا ہے، پہلی پنکتی پہلی سہیلی گاتی ہے۔ دوسری سب مل کر اور دوسری پوری ہونے پر پہلی بھی سب مل کر۔ اب ایک ایک انترا ایک ایک گاتی ہے اور پھر پہلی اور دوسری پنکتیاں سب مل کر۔ لاڈ بانو بھی اس گان میں سہیلیوں

का साथ विवश सी होकर देती है, परन्तु उसकी दृष्टि बार बार दाहिनी ओर दौड़ जाती है और जब वहाँ से कोई आता हुआ नहीं दीखता तब उसकी दृष्टि की बेचैनी छिपाने का प्रयत्न करने पर भी नहीं छिपती.]

गीत

दीदार दिखादे प्यारे
संसार नहीं भाता मुझको
अब चैन नहीं आता मुझको
दीदार दिखादे प्यारे
रह रह कर तेरी याद मुझे
कर जाती है बरबाद मुझे
दीदार दिखादे प्यारे
जल्दी से अब आजा आजा
दिल तड़प रहा है समझा जा
दीदार दिखादे प्यारे

पहली—(गान पूर्ण होने पर चारों ओर होते हुए अँधेरे को देखकर) अब तो सचमुच ही मुसव्विर के आने की बहुत कम उम्मीद रह गई.

दूसरी—(उसी प्रकार चारों ओर देखकर) हाँ, अँधेरा हो चला और अब तक भी पता नहीं.

तीसरी—हमने उसका न नाम पूछा न पता.

चौथी—बेशक यह बड़ी भारी ग़लती हुई.

کا ساتھ بِوَش سی ہو کر دیتی ہے، پرنتو اُس کی درشٹی بار بار داہنی اور دوڑ جاتی ہے اور جب وہاں سے کوئی آتا ہوا نہیں دکھتا تب اُس کی درشٹی کی بے چینی چھپانے کا پرتن کرنے پر بھی نہیں چھپتی]

گیت

دیدار دکھا دے پیارے
سنسار نہیں بھاتا مجھ کو
اب چین نہیں آتا مجھ کو
دیدار دکھا دے پیارے
رہ رہ کر تیری یاد مجھے
کر جاتی ہے برباد مجھے
دیدار دکھا دے پیارے
جلدی سے اب آجا آجا
دل تڑپ رہا ہے سمجھا جا
دیدار دکھا دے پیارے

پہلی — (گان پورن ہونے پر چاروں اور ہوتے ہوئے اندھیرے کو دیکھ کر) اب تو سچ مچ ہی مصور کے آنے کی بہت کم اُمید رہ گئی۔

دوسری — (اُسی پرکار چاروں اور دیکھ کر) ہاں اندھیرا ہو چلا اور اب تک بھی پتہ نہیں۔

تیسری — ہم نے اُس کا نہ نام پوچھا نہ پتہ۔

چوتھی — بیشک یہ بڑی بھاری غلطی ہوئی۔

[कुछ देर निस्तब्धता.]

पहली—(कुछ देर पश्चात् लाड से) क्यों, बानू, चला जाय ?

लाड—(बेचैनी को रोकने का अत्यधिक प्रयत्न करते हुए) चला……चला जाय ? (कुछ रुक कर अपने सर पर हाथ फेरते हुए) पर, पर मेरा सर कुछ भारी भारी सा मालूम होता है. थोड़ा और ठहरा जाय. (हताश सी होकर जहाँ तस्वीर बनवाने के समय बैठती थी, उस स्थान पर बैठते हुए) कैसी ठन्डी ठन्डी हवा चल रही है.

पहली—(मुस्कराते हुए) गाना गाने की मेहनत से सर में अक्सर दर्द हो जाया करता है.

दूसरी—(जो इसी बीच में जहाँ निज़ाम खड़ा होकर तस्वीर बनाता था, निज़ाम के सदृश ही खड़ी हो गई है) ख़ामोश ! (निज़ाम के सदृश स्वर में) आप थोड़ा सर उठा कर अपने सामने के उस चम्पे के दरख़्त की तरफ़ देखिये.

तीनों सहेली—(एक साथ) हाँ, उठाओ……उठाओ सर.

[पहली सहेली आगे बढ़कर लाड की ठुड्डी पकड़ कर सर ऊँचा कर देती है और सब सहेलियाँ हँस पड़ती हैं.]

लाड—(सहेली का हाथ झटकते हुए) हद हो चुकी मज़ाक की; बस भी करो.

[लाड की आँखों में आँसू छलछला आते हैं, उसकी मुद्रा से जान पड़ता है कि वह इन आँसुओं को रोकने में अपनी पूरी शक्ति खर्च कर रही है. कुछ देर निस्तब्धता.]

[کچھ دیر نستبدھتا]

پہلی ــ (کچھ دیر پشچات لاڈ سے) کیوں، بانو چلا جائے ؟

لاڈ ــ (بے چینی کو روکنے کا اتی ادھک پریتن کرتے ہوئے) چلا ..... چلا جائے ؟ (کچھ رُک کر اپنے سر پر ہاتھ پھیرتے ہوئے) پر، پر میرا سر کچھ بھاری بھاری سا معلوم ہوتا ہے، تھوڑا اور ٹھہرا جائے۔ (ہتاش سی ہو کر جہاں تصویر بنوانے کے سمے بیٹھتی تھی، اُس استھان پر بیٹھتے ہوئے) کیسی ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا چل رہی ہے۔

پہلی ــ (مسکراتے ہوئے) گانا گانے کی محنت سے سر میں اکثر درد ہو جایا کرتا ہے۔

دوسری ــ (جو اسی بیچ میں جہاں نظام کھڑا ہو کر تصویر بناتا تھا، نظام کے سدرش ہی کھڑی ہو گئی ہے) خاموش ! (نظام کے سدرش سوَر میں) آپ تھوڑا سر اُٹھا کر اپنے سامنے کے اُس چمپے کے درخت کی طرف دیکھئے۔

تینوں سہیلی ــ (ایک ساتھ) ہاں، اُٹھاؤ ..... اُٹھاؤ سر۔

[پہلی سہیلی آگے بڑھ کر لاڈ کی ٹھڈی پکڑ کر سر اونچا کر دیتی ہے اور سب سہیلیاں ہنس پڑتی ہیں۔]

لاڈ ــ (سہیلی کا ہاتھ جھٹکتے ہوئے) حد ہو چکی مذاق کی؛ بس بھی کرو۔

[لاڈ کی آنکھوں میں آنسو چھلچھلا آتے ہیں، اُسکی مُدرا سے جان پڑتا ہے کہ وہ ان آنسوؤں کو روکنے میں اپنی پوری شکتی خرچ کر رہی ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

लाड—(एकाएक खड़े होकर भर्राये हुए स्वर में) चलो, अब चलें.

पहली—और मुसव्विर ?

लाड—(रूखी हँसी हँसकर) मुसव्विर ! मुसव्विर अब नहीं आयगा;······कभी नहीं आयेगा.

[लाड अन्तिम वाक्य कहती हुई निर्जीव सी दाहिनी ओर आगे बढ़ती है. अब उसकी सहेलियाँ उसे नहीं रोकतीं. वे सब एक प्रकार की निराश दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखती हुई उसके पीछे पीछे जाती हैं.]

लघु-यवनिका

सातवाँ दृश्य

स्थान—सहसराम में फ़रीद का कमरा

समय—दोपहर

[फ़रीद, निज़ाम और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं. फ़रीद हुक़्क़ा पी रहा है.]

ब्रह्मादित्य—पर देख लिया न आपने, लड़ाई तथा रक्तपात की जितनी चर्चायें सुनी थीं, वे सब मिथ्या सिद्ध हुईं. न एक बूँद खून बहा और न एक मनुष्य की हिंसा हुई.

निज़ाम—इसका सबब है आपकी बुज़ुर्गाना सलाह. हम अगर जागीर के मुताल्लिक़ आगरे से शाही फ़रमान लेकर न आते तो खून

لاڈ — (ایکا ایک کھڑے ہو کر بھرّائے ہوئے سور میں) چلو، اب چلیں۔

پہلی — اور مصوّر؟

لاڈ — (روکھی ہنسی ہنس کر) مصوّر! مصوّر اب نہیں آئے گا، ...... کبھی نہیں آئے گا۔

[لاڈ آخری واکیہ کہتی ہوئی نرجیو سی داہنی اور آگے بڑھتی ہے۔ اب اس کی سہیلیاں اسے نہیں روکتیں۔ وے سب ایک پرکار کی نراش درشٹی سے ایک دوسرے کی اور دیکھتی ہوئی اس کے پیچھے پیچھے جاتی ہیں۔]

لگھو یونیکا

ساتواں درشیہ

استھان — سہسرام میں فرید کا کمرا

سمے — دوپہر

[فرید، نظام اور برہمادتیہ بیٹھے ہوئے ہیں۔ فرید حقّہ پی رہا ہے۔]

برہمادتیہ — پر دیکھ لیا نہ آپ نے، لڑائی تتھا رکت پات کی جتنی چرچائیں سُنی تھیں، وے سب متھیا سدّھ ہوئیں۔ نہ ایک بوند بھی خون بہا اور نہ ایک منش کی ہنسا ہوئی۔

نظام — اس کا سبب ہے آپ کی بزرگانہ صلاح۔ ہم اگر جاگیر کے متعلق آگرے سے شاہی فرمان لے کر نہ آتے تو خون کی ندیاں بہہ جاتیں۔

ब्रह्मादित्य—उस फ़रमान ने हमें सहायता दी, इसमें सन्देह नहीं पर निज़ाम, इसका मुख्य कारण कुछ दूसरा ही है.

निज़ाम—और क्या सबब हो सकता है ?

ब्रह्मादित्य—इसका मुख्य कारण है तुम्हारे भाई साहब द्वारा की हुई प्रजा की सेवाएँ. इन्हों ने जौनपुर से लौट कर यहाँ सच्चे हृदय से अगणित कष्ट उठा और नाना प्रकार के त्याग कर बिना किसी भेद भाव के प्रजा की जो सेवाएँ की हैं, उनके कारण हर जाति तथा समुदाय का बच्चा-बच्चा उनके साथ है. शाही फ़रमानो और सेनाओं से चाहे सम्पत्ति पर क्षणिक अधिकार प्राप्त हो जाय, पर बिना सच्चीं सेवा के हृदय पर अधिकार नहीं हो सकता और बिना हृदय पर अधिकार हुए किसी वस्तु पर भी स्थायी अधिकार नहीं रह सकता.

फ़रीद—लेकिन पंडित, सुलेमान और अहमद के भाई होते हुए भी उनके दिलों पर मेरा कोई असर नहीं, (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) वह चाँदे के सूबेदार मुहम्मद ख़ाँ सूर के पास मदद के लिये गये हैं. उन्हें मोहम्मद ख़ाँ अपने भाई से ज़्यादा मानता है.

ब्रह्मादित्य—इसका कारण स्वार्थ है. स्वार्थ पूर्ण हृदय पर भी सच्ची और निस्वार्थ सेवा अधिकार न कर सके, यह नहीं, पर उसमें समय लगता है, आपके सदृश भाई के प्रति सुलेमान और अहमद का हृदय भी परिवर्तित होगा.

फ़रीद—(गम्भीरता से विचारते और हुक़्क़ा का धुआँ धीरे-धीरे नाक से निकालते हुए) पंडित, तुम शायद इन्सान के दिल की अच्छाई की तरफ़ ही देखते हो.

परिवर्तित = तब्दील.

برھمادتیہ۔ اُس فرمان نے ہمیں سہایتا دی، اس میں سندیہ نہیں، پر نظام، اس کا مکھیہ کارن کچھ دوسرا ہی ہے۔

نظام ۔ اور کیا سبب ہو سکتا ہے؟

برھمادتیہ۔ اس کا مکھیہ کارن ہے تمھارے بھائی صاحب دوارا کی ہوئی پرجا کی سیوائیں۔ انھوں نے جونپور سے لوٹ کر یہاں سچے ہردے سے اگنت کشٹ اٹھا اور نانا پرکار کے تیاگ کر بنا کسی بھید بھاؤ کے پرجا کی جو سیوائیں کی ہیں، اُن کے کارن ہر جاتی تتھا سموداے کا بچہ بچہ اُن کے ساتھ ہے۔ شاہی فرمانوں اور سیناؤں سے چاہے سمپتی پر چھنک ادھیکار پراپت ہو جائے، پر بنا سچی سیوا کے ہردے پر ادھیکار نہیں ہو سکتا اور بنا ہردے پر ادھیکار ہوئے کسی وستو پر بھی ستھائی ادھیکار نہیں رہ سکتا۔

فرید۔ لیکن پنڈت، سلیمان اور احمد کے بھائی ہوتے ہوئے بھی اُنکے دلوں پر میرا کوئی اثر نہیں (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) وہ چاندنے کے صوبے دار محمد خاں سور کے پاس مدد کے لئے گئے ہیں۔ انھیں محمد خاں اپنے بھائی سے زیادہ مانتا ہے۔

برھمادیتہ۔ اسکا کارن سوارتھ ہے۔ سوارتھ پورن ہردے پر بھی سچی اور نسوارتھ سیوا ادھیکار نہ کر سکے، یہ نہیں، پر اس میں سمے لگتا ہے، آپ کے سدرش بھائی کے پرتی سلیمان اور احمد کا ہردے بھی پریورتت ہوگا۔

فرید۔ (گمبھیرتا سے بچارتے اور حقہ کا دھواں دھیرے دھیرے ناک سے نکالتے ہوئے) پنڈت، تم شاید انسان کے دل کی اچھائی کی طرف ہی دیکھتے ہو۔

अहादित्य—ऐसा.........? ऐसा तो नहीं. बिना शाही फ़रमान के मैं यहाँ आना ही न चाहता था. मैं मनुष्य हृदय के दोनों पहलुओं की ओर दृष्टि रखना चाहता हूँ.

(बाक़ी अगले अंक में)

यवनिका

بہادیتہ— ایسا ....؟ ایسا تو نہیں . بنا شاہی فرمان کے میں یہاں آنا ہی نہ چاہتا تھا . میں منشیہ ہردے کے دونوں پہلوؤں کی اور درشٹی رکھنا چاہتا ہوں .

یوانیکا

(باقی اگلے انک میں)

सूबाई भाषायें और संस्कृति

(भाई श्री कृष्णदास)

हिन्दुस्तान के बँटवारे ने जितने सवाल हमारे सामने पेश किये उनमें सबसे भयानक सवाल हमारी सस्कृति का था. राजनैतिक दाँव पेच और चालबाज़ियों के नतीजे मे हमने जहाँ बहुत कुछ खोया वहाँ हमने आपसी एकता और सम्बन्धों की पुरानी कड़ियों को भी बुरी तरह झकझोरा. अगर वह सब कड़ियाँ टूट कर बिखर नहीं गईं तो इसमें उन कड़ियो की मजबूती को ही धन्यवाद देना पड़ेगा हमने तो उन्हें टुकड़े-टुकड़े करने मे कोई कसर उठा नहीं रक्खी. हमारे बाप दादों ने अपनी हड्डियों को गला कर अपने खून के तेल से जो जोत जलाई वह जोत आँधी और बवण्डर के झकोरों से बुझाई नहीं जा सकी. वह बुझाई भी कैसे जा सकती थी? हम जिनकी औलाद और नुमइन्दा हैं उनकी कमाई कोई खोटी कमाई न थी. गाढ़े खून और पसीने की कमाई इतिहास की तेज़ धारा में चमकी और अधिक चमकी. वह बुझी नहीं, वह बुझ भी कैसे सकती थी? इसका सबूत है हमारी, तैंतीस करोड़ इन्सानों की, वह क़ौम जो पिछले भयानक दंगों राजनैतिक गद्दारियो और आर्थिक धोखेबाज़ियों के बावजूद जिन्दा ही नहीं है बल्कि अपनी आज़ादी, अपनी तरक़्की और प्रजातन्त्र के लिये खुल कर जंग भी कर रही है. इसका सबूत है साहित्य. भाषा और संस्कृति के मैदान मे वह एकता जो दुश्मनों की लाख कोशिशों के बावजूद जुदाई और अलगाव की राह पर नहीं गई. इस् इस मैदान में भी हमारे दुश्मनों ने क्या

صوبائی بھاشائیں اور سنسکرتی

(بھائی شری کرشن داس)

ہندستان کے بٹوارے نے جتنے سوال ہمارے سامنے پیش کئے اُن میں سب سے بھیانک سوال ہماری سنسکرتی کا تھا۔ راج نیتک داؤں پیچ اور چالبازیوں کے نتیجے میں ہم نے جہاں بہت کچھ کھویا وہاں ہم نے آپسی ایکتا اور سمبندھوں کی پرانی کڑیوں کو بھی بُری طرح جھکجھورا۔ اگر وہ سب کڑیاں ٹوٹ کر بکھر نہیں گئیں تو اُس میں اُن کڑیوں کی مضبوطی کو ہی دھنیہ واد دینا پڑے گا۔ ہم نے تو انھیں ٹکڑے ٹکڑے کرنے میں کوئی کسر اُٹھا نہیں رکھی۔ ہمارے باپ دادوں نے اپنی ہڈیوں کو گلا کر اپنے خون کے تیل سے جو جوت جلائی وہ جوت آندھی اور بونڈر کے جھکوروں سے بجھائی نہیں جا سکی۔ وہ بجھائی بھی کیسے جا سکتی تھی؟ ہم جن کی اولاد اور نمائندہ ہیں اُن کی کمائی کوئی کھوٹی کمائی نہ تھی۔ گاڑھے خون اور پسینے کی کمائی اتہاس کی تیز دھارا میں چمکی اور ادھک چمکی۔ وہ بجھی نہیں، وہ بجھ بھی کیسے سکتی تھی؟ اسکا ثبوت ہے ہماری، تینتیس کروڑ انسانوں کی وہ قوم جو پچھلے بھیانک دنگوں، راج نیتک غداریوں اور آرتھک دھوکے بازیوں کے باوجود زندہ ہی نہیں ہے بلکہ اپنی آزادی اپنی ترقی اور پرجاتنتر کے لئے کھُل کر جنگ بھی کر رہی ہے۔ اس کا ثبوت ہے ساہتیہ، بھاشا اور سنسکرتی کے میدان میں وہ ایکتا جو دشمنوں کی لاکھ کوششوں کے باوجود جدائی اور الگاؤ کی راہ پر نہیں گئی۔ اس میدان میں بھی ہمارے دشمنوں نے کیا

नहीं किया. तरह तरह के नारों और दकियानूसी विचारों के ज़रिये हमें हिन्दू और मुसलमान बनाने के फिराक में इन इन्सान दुश्मनों ने कौन कौन सी खाले नहीं ओढीं ! कौन कौन सी बोलिया नहीं बोली ! कौन कौन से नारे नहीं लगाये ! लेकिन वाहरे हमारी कौमी बपौती ! और वाहरे हमारी जनवादी परम्परा !

भाषा और जनवादी साहित्यिक परम्परा वह परम्परा है जिसने हमारी अवामी और क़ौमी जिन्दगी को जिन्दा रक्खा है. अदब की दुनिया में तगंदिली और तग नजरी के लिये जगह नही है. जिसने इस मैदान मे रहते हुए अपने दिल को गन्दा और दिमाग को नापाक रक्खा वह इस दुनिया से अलग कर के फेक दिया गया. जिसने साहित्य के दरिया को छोटा सा गदला नाला बनाना चाहा वह खुद उस दरिया के धारे में बह गया और आज उसका नामलेवा भी कोई नही है. अदब के लम्बे चौड़े हरियाले बाग मे आज तक उन्ही की खुशबू फैल रही है और उन्हीं का रग चमक रहा है जिन्होंने अपनी खाद से ऐसे पौदे उगाये जो बाग के दूसरे पौदों के साथ गलबाँहिया डाल कर झूमने लगे. बाग के सभी पौदों ने, उनकी खुशबू और उनके रग ने मिल कर बाग की खूबसूरती बढाई है. अदब का सरसब्ज़ बाग उसकी ज़िन्दगी और उसकी खुशनुमा क्यारिया—यह सब यादगार हैं और सबूत हैं और तसवीर हैं कौम की उन बुनियादी खूबियों की जिन्होंने उसे पिछले छैः हज़ार सालों तक जिन्दा रखा है.

इसलिये तकलीफ़ होती है यह देखकर कि हममे से ही कुछ लोग एकता की, तरक्की की और जनवाद की कीमती, मज़बूत और चमकदार ... कौम

نہیں کیا۔ طرح طرح کے نعروں اور دقیانوسی وچاروں کے ذریعے ہمیں ہندو اور مسلمان بنانے کے فراق میں ان انسان دشمنوں نے کون کونسی کھالیں نہیں اوڑھیں! کون کونسی بولیاں نہیں بولیں! کون کون سے نعرے نہیں لگائے! لیکن واہ رے ہماری قومی بپوتی! اور واہ رے ہماری جنوادی پرمپرا!

بھاشا اور جنوادی ساہتیک پرمپرا وہ پرمپرا ہے جس نے ہماری عوامی اور قومی زندگی کو زندہ رکھا ہے۔ ادب کی دنیا میں تنگ دلی اور تنگ نظری کے لئے جگہ نہیں ہے۔ جس نے اس میدان میں رہتے ہوئے اپنے دل کو گندا اور دماغ کو ناپاک رکھا وہ اس دنیا سے الگ کر کے پھینک دیا گیا۔ جس نے ساہتیہ کے دریا کو چھوٹا سا گدلا نالا بنانا چاہا وہ خود اس دریا کے دھارے میں بہہ گیا اور آج اس کا نام لیوا بھی کوئی نہیں ہے۔ ادب کے لمبے چوڑے ہریالے باغ میں آج تک، انہیں کی خوشبو پھیل رہی ہے اور انہیں کا رنگ چمک رہا ہے جنہوں نے اپنی کھاد سے ایسے پودے اگائے جو باغ کے دوسرے پودوں کے ساتھ گلبہیاں ڈال کر جھومنے لگے۔ باغ کے سبھی پودوں نے، ان کی خوشبو اور ان کے رنگ نے مل کر باغ کی خوبصورتی بڑھائی ہے۔ ادب کا سرسبز باغ اس کی زندگی اور اس کی خوشنما کیاریاں یہ سب یادگار ہیں اور ثبوت ہیں اور تصویر ہیں قوم کی ان بنیادی خوبیوں کی جنہوں نے اسے پچھلے چھ ہزار سالوں تک زندہ رکھا ہے۔

اس لئے تکلیف ہوتی ہے یہ دیکھ کر کہ ہم میں سے ہی کچھ لوگ ایکتا کی، ترقی کی اور جنواد کی قیمتی، مضبوط اور چمکدار کڑیوں کو توڑنے کی کوشش کرتے ہیں۔ اور وہ ایسا کرتے ہیں قوم

के नाम पर, देश के नाम पर, संस्कृति के नाम पर, अदब के नाम पर ! ऐसे रहनुमा भी कितने बेरहम हैं जो दंगों के घावों और निफ़ाक़ की तल्ख़ यादगार को ताजा बनाये रखना चाहते हैं. वह जिनके कारनामे और जिनके विचार कभी भी, किसी भी समझदार कौम के लिये बर्दाश्त के काबिल न थे, वही आज फिर पोशाक बदलकर, नक़ाब ओढ़ कर और आवाज़ में लोच लाकर चीखने लगे हैं. जो पुराने परखे हुए रहनुमा थे उनमें से ज़्यादातर या तो राजकाज चलाने में लगे हुए हैं या क़ौम को गुमराह करने में. नतीजे में हमारी क़ौम का नुक्सान हो रहा है, उसकी तरक्की में बाधा पहुँच रही है, उसके पाव में पत्थर बाँधा जा रहा है.

भाषा के ही सवाल को ले लीजिये. लोग चीख चीख कर कह रहे हैं कि हिन्द देश को राष्ट्रभाषा की जरूरत है, हिन्दी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है. हिन्दी का विरोध करना राष्ट्र का विरोध करना है. हमारे अंग्रेज़ी-विरोध और स्वदेश-भक्ति की भावना को इस्तेमाल करके हिन्दी का यह नारा बुलन्द किया जा रहा है. मगर हिन्दी या किसी भी दूसरी भाषा के राष्ट्रभाषा बनने के सिलसिले में जिन बुनियादी तैयारियों की ज़रूरतें है उनपर किसका ध्यान है. कोष बनाना, शब्द गढ़ना और उसको जनता के ऊपर कुछ दिनों के लिये जबरदस्ती लाद देना आसान काम है. मगर जनता की परम्परा, एकता, प्रगति और आज़ादी की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए उसकी राय लेकर राष्ट्र-भाषा निश्चित करने की बात कौन सोच रहा है.

डा० सुनीतिकुमार चैटरजी जैसे भाषा के पंडत भी भाषा के सम्बन्ध में अब उल्टी बातें कहने लगे हैं. जिन्दगी भर उन्होंने सरल भाषा की

کے نام پر، دیش کے نام پر، سنسکرتی کے نام پر، ادب کے نام پر! ایسے رہنما بھی کتنے بے رحم ہیں جو دنگوں کے دھاووں اور نفاق کی تلخ یادگار کو تازہ بنائے رکھنا چاہتے ہیں۔ وہ جن کے کارنامے اور جن کے وچار کبھی بھی، کسی بھی سمجھدار قوم کے لئے برداشت کے قابل نہ تھے، وہی آج پھر پوشاک بدل کر، نقاب اوڑھ کر اور آواز میں لوچ لا کر چیخنے لگے ہیں۔ جو پرانے پرکھے ہوئے رہنما تھے ان میں سے زیادہ تر یا تو راج کاج چلانے میں لگے ہوئے ہیں یا قوم کو گمراہ کرنے میں۔ نتیجے میں ہماری قوم کا نقصان ہو رہا ہے، اس کی ترقی میں بادھا پہونچ رہا ہے، اس کے پاؤں میں پتھر باندھا جا رہا ہے۔

بھاشا کے ہی سوال کو لے لیجئے۔ لوگ چیخ چیخ کر کہہ رہے ہیں کہ ہند دیش کو راشٹر بھاشا کی ضرورت ہے، ہندی ہی راشٹر بھاشا ہو سکتی ہے، ہندی کا وِرودھ کرنا راشٹر کا وِرودھ کرنا ہے۔ ہمارے انگریزی وِرودھ اور سودیش بھکتی کی بھاونا کو استعمال کر کے ہندی کا یہ نعرہ بلند کیا جا رہا ہے۔ مگر ہندی یا کسی بھی دوسری بھاشا کے راشٹر بھاشا بننے کے سلسلے میں جن بنیادی تیاریوں کی ضرورت ہے ان پر کس کا دھیان ہے۔ کوش بنانا، شبد گڑھنا اور اس کو جنتا کے اوپر کچھ دنوں کے لئے زبردستی لاد دینا آسان کام ہے۔ مگر جنتا کی پرمپرا، ایکتا، پرگتی اور آزادی کی ضرورتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے اس کی رائے لے کر راشٹر بھاشا نشچت کرنے کی بات کون سوچ رہا ہے۔

ڈاکٹر سنیتی کمار چیٹرجی جیسے بھاشا کے پنڈت بھی بھاشا کے سمبندھ میں اب الٹی باتیں کہنے لگے ہیں۔ زندگی بھر انھوں نے سرل بھاشا کی

बात कही मगर अब वह संस्कृत-शब्दों की बात कहने लगे हैं. अभी-अभी संस्कृत के प्रोफ़ेसरों और विद्वानों की एक सभा कलकत्ते में हुई थी जहाँ इस मॉग को दोहराया गया कि संस्कृत को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा बना दिया जाय. डा० रघुवीर ने जो शासन विधान का तर्जुमा या शब्द कोष तैयार किया है उसमे सैकड़ों शब्द ऐसे मिलेगे जो संस्कृत लेकर एम० ए० पास करने वाले विद्यार्थी के भी पल्ले नहीं पड़ सकते. डा० राघुवीर, डा० चैटरजी या कलकत्ते में सभा करने वाले ये संस्कृत के पंडित देश की सेवा कर रहे हैं या उसे गढे में ढकेलने की कोशिश कर रहे हैं ? जिसकी निगाह साफ़ है और जो तैतीस करोड़ देश भाइयों के लिये एक जबान की बात करता है, जो अंग्रेज़ी को हटाकर उसकी जगह किसी हिन्दुस्तानी जबान को दिलाना चाहता है वह कैसे इन विद्वानों से समझौता कर सकता है ?

ज़ाहिर है कि हमें अब इनसे और इनकी जमातों से खुल कर लोहा लेना होगा. मगर इस जग मे हमें कामयाबी तब मिल सकती है जब हमको अपनी बातों पर, अपनी नीयत पर और अपनी समझ पर पूरा विश्वास हो. यह विश्वास हमारे अन्दर तभी पैदा हो सकता है जब कि हमें अपनी जनता, उसकी जम्हूरी जिन्दगी और उसके भविष्य पर भरोसा हो. इस भरोसे के लिये हमें उसकी जिन्दगी के नजदीक जाना पड़ेगा. हमें उसकी लड़ाई में हिस्सा लेना पड़ेगा. हमे उसकी ज़रूरतों को समझना पड़ेगा और उनको पूरा करने के लिये कोशिश करनी पड़ेगी. अगर हम इस नज़रिये से इस मसले को देखे तो बात कहाँ की कहां जा पड़ती है. तब हमें पता चलेगा कि आज जो लोग राष्ट्रभाषा के सवाल को उठा रहे हैं वह राष्ट्रभाषा का सबसे बड़ा विरोध कर रहे

بات کہی مگر اب وہ سنسکرت شبدوں کی بات کہنے لگے ہیں۔ ابھی ابھی سنسکرت کے پروفیسروں اور ودوانوں کی ایک سبھا کلکتے میں ہوئی تھی جہاں اس مانگ کو دہرایا گیا کہ سنسکرت کو ہندستان کی راشٹر بھاشا بنا دیا جائے۔ ڈاکٹر رگھوویر نے جو شاسن ودھان کا ترجمہ یا شبد کوش تیار کیا ہے اس میں سیکڑوں شبد ایسے ملیں گے جو سنسکرت لے کر ایم۔ اے۔ پاس کرنے والے ودیارتھی کے بھی پلے نہیں پڑ سکتے۔ ڈاکٹر رگھوبیر ڈاکٹر چیٹرجی یا کلکتہ میں سبھا کرنے والے یہ سنسکرت کے پنڈت دیش کی سیوا کر رہے ہیں یا اسے گڈھے میں ڈھکیلنے کی کوشش کر رہے ہیں؟ جس کی نگاہ صاف ہے اور جو تینتیس کروڑ دیس بھائیوں کے لئے ایک زبان کی بات کرتا ہے، جو انگریزی کو ہٹا کر اس کی جگہ کسی ہندستانی زبان کو دلانا چاہتا ہے وہ کیسے ان ودوانوں سے سمجھوتہ کر سکتا ہے؟

ظاہر ہے کہ ہمیں اب ان سے اور ان کی جماعتوں سے کھل کر لوہا لینا ہوگا مگر اس جنگ میں ہمیں کامیابی تب مل سکتی ہے جب ہم کو اپنی باتوں پر، اپنی نیت پر اور اپنی سمجھ پر پورا وشواس ہو۔ یہ وشواس ہمارے اندر تبھی پیدا ہو سکتا ہے جب کہ ہمیں اپنی جنتا، اس کی جمہوری زندگی اور اس کے بھوشیہ پر بھروسہ ہو۔ اس بھروسے کے لئے ہمیں اس کی زندگی کے نزدیک جانا پڑے گا۔ ہمیں اس کی لڑائی میں حصہ لینا پڑے گا۔ ہمیں اس کی ضرورتوں کو سمجھنا پڑے گا اور ان کو پورا کرنے کے لئے کوشش کرنی پڑے گی۔ اگر ہم اس نظریئے سے اس مسئلے کو دیکھیں تو بات کہاں کی کہاں جا پڑتی ہے۔ تب ہمیں پتہ چلے گا کہ آج جو لوگ راشٹر بھاشا کے سوال کو اٹھا رہے ہیں وہ راشٹر بھاشا کا سب سے بڑا ورودھ کر رہے

हैं. क़ौमी ज़बान बनने मे काफी समय लगेगा. वह प्रस्ताव पास करने या झूट मूट ढिडोरा पीटने से नहीं बन सकती. न वह इस तरह बन सकती है, और न किसी के ऊपर लादी ही जा सकती है.

यहाँ एक बात याद आई. कठिन या सस्कृत-भरी हिन्दी के समर्थक गला फाड़फाड़ कर कहते हैं कि राष्ट्रभाषा के लिये ज़रूरी है कि वह संस्कृत-भरी और सस्कृत के बहुत नजदीक हो. वह कहते हैं कि अगर ऐसा नहीं होगा तो गुजरात, महाराष्ट्र और बगाल के लोग उस भाषा को नहीं समझ सकेगे. मेरे एक बगाली मित्र, जो अभी पूरबी बगाल से आये हैं, मेरी इस बात को सुन कर दग रह गये. महाकवि टैगौर ने भाषा की सरलता के लिये जिन्दगी भर जो कोशिश की उसकी मिसाल देते हुए उन्होंने कहा—"हमारी बगाली भाषा मे हजारों शब्द अरबी और फ़ारसी के ऐसा घुल मिल गये हैं कि हम यही नहीं जानते कि वह शब्द किसी दूसरी भाषा के हैं." मिसाल के लिये उन्होने कहा—"वकालत नामा, दरख्वास्त, आईन. अर्जी, अदालत, दीवानी, फौजदारी, मुक़दमा, मामला, इजलास, पेशकार, सम्मन, जारी, इश्तहार, कैफियत, हुक्म, हाकिम, दारोगा, दरवाजा, किला (किल्ला), फतेह, जहाज, खातिर, जमाखर्च, हिसाब. खाता, चिराग, बत्ती, हैरान फिक्र, तूफ़ान, जाँबाज़, क़िस्सा (किच्छा), रास्ता, खबर, जबरदस्ती, दस्तखत, बर्दाश्त, मुक़ाबिला, वाक़िफ़ हाल, मिज़ाज, खून, कैदी, क़तल, बेवकूफ, नदारद, खातिरनदारद, ग़ज़ब, कागज, कलम, खुशी, दिल, आईना, आरसी, महल, तरफ़, शीशा, हिस्सा, पैरवी की तरह हजारों शब्द ऐसे हैं जिन्हें हम बंगाली भाषा का ही हिस्सा मानते हैं. बचपन से ही हमने अपने बाप, मां, भाई, बहिन, पड़ोसियों और नाते दारों के मुँह से इन

ہیں۔ قومی زبان بننے میں کافی سمے لگے گا۔ وہ پرستاؤ پاس کرنے یا جھوٹ موٹ ڈھنڈورا پیٹنے سے نہیں بن سکتی۔ نہ وہ اس طرح بن سکتی ہے، اور نہ کسی کے اوپر لادی ہی جا سکتی ہے۔

یہاں ایک بات یاد آئی۔ کٹھن یا سنسکرت بھری ہندی کے سمرتھک گلا پھاڑ پھاڑ کر کہتے ہیں کہ راشٹر بھاشا کے لئے ضروری ہے کہ وہ سنسکرت بھری اور سنسکرت کے بہت نزدیک ہو۔ وہ کہتے ہیں کہ اگر ایسا نہیں ہوگا تو گجرات، مہاراشٹر اور بنگال کے لوگ اس بھاشا کو نہیں سمجھ سکیں گے۔ میرے ایک بنگالی متر، جو ابھی پوربی بنگال سے آئے ہیں، میری اس بات کو سن کر دنگ رہ گئے۔ مہاکوی ٹیگور نے بھاشا کی سرلتا کے لئے زندگی بھر جو کوشش کی اس کی مثال دیتے ہوئے انھوں نے کہا: "ہماری بنگالی بھاشا میں ہزاروں شبد عربی اور فارسی کے ایسا گھل مل گئے ہیں کہ ہم یہی نہیں جانتے کہ وہ شبد کسی دوسری بھاشا کے ہیں۔" مثال کے لئے انھوں نے کہا: "وکالت نامہ، درخواست، آئین، عرضی، عدالت، دیوانی، فوجداری، مقدمہ، معاملہ، اجلاس، پیش کار، سمن، جاری، اشتہار، کیفیت، حکم، حاکم، داروغہ، دروازہ، قلعہ (کلا)، فتح، جہاز، خاطر، جمع خرچ، حساب، کھاتہ، چراغ، بتی، حیران، فکر، طوفان، جاں باز، قصہ (کچھا)، راستہ، خبر، زبردستی، دستخط، برداشت، مقابلہ، واقف حال، مزاج، خون، قیدی، قتل، بیوقوف، ندارد، خاطر ندارد، غضب، کاغذ، قلم، خوشی، دل، آئینہ، آرسی، محل، طرف، شیشہ، حصہ، پیروی، کی طرح ہزاروں شبد ایسے ہیں جنھیں ہم بنگالی بھاشا کا ہی حصہ مانتے ہیں۔ بچپن سے ہی ہم نے اپنے باپ، ماں، بھائی، بہن، پڑوسیوں اور ناتے داروں کے منہ سے ان

शब्दों को सुना है. और इन्हें हम रोज़ धड़ल्ले के साथ इस्तेमाल भी करते हैं." उन्होंने यह भी कहा कि बंगला साहित्य में यह शब्द बार बार दोहराये जाते हैं. महाकवि टैगोर ने भी अपनी कविताओं में इन शब्दों को इस्तेमाल किया है. हालाकि बंगाली भाषा पर संस्कृत का गहरा असर है मगर उसे सिर्फ संस्कृत की बेटी मान लेना एक बहुत बड़ा झूट है. इसका अर्थ तो यह होगा कि बंगला भाषा और अदब का कोई अपना वजूद ही नहीं है. बस उसके पास जो कुछ है वह संस्कृत से उधार लिया हुआ है. भाषा विज्ञान समझने वाले जानते हैं कि बिना देशज शब्दों की बहुतायत के कोई भी भाषा न बन सकती है, न ज़िन्दा ही रह सकती है. जनता तक उसके पहुँचने का तो सवाल ही नहीं उठता. जनता की भाषा बनाने के लिये उन तमाम शब्दों को अपनाना पड़ेगा जिन्हें जरूरत के मुताबिक, बिना इस बात का खयाल किये कि शब्द कहा से आये, जनता ने अपनी भाषा में शामिल कर लिया या गढ़ लिया. और, ऐसे शब्दों की, तायदाद कितनी बड़ी है इसका अन्दाज़ इन भाषा के विद्वानों को नहीं है. 'पाजिटिव' और 'निगेटिव' का चाहे जो तरजुमा हमारे यह महारथी किया करें मगर हमारे बिजली-घर के मज़दूरों ने उसे 'गर्म' और 'ठंढा' कहकर अपना काम चला लिया. 'बिजली-घर' खुद 'पावर हाउस' का अनुवाद है जो खुरदरे मज़दूरों के ज़रिये बना है, वह किसी युनिवर्सिटी के प्रोफेसर के दिमाग़ की उपज नहीं है. हम हिन्दी वाले 'कान्स्टीट्यूशन' का अनुवाद भले ही विधान कर लें (और इसमें हमें कोई एतराज भी नहीं है) मगर जिस बंगला भाषा का नाम लेकर संस्कृत को थोपने की कोशिश की जाती है उसमें इसका अर्थ 'आईन' ही है और वह धड़ल्ले के साथ

شبدوں کو سنا ہے. اور انھیں ہم روز دھڑلے کے ساتھ استعمال بھی کرتے ہیں." انھوں نے یہ بھی کہا کہ بنگلہ ساہتیہ میں یہ شبد بار بار دہرائے جاتے ہیں. مہاکوی ٹیگور نے بھی اپنی کویتاؤں میں ان شبدوں کو استعمال کیا ہے. حالانکہ بنگالی بھاشا پر سنسکرت کا گہرا اثر ہے مگر اسے صرف سنسکرت کی بیٹی مان لینا ایک بہت بڑا جھوٹ ہے. اس کا ارتھ تو یہ ہوگا کہ بنگلہ بھاشا اور ادب کا کوئی اپنا وجود ہی نہیں ہے. بس اس کے پاس جو کچھ ہے وہ سنسکرت سے ادھار لیا ہوا ہے. بھاشا وگیان سمجھنے والے جانتے ہیں کہ بنا دیشج شبدوں کی بہتات کے کوئی بھی بھاشا نہ بن سکتی ہے، نہ زندہ ہی رہ سکتی ہے. جنتا تک اس کے پہنچنے کا تو سوال ہی نہیں اٹھتا. جنتا کی بھاشا بنانے کے لئے ان تمام شبدوں کو اپنانا پڑے گا جنھیں ضرورت کے مطابق، بنا اس بات کا خیال کئے کہ شبد کہاں سے آئے، جنتا نے اپنی بھاشا میں شامل کر لیا یا گڑھ لیا. اور، ایسے شبدوں کی، تعداد کتنی بڑی ہے اس کا انداز ان بھاشا کے ودوانوں کو نہیں ہے. 'پازیٹو' اور 'نگیٹو' کا چاہے جو ترجمہ ہمارے یہ مہارتھی کیا کریں مگر ہمارے بجلی گھر کے مزدوروں نے اسے 'گرم' اور 'ٹھنڈا' کہہ کر اپنا کام چلا لیا. 'بجلی گھر' خود 'پاور ہاؤس' کا انواد ہے جو کھردرے مزدوروں کے ذریعے بنا ہے، وہ کسی یونیورسٹی کے پروفیسر کے دماغ کی اپج نہیں ہے. ہم ہندی والے 'کانسٹیٹیوشن' کا انواد بھلے ہی ودھان کر لیں (اور اس میں ہمیں کوئی اعتراض بھی نہیں ہے) مگر جس بنگلہ بھاشا کا نام لے کر سنسکرت کو تھوپنے کی کوشش کی جاتی ہے اس میں اس کا ارتھ 'آئین' ہی ہے اور وہ دھڑلے کے ساتھ

इस्तेमाल भी होता है. आईन और विधान में हम कोई फ़र्क़ नहीं करते. हम तो यही कहते हैं कि जिसे 'आईन' अच्छा लगे वह आईन इस्तेमाल करे और जिसे विधान रुचे वह विधान को अपनाये आईन और विधान के बनावटी झगड़े को उभाड़कर हम फिरक़ापरस्त देश द्रोहियों के हाथों में नहीं खेलना चाहते. हम भाषा के सवाल को भाषा की ही नज़र से देखना चाहते हैं. हम भाषा के सवाल को जनता की नज़र से देखना चाहते हैं.

इस सम्बन्ध में यू० पी० प्रान्तीय प्रगतिशील लेखक संघ ने हिन्दी और उर्दू के लेखकों की मिली जुली सभा में जो प्रस्ताव मंज़ूर किया और जिसे उन्होंने अपनी ओर से एलान किया वह अहम है और हमें आगे के लिये रास्ता दिखाता है. प्रस्ताव यह है—"यू० पी० प्रगतिशील लेखक सम्मेलन का मत है कि हिन्दी और उर्दू एक ही स्थान से पैदा हुई हैं. दोनों एक ही बोली जाने वाली भाषा से निकली हैं— बिना उस आम जनता से बोली जानेवाली भाषा के दोनों का अस्तित्व (वजूद) ही नहीं रह सकता. यही बोली जाने वाली भाषा इन दोनो भाषाओं का आधार है. यू० पी० और दूसरे सूबों में उर्दू का जो दमन किया जा रहा है उससे भाषा की एकता की तामीर नहीं हो सकती. इससे आम जनता की एकता में फूट पड़ेगी. इससे अंधी क़ौम परस्ती मज़बूत होगी. जैसे जैसे आम जनता की संस्कृति ऊपर उठती जायेगी—हिन्दी और उर्दू दोनों एक दूसरे के क़रीब आती जायेगी. इन दोनों भाषाओं में स्वाभाविक एकता लाने के लिये ज़रूरी है कि हिन्दी और उर्दू को अपनी-अपनी लिपियों में बेरोक आगे बढ़ने दिया जाय.''

استعمال بھی ہوتا ہے. آئین اور ودھان میں ہم کوئی فرق نہیں کرتے. ہم تو یہی کہتے ہیں کہ جسے 'آئین' اچھا لگے وہ آئین استعمال کرے اور جسے ودھان رچے وہ ودھان کو اپنائے آئین اور ودھان کے بناوٹی جھگڑے کو ابھاڑ کر ہم فرقہ پرست دیش دروہیوں کے ہاتھوں میں نہیں کھیلنا چاہتے. ہم بھاشا کے سوال کو بھاشا کی ہی نظر سے دیکھنا چاہتے ہیں. ہم بھاشا کے سوال کو جنتا کی نظر سے دیکھنا چاہتے ہیں

اس سمبندھ میں یو. پی. پرانتیہ پرگتی شیل لیکھک سنگھ نے ہندی اور اردو کے لیکھکوں کی ملی جلی سبھا میں جو پرستاو منظور کیا اور جسے انھوں نے اپنی اور سے اعلان کیا وہ اہم ہے اور ہمیں آگے کے لئے راستہ دکھاتا ہے. پرستاو یہ ہے — "یو. پی. پرگتی شیل لیکھک سمیلن کا مت ہے کہ ہندی اور اردو ایک ہی استھان سے پیدا ہوئی ہیں. دونوں ایک ہی بولی جانے والی بھاشا سے نکلی ہیں — بنا اس عام جنتا سے بولی جانے والی بھاشا کے دونوں کا استتو (وجود) ہی نہیں رہ سکتا. یہی بولی جانے والی بھاشا ان دونوں بھاشاؤں کا آدھار ہے. یو. پی. اور دوسرے صوبوں میں اردو کا جو دمن کیا جا رہا ہے اس سے بھاشا کی ایکتا کی تعمیر نہیں ہو سکتی. اس سے عام جنتا کی ایکتا میں پھوٹ پڑے گی. اس سے اندھی قوم پرستی مضبوط ہوگی. جیسے جیسے عام جنتا کی سنسکرتی اوپر اٹھتی جائے گی — ہندی اور اردو دونوں ایک دوسرے کے قریب آتی جائیں گی. ان دونوں بھاشاؤں میں ایکتا لانے کے لئے ضروری ہے کہ ہندی اور اردو کو

आगे प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि, "प्रगतिशील लेखकों का कर्तव्य है कि वह हिन्दी और उर्दू में संस्कृतपन और फ़ारसीपन का विरोध करें और एक ऐसी भाषा के लिये कोशिश करें जिसमे जनवादी लक्ष्य (मक़सद) की शक्ति हो."

हमने तफ़सील के साथ इस प्रस्ताव को यहाँ इसलिये दे दिया कि इसमें उन लोगों को जवाब दिया गया है जो भाषा के सवाल की आड़ में शिकार करना चाहते हैं और पुराने कल्चर और इतिहास का नाम लेकर, गड़े हुए मुर्दों को उखाड़ कर, हमारे सामने पेश करके, हमें भुलावे में डालने की कोशिश करते हैं.

हमारे अदब और संस्कृति के बाग़ को हमारे खून और हड्डी की फिर ज़रूरत है. अगर हम उसे सरसब्ज़, तरोताज़ा, खूबसूरत और दिलकश बनाना चाहते हैं, अगर हम उसमें फिर से नई कोंपलें नई डालियां और नई कलियां खिलाना चाहते हैं, अगर हम उसकी ठंडी और ओस भरी बयार से अपने तन-मन को प्रसन्न करना चाहते हैं तो हमें किसी भी क़ुरबानी से बाज़ नहीं आना चाहिये.

बँटवारे के बाद, हमें अपने क़ौमी तन-मन पर लगे गहरे घावों को फिर से और जल्द ही भरना है और अपने तन्दुरुस्त बदन और दिमाग के सहारे जनवादी ढंग से अदब और कल्चर के मैदान में कामयाबी हासिल करनी है जिससे हम अपने बुज़ुर्गों की परम्परा को क़ायम रख सकें और तरक़्क़ी के रास्ते पर अपने मज़बूत क़दमों को जमाकर रखते हुए आगे बढ़ते जायँ.

آگے پرستاؤ میں یہ بھی کہا گیا کہ، "پرگتی شیل لیکھکوں کا کرتویہ ہے کہ وہ ہندی اور اردو میں سنسکرت پن اور فارسی پن کا ورودھ کریں اور ایک ایسی بھاشا کے لئے کوشش کریں جس میں جنوادی لکش (مقصد) کی شکتی ہو۔"

ہم نے تفصیل کے ساتھ اس پرستاؤ کو یہاں اس لئے دیدیا کہ اس میں ان لوگوں کو جواب دیا گیا ہے جو بھاشا کے سوال کی آڑ میں شکار کرنا چاہتے ہیں اور پرانے کلچر اور اتہاس کا نام لے کر، گڑے ہوئے مُردوں کو اکھاڑ کر، ہمارے سامنے پیش کرکے، ہمیں بھلاوے میں ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں۔

ہمارے ادب اور سنسکرتی کے باغ کو ہمارے خون اور ہڈی کی پھر ضرورت ہے۔ اگر ہم اسے سرسبز، تروتازہ، خوبصورت اور دلکش بنانا چاہتے ہیں، اگر ہم اس میں پھر سے نئی کونپلیں نئی ڈالیاں اور نئی کلیاں کھلانا چاہتے ہیں، اگر ہم اس کی ٹھنڈی اور اوس بھری بیار سے اپنے تن من کو پرسن کرنا چاہتے ہیں تو ہمیں کسی بھی قربانی سے باز نہیں آنا چاہیے۔

بٹوارے کے بعد، ہمیں اپنے قومی تن من پر لگے گہرے گھاؤں کو پھر سے اور جلدی بھرنا ہے اور اپنے تندرست بدن اور دماغ کے سہارے جنوادی ڈھنگ سے ادب اور کلچر کے میدان میں کامیابی حاصل کرنی ہے جس سے ہم اپنے بزرگوں کی پرمپرا کو قائم رکھ سکیں اور ترقی کے راستے پر اپنے مضبوط قدموں کو جما کر رکھتے ہوئے آگے بڑھتے جائیں۔

इन्सानियत अमर है

(भाई साक़िब ज़ैदी, पाकिस्तान)

आप बीती (२)

गुरुमुख सिंह एक मामूली दरज़ी था. यह हुनर उसे अपने बाप से विरासत में मिला था लेकिन और बातो मे वह अपने बाप से बिलकुल उलटा था. गुरुमुख न तो नास्तिक था और न बिलकुल अनपढ़ बल्कि उसे गुरु ग्रन्थ साहब की कई बानियाँ जबानी याद थीं और वह उन्हें लिख भी लिया करता था. गुरुमुख ने इस मामूली सी शिक्षा के बल बूते पर ही अपने बाप के मुक़ाबले में अपनी तबियत और मिजाज मे इतना इम्तियाज (विशेषता) पैदा कर लिया था कि बाप बेटे के बीच हर मामले मे आकाश पाताल का फरक मालूम होता था. यह शायद सन् ४२ की बात है जब मुझे पहली दफा यह जानकर हैरानी हुई कि वह धर्म से खालिस सिक्ख भी नहीं है. क्योंकि एक दिन इत्तिफाकिया जब उसने अपने सर पर से पगड़ी उठाई तो मैंने देखा कि उसके सर पर केसनहीं थे. गुरुमुख दरज़ी बेदर्दी से कॉट-छॉट का रसिया होने के बावजूद बड़ा हस्सास (भावुक) था मेरे चेहरे पर ताज्जुब के निशान देखते ही कहने लगा कि मै राधा स्वामी हूँ, फिर सर कुछ कमजोर है इसलिये मैं इतना ज्यादा बोझ हर वक्त नहीं उठा सकता.

انسانیت امر ہے

(بھائی ثاقب زیدی، پاکستان)

آپ بیتی (۲)

گورمکھ سنگھ ایک معمولی درزی تھا یہ ہنر اسے اپنے باپ سے وراثت میں ملا تھا لیکن اور باتوں میں وہ اپنے باپ سے بالکل الٹا تھا۔ گورمکھ نہ تو ناستک تھا اور نہ بالکل ان پڑھ بلکہ اسے گرو گرنتھ صاحب کی کئی بانیاں زبانی یاد تھیں اور وہ انھیں لکھ بھی لیا کرتا تھا۔ گورمکھ نے اس معمولی سی شکشا کے بل بوتے پر ہی اپنے باپ کے مقابلے میں اپنی طبیعت اور مزاج میں اتنا امتیاز (وشیشتا) پیدا کر لیا تھا کہ باپ بیٹے کے بیچ ہر معاملے میں آکاش پاتال کا فرق معلوم ہوتا تھا۔ یہ شاید سنہ ۴۲ کی بات ہے جب پہلی دفعہ یہ جان کر حیرانی ہوئی کہ وہ دھرم سے خالص سکھ بھی نہیں ہے۔ کیونکہ ایک دن اتفاقیہ جب اس نے اپنے سر سے پگڑی اٹھائی تو میں نے دیکھا کہ اس کے سر پر کیس نہیں تھے۔ گورمکھ درزی بے دردی سے کاٹ چھانٹ کا رسیا ہونے کے باوجود بڑا حساس (بھاوک) تھا۔ میرے چہرے پر تعجب کے نشان دیکھتے ہی کہنے لگا کہ میں رادھا سوامی ہوں، پھر سر کچھ کمزور ہے اس لئے میں اتنا زیادہ بوجھ ہر وقت نہیں اٹھا سکتا۔

की किताब के कुछ श्लोक पढ़कर सुनाता रहा. उसी दिन मैंने अन्दाजा लगाया था कि वह एक तरक्की पसन्द यानी प्रगति शील सिक्ख है. फिर दो एक बरस के मेल जोल के बाद तो मुझपर यह भी असर पड़ा कि उसकी प्रगतिशीलता केवल केस न रखने और दाढ़ी न बढ़ाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसके विश्वासों और उसके स्वभाव पर भी उसका असर पड़ा है.

१६४५ के आखिर मे मैंने देखा कि कस्बे के कुछ नवजवान उसे गुरू के नाम से पुकारने लगे शुरू शुरू में तो मैंने महसूस किया कि यह सिर्फ मजाक है और जैसे हम लोग किसी आदमी को 'हजरत' कह कर पुकारने लगते हैं पर हमारे दिल में उसके लिये कोई खास आदर या श्रद्धा नहीं होती उसी तरह उसे भी लोग गुरू कहते हैं लेकिन बाद में मेरे सवाल करने पर उसने मुझे खुद ही यह बतलाया कि यह खिताब उसे गतका और तलवार बाजी सिखाने के बदले मे दिया गया है. लेकिन मैं जानता था कि वह 'फन बराय फन' या 'कला कला के लिये' का कायल है और यह नई शिक्षा वह लोगों को किसी बदले के भाव या किसी बुरी नियत से नहीं दे रहा है. दंगों में पहले जलसों और जुलूसों के मौसम में भी जब अन्दर ही अन्दर खून की होलियाँ खेले जाने की खिचड़ी पक रही थी, जब कभी मुझे अपने वतन जाने का इत्तिफाक होता तो गुरमुख सिंह से हमेशा की तरह मुलाकातें होतीं, ठीक पहले ही की तरह. हमेशा अकाली दल, कांग्रेस और लीग वालों की हरकतों पर दोनों साफ और कड़ी आलोचनायें करते लेकिन सिवाय एक बार के जब कि उसके कुछ सम्बन्धी रावलपिंडी डिवीज़न से तबाह

کی کتاب کے کچھ شلوک پڑھکر سناتا رہا۔ اسی دن میں نے اندازہ لگایا تھا کہ وہ ایک ترقی پسند یعنی پرگتی شیل سکھ ہے۔ پھر دو ایک برس کے میل جول کے بعد تو مجھ پر یہ بھی اثر پڑا کہ اس کی پرگتی شیلتا کیول کیس نہ رکھنے اور داڑھی نہ بڑھانے تک ہی سیمت نہیں ہے بلکہ اس کے وشواسوں اور اس کے سبھاؤ پر بھی اس کا اثر پڑا ہے۔

۱۹۴۵ کے آخر میں میں نے دیکھا کہ قصبے کے کچھ نوجوان اُسے گرو کے نام سے پکارنے لگے۔ شروع شروع میں تو میں نے محسوس کیا کہ یہ صرف مذاق ہے اور جیسے ہم لوگ کسی آدمی کو حضرت کہہ کر پکارنے لگتے ہیں پر ہمارے دل میں اس کے لئے کوئی خاص آدر یا شردھا نہیں ہوتی اسی طرح اُسے بھی لوگ گرو کہتے ہیں۔ لیکن بعد میں میرے سوال کرنے پر اس نے مجھے خود ہی یہ بتایا کہ یہ خطاب اسے گتکا اور تلوار بازی سکھانے کے بدلے میں دیا گیا ہے۔ لیکن میں جانتا تھا کہ وہ 'فن برائے فن' یا 'کلا کلا کے لئے' کا قائل ہے اور یہ نئی شکشا وہ لوگوں کو کسی بدلے کے بھاؤ یا کسی بری نیت سے نہیں دے رہا ہے۔ دنگوں سے پہلے جلسوں اور جلوسوں کے موسم میں بھی جب اندر ہی اندر خون کی ہولیاں کھیلے جانے کی کھچڑی پک رہی تھی، جب کبھی مجھے وطن جانے کا اتفاق ہوتا تو گورمکھ سنگھ سے ہمیشہ کی طرح ملاقاتیں ہوتیں ٹھیک پہلے ہی کی طرح۔ ہمیشہ اکالی دل، کانگریس اور لیگ والوں کی حرکتوں پر دونوں صاف اور کڑی آلوچنائیں کرتے لیکن سوائے ایک بار کے جب کہ اس کے کچھ سمبندھی راولپنڈی ڈویژن سے تباہ

व बरबाद होकर उसके यहाँ आ गये थे, मैंने उसे कभी रंजीदा या परेशान नही पाया.

झुटपुटे का समय था. उसके हाथ मे पीतल का एक करमडल था जिसमे वह हमारे यहाँ से शरणार्थी बच्चो के लिये दूध लेने आया था और उसके मुँह से यह कड़वी सचाइयाँ शब्दो के रूप मे निकल रही थी—

"आखिर यह इन्सान इन्सान होकर सुअरो और कुत्तों की तरह क्यो लड़ते है! वाहे गुरु (वह वाह गुरु को हमेशा वाहे गुरु कहा करता था) के सामने जब सारी मखलूकात (प्राणियाँ) पेश की जायँगी तो इन्सान किस तरह यह साबित कर सकेगा कि वह सचमुच इन्सान है."

और अब्बाजान ने मुझे बताया कि ठीक यही शब्द उसने पिछली अगस्त की उस शाम को दोहराये थे जब वह मजहबी दरिन्दो से छिपकर हमें यह बतलाने आया था कि कल तुम्हारे मोहल्ले पर धावा बोला जायगा, तुम कहीं इधर उधर हो जाओ या फिर शहर छोड़ जाओ.

और फिर यह उसी अगस्त की २३ तारीख की बात है. बदकिस्मती से मै क़स्बे के उन गिने हुए कुछ लोगों मे शुमार होने की वजह से, जिनके बारे में देखते ही गोली से उड़ा देने का हुक्म था, अपने एक मुसलमान दोस्त के यहाँ छिपा हुआ था कि रात के १२ बजे के क़रीब किसी शरारत पसन्द की इत्तिला पर पुलिस वालो के हाथों अपनी इज्जत को खतरे मे देख कर मेरे उस दोस्त ने मुझे अपनी जान बचाने के लिये कोई और घर देखने के लिये कहा. मै इस शरणस्थान में आने से पहले क़रीब क़रीब तमाम पनाह गाहों मे हो आया था उधर उस दोस्त को संगीनों की तेज़ नोके सता रही थीं. मरता क्या न करता. चुपके मे

و برباد ہوکر اس کے یہاں آ گئے تھے، میں نے اُسے کبھی رنجیدہ یا پریشان نہیں پایا۔

جھٹ پٹے کا سمے تھا۔ اس کے ہاتھ میں پیتل کا ایک کرمنڈل تھا جس میں وہ ہمارے یہاں سے شرنارتھی بچوں کے لئے دودھ لینے آیا تھا اور اُس کے منہ سے یہ کڑوی سچائیاں شبدوں کے روپ میں نکل رہی تھیں—

"آخر یہ انسان انسان ہوکر سوّروں اور کتّوں کی طرح کیوں لڑتے ہیں! واہے گرو (وہ واہ گرو کو ہمیشہ واہے گرو کہا کرتا تھا) کے سامنے جب ساری مخلوقات (پرانیاں) پیش کی جائیں گی تو انسان کس طرح یہ ثابت کر سکے گا کہ وہ سچ مچ انسان ہے۔"

اور ابّا جان نے مجھے بتایا کہ ٹھیک یہی شبد اس نے پچھلی اگست کی اس شام کو دہرائے تھے جب وہ مذہبی درندوں سے چھپکر ہمیں یہ بتلانے آیا تھا کہ کل تمہارے محلّے پر دھاوا بولا جائے گا، تم کہیں ادھر ادھر ہو جاؤ یا پھر شہر چھوڑ جاؤ۔

اور پھر یہ اسی اگست کی ۲۳ تاریخ کی بات ہے۔ بدقسمتی سے میں قصبے کے اُن گنے ہوئے کچھ لوگوں میں شمار ہونے کی وجہ سے، جن کے بارے میں دیکھتے ہی گولی سے اُڑا دینے کا حکم تھا، اپنے ایک مسلمان دوست کے یہاں چھپا ہوا تھا کہ رات کے ۱۲ بجے کے قریب کسی شرارت پسند کی اطلاع پر پولیس والوں کے ہاتھوں اپنی عزت کو خطرے میں دیکھ کر میرے اس دوست نے مجھے اپنی جان بچانے کے لئے کوئی اور گھر دیکھنے کے لئے کہا۔ میں اس شرن ستھان میں آنے سے پہلے قریب قریب تمام پناہ گاہوں میں ہو آیا تھا۔ ادھر اس دوست کو سنگینوں کی تیز نوکیں ستا رہی تھیں۔ مرتا کیا نہ کرتا۔ چپکے سے

उसका दरवाज़ा छोड़ दबे पाव अँधेरी गलियों से छिप छिप कर चलता काफ़ी रात गये गुरुमुख सिंह के मकान पर पहुँचा जिसके दरवाज़े पर एक लम्बे से दायरे में धनुष की शक्ल में यह चार लफ़्ज लिखे हुए थे—

राम राम अल्लाहू वाहे गुरु

गुरुमुख सिंह टेलर मास्टर

गुरुमुख सिंह ने मुझे उस वक़्त अचानक देखकर बिना झिझके या घबराये दरवाज़ा खोला. कोठे पर एक फ़र्शी बिस्तर बिछा कर चरन (अपने बेटे) के पास लेट जाने को कहा और खुद कृपान लेकर छत पर पहरा देने के लिये चला गया उन रातों में नींद का तो सवाल ही पैदा न होता था, लेकिन मैं सारी रात इस खयाल से कि कहीं गुरुमुख यह न समझे कि मैं उसके घर में भी अपने आपको महफूज नहीं समझता, अपने को बिलकुल सोया हुआ बनाये हुए लेटा रहा. और सुबह के वक़्त तो सचमुच इस सोने की मश्क के कारन मेरी पलकें कुछ देर के लिये आपस में मिल गईं.

लेकिन फिर जल्द ही धक से मेरी आँखें यों खुल गईं, जैसे कोई धमाका हुआ हो. मैंने घबराहट में उठकर देखा कि गुरुमुख बड़ी बेचैनी की हालत में दरवाज़े की चटकनी चढ़ा रहा है. मेरे बार बार पूछने पर उसने बताया कि तुम्हारे यहाँ पहुँचने की खबर बलवन्त राय खुशतर के ज़रिये पुलीस को हो चुकी है. यह भी सुना गया है कि नत्था सिंह सब इन्सपेक्टर पुलीस मकान की तलाशी के लिये थाने से रवाना हो चुका है. तुम यहाँ बैठो, मैं अभी आया.

اس کا دروازہ چھوڑ دبے پاؤں اندھیری گلیوں سے چھپ چھپ کر چلتا کافی رات گئے گورمکھ سنگھ کے مکان پر پہنچا جس کے دروازے پر ایک لمبے سے دائرے میں دھنش کی شکل میں یہ چار لفظ لکھے ہوئے تھے۔

رام رام اللہ ہو واہے گرو

گورمکھ سنگھ ٹیلر ماسٹر

گورمکھ سنگھ نے مجھے اس وقت اچانک دیکھ کر بنا جھجکے یا گھبرائے دروازہ کھولا۔ کوٹھے پر ایک فرشی بستر بچھا کر چرن (اپنے بیٹے) کے پاس لیٹ جانے کو کہا اور خود کرپان لے چھت پر پہرہ دینے کے لئے چلا گیا۔ ان راتوں میں نیند کا تو سوال ہی پیدا نہ ہوتا تھا۔ لیکن میں ساری رات اس خیال سے کہ کہیں گورمکھ یہ نہ سمجھے کہ میں اس کے گھر میں بھی اپنے آپ کو محفوظ نہیں سمجھتا، اپنے کو بالکل سویا ہوا بنائے ہوئے لیٹا رہا۔ اور صبح کے وقت تو سچ مچ اس سونے کی مشق کے کارن میری پلکیں کچھ دیر کے لئے آپس میں مل گئیں۔

لیکن پھر جلد ہی دھک سے میری آنکھیں یوں کھل گئیں، جیسے کوئی دھماکا ہوا ہو۔ میں نے گھبراہٹ میں اٹھ کر دیکھا کہ گورمکھ بڑی بیچینی کی حالت میں دروازے کی چٹخنی چڑھا رہا ہے۔ میرے بار بار پوچھنے پر اس نے بتایا کہ تمہارے یہاں پہنچنے کی خبر بلونت رائے خوشتر کے ذریعے پولیس کو ہو چکی ہے۔ یہ بھی سنا گیا ہے کہ نتھا سنگھ سب انسپکٹر پولیس مکان کی تلاشی کے لئے تھانے سے روانہ ہو چکا ہے۔ تم یہاں بیٹھو، میں ابھی آیا۔

उसके चौबारे से नीचे उतरने और वापस आने तक जो कुछ मुझ पर बीती और जो जो खयाल मेरे दिल में आये उनको तफसील से लिखूँ तो एक मोटी किताब भर जाय. एक अजीब बेचारगी का आलम था. दिन चढ आया था. मुहल्ला सिक्खों का था. हर निगाह दुश्मन थी छिपकर निकल जाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन था और इस पर तुर्रा यह कि जिस घर मे पनाह ली थी उसकी तलाशी होने वाली थी.

करीब दस बारह मिनट के बाद गुरुमुख ऊपर आया तो हालाँकि इस दस बारह मिनट के अरसे मे ही उसका चेहरा पहले से कही उतर गया था लेकिन फिर भी वह अपने घबराये हुए चेहरे पर इतमीनान के निशान पैदा करने की इसलिये कोशिश कर रहा था कि उसके दिल की बेचैनी को भाँप कर उसका दोस्त खुदा की रहमत से मायूस न हो जाय.

फैसुला यह ठहरा कि मै नीचे जाकर सामने वाले कमरे मे चारपाई पर लेटे हुए उस बीमार के साथ लेट जाऊँ जिसके सिरहाने एक टूटा सा स्टूल पड़ा है और एक तिपाई पर किसी दवाई की चन्द पुड़ियाँ और एक अधभरा शरबत का गिलास रक्खा हुआ है. और फिर दो चार मिनट मे ही वह मुझे अपने प्रोग्राम के मुताबिक लिटा कर आप बैठक में बैठकर मशीन पर काम करने में लग गया. कोई पाँच सात मिनट ही बीते होंगे कि नत्था सिह ने किवाड़ों को जोर से बूट की ठोकर लगाई और आवाज़ दी—"गुरु दरवाजा खोल !"

दरवाज़ा खोल देने पर थानेदार ने कहा कि तुम्हारे यहाँ साकिब के छिपने का शुभा है. मकान को घेर लिया गया है और तलाशी मै खुद

(५४०)

اس کے چوبارے سے نیچے اترنے اور واپس آنے تک جو کچھ مجھ پر بیتی اور جو جو خیال میرے دل میں آئے ان کو تفصیل سے لکھوں تو ایک موٹی کتاب بھر جائے۔ ایک عجیب بیچارگی کا عالم تھا۔ دن چڑھ آیا تھا۔ محلہ سکھوں کا تھا۔ ہر نگاہ دشمن تھی۔ چھپ کر نکل جانا مشکل ہی نہیں، ناممکن تھا اور اس پر طرّہ یہ کہ جس گھر میں پناہ لی تھی اس کی تلاشی ہونے والی تھی۔

قریب دس بارہ منٹ کے بعد گورمکھ اوپر آیا تو حالانکہ اس دس بارہ منٹ کے عرصے میں ہی اس کا چہرہ پہلے سے کہیں اُتر گیا تھا لیکن پھر بھی وہ اپنے گھبرائے ہوئے چہرے پر اطمینان کے نشان پیدا کرنے کی اس لئے کوشش کر رہا تھا کہ اس کے دل کی بےچینی کو بھانپ کر اس کا دوست خدا کی رحمت سے مایوس نہ ہو جائے۔

فیصلہ یہ ٹھہرا کہ میں نیچے جا کر سامنے والے کمرے میں چارپائی پر لیٹے ہوئے اس بیمار کے ساتھ لیٹ جاؤں جس کے سرہانے ایک ٹوٹا سا اسٹول پڑا ہے اور ایک تپائی پر کسی دوائی کی چند پڑیاں اور ایک ادھ بھرا شربت کا گلاس رکھا ہوا ہے۔ اور پھر دو چار منٹ میں ہی وہ مجھے اپنے پروگرام کے مطابق لٹا کر آپ بیٹھک میں بیٹھ کر مشین پر کام کرنے میں لگ گیا۔ کوئی پانچ سات منٹ ہی بیتے ہوں گے کہ نتھا سنگھ نے کواڑوں کو زور سے بوٹ کی ٹھوکر لگائی اور آواز دی "گرو دروازہ کھول!"

دروازہ کھول دینے پر تھانے دار نے کہا کہ تمہارے یہاں ثاقب کے چھپنے کا شبہ ہے۔ مکان کو گھیر لیا گیا ہے اور تلاشی میں خود

(۵۷۰)

लूँगा और फिर बैठक, कोठा, स्टोर, ग़ुसलखाना और दूसरी जगहें ढूँढ लेने के बाद जब थानेदार ने रसोई-घर के सामने वाले कमरे में पड़ी हुई चारपाई के बारे में पूछा तो गुरुमुख ने फौरन जवाब दिया— "वह चरन और उसकी माँ लेटे हुए हैं. चरन बीमार है और अभी उसको नींद आई है." और झट मेरे साथ लेटे हुए रोगी के मुह से थोड़ा सा कपड़ा सरकाने के लिये लपका

थानेदार को न जाने कहाँ से शर्म आ गई कि वह शर्मिन्दा होकर बलवन्त राय ख़ुशतर को कोसता और गालियाँ बकता हुआ बाहर निकल गया.

थानेदार को दूर छोड़ आने के बाद जब गुरुमुख सिंह ने आकर मुझे चारपाई से उठाया तो मैंने देखा कि चारपाई पर दूसरा जिस्म, सचमुच 'चरन की माँ' ही थी.

لوں گا۔ اور پھر بیٹھک، کوٹھا، اسٹور، غسل خانہ اور دوسری جگہیں ڈھونڈھ لینے کے بعد جب تھانیدار نے رسوئی گھر کے سامنے والے کمرے میں پڑی ہوئی چارپائی کے بارے میں پوچھا تو گورمکھ نے فوراً جواب دیا۔ "وہ چرن اور اس کی ماں لیٹے ہوئے ہیں۔ چرن بیمار ہے اور ابھی اس کو نیند آئی ہے۔" اور جھٹ میرے ساتھ لیٹے ہوئے روگی کے منہ سے تھوڑا سا کپڑا سرکانے کے لئے لپکا۔

تھانیدار کو نہ جانے کہاں سے شرم آگئی کہ وہ شرمندہ ہو کر بلونت رائے خوشتر کو کوستا اور گالیاں بکتا ہوا باہر نکل گیا۔

تھانیدار کو دور چھوڑ آنے کے بعد جب گورمکھ سنگھ نے آ کر مجھے چارپائی سے اٹھایا تو میں نے دیکھا کہ چارپائی پر دوسرا جسم، سچ مچ 'چرن کی ماں' ہی تھی۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردائکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا! قیمت بارہ آنے۔

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

مینیجر 'نیا ہند' ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

हिन्दुस्तान दुनिया की जत्था बन्दियों से अलग रहने का तो बार-बार एलान करता रहा है पर वह दुनिया के देशों से अलग नहीं रह सकता था. तीसरी बड़ी लड़ाई को रोकने, एशिया की आजादी को बचाने, पड़ोस के मुल्कों को आजादी दिलाने और खुद अपने घर की राजनीतिक और आर्थिक तरक्क़ी का बन्दोबस्त करने के लिये उसे दूसरे देशों से सम्बन्ध कायम रखना था उसके सामने सवाल यह था कि यह सम्बन्ध किस तरह का हो और ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल या कामन वेल्थ के मसले ने इस सवाल के एक पहलू को बहुत ज्यादा उजागर कर दिया था.

हिन्दुस्तान और कामन वेल्थ

इस पहलू पर विचार करने के लिये कामन वेल्थ के सब मुल्कों के प्रधान मंत्री लन्दन में जमा हुए. हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपना रवैया लन्दन जाने से पहले ही साफ कर दिया था कि हिन्दुस्तान को दूसरे देशों से सम्बन्ध रखने पर कोई एतराज नहीं है, बशर्ते कि उसके देश और विदेश के मामलों में उसकी आजादी पर कोई पाबन्दी न लगाई जाय. और देश के मामलों में सबसे अहम मामला यह था कि हिन्दुस्तान की विधान सभा ने उसके विधान के लिये रिपब्लिक का ढाँचा बनाया था और इस ढाँचे में कोई काट छांट करने के लिये तैयार नहीं था पर यह ढाँचा कामन वेल्थ के ढाँचे में

دُنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

ہندستان دنیا کی جتھا بندیوں سے الگ رہنے کا تو بار بار اعلان کرتا رہا ہے پر وہ دنیا کے دیشوں سے الگ نہیں رہ سکتا تھا۔ تیسری بڑی لڑائی کو روکنے، ایشیا کی آزادی کو بچانے، پڑوس کے ملکوں کو آزادی دلانے اور خود اپنے گھر کی راج نیتک اور آرتھک ترقی کا بندوبست کرنے کے لئے اُسے دوسرے دیشوں سے سمبندھ قائم رکھنا تھا۔ اس کے سامنے سوال یہ تھا کہ یہ سمبندھ کس طرح کا ہو اور برٹش راشٹر منڈل یا کامن ویلتھ کے مسئلے نے اس سوال کے ایک پہلو کو بہت زیادہ اجاگر کر دیا تھا۔

ہندستان اور کامن ویلتھ

اس پہلو پر وچار کرنے کے لئے کامن ویلتھ کے سب ملکوں کے پردھان منتری لندن میں جمع ہوئے۔ ہندستان کے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنا رویہ لندن جانے سے پہلے ہی صاف کر دیا تھا کہ ہندستان کو دوسرے دیشوں سے سمبندھ رکھنے پر کوئی اعتراض نہیں ہے، بشرطیکہ اس کے دیش اور ودیش کے معاملوں میں اس کی آزادی پر کوئی پابندی نہ لگائی جائے۔ اور دیش کے معاملوں میں سب سے اہم معاملہ یہ تھا کہ ہندستان کی ودھان سبھا نے اُس کے ودھان کے لئے ریپبلک کا ڈھانچہ بنایا تھا اور اس ڈھانچے میں کوئی کاٹ چھانٹ کرنے کے لئے تیار نہیں تھا، پر یہ ڈھانچہ کامن ویلتھ کے ڈھانچے میں

न खपता था इसलिये कि रिपब्लिक में देशी या विदेशी राजा के लिये कोई जगह नहीं है और कामन वेल्थ की बिरादरी की बुनियाद राजा का ज़ात पर थी इस बिरादरी के गोरे रंग वाले देश इस बुनियाद को बाक़ी रखना चाहते थे लका और पाकिस्तान जो करीब करीब हिन्दुस्तान के साथ इस बिरादरी मे शामिल हुए थे, इस पर कोई एतराज नहीं करते थे. लेकिन हिन्दुस्तान इसे मानने को तैयार नहीं था. वह अपने राज को नाम के लिये भी बरतानी राज के मातहत नहीं रख सकता था और उसकी यह बात लन्दन कानफ़रेन्स में मान ली गई अब राजा की हैसियत बुनियाद की नहीं बल्कि निशान की होगी. और बरतानिया का राजा इस हैसियत से तो बिरादरी का सरदार रहेगा लेकिन हिन्दुस्तान मे उसे कोई अधिकार नही होगा. बिरादरी के सब मेम्बर आजाद और बराबर होंगे. इसकी बुनियाद शान्ति, आज़ादी और तरक्क़ी के लिये एक साथ काम करने पर होगी.

इस तरह हिन्दुस्तान को शामिल करने के लिये कामन वेल्थ का ढाँचा पहले से अधिक ढीला कर दिया गया है इसकी कोई चौहद्दी मुक़र्रर नहीं की गई है और इससे हिन्दुस्तान पर कोई पाबन्दी नही लगी है. हिन्द सरकार के एक मंत्री श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने अपने एक भाषन में कहा है कि हिन्दुस्तान ने कामन वेल्थ के इस ढीले ढाँचे को इस बिरादरी के मुल्कों के साथ अलग-अलग ठोस समझौतों मे ज़्यादा अच्छा समझा और हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू ने कहा है कि लन्दन कानफ़रेन्स का समझौता हिन्दुस्तान बरतानिया, कामन वेल्थ और सारी दुनिया के लिये फ़ायदामन्द होगा.

और जिस दृष्टि से वह इस मामले को देखते हैं उससे देखा जाय

نہ کھپتا تھا اس لئے کہ ریپبلک میں دیشی یا ودیشی راجا کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے اور کامن ویلتھ کی برادری کی بنیاد راجا کی ذات پر تھی۔ اس برادری کے گورے رنگ والے دیش اس بنیاد کو باقی رکھنا چاہتے تھے۔ لنکا اور پاکستان جو قریب قریب ہندستان کے ساتھ اس برادری میں شامل ہوئے تھے، اس پر کوئی اعتراض نہیں کرتے تھے۔ لیکن ہندستان اسے ماننے کو تیار نہیں تھا۔ وہ اپنے راج کو نام کے لئے بھی برطانی راج کے ماتحت نہیں رکھ سکتا تھا اور اس کی یہ بات لندن کانفرنس میں مان لی گئی۔ اب راجا کی حیثیت بنیاد کی نہیں بلکہ نشان کی ہوگی۔ اور برطانیہ کا راجا اس حیثیت سے تو برادری کا سردار رہے گا لیکن ہندستان میں اسے کوئی ادھیکار نہیں ہوگا۔ برادری کے سب ممبر آزاد اور برابر ہوں گے۔ اس کی بنیاد شانتی، آزادی اور ترقی کے لئے ایک ساتھ کام کرنے پر ہوگی۔

اس طرح ہندستان کو شامل کرنے کے لئے کامن ویلتھ کا ڈھانچہ پہلے سے ادھک ڈھیلا کر دیا گیا ہے۔ اس کی کوئی چوحدی مقرر نہیں کی گئی ہے اور اس سے ہندستان پر کوئی پابندی نہیں لگی ہے۔ ہند سرکار کے ایک منتری شری گوپال سوامی آئنگر نے اپنے ایک بھاشن میں کہا ہے کہ ہندستان نے کامن ویلتھ کے اس ڈھیلے ڈھانچے کو اس برادری کے ملکوں کے ساتھ الگ الگ ٹھوس سمجھوتوں سے زیادہ اچھا سمجھا اور ہندستان کے پردھان منتری پنڈت نہرو نے کہا ہے کہ لندن کانفرنس کا سمجھوتا ہندستان، برطانیہ، کامن ویلتھ اور ساری دنیا کے لئے فائدہ مند ہوگا۔

اور جس درشٹی سے وہ اس معاملے کو دیکھتے ہیں اس سے دیکھا جائے

नो सचमुच ऐसा ही होगा. इस लिये कि इसी तरह हिन्दुस्तान किसी बात पर ध्यान दिये बिना एक बड़ी बिरादरी से सम्बन्ध कायम रख सकेगा और अपनी आर्थिक तरक्की के लिये मशीनें वगैरा मंगवा सकेगा. बरतानिया और कामन वेल्थ को हिन्दुस्तान जैसे मुल्क के साथ रहने से बड़ा वजन और बहुत सी आसानियाँ मिल जायगी, जबकि इसके अलग रहने मे उनको बहुत सी मुश्किलों और खतरों का सामना करना पड़ता. दुनिया के लिये यह समझौता इसलिये फायदे की चीज है कि कामन वेल्थ के अन्दर एक ऐसा राष्ट्र शामिल हो गया है. जो इस बिरादरी को लड़ाकू टोली नहीं बनने देगा और कामन वेल्थ के परदे मे साम्राजशाही को नही पनपने देगा. इस आखिरी बात पर जवाहरलाल जी ने अपने लन्दन कानफरेन्स के बाद वाले भाषनो में बार-बार जोर दिया है. उन्होंने जो कुछ कहा उसका खुलासा यह है कि हिन्दुस्तान साम्राजी लूट खसोट और जातीय भेदभाव को खत्म करने की कोशिश करता रहेगा और दुनिया के सब देशों से दोस्ती कायम करेगा और हो सका तो दूसरे देशों को, जो एक दूसरे से झगड रहे हैं, जोड़ने के लिये बीच का पुल बन जायगा. एशिया पर योरोप का कन्ट्रोल अब बाकी नही रह सकता. एशिया जो पिछली बड़ी लड़ाई के बाद जाग उठा है, थोड़े दिनों मे दुनिया के मामलों में खास हिस्सा लेने लगेगा. इन बातों के साथ पंडित नेहरू ने उन अफ़वाहो की काट भी कर दी है कि हिन्दुस्तान ने एटलान्टिक समझौते में शरीक होने का वादा कर लिया है या परदे के पीछे कोई और पाबन्दी ओढ़ ली है.

تو سچ مچ ایسا ہی ہوگا۔ اس لئے کہ اسی طرح ہندستان کسی بات پر دھیان دئے بنا ایک بڑی برادری سے سمبندھ قائم رکھ سکے گا اور اپنی آرتھک ترقی کے لئے مشینیں وغیرہ منگوا سکے گا۔ برطانیہ اور کامن ویلتھ کو ہندستان جیسے ملک کے ساتھ رہنے سے بڑا وزن اور بہت سی آسانیاں مل جائیں گی، جب کہ اس کے الگ رہنے سے ان کو بہت سی مشکلوں اور خطروں کا سامنا کرنا پڑتا۔ دنیا کے لئے یہ سمجھوتہ اس لئے فائدے کی چیز ہے کہ کامن ویلتھ کے اندر ایک ایسا راشٹر شامل ہو گیا ہے، جو اس برادری کو لڑاکو ٹولی نہیں بننے دے گا اور کامن ویلتھ کے پردے میں سامراج شاہی کو نہیں پنپنے دے گا۔ اس آخری بات پر جواہر لال جی نے اپنے لندن کانفرنس کے بعد والے بھاشنوں میں بار بار زور دیا ہے۔ انھوں نے جو کچھ کہا اس کا خلاصہ یہ ہے کہ ہندستان سامراجی لوٹ کھسوٹ اور جاتیہ بھید بھاؤ کو ختم کرنے کی کوشش کرتا رہیگا اور دنیا کے سب دیشوں سے دوستی قائم کرے گا اور ہو سکا تو دوسرے دیشوں کو، جو ایک دوسرے سے جھگڑ رہے ہیں، جوڑنے کے لئے بیچ کا پل بن جائے گا۔ ایشیا پر یورپ کا کنٹرول اب باقی نہیں رہ سکتا۔ ایشیا جو پچھلی بڑی لڑائی کے بعد جاگ اٹھا ہے، تھوڑے دنوں میں دنیا کے معاملوں میں خاص حصہ لینے لگے گا۔ ان باتوں کے ساتھ پنڈت نہرو نے ان افواہوں کی کاٹ بھی کر دی ہے کہ ہندستان نے اٹلانٹک سمجھوتے میں شریک ہونے کا وعدہ کر لیا ہے یا پردے کے پیچھے کوئی اور پابندی اوڑھ لی ہے۔

आदमी जाने बसे

इन अफ़वाहों की बुनियाद इस डर या इलजाम पर थी और है कि हिन्दुस्तान दुनिया के दो हथियारबन्द गिरोहों में से एक के साथ हुआ जा रहा है. जिन लोगों को इस बात का डर था उनको पंडित नेहरू के इस बयान से इतमीनान हो जायगा लेकिन जो लोग इलजाम लगाते हैं उनको उस वक्त तक सन्तोष नहीं हो सकता जब तक हिन्दुस्तान रूसी गिरोह मे पूरी तरह शामिल न हो जाय, देश और विदेश के मामलों मे रूस के कहे का पाबन्द न बन जाय जैसा कि पूरबी योरोप के मुल्कों ने किया है. और जैसा न करने पर योगोसलाविया की सरकार कम्युनिस्ट होते हुए भी रूस की गालियाँ सुन रही है हिन्दुस्तान रूस और उसके असर मे रहने वाले मुल्क से दोस्ती कायम करना चाहता है और उनमें से कई एक के साथ उसके ब्योपारी समझौते भी हो गये हैं. मगर वह अपनी आज़ादी का कोई हिस्सा किसी कीमत पर भी बेच नहीं सकता, चाहे उसका गाहक बरतानिया हो या अमरीका या रूस कामन वेल्थ के समझौते से देखने मे तो हिन्दुस्तान की आजादी पर कोई आँच नहीं आती और पंडित नेहरू ने आगे के लिये जो कुछ कहा है उसकी सच्चाई पर भी कोई शक नहीं किया जा सकता. फिर भी मसल मशहूर है कि सोना जाने कसे और आदमी जाने बसे और इस बिरादरी मे हिन्दुस्तान के शरीक रहने के फायदे और नुकसान का ठीक ठीक अन्दाजा उन मसलों से किया जायगा जो इसके अन्दर मौजूद हैं या इसके बाहर पैदा होंगे.

इन मसलों में सब से बड़ा मसला दक्खिनी अफ़रीका के हिन्दुस्तानियों

آدمی جانے بسے

ان افواہوں کی بنیاد اس ڈر یا الزام پر تھی اور ہے کہ ہندستان دنیا کے دو ہتھیار بند گروہوں میں سے ایک کے ساتھ ہوا جا رہا ہے۔ جن لوگوں کو اس بات کا ڈر تھا ان کو پنڈت نہرو کے اس بیان سے اطمینان ہو جائے گا لیکن جو لوگ الزام لگاتے ہیں ان کو اس وقت تک سنتوش نہیں ہو سکتا جب تک ہندستان روسی گروہ میں پوری طرح شامل نہ ہو جائے، دیش اور ودیش کے معاملوں میں روس کے کہے کا پابند نہ بن جائے جیسا کہ پوربی یورپ کے ملکوں نے کیا ہے۔ اور جیسا نہ کرنے پر یوگوسلاویا کی سرکار کمیونسٹ ہوتے ہوئے بھی روس کی گالیاں سن رہی ہے ہندستان روس اور اس کے اثر میں رہنے والے ملک سے دوستی قائم کرنا چاہتا ہے اور ان میں سے کئی ایک کے ساتھ اس کے بیوپاری سمجھوتے بھی ہو گئے ہیں۔ مگر وہ اپنی آزادی کا کوئی حصہ کسی قیمت پر بھی بیچ نہیں سکتا، چاہے اس کا گاہک برطانیہ ہو یا امریکہ یا روس۔ کامن ویلتھ کے سمجھوتے سے دیکھنے میں تو ہندستان کی آزادی پر کوئی آنچ نہیں آتی اور پنڈت نہرو نے آگے کے لئے جو کچھ کہا ہے اس کی سچائی پر بھی کوئی شک نہیں کیا جا سکتا۔ پھر بھی مثل مشہور ہے کہ سونا جانے کسے اور آدمی جانے بسے اور اس برادری میں ہندستان کے شریک رہنے کے فائدے اور نقصان کا ٹھیک ٹھیک اندازہ ان مسئلوں سے کیا جائے گا جو اس کے اندر موجود ہیں یا اس کے باہر پیدا ہوں گے۔

ان مسئلوں میں سب سے بڑا مسئلہ دکھنی افریقہ کے ہندستانیوں

का है. वहाँ की सरकार उन लोगों के साथ अछूतों से भी बद-तर बरताव कर रही है. उनके लिये जायदादें खरीदने, कारबार करने और शादी ब्याह करने और रास्ता चलने तक पर पाबन्दियाँ लगा दी गई हैं—और हिन्दुस्तान और दक्खिनी अफरीका दोनों एक ही बिरादरी के मेम्बर हैं ! इसी तरह हिन्दुस्तान और बरतानिया कामन वेल्थ में एक साथ होते हुए भी इन्डोचीन और इन्डोनेशिया मे आजादी के आन्दोलन के बारे मे अलग-अलग रास्ता एख़तियार किये हुए हैं और मलाया में, जहाँ इसी तरह का आन्दोलन बरतानिया के खिलाफ चल रहा है, बरतानी अफसरो ने एक कम्युनिस्ट हिन्दुस्तानी नेता गणपति को फाँसी का हुक्म सुना दिया और हिन्दुस्तानी राजदूत के कहने सुनने के बावजूद उस हुक्म को वापस लेना तो दूर रहा, कुछ दिनों के लिये मुलतवी रखने तक से इनकार कर दिया. इसीलिये कांग्रेस के सदर डाक्टर पट्टाभि सीता रमैया ने कहा है कि हमें कामन वेल्थ के नाते पर बहुत ज्यादा भरोसा न करना चाहिये इस नाते की यह कमजोरी है कि वह इन मसलों को हल करने मे मदद नहीं देता. पर वह हिन्दुस्तान को अपनी मनमानी कारवाई करने से रोकता भी नहीं है. इस बिरादरी का ढाँचा इतना ढीला है कि हिन्दुस्तान इसके अन्दर रहते हुए भी दक्खिनी अफरीका के खिलाफ यू० एन० ओ० मे मुकदमा पेश कर सकता है, बरतानिया और दूसरे मेम्बरों के खिलाफ राय दे सकता है और उनके मुखालिफ राष्ट्रों से मेल-जोल और लेनदेन बाकी रख सकता है. मगर बरतानिया मे कामन वेल्थ के समझौते पर जिस तरह हर तरफ से (यहाँ तक कि मिस्टर चर्चिल की तरफ से भी) खुशी जाहिर की गई थी उससे यह सन्देह पैदा होता है कि कामन वेल्थ की ढील कहीं

کا ہے۔ وہاں کی سرکار ان لوگوں کے ساتھ اچھوتوں سے بھی بدتر برتاؤ
کر رہی ہے۔ ان کے لئے جائدادیں خریدنے، کاروبار کرنے اور شادی بیاہ
کرنے اور راستہ چلنے تک پر پابندیاں لگادی گئی ہیں ـــ اور ہندستان
اور دکھنی افریقہ دونوں ایک ہی برادری کے ممبر ہیں! اسی طرح ہندستان
اور برطانیہ کامن ویلتھ میں ایک ساتھ ہوتے ہوئے بھی انڈوچین اور
انڈونیشیا میں آزادی کے آندولن کے بارے میں الگ الگ راستہ اختیار
کئے ہوئے ہیں اور ملایا میں، جہاں اسی طرح کا آندولن برطانیہ کے خلاف
چل رہا ہے، برطانی افسروں نے ایک کمیونسٹ ہندستانی نیتا گنپتی کو
[illegible]ی کا حکم سنا دیا اور ہندستانی راجدوت کے کہنے سننے کے باوجود
اس حکم کو واپس لینا تو دور رہا، کچھ دنوں کے لئے ملتوی رکھنے تک سے
انکار کر دیا۔ اسی لئے کانگریس کے صدر ڈاکٹر پٹابھی سیتارمیہ نے کہا
ہے کہ ہمیں کامن ویلتھ کے ناتے پر بہت بھروسہ نہ کرنا چاہئے اس ناتے
کی یہ کمزوری ہے کہ وہ ان مسئلوں کو حل کرنے میں مدد نہیں دیتا۔ پر وہ
ہندستان کو اپنی من مانی کارروائی کرنے سے روکتا بھی نہیں ہے اس
برادری کا ڈھانچہ اتنا ڈھیلا ہے کہ ہندستان اس کے اندر رہتے ہوئے بھی
دکھنی افریقہ کے خلاف یو۔ این۔ او۔ میں مقدمہ پیش کر سکتا
ہے، برطانیہ اور دوسرے ممبروں کے خلاف رائے دے سکتا ہے
اور ان کے مخالف راشٹروں سے میل جول اور لین دین باقی رکھ سکتا
ہے۔ مگر برطانیہ میں کامن ویلتھ کے سمجھوتے پر جس طرح ہر طرف سے
(یہاں تک کہ مسٹر چرچل کی طرف سے بھی) خوشی ظاہر کی گئی تھی
اس سے یہ سندیہ پیدا ہوتا ہے کہ کامن ویلتھ کی ڈھیل کہیں

उस जाल की ढील न हो जो चिड़ीमार चिड़ियों को पकड़ने के लिये बिछा देते हैं और हिन्दुस्तान की आजादी पर कहीं आगे चलकर सीधेसादे तरीक़े से या घुमा फिराकर कोई पाबन्दी लगाने की कोशिश न की जाय. इसीलिये हिन्दुस्तान की सरकार और यहाँ की जनता को बहुत ज्यादा चौकन्ना रहना होगा—जिसमें कि हम जाल में घसीटे जाने से पहले ही उसके नीचे से निकल आये और जल्दी से जल्दी इतनी शक्ति पैदा कर लें कि हमें न तो इस जाल से निकलने में कोई कठिनाई हो और न किसी दूसरे जाल के नीचे जाने की कोई जरूरत रहे.

रूस और पाकिस्तान

कामन वेल्थ में हिन्दुस्तान के साथ पाकिस्तान भी शरीक है पर उसकी शिरकत लन्दन कानफरेन्स से पहले ही यक़ीनी खयाल की जाती थी और कानफ़रेन्स के दिनों में उसका चरचा बहुत कम किया गया शायद इसीलिये कानफरेन्स के बाद पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री ने चिढ़कर बरतानिया को यह आगाही दी थी कि वह पाकिस्तान को अपनी हाँ में हाँ मिलाने वाला राष्ट्र न समझे और इस बात को ध्यान में रखकर देखा जाय तो पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री ने मासको जाने के लिये रूसी सरकार का जो न्योता कबूल कर लिया है वह एक तरह का चैलेन्ज है. पर खुद लियाकत अली खाँ ने एक बरतानी पत्रकार से बात चीत करते हुए इस न्योते और अपने जवाब को एक समाजी चीज बताया है और कहा है कि इसी कारन उन्होंने इस मामले में कामन वेल्थ के राष्ट्रों से सलाह नहीं की. फिर भी उस पत्रकार की राय में रूस का न्योता कोई समाजी कारवाई नहीं बल्कि एक चाल है,, कामन वेल्थ में फूट डालने और हिन्द और पाकिस्तान में तनातनी पैद

اس جال کی ڈھیل نہ ہو جو چڑی مار چڑیوں کو پکڑنے کے لئے بچھا دیتے ہیں اور ہندستان کی آزادی پر کہیں آگے چلکر سیدھے سادے طریقے سے یا گھما پھرا کر کوئی پابندی لگانے کی کوشش نہ کی جائے۔ اسی لئے ہندستان کی سرکار اور یہاں کی جنتا کو بہت زیادہ چوکنا رہنا ہوگا — جس میں کہ ہم جال میں گھسیٹے جانے سے پہلے ہی اس کے نیچے سے نکل آئیں اور جلدی سے جلدی اتنی شکتی پیدا کرلیں کہ ہمیں نہ تو اس جال سے نکلنے میں کوئی کٹھنائی ہو اور نہ کسی دوسرے جال کے نیچے جانے کی کوئی ضرورت رہے۔

روس اور پاکستان

کامن ویلتھ میں ہندستان کے ساتھ پاکستان بھی شریک ہے پر اس کی شرکت لندن کانفرنس سے پہلے ہی یقینی خیال کی جاتی تھی اور کانفرنس کے دنوں میں اس کا چرچا بہت کم کیا گیا۔ شاید اسی لئے کانفرنس کے بعد پاکستان کے پردھان منتری نے چڑھ کر برطانیہ کو یہ آگاہی دی تھی کہ وہ پاکستان کو اپنی ہاں میں ہاں ملانے والا راشٹر نہ سمجھے اور اس بات کو دھیان میں رکھ کر دیکھا جائے تو پاکستان کے پردھان منتری نے ماسکو جانے کے لئے روسی سرکار کا جو نیوتا قبول کر لیا ہے وہ ایک طرح کا چیلنج ہے۔ پر خود لیاقت علی خاں نے ایک برطانی پترکار سے بات چیت کرتے ہوئے اس نیوتے اور اپنے جواب کو ایک سماجی چیز بتایا ہے اور کہا ہے کہ اسی کارن انھوں نے اس معاملے میں کامن ویلتھ کے راشٹروں سے صلاح نہیں کی۔ پھر بھی اس پترکار کی رائے میں روس کا نیوتا کوئی سماجی کارروائی نہیں بلکہ ایک چال ہے، کامن ویلتھ میں پھوٹ ڈالنے اور ہند اور پاکستان میں تناتنی پیدا کرنے کی۔ اس طرح

यह चैलेंज पाकिस्तान का नहीं बल्कि रूस का है और पाकिस्तान के इसमें शरीक होने का कारन दुनिया को अपना बड़ापन दिखाना है. बरतानिया को यह जताना है कि पाकिस्तान के साथ दोस्ती चाहने वालों की कोई कमी नहीं है और हिन्दुस्तान को यह दिखाना है कि अगर उसके प्रधान मन्त्री को अमरीका के प्रधान ट्रूमेन न्योता दे सकते हैं तो पाकिस्तान का प्रधान मन्त्री भी मास्को से न्योता मंगा सकता है

सवाल यह है कि रूस ने यह न्योता क्यों भेजा पाकिस्तान के बारे में उसकी राय शुरू से ही कुछ अच्छी नहीं है. वह उसे बरतानिया का दुमछल्ला समझता था कश्मीर के मसले पर रूस के एक मशहूर अखबार ने लिखा था कि बरतानिया और अमरीका कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाकर रूस के दक्खिन में अपने फौजी अड्डे बनाना चाहते हैं. दूसरी तरफ़ पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने कम्युनिज़्म के विरोध में जो कुछ कहा है और इस्लाम को जिस तरह उसके मुकाबले में रक्खा है उसे रूस अच्छी निगाह से नहीं देख सकता और न वह यह आशा कर सकता है कि पाकिस्तानी सरकार का रवैया आगे चलकर बदल जायगा या पाकिस्तान कामन वेल्थ की बिरादरी से निकल जायगा या बरतानिया उससे हमेशा के लिये खफा हो जायगा. इसका नतीजा अधिक से अधिक यह निकल सकता है कि बरतानिया और पाकिस्तान के दिल में थोड़े दिनों के लिये एक दूसरे के खिलाफ शक पड़ जाय और बरतानिया बीच पूरब में रूस का हौवा आते देखकर डरने लगे.

पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री के मास्को जाने से हिन्दुस्तान पर कोई फ़ौरन और सीधा असर नहीं पड़ेगा और जो लोग इस असर को यक़ीनी समझते हैं वह कश्मीर को देखते हैं जहाँ रूस, पाकिस्तान, हिंदुस्तान और

یہ چیلنج پاکستان کا نہیں بلکہ روس کا ہے اور پاکستان کے اس میں شریک ہونے کا کارن دنیا کو اپنا بڑاپن دکھانا ہے۔ برطانیہ کو یہ جتانا ہے کہ پاکستان کے ساتھ دوستی چاہنے والوں کی کوئی کمی نہیں ہے اور ہندستان کو یہ دکھانا ہے کہ اگر اس کے پردھان منتری کو امریکہ کے پردھان ٹرومین نیوتا دے سکتے ہیں تو پاکستان کا پردھان منتری بھی ماسکو سے نیوتا منگا سکتا ہے۔

سوال یہ ہے کہ روس نے یہ نیوتا کیوں بھیجا۔ پاکستان کے بارے میں اس کی رائے شروع سے ہی کچھ اچھی نہیں ہے۔ وہ اسے برطانیہ کا دم چھلا سمجھتا تھا۔ کشمیر کے مسئلے پر روس کے ایک مشہور اخبار نے لکھا تھا کہ برطانیہ و امریکہ کشمیر کو پاکستان میں ملا کر روس کے دکھن میں اپنے فوجی اڈے بنانا چاہتے ہیں۔ دوسری طرف پاکستان کے پردھان منتری نے کمیونزم کے ورودھ میں جو کچھ کہا ہے اور اسلام کو جس طرح اس کے مقابلے میں رکھا ہے اسے روس اچھی نگاہ سے نہیں دیکھ سکتا اور نہ وہ یہ آشا کر سکتا ہے کہ پاکستانی سرکار کا رویہ آگے چلکر بدل جائے گا یا پاکستان کامن ویلتھ کی برادری سے نکل جائے گا یا برطانیہ اس سے ہمیشہ کے لئے خفا ہو جائے گا۔ اس کا نتیجہ ادھک سے ادھک یہ نکل سکتا ہے کہ برطانیہ اور پاکستان کے دل میں تھوڑے دنوں کے لئے ایک دوسرے کے خلاف شک پڑ جائے اور برطانیہ بیچ پورب میں روس کا ہوا آتے دیکھ کر ڈرنے لگے۔

پاکستان کے پردھان منتری کے ماسکو جانے سے ہندستان پر کوئی فوراً اور سیدھا اثر نہیں پڑے گا اور جو لوگ اس اثر کو یقینی سمجھتے ہیں وہ کشمیر کو دیکھتے ہیں جہاں روس، پاکستان، ہندستان اور

अफ़ग़ानिस्तान की सरहदें मिलती हैं और जिसके ऊपर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में झगड़ा चल रहा है. मगर इस झगड़े मे पाकिस्तान की तरफ़ से रूस के शरीक होने की कोई आशा नही है, इसलिये कि पाकिस्तान ने अमरीका और बरतानिया के जत्थे से नाता जोड़ रक्खा है. और रूस इस मामले में पाकिस्तान की हिमायत करके इन दोनो का असर नहीं बढ़ायेगा और यह दोनो भी रूस को इस मामले मे टॉग नही अड़ाने देंगे. यही बात पठानिस्तान के आन्दोलन और अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान के झगड़े के बारे में कही जा सकती है यह दोनों मुल्क अमरीका और बरतानिया के असर मे हैं और इस झगड़े मे रूस का हाथ नहीं मालूम होता अमरीका और बरतानिया का भी अगर कोई हाथ है तो वह परदे के इतने पीछे, इतनी दूर पर है कि दिखाई नही देता

अफ़ग़ानिस्तान और पठानिस्तान

देखने में यह झगड़ा इस बात पर है कि पाकिस्तान अपनी अफ़ग़ानिस्तान की सरहद के बीच वाले पहाड़ी इलाके को, जहाँ पठानों के प्राचीन कबीले रहते हैं, अपनी मिलकियत समझता है इन कबीलों में से कुछ इसका विरोध करते हैं और अफ़ग़ानिस्तान उनका साथ दे रहा है उसका कहना है कि अंगरेज़ी सरकार ने इन कबीलों की आज़ादी मान ली थी और पाकिस्तान के पहले गवर्नर जनरल ने इसे बहाल रखने का वादा कर लिया था लेकिन मौजूदा गवर्नर जनरल ने इस इलाक़े को पाकिस्तान का हिस्सा कहा है और उनकी सरकार वहाँ के लोगों को अपने मातहत रखने के लिये उन पर सख़्ती कर रही है. इस सख़्ती की बात को पाकिस्तान सरकार भी मानती है अभी कुछ

افغانستان کی سرحدیں ملتی ہیں اور جس کے اوپر ہندستان اور پاکستان میں جھگڑا چل رہا ہے۔ مگر اس جھگڑے میں پاکستان کی طرف سے روس کے شریک ہونے کی کوئی آشا نہیں ہے، اس لئے کہ پاکستان نے امریکہ اور برطانیہ کے جتھے سے ناتا جوڑ رکھا ہے۔ اور روس اس معاملے میں پاکستان کی حمایت کرکے ان دونوں کا اثر نہیں بڑھائے گا اور یہ دونوں بھی روس کو اس معاملے میں ٹانگ نہیں اڑانے دیں گے۔ یہی بات پٹھانستان کے آندولن اور افغانستان اور پاکستان کے جھگڑے کے بارے میں کہی جا سکتی ہے۔ یہ دونوں ملک امریکہ اور برطانیہ کے اثر میں ہیں اور اس جھگڑے میں روس کا ہاتھ نہیں معلوم ہوتا۔ امریکہ اور برطانیہ کا بھی اگر کوئی ہاتھ ہے تو وہ پردے کے اتنے پیچھے، اتنی دور پر ہے کہ دکھائی نہیں دیتا۔

افغانستان اور پٹھانستان

دیکھنے میں یہ جھگڑا اس بات پر ہے کہ پاکستان اپنی اور افغانستان کی سرحد کے بیچ والے پہاڑی علاقے کو، جہاں پٹھانوں کے پراچین قبیلے رہتے ہیں، اپنی ملکیت سمجھتا ہے۔ ان قبیلوں میں سے کچھ اس کا ورودھ کرتے ہیں اور افغانستان ان کا ساتھ دے رہا ہے۔ اس کا کہنا ہے کہ انگریزی سرکار نے ان قبیلوں کی آزادی مان لی تھی اور پاکستان کے پہلے گورنر جنرل نے اسے بحال رکھنے کا وعدہ کر لیا تھا لیکن موجودہ گورنر جنرل نے اس علاقے کو پاکستان کا حصہ کہا ہے اور ان کی سرکار وہاں کے لوگوں کو اپنے ماتحت رکھنے کے لئے ان پر سختی کر رہی ہے۔ اس سختی کی بات کو پاکستان سرکار بھی مانتی ہے۔ ابھی کچھ

दिन हुए जब उसने अपने एक एलान में बताया है कि उसके हवाई जहाज़ों ने कबायली इलाक़े पर बम गिराये इसलिये कि इस इलाक़े में फकीर इपी के आदमियों ने उन हवाई जहाजों पर गोलियाँ चलाई थीं

इस घटना के बारे में अफ़ग़ानी सरकार का बयान बिलकुल दूसरा है. उसने कहा है कि पाकिस्तानी हवाई जहाजों ने उसके दक्खिनी इलाक़े पर बम गिराये हैं जहाँ उसके आदमी कबयली हमले की रोकथाम के लिये मोर्चा बन्दी कर रहे थे और इन बमों से १५ आदमी जान से मारे गये और १२ घायल हुए इस बात की चरचा अफ़ग़ानी पालियामेन्ट में भी हुई एक वज़ीर ने मौक़े पर जाकर सब हाल अपनी आँखों से देखा है पाकिस्तानी सरकार से इसकी शिकायत भी की गई है लेकिन उसका कहना है कि उसके हवाई जहाज बम गिराना तो दूर रहा, अफ़ग़ानी इलाक़े में गये तक नहीं. पाकिस्तान और अफगानिस्तान की तनातनी अब इतनी बढ़ गई है कि दोनों जगह की जनता अपनी-अपनी सरकार पर बदला लेने के लिये जोर डाल रही है और दोनों सरकारों के प्रतिनिधि एक दूसरे को कसूरवार ठहरा रहे हैं पिछले दिनों अफ़ग़ानिस्तान के प्रधान मंत्री ने अपने मुल्क के पठान लीडरों के जोश को ठंडा करने के लिये उनसे कहा था कि अफ़ग़ानी सरकार कबायली इलाक़े को आज़ादी दिलाने के लिये बातचीत के जरिये जो कोशिश कर रही है उसमें अगर सफलता न हुई तो वह कोई दूसरी कारवाई करेगी और हो सकता है कि यह इशारा इस मसले को यू० एन० ओ० में ले जाने के लिये किया गया हो दूसरी तरफ़ पाकिस्तान में एक आवाज यह उठाई जा रही है कि अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह जाहिरशाह को हटाकर पुराने बादशाह अमानुल्ला खां को राजगद्दी पर वापस लाया

(५५०)

دن ہوئے جب اس نے اپنے ایک اعلان میں بتایا ہے کہ اس کے ہوائی جہازوں نے قبائلی علاقے پر بم گرائے اس لئے کہ اس علاقے میں فقیر اپی کے آدمیوں نے ان ہوائی جہازوں پر گولیاں چلائی تھیں۔

اس گھٹنا کے بارے میں افغانی سرکار کا بیان بالکل دوسرا ہے۔ اس نے کہا ہے کہ پاکستانی ہوائی جہازوں نے اس کے دکھنی علاقے پر بم گرائے ہیں جہاں اس کے آدمی قبائلی حملے کی روک تھام کے لئے مورچہ بندی کر رہے تھے اور ان بموں سے ۱۵ آدمی جان سے مارے گئے اور ۱۲ گھائل ہوئے اس بات کی چرچا افغانی پارلیمنٹ میں بھی ہوئی ایک وزیر نے موقعہ پر جا کر سب حال اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے پاکستانی سرکار سے اس کی شکایت بھی کی گئی ہے لیکن اس کا کہنا ہے کہ اس کے ہوائی جہاز بم گرانا تو دور رہا، افغانی علاقے میں گئے تک نہیں. پاکستان اور افغانستان کی تناتنی اب اتنی بڑھ گئی ہے کہ دونوں جگہ کی جنتا اپنی اپنی سرکار پر بدلہ لینے کے لئے زور ڈال رہی ہے اور دونوں سرکاروں کے پرتیندگی ایک دوسرے کو قصوروار ٹھہرا رہے ہیں پچھلے دنوں افغانستان کے پردھان منتری نے اپنے ملک کے پٹھان لیڈروں کے جوش کو ٹھنڈا کرنے کے لئے ان سے کہا تھا کہ افغانی سرکار قبائلی علاقے کو آزادی دلانے کے لئے بات چیت کے ذریعے جو کوشش کر رہی ہے اس میں اگر سپھلتا نہ ہوئی تو وہ کوئی دوسری کارروائی کرے گی اور ہو سکتا ہے کہ یہ اشارہ اس مسئلے کو یو۔ این۔ او۔ میں لے جانے کے لئے کیا گیا ہو۔ دوسری طرف پاکستان میں ایک آواز یہ اٹھائی جا رہی ہے کہ افغانستان کے بادشاہ ظاہر شاہ کو ہٹا کر پرانے بادشاہ امان اللہ خاں کو راج گدی پر واپس لایا

जाय. और हाल की बमबारी पर एक बयान देते हुए नई देहली में अफ़ग़ानिस्तान के राजदूत ने बताया है कि कोई नौ महीने हुए जब अमानुल्ला खां के भाई अमीन जान खाॅ ने पाकिस्तान के रास्ते से क़बायली इलाक़े में जाकर अफ़ग़ानिस्तान पर हमला करने के लिये आदमी इकट्ठा करने की कोशिश की थी जिसमें उनको मुँह की खानी पड़ी

इस्लामी देशों की एकता

अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के झगड़े को देखते हुए इस्लामी देशों का एक जत्था क़ायम करने के लिये पाकिस्तान की कोशिश कुछ अजीब सी मालूम होती है. खास कर ऐसी हालत में जब कि इसी तरह के झगड़े दूसरे इस्लामी देशों में भी आपस में पाये जाते हैं इन्हीं झगड़ों की बदौलत वह फ़िलस्तीन की तिक्का बोटी को नहीं रोक सके जब ट्रान्स जार्डन के राजा शाह अब्दुल्ला खुद एक बोटी नोचकर मैदान से हट गये तो दूसरे अरब देशों के लिये यहूदियों से लड़ते रहना बेकार और नामुमकिन हो गया. शाह अब्दुल्ला ने फिलस्तीन का जो टुकड़ा हथिया लिया है उसके कारन उनका राज जार्डन नदी के दोनों तरफ फैल गया है और इसीलिये उन्होंने अब अपने राष्ट्र का नाम बदलकर हाशमी सलतनत कर दिया है इस तरह वह अपनी उस स्कीम की तरफ एक कदम आगे बढ़ गये हैं जिसका मकसद यह है कि शाम, इराक़, फिलस्तीन और ट्रान्स जार्डन को एक झंडे के तले और एक हुकूमत के मातहत ले आयें. दूसरे इस कदम में उनको एक आसानी यह है कि इराक़ पर उनका सगा भतीजा, राज करता है लेकिन इससे बहुत बड़ी

جائے۔ اور حال کی بمباری پر ایک بیان دیتے ہوئے نئی دہلی میں افغانستان کے راج دوت نے بتایا ہے کہ کوئی نو مہینے ہوئے جب امان اللہ خاں کے بھائی امین جان خاں نے پاکستان کے راستے سے قبائلی علاقے میں جاکر افغانستان پر حملہ کرنے کے لئے آدمی اکٹھا کرنے کی کوشش کی تھی جس میں ان کو منہ کی کھانی پڑی۔

اسلامی دیشوں کی ایکتا

افغانستان اور پاکستان کے جھگڑے کو دیکھتے ہوئے اسلامی دیشوں کا ایک جتھا قائم کرنے کے لئے پاکستان کی کوشش کچھ عجیب سی معلوم ہوتی ہے۔ خاص کر ایسی حالت میں جب کہ اسی طرح کے جھگڑے دوسرے اسلامی دیشوں میں بھی آپس میں پائے جاتے ہیں۔ انھیں جھگڑوں کی بدولت وہ فلسطین کی تکا بوٹی کو نہیں روک سکے جب ٹرانس جارڈن کے راجا شاہ عبداللہ خود ایک بوٹی نوچ کر میدان سے ہٹ گئے تو دوسرے عرب دیشوں کے لئے یہودیوں سے لڑتے رہنا بےکار اور ناممکن ہوگیا۔ شاہ عبداللہ نے فلسطین کا جو ٹکڑا ہتھیا لیا ہے اس کے کارن ان کا راج جارڈن ندی کے دونوں طرف پھیل گیا ہے اور اسی لئے انھوں نے اب اپنے راشٹر کا نام بدلکر ہاشمی سلطنت کر دیا ہے۔ اس طرح وہ اپنی اس اسکیم کی طرف ایک قدم آگے بڑھ گئے ہیں جس کا مقصد یہ ہے کہ شام، عراق، فلسطین اور ٹرانس جارڈن کو ایک جھنڈے کے تلے اور ایک حکومت کے ماتحت لے آئیں۔ دوسرے اس قدم میں ان کو ایک آسانی یہ ہے کہ عراق پر ان کا سگا بھتیجا راج کرتا ہے۔ لیکن اس سے بہت بڑی

मुश्किल यह है कि शाम में कर्नेल हसनी जईम ने पिछली सरकार का तख्ता उलट कर जो नई सरकार बनाई है वह इस स्कीम के खिलाफ है और शायद इसीलिये इराक़ ने बरतानिया से कहा है कि वह इस सरकार मे ज्यादा सरोकार न रक्खे और शामी सरकार नये विधान के लिये जो आम वोट लेने वाली है उसे देखने के लिये अपने आदमी न भेजे. लेकिन बरतानिया इस सरकार को पहले ही कायदे के अन्दर मान चुका है इसलिये कि वह बीच पूरब में किसी देश को खफा नहीं करना चाहता उसे सबसे ज्यादा इस बात से खुशी होगी कि यह सब देश उसके झंडे की छाँव मे इकट्ठा हो जायँ और अगर यह काम पाकिस्तान के जरिये हो जाय जो इसमें कोई बुराई नहीं है. लेकिन इसमें इस्लामी देशों के लिये कोई अच्छाई भी नहीं है. एक तो इसलिये कि उनके आपस के झगड़े फिर भी बाकी रहेंगे दूसरे इसलिये कि उनकी एकता की बुनियाद अपनी तरक्की पर उतनी नहीं होगी जितनी कि रूस और कम्युनिज्म की रोकथाम पर. और तीसरे इसलिये कि इस तरह उनकी सरकारों को सहारा मिल जायगा और वह जनता की परवाह न करके भी जिंदा रह सकेंगी

लीबिया का बँटवारा

बरतानिया बीच पूरब में अपना असर जमाने की जो कोशिश कर रहा है वह उत्तरी अफरीका में चौकिया बनाये बिना अधूरी रहेगी. यह चौकियां मिश्र और लीबिया में बन सकती हैं. लीबिया पिछली बड़ी लड़ाई से पहले इटली के अधिकार में था और लड़ाई के बाद चार बड़ी ताकतों में इस पर कोई समझौता नहीं हो सका जिसके कारन यह मसला

مشکل یہ ہے کہ شام میں کرنل حسنی زعیم نے پچھلی سرکار کا تختہ الٹ کر جو نئی سرکار بنائی ہے وہ اس سکیم کے خلاف ہے اور شاید اسی لئے عراق نے برطانیہ سے کہا ہے کہ وہ اس سرکار سے زیادہ سروکار نہ رکھے اور شامی سرکار نئے ودھان کے لئے جو عام ووٹ لینے والی ہے اسے دیکھنے کے لئے اپنے آدمی نہ بھیجے۔ لیکن برطانیہ اس سرکار کو پہلے ہی قاعدے کے اندر مان چکا ہے اس لئے کہ وہ بیچ پورب میں کسی دیش کو خفا نہیں کرنا چاہتا اسے سب سے زیادہ اس بات سے خوشی ہوگی کہ یہ سب دیش اس کے جھنڈے کی چھاؤں میں اکٹھا ہو جائیں اور اگر یہ کام پاکستان کے ذریعے ہو جائے تو اس میں کوئی برائی نہیں ہے۔ لیکن اس میں اسلامی دیشوں کے لئے کوئی اچھائی بھی نہیں ہے۔ ایک تو اس لئے کہ ان کے آپس کے جھگڑے پھر بھی باقی رہیں گے دوسرے اس لئے کہ ان کی ایکتا کی بنیاد اپنی ترقی پر اتنی نہیں ہوگی جتنی کہ روس اور کمیونزم کی روک تھام پر۔ اور تیسرے اس لئے کہ اس طرح ان کی سرکاروں کو سہارا مل جائے گا اور وہ جنتا کی پرواہ نہ کرکے بھی زندہ رہ سکیں گی۔

لیبیا کا بٹوارہ

برطانیہ بیچ پورب میں اپنا اثر جمانے کی جو کوشش کر رہا ہے وہ اتری افریقہ میں چوکیاں بنائے بنا ادھوری رہے گی۔ یہ چوکیاں مصر اور لیبیا میں بن سکتی ہیں۔ لیبیا پچھلی بڑی لڑائی سے پہلے اٹلی کے ادھیکار میں تھا اور لڑائی کے بعد چار بڑی طاقتوں میں اس پر کوئی سمجھوتہ نہیں ہو سکا جس کے کارن یہ مسئلہ

इस बार यू० एन० ओ० के इजलास मे पेश कर दिया गया. लेकिन पर्दे के पीछे बरतानिया और इटली में लीबिया के बॅटवारे के बारे मे समझौता हो चुका था जिसके अनुसार फ़ैज़ान का इलाक़ा फ्रांस को, सायरेनिका का इलाका बरतानिया को और तराबलस का इलाका दो साल बाद इटली को निगरानी के लिये मिल जाता यू० एन० ओ० की कमेटी और असेम्बली में इस समझौते को बहुमत भी मिल गया लेकिन यह दो तिहाई नहीं था इस कारण समझौता मंज़ूर नहीं हो सका और इसके मंज़ूर न होने का सबसे बड़ा कारण यह है कि करीब-करीब तमाम एशियाई देशों ने इसका विरोध किया. उनकी इस कामयाबी को यू० एन० ओ० के सेक्रेटरी ने दुनिया की बिरादरी में इन देशों के बढते हुए असर का सबूत कहा है और यह ठीक भी है लेकिन पच्छिमी देश इस असर का तोड़ करना जानते हैं लीबिया मे इसकी सूरत यह है कि यू० एन० ओ० की बेनतीजा बहस के बाद सायरेनिका के नेता शेख सनोसी ने अपने देश की आजादी का ऐलान कर दिया और बरतानी सरकार ने फौरन ही उसको मंज़ूर करते हुए कहा कि इसी तरह का ऐलान वह खुद भी करने वाली थी. लेकिन यह आजादी सिर्फ घरेलू मामलों मे होगी और सायरेनिका पर बरतानिया की निगरानी जैसी आज है वैसी ही उस समय तक रहेगी जब तक कि यू० एन० ओ० इटली के पुराने उपनिवेशों के बारे में कोई फ़ैसला न करदे शेख सनौसी ने इन बातों पर कोई एतराज़ नहीं किया है और अगर उनको इन बातों के बावजूद अपनी 'आज़ादी' की तरफ से सन्तोष हो गया है तो यह बरतानिया की पालिसी की बहुत बड़ी कामयाबी है. इस तरह उसका आज का अधिकार हमेशा के लिये हो जायगा इसलिये कि यू० एन० ओ० के

(५५३)

اس بار یو۔ این۔ او۔ کے اجلاس میں پیش کر دیا گیا۔ لیکن پردے کے پیچھے برطانیہ اور اٹلی میں لیبیا کے بٹوارے کے بارے میں سمجھوتہ ہو چکا تھا جس کے انوسار فیضان کا علاقہ فرانس کو، سائرینیکا کا علاقہ برطانیہ کو اور طرابلس کا علاقہ دو سال بعد اٹلی کو نگرانی کے لئے مل جاتا۔ یو۔ این۔ او۔ کی کمیٹی اور اسمبلی میں اس سمجھوتے کو بہومت بھی مل گیا لیکن یہ دو تہائی نہیں تھا اس کارن سمجھوتہ منظور نہیں ہو سکا۔ اور اس کے منظور نہ ہونے کا سب سے بڑا کارن یہ ہے کہ قریب قریب تمام ایشیائی دیشوں نے اس کا ورودھ کیا۔ ان کی اس کامیابی کو یو۔ این۔ او۔ کے سکریٹری نے دنیا کی برادری میں ان دیشوں کے بڑھتے ہوئے اثر کا ثبوت کہا ہے اور یہ ٹھیک بھی ہے۔ لیکن پچھمی دیش اس اثر کا توڑ کرنا جانتے ہیں۔ لیبیا میں اس کی صورت یہ ہے کہ یو۔ این۔ او۔ کی بے نتیجہ بحث کے بعد سائرینیکا کے نیتا شیخ سنوسی نے اپنے دیش کی آزادی کا اعلان کر دیا اور برطانوی سرکار نے فوراً ہی اس کو منظور کرتے ہوئے کہا کہ اسی طرح کا اعلان وہ خود بھی کرنے والی تھی۔ لیکن یہ آزادی صرف گھریلو معاملوں میں ہوگی اور سائرینیکا پر برطانیہ کی نگرانی جیسی آج ہے ویسی ہی اس سمے تک رہے گی جب تک کہ یو۔ این۔ او۔ اٹلی کے پرانے اپنیویشوں کے بارے میں کوئی فیصلہ نہ کر دے۔ شیخ سنوسی نے ان باتوں پر کوئی اعتراض نہیں کیا ہے اور اگر ان کو ان باتوں کے باوجود اپنی 'آزادی' کی طرف سے سنتوش ہو گیا ہے تو یہ برطانیہ کی پالیسی کی بہت بڑی کامیابی ہے۔ اس طرح اس کا آج کا ادھیکار ہمیشہ کے لئے ہو جائے گا۔ اس لئے کہ یو۔ این۔ او۔ کے

फ़ैसले तक वह अपने कारिन्दों के ज़रिये सायरेनिका और तराबलस में भी मैदान तैयार कर लेगा और उन्हीं के ज़रिये अरबों के दिल से यह खटक निकाल देगा कि पहले वह तराबलस को उसी इटली के हवाले कर देने के लिये तैयार हो गया था, जिसने वहाँ की आबादी पर बेहद अत्याचार किये हैं. इसी लिये इटली सायरेनिका की आज़ादी के एलान और उसके बारे में बरतानिया के रुख़ को सन्देह की नजर से देखता है. दूसरी तरफ़ अरब लीग के सेक्रेटरी ने भी इस कारवाई को बरतानिया की एक साम्राजी चाल कहा है.

बर्लिन की गुत्थी

रूस और पच्छिमी राष्ट्रों में यों तो हर बात पर झगड़ा हो जाता है मगर टकराव का डर सिर्फ़ जर्मनी में था, जहाँ रूस की फ़ौजों की अमरीका, बरतानिया या फ़्रान्स की फ़ौजों से मामूली सी झड़प एटलांटिक समझौते के मुताबिक़ बड़ी लड़ाई का कारन बन सकती थी. पिछली बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी रूस और तीन पच्छिमी राष्ट्रों में बँट गया था. पहले चारों एक साथ मिलकर हुकूमत करते थे, पर उनके इलाक़े अलग अलग थे और आगे चलकर रूस और तीनों पच्छिमी राष्ट्रों के इलाक़े एक दूसरे के लिये अजनबी बन गये यही हाल जर्मनी की राजधानी बर्लिन का भी हुआ. वहाँ भी दो सरकारें बन गईं. मगर यह शहर रूस के अधिकार वाले इलाक़े से घिरा हुआ है. और पिछले साल जब पच्छिमी राष्ट्रों से उसकी अन बन हो गई और उन राष्ट्रों ने जर्मनी और बर्लिन में भी अपना सिक्का अलग कर लिया तो रूस ने इस शहर को अपने आधीन या क़ाबू में लाने के लिये यहाँ तक आने वाले ज़मीन के अधिकतर

فیصلے تک وہ اپنے کارندوں کے ذریعے سائرینیکا اور طرابلس میں بھی میدان تیار کر لے گا اور انھیں کے ذریعے عربوں کے دل سے یہ کھٹک نکال دیگا کہ پہلے وہ طرابلس کو اسی اٹلی کے حوالے کر دینے کے لئے تیار ہو گیا تھا، جس نے وہاں کی آبادی پر بے حد اتیاچار کئے ہیں۔ اسی لئے اٹلی سائرینیکا کی آزادی کے اعلان اور اس کے بارے میں برطانیہ کے رُخ کو سندیہہ کی نظر سے دیکھتا ہے۔ دوسری طرف عرب لیگ کے سکریٹری نے بھی اس کارروائی کو برطانیہ کی ایک سامراجی چال کہا ہے۔

برلن کی گتھی

روس اور پچھمی راشٹروں میں یوں تو ہر بات پر جھگڑا ہو جاتا ہے مگر ٹکراؤ کا ڈر صرف جرمنی میں تھا، جہاں روس کی فوجوں کی امریکہ، برطانیہ یا فرانس کی فوجوں سے معمولی سی جھڑپ اٹلانٹک سمجھوتے کے مطابق بڑی لڑائی کا کارن بن سکتی تھی۔ پچھلی بڑی لڑائی کے بعد جرمنی روس اور تین پچھمی راشٹروں میں بنٹ گیا تھا۔ پہلے چاروں ایک ساتھ مل کر حکومت کرتے تھے، پر ان کے علاقے الگ الگ تھے اور آگے چل کر روس اور تینوں پچھمی راشٹروں کے علاقے ایک دوسرے کے لئے اجنبی بن گئے۔ یہی حال جرمنی کی راجدھانی برلن کا بھی ہوا۔ وہاں بھی دو سرکاریں بن گئیں۔ مگر یہ شہر روس کے ادھیکار والے علاقے سے گھرا ہوا ہے۔ اور پچھلے سال جب پچھمی راشٹروں سے اس کی ان بن ہو گئی اور ان راشٹروں نے جرمنی اور برلن میں بھی اپنا سکہ الگ کر لیا تو روس نے اس شہر کو اپنے آدھین یا قابو میں لانے کے لئے یہاں تک آنے والے زمین کے ادھکتر

रास्ते पच्छिमी राष्ट्रों पर बन्द कर दिये और तब यह राष्ट्र बर्लिन की बीस लाख आबादी को खाने पीने का और दूसरा सारा जरूरी सामान हवाई जहाज़ों के जरिये पहुँचाने लगे. रूस इसमें भी अड़गा लगाने की कोशिश कर रहा था और अमरीका के विदेश मंत्री ने इसके जवाब मे यह धमकी दी थी कि अगर रूस ने हवाई रास्ता रोकने की कोशिश की तो इस मामले में एटलान्टिक समझौता लागू हो जायगा. मगर इस बीच में रूस ने एक दम से ढील दे दी और बर्लिन की नाका बन्दी उठा लेने पर तैयार हो गया.

चार बड़ों की कौंसिल

रूस के रुख में इस तब्दीली के कई कारन हैं. नाकाबन्दी मे उसने पच्छिमी देशों को परेशान तो अच्छी तरह कर दिया मगर उनको घुटने टेकने पर मजबूर नहीं कर सका. बल्कि पच्छिमी देशो ने हवाई रास्ते को इतने बड़े पैमाने पर और इतनी लम्बी मुद्दत तक इस्तेमाल करके दुनिया को अपनी शक्ति दिखला दी, और बर्लिन वालो की निगाह में अपनी साख को बढ़ा लिया. साथ ही साथ उनकी जवाबी नाका बन्दी से जर्मनी मे रूसी कब्जे वाले इलाके और योरप मे उसके असर वाले देशों को व्योपार और लेनदेन मे अच्छी खासी परेशानी हो गई. इसके अलावा पच्छिमी राष्ट्रो ने पच्छिमी जर्मनी मे एक अलग सरकार बनाने की कारवाई भी शुरू कर दी, जो एटलान्टिक वाली जत्था बन्दी का एक खास मोर्चा होती. पहली बात के बुरे असर से बचने और दूसरी बात को रोकने के खयाल से रूस ने नाका बन्दी के हटाये जाने के पहले पूरे बर्लिन में अपना सिक्का चलाये जाने की शर्त, जिस पर [illegible] हटा दी और सिर्फ यह शर्त

راستے پچھمی راشٹروں پر بند کر دیئے اور تب یہ راشٹر برلن کی بیس لاکھ آبادی کو کھانے پینے کا اور دوسرا سارا ضروری سامان ہوائی جہازوں کے ذریعے پہنچانے لگے۔ روس اس میں بھی اڑنگا لگانے کی کوشش کر رہا تھا اور امریکہ کے ودیش منتری نے اس کے جواب میں یہ دھمکی دی تھی کہ اگر روس نے ہوائی راستہ روکنے کی کوشش کی تو اس معاملے میں اٹلانٹک سمجھوتہ لاگو ہو جائے گا۔ مگر اس بیچ میں روس نے ایک دم سے ڈھیل دیدی اور برلن کی ناکہ بندی اٹھا لینے پر تیار ہو گیا۔

چار بڑوں کی کونسل

روس کے رُخ میں اس تبدیلی کے کئی کارن ہیں۔ ناکہ بندی سے اس نے پچھمی دیشوں کو پریشان تو اچھی طرح کر دیا مگر ان کو گھٹنے ٹیکنے پر مجبور نہیں کر سکا۔ بلکہ پچھمی دیشوں نے ہوائی راستے کو اتنے بڑے پیمانے پر اور اتنی لمبی مدت تک استعمال کر کے دنیا کو اپنی شکتی دکھلا دی، اور برلن والوں کی نگاہ میں اپنی ساکھ کو بڑھا لیا۔ ساتھ ہی ساتھ ان کی جوابی ناکہ بندی سے جرمنی میں روسی قبضے والے علاقے اور یورپ میں اس کے اثر والے دیشوں کو بیوپار اور لین دین میں اچھی خاصی پریشانی ہو گئی۔ اس کے علاوہ پچھمی راشٹروں نے پچھمی جرمنی میں ایک الگ سرکار بنانے کی کارروائی بھی شروع کر دی، جو اٹلانٹک والی جتھابندی کا ایک خاص مورچہ ہوتی۔ پہلی بات کے برے اثر سے بچنے اور دوسری بات کو روکنے کے خیال سے روس نے ناکہ بندی کو ہٹائے جانے کے پہلے پورے برلن میں اپنا سکہ چلائے جانے کی شرط، جس پر وہ کچھ اوپر سال بھر سے جما ہوا تھا، ہٹا دی اور صرف یہ شرط

रक्खी कि चार बड़े राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों की कौन्सिल का जलसा जर्मनी के मसले पर विचार करने के लिये बुला लिया जाय. अमरीका और बरतानिया ने सोचा कि शायद इस तरह रूस पच्छिमी सरकार के क़ायम होने में अड़गा लगायेगा. इसलिये उन्होंने कौंसिल के जलसे की तारीख जल्दी ही रखनी चाही. रूस ने इसे भी मंज़ूर कर लिया. आखिर कौंसिल का जलसा २३ मई को शुरू हुआ और अब खतम के करीब है इसमें पहले तो पुरानी बहसें छिड़ी रहीं और बहुत दिनों तक गाड़ी इस बात पर अटकी रही कि जर्मनी और बर्लिन के बन्दोबस्त और निगरानी के लिये चारों राष्ट्रों के फौजी कमांडरों की जो कौंसिल हो उसके फैसले बहुमत से हुआ करें या उनके लिये चारों की मंज़ूरी हो. पच्छिमी राष्ट्र पहली बात पर जोर दे रहे थे लेकिन रूस इस डर से कि कहीं वह अपनी मनमानी न करने लगे, दूसरी बात पर अड़ा रहा. आखिर बातचीत की गाड़ी जहाँ से चली थी, वहीं वापस आ गई यही सूरत जर्मनी के विधान के मसले पर भी पैदा हो गई और तब रूस के विदेश मंत्री ने कौंसिल के सामने यह सुझाव रक्खा कि जर्मनी के साथ सुलह के समझौते का मसविदा तैयार किया जाय और उसके अनुसार साल भर के अन्दर बाहर की सब फौजें जर्मनी से चली जायँ. इस पर पच्छिमी देशों ने कहा कि पहले उनको इस बात का इतमीनान हो जाना चाहिये कि जर्मनी आगे चलकर दुनिया के अमन और शांति में कोई गड़बड़ नहीं कर सकेगा इस तरह यह बात भी खतम हो गई. लेकिन मालूम होता है कि चार बड़ों की कौंसिल कुछ न कुछ करके रहेगी. खबर है कि बर्लिन के बारे में उसने समझौते की एक सूरत ढूँढ निकाली है और अब आस्ट्रिया के साथ सुलह के समझौते पर बहस हो रही है. यह

رکھی کہ چار بڑے راشٹروں کے ودیش منتریوں کی کونسل کا جلسہ جرمنی کے مسئلے پر وچار کرنے کے لئے بلا لیا جائے۔ امریکہ اور برطانیہ نے سوچا کہ شاید اس طرح روس پچھمی سرکار کے قائم ہونے میں اڑنگا لگائے گا۔ اس لئے انھوں نے کونسل کے جلسے کی تاریخ جلدی ہی رکھنی چاہی۔ روس نے اسے بھی منظور کر لیا۔ آخر کونسل کا جلسہ ۲۳ مئی کو شروع ہوا اور اب ختم کے قریب ہے۔ اس میں پہلے تو پرانی بحثیں چھڑی رہیں اور بہت دنوں تک گاڑی اس بات پر اٹکی رہی کہ جرمنی اور برلن کے بندوبست اور نگرانی کے لئے چاروں راشٹروں کے فوجی کمانڈروں کی جو کونسل ہو اس کے فیصلے بہومت سے ہوا کریں یا ان کے لئے چاروں کی منظوری ہو۔ پچھمی راشٹر پہلی بات پر زور دے رہے تھے لیکن روس اس ڈر سے کہ کہیں وہ اپنی من مانی نہ کرنے لگیں، دوسری بات پر اڑا رہا۔ آخر بات چیت کی گاڑی جہاں سے چلی تھی، وہیں واپس آ گئی۔ یہی صورت جرمنی کے ودھان کے مسئلے پر بھی پیدا ہو گئی اور تب روس کے ودیش منتری نے کونسل کے سامنے یہ سجھاؤ رکھا کہ جرمنی کے ساتھ صلح کے سمجھوتے کا مسودہ تیار کیا جائے اور اس کے انوسار سال بھر کے اندر، باہر کی سب فوجیں جرمنی سے چلی جائیں۔ اس پر پچھمی دیشوں نے کہا کہ پہلے ان کو اس بات کا اطمینان ہو جانا چاہیئے کہ جرمنی آگے چل کر دنیا کے امن اور شانتی میں کوئی گڑبڑ نہیں کر سکے گا۔ اس طرح یہ بات بھی ختم ہو گئی۔ لیکن معلوم ہوتا ہے کہ چار بڑوں کی کونسل کچھ نہ کچھ کر کے رہے گی۔ خبر ہے کہ برلن کے بارے میں انھوں نے سمجھوتے کی ایک صورت ڈھونڈ نکالی ہے اور اب آسٹریلیا کے ساتھ صلح کے سمجھوتے پر بحث ہو رہی ہے۔ یہ

दोनों मसले पूरे जर्मनी के मसले से ज़्यादा आसान हैं. और अगर इन पर कोई समझौता हो गया तो जर्मनी में भी आज की जितनी तनातनी नहीं रहेगी रूस और पच्छिमी राष्ट्र अपने अपने इलाके का बन्दोबस्त अपने-अपने ढंग पर करते रहेंगे और तिजारत और लेन देन के बारे में समझौते कर लेंगे. जो भी हो, अगरचे जर्मनों का मुल्क दो टुकड़ों में बट जायगा मगर बड़ों की टक्कर बहुत दिनों के लिये टल जायगी.

चीन की लड़ाई

बर्लिन के समझौते को कुछ लोग इस निगाह से भी देखते हैं कि रूस लाग डाट और जोड़ तोड़ की ठंडी लड़ाई को पच्छिमी मोर्चे पर रोक कर पूरब की तरफ़ ध्यान देना चाहता है. इसलिये कि पच्छिम में जो नक्शा अब बन गया है उसमें बहुत दिनों तक कोई अदल बदल नहीं होगा मगर पूरब का नक्शा अभी बना नहीं बल्कि बन रहा है और इस नक्शे में सब से ज़्यादा खास बात चीन में कम्युनिस्टों की दिन दूनी रात चौगुनी सफलतायें हैं चीनी सरकार से सुलह की बातचीत में उन्होंने जो समय लगाया उससे एक फ़ायदा यह उठाया कि इस बीच में यांगट्सी नदी के किनारे अपनी फ़ौजें और सामान इकट्ठा कर लिया और जब चीनी सरकार ने उनको नदी पार जाकर फ़ौजों के नये प्रबन्ध की निगरानी करने की इजाज़त नहीं दी और इसके साथ साथ जनरलिस्मो च्यांग काई शेक, जो राजगद्दी छोड़कर घर चले गये थे, सरकार की पालिसी बनाने में फिर हिस्सा लेने लगे तो कम्युनिस्ट फ़ौजों ने हल्ला बोल कर चीन की राज धानी नानकिंग और उसके बाद ऐशिया के सबसे बड़े शहर शंघाई पर क़ब्ज़ा कर लिया. अब वह नई राज धानी कैन्टन की तरफ़ बढ़ रही हैं. लेकिन उस पर उनका हमला सामने से हो या बाज़ू से

(५५७)

دونوں مسئلے پورے جرمنی کے مسئلے سے زیادہ آسان ہیں۔ اور اگر ان پر کوئی سمجھوتہ ہو گیا تو جرمنی میں بھی آج کی جتنی تنا تنی نہیں رہے گی۔ روس اور پچھمی راشٹر اپنے اپنے علاقے کا بندوبست اپنے اپنے ڈھنگ پر کرتے رہیں گے اور تجارت اور لین دین کے بارے میں سمجھوتے کر لیں گے۔ جو بھی ہو، اگرچہ جرمنوں کا ملک دو ٹکڑوں میں بٹ جائے گا مگر بڑوں کی ٹکر بہت دنوں کے لئے ٹل جائے گی۔

چین کی لڑائی

برلن کے سمجھوتے کو کچھ لوگ اس نگاہ سے بھی دیکھتے ہیں کہ روس لاگ ڈاٹ اور جوڑ توڑ کی ٹھنڈی لڑائی کو پچھمی مورچے پر روک کر پورب کی طرف دھیان دینا چاہتا ہے۔ اس لئے کہ پچھم میں جو نقشہ اب بن گیا ہے اس میں بہت دنوں تک کوئی ادل بدل نہیں ہوگا۔ مگر پورب کا نقشہ ابھی بنا نہیں بلکہ بن رہا ہے اور اس نقشے میں سب سے زیادہ خاص بات چین میں کمیونسٹوں کی دن دونی رات چوگنی سپھلتائیں ہیں۔ چینی سرکار سے صلح کی بات چیت میں انھوں نے جو سمے لگایا اس سے ایک فائدہ یہ اٹھایا کہ اس بیچ میں یانگ ٹسی ندی کے کنارے اپنی فوجیں اور سامان اکٹھا کر لیا اور جب چینی سرکار نے ان کو ندی پار جا کر فوجوں کے نئے پربندھ کی نگرانی کرنے کی اجازت نہیں دی اور اس کے ساتھ ساتھ جنرلسمو چیانگ کائی شک، جو راج گدی چھوڑ کر گھر چلے گئے تھے، سرکار کی پالیسی بنانے میں پھر حصہ لینے لگے تو کمیونسٹ فوجوں نے ہلا بول کر چین کی راجدھانی نانکنگ اور اس کے بعد ایشیا کے سب سے بڑے شہر شنگھائی پر قبضہ کر لیا۔ اب وہ نئی راجدھانی کینٹن کی طرف بڑھ رہی ہیں۔ لیکن اس پر ان کا حملہ سامنے سے ہو یا بازو سے،

(५५८)

और वहाँ तक पहुँचने में उनको एक महीना लगे या तीन महीने, मगर इसमें कोई सन्देह नहीं है कि चीन में उनका राज कायम हो जायगा.

च्याग काई शेक का खयाल है कि लडाई के नतीजे में पैदा होने वाली कठिनाइयों के कारन यह राज ज्यादा समय तक चल नहीं सकेगा लेकिन चीनी कम्युनिस्टों के पास इन कठिनाइयों से निबटने का जो ढंग है वह च्याग के ढंग से अलग है और इसके बारे में उनकी राय भरोसे के लायक नहीं हो सकती. इसके अलावा कम्युनिस्टों के पीछे जनता की इतनी जबरदस्त शक्ति है, जिसने बाहर की किसी मदद के बिना चीनी सरकार के किले को जिसे अमरीका सिवाय फौजी सिपाहियों के हर तरह की मदद दे रहा था, तोड़ दिया. एक और बात यह है कि चीनी कम्युनिस्ट और उनके लीडर माउज़े तुंग लकीर के फकीर नहीं हैं. वह कम्युनिज्म को कोई लोहे का फ्रेम नहीं समझते और आँखे बन्द करके रूस की डगर पर नहीं चलते बल्कि कम्युनिज्म के उसूलों पर अपने हालात के अनुसार समझदारी के साथ काम करते हैं. उनकी समझदारी की एक मिसाल यह है कि उन्होंने अमरीकी और बरतानी व्योपारियों को, जिनका कि शंघाई एक बहुत बड़ा अड्डा था, हाथ नहीं लगाया, बल्कि उनके कारबार को चलने दिया और उसके बचाव का विश्वास दिला दिया मगर इसके साथ ही यह भी यकीनी है कि उनका झुकाव रूस की तरफ होगा और उनकी विदेशी पालिसी पुरानी सरकार की पालिसी से अलग होगी. इसलिये जिन बड़े राष्ट्रों की पूँजी चीन में लगी हुई है और जिनकी सलतनत चीन के अड़ोस पड़ोस तक फैली हुई है, उनमें चीन के इन्कलाब से खलबली मच गई है.

اور وہاں تک پہنچنے میں ان کو ایک مہینہ لگے یا تین مہینے، مگر اس میں کوئی سندیہ نہیں ہے کہ چین میں ان کا راج قائم ہو جائے گا۔

چیانگ کائی شک کا خیال ہے کہ لڑائی کے نتیجے میں پیدا ہونے والی کٹھنائیوں کے کارن یہ راج زیادہ سمے تک چل نہیں سکے گا۔ لیکن چینی کمیونسٹوں کے پاس ان کٹھنائیوں سے نبٹنے کا جو ڈھنگ ہے وہ چیانگ کے ڈھنگ سے الگ ہے اور اس کے بارے میں ان کی رائے بھروسے کے لائق نہیں ہو سکتی۔ اس کے علاوہ کمیونسٹوں کے پیچھے جنتا کی اتنی زبردست شکتی ہے، جس نے باہر کی کسی مدد کے بنا چینی سرکار کے قلعے کو جسے امریکہ سوائے فوجی سپاہیوں کے ہر طرح کی مدد دے رہا تھا، توڑ دیا۔ ایک اور بات یہ ہے کہ چینی کمیونسٹ اور ان کے لیڈر ماؤزے تنگ لکیر کے فقیر نہیں ہیں۔ وہ کمیونزم کو کوئی لوہے کا فریم نہیں سمجھتے اور آنکھیں بند کر کے روس کی ڈگر پر نہیں چلتے بلکہ کمیونزم کے اصولوں پر اپنے حالات کے انوسار سمجھداری کے ساتھ کام کرتے ہیں۔ ان کی سمجھداری کی ایک مثال یہ ہے کہ انھوں نے امریکی اور برطانی بیوپاریوں کو، جن کا کہ شنگھائی ایک بہت بڑا اڈا تھا، ہاتھ نہیں لگایا، بلکہ ان کے کاروبار کو چلنے دیا اور اس کے بچاؤ کا وشواس دلا دیا۔ مگر اس کے ساتھ ہی یہ بھی یقینی ہے کہ ان کا جھکاؤ روس کی طرف ہوگا اور ان کی ودیشی پالیسی پرانی سرکار کی پالیسی سے الگ ہوگی۔ اس لئے جن بڑے راشٹروں کی پونجی چین میں لگی ہوئی ہے اور جن کی سلطنت چین کے اڑوس پڑوس تک پھیلی ہوئی ہے، ان میں چین کے انقلاب سے کھلبلی مچ گئی ہے۔

बड़ों में खलबली

पूँजी सब से अधिक अमरीका की लगी है और राज सबसे अधिक बरतानिया का फैला हुआ है. उसकी नौआबादी (उपनिवेश) हाग काग चीन का ही एक टापू है और इस टापू के करीब का चीनी इलाका भी उसने पट्टे पर ले रक्खा है उस पर अपना अधिकार बनाये रखने के लिये बरतानिया ने हाल ही में अपनी फौज हाग काग भेजी है और उसके बचाव मन्त्री मिस्टर एलेक्जेन्डर मौके पर जाकर बचाव की तैयारियों का मुआयना कर आये हैं और यह कह आये हैं कि अभी बरतानिया के पास और ज़्यादा फ़ौज मौजूद है. चीनी कम्युनिस्ट इस धमकी से तो नहीं टलेंगे लेकिन वह यह ज़रूर सोचेंगे कि हागकाग पर हमला करने से एक बड़े राष्ट्र से आमने सामने की टक्कर हो जायगी, जिसके लिये वह अभी तैयार नहीं हैं. बरतानिया अपना पाया और ज़्यादा मज़बूत करने के लिये इस मामले में अमरीका से भी बात चीत कर रहा है और अमरीका ने थोड़े दिन पहले जब चीन के मामलों से दिलचस्पी रखने वाले योरपी और एशियाई मुल्कों से, जिनमें हिन्दुस्तान भी शामिल था, यह कहा था कि वह नई हुकूमत के साथ सबंध कायम करने में अलग अलग कोई कारवाई न करें. उसके बारे में कुछ शर्तों का भी चर्चा किया गया था जिनमें से एक यह थी कि हागकाग पर बरतानिया का कब्ज़ा मान लिया जाय दूसरी यह कि चीन के दरवाज़े बाहर के व्योपार के लिये खुले रक्खे जायें और तीसरी शर्त यह थी कि चीन और हिन्द चीन की सरहद मुक़र्रर कर दी जाय. पहली शर्त बरतानिया के फ़ायदे के लिये दूसरी अमरीका के फ़ायदे के लिये और तीसरी फ़्रान्स के फायदे के लिये थी. अभी यह शर्तें पूरे फ़ायदे के साथ तैयार और पेश नहीं की गई हैं.

بڑوں میں کھلبلی

پونجی سب سے ادھک امریکہ کی لگی ہے اور راج سب سے ادھک برطانیہ کا پھیلا ہوا ہے۔ اس کی نو آبادی (اپنیویش) ہانگ کانگ چین کا ہی ایک ٹاپو ہے اور اس ٹاپو کے قریب کا چینی علاقہ بھی اس نے پٹے پر لے رکھا ہے۔ اس پر اپنا ادھیکار بنائے رکھنے کے لئے برطانیہ نے حال ہی میں اپنی فوج ہانگ کانگ بھیجی ہے اور اس کے بچاؤ منتری مسٹر الکزینڈر موقعہ پر جا کر بچاؤ کی تیاریوں کا معائنہ کر آئے ہیں اور یہ کہہ آئے ہیں کہ ابھی برطانیہ کے پاس اور زیادہ فوج موجود ہے۔ چینی کمیونسٹ اس دھمکی سے تو نہیں ٹلیں گے لیکن وہ یہ ضرور سوچیں گے کہ ہانگ کانگ پر حملہ کرنے سے ایک بڑے راشٹر سے آمنے سامنے کی ٹکر ہو جائے گی جس کے لئے وہ ابھی تیار نہیں ہیں۔ برطانیہ اپنا پایا اور زیادہ مضبوط کرنے کے لئے اس معاملے میں امریکہ سے بھی بات چیت کر رہا ہے اور امریکہ نے تھوڑے دن پہلے جب چین کے معاملوں سے دلچسپی رکھنے والے یورپی اور ایشیائی ملکوں نے، جس میں ہندستان بھی شامل تھا، یہ کہا تھا کہ وہ نئی حکومت کے ساتھ سمبندھ قائم کرنے میں الگ الگ کوئی کارروائی نہ کریں۔ اس کے بارے میں کچھ شرطوں کا بھی چرچا کیا گیا تھا جس میں سے ایک یہ تھا کہ ہانگ کانگ پر برطانیہ کا قبضہ مان لیا جائے۔ دوسرے یہ کہ چین کے دروازے باہر کے بیوپار کے لئے کھلے رکھے جائیں اور تیسری شرط یہ تھی کہ چین اور ہند چین کی سرحد مقرر کر دی جائے۔ پہلی شرط برطانیہ کے فائدے کے لئے، دوسری امریکہ کے فائدے کے لئے اور تیسری فرانس کے فائدے کے لئے تھی۔ ابھی یہ شرطیں پورے فائدے کے ساتھ تیار اور پیش نہیں کی گئی ہیں۔

लेकिन चीनी कम्युनिस्ट उनको जिस निगाह से देखेंगे वह ज़ाहिर है. अगर अमरीका और बरतानिया को यह उम्मीद है कि कम्युनिस्ट दब जायँगे तो उनका अन्दाज़ा गलत है और अगर उनको यह डर है कि कम्युनिज़्म चीन में कदम जमाने के बाद अपने पाँव वहाँ से बाहर निकालेगा तो यह ठीक है. बल्कि अब तो ऐसा मालूम होता है कि चीन में शान्ति होने से पहले ही वहाँ के कम्युनिस्टों से दूसरे मुल्कों के कम्युनिस्टों को मदद मिलने लगेगी. खबर है कि दक्खिनी चीन में कम्युनिस्ट फौजें इन्डो चीन की सरहद की तरफ़ बढ़ रही हैं, जहाँ डाक्टर हो ची मिंह की लीडरी में फ्रान्स के खिलाफ़ आज़ादी का आन्दोलन चल रहा है. इस तरह बर्मा की सोशलिस्ट पार्टी ने जो वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ़ है, चीनी कम्युनिस्टों की जीत पर खुशी ज़ाहिर की है और कहा है कि इससे बर्मा के आन्दोलन को मदद मिलेगी. मलाया के आन्दोलन में वहाँ चीनी पहले से ही आगे हैं और अपने कम्युनिस्ट लीडरों के पीछे चल रहे हैं. दक्खिनी पूरबी एशिया के मुल्कों में, जहाँ आजकल बेचैनी फैली हुई है, अकेला इन्डोनेशिया एक ऐसा देश है जहाँ के आन्दोलन में कम्युनिस्टों का कोई खास हिस्सा नहीं है लेकिन यू० एन० ओ० के जाँच कमीशन ने बताया है कि कम्युनिस्टों के जत्थे भी हालैंड के खिलाफ़ लड़ रहे हैं. इन जत्थों की ताकत अभी ज़्यादा नहीं है लेकिन अगर हालैंड अपनी हट पर कायम रहा, जैसा कि वह कुछ मुद्दत पहले तक था या अगर इन्डोनेशी रिपब्लिक के लीडरों को उसके साथ दबकर समझौता करने पर मजबूर किया गया, जैसा कि कुछ खबरों से ज़ाहिर होता है तो जनता में नाराज़गी फैल जायगी और कोई ताज्जुब नहीं कि वह कम्युनिज़्म की तरफ़ झुक जाय

(५१०)

لیکن چینی کمیونسٹ ان کو جس نگاہ سے دیکھیں گے وہ ظاہر ہے۔ اگر امریکہ اور برطانیہ کو یہ امید ہے کہ کمیونسٹ دب جائیں گے تو ان کا اندازہ غلط ہے۔ اور اگر ان کو یہ ڈر ہے کہ کمیونزم چین میں قدم جمانے کے بعد اپنے پاؤں وہاں سے باہر نکالیگا تو یہ ٹھیک ہے۔ بلکہ اب تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چین میں شانتی ہونے سے پہلے ہی وہاں کے کمیونسٹوں سے دوسرے ملکوں کے کمیونسٹوں کو مدد ملنے لگے گی۔ خبر ہے کہ دکھنی چین میں کمیونسٹ فوجیں انڈو چین کی سرحد کی طرف بڑھ رہی ہیں، جہاں ڈاکٹر ہو چی منہ کی لیڈری میں فرانس کے خلاف آزادی کا آندولن چل رہا ہے۔ اس طرح برما کی سوشلسٹ پارٹی نے، جو وہاں کی کمیونسٹ پارٹی کے خلاف ہے، چینی کمیونسٹوں کی جیت پر خوشی ظاہر کی ہے اور کہا ہے کہ اس سے برما کے آندولن کو مدد ملے گی۔ ملایا کے آندولن میں وہاں چینی پہلے سے ہی آگے ہیں اور اپنے کمیونسٹ لیڈروں کے پیچھے چل رہے ہیں۔ دکھنی پوربی ایشیا کے ملکوں میں، جہاں آج کل بے چینی پھیلی ہوئی ہے، اکیلا انڈونیشیا ایک ایسا دیش ہے جہاں کے آندولن میں کمیونسٹوں کا کوئی خاص حصہ نہیں ہے۔ لیکن یو۔ این۔ او۔ کے جانچ کمیشن نے بتایا ہے کہ کمیونسٹوں کے جتھے بھی ہالینڈ کے خلاف لڑ رہے ہیں۔ ان جتھوں کی طاقت ابھی زیادہ نہیں ہے لیکن اگر ہالینڈ اپنی ہٹ پر قائم رہا، جیسا کہ وہ کچھ مدت پہلے تک تھا، یا اگر انڈونیشی ریپبلک کے لیڈروں کو اس کے ساتھ دب کر سمجھوتہ کرنے پر مجبور کیا گیا، جیسا کہ کچھ خبروں سے ظاہر ہوتا ہے تو جنتا میں ناراضگی پھیل جائے گی اور کوئی تعجب نہیں کہ وہ کمیونزم کی طرف جھک جائے۔

(५६१)

इन्डोनेशिया में समझौते का जतन

शायद यही सोचकर अमरीका और बरतानिया ने हालैंड को इन्डोनेशी रिपब्लिक के प्रतिनिधियों के साथ उनकी हुकूमत की बहाली पर बात-चीत के लिये तैयार कर दिया है. लेकिन यह कारवाई काफी या भरोसे के लायक़ नहीं है इसलिये कि हालैंड बातचीत में टाल मटोल कर रहा है और इन्डोनेशिया का रिपब्लिक सरकार को बहाल करने से पहले उसके लीडरों से लड़ाई बन्द करने का हुकम जारी कराना और अपनी राजधानी में अपने पिट्ठुओं के बहुमत के साथ होने वाली कानफ़ेन्स में शरीक होने का वादा लेना चाहता है. यही नहीं, बल्कि वह यू० एन० ओ० के जाँच कमीशन को जाँच पडताल की आसानियाँ देने में भी आना कानी कर रहा है, जिसकी शिकायत कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में की है इस रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि हालैंड अपनी फ़ौज और ऊँचे दरजे के हथियारों के होते हुए भी न तो इन्डोनेशी रिपब्लिक के हामियों का हौसला तोड़ सका है और न बड़े बड़े शहरों और खास खास सड़कों को छोड़कर बाकी इलाक़े पर अपना अधिकार अच्छी तरह जमा सका है इसका मतलब यह है कि हालैंड इन्डोनेशी लीडरों से बातचात के लिये जो तैयार हुआ उसका कारन केवल अमरीका और बरतानिया का दबाव नहीं बल्कि उसकी अपनी लाचारी भी है. वह समझता है कि इतना बड़ा निवाला एक दम में उसके गले में नहीं उतर सकेगा अब देखना यह है कि वह उसे थोड़ा थोड़ा करके हज़म करने की कोशिश तो नहीं करता.

انڈونیشیا میں سمجھوتے کا جتن

شاید یہی سوچ کر امریکہ اور برطانیہ نے ہالینڈ کو انڈونیشی ریپبلک کے پرتیندھیوں کے ساتھ ان کی حکومت کی بحالی پر بات چیت کے لئے تیار کر دیا ہے. لیکن یہ کارروائی کافی یا بھروسے کے لائق نہیں ہے. اس لئے کہ ہالینڈ بات چیت میں ٹال مٹول کر رہا ہے اور انڈونیشیا کی ریپبلک سرکار کو بحال کرنے سے پہلے اس کے لیڈروں سے لڑائی بند کرنے کا حکم جاری کرانا اور اپنی راجدھانی میں اپنے پٹھوؤں کے بہومت کے ساتھ ہونے والی کانفرنس میں شریک ہونے کا وعدہ لینا چاہتے ہیں. یہی نہیں، بلکہ وہ یو. این. او. کے جانچ کمیشن کو جانچ پڑتال کی آسانیاں دینے میں بھی آنا کانی کر رہا ہے، جس کی شکایت کمیشن نے اپنی رپورٹ میں کی ہے. اس رپورٹ سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ ہالینڈ اپنی فوج اور اونچے درجے کے ہتھیاروں کے ہوتے ہوئے بھی نہ تو انڈونیشی ریپبلک کے حامیوں کا حوصلہ توڑ سکا ہے اور نہ بڑے بڑے شہروں اور خاص خاص سڑکوں کو چھوڑ کر باقی علاقے پر اپنا ادھیکار اچھی طرح جما سکا ہے. اس کا مطلب یہ ہے کہ ہالینڈ انڈونیشی لیڈروں سے بات چیت کے لئے جو تیار ہوا اس کا کارن کیول امریکہ اور برطانیہ کا دباؤ نہیں بلکہ اس کی اپنی لاچاری بھی ہے. وہ سمجھتا ہے کہ اتنا بڑا نوالہ ایک دم سے اس کے گلے سے نہیں اتر سکے گا. اب دیکھنا یہ ہے کہ وہ اسے تھوڑا تھوڑا کر کے ہضم کرنے کی کوشش تو نہیں کرتا.

इंडो चीन में सम्राट की वापसी

इन्डोनेशिया में जैसी और जितनी कारवाई की जा रही है, मलाया और हिन्द चीन में वैसी और उतनी भी नहीं की जाती, और अगर की जाय तो शायद अब उससे कोई खास फायदा भी नहीं होगा. इसलिये कि वहाँ कम्युनिस्टों ने अपना असर जमा लिया है और कम्युनिज्म जड़ पकड़ता जा रहा है. अगर इन देशों की जनता की माँग शुरू में ही पूरी हो जाती तो शायद आन्दोलन की बागडोर कम्युनिस्टों के हाथ में न जाने पाती. लेकिन अब पानी सर से ऊँचा हो गया है और इन दोनों मुल्कों में साम्राज के सामने सिर्फ दो सूरतें हैं. एक यह कि वह अपने आपको खतम करदे और दूसरे यह कि जनता के आन्दोलन को खतम करने की पूरी पूरी कोशिश करे. अभी दोनों जगह इस दूसरे तरीके का तजरबा किया जा रहा है. मगर यह तजरबा कामयाब होता नहीं दिखाई देता. और फ्रांस की वह चाल भी सफल होती नहीं मालूम होती जिसके जोर पर उसने पुराने सम्राट बावडाई को फिर राज गद्दी पर बैठा दिया है. इसलिये कि इन्डोचीन की जनता उनको एक बार राज-पाट छोड़ने पर मजबूर कर चुकी है और अब जब वह खुल्लम खुल्ला फ्रांस के कारिन्दे बन कर आयँगे तो कोई उनसे बात भी नहीं करेगा. इसीलिये जिस आदमी को वह प्रधान मंत्री बनाना चाहते थे उसने इनकार कर दिया है और उसका कारन यह बताया है कि इन्डोचीनी जनता की कामनाएँ उस समय तक पूरी नहीं होंगी जब तक कि यहाँ का राज प्रबन्ध हिन्दुस्तान और पाकिस्तान जैसा न हो जाय. कोई दो बरस हुए जब इन्डोचीन के एक प्रधान मंत्री ने, जिसे फ्रान्स ने अपना पिट्ठू बना लिया था, मारे शर्म के आत्महत्या करली थी. तब से अब तक फ्रान्स ने अपनी फौजी सख्तियाँ

انڈو چین میں سمراٹ کی واپسی

انڈونیشیا میں جیسی اور جتنی کارروائی کی جا رہی ہے، ملایا اور ہند چین میں ویسی اور اتنی بھی نہیں کی جاتی، اور اگر کی جائے تو شاید اب اس سے کوئی خاص فائدہ بھی نہیں ہوگا، اس لئے کہ وہاں کمیونسٹوں نے اپنا اثر جما لیا ہے اور کمیونزم جڑ پکڑتا جا رہا ہے۔ اگر ان دیشوں کی جنتا کی مانگ شروع میں ہی پوری ہو جاتی تو شاید آندولن کی باگ ڈور کمیونسٹوں کے ہاتھ میں نہ جانے پاتی۔ لیکن اب پانی سر سے اونچا ہو گیا ہے اور ان دونوں ملکوں میں سامراج کے سامنے صرف دو صورتیں ہیں۔ ایک یہ کہ وہ اپنے آپ کو ختم کر دے اور دوسرے یہ کہ جنتا کے آندولن کو ختم کرنے کی پوری پوری کوشش کرے۔ ابھی دونوں جگہ اس دوسرے طریقے کا تجربہ کیا جا رہا ہے۔ مگر یہ تجربہ کامیاب ہوتا نہیں دکھائی دیتا۔ اور فرانس کی وہ چال بھی سپھل ہوتی نہیں معلوم ہوتی جس کے زور پر اس نے پرانے سمراٹ باؤڈائی کو پھر راج گدی پر بیٹھا دیا ہے۔ اس لئے کہ انڈو چین کی جنتا ان کو ایک بار راج پاٹ چھوڑنے پر مجبور کر چکی ہے اور اب جب وہ کھلم کھلا فرانس کے کارندے بن کر آئیں گے تو کوئی ان سے بات بھی نہیں کرے گا۔ اسی لئے جس آدمی کو وہ پردھان منتری بنانا چاہتے تھے اس نے انکار کر دیا ہے اور اس کا کارن یہ بتایا ہے کہ انڈو چینی جنتا کی کامنائیں اس سمے تک پوری نہیں ہوں گی جب تک کہ یہاں کا راج پربندھ ہندستان اور پاکستان جیسا نہ ہو جائے۔ کوئی دو برس ہوئے جب انڈو چین کے ایک پردھان منتری نے، جسے فرانس نے اپنا پٹھو بنا لیا تھا، مارے شرم کے آتم ہتیا کر لی تھی، تب سے اب تک فرانس نے اپنی فوجی سختیاں

बढ़ा दी हैं और राजनैतिक चालें बदल दी हैं. मगर इन्डोचीनी जनता इतनी चौकन्नी है कि उसके जाल के करीब तक नहीं गई.

बर्मा के बाग़ियों में फूट

बर्मा में कम्युनिज्म का असर या कम्युनिस्टों की ताकत अभी उतनी नहीं है जितनी कि चीन या इन्डोचीन या मलाया मे. और शायद इसीलिये उन्होने थाकिन नू की सरकार के खिलाफ़ केरन कबीले के लोगों और सफ़ेद पट्टी वाले वालन्टियरों के साथ एका कर रक्खा है. ढाई तीन महीने हुए जब केरनों और सरकार मे समझौते की आशा पैदा हो चली थी इसलिये कि सरकार ने बर्मी यूनियन के ढाँचे के अन्दर एक केरन राज बनने की बात मान ली थी. पर केरन नेताओ के आपस के मतभेद ने समझौता नहीं होने दिया और लडाई, जो कुछ रोज के लिये थम गई थी फिर शुरू हो गई. अलबत्ता लडाई की खबरों मे ऐसा लगता है जैसे पॉसा पलट गया हो और प्रधान मन्त्री थाकिन नू भी यही कहते हैं कि सरकारी फौजें जगह जगह बडे बड़े धावे कर रही हैं और छोटे बडे मोर्चे जीत रही हैं उनकी जीत के कई कारन हैं. एक उनकी शक्ति, दूसरे केरनो की आपस की फूट और तीसरे केरनो, कम्युनिस्टो और सफेद पट्टी वाले वालटियरो का मतभेद जिसका एक उदाहरन यह है कि कम्युनिस्टो और सफ़ेद पट्टी वालो ने एकाध जगह केरनो के खिलाफ सरकारी फौजों को मदद दी है जब कि दूसरी जगहो पर यह सब मिल कर उन फौजो का मुकाबला कर रहे हैं.

इन बातों के होते हुए भी बर्मी सरकार की परेशानियों मे कोई कमी नहीं हुई है. एक खबर यह है कि केरनों ने एकाध मोर्चे पर हारने के

(५६३)

بڑھا دی ہیں اور راج نیتک چالیں بدل دی ہیں. مگر انڈو چینی جنتا اتنی چوکنی ہے کہ اس کے جال کے قریب تک نہیں گئی.

برما کے باغیوں میں پھوٹ

برما میں کمیونزم کا اثر یا کمیونسٹوں کی طاقت ابھی اتنی نہیں ہے جتنی کہ چین یا انڈو چین یا ملایا میں. اور شاید اسی لئے انھوں نے تھاکن نو کی سرکار کے خلاف کیرن قبیلے کے لوگوں اور سفید پٹی والے والنٹیروں کے ساتھ ایکا کر رکھا ہے. ڈھائی تین مہینے ہوئے جب کیرنوں اور سرکار میں سمجھوتے کی آشا پیدا ہو چلی تھی. اس لئے کہ سرکار نے برما یونین کے ڈھانچے کے اندر ایک کیرن راج بننے کی بات مان لی تھی. پر کیرن نیتاؤں کے آپس کے مت بھید نے سمجھوتہ نہیں ہونے دیا اور لڑائی جو کچھ روز کے لئے تھم گئی تھی پھر شروع ہو گئی. البتہ لڑائی کی خبروں سے ایسا لگتا ہے جیسے پانسا پلٹ گیا ہو اور پردھان منتری تھاکن نو بھی یہی کہتے ہیں کہ سرکاری فوجیں جگہ جگہ بڑے بڑے دھاوے کر رہی ہیں اور چھوٹے بڑے مورچے جیت رہی ہیں. ان کی جیت کے کئی کارن ہیں. ایک ان کی شکتی، دوسرے کیرنوں کی آپس کی پھوٹ اور تیسرے کیرنوں، کمیونسٹوں اور سفید پٹی والے والنٹیروں کا مت بھید جس کا ایک اداہرن یہ ہے کہ کمیونسٹوں اور سفید پٹی والوں نے ایکادھ جگہ کیرنوں کے خلاف سرکاری فوجوں کو مدد دی ہے جب کہ دوسری جگہوں پر یہ سب مل کر ان فوجوں کا مقابلہ کر رہے تھے.

ان باتوں کے ہوتے ہوئے بھی برما سرکار کی پریشانیوں میں کوئی کمی نہیں ہوئی ہے. ایک خبر یہ ہے کہ کیرنوں نے ایکادھ مورچے پر ہارنے کے

(۵۶۳)

बावूजूद अपनी आबादी के इलाके में अलग सरकार बना ली है. इसके अलावा बर्मा के पड़ोस वाले देशों में जो कुछ हो रहा है वह उसके असर से बचा नहीं रह सकता. इस असर का पता हाल की कई खबरों से चलता है, जिनमें से एक यह है कि चीन में कम्युनिस्टों ने एक ऐसी जगह पर अधिकार कर लिया है जो बर्मा की सरहद से सौ मील पर है. दूसरी खबर यह है कि इन्डोचीन से मिले हुए बर्मी इलाके कग टग में कुछ चीनी ''लुटेरे'' घुस आये हैं और तीसरी खबर यह है कि तनासरयम के इलाके में स्यामी 'लुटेरे' छापे मारते रहते हैं. यह बात अभी साफ़ नहीं हुई है कि यह लुटेरे किस लिये आये हैं और क्या चाहते हैं. हो सकता है कि यह केवल लूटमार करने आये हों और यह भी हो सकता है कि कम्युनिस्टों को 'लुटेरों' के नाम से पुकारा गया हो दोनों बातें बर्मा के लिये खतरनाक हैं और बर्मी सरकार की कमजोरी का पता देती हैं.

बाहर से मदद

थाकिन नू की सरकार में न तो इतनी शक्ति है कि वह गड़बड़ को जड़ बुनियाद से खतम कर सके और न उसके पास इतना पैसा है कि उन आर्थिक मुसीबतों को दूर कर सके जिनको उसके विरोधी उसके खिलाफ इस्तेमाल करते हैं. इसीलिये उसने बरतानिया से कर्जा माँगा था जो उसे नहीं मिल सका और इसी सिलसिले में जवाहरलाल जी के कामनवेल्थ कानफ़रेन्स के लिये लन्दन जाने से पहिले थाकिन नू उनसे मिलने नई दिल्ली आये थे. यहाँ से वापस जाते समय उन्होंने कहा था कि मैं जो कुछ चाहता था वह मुझे मिल गया, और लन्दन कानफरेन्स

باوجود اپنی آبادی کے علاقے میں الگ سرکار بنا لی ہے۔ اس کے علاوہ برما کے پڑوس والے دیشوں میں جو کچھ ہو رہا ہے وہ اس کے اثر سے بچا نہیں رہ سکتا۔ اس اثر کا پتہ حال کی کئی خبروں سے چلتا ہے، جس میں سے ایک یہ ہے کہ چین میں کمیونسٹوں نے ایک ایسی جگہ پر ادھیکار کر لیا ہے جو برما کی سرحد سے سو میل پر ہے۔ دوسری خبر یہ ہے کہ انڈوچین سے ملے ہوئے برمی علاقے لنگ تنگ میں کچھ چینی "لٹیرے" گھس آئے ہیں اور تیسری خبر یہ ہے کہ تناسریم کے علاقے میں سیامی 'لٹیرے' چھاپے مارتے رہتے ہیں۔ یہ بات ابھی صاف نہیں ہوئی ہے کہ یہ لٹیرے کس لئے آئے ہیں اور کیا چاہتے ہیں۔ ہو سکتا ہے کہ یہ کیول لوٹ مار کرنے آئے ہوں اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ کمیونسٹوں کو 'لٹیروں' کے نام سے پکارا گیا ہو۔ دونوں باتیں برما کے لئے خطرناک ہیں اور برما سرکار کی کمزوری کا پتہ دیتی ہیں۔

باہر سے مدد

تھاکن نو کی سرکار میں نہ تو شکتی ہے کہ وہ گڑبڑ کو جڑ بنیاد سے ختم کر سکے اور نہ اس کے پاس اتنا پیسہ ہے کہ ان آرتھک مصیبتوں کو دور کر سکے جن کو اس کے ورودھی اس کے خلاف استعمال کرتے ہیں۔ اسی لئے اس نے برطانیہ سے قرضہ مانگا تھا جو اسے نہیں مل سکا اور اسی سلسلے میں جواہر لال جی کے کامن ویلتھ کانفرنس کے لئے لندن جانے سے پہلے تھاکن نو ان سے ملنے نئی دہلی آئے تھے۔ یہاں سے واپس جاتے سمے انھوں نے کہا تھا کہ میں جو کچھ چاہتا تھا وہ مجھے مل گیا، اور لندن کانفرنس

के बाद इस बात का एलान हो गया कि बरतानिया, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और लंका ने बर्मा को मदद देने का वादा कर लिया है और रंगून में चारों के राजदूत इस मदद का तख़मीना तैयार कर रहे हैं. लेकिन बर्मा की पैदावार बढ़ाने और आर्थिक सङ्कट दूर करने के लिये उसे और ज़्यादा मदद की ज़रूरत है. और इसी लिये वह बाहर के लोगों को अपनी खानों वग़ैरा में पूँजी लगाने की इजाज़त दे रहा है. जिनपर आज़ादी के बाद ही उसने बहुत कड़ी जकड़ बन्दियाँ लगादी थी

बर्मा के लिये बाहर की मदद एक दोधारी तलवार है, जो एक तरफ़ विद्रोह की जड़ काट सकती है लेकिन दूसरी तरफ़ चल पड़े तो बर्मी सरकार को ख़तम कर सकती है. इसलिये कि सरकार के विरोधी जनता को यह कह कर भड़का सकेंगे कि उनका देश विदेशी पूँजी पतियों के हाथ बेचा जा रहा है और बर्मी सोशलिस्ट पार्टी ने, जो वहाँ की पार्लियामेंट में बहुमत में है, अभी हाल ही में जहाँ एक तरफ़ चीन में कम्युनिस्टों की सफलता पर ख़ुशी मनाई है वहाँ दूसरी तरफ़ उसने बर्मी सरकार पर विदेशी पूँजीपतियों से गँठ बन्धन करने का दोष भी लगाया है. यह एक तरह की आगाही है सिर्फ़ बर्मी सरकार और विदेशी पूँजीपतियों के लिये ही नहीं बल्कि बर्मा की मदद करने वालों के लिये भी. उनको यह सोचना होगा कि बर्मा को वह जो मदद देने वाले हैं वह कैसी और कितनी हो. अगर इसके साथ कोई ऐसी शर्त रक्खी गई जिससे बर्मा की आज़ादी पर ज़रा सी भी आँच आती हो तो यह मदद थाकिन नू की सरकार को फ़ायदे से अधिक नुक़सान पहुँचा देगी.

बर्मा की मदद का वादा करने वाले देशों में बरतानिया के

کے بعد اس بات کا اعلان ہو گیا کہ برطانیہ، ہندوستان، پاکستان اور لنکا نے برما کو مدد دینے کا وعدہ کر لیا ہے اور رنگون میں چاروں کے راج دوت اس مدد کا تخمینہ تیار کر رہے ہیں. لیکن برما کی پیداوار بڑھانے اور آرتھک سنکٹ دور کرنے کے لئے اسے اور زیادہ مدد کی ضرورت ہے. اور اسی لئے وہ باہر کے لوگوں کو اپنی کھانوں وغیرہ میں پونجی لگانے کی اجازت دے رہا ہے، جن پر آزادی کے بعد ہی اس نے بہت کڑی جکڑ بندیاں لگا دی تھیں.

برما کے لئے باہر کی مدد ایک دو دھاری تلوار ہے، جو ایک طرف ودروہ کی جڑ کاٹ سکتی ہے لیکن دوسری طرف چل پڑے تو برما سرکار کو ختم کر سکتی ہے. اس لئے کہ سرکار کے ورودھی جنتا کو یہ کہہ کر بھڑکا سکیں گے کہ ان کا دیش ودیشی پونجی پتیوں کے ہاتھ بیچا جا رہا ہے اور برما سوشلسٹ پارٹی نے جو وہاں کی پارلیمنٹ میں بہومت میں ہے، ابھی حال ہی میں جہاں ایک طرف چین میں کمیونسٹوں کی سپھلتا پر خوشی منائی ہے وہاں دوسری طرف اس نے برما سرکار پر ودیشی پونجی پتیوں سے گٹھ بندھن کرنے کا دوش بھی لگایا ہے. یہ ایک طرح کی آگاہی ہے صرف برما سرکار اور ودیشی پونجی پتیوں کے لئے ہی نہیں بلکہ برما کی مدد کرنے والوں کے لئے بھی. ان کو یہ سوچنا ہوگا کہ برما کو وہ جو مدد دینے والے ہیں وہ کیسی اور کتنی ہو. اگر اس کے ساتھ کوئی ایسی شرط رکھی گئی جس سے برما کی آزادی پر ذرا سی بھی آنچ آتی ہو تو یہ مدد تھاکن نو کی سرکار کو فائدہ سے سے ادھک نقصان پہنچا دے گی.

हिन्द का रवैया

हिन्दुस्तान भी शामिल है. लेकिन इस मदद के बारे में इन दोनों की निगाह एक दूसरे से अलग है. बरतानिया को सिर्फ इस बात की चिन्ता है कि बर्मा में कम्युनिज्म का असर जमने न पाये इसलिये कि फिर मलाया में बरतानी राज का क़ायम रहना नमुमकिन हो जायगा. लेकिन हिंदुस्तान को सबसे पहले इस बात की चिन्ता है कि बर्मा की आज़ादी और शान्ति बनी रहे. हिन्द सरकार अगरचे अपने देश में कम्युनिस्टों की आहिंसा विरोधी हरकतों और तोड़ फोड़ की तरकीबों को पसन्द नहीं करती और कम्युनिज्म को देश की सारी बीमारियों का इलाज और रूस की छाया में रहने को अपनी राजनीति की बड़ाई नहीं समझती फिर भी वह एशिया में कम्युनिज्म को इस दृष्टि से नहीं देखती जिससे कि बरतानिया और कामन वेल्थ के दूसरे देश देखते हैं. दुनिया के इस हिस्से में कम्युनिज्म बड़ी हद तक उस जागृति का एक निशान है जिसकी पण्डित नेहरू ने अपने योरोप के भाषनों में बड़ी चरचा की है. बर्मा और इन्डोनेशिया में कम्युनिस्ट क़ौमी सरकारों के खिलाफ जो लड़ाई लड़ रहे हैं उसपर टीका की जा सकती है और उसे सरकार पर जबरदस्ती क़ब्ज़ा करने की कोशिश कहा जा सकता है लेकिन चीन और इन्डोचीन में उन्होंने जो कुछ किया है या कर रहे हैं वह अपनी पार्टी के फायदे के लिये नहीं बल्कि पूरी क़ौम के फायदे के लिये है और इसी लिये उसे शक या डर या विरोध की निगाह से नहीं देखना चाहिये.

—.०:—

ہند کا رویہ

برما کی مدد کا وعدہ کرنے والے دیشوں میں برطانیہ کے ساتھ ہندستان بھی شامل ہے۔ لیکن اس مدد کے بارے میں ان دونوں کی نگاہ ایک دوسرے سے الگ ہے۔ برطانیہ کو صرف اس بات کی چنتا ہے کہ برما میں کمیونزم کا اثر جمنے نہ پائے اس لئے کہ پھر ملایا میں برطانی راج کا قائم رہنا ناممکن ہو جائے گا۔ لیکن ہندستان کو سب سے پہلے اس بات کی چنتا ہے کہ برما کی آزادی اور شانتی بنی رہے۔ ہند سرکار اگرچہ اپنے دیش میں کمیونسٹوں کی آہنسا ورودھی حرکتوں اور توڑ پھوڑ کی ترکیبوں کو پسند نہیں کرتی اور کمیونزم کو دیش کی ساری بیماریوں کا علاج اور روس کی چھایا میں رہنے کو اپنی راج نیتی کی بڑائی نہیں سمجھتی پھر بھی وہ ایشیا میں کمیونزم کو اس درشٹی سے نہیں دیکھتی جس سے کہ برطانیہ اور کامن ویلتھ کے دوسرے دیش دیکھتے ہیں۔ دنیا کے اس حصے میں کمیونزم بڑی حد تک اس جاگرتی کا ایک نشان ہے جس کی پنڈت نہرو نے اپنے یورپ کے بھاشنوں میں بڑی چرچا کی ہے۔ برما اور انڈونیشیا میں کمیونسٹ قومی سرکاروں کے خلاف جو لڑائی لڑ رہے ہیں اس پر ٹیکا کی جا سکتی ہے اور اسے سرکار پر زبردستی قبضہ کرنے کی کوشش کہا جا سکتا ہے لیکن چین اور انڈوچین میں انھوں نے جو کچھ کیا ہے یا کر رہے ہیں وہ اپنی پارٹی کے فائدے کے لئے نہیں بلکہ پوری قوم کے فائدے کے لئے ہے اور اسی لئے اسے شک یا ڈر یا ورودھ کی نگاہ سے نہیں دیکھنا چاہیے۔

—:٥:—

हमारी राय

अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान और हम

कुछ दिनों से अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में आपसी अन बन की खबरें आ रही हैं. दोनों के कुछ अखबार और रेडियो भी एक दूसरे के खिलाफ़ प्रोपेगंडा करते रहते हैं. किसकी कितनी बात सच्ची है या किसका कितना दोष है, हम इस बहस मे पड़ना नहीं चाहते. हम यही चाहते हैं कि हिन्द, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और दुनिया के सब मुल्क और सब के रहने वाले एक दूसरे के साथ प्रेम और अमन से रहें—मिलें जुलें और सब फलें फूलें. पर काबुल के एक बड़े और नामी अखबार "अनीस" के १५ मई के परचे में एक लेख छपा है, जिससे पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के आपसी सबंध पर कुछ रोशनी पड़ती है. हम उस लेख के कुछ हिस्से नीचे दे रहे हैं.

"अनीस" ने अपने उस लेख में पाकिस्तान की हुकूमत, वहाँ के अखबारों, खास कर "डान" और पाकिस्तान रेडियो और दिल्ली के अखबार "स्टेटसमैन" को अंग्रेज़ों का अखबार कहा है. "अनीस" ने लीगी अखबार 'डान" को भी, जो अब कराची से निकलता है, "अंगरेज़ों का अखबार" कहा है और लिखा है—"डान ने मुस्लिम लीग के नाम से हिन्दुस्तान के बँटवारे की वकालत करके अंगरेज़ों का मतलब पूरा किया. दिल्ली की हुकूमत में मुसलमानों

ہماری رائے

افغانستان اور پاکستان اور ہم

کچھ دنوں سے افغانستان اور پاکستان میں آپسی اَن بَن کی خبریں آ رہی ہیں۔ دونوں کے کچھ اخبار اور ریڈیو بھی ایک دوسرے کے خلاف پروپیگنڈا کرتے رہتے ہیں۔ کس کی کتنی بات سچی ہے یا کس کا کتنا دوش ہے، ہم اس بحث میں پڑنا نہیں چاہتے۔ ہم یہی چاہتے ہیں کہ ہند، پاکستان، افغانستان اور دنیا کے سب ملک اور سب کے رہنے والے ایک دوسرے کے ساتھ پریم اور امن سے رہیں۔ ملیں جلیں اور سب پھلیں پھولیں۔ پر کابل کے ایک بڑے اور نامی اخبار "انیس" کے ۱۵ مئی کے پرچے میں ایک لیکھ چھپا ہے، جس سے پاکستان اور افغانستان کے آپسی سمبندھ پر کچھ روشنی پڑتی ہے۔ ہم اس لیکھ کے کچھ حصے نیچے دے رہے ہیں۔

"انیس" نے اپنے اس لیکھ میں پاکستان کی حکومت، وہاں کے اخباروں، خاص کر "ڈان" اور پاکستان ریڈیو اور دلی کے اخبار "اسٹیٹسمین" کو انگریزوں کا اخبار کہا ہے۔ "انیس" نے لیگی اخبار "ڈان" کو بھی، جو اب کراچی سے نکلتا ہے، "انگریزوں کا اخبار" کہا ہے اور لکھا ہے "ڈان نے مسلم لیگ کے نام سے ہندستان کے بٹوارے کی وکالت کر کے انگریزوں کا مطلب پورا کیا۔ دلی کی حکومت میں مسلمانوں

को जो हिस्सा मिलता वह इस बँटवारे की वजह से उन से छिन गया."

पाकिस्तान रेडियो को "अनीस" ने 'अंगरेजों का एक और ग़ुलाम' कहा है और लिखा है—"डेढ़ सौ बरस के अंगरेज़ी राज का यह नतीजा है कि इस मुल्क के लोग अपने ही मुल्क के साथ ग़द्दारी कर रहे हैं. इसी तरह पाकिस्तान के अख़बार रुपया कमाने के पीछे पड़े हुए हैं और कोई भी ऐसा काम करने को तैयार हैं, जिससे उनकी जेबों में रुपया आसके."

"अनीस" मानता है कि पाकिस्तान के असली हाकिम अंगरेज़ हैं; और लिखता है—"हमारी शिकायत ख़ास कर पाकिस्तान के ख़िलाफ़ है और रेडियो पाकिस्तान सिर्फ़ एक मातहत नौकर की तरह वैसे ही अपने मालिक की आवाज़ को दोहरा देता है जैसे ग्रामोफ़ान का रिकार्ड."

और आगे चल कर "अनीस" लिखता है—"अंगरेज़ों ने पाकिस्तान का नहीं छोड़ा है. पाकिस्तान के ऊपर उनकी पकड़ पहले से ज़्यादा मज़बूत है. पाकिस्तान की आजकल की सरकार अंगरेज़ों के हाथों में एक बड़े काम का खिलौना है. पाकिस्तान सरकार उसी पुरानी पालिसी पर चल रही है. सिर्फ़ दो बातें उसने नई की हैं. एक यह कि सरहद के सूबे में ज़बरदस्ती उलट फेर किये हैं और दूसरे यह कि अफ़ग़ानिस्तान की तरफ़ उसने निगाह बदल ली है. अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान की कठपुतली हुकूमत को आज़ाद हुकूमत होने का सर्टीफ़िकेट नहीं दे सकता."

"अनीस" ने यह भी लिखा है "उसके ... को देखने से —

کو جو حصّہ ملتا وہ اس بٹوارے کی وجہ سے ان سے چھن گیا۔"

پاکستان ریڈیو کو "انیس" نے 'انگریزوں کا ایک اور غلام' کہا ہے اور لکھا ہے — "ڈیڑھ سو برس کے انگریزی راج کا یہ نتیجہ ہے کہ اس ملک کے لوگ اپنے ہی ملک کے ساتھ غداری کر رہے ہیں۔ اسی طرح پاکستان کے اخبار روپیہ کمانے کے پیچھے پڑے ہوئے ہیں اور کوئی بھی ایسا کام کرنے کو تیار ہیں، جس سے ان کی جیبوں میں روپیہ آسکے۔"

"انیس" مانتا ہے کہ پاکستان کے اصلی حاکم انگریز ہیں؛ اور لکھتا ہے — "ہماری شکایت خاص کر پاکستان کے خلاف ہے اور ریڈیو پاکستان صرف ایک ماتحت نوکر کی طرح ویسے ہی اپنے مالک کی آواز کو دہرا دیتا ہے جیسے گراموفون کا ریکارڈ۔"

اور آگے چل کر "انیس" لکھتا ہے — "انگریزوں نے پاکستان کو نہیں چھوڑا ہے۔ پاکستان کے اوپر ان کی پکڑ پہلے سے زیادہ مضبوط ہے۔ پاکستان کی آج کل کی سرکار انگریزوں کے ہاتھوں میں ایک بڑے کام کا کھلونا ہے۔ پاکستان سرکار اسی پرانی پالیسی پر چل رہی ہے۔ صرف دو باتیں اس نے نئی کی ہیں۔ ایک یہ کہ سرحد کے صوبے میں زبردستی الٹ پھیر کئے اور دوسرے یہ کہ افغانستان کی طرف اس نے نگاہ بدل لی ہے۔ افغانستان، پاکستان کی کٹھ پتلی حکومت کو آزاد حکومت ہونے کا سارٹیفکٹ نہیں دے سکتا۔"

"انیس" نے یہ بھی لکھا ہے — "نقشے کو دیکھنے سے صاف

पता चलता है कि पूरबी पाकिस्तान और पच्छिमी पाकिस्तान की हालत डाँवाडोल है."

पठानिस्तान की बाबत "अनीस" लिखता है—"हम उनसे कहते हैं कि सामने आकर पठानिस्तान या पख्तूनिस्तान की आज़ादी को मान लें ताकि पठान क़ौम पेशावर को अपना मरकज़ बनाले.........हम पेशावर को काबुल के राज मे मिला लेना नहीं चाहते. हम यही चाहते हैं कि पख्तूनिस्तान का झंडा पेशावर में ऊँचा लहराये.

"पश्तो बोलने वाले पठानों की गिनती पाकिस्तान मे बहुत ज़्यादा है. हम पाकिस्तान हुकूमत से कहते हैं कि वह इन सत्तर लाख अफ़ग़ानों की ज़मीन म पाकिस्तान की बुनियाद न रक्खे. यह सत्तर लाख सब पश्तो बोलते हैं. तुम्हें चाहिये कि इस अफ़ग़ान क़ौम की आज़ादी को उसी तरह मान लो, जिस तरह पाकिस्तान में पाकिस्तानियों की आज़ादी को मानते हो....... हमे इस बात का फ़ख्र है कि सरहद के हमारे भाई रोशन दिमाग़ और सभ्य हैं. हम यह नहीं देख सकते कि हमारे यह भाई गुलामी की ज़ंजीरो में जकड़े रहें. किसी इतनी सभ्य क़ौम को गुलाम बनाकर रखना आसान नही है और हमे बड़ी ख़ुशी होगी अगर सरहद के इन लोगों को ख़ुद मुख़्तारी का हक़ दे दिया जाय"

"अनीस" ने यह भी कहा है कि पख्तून और पठान दर असल एक ही क़ौम है. अफ़ग़ानिस्तान की १९२९ की क्रान्ति में सरहद के क़बीलों ने अफ़ग़ानिस्तान की मदद की थी. "अनीस" लिखता है—"अफ़ग़ानिस्तान का यह एख़लाक़ी (नैतिक) फ़र्ज़ हो जाता

پتہ چلتا ہے کہ پوربی پاکستان اور پچھمی پاکستان کی حالت ڈانواڈول ہے۔"

پٹھانستان کی بابت "انیس" لکھتا ہے:- "ہم ان سے کہتے ہیں کہ سامنے آکر پٹھانستان یا پختونستان کی آزادی کو مان لیں تاکہ پٹھان قوم پشاور کو اپنا مرکز بنا لے...... ہم پشاور کو کابل کے راج میں ملا لینا نہیں چاہتے۔ ہم یہی چاہتے ہیں کہ پختونستان کا جھنڈا پشاور میں اونچا لہرائے۔"

"پشتو بولنے والے پٹھانوں کی گنتی پاکستان میں بہت زیادہ ہے۔ ہم پاکستان حکومت سے کہتے ہیں کہ وہ ان ستر لاکھ افغانوں کی زمین میں پاکستان کی بنیاد نہ رکھیں۔ یہ ستر لاکھ سب پشتو بولتے ہیں۔ تمھیں چاہئے کہ اس افغان قوم کی آزادی کو اسی طرح مان لو جس طرح پاکستان میں پاکستانیوں کی آزادی کو مانتے ہو..... ہمیں اس بات کا فخر ہے کہ سرحد کے ہمارے بھائی روشن دماغ اور سبھیہ ہیں۔ ہم یہ نہیں دیکھ سکتے کہ ہمارے یہ بھائی غلامی کی زنجیروں میں جکڑے رہیں۔ کسی اتنی سبھیہ قوم کو غلام بنا کر رکھنا آسان نہیں ہے۔ اور ہمیں بڑی خوشی ہوگی اگر سرحد کے ان لوگوں کو خود مختاری کا حق دے دیا جائے۔"

"انیس" نے یہ بھی کہا ہے کہ پختون اور پٹھان دراصل ایک ہی قوم ہیں۔ افغانستان کی ۱۹۲۹ء کی کرانتی میں سرحد کے قبیلوں نے افغانستان کی مدد کی تھی۔ "انیس" لکھتا ہے "افغانستان کا یہ اخلاقی (نیتک) فرض ہو جاتا

हैं कि जिन क़बीले वालों ने अफ़ग़ानिस्तान के इतिहास के उस संकट के समय में अफ़ग़ानिस्तान की मदद की थी, उन्हें अब पाकिस्तान के ज़ुल्म से बचावे."

ख़ान अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ और उनके ख़ुदाई ख़िदमतगारों के साथ पाकिस्तान के बरताव का ज़िक्र करते हुए "अनीस" लिखता है—"क्या इन पठानों ने उस हिन्दुस्तान के आज़ाद कराने में पूरा पूरा हिस्सा नहीं लिया जिसका पाकिस्तान भी एक टुकड़ा था? पाकिस्तान ने इन बहादुर लोगों क जेलख़ानों के सीख़चों के पीछे क्यों क़ैद कर रक्खा है? आज़ादी के इन सिपाहियों के ऊपर किस शरा या क़ानून के अनुसार या किस बिना पर खुल्लम खुल्ला ज़ुल्मो सितम किया जा रहा है?"

"अनीस" का कहना है—"पाकिस्तान के इस ज़ुल्म की वजह से सारी अफ़ग़ान क़ौम पाकिस्तान के बुरे इरादों के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त शक्ति बन कर खड़ी हो गई है. यह शक्ति पाकिस्तान की आगे बढ़ने की इन चालों को मलियामेट कर देगी."

अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के सम्बंध को बयान करते हुए "अनीस" लिखता है—"जहाँ तक हमारे भाई ईरानियों की बात है, हमें उनकी दोस्ती में कोई शक नहीं. अफ़ग़ानिस्तान की तरफ़ से ईरान के दिल में कोई बुरा इरादा नहीं. ईरानी क़ौम इतनी भोली नहीं है कि इस बारे में ख़ुद ग़रज़ लोगों के बहकावे या चाल में आ जाय."

"अनीस" ने पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान का मुक़ाबला करते हुए लिखा है—"कोई भी अफ़ग़ानिस्तान आकर देख सकता

ہے کہ جن قبیلے والوں نے افغانستان کے اتہاس کے اس
سنکٹ کے سمے میں افغانستان کی مدد کی تھی، انھیں اب
پاکستان کے ظلم سے بچاوے۔"

خان عبدالغفار خاں اور ان کے خدائی خدمت گاروں کے
ساتھ پاکستان کے برتاؤ کا ذکر کرتے ہوئے "انیس" لکھتا
ہے "کیا ان پٹھانوں نے اس ہندستان کے آزاد کرانے میں پورا پورا حصہ
نہیں لیا جس کا پاکستان بھی ایک ٹکڑا تھا؟ پاکستان نے ان بہادر
لوگوں کو جیل خانوں کے سیخچوں کے پیچھے کیوں بند کر رکھا ہے؟ آزادی
کے ان سپاہیوں کے اوپر کس شرع یا قانون کے انوسار یا کس بنا پر
کھلم کھلا ظلم و ستم کیا جا رہا ہے؟"

"انیس" کا کہنا ہے "پاکستان کے اس ظلم کی وجہ سے ساری افغان
قوم پاکستان کے برے ارادوں کے خلاف ایک زبردست شکتی بن کر
کھڑی ہو گئی ہے۔ یہ شکتی پاکستان کی آگے بڑھنے کی ان چالوں
کو ملیامیٹ کر دے گی۔"

افغانستان اور ایران کے سمبندھ کو بیان کرتے ہوئے "انیس" لکھتا
ہے "جہاں تک ہمارے بھائی ایرانیوں کی بات ہے، ہمیں ان کی دوستی میں کوئی
شک نہیں۔ افغانستان کی طرف سے ایران کے دل میں کوئی برا ارادہ
نہیں۔ ایرانی قوم اتنی بھولی نہیں ہے کہ اس بارے میں خود غرض لوگوں
کے بہکاوے یا چال میں آ جائے۔"

"انیس" نے پاکستان اور افغانستان کا مقابلہ کرتے
ہوئے لکھا ہے "کوئی بھی افغانستان آکر دیکھ سکتا

है कि अनाज और खाने की चीजें अफ़ग़ानिस्तान में बहुत सस्ती हैं. उसके मुक़ाबले में पाकिस्तान में खाने की चीज़ों का अकाल पड़ा हुआ है."

पाकिस्तान की फ़ौज के अन्दर असन्तोष का ज़िक्र करते हुए "अनीस" ने लिखा है—"जब कि पाकिस्तान में यह हालत है, अफ़ग़ानिस्तान की फ़ौज बिलकुल संतुष्ट है. अफ़ग़ानिस्तान के सिपाही हमेशा अपने बादशाह और अपने देश के लिये क़ुरबानियाँ करने को तैयार रहते हैं. अफ़ग़ानिस्तान के सिपाही भाड़े के टट्टू नहीं हैं, वह अपनी क़ौम के ख़िदमतगार हैं."

कहते हैं, पाकिस्तान में यह प्रोपेगंडा किया गया था कि अफ़ग़ानिस्तान में पुलीस जहाँ जिसे चाहे पकड़ लेती है. इस पर "अनीस" ने लिखा है—"पर अचरज की बात यह है कि पाकिस्तान के ख़बर देने वाले के सिवा और कोई यह बात नहीं जानता. हम यहाँ पर एलान करते हैं कि अफ़ग़ानिस्तान में एक भी सियासी क़ैदी नहीं है. दूसरी तरफ़ पाकिस्तान में सरहदी सूबे के अभी तक बारह हज़ार आदमी जेलों में हैं, जिन पर न कोई मुक़दमा चलाया जा रहा है और न जिनकी क़ैद की कोई मीआद है. हम पूछते हैं कि क़िस सियासी या एख़लाक़ी क़ानून के अधीन इन लोगों को बन्द किया गया है ? हम बता देना चाहते हैं कि हमारे राज मे दुश्मन की कोशिशें कामयाब नहीं हो सकी. इसलिये नहीं कि हमारी पुलीस बहुत चौकन्नी है, बल्कि इसलिये क्योंकि अफ़ग़ान क़ौम में एकता है और वह एक होकर दुश्मन के ख़िलाफ़ लड़ सकती है.......हम हिम्मत के साथ कह सकते हैं कि हमारे मुल्क में "आलेक" और

ہے کہ اناج اور کھانے کی چیزیں افغانستان میں بہت سستی ہیں۔ اس کے مقابلے میں پاکستان میں کھانے کی چیزوں کا کال پڑا ہوا ہے"

پاکستان کی فوج کے اندر اسنتوش کا ذکر کرتے ہوئے "انیس" نے لکھا ہے "تعجب کہ پاکستان میں یہ حالت ہے افغانستان کی فوج بالکل سنتشٹ ہے۔ افغانستان کے سپاہی ہمیشہ اپنے بادشاہ اور اپنے دیش کے لیے قربانیاں کرنے کو تیار رہتے ہیں۔ افغانستان کے سپاہی بھاڑے کے ٹٹو نہیں ہیں۔ وہ اپنی قوم کے خدمت گار ہیں۔"

کہتے ہیں پاکستان میں یہ پروپیگنڈا کیا گیا تھا کہ افغانستان میں پولیس جہاں جسے چاہے پکڑ لیتی ہے۔ اس پر "انیس" نے لکھا ہے "پر اچرج کی بات یہ ہے کہ پاکستان کے خبر دینے والے کے سوا اور کوئی یہ بات نہیں جانتا۔ ہم یہاں پر اعلان کرتے ہیں کہ افغانستان میں ایک بھی سیاسی قیدی نہیں ہے۔ دوسری طرف پاکستان میں سرحدی صوبے کے ابھی تک بارہ ہزار آدمی جیلوں میں ہیں۔ جن پر نہ کوئی مقدمہ چلایا جا رہا ہے اور نہ جن کی قید کی کوئی میعاد ہے۔ ہم پوچھتے ہیں کہ کس سیاسی یا اخلاقی قانون کے ادھین ان لوگوں کو بند کیا گیا ہے؟ ہم بتا دینا چاہتے ہیں کہ ہمارے راج میں دشمن کی کوششیں کامیاب نہیں ہو سکیں۔ اس لئے نہیں کہ ہماری پولیس بہت چوکنی ہے بلکہ اس لئے کیونکہ افغان قوم میں ایکتا ہے اور وہ ایک ہو کر دشمن کے خلاف لڑ سکتی ہے ۔۔۔۔۔ ہم ہمت کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ ہمارے ملک میں "آلیک" اور

"उज़बेक" शिया और सुन्नी, बल्कि कहना चाहिये सब लोग एक कौमी झंडे के नीचे जमा हैं................यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि सरहदी क़बीले के लोगों ने अपने जलसों और जलूसों में न सिर्फ पख़्तूनिस्तान का झन्डा ही फहराया बल्कि उनमें से बहुत सों ने अपने सरदारों और बुज़ुर्गों को काबुल भेजा और पाकिस्तान के ख़िलाफ़ उनकी आवाज़ हर रात को काबुल के रेडियो से सुनी जा सकती है."

आख़िर में "अनीस" लिखता है—"हम पाकिस्तान के एजन्टों को सलाह देते हैं कि वह इस बात को जान लें कि इस तरह के प्रोपेगंडा से कोई फायदा नहीं हो सकता. सच यह है कि इस तरह का प्रोपेगंडा हमारे इस पक्के इरादे को और भी मज़बूत कर देता है कि हम पख़्तूनिस्तान और कबायली सरहदी इलाके की आज़ादी माँगें. इस चीज़ ने सारी अफ़ग़ान क़ौम को एक कर दिया है. हमें अपनी क़ौम की आन और उसकी शान को क़ायम रखना है."

हम नहीं कह सकते कि "अनीस" की कौन सी बात कहाँ तक ठीक है. लेकिन "अनीस" एक सचमुच आज़ाद मुल्क का आज़ाद अख़बार है. हमें उसकी बातों पर ध्यान तो देना ही होगा. "डान", पाकिस्तान रेडियो, वहाँ के दूसरे अख़बारों या पाकिस्तान सरकार के ख़िलाफ़ "अनीस" ने जो कुछ कहा है, वह किसी हद तक भी ठीक हो या न हो, हमें दुख के साथ मानना पड़ता है कि जो बात "अनीस" ने रावी के उस पार वाले इलाक़े के लिये कही है वह कुछ न कुछ, थोड़ी या बहुत, रावी के इस पार वाले इलाक़े की

"ازبک" شیعہ اور سنی بلکہ کہنا چاہیے سب لوگ ایک قومی جھنڈے کے نیچے جمع ہیں ۔۔۔۔۔۔ یہ بات بھی دھیان میں رکھنی چاہیے کہ سرحدی قبیلے کے لوگوں نے اپنے جلسوں اور جلوسوں میں نہ صرف پختونستان کا جھنڈا ہی پھرایا بلکہ ان میں سے بہت سوں نے اپنے سرداروں اور بزرگوں کو کابل بھیجا اور پاکستان کے خلاف ان کی آواز ہر رات کو کابل کے ریڈیو سے سنی جا سکتی ہے۔"

آخر میں "انیس" لکھتا ہے "ہم پاکستان کے ایجنٹوں کو صلاح دیتے ہیں کہ وہ اس بات کو جان لیں کہ اس طرح کے پروپیگنڈے سے کوئی فائدہ نہیں ہو سکتا۔ سچ یہ ہے کہ اس طرح کا پروپیگنڈا ہمارے اس پکے ارادے کو اور بھی مضبوط کر دیتا ہے کہ ہم پختونستان اور قبائلی سرحدی علاقے کی آزادی مانگیں۔ اس چیز نے ساری افغان قوم کو ایک کر دیا ہے۔ ہمیں اپنی قوم کی آن اور اس کی شان کو قائم رکھنا ہے۔"

ہم نہیں کہہ سکتے کہ "انیس" کی کون سی بات کہاں تک ٹھیک ہے۔ لیکن "انیس" ایک سچ مچ آزاد ملک کا آزاد اخبار ہے۔ ہمیں اس کی باتوں پر دھیان تو دینا ہی ہوگا۔ "ڈان" پاکستان ریڈیو، وہاں کے دوسرے اخباروں یا پاکستان سرکار کے خلاف "انیس" نے جو کچھ کہا ہے وہ کسی حد تک بھی ٹھیک ہو یا نہ ہو، ہمیں دکھ کے ساتھ ماننا پڑتا ہے کہ جو بات "انیس" نے راوی کے اس پار والے علاقے کے لیے کہی ہے وہ کچھ نہ کچھ تھوڑی یا بہت، راوی کے اس پار والے علاقے کی

बाबत भी कही जा सकती है. डेढ़ सौ बरस की अंगरेज़ी हकूमत ने सारे मुल्क पर अपना जहरीला असर डाला है, जिससे हम अभी तक पूरी तरह निकल नहीं पाये. खुदग़रज़ी या तंग नज़री का भी ठीका पाकिस्तान में या हिन्द मे हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख, किसी एक ने नहीं ले रक्खा है. होता यह है कि एक तरफ़ की तंगी या ग़लती दूसरी तरफ़ की तंगी या ग़लती को जन्म देती है और एक शैतानी चक्कर पैदा हो जाता है, जिसमे कम या ज़्यादा हम सब फँस जाते हैं, इस समय भी फँसे हुए हैं और जिससे निकलने मे फिर देर लगती है.

लेकिन "अनीस" ने जो बातें कही हैं, वह हमें कुछ और गहरी चीज़ों की तरफ़ ले जाती हैं. "अनीस" ने पाकिस्तान की हुकूमत को खुले शब्दों में अंगरेज़ों की हुकूमत कहा है. इस बात में सचाई का कुछ अंश ज़रूर है. पच्छिमी पंजाब में अंगरेज़ गवर्नर को हटाने के लिये ज़ोरों की खींचा तानी जारी है और सरहद का गवर्नर भी अभी तक अंगरेज़ है. जहाँ तक अंगरेज़ों और अमरीका के राज-काजी और माली या तिजारती असर की बात है. वहाँ तक हम भी अपने को इस बारे मे अभी बिलकुल आज़ाद और बेदाग़ नहीं कह सकते. अभी तो इस साल भी हमने इंगलिस्तान के बादशाह का जन्म दिन मनाया है और उस जन्म दिन की खुशी में हमारे यहाँ के चार हिन्दुस्तानी पुलीस अफ़सरों को बादशाह की तरफ़ से ख़िताब तक मिले हैं. राज-काज मे मसलहत भी एक चीज़ होती है और शायद कुछ काम धीरे धीरे ही बनते हैं.

दुनिया के सामने इस समय एक बहुत बड़ा सवाल है. एक

(५७३)

بابت بھی کہی جا سکتی ہے۔ ڈیڑھ سو برس کی انگریزی حکومت نے سارے ملک پر اپنا زہریلا اثر ڈالا ہے۔ جس سے ہم ابھی تک پوری طرح نکل نہیں پائے۔ خود غرضی یا تنگ نظری کا بھی ٹھیکہ پاکستان میں یا ہند میں ہندو، مسلمان یا سکھ، کسی ایک نے نہیں لے رکھا ہے۔ ہوتا یہ ہے کہ ایک طرف کی تنگی یا غلطی دوسری طرف کی تنگی یا غلطی کو جنم دیتی ہے اور ایک شیطانی چکر پیدا ہو جاتا ہے جس میں کم یا زیادہ ہم سب پھنس جاتے ہیں۔ اس سمے بھی پھنسے ہوئے ہیں اور جس سے نکلنے میں کچھ دیر لگتی ہے۔

لیکن "انیس" نے جو باتیں کہی ہیں وہ ہمیں کچھ اور گہری چیزوں کی طرف لے جاتی ہیں۔ "انیس" نے پاکستان کی حکومت کو کھلے شبدوں میں انگریزوں کی حکومت کہا ہے۔ اس بات میں سچائی کا کچھ انش ضرور ہے۔ پچھمی پنجاب میں انگریز گورنر کو ہٹانے کے لئے زوروں کی کھینچا تانی جاری ہے اور سرحد کا گورنر بھی ابھی تک انگریز ہے۔ جہاں تک انگریزوں اور امریکہ کے راج کاجی اور مالی یا تجارتی اثر کی بات ہے وہاں تک ہم بھی اپنے کو اس بارے میں ابھی بالکل آزاد اور بیداغ نہیں کہہ سکتے۔ ابھی تو اس سال بھی ہم نے انگلستان کے بادشاہ کا جنم دن منایا ہے اور اس جنم دن کی خوشی میں ہمارے یہاں کے چار ہندستانی پولیس افسروں کو بادشاہ کی طرف سے خطاب تک ملے ہیں۔ راج کاج میں مصلحت بھی ایک چیز ہوتی ہے اور شاید کچھ کام دھیرے دھیرے ہی بنتے ہیں۔

دنیا کے سامنے اس سمے ایک بہت بڑا سوال ہے۔ ایک

तरफ़ अंगरेज़ और अमरीका और दूसरी तरफ़ रूस. यह दो अखाड़े साफ़ एक दूसरे के खिलाफ़ बने हुए हैं. एक एक मुल्क के अन्दर इनमें खुली और छिपी तरह तरह की टक्करें भी बराबर जारी हैं और बढ़ती जा रही हैं. हर मुल्क सोचता है कि हम किधर जायँ ? अफ़ग़ानिस्तान किधर है और अफ़ग़ानिस्तान को पाकिस्तान के बारे में क्या शक है यह भी "अनीस" के लेख से जाहिर है. साफ़ सवाल उठता है हिन्दुस्तान किधर जाय ?

अगली जंग और हम

हम भी अभी काफी जख्म खाये हुए हैं. हम दुनिया में सब के साथ अमन से रहना चाहते हैं, हम किसी से भी लड़ना नहीं चाहते. अंगरेज़ भी हमारे दोस्त, अमरीकी भी हमारे दोस्त, रूसी भी हमारे दोस्त. सारी दुनिया को हम अपना दोस्त मानते हैं और सब के साथ दोस्ती से रहना चाहते हैं. हाल में हिन्द और पाकिस्तान दोनों कामन वेल्थ में शामिल हुए हैं. इसका मतलब भी यही है कि जो मुल्क और जो क़ौमें भी दुनिया में अमन क़ायम रखना चाहती हैं और सबके साथ प्रेम और शन्ति के साथ रहना चाहती हैं हम उनके साथ हैं. हमने अहिन्सा से अपनी आज़ादी हासिल की है और चाहते हैं दुनिया मे अहिन्सा बढ़े और फले फूले और आदमियों आदमियों और मुल्कों मुल्कों के बीच की यह मारकाट, जिसे जंग कहा जाता है, हमेशा के लिये बन्द हो.

साथ ही जितनी तरह के ख़याल इस समय दुनिया में काम कर रहे हैं, उन सब को हमें शान्ति के साथ समझना होगा. हमें

طرف انگریز اور امریکہ اور دوسری طرف روس۔ یہ دو اکھاڑے صاف ایک دوسرے کے خلاف بنے ہوئے ہیں ایک ایک ملک کے اندر ان میں کھلی اور چھپی طرح طرح کی ٹکریں بھی برابر جاری ہیں اور بڑھتی جا رہی ہیں ہر ملک سوچتا ہے کہ ہم کدھر جائیں؟ افغانستان کدھر ہے اور افغانستان کو پاکستان کے بارے میں کیا شک ہے۔ یہ بھی "انیس" کے لیکھ سے ظاہر ہے۔ صاف سوال اٹھتا ہے ہندستان کدھر جائے؟

اگلی جنگ اور ہم

ہم بھی ابھی کافی زخم کھائے ہوئے ہیں۔ ہم دنیا میں سب کے ساتھ امن سے رہنا چاہتے ہیں ہم کسی سے بھی لڑنا نہیں چاہتے۔ انگریز بھی ہمارے دوست امریکی بھی ہمارے دوست، روسی بھی ہمارے دوست ساری دنیا کو ہم اپنا دوست مانتے ہیں اور سب کے ساتھ دوستی سے رہنا چاہتے ہیں حال میں ہند اور پاکستان دونوں کامن ویلتھ میں شامل ہوئے ہیں اس کا مطلب بھی یہی ہے کہ جو ملک اور جو قومیں بھی دنیا میں امن قائم رکھنا چاہتی ہیں اور سب کے ساتھ پریم اور شانتی کے ساتھ رہنا چاہتی ہیں ہم ان کے ساتھ ہیں۔ ہم نے اہنسا سے اپنی آزادی حاصل کی ہے اور چاہتے ہیں دنیا میں اہنسا بڑھے اور پھلے پھولے اور آدمیوں آدمیوں اور ملکوں ملکوں کے بیچ کی یہ مار کاٹ جسے جنگ کہا جاتا ہے، ہمیشہ کے لئے بند ہو۔

ساتھ ہی جتنی طرح کے خیال اس سمے دنیا میں کام کر رہے ہیں ان سب کو ہمیں شانتی کے ساتھ سمجھنا ہوگا۔ ہم

अंगरेजों और अमरीका वालों के दोस्त हैं. हम उन सब का भला चाहते हैं लेकिन इन दोनों मुल्कों की आजकल की सरमायादारी एक खतरनाक क़िस्म की बीमारी हो गई है. जापान या जापानियो ने कोई भी पाप किया हो या न किया हो, जागी हुई दुनिया की आत्मा अमरीका को सरकार और अमरीकन क़ौम को हीरो शीमा के ऐटम बम के लिये आसानी से माफ नहीं कर सकती. आज तक अमरीका के बहुत से होटलों, सिनेमाओं, स्कूलों, कालिजों, रेलों और ट्राम-गाड़ियों के दरवाजे नेक से नेक और विद्वान से विद्वान काले नीग्रो के लिये बन्द हैं. ब्रिटिश कामन वेल्थ के अन्दर जनरल स्मट्स जैसे नेता खुले खुले अपनी घबराहट जाहिर कर रहे हैं कि काला पीला एशिया भागता और बढ़ता चला आ रहा है. और इंगलिस्तान के बड़े से बड़े नेताओं की तरफ़ से जनरल स्मट्स जैसों का हौसला बढ़ाया जाता है. आज के योरप की तस्वीर और खासकर जर्मनी के चारों हिस्सों की हालत का मुक़ाबला स्मट्स की इस बात को और भी पक्का करता है. इन्डोनेशिया में डच को, पांडीचरी में फ्रान्सीसियों को और गोआ में पुर्तगालियों को जिस तरह उक्साया और बढ़ाया जा रहा है उससे जाहिर है कि अंगरेज राजकाजी नेताओं के दिल अभी पूरी तरह नहीं बदले, हमारा दावा है कि बदल भी नहीं सकते जब तक कि वहाँ का राजकाजी, माली और ब्योपारी ढाँचा न बदले.

अब फिर अमरीका की तरफ़ निगाह डालिये. बहुत कम लोग हैं जिन्हें यह मालूम हो कि आजादी का हमेशा राग अलापने वाले अमरीका की राजधानी वाशिंगटन में किसी तरह की म्युनिसिपल

انگریزوں اور امریکہ والوں کے دوست ہیں۔ ہم ان سب کا بھلا چاہتے ہیں لیکن ان دونوں ملکوں کی آج کل کی سرمایہ داری ایک خطرناک قسم کی بیماری ہو گئی ہے۔ جاپان یا جاپانیوں نے کوئی بھی پاپ کیا ہو یا نہ کیا ہو، جاگی ہوئی دنیا کی آتما امریکہ کی سرکار اور امریکن قوم کو ہیروشیما کے ایٹم بم کے لئے آسانی سے معاف نہیں کر سکتی۔ آج تک امریکہ کے بہت سے ہوٹلوں، سنیماؤں، اسکولوں، کالجوں، ریلوں اور ٹرام گاڑیوں کے دروازے نیک سے نیک اور ودوان سے ودوان کالے نیگرو کے لئے بند ہیں۔ برٹش کامن ویلتھ کے اندر جنرل اسمٹس جیسے نیتا کھلے کھلے اپنی گھبراہٹ ظاہر کر رہے ہیں کہ کالا پیلا ایشیا بھاگتا اور بڑھتا چلا آ رہا ہے اور انگلستان کے بڑے سے بڑے نیتاؤں کی طرف سے جنرل اسمٹس جیسوں کا حوصلہ بڑھایا جاتا ہے آج کے یورپ کی تصویر اور خاص کر جرمنی کے چاروں حصوں کی حالت کا مقابلہ اسمٹس کی اس بات کو اور بھی پکا کرتا ہے۔ انڈونیشیا میں ڈچ کو، پانڈیچری میں فرانسیسیوں کو اور گوا میں پرتگالیوں کو جس طرح اکسایا اور بڑھایا جا رہا ہے اس سے ظاہر ہے کہ انگریز راج کاجی نیتاؤں کے دل ابھی پوری طرح نہیں بدلے، ہمارا دعویٰ ہے کہ بدل بھی نہیں سکتے جب تک کہ وہاں کا راج کاجی، مالی اور بیوپاری ڈھانچہ نہ بدلے۔

اب پھر امریکہ کی طرف نگاہ ڈالئے۔ بہت کم لوگ ہیں جنھیں یہ معلوم ہو کہ آزادی کا ہمیشہ راگ الاپنے والے امریکہ کی راجدھانی واشنگٹن میں کسی طرح کی میونسپل

कमेटी नहीं है, कोई चुनाव नहीं. वहाँ की म्युनिस्पल्टी का सारा काम प्रेसिडेन्ट के मुक़र्रर किये हुए सरकारी अफ्सरों के ज़रिये होता है. वाशिंगटन के गोरे स्कूलों में किसी काले हब्शी का बच्चा नहीं दाख़िल किया जा सकता. हस्पतालों और स्कूलों का इन्तज़ाम कहीं कहीं इतना बुरा है जितना शायद ही किसी दूसरे मुल्क में हो. पिछली जंग के बाद एक फ़ौजी अफ्सर ने जंग से लौटकर अपने लिये एक झोंपड़ा बना लेने की कोशिश की. दो बरस से ऊपर बीत गये, दर दर और दफ्तर दफ्तर की ठोकरें खाकर भी उसे मकान बनवाने के लिये थोड़े से सामान के परमिट न मिल सके. उसने दुखी होकर अमरीका के एक अख़बार मे एक लेख लिखकर भेजा, "Is this the world we fight for?" यानी, 'क्या यही दुनिया है जिसके लिये हमने लड़ाई लड़ी ?' उसने लिखा है कि जो शिकायत उसे है वही लाखों औरों को भी है. ग़रीब और अमीर के बीच का फ़ासला किसी मुल्क मे इतना अधिक नहीं है जितना अमरीका में. चीज़ों की क़ीमत में से जितना हिस्सा माल पैदा करने वाले को मिलता है उसमे और जो क़ीमत ख़रीदने वाले को देनी पड़ती है उसमे जितना फ़रक़ अमरीका मे है उतना किसी देश मे नहीं. वग़ैरा वग़ैरा.

हम अमरीका या किसी की बुराई के ख़याल से यह बातें नहीं लिख रहे हैं. हम मानते हैं कि अभी हमे अमरीका और इंगलैंड से बहुत सी बातें सीखनी हैं. पर इंगलैंड और अमरीका के राजकाजी, माली, समाजी और व्योपारी ढाँचे पुराने हो चुके. दूसरे मुल्कों को उनसे काफ़ी नुक़सान पहुंचा है और पहुंच रहा

کمیٹی نہیں ہے، کوئی چناؤ نہیں۔ وہاں کی میونسپلٹی کا سارا کام پریسیڈنٹ کے مقرر کئے ہوئے سرکاری افسروں کے ذریعہ ہوتا ہے۔ واشنگٹن کے گورے اسکولوں میں کسی کالے حبشی کا بچہ نہیں داخل کیا جا سکتا۔ ہسپتالوں اور اسکولوں کا انتظام کہیں کہیں اتنا برا ہے جتنا شاید ہی کسی دوسرے ملک میں ہو۔ پچھلی جنگ کے بعد ایک فوجی افسر نے جنگ سے لوٹ کر اپنے لئے ایک جھونپڑا بنا لینے کی کوشش کی۔ دو برس سے اوپر بیت گئے، در در اور دفتر دفتر کی ٹھوکریں کھا کر بھی اسے مکان بنوانے کے لئے تھوڑے سے سامان کے پرمٹ نہ مل سکے۔ اس نے دکھی ہو کر امریکہ کے ایک اخبار میں ایک لیکھ لکھ کر بھیجا، "[illegible] this the world we fight for" یعنی کیا یہی دنیا ہے جس کے لئے ہم نے لڑائی لڑی؟ اس نے لکھا ہے کہ جو شکایت اسے ہے وہی لاکھوں اوروں کو بھی ہے۔ غریب اور امیر کے بیچ کا فاصلہ کسی ملک میں اتنا ادھک نہیں ہے جتنا امریکہ میں۔ چیزوں کی قیمت میں سے جتنا حصہ مال پیدا کرنے والے کو ملتا ہے اس میں اور جو قیمت خریدنے والے کو دینی پڑتی ہے اس میں جتنا فرق امریکہ میں ہے اتنا کسی دیش میں نہیں۔ وغیرہ وغیرہ۔

ہم امریکہ یا کسی کی برائی کے خیال سے یہ باتیں نہیں لکھ رہے ہیں۔ ہم مانتے ہیں کہ ابھی ہمیں امریکہ اور انگلینڈ سے بہت سی باتیں سیکھنی ہیں۔ پر انگلینڈ اور امریکہ کے راج کاجی، مالی، سماجی اور بیوپاری ڈھانچے پرانے ہو چکے۔ دوسرے ملکوں کو ان سے کافی نقصان پہنچا ہے اور پہنچ رہا

है. अपने आगे के रास्ते का फैसला करने के लिये हमें सब तरफ देखना होगा.

रूस के खिलाफ़ अमरीका ने और अमरीका के खिलाफ रूस ने काफी प्रोपेगंडा किया है, और अब भी कर रहे हैं. राजनीति में झूट बोलना योरप वाले अपना हक़समझते हैं. मंगोलिया में, मंचूरिया मे, कोरिया और चीन में जैसे जैसे कम्युनिस्टों का असर फैलता गया वैसे वैसे ही रूस के खिलाफ प्रोपेगंडा भी और गर्माता गया. हम कम्युनिस्ट नहीं हैं. हम ईश्वर अल्लाह और दीन धर्म के मानने वाले हैं और इनके मानने मे ही अपना और दुनिया का भला समझते हैं. हम अपने मुल्क को बेदीनी से बचाना चाहते हैं. सन् १९४२ ई० में मुल्क की आजादी के संग्राम की तरफ इस मुल्क की कम्युनिस्ट पार्टी ने जो रुख लिया उसे भी देश आसानी से माफ़ नहीं कर सकता. कोई मुल्क या कोई सरकार देश मे तोड़ फोड़, मारकाट या हिन्सा के ज़रिये अपनी पार्टी को बढ़ाने या राज पलटने की कोशिशों को भी चुप बैठकर बर्दाश्त नही कर सकती. पर हमें किसी भी मज़हब या विचार के कुछ मानने वालों की ग़लतियों से उस मज़हब या ख़याल के ख़िलाफ़ राय नहीं बना लेनी नहीं चाहिये. दीन या धर्म भी केवल किसी मानता या किसी रीत रिवाज ही का नाम नहीं है.

कम्युनिज़्म के जन्मदाता कार्लमार्क्स और उसके सबसे बड़े अमली प्रचारक लेनिन के किसी विचार या किसी सिद्धान्त को हम मानें या न मानें, हम इससे इनकार नहीं कर सकते कि इन दोनों की आत्मायें दुनिया के ग़रीबों और दुखियों के लिये

ہے. اپنے آگے کے راستے کا فیصلہ کرنے کے لئے ہمیں سب طرف دیکھنا ہوگا.

روس کے خلاف امریکہ نے اور امریکہ کے خلاف روس نے کافی پروپگنڈا کیا ہے، اور اب بھی کر رہے ہیں. راج نیتی میں جھوٹ بولنا یورپ والے اپنا حق سمجھتے ہیں. منگولیا میں، منچوریا میں، کوریا اور چین میں جیسے جیسے کیونسٹوں کا اثر پھیلتا گیا ویسے ویسے روس کے خلاف پروپگنڈا بھی اور گرماتا گیا. ہم کیونسٹ نہیں ہیں. ہم ایشور اللہ اور دین دھرم کے ماننے والے ہیں اور ان کے ماننے میں ہی اپنا اور دنیا کا بھلا سمجھتے ہیں. ہم اپنے ملک کو بے دینی سے بچانا چاہتے ہیں. سنہ ۱۹۴۲ء میں ملک کی آزادی کے سنگرام کی طرف اس ملک کی کیونسٹ پارٹی نے جو رخ لیا اسے بھی دیش آسانی سے معاف نہیں کرسکتا. کوئی ملک یا کوئی سرکار دیش میں توڑ پھوڑ، مارکاٹ یا ہنسا کے ذریعے اپنی پارٹی کو بڑھانے یا راج پلٹنے کی کوششوں کو بھی چپ بیٹھکر برداشت نہیں کرسکتی. پر ہمیں کسی بھی مذہب یا وچار کے کچھ ماننے والوں کی غلطیوں سے اس مذہب یا خیال کے خلاف رائے نہیں بنا لینی چاہئے. دین یا دھرم بھی کیول کسی مانتا یا کسی ریت رواج ہی کا نام نہیں ہے.

کیونیزم کے جنم داتا کارل مارکس اور اس کے سب سے بڑے عملی پرچارک لینن کے کسی وچار یا کسی سدھانت کو ہم مانیں یا نہ مانیں، ہم اس سے انکار نہیں کرسکتے کہ ان دونوں کی آتمائیں دنیا کے غریبوں اور دکھیوں کے لئے

तड़पती थीं. हम महात्मा गांधी के जिन्दगी के उसूलों को आदर्श मानते हैं. उन्हीं में हमें दुनिया का भला दिखाई देता है. जिस जिस बात में भी लेनिन और महात्मा गांधी में फ़रक़ था उसमें हम महात्मा गांधी के पैरो हैं, लेनिन के नहीं. लेकिन हमें इस बात के मानने से भी इनकार नहीं कि जहाँ तक सिर्फ़ तपस्या का सवाल है, लेनिन की तपस्या महात्मा गांधी की तपस्या से बढ़कर थी. हमें परमात्मा के इस बाग़ के हर फूल से उसका इत्र लेना है.

जैसे जैसे पूरबी एशिया में कम्युनिस्टों का असर बढ़ता चला गया, वैसे वैसे ही यह बात खुलती चली गई कि जिस तरह कार्लमार्क्स के कम्युनिज्म, रूस के शुरू के कम्युनिज्म और आज के रूस के कम्युनिज्म मे फ़रक़ है, वैसे ही रूसी कम्युनिज्म और मंचूरियन कम्युनिज्म, और मंचूरियन कम्युनिज्म और चीनी कम्युनिज्म में भी फ़रक है. रूस के बड़े से बड़े दुश्मनों को भी यह मानना पड़ा है कि जहाँ जहाँ पूरब में कम्युनिज्म फैलता गया वहाँ वहाँ आम तौर पर अमन शान्ति और ख़ुशहाली जड़ पकड़ती गई. हाल ही में कम्युनिस्टों के शंघाई पर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद यह छोटी बात नहीं है कि हांग कांग के अंगरेज औरत और बच्चे, हांग कांग में अपने को इतना महफ़ूज़ नहीं समझते जितना शंघाई में, और जहाज़ों में भर भर कर शंघाई चले गये और जा रहे हैं, जब कि हांगकांग पर अभी तक अंगरेज़ी झंडा फहरा रहा है और शंघाई पर कम्युनिस्टों का राज है. अंगरेज़ और अमरीकी

تڑپتی تھیں۔ ہم مہاتما گاندھی کے زندگی کے اصولوں کو آدرش مانتے ہیں۔ انھیں میں ہمیں دنیا کا بھلا دکھائی دیتا ہے۔ جس جس بات میں لینن اور مہاتما گاندھی میں فرق تھا اس میں ہم مہاتما گاندھی کے پیرو ہیں، لینن کے نہیں. لیکن ہمیں اس بات کے ماننے سے بھی انکار نہیں کہ جہاں تک صرف تپسیا کا سوال ہے، لینن کی تپسیا مہاتما گاندھی کی تپسیا سے بڑھکر تھی۔ ہمیں پرماتما کے اس باغ کے ہر پھول سے اسکا عطر لینا ہے۔

جیسے جیسے پوربی ایشیا میں کمیونسٹوں کا اثر بڑھتا چلا گیا، ویسے ویسے ہی یہ بات کھلتی چلی گئی کہ جس طرح کارل مارکس کے کمیونزم، روس کے شروع کے کمیونزم اور آج کے روس کے کمیونزم میں فرق ہے، ویسے ہی روسی کمیونزم اور منچورین کمیونزم، اور منچورین کمیونزم اور چینی کمیونزم میں بھی فرق ہے۔ روس کے بڑے سے بڑے دشمنوں کو بھی یہ ماننا پڑا ہے کہ جہاں جہاں پورب میں کمیونزم پھیلتا گیا وہاں وہاں عام طور پر امن شانتی اور خوش حالی جڑ پکڑتی گئی۔ حال ہی میں کمیونسٹوں کے شنگھائی پر قبضہ کر لینے کے بعد یہ چھوٹی بات نہیں ہے کہ ہانگ کانگ کے انگریز عورت اور بچے، ہانگ کانگ میں اپنے کو اتنا محفوظ نہیں سمجھتے جتنا شنگھائی میں، اور جہازوں میں بھر بھر کر شنگھائی چلے گئے اور جا رہے ہیں، جبکہ ہانگ کانگ میں ابھی تک انگریزی جھنڈا پھہرا رہا ہے اور شنگھائی پر کمیونسٹوں کا راج ہے۔ انگریز اور

ज़रा सी भी शिकायत का मौक़ा नहीं मिला. सब काम इतने अमन के साथ चल रहे हैं जितने पिछले चालीस बरस में कभी न चले थे. यहाँ तक कि शंघाई की नई कम्युनिस्ट सरकार ने जहाँ कहीं यह देखा कि मज़दूर कारख़ाने के मालिकों से बेजा फ़ायदा उठाना चाह रहे हैं वहाँ उन्होंने मज़दूरों को दबाया और दोनों के बीच इन्साफ़ क़ायम रक्खा. जिन लोगों ने हमें रूसी हौवा या कम्युनिस्ट हौवे से इतना ज़्यादा डरा रक्खा था और जो अब भी डराते रहते हैं उनकी बातें ग़ैर जानकारी या स्वार्थ से ख़ाली नहीं हैं. जो लोग चीन के हालात को ग़ौर से पढ़ और सुन रहे हैं उन्हें अब साफ़ दिखाई दे गया कि अमरीका और इंगलैंड ने च्याँग काई शेक और उसकी सरकार को लगातार बढ़ावा देकर और ख़ास कर अमरीका ने च्यांग काई शेक को अरबों डालरों की मदद देकर चीन की करोड़ों ग़रीब जन्ता का और दुनिया का बुरा ही किया है.

आगे की दुनिया का ढाँचा क्या हो ? इसके लिये नये तजरबे आज वाशिंगटन और लन्दन में नहीं हो रहे हैं. इसके लिये नये तजरबे हो रहे हैं मास्को में, जार्जिया में, आज़र बाइजान मे, कोरिया में, चीन में, डनमार्क मे, सोयडन मे और अगर हम अपने अन्दर देख सकें तो अभी बहुत छोटे दरजे तक और अपने ही ढंग पर हिन्दुस्तान में. हमें विश्वास है कि दुनिया को एक नये क़िस्म के रूहानी कम्युनिज़म या आध्यात्मिक साम्यवाद की तरफ़ बढ़ना है. इस्लाम ख़ुद एक तरह का रूहानी कम्युनिज़म है. महात्मा गांधी के उसूल भी हमें इसी रास्ते पर ले चलते हैं.

(५७६)

ذرا سی بھی شکایت کا موقع نہیں ملا۔ سب کام اتنے امن کے ساتھ چل رہے ہیں جتنے پچھلے چالیس برس میں کبھی نہ چلے تھے۔ یہاں تک کہ شنگھائی کی نئی کیمونسٹ سرکار نے جہاں کہیں یہ دیکھا کہ مزدور کارخانے کے مالکوں سے بیجا فائدہ اٹھانا چاہ رہے ہیں وہاں انہوں نے مزدوروں کو دبایا اور دونوں کے بیچ انصاف قائم رکھا۔ جن لوگوں نے ہمیں روسی ہوّا یا کمیونسٹ ہوّے سے اتنا زیادہ ڈرا رکھا تھا اور جو اب بھی ڈراتے رہتے ہیں ان کی باتیں غیر جانکاری یا سوارتھ سے خالی نہیں ہیں۔ جو لوگ چین کے حالات کو غور سے پڑھ اور سن رہے ہیں انھیں اب صاف دکھائی دے گیا کہ امریکہ اور انگلینڈ نے چیانگ کائی شک اور اس کی سرکار کو لگاتار بڑھاوا دے کر اور خاص کر امریکہ نے چیانگ کائی شک کو اربوں ڈالروں کی مدد دے کر چین کی کروڑوں غریب جنتا کا اور دنیا کا برا ہی کیا ہے۔

آگے کی دنیا کا ڈھانچہ کیا ہو؟ اس کے لئے نئے تجربے آج واشنگٹن اور لندن میں نہیں ہو رہے ہیں۔ اس کے لئے نئے تجربے ہو رہے ہیں ماسکو میں، جارجیا میں، آذر بائیجان میں، کوریا میں، چین میں، ڈنمارک میں، سوئڈن میں اور اگر ہم اپنے اندر دیکھ سکیں تو ابھی بہت چھوٹے درجے تک اور اپنے ہی ڈھنگ پر ہندستان میں۔ ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کو ایک نئے قسم کے روحانی کیمونیزم یا ادھیاتمک سامیہ واد کی طرف بڑھنا ہے۔ اسلام خود ایک طرح کا روحانی کیمونیزم ہے۔ مہاتما گاندھی کے اصول بھی ہمیں اسی راستے پر لے چلتے ہیں۔

(۵۷۶)

पर अभी ख़ुद अपनी तरफ़ तो हमारी निगाह भी नहीं जा रही है. अभी तो अपने घर के जौहरों को पूरी तरह पहिचानने की हमने कोशिश भी नहीं की.

"आनीस" के लेख से मालूम होता है कि अफ़ग़ानिस्तान की आँखें हमारी निस्बत ज्यादा खुली हुई हैं. अगर तीसरी बड़ी जंग हो ही गई तो हम पूरी तरह इस बात की कोशिश करेंगे कि हम उस जंग में न घिसटें. हमारा पहला काम दुनिया को जंग से रोकने की कोशिश करना होगा. और दूसरा काम अगर जंग हो ही जाय तो अपने आपको बिलकुल पूरी तरह अलग और ग़ैरजानिबदार रखना होगा. पंडित जवाहर लाल जी ने कामन वेल्थ में शामिल होने के मौक़े पर कहा था कि इसका मतलब किसी तरह का जंगी या फ़ौजी समझौता नहीं है. हम समझते हैं कि यही उनका मंशा था. हर सूरत में दुनिया की हालत को पूरी तरह देखते हुए हम पूरी ज़िम्मेदारी के साथ यह कह सकते हैं कि जहाँ तक हमारे मुल्क और उसकी जनता के नफ़ा नुक़सान का सवाल है, अगर कहीं बदक़िस्मती से रूस और एँगलो अमरीका में लड़ाई छिड़ ही गई और इंगलैंड या अमरीका ने किसी तरह भी हमें इस लड़ाई में घसीटना चाहा तो हम इसे हरगिज़ बर्दाश्त न कर सकेंगे और इस मुल्क के किसी सिपाही का एक बूँद ख़ून भी, यहाँ का एक गेहूँ का दाना भी, एक फूटी कौड़ी भी, रूस, चीन या अफ़ग़ानिस्तान किसी पड़ोसी मुल्क के ख़िलाफ़ नहीं इस्तेमाल की जा सकेगी और न की जानी चाहिये. हम चाहते हैं कि पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में मनमुटाव दूर हो

پر ابھی خود اپنی طرف ہماری نگاہ بھی نہیں جا رہی ہے۔ ابھی تو اپنے گھر کے جوہروں کو پوری طرح پہچاننے کی ہم نے کوشش بھی نہیں کی۔

"انیس" کے لیکھ سے معلوم ہوتا ہے کہ افغانستان کی آنکھیں ہماری نسبت زیادہ کھلی ہوئی ہیں۔ اگر تیسری بڑی جنگ ہو ہی گئی تو ہم پوری طرح اس بات کی کوشش کریں گے کہ ہم اس جنگ میں نہ گھسٹیں۔ ہمارا پہلا کام دنیا کو جنگ سے روکنے کی کوشش کرنا ہوگا۔ اور دوسرا کام اگر جنگ ہو ہی جائے تو اپنے آپ کو بالکل پوری طرح الگ اور غیر جانبدار رکھنا ہوگا۔ پنڈت جواہر لال جی نے کامن ویلتھ میں شامل ہونے کے موقع پر کہا تھا کہ اس کا مطلب کسی طرح کا جنگی یا فوجی سمجھوتہ نہیں ہے۔ ہم سمجھتے ہیں کہ یہی ان کا منشا تھا۔ ہر صورت میں دنیا کی حالت کو پوری طرح دیکھتے ہوئے ہم پوری ذمے داری کے ساتھ یہ کہہ سکتے ہیں کہ جہاں تک ہمارے ملک اور اس کی جنتا کے نفع نقصان کا سوال ہے، اگر کہیں بدقسمتی سے روس اور اینگلو امریکہ میں لڑائی چھڑ ہی گئی اور انگلینڈ یا امریکہ نے کسی طرح بھی ہمیں اس لڑائی میں گھسیٹنا چاہا تو ہم اسے ہرگز برداشت نہ کر سکیں گے اور اس ملک کے کسی سپاہی کا ایک بوند خون بھی، یہاں کا ایک گیہوں کا دانہ بھی، ایک پھوٹی کوڑی بھی، روس، چین یا افغانستان کسی پڑوسی ملک کے خلاف نہیں استعمال کی جا سکے گی اور نہ کی جانی چاہیے۔ ہم چاہتے ہیں کہ پاکستان اور افغانستان میں من مٹاؤ دور ہو

जाय. दोनों में प्रेम बढ़े. हिन्द और पाकिस्तान मे भी प्रेम, मेल मिलाप और आना जाना बढ़े. हम यह भी चाहते हैं कि जिस तरह का प्रेम का नाता हमारा अंगरेज़ों और अमरीका के साथ है, वैसा ही नये चीन और रूस के साथ भी क़ायम हो. एक दूसरे पर शक और एक हुकूमत से दूसरी हुकूमत में आने जाने की सब रुकावटें दूर हों. और हम, पहले अपने मुल्क मे, और फिर दुनिया में जहाँ तक बन पड़े वह रूहानी साम्यवाद, वह सच्ची इन्सानी मसावात, वह मानव एकता क़ायम करने में कामियाब हो सकें जिसमें मोहब्बत, रवादारी और इन्साफ़ का साम्राज हो और एक दूसरे के साथ ज़बरदस्ती, एक दूसरे से बेजा फ़ायदा उठाने की आदत और एक दूसरे की हिंसा के दरवाज़े हमेशा के लिये बंद हो जायँ.

सुन्दर लाल

पंडित सुन्दर लाल का ख़त सरदार दीवान सिंह 'मफ़्तूँ' एडीटर 'रियासत' दिल्ली के नाम

प्यारे भाई सरदार दीवानसिंह साहब 'मफ़्तूँ' तस्लीम !

अभी अभी एक भाई ने ३० मई के "रियासत" में 'मौलवी पंडित सुन्दर लाल की नई फ़ितना परदाज़ी' के उनवान (सुर्ख़ी) से नोट पढ़कर सुनाया. क़ुदरती तौर पर उसे सुन कर मुझे कुछ दुख हुआ. उस नोट में जो गालियाँ मुझे दी गई हैं उन पर मुझे कुछ नहीं कहना. हर लिखने वाले का अपना तर्ज़ होता है. हाँ जो कतरन मेरी बम्बई की एक तक़रीर की आपने नक़ल की है उस पर आपको

جائے۔ دونوں میں پریم بڑھے۔ ہند اور پاکستان میں بھی پریم، میل ملاپ اور آنا جانا بڑھے۔ ہم یہ بھی چاہتے ہیں کہ جس طرح کا پریم کا ناتا ہمارا انگریزوں اور امریکہ کے ساتھ ہے، ویسا ہی نئے چین اور روس کے ساتھ بھی قائم ہو۔ ایک دوسرے پر شک اور ایک حکومت سے دوسری حکومت میں آنے جانے کی سب رکاوٹیں دور ہوں۔ اور ہم، پہلے اپنے ملک میں، اور پھر دنیا میں جہاں تک بن پڑے وہ روحانی سامیہ واد، وہ سچی انسانی مساوات، وہ مانو ایکتا قائم کرنے میں کامیاب ہو سکیں جس میں محبت، رواداری اور انصاف کا سامراج ہو اور ایک دوسرے کے ساتھ زبردستی، ایک دوسرے سے بیجا فائدہ اٹھانے کی عادت اور ایک دوسرے کی ہنسا کے دروازے ہمیشہ کے لئے بند ہو جائیں۔

سندر لال

پنڈت سندر لال کا خط سردار دیوان سنگھ 'مفتوں' ایڈیٹر 'ریاست' دلی کے نام

پیارے بھائی سردار دیوان سنگھ صاحب 'مفتوں' تسلیم!

ابھی ابھی ایک بھائی نے ۳۰ مئی کے 'ریاست' میں 'مولوی پنڈت سندر لال کی نئی فتنہ پردازی' کے عنوان (سرخی) سے نوٹ پڑھ کر سنایا۔ قدرتی طور پر اسے سن کر مجھے کچھ دکھ ہوا۔ اس نوٹ میں جو گالیاں مجھے دی گئی ہیں ان پر مجھے کچھ نہیں کہنا۔ ہر لکھنے والے کا اپنا طرز ہوتا ہے۔ ہاں جو کترن میری بمبئی کی ایک تقریر کی آپ نے نقل کی ہے اس پر آپ کو

ग़ुस्सा आना क़ुदरती था. मुझे शिकायत सिर्फ़ यह है कि जिस अख़बार की वह कतरन आपने नक़ल की है उसने मेरे और मेरी तक़रीर के साथ इन्साफ़ नहीं किया. मैं और बातों को छोड़ रहा हूँ, सिर्फ़ एक चीज़ का ज़िक्र करना चाहता हूँ. यानी वह जिस पर आपको सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा आया. मैंने बम्बई की उस तक़रीर में इस मामले पर जो कहा था वह यह था—"मैं ईमानदारी के साथ इस्लाम को सारी दुनिया मे फैलाना चाहता हूँ और सारी दुनिया को मुसलमान देखना चाहता हूँ. मैं ईमानदारी के साथ सारी दुनिया में वैदिक धर्म को फैलाना चाहता हूँ और सारी दुनिया को वैदिक धर्म की मानने वाली देखना चाहता हूँ. मैं ईमानदारी के साथ गीता के धर्म को सारी दुनिया मे फैलाना चाहता हूँ और सारी दुनिया को गीता धर्म का मानने वाला देखना चाहता हूँ. मुझे इन सब अलग-अलग धर्मों के अन्दर एक ही बुनियादी सच्चाई और एक ही रोशनी दिखाई देती है—वग़ैरा वग़ैरा —"

मैंने इस्लाम, वैदिक धर्म और गीता धर्म तीनों का और तीनों का ठीक एक ही से अलफ़ाज़ में ज़िक्र किया था. शायद आपको मालूम हो कि मैं सब मज़हबों की बुनियादी एकता का मानने वाला हूँ. अलग-अलग मज़हबों की शरअ और कर्म कांड में फ़रक़ भी मानता हूँ. लेकिन चाहता हूँ कि दुनिया बुनियादी सच्चाइयों को ज़्यादा और इन फ़रूआत (ऊपरी चीज़ों) को कम अहमियत देना सीखे. मेरा अक़ीदा है—

यक चराग़ अस्त दरीं दह व अज़ परतवे आँ
हर कुजा मी निगरम अंजुमने सख़्ता अन्द

غصہ آنا قدرتی تھا. مجھے شکایت صرف یہ ہے کہ جس اخبار کی کترن آپ نے نقل کی ہے اُس نے میرے اور میری تقریر کے ساتھ انصاف نہیں کیا. میں اور باتوں کو چھوڑ رہا ہوں، صرف ایک چیز کا ذکر کرنا چاہتا ہوں. یعنی وہ جس پر آپ کو سب سے زیادہ غصہ آیا. میں نے بمبئی کی اُس تقریر میں اس معاملے پر جو کہا تھا وہ یہ تھا— "میں ایمانداری کے ساتھ اسلام کو ساری دُنیا میں پھیلانا چاہتا ہوں اور ساری دنیا کو مسلمان دیکھنا چاہتا ہوں. میں ایمانداری کے ساتھ ساری دنیا میں ویدک دھرم کو پھیلانا چاہتا ہوں اور ساری دنیا کو ویدک دھرم کی ماننے والی دیکھنا چاہتا ہوں. میں ایمانداری کے ساتھ گیتا کے دھرم کو ساری دُنیا میں پھیلانا چاہتا ہوں اور ساری دنیا کو گیتا دھرم کا ماننے والا دیکھنا چاہتا ہوں. مجھے ان سب الگ الگ دھرم کے اندر ایک ہی بنیادی سچائی اور ایک ہی روشنی دکھائی دیتی ہے— وغیرہ. وغیرہ—"

میں نے اسلام، ویدک دھرم اور گیتا دھرم تینوں کا اور تینوں کا ٹھیک ایک ہی سے الفاظ میں ذکر کیا تھا. شاید آپ کو معلوم ہو کہ میں سب مذہبوں کی بنیادی ایکتا کا ماننے والا ہوں. الگ الگ مذہبوں کی شرع اور کرم کانڈ میں فرق بھی مانتا ہوں. لیکن چاہتا ہوں کہ دنیا بنیادی سچائیوں کو زیادہ اور ان فروعات (اوپری چیزیں) کو کم اہمیت دینا سیکھے. میرا عقیدہ ہے—

یک چراغ است دریں دہر و از پرتوِ آں
ہر کجا می نگرم انجمنے ساختہ اند

[सारे जमाने में एक ही चराग़ है और उसी से रोशनी लेकर जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, लोग अपनी अपनी सभायें सजाये बैठे हैं.]

यही बात उपनिषदों ने चराग की जगह रंग बिरङ्गी गउवों और उनके एक सफ़ेद रंग के दूध की मिसाल देकर समझाई है. ज्यादा हवाले देकर मैं ख़त को लम्बा नहीं करना चाहता. चूँकि मैं सब मजहबों की बुनियादी एकता का मानने वाला हूँ, इसीलिये मैं हिन्दू मुस्लिम या फ़िरक़े वराना इत्तहाद के लिये काम करना भी अपना ख़ास फ़र्ज़ और हक़ समझता हूँ. आपको या किसी भी दूसरे भाई को इसके ख़िलाफ़ राय रखने का हक़ है. मैंने सिर्फ़ एक ग़लत फ़हमी को दूर करना चाहा है.

यह भी क़तई ग़लत है कि मैंने अपनी तक़रीर में या कहीं पर जमीअतुल उलमा को फ़िरक़े वाराना सियासत मे हिस्सा लेने की सलाह दी. मैं हर क़िस्म का फ़िरक़े वराना सियासत को, चाहे वह मुसलमानों की हो, हिन्दुओं की हो, सिक्खों की हो, या किसी की भी, मुल्क के लिय जहर और मजहब के लिहाज से गुनाह समझता हूँ और यही चाहता और कहता हूँ कि इन सब मजहबों के मानने वाले हर क़िस्म की फ़िरक़े वराना सियासत से उसी तरह दूर रहें, जिस तरह किसी ख़तरनाक बीमारी से दूर रहा जाता है.

इस नोट में और भी ग़लत फ़हमियाँ हैं. पर मैं फ़िलहाल इन दो ग़लत फ़हमियों पर बस करता हूँ, मुझे इस चीज़ का थोड़ा सा रंज है कि इन मामलों में हिन्दू अखबार या मुस्लिम [illegible]

[سارے زمانے میں ایک ہی چراغ ہے اور اسی سے روشنی لے کر جہاں کہیں بھی میں دیکھتا ہوں، لوگ اپنی اپنی سبھائیں سجائے بیٹھے ہیں]

یہی بات اُپنیشدوں نے چراغ کی جگہ رنگ برنگی گوؤں اور ان کے ایک سفید رنگ کے دودھ کی مثال دے کر سمجھائی ہے. زیادہ حوالے دے کر میں خط کو لمبا نہیں کرنا چاہتا، چونکہ میں سب مذہبوں کی بنیادی ایکتا کا ماننے والا ہوں، اسی لئے میں ہندو مسلم یا فرقہ وارانہ اتحاد کے لئے کام کرنا بھی اپنا خاص فرض اور حق سمجھتا ہوں. آپ کو یا کسی بھی دوسرے بھائی کو اس کے خلاف رائے رکھنے کا حق ہے. میں نے صرف ایک غلط فہمی کو دور کرنا چاہا ہے.

یہ بھی قطعی غلط ہے کہ میں نے اپنی تقریر میں یا کہیں پر جمعیۃ العلماء کو فرقہ وارانہ سیاست میں حصہ لینے کی صلاح دی. میں ہر قسم کی فرقہ وارانہ سیاست کو، چاہے وہ مسلمانوں کی ہو، ہندوؤں کی ہو، سکھوں کی ہو، یا کسی کی بھی، ملک کے لئے زہر اور مذہب کے لحاظ سے گناہ سمجھتا ہوں اور یہی چاہتا اور کہتا ہوں کہ فرقہ وارانہ سیاست سے اسی طرح دور رہیں، جس طرح کسی خطرناک بیماری سے دور رہا جاتا ہے.

اس نوٹ میں اور بھی غلط فہمیاں ہیں. پر میں فی الحال ان دو غلط فہمیوں پر بس کرتا ہوں، مجھے اس چیز کا تھوڑا سا رنج ہے کہ ان معاملوں میں ہندو اخبار یا مسلم اخبار [illegible]

नया हिन्द हमारी राय जून सन्

कम ही इन्साफ़ करते हैं. मैं ज़्यादा न लिखूँगा. दिलों में वुसअत (उदारता) और मुहब्बत की और ज़्यादा ज़रूरत है. मेरा मज़हब अगर मैं एक फ़िक़रे में कह सकूँ तो गुरु नानक का मज़हब है और अपने ऊपर ज़ाहिर किये हुए ख़यालात को फैलाते हुए मैं यह कह सकता हूँ कि मैं चाहता हूँ कि गुरु नानक का असली मज़हब ही सारी दुनिया का मज़हब हो. मैं लिख चुका. यक़ीन कीजिये, इसके बाद मेरे दिल में आपकी तरफ़ से या 'रियासत' अख़बार की तरफ़ से ज़रा सा भी ग़ुस्सा या नाराज़गी नहीं. मेरी दरख़्वास्त है कि इस पूरे ख़त को आप रियासत में शाया करके मुझे शुक्रगुज़ार करें.

आपका भाई
सुन्दर लाल

नई दिल्ली
३१ मई ४९

کم ہی انصاف کرتے ہیں۔ میں زیادہ نہ لکھوں گا۔ دلوں میں وسعت (اُدارتا) اور محبت کی اور زیادہ ضرورت ہے۔ میرا مذہب اگر میں ایک فقرہ میں کہہ سکوں تو گرو نانک کا مذہب ہے اور اپنے اوپر ظاہر کئے ہوئے خیالات کو پھیلاتے ہوئے میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ میں چاہتا ہوں کہ گرو نانک کا اصلی مذہب ہی ساری دنیا کا مذہب ہو۔ میں لکھ چکا۔ یقین کیجئے، اس کے بعد میرے دل میں آپ کی طرف سے یا 'ریاست' اخبار کی طرف سے ذرا سا بھی غصہ یا ناراضگی نہیں۔ میری درخواست ہے کہ اس پورے خط کو آپ ریاست میں شائع کرکے مجھے شکرگزار کریں۔

آپ کا بھائی
سندر لال

نئی دلی
۳۱ مئی ۴۹

1646

भाई The Principal
Teachers Training Institute
Jamia Millia Islamia
Jamia Nagar, Delhi

"नया हिन्द" के प्रेमियों से

"नया हिन्द" जुलाई सन् '४६ से बराबर निकल रहा है. देश की सेवा करते उसे ढाई साल हो चुके. हमारे गाहकों में और उनसे बाहर ऐसे भाई बहनों की कमी नहीं है जो चाहते हैं कि "नया हिन्द" जारी रहे और उसे किसी तरह का धक्का न पहुंचे, ऐसे भाई बहनों से हमारी यह प्रार्थना है कि हमारा देश जिस नाजुक हालत से निकल रहा है उसमें इस नेक और कठिन कोशिश को जारी रखने में हमारी मदद दें. इस वक्त नया हिन्द घाटे पर चल रहा है. अगर हमारे प्रेमी, जिन्हें हम अपना कुटुम्बी मानते हैं, न सिर्फ अपना गाहक होना ही जारी रखें, बल्कि हर प्रेमी कम से कम तीन और गाहक साल भर के अन्दर, जल्दी जल्दी कोशिश करके बना दे तो 'नया हिन्द' एक साल के अन्दर अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है. बहुत से भाई बहन जरा सी कोशिश से इस से भी कहीं ज्यादा मदद कर सकते हैं. हमें भरोसा है आप हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे.

आपका सालाना चन्दा ता० [illegible] ...को खतम होता है. कृपा करके ता० [illegible] तक लिखिये कि आप मनीआर्डर से चन्दा भेजेंगे या आपके नाम वी० पी० भेजी जावे. कोई इत्तिला न मिलने पर ता० [illegible] के बाद आपकी सेवा में "नया हिन्द" का वी० पी० भेज दिया जावेगा. आशा है आप वी० पी० वक्त पर छुड़ा लेंगे.

सुन्दरलाल

एडीटर— 'नया हिन्द'

بھائی ....

....

....

"نیا ھند" کے پریمیوں سے

"نیا ھند" جولائی سنہ ۱۹۴۶ ع سے برابر نکل رہا ھے - دیش کی سیوا کرتے اُسے ڈھائی سال ھوچکے - ھمارے گاھکوں میں اور اُن سے باھر ایسے بھائی بہنوں کی کمی نہیں ھے جو چاھتے ھیں کہ "نیا ھند" جاری رھے اور اُسے کسی طرح کا دھکا نہ پہنچے - ایسے بھائی بہنوں سے ھماری یہہ پرارتھنا ھے کہ ھمارا دیش جس نازک حالت سے نکل رہا ھے اُس میں اس نیک اور کٹھن کوشش کو جاری رکھنے میں وہ ھمیں مدد دیں ' اس وقت نیا ھند گھاٹے پر چل رہا ھے - اگر ھمارے پریمی ' جنھیں ھم اپنا کٹمبی مانتے ھیں ' نہ صرف اپنا گاھک ھونا ھی جاری رکھیں ' بلکہ ھر پریمی کم سے کم تین اور گاھک سال بھر کے اندر جلدی جلدی کوشش کر کے بڑھادے تو ' نیا ھند ' ایک سال کے اندر اپنے پیروں پر کھڑا ھو سکتا ھے - بہت سے بھائی بہن ذرا سی کوشش سے اس سے بھی کہیں زیادہ مدد کر سکتے ھیں - ھمیں بھروسہ ھے آپ ھماری پرارتھنا پر دھیان دینگے -

آپ کا سالانہ چندہ تاریخ .... کو ختم ھوتا ھے - کرپا کر کے تاریخ .... تک لکھئے کہ آپ منی آرڈر سے چندہ بھیجینگے یا آپ کے نام وی پی بھیجی جاوے - کوئی اطلاع نہ ملنے پر تاریخ .... کو آپ کی سیوا میں "نیا ھند" کا وی پی بھیج دیا جاویگا - آشا ھے آپ وی پی وقت پر چھڑا لینگے -

سندر لال

ایڈیٹر — "نیا ھند"

मक़सद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब क़ौमों, जातों, बिरादरियों और फ़िक़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहांगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट, बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला ब्रेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे केलिए लिखिए.

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और ... किताबें वग़ैरह दो तिहाई दाम पर मिलती हैं.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب قوموں، ذاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:0:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری- پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:0:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے - فیضی، شری ایم - ایچ - پکواسا، شریمتی ھنسا مہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ھندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ھند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی ھیں۔

Registered No. A-210

"गीता और ".कुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू मे दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबो मे हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों का बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर मे .कुरान से पहले की अरब की हालत, .कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर .कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस मे .कुरान की पाच सौ से ऊपर आयतो का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि .कुरान मे जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनो की इन दो अमर पुस्तको की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान मे, नागरी और उर्दू दोनो लिखावटो मे अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب آسان ہندوستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ہند"

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द

نیا ہند



हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदास, मुज़फ्फर हसन, बिश्वम्भर नाथ, सुन्दर लाल

जुलाई १९४८

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद — 'नया हिंद'

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر

تارا چند، بھگوان داس، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

جولائی ۱۹۴۸

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچا دس آنے -

مینیجر

'نیا ہند' ...

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ५ जुलाई '४८ नम्बर १

جلد ٥ جولائی ۱۹۴۸ء نمبر ۱

जात आदमी, प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی.
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

मेरा घर

(भाई कंवल प्रसाद 'कँवल')

मेरे घर का हाल न पूछो,
जीना है जंजाल न पूछो.
घर वाले ही घर के दुश्मन,
दो अंगुल धरती के कारन. है भाई भाई में अन बन.
कैसा फैल रहा है घर मे मानवता का काल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

میرا گھر

(بھائی کنول پرشاد کنول)

میرے گھر کا حال نہ پوچھو.
جینا ہے جنجال نہ پوچھو.
گھر والے ہی گھر کے دشمن
دو انگل دھرتی کے کارن ہے بھائی بھائی میں ان بن.
کیسا پھیل رہا ہے گھر میں [illegible] کا کال نہ پوچھو.
میرے گھر کا حال نہ پوچھو.

डाकू अपना घर भरते हैं,
मस्ती देखो कगालो को, आपस में कट कट मरते है.
इस मस्ती की भेट चढ़ेगा घर का कितना माल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

राख हुए कितने अंगारे,
मेरे सोने से अंबर मे डूब गये कितने ही तारे,
दम तोड़ेंगे मेरे आँगन मे कितने बंगाल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

भूटे कंकर भूटे पत्थर,
मत पूछो कब तक पूजे जायेंगे मेरे घर के अन्दर,
कौड़ी कौड़ी मोल बिकेंगे, कब तक मेरे लाल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

लुटी लाज लोहू टपकाती,
घायल ममता अपने खूं से दसों दिशाओं को नहलाती,
पर इन निर्लज आँखों के डोरे कब होंगे लाल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

अब अर्जुन का तीर कहाँ है ?
झेले अस्सी घाव बदन पर वह साँगा रंधीर कहाँ है ?
कहाँ गया टीपू का भाला ? लक्ष्मी की करवाल न पूछो.
मेरे घर का हाल न पूछो.

ڈاکو اپنا گھر بھرتے ہیں،
مستی دیکھو کنگالوں کی، آپس میں کٹ کٹ مرتے ہیں۔
اس مستی کی بھینٹ چڑھے گا گھر کا کتنا مال نہ پوچھو۔
میرے گھر کا حال نہ پوچھو۔

راکھ ہوئے کتنے انگارے،
میرے سونے سے امبر میں ڈوب گئے کتنے ہی تارے۔
دم توڑیں گے میرے آنگن میں کتنے بنگال نہ پوچھو
میرے گھر کا حال نہ پوچھو۔

جھوٹے کنکر جھوٹے پتھر،
مت پوچھو کب تک پوجے جائیں گے میرے گھر کے اندر،
کوڑی کوڑی مول بکیں گے کب تک میرے لال نہ پوچھو۔
میرے گھر کا حال نہ پوچھو۔

لٹی لاج لوہو ٹپکاتی،
گھائل ممتا اپنے خوں سے دسوں دشاؤں کو نہلاتی،
پر ان نرلج آنکھوں کے ڈورے کب ہوں گے لال نہ پوچھو۔
میرے گھر کا حال نہ پوچھو۔

اب ارجن کا تیر کہاں ہے؟
جھیلے اسی گھاؤ بدن پر وہ سانگا رندھیر کہاں ہے؟
کہاں گیا ٹیپو کا بھالا؟ لکشمی کی کروال نہ پوچھو۔
میرے گھر کا حال نہ پوچھو۔

एक बच्चे का ख़त महात्मा गांधी के नाम

(भाई ख़्वाजा अहमद अब्बास)

ब मुक़ाम जन्नत या सवर्ग पहुंच कर अल्लाह मियाँ या भगवान की मारफ़त जनाब महात्मा गाँधी साहब को मिले.

बापू!

मेरी अम्माँ कहती हैं कि आप जन्नत को सिधारे हैं अल्लाह मियाँ के पास और गोपाल की माता जी कहती हैं कि आप स्वर्ग में भगवान को प्यारे हो गये हैं. न जाने किसका कहना सच है इसीलिये मैं इस पते पर आप को यह ख़त डाल रहा हूँ. और शायद स्वर्ग और जन्नत एक ही जगह का नाम हो जैसे बनारस को काशी भी कहते हैं और इलाहाबाद को प्रयाग. उम्मीद है आप जिस जगह भी होंगे यह ख़त आप को मिल जायगा.

यह ख़त असल में मैं ख़ुद नहीं लिख रहा हूं बल्कि मुझसे लिखवाया जा रहा है.

लिखवाने वाले यह हैं—मेरा छोटा भाई बुन्दू (जिसका असल नाम बन्दे अली है) और मुझसे बड़ी बहन ज़ैनब और छोटी सकीना. गोपाल, गोपाल की छोटी बहन सीता और हाँ, मोहन. उसको तो भूल ही गया था मैं. बात यह है कि वह चाहता तो है कि मैं आप को ख़त लिखूँ पर यह बात उसने मुँह से नहीं कही है आँखों से कही है. वह मुँह से कुछ नहीं कहता. जो कहना

ایک بچے کا خط مہاتما گاندھی کے نام

(بھائی خواجہ احمد عباس)

بمقام جنت یا سورگ پہنچ کر اللہ میاں یا بھگوان کی معرفت جناب مہاتما گاندھی صاحب کو ملے۔

باپو!

میری اماں کہتی ہیں کہ آپ جنّت کو سدھارے ہیں اللہ میاں کے پاس اور گوپال کی ماتا جی کہتی ہیں کہ آپ سورگ میں بھگوان کو پیارے ہوگئے ہیں۔ نہ جانے کس کا کہنا سچ ہے۔ اسلئے میں اس پتے پر آپ کو یہ خط ڈال رہا ہوں۔ اور شاید سورگ اور جنّت ایک ہی جگہ کا نام ہو جیسے بنارس کو کاشی بھی کہتے ہیں اور الہ آباد کو پریاگ۔ امید ہے آپ جس جگہ بھی ہونگے یہ خط آپ کو مل جائے گا

یہ خط اصل میں میں خود نہیں لکھ رہا ہوں بلکہ مجھ سے لکھوایا جا رہا ہے۔

لکھوانے والے یہ ہیں — میرا چھوٹا بھائی بندو (جسکا اصل نام بندے علی ہے) اور مجھ سے بڑی بہن زینب اور چھوٹی سکینہ، گوپال گوپال کی چھوٹی بہن سیتا اور ہاں، موہن اس کو تو بھول ہی گیا تھا میں۔ بات یہ ہے کہ وہ چاہتا تو ہے کہ میں آپ کو خط لکھوں پر یہ بات اس نے منہ سے نہیں کہی ہے آنکھوں سے کہی ہے۔ وہ منہ سے کچھ نہیں کہتا۔ جو کہنا

होता है आँखों से ही कहता है. उस की आँखें बहुत कुछ कहती हैं, पर उसका ज़िक्र मैं बाद में करूँगा. इस वक़्त तो यह कहना है कि मोहन की आँखें भी मुझसे कह रही हैं, बापू को ख़त लिखो. सो मैं लिख रहा हूँ. मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर देना. कर दोगे न बापू !

आप तो बड़े आदमी हैं. सोचते होंगे यह बच्चे मुझे क्यों ख़त लिखवा रहे हैं. पर हमने सुना है आप को बच्चे बहुत भाते थे. मैंने एक तसवीर में देखा है. आप छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठे खेल और हँस रहे हैं. गोपाल कहता है उसने एक दफ़ा आपको जोहू में समुन्दर के किनारे बच्चों के साथ खेलते देखा था. और मोहन जब आपकी तसवीर को देखता है तो उसकी आँखें, जो वैसे हमेशा दुख और डर से भरी रहती हैं, ख़ुशी से चमकने लगती हैं और कहती हैं यह सब बच्चों के बापू हैं, इनसे क्या डरना. और बुरा न मानें तो मैं कहूँ आप हँसती हुई तसवीर में बिलकुल बच्चे लगते हैं. इतने छोटे बच्चे जिसके अभी दाँत भी न निकले हों. जैसा गोपाल का सबसे छोटा भाई, जो साल भर का है और आपकी तरह बकरी का दूध ही पीता है. सो हमने सोचा आप को हम यह ख़त लिखें तो आप बुरा न मानेंगे. इस वास्ते यह ख़त लिख रहे हैं.

मेरा नाम अनवर है. सब मुझे अन्नू अन्नू कहते हैं. हमारा असली घर पानीपत ज़िला करनाल सूबा पंजाब में है. मेरे अब्बा, जिनका नाम अकबर अली है, दिल्ली में सरकारी दफ़्तर में नौकर थे. मेरी उमर साढ़े छै बरस की है. मेरी अम्माँ का नाम तो …

ہوتا ہے آنکھوں ہی سے کہتا ہے ۔ اسکی آنکھیں بہت کچھ کہتی ہیں، پر اس کا ذکر میں بعد میں کروں گا ۔ اس وقت تو یہ کہنا ہے کہ موہن کی آنکھیں بھی مجھ سے کہہ رہی ہیں، باپو کو خط لکھو ۔ سو میں لکھ رہا ہوں ۔ مہربانی کرکے مجھے معاف کردینا ۔ کردو گے نہ باپو!

آپ تو بڑے آدمی ہیں ۔ سوچتے ہوں گے یہ بچّے مجھے کیوں خط لکھوا رہے ہیں ۔ پر ہم نے سُنا ہے آپ کو بچّے بہت بھاتے تھے ۔ میں نے ایک تصویر میں دیکھا ہے ۔ آپ چھوٹے چھوٹے بچّوں کے ساتھ بیٹھے کھیل اور ہنس رہے ہیں ۔ گوپال کہتا ہے اس نے ایک دفعہ آپ کو جوہو میں سمندر کے کنارے بچّوں کے ساتھ کھیلتے دیکھا تھا ۔ اور موہن جب آپ کی تصویر کو دیکھتا ہے تو اس کی آنکھیں، جو ویسے ہمیشہ دُکھ اور ڈر سے بھری رہتی ہیں، خوشی سے چمکنے لگتی ہیں اور کہتی ہیں یہ سب بچّوں کے باپو ہیں، ان سے کیا ڈرنا ۔ اور بُرا نہ مانو تو میں کہوں آپ ہنستی ہوئی تصویر میں بالکل بچّے لگتے ہیں ۔ اتنے چھوٹے بچّے جس کے ابھی دانت بھی نہ نکلے ہوں ۔ جیسا گوپال کا سب سے چھوٹا بھائی، جو سال بھر کا ہے اور آپ کی طرح بکری کا دودھ ہی پیتا ہے ۔ سو ہم نے سوچا آپ کو ہم یہ خط لکھیں تو آپ بُرا نہ مانیں گے، اس واسطے یہ خط لکھ رہے ہیں ۔

میرا نام انور ہے ۔ سب مجھے انّو، انّو کہتے ہیں ۔ ہمارا اصلی گھر پانی پت ضلع کرنال صوبہ پنجاب میں ہے ۔ میرے ابّا، جن کا نام اکبر علی ہے، دلّی میں سرکاری دفتر میں نوکر تھے ۔

है पर सब उनको फत्तो फत्तो कहते हैं और एक हमारी नानी अम्माँ हैं, जो आपकी तरह बुड्ढी हैं और मुँह में दाँत भी नहीं हैं. सो पान को पनकुट्टी में कूट कर खाती हैं. यह सब हमारा खानदान पानीपत में रहता था, सिवाय अब्बा के जो नौकरी पर नई-दिल्ली में रहते थे, एक क्वार्टर में बाबर रोड के पास.

मेरे अब्बा आपको अच्छा न समझते थे. हमेशा कहते थे गांधी तो मुसलमानों का दुशमन है. अम्माँ भी यही कहती थीं. सो मैं भी आपको अच्छा न मानता था. पर नानी अम्माँ कहती थीं गांधी अल्लाह वाला आदमी है. वह सबको भाई-भाई समझता है. उन्होंने आपको बहुत दिन हुये देखा था जब आप पानीपत खिलाफ़त कमेटी के किसी काम से आये थे और औरतों के जलसे में भी तक़रीर की थी. जबसे वह खद्दर और गाढ़ा ही पहनती हैं और आपको अच्छा मानती हैं. पर अब्बा कहते थे वह तो बुड्ढी बेवक़ूफ़ हैं, बड़ी-बड़ी बातों को क्या जानें. अब्बा तो अलीगढ़ कालेज के पढ़े हुये हैं और अखबार रोज पढ़ते हैं. इस वास्ते हम उनकी बात ही मानते थे और जब आपका ज़िक्र आता था, आपको बुरा कहते थे. मज़ाक उड़ाते थे. क्योंकि आपकी लंगोटी और नंगा बदन देखकर हँसी आती थी.

फिर हमने सुना कि हिन्दुस्तान का बंटवारा होने वाला है. जैसे दादा अब्बा के मरने पर उनकी जायदाद का हुआ था, जिसमें आधी अब्बा को और आधी ताया अब्बा को मिली थी. हम गलियों में 'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद' के खूब नारे लगाते फिरते थे. मैंने एक दिन अब्बा से पूछा, पाकिस्तान क्या है ? उन्होंने

ہے پر سب انکو فتو فتو کہتے ہیں اور ایک ہماری نانی اماں ہیں، جو آپ کی طرح بڈھی ہیں اور منہ میں دانت بھی نہیں ہیں۔ سو پان کو پن کٹی میں کوٹ کر کھاتی ہیں۔ یہ سب ہمارا خاندان پانی پت میں رہتا تھا، سوائے ابا کے جو نوکری پر نئی دلی میں رہتے تھے، ایک کوارٹر میں بابر روڈ کے پاس۔

میرے ابا آپ کو اچھا نہ سمجھتے تھے۔ ہمیشہ کہتے تھے گاندھی تو مسلمانوں کا دشمن ہے۔ اماں بھی یہی کہتی تھیں۔ سو میں بھی آپ کو اچھا نہ مانتا تھا۔ پر نانی اماں کہتی تھیں گاندھی اللہ والا آدمی ہے۔ وہ سب کو بھائی بھائی سمجھتا ہے۔ انھوں نے آپ کو بہت دن ہوئے دیکھا تھا جب آپ پانی پت خلافت کمیٹی کے کسی کام سے آئے تھے اور عورتوں کے جلسے میں بھی تقریر کی تھی۔ جب سے وہ کھدر اور گاڑھا ہی پہنتی ہیں اور آپ کو اچھا مانتی ہیں۔ پر ابا کہتے تھے وہ تو بڈھی بیوقوف ہیں، بڑی بڑی باتوں کو کیا جانیں۔ ابا تو علی گڑھ کالج کے پڑھے ہوئے ہیں اور اخبار روز پڑھتے ہیں۔ اس واسطے ہم انکی بات ہی مانتے تھے اور جب آپ کا ذکر آتا تھا، آپ کو برا کہتے تھے۔ مذاق اڑاتے تھے۔ کیونکہ آپ کی لنگوٹی اور ننگا بدن دیکھ کر ہنسی آتی تھی۔

پھر ہم نے سنا ہندستان کا بٹوارہ ہونے والا ہے۔ جیسے دادا ابا کے مرنے پر ان کی جائداد کا ہوا تھا، جس میں آدھی ابا کو اور آدھی تایا ابا کو ملی تھی۔ ہم گلیوں میں 'پاکستان زندہ باد' کے خوب نعرے لگاتے پھرتے تھے۔ میں نے ایک دن ابا سے پوچھا، پاکستان کیا ہے؟ انھوں نے

कहा यह मुसलमानों का अपना अलग मुल्क होगा, जहाँ हम राज करेंगे. इससे हम बहुत खुश हुये क्योंकि मैंने अब्बा के एक रंगीन तसवीरों वाले अखबार में एक राजा की तसवीर देखी थी. वह सोने का ताज पहिने और गले में मोतियों का हार डाले था. सो मैंने सोचा हम सब मुसलमान अब राजा बन जायेंगे और हमारे सिरों पर सोने के ताज और गले में मोतियों के हार होंगे,

पानीपत में मुसलमान बहुत ज्यादा रहते हैं और हिन्दू थोड़े से हैं. सो हम हिन्दुओं के सामने अकड़ कर चलते थे और बनियों के लड़कों के सामने जोर जोर से 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते और अगर वह कांग्रेस या आप का यानी गांधी का नाम लेते तो उनको मारते भी थे. पर जब पाकिस्तान बन गया तो हमने सुना पानीपत पाकिस्तान मे नहीं आया, सो यहाँ मुसलमान राजा न बनेंगे. फिर सुना कि सारे मुल्क में मारा मारी होने लगी. अब्बा जब दिल्ली से पानीपत आते तो वह कहते, हिन्दू मुसलमानों को मार रहे हैं. सो मैं हिन्दुओं से और भी नफरत करने लगा. पर एक बात मेरी समझ में यह नही आई कि पाकिस्तान में और जहाँ भी मुसलमान बहुत ज्यादा थे और हिन्दू कम वहाँ मुसलमानों को हिन्दू कैसे मार सकते हैं. फिर हम मुसलमान तो बादशाहों की औलाद हैं और मारने धाड़ने में आगे आगे रहते हैं. पंजाब और सूबा सरहद में जहाँ मुसलमान ही मुसलमान रहते हैं, हम हिन्दुओं को खूब मार सकते थे और शायद मारा भी होगा. पर मैं बच्चा ठहरा. शायद मैंने समझने में गलती की हो और अब्बा पढ़े लिखे ठहरे इस वास्ते

کہا یہ مسلمانوں کا اپنا الگ ملک ہوگا، جہاں ہم راج کرینگے. اس سے ہم بہت خوش ہوئے کیونکہ میں نے ابا کے ایک رنگین تصویروں والے اخبار میں ایک راجا کی تصویر دیکھی تھی. وہ سونے کا تاج پہنے اور گلے میں موتیوں کا ہار ڈالے تھا. سو میں نے سوچا ہم سب مسلمان اب راجا بن جائیں گے اور ہمارے سروں پر سونے کے تاج اور گلے میں موتیوں کے ہار ہونگے.

پانی پت میں مسلمان بہت زیادہ رہتے ہیں اور ہندو تھوڑے سے ہیں. سو ہم ہندوؤں کے سامنے اکڑ کر چلتے تھے اور بنیوں کے لڑکوں کے سامنے زور زور سے 'پاکستان زندہ باد' کے نعرے لگاتے اور اگر وہ کانگریس یا آپ کا یعنی گاندھی کا نام لیتے تو انکو مارتے بھی تھے. پر جب پاکستان بن گیا تو ہم نے سنا پانی پت پاکستان میں نہیں آیا سو یہاں مسلمان راجا نہ بنیں گے. پھر سنا کہ سارے ملک میں مارا ماری ہونے لگی. ابا جب دلی سے پانی پت آتے تو وہ کہتے، ہندو مسلمانوں کو مار رہے ہیں. سو میں ہندوؤں سے اور بھی نفرت کرنے لگا. پر ایک بات میری سمجھ میں یہ نہیں آئی کہ پاکستان میں اور جہاں بھی مسلمان بہت زیادہ تھے اور ہندو کم وہاں مسلمانوں کو ہندو کیسے مار سکتے ہیں. پھر ہم مسلمان تو بادشاہوں کی اولاد ہیں اور مارنے دھاڑنے میں آگے آگے رہتے ہیں. پنجاب اور صوبہ سرحد میں جہاں مسلمان ہی مسلمان رہتے ہیں، ہم ہندوؤں کو خوب مار سکتے تھے اور شاید مارا بھی ہوگا. پر میں بچہ ٹھہرا. شاید میں غلطی کی ہو اور ابا پڑھے لکھے ٹھہرے اس واسطے

मैं चुप ही रहा. पर यह बात दिल में खटकती रही.

फिर दिल्ली में मारा मारी शुरू हो गई और पानीपत के मुसलमान पाकिस्तान भागने की तैयारी करने लगे. पर मेरे अब्बा जाने को तैयार नहीं थे. बात यह है कि मेरे अब्बा जरा कन्जूस हैं और अपनी जायदाद, घर बार और खेतो को छोड़ कर न जाना चाहते थे. उन्हों ने कहा आहिस्ता आहिस्ता सब चीजों को अच्छे दामों बेच कर जायेंगे. पर इतने मे पानीपत मे पंजाब के भागे हुए बहुत से हिन्दू और सिक्ख आ गये. हजारों, लाखों. जिन सब को रहने के लिये मकान चाहिये था. इन सब के घर पच्छिमी पंजाब के मुसलमानों ने लूट लिये थे और इनके बाल बच्चों को मारा भी था, और अब यह सब मुसलमानो से नफ़रत करते थे. सो पानीपत में मुसलमानों का रहना मुश्किल हो गया. कुछ पुलिस के हाथ मारे भी गये. रोज इन्तजार करते कि पाकिस्तान से मोटरें लारियाँ अयेंगी पर वह न आईं. फिर जब खतरा बढ़ गया तो अम्माँ ने अब्बा को दिल्ली में लिखा और वह वहाँ से फौजी लारी लेकर आये और हम थोड़ा थोड़ा सामान साथ लेकर उस लारी में दिल्ली आ गये.

अब मैं आप को अपनी बन्दूक के बारे मे बताना चाहता हूँ. यह बन्दूक बड़ी खूबसूरत है. चमकती हुई नाली, लकड़ी का कुन्दा और चलाओ तो खटाक् से आवाज आवाज आती है. यह मेरी पाँचवीं साल गिरह पर अब्बाने लाकर दी थी और कहा था— अभी से बन्दूक का शौक़ करो तो बड़े होकर सूरमा सिपाही बनोगे ओर काफ़िरों के खिलाफ़ जिहाद करोगे. असल में तो यह

میں چپ ہی رہا۔ پر یہ بات دل میں کھٹکتی رہی۔

پھر دلی میں مارا ماری شروع ہو گئی اور پانی پت کے مسلمان پاکستان بھاگنے کی تیاری کرنے لگے۔ پر میرے ابا جانے کو تیار نہیں تھے۔ بات یہ ہے کہ میرے ابا ذرا کنجوس ہیں اور اپنی جائداد گھربار اور کھیتوں کو چھوڑ کر نہ جانا چاہتے تھے۔ انھوں نے کہا آہستہ آہستہ سب چیزوں کو اچھے داموں بیچ کر جائیں گے۔ پر اتنے میں پانی پت میں پنجاب کے بھاگے ہوئے بہت سے ہندو اور سکھ آگئے۔ ہزاروں لاکھوں۔ جن سب کے رہنے کے لئے مکان چاہئے تھا۔ ان سب کے گھر پچھمی پنجاب کے مسلمانوں نے لوٹ لئے تھے اور انکے بال بچوں کو مارا بھی تھا، اور اب یہ سب مسلمانوں سے نفرت کرتے تھے۔ سو پانی پت میں مسلمانوں کا رہنا مشکل ہوگیا۔ کچھ پلس کے ہاتھ مارے بھی گئے۔ روز انتظار کرتے کہ پاکستان سے موٹریں لاریاں آئیں گی پر وہ نہ آئیں۔ پھر جب خطرہ بڑھ گیا تو اماں نے ابا کو دلی میں لکھا اور وہ وہاں سے فوجی لاری لے کر آئے اور ہم تھوڑا تھوڑا سامان ساتھ لیکر اس لاری میں دلی آگئے۔

اب میں آپ کو اپنی بندوق کے بارے میں بتانا چاہتا ہوں۔ یہ بندوق بڑی خوبصورت ہے۔ چمکتی ہوئی نالی، لکڑی کا کندا اور چلاؤ تو کھٹاک سے آواز آتی ہے۔ یہ میری پانچویں سال گرہ پر ابا نے لا کر دی تھی اور کہا تھا— ابھی سے بندوق کا شوق کرو تو بڑے ہو کر سورما سپاہی بنوگے اور کافروں کے خلاف جہاد کروگے۔ اصل میں تو یہ

खेलने ही की बन्दूक़ है मगर इसे कंधे पर रख कर मैं सारी गली के लड़कों को परेड करवाता था. यह हमारी पाकिस्तानी फ़ौज थी.

हाँ, तो जब हम पानीपत से चले तो घर का सारा सामान छोड़ना पड़ा. अब्बा की किताबें, अम्माँ के बरतन, कपड़े, सन्दूक़, लिहाफ़, रज़ाइयाँ, सब रह गया. बस दो चार पहिनने के कपड़े साथ ले सके. पर मैंने यह बन्दूक़ चुपके से साथ ले ली. क्योंकि इसी से तो मैं काफ़िरों से बदला लेने वाला था जिन्हों ने हमे पानीपत से निकाला था.

दिल्ली में हम दस बारह दिन एक कमरे मे बन्द रहे क्योंकि वहाँ मुसलमानों को मारा जा रहा था और हमारे सब के मुंह पीले पड़ गये. फिर हमने सुना कि आप कलकत्ते से आये हैं और मुसलमानों को बचाने की कोशिश कर रहे है. पहले तो अब्बा कहते रहे कि यह भी गांधी की कोई चाल होगी मगर बाद मे मान गये कि आप सचमुच मुसलमानो की जान बचा रहे हैं. दिल्ली में थोड़ा अमन हो गया पर रास्ते मे भरतपुर की रियासत मे सुना रेल में मुसलमानो को मार रहे थे इस वास्ते जब अब्बा की बदली बम्बई की हो गई तो हम हवाई जहाज़ से यहाँ आ गये.

मैंने सुना है आप हवाई जहाज़ मे कभी नही बैठे. वाह बापू! मालूम होता है आप डरते हैं. मैं तो बिलकुल ही नहीं डरा. सारे रास्ते खिड़की के पास बैठा रहा यहाँ तक कि नानी अम्माँ भी नहीं डरीं और चलते हवाई जहाज़ में बैठी पनकुट्टा मे पान कूटती रहीं. वह भी आप की तरह बिलकुल पोपली हैं न. पर यह तो पहले ही

کھیلنے ہی کی بندوق ہے مگر اسے کندھے پر رکھ کر میں ساری گلی کے لڑکوں کو پریڈ کرواتا تھا۔ یہ ہماری پاکستانی فوج تھی۔

ہاں۔ تو جب ہم پانی پت سے چلے تو گھر کا سارا سامان چھوڑنا پڑا۔ ابا کی کتابیں، اماں کے برتن، کپڑے، صندوق، لحاف، رضائیاں سب رہ گیا۔ بس دو چار پہننے کے کپڑے ساتھ لے سکے۔ پر میں نے یہ بندوق چپکے سے ساتھ لے لی۔ کیونکہ اسی سے تو میں کافروں سے بدلا لینے والا تھا جنھوں نے ہمیں پانی پت سے نکالا تھا۔

دلی میں ہم دس بارہ دن ایک کمرے میں بند رہے کیونکہ وہاں مسلمانوں کو مارا جا رہا تھا اور ہمارے سب کے منہ پیلے پڑ گئے۔ پھر ہم نے سنا کہ آپ کلکتے سے آئے ہیں اور مسلمانوں کو بچانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ پہلے تو ابا کہتے رہے کہ یہ بھی گاندھی کی کوئی چال ہوگی مگر بعد میں مان گئے کہ آپ سچ مچ مسلمانوں کی جان بچا رہے ہیں۔ دلی میں تھوڑا امن ہوگیا پر راستے میں بھرت پور کی ریاست میں سنا ریل میں مسلمانوں کو مار رہے تھے اس واسطے جب ابا کی بدلی بمبئی کی ہوگئی تو ہم ہوائی جہاز سے یہاں آگئے۔

میں نے سنا ہے آپ ہوائی جہاز میں کبھی نہیں بیٹھے۔ واہ باپو! معلوم ہوتا ہے آپ ڈرتے ہیں، میں تو بالکل ہی نہیں ڈرا۔ سارے راستے کھڑکی کے پاس بیٹھا رہا یہاں تک کہ نانی اماں بھی نہیں ڈریں اور چلتے ہوائی جہاز میں بیٹھی پن کٹی میں پان کوٹتی رہیں ... بھی آپ کی طرح بالکل پوپلی ہیں نہ۔ پر یہ تو پہلے ہی

लिख चुका हूँ.

बम्बई में हमें रहने को दो कमरे मिल गये. शिवा जी पार्क के इलाक़े में, जहाँ चारों तरफ़ हिन्दू ही हिन्दू रहते हैं. हम सब पहले तो बहुत डरे कि कोई मार न दे. पर नानी जान जरा भी नहीं डरीं. वह तो बुरक़ा ओढ़े समुन्दर के किनारे-किनारे दूर तक हो आतीं थीं और कहतीं हिन्दू सिक्ख भी तो अल्लाह के बन्दे हैं, मुझ बुड्ढी को कौन मारने लगा. समुन्दर हमारे घर के पास ही है. मैंने समुन्दर का ज़िक्र स्कूल मे पढ़ा था मगर देखा नहीं था. यह तो बहुत बड़ा निकला. पानीपत की नहर और दिल्ली मे दरिया जमुना और दस जूहड़ों और दस तालाबों को मिला कर इनसे भी बड़ा. बस पानी ही पानी है. नानी अम्माँ कहने लगीं पानीपत तो यों ही कहलाता है असल पानीपत तो यह है.

हमारे बराबर के घर मे हिन्दू रहते थे. गोपाल के माँ बाप. गोपाल के चाचा बहुत कट्टर हिन्दू हैं और संघ वालों के साथ परेड भी करते थे. उन्होंने अपने घर के बच्चों को पढ़ा रक्खा था कि मुसलमान बहुत बुरे होते हैं. इनको मारना चाहिये. सो गोपाल ने अपने घर में एक हिन्दू सेना बना रक्खी थी और लकड़ी की तलवारें, एक टीन का पिस्तौल और बाँस के तीर कमान लेकर रोज़ परेड करते थे. और नारे लगाते—हिन्दू राज बनावेंगे. मुसलमान को मार भगावेंगे. और—हर हर महादेव. और दूसरे नारे जो शायद मराठी जबान मे थे. उनके मुक़ाबले में मैंने अपनी पाकिस्तानी फौज बना ली. गोपाल की फ़ौज में दस बारह बच्चे थे और हम चार ही थे. पर हम डरते नहीं थे एक तो जैसे अम्मा

لکھ چکا ہوں۔

بمبئی میں ہمیں رہنے کو دو کمرے مل گئے۔ شیوا جی پارک کے علاقے میں، جہاں چاروں طرف ہندو ہی ہندو رہتے ہیں۔ ہم سب پہلے تو بہت ڈرے کہ کوئی مار نہ دے۔ پر نانی جان ذرا بھی نہیں ڈریں وہ تو برقعہ اوڑھے سمندر کے کنارے کنارے دور تک ہو آتی تھیں اور کہتیں ہندو سکھ بھی تو اللہ کے بندے ہیں، مجھ بڈھی کو کون مارنے لگا۔ سمندر ہمارے گھر کے پاس ہی ہے۔ میں نے سمندر کا ذکر اسکول میں پڑھا تھا مگر دیکھا نہیں تھا۔ یہ تو بہت بڑا نکلا۔ پانی پت کی نہر اور دلی میں دریا جمنا اور دس جوہڑوں اور دس تالابوں کو ملا کر ان سے بھی بڑا۔ بس پانی ہی پانی ہے۔ نانی اماں کہنے لگیں پانی پت تو یوں ہی کہلاتا ہے اصل پانی پت تو یہ ہے۔

ہمارے برابر کے گھر میں ہندو رہتے تھے۔ گوپال کے ماں باپ۔ گوپال کے چاچا بہت کٹر ہندو ہیں اور سنگھ والوں کے ساتھ پریڈ بھی کرتے تھے۔ انھوں نے اپنے گھر کے بچوں کو پڑھا رکھا تھا کہ مسلمان بہت برے ہوتے ہیں۔ انکو مارنا چاہیے۔ سو گوپال نے اپنے گھر میں ایک ہندو سینا بنا رکھی تھی اور لکڑی کی تلواریں، ایک ٹین کا پستول اور بانس کے تیر کمان لے کر روز پریڈ کرتے تھے۔ اور نعرے لگاتے۔ ہندو راج بناویں گے۔ مسلمان کو مار بھگاویں گے۔ اور ہر ہر مہادیو۔ اور دوسرے نعرے جو شاید مراٹھی زبان میں تھے۔ انکے مقابلے میں میں نے اپنی پاکستانی فوج بنائی۔ گوپال کی فوج میں دس بارہ بچے تھے اور ہم چار ہی تھے۔ پر ہم ڈرتے نہیں تھے۔ ایک تو جیسے اماں

कहते थे कि एक मुसलमान चार पाँच हिन्दुओं के बराबर होता है और दूसरे मेरे पास बन्दूक़ थी और उनके पास बस लकड़ी की तलवारें और तीर कमान. सो हम ख़ूब मुक़ाबला करते. जब वह नारा लगाते—हर हर महादेव. तो हम चिल्लाते—अल्ला हो अकबर. जब वह कहते—हिन्दू राज बनावेंगे. तो हम कहते—हँस के लिया था पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान. अब्बा मना भी करते कि चारों तरफ़ हिन्दू रहते हैं ऐसी बातें न करो और नानी अम्माँ ने भी डाँटा पर हम मानने वाले थोड़े ही थे. एक दिन नारे लगाते-लगाते गोपाल और उसकी फ़ौज ने हमारे घर पर हमला कर दिया. बुन्दू को चोट भी लगी. पर मैंने अपनी बन्दूक़ से डरा कर मार भगाया.

जब हिन्दू सेना और पाकिस्तानी फ़ौज में घमसान की लड़ाई हो रही थी, मैंने मोहन को पहली दफ़ा देखा. वह हमारी लड़ाई को ऐसी फटी-फटी आँखों से देख रहा था जैसे उसने ऐसी लड़ाई पहले भी कहीं देखी हो. वह चिल्लाया नहीं. मगर उसकी आँखों से आँसू टप-टप गिर रहे थे. गोपाल को फ़ौज को भगाकर मैंने मोहन से पूछा, जो एक क़मीज़ शलवार पहने घरों के बीच की दीवार पर बैठा चुपके-चुपके रो रहा था—क्यों भाई तू कौन है, हिन्दू या मुसलमान ? क्योंकि शलवार से मैं समझा था शायद मुसलमान होगा. पर उसने कोई जवाब नहीं दिया. बस फटी-फटी आँखों से देखता रहा. उसकी आँखों को देखने से डर सा लगता था. जैसे क़लन्दर साहब की दरगाह में बावले फ़क़ीर बैठे रहते हैं. मैंने सोचा यह भी बावला बच्चा होगा या शायद गूँगा हो. पर इसने

کہتے تھے کہ ایک مسلمان چار پانچ ہندوؤں کے برابر ہوتا ہے اور دوسرے میرے پاس بندوق تھی اور انکے پاس بس لکڑی کی تلواریں اور تیر کمان ۔ سو ہم خوب مقابلہ کرتے ۔ جب وہ نعرہ لگاتے ۔ ہر ہر مہادیو ۔ تو ہم چلاتے ۔ اللہ اکبر ۔ جب وہ کہتے ۔ ہندو راج بناویں گے ۔ تو ہم کہتے ۔ ہنس کے لیا تھا پاکستان ، لڑکے لیں گے ہندستان ۔ ابا منع بھی کرتے کہ چاروں طرف ہندو رہتے ہیں ایسی باتیں نہ کرو اور نانی اماں نے بھی ڈانٹا پر ہم ماننے والے تھوڑے ہی تھے ۔ ایک دن نعرے لگاتے لگاتے گوپال اور اسکی فوج نے ہمارے گھر پر حملہ کردیا ۔ بندو کو چوٹ بھی لگی ۔ پر میں نے اپنی بندوق سے ڈرا کر مار بھگایا ۔

جب ہندو سینا اور پاکستانی فوج میں گھمسان کی لڑائی ہو رہی تھی ، میں نے موہن کو پہلی دفعہ دیکھا ۔ وہ ہماری لڑائی کو ایسی پھٹی پھٹی آنکھوں سے دیکھ رہا تھا جیسے اُس نے ایسی لڑائی پہلے بھی کہیں دیکھی ہو ۔ وہ چلایا نہیں ۔ مگر اُسکی آنکھوں سے آنسو ٹپ ٹپ گر رہے تھے ۔ گوپال کی فوج کو بھگا کر میں نے موہن سے پوچھا ، جو ایک قمیص ، شلوار پہنے گھروں کے بیچ کی دیوار پر بیٹھا چپکے چپکے رو رہا تھا ۔ کیوں بھئی تو کون ہے ، ہندو یا مسلمان ؟ کیونکہ شلوار سے میں سمجھا تھا شاید مسلمان ہوگا ۔ پر اُس نے کوئی جواب نہیں دیا ۔ بس پھٹی پھٹی آنکھوں سے دیکھتا رہا ۔ اس کی آنکھوں کے دیکھنے سے ڈر سا لگتا تھا ۔ جیسے قلندر صاحب کی درگاہ میں باؤلے فقیر بیٹھے رہتے ہیں ۔ میں نے سوچا یہ بھی باؤلا بچہ ہوگا یا شاید گونگا ہو ۔ پر اس نے

में गोपाल आ गया और कहने लगा—इस बेचारे को क्यों मारते हो. यह तो पंजाब से आया है.इसके माँ बाप वहाँ मारे गये हैं और यह यहाँ अपने रिश्तेदारों के यहाँ रहता है. यह सुन कर मुझे बड़ा तरस आया और बन्दूक़ के खेल में जी न लगा और रात को ख़्वाब में मोहन की डरावनी फटी-फटी आँखें नज़र आती रहीं और मैं डर के मारे नींद में रोने लगा.

उस दिन से मोहन अक्सर दीवार पर बैठ जाता और हमारा खेल फटी-फटी आँखों से देखता रहता. वह ख़ुद न हमारे साथ खेलता न गोपाल के साथ बस अलग चुपचाप बैठा रहता और न जाने क्या सोचता और न जाने उसकी आँखें क्या कहतीं, न जाने उन आँखों ने क्या देखा था जिससे उसको चुप लग गई थी.

और फिर हमने रेडियो पर सुना कि आपने भूख हड़ताल कर रक्खी है और जब तक दिल्ली के हिन्दू मुसलमानों को मारना बन्द न करेंगे आप खाना न खयेंगे. यह सुन कर नानी अम्माँ की आँखों में आँसू आ गये और उन्होंने दो वक़्त का खाना न खाया. और अब्बा भी कहने लगे कि हिन्दुओं में अच्छा आदमी है तो गांधी ही है. मैंने नानी अम्माँ की रेस में एक दिन दूध न पिया और न दोपहर का खाना खाया. पर शाम होते होते बुरा हाल हो गया. न खेल में जी लगा न पढ़ाई में. बस आँखों के सामने शामी कबाब, पुलाव और शीरिनी की रकाबियाँ नज़र आती रहीं और मैं सोचता रहा कि आप कैसे बिना खाये पिये रहते हैं.

जब आपके फ़ाक़े को कई दिन होगये और हमने सुना कि सारे मुल्क मे सब हिन्दू मुसलमान कान पकड़ रहे हैं कि हम अब न

میں گوپال آگیا اور کہنے لگا — اس بیچارے کو کیوں مارتے ہو۔ یہہ تو پنجاب سے آیا ہے۔ اسکے ماں باپ وہاں مارے گئے ہیں۔ اور یہہ یہاں اپنے رشتہ داروں کے یہاں رہتا ہے۔ یہ سُنکر مجھے بڑا ترس آیا اور بندوق کے کھیل میں جی نہ لگا اور رات کو خواب میں موہن کی ڈراؤنی پھٹی پھٹی آنکھیں نظر آتی رہیں اور میں ڈر کے مارے نیند میں رونے لگا۔

اُس دن سے موہن اکثر دیوار پر بیٹھ جاتا اور ہمارا کھیل پھٹی پھٹی آنکھوں سے دیکھتا رہتا۔ وہ خود نہ ہمارے ساتھ کھیلتا نہ گوپال کے ساتھ بس الگ چپ چاپ بیٹھا رہتا اور نہ جانے کیا سوچتا اور نہ جانے اسکی آنکھیں کیا کہتیں، نہ جانے اُن آنکھوں نے کیا دیکھا تھا جس سے اسکو چپ لگ گئی تھی۔

اور پھر ہم نے ریڈیو پر سنا کہ آپ نے بھوک ہڑتال کر رکھی ہے اور جب تک دلی کے ہندو مسلمانوں کو مارنا بند نہ کریں گے آپ کھانا نہ کھائینگے۔ یہ سُن کر نانی اماں کی آنکھوں میں آنسو آگئے اور انھوں نے دو وقت کا کھانا نہ کھایا۔ اور ابّا بھی کہنے لگے کہ ہندوؤں میں اچھا آدمی ہے تو گاندھی ہی ہے۔ میں نے نانی اماں کی ریس میں ایک دن دودھ نہ پیا اور نہ دوپہر کا کھانا کھایا۔ پر شام ہوتے ہوتے بُرا حال ہوگیا کھیل میں جی لگا نہ پڑھائی میں۔ بس آنکھوں کے سامنے شامی کباب، پلاؤ اور شیرینی کی رکابیاں نظر آتی رہیں اور میں سوچتا رہا کہ آپ کیسے بنا کھائے پیے رہتے ہیں۔

جب آپ کے فاقے کو کئی دن ہوگئے اور ہم نے سُنا کہ سارے ملک میں سب ہندو مسلمان کان پکڑ رہے ہیں کہ ہم اب نہ

लड़ेंगे. तो हमने भी हिन्दू सेना और पाकिस्तानी फौज का खेल बन्द कर दिया और एक दिन सवेरे जब मैंने मोहन को दीवार पर चुपचाप बैठे देखा और उसके पास गया तो दूसरी तरफ से गोपाल भी आगया।

गोपाल कहने लगा—अन्नू !

मैंने कहा—हाँ गोपाल, क्या बात है !

वह बोला—बापू जी.

और बस इतना कह कर रोने लगा.

उस दिन अख़बार में छपा था कि आपकी तबियत बड़ी कमज़ोर होगई है और बोलना भी मुश्किल होगया है. यह सोचकर मैं भी रोपड़ा.

गोपाल ने मेरी तरफ ताज्जुब से देखा और बोला—तुम भी रो रहे हो ?

मैंने कहा—हाँ, वह मुसलमानों के लिये ही तो यह सब कर रहे हैं.

गोपाल ने कहा—आज से हिन्दू मुसलमान की लड़ाई का खेल बन्द........

मैंने कहा—हाँ, बिलकुल बन्द कर देंगे. जब सब कान पकड़ रहे हैं तो हम भी कान पकड़ते हैं.

फिर हम दोनों ने फ़ैसला किया कि बन्दूक़ पिस्तौल तलवारें सब तोड़कर समुन्दर में फेंक देंगे.

न जाने क्यों मेरी नज़र मोहन की तरफ़ गई और इतने दिनों में पहली दफ़ा मैंने उसकी आँखों में थोड़ी सी ख़ुशी देखी और मुझे

رہیں گے. تو ہم نے بھی ہندو سینا اور پاکستانی فوج کا کھیل بند کر دیا اور ایک دن سویرے جب میں نے موہن کو دیوار پر چپ چاپ بیٹھے دیکھا اور اسکے پاس گیا تو دوسری طرف سے گوپال بھی آگیا.

گوپال کہنے لگا — انو!

میں نے کہا — ہاں گوپال، کیا بات ہے!

وہ بولا — باپو جی.

اور بس اتنا کہہ کر رونے لگا.

اس دن اخبار میں چھپا تھا کہ آپ کی طبیعت بڑی کمزور ہوگئی ہے اور بولنا بھی مشکل ہوگیا ہے. یہ سوچ کر میں بھی رو پڑا.

گوپال نے میری طرف تعجب سے دیکھا اور بولا — تم بھی رو رہے ہو؟

میں نے کہا — ہاں، وہ مسلمانوں کے لئے ہی تو یہ سب کر رہے ہیں.

گوپال نے کہا — آج سے ہندو مسلمان کی لڑائی کا کھیل بند....

میں نے کہا — ہاں بالکل بند کر دیں گے. جب سب کان پکڑ رہے ہیں تو ہم بھی کان پکڑتے ہیں.

پھر ہم دونوں نے فیصلہ کیا کہ، بندوق، پستول اور تلواریں سب توڑ کر سمندر میں پھینک دیں گے.

نہ جانے کیوں میری نظر موہن کی طرف گئی اور اتنے دنوں میں پہلی دفعہ میں نے اسکی آنکھوں میں تھوڑی سی خوشی دیکھی اور مجھے

ऐसा लगा जैसे किसी ने जादू कर दिया हो.

अब्बा भी अगले दिन कहने लगे—दिल्ली में जादू हो गया. हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान लीडरों ने गांधी जी के सामने कान पकड़ लिये कि अब कभी न लड़ेंगे. मुसलमानों की मसजिदें उन्हें वापस मिल गईं और दिल्ली के बाज़ारों में मुसलमान फिर मज़े से चलने फिरने लगे, और आप ने फ़ाक़ा तोड़ दिया और ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन के मज़ार पर भी उर्स में गये.

हाँ, तो एक दिन पहले तो हमारा इरादा था कि मैं अपनी बन्दूक़ और गोपाल अपने तीर कमान तोड़ डालेंगे, पर जब मैंने चमकती हुई बन्दूक़ को देखा तो मेरा जी न चाहा उसे तोड़ने को. मैंने सोचा क्या मालूम गोपाल ने अपना पिस्तौल और तीर कमान न तोड़े हों. मैं भी बन्दूक़ क्यों न रख लूँ. फिर मैं कोई चला थोड़े ही रहा था. बस रक्खी हुई थी ज़रूरत के वास्ते.

उधर गोपाल ने भी यही सोचा कि अन्नू शायद अपनी बन्दूक़ न तोड़े. मैं अपना पिस्तौल और तीर कमान क्यों खो दूँ.

आपका फ़ाक़ा ख़तम होगया और हमने इतमीनान का साँस लिया. न जाने क्यों, मगर आपकी बीमारी और कमज़ोरी की ख़बर से दिल घबराता था. जैसे अब्बा या अम्माँ की तबियत ख़राब हो. मेरा और गोपाल का ही नहीं सारे मुहल्ले वालों का. जब ही तो सब आपको बापू बापू कहते हैं.

फिर हम यह सुनकर धक से रह गये कि आप पर बम फेंका गया. ख़ुदा का शुक्र है कि आप बाल बाल बच गये और बम फेंकने वाला पकड़ा गया.

ایسا لگا جیسے کسی نے جادو کر دیا ہو۔

ابّا بھی اگلے دن کہنے لگے — دلّی میں جادو ہوگیا۔ ہندو، سکھ، مسلمان لیڈروں نے گاندھی جی کے سامنے کان پکڑ لئے کہ اب کبھی نہ لڑیں گے۔ مسلمانوں کی مسجدیں انھیں واپس مل گئیں اور دلّی کے بازاروں میں مسلمان پھر مزے سے چلنے پھرنے لگے، اور آپ نے فاقہ توڑ دیا اور خواجہ قطب الدین کے مزار پر بھی عرس میں گئے۔

ہاں، تو ایک دن پہلے تو ہمارا ارادہ تھا کہ میں اپنی بندوق اور گوپال اپنے تیر کمان توڑ ڈالیں گے، پر جب میں نے چمکتی ہوئی بندوق کو دیکھا تو میرا جی نہ چاہا اسے توڑنے کو۔ میں نے سوچا کیا معلوم گوپال نے اپنا پستول اور تیر کمان نہ توڑے ہوں۔ میں بھی بندوق کیوں نہ رکھ لوں۔ پھر میں کوئی چلا تھوڑے ہی رہا تھا بس رکھی ہوئی تھی ضرورت کے واسطے۔

اُدھر گوپال نے بھی یہی سوچا کہ انّو شاید اپنی بندوق نہ توڑے۔ میں اپنا پستول اور تیر کمان کیوں کھودوں۔

آپکا فاقہ ختم ہوگیا اور ہم نے اطمینان کا سانس لیا۔ نہ جانے کیوں، مگر آپ کی بیماری اور کمزوری کی خبر سے دل گھبراتا تھا۔ جیسے ابّا یا اماں کی طبیعت خراب ہو۔ میرا اور گوپال کا ہی نہیں سارے محلّے والوں کا۔ جب ہی تو سب آپ کو باپو باپو کہتے ہیں۔

پھر ہم یہ سنکر دھک سے رہ گئے کہ آپ پر بم پھینکا گیا۔ خدا کا شکر ہے کہ آپ بال بال بچ گئے اور بم پھینکنے والا پکڑا گیا۔

मैंने गोपाल से कहा—गोपाल, यह तो बहुत बुरा है. बुरे लोग गांधी जी को मारना चाहते हैं.

गोपाल बोला—हमें गांधी जी की हिफ़ाज़त करनी चाहिये.

मैंने कहा—कैसे ?

वह बोला—हम दिल्ली जाकर गांधी जी के घर पर पहरा देंगे.

मैंने कहा—तुम कैसे पहरा दोगे. न बन्दूक़ न तलवार.........

वह जल्दी से बोला—पिस्तौल और तीर कमान जो हैं.

फिर वह चुप होगया. जैसे भूल से कह गया हो. मैं भी बे सोचे बोल पड़ा—पिस्तौल की मार तो दो चार गज़ ही होती है. मैं बन्दूक़ ले के पहरा दूंगा.

वह मुझे घूर के देखकर कहने लगा—तुम्हारे पास बन्दूक़ कहाँ से आई ?

मैंने भी वैसे ही जवाब दिया—जहाँ से तुम्हारे पास पिस्तौल और तीर कमान आये.

वह बिगड़ गया. कहने लगा—तुम मुसलमानों का कोई एतबार नहीं. वादा किया था, बन्दूक़ तोड़ दूँगा.

मैं भी चुप बैठने वाला नहीं था, बिगड़ कर बोला—और तुम हिन्दू काफ़िरों का क्या एतबार, तुमने नहीं कहा था पिस्तौल और तीर कमान तोड़ दूंगा,

वह बोला-जाओ हम नहीं खेलते तुम्हारे साथ.

मैंने कहा—हम कौन से मरे जा रहे हैं. और यह कहकर मैं चला आया और घर आ के अपनी बन्दूक़ को साफ़ किया, उसके कल

میں نے گوپال سے کہا — گوپال یہ تو بہت بُرا ہے۔ بُرے لوگ گاندھی جی کو مارنا چاہتے ہیں۔

گوپال بولا — ہمیں گاندھی جی کی حفاظت کرنی چاہیے۔

میں نے کہا — کیسے؟

وہ بولا ہم دلّی جاکر گاندھی جی کے گھر پر پہرہ دینگے۔

میں نے کہا — تم کیسے پہرہ دوگے۔ نہ بندوق نہ تلوار....

وہ جلدی سے بولا — پستول اور تیر کمان جو ہیں۔

پھر وہ چپ ہوگیا۔ جیسے بھول سے کہہ گیا ہو۔ میں بھی بے سوچے بول پڑا — پستول کی مار تو دو چار گز ہی ہوتی ہے۔ میں بندوق لیکے پہرہ دوں گا۔

وہ مجھے گھور کے دیکھ کر کہنے لگا۔ تمھارے پاس بندوق کہاں سے آئی؟

میں نے بھی ویسے ہی جواب دیا — جہاں سے تمھارے پاس پستول اور تیر کمان آئے۔

وہ بگڑ گیا۔ کہنے — تم مسلمانوں کا کوئی اعتبار نہیں۔ وعدہ کیا تھا، بندوق توڑ دوں گا۔

میں بھی چپ بیٹھنے والا نہیں تھا، بگڑ کر بولا — اور تم ہندو کافروں کا کیا اعتبار، تم نے نہیں کہا تھا پستول اور تیر کمان توڑ دوں گا۔

وہ بولا جاؤ نہیں کھیلتے تمھارے ساتھ۔

میں نے کہا — ہم کون سے مرے جا رہے ہیں اور یہ کہہ کر

पुर्ज़ों में तेल डाला. न जाने कब हिन्दू सेना से मुक़ाबला हो जाय.

उधर गोपाल और उसका भाई बाँस के तीरों को छील कर तेज़ करते रहे.

और अबकी जब मैंने मोहन को दीवार पर चुप बैठे देखा तो उसकी आँखों में वही दुख और दर्द देखा जो पहले था.

कई दिन गुज़र गये.

शाम को हम समुन्द्र के किनारे लगे हुये मेले को देख रहे थे कि अब्बा दफ़्तर से भागे हुये आये. कहने लगे-गाँधी जी का इन्तक़ाल होगया, किसी पागल ने उनको गोली मार दी.

पहले तो किसी को यक़ीन नहीं आया. भला गांधी जी कैसे मर सकते हैं. हमने सोचा, वह तो बम से भी नहीं मरे फिर ख़याल आया और सोचा कि उनकी हिफ़ाज़त नहीं की ठीक से किसी ने. पिस्तौल चलाने वाला वहाँ तक पहुँचा कैसे ?

रात को किसी ने खाना नहीं खाया. बस रेडियो के पास बैठे ख़बरें सुनते रहे, पंडित जवाहर लाल नहरू की तक़रीर सुनी, इतने बड़े आदमी हो कर भी वह रो रहे थे, बस बोलते जाते थे और रोते जाते थे. यह सुन कर मुझे भी रोना आगया और बड़ी देर तक रोता रहा. नानी अम्माँ और अम्माँ तो पहले ही रो रही थीं, अब्बा की आँखों में भी आँसू थे.

उस रात को मुझे ठीक से नींद न आई. डरावने ख़्वाब दिखाई देते रहे. कभी देखा आपको कोई मारने आ रहा है और मैं चिल्ला रहा हूँ—गांधी जी को बचाओ, गांधी जी की जान ख़तरे में है. पर कोई नहीं सुनता. पर सबसे डरावना ख़्वाब यह

پرزے میں تیل ڈالا۔ نہ جانے کب ہندو سینا سے مقابلہ ہو جائے۔

ادھر گوپال اور اس کے بھائی بانس کے تیروں کو چھیل کر تیز کرتے رہے۔

اور اب کی جب میں نے موہن کو دیوار پر چپ بیٹھے دیکھا تو اس کی آنکھوں میں وہی دکھ اور درد دیکھا جو پہلے تھا۔

کئی دن گزر گئے۔

شام کو ہم سمندر کے کنارے لگے ہوئے میلے کو دیکھ رہے تھے کہ ابا دفتر سے بھاگے ہوئے آئے۔ کہنے لگے گاندھی جی کا انتقال ہوگیا، کسی پاگل نے انکو گولی مار دی۔

پہلے تو کسی کو یقین نہیں آیا۔ بھلا گاندھی جی کیسے مر سکتے ہیں۔ ہم نے سوچا، وہ تو بم سے بھی نہیں مرے۔ پھر خیال آیا اور سوچا کہ ان کی حفاظت نہیں کی ٹھیک سے کسی نے۔ پستول چلانے والا وہاں تک پہنچا کیسے؟

رات کو کسی نے کھانا نہیں کھایا۔ بس ریڈیو کے پاس بیٹھے خبریں سنتے رہے۔ پنڈت جواہر لال نہرو کی تقریر سنی، اتنے بڑے آدمی ہو کر بھی وہ رو رہے تھے، بس بولتے جاتے تھے اور روتے جاتے تھے، یہ سن کر مجھے بھی رونا آگیا اور بڑی دیر تک روتا رہا۔ نانی اماں اور اماں تو پہلے ہی رو رہی تھیں، ابا کی آنکھوں میں بھی آنسو تھے۔

اس رات کو مجھے ٹھیک سے نیند نہ آئی۔ ڈراونے خواب دکھائی دیتے رہے۔ کبھی دیکھا آپ کو کوئی مارنے آرہا ہے اور میں چلا رہا ہوں گاندھی جی کو بچاؤ گاندھی جی کی جان خطرے میں ہے۔ پر کوئی نہیں سنتا۔ پر سب سے ڈراونا خواب یہ

देखा कि एक आदमी आपकी तरफ़ गोली चला रहा है और उसके हाथ में मेरी बन्दूक़ है और उसकी गोली आपको लग रही है. और मुझे लगा कि आप इसी वास्ते मुझसे ख़फ़ा होकर चले गये हैं.

अगले दिन हड़ताल थी. स्कूल बन्द था. पर खेलने को जी न करता था. अहाते की दीवार के पास गया तो देखा, मोहन बैठा रो रहा है. ज़ोर-ज़ोर से चीख़ें मार कर. उसे देखकर मुझे और भी रोना आगया. फिर गोपाल आया. वह भी रो रहा था.

गोपाल बोला—बापू जी चल बसे.

मैंने कहा—हाँ, नानी अम्मां कहती हैं अल्लाह को प्यारे हो गये.

फिर गोपाल बोला—अन्नू, मैंने सपने में देखा ....

मेरा दिल धक से हो गया. जल्दी से बोला—तुमने ख़्वाब देखा कि मेरी बन्दूक से.........

गोपाल ने बात काटी—नहीं. देखा मेरे पिस्तौल से बापू को कोई मार रहा है.

मैंने उसे अपने ख़्वाब की बात बताई.

गोपाल ने कहा—बापू हम दोनों से ख़फ़ा होकर चले गये हैं.

फिर हम दोनों मिल कर रो दिये. मोहन फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और हम यह देख कर हैरान रह गये कि इस रोने से उसकी आवाज़ खुल गई थी. अब वह बोल सकता था.

❀ ❀ ❀ ❀

तेरह फ़रवरी.

कल कितने ही दरियाओं समुन्दरों में आपकी चिता की राख

دیکھا کہ ایک آدمی آپ کی طرف گولی چلا رہا ہے اور اسکے ہاتھ میں میری بندوق ہے اور اسکی گولی آپ کو لگ رہی ہے۔ اور مجھے لگا کہ آپ اسی واسطے مجھ سے خفا ہو کر چلے گئے ہیں۔

اگلے دن ہڑتال تھی۔ سکول بند تھا۔ پر کھیلنے کو جی نہ کرتا تھا۔ احاطے کے دیوار کے پاس گیا تو دیکھا، موہن بیٹھا رو رہا ہے۔ زور زور سے چیخ مار کر۔ اُسے دیکھ کر مجھے اور بھی رونا آگیا۔ پھر گوپال آیا۔ وہ بھی رو رہا تھا۔

گوپال بولا — باپو جی چل بسے۔

میں نے کہا — ہاں، نانی اماں کہتی ہیں اللہ کو پیارے ہو گئے۔

پھر گوپال بولا — انّو، میں نے سپنے میں دیکھا ......

میرا دل دھک سے ہو گیا۔ جلدی سے بولا — تم نے خواب دیکھا کہ میری بندوق سے ......

گوپال نے بات کاٹی — نہیں۔ دیکھا میرے پستول سے باپو کو کوئی مار رہا ہے۔

میں نے اُس سے اپنے خواب کی بات بتائی۔

گوپال نے کہا — باپو ہم دونوں سے خفا ہو کر چلے گئے ہیں۔

پھر ہم دونوں مل کر رو دئے۔ موہن پھر زور زور سے رونے لگا اور ہم یہ دیکھ کر حیران رہ گئے کہ اس رونے سے اسکی آواز کھل گئی تھی۔ اب وہ بول سکتا تھا۔

* * * * *

تیرہ فروری

को डाला गया. चौपाटी पर हमने भी अपनी आँखों से देखा. कई लाख का जलूस था. उसमें बहुत से मुसलमान भी थे. आपको मरे हुए तेरह दिन होगये है. इन दिनों में हमारी सरकार ने बहुत से बुरे आदमियों को पकड़ा है जो हिन्दू मुसलमानों को लड़वाते थे, और आप को मारना चाहते थे, और हिन्दुस्तान पाकिस्तान दोनों में हिन्दू मुसलमान तौबा कर रहे हैं और कान पकड़ रहे हैं कि अब मार धाड़ न करेंगे. अब आप इनको माफ़ कर दीजिये और वापस लौट आइये.

हाँ, आज शाम को जब सब लोग समुन्दर के किनारे से चले गये तो मैं चुपके से अपनी बन्दूक़ को तोड़ कर पानी मे फेंक आया हूँ. जहाँ मैंने अपनी बन्दूक़ के टुकड़े फेंके वहीं मैने देखा कि गोपाल का टूटा हुआ पिस्तौल और टूटे हुए तीर कमान भी पानी में पड़े हैं.

और अब मैं और गोपाल और बुन्दू और ज़ैनब और सकीना और सीता सब तौबा करते हैं और कान पकड़ते हैं कि फिर आपस मे न लड़ेंगे. अब हमे माफ़ कर दीजिये और लौट आइये

आप लौट आयेंगे न बापू ?

(फसाना से)

کو ڈالا گیا ۔ چوپاٹی پر ہم نے بھی اپنی آنکھوں سے دیکھا ۔ کئی لاکھ کا جلوس تھا ۔ اُس میں بہت سے مسلمان بھی تھے ۔ آپ کو مرے ہوئے تیرہ دن ہوگئے ہیں ۔ ان دنوں میں ہماری سرکار نے بہت سے بُرے آدمیوں کو پکڑا ہے جو ہندو مسلمانوں کو لڑوا تے تھے ، اور آپ کو مارنا چاہتے تھے ، اور ہندستان ، پاکستان دونوں میں ہندو مسلمان توبہ کر رہے ہیں اور کان پکڑ رہے ہیں کہ اب مار دھاڑ نہ کریں گے ۔ اب آپ ان کو معاف کر دیجئے اور واپس لوٹ آیئے ۔

ہاں ، آج شام کو جب سب لوگ سمندر کے کنارے سے چلے گئے تو میں چُپ کے سے اپنی بندوق کو توڑ کر پانی میں پھینک آیا ہوں ۔ جہاں میں نے اپنی بندوق کے ٹکڑے پھینکے وہیں میں نے دیکھا کہ گوپال کا ٹوٹا ہوا پستول اور ٹوٹے ہوئے تیر کمان بھی پانی میں پڑے ہیں ۔

اور اب میں اور گوپال اور بُندو اور زینب اور سکینہ اور سیتا سب توبہ کرتے ہیں اور کان پکڑتے ہیں کہ پھر آپس میں نہ لڑیں گے ۔ اب ہمیں معاف کر دیجئے اور لوٹ آیئے ۔

آپ لوٹ آئیں گے نہ باپو ؟

(افسانہ سے)

मौलाना मज़हरुलहक़

(भाई रतन लाल बंसल फीरोज़ाबादी)

हमारे देश मे आज फिरक़ापरस्ती का ज़हर इतनी बुरी तरह फैल गया है, कि आज ज्यादातर हिन्दू हर एक मुसलमान को शक और नफ़रत की निगाह से देखते हैं और ज्यादातर मुसलमान हर एक हिन्दू को इसी निगाह से देखते हैं. जिन लोगों की पूरी ज़िन्दगी हमारी जानकारी मे ही देश सेवा मे बीती है और जिनको हमने हमेशा फिरक़ापरस्ती के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते और उसके एवज़ में अपने ही जाति भाइयों के पत्थर खाते देखा है, हमारे दिल की शैतानियत आज हमे उनके ऊपर भी यक़ीन न करने और उनको अपना दुशमन मानने के लिये भड़काती है. यही कारन है कि आज भी न जाने कितने मुसलमान छिपे छिपे और गुप चुप पं० जवाहर लाल नेहरू पर भी शक करने से नहीं चूकते और हिन्दू तो खुल्लम खुल्ला मौ० आज़ाद, रफी अहमद क़िदवाई और शेख़ अब्दुल्ला तक के बारे में इसी तरह की ज़हरीली बातें कहते देखे जाते है. ऐसी हालत में यह ज़रूरी मालूम होता है कि हम अपने उन बुज़ुर्गों की याद करे, जिन्होने अपनी पूरी ज़िन्दगी ही देश सेवा और आपसी मेल मिलाप क़ायम करने मे लगादी.

ऐसे लोगों में एक ख़ास नाम मौलाना मज़हरुलहक़ साहब का है, जो बिहार के एक बहुत बड़े रईस घराने में पैदा होकर भी अपनी देश भक्ती के कारन सब कुछ त्याग कर फ़क़ीरों की तरह रहने लगे

مولانا مظہرالحق

(بھائی رتن لال بنسل فیروزآبادی)

ہمارے دیش میں آج فرقہ پرستی کا زہر اتنی بری طرح پھیل گیا ہے، کہ آج زیادہ تر ہندو ہر ایک مسلمان کو شک اور نفرت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں اور زیادہ تر مسلمان ہر ایک ہندو کو اِسی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ جن لوگوں کی پوری زندگی ہماری جانکاری میں ہی دیش سیوا میں بیتی ہے اور جن کو ہم نے ہمیشہ فرقہ پرستی کے خلاف آواز اُٹھاتے اور اُسکے عوض میں اپنی ہی جاتی بھائیوں کے پتھر کھاتے دیکھا ہے، ہمارے دل کی شیطانیت آج ہمیں اُن کے اوپر بھی یقین نہ کرنے اور اُن کو اپنا دشمن ماننے کے لئے بھڑکاتی ہے۔ یہی کارن ہے کہ آج بھی نہ جانے کتنے مسلمان چھپے چھپے اور گپ چپ پنڈت جواہر لال نہرو پر بھی شک کرنے سے نہیں چوکتے اور ہندو تو کھلم کھلا مولانا آزاد رفیع احمد قدوائی اور شیخ عبداللہ تک کے بارے میں اسی طرح کی زہریلی باتیں کہتے دیکھے جاتے ہیں۔ ایسی حالت میں یہ ضروری معلوم ہوتا ہے کہ ہم اپنے ان بزرگوں کی یاد کریں، جنھوں نے اپنی پوری زندگی ہی دیش سیوا اور آپسی میل ملاپ قایم کرنے میں لگا دی۔

ایسے لوگوں میں ایک خاص نام مولانا مظہرالحق صاحب کا ہے، جو بہار کے ایک بہت بڑے رئیس گھرانے میں پیدا ہوکر بھی اپنی دیش بھکتی کے کارن سب کچھ تیاگ کر فقیروں کی طرح رہنے لگے

थे. जो फ़िरक़ापरस्त हिन्दू आज यह प्रचार करते फिरते हैं कि हिन्दुस्तान का कोई मुसलमान कभी सच्चा देशभक्त नहीं हो सकता और न वह अपने जाति भाइयों के बारे मे अपना पक्षपात ही छोड़ सकता है, उनके लिये मौलाना मज़हरुलहक़ साहब की ज़िन्दगी एक ऐसा भरपूर और सच्चा जवाब है, जिससे किसी तरह भी इन्कार नहीं किया जा सकता.

मौलाना मज़हरुलहक़ साहब लन्दन में गांधी जी के साथ पढ़े थे और वहीं से बैरिस्टरी पास करने के बाद वह जैसे ही देश लौटे, देश के काम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगे. यह वह ज़माना था जब कि कांग्रेस धीरे धीरे ताक़तवर होती जा रही थी और उसने ब्रिटिश हकूमत और, उसके इन्साफ़ की सराहना करने के बजाय कुछ दबी दबी ज़बान से स्वराज और आज़ादी की बात करनी शुरू कर दी थी. हमारे देश के अंग्रेज़ अफ़सर कांग्रेस के इस बदलते हुए रवय्ये को देख कर बेहद डरने लगे थे और बहुत सोच विचार करने के बाद उन्होंने कांग्रेस की ताक़त को कम करने के लिये हिन्दू मुसलमानों में फूट डालने का उपाय खोज निकाला था. इसके लिये ज़रूरी था कि मुसलमानो मे पहिले तो यह ख़याल पैदा किया जाय कि वह हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के मुक़ाबले मे कम तादाद में है और इस लिये उनको हिन्दुओं के हमलों से बचने के लिये कुछ ख़ास रिआयतों की ज़रूरत है और इसके बाद उनको यह रिआयतें कुछ ऐसे ढंग से दी जाँय, जिससे हिन्दू उन रिआयतों का विरोध करें, और मुसलमानों का यह ख़याल यक़ीन में बदल जाय कि सचमुच हिन्दू हमारे दुशमन हैं और वह हमारी बढ़ती को सहन नहीं कर सकते.

تھے۔ جو فرقہ پرست ہندو آج یہ پرچار کرتے پھرتے ہیں کہ ہندستان کا کوئی مسلمان کبھی سچا دیش بھکت نہیں ہو سکتا اور نہ وہ اپنے جاتی بھائیوں کے بارے میں اپنا پکش پات ہی چھوڑ سکتا ہے، اُنکے لئے مولانا مظہر الحق صاحب کی زندگی ایک ایسا بھرپور اور سچا جواب ہے، جس سے کسی طرح بھی انکار نہیں کیا جا سکتا۔

مولانا مظہر الحق صاحب لندن میں گاندھی جی کے ساتھ پڑھتے تھے اور وہیں سے بیرسٹری پاس کرنے کے بعد وہ جیسے ہی دیش لوٹے، دیش کے کام میں بڑھ چڑھ کر حصہ لینے لگے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب کہ کانگریس دھیرے دھیرے طاقت ور ہوتی جا رہی تھی اور اُس نے برٹش حکومت اور اُسکے انصاف کی سراہنا کرنے کے بجائے کچھ دبی دبی زبان سے سوراج اور آزادی کی بات کرنی شروع کر دی تھی۔ ہمارے دیش کے انگریز افسر کانگریس کے اس بدلتے ہوئے رویئے کو دیکھ کر بیحد ڈرنے لگے تھے اور بہت سوچ بچار کرنے کے بعد انھوں نے کانگریس کی طاقت کو کم کرنے کے لئے ہندو مسلمانوں میں پھوٹ ڈالنے کا اُپائے کھوج نکالا تھا۔ اس کے لئے ضروری تھا کہ مسلمانوں میں پہلے تو یہ خیال پیدا کیا جائے کہ وہ ہندستان میں ہندوؤں کے مقابلے میں کم تعداد میں ہیں اور اس لئے ان کو ہندوؤں کے حملوں سے بچنے کے لئے کچھ خاص رعایتوں کی ضرورت ہے اور اُس کے بعد ان کو یہ رعائتیں کچھ ایسے ڈھنگ سے دی جائیں، جس سے ہندو اُن رعائتوں کا ورودھ کریں، اور مسلمانوں کا یہ خیال یقین میں بدل جائے کہ سچ مچ ہندو ہمارے دشمن ہیں اور وہ ہماری بڑھتی کو سہن نہیں کر سکتے۔

इसके लिये सन् १९०९ में मिन्टो मार्ले रिफार्म के नाम से एक स्कीम हिन्दुस्तान पर लागू की गई, जो हिन्दुस्तान की माँगों का एक खिजलाहट भरा जवाब था. इस मिन्टो मार्ले रिफार्म में मुसलमानों की बड़ी तरफदारी जाहिर की गई थी, लेकिन वह तरफदारी इस शक्ल में नहीं थी कि ग़रीब मुसलमान बच्चों के लिये सस्ती तालीम का कोई इन्तज़ाम किया गया हो, या उनके लिये अस्पताल खोले गये हों, या सरहद पर, जहाँ कि सौ फीसदी मुसलमान रहते थे. अंग्रेजी हकूमत के वहशियाना हमले बंद हो गये हों, बल्कि वह तरफदारी इस शक्ल में थी कि ऐसेम्बली और कौंसिलों के चुनावों में वोट देने का हक़ पाने के लिये एक हिन्दू के लिये तो यह जरूरी था कि या तो उसकी आमदनी तीन लाख रुपया सालाना हो और या वह कम से कम तीस साल पुराना ग्रेजवेट हो. लेकिन मुसलमान के लिए सिर्फ तीस हज़ार की आमदनी और तीन साल पुराना ग्रेजवेट होना ही काफी था. दुनिया भर मे यह शायद पहला मौक़ा था, जब कि वोट देने के हक़ के मामले में जाति या फिरक़े के नाम पर इस तरह फ़र्क़ किया गया था.

जैसे ही यह स्कीम शाया हुई, पूरे हिन्दुस्तान में इस मसले पर एक तूफ़ान सा उठ खड़ा हुआ. खुश क़िस्मती से उस ज़माने की आम जनता न तो आज की तरह मुहज़्ज़ब ही थी और न उसका सियासत से इतना सीधा ताल्लुक़ ही था, इस लिये छुरे बाज़ी तो नहीं हुई, पर अख़बारों में कालम पर कालम रंगे गये. बड़ी बड़ी सभायें इसकी मुख़ालफ़त और मुआफ़क़त में की गई और इसने हिन्दू-मुसलमान के सवाल को काफ़ी उभार दिया. हिन्दू कहते थे

اس کے لئے سنہ ۱۹۰۹ میں منٹو مارلے ریفارم کے نام سے ایک اسکیم ہندستان پر لاگو کی گئی، جو ہندستان کی مانگوں کا ایک کھلاہٹ بھرا جواب تھا۔ اس منٹو مارلے ریفارم میں مسلمانوں کی بڑی طرفداری ظاہر کی گئی تھی، لیکن وہ طرفداری اس شکل میں نہیں تھی کہ غریب مسلمان بچوں کے لئے سستی تعلیم کا کوئی انتظام کیا گیا ہو، یا ان کے لئے اسپتال کھولے گئے ہوں، یا سرحد پر، جہاں کہ سو فیصدی مسلمان رہتے تھے۔ انگریزی حکومت کے وحشیانہ حملے بند ہو گئے ہوں، بلکہ وہ طرفداری اس شکل میں تھی کہ اسمبلی اور کونسل کے چناؤ میں ووٹ دینے کا حق پانے کے لئے ایک ہندو کے لئے تو یہ ضروری تھا کہ یا تو اس کی آمدنی تین لاکھ روپیہ سالانہ ہو اور یا وہ کم سے کم تیس سال پرانا گریجویٹ ہو۔ لیکن مسلمان کے لئے صرف تیس ہزار کی آمدنی اور تین سال پرانا گریجویٹ ہونا ہی کافی تھا۔ دنیا بھر میں یہ شاید پہلا موقع تھا، جب کہ ووٹ دینے کے حق کے معاملے میں جاتی یا فرقے کے نام پر اس طرح فرق کیا گیا تھا۔

جیسے ہی یہ اسکیم شائع ہوئی، پورے ہندستان میں اس مسئلے پر ایک طوفان سا اٹھ کھڑا ہوا۔ خوش قسمتی سے اس زمانے کی عام جنتا نہ تو آج کی طرح مہذب ہی تھی اور نہ اسکا سیاست سے اتنا سیدھا تعلق ہی تھا، اس لئے چھرے بازی تو نہیں ہوئی، پر اخباروں میں کالم پر کالم رنگے گئے۔ بڑی بڑی سبھائیں اس کی مخالفت اور موافقت میں کی گئیں اور اس نے ہندو مسلمانوں کے سوال کو کافی ابھار دیا۔ ہندو کہتے تھے

कि वोट देने के हक़ के बारे में इस तरह भेदभाव करना हमारे साथ सरासर ज़ुल्म करना है और मुसलमान कहते थे कि जब अंग्रेज़ तक यह मानते हैं कि कम गिनती में होने की वजह से हमारे साथ यह रिआयत करना ज़रूरी है, तो इसका साफ़ मतलब यह है कि यह हमारा सच्चा हक़ है और कांग्रेस व दूसरे हिन्दू नेता अपनी फ़िरक़ापरस्ती की वजह से ही इस स्कीम का विरोध कर रहे हैं. ऐसी हालत में किसी मुसलमान नेता का इस स्कीम की मुख़ालफ़त में बोलना कितनी बड़ी हिम्मत की बात थी, यह बात आसानी से समझ में आ सकती है. लेकिन मौलाना मज़हरुलहक़ साहब ने इस स्कीम का जम कर विरोध किया और उन्होंने उन मुसलिम फ़िरक़ापरस्त नेताओं को जो अंग्रेज़ों की इस भयानक चाल को अपनी कामयाबी समझ कर ख़ुशी से बग़लें बजा रहे थे, बहुत साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में यह चेतावनी दी कि इस स्कीम को मंज़ूर करके वह फूट का ऐसा बीज बोए दे रहे हैं, जिसका दरख़्त आगे चलकर बहुत कड़ुवे फल देगा. जैसा कि फ़िरक़ापरस्त गिरोहों का क़ायदा होता है, इस मौक़े पर मज़हरुलहक़ साहब को काफ़ी गालियाँ उनकी तरफ़ से सुनाई गईं, लेकिन वह इन बातों से डरने वाले नहीं थे. काश ! उस वक़्त ही अपने इस दूरन्देश नेता की आवाज़ पर इस बदक़िस्मत मुल्क ने ध्यान दिया होता.

इसके बाद कांग्रेस की माँगों को इंगलैंड की जनता के सामने रखने के लिये सन् १९१४ में जब एक डेपुटेशन इंग्लैंड भेजा गया, तो उसमें मौलाना मज़हरुलहक़ साहब भी थे. इस डेपुटेशन में श्री सच्चिदानन्द सिन्हा, भूपेन्द्रनाथ बसु, मि० जिन्ना, ला० लाजपत

کہ ووٹ دینے کے حق کے بارے میں اس طرح بھید بھاؤ کرنا ہمارے ساتھ سراسر ظلم کرنا ہے اور مسلمان کہتے تھے کہ جب انگریز تک یہ مانتے ہیں کہ کم گنتی میں ہونے کی وجہ سے ہمارے ساتھ یہ رعایت کرنا ضروری ہے، تو اس کا صاف مطلب یہ ہے کہ یہ ہمارا سچا حق ہے اور کانگریس و دوسرے ہندو نیتا اپنی فرقہ پرستی کی وجہ سے ہی اس اسکیم کا ورودھ کر رہے ہیں۔ ایسی حالت میں کسی مسلمان نیتا کا اس اسکیم کی مخالفت میں بولنا کتنی بڑی ہمت کی بات تھی، یہ بات آسانی سے سمجھ میں آسکتی ہے۔ لیکن مولانا مظہر الحق صاحب نے اس اسکیم کا جم کر ورودھ کیا اور انھوں نے اُن مسلمان فرقہ پرست نیتاؤں کو جو انگریزوں کی اس بھیانک چال کو اپنی کامیابی سمجھ کر خوشی سے بغلیں بجا رہے تھے، بہت صاف صاف لفظوں میں یہ چیتاونی دی کہ اس اسکیم کو منظور کرکے وہ پھوٹ کا ایسا بیج بوئے دے رہے ہیں، جس کا درخت آگے چل کر بہت کڑوے پھل دے گا۔ جیسا کہ فرقہ پرست گروہوں کا قاعدہ ہوتا ہے، اس موقعہ پر مظہر الحق صاحب کو کافی گالیاں اُن کی طرف سے سنائی گئیں، لیکن وہ ان باتوں سے ڈرنے والے نہیں تھے۔ کاش! اُس وقت ہی اپنے اِس دوراندیش نیتا کی آواز پر اس بدقسمت ملک نے دھیان دیا ہوتا۔

اس کے بعد کانگریس کی مانگوں کو انگلینڈ کی جنتا کے سامنے رکھنے کے لئے سنہ ۱۹۱۴ میں جب ایک ڈیپوٹیشن انگلینڈ بھیجا گیا تو اُس میں مولانا مظہر الحق صاحب بھی تھے۔ اِس ڈیپوٹیشن میں شری سچدانند سنہا، بھوپیندر ناتھ بوس، مسٹر جنا، لالہ لاجپت

राय वग़ैरह उनके साथी थे और वहाँ पर उन्होंने जिस मेहनत के साथ अपने काम को निबाहा, उसकी सभी लोगों ने दाद दी. लेकिन वह जल्दी ही समझ गये कि इस तरह के डेपुटेशनों से कभी कोई अमली फ़ायदा नहीं हो सकता. इसके बाद उस ज़माने की लिबरल सियासत से उनकी तबियत ऊब सी गई और वह कुछ ज़्यादा कारगर प्रोग्राम पर ज़ोर देने लगे.

कुछ दिनों बाद सन् १९१६ में जब महात्मा गान्धी चम्पारन के निलहे गोरो के अत्याचारों की जाँच करने के लिये बिहार पहुँचे, तो मौलाना मज़हरुलहक़ साहब से उनको काफ़ी मदद मिली उस ज़माने में गान्धी जी को मदद देना तो दूर उनको अपने घर में ठहराना भी बड़ी हिम्मत की बात समझी जाती थी, लेकिन मज़हरुलहक़ साहब जिस काम को ठीक समझते थे उसको करने में फिर मुसीबतों और परेशानियो का सवाल उनको अपने रास्ते से कभी एक इंच भी नही डिगा सकता था. इसीलिये जब चम्पारन में काम करते हुए एक बार गान्धी जी ने अपने साथियों से यह पूछा कि अगर इस सिलसिले मे जेल जाने की ज़रूरत हुई, तो कौन कौन इसके लिये तय्यार है. तब मौलाना मज़हरुलहक़ पहले आदमी थे. जिन्होंने जेल जाने वालों में अपना नाम दिया था. उस ज़माने में जेल जाना एक ऐसी ग़ैर मामूली बात समझी जाती थी कि जब गान्धी जी ने यह सवाल लोगों के सामने रक्खा, तो सभी उनके चेहरे की तरफ़ देखते रह गये थे. लेकिन मौलाना ने जब अपना नाम पेश किया, तो और भी बहुत से लोगों ने अपना नाम लिखा दिया. इसीलिये गान्धी जी ने जेल जाने वालों की पहिली

رائے وغیرہ اُن کے ساتھی تھے اور وہاں پر اُنھوں نے جس محنت کے ساتھ اپنے کام کو نباہا، اُس کی سبھی لوگوں نے داد دی. لیکن وہ جلدی ہی سمجھ گئے کہ اِس طرح کے ڈیپوٹیشنوں سے کبھی کوئی عملی فائدہ نہیں ہو سکتا. اُس کے بعد اِس زمانے کی لبرل سیاست سے اُن کی طبیعت اوب سی گئی اور وہ کچھ زیادہ کارگر پروگرام پر زور دینے لگے.

کچھ دنوں بعد سنہ ۱۹۱۶ میں جب مہاتما گاندھی چمپارن کے نلہے گوروں کے اتیاچاروں کی جانچ کرنے کے لئے بہار پہنچے، تو مولانا مظہر الحق صاحب سے اُن کو کافی مدد ملی اُس زمانے میں گاندھی جی کو مدد دینا تو دور اُن کو اپنے گھر میں ٹھہرانا بھی بڑی ہمت کی بات سمجھی جاتی تھی، لیکن مظہر الحق صاحب جس کام کو ٹھیک سمجھتے تھے اُس کے کرنے میں پھر مصیبتوں اور پریشانیوں کا سوال اُنکو اپنے راستے سے کبھی ایک انچ بھی نہیں ڈگا سکتا تھا. اسلئے جب چمپارن میں کام کرتے ہوئے ایک بار گاندھی جی نے اپنے ساتھیوں سے یہ پوچھا کہ اگر اِس سلسلے میں جیل جانے کی ضرورت ہوئی، تو کون کون اِس کے لئے تیار ہے. تب مولانا مظہر الحق پہلے آدمی تھے. جنھوں نے جیل جانے والوں میں اپنا نام دیا تھا. اُس زمانے میں جیل جانا ایک ایسی غیر معمولی بات سمجھی جاتی تھی کہ جب گاندھی جی نے یہ سوال لوگوں کے سامنے رکھا، تو سبھی اُن کے چہرے کی طرف دیکھتے رہ گئے تھے. لیکن مولانا نے جب اپنا نام پیش کیا، تو اور بھی بہت سے لوگوں نے اپنا نام لکھا دیا. اِس لئے گاندھی جی نے جیل جانے والوں کی پہلی

टोली का सदर मौलाना को ही चुना था.

इसके कुछ दिन बाद ही यानी सन् १९१७ में बिहार के शाहा-
बाद जिले मे और उसके बाद गया और पलामू जिलों मे भी गाय
की कुरबानी के मसले पर बहुत बड़े-बड़े हिन्दू-मुसलिम दंगे हुए. इन
जिला में हिन्दुओं की तादाद ज्यादा थी, इसलिये, जैसा कि राजेन्द्र
बाबू ने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है, मुसलमानो को हिन्दुओ
के हाथो जान और माल का बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ा. उस
वक्त मौलाना मजहरुलहक़ साहब की हैसियत का कोई दूसरा
लीडर होता, तो यक़ीनन उसकी तबियत पर इन वाक़आत का
असर पड़ता और उसके दिल मे हिन्दुओ की तरफ से कडुवाहट
पैदा हो जाती, लेकिन मौलाना जानते थे कि इस बदक़िस्मत मुल्क
में इस तरह के फिरक़ेवाराना झगड़ो की असली वजह दूसरी ही है,
इसलिये उन्होंने अगर मुसीबतज़दा मुसलमानों की मदद की, तो
जो हिन्दू बलवे के बाद पुलिस और फौज की ज्यादतियों के शिकार
हुए, उनकी मदद के लिये भी मौलाना के दरवाजे हमेशा खुले रहे.
इन्सान इन्सान मे भेद करना उनको कभी नही सुहाता था और इसे
वह बड़ी ज़लील बात समझते थे.

इसके बाद असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ. गान्धी जी ने
वकीलो से, सरकारी नौकरों से और विद्यार्थियो से सब कुछ छोड़
छोड़ कर आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिये कहा और इस
पुकार को सुनते ही मौलाना मजहरुलहक़ साहब अपना सब कुछ
त्याग कर आजादी की लड़ाई के मैदान में आ डटे. इस सिलसिले में
उन्होंने जो त्याग किया, उसकी कहानी आज भी दिल में एक उमंग

ٹولی کا صدر مولانا کو ہی چُنا تھا

اِس کے کچھ دن بعد ہی یعنی سنہ ۱۹۱۷ میں بہار کے شاہ آباد
ضلعے میں اور اسکے بعد گیا اور پلامو ضلعوں میں بھی گائے کی قربانی
کے مسئلے پر بہت بڑے بڑے ہندو مسلم دنگے ہوئے۔ اِن ضلعوں میں
ہندوؤں کی تعداد زیادہ تھی، اس لئے، جیسا کہ راجیندر بابو نے اپنی
"آتم کتھا" میں لکھا ہے، مسلمانوں کو ہندوؤں کے ہاتھوں جان اور
مال کا بہت بڑا نقصان اُٹھانا پڑا۔ اُس وقت مولانا مظہر الحق صاحب
کی حیثیت کا کوئی دوسرا لیڈر ہوتا، تو یقیناً اُسکی طبیعت پر اِن
واقعات کا اثر پڑتا اور اُس کے دل میں ہندوؤں کی طرف سے کڑواہٹ
پیدا ہو جاتی۔ لیکن مولانا جانتے تھے کہ اس بدقسمت ملک میں اِس
طرح کے فرقہ وارانہ جھگڑوں کی اصلی وجہ دوسری ہی ہے، اسلئے
انھوں نے اگر مصیبت زدہ مسلمانوں کی مدد کی، تو جو ہندو بلوے
کے بعد پولیس اور فوج کی زیادتیوں کے شکار ہوئے، اُنکی مدد کے
لئے بھی مولانا کے دروازے ہمیشہ کھلے رہے۔ انسان انسان میں بھید کرنا
انکو کبھی نہیں سُہاتا تھا اور اسے وہ بہت ذلیل بات سمجھتے تھے۔

اِس کے بعد اسہیوگ اندولن شروع ہوا۔ گاندھی جی نے
وکیلوں سے، سرکاری نوکروں سے اور ودیارتھیوں سے سب کچھ
چھوڑ چھوڑ کر آزادی کی لڑائی میں حصّہ لینے کے لئے کہا اور اِس
پکار کو سنتے ہی مولانا مظہر الحق صاحب اپنا سب کچھ
تیاگ کر آزادی کی لڑائی کے میدان میں آ ڈٹے۔ اِس سلسلے میں
انھوں نے جو تیاگ کیا، اُس کی کہانی آج بھی دل میں ایک اُمنگ

पैदा कर देती है.

राजेन्द्र बाबू ने अपनी 'आत्म कथा' में लिखा है कि जब एक दिन इंजीनियरिंग स्कूल के कुछ विद्यार्थी वहाँ के प्रिन्सिपल से झगड़ कर स्कूल से निकल आये, तो वह एक जुलूस की शक्ल में मौलाना के पास पहुंचे और उनसे कहा कि हम लोगो ने स्कूल तो छोड़ दिया है, इस लिये अब आप हमको कोई जगह दीजिये. उस वक्त मौलाना बहुत ही ऐश-आराम के साथ एक बड़ी कोठी में रहा करते थे और अपने लिये एक दूसरी कोठी भी बनवा रहे थे, लेकिन जब इन फूल से नौजवानो को जगह की तलाश में इस तरह भटकते हुए देखा, तो उन सब लड़कों को लेकर अपनी जान पहिचान के एक साहब के छोटे से बंगले में आकर रहने लगे, जो गंगा के किनारे पर बना हुआ था. उन दिनों कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी और गंगा के किनारे पर होने की वजह से वह जगह और भी ज्यादा ठंडी थी. इसके अलावा घने बाग़ीचों से घिरे रहने के कारन वहाँ सील भी थी. लेकिन मौलाना वहीं जमे रहे. कुछ दिनों बाद मौलाना ने अपने ही पैसे से वहीं कुछ मकान भी बनवा दिये और उस जगह का नाम 'सदाक़त आश्रम' रख दिया, जो तब से लेकर आज तक सूबा काँग्रेस कमेटी का सदर दफ्तर बना हुआ है. इस आश्रम में मौलाना ने चर्खा बनाने का एक कारखाना भी खोला और सभी लड़कों को इस काम में लगा दिया. वह खुद लड़कों को पढ़ाते भी थे और वही सादा खाना खाते थे, जो लड़के खाते थे. लड़के ज्यादातर हिन्दू थे लेकिन मौलाना को वह पिता की तरह पूज्य मानते थे और उन पर भरोसा करते थे. मौलाना साहब ने भी उनके इस भरोसे को किस तरह

پیدا کر دیتی ہے۔

راجیندر بابو نے اپنی "آتم کتھا" میں لکھا ہے کہ جب ایک دن انجینیئرنگ اسکول کے کچھ ودیارتھی وہاں کے پرنسپل سے جھگڑ کر اسکول سے نکل آئے، تو وہ ایک جلوس کی شکل میں مولانا کے پاس پہنچے اور ان سے کہا کہ ہم لوگوں نے اسکول تو چھوڑ دیا ہے، اسلئے اب آپ ہم کو کوئی جگہ دیجئے۔ اس وقت مولانا بہت ہی عیش آرام کے ساتھ ایک بڑی کوٹھی میں رہا کرتے تھے اور اپنے لئے ایک دوسری کوٹھی بھی بنوا رہے تھے، لیکن جب اِن پھول سے نوجوانوں کو جگہ کی تلاش میں اِسطرح بھٹکتے ہوئے دیکھا، تو اُن سب لڑکوں کو لے کر اپنی جان پہچان کے ایک صاحب کے چھوٹے سے بنگلے میں آکر رہنے لگے، جو گنگا کے کنارے پر بنا ہوا تھا۔ اُن دنوں کڑاکے کی سردی پڑ رہی تھی اور گنگا کے کنارے پر ہونے کی وجہ سے وہ جگہ اور بھی زیادہ ٹھنڈی تھی۔ اس کے علاوہ گھنے باغیچوں سے گھرے رہنے کے کارن وہاں سیل بھی تھی۔ لیکن مولانا وہیں جمے رہے۔ کچھ دنوں بعد مولانا نے اپنے ہی پیسے سے وہیں کچھ مکان بھی بنوا دئے اور اُس جگہ کا نام "صداقت آشرم" رکھ دیا، جو تب سے لیکر آج تک صوبہ کانگریس کمیٹی کا صدر دفتر بنا ہوا ہے۔ اِس آشرم میں مولانا نے چرخہ بنانے کا ایک کارخانہ بھی کھولا اور سبھی لڑکوں کو اِس کام میں لگا دیا۔ وہ خود لڑکوں کو پڑھاتے بھی تھے اور وہی سادا کھانا کھاتے تھے، جو لڑکے کھاتے تھے۔ لڑکے زیادہ تر ہندو تھے لیکن مولانا کو پتا کی طرح پوجیہ مانتے تھے اور اُن پر ... ان کے اس بھروسے کو کس طرح

निबाहा, इसक पता नीचे की घटना से लगता है, जिसे राजेन्द्र बाबू ने अपनी 'आत्मकथा' में इस तरह लिखा है:—

"हक़ साहब के साथ एक बहुत ग़रीब घर का लड़का रहा करता था. उन्होंने देखा था कि लड़का पढ़ने में तेज़ है. उनके दिल पर इसका भी असर पड़ा था कि मुसलमान होकर भी उसने हिन्दी और संस्कृत पढ़ी थी. वह कालेज के फ़र्स्ट इयर या सेकिण्ड इयर में पढ़ता था. नाम था उसका मुहम्मद ख़लील. हक़ साहब उसे मानते थ. असहयोग आरम्भ होने पर उसने भी कालेज छोड़ दिया और हक़ साहब के साथ ही उनकी कोठी छोड़कर सदाक़त आश्रम में जाकर रहने लगा. एक डेढ़ साल बाद मैंने सुना कि हक़ साहब ने उसको निकाल दिया. मुहम्मद ख़लील ने भी आकर मुझसे कहा कि वह रंज हो गये हैं आप सिफ़ारिश करके उनको शान्त कर दीजिये. हक़ साहब की मेहरबानी मेरे ऊपर बराबर रहा करती थी. वह दिल से मुझे प्यार करते थे. इसलिये मैंने मुहम्मद ख़लील के बारे में उनसे कहा. उस समय तक मुहम्मद ख़लील सारे बिहार में विख्यात (मशहूर) हो गये थे. उन्होंने असहयोग आरम्भ होते ही एक राष्ट्रीय भजन बनाया था, जो उन दिनों बहुत चालू हो गया था.... उन दिनों शायद ही कोई ऐसी सभा होती थी, जिसमें यह गीत उत्साह से न गाया जाता हो.

"जब मैंने हक़ साहब से कहा कि मुहम्मद ख़लील की कोई ग़लती हो तो माफ़ कीजिये. तो उन्होंने बहुत ही दुख के साथ मुझसे कहा, "मैं तुम्हारी बात कभी नहीं टालता, पर इस समय मजबूर हूँ. तुम नहीं जानते कि ख़लील ने कितना बुरा काम किया

نباہا، اس کا پتہ نیچے کی گھٹنا سے لگتا ہے، جسے راجیندر بابو نے اپنی 'آتم کتھا' میں اس طرح لکھا ہے:-

"حق صاحب کے ساتھ ایک بہت غریب گھر کا لڑکا رہا کرتا تھا۔ انھوں نے دیکھا تھا کہ لڑکا پڑھنے میں تیز ہے۔ اُنکے دل پر اس کا بھی اثر پڑا تھا کہ مسلمان ہوکر بھی اُس نے ہندی اور سنسکرت پڑھی تھی۔ وہ کالج کے فرسٹ ایر یا سکنڈ ایر میں پڑھتا تھا۔ نام تھا اسکا محمد خلیل۔ حق صاحب اُسے مانتے تھے۔ اسہیوگ آرمبھ ہونے پر اُس نے بھی کالج چھوڑ دیا اور حق صاحب کے ساتھ ہی اُنکی کوٹھی چھوڑکر صداقت آشرم میں جاکر رہنے لگا۔ ایک ڈیڑھ سال بعد میں نے سُنا کہ حق صاحب نے اُس کو نکال دیا۔ محمد خلیل نے بھی آکر مجھ سے کہا کہ وہ رنج ہو گئے ہیں آپ سفارش کرکے انکو شانت کر دیجئے۔ حق صاحب کی مہربانی میرے اوپر برابر رہا کرتی تھی۔ وہ دل سے مجھے پیار کرتے تھے۔ اس لئے میں نے محمد خلیل کے بارے میں اُن سے کہا۔ اُس سمے تک محمد خلیل سارے بہار میں وکھیات (مشہور) ہو گئے تھے۔ انھوں نے اسہیوگ آرمبھ ہوتے ہی ایک راشٹریہ بھجن بنایا تھا، جو اُن دنوں بہت چالو ہوگیا تھا...... اُن دنوں شاید ہی کوئی ایسی سبھا ہوتی تھی، جس میں یہ گیت اتساہ سے نہ گایا جاتا ہو۔

"جب میں نے حق صاحب سے کہا کہ محمد خلیل کی کوئی غلطی ہو تو معاف کیجئے۔ تو انھوں نے بہت ہی دکھ کے ساتھ مجھ سے کہا، "میں تمھاری بات کبھی نہیں ٹالتا، پر اس سمے مجبور ہوں۔ تم نہیں جانتے کہ خلیل نے کتنا بُرا کام کیسا

है, इसीलिये तुम सिफारिश कर रहे हो. मैंने जिस चीज़ को अपने सारे जीवन का मुख्य उद्देश्य (ख़ास मकसद) बना लिया है, जिसके लिये सब कुछ करता आया हूं और आज फ़क़ीर बन गया हूं, उस पर इसने ठेस लगाई है. मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी में हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये काम किया है. उसी मे आज भी लगा हुआ हूँ. आश्रम में रहकर इसने हिन्दू लड़कों के साथ ऐसा बर्ताव किया है, जिससे वह लड़के, जो मुझ पर विश्वास करके प्रेम वश मेरे पास आ गये हैं, हिन्दू-मुस्लिम भेद भाव समझने लगे. इस ने मेरे सारे जीवन के बने बनाये काम को बिगाड़ने का जतन किया है. इसने इस बात की कोशिश की है कि लड़कों को मुसलमान बनावे. मैं सब कुछ माफ़ कर सकता हूँ, पर इस तरह इसलाम के नाम पर लड़कों के साथ विश्वासघात करना बरदाश्त नहीं कर सकता. अब मैं जान गया हूँ कि इसने हिन्दी और संस्कृत भी इसी ढोंग के लिये पढ़ी है. एक दिन यह हिन्दू-मुस्लिम फ़साद भी करा देगा. मै इसे आश्रम में हरगिज़ नहीं रहने दूँगा."

इस तरह उन्होने उस मुहम्मद ख़लील को, जिसे उन्होंने अपने बेटे की तरह पाला पोसा था और जिसकी पढ़ाई लिखाई में हज़ारों रुपया ख़र्च किया था, सिर्फ़ इस इलज़ाम पर कि उसने किसी हिन्दू लड़के को मुसलमान होने के लिये फ़ुसलाया था, इस तरह घर से निकाल दिया कि फिर ज़िन्दगी भर उसका मुँह नहीं देखा. सिर्फ़ इसी एक घटना से यह मालूम होता है कि मौलाना हिन्दू-मुस्लिम एकता पर कितनी सच्चाई से यक़ीन करते थे और इसे कितनी अहमियत देते थे.

ہے، اس لئے تم سفارش کر رہے ہو۔ میں نے جس چیز کو اپنے سارے جیون کا مکھیہ ادیش (خاص مقصد) بنا لیا ہے۔ جس کے لئے سب کچھ کرتا آیا ہوں اور آج فقیر بن گیا ہوں، اس پر اس نے ٹھیس لگائی ہے۔ میں نے اپنی ساری زندگی میں ہندو مسلم ایکتا کے لئے کام کیا ہے۔ اسی میں آج بھی لگا ہوا ہوں۔ آشرم میں رہ کر اس نے ہندو لڑکوں کے ساتھ ایسا برتاؤ کیا ہے، جس سے وہ لڑکے، جو مجھ پر وشواس کرکے پریم وش میرے پاس آگئے ہیں، ہندو مسلم بھید بھاؤ سمجھنے لگے۔ اس نے میرے سارے جیون کے بنے بنائے کام کو بگاڑنے کا جتن کیا ہے۔ اس نے اس بات کی کوشش کی ہے کہ لڑکوں کو مسلمان بناوے۔ میں سب کچھ معاف کر سکتا ہوں، پر اس طرح اسلام کے نام پر لڑکوں کے ساتھ وشواس گھات کرنا برداشت نہیں کر سکتا۔ اب میں جان گیا ہوں کہ اس نے ہندی اور سنسکرت بھی اسی ڈھونگ کے لئے پڑھی ہے۔ ایک دن یہ ہندو مسلم فساد بھی کرا دیگا۔ میں اسے آشرم میں ہرگز نہیں رہنے دونگا۔"

اس طرح انھوں نے اس محمد خلیل کو، جسے انھوں نے اپنے بیٹے کی طرح پالا پوسا تھا اور جس کی پڑھائی لکھائی میں ہزاروں روپیہ خرچ کیا تھا، اس الزام پر کہ اس نے کسی ہندو لڑکے کو مسلمان ہونے کے لئے پھسلایا تھا، اس طرح گھر سے نکال دیا کہ پھر زندگی بھر اس کا منہ نہیں دیکھا۔ صرف اسی ایک گھٹنا سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ مولانا ہندو مسلم ایکتا پر کتنی سچائی سے یقین کرتے

एक खास बात यह थी कि गान्धीजी की ही तरह मौलाना भी कभी यह नहीं देखते थे कि उनकी इन भावनाओं का हिन्दुओं पर क्या असर पड़ता है. उनके नज़दीक हिन्दू-मुस्लिम एकता का काम दूकानदारी नहीं थी, जिसका एवज़ कुछ न कुछ मिलना ही चाहिये, बल्कि यह तो उनका ईमान था. इसी लिये जब फ़िरक़ापरस्त हिन्दुओं ने मौलाना मज़हरुलहक़ साहब का भी, हिन्दू-मुस्लिम सवाल की आड़ लेकर, तरह तरह से विरोध किया और उनका अपमान किया, तब भी उनके दिल में कोई कड़वाहट नहीं आई और न उनको कुछ और लीडरों की तरह अपने ख़यालात बदलने की ही ज़रूरत महसूस हुई. मौलाना जानते थे कि जिनकी दूकानदारी ही फ़िरक़ापरस्ती पर चलती है, उनसे इसके सिवा किसी दूसरे बरताव की उम्मीद की ही नहीं जा सकती.

असहयोग के दिनों में और उसके बाद मौलाना बहुत दिनों तक बिहार विद्यापीठ के चान्सलर रहे. इसी ज़माने में उन्होंने 'मदरलैन्ड' नाम का एक हफ़्तेवार अख़बार भी निकाला, जिसमें एक लेख निकालने के जुर्म में उनको सज़ा भी भुगतनी पड़ी. कुछ दिनों बाद यह अख़बार बन्द हो गया. इसके बाद वह छपरा डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चेयरमैन भी चुने गये. इन दिनों ही यानी सन् १९२६ में जब हिन्दुस्तान के दूसरे दूसरे सूबों की तरह बिहार के हिन्दू-मुसलमानों के बीच फिर तनातनी शुरू हुई, तो मज़हरुलहक़ साहब ने छपरा में ही बिहार के सभी खास खास नेताओं को इकट्ठा किया और उनसे आपस में एकता बनाए रखने की अपील की. इसका नतीजा यह हुआ कि बिहार में उस

ایک خاص بات یہ تھی کہ گاندھی جی کی ہی طرح مولانا بھی کبھی یہ نہیں دیکھتے تھے کہ اُنکی اِن بھاؤناؤں کا ہندوں پر کیا اثر پڑتا ہے۔ اُن کے نزدیک ہندو مسلم ایکتا کا کام دوکانداری نہیں تھی، جس کا عوض کچھ نہ کچھ ملنا ہی چاہئے۔ بلکہ یہ تو اُن کا ایمان تھا۔ اس لئے جب فرقہ پرست ہندوؤں نے مولانا مظہر الحق صاحب کا بھی، ہندو مسلم سوال کی آڑ لے کر، طرح طرح سے ورودھ کیا اور اُن کا اپمان کیا، تب بھی اُن کے دل میں کوئی کڑواہٹ نہیں آئی اور نہ اُن کو کچھ اور لیڈروں کی طرح اپنے خیالات بدلنے کی ہی ضرورت محسوس ہوئی۔ مولانا جانتے تھے کہ جن کی دوکانداری ہی فرقہ پرستی پہ چلتی ہے، اُن سے اِس کے سوا کسی دوسرے برتاؤ کی امید کی ہی نہیں جا سکتی۔

اسہیوگ کے دنوں میں اور اسکے بعد مولانا بہت دنوں تک بہار ودّیا پیٹھ کے چانسلر رہے۔ اسی زمانے میں اُنھوں نے 'مدرلینڈ' نام کا ایک ہفتہ وار اخبار بھی نکالا، جس میں ایک لیکھ نکالنے کے جرم میں اُن کو سزا بھی بھگتنی پڑی۔ کچھ دنوں بعد یہ اخبار بند ہو گیا۔ اِس کے بعد وہ چھپرا ڈسٹرکٹ بورڈ کے چیرمین بھی چنے گئے اِن دنوں ہی یعنی سنہ ۱۹۲۶ میں جب ہندستان کے دوسرے دوسرے صوبوں کی طرح بہار کے ہندو مسلمانوں کے بیچ پھر تناتنی شروع ہوئی، تو مظہر الحق صاحب نے چھپرا میں ہی بہار کے سبھی خاص خاص نیتاؤں کو اکٹھا کیا اور اُن سے آپس میں ایکتا بنائے رکھنے کی اپیل کی۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ بہار میں اُس

गरमा गरमी और जोश ख़रोश के ज़माने में भी हिन्दू-मुस्लिम एकता का ऐसा सुन्दर काम हुआ कि पूरे देश भर में उसकी चरचा रही.

इसी साल जब गोहाटी में आल इंडिया कांग्रेस का इजलास हुआ, तो बहुत से सूबों ने उस इजलास की सदारत के लिये मौलाना मज़हरुलहक़ साहब का नाम पेश किया. लेकिन मौलाना ने इस ओहदे को, जो हिन्दुसतान में सब से बड़ी इज़्ज़त की बात समझी जाती रही है, मंज़ूर करने से इन्कार कर दिया. उनका कहना था कि अगर उन्होंने कॉंग्रेस की सदारत मंज़ूर कर ली, तो अपने सूबे में वह हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये जो काम कर रहे हैं, वह नहीं कर सकेंगे. इस बात से भी साबित होता है कि मौलाना एकता के काम को कितनी तरजीह देते थे.

इस तरह से मौलाना मज़हरुलहक़ साहब एक ऐसी हस्ती थे, जो फ़िरक़ापरस्ती के बड़े बड़े तूफ़ानों में भी शान्ति और प्रेम के गीत गाते रहे. मुसलमानों ने उनको काफ़िर कहा और हिन्दुओं ने भी उनपर तरह तरह के इलज़ाम लगाये, लेकिन वह अपनी जगह पर हमेशा जमे रहे. सन् १९२९ में जब लाहौर में कॉंग्रेस का सालाना इजलास हो रहा था, मौलाना का अपने गाँव फ़रीद पुर ज़िला छपरा में इन्तक़ाल हो गया. वह बहुत दिन से अपने इस गाँव में आकर रहने लगे थे और दिन रात ईश्वर की याद और मज़हबी किताबों में डूबे रह कर फ़क़ीरों जैसी ज़िन्दगी बिता रहे थे. यहीं उन्होंने आम का एक बड़ा बाग़ भी लगाया था. उनके इन्तक़ाल से कुछ ही दिन पहले उनके एक जवान लड़के की मौत भी पास की ही 'दाहा' नदी में डूब जाने से हो गई थी, जिसकी वजह से वह बड़े उदास रहने लगे थे.

گرما گرمی اور جوش خروش کے زمانے میں بھی ہندو مسلم ایکتا کا ایسا سندر کام ہوا کہ پورے دیش بھر میں اُسکی چرچا رہی۔

اِسی سال جب گوہاٹی میں آل انڈیا کانگریس کا اجلاس ہوا، تو بہت سے صوبوں نے اُس اجلاس کی صدارت کے لئے مولانا مظہرالحق صاحب کا نام پیش کیا۔ لیکن مولانا نے اِس عہدے کو، جو ہندوستان میں سب سے بڑی عزت کی بات سمجھی جاتی رہی ہے، منظور کرنے سے انکار کر دیا۔ اِن کا کہنا تھا کہ اگر اُنھوں نے کانگریس کی صدارت منظور کر لی، تو اپنے صوبے میں وہ ہندو مسلم ایکتا کے لئے جو کام کر رہے ہیں، وہ نہیں کر سکیں گے۔ اس بات سے بھی ثابت ہوتا ہے کہ مولانا ایکتا کے کام کو کتنی ترجیح دیتے تھے۔

اس طرح سے مولانا مظہرالحق صاحب ایک ایسی ہستی تھے، جو فرقہ پرستی کے بڑے بڑے طوفانوں میں بھی شانت اور پریم کے گیت گاتے رہے۔ مسلمانوں نے اُنکو کافر کہا اور ہندوؤں نے ان پر طرح طرح کے الزام لگائے، لیکن وہ اپنی جگہ پر ہمیشہ جمے رہے۔ سنہ ۱۹۲۹ میں جب لاہور میں کانگریس کا سالانہ اجلاس ہو رہا تھا، مولانا کا اپنے گاؤں فرید پور ضلع چھپرا میں انتقال ہو گیا۔ وہ بہت دن سے اپنے اس گاؤں میں آ کر رہنے لگے تھے اور دن رات ایشور کی یاد اور مذہبی کتابوں میں ڈوبے رہ کر فقیروں جیسی زندگی بتا رہے تھے۔ یہیں اُنھوں نے آم کا ایک بڑا باغ بھی لگایا تھا۔ اُنکے انتقال سے کچھ ہی دن پہلے اُنکے ایک جوان لڑکے کی موت بھی پاس کی ہی 'داہا' ندی میں [illegible] گئی تھی، جسکی وجہ سے وہ بڑے اداس رہنے لگے تھے۔

जैसा कि राजेन्द्र बाबू ने लिखा है, सचमुच मौलाना की मौत से हिन्दू मुस्लिम एकता का एक सच्चा हामी इस दुनिया से चला गया. काश! मौलाना आज होते, तो इसमें तो, शक नहीं कि ज़माने की हालत को देखते हुए उनको बड़ा सदमा पहुँचता, लेकिन आज जो इने गिने आदमी देश में एकता क़ायम करने का काम कर रहे हैं, उनके लिये वह एक बड़े सहारे की चीज़ बन जाते. और सच्ची बात तो यह है कि आज उनका नाम भी हमें एक नई रोशनी और नया उत्साह देने की ताक़त रखता है.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

جیسا کہ راجیندر بابو نے لکھا ہے، سچ مچ مولانا کی موت سے ہندو مسلم ایکتا کا ایک سچا حامی اس دنیا سے چلا گیا۔ کاش مولانا آج ہوتے تو اس میں تو شک نہیں کہ زمانے کی حالت کو دیکھتے ہوئے انکو بڑا صدمہ پہنچتا، لیکن آج جو انے گنے آدمی دیش میں ایکتا قائم کرنے کا کام کر رہے ہیں، انکے لئے وہ ایک بڑے سہارے کی چیز بن جاتے اور سچی بات تو یہ ہے کہ آج اُن کا نام بھی ہمیں ایک نئی روشنی اور نیا اُتساہ دینے کی طاقت رکھتا ہے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک:۔ پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے، اکتوبر ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنہ

منیجر "نیا ہند" ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

हमारा पुराना इलाज का तरीक़ा

(लाला उग्रसेन जैन, मुज़फ्फर नगर)

पैंतीस साल बीते एक दिन रात को मेरे हाथ की एक उंगली में दरद हुआ. सुबह को बेचैन था. दूकान पर बैठा था कि एक डाक्टर मित्र उदासी की वजह पूछने लगे. मैंने उनसे अपनी तकलीफ़ कही. फ़रमाया दुकान पर आ जाओ उंगली में गन्दा खून जमा हो गया है उसको निकाल दूंगा, दरद जाता रहेगा. मैं उनके साथ चला गया. उन्होंने फ़ौरन एक चाक़ू निकाला, जहां दरदथा वहां चलाया और चन्द क़तरे ख़ून निकाल दिया. मगर चाक़ू का लगना था कि कच्चा चीर डालने की वजह से दरद बहुत बढ़ गया. बतलाया गया कि बरफ़ बाँधों आराम हो जायगा. बरफ़ रखा गया. मगर थोड़ी देर चैन पड़ कर फिर दरद पैदा हो गया. दो रोज़ के बाद एक दूसरे डाक्टर साहब का इलाज कराना पड़ा मगर उनसे भी आराम न हुआ. चार दिन तक उनकी दवायें लगती रहीं मगर "मरज़ बढ़ता गया जूँ जूँ दवा की"

आख़िर सिविल सर्जन साहब को बुलाया गया, क्योंकि उंगली की सूजन आधे हाथ तक पहुँच चुकी थी और उसकी वजह से १०३ बुख़ार भी हो गया था. साहब बहादुर आये. वह एक अंग्रेज़ थे. उंगली देखी, सारे हाथ का मुआइना किया. बुख़ार के लिये थरमामीटर लगाया. आख़िरी हुकुम यह सादिर फ़रमाया कि ज़ख़म का ज़हर कोहनी तक पहुँच गया है, और

ہمارا پرانا علاج کا طریقہ

(لالہ اگرسین جین، مظفر نگر)

پینتیس سال بیتے ایک دن رات کو میرے ہاتھ کی ایک انگلی میں درد ہوا۔ صبح کو بےچین تھا۔ دُکان پر بیٹھا تھا کہ ایک ڈاکٹر مستر اُداسی کی وجہ پوچھنے لگے۔ میں نے اُن سے اپنی تکلیف کہی۔ فرمایا دوکان پر آجاؤ انگلی میں گندا خون جمع ہو گیا ہے اسکو نکال دوں گا۔ درد جاتا رہے گا۔ میں انکے ساتھ چلا گیا۔ اُنھوں نے فوراً ایک چاقو نکالا، جہاں درد تھا وہاں چلایا اور چند قطرے خون نکال دیا۔ مگر چاقو کا لگنا تھا کہ کچا چیرا ڈالنے کی وجہ سے درد بہت بڑھ گیا۔ بتلایا گیا کہ برف باندھو آرام ہو جائے گا۔ برف رکھا گیا۔ مگر تھوڑی دیر چین پڑ کر پھر درد پیدا ہو گیا۔ دو روز کے بعد ایک دوسرے ڈاکٹر صاحب کا علاج کرانا پڑا مگر اُن سے بھی آرام نہ ہوا۔ چار دن تک ان کی دوائیں لگتی رہیں مگر "مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا کی"۔

آخر سول سرجن صاحب کو بلایا گیا، کیونکہ انگلی کی سوجن آدھے ہاتھ تک پہنچ چکی تھی اور اُس کی وجہ سے ۱۰۳ بخار بھی ہو گیا تھا۔ صاحب بہادر آئے۔ وہ ایک انگریز تھے۔ اُنگلی دیکھی، سارے ہاتھ کا معائنہ کیا۔ بخار کے لئے تھرمامیٹر لگایا۔ آخری حکم یہ صادر فرمایا کہ زخم کا زہر کہنی تک پہنچ گیا ہے، اور

अगर यह हाथ कोहनी तक न कटवा दिया गया तो जहर बढ़ कर जान के लिए खतरा पैदा कर सकता है. मेरी बूढ़ी बुआ जी सिरहाने खड़ी सब बातें सुन रही थीं. कुछ नाराज होकर बोलीं—"खबरदार जो मेरे बच्चे को हाथ लगाया !" और अन्दर से सोलह रुपया लाकर सिविल सर्जन साहब को भेंट किया यानी अब उनको रुख़सत हो जाना चाहिये. कहा गया कि सोच बिचार कर आपको तकलीफ़ दी जायगी.

दोपहर को ग्यारह के क़रीब का वक़्त था. मैं पाँच छै दिन से रात को सो न सका था. हाय हाय करते वक़्त जाता था. सोचने लगा यह बुढ़िया अब क्या करेगी. उनके लिहाज़ की वजह से चुप रहा. पन्द्रह मिनट के बाद क्या देखता हूँ कि हमारे मुहल्ले के पास का एक नाई जर्राह बग़ल में बस्ता दबाए बुआ जी के साथ आ रहा है. मुझे बड़ा गुस्सा आया कि डाक्टरों के इलाज के बाद सिविल सरजन साहब का मशविरा तो ठुकरा दिया गया, अब इस जर्राह को लाई हैं. मुझे काफ़ी तकलीफ हो रही थी. मजबूर न हाथ जर्राह के सामने कर दिया, जर्राह ने बुआ जी से दो चीजें तलब कीं. गाय का दूध और सट्टी के चावल, जो पुराने से पुराने मिल सकें. वह दौड़ी हुई पास पड़ोस मे गईं और शायद आधा घंटे के बाद दोनों चीज़े ला दीं. जर्राह साहब ने खीर पकाई और हाथ पर एक घी का सा मरहम चुपड़ कर वह खीर सोहाती सोहाती मेरी कोहनी तक बांध दी. खीर के बांधने के चन्द मिनट बाद मुझे ऐसा लगा कि हाथ में बहुत चैन पड़ रहा है, पांच छै दिन जागा था नींद आ गई और चैन की नींद

اگر یہ ہاتھ کہنی تک نہ کٹوا دیا گیا تو زہر بڑھ کر جان کے لئے خطرہ پیدا کر سکتا ہے۔ میری بوڑھی بوا جی سرہانے کھڑی سب باتیں سن رہی تھیں۔ کچھ ناراض ہوکر بولیں ——— "خبردار جو میرے بچے کو ہاتھ لگایا!" اور اندر سے سولہ روپیہ لاکر سول سرجن صاحب کو بھینٹ کیا یعنی اب ان کو رخصت ہو جانا چاہئے۔ کہا گیا کہ سوچ بچار کر آپ کو تکلیف دی جائے گی۔

دوپہر کو گیارہ کے قریب کا وقت تھا۔ میں پانچ چھ دن سے رات کو سو نہ سکا تھا۔ ہائے ہائے کرتے وقت جاتا تھا۔ سوچنے لگا یہ بڑھیا اب کیا کرے گی۔ ان کے لحاظ کی وجہ سے چپ رہا۔ پندرہ منٹ کے بعد کیا دیکھتا ہوں کہ ہمارے محلے کے پاس کا ایک نائی جراح بغل میں بستا دبائے بوا جی کے ساتھ آ رہا ہے۔ مجھے بڑا غصہ آیا کہ ڈاکٹروں کے علاج کے بعد سول سرجن صاحب کا مشورہ تو ٹھکرا دیا گیا، اب اس جراح کو لائی ہیں۔ مجھے کافی تکلیف ہو رہی تھی۔ مجبوراً ہاتھ جراح کے سامنے کر دیا، جراح نے بوا جی سے دو چیزیں طلب کیں۔ گائے کا دودھ اور ساٹھی کے چاول، جو پرانے سے پرانے مل سکیں۔ وہ دوڑی ہوئی پاس پڑوس میں گئیں۔ اور شاید آدھے گھنٹے کے بعد دونوں چیزیں لا دیں۔ جراح صاحب نے کھیر پکائی اور ہاتھ پر ایک گھی کا سا مرہم چپڑ کر وہ کھیر سوہاتی سوہاتی میری کہنی تک باندھ دی۔ کھیر کے باندھنے کے چند منٹ بعد مجھے ایسا لگا کہ ہاتھ میں بہت چین پڑ رہا ہے۔ پانچ چھ دن جاگا تھا نیند آ گئی اور چین کی نیند

सोता रहा. रात को कोई दस बजे आंख खुली होगी, खीर का सामान तैयार था. जर्राह साहब की यह हिदायत थी कि सोते को ना जगाया जावे और जब आँख खुले तो दूसरी ताज़ा खीर बांध दी जावे. आंख खुलने पर कुछ भूक भी महसूस हुई. मेरे लिये खिचड़ी भी तैयार थी. खिचड़ी खाकर और खीर की पुलटिस बंधवा कर सोया तो सुबह ही आंख खुली.बहुत आराम महसूसकिया. दरद भी न था मगर हाथ की सूजन कुछ बढ़ गई थी. जर्राह साहब आए और फिर वही घी सा लगा कर पुलटिस बांध गये और कहने लगे यह सब फिसाद कच्ची उंगली को काट देने से पैदा हुआ है. इंशा अल्लाह ताला दस दिन मे सब ठीक हो जावेगा. तीन दिन के बाद उन्होने हाथ पर तीन जगह नशतर लगाया. तीनों जगह से काफ़ी पीप निकली. इसके बाद उन्हो ने नीम के पक्के पानी से तमाम हाथ साफ़ किया और मरहम के फाये लगा दिये. अगले दिन ज़ख़म से कुछ मवाद आया. तब उन्हों ने कपड़े की बत्ती बना कर उसे मरहम से ख़ूब तर किया और उसे ज़ख़म के अन्दर पहुँचाया. आहिस्ता आहिस्ता ज़ख़म भरने लगा और पन्द्रह दिन में हाथ बिलकुल ठीक हो गया. मगर जिस उंगली में डाक्टर साहब का आपरेशन हुआ था उसके दो पोरे जुड़ गये. मेरी ग़लती यह थी कि आराम हो जाने के बाद जर्राह साहब का हुक्म था कि हरवक़्त नमक का डला हाथ मे रखकर उगलियों से दबाता रहूँ और एक तेल मलता रहूँ. तेल तो मल दिया करता था मगर दूकान मे फ़ुरसत न मिलने की वजह से नमक लेकर उंगलियों की कसरत न कर सकता था. हाथ बिलकुल

سوتا رہا۔ رات کو کوئی دس بجے آنکھ کھلی ہوگی۔ کھیر کا سامان تیار تھا۔ جرّاح صاحب کی یہ ہدایت تھی کہ سوتے کو نہ جگایا جاوے اور جب آنکھ کھلے تو دوسری تازہ کھیر باندھ دی جاوے۔ آنکھ کھلنے پر کچھ بھوک بھی محسوس ہوئی۔ میرے لئے کھچڑی بھی تیار تھی۔ کھچڑی کھا کر اور کھیر کی پولٹس بندھوا کر سویا تو صبح ہی آنکھ کھلی۔ بہت آرام محسوس کیا۔ درد بھی نہ تھا مگر ہاتھ کی سوجن کچھ بڑھ گئی تھی۔ جرّاح صاحب آئے اور پھر وہی گھی سا لگا کر پولٹس باندھ گئے اور کہنے لگے یہ سب فساد کچی انگلی کو کاٹ دینے سے پیدا ہوا ہے۔ انشاءاللہ تعالےٰ دس دن میں سب ٹھیک ہو جاوے گا۔ تین دن کے بعد انھوں نے ہاتھ پر تین جگہ نشتر لگایا تینوں جگہ سے کافی پیپ نکلی۔ اس کے بعد انھوں نے نیم کے پکے پانی سے تمام ہاتھ صاف کیا اور مرہم کے پھائے لگا دیے اگلے دن زخم سے کچھ مواد آیا۔ تب انھوں نے کپڑے کی بتی بنا کر اُسے مرہم سے خوب تر کیا اور اُسے زخم کے اندر پہنچایا۔ آہستہ آہستہ زخم بھرنے لگا اور پندرہ دن میں ہاتھ بالکل ٹھیک ہو گیا۔ مگر جس انگلی میں ڈاکٹر صاحب کا آپریشن ہوا تھا اُس کے دو پورے جڑ گئے۔ میری غلطی یہ تھی کہ آرام ہو جانے کے بعد جرّاح صاحب کا حکم تھا کہ ہر وقت نمک کا ڈلا ہاتھ میں رکھ کر انگلیوں سے دباتا رہوں اور ایک تیل ملتا رہوں۔ تیل تو مل دیا کرتا تھا مگر دوکان میں فرصت نہ ملنے کی وجہ سے نمک لے کر انگلیوں کی کسرت نہ کر سکتا تھا۔ ہاتھ بالکل

अच्छा हो गया.

आज भी उस कामयाब जर्राह का पोता मौजूद है जो सिविल सर्जनों के बिगड़े इलाज कामयाबी से करता है. उसका नाम है मुहम्मद उमर. पुरानी बात आज भी उनके यहाँ जारी है कि उनके मकान पर आकर कोई मरहम लगवाये या आपरेशन कराये तो कोई दवा की क़ीमत या अपरेशन की फ़ीस लेना हराम है. इस गिरानी और दवाओं की क़िल्लत में भी वह घर हर ग़रीब के लिये आज भी खुला है. अंगरेज़ी राज के डेढ़ सौ साल गुज़रने के बाद भी हिन्दुस्तान का यह हुनर मौजूद है. मकान मुसलमानों के मुहल्ले में है मगर किसी हिन्दू बहन को वहाँ जाकर अपना इलाज कराने में हिचक नहीं है. उसके दादा का नाम नबी बख़्श था. आम तौर पर लोग नब्बू कह कर पुकारते थे. घर अगर बुलाये गये तो तीसरे रोज़ एक रूपया देने का रिवाज था जिसमें बिला बुलाए उनको दोनों वक़्त हाज़िरी देनी पड़ती थी और दवाई की क़ीमत भी जो अपने पास से लगाते थे उसी में शामिल थी.

اچھا ہو گیا۔

آج بھی اُس کامیاب جراح کا پوتا موجود ہے جو سول سرجنوں کے بگڑے علاج کامیابی سے کرتا ہے۔ اُسکا نام ہے محمد عمر۔ پرانی بات آج بھی انکے یہاں جاری ہے کہ اُن کے مکان پر آ کر کوئی مرہم لگوائے یا آپریشن کرائے تو کوئی دوا کی قیمت یا آپریشن کی فیس لینا حرام ہے۔ اس گرانی اور دواؤں کی قلت میں بھی وہ گھر ہر غریب کیلئے آج بھی کھلا ہے۔ انگریزی راج کے ڈیڑھ سو سال گزرنے کے بعد بھی ہندستان کا یہ ہنر موجود ہے۔ مکان مسلمانوں کے محلے میں ہے مگر کسی ہندو بہن کو وہاں جاکر اپنا علاج کرانے میں ہچک نہیں ہے۔ اسکے دادا کا نام نبی بخش تھا۔ عام طور پر لوگ نبّو کہہ کر پکارتے تھے۔ گھر اگر بلائے گئے تو تیسرے روز ایک روپیہ دینے کا رواج تھا جسمیں بلا بلائے ان کو دونوں وقت حاضری دینی پڑتی تھی اور دوائی کی قیمت بھی جو اپنے پاس سے لگاتے تھے اُسی میں شامل تھی۔

शक का नतीजा

(भाई एच० हरिशंकर राव)

अनवर और विनोद दोनों कालेज में पढ़ते थे. दोनो जिगरी दोस्त थे— अेक दूसरे की दिल से भलाई चाहने वाले.

अनवर यतीम था. उसके बाप कुछ जायदाद छोड़ गए थे जिसकी बदौलत वह कालेज में पढ़ सका. उसकी और विनोद की दोस्ती बचपन की थी. दोनो एक साथ, एक ही स्कुल में पढ़ते थे. कालेज मे भी साथ साथ दाख़िल हुए. उनकी मित्रता मे कभी कोई फ़र्क़ नहीं आया.

विनोद ग़रीब बे माँ का बालक था. उसके पिता एक स्कूल मास्टर थे. वह धनहीन था, पर किसी की दौलत का लालची न था. उसके जीवन मे दिली दोस्त कहलाने वाला कोई था तो वही अनवर. अनवर के वास्ते वह जान क़ुरबान करने को भी तय्यार था.

(२)

दोनों ने बी० ए० पास किया और कालेज छोड़ दिया. आगे क्या करना, यह सवाल उनके सामने आया. अपनी गुज़र बसर के लिये दोनों ने नौकरी की सोची.

अनवर किसी एक आफ़िस मे नौकर हो गया, और विनोद किसी दूसरे दफ्तर मे. दोनों की जिन्दगी सुख से कटती थी

इस बीच अनवर की शादी तय हुई और बड़ी धूम धाम के साथ निकाह भी हो गया. विनोद इसमें इस तरह शरीक हुआ जैसे अपने सगे भाई की शादी मे.

شک کا نتیجہ

(بھائی ایچ ہری شنکر راؤ)

انور اور ونود دونوں کالج میں پڑھتے تھے۔ دونوں جگری دوست تھے۔ ایک دوسرے کی دل سے بھلائی چاہنے والے۔

انور یتیم تھا۔ اس کے باپ کچھ جائداد چھوڑ گئے تھے جس کی بدولت وہ کالج میں پڑھ سکا۔ اسکی اور ونود کی دوستی بچپن کی تھی۔ دونوں ایک ساتھ، ایک ہی اسکول میں پڑھتے تھے۔ کالج میں بھی ساتھ ساتھ داخل ہوئے۔ انکی مترتا میں کبھی کوئی فرق نہیں آیا۔

ونود غریب بے ماں کا بالک تھا۔ اس کے پتا ایک اسکول ماسٹر تھے۔ وہ دھن ہین تھا، پر کسی کی دولت کا لالچی نہ تھا۔ اسکے جیون میں دلی دوست کہلانے والا کوئی تھا تو وہی انور۔ انور کے واسطے وہ جان قربان کرنے کو بھی تیار تھا۔

(۲)

دونوں نے بی۔اے پاس کیا اور کالج چھوڑ دیا۔ آگے کیا کرنا، یہ سوال اُن کے سامنے آیا۔ اپنی گزر بسر کے لئے دونوں نے نوکری کی سوچی۔

انور کسی ایک آفس میں نوکر ہوگیا، اور ونود کسی دوسرے دفتر میں۔ دونوں کی زندگی سکھ سے کٹتی تھی۔

اس بیچ انور کی شادی طے ہوئی اور بڑی دھوم دھام کے ساتھ نکاح بھی ہوگیا۔ ونود اس میں اسطرح شریک ہوا جیسے اپنے سگے بھائی کی شادی میں۔

कुछ दिन बीत गए. एक दिन अनवर अपनी नई दुल्हन से बातचीत कर रहा था. इतने मे कोई आया. उसे पहचान कर अनवर बोला—"आओ भाई जान! खूब आए." विनोद के आते ही नई बहू उठकर जाने लगी. अनवर ने कहा—"ज़ीनत! किधर जाती हो? यहीं बैठो, इनसे परदा काहे का? यह मेरे भाई हैं."

ज़ीनत नई बहू का नाम था. अध-लजाई बोली—"सलाम भाई साहब!" और बैठ गई.

विनोद बोला—"सलाम बहन!"

धीरे धीरे हिचकिचाहट जाती रही. दोनो मे मोहब्बत हो गई. विनोद ज़ीनत को बहन की नज़र से देखता था, और ज़ीनत उसको भाई की निगाह से.

ज़ीनत के मुंह पर नकाब नहीं था वह पढ़ी लिखी थी. इसके अलावा वह आज़ाद ख़याल थी. उसके माता-पिता बहुत अमीर थे. जब से वह स्कूल जा रही थी और कालेज में दाखिल हुई तबसे उसने बुरके को सलाम कह दिया था.

(३)

बहुत दिन होगए. अब विनोद और ज़ीनत एक दूसरे से मिलने में संकोच न करते थे. अनवर घर पर न रहता तब भी वह दोनों अकेले घर में बैठे बातें करते रहते. अनवर बहुत मरतबा देख चुका था. उसको यह अच्छा न लगा. उसे उनपर शक होने लगा. उसका शक बढ़ने लगा. लेकिन वह कैसे कहता कि तुम दोनो का अकेले में बात करना मुझे पसंद नहीं.

शक दुनिया में बहुत बड़ा धोका है. इसकी बदौलत बेगुनाह

کچھ دن بیت گئے۔ ایک دن انور اپنی نئی دلھن سے بات چیت کر رہا تھا۔ اتنے میں کوئی آیا۔ اُسے پہچان کر انور بولا — "آؤ بھائی جان! خوب آئے۔" ونود کے آتے ہی نئی بہو اُٹھ کر جانے لگی۔ انور نے کہا — "زینت! کدھر جاتی ہو؟ یہیں بیٹھو، ان سے پردا کاہے کا؟ یہ میرے بھائی ہیں۔"

زینت نئی بہو کا نام تھا۔ ادھ لجائی بولی — "سلام بھائی صاحب!" اور بیٹھ گئی۔

ونود بولا — "سلام بہن۔"

دھیرے دھیرے ہچکچاہٹ جاتی رہی۔ دونوں میں محبت ہو گئی۔ ونود زینت کو بہن کی نظر سے دیکھتا تھا، اور زینت اسکو بھائی کی نگاہ سے۔

زینت کے منہ پر نقاب نہیں تھا۔ وہ پڑھی لکھی تھی۔ اس کے علاوہ وہ آزاد خیال تھی۔ اُسکے ماتا پتا بہت امیر تھے۔ جب سے وہ اسکول جا رہی تھی اور کالج میں داخل ہوئی تب سے اس نے برقعے کو سلام کہہ دیا تھا۔

(۳)

بہت دن ہو گئے۔ اب ونود اور زینت ایک دوسرے سے ملنے میں سنکوچ نہ کرتے تھے۔ انور گھر پر نہ رہتا تب بھی وہ دونوں اکیلے گھر میں بیٹھے باتیں کرتے رہتے۔ انور بہت مرتبہ دیکھ چکا تھا۔ اسکو یہ اچھا نہ لگا۔ اسے ان پر شک ہونے لگا۔ اُسکا شک بڑھنے لگا۔ لیکن وہ کیسے کہتا کہ تم دونوں کا اکیلے میں بات کرنا مجھے پسند نہیں۔

شک دنیا میں بہت بڑا دھوکا ہے۔ اِسکی بدولت بے گناہ

गुनहगार समझा जाता है, नेक आदमी बदमाश और निरपराध अपराधी ठहराया जाता है. कभी कभी इससे इन्सान पागल भी हो उठता है. आखिरकार, हक़ीक़त जानने के बाद उसे पछतावा भी होता है. यह सब आदमी की कमज़ोरी है.

(४)

चाँदनी रात थी. रात के आठ बजे थे. घरके सामने के बाग़ीचे में बैठे दो आदमी बहस कर रहे थे. तभी चाँद निकला था. उसकी रोशनी से बाग़ में रौनक़ सी छागई. दोनों एक कोच पर बैठे थे. उनके मुँह पर पूर्णिमा का प्रकाश पड़ रहा था. चाँद मानो गवाही दे रहा था कि कितना अच्छा जोड़ा है इन भाई बहन का.

ज़ीनत ने नेह भरी आँखों से देख कर कहा—"विनोद भइया ! देखिये तो, प्रेम कितना प्यारा लफ्ज़ है. कितना पाक है. इसने हिन्दू-मुसलमान को एक बना दिया. इसके कारन ही हमारा मज़हबी फ़र्क़ मिट गया. या ईश्वर-अल्लाह ! तू कितना पाक है. सभी तुमसे मुहब्बत करते हैं."

विनोद ने बातों का रस लेते हुए कहा—"तो सुनिये ! हिन्दू से मुसलमान ग़ैर नहीं. दोनों एक हैं. भले ही हिन्दू वेद को मानता हो और मुसलमान क़ुरान को. दोनों इन्सान हैं. वेद और क़ुरान दोनों की नसीहतें अनमोल हैं, पवित्र हैं और बहन ! यह मज़हब के फ़र्क़ फ़जूल हैं, मैं राम रहीम से दुआ करता हूँ कि हमारे ये फ़र्क़ मिट जावें. हम सब एक हो जावें !"

सीट के सामनेही एक झाड़ में एक फूल दिखाई दिया जो अभी अभी खिल रहा था. उसपर चाँदनी खूब खिल रही थी. निगाह पड़ते

گناہ گار سمجھا جاتا ہے . نیک آدمی بدمعاش اور نرپرادھ اپرادھی ٹھہرایا جاتا ہے . کبھی کبھی اس سے انسان پاگل بھی ہو اٹھتا ہے . آخرکار حقیقت جاننے کے بعد اُسے پچھتاوا بھی ہوتا ہے . یہ سب آدمی کی کمزوری ہے .

(۴)

چاندنی رات تھی . رات کے آٹھ بجے تھے . گھر کے سامنے کے باغیچے میں بیٹھے دو آدمی بحث کر رہے تھے . تبھی چاند نکلا تھا . اُسکی روشنی سے باغ میں رونق سی چھاگئی . دونوں ایک کوچ پر بیٹھے تھے . اُن کے منہ پر پورنما کا پرکاش پڑ رہا تھا . چاند مانو گواہی دے رہا تھا کہ کتنا اچھا جوڑا ہے ان بھائی بہن کا .

زینت نے نیہ بھری آنکھوں سے دیکھ کر کہا "ونود بھیا ! دیکھئے تو پریم کتنا پیارا لفظ ہے . کتنا پاک ہے . اس نے ہندو مسلمان کو ایک بنا دیا . اس کے کارن ہی ہمارا مذہبی فرق مٹ گیا . یا ایشور اللہ ! تو کتنا پاک ہے . سبھی تجھ سے محبت کرتے ہیں "

ونود نے باتوں کا رس لیتے ہوئے کہا " تو سنئے ! ہندو سے مسلمان غیر نہیں . دونوں ایک ہیں . بھلے ہی ہندو وید کو مانتا ہو اور مسلمان قرآن کو . دونوں انسان ہیں . وید اور قرآن دونوں کی نصیحتیں انمول ہیں ، پوتر ہیں اور بہن ! یہ مذہب کے فرق فضول ہیں ، میں رام رحیم سے دعا کرتا ہوں کہ ہمارے یہ فرق مٹ جاویں . ہم سب ایک ہو جاویں "!

سیٹ کے سامنے ہی ایک جھاڑ میں ایک پھول دکھائی دیا جو ابھی ابھی کھل رہا تھا . اس پر چاندنی خوب کھل رہی تھی . نگاہ پڑتے

ही वह बोला—"केशो-करीम के करिश्मे कौन जानता है ?" कुछ देर तक दोनों चुप रहे फिर विनोद ने सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"यह पूनों की सुहावनी रात कितनी मनोहर, कितनी आनंद देने वाली और सुख देनेवाली है ! इस बग़ीचे के रंग-बिरँगे फूल पत्ते. और यह खुशबूदार हवा ! यह सब किस की लीला है ?"

इतने में पैरों की आहट सुनाई दी. अनवर आया. उसका दिल गुस्से से जल रहा था. बाहर से मुसकराते हुए उसने कहा—"आदाब अर्ज़ है !"

"आदाब अर्ज़ !" विनोद ने जवाब दिया.

ज़ीनत रसोई घरमें गई और तीन प्याले शरबत लेकर लौटी. अनवर ने नहीं पिया और कहा—"मुझे सरदी लगी है." विनोद और ज़ीनत ने बिजली की रोशनी में अनवर का चेहरा देखा तो दोनों के दिल दुखे. दोनों ने समझ लिया कि उसने शरबत क्यों नहीं पिया.

(५)

रात के ११ बजे थे. सारी दुनिया ख़ामोश थी. ज़ीनत ने अनवर से पूछा—"न जाने आपको क्या हो गया है ? इतनी देर हुई और मुझसे नाराज़ हैं. उस वक़्त शरबत भी नहीं पिया. बातें भी नहीं करते."

अनवर ने ताने भरे ढंग से जवाब दिया—"मेरे पास ऐसे सुन्दर और ख़ूबसूरत लफ़्ज़ कहाँ जो तुमसे बातें करूँ ?"

ज़ीनत ने अपने ख़ाविन्द के बाल सुलझाते हुए कहा—"आप बात बात पर बेकार नाराज़ होते हैं. अगर मुझसे कोई

ہی وہ بولا — "کیشو کریم کے کرشمے کون جانتا ہے؟" کچھ دیر تک دونوں چپ رہے پھر ونود نے سلسلہ جاری رکھتے ہوئے کہا — "یہ پونوں کی سہاؤنی رات کتنی منوہر ہے کتنی آنند دینے والی اور سکھ دینے والی ہے! اس باغیچے کے رنگ برنگے پھول پتی اور یہ خوشبودار ہوا! یہ سب کس کی لیلا ہے؟"

اتنے میں پیروں کی آہٹ سنائی دی۔ انور آیا۔ اس کا دل غصے سے جل رہا تھا۔ باہر سے مسکراتے ہوئے اس نے کہا — "آداب عرض ہے"!

"آداب عرض"! ونود نے جواب دیا۔

زینت رسوئی گھر میں گئی اور تین پیالے شربت لیکر لوٹی۔ انور نے نہیں پیا اور کہا — "مجھے سردی لگی ہے"۔ ونود اور زینت نے بجلی کی روشنی میں انور کا چہرہ دیکھا تو دونوں کے دل دکھے۔ دونوں نے سمجھ لیا کہ اس نے شربت کیوں نہیں پیا۔

(۵)

رات کے ۱۱ بجے تھے۔ ساری دنیا خاموش تھی۔ زینت نے انور سے پوچھا — "نہ جانے آپ کو کیا ہو گیا ہے؟ اتنی دیر ہوئی اور مجھ سے ناراض ہیں۔ اس وقت شربت بھی نہیں پیا۔ باتیں بھی نہیں کرتے"۔

انور نے طعنے بھرے ڈھنگ سے جواب دیا — "میرے پاس ایسے سندر اور خوبصورت لفظ کہاں جو تم سے باتیں کروں"؟

زینت نے اپنے خاوند کے بال سلجھاتے ہوئے کہا — آپ بات بات پر بیکار ناراض ہوتے ہیں۔ اگر مجھ سے کوئی

ख़ता हुई तो माफ़........"

"नहीं" अनवर अपने बालों से उसके हाथ हटाते हुए बोला—"तुम्हें माफ़ करना! शर्म नहीं आती? बदनीयत औरत आज मुझे पूरा यक़ीन हो गया कि तुम विनोद से इश्क़ ...."

ज़ीनत ने अपने हाथों से उसका मुँह बंद करते हुए कहा—"या ख़ुदा! ऐसा न कहिये. आप मेरे भइया पर इलज़ाम न लगाइये. वह बेक़सूर हैं. क़सम खाकर कहती हूँ कि हम सिर्फ़ भाई बहन की हैसियत से मिलते और मुहब्बत करते हैं." फिर भी वह गरम होकर बोला—"जब आदमी चोरी करता है तो पुलिस के सामने, कभी नहीं मानता कि मैंने चोरी की है."

उसने भर्राई हुई आवाज़ मे कहा—"आप मुझ पर नाहक़ शुबहा करते हैं. मैं उन्हे अपना भाई समझती हूँ और वह भी मुझे बहन समझते हैं. आपका शक ग़लत है."

अनवर नफ़रत भरी आवाज़ मे बोला—"बदकार औरत, अब भी झूठ का दामन पकड़े बैठी है? सच सच क्यों नहीं कहती कि मुझसे तुझे प्रेम नहीं बल्कि उससे है."

ज़ीनत अपने आँचल में मुंह छिपाकर सिसकयाँ भरने लगी. फिर बहुत रंजीदा होकर बोली—"मुझे माफ़ करो. आइन्दा भइया से ज़्यादा मेलजोल ही न रक्खूँगी."

(६)

'आज यह एकाएक कैसी कायापलट? बहन मुझसे आज बोलीं तक नहीं. अब तक ऐसा न किया था. केवल "नमस्ते भइया" कह-कर अंदर चली गईं. उनको अच्छी तरह देख भी न पाया फिर बातें

خطا ہوئی تو معاف ......"

"نہیں" انور اپنے بالوں سے اُس کے ہاتھ اُٹھاتے ہوئے بولا۔ "تمہیں معاف کرنا! شرم نہیں آتی؟ بدنیت عورت آج مجھے پورا یقین ہو گیا کہ تم ونود سے عشق ......"

زینت نے اپنے ہاتھوں سے اُس کا منہ بند کرتے ہوئے کہا — "یا خدا! ایسا نہ کہئے۔ آپ میرے بھیا پر الزام نہ لگائیے۔ وہ بیقصور ہیں۔ قسم کھا کر کہتی ہوں کہ ہم صرف بھائی بہن کی حیثیت سے ملتے اور محبت کرتے ہیں۔" پھر بھی وہ گرم ہو کر بولا — "جب آدمی چوری کرتا ہے تو پولیس کے سامنے کبھی نہیں مانتا کہ میں نے چوری کی ہے۔"

اُس نے بھرّائی ہوئی آواز میں کہا — "آپ مجھ پر ناحق شبہ کرتے ہیں۔ میں اُنھیں اپنا بھائی سمجھتی ہوں۔ اور وہ بھی مجھے بہن سمجھتے ہیں۔ آپ کا شک غلط ہے۔"

انور نفرت بھری آواز میں بولا — "بدکار عورت، اب بھی جھوٹ کا دامن پکڑے بیٹھی ہے؟ سچ سچ کیوں نہیں کہتی کہ مجھ سے تجھے پریم نہیں بلکہ اُس سے ہے۔"

زینت اپنے آنچل میں منہ چھپا کر سسکیاں بھرنے لگی۔ پھر بہت رنجیدہ ہو کر بولی — "مجھے معاف کرو۔ آئندہ بھیا سے زیادہ میل جول ہی نہ رکھوں گی۔"

(۶)

"آج یہ یکایک کیسی کایا پلٹ؟ بہن مجھ سے آج بولیں تک نہیں۔ اب تک ایسا نہ کیا تھا۔ کیول "نمستے بھیا" کہہ کر

कैसे करता. चेहरा तो ग़मगीन नज़र आता था." "ओफ, शायद भय्या ने हम पर संदेह किया है. और उनको हुक्म दिया होगा कि मुझसे मिलें जुलें नहीं.' विनोद अपने कमरे मे बैठे बैठे, विचार-सागर में तैर रहा था.

इसी तरह दो माह बीत गये. इस बीच मे दो तीन बार वह ज़ीनत के घर गया भी था. पर उससे पहले की तरह बातें न कर पाया. हॉ, अनवर से हमेशा मुलाक़ात होती रहती थी.

विनोद का दिल उससे मिलने के लिये बहुत बेचैन हो रहा था. पर वह जा न सका, और जाकर भी क्या करता, उससे अच्छी तरह मिल तो सकता ही न था

उधर ज़ीनत का दिल अपने भाई को देखने के लिये बेक़रार हो रहा था. पर दोनो हालात से मजबूर थे.

एक माह और गुज़र गया. विनोद अपनी कोठरी मे कुरसी पर बैठा अख़बार पढ़ रहा था. उसकी नज़रें पन्नो पर थीं पर उसका मन और किसी विचार में डूबा था.

इतने में एक आदमी ने आकर उसके हाथ में एक चिट्ठी दी. लिखावट पहचानी हुई थी. उसका दिल धड़कने लगा. उसने जल्दी से उस ख़त को खोला. उसमे लिखा था—"एक बार मेहरबानी करके फ़ौरन यहाँ आइये." दस्तख़त अनवर का था. वह मूरत की तरह बैठ गया. उसके हाथ से ख़त नीचे गिर पड़ा. उसके गिरने की आवाज़ ने उसे जगाया और वह तुरन्त उधर रवाना हुआ.

विनोद अनवर के घर में गया तो देखा कि वहाँ कमरे में ज़ीनत बिछौने पर पड़ी, मौत की राह देख रही थी. वह बहुत कमज़ोर

کیسے کرتا۔ چہرہ تو غمگین نظر آتا تھا۔ ......اُف، شاید بھیا نے ہم پر سندیہ کیا ہے۔ اور انکو حکم دیا ہوگا کہ مجھ سے ملیں جلیں نہیں؛ ونود اپنے کمرے میں بیٹھے بیٹھے، وچار ساگر میں تیر رہا تھا۔

اس طرح دو ماہ بیت گئے۔ اس بیچ میں دو تین بار وہ زینت کے گھر گیا بھی تھا۔ پر اُس سے پہلے کی طرح باتیں نہ کر پایا۔ ہاں، انور سے ہمیشہ ملاقات ہوتی رہتی تھی۔

ونود کا دل اُس سے ملنے کے لئے بہت بےچین ہو رہا تھا۔ پر وہ جا نہ سکا، اور جا کر بھی کیا کرتا؛ اُس سے اچھی طرح مل تو سکتا ہی نہ تھا۔

ادھر زینت کا دل اپنے بھائی کو دیکھنے کے لئے بیقرار ہو رہا تھا۔ پر دونوں حالات سے مجبور تھے۔

ایک ماہ اور گزر گیا۔ ونود اپنی کوٹھری میں کرسی پر بیٹھا اخبار پڑھ رہا تھا۔ اسکی نظریں پنّوں پر تھیں مگر اس کا من اور کسی وچار میں ڈوبا تھا۔

اتنے میں ایک آدمی نے آکر اُس کے ہاتھ میں ایک چٹھی دی۔ لکھاوٹ پہچانی ہوئی تھی۔ اُس کا دل دھڑکنے لگا۔ اس نے جلدی سے اُس خط کو کھولا۔ اس میں لکھا تھا — "ایکبار مہربانی کرکے فوراً یہاں آئیے۔" دستخط انور کا تھا۔ وہ مورت کی طرح بیٹھ گیا۔ اُس کے ہاتھ سے خط نیچے گر پڑا۔ اُس کے گرنے کی آواز نے اُسے جگایا اور وہ ترنت ادھر روانہ ہوا۔

ونود انور کے گھر میں گیا تو دیکھا کہ وہاں کمرے میں زینت بچھونے پر پڑی، موت کی راہ دیکھ رہی تھی۔ وہ بہت کمزور

थी. उसमें उठने की ताक़त न थी. विनोद को देखकर उठने की कोशिश की पर उठ न सकी. टिमटिमाती हुई शमा की सी आँखों से इशारा किया कि वह नजदीक आजावे. उसकी ज़बान में ज़ोर से बोलने की शक्ति भी नहीं थी.

विनोद उसके पास जा बैठा और उसके नैनों से नीर बहने लगे. ज़ीनत के सिरहाने उसका पति बैठा, भीगी आँखों से उसको देख कर, अपने किये पर पछता रहा था. ज़ीनत बोली—"भाईजान, आँसू न बहाओ. मुझे अफ़सोस है कि एक भाई का मुँह उस तरफ़ और दूसरे का इस तरफ़ है. आप दोनो एक ही माँ की औलाद हैं. आपको एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये. अगर अब भी आपके दिल साफ़ होगए तो मरने के बाद मेरी रूह को चैन मिलेगा." इतना कहने के बाद वह थक कर चुप होगई.

और विनोद दुख-सागर में डूबकर बोला—"तुम्हे खुदा अच्छा कर देगा बहन, अब सो जाओ. तुम्हे आराम करना चाहिये."

अनवर दर्द भरी आवाज़ में बोला—"हाँ, हाँ, आराम करो. खुदा तुम्हें सेहत देगा. मैंने तुम पर नाहक़ शक किया. मुझको माफ़ करो. भाई विनोद तुम भी मुझे माफ़ करो."

ज़ीनत की आँखें आँसुओं से तर थीं. उसने कहा—"मेरे सर ताज और विनोद भैया, मैं अब चन्द मिनट की मेहमान हूँ. मेरी जिन्दगी का चराग़ बुझने ही वाला है. आप दोनों को मुझ बद-नसीब की वजह से जो दिली तकलीफ़ें हुईं. उसके लिये आप दोनों मुझे माफ़ करें."

दोनों दोस्त उसके पलंग के और क़रीब हो गये. ज़ीनत ने

تھی. اُس میں اٹھنے کی طاقت نہ تھی. ونود کو دیکھ کر اُٹھنے کی کوشش کی پر اٹھ نہ سکی. ٹمٹماتی ہوئی شمع کی سی آنکھوں سے اشارہ کیا کہ وہ نزدیک آجاوے. اُسکی زبان میں زور سے بولنے کی شکتی بھی نہیں تھی.

ونود اُسکے پاس جا بیٹھا اور اُسکے نینوں سے نیر بہنے لگے. زینت کے سرہانے اُس کا پتی بیٹھا، بھیگی آنکھوں سے اسکو دیکھ کر، اپنے کئے پر پچھتا رہا تھا. زینت بولی— بھائی جان، آنسو نہ بہاؤ. مجھے افسوس ہے کہ ایک بھائی کا منہ اُس طرف اور دوسرے کا اِس طرف ہے. آپ دونوں ایک ہی ماں کی اولاد ہیں. آپکو ایک دوسرے سے پریم کرنا چاہئے. اگر اب بھی آپ کے دل صاف ہوگئے تو مرنے کے بعد میری روح کو چین ملے گا." اتنا کہنے کے بعد وہ تھک کر چپ ہوگئی.

اور ونود دُکھ ساگر میں ڈوب کر بولا— "تمھیں خدا اچھا کردیگا بہن، اب سو جاؤ. تمھیں آرام کرنا چاہئے."

انور درد بھری آواز میں بولا— ہاں، ہاں، آرام کرو. خدا تمھیں صحت دیگا. میں نے تم پر ناحق شک کیا. مجھ کو معاف کرو. بھائی ونود تم بھی مجھے معاف کرو."

زینت کی آنکھیں آنسوؤں سے تر تھیں. اُس نے کہا— "میرے سرتاج اور ونود بھیّا، میں اب چند منٹ کی مہمان ہوں. میری زندگی کا چراغ بجھنے ہی والا ہے. آپ دونوں کو مجھ بدنصیب کی وجہ سے جو دلی تکلیفیں ہوئیں، اُسکے لئے آپ دونوں مجھے معاف کریں.

दोनों के हाथ एक दूसरे से मिला दिये और बोली—"मेरी रूह को अगर सुख पहुँचाना चाहते हैं तो आप दोनों अपने दिल भी इसी तरह मिला लीजिये जैसे हाथ मिलाये है. मै फिर कहूँगी कि आप हमेशा पहले ही जैसे भाई बन कर रहे."

दोनों दोस्तों की आँखों से आँसू बहने लगे. जीनत की आँख का इशारा समझकर वह दोनों उठ कर एक दूसरे से लिपट गये और देर तक एक दूसरे के गले लगे रहे.

यह नज़्ज़ारा देखकर जीनत की आँखों से भी आँसू बहने लगे. वह बोली—"यह आँसू ख़ुशी के आंसू हैं. मेरी क़ुरबानी किसी काम आ गई. अब मैं ख़ुश हूँ और मेरी रूह भी हमेशा ख़ुश रहेगी."

और फिर एक हिचकी के साथ उसकी आँखें हमेशा के लिये बन्द हो गईं पर उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेलती रही.

دونوں کے ہاتھ ایک دوسرے سے ملادئے اور بولی ـــ "میری روح کو اگر سکھ پہچانا چاہتے ہیں تو آپ دونوں اپنے دل بھی اسی طرح ملالیجئے جیسے ہاتھ ملائے ہیں، میں پھر کہوں گی کہ آپ ہمیشہ پہلے ہی جیسے بھائی بن کر رہیں۔

دونوں دوستوں کی آنکھوں سے آنسو بہنے لگے۔ زینت کی آنکھ کا اشارا سمجھ کر وہ دونوں اُٹھ کر ایک دوسرے سے لپٹ گئے اور دیر تک ایک دوسرے کے گلے لگے رہے۔

یہ نظارہ دیکھ کر زینت کی آنکھوں سے بھی آنسو بہنے لگے۔ وہ بولی ـــ "یہ آنسو خوشی کے آنسو ہیں۔ میری قربانی کسی کام آگئی۔ اب میں خوش ہوں اور میری روح بھی ہمیشہ خوش رہے گی"۔

اور پھر ایک ہچکی کے ساتھ اس کی آنکھیں ہمیشہ کے لئے بند ہوگئیں پر اس کے چہرے پر مسکراہٹ کھیلتی رہی۔

दक्खिन अफ़रीक़ा में महात्मा गान्धी

(भाई भवानी दयाल सन्यासी)

जगत पूज्य बापू के बलिदान से हिन्दुस्तान की क़िस्मत के आकाश में गहरा अंधेरा छा गया है. सारा संसार दुखी और भौंचक्का हो रहा है. पर दक्खिन अफ़रीक़ा के प्रवासी हिन्दुस्तानियों का तो सब कुछ ही लुट गया. वहाँ के प्रवासी हिन्दुस्तानियों का उद्धार करने वाला इस संसार से विदा हो गया. इस दुख भरी ख़बर से हर एक आदमी का दिल दुख, पछतावे और शर्म से भर आया है. उनको ऐसा मालूम हो रहा है कि बापू क्या गये, मानो हिन्दुस्तानियों के पैर के नीचे से धरती खिसक गई. सिर पर आसमान टूट पड़ा और आँखों के सामने घोर अँधियारा छा गया है.

बापू ने दक्खिन अफ़रीक़ा में अपने जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा बिताया था—इक्कीस बरस तक वहाँ के प्रवासी भाइयों के पबलिक जीवन की रहनुमाई की थी. उनके वहाँ रहने के समय की मोहब्बत भरी यादें वहाँ के हिन्दुस्तानियों को क्या कभी भूल सकती हैं? इस महापुरुष ने दक्खिन अफ़रीक़ा में ऐसा ऊँचा, पाक और त्यागी जीवन बिताया था कि मौजूदा दुनिया में उसका जोड़ मिल ही नहीं सकता. पच्छिम की कट्टर पन्थी प्रजा के बीच में पूरब के इस साधु पुरुष ने अपनी सच्चाई से, अपनी बेग़रज़ सेवा से, दुनिया भर के लोगों को भाई समझने के भाव से, पिछड़े

دکھن افریقہ میں مہاتما گاندھی

(بھائی بھگوانی دیال سنیاسی)

جگت پوجیہ باپو کے بلیدان سے ہندستان کی قسمت کے آکاش میں گہرا اندھیرا چھا گیا ہے۔ سارا سنسار دکھی اور بھونچکا ہو رہا ہے۔ پر دکھن افریقہ کے پرواسی ہندستانیوں کا تو سب کچھ ہی لٹ گیا۔ وہاں کے پرواسی ہندستانیوں کا اُدّھار کرنے والا اس سنسار سے وداع ہو گیا۔ اس دکھ بھری خبر سے ہر ایک آدمی کا دل دکھ پچھتاوے اور شرم سے بھر آیا ہے۔ اُن کو ایسا معلوم ہو رہا ہے کہ باپو کیا گئے، مانو ہندستانیوں کے پیر کے نیچے سے دھرتی کھسک گئی۔ سر پر آسمان ٹوٹ پڑا اور آنکھوں کے سامنے گھور اندھیارا چھا گیا ہے۔

باپو نے دکھن افریقہ میں اپنے جیون کا سب سے اچھا حصہ بتایا تھا— اکیس برس تک وہاں کے پرواسی بھائیوں کے پبلک جیون کی رہنمائی کی تھی۔ اُنکے وہاں رہنے کے سمے کی محبت بھری یادیں وہاں کے ہندستانیوں کو کیا کبھی بھول سکتی ہیں؟ اس مہاپرش نے دکھن افریقہ میں ایسا اونچا، پاک اور تیاگی جیون بتایا تھا کہ موجودہ دنیا میں اس کا جوڑ مل ہی نہیں سکتا۔ پچھم کی کٹر پنتھی پرجا کے بیچ میں پورب کے اس سادھو پرش نے اپنی سچائی سے، اپنی بے غرض سیوا سے، دنیا بھر کے لوگوں کو بھائی سمجھنے کے بھاؤ سے، پچھڑے

हुये देश वासियों की सच्ची ख़िदमत से और सत्याग्रह के इस्तेमाल से सारी दुनिया को ताज्जुब में डाल रक्खा था. पूरब की जनता गिरी हुई है, जंगली है, कुली कबाड़ियों का गिरोह है—यही वहाँ के सफ़ेद चमड़ी वालों का पक्का ख़याल था. इसी लिये वह हिन्दुस्तानियों के साथ बदसलूक़ी और उनपर ज़ुल्म करने में ज़रा भी न हिचकिचाते थे. पर सचाई के पुजारी महात्मा गांधी ने उनके ज़ुल्मोंका मुक़ाबला करने के लिये सत्याग्रह का तरीक़ा ईजाद किया. इस अजीब-ग़रीब हथियार का पहला इस्तेमाल और तजरबा दक्खिन अफ़रीक़ा की लड़ाई में ही किया गया. दुनिया में अपने ढंग की यह पहली लड़ाई थी. इस में तोपें और बन्दूक़ें नहीं चली थीं, बमों और गोलों की बरखा नहीं हुई थी, हवाई जहाज़ों ने फटने वाले गोले नहीं गिराये थे, तलवारों की झनकार और संगीनों की मार नहीं हुई थी, पर थी यह लड़ाई. बड़ी भयंकर लड़ाई, ऐसी लड़ाई जिसने दुनिया को दिखाया कि हैवानी ताक़त ही सब कुछ नहीं है आत्मा की ताक़त भी कोई चीज़ है. लड़ाई थी पर बिना हथियार के. क्या यह संसार का "आठवाँ" अचंभा नहीं है ? क्या दुनिया के इतिहास में ऐसी दूसरी मिसाल मिल सकती है ? नहीं, यह लड़ाई, यह सत्याग्रह की लड़ाई दुनिया में एक ही है.

सन् १९१३ में सत्याग्रह की आख़िरी लड़ाई में कई दिल हिलाने वाली और सनसनी पैदा करने वाली दुर्घटनायें हुईं. दक्खिन अफ़रीक़ा की बेरहम सरकार ने निहत्थे हिन्दुस्तानी मज़दूरों पर गोलियों की बौछार कराके ज़ुल्म की इन्तिहा कर डाली थी. कितनी ही बेगुनाह आत्मायें धरती माता की गोद में

ہوئے دیش واسیوں کی سچی خدمت سے اور ستیہ گرہ کے استعمال سے ساری دنیا کو تعجب میں ڈال رکھا تھا۔ پورب کی جنتا گری ہوئی ہے، جنگلی ہے، کلی کباڑیوں کا گروہ ہے — یہی وہاں کے سفید چمڑے والوں کا پکا خیال تھا۔ اسی لئے وہ ہندستانیوں کے ساتھ بدسلوکی اور ان پر ظلم کرنے میں ذرا بھی نہ ہچکچاتے تھے۔ پر سچائی کے پجاری مہاتما گاندھی نے اُن کے ظلموں کا مقابلہ کرنے کے لئے ستیہ گرہ کا طریقہ ایجاد کیا۔ اس عجیب غریب ہتھیار کا پہلا استعمال اور تجربہ دکھن افریقہ کی لڑائی میں ہی کیا گیا۔ دنیا میں اپنے ڈھنگ کی یہ پہلی لڑائی تھی۔ اس میں توپیں اور بندوقیں نہیں چلی تھیں، بموں اور گولوں کی برکھا نہیں ہوئی تھی، ہوائی جہازوں نے پھٹنے والے گولے نہیں گرائے تھے، تلواروں کی جھنکار اور سنگینوں کی مار نہیں ہوئی تھی، پر تھی یہ لڑائی۔ بڑی بھینکر لڑائی، ایسی لڑائی جس نے دنیا کو دکھایا کہ حیوانی طاقت ہی سب کچھ نہیں ہے۔ آتما کی طاقت بھی کوئی چیز ہے۔ لڑائی تھی پر بنا ہتھیار کے۔ کیا یہ سنسار کا "آٹھواں" اچنبھا نہیں ہے؟ کیا دنیا کے اتہاس میں ایسی دوسری مثال مل سکتی ہے؟ نہیں، یہ لڑائی، یہ ستیہ گرہ کی لڑائی دنیا میں ایک ہی ہے؟

سنہ ۱۹۱۳ میں ستیہ گرہ کی آخری لڑائی میں کئی دل ہلانے والی اور سنسنی پیدا کرنے والی دُرگھٹنائیں ہوئیں۔ دکھن افریقہ کی بےرحم سرکار نے نہتے ہندستانی مزدوروں پر گولیوں کی بوچھار کرا کے ظلم کی انتہا کر ڈالی تھی۔ کتنی ہی بےگناہ آتمائیں دھرتی ماتا کی گود میں

सदा के लिये सो गईं, उनकी स्त्रियाँ विधवा बन गईं, उनके बच्चे यतीम हो गये. जिस वक्त यह वाक़आत हुये, उस वक्त बापू जेलखाने में बन्द थे. जब वह जेल से छूटकर आये और मजदूरों के बलिदान की कहानी सुनी तो शोक में डूब गये. उनके दिल पर कैसी गहरी चोट पहुँची थी इसका ख़याल वही लोग कर सकते हैं जिन्हों ने अपनी आँखों से उस नज्जारे को देखा था और यह लाइनें लिखने वाला ख़ुशक़िस्मती से उनमें से एक था. शहीदों के लिये अपना ग़म ज़ाहिर करने के लिये बापू ने अपने खाने पीने और रहने सहने का ढंग बदल दिया. अब तक वह दिन में दो बार फल खाते थे. उसकी जगह सिर्फ़ एक ही बार फल खाने का उन्होंने व्रत ले लिया. पैरों में वह जो चप्पल पहनते थे उसे भी उन्होंने त्याग कर नंगे पैरों चलने का संकल्प(अहद) कर लिया. कोट पतलून और क़मीज़ उतार कर उन्होंने रख दिये और अंग ढकने के लिये मोटिया की एक छोटी धोती और मोटिया का ही एक कुरता पहन लिया. कंधे पर एक झोली लटका ली और हाथ में एक लम्बी लाठी थामली. उनके इस देवताओं जैसे साधु भेस को देख कर मेरा तो दिल भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे. अपने जिस्म को तकलीफ पहुँचाने की उनकी अजीब ताक़त और कड़ी तपस्या को देख कर विरोधियों के मुँह से भी बेसाख़्ता निकल पड़ा कि—"आदमी है तो यही एक ! इस के जोड़ का इन्सान और कहाँ मिलेगा ?"

सन् १९१३ की बाईसवीं दिसम्बर—सोमवार का दिन इस जीवन में मुझे कभी भूलेगा नहीं. डरबन के फील्ड स्ट्रीट में स्वर्ग वासी काका रुस्तम जी के मकान पर सत्याग्रही मजदूरों की भीड़ लगी थी. मकान

سدا کے لئے سوگئیں، اُن کی استریاں ودھوا بن گئیں۔ اُن کے بچے یتیم ہوگئے۔ جس وقت یہ واقعات ہوئے، اس وقت باپو جیل خانے میں بند تھے۔ جب وہ جیل سے چھٹ کر آئے، اور مزدوروں کے بلیدان کی کہانی سنی تو شوک میں ڈوب گئے۔ اُنکے دل پر کیسی گہری چوٹ پہنچی تھی اسکا خیال وہی لوگ کرسکتے ہیں جنھوں نے اپنی آنکھوں سے اس نظارے کو دیکھا تھا اور یہ لائن لکھنے والا خوش قسمتی سے اُن میں سے ایک تھا۔ شہیدوں کے لئے اپنا غم ظاہر کرنے کے لئے باپو نے اپنے کھانے پینے اور رہنے سہنے کا ڈھنگ بدل دیا۔ اب تک وہ دن میں دو بار پھل کھاتے تھے۔ انکی جگہ صرف ایک ہی بار پھل کھانے کا انھوں نے برت لے لیا۔ پیروں میں وہ جو چپل پہنتے تھے اُسے بھی انھوں نے تیاگ کر ننگے پیروں چلنے کا سنکلپ (عہد) کر لیا۔ کوٹ پتلون اور قمیض اتار کر انھوں نے رکھ دیا اور انگ ڈھکنے کے لئے موٹیا کی ایک چھوٹی دھوتی اور موٹیا کا ہی ایک کرتا پہن لیا۔ کندھے پر ایک جھولی لٹکالی اور ہاتھ میں ایک لمبی لاٹھی تھام لی۔ انکے اس دیوتاؤں جیسے سادھو بھیس کو دیکھ کر میرا تو دل بھر آیا، آنکھوں سے آنسو بہنے لگے۔ اپنے جسم کو تکلیف پہنچانے کی انکی عجیب طاقت اور بڑی تپسیا کو دیکھ کر ورودھیوں کے منہ سے بھی بیساختہ نکل پڑا کہ "آدمی ہے تو یہی ایک! اسکے جوڑ کا انسان اور کہاں ملیگا؟"

سنہ ۱۹۱۳ کی بائیسویں دسمبر — سوموار کے دن اس جیون میں مجھے کبھی بھولے گا نہیں۔ ڈربن کے فیلڈ اسٹریٹ میں سورگ واسی کاکا رستم جی کے مکان پر ستیہ گرہی مزدوروں کی بھیڑ لگی تھی۔ مکان

के अहाते में औरतों बच्चों के साथ सैकड़ो हड़ताली मजदूर बैठे थे, जिनमें लड़ाई में काम आने वाले शहीदों की विधवायें और बच्चे भी थे. शाम के वक्त कोई चार बजे बापू वहाँ आये. उनको जेल से लौटे हुये सिर्फ दो दिन हुये थे. वह उन मजदूरों के मजमे में दाखिल हुये. आँगन के एक कोने में जहाँ स्वर्गवासी सुम्माई और सेलवन की विधवायें गोद में बच्चे थामे बैठी थीं, बापू उनके पास पहुँचे. इस साधु पुरुष को देख कर उन विधवाओं का दिल दुख से भर आया और वह बापू के क़दमों पर गिर कर रोने लगीं. बापू ने उनको बड़े प्रेम और कोशिश से उठाया. उनको रोता देख कर बापू की आँखें भी भर आईं. उनके कंधे पर हाथ रखकर बापू उनकी तरफ कुछ देर तक देखते रहे जैसे उनकी आँखों की काली पुतलियाँ उन दीन दुखी विधवाओं के रूप में हिन्दुस्तान की तीस करोड़ जनता की बरबादी देख रही हों. उस समय इस अलौकिक महा पुरुष के दिल में कैसे कैसे भाव उठ रहे थे, यह तो कहना मुशकिल है, पर मुझे तो ऐसा महसूस हुआ जैसे एक बहुत ही ग़रीब स्त्री के रूप में खुद भारत माता अपने एक सपूत के सामने रो रही हैं."भारत माता के पैरों से ग़ुलामी की बेड़ियाँ काटकर और उसके माथे पर आज़ादी का तिलक चढ़ाकर ही मैं दम लूंगा." ऐसी जबरदस्त प्रतिज्ञा बापू कर रहे हैं, यह भाव उनकी आखों से झलक रहा था.

बापू ने तामिल जानने वाले एक दुभाषिये (दो जबानें जानने वाले) को बुलाया. कड़ी तपस्या और तकलीफें बरदाश्त करने से उनका जिस्म बहुत कमज़ोर हो गया था तो भी उनके चेहरे पर एक खास चमक दिखाई पड़ रही थी. फिर उनके मुँह से बहुत गंभीर

کے احاطے میں عورتوں بچوں کے ساتھ سینکڑوں ہڑتالی مزدور بیٹھے تھے، جن میں لڑائی میں کام آنے والے شہیدوں کی ودھوائیں اور بچے بھی تھے۔ شام کے وقت کوئی چار بجے باپو وہاں آئے۔ انکو جیل سے لوٹے ہوئے صرف دو دن ہوئے تھے۔ وہ ان مزدوروں کے مجمعے میں داخل ہوئے آنگن کے ایک کونے میں جہاں سورگ واسی سوجھائی اور سیلون کی ودھوائیں گود میں بچے تھامے بیٹھی تھیں، باپو ان کے پاس پہنچے۔ اس سادھو پرش کو دیکھ کر ان ودھواؤں کا دل دکھ سے بھر آیا اور وہ باپو کے قدموں پر گر کر رونے لگیں۔ باپو نے انکو بڑے پریم اور کوشش سے اٹھایا۔ انکو روتا دیکھ کر باپو کی آنکھیں بھی بھر آئیں۔ ان کے کندھے پر ہاتھ رکھ کر باپو انکی طرف کچھ دیر تک دیکھتے رہے جیسے انکی آنکھوں کی کالی پتلیاں اُن دین دکھی ودھواؤں کے روپ میں ہندستان کی تیس کروڑ جنتا کی بربادی دیکھ رہی ہوں۔ اُس سمے اس الوکِک مہا پرش کے دل میں کیسے کیسے بھاؤ اُٹھ رہے تھے، یہ تو کہنا مشکل ہے، پر مجھے تو ایسا محسوس ہوا جیسے کہ بہت ہی غریب استری کے روپ میں خود بھارت ماتا اپنے ایک سپوت کے سامنے رو رہی ہیں۔ "بھارت ماتا کے پیروں سے غلامی کی بیڑیاں کاٹ کر اور اسکے ماتھے پر آزادی کا تلک چڑھا کر ہی میں دم لونگا" ایسی زبردست پرتگیا باپو کر رہے ہیں۔ یہ بھاؤ اُنکی آنکھوں سے جھلک رہا تھا۔

باپو نے تامِل جاننے والے ایک دو بھاشیے (دو زبان جاننے والے) کو بلایا۔ کڑی تپسیا اور تکلیفیں برداشت کرنے سے انکا جسم بہت کمزور ہو گیا تھا تو بھی انکے چہرے پر ایک خاص چمک دکھائی پڑ رہی تھی۔ پھر انکے منہ سے بہت گمبھیر

आवाज़ में शब्द निकलने लगे. दुभाषिया उसका मतलब तामिल में समझाता जाता था—"माँ ! धीरज धरो, रो मत. तुम्हारे दुख में हम सब को तुम्हारे साथ हमदर्दी है. तुम्हारा पति जो ज़ालिमों की गोली से शहीद हो गया है वह स्वर्ग में भगवान की गोद में बिराज रहा है. उसने अपने देशभाइयों के लिये अपने जिस्म की कुरबानी की है, उसका नाम इतिहास में अमर हो गया है. अगर वह किसी बीमारी से खाट पर पड़ा पड़ा मर जाता तो आज मैं तुम्हारे साथ हमदर्दी ज़ाहिर करने शायद न आता, दुनिया भी उसके बारे में कुछ न जानती. पर वह लड़ाई में बहादुरों की तरह मरा है. सारी क़ौम उसकी क़ुरबानी को याद करेगी.

इस लिये माँ ! तुम अफ़सोस मत करो. भारत माता आसानी से आज़ाद न हो सकेंगी. हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में जब हज़ारों लाखों बलिदान होंगे और तुम जैसी हज़ारों माँ बहनों के विधवा बनने की नौबत आयगी तभी हमारा देश आज़ाद हो सकेगा. माँ ! मैंने अपना यह जिस्म और सिर हिन्द माता के क़दमों में सौंप रक्खा है. जब ज़ालिम की तलवार इस सिर को धड़ से अलग कर देगी या उसकी गोली मेरे जीवन का चराग़ बुझा देगी और मेरी पत्नी भी तुम जैसी ग़रीब और दुखी विधवा बन जायगी तब मैं समझूँगा कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी हुई—मेरा व्रत सफल हुआ."

इतना कहकर उस महापुरुष ने मज़दूर की उस विधवा स्त्री को 'दासनम' (मद्रासी सलाम) किया और वहाँ से चला गया. देखने वाले इस अजीब नज़्ज़ारे को देखकर और सुनने वाले ...

آواز میں شبد نکلنے لگے۔ دو بھاشیہ اُسکا مطلب تامل میں سمجھاتا جاتا تھا۔ "ماں! دھیرج دھرو، رو مت۔ تمہارے دکھ میں ہم سب کو تمہارے ساتھ ہمدردی ہے۔ تمہارا پتی جو ظالموں کی گولی سے شہید ہوگیا ہے وہ سورگ میں بھگوان کی گود میں براج رہا ہے، اسنے اپنے دیش بھائیوں کے لئے اپنے جسم کی قربانی کی ہے، اسکا نام اتہاس میں امر ہوگیا ہے۔ اگر وہ کسی بیماری سے کھاٹ پر پڑا پڑا مرجاتا تو آج میں تمہارے ساتھ ہمدردی ظاہر کرنے شاید نہ آتا، دنیا بھی اُسکے بارے میں کچھ نہ جانتی۔ پر وہ لڑائی میں بہادروں کی طرح مرا ہے۔ ساری قوم اسکی قربانی کو یاد کرے گی۔

اس لئے ماں! تم افسوس مت کرو۔ بھارت ماتا آسانی سے آزاد نہ ہو سکے گی۔ ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں جب ہزاروں لاکھوں بلیدان ہونگے اور تم جیسی ہزاروں ماں بہنوں کو ودھوا ہونے کی نوبت آئے گی تبھی ہمارا دیش آزاد ہو سکے گا۔ ماں! میں نے اپنا یہ جسم اور سر ہند ماتا کے قدموں میں سونپ رکھا ہے۔ جب ظالم کی تلوار اس سر کو دھڑ سے الگ کردے گی یا اس کی گولی میرے جیون کا چراغ بجھا دے گی اور میری پتنی بھی تم جیسی غریب اور دکھی ودھوا بن جائے گی تب میں سمجھوں گا کہ میری پرتگیاں پوری ہوئی ـــ میرا برت سپھل ہوا۔"

اتنا کہہ کر اس مہاپرش نے مزدور کی اس ودھوا استری کو 'دواس نم' (مدراسی سلام) کیا اور وہاں سے چلا گیا۔ دیکھنے والے

को सुनकर भौचक्के रह गये, सब की आँखों से आँसू टपकने लगे. कई तो इस दर्दनाक नज़्ज़ारे को देखने की हिम्मत ही न कर सके और वहाँ से हट गये. उस दिन यह कौन सोच सकता था कि बापू का यह कहना एक दिन बिलकुल सही साबित होगा. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना ही पड़ा कि बा को विधवा होने की नौबत न आई—इससे पहले ही वह हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में अपनी ज़िन्दगी क़ुरबान करके स्वर्ग को सिधार गईं, और बापू किसी ज़ालिम विदेशी के हाथ से नहीं, अपने एक देश वासी के हाथ से बलिदान हो गये.

बापू आर्य धर्म के दस लच्छनों के साकार रूप थे, और अपनी ज़िन्दगी में उन्होंने इन लच्छनों धृति (इस्तेकलाल), क्षमा (माफ़ी), दम (हब्से दम), आस्तेय (चोरी न करना), शौच (सफ़ाई), इन्द्रीय-निग्रह (नफ़्स कुशी), धी (दानिश), विद्या (इल्म), सत्य (हक़) और अक्रोध (ग़ुस्सा न करना) पर अमल करके तमाम इन्सानों के लिये एक मिसाल कायम कर दी थी. उनके माफ़ करने का एक वाक़ेआ याद आ रहा है. यह इस सदी के बिलकुल शुरू की बात है. ट्रांसवाल में सत्याग्रह की लड़ाई शुरू हुई. सैकड़ों हिन्दुस्तानी जेलों में ठूँस दिये गये. हिन्दुस्तान और इंगलैंड में ज़बरदस्त हलचल मच गई. "ट्रांसवाल एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट" के मुताबिक़ हर एक हिन्दुस्तानी को चोर-डाकू और ख़ूनी की तरह दस उंगलियों की अलग अलग और चार चार उंगलियों की एक साथ कुल अट्ठारह उंगलियों की निशानी देकर सार्टिफ़िकेट लेना लाज़िमी बना दिया गया था. इस जंगली क़ानून

کو سنکر بھونچکے رہ گئے، سب کی آنکھوں سے آنسو ٹپکنے لگے۔ کئی تو اس دردناک نظارے کو دیکھنے کی ہمت ہی نہ کر سکے اور وہاں سے ہٹ گئے۔ اُس دن یہ کون سوچ سکتا تھا کہ باپو کا یہ کہنا ایک دن بالکل صحیح ثابت ہوگا۔ فرق صرف اتنا ہی پڑا کہ با کو ودھوا ہونے کی نوبت نہ آئی — اس سے پہلے ہی وہ ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں اپنی زندگی قربان کرکے سورگ کو سدھار گئیں، اور باپو کسی ظالم ودیشی کے ہاتھ سے نہیں، اپنے ایک دیش واسی کے ہاتھ سے بلیدان ہو گئے۔

باپو آریہ دھرم کے دس لچھنوں کے ساکار روپ تھے، اور اپنی زندگی میں انھوں نے ان لچھنوں دھرتی (استقلال) کشما (معافی) دم (حبس دم) آستیہ (چوری نہ کرنا) شوچ (صفائی) اندریہ نگرہ (نفس کشی) دھی (دانش) ودّیا (علم)، ستیہ (حق) اور اکرودھ (غصہ نہ کرنا) پر عمل کرکے تمام انسانوں کے لئے ایک مثال قائم کردی تھی۔ اُنکے معاف کرنے کا ایک واقعہ یاد آرہا ہے۔ یہ اس صدی کے بالکل شروع کی بات ہے۔ ٹرانسوال میں ستیہ گرہ کی لڑائی شروع ہوئی۔ سینکڑوں ہندستانی جیلوں میں ٹھونس دئے گئے۔ ہندستان اور انگلینڈ میں زبردست ہلچل مچ گئی۔ "ٹرانسوال ایشیاٹک رجسٹریشن ایکٹ" کے مطابق ہر ایک ہندستانی کو چور ڈاکو اور خونی کی طرح دس انگلیوں کی الگ الگ اور چار چار انگلیوں کی ایک ساتھ کل اٹھارہ انگلیوں کی نشانی دے کر سرٹیفیکیٹ لینا لازمی بنا دیا گیا تھا۔ اس جنگلی قانون

की दुनिया में बड़ी बुराई हुई. प्रवासी हिन्दुस्तानियों ने क़ैदियों की तरह उंगलियों की निशानी देकर अपनी क़ौम को ज़लील करने के मुक़ाबले में मरजाना ही बेहतर समझा. इंगलैंड का दबाव पड़ने पर ट्रांसवाल की सरकार को कुछ फ़िक्र हुई. सरकार के करता धरता जनरल स्मट्स ने बापू से मुलाक़ात की और उनको समझाया कि चूँकि क़ानून बन चुका और क़ानून को अमल मे लाना सरकार का फ़र्ज़ है, पर जब क़ानून की इतनी मुख़ालफ़त हो रही है तो हम उस पर फिर से ग़ौर करने को तैयार हैं. फ़िल हाल कोई न कोई सूरत निकाल कर इस नागवार मसले को ख़तम कर देना चाहिये. अगर आप हिन्दुस्तानियों को समझाकर क़ानून को लागू करा दें तो मैं आप से सरकार की तरफ़ से वादा करता हूँ—यक़ीन दिलाता हूँ कि पार्लियामेन्ट की अगली बैठक में सरकार क़ानून को ही रद्द कर डालेगी.

बापू की सादी तबियत ने चालाक और मक्कार स्मट्स की बात पर विश्वास कर लिया. बापू ने जोहान्सबर्ग में प्रवासी हिन्दुस्तानियों की सभा बुलाई और सब को समझाया कि सरकार समझौता करना चाहती है और पार्लियामेन्ट की अगली बैठक में क़ानून को रद्द कर देने का भी वादा करती है बशर्तेकि फ़िलहाल हिन्दुस्तानी उंगलियों की निशानी देकर "रजिस्ट्रेशन सार्टिफ़िकेट' लेलें. चूँकि क़ानून को रद्द करना ही हमारा ख़ास मक़सद है, दूसरी सब बातें मामूली हैं, इसलिये अब अपनी मरज़ी से निशानी देकर सार्टिफ़िकेट लेने में कोई हर्ज नहीं है. बापू ने यह भी समझाया कि जबरदस्ती उंगलियों की छाप लिया जाना और अपनी मर्ज़ी से निशान दे

کی دنیا میں بڑی برائی ہوئی۔ پرواسی ہندستانیوں نے قیدیوں کی طرح انگلیوں کی نشانی دے کر اپنی قوم کو ذلیل کرنے کے مقابلے میں مرجانا ہی بہتر سمجھا۔ انگلینڈ کا دباؤ پڑنے پر ٹرانسوال کی سرکار کو کچھ فکر ہوئی۔ سرکار کے کرتا دھرتا جنرل سمٹس نے باپو سے ملاقات کی اور انکو سمجھایا کہ چونکہ قانون بن چکا اور قانون کو عمل میں لانا سرکار کا فرض ہے، پر جب قانون کی اتنی مخالفت ہو رہی ہے تو ہم اس پر پھر سے غور کرنے کو تیار ہیں۔ فی الحال کوئی نہ کوئی صورت نکال کر اس ناگوار مسئلے کو ختم کر دینا چاہئے۔ اگر آپ ہندستانیوں کو سمجھا کر قانون کو لاگو کرا دیں تو میں آپ سے سرکار کی طرف سے وعدہ کرتا ہوں — یقین دلاتا ہوں کہ پارلیمنٹ کی اگلی بیٹھک میں سرکار قانون کو ہی رد کر ڈالے گی۔

باپو کی سادی طبیعت نے چالاک اور مکار سمٹس کی بات پر وشواس کر لیا۔ باپو نے جوہانسبرگ میں پرواسی ہندستانیوں کی سبھا بلائی اور سب کو سمجھایا کہ سرکار سمجھوتہ کرنا چاہتی ہے اور پارلیامنٹ کی اگلی بیٹھک میں قانون کو رد کر دینے کا بھی وعدہ کرتی ہے بشرطیکہ فی الحال ہندستانی انگلیوں کی نشانی دے کر "رجسٹریشن سرٹیفکیٹ" لے لیں۔ چونکہ قانون کو رد کرنا ہی ہمارا خاص مقصد ہے، دوسری سب باتیں معمولی ہیں، اس لئے اب اپنی مرضی سے نشانی دے کر سرٹیفکیٹ لینے میں کوئی حرج نہیں ہے۔ باپو نے یہ بھی سمجھایا کہ زبردستی ... مرضی سے نشانی دے

आना, दोनों में जमीन आसमान का फ़र्क़ है. लेकिन कुछ बदमाश आदमियों ने लोगों को बहकाया कि बापू सरकार से मिल गये हैं—वह क़ौमी हक़ को बेचकर अपना मतलब गाँठना चाहते हैं. इस से कुछ जाहिल और अज्ञानी पठान भड़क उठे. बापू ने खुद उंगलियों की छाप दे कर रजिस्ट्रेशन सार्टिफ़िकेट लेने का इरादा कर लिया ताकि किसी को ख़ुशी से निशानी देने में झिझक न हो. इसका ज़िक्र हर जगह हो रहा था और बापू के पास धमकी से भरी चिट्ठियाँ भी पहुँच रही थीं. पर बापू अपने इरादे से कब डिगने और किसी की धमकी से डरने वाले थे. उनको अपनी अन्दर की आवाज़ के मुताबिक़ चलने से दुनिया को कोई भी ताक़त नहीं रोक सकती थी. चाहे वह ताक़त इन्सानी हो या शैतानी.

बापू अपने कुछ साथियों के साथ उंगलियों की छाप देकर सनद लेने के लिये एशियाटिक आफिस को रवाना हुए. कुछ झगड़ालू पठानों ने भी हमला करने के लिये उनका पीछा किया. एक गली में मुठभेड़ हो गई. "आप कहाँ जा रहे हैं?" बदमाशों ने पूछा. बापू ने जवाब दिया—"उंगलियों की निशानी देकर सनद लेने के वास्ते." फिर क्या था. बापू पर लाठियों की मार पड़ने लगी. उनके सामने के दो दाँत टूट गये, सिर फट गया और बदन चूर चूर हो गया. "हाय राम!" कह कर वह धरती पर गिर पड़े. गिर जाने पर भी बदमाशों ने उनको बेरहमी से पीटा. यह सोचकर कि बापू मर गये, हमलावर वहाँ से रफ़ूचक्कर हो गये. गोरों की भीड़ वहाँ जमा हो गई. गोरों ने बापू को उठाकर एक पास के मकान मे पहुँचाया. उसी वक्त हिन्दुस्तानियों के दोस्त और बापू की पहली जीवनी लिखने

آنا، دونوں میں زمین آسمان کا فرق ہے. لیکن کچھ بدمعاش آدمیوں نے لوگوں کو بہکایا کہ باپو سرکار سے مل گئے ہیں — وہ قومی حق کو بیچ کر اپنا مطلب گانٹھنا چاہتے ہیں. اس سے کچھ جاہل اور اگیانی پٹھان بھڑک اٹھے. باپو نے خود انگلیوں کی چھاپ دے کر رجسٹریشن سرٹیفیکیٹ لینے کا ارادہ کر لیا تاکہ کسی کو خوشی سے نشانی دینے میں جھجھک نہ ہو. اس کا ذکر ہر جگہ ہو رہا تھا اور باپو کے پاس دھمکی سے بھری چٹھیاں بھی پہنچ رہی تھیں. پر باپو اپنے ارادے سے کب ڈگنے اور کسی کی دھمکی سے ڈرنے والے تھے. انکو اپنی اندر کی آواز کے مطابق چلنے سے دنیا کی کوئی بھی طاقت نہیں روک سکتی تھی. چاہے وہ طاقت انسانی ہو یا شیطانی.

باپو اپنے کچھ ساتھیوں کے ساتھ انگلیوں کی چھاپ دے کر سند لینے کے لئے ایشیاٹک آفس کو روانہ ہوئے. کچھ جھگڑالو پٹھانوں نے بھی حملہ کرنے کے لئے انکا پیچھا کیا. ایک گلی میں مڈبھیڑ ہو گئی. "آپ کہاں جا رہے ہیں؟" بدمعاشوں نے پوچھا. باپو نے جواب دیا— "انگلیوں کی نشانی دے کر سند لینے کے واسطے." پھر کیا تھا. باپو پر لاٹھیوں کی مار پڑنے لگی. اُن کے سامنے کے دو دانت ٹوٹ گئے، سر پھٹ گیا اور بدن چور چور ہو گیا. "ہائے رام!" کہہ کر وہ دھرتی پر گر پڑے. گر جانے پر بھی بدمعاشوں نے اُن کو بیرحمی سے پیٹا. یہ سوچ کر کہ باپو مر گئے، حملہ آور وہاں سے رفوچکر ہو گئے. گوروں کی بھیڑ وہاں جمع ہو گئی. گوروں نے باپو کو اٹھا کر ایک پاس کے مکان میں پہنچایا. اسی وقت ہندستانیوں کے دوست اور باپو کی پہلی جیونی لکھنے

वाले पादरी जे० जे० डोक वहाँ आ पहुँचे और वह बापू को बड़ी ख़राब हालत में उठाकर अपने घर लाये. उन्होने और उनकी पत्नी और बच्चों ने बड़े ही प्रेम और लगन से सेवा करके बापू को बचा-लिया. पुलिस ने हमला करने वाले मीर आलम वग़ैरा पठानों को गिरफ़तार कर लिया था, इनपर मुक़द्दमा चलाने के लिये पुलिस बापू का बयान लेने पादरी डोक के घर पहुँची. बीमारी की खाट पर पड़े हुए इस साधु के दिल से दया और माफ़ी का सोता फूट पड़ा. टूटी फूटी और लड़खड़ाती आवाज़ में उन्होंने पुलिस से कहा—"उस भाई को ऐसा मालूम हुआ कि मैं भूल कर रहा हूँ, इस लिये उसने मुझे भूल से रोकने की कोशिश की. उस पर मुक़द्दमा चला कर सज़ा दिलाना मुझे मंज़ूर नहीं." यह कहकर उन्हों ने बयान देने से इन्कार कर दिया. पुलिस निराश हो कर लौट गई. ईसा मसीह के मानने वाले उस पादरी के घर में हिन्दुस्तान के इस सन्त ने उनके पैग़म्बर की इस तालीम पर कि "अपने दुशमन से भी उतना ही प्रेम करो जितना कि तुम ख़ुद अपने से करते हो." अपनी ज़िन्दगी में अमल कर के दिखला दिया. उस ईसाई कुन्बे को ऐसा महसूस हुआ जैसे उनका मसीहा ही बापू के रूप में उनके घर को पाक कर रहा है.

बापू पर हमला करने वाला पठान मुसलमान था. इस घटना से कहीं हिन्दू मुसलमानों में कोई खिंचाव न पैदा हो इसलिये बापू ने—"इन्डियन ओपीनियन" में यह बयान निकाला था—

"दोस्तो ! मेरी तबियत ठीक है. पादरी डोक और उनकी पत्नी ने मेरी बड़ी सेवा की है. और मैं जल्द ही अपनी नौकरी(जनता की सेवा)

والے پادری جے، جے ڈوک وہاں آ پہنچے اور وہ باپو کو بڑی خراب حالت میں اٹھا کر اپنے گھر لائے۔ انھوں نے اور انکی پتنی اور بچوں نے بڑے ہی پریم اور لگن سے سیوا کرکے باپو کو بچا لیا۔ پولیس نے حملہ کرنے والے میر عالم وغیرہ پٹھانوں کو گرفتار کر لیا تھا، انپر مقدمہ چلانے کے لئے پولیس باپو کا بیان لینے پادری ڈوک کے گھر پہنچی۔ بیماری کی کھاٹ پر پڑے ہوئے اس سادھو کے دل سے دیا اور معافی کا سوتا پھوٹ پڑا۔ ٹوٹی پھوٹی اور لڑکھڑاتی آواز میں انھوں نے پولیس سے کہا— "اس بھائی کو ایسا معلوم ہوا کہ میں بھول کر رہا ہوں، اس لئے اس نے مجھے بھول سے روکنے کی کوشش کی۔ اس پر مقدمہ چلا کر سزا دلانا مجھے منظور نہیں" یہ کہہ کر انھوں نے بیان دینے سے انکار کر دیا۔ پولیس نراش ہو کر لوٹ گئی۔ عیسیٰ مسیح کو ماننے والے اُس پادری کے گھر میں ہندستان کے اس سنت نے انکے پیغمبر کی اس تعلیم پر کہ "اپنے دشمن سے بھی اتنا ہی پریم کرو جتنا کہ تم خود اپنے سے کرتے ہو۔" اپنی زندگی میں عمل کرکے دکھلا دیا۔ اُس عیسائی کنبے کو ایسا محسوس ہوا جیسے اُن کا مسیحا ہی باپو کے روپ میں انکے گھر کو پاک کر رہا ہے۔

باپو پر حملہ کرنے والا پٹھان مسلمان تھا۔ اس گھٹنا سے کہیں ہندو مسلمانوں میں کوئی کھنچاؤ نہ پیدا ہو اسلئے باپو نے "انڈین اوپینین" میں یہ بیان نکالا تھا——

"دوستو! میری طبیعت ٹھیک ہے، پادری ڈوک اور انکی پتنی اور میں جلد ہی اپنی نوکری (جنتا کی سیوا)

पर हाजिर हो जाऊँगा जिन्हो ने मुझपर हमला किया है उनपर मुझे जरा भी गुस्सा नहीं है. उन्हों ने बे सोचे समझे यह काम कर डाला है. उनपर मुक़दमा चलाने की जरूरत नहीं है. सब लोग शान्त रहेंगे तो इस घटना से भी हमें फायदा ही होगा. हिन्दुओं को अपने दिल में गुस्सा न आने देना चाहिये. इस घटना से हिन्दू मुसलमानों में खटास के बदले मिठास पैदा हो, यही मैं चाहता हूँ. मुझ पर मार पड़े और खूब पड़े, पर मेरी यही सलाह है कि फिलहाल उंगलियों की छाप दे देने से क़ौम को फायदा होगा. अगर हम सच्चे सत्याग्रही होंगे तो मार से और आगे चल कर दंगा होने के ख़याल से ज़रा भी न डरेंगे. जो उंगलियों की छाप देने के मुख़ालिफ़ हैं उनको मै बेसमझ समझता हूँ. मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह कौम को नेकी का रास्ता दिखाये और हिन्दू व मुसलमान को मेरे लहू से सानकर एक बना दे."

इस घटना के ठीक आधी सदी बाद बापू की ख्वाहिश पूरी हो गई. जब ईश्वर ने और कोई सूरत न देखी तो उनके लहू से हिन्दू और मुसलमान को एक मे सानने का वह दिन भी दिखा दिया. बापू की वह प्रार्थना भगवान ने सुन ली.

आज कुछ लोग हिन्द सरकार पर यह दोष लगाते है कि बापू की हिफाज़त का ठीक इंतज़ाम नहीं किया था. पर मैं बड़े अदब से कहूँगा कि उन भाईयो को या तो बापू के मिज़ाज का हाल नहीं मालूम या वह जान बूझ कर ढिटाई कर रहे हैं. बापू की निडरता देख कर उनके दुशमन भी दंग रह जाया करते थे. ट्रांसवाल में बापू पर मार पड़ी. जब वह अच्छे होकर नेटाल लौटे तो यहाँ भी कुछ

پر حاضر ہو جاؤں گا جنھوں نے مجھ پر حملہ کیا ہے ان پر مجھے ذرا بھی غصہ نہیں ہے۔ انھوں نے بے سوچے سمجھے یہ کام کر ڈالا ہے۔ اُن پر مقدمہ چلانے کی ضرورت نہیں ہے۔ سب لوگ شانت رہیں گے تو اس گھٹنا سے بھی ہمیں فائدہ ہی ہوگا۔ ہندوؤں کو اپنے دل میں غصہ نہ آنے دینا چاہئے۔ اس گھٹنا سے ہندو مسلمانوں میں کھٹاس کے بدلے مٹھاس پیدا ہو، یہی میں چاہتا ہوں۔ مجھ پر مار پڑے اور خوب پڑے، پر میری یہی صلاح ہے کہ فی الحال انگلیوں کی چھاپ دے دینے سے قوم کو فائدہ ہوگا۔ اگر ہم سچے ستیہ گرہی ہونگے تو مار سے اور آگے چل کر دنگا ہونے کے خیال سے ذرا بھی نہ ڈریں گے۔ جو انگلیوں کی چھاپ دینے کے مخالف ہیں انکو میں بے سمجھ سمجھتا ہوں۔ میں ایشور سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ وہ قوم کو نیکی کا راستہ دکھلائے اور ہندو و مسلمان کو میرے لہو سے سان کر ایک بنا دے۔"

اس گھٹنا کے ٹھیک آدھی صدی بعد باپو کی خواہش پوری ہوگئی۔ جب ایشور نے اور کوئی صورت نہ دیکھی تو انکے لہو سے ہندو اور مسلمان کو ایک میں ساننے کا وہ دن بھی دکھا دیا۔ باپو کی وہ پرارتھنا بھگوان نے سن لی۔

آج کچھ لوگ ہند سرکار پر یہ دوش لگاتے ہیں کہ باپو کی حفاظت کا ٹھیک انتظام نہیں کیا تھا۔ پر میں بڑے ادب سے کہوں گا کہ ان بھائیوں کو یا تو باپو کے مزاج کا حال نہیں معلوم یا وہ جان بوجھ کر ڈھٹائی کر رہے ہیں۔ باپو کی نڈرتا دیکھ کر انکے دشمن بھی دنگ رہ جایا کرتے تھے۔ ٹرانسوال میں باپو پر مار پڑی۔ جب وہ اچھے ہو کر نٹال لوٹے تو یہاں بھی کچھ

बदमाशों ने तूफान मचाने का मंसूबा बाँध लिया. उन बदमाशों ने डरबन में एक सभा बुलाई और बापू को अपनी सफाई देने के लिये उसमे बुलाया. बापू के दोस्तो और साथियो ने उनको बहुत समझाया कि जलसा करने वालों की नीयत अच्छी नहीं है. उनसे यह भी कहा गया कि बापू का सभा में जाना मानो अपनी जान को खतरे में डालना है. बात बिलकुल ठीक थी, बापू को मार डालने के लिये बदमाशों ने पूरी तैयारी कर रक्खी थी. पर बापू ने अपने साथियों से साफ़ कह दिया—"अगर मैं अपने देश भाईयों के सामने जाने से डरूँ तो मुझे क़ौम की रहनुमाई छोड़ कर घर बैठ जाना चाहिए. जिनकी सेवा का मैं दम भरता हूँ, उनके ही सामने जाने से डरना बुज़दिली नहीं तो और क्या है ?" बापू को अपने फ़ैसले से डिगाना तो नामुमकिन था इसलिये साथियों ने उनके साथ सभा में जाना ही अच्छा समझा.

बापू सभा में शरीक हुये. बदमाश पहले से डेरा डाले बैठे थे, एक बदमाश ने उठकर फजूल की बकवास शुरू की. सभापति के रोकने पर शोर गुल मच गया. बिजली की रोशनी बुझा दी गई और बापू पर पिस्तौल के दनादन फ़ायर होने लगे. लेकिन इस साधु पुरुष का एक बाल भी बाँका न होने पाया. लोगों में भगदड़ मच गई. पुलिस वहाँ आ पहुँची. उनको किसी तरह सही सलामत बाहर लाया गया. बापू ने हमलावरों की तरफ सर झुकाकर कहा—

"लो मुझे मार कर अपने दिल की आग बुझा लो."

उन दिनों बापू पर हमला होने का हर वक्त डर रहता था. उनके चेले केलन बेक, जो यहूदी जर्मन थे और अब इस दुनियामें नहीं

بدمعاشوں نے طوفان مچانے کا منصوبہ باندھ لیا۔ اُن بدمعاشوں نے ڈربن میں ایک سبھا بُلائی اور باپو کو اپنی صفائی دینے کے لئے اُس میں بلایا۔ باپو کے دوستوں اور ساتھیوں نے انکو بہت سمجھایا کہ جلسہ کرنے والوں کی نیت اچھی نہیں ہے۔ ان سے یہ بھی کہا گیا کہ باپو کا سبھا میں جانا مانو اپنی جان کو خطرے میں ڈالنا ہے۔ بات بالکل ٹھیک تھی باپو کو مار ڈالنے کے لئے بدمعاشوں نے پوری تیاری کر رکھی تھی پر باپو نے اپنے ساتھیوں سے صاف کہہ دیا — "اگر میں اپنے دیش بھائیوں کے سامنے جانے سے ڈروں تو مجھے قوم کی رہنمائی چھوڑ کر گھر بیٹھ جانا چاہئے۔ جنکی سیوا کا میں دم بھرتا ہوں، انکے ہی سامنے جانے سے ڈرنا بزدلی نہیں تو اور کیا ہے؟" باپو کو اپنے فیصلے سے ڈگانا تو ناممکن تھا اس لئے ساتھیوں نے ان کے ساتھ سبھا میں جانا ہی اچھا سمجھا۔

باپو سبھا میں شریک ہوئے۔ بدمعاش پہلے سے ڈیرا ڈالے بیٹھے تھے، ایک بدمعاش نے اُٹھ کر فضول کی بکواس شروع کی۔ سبھاپتی کے روکنے پر شور غل مچ گیا۔ بجلی کی روشنی بجھا دی گئی اور باپو پر پستول کے دنا دن فائر ہونے لگے۔ لیکن اس سادھو پرش کا ایک بال بھی بانکا نہ ہونے پایا۔ لوگوں میں بھگدڑ مچ گئی۔ پولیس وہاں آ پہنچی۔ انکو کسی طرح صحیح سلامت باہر لایا گیا۔ باپو نے حملہ آوروں کی طرف سر جھکا کر کہا —

"لو مجھے مار کر اپنے دل کی آگ بجھا لو"

اُن دنوں باپو پر حملہ ہونے کا ہر وقت ڈر رہتا تھا۔ اُن کے چیلے کیلن بیک، جو یہودی جرمن تھے اور اب اس دنیا میں نہیں

रहे. उनके बाडीगार्ड की शक्ल मे हमेशा साथ ही साथ रहा करते थे. जहाँ जहाँ बापू जाते वहाँ वहाँ केलनबेक भी जाते. बापू से छिपाकर वह अपने पास पिस्तौल रक्खा करते थे. जब बापू को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने केलनबेक को बड़ी फटकार बतलाई और पिस्तौल रखवा लिया.

जिस बात को बापू सच मान कर अपना लेते थे, उससे उनको डिगा देना ब्रह्मा के लिये भी नामुमकिन था. सन १९१३ में सत्याग्रह की आखिरी लड़ाई में बहुत से मजदूर मारे गये. हजारों जेल में ठूँस दिये गये और तारीख़ में पहली बार हिन्दुस्तानी औरतों ने भी जेल में बसेरा किया. इससे सारी दुनिया में हलचल मच गई. हिन्द के उस वक़्त के वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज ने खुल्लम खुल्ला प्रदेसी हिन्दुस्तानियों की तरफ़दारी की और यूनियन सरकार की पालिसी और उसके बर्ताव की बुराई की. इंगलैंड की सलतनत भी फ़िक्रमन्द हो उठी. आख़िर यूनियन सरकार को झक मार कर जेल से बापू को छोड़ना पड़ा और सर सोलमन को सदर बनाकर एक कमीशन बिठाना पड़ा. इस कमीशन मे सर विलियम सोलमन के अलावा मिस्टर एवाल्ड एस्लन और मिस्टर जे० एस० वायली दो मेम्बर थे और यह दोनों हिन्दुस्तानियों के विरोधी थे. बापू ने सरकार को यह सलाह दी कि जिनको सरकार ने चुन दिया है उनको तो रहने दे पर उनके साथ ही कम से कम एक ऐसे योरोपियन को भी चुने जिसका नाम हिन्दुस्तानियों की तरफ़ से पेश किया जावे, उन्हीं दिनों रेलवे के गोरे नौकरों ने भी हड़ताल की थी और जोहान्सबर्ग में बड़ा ऊधम मचाया था. उनके बारे में जो कमीशन चुना गया

رہے۔ انکے باڈی گارڈ کی شکل میں ہمیشہ ساتھ ہی ساتھ رہا کرتے تھے۔ جہاں جہاں باپو جاتے وہاں وہاں کیلن بیک بھی جاتے۔ باپو سے چھپا کر وہ اپنے پاس پستول رکھا کرتے تھے۔ جب باپو کو یہ بات معلوم ہوئی تو انھوں نے کیلن بیک کو بڑی پھٹکار بتلائی اور پستول رکھوا لیا۔

جس بات کو باپو سچ مان کر اپنا لیتے تھے، اُس سے انکو ڈگا دینا برہما کے لئے بھی ناممکن تھا۔ سنہ ۱۹۱۳ میں ستیہ گرہ کی آخری لڑائی میں بہت سے مزدور مارے گئے۔ ہزاروں جیل میں ٹھونس دئے گئے اور تاریخ میں پہلی بار ہندستانی عورتوں نے بھی جیل میں بسیرا کیا۔ اس سے ساری دنیا میں ہل چل مچ گئی۔ ہند کے اس وقت کے وائسرائے لارڈ ہارڈنگ نے کھلّم کھلّا پردیسی ہندستانیوں کی طرفداری کی اور یونین سرکار کی پالیسی اور اسکے برتاؤ کی بُرائی کی۔ انگلینڈ کی سلطنت بھی فکرمند ہو اٹھی۔ آخر یونین سرکار کو جھک مار کر جیل سے باپو کو چھوڑنا پڑا اور سر سولمن کو صدر بنا کر ایک کمیشن بٹھانا پڑا۔ اس کمیشن میں سر ولیم سولمن کے علاوہ مسٹر ایوالڈ اسلین اور مسٹر جے، ایس وائلی دو ممبر تھے اور یہ دونوں ہندستانیوں کے ورودھی تھے۔ باپو نے سرکار کو یہ صلاح دی کہ جن کو سرکار نے چن دیا ہے انکو تو رہنے دو پر انکے ساتھ ہی کم سے کم ایک ایسے یوروپین کو بھی چنے جس کا نام ہندستانیوں کی طرف سے پیش کیا جاوے، اُن ہی دنوں ریلوے کے گورے نوکروں نے بھی ہڑتال کی تھی اور جوہنس برگ میں بڑا اودھم مچایا تھا۔ اُن کے بارے میں جو کمیشن چنا گیا

था उसमें खास गोरे हड़तालियों के नुमाइन्दों को जगह दी गई थी. लेकिन सरकार ने बापू की यह माक़ूल सलाह न मानी, इसलिये डरबन में लगभग चार हज़ार हिन्दुस्तानियों का एक जलसा हुआ और उसमें कमीशन का बाइकाट करने का ठहराव पास हुआ.

इस खबर से हिन्दुस्तान और इंगलैंड में बड़ी चिन्ता फैली. इतनी मुशकिलों के बाद जब सरकार ने कमीशन बिठाया तो प्रवासी हिन्दुस्तानियों ने उसका बाइकाट कर दिया, इस बात से लोगों को बड़ा ताज्जुब और दुख हुआ. लन्दन से हिन्दुस्तानियों की भलाई चाहने वाले लार्ड एम्पथिल ने बापू से कमीशन को अपनाने की प्रार्थना की. हिन्दुस्तान के वाइसराय लार्ड हार्डिंग्ज ने भी बापू को तार दिया कि कमीशन का बाइकाट हिन्दुस्तान के फ़ायदे के लिहाज़ से नुक़सान पहुँचाने वाला है इसलिये बाईकाट का ठहराव रद्द करके कमीशन के सामने गवाही देना ही अकलमंदी है. बापू के दिली दोस्त, उनके राजकाजी गुरु और सत्याग्रह की लड़ाई में मॉली मदद देने वाले श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने भी बापू को बाइकाट के ठहराव पर फिर से विचार करने की राय दी और उस ठहराव को नुक़सान पहुँचाने वाला बताया.

बापू बड़ी कशमकश में पड़ गये. वक्त बहुत नाज़ुक था. अगर उनकी राय को नहीं माना जाता तो प्रवासी हिन्दुस्तानी इंगलैंड और हिन्द की हमदर्दी खो बैठते हैं और अगर उनकी बात मान ली जाय तो प्रतिज्ञा (अहद) टूटती है. बापू के लिये यह बहुत बड़े इम्तहान का वक्त था. उस समय बापू ने जो दृढ़ता या मुस्तक़िल मिज़ाजी दिखलाई वह अचंभे में डालने वाली थी.

تھا اُس میں خاص گورے ہڑتالیوں کے نمائندوں کو جگہ دی گئی تھی. لیکن سرکار نے باپو کی یہ معقول صلاح نہ مانی، اس پر ڈربن میں لگ بھگ چار ہزار ہندستانیوں کا ایک جلسہ ہوا اور اُس میں کمیشن کا بائی کاٹ کرنے کا ٹھہراؤ پاس ہوا۔

اس خبر سے ہندستان اور انگلینڈ میں بڑی چنتا پھیلی۔ اتنی مشکلوں کے بعد جب سرکار نے کمیشن بٹھایا تو پرواسی ہندستانیوں نے اس کا بائی کاٹ کر دیا، اس بات سے لوگوں کو بڑا تعجب اور دکھ ہوا۔ لندن سے ہندستانیوں کی بھلائی چاہنے والے لارڈ ایمپٹ ہل نے باپو سے کمیشن کو اپنانے کی پرارتھنا کی۔ ہندستان کے وائسرائے لارڈ ہارڈنگز نے بھی باپو کو تار دیا کہ کمیشن کا بائی کاٹ ہندستان کے فائدے کے لحاظ سے نقصان پہونچانے والا ہے اس لئے بائیکاٹ کا ٹھہراؤ رد کرکے کمیشن کے سامنے گواہی دینا ہی عقلمندی ہے۔ باپو کے دلی دوست، انکے راج کاجی گرو اور ستیہ گرہ کی لڑائی میں مالی مدد دینے والے شری گوپال کرشن گوکھلے نے بھی باپو کو بائیکاٹ کے ٹھہراؤ پر پھر سے وچار کرنے کی رائے دی اور اس ٹھہراؤ کو نقصان پہونچانے والا بتایا۔

باپو بڑی کشمکش میں پڑ گئے۔ وقت بہت نازک تھا۔ اگر ان کی رائے کو نہیں مانا جاتا تو پرواسی ہندستانی انگلینڈ اور ہند کی ہمدردی کھو بیٹھتے ہیں اور اگر اُنکی بات مان لی جائے تو پرتگیا (عہد) ٹوٹتی ہے۔ باپو کے لئے یہ بہت بڑے امتحان کا وقت تھا۔ اُس سمے باپو نے جو دڑھتا یا مستقل مزاجی دکھلائی وہ اچنبھے میں ڈالنے والی تھی۔

उन्होंने साफ़ कहदिया कि प्रवासी हिन्दुस्तानियों की मागें उचित और न्याय भरी हैं. हमने एक बार सोच विचर कर जो अहद किया है उससे फिरना एक तरह का गुनाह है—पाप है. इस से अगर हमें अपने दोस्तो और अपनी भलाई चाहने वालों की हमदर्दी गँवानी पड़ती है तो भी कोई परवाह नहीं, लेकिन क़सम के साथ जो प्रतिज्ञा की गई है उसको तोड़ना सत्याग्रह पर कलंक लगाना है.कमीशन का बाइकाट जारी रहा.कमीशन को हिन्दुस्तानियो के मुआफ़िक़ फैसला करना पड़ा और बापू की शानदार जीत हुई.

एक बार फिनिक्स आश्रम के कुछ जवान हिंदुस्तानियो ने अलोना(बे नमक का खाना)खाने की प्रतिज्ञा करके भी डरबन से पूरी, भुँजिया, चटपटी तरकारी और मिठाई मँगाकर चोरी से खाई उनमे से एक चटोरे ने बापू का सची बात बतला दी. शाम को प्रार्थना के वक्त बापू ने हर एक से पूछा लेकिन सब मुकर गय. किसी में सची बात क़बूल करने की हिम्मत न थी. बापू किसी को शारिरिक या जिस्मानी सज़ा नहीं देते थे. यह बात उनके असूल के ख़िलाफ़ थी. बापू ने उन लोगो से कहा—"इस मे तुम्हारा नहीं मेरा ही दोष है. अभी मै सचाई को पूरी तरह नहीं पा सका हूँ इस लिये मेरे सामने सच बात कहने मे तुम हिचकिचाते हो." फिर तो बापू ने अपने गालो में इतने ज़ोर से तमाचे मारना शुरू किये कि ऐसा मालूम होने लगा जैसे धरती डोल उठी. सब के सब सन्न रह गये. चटोरे एक-एक करके सामने आये और अपना क़सूर मान कर मॉफी माँगी.

इसी तरह की घटनाओं से बापू का जीवन भरा हुआ था.बचपन

اُنھوں نے صاف کہدیا کہ پرواسی ہندستانیوں کی مانگیں اُچت اور نیائے بھری ہیں۔ ہم نے ایک بار سوچ بچار کر جو عہد کیا ہو اُس سے پھرنا ایک طرح کا گناہ ہو۔ پاپ ہو۔ اس سے اگر ہمیں اپنے دوستوں اور اپنی بھلائی چاہنے والوں کی ہمدردی گنوانی پڑتی ہو تو بھی کوئی پرواہ نہیں، لیکن قسم کے ساتھ جو پرتگیا کی گئی ہو اسکو توڑنا ستیہ گرہ پر کلنک لگانا ہو۔ کمیشن کا بائیکاٹ جاری رہا۔ کمیشن کو ہندستانیوں کے موافق فیصلہ کرنا پڑا اور باپو کی شاندار جیت ہوئی۔

ایک بار فی نکس آشرم کے کچھ جوان ہندستانیوں نے الونا (بے نمک کا کھانا) کھانے کی پرتگیا کرکے بھی ڈربن سے پوری بھوجیا، چٹ پٹی ترکاری اور مٹھائی منگاکر چوری سے کھائی۔ اُن میں سے ایک چٹورے نے باپو کو سچی بات بتلادی۔ شام کو پرارتھنا کے وقت باپو نے ہر ایک سے پوچھا لیکن سب مُکر گئے۔ کسی میں سچی بات قبول کرنے کی ہمت نہ تھی۔ باپو کسی کو شاریرک یا جسمانی سزا نہیں دیتے تھے۔ یہ بات اُنکے اُصول کے خلاف تھی۔ باپو نے اُن لوگوں سے کہا ــ "اس میں تمھارا نہیں میرا ہی دوش ہو۔ ابھی میں سچائی کو پوری طرح نہیں پا سکا ہوں اس لئے میرے سامنے سچ بات کہنے میں تم ہچکچاتے ہو۔" پھر تو باپو نے اپنے گالوں میں اتنے زور سے تماچے مارنا شروع کئے کہ ایسا معلوم ہونے لگا جیسے دھرتی ڈول اُٹھی۔ سب کے سب سُن رہ گئے۔ چٹورے ایک ایک کرکے سامنے آئے اور اپنا قصور مان کر معافی مانگی۔

اسی طرح کی گھٹناؤں سے باپو کا جیون بھرا ہوا تھا۔ بچپن

में दस साल की उम्र में मैंने उनको वैरीस्टर के रूप में देखा था, उनकी गोद में बैठा और खेला भी था. मेरे पिता बापू के भक्त और दोस्त थे. बापू ने अपनी आत्मकथा में भी उनका ज़िक्र किया है. फिर इक्कीस साल की उम्र में सन् १९१२ में जिस दिन मैंने स्टीमर से उतर कर दक्खिन अफ़रीक़ा की ज़मीन पर पैर रक्खा उस दिन सब से पहले बापू के दर्शन करने पोलक साहब के साथ फ़िनिक्स गया. डरबन से चौदह मील के फ़ासले पर बापू ने सौ एकड़ ज़मीन मोल लेकर एक आश्रम बनाया था जो 'फ़िनिक्स सेटलमेण्ट' के नाम से मशहूर था. जब मैं बापू की कुटिया पर पहुँचा तो वह वहाँ नहीं मिले. पोलक साहब मुझे एक खेत पर ले गये जहाँ कुछ लोग कुदाल से खेत गोड़ रहे थे. दूर से तो मैंने उनको मज़दूर ही समझा पर क़रीब जाने पर उनके साफ़ सुथरे कपड़े देखकर मेरे अचंभे की हद न रही क्योंकि पढ़े लिखे लोगों को इस तरह खेत मे कुदाल चलाते मैंने कभी नहीं देखा था. उनमें एक सब से दुबला पतला आदमी सब से तेज़ और काम में सब से आगे था. पोलक साहब उनके ही पास पहुँचकर ठहरे. उनके सिर पर न टोपी थी और न पैर में जूती. आस्ट्रेलिया से जिन बोरियों में आटा आता है उसी बोरी का सिला हुआ आधी बाँह का कुरता और घुटने तक का पायजामा उन्होंने पहन रक्खा था. जब वह हमारी तरफ़ मुख़ातिब हुए और उनके चेहरे पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं अचरज सागर में डूब गया. बापू को पहचान कर मैंने उनके पैर छुये. बापू काम करने लगे और साथ ही साथ मुझसे बात भी. पर मैं तो भौंचक्का हो रहा था, मुहँ से बात निकलना मुशकिल थी. मेरी हालत देख कर बापू ने पूछा—"क्या सोच रहे हो ?"

میں دس سال کی عمر میں، میں نے ان کو بیرسٹر کے روپ میں دیکھا تھا، اُنکی گود میں بیٹھا اور کھیلا بھی تھا۔ میرے پتا باپو کے بھگت اور دوست تھے۔ باپو نے اپنی آتم کتھا میں بھی انکا ذکر کیا ہے۔ پھر اکیس سال کی عمر میں سنہ ۱۹۱۲ میں جس دن میں نے اسٹیمر سے اتر کر دکھن افریقہ کی زمین پر پیر رکھا اس دن سب سے پہلے باپو کے درشن کرنے پولک صاحب کے ساتھ فی نکس گیا۔ ڈربن سے چودہ میل کے فاصلے پر باپو نے سو ایکڑ زمین مول لیکر ایک آشرم بنایا تھا جو 'فی نکس سٹلمنٹ' کے نام سے مشہور تھا۔ جب میں باپو کی کٹیا پر پہنچا تو وہ وہاں نہیں ملے۔ پولک صاحب مجھے ایک کھیت پر لے گئے جہاں کچھ لوگ کدال سے کھیت گوڑ رہے تھے۔ دور سے تو میں نے انکو مزدور ہی سمجھا پر قریب جانے پر انکے صاف ستھرے کپڑے دیکھ کر میرے اچنبھے کی حد نہ رہی کیونکہ پڑھے لکھے لوگوں کو اس طرح کھیت میں کدال چلاتے میں نے کبھی نہیں دیکھا تھا۔ اُن میں ایک سب سے دُبلا پتلا آدمی سب سے تیز اور کام میں سب سے آگے تھا۔ پولک صاحب انکے ہی پاس پہنچکر ٹھہرے۔ انکے سر پر نہ ٹوپی تھی اور نہ پیر میں جوتی۔ آسٹریلیا سے جن بوریوں میں آٹا آتا ہے اُسی بوری کا سلا ہوا آدھی بانہہ کا کرتا اور گھٹنے تک کا پاجامہ انھوں نے پہن رکھا تھا۔ جب وہ ہماری طرف مخاطب ہوئے اور انکے چہرے پر میری نظر پڑی تو میں اچرج ساگر میں ڈوب گیا۔ باپو کو پہچان کر میں نے اُنکے پیر چھوئے۔ باپو کام کرنے لگے اور ساتھ ہی ساتھ مجھ سے بات بھی۔ پر میں تو بھونچکا ہو رہا تھا، منہ سے بات نکلنا مشکل تھی۔ میری حالت دیکھ کر باپو نے پوچھا— "کیا سوچ رہے ہو؟"

मैंने जवाब में निवेदन किया–"आज का दिन मेरी ज़िन्दगी मे आमूल परिवर्तन(बुनियादी तब्दीली) का दिन है."

"क्यों क्या बात है ?" बापू ने फिर पूछा.

" इसका ठीक जवाब मेरा आगे का जीवन ही देगा. इस समय कुछ कहना फ़ज़ूल है." यह कह कर मैंने फिर चुप्पी साध ली. अगरचे मैं पैसे कमाने और मालदार बन कर गुलछर्रे उड़ाने के ख़याल से दक्खिन अफ़रीक़ा गया था. पर बापू को देखते ही मेरे जीवन का नक़्शा बदल गया. मैंने अपने दिल में पक्का इरादा कर लिया कि अब मेरी ज़िंदगी देश-भाइयों और प्रवासी हिन्दुस्तानियों की सेवा मे ही लगेगी और ईश्वर की मेहरबानी से मेरा व्रत पूरा हो गया. देश भाइयो की सेवा मे ही मेरी ज़िन्दगी की शाम आ गई है.

फ़िनिक्स-आश्रम को बापू की प्रयोगशाला या तजरबागाह कहना चाहिये. वहाँ पर कड़ी साधना करके बापू अपनी ज़िन्दगी को भारत की आज़ादी के लिये तैयार कर रहे थे. उनको मैंने झाड़ू लगाते, कपड़े धोते, लकड़ी चीरते, खाना पकाते, बरतन माँजते और यहाँ तक कि पाख़ाना उठाते भी देखा है. किसी भी काम से बापू को परहेज़ न था. वहाँ से हफ़्तावार 'इंडियन ओपीनियन' अख़बार निकलता था. बापू ने उसके हिन्दी हिस्से का मुझे एडीटर बना दिया था. अख़बार छापने के लिए वहाँ एक बड़ी सिलेन्डर मशीन थी जो स्टीम के ज़ोर से चलती थी. पर बापू ने स्टीम को छुट्टी दे दी और सिलेंडर के पहिए मे डंडे लगाकर वह उसे हाथ से चलाने लगे. आज भी फ़िनिक्स के प्रेस में वह कील

میں نے جواب میں نویدن کیا— "آج کا دن میری زندگی میں آمول پریورتن (بنیادی تبدیلی) کا دن ہے".

"کیوں کیا بات ہے؟" باپو نے پھر پوچھا.

"اس کا ٹھیک جواب میرا آگے کا جیون ہی دیگا. اس سمے کچھ کہنا فضول ہے" یہ کہہ کر میں نے پھر چپّی سادھ لی. اگرچہ میں پیسے کمانے اور مالدار بن کر گلچھرے اڑانے کے خیال سے دکھن افریقہ گیا تھا. پر باپو کو دیکھتے ہی میرے جیون کا نقشہ بدل گیا. میں نے اپنے دل میں پکا ارادہ کرلیا کہ اب میری زندگی دیش بھائیوں اور پرواسی ہندستانیوں کی سیوا میں ہی لگے گی اور ایشور کی مہربانی سے میرا برت پورا ہوگیا. دیش بھائیوں کی سیوا میں ہی میری زندگی کی شام آگئی ہے.

فی نکس آشرم کو باپو کی پریوگ شالا یا تجربہ گاہ کہنا چاہیے. وہیں پر کڑی سادھنا کرکے باپو اپنی زندگی کو بھارت کی آزادی کے لئے تیار کر رہے تھے. انکو میں نے جھاڑو لگاتے، کپڑے دھوتے، لکڑی چیرتے، کھانا پکاتے، برتن مانجتے اور یہاں تک کہ پاخانہ اٹھاتے بھی دیکھا ہے. کسی بھی کام سے باپو کو پرہیز نہ تھا. وہیں سے ہفتہ وار 'انڈین اوپینین' اخبار نکلتا تھا. باپو نے اس کے ہندی حصے کا مجھے ایڈیٹر بنا دیا تھا. اخبار چھاپنے کے لئے وہاں ایک بڑی سلنڈر مشین تھی جو اسٹیم کے زور سے چلتی تھی. پر باپو نے اسٹیم کو چھٹی دے دی اور سلنڈر کے پہیے میں ڈنڈے لگاکر وہ اسے ہاتھ سے چلانے لگے. آج بھی فی نکس کے پریس میں وہ کیل

मौजूद है जिसमें घड़ी लटका कर बापू पूरे घंटे भर उस बड़ी सिलेन्डर को चलाते थे. इस बीच में उनके कई साथी बदले जाते थे. वहाँ का मजबूत से मजबूत आदमी भी पन्द्रह मिनट में थक जाता था. पर बापू मे ग़ज़ब की ताकत थी. वह अक्सर फ़िनिक्स से डरबन तक चौदह मील की ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी और कच्ची सड़क से पैदल ही जाते और वापस आते थे. गिरमिट के ज़माने मे एक बार एक ज़ूलू पुलिस ने बापू को गिरमिट वाला मजदूर समझ कर वहीं की भाषा में पूछा—"अरे कुली तेरा पास कहाँ है ?" हर एक मज़दूर को 'पास' साथ रखना और पुलिस के पूछने पर पेश करना लाज़मी था. बापू ने हँस कर जवाब दिया—"पास तो मेरे पास नहीं हैं."

"ठीक है, चलो मेरे साथ." सिपाही उनको थाने पर ले गया वहाँ एक गोरा कांस्टेबिल था. उसने भी बापू को मामूली मज़दूर ही समझकर ज़ूलू में ही सवाल पूछे. आख़िर में जब उसने पूछा कि तुम्हार नाम क्या है ? तो बापू के "गांधी" कहने पर वह हँस पड़ा. गांधी का नाम तो वहाँ का बच्चा-बच्चा जानता था. उसने सोचा कि पुलिस को चकमा देने के लिए इसने अच्छा बहाना ढूँढ निकाला है. उसी वक़्त वहाँ हेड सार्जेण्ट पहुँच गया. बापू को देखकर उसे ताज्जुब हुआ. उसने आते ही पूछा—"हलो, मिस्टर गांधी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?" बापू के यह कहने पर कि वह गिरफ्तार होकर वहाँ आये हैं सार्जेण्ट ज़ूलू सिपाही पर बेतरह बिगड़ा लेकिन बापू ने उसको समझा कर ख़ामोश किया कि इससे मुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुँची है बल्कि यह

موجود ہے جس میں گھڑی لٹکا کر باپو پورے گھنٹے بھر اس بڑی سلنڈر کو چلاتے تھے۔ اس بیچ میں اُن کے کئی ساتھی بدلے جاتے تھے۔ وہاں کا مضبوط سے مضبوط آدمی بھی پندرہ منٹ میں تھک جاتا تھا۔ پر باپو میں غضب کی طاقت تھی۔ وہ اکثر فی نکس سے ڈربن تک چودہ میل کی اوبڑ کھابڑ پہاڑی اور کچی سڑک سے پیدل ہی جاتے اور واپس آتے تھے۔ گرمٹ کے زمانے میں ایک بار ایک زولو پولیس نے باپو کو گرمٹ والا مزدور سمجھ کر ہیں کی بھاشا میں پوچھا — "ارے کلی تیرا پاس کہاں ہے؟" ہر ایک مزدور کو 'پاس' ساتھ رکھنا اور پولیس کے پوچھنے پر پیش کرنا لازمی تھا۔ باپو نے ہنس کر جواب دیا — "پاس تو میرے پاس نہیں ہے۔"

"ٹھیک ہے، چلو میرے ساتھ۔" سپاہی اُنکو تھانے پر لے گیا وہاں ایک گورا کانسٹیبل تھا۔ اس نے بھی باپو کو معمولی مزدور ہی سمجھ کر زولو میں ہی سوال پوچھے۔ آخر میں جب اُس نے پوچھا کہ تمہارا نام کیا ہے؟ تو باپو کے گاندھی کہنے پر وہ ہنس پڑا۔ گاندھی کا نام تو وہاں کا بچہ بچہ جانتا تھا۔ اس نے سوچا کہ پولیس کو چکمہ دینے کے لئے اس نے اچھا بہانہ ڈھونڈھ نکالا ہے۔ اسی وقت وہاں ہیڈ سارجنٹ پہنچ گیا۔ باپو کو دیکھ کر اُسے تعجب ہوا۔ اس نے آتے ہی پوچھا — "ہلو، مسٹر گاندھی، آپ یہاں کیا کر رہے ہیں؟" باپو کے یہ کہنے پر کہ وہ گرفتار ہو کر وہاں آئے ہیں سارجنٹ زولو سپاہی پر بے طرح بگڑا لیکن باپو نے اسکو سمجھا کر خاموش کیا کہ اُس سے مجھے کوئی تکلیف نہیں پہنچی ہے بلکہ یہ

तजरबा हुआ है कि इस 'पास' के क़ानून से हमारे देश-भाइयो की कैसी ज़िल्लत हो रही है.

प्रजा और राजा की सेवा में बापू कोई फ़र्क़ नहीं मानते थे. दक्खिन अफ़रीक़ा में उनकी कठोर साधना देखकर श्री गोखले दंग रह गये थे. उन दिनों स्वर्गवासी शंकरानन्द जी वहां धर्म-प्रचार कर रहे थे. उन्होंने एक ख़त गोखले जी को लिखा था. जिस पर "निजी और ख़ुफ़िया" लिखा था. उस ख़त मे उन्होंने बापू की बड़ी बुराई की थी और उनपर यह इलज़ाम लगाया था कि बापू ने मुसलमानों की हिमायत करके हिन्दुओ के हितो ,को बड़ा नुक़सान पहुँचाया है. स्वामी जी को ख़याल था कि गोखले जी उनकी चिट्ठी बापू को दिखायेगे नहीं, क्योंकि उस पर 'निजी और ख़ुफ़िया' लिखा हुआ है. पर गोखले जी ने वह ख़त बापू के हवाले कर दिया और बापू ने उनके सेक्रेटरी की हैसियत से स्वामी जी को ख़त पाने की ख़बर दे दी. इस पर स्वामी जी बहुत ख़फ़ा हुए और उन्होंने गोखलेजी को एक कड़ी चिट्ठी लिखकर पूछा कि बापू उनके सेक्रेटरी है तो क्या, लेकिन उनको "निजी और ख़ुफ़िया" ख़त दिखाना कहाँ का शिष्टाचार (एख़लाक़) है ? गोखले जी ने स्वामी जी को जो ख़त लिखा उसमें और बातों के सिवा यह भी लिख दिया-- 'अगरचे गांधी जी मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी के तौर पर काम कर रहे है तो भी उनके क़दमो के पास बैठना ही मेरी मौज़ूं जगह है."

गोखले जी बापू को पहचान गये थे. उन्होंने बापू मे वह शक्ति पाई जो हिन्दुस्तान को आज़ाद कराने के लिए जरूरी थी. इसलिए उन्होंने बापू से ज़ोर देकर कहा कि उनका दक्खिन अफ़रीक़ा में

تجربہ ہوا ہے کہ اس 'پاس' کے قانون سے ہمارے دیش بھائیوں کی کیسی ذلت ہو رہی ہے۔

پرجا اور راجا کی سیوا میں باپو کوئی فرق نہیں مانتے تھے۔ دکھن افریقہ میں انکی کٹھور سادھنا دیکھ کر شری گوکھلے دنگ رہ گئے تھے۔ اُن دنوں سورگ واسی شنکرانند جی وہاں دھرم پرچار کر رہے تھے۔ انھوں نے ایک خط گوکھلے جی کو لکھا تھا۔ جس پر "نجی اور خفیہ" لکھا تھا۔ اُس خط میں اُنھوں نے باپو کی بڑی بُرائی کی تھی اور اُن پر یہ الزام لگایا تھا کہ باپو نے مسلمانوں کی حمایت کرکے ہندوؤں کے ہتوں کو بڑا نقصان پہنچایا ہے۔ سوامی جی کو خیال تھا کہ گوکھلے جی انکی چٹھی باپو کو دکھائیں گے نہیں، کیونکہ اُس پر "نجی اور خفیہ" لکھا ہوا ہے۔ پر گوکھلے جی نے وہ خط باپو کے حوالے کردیا اور باپو نے اُن کے سکریٹری کی حیثیت سے سوامی جی کو خط پانے کی خبر دے دی۔ اس پر سوامی جی بہت خفا ہوئے اور اُنھوں نے گوکھلے جی کو ایک کڑی چٹھی لکھ کر پوچھا کہ باپو اُن کے سکریٹری ہیں تو کیا، لیکن اُن کو "نجی اور خفیہ" خط دکھانا کہاں کا شِشٹاچار (اخلاق) ہے؟ گوکھلے جی نے سوامی جی کو جو خط لکھا اس میں اور باتوں کے سوا یہ بھی لکھ دیا — "اگرچہ گاندھی جی میرے پرائیوٹ سکریٹری کے طور پر کام کر رہے ہیں تو بھی انکے قدموں کے پاس بیٹھنا ہی میری موزوں جگہ ہے۔"

گوکھلے جی باپو کو پہچان گئے تھے۔ اُنھوں نے باپو میں وہ شکتی پائی جو ہندستان کو آزاد کرانے کے لئے ضروری تھی۔ اس لئے اُنھوں نے باپو سے زور دیکر کہا کہ اُن کا دکھن افریقہ میں

समय बरबाद करना ठीक नहीं है. हिन्दुस्तान को उनकी जरूरत है और उनको जितनी जल्द हो सके हिन्दुस्तान आ जाना चाहिए.

दक्खिन अफ़रीका को यह अभिमान है कि बापू उसी की जमीन मे तजरबे और तपस्या करके हिन्दुस्तान का नक़शा बदलने के लिए तैयार हुए थे और वहॉ के प्रवासी भाइयों को यह फ़ख़ है कि उन्होंने भारतमाता को आज़ाद करने के लिए अपने नेता को क़ुरबान किया था. बापू सन् १९१४ में जब वहाँ से कूच करने लगे तो वहॉ के हिन्दुस्तानी बेचैन हो उठे.

सन् १९१४ की २३ जुलाई को बापू और बा नेटाल से विदा होकर जोहान्सबर्ग आये. वहॉ से केपटाउन जाकर विलायती जहाज़ से लंदन को कूच करनेवाले थे. स्टेशन से उनकी बग्घी के साथ हज़ारों आदमियों का जुलूस चला. भीड़ ऐसी थी कि लोगों को चींटी की चाल चलनी पड़ती थी. मैं फुटपाथ पर स्वर्गवासी श्री लालबहादुर सिंह के साथ बड़ी मुशकिलों से आगे बढ़ रहा था. हमारे पास से ही एक मुसलमान गुन्डे ने बापू को निशाना बना कर एक सड़ा अन्डा फेंका.वह जाकर बग्घी के पहिए पर फूटा.दूसरा अंडा बग्घी के अन्दरपहुँचकर फूटा.तीसरा वह फेंकने ही वाला था कि हमारा धीरज छूट गया. सिंह जी ने झपटकर उसकी गर्दन पकड़ ली और उसे फुटपाथ पर दे मारा.मैंने उसके मुँह पर बूट से दो-चार ऐसी ठोकरें लगाई कि गुन्डे का मिज़ाज दुरुस्त हो गया. हुल्लड़ मच गया. गिरे हुए गुन्डे पर लोग ठोकरें लगाते और रास्ता नापते.उस भीड़ में कौन किसको देखता है.

लेकिन हमें इस बहादुरी के लिए इनाम के बदले सख़्त सज़ा

سے برباد کرنا ٹھیک نہیں ہے۔ ہندستان کو اُنکی ضرورت ہے اور انکو جتنی جلد ہو سکے ہندستان آ جانا چاہیئے۔

دکھن افریقہ کو یہ ابھمان ہے کہ باپو اُسی کی زمین میں تجربے اور تپسیا کرکے ہندستان کا نقشہ بدلنے کے لئے تیار ہوئے تھے اور وہاں کے پرواسی بھائیوں کو یہ فخر ہے کہ اُنھوں نے بھارت ماتا کو آزاد کرنے کے لئے اپنے نیتا کو قربان کیا تھا۔ باپو سنہ ۱۹۱۴ میں جب وہاں سے کوچ کرنے لگے تو وہاں کے ہندستانی بیچین ہو اُٹھے۔

سنہ ۱۹۱۴ کی ۲۳ جولائی کو باپو اور با نیٹال سے وداع ہوکر جوہنس برگ آئے۔ وہاں سے کیپ ٹاؤن جاکر ولایتی جہاز سے لندن کو کوچ کرنے والے تھے۔ اسٹیشن سے انکی بگھی کے ساتھ ہزاروں آدمیوں کا جلوس چلا۔ بھیڑ ایسی تھی کہ لوگوں کو چیونٹی کی چال چلنی پڑتی تھی۔ میں فٹ پاتھ پر سورگ واسی سری لال بہادر سنگھ کے ساتھ بڑی مشکلوں سے آگے بڑھ رہا تھا۔ ہمارے پاس سے ہی ایک مسلمان گنڈے نے باپو کو نشانہ بناکر ایک سڑا انڈا پھینکا۔ وہ جاکر بگھی کے پہیئے پر پھوٹا۔ دوسرا انڈا بگھی کے اندر پہنچکر پھوٹا۔ تیسرا وہ پھینکنے ہی والا تھا کہ ہمارا دھیرج چھوٹ گیا۔ سنگھ جی نے جھپٹ کر اُس کی گردن پکڑ لی اور اُسے فٹ پاتھ پر دے مارا۔ میں نے اُس کے منہ پر بوٹ سے دو چار ایسی ٹھوکریں لگائیں کہ گنڈے کا مزاج درست ہو گیا۔ ہلڑ مچ گیا۔ گرے ہوئے گنڈے پر لوگ ٹھوکریں لگاتے اور راستہ ناپتے۔ اُس بھیڑ میں کون کسکو دیکھتا ہے۔

لیکن ہمیں اس بہادری کے لئے انعام کے بدلے سخت سزا

मिली. उसी दिन रात के जलसे मे बोलते हुए बापू ने कहा—"स्टेशन से आते वक़्त कुछ भाई मुझ पर हमला करना चाहते थे, उनसे मुझे कुछ भी नहीं कहना है. वह चाहें तो मुझे मारें, मैं मार खाने के लिए तैयार हूँ. लेकिन जिन भाइयों ने मेरी हिफ़ाज़त के ख़याल से एक भाई को मारा है, उनसे मुझे जरूर कुछ कहना है. उन्होंने कुछ अच्छा नहीं, बल्कि बुरा काम किया. जब मीर आलम ने मुझे मारा था तो ईश्वर को मेरा मरना मंजूर नहीं था, इसलिए मैं नहीं मरा. मैं इंगलैण्ड जा रहा हूँ, अगर मेरा जहाज़ डूब जाय और मैं उसके साथ समुन्दर में समा जाऊँ तो मेरी हिफ़ाज़त करने वाले क्या करेंगे? क्या वह ईश्वर से लड़ेंगे? अगर मेरी मौत आयेगी तो उससे मुझे कोई नहीं बचा सकता. फिर तुम मेरी हिफ़ाज़त करने का दम क्यों भरते हो? मुझे रक्षक की ज़रूरत नहीं. अकेला ईश्वर ही मेरा रक्षक है."

मैंने बापू की नसीहत सिर झुकाकर सुन तो ली, पर मुझे अपनी इस हरकत पर कोई पछतावा न हुआ. उस वक़्त मैं बाईस साल का नौजवान था. दिल में जोश था, ख़ून मे गर्मी थी. सोचा कि बापू महान् हैं' वह अपने वैरी पर प्रेम और दया दिखा सकते हैं. लेकिन मैं एक मामूली हस्ती हूँ. अगर मेरी आँखों के सामने कोई बदमाश किसी महात्मा पर सड़े अंडे फेंकने की हिम्मत करता हो तो उसको देखते हुए भी ख़ामोश रह जाना क्या इन्सानियत है—बुज़दिली और अधर्म नहीं है? अगर बदमाश को सज़ा देना बुरा है तो मैं उसको बापू पर अंडे फेंकते देखकर ख़ामोश रहने के मुक़ाबले में बुरा बनना ज़्यादा पसंद करूँगा. इस तरह असल बात का विश्लेषण (तजज़िया)

ملی۔ اسی دن رات کو جلسے میں بولتے ہوئے باپو نے کہا ——
"اسٹیشن سے آتے وقت کچھ بھائی مجھ پر حملہ کرنا چاہتے تھے، ان سے مجھے کچھ بھی نہیں کہنا ہے۔ وہ چاہیں تو مجھے ماریں، میں مار کھانے کے لیے تیار ہوں۔ لیکن جن بھائیوں نے میری حفاظت کے خیال سے ایک بھائی کو مارا ہے، ان سے مجھے ضرور کچھ کہنا ہے۔ انھوں نے کچھ اچھا نہیں، بلکہ بُرا کام کیا۔ جب میر عالم نے مجھے مارا تھا تو ایشور کو میرا مرنا منظور نہیں تھا، اس لیے میں نہیں مرا۔ میں انگلینڈ جا رہا ہوں، اگر میرا جہاز ڈوب جائے اور میں اس کے ساتھ سمندر میں سما جاؤں تو میری حفاظت کرنے والے کیا کریں گے؟ کیا وہ ایشور سے لڑیں گے؟ اگر میری موت آئے گی تو اس سے مجھے کوئی نہیں بچا سکتا۔ پھر تم میری حفاظت کرنے کا دم کیوں بھرتے ہو؟ مجھے رکھشک کی ضرورت نہیں۔ اکیلا ایشور ہی میرا رکھشک ہے۔"

میں نے باپو کی نصیحت سر جھکا کر سُن تو لی، پر مجھے اپنی اس حرکت پر کوئی پچھتاوا نہ ہوا۔ اُس وقت میں بائیس سال کا نوجوان تھا۔ دل میں جوش تھا، خون میں گرمی تھی۔ سوچا کہ باپو مہان ہیں' وہ اپنے بیری پر پریم اور دیا دکھا سکتے ہیں۔ لیکن میں ایک معمولی ہستی ہوں۔ اگر میری آنکھوں کے سامنے کوئی بدمعاش کسی مہاتما پر سڑے انڈے پھینکنے کی ہمت کرتا ہو تو اس کو دیکھتے ہوئے بھی خاموش رہ جانا کیا انسانیت ہے —— بزدلی اور ادھرم نہیں ہے؟ اگر بدمعاش کو سزا دینا بُرا ہے تو میں اسکو باپو پر انڈے پھینکتے دیکھ کر خاموش رہنے کے مقابلے میں بُرا بننا زیادہ پسند کروں گا۔ اس طرح اصل بات کا وشلیشن (تجزیہ)

करके मैंने अपने दिल को तसल्ली देने की कोशिश की, पर बापू के सामने जाकर अपनी ख़ता मानने की हिम्मत न पड़ी. यहाँ तो यह डर समाया हुआ था कि कहीं बापू को मेरी कारगुज़ारी का पता न चल जाय नहीं तो ऐसी फटकार सुननी पड़ेगी जो हंटर की मार से भी ज़यादा चोट पहुँचायेगी.

बापू की पवित्र यादें अगर मैं सिलसिलेवार लिखने बैठूँ तो एक बड़ा पोथा तैयार हो सकता है. इस लेख में तो मैंने उनके जीवन की एक झलक दिखलाई है.मैं हीरालाल, मनीलाल, रामदास और देवदास से हमेशा ही कहता रहा हूँ कि बापू उनके ही नहीं, मेरे भी हैं. अब तो बापू सारे देश के बापू हो गये थे. इसीलिए बापू के बलिदान पर मैंने रामदास जी, देवदास जी, नेहरू जी या पटेल जी किसी को हमदर्दी का तार या ख़त नहीं भेजा, क्योंकि बापू उनके ही नहीं मेरे भी थे.

जाओ, बापू जाओ! जिस बड़े काम के लिए आपने अवतार लिया था, उसको पूरा कर दिया. हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया चालीस करोड़ आदमी गुलामी से छुटकारा पा गये. आप की ज़िन्दगी का मक़सद भी पूरा हो गया. आपकी मौत भी हिन्दुस्तान में अपनी राय का प्रचार करने में अंधेपन और फ़िरक़ापरस्ती का नाश करके सच्चे प्रजातन्त्र या जमहूरियत की बुनियाद डालेगी, ऐसा मेरा पक्का विश्वास है.

(हिन्दी 'आजकल' से)

کرکے میں نے اپنے دل کو تسلّی دینے کی کوشش کی پر باپو کے سامنے جاکر اپنی خطا ماننے کی ہمت نہ پڑی - یہاں تو یہ ڈر سمایا ہوا تھا کہ کہیں باپو کو میری کارگذاری کا پتہ نہ چل جائے نہیں تو ایسی پھٹکار سننی پڑے گی جو ہنٹر کی مار سے بھی زیادہ چوٹ پہنچائے گی۔

باپو کی پوتر یادیں اگر میں سلسلے وار لکھنے بیٹھوں تو ایک بڑا پوتھا تیار ہو سکتا ہے - اس لیکھ میں تو میں نے ان کے جیون کی ایک جھلک دکھلائی ہے۔ میں ہیرالال، منی لال، رامداس اور دیوداس سے ہمیشہ ہی کہتا رہا ہوں، کہ باپو انکے ہی نہیں، میرے بھی ہیں۔ اب تو باپو سارے دیش کے باپو ہوگئے تھے - اس لئے باپو کے بلیدان پر میں نے رامداس جی، دیو داس جی، نہرو جی یا پٹیل جی کسی کو ہمدردی کا تار یا خط نہیں بھیجا، کیونکہ باپو اُن کے ہی نہیں میرے بھی تھے۔

جاؤ، باپو جاؤ! جس بڑے کام کے لئے آپ نے اوتار لیا تھا، اسکو پورا کر دیا۔ ہندستان آزاد ہوگیا چالیس کروڑ آدمی غلامی سے چھٹکارا پاگئے۔ آپ کی زندگی کا مقصد بھی پورا ہوگیا۔ آپ کی موت بھی ہندستان میں اپنی رائے کا پرچار کرنے میں اندھے پن اور فرقہ پرستی کا ناش کرکے سچے پرجاتنتر یا جمہوریت کی بنیاد ڈالے گی، ایسا میرا پکّا وشواس ہے۔

(ہندی 'آجکل' سے)

हिन्दुस्तानी कल्चर और संगीत

(१३)

[भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी]

सन् १९२६ में लखनऊ में मैरिस कालेज के खुलने के बाद से ही पढ़े लिखे, भले घरानो के शरीफ लड़कों व लड़कियो मे संगीत विद्या को हासिल करने का शौक पैदा हुआ जो आगे चल कर बढ़ता ही गया और अब दिन दिन और भी तेज़ी से बढ़ता ही जारहा है. इसकी खास वजह है छम्मन साहब, पंडित भातखंडे और राजा नवाब अली साहब वगैरा की सच्ची लगन. साथ ही इन तीनो के गुरू मुहम्मद अली खॉ साहब का भी नाम लेना इस सिलसिले मे जरूरी है. दूसरी ओर पंडित विष्णु दिगंबर जी की भी कोशिश कुछ कम नहीं थी.

मैरिस कालेज के खुलवाने के बाद कुछ बरसों तक पंडित जी बराबर खुद इसकी देख भाल बड़े जतन से करते रहे. कुछ दिन तक तो वह खुद नियम से क्लास भी लिया करते थे. पर उनकी सेहत दिन पर दिन गिरती जा रही थी. लखनऊ की सख्त गरमी और सरदी उनसे बरदाश्त नही होने लगी और उन दिनो वह बंबई चले जाया करते और मौसम मातदिल होने पर फिर लखनऊ चले आते. फिर आखिर मे अपना काम उन्होंने अपने गद्दीनशीन शागिर्द प्रिंसिपल श्री कृष्ण रातनजनकर को सौंप कर मैरिस कालेज से सदा के लिये विदा ली और इसके कुछ ही दिन बाद इस दुनिया

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(۱۳)

(بھائی گنیش پرشاد دوویدی)

سنہ ۱۹۲۶ء میں لکھنؤ میں میرس کالج کے کھلنے کے بعد سے ہی پڑھے لکھے، بھلے گھرانوں کے شریف لڑکوں و لڑکیوں میں سنگیت ودّیا کو حاصل کرنے کا شوق پیدا ہوا جو آگے چل کر بڑھتا ہی گیا اور اب دن دن اور بھی تیزی سے بڑھتا ہی جا رہا ہے۔ اسکی خاص وجہ ہے چھمن صاحب، پنڈت بھات کھنڈے اور راجا نواب علی صاحب وغیرہ کی سچی لگن۔ ساتھ ہی ان تینوں کے گرو محمد علی خانصاحب کا بھی نام لینا اس سلسلے میں ضروری ہے۔ دوسری اور پنڈت وشنو دگمبر جی کی بھی کوشش کچھ کم نہیں تھی۔

میرس کالج کے کھلوانے کے بعد کچھ برسوں تک پنڈت جی برابر خود اس کی دیکھ بھال بڑے جتن سے کرتے رہے۔ کچھ دن تک تو وہ خود نیم سے کلاس بھی لیا کرتے تھے۔ پر انکی صحت دن پر دن گرتی جا رہی تھی۔ لکھنؤ کی سخت گرمی اور سردی اُن سے برداشت نہیں ہونے لگی اور اُن دنوں وہ بمبئی چلے جایا کرتے اور موسم معتدل ہونے پر پھر لکھنؤ چلے آتے۔ پھر آخر میں اپنا کام انھوں نے اپنے گدّی نشین شاگرد پرنسپل شری کرشن رتن جنکر کو سونپ کر میرس کالج سے سدا کے لئے وداع لی اور اُس کے کچھ ہی دن بعد اس دنیا

से कूच भी कर गये. रातन जन्कर साहब अभी भी इस कालेज के प्रिंसिपल हैं. इनके जमाने में इस कालेज ने बहुत तरक्की की. अब यह यूनिवरसिटी हो गया है और भातखंडे यूनिवरसिटी कहलाता है.

इस कालेज में पहले खोज खोज कर चोटी के खानदानी गुनियों को ही तालीम देने के लिये प्रोफेसर बनाया गया था. जैसे खयाल पद्धति के गाने के लिये हद्दू हस्सू खां के वंशज बाबा निसार, लखनऊ के खलीफा अहमद खां और खुरशीद अली, सितार के लिये तुराब खां के शागिर्द हामिद हुसेन खां, सरोद के लिये करामततुल्ला खां के भानजे सखावत हुसेन खां और पखावज के लिये सखाराम वगैरा. पर हमें दुख है कि इनमें से ज्यादातर अब नहीं रहे. और इनके बाद फिर ऐसे लोगों की तैनाती नहीं हो सकी. बड़े लोगों में से कुछ ने तो अपनी जिन्दगी में ही ऊब कर छोड़ दिया, और कुछ गुजर गये, कुछ ने मालिकों के साथ नाइत्तिफाकी की वजह से छोड़ दिया.

हम देखते हैं कि संगीत की शिक्षा का काम आज दिन ज्यादा तर सभी स्कूल या कालेजों में उन नौजवान पढ़े लिखे गैर खानदानी शौक़ीनों को दिया जा रहा है जिनके वंश में पहले कभी संगीत का प्रचार नहीं रहा. यह लोग ज्यादा से ज्यादा पांच बरस का संगीत का कोर्स किसी कालेज, एकेडेमी, या एसोसियेशन में पूरा कर और डिप्लोमा ले कर संगीत की तालीम देने लगजाते हैं और अक्सर वह खुद भी अपने ही जैसे किसी शौक़ीन डिप्लोमायाफ्ता से तालीम पाकर निकलते हैं न कि किसी खानदानी गुनी से.

سے کوچ بھی کر گئے۔ راتن جنکر صاحب ابھی بھی اس کالج کے پرنسپل ہیں۔ انکے زمانے میں اس کالج نے بہت ترقی کی۔ اب یہہ یونیورسٹی ہوگیا ہے اور بھات کھنڈے یونیورسٹی کہلاتا ہے۔

اس کالج میں پہلے کھوج کھوج کر چوٹی کے خاندانی گنیوں کو ہی تعلیم دینے کے لئے پروفیسر بنایا گیا تھا۔ جیسے خیال پدھتی کے گانے کیلئے ہدو حسو خاں کے ونشج بابا نثار، لکھنؤ کے خلیفہ احمد خاں اور خورشید علی، ستار کے لئے تراب خاں کے شاگرد حامد حسین خاں، سرود کیلئے کرامت اللہ خاں کے بھانجے سخاوت حسین خاں اور پکھاوج کیلئے سکھا رام وغیرہ پر ہمیں دکھ ہے کہ ان میں سے زیادہ تر اب نہیں رہے۔ اور ان کے بعد پھر ایسے لوگوں کی تعیناتی نہیں ہو سکی۔ بڑے لوگوں میں سے کچھ نے تو اپنی زندگی میں ہی اوب کر چھوڑ دیا، اور کچھ گذر گئے، کچھ نے مالکوں کے ساتھ نا اتفاقی کی وجہ سے چھوڑ دیا۔

ہم دیکھتے ہیں کہ سنگیت کی شکشا کا کام آج دن زیادہ تر سبھی اسکول یا کالجوں میں اُن نوجوان پڑھے لکھے غیر خاندانی شوقینوں کو دیا جا رہا ہے جن کے ونش میں پہلے کبھی سنگیت کا پرچار نہیں رہا۔ یہ لوگ زیادہ سے زیادہ پانچ برس کا سنگیت کا کورس کسی کالج، اکیڈیمی، یا ایسوسی ایشن میں پورا کر اور ڈپلوما لے کر سنگیت کی تعلیم دینے لگ جاتے ہیں اور اکثر وہ خود بھی اپنے ہی جیسے شوقین ڈپلوما یافتہ سے تعلیم پاکر نکلتے ہیں نہ کہ کسی خاندانی گنی سے۔

अर्से तक सीख कर ! ऐसी हालत में पुराने संगीत के असली रूप का प्रचार होना नामुमकिन ही है .

पर गुनी लोगों के रहते हुये भी ऐसे ना तजरबाकार लोगों को क्यों पसंद किया जाता है इसकी वजह बतलाते हुये अक्सर यह कहा जाता है कि ये पुराने ढर्रे के ख़ानदानी कलावंत पढ़ना लिखना नहीं जानते, कोर्स और करीकुलम की ज़रूरियात को नहीं समझ पाते, कोर्स के हिसाब से विषय को बाँट कर पढ़ाना नहीं समझ पाते, वक़्त की पाबंदी का कुछ ख़याल नहीं करते, क्लास-सिस्टम से जैसे लड़कों को अंग्रेजी, हिसाब, वग़ैरह पढ़ाये जाते हैं, उस तरह से तालीम देने का न तो इन्हें तजरबा है, न इसे यह पसंद करते हैं, और न ज़माने की ज़रूरियात को मद्दे नज़र रखते हुये नये रंग में अपने को रंगने को ही तैयार हैं. और सब से बड़ी बात यह है कि बिलकुल कोरे नौसिखियों को सिखाने में इनका जी नहीं लगता. यह या तो बड़े जलसों, राजदरबारों में या फिर म्यूज़िक कानफ़रेंसों में ही बड़े बड़े गुनियों और क़द्रदानों के मुक़ाबले में अपना जौहर दिखा सकते हैं; और तालीम यह सिर्फ़ अपनी औलाद या किसी एक शागिर्द को अकेले में ही दे सकते हैं, न कि क्लास रूम में एक साथ बीसों लड़कों को बैठा कर, और इन ४० मिनट के एक घंटे में, और सो भी दोपहर या तीसरे पहर जैसे बेतुके वक़्त, जो न गाना बजाना करने का वक़्त है न सिखाने का. इसके लिये ठीक वक़्त है सुबह ९ बजे तक या फिर शाम को चराग़ जलने के बाद से ९ बजे तक.

यह आज दिन एक बहुत बड़ी कठिनाई साबित हो रही है. संगीत अब सभी सूबों में शिक्षा का एक ख़ास विषय हो गया है.

عرصے تک سیکھ کر! ایسی حالت میں پرانے سنگیت کے اصلی روپ کا پرچار ہونا ناممکن ہی ہے۔

پر گنی لوگوں کے رہتے ہوئے بھی ایسے ناتجربہ کار لوگوں کو کیوں پسند کیا جاتا ہے اسکی وجہ بتلاتے ہوئے اکثر یہ کہا جاتا ہے کہ یہ پرانے ڈھرّے کے خاندانی کلاونت پڑھنا لکھنا نہیں جانتے، کورس اور کریکولم کی ضروریات کو نہیں سمجھ پاتے، کورس کے حساب سے وشے کو بانٹ کر پڑھانا نہیں سمجھ پاتے، وقت کی پابندی کا کچھ خیال نہیں کرتے، کلاس سسٹم سے جیسے لڑکوں کو انگریزی، حساب، وغیرہ پڑھائے جاتے ہیں، اس طرح سے تعلیم دینے کا نہ تو انھیں تجربہ ہے، نہ اسے یہ پسند کرتے ہیں، اور نہ زمانے کی ضروریات کو مد نظر رکھتے ہوئے نئے رنگ میں اپنے کو رنگنے کو ہی تیار ہیں۔ اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ بالکل کورے نوسکھیوں کو سکھانے میں انکا جی نہیں لگتا۔ یہ یا تو بڑے جلسوں، راج درباروں میں یا پھر میوزک کانفرنسوں میں ہی بڑے بڑے گنیوں اور قدر دانوں کے مقابلے میں اپنا جوہر دکھا سکتے ہیں۔ اور تعلیم یہ صرف اپنی اولاد یا کسی ایک شاگرد کو اکیلے میں ہی دے سکتے ہیں، نہ کہ کلاس روم میں ایک ساتھ بیسوں لڑکوں کو بٹھا کر، اور ان ۴۰ منٹ کے ایک گھنٹے میں اور سو بھی دوپہر یا تیسرے پہر جیسے بے تکے وقت جو نہ گانا بجانا کرنے کا وقت ہے نہ سکھانے کا۔ اسکے لئے ٹھیک وقت ہے صبح ۹ بجے تک یا پھر شام کو چراغ جلنے کے بعد سے ۹ بجے تک۔

یہ آج دن ایک بہت بڑی کٹھنائی ثابت ہو رہی ہے۔ سنگیت اب سبھی صوبوں میں شکشا کا ایک خاص وشے ہو گیا ہے۔

जैसे भाषा, साहित्य या इतिहास वग़ैरह. इसकी परीक्षाएं उसी तरह परचों से और अमली तौर पर होती हैं जैसे और विज्ञानों की. पर ये खानदानी लोग इस तरह के इम्तहान और उसकी कामयाबी में कोई विश्वास नहीं रखते. वह तो बस एक बात जानते हैं. गुनियों के जलसे में जिसकी सब लोग तारीफ कर दे, जिसे गुनी लोग 'मान' जायं बस उसी की तालीम पूरी हुई.

तो ऐसी हालत में क्या करना ? सिर्फ संगीत के अकेले विषय के लिये शिक्षा विभाग को अब तक के क़ायम किये हुये सारे इन्तज़ाम बदल डालना मुमकिन नहीं है. फिर मान लीजिये यह किसी तरह हो भी जाय, जिसकी कि कोई आशा नहीं है, तो यह कैसे हो सकता है कि एक दफ़ा सिर्फ एक ही विद्यार्थी गुरु के सामने बैठे. इतना वक़्त कहाँ, इतने उस्ताद कहाँ, और इतना रुपया कहाँ ? फिर यह लोग किसी एक राग को ही सालों पक्का कराते रहते हैं, यहां पांच साल के कोर्स में कम से कम ४५ राग पूरे कराने का कोर्स है.

* इम्तहान पास कराने का 'हुनर' ये पुराने गुनी वाक़ई नहीं जानते. और न इन सरकारी परीक्षाओं को ये कोई महत्व देते हैं. परीक्षा पास कराने की 'तरकीबें' तो यह पढ़े लिखे 'मास्टर' लोग ही जानते हैं.

तो फिर यही सवाल उठता है कि ऐसी हालत में किया क्या जाय,? संगीत की सच्ची विद्या हमारे बच्चे कैसे सीखें ? इस में कोई शक नहीं कि एक हद तक हमारे शिक्षाविभाग और गाने बजाने के स्कूलों की यह २५ वर्ष की कीमती आज़मायश बेकार साबित हो रही है. इस क़िस्म की तालीम लेकर आज तक कोई

جیسے بھاشا، ساہتیہ یا اتہاس وغیرہ۔ اسکی پریکشائیں اسی طرح پرچوں سے اور عملی طور پر ہوتی ہیں جیسے اور دگیانوں کی۔ پر یہ خاندانی لوگ اس طرح کے امتحان اور اسکی کامیابی میں کوئی وشواس نہیں رکھتے۔ وہ تو بس ایک بات جانتے ہیں۔ گنیوں کے جلسے میں جس کی سب لوگ تعریف کردیں، جسے گنی لوگ 'مان' جائیں بس اسی کی تعلیم پوری ہوئی۔

تو ایسی حالت میں کیا کرنا؟ صرف سنگیت کے اکیلے وشے کے لئے سکشا وبھاگ کو اب تک کے قائم کئے ہوئے سارے انتظام بدل ڈالنا ممکن نہیں ہے۔ پھر مان لیجئے یہ کسی طرح ہو بھی جائے، جس کی کہ کوئی آشا نہیں ہے تو یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ ایک دفعہ صرف ایک ہی ودیارتھی گرو کے سامنے بیٹھے۔ اتنا وقت کہاں، اتنے استاد کہاں، اور اتنا روپیہ کہاں؟ پھر یہ لوگ کسی ایک راگ کو ہی سالوں پکا کراتے رہتے ہیں۔ یہاں پانچ سال کے کورس میں کم سے کم ۴۵ راگ پورے کرانے کا کورس ہے۔

امتحان پاس کرانے کا 'ہنر' یہ پرانے گنی واقعی نہیں جانتے۔ اور نہ ان سرکاری پریکشاؤں کو یہ کوئی مہتو دیتے ہیں۔ پریکشا پاس کرانے کی 'ترکیبیں' تو یہ پڑھے لکھے 'ماسٹر' لوگ ہی جانتے ہیں۔

تو پھر یہی سوال اٹھتا ہے کہ ایسی حالت میں کیا کیا جائے؟ سنگیت کی سچی ودیا ہمارے بچے کیسے سیکھیں؟ اس میں کوئی شک نہیں کہ ایک حد تک ہمارے شکشا وبھاگ اور گانے بجانے کے اسکولوں کی یہ ۲۵ ورش کی قیمتی آزمایش بیکار ثابت ہو رہی ہے۔ اس قسم کی تعلیم لے کر آج تک ——— کوئی

लड़का ऐसा नहीं निकला जो गाने बजाने में पुराने गुनियों की बराबरी तो क्या उनका पासंग भी हो सके. यह बिलकुल सही है.

तो फिर क्या किया जाय ? इस तरह की तालीम को बिलकुल बेकार समझ कर शिक्षा विभाग से संगीत का विषय निकाल दिया जाय और यह कहा जाय कि प्रचार काफी हो चुका, और जनता में शौक़ भी काफी बढ़ाया जा चुका और अब जिसको सच्चा शौक़ होगा वह किसी ख़ानदानी गुनी की शरण मे जाकर अपने जी भर तालीम ले लेगा. और इस तरह साल मे अगर दो चार भी ऐसे लड़के निकले जो जलसों मे आला दर्जे के ख़ानदानी गुनियो की बराबरी कर सकें तो यह संगीत विद्या के उद्धार के मानी मे उस हालत से कहीं अच्छा होगा जो कि आज कल हो रही है यानी हर साल सैकड़ों डिप्लोमा लेकर निकलते हैं, पर ख़ानदानी गुनियों की निगाह में सब बेकार.

हमारी राय में ऊपर कही हुई दोनों बाते काबिले अमल नहीं हैं. इन दोनो के बीच का एक रास्ता लेना होगा. हर कालेज या स्कूल मे एक इज़्ज़तदार ख़ानदानी गुनी रखना होगा, जो चाहे दस्तख़त तक करना न जानता हो पर अपने इल्म मे पूरा हो. और फिर यह नियम रद्द कर देना होगा कि हर शख़्स जो चाहे, गाने बजाने का विषय ले सकता है, सिर्फ हाई स्कूल या इन्टर पास कर लेने की ग़रज़ से. यह मानी हुई बात है कि सब लोग गाना बजाना नहीं सीख सकते. कुदरत ने जिसे इसके लायक़ बनाया है वही इस गाने बजाने की दुनिया में कुछ कर सकता है. और पुराने गुनियों को इसकी पहचान होती है. जितने लोग संगीत लेना चाहें उनका

لڑکا ایسا نہیں نکلا جو گانے بجانے میں پرانے گنیوں کی برابری تو کیا انکا پاسنگ بھی ہو سکے۔ یہ بالکل صحیح ہے۔

تو پھر کیا کیا جائے؟ اس طرح کی تعلیم کو بالکل بے کار سمجھ کر شکشا وبھاگ سے سنگیت کا وشے نکال دیا جائے اور یہ کہا جائے کہ پرچار کافی ہو چکا، اور جنتا میں شوق بھی کافی بڑھایا جا چکا اور اب جس کو سچا شوق ہوگا وہ کسی خاندانی گنی کی شرن میں جاکر اپنے جی بھر تعلیم لے لیگا۔ اور اس طرح سال میں اگر دو چار بھی ایسے لڑکے نکلے جو جلسوں میں اعلیٰ درجے کے خاندانی گنیوں کی برابری کر سکیں تو یہ سنگیت ودّیا کے ادّھار کے معنی میں اس حالت سے کہیں اچھا ہوگا جو کہ آج کل ہو رہی ہے یعنی ہر سال سیکڑوں ڈپلومہ لیکر نکلتے ہیں، پر خاندانی گنیوں کی نگاہ میں سب بیکار۔

ہماری رائے میں اوپر کہی ہوئی دونوں باتیں قابل عمل نہیں ہیں۔ ان دونوں کے بیچ کا ایک راستہ لینا ہوگا۔ ہر کالج یا اسکول میں ایک عزت دار خاندانی گنی رکھنا ہوگا، جو چاہے دستخط تک کرنا نہ جانتا ہو پر اپنے علم میں پورا ہو۔ اور پھر یہ نیم رد کر دینا ہوگا کہ ہر شخص جو چاہے، گانے بجانے کا وشے لے سکتا ہے، صرف ہائی اسکول یا انٹر پاس کر لینے کی غرض سے۔ یہ مانی ہوئی بات ہے کہ سب لوگ گانا بجانا نہیں سیکھ سکتے۔ قدرت نے جسے اس کے لائق بنایا ہے وہی اس گانے بجانے کی دنیا میں کچھ کر سکتا ہے۔ اور پرانے گنیوں کو اس کی پہچان ہوتی ہے۔ جتنے لوگ سنگیت لینا چاہیں ان کا

पहले सख्ती के साथ. एक 'टेस्ट' या आज़मायश हो. गाने के लिए जिसकी आवाज़, समझ, सूझ बूझ, कुदरत ने मुआफ़िक़ बनाई है वही गाने के क्लास में लिया जाय. बाजे या नाच सीखने वालों को भी इसी तरीक़े से टेस्ट कर लेना होगा. जिसका जिस्म कुदरती तौर पर नृत्य (नाच) के क़ाबिल भगवान ने बनाया हो, लय और ताल जिसके दिमाग़ और अंग में कूटकूट कर भरे हों. बाजों में जिसकी स्वाभाविक (कुदरती) रुचि हो और लय का माद्दा हो उसे ही बाजे सिखाये जायँ. मिसाल के तौर पर कह सकते हैं कि तबले का कोर्स आसान समझ कर ७५ फ़ीसदी बाजे वाले हाई स्कूल में तबला ले बैठते हैं. पर जिसको वाक़ई तबला कहते हैं वह शायद सब बाजों में ज़्यादा मुश्किल इस मानी में है कि इस में महारत हासिल करने के लिए सभों से ज़्यादा रियाज़ करने और वक़्त देने की ज़रूरत है. लड़कियों को तो कभी तबला न लेने देना चाहिये. तबला या पखावज स्त्री का बाजा नहीं है. पर हम देखते हैं कि महज़ हाई स्कूल या इन्टर 'पार' कर जाने की ग़रज़ से ५० फ़ीसदी लड़कियां भी तबले का ही इम्तहान देना पसन्द करती हैं. तालीम वही है जो आगे चलकर जीवन का एक अंग हो जाय. यह नहीं कि इम्तहान पास करने तक ही उससे ताल्लुक़ रखा जाय. जो सिर्फ़ इसी ग़रज़ से गाने बजाने के क्लास में नाम लिखाना चाहते हों उन्हें तो कभी भी इजाज़त न मिलनी चाहिये.

ऐसा करने पर भरमार कम होगी और सिर्फ़ ऐसे लोग ही आ सकेंगे जो सचमुच आगे चलकर कुछ कर सकने का माद्दा

پہلے سختی کے ساتھ۔ ایک 'ٹسٹ' یا آزمائش ہو۔ گانے کے لئے جس کی آواز، سمجھ، سوجھ بوجھ، قدرت نے موافق بنائی ہو وہی گانے کے کلاس میں لیا جائے۔ باجے یا ناچ سیکھنے والوں کو بھی اسی طریقے سے ٹیسٹ کر لینا ہوگا۔ جس کا جسم قدرتی طور پر نرت (ناچ) کے قابل بھگوان نے بنایا ہو، لے اور تال جس کے دماغ اور انگ میں کوٹ کوٹ کر بھری ہوں۔ باجوں میں جس کی سوابھاوک (قدرتی) رچی ہو اور لے کا مادہ ہو اُسے ہی باجے سکھائے جائیں۔ مثال کے طور پر کہہ سکتے ہیں کہ طبلے کا کورس آسان سمجھ کر ۷۵ فیصدی باجے والے ہائی اسکول میں طبلہ لے بیٹھتے ہیں۔ پر جس کو واقعی طبلہ کہتے ہیں وہ شاید سب باجوں میں زیادہ مشکل اس معنی میں ہے کہ اس میں مہارت حاصل کرنے کے لئے سبھوں سے زیادہ ریاض کرنے اور وقت دینے کی ضرورت ہے۔ لڑکیوں کو تو کبھی طبلہ نہ لینے دینا چاہئے۔ طبلہ یا پکھاوج استری کا باجہ نہیں ہے۔ پر ہم دیکھتے ہیں کہ محض ہائی اسکول یا انٹر 'پار' کر جانے کی غرض سے ۵۰ فیصدی لڑکیاں بھی طبلے کا ہی امتحان دینا پسند کرتی ہیں۔ تعلیم وہی ہے جو آگے چل کر جیون کا ایک انگ ہو جائے۔ یہ نہیں کہ امتحان پاس کرنے تک ہی اس سے تعلق رکھا جائے۔ جو صرف اسی غرض سے گانے بجانے کے کلاس میں نام لکھانا چاہتے ہوں انھیں تو کبھی بھی اجازت نہ ملنی چاہئے۔

ایسا کرنے پر بھرمار کم ہوگی اور صرف ایسے لوگ ہی جا سکیں گے جو سچ مچ آگے چل کر کچھ کر سکنے کا مادہ

रखते होंगे. ऐसी हालत में एक क्लास में पांच से ज्यादा लड़के न हो सकेंगे और अगर हुये भी तो उन्हें एक से ज्यादा सेक्शनों में बांट दिया जा सकेगा. और एक साथ उस्ताद दो तीन लड़कों से ज्यादा न ले. जिनकी आवाज़ बराबर की हो या जो एक ही बाजा बजाते हों ऐसे दो या तीन लड़कों या लड़कियों को एक साथ लिया जाय. और इस तरह की टोलियों में बाँट कर बारी बारी से उन्हें तालीम मिले. चाहे हर लड़के को हर रोज़ वक़्त न मिले पर जिस दिन जिस लड़के की बारी हो उस उस दिन पूरी तवज्जह और पूरे ध्यान के साथ तालीम मिले.

और फिर जो लोग मैरिस कालेज या इसकी बराबरी के किसी और कालेज से आख़िरी इम्तहान पास करके निकलें और संगीत की तालीम देने के लिये उम्मीदवार हों उनके लिये यह ज़रूरी हो कि संगीत के अंदर जिस ख़ास विषय (जैसे गाने की कोई ख़ास स्टाइल —ध्रुपद, ख़्याल या ठुमरी या टप्पा) की या किसी ख़ास बाजे की तालीम देने की ख़्वाहिश रखते हों, वह इस विषय के माने हुये किसी ख़ानदानी विशेषज्ञ या माहिर से कम से कम एक बरस तक तालीम लें और इसका सार्टिफिकेट पेश करें. और इनके भी ऊपर गाने बजाने के शिक्षकों का एक ट्रेनिंग कालेज हो जिनमें ख़ानदानी उस्तादों की देख रेख में इन्हें तरीक़ा तालीम सिखाया जाय. जो इसकी अच्छी सनद हासिल कर के निकलें उन्हें ही पहले मौक़ा दिया जाय.

और फिर! ख़ानदानी उस्तादों में से सब एक तरह के नहीं होते. खोज करने से उनमें भी ऐसे मिल सकेंगे जो हिन्दी,

رکھتے ہونگے ۔ ایسی حالت میں ایک کلاس میں پانچ سے زیادہ لڑکے نہ ہو سکیں گے اور اگر ہوئے بھی تو انھیں ایک سے زیادہ سکشنوں میں بانٹ دیا جا سکے گا ۔ اور ایک ساتھ استاد دو تین لڑکوں سے زیادہ نہ لے ۔ جن کی آواز برابر کی ہو یا جو ایک ہی باجا بجاتے ہوں ایسے دو یا تین لڑکوں یا لڑکیوں کو ایک ساتھ لیا جائے ۔ اور اس طرح کی ٹولیوں میں بانٹ کر باری باری سے انھیں تعلیم ملے ۔ چاہے ہر لڑکے کو ہر روز وقت نہ ملے پر جس دن جس لڑکے کی باری ہو اس اس دن پوری توجہ اور پورے دھیان کیساتھ تعلیم ملے ۔

اور پھر جو لوگ میرس کالج یا اسکی برابری کے کسی اور کالج سے آخری امتحان پاس کرکے نکلیں اور سنگیت کی تعلیم دینے کے لئے امیدوار ہوں انکے لئے یہ ضروری ہو کہ سنگیت کے اندر جس خاص وشے (جیسے گانے کی کوئی خاص اسٹائل — دھرپد، خیال یا ٹھمری یا ٹپہ) کی یا کسی خاص باجے کی تعلیم دینے کی خواہش رکھتے ہوں، وہ اس وشے کے مانے ہوئے کسی خاندانی وشیشگیہ یا ماہر سے کم سے کم ایک برس تک تعلیم لیں اور اس کا سرٹیفیکیٹ پیش کریں ۔ اور ان کے بھی اوپر گانے بجانے کے شکشکوں کا ایک ٹریننگ کالج ہو جس میں خاندانی استادوں کی دیکھ ریکھ میں انھیں طریقہ تعلیم سکھایا جائے ۔ جو اس کی اچھی سند حاصل کرکے نکلیں انھیں ہی پہلے موقع دیا جائے ۔

اور پھر ! خاندانی استادوں میں سے سب ایک طرح کے نہیں ہوتے ۔ کھوج کرنے سے ان میں بھی ایسے مل سکیں گے جو ہندی،

या उर्दू की अच्छी खासी और अंग्रेज़ी की भी काम चलाऊ जानकारी रखते हैं. ऐसे भी संगीत के विद्वान मिलेंगे जो संस्कृत के पंडित हैं और संगीत पर लिखे हुए संस्कृत के पुराने ग्रंथों को पढ़ा सकेंगे. पर बोर्ड, यूनिवरसिटी, या क़िसी भी संगीत के स्कूल या कालेज में संगीत के शिक्षक के लिये यह क़ैद न होनी चाहिये कि वह संगीत का डिप्लोमा हासिल किये हो, खासकर खानदानी गुनियों के लिये. हमने अक्सर ऐसा भी देखा है कि शुरू में जब संगीत शिक्षकों की माँग हुई और जब डिप्लोमा पास शुदा शिक्षक क़तई थे ही नहीं, या बहुत कम थे, तब जो खानदानी गुनी शिक्षक के तौर पर स्कूलों में तैनात किये गये थे उनके लिये भी, जब बोर्ड ने शिक्षक होने के लिये डिप्लोमा लेना लाज़िमी बताया तब उनको भी डिप्लोमा का इम्तहान देना, और सो भी अपने ही पढ़ाये हुये बालकों के साथ, ज़रूरी हो गया. इसमें उन्हों ने अपनी तौहीन समझी और ज़्यादातर यह अपनी नौकरियों से अलग हो गये. यह बड़े अफ़सोस की बात हुई.

हम अपने लेख के सिलसिले में जैसे मज़मून से ज़रा हट गये थे. पर मैरिस कालेज के सिलसिले में इस विषय पर कुछ विचार करना लाज़िमी हो गया था. तो हम मुहम्मद अली खां साहब के शागिर्दों का बयान कर रहे थे. हम देखते हैं कि मैरिस कालेज खुलने के कुछ ही दिन बाद पंडित भातखंडे, राजा साहब नवाब अली, और इनके गुरु मुहम्मद अली खां साहब तीनों ही चल बसे. और छम्मन साहब तो पहले ही गुज़र चुके थे.

یا اُردو کی اچھی خاصی اور انگریزی کی بھی کام چلاؤ جانکاری رکھتے ہیں ۔ ایسے بھی سنگیت کے ودوان ملیں گے جو سنسکرت کے پنڈت ہیں اور سنگیت پر لکھے ہوئے سنسکرت کے پُرانے گرنتھوں کو پڑھا سکیں گے ۔ پر بورڈ، یونیورسٹی، یا کسی بھی سنگیت کے سکول یا کالج میں سنگیت کے شکشک کے لئے یہ قید نہ ہونی چاہئے کہ وہ سنگیت کا ڈپلومہ حاصل کئے ہو۔ خاص کر خاندانی گنیوں کے لئے۔ ہم نے اکثر ایسا بھی دیکھا ہے کہ شروع میں جب سنگیت شکشکوں کی مانگ ہوئی اور جب ڈپلومہ پاس شدہ شکشک قطعی تھے ہی نہیں یا بہت کم تھے، تب جو خاندانی گنی شکشک کے طور پر سکولوں میں تعینات کئے گئے تھے اُنکے لئے بھی، جب بورڈ نے شکشک ہونے کے لئے ڈپلومہ لینا لازمی بتایا تب اُن کو بھی ڈپلومہ کا امتحان دینا، اور سو بھی اپنے ہی پڑھائے ہوئے بالکوں کے ساتھ، ضروری ہوگیا۔ اس میں اُنھوں نے اپنی توہین سمجھی اور زیادہ تر یہ اپنی نوکریوں سے الگ ہوگئے۔ یہ بڑے افسوس کی بات ہوئی۔

ہم اپنے لیکھ کے سلسلے میں جیسے مضمون سے ذرا ہٹ گئے تھے۔ پر میرس کالج کے سلسلے میں اس وشئے پر کچھ وچار کرنا لازمی ہو گیا تھا۔ تو ہم محمد علی خاں صاحب کے شاگردوں کا بیان کر رہے تھے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ میرس کالج کھلنے کے کچھ ہی دن بعد پنڈت بھات کھنڈے، راجہ صاحب نواب علی، اور ان کے گرو محمد علی خاں صاحب تینوں ہی چل بسے۔ اور چھمن صاحب تو پہلے ہی گذر چکے تھے۔

राजा नवाब अली साहब के बहुत कहने से ही उस्ताद मुहम्मद अली खां साहब लखनऊ एक अर्से तक रहे. वह रौशन बाग़ में रहते थे और वहां पर भैया साहब गनपत राव वग़ैरह शाम को खाना खाने के बाद अक्सर पहुंच जाते और जी भर संगीत चर्चा करते, अपनी अपनी आप बीती कहकर खूब खूब रोते भी थे. इसी ज़माने में राजा साहब ने अपनी किताब 'मुआरिफुन्नग़मात' खाॅं साहब की मदद से तैयार की थी, जिस की चर्चा ऊपर हो चुकी है. खाॅं साहब बिलकुल फ़क़ीराना तबीयत के आदमी थे और उनके पीछे कुछ लालची चालाक लोग भी पड़े रहते थे जो उन से किसी न किसी बहाने रुपये ऐंठ लिया करते थे उन्होंने लाखों कमाया और लाखों इसी तरह उड़ा दिया. कोई लड़की की शादी के नाम से, कोई ग़रीबी की वजह से इन के सामने हाथ पसारे ही रहता था और पास में पैसा रहते यह किसी से इनकार नहीं कर सकते थे.

खाॅं साहब के कोई औलाद नहीं थी. उन्होंने एक लड़की पाल ली थी, इसी से शौकत अली नाम का एक लड़का हुआ था जिसे इन्होंने अपने बच्चे के तौर पर गोद लेलिया था और इसे रबाब की तालीम देने लगे थे.

खाँ साहब को पूरबी बंगाल—मुकतागाछा, मैमनसिंह के जमींदार श्री ब्रजेंद्रकिशोर रायचौधरी साहब बहुत मानते थे, और उनके यहाॅं यह अक्सर जाया करते थे. यह गाने बजाने के बेहद शौक़ीन और प्रचार करने वाले हो गये हैं. वज़ीर खाँ साहब के बेटे ख़लीफ़ा सग़ीर खाँ और पोते बीनकार दबीर खाॅं को लेकर कलकत्ते

(६५७)

راجا نواب علی صاحب کے بہت کہنے سے ہی استاد محمد علی خاں صاحب لکھنؤ ایک عرصے تک رہے. وہ روشن باغ میں رہتے تھے اور وہاں پر بھیا صاحب گنپت راؤ وغیرہ شام کو کھانا کھانے کے بعد اکثر پہنچ جاتے اور جی بھر سنگیت چرچا کرتے، اپنی اپنی آپ بیتی کہہ کر خوب خوب روتے بھی تھے. اسی زمانے میں راجا صاحب نے اپنی کتاب 'معارف النغمات' خاں صاحب کی مدد سے تیار کی تھی، جس کی چرچا اوپر ہو چکی ہے. خاں صاحب بالکل فقیرانہ طبیعت کے آدمی تھے اور ان کے پیچھے کچھ لالچی چالاک لوگ بھی پڑے رہتے تھے جو ان سے کسی نہ کسی بہانے روپے اینٹھ لیا کرتے تھے. انھوں نے لاکھوں کمایا اور لاکھوں اسی طرح اڑا دیا. کوئی لڑکی کی شادی کے نام سے، کوئی غریبی کی وجہ سے ان کے سامنے ہاتھ پسارے ہی رہتا تھا اور پاس میں پیسہ رہتے یہ کسی سے انکار نہیں کر سکتے تھے.

خانصاحب کے کوئی اولاد نہیں تھی. انھوں نے ایک لڑکی پال لی تھی، اسی سے شوکت علی نام کا ایک لڑکا ہوا تھا جسے انھوں نے اپنے بچے کے طور پر گود لے لیا تھا اور اسے رباب کی تعلیم دینے لگے تھے.

خاں صاحب کو پوربی بنگال — مکتا گاچھا، میمن سنگھ کے زمیندار شری برجیندر کشور رائے چودھری صاحب بہت مانتے تھے، اور انکے یہاں یہ اکثر جایا کرتے تھے یہ گانے بجانے کے بیحد شوقین اور پرچار کرنے والے ہوگئے ہیں - وزیر خانصاحب کے بیٹے خلیفہ صغیر خاں اور پوتے بینکار دبیر خاں کو لے کر کلکتے

(۶۵۷)

में इन्होंने एक सेनी संगीत विद्यालय खोला था और इसी में नौजवान शौकत अली को भी शरीक कर लिया गया था. यह स्कूल 'कलकत्ता म्यूज़िकल एसोसियेशन' नाम से मशहूर है. इस में सेनी घराने की पद्धति पर आलाप, ध्रुपद, धमार बीन और रबाब की तालीम का इन्तज़ाम किया गया था. पर आजकल सुना है कि यह लोग अपने मकान पर ही तालीम देते हैं. इन लोगों की वजह से बंगाल और ख़ास कर कलकत्ते में संगीत का अच्छा प्रचार हुआ. श्री गोपेश्वर बनर्जी और गिरजाशंकर चक्रवर्ती का हिन्दुस्तान में अच्छा नाम है. महाराज योगीन्द्र नाथ राय बहादुर नाम के संगीत प्रेमी रईस ने शौकत अली को अपने यहाँ शरण दी है. एक दूसरे संगीत प्रेमी रईस कुमार क्षेत्र मोहन ठाकुर साहब ने ख़लीफ़ा सग़ीर ख़ाँ और दबीर ख़ाँ का पूरा ख़र्च अपने ऊपर ले लिया है ये ख़ुद भी संगीत का शौक़ करते हैं. व्रजेन्द्र किशोर राय चौधरी के साहबज़ादे वीरेंद्र किशोर रायचौधरी ने सेनी घराने से अच्छी तालीम हासिल की. ये सुरसिंगार पर आलाप बेहतरीन बजाते हैं. हम देखते हैं कि बंगाल के रईसों ने सेनियों की बड़ी क़द्र की, और इनसे भर सक इल्म भी हासिल किया. इससे बढ़ कर दौलत और वक़्त का उपयोग नहीं हो सकता. हमारे सूबे के रईसों को इन से सबक़ लेना चाहिये.

हम रबाबी और बीनकार दोनों घरानों का पूरा हाल दे चुके. सेनियों का तीसरा घराना जो जयपुर में बसा, अब उस का हाल कहना है. यह घराना सितार के लिये मशहूर है.

میں انھوں نے ایک سینی سنگیت ودیالیہ کھولا تھا اور اسی میں نوجوان شوکت علی کو بھی شریک کر لیا گیا تھا۔ یہ اسکول 'کلکتہ میوزیکل ایسوسی ایشن' نام سے مشہور ہے۔ اس میں سینی گھرانے کی پدھتی پر الاپ، دھرپد، دھمار بین اور رباب کی تعلیم کا انتظام کیا گیا تھا پر آج کل سنا ہے کہ یہ لوگ اپنے مکان پر ہی تعلیم دیتے ہیں۔ ان لوگوں کی وجہ سے بنگال اور خاص کر کلکتے میں سنگیت کا اچھا پرچار ہوا۔ شری گوپیشور بنرجی اور گرجا شنکر چکرورتی کا ہندستان میں اچھا نام ہے۔ مہاراج یوگندر ناتھ رائے بہادر نام کے سنگیت پریمی رئیس نے شوکت علی کو اپنے یہاں شرن دی ہے۔ ایک دوسرے سنگیت پریمی رئیس کمار کشیتر موہن ٹھاکر صاحب نے خلیفہ صغیر خاں اور دبیر خاں کا پورا خرچ اپنے اوپر لے لیا ہے۔ یہ خود بھی سنگیت کا شوق کرتے ہیں۔ برجیندر کشور رائے چودھری کے صاحبزادے ویریندر کشور رائے چودھری نے سینی گھرانے سے اچھی تعلیم حاصل کی۔ یہ سرسنگار پر الاپ بہترین بجاتے ہیں۔ ہم دیکھتے ہیں کہ بنگال کے رئیسوں نے سینیوں کی بڑی قدر کی۔ اور ان سے بھرسک علم بھی حاصل کیا۔ اس سے بڑھ کر دولت اور وقت کا اپیوگ نہیں ہو سکتا۔ ہمارے صوبے کے رئیسوں کو ان سے سبق لینا چاہئے۔

ہم ربابی اور بینکار دونوں گھرانوں کا پورا حال دے چکے۔ سینیوں کا تیسرا گھرانا جو جے پور میں بسا، اب اس کا حال کہنا ہے۔ یہ گھرانا ستار کے لئے مشہور ہے۔

हिन्दू मुसलमान एक दूसरे से क्या सीख सकते हैं ?

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

[भाई ओंकार नाथ शास्त्री का यह लेख ध्यान से पढ़ने का है. हिन्दू मुसलिम एकता के बारे में जो कुछ लिखा जाता है, वह बहुत कर राज काजी निगाह से लिखा जाता है. अंगरेजी राज को इसकी जरूरत थी कि वह हिन्दू मुसलमानों के दिलो मे एक दूसरे के खिलाफ ज्यादा से ज्यादा नफरत भरदे. आज हम आजाद हैं, हमें लड़ाने वाली कोई बाहरी ताक़त नहीं रह गई. हिन्दू मुसलिम एकता का काम पहले से अब बहुत आसान होना चाहिये. इस के लिये सब से जरूरी बात यह है कि हम हिन्दू मुसलमानों के उन बुनियादी शकों और शुबहों को दूर करने की कोशिश करें जो बचपन ही से उनके दिलो में पैदा कर दिये जाते हैं और जिन्दगी की आखिरी साँस तक दूर नहीं होते. कट्टर हिन्दू मुसलमानों को छोड़ दीजिये, नई रोशनी के पढ़े लिखे और आजाद खयाल हिन्दू मुसलमान भी अपने दिल से इन शकों को हटा नहीं पाते. एक हिन्दू नौजवान का प्यारा से प्यारा मुसलमान दोस्त भी इस शक से आजाद नहीं हो पाता कि उसका हिन्दू दोस्त, जो उसके साथ खाता पीता है और किसी तरह की छुआ छूत नहीं मानता, भीतर से भी उतना ही साफ है या नहीं

ہندو مسلمان ایک دوسرے سے کیا سیکھ سکتے ہیں؟

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

[بھائی اونکار ناتھ شاستری کا یہ لیکھ دھیان سے پڑھنے کا ہے. ہندو مسلم ایکتا کے بارے میں جو کچھ لکھا جاتا ہے، وہ بہت کر راج کاجی نگاہ سے لکھا جاتا ہے. انگریزی راج کو اس کی ضرورت تھی کہ وہ ہندو مسلمانوں کے دلوں میں ایک دوسرے کے خلاف زیادہ سے زیادہ نفرت بھردے. آج ہم آزاد ہیں، ہمیں لڑانے والی کوئی باہری طاقت نہیں رہ گئی. ہندو مسلم ایکتا کا کام پہلے سے اب بہت آسان ہونا چاہئے. اس کے لئے سب سے ضروری بات یہ ہے کہ ہم ہندو مسلمانوں کے اُن بنیادی شکوں اور شبہوں کو دور کرنے کی کوشش کریں جو بچپن ہی سے انکے دلوں میں پیدا کر دئے جاتے ہیں اور زندگی کی آخری سانس تک دور نہیں ہوتے. کٹر ہندو مسلمانوں کو چھوڑ دیجئے، نئی روشنی کے پڑھے لکھے اور آزاد خیال ہندو مسلمان بھی اپنے دل سے ان شکوں کو ہٹا نہیں پاتے. ایک ہندو نوجوان کا پیارا سے پیارا مسلمان دوست بھی اس شک سے آزاد نہیں ہو پاتا کہ اس کا ہندو دوست، جو اُس کے ساتھ کھاتا پیتا ہے اور کسی طرح کی چھوا چھوت نہیں مانتا، بھیتر سے بھی اُتنا ہی صاف ہے یا نہیں

जितना बाहर से है. वह जानता है कि उसका दोस्त रोज़ सुबह नहाता है, पर वह इस नहाने को ढोंग समझता है. हर मुसलमान हर हिन्दू के नहाने के बारे में जब सोचता है तो उसके सामने किसी ऐसे हिन्दू की तसवीर आ जाती है जिसे उसने कहीं एक लोटे पानी से या एक छोटे बरतन से नहाते देखा है. इसी तरह एक हिन्दू जब किसी मुसलमान को पाख़ाने से आकर बिना मिट्टी या साबुन से हाथ धोये हुए कोई दूसरा काम करते देखता है तो उसके दिल में आम मुसलमानों के गन्दे होने का ख़याल जड़ पकड़ लेता है.

अगर हिन्दू मुसलमान दोस्त आपस में अपने शक एक दूसरे पर ज़ाहिर करदें तो इससे बड़ा अच्छा नतीजा निकल सकता है. दूसरे की कमज़ोरी और दोष पर टोकने से अपनी कमज़ोरी और दोष भी मालूम हो सकते हैं और दूसरे की ख़ूबियाँ अपनाने का मौक़ा भी मिल सकता है. शर्त यही है कि ऐसी बातें प्यार और दोस्ती की हवा में की जायँ, और ज़रा भी कड़ुवाहट, कट हुज्जती या अपने को बड़ा समझने का भाव मन में न लाया जाय.

(६५०)

शास्त्री जी ने जिन बातों का ज़िक्र किया है उनके अलावा और भी बहुत सी बातें हैं जिनको छोड़ने से फ़ायदा ही होगा, लेकिन जो इसलिये नहीं छोड़ी जातीं कि बचपन से हम उनको देखते और करते आरहे हैं.

जिस तरह शास्त्री जी ने पूरी सच्चाई और बेतरफ़दारी से लिखा है उसी तरह दूसरे जो भाई भी इस मज़मून पर लिखेंगे उनके लेख 'नया हिन्द' में छापकर हमें ख़ुशी होगी.

म० अ० 'हुनर', वास्ते एडीटर]

جتنا باہر سے ہے۔ وہ جانتا ہے کہ اُسکا دوست روز صبح نہاتا ہے، پر وہ اس نہانے کو ڈھونگ سمجھتا ہے۔ ہر مسلمان ہر ہندو کے نہانے کے بارے میں جب سوچتا ہے تو اُس کے سامنے کسی ایسے ہندو کی تصویر آ جاتی ہے جسے اُس نے کہیں ایک لوٹے پانی سے یا ایک چھوٹے برتن سے نہاتے دیکھا ہے۔ اسی طرح ایک ہندو جب کسی مسلمان کو پاخانے سے آکر بنا مٹی یا صابن سے ہاتھ دھوئے ہوئے کوئی دوسرا کام کرتے دیکھتا ہے تو اُس کے دل میں عام مسلمانوں کے گندے ہونے کا خیال جڑ پکڑ لیتا ہے۔

اگر ہندو مسلمان دوست آپس میں اپنے شک ایک دوسرے پر ظاہر کردیں تو اس سے بڑا اچھا نتیجہ نکل سکتا ہے۔ دوسرے کی کمزوری اور دوش پر ٹوکنے سے اپنی کمزوری اور دوش بھی معلوم ہو سکتے ہیں اور دوسرے کی خوبیاں اپنانے کا موقع بھی مل سکتا ہے۔ شرط یہی ہے کہ ایسی باتیں پیار اور دوستی کی ہوا میں کی جائیں اور ذرا بھی کڑواہٹ، کٹ حجتی یا اپنے کو بڑا سمجھنے کا بھاؤ من میں نہ لایا جائے۔

(۶۵۰)

شاستری جی نے جن باتوں کا ذکر کیا ہے انکے علاوہ اور بھی بہت سی باتیں ہیں جن کو چھوڑنے سے فائدہ ہی ہوگا، لیکن جو اسلئے نہیں چھوڑی جاتیں کہ بچپن سے ہم انکو دیکھتے اور کرتے آرہے ہیں۔

جس طرح شاستری جی نے پوری سچائی اور بے طرفداری سے لکھا ہے اُسی طرح دوسرے جو بھائی اس مضمون پر لکھیں گے اُن کے لیکھ 'نیا ہند' میں چھاپ کر ہمیں خوشی ہوگی۔

[ایم، اے، ہنر، واسطے ایڈیٹر]

सभी जानते हैं कि हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी समाजी रिश्ते में जो कड़ुवाहट आज दिखाई दे रही है वह दोनों की सदियों की कट्टरता की उपज है. यही वजह है कि अगर हालत ज्यों की त्यों बनी रही तो इस कटुता के दूर होने के लिये भी कई दससालों की ज़रूरत है. जहाँ मेरा ख़याल है कि मुल्क के किसान मज़दूरों की इन्क़लाब के सिलसिले में उपजी इन्क़लाबी ज़हनियत, सुधार के इस काम में बड़ी तेज़ी ला सकती है, वहाँ मैं इस सलाह को ग़लत मानता हूँ कि इन्क़लाबी कारवाइयों के अलावा समाजी सुधारों से हम बिलकुल ही दूर रहें. नहीं, समाजी सुधार भी मज़दूरों किसानों की रोज़ मर्रा की इक़्तसादी या आर्थिक लड़ाइयों की तरह हमारे इन्क़लाबीप्रोग्राम का एक अंग होना चाहिये. इस ख़याल से हिन्दुओं और मुसलमानों का ध्यान उनके रहन सहन की उन ज़रूरी या ग़ैर ज़रूरी बातों की ओर दिलाना चाहता हूँ जिन्हें वह एक दूसरे से सीख कर ले सकते हैं या छोड़ सकते हैं.

हिन्दुस्तान के ज़्यादातर हिस्सों के लिये लोगों का रोज़ाना नहाना बहुत ज़रूरी चीज़ है. हिन्दुओं का यह कहना सही है कि बहुतेरे मुसलमान रोज़ाना स्नान न कर के ग़लती करते हैं. रोज़ाना न नहाने वाले हिन्दुओं की तदाद भी काफ़ी है, और रोज़ाना नहाने वाले मुसलमानों की तादाद भी कम नहीं है. मगर जब रोज़ाना नहाने से क्या हिन्दू क्या मुसलमान दोनों की सेहत पर एकसा और अच्छा असर पड़ता है, तो किसी को ऐसा करने में एतराज़ ही क्यों हो? ख़ासकर जब ऐसा न करने से जिस्मानी हालत ख़राब रहने के साथ साथ एक दूसरे के रहन सहन

سبھی جانتے ہیں کہ ہندؤں اور مسلمانوں کے آپسی سماجی رشتے میں جو کڑواہٹ آج دکھائی دے رہی ہے وہ دونوں کی صدیوں کی کٹرتا کی اپج ہے۔ یہی وجہ ہے کہ اگر حالت جیوں کی تیوں بنی رہی تو اس کٹوتا کے دور ہونے کے لئے بھی کوئی دس سالوں کی ضرورت ہے۔ جہاں میرا خیال ہے کہ ملک کے کسان مزدوروں کی انقلاب کے سلسلے میں اپجی انقلابی ذہنیت، سدھار کے اس کام میں بڑی تیزی لاسکتی ہے، وہاں میں اس صلاح کو غلط مانتا ہوں کہ انقلابی کارروائیوں کے علاوہ سماجی سدھاروں سے ہم بالکل ہی دور رہیں۔ نہیں سماجی سدھاً بھی مزدوروں کسانوں کی روزمرّہ کی اقتصادی یا آرتھک لڑائیوں کی طرح ہمارے انقلابی پروگرام کا ایک انگ ہونا چاہئے۔ اس خیال سے ہندؤں اور مسلمانوں کا دھیان انکے رہن سہن کی ان ضروری یا غیر ضروری باتوں کی اور دلانا چاہتا ہوں جنھیں وہ ایک دوسرے سے سیکھ کرلے سکتے ہیں یا چھوڑ سکتے ہیں۔

ہندستان کے زیادہ تر حصّوں کے لئے لوگوں کا روزانہ نہانا بہت ضروری چیز ہے۔ ہندؤں کا یہ کہنا صحیح ہے کہ بہتیرے مسلمان روزانہ اشنان نہ کرکے غلطی کرتے ہیں۔ روزانہ نہ نہانے والے ہندؤں کی تعداد بھی کافی ہے۔ اور روزانہ نہانے والے مسلمانوں کی تعداد بھی کم نہیں ہے۔ مگر جب روزانہ نہانے سے کیا ہندو کیا مسلمان دونوں کی صحت پر ایک سا اور اچھا اثر پڑتا ہے، تو کسی کو ایسا کرنے میں اعتراض ہی کیوں ہو؟ خاص کر جب ایسا نہ کرنے سے جسمانی حالت خراب رہنے کے ساتھ ساتھ ایک دوسرے کے رہن سہن

में भेद बना रहता है, जो दोनों की कट्टरता कायम रखने में मददगार होता है. बहुत से मुसलमान भाई सोचते हैं कि उनका हफ्ते का एक रोज का भी अच्छा गुसल उन हिन्दुओं के रोज़ाना के गुसल से अच्छा है, जो महज़ बदन पर एक घड़ा पानी डाल देने को या दरिया में एक डुबकी लगा लेने को ही स्नान कहते हैं. यह सच है कि इस तरह के नहाने से उतना फायदा नहीं होता जितना अच्छी तरह साबुन से नहाने में होता है, मगर फिर भी नहाने से बहुत कुछ सफाई हो जाती है. जिस्म और दिमाग़ में तरी आती है और इसका मुक़ाबला हफ्ते में एक बार का नहाना, चाहे कितनी भी सफाई से नहाया जाय, नहीं कर सकता. फिर भी जिसे साबुन नहीं मिलता वह मल कर नहा सकता है, और जल्दी में अगर किसी दिन पूरा नहाना न हो सके तो भी इस नियम को जहाँ तक मुमकिन हो, रोज़ाना निभाना ही अच्छा है. मगर इतना ही काफी नहीं है. अकसर हिन्दुओं के जनेऊ और कपड़े सड़े हुए पसीने से तर मिलते हैं, जो नहाने के आधे फ़ायदे को कम कर देते हैं. यह रोग मुसलमानों में भी मिलता है. ज़रूरत है कि जो लोग ज़्यादा साबुन का इन्तज़ाम नहीं कर सकते, वह अपने कपड़ों को यों ही दूसरे तीसरे पानी से पछाड़ लिया करें।

यहाँ यह बहस बेकार है कि जब न नहाने वालों में हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं, तो एक हिन्दू को क्यों किसी मुसलमान से ही इसलिए दूर रहना चाहिए कि वह रोज़ाना नहीं नहाता. जिन लोगों को बंगाल के दिहातों का तजरबा है, वह जानते हैं कि वहाँ के मर्द औरत उसी तालाब में गन्दगी भी करते हैं और उसी में नहाते हैं,

میں بھید بنا رہتا ہے، جو دونوں کی کٹرتا قائم رکھنے میں مددگار ہوتا ہے۔ بہت سے مسلمان بھائی سوچتے ہیں کہ اُن کا ہفتے کا ایک روز کا بھی اچھا غسل اُن ہندوؤں کے روزانہ کے غسل سے اچھا ہے، جو محض بدن پر ایک گھڑا پانی ڈال دینے کو یا دریا میں ایک ڈبکی لگا لینے کو ہی اشنان کہتے ہیں۔ یہ سچ ہے کہ اس طرح کے نہانے سے اتنا فائدہ نہیں ہوتا جتنا اچھی طرح صابن سے نہانے میں ہوتا ہے، مگر پھر بھی نہانے سے بہت کچھ صفائی ہو جاتی ہے۔ جسم اور دماغ میں تری آتی ہے اور اس کا مقابلہ ہفتے میں ایک بار کا نہانا، چاہے کتنی بھی صفائی سے نہایا جائے نہیں کر سکتا۔ پھر بھی جسے صابن نہیں ملتا وہ مل کر نہا سکتا ہے، اور جلدی میں اگر کسی دن پورا نہانا نہ ہو سکے تو بھی اس نیم کو جہاں تک ممکن ہو روزانہ نبھانا ہی اچھا ہے۔ مگر اتنا ہی کافی نہیں ہے۔ اکثر ہندوؤں کے جنیو اور کپڑے سڑے ہوئے پسینے سے تر ملتے ہیں، جو نہانے کے آدھے فائدے کو کم کر دیتے ہیں یہ روگ مسلمانوں میں بھی ملتا ہے۔ ضرورت ہے کہ جو لوگ زیادہ صابن کا انتظام نہیں کر سکتے، وہ اپنے کپڑوں کو یوں ہی دوسرے تیسرے پانی سے پچھاڑ لیا کریں۔

یہاں یہ بحث بیکار ہے کہ جب نہ نہانے والوں میں ہندو اور مسلمان دونوں ہیں، تو ایک ہندو کو کیوں کسی مسلمان سے ہی اس لئے دور رہنا چاہئے کہ وہ روزانہ نہیں نہاتا۔ جن لوگوں کو بنگال کے دیہاتوں کا تجربہ ہے، وہ جانتے ہیں کہ وہاں کے مرد عورت اسی تالاب میں گندگی بھی کرتے ہیں اور اسی میں نہاتے ہیں،

औरतें तो उसी में आबदस्त भी लेती हैं. इस नहाने में सफ़ाई क्यों है, कहना मुश्किल है. पर सवाल तो यह है कि अगर वह लोग नहाना बिलकुल छोड़ दें, तो क्या इससे भी बुरा नहीं होगा ?

भोजन—दोनों के भोजन बनाने और खाने के बरतनों में उतनी सफ़ाई नहीं रहती, जितनी होनी चाहिये. रसोई घर दोनों के साफ़ सुथरे नहीं रहते. हिन्दुओं का कहना है कि हमारे यहाँ फिर भी मुसलमानों की निस्बत ज़्यादा सफ़ाई रहती है. हो सकता है कि यह बात सही हो. मगर जब से मुझे हिन्दू होटलों की गन्दगी का तजरबा हुआ, मैं ज़रूरत पड़ने पर बेधड़क मुसलिम होटलों में खाता हूँ. असूलन हिन्दू न होते हुए भी मुझमें हिन्दुओं के जो संस्कार थे पहले उन्होंने अड़चन पैदा की, मगर वह जल्द ही नष्ट हो गई. सवाल यह नहीं था कि गन्दगी कहाँ की क़बूल की जाय, बल्कि यह कि जब दोनों जगह गन्दगी है और उससे व्यवहार में जान छुड़ाना मुमकिन नहीं तो क्यों एक से ही परहेज़ किया जाय. हिन्दुओं का मिट्टी से बरतन मांजना वैज्ञानिक (साइन्टिफ़िक) है, बशर्तेकि मिट्टी साफ़ हो. साथ ही बरतन मॉंजने का उसकन रोज़ाना बदलना चाहिये, या कम से कम उसे अच्छी तरह धो लेना चाहिये, और उसके बाद साफ़ मिट्टी से मॉंजना चाहिये, फिर पानी से दो तीन बार धोना चाहिये. रिवाज यह हो रहा है कि अकसर घरों में मिट्टी के नाम पर सड़क की गन्दी मिट्टी इस्तेमाल की जाती है. इससे बरतनों में अनेक रोगों के कीड़े आते रहते हैं और आये दिन हर एक को डाक्टर का घर देखना पड़ता है.

यह बात और है कि हिन्दुओं मुसलमानों के समाजी रिश्ते में सफ़ाई

(६५३)

عورتیں تو اُسی میں آبدست بھی لیتی ہیں۔ اس نہانے میں صفائی کیوں ہے، کہنا مشکل ہے۔ پر سوال تو یہ ہے کہ اگر وہ لوگ نہانا بالکل چھوڑ دیں، تو کیا اس سے بھی بُرا نہیں ہوگا؟

بھوجن – دونوں کے بھوجن بنانے اور کھانے کے برتنوں میں اتنی صفائی نہیں رہتی، جتنی ہونی چاہئے۔ رسوئی گھر دونوں کے صاف ستھرے نہیں رہتے۔ ہندوؤں کا کہنا ہے کہ ہمارے یہاں پھر بھی مسلمانوں کی نسبت زیادہ صفائی رہتی ہے۔ ہو سکتا ہے کہ یہ بات سہی ہو۔ مگر جب سے مجھے ہندو ہوٹلوں کی گندگی کا تجربہ ہوا، میں ضرورت پڑنے پر بے دھڑک مسلمان ہوٹلوں میں کھاتا ہوں۔ اصولاً ہندو نہ ہوتے ہوئے بھی مجھ میں ہندوؤں کے جو سنسکار تھے پہلے انھوں نے اڑچن پیدا کی، مگر وہ جلد ہی نشٹ ہوگئے۔ سوال یہ نہیں تھا کہ گندگی کہاں کی قبول کی جائے، بلکہ یہ کہ جب دونوں جگہ گندگی ہے اور اس سے بیوہار میں جان چھڑانا ممکن نہیں تو کیوں ایک ہی سے پرہیز کیا جائے۔ ہندوؤں کا مٹی سے برتن مانجنا وگیانک (سائنٹیفک) ہے، بشرطیکہ مٹی صاف ہو، ساتھ ہی برتن مانجنے کا اُسکن روزانہ بدلنا چاہئے، یا کم سے کم اچھی طرح دھو لینا چاہئے۔ اور اُسکے بعد صاف مٹی سے مانجنا چاہئے، پھر پانی سے دو تین بار دھونا چاہئے۔ رواج یہ ہو رہا ہے کہ اکثر گھروں میں مٹی کے نام پر سڑک کی گندی مٹی استعمال کی جاتی ہے۔ اس سے برتنوں میں انیک روگوں کے کیڑے آتے رہتے ہیں اور آئے دن ہر ایک کو ڈاکٹر کا گھر دیکھنا پڑتا ہے۔

یہ بات اور ہے کہ ہندوؤں مسلمانوں کے سماجی رشتے میں صفائی

(٦٥٣)

वगैरह की बात दरअसल दूसरा दर्जा रखती है. फिर भी हमारे रहन सहन में जहाँ भी जो बात वैज्ञानिक मिले उसे अख्तियार करना चाहिये, न कि उसकी महज़ इस लिये मुखालफ़त करनी चाहिये कि वह 'ख़िलाफ़' फ़रीक़ की है.

शौच या आबदस्त—आबदस्त के तरीक़े में हिन्दू को यह एतराज़ है कि मुसलमान टोंटी दार लोटा क्यों इस्तेमाल करता है, जिसको पाख़ाने जाने के बाद न वह मिट्टी से माँजता है और न माँज सकता है. और पाख़ाने से आने के बाद वह हाथ को मिट्टी से क्यों नहीं साफ़ करता ? मुसलमान का एतराज़ है कि हिन्दू छोटा लोटा क्यों इस्तेमाल करता है. आम तौर से टोंटी दार लोटे का इस्तेमाल बुरा है. पर दावतों में या दूसरी ख़ास जगहों पर जहाँ उसके बग़ैर काम चलाने में सहूलियत न हो उसका इस्तेमाल जरूरी है. पर उसकी नली को खौलते हुए पानी से धोकर साफ़ करना चाहिये. इस तरह उससे सिर्फ़ पानी देने का काम लेना चाहिए. पानी पीने का काम उसी लोटे से लेना चाहिए, जो हर बार साफ़ किया जा सके. आबदस्त लेने के बाद मिट्टी या साबुन से हाथ साफ़ कर लेने में किसी को एतराज़ नहीं होना चाहिये. मगर बहुत जगहों के हिन्दू भी ऐसा नहीं करते. अक्सर सड़क की मिट्टी या गन्दी कीचड़ से काम चलाते हैं. जैसे बरतन माँजने के लिए मिट्टी का नाम होना चाहिये, वैसे ही आबदस्त के बाद हाथ धोने के लिए भी किसी प्रकार की मिट्टी हो, उसे छू लेना चाहिये. मुसलमानों का भी यह एतराज़ बहुत सही है कि छोटे लोटे में इतना काफ़ी पानी नहीं होता कि उससे पूरी तरह आबदस्त लिया जा

وغیرہ کی بات در اصل دوسرا درجہ رکھتی ہے۔ پھر بھی ہمارے رہن سہن میں جہاں بھی جو بات وگیانک ملے اسے اختیار کرنا چاہئے، نہ کہ اسکی محض اسلئے مخالفت کرنی چاہئے کہ وہ 'خلاف' فریق کی ہے۔

شوچ یا آبدست — آبدست کے طریقے میں ہندوؤں کو یہ اعتراض ہے کہ مسلمان ٹونٹی دار لوٹا کیوں استعمال کرتا ہے، جس کو پاخانے جانے کے بعد نہ وہ مٹی سے مانجتا ہے اور نہ مانج سکتا ہے۔ اور پاخانے سے آنے کے بعد ہاتھ کو مٹی سے کیوں نہیں صاف کرتا؟ مسلمان کا اعتراض ہے کہ ہندو چھوٹا لوٹا کیوں استعمال کرتا ہے۔ عام طور سے ٹونٹی دار لوٹے کا استعمال برا ہے۔ پر دعوتوں میں یا دوسری خاص جگہوں پر جہاں اس کے بغیر کام چلانے میں سہولیت نہ ہو اسکا استعمال ضروری ہے۔ پر اسکی نلی کو کھولتے ہوئے پانی سے دھوکر صاف کرنا چاہئے۔ اس طرح اس سے صرف پانی دینے کا کام لینا چاہئے۔ پانی پینے کا کام اسی لوٹے سے لینا چاہئے، جو ہر بار صاف کیا جاسکے۔ آبدست لینے کے بعد مٹی یا صابن سے ہاتھ صاف کر لینے میں کسی کو اعتراض نہیں ہونا چاہئے۔ مگر بہت جگہوں کے ہندو بھی ایسا نہیں کرتے۔ اکثر سڑک کی مٹی یا گندی کیچڑ سے کام چلاتے ہیں۔ جیسے برتن مانجنے کے لئے مٹی کا نام ہونا چاہئے، ویسے ہی آبدست کے بعد ہاتھ دھونے کے لئے بھی کسی پرکار کی مٹی ہو، اُسے چھو لینا چاہئے۔ مسلمانوں کا بھی یہ اعتراض بہت صحیح ہے کہ چھوٹے لوٹے میں اتنا کافی پانی نہیں ہوتا کہ اس سے پوری طرح آب دست لیا جا

सके. हिन्दुओं को उनके एतराज़ पर ध्यान देना चाहिये.

खानपीन—खानपीन यहाँ पर खास मानी में इस्तेमाल कर रहा हूँ, वह है एक दस्तरख्वान पर बिना जाति-पांति के भेद भाव के सब का खाना और एक थाल में भी किसी भी भाई के साथ खाना. इसमें पहला अच्छा है दूसरा बुरा. जो अच्छा है उसके लिये हिन्दू तैयार नहीं है, जो बुरा है उसे बहुत बड़े अंश में करता है. जैसे, अपने कुटुम्ब में वह झूटा खाने से एतराज़ नहीं करता और अपनी बिरादरी में वह झूटा हुक्का बड़ी मुहब्बत से पीता है. हर आदमी जानता है कि झूटा खानेपीने से एक को दूसरे का मर्ज़ हो जाता है. इसलिये हर एक हिन्दू मुसलमान को इस ज़हरीले रिवाज को छोड़ देना चाहिये.

लिबास—हिन्दू पाजामा का इस्तेमाल नहीं करते महज़ नई रौशनी के, तालीम याफ़्ता, आगे बढ़े हुए हिन्दू अब पाजामा और लुंगी का इस्तेमाल करने लगे हैं. मुसलमान धोती का इस्तेमाल नहीं करते. घर के लिये लुंगी का इस्तेमाल ज्यादा सुविधाजनक और आरामदेह होता है और बाहर पाजामा ज्यादा अच्छा और सुविधा जनक होता है, गोकि सूट पहनने वाले पाजामा को भी घर का ही पहनावा मानते हैं, मगर धोती की निस्बत पाजामा घर बाहर दोनों के लिये अच्छा और सस्ता पड़ता है. हिन्दू कह सकते हैं कि धोती से शरीर ज्यादा हलका रहता है, साथ ही कमर भी, जिसे मज़बूत होना चाहिये, कसी रहती है. पर यह सब किसी चीज़ पर अड़े रहने की दलीलें हैं. बाक़ी पहिनावे दोनों के मिलते जा रहे हैं और यह

سکے ۔ ہندؤں کو اُنکے اعتراض پر دھیان دینا چاہئے ۔

کھان پین — کھان پین یہاں پر خاص معنی میں استعمال کر رہا ہوں، وہ ہے ایک دسترخوان پر بنا جاتی پاتی کے بھید بھاؤ کے سب کا کھانا اور ایک تھال میں کسی بھی بھائی کے ساتھ کھانا۔ اس میں پہلا اچھا ہے دوسرا بُرا ۔ جو اچھا ہے اسکے لئے ہندو تیار نہیں ہے، جو بُرا ہے اسے بہت بڑے انش میں کرتا ہے۔ جیسے، اپنے کٹمب میں وہ جوٹھا کھانے سے اعتراض نہیں کرتا اور اپنی برادری میں وہ جوٹھا حقہ بڑی محبت سے پیتا ہے۔ ہر آدمی جانتا ہے کہ جوٹھا کھانے پینے سے ایک کو دوسرے کا مرض ہو جاتا ہے۔ اسلئے ہر ایک ہندو مسلمان کو اس زہریلے رواج کو چھوڑ دینا چاہئے۔

لباس — ہندو پاجامہ کا استعمال نہیں کرتے محض نئی روشنی کے، تعلیم یافتہ، آگے بڑھے ہوئے ہندو اب پاجامہ اور لنگی کا استعمال کرنے لگے ہیں۔ مسلمان دھوتی کا استعمال نہیں کرتے۔ گھر کے لئے لنگی کا استعمال زیادہ سبیدھاجنک اور آرام دہ ہوتا ہے اور باہر پاجامہ زیادہ اچھا اور سبیدھاجنک ہوتا ہے۔ گوکہ سوٹ پہننے والے پاجامہ کو بھی گھر کا ہی پہناوا مانتے ہیں، مگر دھوتی کی نسبت پاجامہ گھر باہر دونوں کے لئے اچھا اور سستا پڑتا ہے۔ ہندو کہہ سکتے ہیں کہ دھوتی سے شریر زیادہ ہلکا رہتا ہے، ساتھ ہی کمر بھی، جسے مضبوط ہونا چاہئے، کسی رہتی ہے۔ پر یہ سب کسی چیز پر اڑے رہنے کی دلیلیں ہیں۔ باقی پہناوے دونوں کے ملتے جا رہے ہیں اور یہ

यक़ीनी है कि आखिरकार बाहर का पहिनावा सूट और हाफ़पैन्ट और घर का पहिनावा पाजामा और लुंगी होगा. संसार की तहज़ीब याफ़ता क़ौमे इस ओर बढ़ रही हैं, हिन्दुस्तान में भी यही हो रहा है और आगे और तेज़ी से होगा.

भोजन की क़िस्में—हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों में मसाले की मदद से पका हुआ भोजन तैयार करने का एक सा रिवाज है. उबाले हुए खाने की तरफ़ हिन्दुस्तान का आदमी फिर जायगा यह कहना मुशकिल है. मगर इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि योरोप वाले ज्यादा सादा और तनदुरुस्ती बढ़ाने वाला खाना खाते हैं. और जिसके मुँह जो लग गया है वह उसी में जायक़ा भी पाता है. अगर यह सवाल किया जायकि जायक़ा बड़ा कि तन्दुरुस्ती तो असूलन लोग तन्दुरुस्ती को ही बड़ा बतायेंगे. मगर अमल में लोग जायक़े की तरफ़ बढ़ेंगे. मैं दोनों के मेलजोल का हामी हूँ. अगर जायक़ेदार खाना मंज़ूर है, तो हिन्दुओं और मुसलमानो दोनो के यहाँ बहुतेरी अच्छे खानेकी क़िस्में हैं. गोश्त की तैय्यारी के लिए मुसलमान और कायस्थ मशहूर हैं. हिन्दुओं के यहाँ अच्छी तरकारियाँ बनती हैं. मिठाइयाँ हिन्दुओं की एक दूसरी विशेषता है. पुलाव, मोठा चावल सेवई, हलुवा वग़ैरा मुसलमानों के यहाँ अच्छा बनता है. इस तरह इस बात में हिन्दू मुसलमान एक दूसरे से खूब ले दे सकते हैं.

हिन्दुओं और मुसलमानों को चाहिये कि एक दूसरे के रहन-सहन की जरूरी चीजो की नक़ल करें और ग़ैर जरूरी चीजों को छोड़ें. और आदमी आदमी के बीच में भेद पैदा करने वाली बेकार की बातों को गोली मारें.

یقین ہے کہ آخرکار باہر کا پہناوا سوٹ اور ہاف پینٹ اور گھر کا پہناوا پاجامہ اور لنگی ہوگا۔ سنسار کی تہذیب یافتہ قومیں اس اور بڑھ رہی ہیں، ہندستان میں بھی یہی ہو رہا ہے اور آگے اور تیزی سے ہوگا

بھوجن کی قسمیں — ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں میں مسالے کی مدد سے پکا ہوا بھوجن تیار کرنے کا ایک سا رواج ہے۔ اُبالے ہوئے کھانے کی طرف ہندستان کا آدمی پھر جائے گا یہ کہنا مشکل ہے۔ مگر اس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ یورپ والے زیادہ سادہ اور تندرستی بڑھانے والا کھانا کھاتے ہیں۔ اور جس کے منہ جو لگ گیا ہے وہ اسی میں ذائقہ بھی پاتا ہے۔ اگر یہ سوال کیا جائے کہ ذائقہ بڑا کہ تندرستی تو اصولاً لوگ تندرستی کو ہی بڑا بتائیں گے۔ مگر عمل میں لوگ ذائقہ کی طرف بڑھیں گے میں دونوں کے میل جول کا حامی ہوں۔ اگر ذائقہ دار کھانا منظور ہے، تو ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کے یہاں بہتیری اچھے کھانے کی قسمیں ہیں۔ گوشت کی تیاری کے لئے مسلمان اور کایستھ مشہور ہیں۔ ہندوؤں کے یہاں اچھی ترکاریاں بنتی ہیں۔ مٹھائیاں ہندوؤں کی ایک دوسری وشیشتا ہے۔ پلاؤ، میٹھا چاول، سوئیں، حلوہ وغیرہ مسلمانوں کے یہاں اچھا بنتا ہے۔ اس طرح اس بات میں ہندو مسلمان ایک دوسرے سے خوب لے دے سکتے ہیں۔

ہندوؤں اور مسلمانوں کو چاہئے کہ ایک دوسرے کے رہن سہن کی ضروری چیزوں کی نقل کریں اور غیر ضروری چیزوں کو چھوڑیں۔ اور آدمی آدمی کے بیچ میں بھید پیدا کرنے والی بیکار کی باتوں کو گولی ماریں۔

कुछ किताबें

पहला कलवार—लिखने वाले, महात्मा टाल्सटाय, तरजुमा करने वाले, श्री राम जी सहाय एम० काम०, एल एल० बी०, सफ़े ५६, लिखावट हिन्दी, दाम दस आने, पता—संगम पब्लिशिङ्ग हाउस, ८ | ४ बैंक रोड, इलाहाबाद.

यह रूस के मशहूर लेखक महात्मा टाल्सटाय के एक मशहूर नाटक का हिन्दी तरजुमा है.

टाल्सटाय रूस के एक बड़े इन्क़लाबी लेखक और सुधारक के रूप में दुनिया में मशहूर हैं. अगरचे उन्होने साहित्य के हर मैदान में अपना क़लम दौड़ाया है और जिस मज़मून पर जो कुछ लिखा है वह दुनिया में कभी भुलाया नहीं जा सकता लेकिन उनके नावेल और कहानियाँ ख़ास तौर से दुनिया के लिये एक बड़ी और क़ीमती देन मानी जाती हैं.

महात्मा टाल्सटाय एक बड़े लेखक ही नहीं बल्कि एक बड़े इन्सान थे, और यही कारन है कि उन्होंने जो कुछ लिखा वह सिर्फ़ काग़ज़ रंगने के लिये नहीं बल्कि एक ख़ास और अच्छे मक़सद से लिखा. उन्हों ने अपने लेखों अपने नावेलों, अपनी कहानियों और अपने नाटकों के ज़रिये दुनिया को जो संदेश दिये उन सब का निचोड़ एक ही था कि दुनिया को भलाई की तरफ़ आना चाहिये. आज उनका देश उस मन्ज़िल से बहुत आगे बढ़ गया है जहाँ

کچھ کتابیں

پہلا کلوار — لکھنے والے، مہاتما ٹالسٹائی، ترجمہ کرنے والے، شری رام جی سہائے ایم۔ کام، ایل۔ ایل۔ بی، صفحے ۵۶، لکھاوٹ ہندی، دام دس آنے، پتہ — سنگم پبلشنگ ہاؤس ۸/۴ بینک روڈ الہ آباد۔

یہ روس کے مشہور لیکھک مہاتما ٹالسٹائے کے ایک مشہور ناٹک کا ہندی ترجمہ ہے۔

ٹالسٹائے روس کے ایک بڑے انقلابی لیکھک اور سدھارک کے روپ میں دنیا میں مشہور ہیں۔ اگرچہ اُنھوں نے ساہتیہ کے ہر میدان میں اپنا قلم دوڑایا ہے اور جس مضمون پر جو کچھ لکھا ہے وہ دنیا میں کبھی بھلایا نہیں جا سکتا لیکن اُن کے ناول اور کہانیاں خاص طور سے دنیا کے لئے ایک بڑی اور قیمتی دین مانی جاتی ہیں۔

مہاتما ٹالسٹائے ایک بڑے لیکھک ہی نہیں بلکہ ایک بڑے انسان تھے، اور یہی کارن ہے کہ اُنھوں نے جو کچھ لکھا وہ صرف کاغذ رنگنے کے لئے نہیں بلکہ ایک خاص اور اچھے مقصد سے لکھا۔ انھوں نے اپنے لیکھوں اپنے ناولوں، اپنی کہانیوں اور اپنے ناٹکوں کے ذریعے دنیا کو جو سندیش دئے اُن سب کا نچوڑ ایک ہی تھا کہ دنیا کو بھلائی کی طرف جانا چاہئے۔ آج اُن کا دیش اُس منزل سے بہت آگے بڑھ گیا ہے جہاں

वह उसे ले जाना चाहते थे लेकिन यह मानना पड़ेगा कि उसकी दौड़ में यह तेज़ी टाल्सटाय के क़लम के कारन ही आई, और इस इन्क़लाब और समाजवाद का बीज उन्हीं ने बोया था जो आज सारी दुनिया पर अपना असर डाल रहा है.

टाल्सटाय की कहानियों की तरह उनके नाटकों का मक़सद भी इन्सानी ज़िन्दगी का सुधार और उसकी भलाई है और उनके नाटक भी ज्यादातर किसानों के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं. पहला कलवार उनके मशहूर नाटक The First Distiller का हिन्दी तरजुमा है. इसमे दिखाया गया है कि सबसे पहले शराब कैसे और किस मक़सद से बनी. इस नाटक का दुनिया की तमाम ज़िन्दा भाषाओं में तरजुमा हो चुका है. संगम पब्लिशिङ्ग हाउस ने इसका हिन्दी तरजुमा एक अलग किताब मे छाप कर हिन्दी पर बड़ा एहसान किया है. शुरू मे तीन सफे की भूमिका भी है जिसका कुछ हिस्सा यहाँ नक़ल कर देना हम अपनी तरफ से कुछ लिखने की जगह ज्यादा अच्छा समझते है—

"बहुत से लोग कहते हैं कि सरकार को शराब नहीं बन्द करना चाहिये क्यो कि कुछ पढ़े लिखे लोग शराब पीते हुये भी अपना काम क़ाबलियत के साथ करते हैं. लेकिन ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि एक पढ़ा लिखा आदमी अगर शराब पीता है तो लाखों किसान और मजदूर जो अनपढ़ या बहुत कम पढ़े लिखे हैं, शराब पीते हैं. ऐसे किसान और मजदूर अपने पेशे का काम भी जिम्मेदारी के साथ नहीं पूरा कर सकते और अपने बाल बच्चों का जीवन भी नरक बना देते हैं. हर साल कई लाख जुर्म नशे की

وہ اُسے لے جانا چاہتے تھے لیکن یہ ماننا پڑے گا کہ اُس کی دوڑ میں یہ تیزی ٹالسٹائے کے قلم کے کارن ہی آئی، اور اِس انقلاب اور سماج واد کا بیج اُنھیں نے بویا تھا جو آج ساری دنیا پر اپنا اثر ڈال رہا ہے۔

ٹالسٹائے کی کہانیوں کی طرح اُن کے ناٹکوں کا مقصد بھی انسانی زندگی کا سدھار اور اُس کی بھلائی ہے اور اُن کے ناٹک بھی زیادہ تر کسانوں کے جیون سے سمبندھ رکھتے ہیں۔ پہلا کلوار اُن کے مشہور ناٹک THE FIRST DISTILLER کا ہندی ترجمہ ہے۔ اِس میں دکھایا گیا ہے کہ سب سے پہلے شراب کیسے اور کس مقصد سے بنی۔ اِس ناٹک کا دنیا کی تمام زندہ بھاشاؤں میں ترجمہ ہو چکا ہے۔ سنگم پبلشنگ ہاؤس نے اِس کا ہندی ترجمہ ایک الگ کتاب میں چھاپ کر ہندی پر بڑا احسان کیا ہے۔ شروع میں تین صفحے کی بھومکا بھی ہے جس کا کچھ حصہ یہاں نقل کر دینا ہم اپنی طرف سے کچھ لکھنے کی جگہ زیادہ اچھا سمجھتے ہیں۔

"بہت سے لوگ کہتے ہیں کہ سرکار کو شراب نہیں بند کرنا چاہئے کیونکہ کچھ پڑھے لکھے لوگ شراب پیتے ہوئے بھی اپنا کام قابلیت کے ساتھ کرتے ہیں۔ لیکن ایسے لوگ یہ بھول جاتے ہیں کہ ایک پڑھا لکھا آدمی اگر شراب پیتا ہے تو لاکھوں کسان اور مزدور جو ان پڑھ یا بہت کم پڑھے لکھے ہیں، شراب پیتے ہیں۔ ایسے کسان اور مزدور اپنے پیشے کا کام بھی ذمہ داری کے ساتھ نہیں پورا کر سکتے اور اپنے بال بچوں کا جیون بھی نرک بنا دیتے ہیں۔ ہر سال کئی لاکھ جرم نشے کی

हालत में किये जाते हैं. शराबी किसान और मजदूर के बीवी बच्चे फाक़ा करते हैं और इस तरह से शराब की वजह से लाखों प्राणियों का घरेलू जीवन बरबाद हो जाता है और अगर इने गिने पढ़े-लिखे आदमी शराब पी कर बरबाद नहीं हुये तो ऐसे पढ़े लिखे लोगों की बहुत ज्यादा मिसालें हैं जो बहुत बड़े ओहदों पर थे लेकिन शराब के हाथों बरबाद हो गये, तन्दुरुस्ती खो बैठे, धन-दौलत खो बैठे और ज़िन्दगी खो बैठे !"

भूमिका की इन लाइनों से भी हमें पूरा इत्तिफ़ाक़ है कि—"महात्मा टालसटाय का यह नाटक शराब के भयंकर नतीजों पर सबसे जबरदस्त रचना है. आज जो लोग शराब के शिकार हो गये हैं उन्हें शराब के चंगुल से छुड़ाना समाज और सरकार का काम है. इससे बढ़ कर जरूरी काम यह है कि पहले ही से आने वाली नस्लों के दिमाग़ पर इतना जबरदस्त असर पड़ जाय कि वह शराब को हाथ न लगायें. जवान होने के पहले ही देश के हर लड़के और हर लड़की के साथ में महात्मा टालसटाय का यह नाटक पहुँच जाना चाहिये. अगर हमारे समाज और हमारी सरकार हर स्कूल, हर गाँव, हर मोहल्ला, हर घर मे यह किताब पहुँचा दे तो लाखों करोड़ो आदमी शराब के खतरो का ऐसा जबरदस्त असर दिल पर लेंगे कि जन्म भर शराब को छूएँगे भी नहीं."

किताब की ज़बान सीधी सादी है और इस लिये थोड़ा पढ़ा लिखा आदमी भी आसानी से पढ़ सकता है.

—'हुनर'

حالت میں کئے جاتے ہیں۔ شرابی کسان اور مزدور کے بیوی بچے فاقہ کرتے ہیں اور اس طرح سے شراب کی وجہ سے لاکھوں پرانیوں کا گھریلو جیون برباد ہو جاتا ہے اور اگر انے گنے پڑھے لکھے آدمی شراب پی کر برباد نہیں ہوئے تو ایسے پڑھے لکھے لوگوں کی بہت زیادہ مثالیں ہیں جو بہت بڑے عہدوں پر تھے لیکن شراب کے ہاتھوں برباد ہو گئے، تندرستی کھو بیٹھے، دھن دولت کھو بیٹھے اور زندگی کھو بیٹھے!"

بھومیکا کی ان لائنوں سے بھی ہمیں پورا اتفاق ہے کہ— "مہاتما ٹالسٹائی کا یہ ناٹک شراب کے بھینکر نتیجوں پر سب سے زبردست رچنا ہے۔ آج جو لوگ شراب کے شکار ہو گئے ہیں انھیں شراب کے چنگل سے چھڑانا سماج اور سرکار کا کام ہے۔ اس سے بڑھ کر ضروری کام یہ ہے کہ پہلے ہی سے آنے والی نسلوں کے دماغ پر اتنا زبردست اثر پڑ جائے کہ وہ شراب کو ہاتھ نہ لگائیں۔ جوان ہونے کے پہلے ہی دیش کے ہر لڑکے اور ہر لڑکی کے ہاتھ میں مہاتما ٹالسٹائی کا یہ ناٹک پہنچ جانا چاہئے۔ اگر ہمارے سماج اور ہماری سرکار ہر سکول، ہر گاؤں، ہر محلے، ہر گھر میں یہ کتاب پہنچا دے تو لاکھوں کروڑوں آدمی شراب کے خطروں کا ایسا زبردست اثر دل پر لینگے کہ جنم بھر شراب کو چھوئیں گے بھی نہیں"

کتاب کی زبان سیدھی سادی ہے اور اس لئے تھوڑا پڑھا لکھا آدمی بھی آسانی سے پڑھ سکتا ہے۔

—'ہنر'

हमारी राय

यह डर की बाढ़ कैसी ?

आज जिधर देखो डर का राज है. ग़रीब जनता डरती है कि आज दो छटांक का घी है, कल दो रुपए छटांक हो गया तो क्या होगा ? आज डेढ़ रुपए सेर चावल हैं, कल सात रुपए सेर बादाम की मींगी के भाव चावल हो गए तो क्या होगा ? क्या खाकर जिया जाएगा ? अमीरों को डर है, अब दिन मे और रात में चोरी होती है, कल दिन दहाड़े डाके पड़ने लगे तो जिन्दगी कैसे चलेगी ?

सरकारी अफसर डर रहे हैं कि अगर यही हाल रहा तो न जाने जनता किस दिन उन्हीं पर बिगड़ बैठे. हिन्दू मुसलमान से डरे हुए हैं कि न जाने यह किस वक़्त पाकिस्तान की फ़ौजें बुला लें. मुसलमान हिन्दू से डरे हुए हैं कि न जाने हिन्दू किस दिन उनका मुँह पाकिस्तान की तरफ़ कर उनकी पीठ पर फूँक मार पाकिस्तान पहुंचा दें. यहां तक कि सरकार कहलाने वाले गवरनर और वज़ीर डर से बचे हुए नहीं हैं. आए दिन चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं कि अगर यही हाल रहा तो हिन्दुस्तान अपनी आज़ादी खो बैठेगा. बार बार लोगों से कहते हैं कि क़ानून अपने हाथ न लो, क़ानूनी मदद हमसे माँगो. पर जनता इतनी डरी हुई है कि लाल फ़ीते के सुई बराबर भूत को फावड़े के बराबर दिखा कर सरकार को डराती रहती है. और कहती रहती है कि तुम्हारे

ہماری رائے

یہ ڈر کی باڑھ کیسی ؟

آج جدھر دیکھو ڈر کا راج ہے ۔ غریب جنتا ڈرتی ہے کہ آج دو چھٹانک کا گھی ہے، کل دو روپیہ چھٹانک ہوگیا تو کیا ہوگا؟ آج ڈیڑھ روپے سیر چاول ہیں، کل سات روپے سیر بادام کی مینگی کے بھاؤ چاول ہوگیا تو کیا ہوگا؟ کیا کھاکر جیا جائے گا؟ امیروں کو ڈر ہے، اب دن میں اور رات میں چوری ہوتی ہے، کل دن دہاڑے ڈاکے پڑنے لگے تو زندگی کیسے چلے گی؟

سرکاری افسر ڈر رہے ہیں کہ اگر یہی حال رہا تو نہ جانے جنتا کس دن انھیں پر بگڑ بیٹھے۔ ہندو مسلمان سے ڈرے ہوئے ہیں کہ نہ جانے یہ کس وقت پاکستان کی فوجیں بلالیں۔ مسلمان ہندو سے ڈرے ہوئے ہیں کہ نہ جانے ہندو کس دن اُن کا مُنہ پاکستان کی طرف کر ان کی پیٹھ پر پھونک مار پاکستان پہنچا دیں۔ یہاں تک کہ سرکار کہلانے والے گورنر اور وزیر ڈر سے بچے ہوئے نہیں ہیں۔ آئے دن چلّا چلّا کر کہہ رہے ہیں کہ اگر یہی حال رہا تو ہندستان اپنی آزادی کھو بیٹھے گا۔ بار بار لوگوں سے کہتے ہیں کہ قانون اپنے ہاتھ نہ لو، قانونی مدد ہم سے مانگو۔ پر جنتا اتنی ڈری ہوئی ہے کہ لال فیتے کے سوئی برابر بھوت کو پھاوڑے کے برابر دکھا کر سرکار کو ڈراتی رہتی ہے۔ اور کہتی رہتی ہے کہ تمھارے

क़ानूनी पानी की दमकल (फ़ायर इञ्जन) आने से पहले हमारा मकान आग से ख़ाक हो गया होगा, हम तुमसे दमकल मंगवा के क्या करें? सरकार अन्दर के झगड़ों से ही डरी हुई नहीं है वह तो पाकिस्तान के हमलों से और वज़ीरिस्तान के लुटेरों से भी डरी हुई है. मौक़ा पाकर हैदराबाद के रज़ाकार भी कभी कभी अचानक बच्चों की तरह 'हू' करके सरकार को डरा देते हैं. सरकार अन्दर से डरती है या नहीं इसका हमें पता नहीं, पर बाहर वह डरने का नाटक ज़रूर कर रही है. और हमको तो उस बाहरी डर को ही हिसाब में लेना है, क्योंकि यही डर की बाढ़ का हिस्सा बना हुआ है. बाहर की बाढ़ में गहराई नहीं होती पर लोगों को तो घर से बाहर निकाल कर सड़क पर खड़ा कर ही देती है, और इस तरह भारी खलबली मचा देती है.

डर की बाढ़ हिन्दुस्तान में आ ही गई. इससे इनकार करना शुतरमुर्ग़ की तरह बालू में सिर गड़ा कर शिकारी के होने से इनकार करना है. डर बेशक छाया हुआ है, पर यह आ कहां से गया? यह जानना है, और इसी लिए यह लाइनें लिखी जा रही हैं.

हिन्दुस्तान सब से कमज़ोर था सन् १९२० में, क्यों कि उसके दिल में उन कोड़ों की याद ताज़ा थी जिनको १९१९ के शुरू में जनरल डायर ने गवरनर ओडायर को तमाशा दिखाने के लिए गठीले पंजाब को पीठ पर जड़े थे, जिनको वजह से पंजाब की पीठ झुक कर दोहरी हो गई थी. और जब हिन्दुस्तान कमज़ोर था तभी डरपोक भी होना चाहिये. पर उसी सन् बीस में हिन्दुस्तान ने

قانونی پانی کی دمکل (فائر انجن) آنے سے پہلے ہمارا مکان آگ سے خاک ہوگیا ہوگا، ہم تم سے دمکل منگوا کے کیا کریں؟ سرکار اندر کے جھگڑوں سے ہی ڈری ہوئی نہیں ہے وہ تو پاکستان کے حملوں سے اور وزیرستان کے لیٹروں سے بھی ڈری ہوئی ہے. موقعہ پاکر حیدرآباد کے رضاکار بھی کبھی کبھی اچانک بچوں کی طرح 'ہو' کرکے سرکار کو ڈرا دیتے ہیں. سرکار اندر سے ڈرتی ہے یا نہیں اس کا ہمیں پتہ نہیں، پر باہر وہ ڈرنے کا ناٹک ضرور کر رہی ہے. اور ہم کو تو اس باہری ڈر کو ہی حساب میں لینا ہے، کیونکہ یہی ڈر کی باڑھ کا حصہ بنا ہوا ہے. باہر کی باڑھ میں گہرائی نہیں ہوتی پر لوگوں کو تو گھر سے باہر نکال کر سڑک پر کھڑا کر ہی دیتی ہے، اور اسطرح بھاری کھلبلی مچا دیتی ہے.

ڈر کی باڑھ ہندستان میں آ ہی گئی. اس سے انکار کرنا شترمرغ کی طرح بالو میں سر گڑا کر شکاری کے ہونے سے انکار کرنا ہے. ڈر بیشک چھایا ہوا ہے، پر یہ آ کہاں سے گیا؟ یہ جاننا ہے، اور اسی لئے یہ لائنیں لکھی جا رہی ہیں.

ہندستان سب سے کمزور تھا سنہ ۱۹۲۰ میں، کیونکہ اس کے دل میں اُن کوڑوں کی یاد تازہ تھی جن کو ۱۹۱۹ کے شروع میں جنرل ڈائر نے گورنر اوڈائر کو تماشہ دکھانے کے لئے گٹھیلے پنجاب کی پیٹھ پر جڑے تھے، جن کی وجہ سے پنجاب کی پیٹھ جھک کر دوہری ہو گئی تھی. اور جب ہندستان کمزور تھا تبھی ڈرپوک بھی ہونا چاہئے. پر اسی سنہ بیس میں ہندستان نے

सितम्बर में कलकत्ते में कांगरेस की और दिसम्बर में नागपुर में. और इसी पुलिस और फ़ौज वाली सरकार को खुले खुले बेलाठी की लड़ाई की चुनौती दी. यानी जर्मनी की जीत के घमण्ड में चूर बरतानिया की सरकार के सामने हिन्दुस्तान ताल ठोंक कर कुश्ती के लिए अखाड़े में कूद पड़ा. वह कह कर ही नहीं रह गया. पहली जनवरी सन इक्कीस से उसने अंग्रेज़ी राज को शैतानी राज कहना शुरू कर दिया, और एक तरह से उसे अपने यहां के राज का मालिक समझना छोड़ दिया. उसके साथ काम करने को अधर्म माना. जिसका नतीजा यह हुआ कि बरतानिया के प्रतिनिधि यहां कांप उठे, और लन्दन की डाउनिंग स्ट्रीट में खलबली मच गई. यहां के वायसराय को घर पहुँच कर खुले खुले यह कहना पड़ा कि हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ी राज जाते जाते बाल बाल बच गया. अब यह तो साफ़ है कि डरपोक हिन्दुस्तान निडर बरतानिया को नहीं डरा सकता था. डरपोक से निडर डरते भी नहीं हैं. इस लिए हमें यह मानना पड़ेगा कि सन् इक्कीस में हम बरतानिया से ज़्यादा निडर थे. यह सुन कर कुछ लोग एक दम यह कह बैठेंगे कि हां हम हिन्दुस्तानी सन् इक्कीस में बरतानिया से ज़्यादा निडर थे, पर इस लिए थे कि उन दिनों हिन्दू मुसलमान दोनों एक होकर दूध शकर बन गए थे. यह एका था जिसने हमको निडर बना दिया था. यह जवाब हमारी राय में ठीक तो नहीं है पर हमारे मतलब का ज़रूर है, वह इसलिए कि इस जवाब में से यह नतीजा निकलता ही है कि एका पुलिस और फ़ौज से ज़्यादा ताक़तवर होता है. जवाब के ठीक न होने पर हमें यह कहना है कि ...

ستمبر میں کلکتے میں کانگریس کی اور دسمبر میں ناگپور میں۔ اور اسی پولس اور فوج والی سرکار کو کھلے کھلے بے لاٹھی کی لڑائی کی چنوتی دی۔ یعنی جرمنی کی جیت کے گھمنڈ میں چور برطانیہ کی سرکار کے سامنے ہندستان تال ٹھونک کر کشتی کے لئے اکھاڑے میں کود پڑا وہ کہہ کر ہی نہیں رہ گیا، پہلی جنوری سنہ اکیس سے اس نے انگریزی راج کو شیطانی راج کہنا شروع کر دیا، اور ایک طرح سے اسے اپنے یہاں کے راج کا مالک سمجھنا چھوڑ دیا۔ اس کے ساتھ کام کرنے کو ادھرم مانا۔ جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ برطانیہ کے پرتی ندھی یہاں کانپ اٹھے، اور لندن کی ڈاؤننگ اسٹریٹ میں کھلبلی مچ گئی۔ یہاں کے وائسرائے کو گھر پہنچکر کھلے کھلے یہ کہنا پڑا کہ ہندستان سے انگریزی راج جاتے جاتے بال بال بچ گیا۔ اب یہ تو صاف ہے کہ ڈرپوک ہندستان نڈر برطانیہ کو نہیں ڈرا سکتا تھا۔ ڈرپوک سے نڈر ڈرتے بھی نہیں ہیں۔ اس لئے ہمیں یہ ماننا پڑیگا کہ سنہ اکیس میں ہم برطانیہ سے زیادہ نڈر تھے۔ یہ سنکر کچھ لوگ ایک دم یہ کہہ بیٹھیں گے کہ ہاں ہم ہندستانی سنہ اکیس میں برطانیہ سے زیادہ نڈر تھے، پر اس لئے تھے کہ ان دنوں ہندو مسلمان دونوں ایک ہوکر دودھ شکر بن گئے تھے۔ یہ ایکا تھا جس نے ہم کو نڈر بنا دیا تھا۔ یہ جواب ہماری رائے میں ٹھیک تو نہیں ہے پر ہمارے مطلب کا ضرور ہے، وہ اس لئے کہ اس جواب میں سے یہ نتیجہ نکلتا ہی ہے کہ ایکا پولس اور فوج سے زیادہ طاقتور ہوتا ہے۔ جواب کے

क़ायम था, पर सरकार को हमसे डरने की कोई जरूरत न रह गई थी, और इसलिए सरकार ने सन् इक्कीस के बड़े चामतकारी को जेल में डाल दिया था. सन् '२३ में सरकार का डर और कम हो गया था. इसलिए वह झण्डा सत्याग्रह का हंसते हंसते मुक़ाबला कर गई और अपनी हार को हिन्दुस्तानियों के सामने जीत साबित कर सकी. मतलब यह कि हमारा एका क़ायम रहते भी सरकार ने हमसे डरना छोड़ दिया. इस से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि एके के अलावा कोई और भी चीज़ थी जिसकी वजह से हम बरतानिया से भी ज्यादा निडर बन गए थे. यह ठीक है कि सन् तेईस के बाद हिन्दू मुसलमानों में फूट पड़ी. कांगरसी दल के भी दो टुकड़े हो गए. इस दोहरी फूट ने सरकार को मजबूत बनाया और हम को कमजोर. इस का हम यूँ भी कह सकते हैं कि हम अब ज्यादा डरपोक हो गए और सरकार ज्यादा निडर हो गई. इस में शक नहीं कि देखने के लिए इस तबदीली की वजह फूट ही थी. फूट बेशक बड़ी चीज़ है, पर फिर भी वह देह है, जड़ है, निकम्मी है, उस की जान, चेतना और काम की ताक़त कोई दूसरी चीज़ है. पंचतंत्र में भेद यानी फूट नीति का जिकर है. पर वहाँ जिकर ही नहीं है, यह भी सिखाया गया है कि वह फूट कैसे फैलाई जा सकती है. बस जिस चीज़ से एक समाज के मेम्बरों को आपस मे लड़ने की सूझे वही चीज़ फूट की जान है. उसी को जान लेना हमारा काम है.

फूट फूट मे दिन बीतते गए. सन्' ३९ आ गया. दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू हो गई. हिन्दू मुसलमानों में तो फूट थी ही. कांगरेस में

قائم تھا، پر سرکار کو ہم سے ڈرنے کی کوئی ضرورت نہ رہ گئی تھی، اور اس لئے سرکار نے سنہ اکیس کے بڑے چمتکاری کو جیل میں ڈال دیا تھا۔ سنہ '۲۳ میں سرکار کا ڈر اور کم ہو گیا تھا۔ اسلئے وہ جھنڈا ستیہ گرہ کا ہنستے ہنستے مقابلہ کر گئی اور اپنی ہار کو ہندوستانیوں کے سامنے جیت ثابت کر سکی۔ مطلب یہ کہ ہمارا ایکا قائم رہتے بھی سرکار نے ہم سے ڈرنا چھوڑ دیا۔ اس سے ہم اس نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ ایکے کے علاوہ کوئی اور بھی چیز تھی جس کی وجہ سے ہم برطانیہ سے بھی زیادہ نڈر بن گئے تھے۔ یہ ٹھیک ہے کہ سنہ تیئیس کے بعد ہندو مسلمانوں میں پھوٹ پڑی کانگریسی دل کے بھی دو ٹکڑے ہو گئے۔ اس دوہری پھوٹ نے سرکار کو مضبوط بنایا اور ہم کو کمزور۔ اس کو ہم یوں بھی کہہ سکتے ہیں کہ ہم اب زیادہ ڈرپوک ہو گئے اور سرکار زیادہ نڈر ہو گئی۔ اس میں شک نہیں کہ دیکھنے کے لئے اس تبدیلی کی وجہ پھوٹ ہی تھی۔ پھوٹ بیشک بڑی چیز ہے، پر پھر بھی وہ دیہہ ہے، جڑ ہے، نکمی ہے، اس کی جان، چیتنا اور کام کی طاقت کوئی دوسری چیز ہے۔ پنچ تنتر میں بھید یانی پھوٹ نیتی کا ذکر ہے۔ پر وہاں ذکر ہی نہیں ہے، یہ بھی سکھایا گیا ہے کہ وہ پھوٹ کیسے پھیلائی جا سکتی ہے۔ بس جس چیز سے ایک سماج کے ممبروں کو آپس میں لڑنے کی سوجھے وہی چیز پھوٹ کی جان ہے۔ اسی کو جان لینا ہمارا کام ہے۔

پھوٹ پھوٹ میں دن بیتتے گئے۔ سنہ '۳۹ آ گیا۔ دوسری بڑی لڑائی شروع ہو گئی۔ ہندو مسلمانوں میں تو پھوٹ تھی ہی۔ کانگریس میں

भी अब कई दल हो गए. यानी फूट का सूरज हिन्दुस्तान के ठीक सिर के ऊपर था. पर उस फूट के दिनों मे भी हिन्दुस्तान ने सन्' ४२ का चमतकार कर दिखाया. बाहर से नहीं तो अन्दर से, हिन्दुस्तान में रहने वाले सारे अंग्रेजों के दिल घबरा उठे डाउनिंग स्ट्रीट में भूकम्प आ गया. हिन्दुस्तान का लाट पागल बन बैठा, और गोरखपुर और वर्धा में जाकर नङ्गा नाचने लगा. अंग्रेजी कमाण्डर-इन-चीफ को यह बात माननी पड़ी कि हिन्दुस्तानी चिड़िया अपने कमाण्डर की मातहती मे बाज़ बन जाती है. अब यह नहीं कहा जा सकता कि फूट किसी को डरपोक बनाती है. फूट में तो दोनों दल निडर हो जाते हैं और छाती खोल खोल कर ज़ख़म सह सह कर गिरते है, उठते है और फिर लड़ते हैं. देखा जाए तो फूट से डर अलग भागता है. तब यह कोई दूसरा ही चुम्बक होना चाहिये जो डर के लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है. मतलब यह है कि सन्' ४२ मे फूट थी पर डर न था. और हिन्दुस्तान इक्कीस बरस के बाद फिर बरतानिया से ज़्यादा निडर हो गया था.

बरतानिया ने हिन्दुस्तान को निडर देख कर उस नुसख़े को काम में लाना चाहा जिस से हिन्दुस्तान फिर डरपोक बन जाये. पर उस नुसख़े को हिन्दू मुसलमान दोनों ने पीने से इनकार कर दिया. जब बरतानिया ने यह देखा तो फूट की उस आग को ज़्यादा भड़काने की कोशिश की जो ४२ के चमतकार से कमज़ोर हो गई थी. वह थोड़ी भड़की तो सही पर फिर अपनी जगह आ गई. इसी उधेड़-बुन में वह दिन आ गया कि जर्मनी ने घुटने टेक दिये और

بھی اب کئی دل ہو گئے۔ یعنی پھوٹ کا سورج ہندستان کے ٹھیک سر کے اوپر تھا۔ پر اِس پھوٹ کے دِنوں میں بھی ہندستان نے سنہ ۴۲ کا چمتکار کر دکھایا۔ باہر سے نہیں تو اندر سے، ہندستان میں رہنے والے سارے انگریزوں کے دل گھبرا اُٹھے۔ ڈاؤننگ اسٹریٹ میں بھونچال آگیا۔ ہندستان کا لاٹ پاگل بن بیٹھا، اور گورکھپور اور واردھا میں جاکر ننگا ناچنے لگا۔ انگریزی کمانڈر-ان-چیف کو یہ بات ماننی پڑی کہ ہندستانی چڑیا اپنے کمانڈر کی ماتحتی میں باز بن جاتی ہے۔ اب یہ نہیں کہا جا سکتا کہ پھوٹ کسی کو ڈرپوک بناتی ہے۔ پھوٹ میں تو دونوں دل نڈر ہو جاتے ہیں اور چھاتی کھول کھول کر زخم سہہ سہہ کر گرتے ہیں، اُٹھتے ہیں اور پھر لڑتے ہیں۔ دیکھا جائے تو پھوٹ سے ڈر الگ بھاگتا ہے۔ تب یہ کوئی دوسرا ہی چمبک ہونا چاہئے جو ڈر کے لوہے کو اپنی طرف کھینچتا ہے۔ مطلب یہ ہے کہ سنہ ۴۲ میں پھوٹ تھی پر ڈر نہ تھا۔ اور ہندستان اکیس برس کے بعد پھر برطانیہ سے زیادہ نڈر ہو گیا تھا۔

برطانیہ نے ہندستان کو نڈر دیکھ کر اس نسخے کو کام میں لانا چاہا جس سے ہندستان پھر ڈرپوک بن جائے۔ پر اس نسخے کو ہندو مسلمان دونوں نے پینے سے انکار کر دیا۔ جب برطانیہ نے یہ دیکھا تو پھوٹ کی اس آگ کو زیادہ بھڑکانے کی کوشش کی جو ۴۲ کے چمتکار سے کمزور ہو گئی تھی۔ وہ تھوڑی بھڑکی تو سہی پر پھر اپنی جگہ آگئی۔ اسی ادھیڑ بن میں وہ دن آگیا کہ جرمنی نے گھٹنے ٹیک دیے اور

ऐटम बम के धमाके से जापान मुंह में तिनका दबा कर अमरीका के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और लड़ाई खतम हो गई. पर इस सब से हिन्दुस्तान और भी ज्यादा निडर होता गया और अब बरतानिया के पास हिन्दुस्तान के निडरपन को दूर करने के लिये डोमिनियन राज देने के सिवा और कोई चारा ही नहीं रह गया. फूट तो थी ही. डोमिनियन मिठाई के दौने को देख कर लीग और कांगरेस दोनों लड़कियों में आपा धापी मच गई. उस की चोटी उस के हाथ में और उस की गरदन पर उस का हाथ! झट दो दौने बनाए गए. अब उस का हाथ उस के दौने पर और उस का हाथ उस के दौने पर. बरतानिया यह देख बेफिकर हो गया और बोला, मिठाई रखने के लिए हांडी लो और हांडी रखने के लिए बक्स भी लो. पर यह हांडी और बक्स भी आपस में टकराने लगे, यूँ दिन ब दिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों अपनी अपनी मिठाइयों को सुरक्षित न समझ सके. उन्हें यह डर रहने लगा कि कोई उन की मिठाई हड़प न कर जाय. कुछ हिन्दुस्तानियों और पाकिस्तानियों को यह सूझा कि जितनी मिठाई मुंह में ठूंसी जाय ठूँसो. बस, इसी लालच में डर दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा. जिस मिठाई की वह बिना हांडी और बक्स हिफाज़त कर सकते थे उस को अब हांडी और बक्स की मदद से भी बचा कर नहीं रख सकते. क्यों कि उनका ध्यान इस वक्त खाने में है न कि उस की हिफ़ाज़त करने में. बस, यह फूट नहीं होती जो डर पैदा करती है. यह होता है लालच, यह होती है खुदग़रज़ी जो डर पैदा करती है. ब्रिगेडियर उसमान में यह लालच और

ایٹم بم کے دھماکے سے جاپان منہ میں تنکا دبا کر امریکہ کے سامنے ہاتھ جوڑ کر کھڑا ہو گیا اور لڑائی ختم ہو گئی۔ پر اس سب سے ہندستان اور بھی زیادہ نڈر ہوتا گیا اور اب برطانیہ کے پاس ہندستان کے نڈرپن کو دور کرنے کے لئے ڈومینین راج دینے کے سوا اور کوئی چارا ہی نہیں رہ گیا۔ پھوٹ تو تھی ہی۔ ڈومینین مٹھائی کے دونے کو دیکھ کر لیگ اور کانگریس دونوں لڑکیوں میں آپا دھاپی مچ گئی۔ اُس کی چوٹی اُس کے ہاتھ میں اور اُس کی گردن پر اُس کا ہاتھ! جھٹ دو دونے بنائے گئے۔ اب اُس کا ہاتھ اُس کے دونے پر اور اُس کا ہاتھ اُس کے دونے پر۔ برطانیہ یہ دیکھ بے فکر ہو گیا اور بولا، مٹھائی رکھنے کیلئے ہانڈی لو اور ہانڈی رکھنے کے لئے بکس بھی لو۔ پر یہ ہانڈی اور بکس بھی آپس میں ٹکرانے لگے، یوں دن بدن ہندستان اور پاکستان دونوں اپنی اپنی مٹھائیوں کو محفوظ نہ سمجھ سکے۔ انہیں یہ ڈر رہنے لگا کہ کوئی اُن کی مٹھائی ہڑپ نہ کر جائے۔ کچھ ہندستانیوں اور پاکستانیوں کو یہ سوجھا کہ جتنی مٹھائی منہ میں ٹھونسی جائے ٹھونسو۔ بس، اسی لالچ میں ڈر دن دونا رات چوگنا بڑھنے لگا۔ جس مٹھائی کی وہ بنا ہانڈی اور بکس حفاظت کر سکتے تھے اُس کو اب ہانڈی اور بکس کی مدد سے بھی بچا کر نہیں رکھ سکتے کیونکہ اُن کا دھیان اس وقت کھانے میں ہے نہ کہ اُس کی حفاظت کرنے میں۔ بس، یہ پھوٹ نہیں ہوتی جو ڈر پیدا کرتی ہے۔ یہ ہوتا ہے لالچ، یہ ہوتی ہے غرض، جو ڈر پیدا کرتی ہے۔ بریگیڈیر عثمان میں یہ لالچ اور

खुदग़रज़ी न थी, तभी तो वह निडर था, और गोलियों की बौछार में ऐसे घूमता फिरता था मानो उस पर कोई फूल बरसा रहा हो. सिपाहियों मे ऐसे और भी मिल सकते हैं.

सन्' २१ और सन्' ४२ मे जनता को यह फ़िकर ही न थी कि कल खाना कहाँ से आयगा ? अमीरों को परवाह ही न थी कि रुपया बिखेर देने से वह ग़रीब भी हो सकते हैं. उन दिनों अमीर यह राह नहीं देखते थे कि कोई उन से मांगने आए. वह खुद ज़रूरतमन्दों के पास जाकर उन को रुपया और कपड़ा ही नहीं देते थे उन के सामने हज़ार हज़ार रुपयों के नोटों की ढेरियां लगा देते थे. यह सब आंख देखी बातें लिखी जा रही हैं. और चोरी ? और डाका ? यह तो हिन्दुस्तान से छू हो गए थे. हां, सन्' ४२ मे चोरी हुई और डाके पड़े, पर वह तो बिदेशी सरकार के ख़ज़ानों पर पड़े. जनता के घरों पर नहीं. उन दिनों की अमीर जनता ठीक मानों में ग़रीब जनता की ट्रस्टी बन गई थी. हिन्दुस्तानी सरकारी अफ़सर जो सच्चे हिन्दुस्तानी थे वह जनता के साथ हो गए थे. फिर उन्हे डर किस बात का. और जो सच्चे हिन्दुस्तानी नहीं थे उन्हें डरना ही चाहिये, क्योंकि बरतानिया डर रहा था. वह बरतानिया के नौकर थे. हिन्दू मुसलमानों में फूट थी, पर न हिन्दू मुसलमान से डरता था और न मुसलमान हिन्दू से. क्योंकि तब न मिठाई थी न दौने, यानी न हिन्दुस्तान था न पाकिस्तान. सरकार उन दिनों अपनी थी नहीं उसे डरना ही चाहिये और वह डरती भी थी. हां, वज़ीर हिन्दुस्तानी थे पर वह तो नाम के हिन्दुस्तानी थे. डरी हुई सरकार के पुरज़े थे. मशीन हिले तो पुरज़ों को हिलना ही चाहिये. ग़रज़ यह कि

خود غرضی نہ تھی، تبھی تو وہ نڈر تھا، اور گولیوں کی بوچھاروں میں ایسے گھومتا پھرتا تھا مانو اُس پر کوئی پھول برسا رہا ہو۔ سپاہیوں میں ایسے اور بھی مل سکتے ہیں۔

سنہ ۲۱ اور سنہ ۴۲ میں جنتا کو یہ فکر ہی نہ تھی کہ کل کھانا کہاں سے آئے گا؟ امیروں کو پرواہ ہی نہ تھی کہ روپیہ بکھیر دینے سے وہ غریب بھی ہو سکتے ہیں۔ اُن دنوں امیر یہ راہ نہیں دیکھتے تھے کہ کوئی اُن سے مانگنے آئے، وہ خود ضرورت مندوں کے پاس جاکر ان کو روپیہ اور کپڑا ہی نہیں دیتے تھے اُن کے سامنے ہزار ہزار روپیوں کے نوٹوں کی ڈھیریاں لگا دیتے تھے۔ یہ سب آنکھ دیکھی باتیں لکھی جا رہی ہیں۔ اور چوری؟ اور ڈاکہ؟ یہ تو ہندستان سے چھو ہو گئے تھے۔ ہاں، سنہ ۴۲ میں چوری ہوئی اور ڈاکے پڑے، پر وہ تو بدیشی سرکار کے خزانوں پر پڑے۔ جنتا کے گھروں پر نہیں۔ اُن دنوں کی امیر جنتا ٹھیک معنوں میں غریب جنتا کی ٹرسٹی بن گئی تھی۔ ہندستانی سرکاری افسر جو سچے ہندستانی تھے وہ جنتا کے ساتھ ہو گئے تھے۔ پھر انھیں ڈر کس بات کا۔ اور جو سچے ہندستانی نہیں تھے انھیں ڈرنا ہی چاہئے، کیونکہ برطانیہ ڈر رہا تھا۔ وہ برطانیہ کے نوکر تھے۔ ہندو مسلمانوں میں پھوٹ تھی، پر نہ ہندو مسلمان سے ڈرتا تھا اور نہ مسلمان ہندو سے۔ کیونکہ تب نہ مٹھائی تھی نہ دونے، یعنی نہ ہندستان تھا نہ پاکستان۔ سرکار ان دنوں اپنی تھی نہیں اُسے ڈرنا ہی چاہئے اور وہ ڈرتی بھی تھی۔ ہاں، وزیر ہندستانی تھے پر وہ تو نام کے ہندستانی تھے۔ ڈری ہوئی سرکار کے پرزے تھے۔ مشین ہلے تو پرزوں کو ہلنا ہی چاہئے۔ غرض یہ کہ

सन्' २१ और सन्' ४२ में हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा भाग लालच और ख़ुदग़रज़ी से ख़ाली था. इस लिए निडर था. तोप तमन्चे, टैंक बोम्बर, पनडुब्बी, नाशक जहाज उस के सामने खिलौने थे. वह परोपकार के रंग में रंगा हुआ था. इस लिये बहादुर था. हथेली पर सर रखने वालों को डर कैसे. लड़ाई पुलिस और फ़ौज नहीं जीतती. निडर जनरल जीतता है जो लालची नहीं होता. बस यह लालच और ख़ुदग़रज़ी है जिसने हम में डर भर दिया. दुगुनी और चौगुनी पुलिस, दस गुनी और सौगुनी फ़ौज हमारे डर को दूर नहीं कर सकती. डर दूर होगा बेलाग और बेलौस बनने से. लालच और ख़ुदग़रज़ी को ठुकराने से. और सिर्फ़ देश और देश-वासियों की भलाई सामने रख कर ज़िंदगी बिताने से, और सब हिन्दुस्तानियों को, फिर वह चाहे कोई धर्म मानते हों, किसी जात के हों, किसी सूबे के हों, एक समझने से.

डर भगाना ही होगा. नहीं तो हिन्द न सुखी रह सकेगा न आज़ाद.

फूट जिस्म है, लालच रूह है, और लालच ही डर की मां है. लालच गया, डर गया, फूट भागी.

—भगवान दीन

سنہ ۲۱ اور سنہ ۴۲ میں ہندستان کا بہت بڑا بھاگ لالچ اور خودغرضی سے خالی تھا۔ اس لئے نڈر تھا۔ توپ، طمنچے، ٹینک، بامبر، پن ڈبی، ناشک جہاز اس کے سامنے کھلونے تھے۔ وہ پروپکار کے رنگ میں رنگا ہوا تھا۔ اس لئے بہادر تھا۔ ہتھیلی پر سر رکھنے والوں کو ڈر کیسے۔ لڑائی پولیس اور فوج نہیں جیتتی۔ نڈر جنرل جیتتا ہے جو لالچی نہیں ہوتا۔ بس یہ لالچ اور خودغرضی ہے جس نے ہم میں ڈر بھر دیا۔ دوگنی اور چوگنی پولیس، دس گنی اور سو گنی فوج ہمارے ڈر کو دور نہیں کر سکتی۔ ڈر دور ہوگا بے لاگ اور بے لوث بننے سے۔ لالچ اور خودغرضی کو ٹھکرانے سے۔ اور صرف دیش اور دیش واسیوں کی بھلائی سامنے رکھ کر زندگی بتانے سے، اور سب ہندستانیوں کو، پھر وہ چاہے کوئی دھرم مانتے ہوں، کسی ذات کے ہوں، کسی صوبے کے ہوں ایک سمجھنے سے۔

ڈر بھگانا ہی ہوگا۔ نہیں تو ہند نہ سکھی رہ سکے گا نہ آزاد۔

پھوٹ جسم ہے، لالچ روح ہے، اور لالچ ہی ڈر کی ماں ہے۔ لالچ گیا، ڈر گیا، پھوٹ بھاگی۔

—— بھگوان دین

हिन्दुस्तानी ही संस्कृत है

हम कहना तो यह चाहते थे कि जब से हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ है तब से, पर वह आज़ाद हुआ कहां है? अभी कल ही की तो बात है, हमारे यहां के सब से बड़े हाकिम को विदेशी राजा की वफ़ादारी की क़सम खाना पड़ी थी और अभी सिका भी विदेशी राजा का ही चल रहा है. इस लिए अब हम यूँ ही कहेंगे कि जब से हिन्दुस्तान के हिन्द और पाकिस्तान दो हिस्से हुए तब से हिन्द के कुछ आदमी, फिर चाहे वह उंगलियों पर गिने जाने जितने ही क्यों न हों, सचाई से यह सोचने लगे हैं कि हिन्दुस्तान की बोली अब संस्कृत हो जानी चाहिए. संस्कृत शब्द का अर्थ है सुथरी, मंजी, रची पची. अगर यह शब्द इन्हीं मानों मे इस्तेमाल किया गया होता तब तो हमें इस लेख के लिखने की ज़रूरत ही न पड़ती. पर वह तो संस्कृत बोली उस बोली को कहना चाहते हैं जो कभी ऐसे ज़माने में हिन्दुस्तान के कुछ हिस्से की और वह भी शायद उस हिस्से के इने गिने आदमियों की बोली रही है जिस ज़माने का इतिहास में कोई ज़िकर नहीं है. यानी वह इतिहास-पहले काल की बोली पर लट्टू है और उसी को सारे हिन्द की बोली बनाना चाहते हैं.

संस्कृत शब्द है तो विशेषण (सिफ़त) पर उसका भाषा या बोली नाम की संज्ञा (इस्म) से इतना गहरा नाता हो गया और इतना पुराना भी हो गया कि उसने संज्ञा का रूप ले लिया, और बोली को गद्दी से उतार कर खुद

ہندستانی ہی سنسکرت ہے

ہم کہنا تو یہ چاہتے تھے کہ جب سے ہندستان آزاد ہوا ہے تب سے، پر وہ آزاد ہوا کہاں ہے؟ ابھی کل ہی کی تو بات ہے، ہمارے یہاں کے سب سے بڑے حاکم کو بدیشی راجا کی وفاداری کی قسم کھانا پڑی تھی اور ابھی سکہ بھی بدیشی راجا کا ہی چل رہا ہے. اسلئے اب ہم یوں ہی کہیں گے کہ جب سے ہندستان کے ہند اور پاکستان دو حصے ہوئے تب سے ہند کے کچھ آدمی، پھر چاہے وہ انگلیوں پر گنے جانے جتنے ہی کیوں نہ ہوں، سچائی سے یہ سوچنے لگے ہیں کہ ہندستان کی بولی اب سنسکرت ہو جانی چاہیئے. سنسکرت شبد کا ارتھ ہے ستھری، منجی، رچی پچی. اگر یہ شبد انھیں معنوں میں استعمال کیا گیا ہوتا تب تو ہمیں اس لیکھ کے لکھنے کی ضرورت ہی نہ پڑتی. پر وہ تو سنسکرت بولی. اس بولی کو کہنا چاہتے ہیں جو کبھی ایسے زمانے میں ہندستان کے کچھ حصے کی اور وہ بھی شاید اس حصے کے انے گنے آدمیوں کی بولی رہی ہے جس زمانے کا اتہاس میں کوئی ذکر نہیں ہے. یعنی وہ اتہاس پہلے کال کی بولی پر لٹو ہیں اور اسی کو سارے ہند کی بولی بنانا چاہتے ہیں۔

سنسکرت شبد ہے تو وشیشن (صفت) پر اسکا بھاشا یا بولی نام کی سنگیا (اسم) سے اتنا گہرا ناتا ہو گیا اور اتنا پرانا بھی ہو گیا کہ اس نے سنگیا کا روپ لے لیا، اور بولی کو گدی سے اتار کر خود

ही सब कुछ बन बैठा, जिस तरह से ब्राह्मण पेशवा छत्री मराठों के नौकर होते हुए मालिक बन बैठे थे. मतलब हमारा यह है कि अब 'संस्कृत' उस 'संस्कृतबोली' का नाम रह गया है जो वाल्मीकि रामायण के समय से महाभारत के समय तक इने गिने पंडितों की दरबारी बोली थी और कालिदास के समय में उस समय के राजा विक्रमादित्य को अपने राज की बोली बनाने की उमङ्ग उठी थी पर जिसमें उन्हें सफलता नहीं मिल पाई थी, और जिसे विक्रमादित्य ख़ुद भी ठीक ठीक नहीं बोल सकते थे. विक्रमादित्य के समय की उन पंडितों की कहानी से सभी पंडित वाक़िफ़ हैं जिन्हें भूल से विक्रमादित्य की पालकी का कहार बनना पड़ा था, और जब राजा ने ग़लत संस्कृत भाषा मे उन पर दया दिखाई थी तो उसके जवाब में उन पंडितों ने 'बाधति बाधते' कह कर मज़ाक़ उड़ाया था.

मतलब यह कि संस्कृत नाम से जिस बोली का नाम लिया जाता है वह जहां तक इतिहास का सम्बन्ध है हिन्दुस्तान भर की तो क्या उसके किसी बड़े सूबे की भी बोली नहीं रही. हां. हिन्दुस्तान के रहने वालों की धर्म की किताबें उसमें कुछ कुछ ज़रूर मिलती हैं. हिन्दुस्तान मे रहने वालों की बहुत बड़ी संख्या के पूज्य ग्रन्थ वेदों की बोली भी संस्कृत नहीं कही जाती और न कही जा सकती है. संस्कृत व्याकरण के मशहूर पंडित पाणिनी ने वेदों की बोली को संस्कृत नहीं माना.

बस, अब हमको यह जानना है कि संस्कृत शब्द असल में किस बोली की तरफ़ इशारा करता है. संस्कृत संज्ञा न रह कर अपना असली रूप विशेषण इख़्तियार कर ले तो सारी झंझट

ہی سب کچھ بن بیٹھا، جس طرح سے برہمن پیشوا، چھتری مراٹھوں کے نوکر ہوتے ہوئے مالک بن بیٹھے تھے۔ مطلب ہمارا یہ ہے کہ اب 'سنسکرت' اُس 'سنسکرت بولی' کا نام رہ گیا ہے جو والمیکی رامائن کے سمے سے مہابھارت کے سمے تک اِنے گِنے پنڈتوں کی درباری بولی تھی اور کالیداس کے سمے میں اس سمے کے راجہ وکرماجیت کو اپنے راج کی بولی بنانے کی امنگ اٹھی تھی پر جس میں اُنھیں سپھلتا نہیں مل پائی تھی، اور جسے وکرمادیتہ خود بھی ٹھیک ٹھیک نہیں بول سکتے تھے۔ وکرمادیتہ کے سمے کی اُن پنڈتوں کی کہانی سے سبھی پنڈت واقف ہیں جنھیں بھول سے وکرمادیتہ کی پالکی کا کہار بننا پڑا تھا، اور جب راجا نے غلط سنسکرت بھاشا میں اُن پر دیا دکھائی تھی تو اسکے جواب میں اُن پنڈتوں نے بادھتی بادھتے کہہ کر مذاق اُڑایا تھا۔

مطلب یہ کہ سنسکرت نام سے جس بولی کا نام لیا جاتا ہے وہ جہانتک اتہاس کا سمبندھ ہے ہندستان بھر کی تو کیا اُسکے کسی بڑے صوبے کی بھی بولی نہیں رہی۔ ہاں، ہندستان کے رہنے والوں کی دھرم کی کتابیں اس میں کچھ کچھ ضرور ملتی ہیں۔ ہندستان میں رہنے والوں کی بہت بڑی سنکھیا کے پوجیہ گرنتھ ویدوں کی بولی بھی سنسکرت نہیں کہی جاتی اور نہ کہی جاسکتی ہے۔ سنسکرت ویاکرن کے مشہور پنڈت پانِنی نے ویدوں کی بولی کو سنسکرت نہیں مانا۔

بس، اب ہم کو یہ جاننا ہے کہ سنسکرت شبد اصل میں کس بولی کی طرف اشارا کرتا ہے۔ سنسکرت سنگیا نہ رہ کر اپنا اصلی روپ ویشیشن اختیار کرلے تو ساری جھنجھٹ

मिट जाए. हम ऊपर यह कह आए हैं कि वेदों की बोली संस्कृत नहीं है और यह कि संस्कृत के मशहूर वैयाकरनी ने उसे संस्कृत नहीं माना. अब हम यह कहना चाहते हैं कि वेदों की बोली भी कभी किसी जमाने में संस्कृत रह चुकी है. इस बात के कहने का हमारा यह मतलब है कि वेद की ऋचाएं जब रची गई थीं तब उन की बोली संस्कृत ही थी यानी सुथरी मन्जी हुई ही थी. क्योंकि उस से ज्यादा संस्कृत यानी सुथरी मन्जी बोली उस हिस्से में और कोई बोलता ही न था. यहाँ यह भी याद रखना चाहिए कि अकेला ऋगवेद हज़ार बरस में बन पाया. यानी उस की पहली ऋचा आखिरी ऋचा से हज़ार बरस पहले कही गई थी. अगर पहली ऋचा के कहे जाने के वक़ लिखने की कला आर्यों को आती होती तो वह ऋगवेद की आखिरी ऋचा लिखते वक़ पहली ऋचा को ऐसे ही संस्कृत नाम न देते जिस तरह पाणिनी ने वेद की आखिरी ऋचा को संस्कृत नाम नहीं दिया. मतलब यह कि आखिरी ऋचा के लिखने वाले ऋषि वेद की पहली ऋचा की पूजा तो बेहद करते थे पर उस की बोली को उतनी सुथरी नहीं मानते थे जितनी अपनी आखिरी लिखी हुई ऋचा की बोलीको. और यह बात ठीक भी थी. हज़ार बरस की मन्जी बोली के सामने हज़ार बरस पुरानी बोली संस्कृत नहीं समझी जा सकती. और जो आदमी उस बोली को संस्कृत बोली की जगह देना चाहे उस को अचरज की ही नजर से नहीं देखा जाएगा बल्कि उसे कुछ और नजर से देखना पड़ेगा. यह ठीक है कि पुरानी बोली नई बोली की मां दादी हो सकती है. वह आदर

مٹ جائے۔ ہم اوپر یہ کہہ آئے ہیں کہ ویدوں کی بولی سنسکرت نہیں ہے اور یہ کہ سنسکرت کے مشہور ویاکرنی نے اُسے سنسکرت نہیں مانا۔ اب ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ویدوں کی بولی بھی کبھی کسی زمانے میں سنسکرت رہ چکی ہے۔ اس بات کے کہنے کا ہمارا یہ مطلب ہے کہ وید کی رچائیں جب رچی گئی تھیں تب اُن کی بولی سنسکرت ہی تھی یعنی ستھری منجی ہوئی ہی تھی۔ کیونکہ اُس سے زیادہ سنسکرت یعنی ستھری منجی بولی اُس حصے میں اور کوئی بولتا ہی نہ تھا۔ یہاں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ اکیلا رگ وید ہزار برس میں بن پایا۔ یعنی اُسکی پہلی رچا آخری رچا سے ہزار برس پہلے کہی گئی تھی۔ اگر پہلی رچا کے کہے جانے کے وقت لکھنے کی کلا آریوں کو آتی ہوتی تو وہ رگ وید کی آخری رچا لکھتے وقت پہلی رچا کو ایسے ہی سنسکرت نام نہ دیتے جس طرح پانِنی نے وید کی آخری رچا کو سنسکرت نام نہیں دیا۔ مطلب یہ کہ آخری رچا کے لکھنے والے رشی وید کی پہلی رچا کی پوجا تو بیحد کرتے تھے پر اُس کی بولی کو اتنی ستھری نہیں مانتے تھے جتنی اپنی آخری لکھی ہوئی رچا کی بولی کو۔ اور یہ بات ٹھیک بھی تھی۔ ہزار برس کی منجی بولی کے سامنے ہزار برس پرانی بولی سنسکرت نہیں سمجھی جا سکتی۔ اور جو آدمی اُس بولی کو سنسکرت بولی کی جگہ دینا چاہے اُس کو اچرج کی ہی نظر سے نہیں دیکھا جائے گا بلکہ اُسے کچھ اور نظر سے دیکھنا پڑے گا۔ یہ ٹھیک ہے کہ پرانی بولی نئی بولی کی ماں دادی ہو سکتی ہے۔ وہ آدر

भी पा सकती है. पर काम काज की जगह उसे नहीं दी जा सकती.

हाँ तो वेदों की बोली अपने रचना काल में संस्कृत बोली थी. पर आदि कवि वाल्मीकि के काल में वह बोली संस्कृत नहीं रह गई थी.इसी तरह महाभारत काल में रामायण की बोली संस्कृत नहीं रह गई थी. और रघुवंश, मेघदूत और शाकुन्तल काल में महाभारत की बोली संस्कृत नहीं थी. इसी तरह कितनी ही प्यारी होने पर और कितनी ही इज्जत के क़ाबिल होने पर रघुवंश, मेघदूत और शाकुन्तल की बोली आज संस्कृत नहीं मानी जाएगी. वह आदर और प्यार पा सकती है, काम की जगह नहीं. हावड़ा स्टेशन पर सन्१८५७ का पुराना इंजन रोज़ धोया,पोंछा और चमकाया जाता है. यह देखने की चीज़ जरूर है.पर उस तरह का इञ्जन आजकल के इञ्जन के साथ दौड़ सके यह बात तो एक ओर, घिसट भी नहीं सकता. यही हाल बोलियों का होता है. संस्कृत अब इतनी पुरानी हो गई है कि कुछ लोग तो उसे हिन्दुस्तानी का पुरखी कहने में भी झिझकते हैं. उससे तो आज काम लिया ही नहीं जा सकता. पर उस बोली से जो हिन्दी की सचमुच दादी मानी जाती है, यानी पृथ्वीराज रासौ की बोली, उससे भी काम नहीं लिया जा सकता. वह पृथ्वीराज के समय में संस्कृत थी और आज असंस्कृत है. आज की संस्कृत बोली राजा शिवप्रसाद, भारतेन्दु, रतननाथ सरशार, बाल मुकन्द गुप्त, बालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चकबस्त, पदमसिंह शर्मा आदि की किताबों में और फिर मिलेगी प्रेमचन्द, सुदर्शन, दत्तात्रय कैफ़ी और जैनेन्द्र के नाविलों में, उनकी कहानियों में, उनके

بھی پا سکتی ہے. پر کام کاج کی جگہ اُسے نہیں دی جا سکتی.

ہاں تو ویدوں کی بولی اپنے رچنا کال میں سنسکرت بولی تھی. پر آدی کوی والمیک کے کال میں وہ بولی سنسکرت نہیں رہ گئی تھی. اسی طرح مہابھارت کال میں رامائن کی بولی سنسکرت نہیں رہ گئی تھی. اور رگھوونش، میگھ دوت اور شکنتلا کال میں مہابھارت کی بولی سنسکرت نہیں تھی. اسی طرح کتنی ہی پیاری ہونے پر اور کتنی ہی عزت کے قابل ہونے پر رگھوونش، میگھ دوت اور شکنتلا کی بولی آج سنسکرت نہیں مانی جائے گی. وہ آدر اور پیار پا سکتی ہے. کام کی جگہ نہیں. ہاوڑہ اسٹیشن پر سنہ ۱۸۵۷ کا پُرانا انجن روز دھویا، پونچھا اور چمکایا جاتا ہے. یہ دیکھنے کی چیز ضرور ہے. پر اُس طرح کا انجن آج کل کے انجن کے ساتھ دوڑ سکے یہ بات تو ایک اور، گھسٹ بھی نہیں سکتا. یہی حال بولیوں کا ہوتا ہے. سنسکرت اب اتنی پُرانی ہو گئی ہے کہ کچھ لوگ تو اُسے ہندستانی کی پُرکھی کہنے میں بھی جھجکتے ہیں. اس سے تو آج کام لیا ہی نہیں جا سکتا. پر اس بولی سے جو ہندی کی سچ مچ دادی مانی جاتی ہے، یعنی پرتھوی راج راسو کی بولی، اُس سے بھی کام نہیں لیا جا سکتا. وہ پرتھوی راج کے سمے میں سنسکرت تھی اور آج اسنسکرت ہے. آج کی سنسکرت بولی راجہ شیو پرشاد، بھارتیندو، رتن ناتھ سرشار، بال مکند گپت، بال کرشن بھٹ، مہابیر پرشاد دویدی، چکبست، پدم سنگھ شرما آدی کی کتابوں میں اور پھر ملے گی پریم چند، سدرشن، دتاتریہ کیفی اور جینیندر کے ناولوں میں، اُنکی کہانیوں میں، اُنکے

लेखों में, पंडित सुन्दरलाल के 'भारत में अंग्रेज़ी राज' में और बिस्मिल आदि की कविता मे.

यही आज की संस्कृत है. यानी संस्कृत बोली है. इसी संस्कृत में महात्मा गांधी बोलते और लिखते थे. पंडित जवाहर लाल बोलते और लिखते है. इसी संस्कृत मे राजेन्द्र बाबू ने अपनी जीवन कहानी लिखी है. उसी संस्कृत बोली मे होने से वल्लभ भाई के व्याख्यान जादू का असर रखते है. उसी संस्कृत को हम चाहते हैं कि सारा हिन्दुस्तान अपना ले. और उसी को हम कहते हैं हिन्दुस्तानी.

नाम से हम चिपके हुए नहीं हैं. पर हिन्दुस्तान के नाते हिन्दुस्तानी नाम प्यारा लगता है और ठीक भी जंचता है. उसे बनाए रखने में हर्ज ही क्या.

यूं हिन्दुस्तानी आज की संस्कृत है.

—भगवान दीन

لیکھوں میں، پنڈت سندر لال کے "بھارت میں انگریزی راج" میں اور بسمل آدی کی کویتا میں۔

یہی آج کی سنسکرت ہے۔ یعنی سنسکرت بولی ہے۔ اسی سنسکرت میں مہاتما گاندھی بولتے اور لکھتے تھے۔ پنڈت جواہر لال بولتے اور لکھتے ہیں۔ اسی سنسکرت میں راجیندر بابو نے اپنی جیون کہانی لکھی ہے۔ اسی سنسکرت بولی میں ہونے سے ولبھ بھائی کے ویاکھیان جادو کا اثر رکھتے ہیں۔ اسی سنسکرت کو ہم چاہتے ہیں کہ سارا ہندستان اپنا لے اور اسی کو ہم کہتے ہیں ہندستانی۔

نام سے ہم چپکے ہوئے نہیں ہیں۔ پر ہندستان کے ناتے ہندستانی نام پیارا لگتا ہے اور ٹھیک بھی جنچتا ہے۔ اسے بنائے رکھنے میں ہرج ہی کیا۔

یوں ہندستانی آج کی سنسکرت ہے۔

—— بھگوان دین

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़, गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एम० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—o—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फोर्ट बम्बई. बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरों के क़ायदों के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब किताबें वग़ैरह दो तिहाई दाम पर मिलती हैं.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری- پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی مینجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی – جی – کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے – اے – اے فیضی، شری یم – یچ – پکواسا، شریمتی هنسا مہتا، سید عبدالله بریلوی، مسٹر کے – وي – شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری هندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا هند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی هیں۔

Registered No A 210

लेखों में, पं ... और .कुरान''

बिि ... —पंडित सुन्दरलाल

...रू मे दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की ...या है और सब धर्मों की किताबों मे हवाले दे देकर ...ती बुनियादी सचाइयो को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया ग या है.

आख़िर मे .कुरान से पहले की अरब की हालत, .कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर .कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में .कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि .कुरान मे जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किस कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनो की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनो लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی دلتی بنیادی سچائیوں کو بیاں کیا گیا ھے۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیاں کیا گیا ھے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے۔ یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئیے۔

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ھند"

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.


नया हिन्द
نیا ہند

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

नाराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विश्वम्भर नाथ, सुन्दर लाल

अगस्त १९४८

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर

'नया हिद'

४८, काई का बाग़, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اگست ۱۹۴۸

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچا دس آنے –

منیجر

'نیا ہند'

۴۸ کائی کا باغ، الہاباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ५   अगस्त '४८   नम्बर २

جلد ۵   اگست '۴۸   نمبر ۲

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

महामारी

(भाई कॅवल प्रसाद 'कॅवल')

यह कौन महामारी आई ?

इसके छूते ही दम भर में इन्साँ हो जाता है पागल
और घर वालों के हाथों ही हर घर बन जाता है मक़तल
ले संग काल की परछाईं यह कैसी बीमारी आई ?

यह कौन महामारी आई ?

कुछ खून भूक ने छोड़ा था, इसने हर बूंद निचोड़ लिया
उड़ने से पहले ही बन्दी पंछी का पंख मरोड़ दिया
आज़ादी का स्वागत करने यह कैसी हत्यारी आई ?

यह कौन महामारी आई ?

खैराबाद जिला सीतापुर में आकर मुस्तक़िल तौर पर रहन लगे.

مہاماری

(بھائی کنول پرساد 'کنول')

یہ کون مہاماری آئی؟

اس کے چھوتے ہی دم بھر میں، انساں ہوجاتا ہے پاگل
اور گھر والوں کے ہاتھوں ہی ہر گھر بن جاتا ہے مقتل
لے سنگ کال کی پرچھائیں یہ کیسی بیماری آئی؟

یہ کون مہاماری آئی؟

کچھ خون بھوک نے چھوڑا تھا، اس نے ہر بوند نچوڑ لیا
اُڑنے سے پہلے ہی بندی پنچھی کا پنکھ مروڑ دیا
آزادی کا سواگت کرنے یہ کیسی ہتیاری آئی؟

یہ کون مہاماری آئی؟

सदियों पर सपना देखा था, कुछ फूल खिले हैं आँगन में
जब आँख खुली, देखीं हर सू लपटें ही लपटें गुलशन में
फूलों के रंगों से उड़ कर यह कैसी चिंगारी आई ?
यह कौन महामारी आई ?

लोहू की मौजें चढ़ते ही पंजाब का पानी उतर गया
बंगाल, बिहार, नोआखाली, सब का शीराज़ा बिखर गया
बेहोशी बढ़ती जाती है, हम समझे बेदारी आई
यह कौन महामारी आई ?

यह आग जो फैली और तो घर सारा मिट जायेगा छन में
मिल जुल कर साथी उठ बैठो मज़बूत इरादे ले मन में
कंधों पे तुम्हारे ही अब यह भारी ज़िम्मेदारी आई
यह कौन महामारी आई ?

مہاماری

صدیوں پر سپنا دیکھا تھا، کچھ پھول کھلے ہیں آنگن میں
جب آنکھ کھلی، دیکھیں ہر سو لپٹیں ہی لپٹیں گلشن میں
پھولوں کے رنگوں سے اڑ کر یہ کیسی چنگاری آئی ؟
یہ کون مہاماری آئی ؟

لوہو کی موجیں چڑھتے ہی پنجاب کا پانی اتر گیا
بنگال، بہار، نواکھالی، سب کا شیرازہ بکھر گیا
بیہوشی بڑھتی جاتی ہے، ہم سمجھے بیداری آئی
یہ کون مہاماری آئی ؟

یہ آگ جو پھیلی اور تو گھر سارا مٹ جائے گا چھن میں
مل جل کر ساتھی اٹھ بیٹھو مضبوط ارادے سے من میں
کندھوں پہ تمہارے ہی اب یہ بھاری ذمہ داری آئی
یہ کون مہاماری آئی ؟

मौ० फ़ज़ले हक़ ख़ैराबादी

(भाई रतनलाल बंसल)

मौलाना फ़ज़लेहक़ ख़ैराबादी अपने ज़माने के एक बड़े रईस थे और इतने बड़े आलिम थे. कि इसलामी फ़लसफ़े में उस ज़माने में दो चार आदमी ही उनका मुक़ाबला कर सकते थे. अरबी के शायर थे और इस मैदान में अरब तक में उनका लोहा माना जाता था. लेकिन उनकी मौत कालेपानी की एक अँधेरी कोठरी में हुई, क्यों कि उनको अपने देश से मुहब्बत थी और अपने देश पर वह किसी दूसरे की हकूमत बरदाश्त करने को तैयार नहीं थे.

बहुत से कारनों से आज तक इस शहीद का नाम और ज़िन्दगी का हाल रोशनी में नहीं आ सका. लेकिन अब वह ज़माना आ गया है, जब हमें अपने इस देशभक्त शहीद को गुमनामी से निकाल कर उसे वह इज़्ज़त देनी चाहिये जिसका वह सच्चा हक़दार है.

ख़ानदान का हाल—मौलाना फ़ज़लेहक़ के बुज़ुर्ग बहुत पुराने ज़माने में ईरान के किसी सूबे पर हकूमत करते थे. किसी इन्क़लाबी तूफ़ान में उनकी वह हकूमत और शान शौकत बह गई और अपनी जान बचाने के लिये उनको हिन्दुस्तान चला आना पड़ा. अपनी आदत के मुताबिक़ हिन्दुस्तान ने उनको कलेजे से लगाया और फिर उनके नाती पोते कभी कहीं. और कभी कहीं बसते उठते आख़िर ख़ैराबाद ज़िला सीतापुर में आकर मुस्तक़िल तौर पर रहने लगे.

مولانا فضلِ حق خیرآبادی

(بھائی رتن لال بنسل)

مولانا فضلِ حق خیرآبادی اپنے زمانے کے ایک بڑے رئیس تھے اور اتنے بڑے عالم تھے کہ اسلامی فلسفے میں اُس زمانے میں دو چار آدمی ہی اُن کا مقابلہ کرسکتے تھے۔ عربی کے شاعر تھے اور اس میدان میں عرب تک میں اُن کا لوہا مانا جاتا تھا۔ لیکن اُنکی موت کالے پانی کی ایک اندھیری کوٹھری میں ہوئی، کیونکہ اُنکو اپنے دیش سے محبت تھی اور اپنے دیش پر وہ کسی دوسرے کی حکومت برداشت کرنے کو تیار نہیں تھے۔

بہت سے کارنوں سے آج تک اس شہید کا نام اور زندگی کا حال روشنی میں نہیں آسکا۔ لیکن اب وہ زمانہ آگیا ہے، جب ہمیں اپنے اس دیش بھکت شہید کو گمنامی سے نکال کر اُسے وہ عزت دینی چاہیے جسکا وہ سچا حقدار ہے۔

خاندان کا حال — مولانا فضلِ حق کے بزرگ بہت پُرانے زمانے میں ایران کے کسی صوبے پر حکومت کرتے تھے۔ کسی انقلابی طوفان میں اُن کی وہ حکومت اور شان شوکت بہہ گئی اور اپنی جان بچانے کے لئے اُن کو ہندستان چلا آنا پڑا۔ اپنی عادت کے مطابق ہندستان نے اُن کو کلیجے سے لگایا اور پھر اُن کے ناتی پوتے کبھی کہیں، اور کبھی کہیں بستے اُٹھتے آخر خیرآباد ضلع سیتاپور میں آکر مستقل طور پر رہنے لگے۔

अपनी क़ाबलियत के बल पर यहाँ उन्हों ने एक अच्छी जगीर हासिल की और फिर आसपास के इलाक़े में एक बड़े रईस समझे जाने लगे. लेकिन रईस होने पर भी जेहालत से हमेशा दुश्मनी रक्खी और ऊँचे दर्जे की पढाई लिखाई और बलन्द कैरेक्टर की पूँजी को ही हमेशा अपनीसच्ची जायदाद समझा. नतीजा यह हुआ कि बादशाह की नजर में भी यह ख़ानदान आया और मौलाना फ़ज़ले हक़ के दादा शाही नौकरी के सिलसिले में ख़ैराबाद से दिल्ली पहुँच गये. उनके बाद मौ० फ़ज़ले हक़ के पिता मौलाना फ़ज़ले इमाम तो आलिमो की महफ़िल के चराग़ समझे जाते थे . वह दिल्ली में ईस्ट इंडिया कम्पनी की तरफ़ से सदरुस्सुदूर यानी सबसे बड़े जज थे. साथ साथ शौक़ और फ़र्ज़ के तौर पर पढ़ाते भी थे. उनकी लिखी अरबी की कई किताबें अरबी लिटरेचर में आज भी बहुत इज्ज़त की नजर से देखी जाती हैं.

मौलाना का जन्म—मौलाना फ़ज़लेहक़ का जन्म सन् १७९७ मे ख़ैराबाद में हुआ और उनकी परवरिश दिल्ली में हुई. उनके ख़ानदानी रिवाज के मुताबिक़ चार साल की उम्र मे उनकी तालीम शुरू हुई. मौलाना के पिता को पढ़ाने का शौक़ तो था ही. वह शाही दरबार मे पालकी मे जाया करते थे. अक्सर फ़ज़लेहक़ साहब उनके साथ होते थे और दरबार को जाने आने में जो समय लगता था, उसका उपयोग फ़ज़लेहक़ साहब की पढ़ाई में होता था. कुछ बड़े हुए तो हिन्दुस्तान के मशहूर इन्क़लाबी और अपने ज़माने के सबसे बड़े आलिम शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब के पास पढ़ने के लिये जाने लगे. इनके सहपाठी

اپنی قابلیت کے بل پر یہاں اُنھوں نے ایک اچھی جاگیر حاصل کی اور پھر آس پاس کے علاقے میں ایک بڑے رئیس سمجھے جانے لگے۔ لیکن رئیس ہونے پر بھی جہالت سے ہمیشہ دشمنی رکھی اور اونچے درجے کی پڑھائی لکھائی اور بلند کیرکٹر کی پونجی کو ہی ہمیشہ اپنی سچی جائداد سمجھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ بادشاہ کی نظر میں بھی یہ خاندان آیا اور مولانا فضل حق کے دادا شاہی نوکری کے سلسلے میں خیرآباد سے دلّی پہنچ گئے۔ اُن کے بعد مولانا فضل حق کے پتا مولانا فضل امام تو عالموں کی محفل کے چراغ سمجھے جاتے تھے۔ وہ دلّی میں ایسٹ انڈیا کمپنی کی طرف سے صدرالصدور یعنی سب سے بڑے جج تھے۔ ساتھ ساتھ شوق اور فرض کے طور پر پڑھاتے بھی تھے۔ اُنکی لکھی عربی کی کئی کتابیں عربی لٹریچر میں آج بھی بہت عزت کی نظر سے دیکھی جاتی ہیں۔

مولانا کا جنم — مولانا فضل حق کا جنم سنہ ۱۷۹۷ء میں خیرآباد میں ہوا اور اُنکی پرورش دلّی میں ہوئی۔ اُن کے خاندانی رواج کے مطابق چار سال کی عمر میں اُنکی تعلیم شروع ہوئی۔ مولانا کے پتا کو پڑھانے کا شوق تو تھا ہی۔ وہ شاہی دربار میں پالکی میں جایا کرتے تھے۔ اکثر فضل حق صاحب اُن کے ساتھ ہوتے تھے اور دربار کو جانے آنے میں جو سمے لگتا تھا، اُس کا اُپیوگ فضل حق صاحب کی پڑھائی میں ہوتا تھا۔ کچھ بڑے ہوئے تو ہندستان کے مشہور انقلابی اور اپنے زمانے کے سب سے بڑے عالم شاہ عبدالعزیز صاحب کے پاس پڑھنے کے لئے جانے لگے۔ اِنکے سہ پاٹھی

थे मुफ़्ती सदरुद्दीन 'आज़ुर्दा', जो एक दूसरे रईस के बेटे थे. इन दोनों के मिज़ाज मे शेख़ी और गर्मी तो थी, जैसी कि अक्सर रईसो के बेटों में पाई जाती है लेकिन शाह अब्दुल अज़ीज़ के मदरसे में पहुँचे तो वहाँ एक दूसरा ही रंग देखा. शाह अब्दुल अज़ीज़ फ़क़ीर क़िस्म के आदमी थे. उनका हाल यह था कि जिस दिन फ़ज़लेहक़ साहब और सदरुद्दीन साहब ख़ुद किताबें लेकर आते उस दिन सबक़ पढ़ा देते थे और जिस दिन नौकर किताबें लेकर आता था, उस दिन पढ़ाने से इन्कार कर देते थे. फिर भी तेज़ ज़हन होने से इन दोनों को वह बहुत प्यार करते थे. मौलाना की याददाश्त बहुत अच्छी थी और फ़लसफ़े की बारीकियो मे दिमाग़ ख़ूब चलता था. नतीजा यह हुआ कि सन् १८०९ में सिर्फ़ १२ साल की उम्र में उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी करली और अपने पिता के शागिर्दों को पढ़ाने लगे.

इसी ज़माने की घटना है, एक बड़ी उम्र के साहब मौलाना के पिता के पास पढ़ने आया करते थे, लेकिन जब फ़ज़ले हक़ साहब अपनी पढ़ाई ख़त्म करके ख़ुद पढ़ाने लगे तो मौलाना के पिता ने अपने इस शागिर्द को भी मौलाना के पास ही भेज दिया. मौलाना ने पहिले ही दिन जब उनको बेहद सुस्त और कुन्दज़ेहन देखा, तो झुंझला उठे. किताब फेंक दी और कह दिया कि यह आपके बस का रोग नहीं है, मेहरबानी करके कल से तकलीफ़ न कीजियेगा. इस पर वह साहब बहुत रंजीदा हुए और उन्होंने तमाम क़िस्सा मौलाना के पिता को सुनाया. फ़ौरन मौलाना की तलबी हुई और जैसे ही मौलाना अपने पिता के सामने पहुँचे, उन्होंने एक थप्पड़ रसीद

تھے مفتی صدرالدین 'آزردہ'، جو ایک دوسرے رئیس کے بیٹے تھے۔ ان دونوں کے مزاج میں شوخی اور گرمی تو تھی، جیسی کہ اکثر رئیسوں کے بچوں میں پائی جاتی ہے لیکن شاہ عبدالعزیز کے مدرسے میں پہنچے تو وہاں ایک دوسرا ہی رنگ دیکھا۔ شاہ عبدالعزیز فقیر قسم کے آدمی تھے۔ اُن کا حال یہ تھا کہ جس دن فضل حق صاحب اور صدرالدین صاحب خود کتابیں لے کر آتے اُس دن سبق پڑھا دیتے تھے اور جس دن نوکر کتابیں لے کر آتا تھا، اُس دن پڑھانے سے انکار کر دیتے تھے۔ پھر بھی تیز ذہن ہونے سے ان دونوں کو وہ بہت پیار کرتے تھے۔ مولانا کی یادداشت بہت اچھی تھی اور فلسفے کی باریکیوں میں دماغ خوب چلتا تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سنہ ۱۸۰۹ میں صرف ۱۲ سال کی عمر میں اُنھوں نے اپنی پڑھائی پوری کر لی اور اپنے پتا کے شاگردوں کو پڑھانے لگے۔

اسی زمانے کی گھٹنا ہے، ایک بڑی عمر کے صاحب مولانا کے پتا کے پاس پڑھنے آیا کرتے تھے، لیکن جب فضل حق صاحب اپنی پڑھائی ختم کر کے خود پڑھانے لگے تو مولانا کے پتا نے اپنے اس شاگرد کو بھی مولانا کے پاس ہی بھیج دیا۔ مولانا نے پہلے ہی دن جب اُن کو بے حد سست اور کند ذہن دیکھا، تو جھنجھلا اُٹھے۔ کتاب پھینک دی اور کہہ دیا کہ یہ آپ کے بس کا روگ نہیں ہے، مہربانی کر کے کل سے تکلیف نہ کیجیے گا۔ اس پر وہ صاحب بہت رنجیدہ ہوئے اور اُنھوں نے تمام قصہ مولانا کے پتا کو سنایا۔ فوراً مولانا کی طلبی ہوئی اور جیسے ہی مولانا اپنے پتا کے سامنے پہنچے، اُنھوں نے ایک تھپڑ رسید

करते हुए कहा—"बेवक़ूफ़ ! तू यह नहीं सोचता कि तेरा जैसा दिमाग़ सब कहाँ से पा सकते हैं ? तू मालदार का लड़का ठहरा ! किसी चीज़ की कभी कमी महसूस नहीं की. जिसके पास बैठा, उसीने खातिरदारी से पढ़ाया. हमेशा अच्छा खाने को, अच्छा पहिनने को मिला. लेकिन इन बेचारों को यह सब कहाँ से मिले ?" मौलाना ने अपनी ग़लती महसूस की और फिर आइन्दा कभी किसी शाग़िर्द पर नाराज़ नहीं हुए.

सरकारी नौकरी में—जब कुछ और बड़े हुए, तो अंग्रेज़ रेज़ीडेन्ट की अदालत में सरिश्तेदार हो गये. बादशाह अकबर शाह और रेज़ीडेन्ट दोनों ही मौलाना को बहुत मुहब्बत की नज़र से देखते थे.

सरकारी नौकर होते हुए भी मौलाना ने पढ़ाने का सिलसिला क़ायम रक्खा और इसमें बड़ी दिलचस्पी रखते थे. इसी ज़माने में शायरी का शौक़ हुआ, लेकिन उर्दू फ़ारसी को छोड़ कर अरबी में शायरी करते थे. मशहूर शायर मोमिन आपके शतरंज के दोस्त थे और ग़ालिब साहब के साथ तो दिन रात का उठना बैठना था. मुफ़्ती सदरुद्दीन साहब से भी ज़िन्दगी भर निभी. इस तरह नौकरी और पढ़ाने से जो वक़्त बचता था तो शतरंज में जाता था या शेरों शायरी और लिटरेचर की चर्चा में. शेर कहने की ऐसी मश्क़ हो गई थी कि चार हज़ार से ऊपर शेर उन्होंने कहे होंगे. मौलाना की शायरी का एक बड़ा हिस्सा अब लिटन लाइब्रेरी अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में आ गया है और कुछ अब भी इधर उधर फैला

کرتے ہوئے کہا— "بیوقوف! تو یہ نہیں سوچتا کہ تیرا جیسا دماغ سب کہاں سے پاسکتے ہیں؟ تو مالدار کا لڑکا ٹھہرا! کسی چیز کی کبھی کمی محسوس نہیں کی۔ جس کے پاس بیٹھا، اُس نے خاطرداری سے پڑھایا۔ ہمیشہ اچھا کھانے کو، اچھا پہننے کو ملا۔ لیکن ان بےچاروں کو یہ سب کہاں سے ملے؟" مولانا نے اپنی غلطی محسوس کی اور پھر آئندہ کبھی کسی شاگرد پر ناراض نہیں ہوئے۔

سرکاری نوکری میں —— جب کچھ اور بڑے ہوئے، تو انگریز ریذیڈنٹ کی عدالت میں سرشتہ دار ہوگئے۔ بادشاہ اکبر شاہ اور ریذیڈنٹ دونوں ہی مولانا کو بہت محبت کی نظر سے دیکھتے تھے۔

سرکاری نوکر ہوتے ہوئے بھی مولانا نے پڑھانے کا سلسلہ قائم رکھا اور اس میں بڑی دلچسپی رکھتے تھے۔ اسی زمانے میں شاعری کا شوق ہوا، لیکن اردو، فارسی کو چھوڑ کر عربی میں شاعری کرتے تھے۔ مشہور شاعر مومن آپ کے شطرنج کے دوست تھے اور غالب صاحب کے ساتھ تو دن رات کا اُٹھنا بیٹھنا تھا۔ مفتی صدرالدین صاحب سے بھی زندگی بھر نبھی۔ اس طرح نوکری اور پڑھانے سے جو وقت بچتا تھا تو شطرنج میں جاتا تھا یا شعرو شاعری اور لٹریچر کی چرچا میں۔ شعر کہنے کی ایسی مشق ہوگئی تھی کہ چار ہزار سے اوپر شعر اُنھوں نے کہے ہوں گے۔ مولانا کی شاعری کا ایک بڑا حصہ اب لٹن لائبریری علی گڑھ یونیورسٹی میں آگیا ہے اور کچھ اب بھی اِدھر اُدھر پھیلا

हुआ है. इनका कुछ कलाम अरब तक भी पहुँचा और उसको वहाँ बड़ी दाद मिली. अरबी ज़बान और अरबी शायरी पर मौलाना का इतना क़ाबू था कि एक बार अपने उस्ताद शाह अब्दुल अज़ीज़ से भी उलझ गये. मौलाना ने एक क़सीदा शाह साहब को सुनाया. शाह साहब को वह पसन्द आया, लेकिन उसके एक शेर पर उनको एतराज़ था. इस पर मौलाना ने क़रीब बीस शेर मुख़्तलिफ़ मशहूर शायरों के अपनी दलील की हिमायत में पढ़ दिये. शाह साहब ने अपनी ग़लती मंज़ूर की और मौलाना को आशीर्वाद देकर विदा किया.

(५०)

कुछ दिन बाद दिल्ली में एक नया रेज़ीडेन्ट आया, तो उसने अपने महकमे का नाज़िम मौलाना को मुकर्रर किया. सन् १८२८ में जब वह विलायत के लिये चला, तो मौलाना मुफ़्ती बनाए गये. लेकिन इसके बाद मौलाना की अफ़सरों से नहीं पट सकी. उस ज़माने के अंग्रेज़ जैसी ख़ुशामद चाहते थे, मौलाना वैसी ख़ुशामद नहीं कर सकते थे. इसी ज़माने में शायद मौलाना को पहिली बार ग़ुलामी की बुराई महसूस हुई और अंग्रेज़ों की नौकरी उनको ज़िल्लत मालूम होने लगी.

दिल्ली से बाहर—इसी नाराज़ी की वजह से मौलाना को सरकारी वकील बना कर इलाहाबाद भेजा गया. उस ज़माने में बहादुर शाह 'ज़फ़र' वली अहद यानी युवराज थे. मौलाना जब दिल्ली से जाने लगे, तो उन्हों ने अपना क़ीमती शाल मौलाना को उढ़ा दिया और आँखों में आँसू भर कर विदा किया. मौलाना कुछ दिनों सरकारी वकील की हैसियत से काम करते रहे, लेकिन

ہوا ہے۔ ان کا کچھ کلام عرب تک بھی پہنچا اور اس کو وہاں بڑی داد ملی۔ عربی زبان اور عربی شاعری پر مولانا کا اتنا قابو تھا کہ ایک بار اپنے استاد شاہ عبدالعزیز سے بھی الجھ گئے۔ مولانا نے ایک قصیدہ شاہ صاحب کو سنایا۔ شاہ صاحب کو وہ پسند آیا، لیکن اس کے ایک شعر پر ان کو اعتراض تھا۔ اس پر مولانا نے قریب بیس شعر مختلف مشہور شاعروں کے اپنی دلیل کی حمایت میں پڑھ دیئے۔ شاہ صاحب نے اپنی غلطی منظور کی اور مولانا کو آشیرواد دے کر وداع کیا۔

کچھ دن بعد دلی میں ایک نیا رزیڈنٹ آیا، تو اس نے اپنے محکمے کا ناظم مولانا کو مقرر کیا۔ سنہ ۱۸۲۸ میں جب وہ ولایت کے لئے چلا، تو مولانا مفتی بنائے گئے۔ لیکن اس کے بعد مولانا کی افسروں سے نہیں پٹ سکی۔ اس زمانے کے انگریز جیسی خوشامد چاہتے تھے، مولانا ویسی خوشامد نہیں کر سکتے تھے۔ اسی زمانے میں شاید مولانا کو پہلی بار غلامی کی برائی محسوس ہوئی اور انگریزوں کی نوکری ان کو ذلت معلوم ہونے لگی۔

(۵۰)

دلی سے باہر ــــ اسی ناراضی کی وجہ سے مولانا کو سرکاری وکیل بنا کر الہ آباد بھیجا گیا۔ اس زمانے میں بہادر شاہ 'ظفر' ولی عہد یعنی یوراج تھے۔ مولانا جب دلی سے جانے لگے، تو انھوں نے اپنا قیمتی شال مولانا کو اڑھا دیا اور آنکھوں میں آنسو بھر کر وداع کیا۔ مولانا کچھ دنوں سرکاری وکیل کی حیثیت سے کام کرتے رہے، لیکن

अंग्रेज़ों की तरफ़ से अब वह बददिल हो चुके थे. नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनो बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया.

रियासतों मे—मौलाना के इस्तीफे की ख़बर जैसे ही फैली, झज्झर के रईस नवाब फ़ैज़ मुहम्मद साहब ने पाँच सौ रुपया माहवार पर फ़ौरन मौलाना को अपने यहाँ बुला लिया. मौलाना कुछ दिनो वहीं रहे. इसके बाद अलवर चले गये. वहाँ भी जी न लगा तो सहारन पुर पहुँचे और फिर टोंक के नवाब वज़ीरुद्दौला के यहाँ भी कुछ दिन तक रहे. कुछ लोगों का ख़याल है कि मौलाना इतनी रियासतों मे इसलिये घूमे कि अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ इनको लड़ने के लिये आमादा कर सकें. लेकिन इन रईसो और नवाबो का ख़ून सर्द हो चुका था, जिससे मौलाना को बड़ी निराशा हुई और फिर लखनऊ मे आकर बड़े जज के ओहदे पर काम करने लगे.

[redacted]

लखनऊ मे इस वक़्त नवाब वाजिद अली शाह की हुकूमत थी, लेकिन धीरे धीरे अंग्रेज़ों के पंजो मे यह रियासत भी कसती चली जा रही थी. नवाब साहब को अपनी रंग रेलियो से ही फ़ुरसत नहीं थी, फिर राजकाजी कामो में कौन दिमाग़ ख़र्च करे. नतीजा यह हुआ कि मौलाना का दिल यहाँ से भी ऊब गया और अच्छी भली नौकरी छोड़ कर रामपुर की राह ली, वहाँ कुछ दिनो तक नवाब यूसुफ़ अली को पढ़ाते रहे. इसी ज़माने में यानो १८५५ के आस पास नवाब यूसुफ़ अली रामपुर की गद्दी पर बैठे तो मौलाना ने कोशिश करके अपने दोस्त ग़ालिब साहब की राहरस्म रामपुर रियासत से करा दी

انگریزوں کی طرف سے اب وہ بددل ہو چکے تھے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ ہی دنوں بعد انھوں نے استعفیٰ دے دیا ۔

ریاستوں میں — مولانا کے استعفے کی خبر جیسے ہی پھیلی، جھجھر کے رئیس نواب فیض محمد صاحب نے پانچ سو روپیہ ماہوار پر فوراً مولانا کو اپنے یہاں بلا لیا ۔ مولانا کچھ دنوں وہیں رہے ۔ اسکے بعد الور چلے گئے ۔ وہاں بھی جی نہ لگا تو سہارن پور پہنچے اور پھر ٹونک کے نواب وزیرالدولہ کے یہاں بھی کچھ دن تک رہے ۔ کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ مولانا اتنی ریاستوں میں اس لئے گھومے کہ انگریزوں کے خلاف انکو لڑنے کے لئے آمادہ کر سکیں ۔ لیکن ان رئیسوں اور نوابوں کا خون سرد ہو چکا تھا، جس سے مولانا کو بڑی نراشا ہوئی اور پھر لکھنؤ میں آکر بڑے جج کے عہدے پر کام کرنے لگے ۔

لکھنؤ میں اس وقت نواب واجد علی شاہ کی حکومت تھی، لیکن دھیرے دھیرے انگریزوں کے پنجے میں یہ ریاست بھی کستی چلی جا رہی تھی ۔ نواب صاحب کو اپنی رنگ رلیوں سے ہی فرصت نہیں تھی، پھر راج کاجی کاموں میں کون دماغ خرچ کرے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ مولانا کا دل یہاں سے بھی اوب گیا اور اچھی بھلی نوکری چھوڑ کر رام پور کی راہ لی، وہاں کچھ دنوں تک نواب یوسف علی کو پڑھاتے رہے ۔ اسی زمانے میں یعنی ۱۸۵۵ کے آس پاس نواب یوسف علی رام پور کی گدی پر بیٹھے تو مولانا نے کوشش کرکے

और नवाब साहब ग़ालिब के पास अपनी ग़ज़लें इस्लाह के लिये भेजने लगे. इसके बाद जब दिल्ली में कुछ सरगर्मी दिखाई दी और बादशाह की तरफ़ से राजाओं नवाबों के पास ख़त आने शुरू हुए. तो मौलाना अलवर पहुंचे और उन्होंने राजा को बादशाह का साथ देने के लिये समझाया. लेकिन राजा किसी तरह राज़ी नहीं हुआ.

आज़ादी की लड़ाई के मैदान में—मौलाना अब ख़ामोश नहीं बैठ सकते थे. वह फ़ौरन दिल्ली की तरफ़ चल दिये और रास्ते में बड़े बड़े ज़मींदारों से मिलते गये और उनको यह समझाते गये कि इस वक़्त आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने में ही उन की भलाई है. मौलाना फ़ज़लेहक़ मौ० अहमद अलीशाह दिलावर जंग मद्रासी. से भी मिले, यह मौलाना अहमदुल्ला फ़ैज़ाबादी के नाम से भी मशहूर है और अवध की बग़ावत मे यह जिस बहादुरी से दस महीने तक अंग्रेज़ों से लड़ते रहे उसने इतिहास में इनका नाम अमर कर दिया है.

दिल्ली में—कुछ दिन बाद मौलाना को मालूम हुआ कि दिल्ली अब आज़ाद हकूमत के हाथ में है तो वह फ़ौरन दिल्ली पहुँचे और बादशाह से मिले. शाही दरबार के मुन्शी जीवन लाल के रोज़ नामचे में कई जगह मौलाना का ज़िक्र मिलता है और उससे यह भी मालूम होता है कि मौलाना बराबर बादशाह के मशविरो में शरीक हुआ करते थे.

लेकिन उस वक़्त दिल्ली की जो हालत थी. उससे मौलाना को बड़ी तकलीफ़ हुई. ख़ुद शहज़ादों की भी हालत यह

اور نواب صاحب غالب کے پاس اپنی غزلیں اصلاح کیلئے بھیجنے لگے. اس کے بعد جب دلی میں کچھ سرگرمی دکھائی دی اور بادشاہ کی طرف سے راجاؤں نوابوں کے پاس خط آنے شروع ہوئے. تو مولانا الور پہنچے اور انھوں نے راجا کو بادشاہ کا ساتھ دینے کے لئے سمجھایا. لیکن راجا کسی طرح راضی نہیں ہوا.

آزادی کی لڑائی کے میدان میں — مولانا اب خاموش نہیں بیٹھ سکتے تھے. وہ فوراً دلی کی طرف چلدیے اور راستے میں بڑے بڑے زمینداروں سے ملتے گئے اور اُن کو یہ سمجھاتے گئے کہ اس وقت آزادی کی لڑائی میں حصہ لینے میں ہی اُن کی بھلائی ہے. مولانا فضل حق مولانا احمد علی شاہ دلاور جنگ مدراسی سے بھی ملے، یہ مولانا احمد اللہ فیض آبادی کے نام سے بھی مشہور ہیں اور اودھ کی بغاوت میں یہ جس بہادری سے دس مہینے تک انگریزوں سے لڑتے رہے اُس نے اتہاس میں اُن کا نام امر کردیا ہے.

دلی میں — کچھ دن بعد مولانا کو معلوم ہوا کہ دلی اب آزاد حکومت کے ہاتھ میں ہے تو وہ فوراً دلی پہنچے اور بادشاہ سے ملے. شاہی دربار کے منشی جیون لال کے روزنامچے میں کئی جگہ مولانا کا ذکر ملتا ہے اور اُس سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ مولانا برابر بادشاہ کے مشوروں میں شریک ہوا کرتے تھے.

لیکن اُس وقت دلی کی جو حالت تھی. اُس سے مولانا کو بڑی تکلیف ہوئی. خود شاہزادوں کی بھی حالت یہ

थी कि दिन रात लूट खसोट पर उनकी नज़र रहती थी. गुन्डे, बदमाशों की बन आई थी और नाक़ाबिल लोग बड़े-बड़े ओहदों पर क़ब्ज़ा करके बैठ गये थे.

लेकिन इस हालत में भी रुहेलों की फ़ौज, जिसका जनरल बख़्त ख़ाँ था, सच्चे दिल से और सच्चे जज़्बे से लड़ाई में शरीक थी. इसी तरह का भरोसे लायक़ एक दूसरा संगठन मुजाहिदों का था, जिसकी बागडोर वलीउल्लाही मौलवियों के हाथों में थी. यह लोग अक्सर मौलाना से मिलते रहते थे. ख़ास तौर पर जनरल बख़्त ख़ाँ मौलाना से मशविरा करके ही कोई काम करते थे, लेकिन शाहज़ादा मिर्ज़ा मुग़ल के सामने बेचारे बख़्त ख़ाँ की कुछ चलती नहीं थी. कुछ दिन बाद हालत यहाँ तक बिगड़ी कि मिरज़ा इलाही बख़्श ने बादशाह से कम्पनी के पास माफ़ी का ख़त तक भिजवा दिया, लेकिन अंग्रेज़ों ने उस पर भरोसा नहीं किया.

आख़िर बख़्तख़ाँ के कहने पर मौलाना ख़ुद आगे बढ़े. जुमे की नमाज़ के बाद उन्होंने एक लम्बा तक़रीर जामा मसजिद में की और एक फ़तवा पेश किया, जिसके मुताबिक इस लड़ाई में शरीक होना हर एक मज़हबी आदमी का फ़र्ज़ था.

इस फ़तवे का जादू जैसा असर हुआ और क़रीब नव्वे हज़ार सिपाही बादशाह के झंडे के नीचे आ गये. लेकिन शाही ख़ानदान के होने के ज़ोम में जो लोग थे, उन्होंने इसका कोई फ़ायदा नहीं उठाया. हालत यह थी कि मिरज़ा इलाही बख़्श जैसे दग़ाबाज़ की पूछ थी और सच्चे वफ़ादारों का कोई पूछता भी नहीं

تھی کہ دن رات لوٹ، کھسوٹ پر انکی نظر رہتی تھی. گنڈے، بدمعاشوں کی بن آئی تھی اور ناقابل لوگ بڑے بڑے عہدوں پر قبضہ کرکے بیٹھ گئے تھے.

لیکن اس حالت میں بھی روہیلوں کی فوج، جس کا جنرل بخت خاں تھا، سچے دل سے اور سچے جذبے سے لڑائی میں شریک تھی. اسی طرح کا بھروسے لائق ایک دوسرا سنگٹھن مجاہدوں کا تھا، جس کی باگ ڈور ولی اللٰہی مولویوں کے ہاتھ میں تھی. یہ لوگ اکثر مولانا سے ملتے رہتے تھے. خاص طور پر جنرل بخت خاں مولانا سے مشورہ کرکے ہی کوئی کام کرتے تھے، لیکن شاہزادہ مرزا مغل کے سامنے بیچارے بخت خاں کی کچھ چلتی نہیں تھی. کچھ دن بعد حالت یہاں تک بگڑی کہ مرزا الٰہی بخش نے بادشاہ سے کمپنی کے پاس معافی کا خط تک بھجوا دیا، لیکن انگریزوں نے اس پر بھروسہ نہیں کیا.

آخر بخت خاں کے کہنے پر مولانا خود آگے بڑھے. جمعہ کی نماز کے بعد انھوں نے ایک لمبی تقریر جامع مسجد میں کی اور ایک فتویٰ پیش کیا، جس کے مطابق اس لڑائی میں شریک ہونا ہر ایک مذہبی آدمی کا فرض تھا.

اس فتوے کا جادو جیسا اثر ہوا اور قریب نوّے ہزار سپاہی بادشاہ کے جھنڈے کے نیچے آ گئے. لیکن شاہی خاندان کے ہونے کے زعم میں جو لوگ تھے، انھوں نے اسکا کوئی فائدہ نہیں اٹھایا. حالت یہ تھی کہ مرزا الٰہی بخش جیسے دغاباز کی پوچھ تھی اور سچے وفاداروں کو کوئی پوچھتا بھی نہیں

था. मौलाना ने अपनी तरफ़ से काफ़ी जोर लगाया. लेकिन बेचारे अकेले क्या करते. आखिर १९ सितम्बर १८५७ को कम्पनी की फ़ौज ने दिल्ली पर क़ब्ज़ा कर लिया.

खाना बदोशी की ज़िन्दगी—दिल्ली पर कम्पनी का कब्ज़ा होते ही मौलाना के तमाम अरमान मिट्टी में मिल गये. उसके बाद जो खूँरेज़ी दिल्ली में हुई उसने एक बार क़यामत का नक़्शा आँखों के सामने खींच दिया. मौलाना ने जो फ़तवा दिया था उस की खबर मुख़बिरों के ज़रिये अंग्रेज़ों को लग चुकी थी और मौलाना की बड़े ज़ोरों से तलाश की जा रही थी. इसी हालत में २४ सितम्बर १८५७ को मौलाना अपने खानदान को लेकर चुपचाप दिल्ली से निकल गये और भीकमपुर ज़िला अलीगढ़ के नवाब साहब के यहाँ पनाह ली. वहाँ क़रीब १८ दिन रहे. इस के बाद नवाब साहब ने भीकमपुर से क़रीब ८ मील दूर साँकरा के घाट से मौलाना और उनके खानदान को बदायूँ की तरफ़ उतरवा दिया.

मौलाना क़रीब दो साल तक इधर-उधर खाना बदोशी की ज़िन्दगी बिताते रहे. लेकिन कुछ ही दिन बाद मल्का विक्टोरिया का आम माफ़ी का एलान हुआ. इस पर मौलना ज़ाहिर हो गये और अपने घर खैराबाद में जाकर रहने लगे.

गिरफ़्तारी और सज़ा—लेकिन मौलाना सरकारी फ़ेहरिस्त के उन लोगों में थे, जिनको माफ़ी नहीं दी गई थी. इसलिये कुछ ही दिन बाद मौलाना गिरफ़्तार कर लिये गये और लखनऊ जाकर उन पर मुक़दमा चलाया गया.

تھا۔ مولانا نے اپنی طرف سے کافی زور لگایا۔ لیکن بیچارے اکیلے کیا کرتے۔ آخر ۱۹ ستمبر ۱۸۵۷ کو کمپنی کی فوج نے دلّی پر قبضہ کر لیا۔

خانہ بدوشی کی زندگی — دلّی پر کمپنی کا قبضہ ہوتے ہی مولانا کے تمام ارمان مٹی میں مل گئے۔ اُس کے بعد جو خوں ریزی دلّی میں ہوئی اُس نے ایک بار قیامت کا نقشہ آنکھوں کے سامنے کھینچ دیا۔ مولانا نے جو فتویٰ دیا تھا اس کی خبر مخبروں کے ذریعے انگریزوں کو لگ چکی تھی اور مولانا کی بڑے زوروں سے تلاش کی جا رہی تھی۔ اسی حالت میں ۲۴ ستمبر ۱۸۵۷ کو مولانا اپنے خاندان کو لے کر چپ چاپ دلّی سے نکل گئے اور بھیکم پور ضلع علی گڈھ کے نواب صاحب کے یہاں پناہ لی۔ وہاں قریب ۱۸ دن رہے اس کے بعد نواب صاحب نے بھیکم پور سے قریب ۸ میل دُور سانکرا کے گھاٹ سے مولانا اور اُنکے خاندان کو بدایوں کی طرف اُتروا دیا۔

مولانا قریب دو سال تک ادھر اُدھر خانہ بدوشی کی زندگی بتاتے رہے۔ لیکن کچھ ہی دن بعد ملکہ وکٹوریہ کا عام معافی کا اعلان ہوا۔ اس پر مولانا ظاہر ہوگئے اور اپنے گھر خیرآباد میں جاکر رہنے لگے۔

گرفتاری اور سزا — لیکن مولانا سرکاری فہرست کے اُن لوگوں میں تھے، جنکو معافی نہیں دی گئی تھی۔ اسلئے کچھ ہی دن بعد مولانا گرفتار کرلئے گئے اور لکھنؤ جاکر اُن پر مقدمہ چلایا گیا۔

मौलाना ने ख़ुद ही अपनी पैरवी की. इधर जज मौलाना का एक पुराना शागिर्द था और मुख़बिर पर भी कुछ ऐसा असर पड़ा. कि शनाख़्त के वक़्त उसने कह दिया कि फ़तवा देने वाले फ़ज़लेहक़ यह नहीं हैं. इनको मैं नहीं जानता.

इस तरह मौलाना के छूटने की पूरी उम्मीद थी. लेकिन मौलाना को यह झूट गवारा न हुआ. उन्होंने अपने आख़िरी बयान में कहा कि मुख़बिर ने किसी वजह से मेरी शनाख़्त नहीं की है, लेकिन फ़तवा मैंने ही दिया था और आज भी मेरी वही राय है.

जज और गवाह हैरान थे और घर वाले परेशान थे, लेकिन मौलाना ने बात ... तने से इन्कार कर दिया. मौलाना को उम्मीद थी कि फाँसी की सज़ा मिलेगी, लेकिन जज ने रिआयत की और कालेपानी की सज़ा दी. मौलाना की यह हिम्मत देखकर सब दंग रह गये.

कालेपानी में—मौलाना कालेपानी पहुँचा दिये गये.वहाँ और भी बहुत से मौलवी थे. उन्होंने इनको हाथों हाथ लिया. लेकिन मौलाना वहाँ दिन रात तड़पते रहते थे. कालेपानी में लिखी हुई उनकी किताब 'सूरतुल हिन्दिया' आँसुओं का एक बहता हुआ चश्मा है जिसमें एक-एक हरफ़ में मौलाना की तड़प मौजूद है. यह किताब कपड़ों पर कोयलों से लिखी गई और बड़ी मुश्किल से हिन्दुस्तान तक आई. मौलाना ने उसमें अपनी तकलीफ़ों का जो नक़्शा खींचा है, उसे पढ़कर आज भी झुरझुरी आने लगती है.

مولانا نے خود ہی اپنی پیروی کی۔ ادھر جج مولانا کا ایک پرانا شاگرد تھا اور مخبر پر بھی کچھ ایسا اثر پڑا کہ شناخت کے وقت اُس نے کہہ دیا کہ فتویٰ دینے والے فضلِ حق یہ نہیں ہیں۔ اِن کو میں نہیں جانتا۔

اس طرح مولانا کے چھوٹنے کی پوری اُمید تھی۔ لیکن مولانا کو یہ جھوٹ گوارا نہ ہوا۔ اُنھوں نے اپنے آخری بیان میں کہا کہ مخبر نے کسی وجہ سے میری شناخت نہیں کی ہے، لیکن فتویٰ میں نے ہی دیا تھا اور آج بھی میری وہی رائے ہے۔

جج اور گواہ حیران تھے اور گھر والے پریشان تھے، لیکن مولانا نے بات بدلنے سے انکار کردیا۔ مولانا کو اُمید تھی کہ پھانسی کی سزا ملے گی، لیکن جج نے رعایت کی اور کالے پانی کی سزا دی۔ مولانا کی یہ ہمت دیکھ کر سب دنگ رہ گئے۔

کالے پانی میں — مولانا کالے پانی پہنچا دیے گئے۔ وہاں اور بھی بہت سے مولوی تھے۔ اُنھوں نے انکو ہاتھوں ہاتھ لیا۔ لیکن مولانا وہاں دن رات تڑپتے رہتے تھے۔ کالے پانی میں لکھی ہوئی انکی کتاب 'صورت الہندیہ' آنسوؤں کا ایک بہتا ہوا چشمہ ہے۔ جس میں ایک ایک حرف میں مولانا کی تڑپ موجود ہے۔ یہ کتاب کپڑوں پر کوئلوں سے لکھی گئی اور بڑی مشکل سے ہندستان تک آئی۔ مولانا نے اُس میں اپنی تکلیفوں کا جو نقشہ کھینچا ہے، اُسے پڑھ کر آج بھی جھرجھری آنے لگتی ہے۔

इधर मौलाना की रिहाई की कोशिश भी हो रही थी. आख़िर मौलाना के बेटे शम्सुलहक़ रिहाई का परवाना लेकर अन्डमन रवाना हुए और जहाज़ से उतर कर जब शहर में गये। तो देखा कि एक जनाज़ा चला आ रहा है जिसके साथ बहुत भीड़ है. पूछने पर मालूम हुआ कि कल १२ सफ़र सन् १२७८ हिजरी यानी सन् १८६१ ईसवी को मौलाना फ़ज़लेहक़ साहब का इन्तिक़ाल हो गया और अब दफ़न करने के लिए ले जाया जा रहा है.

मुसाफ़िर अपनी आख़िरी मंज़िल पर पहुँच चुका था.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

ادھر مولانا کی رہائی کی کوشش بھی ہو رہی تھی۔ آخر مولانا کے بیٹے شمس الحق رہائی کا پروانہ لیکر انڈمن روانہ ہوئے اور جہاز سے اُتر کر جب شہر میں گئے تو دیکھا کہ ایک جنازہ چلا آرہا ہے جس کے ساتھ بہت بھیڑ ہے۔ پوچھنے پر معلوم ہوا کہ کل ۱۲ صفر سنہ ۱۲۷۸ ہجری یعنی سنہ ۱۸۶۱ عیسوی کو مولانا فضل حق صاحب کا انتقال ہوگیا اور اب دفن کرنے کیلئے لے جایا جا رہا ہے۔

مسافر اپنی آخری منزل پر پہنچ چکا تھا۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک:- پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے، اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں انکا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

— منیجر "نیا ہند"

۴۸، بائی کا باغ الہ آباد

पहला कलवार

(महात्मा टाल्सटाय)

पहला सीन

किसान—[हल चलाते हुए आकाश की ओर देखता है.] दोपहर हो गई. चल ! बेचारे बेज़बान जानवर ! मालूम होता है थक गया है. अच्छा एक चक्कर और. यह आख़िरी नाली ख़तम करके खाने का समय आ जायेगा. अच्छा हुआ कि मैं रोटी का टुकड़ा साथ लेता आया था. अब घर जाना नहीं पड़ेगा. यहीं कुंवें पर बैठ कर खा लूंगा. उस समय तक यह पगी भी घास चरेगा. इसके बाद, ईश्वर ने चाहा तो फिर काम शुरू होगा और जोताई का काम ठीक समय पर ख़तम हो जायेगा.

[प्रेत अन्दर आता है और झाड़ी में छिप जाता है.]

प्रेत—देखो यह भी अजीब आदमी है. हर वक़्त ईश्वर ही को याद करता है. अच्छा ठहरो, अभी थोड़ी देर में तुम शैतान को याद करने लगोगे. मैं रोटी का टुकड़ा चुरा कर ले जाता हूँ. जब वह उसको न पायेगा तो ढूंढना शुरू करेगा और भूक से बेचैन होकर झक मार कर क़सम खायेगा और शैतान का नाम लेगा .

[रोटी का टुकड़ा ले जाता है और झाड़ी के पीछे बैठ कर किसान की राह देखता है.]

किसान—[घोड़े को खोल देता है.] ए ईश्वर ! [घोड़े को खोल कर जहाँ उसका कपड़ा रक्खा है उस तरफ़ आता है.] मैं

پہلا کلوار

(مہاتما ٹالسٹائی)

پہلا سین

کسان—[ہل چلاتے ہوئے آکاش کی اور دیکھتا ہے۔] دوپہر ہو گئی۔ چل ! بیچارے بے زبان جانور ! معلوم ہوتا ہے تھک گیا ہے۔ اچھا ایک چکر اور۔ یہ آخری نالی ختم کرکے کھانے کا سمے آ جائیگا۔ اچھا ہوا کہ میں روٹی کا ٹکڑا ساتھ لیتا آیا تھا۔ اب گھر جانا نہیں پڑے گا۔ یہیں کوئیں پر بیٹھ کر کھا لوں گا۔ اُس سمے تک یہ پگی بھی گھاس چرے گا۔ اِس کے بعد ایشور نے چاہا تو پھر کام شروع ہوگا اور جوتائی کا کام ٹھیک سمے پر ختم ہو جائے گا۔

[پریت اندر آتا ہے اور جھاڑی میں چھپ جاتا ہے۔]

پریت— دیکھو یہ بھی عجیب آدمی ہے۔ ہر وقت ایشور ہی کو یاد کرتا ہے۔ اچھا ٹھہرو، ابھی تھوڑی دیر میں تم شیطان کو یاد کرنے لگوگے۔ میں روٹی کا ٹکڑا چُرا کے لے جاتا ہوں۔ جب وہ اُس کو نہ پائے گا تو ڈھونڈھنا شروع کرے گا اور بھوک سے بیچین ہو کر جھک مار کر قسم کھائیگا اور شیطان کا نام لے گا۔

[روٹی کا ٹکڑا لے جاتا ہے اور جھاڑی کے پیچھے بیٹھ کر کسان کی راہ دیکھتا ہے۔]

کسان—[گھوڑے کو کھول دیتا ہے۔] اے ایشور ! [گھوڑے

बहुत भूका हो रहा हूँ. मेरी घर वाली ने बड़ा टुकड़ा काट कर साथ कर दिया है मैं कहीं सब न खा जाऊँ [कपड़े के पास आकर] हैं ! क्या हो गया ? शायद कपड़े के नीचे रख दिया है. [कपड़े को उठा कर] नहीं यहाँ भी नहीं है. आख़िर क्या हुआ ? [कपड़े को झाड़ता है.]

प्रेत—[झाड़ी के पीछे से] ढूंढो. खूब ढूंढो. यहाँ मैं उसको पूरी हिफ़ाज़त से रक्खे हुए हूँ. [रोटी पर बैठ जाता है.]

किसान—[हल को हिलाता है और कपड़े को फिर झाड़ता है.] बड़े अचम्भे की बात है ! यहाँ कोई आया नहीं मगर रोटी का टुकड़ा ग़ायब हो गया. अगर चिड़ियों ने इसको खाया होता तो कुछ टुकड़े ज़रूर बच जाते लेकिन एक ज़र्रा भी नहीं बचा. यहाँ कोई था ही नहीं. लेकिन रोटी को कोई ज़रूर ले गया होगा.

प्रेत—[उठ कर झाँकता है] अब शैतान को याद करेगा.

किसान—मालूम होता है इसका कोई इलाज नहीं. ख़ैर कोई बात नहीं. मैं भूक से मर नहीं जाऊँगा. अगर मेरी रोटी का टुकड़ा कोई ले गया तो ले जाने दो. भगवान करे उसके ले जाने वाले का ही कुछ भला हो जाय.

प्रेत—[थूकता है] अभागा कहीं का ! कोसने के बदले कहता है कि भगवान करे ले जाने वाले का भला हो......ऐसे आदमी के साथ कोई क्या कर सकता है ?

[किसान ज़मीन पर लेट जाता है और भगवान का नाम लेकर जम्हाई लेता हुआ सो जाता है.]

प्रेत—[झाड़ी से निकल कर] हमारे सरदार के लिये बातें

بہت بھوکا ہو رہا ہوں ۔ میری گھر والی نے بڑا ٹکڑا کاٹ کر ساتھ کر دیا ہے میں کہیں سب نہ کھا جاؤں [کپڑے کے پاس آ کر] ہیں ! کیا ہو گیا ؟ شاید کپڑے کے نیچے رکھ دیا ہے ۔ [کپڑے کو اٹھا کر] نہیں یہاں بھی نہیں ہے ۔ آخر کیا ہوا ؟ [کپڑے کو جھاڑتا ہے]

پریت — [جھاڑی کے پیچھے سے] ڈھونڈھو ۔ خوب ڈھونڈھو ۔ یہاں میں اُس کو پوری حفاظت سے رکھے ہوئے ہوں ۔ [روٹی پر بیٹھ جاتا ہے]

کسان — [ہل کو ہلاتا ہے اور کپڑے کو پھر جھاڑتا ہے] بڑے اچنبھے کی بات ہے ! یہاں کوئی آیا نہیں مگر روٹی کا ٹکڑا غائب ہو گیا ۔ اگر چڑیوں نے اِسکو کھایا ہوتا تو کچھ ٹکڑے ضرور بچ جاتے لیکن ایک ذرہ بھی نہیں بچا ۔ یہاں کوئی تھا ہی نہیں ۔ لیکن روٹی کو کوئی ضرور لے گیا ہوگا ۔

پریت — [اُٹھ کر جھانکتا ہے] اب شیطان کو یاد کرے گا ۔

کسان — معلوم ہوتا ہے اسکا کوئی علاج نہیں ۔ خیر کوئی بات نہیں ۔ میں بھوک سے مر نہیں جاؤں گا ۔ اگر میری روٹی کا ٹکڑا کوئی لے گیا تو لیجانے دو ۔ بھگوان کرے اُس کے لیجانے والے کا ہی کچھ بھلا ہو جائے ۔

پریت — [تھوکتا ہے] ابھاگا کہیں کا ! کوسنے کے بدلے کہتا ہے کہ بھگوان کرے لے جانے والے کا بھلا ہو ..... ایسے آدمی کے ساتھ کوئی کیا کر سکتا ہے ؟

[کسان زمین پر لیٹ جاتا ہے اور بھگوان کا نام لیکر جماہی لیتا ہوا سو جاتا ہے ۔]

پریت — [جھاڑی سے نکل کر] ہمارے سردار کے لئے باتیں

करना बहुत आसान है. वह कहता है कि तुम नर्क में किसानों को काफ़ी तादाद में नहीं लाते. देखो तो व्योपारियों, अमीरों और हर तरह के लोगों की कितनी बड़ी तादाद रोज़ाना यहाँ जमा होती रहती है. लेकिन किसान कितने कम हैं ? अब इस आदमी पर कोई कैसे क़ाबू पा सकता है. इस को बस में लाने की कोई तदबीर नहीं मालूम होती. इसके पास रोटी का सिर्फ़ एक टुकड़ा था जिसको मैंने चुरा लिया. उस पर भी उसने शाप नहीं दिया और शैतान का नाम नहीं लिया. अब इससे ज्यादा क्या कर सकता हूँ ? मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती कि क्या तदबीर करूँ. अब जा कर सारा हाल सुना देता हूँ. [ग़ायब हो जाता है ।]

दूसरा सीन

[नर्क—शैतान का सरदार सब से ऊंची जगह पर बैठा हुआ है. उससे नीचे उसका मुंशी मेज़ पर लिखने का सामान लिये हुए बैठा है. इधर उधर दास और सेवक खड़े हैं. दाहिनी तरफ़ अलग अलग रूप के पांच प्रेत खड़े है. बाईं तरफ़ दरवाज़े के पास दरबान खड़ा है. सरदार के सामने एक बांका प्रेत खड़ा है]

प्रेत—तीन साल में कुल तादाद दो लाख बास हज़ार पाँच आदमियों की पहुँची है और अब वह सब के सब अपने बस में हैं.

सरदार—बहुत अच्छा. आगे बढ़ो. [मुँशी से] मैं थक गया हूँ. अभी कुछ और काम बाक़ी है ? किस के किस के काम का हिसाब हो चुका और किस किस का हिसाब अभी देखना है ?

मुंशी—[उंगलियो पर गिनते हुए प्रेतों की तरफ़ इशारा करता जाता

(११६) [redacted]

آسان ہے۔ وہ کہتا ہے کہ تم نرک میں کسانوں کو کافی
میں نہیں لاتے۔ دیکھو تو بیوپاریوں، امیروں اور ہر طرح کے
کی کتنی بڑی تعداد روزانہ یہاں جمع ہوتی رہتی ہے۔ لیکن
کتنے کم ہیں؟ اب اس آدمی پر کوئی کیسے قابو پا سکتا ہے۔
کو بس میں لانے کی کوئی تدبیر نہیں معلوم ہوتی۔ اس کے
روٹی کا صرف ایک ٹکڑا تھا جس کو میں نے چرا لیا۔ اس پر
شراپ نہیں دیا اور شیطان کا نام نہیں لیا۔ اب اس
زیادہ کیا کر سکتا ہوں؟ میری تو عقل کام نہیں کرتی کہ کیا تدبیر
اب جا کر سارا حال سنا دیتا ہوں۔ [غائب ہو جاتا ہے]

دوسرا سین

[نرک — شیطان کا سردار سب سے اونچی جگہ پر بیٹھا ہوا ہے۔ اس
اس کا منشی میز پر لکھنے کا سامان لئے ہوئے بیٹھا ہے۔ ادھر
داس اور سیوک کھڑے ہیں۔ داہنی طرف الگ الگ روپ
کے پانچ پریت کھڑے ہیں۔ بائیں طرف دروازے کے پاس دربان
کھڑا ہے۔ سردار کے سامنے ایک بانکا پریت کھڑا ہے]

پریت — تین سال میں کل تعداد دو لاکھ بیس ہزار پانچ آدمیوں
کی پہنچی ہے اور اب وہ سب کے سب اپنے بس میں ہیں۔

سردار — بہت اچھا۔ آگے بڑھو [منشی سے] میں تھک گیا ہوں۔ ابھی
کچھ اور کام باقی ہے؟ کس کس کے کام کا حساب ہو چکا اور کس

है. जिस प्रेत का वह ,नाम लेता है वह प्रेत अदब से झुक आता है] भले आदमियों और अमीरों के प्रेत का हिसाब हो चुका. उसने कुल अठारह सौ छत्तीस आदमी फंसाये. व्योपारियों के प्रेत ने छेयानवे सौ तेईस आदमी हाज़िर किये. हाकिमों के प्रेत की फ़ेहरिस्त में चौंतीस सौ तेईस क़ैदी हैं. औरतों के प्रेत का हिसाब हो चुका है. एक लाख अट्ठासी हज़ार तीन सौ पन्द्रह ब्याही औरतें और सत्तरह हज़ार चार सौ अड़तीस कुआरियाँ हैं. किसानों के प्रेत का हिसाब बाक़ी रह गया है. फ़ेहरिस्त में कुल दो लाख बीस हज़ार पाँच आत्मायें हैं.

सरदार—अच्छा है, आज ही तमाम कारवाई ख़तम कर दी जाय [दरबान से] बाक़ी प्रेतो को हाज़िर करो.

[वकीलों का प्रेत अन्दर आता है और अदब से झुक कर सलाम करता है]

सरदार—कहो तुम्हारा क्या हाल है ?

वकीलों का प्रेत—[हँसते हुए और अपनी हथेलियों को मलते हुए] मुझे अपने काम में पूरी सफलता मिली है. जब से दुनिया बनी तब से मुझे याद नहीं कि कभी ऐसी लूट मार मची हो.

सरदार—क्यों क्या तुम ने अनगिनत आदमियो को फँसा लिया है ?

वकीलों का प्रेत—तादाद तो कुछ ऐसी ज्यादा नहीं. सिर्फ़ तेरह सौ पचास आदमी हैं. लेकिन सब के सब ऐसे अजीब और निराले हैं कि क्या कहूँ. वह ऐसे आदमी हैं कि हम प्रेतों को भी मात कर दें. वह लोगों को हम से ज़्यादा आसानी के साथ बहका सकते हैं. मैंने उन में एक नया ढङ्ग चालू कर दिया है.

ہے۔ جس پریت کا وہ نام لیتا ہے وہ پریت ادب سے جھک جاتا ہے]
بھلے آدمیوں اور امیروں کے پریت کا حساب ہو چکا۔ اس نے کل
اٹھارہ سو چھتیس آدمی پھنسائے۔ بیوپاریوں کے پریت نے چھیانوے
سو تئیس آدمی حاضر کئے۔ حکیموں کے پریت کی فہرست میں چونتیس سو تئیس
قیدی ہیں۔ عورتوں کے پریت کا حساب ہو چکا ہے۔ ایک لاکھ اٹھاسی
ہزار تین سو پندرہ بیاہی عورتیں اور سترہ ہزار چار سو اڑتالیس
کنواریاں ہیں۔ کسانوں کے پریت کا حساب باقی رہ گیا ہے۔ فہرست
میں کل دو لاکھ بیس ہزار پانچ آتمائیں ہیں۔

سردار — اچھا ہے، آج ہی تمام کارروائی ختم کر دی جائے
[دربان سے] باقی پریتوں کو حاضر کرو۔

[وکیلوں کا پریت اندر آتا ہے اور ادب سے جھک کر
سلام کرتا ہے]

سردار — کہو تمہارا کیا حال ہے؟

وکیلوں کا پریت — [ہنستے ہوئے اور اپنی ہتھیلیوں کو ملتے ہوئے]
مجھے اپنے کام میں پوری سپھلتا ملی ہے۔ جب سے دنیا بنی تب سے مجھے
یاد نہیں کہ کبھی ایسی لوٹ مار مچی ہو۔

سردار — کیوں کیا تم نے ان گنت آدمیوں کو پھنسا لیا ہے؟

وکیلوں کا پریت — تعداد تو کچھ ایسی زیادہ نہیں۔ صرف تیرہ
سو پچاس آدمی ہیں۔ لیکن سب کے سب ایسے عجیب اور نرالے ہیں کہ کیا کہوں۔
وہ ایسے آدمی ہیں کہ ہم پریتوں کو بھی مات کر دیں۔ وہ لوگوں کو ہم سے زیادہ آسانی
کے ساتھ بہکا سکتے ہیں۔ میں نے ان میں ایک نیا ڈھنگ چالو کر دیا ہے۔

सरदार—वह क्या ?

वकीलों का प्रेत—पहले तो वकील मुन्सिफ़ों के समाने हाज़िर रहते थे और वहीं लोगों को धोके देते थे. अब मैंने ऐसा इन्तज़ाम किया है कि वह मुन्सिफ़ों से अलग होकर चौधरी बन कर भी मामला तै कर सकते हैं. जो उन को सब से ज्यादा भेंट देगा उसी का काम वह करेंगे और इस मामले में वह ऐसा जतन करेंगे कि जहाँ कोई मुक़दमा न होगा वहाँ अपने आप एक मुक़दमा उठ खड़ा होगा. वकील और हाकिम जिस तरह लोगों को बहकाते हैं, हम लोग नहीं बहका सकते.

सरदार—बहुत ठीक. मैं उन आदमियों का ख़ुद मुआइना करूंगा. अब तुम जा सकते हो.

[वकीलों का प्रेत दाहिनी तरफ़ चला जाता है]

सरदार—[दरबान से] अब दूसरे प्रेत को भी हाज़िर करो.

[किसानों का प्रेत रोटी का टुकड़ा लिये हुए आता है और ज़मीन पर माथा टेक देता है]

किसानों का प्रेत—मैं अब इस तरह ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता. सरदार मुझे कोई दूसरी सेवा दी जाय.

सरदार—दूसरी सेवा कौन सी ? यह क्या बक रहे हो ? उठो और होश की बातें करो. अपना हिसाब दिखाओ. इस हफ्ते में तुमने कितने किसानों को फँसाया है ?

किसानों का प्रेत—[रो कर] एक भी नहीं, एक भी नहीं.

सरदार—क्या एक भी नहीं ? क्या मतलब है ? अब तक तुम करते क्या थे ? कहां सैर करते रहे ?

سردار — وہ کیا؟

وکیلوں کا پریت — پہلے تو وکیل منصفوں کے سامنے حاضر رہتے تھے اور وہیں لوگوں کو دھوکے دیتے تھے۔ اب میں نے ایسا انتظام کیا ہے کہ وہ منصفوں سے الگ ہوکر چودھری بن کر بھی معاملہ طے کرسکتے ہیں۔ جو اُن کو سب سے زیادہ بھینٹ دیگا اُسی کا کام وہ کریں گے اور اس معاملے میں وہ ایسا جتن کرینگے کہ جہاں کوئی مقدمہ نہ ہوگا وہاں اپنے آپ ایک مقدمہ اُٹھ کھڑا ہوگا۔ وکیل اور حاکم جس طرح لوگوں کو بہکاتے ہیں، ہم لوگ نہیں بہکا سکتے۔

سردار — بہت ٹھیک۔ میں اُن آدمیوں کا خود معائنہ کروں گا۔ اب تم جا سکتے ہو۔

[وکیلوں کا پریت داہنی طرف چلا جاتا ہے]

سردار — [دربان سے] اب دوسرے پریت کو بھی حاضر کرو۔

[کسانوں کا پریت روٹی کا ٹکڑا لئے ہوئے آتا ہے اور زمین پر ماتھا ٹیک دیتا ہے]

کسانوں کا پریت — میں اب اس طرح زندگی نہیں گذار سکتا۔ سردار مجھے کوئی دوسری سیوا دی جائے۔

سردار — دوسری سیوا کون سی؟ یہ کیا بک رہے ہو؟ اُٹھو اور ہوش کی باتیں کرو۔ اپنا حساب دکھاؤ۔ اس ہفتے میں تم نے کتنے کسانوں کو پھنسایا ہے؟

کسانوں کا پریت — [رو کر] ایک بھی نہیں، ایک بھی نہیں۔

سردار — کیا ایک بھی نہیں؟ کیا مطلب ہے؟ اب تک تم کرتے کیا تھے؟

किसानों का प्रेत—[गिड़गिड़ाते हुए] मैं सैर नहीं कर रहा था. मैं इस वक़्त तक अपनी रग रग का जोर लगा कर कोशिश करता रहा. मगर मेरा कुछ बस नहीं चलता. अभी अभी मैंने एक किसान की रोटी का आख़िरी टुकड़ा देखते देखते चुरा लिया और उसको देखिये मुझे कोसने के बदले में कहता है ईश्वर तेरा भला करे.

सरदार—क्या ?...क्या ?.....क्या बड़बड़ा रहे हो ? नाक साफ़ करके ज़रा हवास के साथ बातें करो. तुम्हारी बातें किसी की समझ में नहीं आ रही हैं.

किसानों का प्रेत—अभी एक किसान हल चला रहा था. मैं ख़ूब जानता था कि वह अपने साथ रोटी का सिर्फ़ एक टुकड़ा लाया था..........और उसके सिवा खाने के लिये उसके पास कोई और चीज़ न थी. मैंने वह रोटी का टुकड़ा चुरा लिया. उसको चाहिये था कि शाप दे लेकिन उसने क्या किया ? कहता है "जो कोई रोटी का टुकड़ा ले गया उसी को खाने दो और ईश्वर करे उसका कुछ भला हो जाय ." मैं उस टुकड़े को अपने साथ लेता आया हूँ. देखिये यह है.

सरदार—मगर दूसरे किसानो का क्या हुआ ?

किसानों का प्रेत— सब के सब एक ही तरह के हैं. मैं उनमें से एक को भी बस में नहीं ला सका.

सरदार—तुम ख़ाली हाथ मेरे सामने आने की हिम्मत कैसे कर सके ? और उस पर यह.....यह तुर्रा कि सड़ी हुई रोटी का एक टुकड़ा भी ले आये. क्या मेरे साथ खेल करना चाहते हो ?

کسانوں کا پریت — [گڑگڑاتے ہوئے] میں سیر نہیں کر رہا تھا۔ میں اس وقت تک اپنی رگ رگ کا زور لگا کر کوشش کرتا رہا۔ مگر میرا کچھ بس نہیں چلتا۔ ابھی ابھی میں نے ایک کسان کی روٹی کا آخری ٹکڑا دیکھتے دیکھتے چرا لیا اور اسکو دیکھئے مجھے کوسنے کے بدلے میں کہتا ہے کہ ایشور ترا بھلا کرے۔

سردار — کیا؟ ... کیا؟ ... کیا بڑبڑا رہے ہو؟ ناک صاف کرکے ذرا حواس کے ساتھ باتیں کرو۔ تمھاری باتیں کسی کی سمجھ میں نہیں آ رہی ہیں۔

کسانوں کا پریت — ابھی ایک کسان ہل چلا رہا تھا۔ میں خوب جانتا تھا کہ وہ اپنے ساتھ روٹی کا صرف ایک ٹکڑا لایا تھا . . . . اور اُس کے سوا کھانے کے لئے اُس کے پاس کوئی اور چیز نہ تھی۔ میں نے وہ روٹی کا ٹکڑا چرا لیا۔ اُس کو چاہئے تھا کہ شاپ دے لیکن اُس نے کیا کیا؟ کہتا ہے "جو کوئی روٹی کا ٹکڑا لے گیا اُسی کو کھانے دو اور ایشور کرے اُسکا کچھ بھلا ہو جائے"۔ میں اُس ٹکڑے کو اپنے ساتھ لیتا آیا ہوں۔ دیکھئے یہ ہے۔

سردار — مگر دوسرے کسانوں کا کیا ہوا؟

کسانوں کا پریت — سب کے سب ایک ہی طرح کے ہیں۔ میں اُن میں سے ایک کو بھی بس میں نہیں لا سکا۔

سردار — تم خالی ہاتھ میرے سامنے آنے کی ہمت کیسے کر سکے؟ اور اُس پر یہ .... یہ ترہ کہ سڑی ہوئی روٹی کا ایک ٹکڑا بھی لے آئے۔ کیا میرے ساتھ کھیل کرنا چاہتے ہو؟

क्या तुम्हारा यह मतलब है कि नर्क में रह कर बेकारी की रोटी खाओ? और सब मेहनत करते हैं और पूरी कोशिश करते हैं [प्रेतों की तरफ़ इशारा करके] देखो, इनमें से कोई दस हज़ार कोई बारह हज़ार और कोई बीस हज़ार आत्मायें लेकर आये हुए हैं और तुम ख़ाली हाथ आते हो और एक रोटी का टुकड़ा लाते हो और मन-गढ़न्त बातें सुनाते हो. तुम सिर्फ़ बातें बनाना जानते हो और कोई काम नहीं करते. यही वजह है कि तुम को कोई किसान नहीं मिला. अच्छा सब्र करो, मैं अभी तुमको दो एक सबक़ दूंगा.

किसानों का प्रेत—इससे पहले कि आप मुझको सज़ा दें, जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ उसको सुन लीजिये. दूसरे प्रेतों के काम बहुत आसान हैं. उनको बड़े आदमियों, ब्योपारियों और औरतों से काम पड़ता है. उन सबके रास्ते बहुत आसान हैं. बड़े आदमियों को इज़्ज़त या जागीर का लालच दीजिये और फिर उनको जहाँ चाहिये ले आइये. ब्योपारियों का भी यही हाल है. उनको कुछ नक़द दिखा कर उनका लालच बढ़ा दीजिये फिर नाक पकड़ कर जिस तरफ़ दिल चाहे उनको ले जाइये. औरतों को भी अच्छे अच्छे कपड़े और सजावट की चीज़ें दे दीजिये और उनके साथ जो चाहे सलूक कर लीजिये. मगर किसान के मामले में बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है. वह सुबह से रात तक काम में लगे रहते हैं और ईश्वर का नाम लिये बिना कोई काम शुरू नहीं करते. फिर बताइये कोई उनको कैसे बस में कर सकता है? सरदार! मुझे इस काम से [illegible]

کیا تمھارا یہی مطلب ہے کہ نرک میں رہ کر بیکاری کی روٹی کھاؤ؟ اور سب محنت کرتے ہیں اور پوری کوشش کرتے ہیں [پریتوں کی طرف اشارا کرکے] دیکھو، ان میں سے کوئی دس ہزار کوئی بارہ ہزار اور کوئی بیس ہزار آتمائیں لے کر آئے ہوئے ہیں اور تم خالی ہاتھ آتے ہو اور ایک روٹی کا ٹکڑا لاتے ہو اور من گڑھنت باتیں سناتے ہو۔ تم صرف باتیں بنانا جانتے ہو اور کوئی کام نہیں کرتے۔ یہی وجہ ہے کہ تم کو کوئی کسان نہیں ملا۔ اچھا صبر کرو، میں ابھی تم کو دو ایک سبق دوں گا۔

کسانوں کا پریت — اس سے پہلے کہ آپ مجھ کو سزا دیں، جو کچھ میں کہنا چاہتا ہوں اس کو سن لیجئے۔ دوسرے پریتوں کے کام بہت آسان ہیں۔ ان کو بڑے آدمیوں، بیوپاریوں اور عورتوں سے کام پڑتا ہے۔ ان سب کے راستے بہت آسان ہیں۔ بڑے آدمیوں کو عزت یا جاگیر کا لالچ دیجئے اور پھر ان کو جہاں چاہئے لے جائیے۔ بیوپاریوں کا بھی یہی حال ہے۔ ان کو کچھ نقد دکھا کر ان کا لالچ بڑھا دیجئے پھر ناک پکڑ کر جس طرف دل چاہے ان کو لے جائیے۔ عورتوں کو بھی اچھے اچھے کپڑے اور سجاوٹ کی چیزیں دے دیجئے اور ان کے ساتھ جو چاہے سلوک کر لیجئے۔ مگر کسان کے معاملے میں بڑی مشکلوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ وہ صبح سے رات تک کام میں لگے رہتے ہیں اور ایشور کا نام لئے بنا کوئی کام [illegible] بتائیے کوئی ان کو کیسے بس میں

किसानों से तंग आ गया हूँ और इस मामले में आपको ख़ुश भी नहीं रख सका.

सरदार—यह सब बकवास है. तुम काहिल हो. बेकार दूसरों की बातें मत करो. उन्होंने बड़े आदमियों, व्योपारियों और औरतों को फँसाया है सिर्फ़ इस लिये कि वह जानते थे कि ऐसे लोगों के साथ कौन तदबीर काम में लाई जाये. वह इनके लिये नये नये जाल तैयार करते थे. वकीलों के प्रेत को देखो, उसने बिलकुल एक निराली तदबीर निकाली है. तुमको भी कोई सूरत निकालनी चाहिये. तुमने रोटी का एक टुकड़ा चुरा लिया और उस पर इतराते हो, क्या अनोखा काम किया है. उनके चारों तरफ़ जाल फैलाओ. फिर कोई न कोई किसान आ ही फँसेगा. लेकिन बेकार इधर उधर समय बरबाद करने से और उनको आज़ाद छोड़ देने से तुम्हारे किसान ज़ोर पकड़ते जाते हैं. उनको अपनी रोटी के आख़िरी टुकड़े की भी परवाह नहीं रही. अगर उनका यही हाल रहा और अगर उन्होंने अपनी औरतों को भी यही सिखा दिया तो वह हमारे हाथ से बहुत जल्द बाहर चले जायेंगे. कोई तरकीब सोचो और जिस तरह हो सके अपने को इस मुश्किल से जल्द निकालो.

किसानों का प्रेत—समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ? मुझे छुट्टी दीजिये. यह काम मेरे बस का नहीं.

सरदार—[ग़ुस्से में आग होकर] यह काम तुम्हारे बस का नहीं है ? क्या तुम्हारा काम अब मैं करूँ ?

किसानों का प्रेत—मैं कुछ नहीं कर सकता.

सरदार—कुछ नहीं कर सकते ? अच्छा ज़रा ठहरो. कोई है ?

کسانوں سے تنگ آگیا ہوں اور اس معاملے میں آپکو خوش بھی نہیں رکھ سکا۔

سردار — یہ سب بکواس ہے۔ تم کاہل ہو۔ بیکار دوسروں کی باتیں مت کرو۔ انھوں نے بڑے آدمیوں، بیوپاریوں اور عورتوں کو پھنسایا ہے صرف اس لئے کہ وہ جانتے تھے کہ ایسے لوگوں کے ساتھ کون تدبیر کام میں لائی جائے۔ وہ ان کے لئے نئے نئے جال تیار کرتے تھے۔ وکیلوں کے پریت کو دیکھو، اس نے بالکل ایک نرالی تدبیر نکالی ہے۔ تم کو بھی کوئی صورت نکالنی چاہئے۔ تم نے روٹی کا ایک ٹکڑا چرالیا اور اس پر اتراتے ہو، کیا انوکھا کام کیا ہے۔ ان کے چاروں طرف جال پھیلاؤ۔ پھر کوئی نہ کوئی کسان آہی پھنسے گا۔ لیکن بیکار ادھر ادھر سے برباد کرنے سے اور انکو آزاد چھوڑ دینے سے تمھارے کسان زور پکڑتے جاتے ہیں۔ انکو اپنی روٹی کے آخری ٹکڑے کی بھی پرواہ نہیں رہی۔ اگر ان کا یہی حال رہا اور اگر انھوں نے اپنی عورتوں کو بھی یہی سکھا دیا تو وہ ہمارے ہاتھ سے بہت جلد باہر چلے جائیں گے۔ کوئی ترکیب سوچو اور جس طرح ہو سکے اپنے کو اس مشکل سے جلد نکالو۔

کسانوں کا پریت — سمجھ میں نہیں آتا کہ کیا کروں؟ مجھے چھٹی دیجئے۔ یہ کام میرے بس کا نہیں۔

سردار — [غصے میں آگ ہوکر] یہ کام تمھارے بس کا نہیں ہے؟ کیا تمھارا کام اب میں کروں؟

کسانوں کا پریت — میں کچھ نہیں کرسکتا۔

سردار — کچھ نہیں کرسکتے؟ اچھا ذرا ٹھہرو۔ کوئی ہے؟

कोड़े लाओ और इसको मारो. [सेवक प्रेत को पकड़ कर कोड़े मारते हैं.]

किसानों का प्रेत—हाय ! हाय !! हाय !!!

सरदार—बोलो कोई तदबीर सूझी ?

किसानों का प्रेत—हाय ! हाय ! मुझसे नहीं हो सकता.

सरदार—और कोड़े लगाओ (कोड़े लगाये जाते हैं) अब कुछ सोचा ?

किसानों का प्रेत—हाँ ! हाँ ! सोचा !

सरदार—बताओ क्या सोचा ?

किसानों का प्रेत—मैंने एक तदबीर निकाली है जिससे सब किसान मुट्ठी में आ जायेंगे. आप मुझे इस किसान के यहाँ मजदूरी करने की इजाज़त दीजिये. लेकिन मैं अभी आप को पूरी तदबीर नहीं बताऊंगा.

सरदार—बिलकुल ठीक. लेकिन याद रक्खो अगर तीन साल के अन्दर यह सड़ी रोटी लाने का प्रायश्चित न किया तो मैं ज़िन्दा तुम्हारी खाल खिंचवा लूंगा.

किसानों का प्रेत—तीन साल में वह सब मेरे ग़ुलाम हो जायेंगे.

सरदार—अच्छा तीन साल बीतने पर मैं ख़ुद आकर मुआइना करूँगा.

तीसरा सीन

[एक खलियान—गल्ले से ...

کوڑے لاؤ اور اسکو مارو۔ [سیوک پریت کو پکڑ کر کوڑے مارتے ہیں۔]

کسانوں کا پریت — ہائے ! ہائے !! ہائے !!!

سردار — بولو کوئی تدبیر سوجھی ؟

کسانوں کا پریت — ہائے ! ہائے ! مجھ سے نہیں ہو سکتا۔

سردار — اور کوڑے لگاؤ (کوڑے لگائے جاتے ہیں) اب کچھ سوچا ؟

کسانوں کا پریت — ہاں ! ہاں ! سوچا !

سردار — بتاؤ کیا سوچا ؟

کسانوں کا پریت — میں نے ایک تدبیر نکالی ہے جس سے سب کسان مٹھی میں آ جائیں گے۔ آپ مجھے اس کسان کے یہاں مزدوری کرنے کی اجازت دیجئے۔ لیکن میں ابھی آپ کو پوری تدبیر نہیں بتاؤں گا۔

سردار — بالکل ٹھیک۔ لیکن یاد رکھو اگر تین سال کے اندر یہ سڑی روٹی لانے کا پرائشچت نہ کیا تو میں زندہ تمہاری کھال کھنچواؤں گا۔

کسانوں کا پریت — تین سال میں وہ سب میرے غلام ہو جائینگے۔

سردار — اچھا تین سال بیتنے پر میں خود آ کر معائنہ کرونگا۔

تیسرا سین

भेस में गाड़ियों से ग़ल्ला उतार रहा है और किसान तौल तौल कर ले जाता है.]

मज़दूर—सात !

किसान—कितने मन हुये ?

मज़दूर—[दीवार पर जो निशान लगे हुये हैं उन को गिनता है] २६ मन और ये ७ सेर.

किसान—सब एक ही जगह नहीं रक्खा जा सकता है जगह बिलकुल भर गई है.

मज़दूर—अनाज को अच्छी तरह फैला दो.

किसान—हाँ अब यही करूँगा.

[अनाज नापने वाली सेई लिये हुए जाता है]

मज़दूर—[अकेले में टोपी उतार देता है. उसकी सीगें कुछ कुछ दिखाई देने लगती हैं] अब वह देर में आयेगा. मैं ज़रा अपनी सींगों को हवा दे लूं [सींगें अच्छी तरह दिखाई देने लगती हैं.] और लाओ जूते भी उतार दूँ. उसके सामने यह सब नहीं कर सकता. [जूते उतार देता है. उसके सुम दिखाई देते हैं. वह ज़मीन पर बैठ जाता है.] तीसरा बरस जा रहा है. मुआइने का वक़्त क़रीब है. अब अनाज इतना हो गया है कि रखने की जगह नहीं मिलती. अब किसान को सिर्फ़ एक बात सिखानी रह गई है और फिर सरदार आकर मुआइना कर सकता है. उस वक़्त मेरा काम देखने के लायक़ होगा. और रोटी के टुकड़े वाली ग़लती माफ़ हो जायेगी.

[पड़ोसी आता दिखाई देता है. मज़दूर अपने सींग और सुम

بھیس میں گاڑیوں سے غلّہ اُتار رہا ہے اور کسان تول تول کر لیجاتا ہے۔]

مزدور — سات !

کسان — کتنے من ہوئے ؟

مزدور — [دیوار پر جو نشان لگے ہوئے ہیں اُن کو گنتا ہے۔] ۲۶ من اور یہ سات سیر۔

کسان — سب ایک ہی جگہ نہیں رکھا جا سکتا ہے جگہ بالکل بھر گئی ہے۔

مزدور — اناج کو اچھی طرح پھیلا دو۔

کسان — ہاں اب یہی کروں گا۔

[اناج ناپنے والی سیئی لئے ہوئے جاتا ہے]

مزدور — [اکیلے میں ٹوپی اُتار دیتا ہے۔ اُس کی سینگیں کچھ کچھ دکھائی دینے لگتی ہیں] اب وہ دیر میں آئے گا۔ میں ذرا اپنی سینگوں کو ہوا دے لوں [سینگیں اچھی طرح دکھائی دینے لگتی ہیں] اور لاؤ جوتے بھی اُتار دوں۔ اُس کے سامنے یہ سب نہیں کر سکتا۔ [جوتے اُتار دیتا ہے۔ اُس کے سم دکھائی دیتے ہیں۔ وہ زمین پر بیٹھ جاتا ہے۔] تیسرا برس جا رہا ہے۔ معائنہ کا وقت قریب ہے۔ اب اناج اتنا ہو گیا ہے کہ رکھنے کی جگہ نہیں ملتی۔ اب کسان کو صرف ایک بات سکھانی رہ گئی ہے اور پھر سردار آ کر معائنہ کر سکتا ہے۔ اُس وقت میرا کام دیکھنے کے لائق ہوگا۔ اور روٹی کے ٹکڑے والی غلطی معاف ہو جائے گی۔

[پڑوسی آتا دکھائی دیتا ہے۔ مزدور اپنی سینگ اور سم

छिपा लेता है.]

पड़ोसी—सलाम.

मजदूर—सलाम.

पड़ोसी—तुम्हारा मालिक कहाँ गया ?

मजदूर—अनाज फैलाने गया है इसलिये कि काफी जगह नहीं है.

पड़ोसी—या परमेश्वर ! तुम्हारे मालिक का नसीब भी कैसा चमका है ! अब अनाज रखने की भी जगह नहीं मिलती. दो साल से तुम्हारे मालिक की फसलें जैसी हो रही हैं उन को देख कर हम लोग दंग हैं. जैसे उसको किसी ने गुप्त मन्त्र सिखा दिया हो. पिछले साल सूखा पड़ा था और उसने दलदल में बीज बोये थे. दूसरों की फसलें गारत हो गईं मगर तुम्हारे खलियान में बालियों का ढेर लगा हुआ था. इस साल मूसलाधार बारिश हुई. उसने फ़ौरन पहाड़ी पर खेत बना कर बीज बोये. हम लोगों के खेत सड़ गये लेकिन उसने कैसी बढ़िया फसल तैयार की. देखो दाने कितने बड़े-बड़े हैं ! [कुछ दाने हाथ में लेकर तौलता है और फिर उनको चबाता है]

किसान—[खाली सेंई लिए हुये आत है.] कहो पड़ोसी कैसे हो ?

पड़ोसी—सलाम. मैं अभी तुम्हारे मजदूर से कह रहा था कि तुम को खूब मालूम रहता है कि बीज कहाँ बोया जाय. हर आदमी तुम से ईर्षा (रश्क)करता है. अनाज के कैसे ढेर लगे हुये हैं. तुम [illegible]

چھپا لیتا ہے.]

پڑوسی ـ سلام.

مزدور ـ سلام.

پڑوسی ـ تمہارا مالک کہاں گیا؟

مزدور ـ اناج پھیلانے گیا ہے اس لئے کہ کافی جگہ نہیں ہے.

پڑوسی ـ یا پرمیشور! تمہارے مالک کا نصیب بھی کیسا چمکا ہے! اب اناج رکھنے کی بھی جگہ نہیں ملتی. دو سال سے تمہارے مالک کی فصلیں جیسی ہو رہی ہیں ان کو دیکھ کر ہم لوگ دنگ ہیں. جیسے اس کو کسی نے گپت منتر سکھا دیا ہو. پچھلے سال سوکھا پڑا تھا اور اس نے دلدل میں بیج بوئے تھے. دوسروں کی فصلیں غارت ہو گئیں مگر تمہارے کھلیان میں بالیوں کا ڈھیر لگا ہوا تھا. اس سال موسلا دھار بارش ہوئی. اس نے فوراً پہاڑی پر کھیت بنا کر بیج بوئے. ہم لوگوں کے کھیت سڑ گئے لیکن اس نے کیسی بڑھیا فصل تیار کی. دیکھو دانے کتنے بڑے بڑے ہیں! [کچھ دانے ہاتھ میں لے کر تولتا ہے اور پھر انکو چباتا ہے]

کسان ـ [خالی سینی لئے ہوئے آتا ہے] کہو پڑوسی کیسے ہو؟

پڑوسی ـ سلام. میں ابھی تمہارے مزدور سے کہہ رہا تھا کہ تم کو خوب معلوم رہتا ہے کہ بیج کہاں بویا جائے. ہر آدمی تم سے ایرشا (رشک) کرتا ہے. اناج کے کیسے ڈھیر لگے ہوئے ہیں. تم اس

किसान—यह निकोलस की बदौलत है. [मजदूर की तरफ इशारा करता है] यह इसी की क़िस्मत है. पारसाल मैंने इस को खेत बोने के लिये भेजा तो इस ने दलदल में बो दिया. मैंने इसको बहुत बुरा भला कहा मगर यह मेरे पीछे पड़ गया और वहीं बोने पर मजबूर किया. मैंने ऐसा ही किया और उस में मेरा ही फायदा हुआ. इस साल भी इसने अन्दाजा लगा कर पहाड़ी पर बो दिया.

पड़ोसी—गोया इस को आने वाले मौसम का हाल मालूम रहता है. हाँ तुम्हारे पास अनाज बहुत काफ़ी हो गया है [कुछ देर तक सब चुप रहते हैं] मैं तुम से एक बोरा राई उधार मांगने आया हूँ. मेरी राई खतम हो गई. अगले साल वापस कर दूँगा.

किसान—शौक़ से ले सकते हो.

मजदूर—[किसान की बांह दबाते हुये] मत दो.

किसान—बस ज्यादा न बको [पड़ोसी से] हाँ तुम ले सकते हो.

पड़ोसी—धन्यवाद. मैं जाकर बोरा लेता आऊं.

मजदूर—[जरा किनारे हट कर] यह अपनी पुरानी चाल नहीं छोड़ता. इसी तरह दान धर्म किया करता है. मेरा कहना नहीं मानता. अच्छा ठहरो यह अभी अपनी दान वीरता छोड़ देगा.

[पड़ोसी चला जाता है.]

किसान—[बैठ कर] नेक लोगों को क्यों न चीजें दी जायँ ?

کسان — یہ نکوس کی بدولت ہے [مزدور کی طرف اشارا کرتا ہے] یہ اسی کی قسمت ہے. پار سال میں نے اس کو کھیت بونے کے لئے بھیجا تو اس نے دلدل میں بو دیا. میں نے اس کو بہت بُرا بھلا کہا مگر یہ میرے پیچھے پڑ گیا اور وہیں بونے پر مجبور کیا. میں نے ایسا ہی کیا اور اس میں میرا ہی فائدہ ہوا. اس سال بھی اس نے اندازہ لگا کر پہاڑی پر بو دیا.

پڑوسی — گویا اس کو آنے والے موسم کا حال معلوم رہتا ہے. ہاں تمہارے پاس اناج بہت کافی ہو گیا ہے [کچھ دیر تک سب چپ رہتے ہیں] میں تم سے ایک بورا رائی اُدھار مانگنے آیا ہوں. میری رائی ختم ہو گئی. اگلے سال واپس کر دوں گا.

کسان — شوق سے لے سکتے ہو.

مزدور — [کسان کی بانہہ دباتے ہوئے] مت دو.

کسان — بس زیادہ نہ بکو [پڑوسی سے] ہاں تم لے سکتے ہو.

پڑوسی — دھنیہ باد. میں جاکر بورا لیتا آؤں.

مزدور — [ذرا کنارے ہٹ کر] یہ اپنی پُرانی چال نہیں چھوڑتا. اسی طرح دان دھرم کیا کرتا ہے. میرا کہنا نہیں مانتا. اچھا ٹھہرو یہ ابھی اپنی دان ویرتا چھوڑ دے گا.

[پڑوسی چلا جاتا ہے.]

کسان — [بیٹھ کر] نیک لوگوں کو کیوں نہ چیزیں دی جائیں؟

मजदूर—दे देना आसान है. वापस पाना मुश्किल है. तुम जानते हो क़र्ज़ देना ऐसा ही है जैसे किसी चीज को पहाड़ी पर से नीचे ढकेलना. क़र्ज़ को वसूल करना गोया उस चीज को फिर पहाड़ी के ऊपर चढ़ाना है. पुरखो पुरनियो का यही कहना है.

किसान—कुछ परवाह नहीं. हमारे पास बहुत अनाज है.

मजदूर—इससे क्या होता है ?

किसान—हमारे पास इतना अनाज है कि न सिर्फ अगली फ़सल तक बल्कि दो बरस आगे तक घट नहीं सकता. हम इतना रख कर क्या करेंगे ?

मजदूर—मै बताऊँ क्या करो. मै इस अनाज से ऐसी चीज बना सकता हूँ जो जन्म भर तुमको ख़ुश रख सकती है.

किसान—कौन सी ऐसी चीज़ बनाओगे ?

मजदूर—एक तरह का शर्बत. ऐसा शर्बत जो कमज़ोर को ताक़तवर बना सकता है, बेचैनी के वक्त नींद ला सकता हैं, उदासी मे मन खिला सकता है, और डर की हालत में हिम्मत दिला सकता है. मैं ऐसा शर्बत तैयार करने वाला हूँ,

किसान—झूट !

मजदूर—बेशक झूट ! जब मैंने तुमसे दलदल में और पहाड़ी पर बोने के लिये कहा था, उस वक्त भी झूट ही था . तुम उस वक्त यक़ीन नहीं करते थे. मगर अब तुमको मालूम हो गया. इसी तरह तुमको शर्बत का हाल भी मालूम हो जायगा.

किसान—लेकिन आखिर तुम किस चीज़ से उसको बनाओगे ?

मजदूर—इन्हीं दोनों से.

مزدور — دے دینا آسان ہے۔ واپس پانا مشکل ہے۔ تم جانتے ہو قرض دینا ایسا ہی ہے جیسے کسی چیز کو پہاڑی پر سے نیچے ڈھکیلنا۔ قرض کو وصول کرنا گویا اس چیز کو پھر پہاڑی کے اوپر چڑھانا ہے۔ پرکھوں پرنیوں کا یہی کہنا ہے۔

کسان — کچھ پرواہ نہیں۔ ہمارے پاس بہت اناج ہے۔

مزدور — اس سے کیا ہوتا ہے؟

کسان — ہمارے پاس اتنا اناج ہے کہ نہ صرف اگلی فصل تک بلکہ دو برس آگے تک گھٹ نہیں سکتا۔ ہم اتنا رکھ کر کیا کریں گے؟

مزدور — میں بتاؤں کیا کرو۔ میں اس اناج سے ایسی چیز بنا سکتا ہوں جو جنم بھر تمکو خوش رکھ سکتی ہے۔

کسان — کون سی ایسی چیز بناؤ گے؟

مزدور — ایک طرح کا شربت۔ ایسا شربت جو کمزور کو طاقتور بنا سکتا ہے، بےچینی کے وقت نیند لا سکتا ہے، اداسی میں من کھلا سکتا ہے، اور ڈر کی حالت میں ہمت دلا سکتا ہے۔ میں ایسا شربت تیار کرنے والا ہوں،

کسان — جھوٹ!

مزدور — بیشک جھوٹ! جب میں نے تم سے دلدل میں اور پہاڑی پر بونے کے لئے کہا تھا، اس وقت بھی جھوٹ ہی تھا۔ تم اس وقت یقین نہیں کرتے تھے۔ مگر اب تم کو معلوم ہو گیا۔ اسی طرح تم کو شربت کا حال بھی معلوم ہو جائے گا۔

کسان — لیکن آخر تم کس چیز سے اس کو بناؤ گے؟

مزدور — انھیں دونوں سے۔

किसान—लेकिन क्या यह पाप न होगा ?

मजदूर—और सुनिये, पाप क्यों होगा ? आदमी को जो कुछ मिला है वह सुख भोगने के लिये ही मिला है.

किसान—क्यों निक, तुमको इतनी समझ कहाँ से आई ? देखने में तो तुम बहुत मामूली आदमी मालूम होते हो और बड़ी मेहनत भी करते हो. दो बरस से मैंने तुमको अपने जूते उतारते भी नहीं देखा है. उस पर भी तुमको बहुत कुछ ज्ञान है. आखिर यह सब कहाँ से सीखा ?

मजदूर—मैंने दुनिया बहुत देखी है.

किसान—तो तुम कहते हो कि इस शर्बत से हमारे शरीर में बल आयेगा ?

मजदूर—.खुद तजरबा करके देख लो कि इससे क्या फायदा होता है.

किसान—फिर इसको कैसे बनाया जाय ?

मजदूर—जब तुम एक बार बनाना जान जाओगे तो कोई मुश्किल नहीं होगी. हमको इस वक़्त सिर्फ एक तांबे के टुकड़े और दो लोहे के बर्तनों की जरूरत होगी.

किसान—मजे मे यह चीज़ कैसी होगी ?

मजदूर—शहद की तरह मीठी. जब एक बार चख लोगे तो फिर इसको छोड़ नहीं सकोगे.

किसान—सच कहते हो ? अच्छा तो मैं अपने पड़ोसीके पास जाताहूँ. उसके पास तांबे का एक टुकड़ा था. आओ देखें क्या होता है.

کسان — لیکن کیا یہ پاپ نہ ہوگا؟

مزدور — اور سنئے، پاپ کیوں ہوگا؟ آدمی کو جو کچھ ملا ہے وہ سکھ بھوگنے کے لئے ہی ملا ہے۔

کسان — کیوں نک، تم کو اتنی سمجھ کہاں سے آئی؟ دیکھنے میں تو تم بہت معمولی آدمی معلوم ہوتے ہو اور بڑی محنت بھی کرتے ہو۔ دو برس سے میں نے تم کو اپنے جوتے اُتارتے بھی نہیں دیکھا ہے۔ اُس پر بھی تم کو بہت کچھ گیان ہے۔ آخر یہ سب کہاں سے سیکھا؟

مزدور — میں نے دنیا بہت دیکھی ہے۔

کسان — تو تم کہتے ہو کہ اس شربت سے ہمارے شریر میں بل آئیگا؟

مزدور — خود تجربہ کرکے دیکھ لو کہ اس سے کیا فائدہ ہوتا ہے۔

کسان — پھر اسکو کیسے بنایا جائے؟

مزدور — جب تم ایک بار بنانا جان جاؤگے تو کوئی مشکل نہیں ہوگی۔ ہم کو اس وقت صرف ایک تانبے کے ٹکڑے اور دو لوہے کے برتنوں کی ضرورت ہوگی۔

کسان — مزے میں یہ چیز کیسی ہوگی؟

مزدور — شہد کی طرح میٹھی۔ جب ایک بار چکھ لوگے تو پھر اسکو چھوڑ نہیں سکوگے۔

کسان — سچ کہتے ہو؟ اچھا تو میں اپنے پڑوسی کے پاس جاتا ہوں۔ اُس کے پاس تانبے کا ٹکڑا تھا۔ آؤ دیکھیں کیا ہوتا ہے۔

चौथा सीन

[खलियान—एक बर्तन आग पर रक्खा हुआ है. इससे मिला हुआ एक दूसरा बर्तन है. जिसके नीचे एक नलकी लगी हुई है.]

मज़दूर—[एक कुल्हड़ नलकी के नीचे लगाता है और चखता है.] लो अब तैयार हो गया.

किसान—[एड़ियो पर बैठकर सोचते हुए] कैसी अनोखी चीज़ है. इसमें से पानी निकल रहा है. इस पानी को पहले क्यों निकाल रहे हो ?

मज़दूर—यह पानी नहीं है, यही तो असल चीज़ है !

किसान—यह इतना साफ़ क्यों है ? मैं तो समझता था कि अनाज की तरह पीला होगा मगर यह तो बिलकुल पानी के रंग का है.

मज़दूर—ज़रा इसको सूंघो.

किसान—अजीब महक है. मगर लाओ जीभ पर रख कर देखू. [मज़दूर के हाथों से कुल्हड़ लेने की कोशिश करता है.]

मज़दूर—देखो छलका न देना [नलकी बन्द कर देता है और अपने होंठ चाटता है.] हाँ अब बिलकुल तैयार है. लो पियो.

किसान—[पहले थोड़ा थोड़ा करके पीता है फिर कुल्हड़ खाली करके वापस देता है.] थोड़ा सा और दो. इतना कम पीकर कोई ठीक राय नहीं दे सकता.

मज़दूर—[ठट्ठा मार कर] मालूम होता है यह चीज़ तुम्हें भा गई.

किसान—[पी जाता है.] अब समझा की क्या चीज़ है.

چوتھا سین

[کھلیان — ایک برتن آگ پر رکھا ہوا ہے۔ اس سے ملا ہوا ایک دوسرا برتن ہے۔ جس کے نیچے ایک نلکی لگی ہوئی ہے۔]

مزدور — [ایک کلہڑ نلکی کے نیچے لگاتا ہے اور چکھتا ہے۔] لو اب تیار ہو گیا۔

کسان — [ایڑیوں پر بیٹھ کر سوچتے ہوئے] کیسی انوکھی چیز ہے۔ اس میں سے پانی نکل رہا ہے۔ اس پانی کو پہلے کیوں نکال رہے ہو؟

مزدور — یہ پانی نہیں ہے یہی تو اصل چیز ہے!

کسان — یہ اتنی صاف کیوں ہے؟ میں تو سمجھتا تھا کہ اناج کی طرح پیلا ہوگا مگر یہ تو بالکل پانی کے رنگ کا ہے۔

مزدور — ذرا اس کو سونگھو۔

کسان — عجیب مہک ہے۔ مگر لاؤ جیبھ پر رکھ کر دیکھوں [مزدور کے ہاتھوں سے کلہڑ لینے کی کوشش کرتا ہے۔]

مزدور — دیکھو چھلکا نہ دینا [نلکی بند کر دیتا ہے اور اپنے ہونٹ چاٹتا ہے] ہاں اب بالکل تیار ہے۔ لو پیو۔

کسان [پہلے تھوڑا تھوڑا کرکے پیتا ہے پھر کلہڑ خالی کرکے واپس دیتا ہے] تھوڑا سا اور دو۔ اتنا کم پی کر کوئی ٹھیک رائے نہیں دے سکتا۔

مزدور — [ٹھٹھا مار کر] معلوم ہوتا ہے یہ چیز تمھیں بھا گئی۔

[illegible]

घरवाली को भी आवाज दो. माथी ! यहाँ आओ. देखो तैयार हो गई.

[पत्नी छोटी लड़की के साथ आती है.]

पत्नी—मामला क्या है ? यह शोर क्यों मचा रक्खा है ?

किसान—जरा इसको चख कर देखो तो. हम लोग यह अरक़ खींच रहे थे. जरा सूंघो [कुल्हड़ उसके हाथ में देता है.] कैसी महक है ?

पत्नी—ओ हो.

किसान—पिओ.

पत्नी—लेकिन मुमकिन है इस से कुछ नुक़सान हो.

किसान—पी भी पगली !

पत्नी—सच, यह तो बड़ी मजेदार है.

किसान—[कुछ नशे में आकर] जरा सब्र करो. फिर देखना क्या होता है. निक कहता है कि यह चीज आदमी की हड्डियों से थकावट दूर कर देती है. जवान उसको पी कर बुड्ढे हो जाते है.........नहीं नहीं........छि; बुड्ढे इस से जवान हो जाते हैं. मुझी को देखो, मैंने सिर्फ़ दो ही कुल्हड़ पिये हैं और मेरी हड्डियों को अभी से आराम होने लगा. [लड़खड़ाता है] तुम खुद बताओ. अभी क्या है, जब हम इस को रोजाना पीते रहेंगे तो फिर जवान हो जायेंगे ? इधर आओ माथी ! [उसको लिपटाना चाहता है]

पत्नी—हटो तुमको इस ने पागल बना दिया है.

किसान—तुम ने कहा था कि मैं और निक अनाज को बरबाद कर रहे हैं. देखती हो कैसी चीज तैयार की है- वाह कितनी मजेदार

گھروالی کو بھی آواز دو۔ ماتھی! یہاں آؤ۔ تیار ہوگئی۔ دیکھو

[پتنی چھوٹی لڑکی کے ساتھ آتی ہے۔]

پتنی — معاملہ کیا ہے؟ یہ شور کیوں مچا رکھا ہے؟

کسان — ذرا اسکو چکھ کر دیکھو تو۔ ہم لوگ یہ عرق کھینچ رہے تھے۔ ذرا سونگھو [کلہڑ اسکے ہاتھ میں دیتا ہے] کیسی مہک ہے؟

پتنی — او ہو۔

کسان — پیو۔

پتنی — لیکن ممکن ہے اس سے کچھ نقصان ہو۔

کسان — پی بھی پگلی!

پتنی — سچ، یہ تو بڑی مزیدار ہے۔

کسان — [کچھ نشے میں آکر] ذرا صبر کرو۔ پھر دیکھنا کیا ہوتا ہے۔ نک کہتا ہے کہ یہ چیز آدمی کی ہڈیوں سے تھکاوٹ دور کر دیتی ہے۔ جوان اسکو پی کر بڈھے ہو جاتے ہیں۔۔۔۔ نہیں نہیں۔۔۔۔ چھی۔ بڈھے اس سے جوان ہو جاتے ہیں۔ مجھی کو دیکھو، میں نے صرف دو ہی کلہڑ پیئے ہیں اور میری ہڈیوں کو ابھی سے آرام ہونے لگا۔ [لڑکھڑاتا ہے] تم خود بتاؤ۔ ابھی کیا ہے، جب ہم اس کو روزانہ پیتے رہیں گے تو پھر جوان ہو جائیں گے؟ ادھر آؤ ماتھی! [اسکو لپٹانا چاہتا ہے]

پتنی — ہٹو تم کو اس نے پاگل بنا دیا ہے۔

کسان — تم نے کہا تھا کہ میں اور نک اناج کو برباد کر رہے ہیں۔ دیکھتی ہو کیسی چیز تیار کی ہے۔ واہ کتنی مزیدار

है. है कि नहीं।?

पत्नी—बेशक बड़ी अच्छी चीज है और बुड्ढों को जवान कर देती है. देखो तुम कैसे खिले हुए लग रहे हो. मुझे भी ऐसा जान पड़ता है कि खिल रही हूँ. अच्छा आओ मेरा साथ दो. वाह वाह ! [गाती है]

किसान—हाँ, अब ठीक है हम सब फिर जवान हो जायेंगे.

पत्नी—सास को भी बुलाना चाहिये. क्योंकि वह उदास रहती है और दिन भर बड़बड़ाया करती है. उस को फिर ताक़त की ज़रूरत है. जब वह जवान हो जायगी तो उसका चिड़चिड़ापन कम हो जयगा.

किसान—[बेचैन हो कर] हाँ, माँ को बुलाओ और दादा को भी. जाओ मरियम ! दादी और दादा को बुला लाओ. उन से कहो कि चुल्हा छोड़ कर यहाँ आयें. हम उन को फिर से नौजवान बना देंगे—जल्द जाओ एक—दो—तीन, बस तीर की तरह जाओ. [किसान की लड़की दौड़ कर जाती है. पत्नी से] एक कुल्हड़ और [मजदूर कुल्हड़ भर भर कर देता है]

किसान—[पीता है] पहले तो जीभ जवान हुई थी, उसके बाद बाहों में असर हुआ, अब पाँव तक असर पहुँच गया है. ऐसा मालूम होता है कि मेरे पाँव जवान हो रहे हैं. इन में आप ही आप फुर्ती आगई. [नाचने लगता है.]

पत्नी—[कुल्हड़ खाली करके] निक, बेशक तुम बड़े होशियार हो. अच्छा अब बजाना शुरू करो.

[मजदूर सितार उठा कर बजाने लगता है ...

ہے۔ ہے کہ نہیں؟

پتنی — بیشک بڑی اچھی چیز ہے اور بڈھوں کو جوان کردیتی ہے۔ دیکھو تم کیسے کھلے ہوئے لگ رہے ہو۔ مجھے بھی ایسا جان پڑتا ہے کہ کھل رہی ہوں۔ اچھا آؤ میرا ساتھ دو۔ واہ! واہ! [گاتی ہے]

کسان — ہاں اب ٹھیک ہے ہم سب پھر جوان ہو جائیں گے۔

پتنی — ساس کو بھی بلانا چاہئے۔ کیونکہ وہ اداس رہتی ہے اور دن بھر بڑبڑایا کرتی ہے۔ اس کو پھر طاقت کی ضرورت ہے۔ جب وہ جوان ہو جائے گی تو اس کا چڑچڑاپن کم ہو جائے گا۔

کسان — [بےچین ہوکر] ہاں، ماں کو بلاؤ اور دادا کو بھی۔ جاؤ مریم! دادی اور دادا کو بلا لاؤ۔ ان سے کہو کہ چولھا چھوڑ کر یہاں آئیں۔ ہم ان کو پھر سے نوجوان بنا دیں گے — جلد جاؤ ایک — دو — تین، بس تیر کی طرح جاؤ۔ [کسان کی لڑکی دوڑ کر جاتی ہے۔ پتنی سے] ایک کلہڑ اور [مزدور کلہڑ بھر بھر کر دیتا ہے]

کسان — [پیتا ہے] پہلے تو جیبھ جوان ہوئی تھی، اس کے بعد باہوں میں اثر ہوا، اب پاؤں تک اثر پہنچ گیا ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ میرے پاؤں جوان ہو رہے ہیں۔ ان میں آپ ہی آپ پھرتی آگئی [ناچنے لگتا ہے]

پتنی — [کلہڑ خالی کرکے] نک، بیشک تم بڑے ہوشیار ہو۔ اچھا اب بجانا شروع کرو۔

... کسان اور اسکی

पत्नी नाचते हैं]

मज़दूर—[सामने सितार बजाता है और उन को देख देख कर आँखों से इशारा करता है. फिर वह बजाना बन्द कर देता है मगर वह दोनों नाचते रहते हैं.] अब उस रोटी के टुकड़े का बदला तुम से लूँगा मेरे दोस्त ! तुम अब उसका बदला दे चुके. अब यह लोग कभी इस बला से निकल नहीं सकते. सरदार का जब जी चाहे आकर देख ले और एतमीनान कर ले.

[एक बुड्ढी औरत और एक सफ़ेद बालों वाला मर्द, जो किसान का दादा है, अन्दर आते हैं]

दादा—यह क्या हो रहा है ? पागल तो नहीं हो गये हो ? सब काम में लगे हुए हैं और तुम नाच रहे हो ?

पत्नी—[नाचती है और तालियाँ बजाती है] वाह ! वाह ! [गाती है] मैं मानती हूँ कि यह पाप है लेकिन पाप से सिर्फ़ परमात्मा बचा है.

बुड्ढी औरत—अभागी ! चुल्हा साफ़ नहीं हुआ है और तुम लोग नाच रहे हो ?

किसान—देखो माँ, यहाँ क्या हो रहा है. हम बुड्ढों को जवान बना सकते हैं. यह लो ज़रा इसको पियो. [कुल्हड़ देता है]

बुड्ढी औरत—कुएँ में बहुत काफ़ी पानी है [उसको सूँघकर] मगर तुमने इस मे क्या डाल दिया है ? अजीब महक है.

किसान—इसको पियो तो.

बुड्ढी औरत—[चखती है] लेकिन कहीं इससे कोई मर न

پتنی ناچتے ہیں]

مزدور—[سامنے ستار بجاتا ہے اور ان کو دیکھ دیکھ کر آنکھوں سے اشارہ کرتا ہے۔ پھر وہ بجانا بند کر دیتا ہے مگر وہ دونوں ناچتے رہتے ہیں] اب اس روٹی کے ٹکڑے کا بدلا تم سے لوں گا میرے دوست! تم اب اس کا بدلہ دے چکے۔ اب یہ لوگ کبھی اس بلا سے نکل نہیں سکتے۔ سردار کا جب جی چاہے آکر دیکھ لے اور اطمینان کرے۔

[ایک بڈھی عورت اور ایک سفید بالوں والے مرد، جو کسان کا دادا ہے، اندر آتے ہیں]

دادا—یہ کیا ہو رہا ہے؟ پاگل تو نہیں ہو گئے ہو؟ سب کام میں لگے ہوئے ہیں اور تم ناچ رہے ہو؟

پتنی—[ناچتی ہے اور تالیاں بجاتی ہے] واہ! واہ! [گاتی ہے] میں مانتی ہوں کہ یہ پاپ ہے لیکن پاپ سے صرف پرماتما بچا ہے۔

بڈھی عورت—ابھاگی! چولھا صاف نہیں ہوا ہے اور تم لوگ ناچ رہے ہو؟

کسان—دیکھو ماں، یہاں کیا ہو رہا ہے۔ ہم بڈھوں کو جوان بنا سکتے ہیں۔ یہ لو ذرا اسکو پیو۔ [کلھڑ دیتا ہے]

بڈھی عورت—کنویں میں بہت کافی پانی ہے [اسکو سونگھ کر] مگر تم نے اس میں کیا ڈال دیا ہے؟ عجیب مہک ہے۔

کسان—اسکو پیو تو۔

بڈھی عورت—[چکھتی ہے] لیکن کہیں اس سے کوئی مر نہ

जाय ?

पत्नी—यह तुम को और भी जानदार बना देगी. तुम फिर जवान हो जाओगी.

बुड्ढी औरत—मत बको [पीती है] मगर बड़ी मजेदार है. और शर्बतो से कहीं अच्छा है. लो बाबा तुम भी पियो.

[दादा बैठकर सर हिलाता है]

मजदूर—उसकी चिन्ता न करो. मगर दादी को अलबत्ता दूसरा कुल्हड़ दो. [बुड्ढी औरत को कुल्हड़ फिर भर कर देता है.]

बुड्ढी औरत—इससे कोई नुकसान न हो. ए ईश्वर ! यह तो जलन पैदा कर रही है. मगर है बड़ा उमदा.

पत्नी—पी जाओ ! अभी तुम्हारी रग-रग में फैल जायगा.

बुड्ढी औरत—देखूँ [पी जाती है.]

पत्नी—पाँव तक अभी पहुँची या नहीं ?

बुड्ढी औरत—सच, यह तो सारे बदन में.....दौड़ रही है. अब यहाँ मालूम होती है. [और अपने को बहुत हलका पाने लगती.]. लाओ थोड़ी और दो. [फिर पीती है.] क्या खूब ! अब मैं बिलकुल जवान हूँ.

[मजदूर सितार बजाता है, किसान और उसकी पत्नी नाचते हैं]

बुड्ढी औरत—[बीच में आकर] तुम इसको नाच कहते हो ? अच्छा मैं तुमको नाच कर बताती हूँ. [नाचती है] नाचने का

جائے؟

پتنی — یہ تم کو اور بھی جاندار بنا دے گی. تم پھر جوان ہو جاؤ گی.

بڑھی عورت — مت بکو [پیتی ہے] مگر بڑی مزیدار ہے. اور شربتوں سے کہیں اچھا ہے. لو بابا تم بھی پیو.

[دادا بیٹھ کر سر ہلاتا ہے]

مزدور — اس کی چنتا نہ کرو. مگر دادی کو البتہ دوسرا کلہڑ دو. [بڑھی عورت کو کلہڑ پھر بھر کر دیتا ہے]

بڑھی عورت — اس سے کوئی نقصان نہ ہو. اے ایشور! یہ تو جلن پیدا کر رہی ہے. مگر ہے بڑی عمدہ.

پتنی — پی جاؤ! ابھی تمہاری رگ رگ میں پھیل جائے گا.

بڑھی عورت — دیکھوں [پی جاتی ہے]

پتنی — پاؤں تک ابھی پہنچی یا نہیں؟

بڑھی عورت — سچ، یہ تو سارے بدن میں ... دوڑ رہی ہے. اب یہاں معلوم ہوتی ہے. [اور اپنے کو بہت ہلکا پانے لگتی ہے] لاؤ تھوڑی اور دو. [پھر پیتی ہے] کیا خوب! اب میں بالکل جوان ہوں.

[مزدور ستار بجاتا ہے، کسان اور اسکی پتنی ناچتے ہیں]

بڑھی عورت — [بیچ میں آکر] تم اسکو ناچ کہتے ہو؟ اچھا میں تم کو ناچ کر بتاتی ہوں. [ناچتی ہے] ناچنے کا ڈھنگ یہ ہے.

[दादा बर्तन के पास जाता है और नलकी खोल देता है. सारा अरक़ बहने लगता है.]

किसान—[यह देख कर दादा पर झपटता है.] बुड्ढे नालायक़ ! यह क्या किया ? ऐसी उमदा चीज़ को मिट्टी मे मिला दिया. हट पागल बुड्ढे ! [उसको धक्का देकर अलग कर देता है और नलकी के नीचे कुल्हड़ लगा देता है.]

दादा—यह कोई अच्छी चीज़ नहीं. बड़ी ख़राब चीज है. ईश्वर ने तुमको अच्छा फसल दी थी ताकि तुम ख़ुद खाओ और दूसरों को खिलाओ. तुमने अनाज से शैतानों के पीने की चीज़ तैयार की है. इससे कुछ फ़ायदा होने वाला नहीं है इसको छोड़ दो नहीं तो ख़ुद तबाह हो जाओगे और दूसरों को भी तबाह कर डालोगे. तुम इसको शबत समझते हो ? यह आग है जो तुमको जला कर ख़ाक कर डालेगी.

[एक जलती हुई लकड़ी लेकर गिरी हुई शराब पर रख देता है. शराब जल उठती है. सब डर कर देखने लगते है.]

पाँचवाँ सीन

[झोंपड़ी का भीतरी हिस्सा—मजदूर अकेला है, उसके सींग और सुम नजर आ रहे हैं]

मज़दूर—अब अनाज खूब होने लगा है. रखने की जगह नहीं. किसान को अब शराब की लत पड़ गई है. हम लोगों ने अभी फिर खींच कर तैयार की है और एक पीपे मे छिपा कर रख छोड़ी है. अब किसी के साथ बेलौस सलूक नहीं किया जायगा. जिससे

[دادا برتن کے پاس جاتا ہے اور نلکی کھول دیتا ہے. سارا عرق بہنے لگتا ہے.]

کسان—[یہ دیکھ کر دادا پر جھپٹتا ہے] بڈھے، نالائق! یہ کیا کیا؟ ایسی عمدہ چیز کو مٹی میں ملا دیا. ہٹ پاگل بڈھے! [اسکو دھکا دیکر الگ کر دیتا ہے اور نلکی کے نیچے کلھڑ لگا دیتا ہے.]

دادا— یہ کوئی اچھی چیز نہیں. بڑی خراب چیز ہے. ایشور نے تم کو اچھی فصل دی تھی تاکہ تم خود کھاؤ اور دوسروں کو کھلاؤ. تم نے اناج سے شیطانوں کے پینے کی چیز تیار کی ہے. اس سے کچھ فائدہ ہونے والا نہیں ہے. اسکو چھوڑ دو نہیں تو خود تباہ ہو جاؤگے اور دوسروں کو بھی تباہ کر ڈالوگے. تم اسکو شربت سمجھتے ہو؟ یہ آگ ہے جو تم کو جلا کر خاک کر ڈالے گی.

[ایک جلتی ہوئی لکڑی لے کر گری ہوئی شراب پر رکھ دیتا ہے. شراب جل اٹھتی ہے. سب ڈر کر دیکھنے لگتے ہیں.]

پانچواں سین

[جھونپڑی کا بھیتری حصہ— مزدور اکیلا ہے، اس کے سینگ اور سم نظر آ رہے ہیں.]

مزدور — اب اناج خوب ہونے لگا ہے. رکھنے کی جگہ نہیں. کسان کو اب شراب کی لت پڑ گئی ہے. ہم لوگوں نے ابھی پھر کھینچ کر تیار کی ہے اور ایک پیپے میں چھپا کر رکھ چھوڑی ہے. اب کسی کے ساتھ بے لوث سلوک نہیں کیا جائیگا. جس سے

कोई काम निकलने की उम्मीद होगी उसी के साथ अच्छा सलूक किया जायगा. इसलिये आज मैंने उससे गाँव के चौधरियों की दावत करने को कहा है ताकि वह आकर जायदाद को किसान और उसके दादा के बीच बाँट दें. वह सारी जायदाद किसान को दे देंगे और बुड्ढे को कुछ न देंगे. आज मेरे तीन साल पूरे हो गये और मेरा काम भी खतम हो गया. सरदार आकर खुद देख सकता है. अब मुझे उससे शर्मिन्दा नहीं होना पड़ेगा.

[सरदार स्टेज के पिछले हिस्से मे नज़र आता है.]

सरदार—वक़्त पूरा हो गया. तुमने रोटी के टुकड़े वाली ग़लती के बदले में कुछ किया या नहीं ? मैंने कह दिया था कि खुद आकर देखूँगा. तुमने किसान को क़ाबू मे करने की कोई सूरत निकाली ?

मज़दूर—उसको अच्छी तरह बस में कर लिया है. आप खुद देख लीजिये. अभी कुछ किसान यहाँ इकट्ठा होंगे. चूल्हे में छिप जाइये और देख लीजिये कि वह क्या करते हैं. आपको पूरा इतमीनान हो जायगा.

सरदार—[चूल्हे में छिपकर] देखूँ !

[किसान चार चौधरियों के साथ आता है. उसके पीछे उसकी पत्नी भी आती है. सब गोलाई मे बैठ जाते हैं. पत्नी कपड़ा बिछा कर रोटियाँ और सालन निकालती है. बुड्ढे लोग मज़दूर को सलाम करते हैं.

पहला चौधरी—तुमने कुछ और शराब खींची ?

मज़दूर—जितनी जरूरत थी उतनी खींच ली है. ऐसी क़ीमती चीज़ को बेकार क्यों ...

کوئی کام نکلنے کی امید ہوگی اُسی کے ساتھ اچھا سلوک کیا جائے گا۔ اس لئے آج میں نے اُس سے گاؤں کے چودھریوں کی دعوت کرنے کو کہا ہے تاکہ وہ آکر جائداد کو کسان اور اُس کے دادا کے بیچ بانٹ دیں۔ وہ ساری جائداد کسان کو دیدیں گے اور بڈھے کو کچھ نہ دیں گے۔ آج میرے تین سال پورے ہوگئے اور میرا کام بھی ختم ہوگیا۔ سردار آکر خود دیکھ سکتا ہے۔ اب مجھے اُس سے شرمندہ نہیں ہونا پڑے گا۔

[سردار اسٹیج کے پچھلے حصے میں نظر آتا ہے۔]

سردار — وقت پورا ہوگیا۔ تم نے روٹی کے ٹکڑے والی غلطی کے بدلے میں کچھ کیا یا نہیں؟ میں نے کہہ دیا تھا کہ خود آکر دیکھوں گا۔ تم نے کسان کو قابو میں کرنے کی کوئی صورت نکالی؟

مزدور — اسکو اچھی طرح بس میں کر لیا ہے۔ آپ خود دیکھ لیجئے ابھی کچھ کسان یہاں اکٹھا ہونگے۔ چولہے میں چھپ جائیے اور دیکھ لیجئے کہ وہ کیا کرتے ہیں۔ آپ کو پورا اطمینان ہو جائے گا۔

سردار — [چولہے میں چھپ کر] دیکھوں!

[کسان چار چودھریوں کے ساتھ آتا ہے۔ اُس کے پیچھے اسکی پتنی بھی آتی ہے۔ سب گولائی میں بیٹھ جاتے ہیں۔ پتنی کپڑا بچھا کر روٹیاں اور سالن نکالتی ہے۔ بڈھے لوگ مزدور کو سلام کرتے ہیں۔

پہلا چودھری — تم نے کچھ اور شراب کھینچی؟

... اتنی کھینچ لی ہے۔ ایسی قیمتی چیز کو

दूसरा चौधरी—उसमे कुछ कामयाबी भी हुई ?

मजदूर—पहले से बहुत अच्छी है.

दूसरा चौधरी—लेकिन तुमने उसका बनाना कहाँ सीखा ?

मजदूर—दुनिया की सैर करने से आदमी बहुत कुछ सीख सकता है.

तीसरा चौधरी—हाँ हाँ ! तुम बड़े जानकार हो. [पत्नी शराब और कुल्हड़ लाती है.]

किसान—आप लोग कुछ इसमे से पियें.

[पत्नी बोतल से शराब ढालती है.]

पत्नी—इसको पीकर आप हम पर एहसान कीजिये और हमारी इज्जत बढ़ाइये.

पहला चौधरी—[पीते हुये] वाह, कैसी मजेदार है, जोड़ जोड़ में रस लाती है. इसको अलबत्ता उमदा शराब कहते हैं

[और तीनों चौधरी भी पीते हैं. प्रेतो का सरदार चूल्हे से बाहर आता है. मजदूर उसके पास जाकर खड़ा हो जाता है.]

मजदूर—[सरदार से] अब जरा देखियेगा क्या होता है. इस औरत को पाँव से ठोकर लगा देता हूँ, शराब छलक जायगी. पहले तो यह किसान रोटी के आखिरी टुकड़े के खो जाने की परवाह नहीं करता था. मगर देखिये एक कुल्हड़ शराब के लिये क्या करता है.

किसान—[पत्नी से.] अच्छा साथी, एक एक कुल्हड़ और भर कर दो, पहले इनको, फिर इनको.

دوسرا چودھری — اُس میں کچھ کامیابی بھی ہوئی ؟

مزدور — پہلے سے بہت اچھی ہے۔

دوسرا چودھری — لیکن تم نے اس کا بنانا کہاں سیکھا ؟

مزدور — دنیا کی سیر کرنے سے آدمی بہت کچھ سیکھ سکتا ہے۔

تیسرا چودھری — ہاں ہاں ! تم بڑے جانکار ہو۔ [پتنی شراب اور کلہڑ لاتی ہے۔]

کسان — آپ لوگ کچھ اس میں سے پئیں۔

[پتنی بوتل سے شراب ڈھالتی ہے۔]

پتنی — اسکو پی کر آپ ہم پر احسان کیجئے اور ہماری عزت بڑھائیے۔

پہلا چودھری — [پیتے ہوئے] واہ، کیسی مزیدار ہے۔ جوڑ جوڑ میں رس لاتی ہے۔ اسکو البتہ عمدہ شراب کہتے ہیں۔

[اور تینوں چودھری بھی پیتے ہیں۔ پریتوں کا سردار چولہے سے باہر آتا ہے۔ مزدور اُسکے پاس جاکر کھڑا ہو جاتا ہے۔]

مزدور — [سردار سے] اب ذرا دیکھئے گا کیا ہوتا ہے۔ اس عورت کو پاؤں سے ٹھوکر لگا دیتا ہوں، شراب چھلک جائے گی۔ پہلے تو یہ کسان روٹی کے آخری ٹکڑے کے کھو جانے کی پرواہ نہیں کرتا تھا۔ مگر دیکھئے ایک کلہڑ شراب کے لئے کیا کرتا ہے۔

کسان — [پتنی سے] اچھا ساتھی، ایک ایک کلہڑ اور بھر کر دو، پہلے اِنکو، پھر اِنکو۔

[पत्नी कुल्हड़ भर भर कर बारी बारी से मेहमानों की हैसियत के मुताबिक़ देती है. मजदूर उसको ठुकरा देता है. वह लड़खड़ा जाती है. कुल्हड़ उलट जाता है.]

पत्नी—हाय भगवान ! कुल शराब गिर गई. हर दम मेरे रास्ते में क्यों आ जाता है. ईश्वर तेरा नाश करे.

किसान—[पत्नी से] कैसी फूहड़ जानवर है. उंगुलियो की जगह अंगूठे ही अंगूठे है और उस पर से दूसरो को कोसती है. कैसी अच्छी शराब मिट्टी मे मिला दी.

पत्नी—मैंने जानकर नही गिराई है.

किसान—जरूर जानकर गिराई है. ठहरो मैं अभी बताता हूँ. अभी शराब छलकाने का मजा चखाता हूँ [मजदूर से] और तू अभागे यहाँ क्यो मंडला रहा है ? जहन्नम मे जा.

[पत्नी फिर कुल्हड़ भर-भर कर देना शुरू करती है.]

मजदूर—[अपने सरदार के पास वापस जाता है.] आपने देखा ? पहले इसको रोटी की भी परवाह न थी अब एक कुल्हड़ शराब के लिये पत्नी को मारते मारते रह गया और मुझे आपके पास जहन्नम मे भेज दिया.

सरदार—बहुत ठीक. अब मुझे एतमीनान हो गया.

मजदूर—अभी क्या, जब यह लोग बोतल खाली कर चुकेंगे, उस वक़्त देखियेगा. अभी तो यह आपस मे सीधी सीधी बातें कर रहे हैं, अभी लोमड़ियो की तरह एक दूसरे की चापलूसियां करना शुरू करेंगे.

[پتنی کلھڑ بھر بھر کر باری باری سے مہمانوں کی حیثیت کے مطابق دیتی ہے۔ مزدور اُس کو ٹھکرا دیتا ہے۔ وہ لڑکھڑا جاتی ہے۔ کلھڑ اُلٹ جاتا ہے۔]

پتنی — ہائے بھگوان! کُل شراب گر گئی۔ ہر دم میرے راستے میں کیوں آجاتا ہے۔ ایشور تیرا ناش کرے۔

کسان — [پتنی سے] کیسی پھوہڑ جانور ہے۔ انگلیوں کی جگہ انگوٹھے ہی انگوٹھے ہیں اور اُس پر سے دوسروں کو کوستی ہے۔ کیسی اچھی شراب مٹی میں ملا دی۔

پتنی — میں نے جان کر نہیں گرائی ہے۔

کسان — ضرور جان کر گرائی ہے۔ ٹھہرو میں ابھی بتاتا ہوں۔ ابھی شراب چھلکانے کا مزا چکھاتا ہوں [مزدور سے] اور تو ابھاگے یہاں کیوں منڈلا رہا ہے؟ جہنم میں جا۔

[پتنی پھر کلھڑ بھر بھر کر دینا شروع کرتی ہے۔]

مزدور — [اپنے سردار کے پاس واپس جاتا ہے۔] آپ نے دیکھا؟ پہلے اسکو روٹی کی بھی پرواہ نہ تھی اب ایک کلھڑ شراب کے لئے پتنی کو مارتے مارتے رہ گیا اور مجھے آپکے پاس جہنم میں بھیجدیا۔

سردار — بہت ٹھیک۔ اب مجھے اطمینان ہوگیا۔

مزدور — ابھی کیا، جب یہ لوگ بوتل خالی کر چکیں گے، اُس وقت دیکھئے گا۔ ابھی تو یہ آپس میں سیدھی سیدھی باتیں کر رہے ہیں، ابھی لومڑیوں کی طرح ایک دوسرے کی چاپلوسیاں کرنا شروع کریں گے۔

दादा अब तक मेरे साथ रहते थे और मैं उनके खाने पीने का बोझ उठाये हुए था. अब वह मेरे चचा के यहाँ रहने लगे हैं और अपनी जायदाद लेकर चचा के नाम लिखना चाहते हैं. तुम लोग समझदार हो, अच्छी तरह सोच विचार करो. हमको अपने से ज्यादा तुम पर भरोसा है. तमाम गाँव वाले तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकते. जैसे इनको देखिये [पहले चौधरी की तरफ इशारा करके] हर आदमी कहता है कि इनका दर्जा सबसे ऊँचा है और मैं तो साफ कहूँगा कि मैं इनको माँ बाप से ज्यादा मानता हूँ और [दूसरे चौधरी की ओर इशारा करके] यह तो हमारे पुराने दोस्त हैं.

पहला चौधरी—[किसान से] अच्छे आदमियों से बातें करने में आनन्द मिलता है. अक्लमन्द बनने का तरीका यही है. तुम भी ऐसे आदमियों में से हो. कोई तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता.

दूसरा चौधरी—मैं तो इनको अक्लमन्द और प्रेमी आदमी समझता हूँ.

तीसरा चौधरी—मुझे तुम्हारे साथ बड़ा प्रेम है. मैं इसको बता नहीं सकता. आज ही अपनी पत्नी से तुम्हारे बारे में बातें कर रहा था.

चौथा चौधरी—यह सचमुच सच्चे दोस्त हैं.

मजदूर—[सरदार से]आप सुन रहे हैं ? सब झूठ पीठ पीछे सब एक दूसरे को गालियां देते रहते हैं. मगर इस वक्त कैसी गाढ़ी छन रही है. जैसे लोमड़ियाँ मुहब्बत मे दुम हिला रही हो.

सरदार—सचमुच यह बड़ी अच्छी शराब है. अगर यह लोग

دادا اب تک میرے ساتھ رہتے تھے اور میں اُنکے کھانے پینے کا بوجھ اٹھائے ہوئے تھا۔ اب وہ میرے چچا کے یہاں رہنے لگے ہیں اور اپنی جائداد لے کر چچا کے نام لکھنا چاہتے ہیں۔ تم لوگ سمجھ دار ہو، اچھی طرح سوچ بچار کرو۔ ہم کو اپنے سے زیادہ تم پر بھروسہ ہے۔ تمام گاؤں والے تمہارا مقابلہ نہیں کر سکتے۔ جیسے ان کو دیکھیے [پہلے چودھری کی طرف اشارہ کرکے] ہر آدمی کہتا ہے کہ ان کا درجہ سب سے اونچا ہے اور میں تو صاف کہوں گا کہ میں انکو ماں باپ سے زیادہ مانتا ہوں اور [دوسرے چودھری کی اور اشارہ کرکے] یہ تو ہمارے پرانے دوست ہیں۔

پہلا چودھری — [کسان سے] اچھے آدمیوں سے باتیں کرنے میں آنند ملتا ہے۔ عقلمند بننے کا طریقہ یہی ہے۔ تم بھی ایسے ہی آدمیوں میں سے ہو۔ کوئی تمہارا مقابلہ نہیں کر سکتا۔

دوسرا چودھری — میں تو ان کو عقلمند اور پریمی آدمی سمجھتا ہوں۔

تیسرا چودھری — مجھے تمہارے ساتھ بڑا پریم ہے۔ میں اسکو بتا نہیں سکتا۔ آج ہی اپنی پتنی سے تمہارے بارے میں باتیں کر رہا تھا۔

چوتھا چودھری — یہ سچ مچ سچے دوست ہیں۔

مزدور — [سردار سے] آپ سُن رہے ہیں؟ سب جھوٹ پیٹھ پیچھے سب ایک دوسرے کو گالیاں دیتے رہتے ہیں۔ مگر اس وقت کیسی گاڑھی چھن رہی ہے۔ جیسے لومڑیاں محبت میں دُم ہلا رہی ہوں۔

سردار — سچ مچ یہ بڑی اچھی شراب ہے۔ اگر یہ لوگ

इसी तरह झूट बोलते रहे तो बहुत जल्द हमारे गुलाम हो जायेगे. बहुत .खूब; मैं बहुत .खुश हूँ.

मजदूर—अभी ठहरिये. जब दूसरी बोतल .खतम कर लें तो तमाशा देखियेगा.

पत्नी—[कुल्हड़ से शराब देना शुरू करती है] एक एक कुल्हड़ और.

पहला चौधरी—कहीं बहुत ज्यादा न हो जाय ? भगवान तुम लोगों को जीता रक्खे. [पी जाता है] अच्छे लोगों के साथ शराब पीने में बड़ा मजा आता है.

दूसरा चौधरी—ऐसे मौक़ों पर बिना पिये कैसे रह जा सकता है. भगवान हम सब को सलामत रक्खे.

तीसरा चौधरी—ईश्वर हमारे दोस्तों को .खुश रक्खे.

चौथा चौधरी—यह अलबत्ता बढ़िया शराब है. आओ मङ्गल मनायें. घबराना नहीं. हम तुम्हारी मरजी के मुताबिक़ सब कुछ तै कर देगे. कुल अख्तियार तो मेरे हाथ मे है.

पहला चौधरी—तुम्हारे हाथ मे ? नही हरगिज नहीं, तुम्हारे पुरखों के हाथ मे है.

चौथा चौधरी—मेरे पुरखे मुझसे बढ़ कर बेवकूफ हैं. दूर हो.

दूसरा चौधरी—यह क्या झगड़ा है ? उल्लू !

तीसरा चौधरी—वह सच कहता है. उसने बे मतलब के हमारी दावत नही की है. इसमें उस की अपनी ग़रज है. [किसान की ओर इशारा करके] हमारी दावत का खर्च उठाना तुम्हारा काम है. तुम

اس طرح جھوٹ بولتے رہے تو بہت جلد ہمارے غلام ہو جائیں گے۔ بہت خوب؛ میں بہت خوش ہوں۔

مزدور — ابھی ٹھہرئے۔ جب دوسری بوتل ختم کر لیں تو تماشہ دیکھئے گا۔

پتنی — [کلھڑ سے شراب دینا شروع کرتی ہے] ایک ایک کلھڑ اور۔

پہلا چودھری — کہیں بہت زیادہ نہ ہو جائے؟ بھگوان تم لوگوں کو جیتا رکھے۔ [پی جاتا ہے] اچھے لوگوں کے ساتھ شراب پینے میں بڑا مزہ آتا ہے۔

دوسرا چودھری — ایسے موقعوں پر بنا پئے کیسے رہا جا سکتا ہے۔ بھگوان ہم سب کو سلامت رکھے۔

تیسرا چودھری — ایشور ہمارے دوستوں کو خوش رکھے۔

چوتھا چودھری — یہ البتہ بڑھیا شراب ہے۔ آؤ منگل منائیں۔ گھبرانا نہیں۔ ہم تمہاری مرضی کے مطابق سب کچھ طے کر دینگے۔ کل اختیار تو میرے ہاتھ میں ہے۔

پہلا چودھری — تمہارے ہاتھ میں؟ نہیں ہرگز نہیں، تمہارے پرکھوں کے ہاتھ میں ہے۔

چوتھا چودھری — میرے پرکھے مجھ سے بڑھ کر بیوقوف ہیں۔ دور ہو۔

دوسرا چودھری — یہ کیا جھگڑا ہے؟ اُلّو!

تیسرا چودھری — وہ سچ کہتا ہے۔ اس نے بے مطلب کے ہماری دعوت نہیں کی ہے۔ اس میں اس کی اپنی غرض ہے۔ [کسان کی اور اشارا کرکے] ہماری دعوت کا خرچ اٹھانا تمہارا کام ہے۔ تم

हमारी ग़रज़ तुम से. सुना सुअर के बच्चे !

किसान—क्यों सुअर चिल्ला रहा है. मुझे धमकाना चाहता है ? तुम सब रोटी के बन्दे हो.

पहला चौधरी—तुझ को बड़ा ग़ुर्रा है. देख अभी तेरी नाक मरोड़ कर रख देता हूँ.

किसान—देखूँ कौन किसकी नाक मरोड़ता है ?

दूसरा चौधरी—तुम अपने को बड़ी चीज़ समझते हो ? जहन्नम में जाओ. मैं तुम से बात नहीं करता, मैं अभी चला जाता हूँ.

किसान—[उस को पकड़ लेता है] क्या तुम पंचायत छोड़ कर चले जाओगे ?

दूसरा चौधरी—छोड़ो नहीं तो मैं दुहाई देता हूँ

किसान—मैं नहीं छोड़ूँगा. तुम को हक़ क्या था कि ....?

दूसरा चौधरी—यह हक़ था [किसान को मारता है]

किसान—[चौधरियों से] दौड़ो बचाओ. [सब एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं और एक साथ बोलने लगते हैं]

पहला चौधरी—बस हो चुका. अब रङ्गरेलिया हो.

दूसरा चौधरी—मैं कुल मामला तै कर सकता हूँ.

तीसरा चौधरी—कुछ और पिलाओ.

किसान—दूसरी बोतल लाओ.

[सब फिर उसी तरह बैठ जाते हैं और शराब पीने लगते हैं.]

मज़दूर—[सरदार से] आप ने देखा ? अब उन की रगों में भेड़ियों का ख़ून दौड़ने लगा है और अब सब उस की तरह ख़ूख़ार हो गये हैं.

ہماری غرض تم سے. سُنا سور کے بچے!

کسان — کیوں سور چلّا رہا ہے. مجھے دھمکانا چاہتا ہے؟ تم سب روٹی کے بندے ہو.

پہلا چودھری — تجھ کو بڑا غرّہ ہے. دیکھ ابھی تیری ناک مروڑ کر رکھ دیتا ہوں.

کسان — دیکھوں کون کس کی ناک مروڑتا ہے؟

دوسرا چودھری — تم اپنے کو بڑی چیز سمجھتے ہو؟ جہنّم میں جاؤ. میں تم سے بات نہیں کرتا، میں ابھی چلا جاتا ہوں.

کسان — [اسکو پکڑ لیتا ہے] کیا تم پنچایت چھوڑ کر چلے جاؤگے؟

دوسرا چودھری — چھوڑو نہیں تو میں دہائی دیتا ہوں.

کسان — میں نہیں چھوڑوں گا. تم کو حق کیا تھا کہ .....؟

دوسرا چودھری — یہ حق تھا [کسان کو مارتا ہے]

کسان — [چودھریوں سے] دوڑو بچاؤ. [سب ایک دوسرے پر ٹوٹ پڑتے ہیں اور ایک ساتھ بولنے لگتے ہیں]

پہلا چودھری — بس ہو چکا. اب رنگ رلیاں ہوں.

دوسرا چودھری — میں کل معاملہ طے کر سکتا ہوں.

تیسرا چودھری — کچھ اور پلاؤ.

کسان — دوسری بوتل لاؤ.

[سب پھر اسی طرح بیٹھ جاتے ہیں اور شراب پینے لگتے ہیں.]

مزدور — [سردار سے] آپ نے دیکھا؟ اب ان کی رگوں میں بھیڑیوں کا خون دوڑنے لگا ہے اور اب سب اس کی طرح خونخوار ہو گئے ہیں.

सरदार—बड़ी अच्छी शराब है. मै तुमसे बहुत ख़ुश हूॅं.

मजदूर—तीसरी बोतल के बाद और मज़ा आयेगा. देखते रहिये.

छठा सीन

[गांव की एक गली—दाहिनी तरफ लकड़ी के एक लट्ठे पर कुछ बूढ़ी औरतें दादा के साथ बैठी हुई है. बीच मे औरतो, लड़कियो और लड़को का एक झुरमुट है गाना बजाना हो रहा है. झोपड़ी के अन्दर से शराबियो का शोर ग़ुल सुनाई दे रहा है. एक बुड्ढा आदमी नशे मे चूर झोपड़ा से बाहर निकल कर चिल्लाने लगता है. किसान भी उसके पीछे-पीछे आता है और कमर पकड़ कर फिर उसे अन्दर ले जाता है.]

दादा—ए भगवान ! यह क्या हो रहा है. हफ्ते भर की मेहनत के बाद इतवार को चाहिये कि आदमी नहा धोकर थोड़ा आराम करे और अपने बीवी बच्चों के साथ जी बहलाये, या बाहर जाकर बड़े बूढ़ो से धर्म की बाते सीखे या अगर अभी लड़कपन है तो कोई ढङ्ग का खेल खेले. देखो बच्चो का खेल कैसा भला मालूम होता है. [अन्दर से शोर सुनाई देता है.] लेकिन यह कैसी जिन्दगी है. यह तो आदमी को बहका देती है. शैतान इससे ख़ुश होता है और इस भोग विलास के जीवन से बहुत सी खराबियाॅ पैदा होती हैं.

[शराबी लड़खड़ाते हुए झोपड़ी मे बाहर निकलते हैं, शोर मचाते हैं और लड़कियो को पकड़ कर खींचते हैं.]

سردار — بڑی اچھی شراب ہے۔ میں تم سے بہت خوش ہوں۔

مزدور — تیسری بوتل کے بعد اور مزا آئے گا دیکھتے رہیئے۔

چھٹا سین

[گاؤں کی ایک گلی — داہنی طرف لکڑی کے ایک لٹھے پر کچھ بڈھی عورتیں دادا کے ساتھ بیٹھی ہوئی ہیں۔ بیچ میں عورتیں، لڑکیوں اور لڑکوں کا ایک جھرمٹ ہے، گانا بجانا ہو رہا ہے۔ جھونپڑی کے اندر سے شرابیوں کا شور غل سنائی دے رہا ہے۔ ایک بڈھا آدمی نشے میں چور جھونپڑی سے باہر نکل کر چلانے لگتا ہے۔ کسان بھی اس کے پیچھے پیچھے آتا ہے اور کمر پکڑ کر پھر اسے اندر لے جاتا ہے۔]

دادا — اے بھگوان! یہ کیا ہو رہا ہے۔ ہفتے بھر کی محنت کے بعد اتوار کو چاہیئے کہ آدمی نہا دھوکر تھوڑا آرام کرے اور اپنے بی بی بچوں کے ساتھ جی بہلائے، یا باہر جاکر بڑے بوڑھوں سے دھرم کی باتیں سیکھے یا اگر ابھی لڑکپن ہے تو کوئی ڈھنگ کا کھیل کھیلے۔ دیکھو بچوں کا کھیل کیسا بھلا معلوم ہوتا ہے۔ [اندر سے شور سنائی دیتا ہے] لیکن یہ کیسی زندگی ہے۔ یہ تو آدمی کو بہکا دیتی ہے۔ شیطان اس سے خوش ہوتا ہے اور اس بھوگ ولاس کے جیون سے بہت سی خرابیاں پیدا ہوتی ہیں۔

[شرابی لڑکھڑاتے ہوئے جھونپڑی سے باہر نکلتے ہیں، شور مچاتے ہیں

लड़के—आओ दूसरी गली मे चले. यहाँ हम लोग खेल नहीं सकते.

[सब खेलते हुए दूसरी तरफ़ चले जाते हैं.]

किसान—[दादा के पास जाकर] अब तुम क्या करोगे? चौधरी सारी जायदाद मुझको दे देगें [दादा को उंगलियों से चिढ़ाता है.] तुमको कुछ नहीं मिलेगा. अब बोलो? सारी जायदाद मेरी है. तुम्हारी एक कौड़ी नहीं. ख़ुद इन चौधरियों से पूछ लो.

[सब चौधरी एक साथ बोलते हैं.]

पहला चौधरी—मैं ख़ूब जानता हूँ कि इस मामले में क्या होना चाहिये?

दूसरा चौधरी—सब को कान धर कर मेरा फ़ैसला सुनना चाहिये.

तीसरा चौधरी—दोस्त! प्यारे दोस्त!! जान से बढ़कर प्यारे दोस्त!!!

चौथा चौधरी—अच्छा हो चुका. अब इधर आओ.

[चौधरी एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर दो दो की टोली में नाचते हैं. किसान झोपड़ी की तरफ़ जाना चाहता है लेकिन रास्ते में लड़खड़ा कर गिर पड़ता है और बकबक करने लगता है. उसके गले से सुअरों की सी आवाज़ निकल रही है. दादा और उसके साथी उठ कर चले जाते हैं मज़दूर और सरदार अन्दर आते हैं.]

मज़दूर—देखा अब इन में सुअर का ख़ून आगया. और अब यह भेड़िये से सुअर बन गये. [किसान की तरफ़ इशारा

لڑکے — آؤ دوسری گلی میں چلیں۔ یہاں ہم لوگ کھیل نہیں سکتے۔

[سب کھیلتے ہوئے دوسری طرف چلے جاتے ہیں]

کسان — [دادا کے پاس جاکر] اب تم کیا کروگے؟ چودھری ساری جائداد مجھ کو دے دینگے [دادا کو انگلیوں سے چڑھاتا ہے] تم کو کچھ نہیں ملے گا۔ اب بولو؟ ساری جائداد میری ہے۔ تمہاری ایک کوڑی نہیں۔ خود ان چودھریوں سے پوچھ لو۔

[سب چودھری ایک ساتھ بولتے ہیں]

پہلا چودھری — میں خوب جانتا ہوں کہ اس معاملے میں کیا ہونا چاہئے؟

دوسرا چودھری — سب کو کان دھر کر میرا فیصلہ سننا چاہئے۔

تیسرا چودھری — دوست! پیارے دوست!! جان سے بڑھ کر پیارے دوست!!!

چوتھا چودھری — اچھا ہو چکا۔ اب ادھر آؤ۔

[چودھری ایک دوسرے کے ہاتھ میں ہاتھ ڈال کر دو دو کی ٹولی میں ناچتے ہیں۔ کسان جھونپڑی کی طرف جانا چاہتا ہے لیکن راستے میں لڑکھڑا کر گر پڑتا ہے اور بک بک کرنے لگتا ہے۔ اسکے گلے سے سؤروں کی سی آواز نکل رہی ہے۔ دادا اور اسکے ساتھی اٹھ کر چلے جاتے ہیں۔ مزدور اور سردار اندر آتے ہیں]

مزدور — دیکھا اب ان میں سور کا خون آگیا۔ اور اب یہ بھیڑ [illegible] سور بن گئے۔ [کسان کی طرف اشارا

करके] देखिये कीचड़ में पड़ा सुअर की तरह कैसा चिल्ला रहा है.

सरदार—तुमको बड़ी कामयाबी हुई है. पहले यह लोग लोमड़ियों की तरह थे, फिर भेड़ियो की तरह हो गये और अब सुअर की तरह हो गये. यह अलबत्ता शराब है. मगर यह तो बताओ, तुमने इसको तैयार कैसे किया था ? मैं समझता हूँ कि लोमड़ियों, भेड़ियों और सुअरो के ख़ून को एक मे मिला कर तैयार किया होगा ?

मज़दूर—नहीं. मैंने इसके लिये सिर्फ़ बहुत सा अनाज जमा कर दिया. जब तक इसके पास बस इतना था कि इसका काम चलता रहे उस वक़्त तक इसको अपनी रोटी की भी परवाह न थी. लेकिन जब ज़रूरत से ज़्यादा होने लगा तो लोमड़ियों, भेड़ियों और सुअरों का ख़ून इसके अन्दर जोश खाने लगा. हैवानियत का माद्दा इसमें हमेशा से मौजूद था. अलबत्ता अब तक दबा हुआ था.

सरदार—शाबाश ! तुम बड़े काम के आदमी हो. अब रोटी के टुकड़े वाली ग़लती का प्रायश्चित हो चुका. अगर यह इसी तरह शराब पीते रहे तो हमारे ग़ुलाम बन कर रह जायेंगे.

کرکے] دیکھئے کیچڑ میں پڑا سور کی طرح کیسا چلّا رہا ہے۔

سردار — تم کو بڑی کامیابی ہوئی ہے۔ پہلے یہ لوگ لومڑیوں کی طرح تھے، پھر بھیڑیوں کی طرح ہو گئے اور اب سور کی طرح ہو گئے۔ یہ البتہ شراب ہے۔ مگر یہ تو بتاؤ، تم نے اس کو تیار کیسے کیا تھا؟ میں سمجھتا ہوں کہ لومڑیوں، بھیڑیوں اور سوروں کے خون کو ایک میں ملا کر تیار کیا ہوگا؟

مزدور — نہیں۔ میں نے اس کے لئے صرف بہت سا اناج جمع کر دیا۔ جب تک اس کے پاس بس اتنا تھا کہ اس کا کام چلتا رہے اس وقت تک اس کو اپنی روٹی کی بھی پرواہ نہ تھی۔ لیکن جب ضرورت سے زیادہ ہونے لگا تو لومڑیوں، بھیڑیوں اور سوروں کا خون اس کے اندر جوش کھانے لگا۔ حیوانیت کا مادہ اس میں ہمیشہ سے موجود تھا۔ البتہ اب تک دبا ہوا تھا۔

سردار — شاباش! تم بڑے کام کے آدمی ہو، اب روٹی کے ٹکڑے والی غلطی کا پرائشچت ہو چکا۔ اگر یہ اسی طرح شراب پیتے رہے تو ہمارے غلام بن کر رہ جائیں گے۔

हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत

(१४)

जयपुर का सेनी घराना और सितार

[भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी]

मियाँ तानसेन के चार बेटों में से सबसे छोटे बिलास ख़ाँ का ही बंस चला था जैसा कि पहले कहा जा चुका है. और यह ख़ानदान रबाबी घराने के नाम से मशहूर है क्योंकि इसमें ज्यादा-तर गुनी रबाब बजाने वाले ही हुए जिनकी आख़िरी औलाद उस्ताद मुहम्मद अली ख़ाँ साहब हुए, और इनका हाल हमने पिछले लेख में पूरा किया है.

तानसेन की लड़की सरस्वती और बीनकार मिस्री सिंह उर्फ़ नबात ख़ाँ से जो बंस चला वह बीनकार घराना कहलाया क्योंकि इसमें सब बीनकार ही हुए. और इनको आख़िरी औलाद मुहम्मद दबीर ख़ाँ मौजूद हैं. इस ख़ानदान का हाल भी हम पूरा कह चुके हैं. मुहम्मद अली साहब ने ला औलाद होने की वजह से शौकत अली नाम के एक लड़के को गोद लिया था जो मौजूद है.

पर क्या रबाबी और क्या बीनकार, धुरपदिये यह सब थे. धुरपद की पूरी तालीम लेना सबके लिये ज़रूरी था, क्योंकि बीन, या रबाब या किसी भी बाजे पर रागों का पूरा आलाप बजाने के लिये उन रागों की हर क़िस्म की दस पाँच धुरपदें,

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(۱۴)

جے پور کا سینی گھرانا اور ستار

(بھائی گنیش پرشاد دویدی)

میاں تان سین کے چار بیٹوں میں سے سب سے چھوٹے بلاس خاں کا ہی بنس چلا تھا جیسا کہ پہلے کہا جا چکا ہے۔ اور یہ خاندان ربابی گھرانے کے نام سے مشہور ہے کیونکہ اس میں زیادہ تر گنی رباب بجانے والے ہی ہوئے جن کی آخری اولاد استاد محمد علی خاں صاحب ہوئے، اور ان کا حال ہم نے پچھلے لیکھ میں پورا کیا ہے۔

تان سین کی لڑکی سرسوتی اور بینکار مصری سنگھ عرف نبات خاں سے جو بنس چلا وہ بینکار گھرانا کہلایا کیونکہ اس میں سب بینکار ہی ہوئے۔ اور انکی آخری اولاد محمد دبیر خاں موجود ہیں۔ اس خاندان کا حال بھی ہم پورا کہہ چکے ہیں۔ محمد علی صاحب نے لا اولاد ہونے کی وجہ سے شوکت علی نام کے ایک لڑکے کو گود لیا تھا جو موجود ہے۔

پر کیا ربابی اور کیا بینکار، دھرپدیے یہ سب تھے۔ دھرپد کی پوری تعلیم لینا سب کے لئے ضروری تھا، کیونکہ بین، یا رباب یا کسی بھی باجے پر راگوں کا پورا الاپ بجانے کے لئے اُن راگوں کی ہر قسم کی دس پانچ دھرپدیں

घमारें या होरियाँ गले से याद रखना जरूरी होता है. जिन लोगों का गला सुरीला और जोरदार था, उन्होंने सिर्फ धुरपद और आलाप ही गाया, तंत्र नहीं उठाया, पर ज़्यादातर सेनिये तंत्रकार ही हुए. दरबार या जलसों में यह हमेशा बीन या रबाब ही बजाते, हाँ घर में धुरपद गुनगुनाया करते और शागिर्दों को याद करा दिया करते थे.

पर बीन और रबाब के बाजे में इन्होंने इतनी तरक़्क़ी कर दी कि इसका स्थान कंठ संगीत यानी धुरपद और आलाप के भी ऊपर कर दिया.

तानसेन के एक बेटे का नाम सुरत सेन था. यह जयपुर दरबार में आ बसे. यह ला औलाद थे और इसलिये इन्होंने अपने एक भानजे (सरस्वती और मिस्री सिंह का छोटा लड़का *) को गोद

* कुछ लोगो की राय में सुरत सेन ने बिलास ख़ाँ के दूसरे बेटे दयाल सेन को गोद लिया था. एक तीसरा मत यह है कि सुरत सेन के बेटे मोह सेन और पोते सुधीन सेन थे जो ला औलाद थे और इन्होंने ही अपने एक बीनकार घराने के भानजे को गोद लेकर बंस चलाया. एक चौथा मत यह है कि जयपुर घराना शरत सेन ने चलाया न कि सुरत सेन ने. इस बारे में भी दो रायें हैं कि आया तान-सेन के सबसे बड़े बेटे सुरत सेन थे या शरत सेन. दोनों नामों में उच्चारण की समता ऐसी है कि कि अक्सर भरम हो जाता है. बहर हाल यह तय है कि जयपुर ख़ानदान चला गोद ही से और ज़्यादा क़ाबिल एतबार राय यही है कि सुरत सेन ख़ुद या उनके पोते सुधीन सेन ने मिस्री सिंह की औलाद को गोद लेकर ——

دھماریں یا ہوریاں گلے سے یاد رکھنا ضروری ہوتا ہے۔ جن لوگوں کا گلا سریلا اور زوردار تھا، انھوں نے صرف دھرپد اور الاپ ہی گایا، تنتر نہیں اٹھایا، پر زیادہ تر سینیئے تنترکار ہی ہوئے۔ دربار یا جلسوں میں یہ ہمیشہ بین یا رباب ہی بجاتے، ہاں گھر میں دھرپد گنگنایا کرتے اور شاگردوں کو یاد کرا دیا کرتے تھے۔

پر بین اور رباب کے باجے میں انھوں نے اتنی ترقی کردی کہ اس کا استھان کنٹھ سنگیت یعنی دھرپد اور آلاپ کے بھی اوپر کردیا۔

تان سین کے ایک بیٹے کا نام سورت سین تھا۔ یہ جے پور دربار میں آبسے۔ یہ لا اولاد تھے اور اس لئے انھوں نے اپنے ایک بھانجے (سرسوتی اور مصری سنگھ کا چھوٹا لڑکا *) کو گود

* کچھ لوگوں کی رائے میں سورت سین نے بلاس خاں کے دوسرے بیٹے دیال سین کو گود لیا تھا۔ ایک تیسرا مت یہ ہے کہ سورت سین کے بیٹے موہ سین اور پوتے سودھین سین تھے جو لا اولاد تھے اور انھوں نے ہی اپنے ایک بینکار گھرانے کے بھانجے کو گود لیکر بنس چلایا۔ ایک چوتھا مت یہ ہے کہ جے پور گھرانا شرت سین نے چلایا نہ کہ سورت سین نے۔ اس بارے میں بھی دو رائیں ہیں کہ آیا تان سین کے سب سے بڑے بیٹے سورت سین تھے یا شرت سین۔ دونوں ناموں میں اچارن کی سمتا ایسی ہے کہ اکثر بھرم ہو جاتا ہے۔ بہرحال یہ طے ہے کہ جے پور خاندان چلا گود ہی سے اور زیادہ قابل اعتبار رائے یہی ہے کہ سورت سین خود یا ان کے پوتے سودھین سین نے مصری سنگھ کی

ले लिया और इसी से इनका बंस चला. इनका घराना सितार के लिये मशहूर है. इनमें से कुछ उस्तादों ने बीन भी बजाई और बहुत अच्छी बजाई, जैसे मुराद अली ख़ाँ, और अमीर ख़ाँ. वह लोग महान् बीनकार हो गये हैं और बंदे अली ख़ाँ या वज़ीर ख़ाँ वग़ैरह से किसी मानी में कम नहीं बल्कि ज़्यादा ही. नाम इनका हुआ था, पर इस घराने की ख़ास चीज़ सितार ही है.

हम देखते हैं कि तानसेन के तीनों घरानों में तंत्र ही ख़ास तौर से अपनाया गया. तानसेन ख़ुद गवैये थे, पर उनके बंस में जितने बड़े गुनी हुए सभों ने बाजे में ही महारत हासिल की और इसी को हर तरह की तरक़्क़ी दी, यहाँ तक कि बाजे (तंत्र) का दर्जा ही गाने के ऊपर कर दिया. पहले आलापिये या ध्रुपदिये के नीचे बीनकार की गद्दी या आसन दरबार मे लगता था, पर मुहम्मद शाह रंगीले के ज़माने से बीनकार का आसन सबसे आगे लगने लगा और गायक (गवैया) को दूसरा दर्जा दिया गया.

जयपुर के सेनियो का इतिहास शुरू करने के पहले इस सवाल पर थोड़ा विचार कर लेना ज़रूरी है कि क्यों ऐसा हुआ, किन कारनो से गाना दब चला और तंत्र का दर्जा गाने के ऊपर हो चला.

तानसेन के ज़माने में और उनके भी पहले गाना ही मुख्य या ख़ास चीज़ थी. इस देश मे मुसलमानो के आने के पहले यहाँ राग गाने का रिवाज नही था. तरह तरह की जातियाँ, प्रबन्ध, छन्द और मूर्छनायें गाई जाती थीं. इनको गाने के लिये प्राणशक्ति या दम की जिस पर जितने क़ाबू की ज़रूरत होती थी, जितने प्राणा-

لے لیا اور اسی سے انکا بنس چلا۔ ان کا گھرانا ستار کے لئے مشہور ہے۔ ان میں سے کچھ استادوں نے بین بھی بجائی اور بہت اچھی بجائی، جیسے مراد علی خاں اور امیر خاں۔ وہ لوگ مہان بین کار ہوگئے ہیں اور بندے علی خاں یا وزیر خاں وغیرہ سے کسی معنی میں کم نہیں بلکہ زیادہ ہی نام ان کا ہوا تھا، پر اس گھرانے کی خاص چیز ستار ہی ہے۔

ہم دیکھتے ہیں کہ تان سین کے تینوں گھرانوں میں تنتر ہی خاص طور سے اپنایا گیا۔ تان سین خود گویے تھے، پر انکے بنس میں جتنے بڑے گنی ہوئے سبھوں نے باجے میں ہی مہارت حاصل کی اور اسی کو ہر طرح کی ترقی دی، یہاں تک کہ باجے (تنتر) کا درجہ ہی گانے کے اوپر کردیا۔ پہلے الاپیے یا دھرپدیے کے نیچے بینکار کی گدی یا آسن دربار میں لگتا تھا، پر محمد شاہ رنگیلے کے زمانے سے بینکار کا آسن سب سے آگے لگنے لگا اور گایک (گویے) کو دوسرا درجہ دیا گیا۔

جے پور کے سینیوں کا اتہاس شروع کرنے کے پہلے اس سوال پر تھوڑا وچار کر لینا ضروری ہے کہ کیوں ایسا ہوا، کن کارنوں سے گانا دب چلا اور تنتر کا درجہ گانے کے اوپر ہو چلا۔

تان سین کے زمانے میں اور انکے بھی پہلے گانا ہی مکھیہ یا خاص چیز تھی۔ اس دیش میں مسلمانوں کے آنے کے پہلے یہاں راگ گانے کا رواج نہیں تھا۔ طرح طرح کی جاتیاں، پربندھ، چھند اور مورچھنائیں گائی جاتی تھیں۔ انکو گانے کیلئے پران سکتی یا دم کی جس پر جتنے قابو کی ضرورت ہوتی تھی، جتنے پرانا

याम या हब्सेदम की साधना या रियाज़ की जरूरत होती थी, उसमें धीरे धीरे कमी होने लगी. गाना खुद एक बेहतरीन तरीक़े का प्राणायाम और योग है. प्राण (यानी दम) पर गायक को पूरा क़ाबू हासिल कर लेना होता था, और ऐसा करने के लिये, ख़ास तरह का योगियों का सा सादा रहन सहन, खान पान और ब्रह्मचर्य ज़रूरी होता था. बिना इसके दम पर, गले पर और अपनी आवाज़ पर पूरा क़ाबू हो ही नहीं सकता. इसके लिये पुराने ज़माने के ब्राह्मणों और ऋषि मुनियों ने बड़े कठोर यानी सख़्त नियम बना रक्खे थे जिनकी पाबन्दी एक ऊंचे दर्जे के गवैये के लिये ज़रूरी थी.

इस देस में मुसलमानी अमलदारी के साथ साथ, दरबारी वातावरण (आबोहवा) में गवैयो के लिये उन कड़े नियमों की पाबंदी ग़ैर मुमकिन हो चली. ऐशो आराम की जिंदगी का बोल-बाला हो चला. दरबारी गुनी—क्या हिंदू क्या मुसलमान—मुग़ल दरबार के उस ऐश-आराम वाली जिंदगी के असर से अपने को कैसे अलग रख सकते थे? धीरे धीरे उनका खान पान, रहन सहन, सब पर बादशाही और नवाबी रंग चढ़ चला. हमें दुख के साथ कहना पड़ता है कि दरबारी गुनियो में नशे (शराब) की शुरुआत भी दरबारी संसर्ग से ही हुई. सोहबत का असर पड़े बिना कैसे रह सकता है!

इन कारणों से पुराने हिंदू ज़माने का वह योगियों का आदर्श ओझल हो चला जिसके फल से प्राण पर वह क़ाबू न रह सका.

یا حبس دم کی سادھنا یا ریاض کی ضرورت ہوتی تھی، اُس دھیرے دھیرے کمی ہونے لگی. گانا خود ایک بہترین طریقے کا ایام اور یوگ ہے. پران (یعنی دم) پر گایک کو پورا قابو حاصل لینا ہوتا تھا، اور ایسا کرنے کے لئے، خاص طرح کا یوگیوں کا سادا رہن سہن، کھان پان اور برہمچریہ ضروری ہوتا تھا. اسکے دم پر، گلے پر اور اپنی آواز پر پورا قابو ہو ہی نہیں سکتا. اس کے لئے پُرانے زمانے کے برہمنوں اور رشی منیوں نے سے کٹھور یعنی سخت نیم بنا رکھے تھے جن کی پابندی ایک اونچے درجے کے گویے کے لئے ضروری تھی.

اس دیس میں مسلمانی عملداری کے ساتھ ساتھ، درباری واتاورن (آب وہوا) میں گویوں کے لئے اُن کڑے نیموں کی پابندی غیر ممکن ہو چلی. عیش و آرام کی زندگی کا بول بالا ہو چلا. درباری گنی — کیا ہندو کیا مسلمان — مغل دربار کے اُس عیش و آرام والی زندگی کے اثر سے اپنے کو کیسے الگ رکھ سکتے تھے؟ دھیرے دھیرے اُن کا کھان پان، رہن سہن سب پر بادشاہی اور نوابی رنگ چڑھ چلا. ہمیں دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ درباری گنیوں میں نشے (شراب) کی شروعات بھی درباری سنسرگ سے ہی ہوئی. صحبت کا اثر پڑے بنا کیسے رہ سکتا ہے!

ان کارنوں سے پُرانے ہندو زمانے کا وہ یوگیوں کا آدرش اوجھل ہو چلا جس کے پھل سے پران پر وہ قابو نہ رہ سکا. نتیجہ

का गाना इनके बूते के बाहर की बात हो चली. अलाउद्दीन खिलजी के जमाने मे ईरानी गुनी अमीर खुसरू ने नायक गोपाल के छन्दों की नक़ल तो एक बार जान पर खेलकर कर दी थी, पर वह खूब समझ गये थे कि यह आने वाली पीढ़ियो के बूते के बाहर का काम होगा. इस लिये पुराने हिन्दू संगीत को आसान बना देने की कोशिश उन्होंने की और इसमें बेहद कामयाबी उनको मिली. गाने में छः मात्रे का दादरा और चार और आठ मात्रे की क़ौवाली उन्होंने चलाई. इसी क़ौवाली ने ही आगे चलकर 'ख्याल' नाम की गायकी को जन्म दिया, जो कि हिन्दुस्तानी कंठ संगीत में इस वक़्त सब कुछ है. आलाप, धुरपद, छंद, प्रबंध, मूर्छना वग़ैरह दुनिया कब की भूल चुकी. उनके गाने के लायक़ ताकत दिल और दिमाग़ दोनो ही से आगे चलकर लोप होने लगा.

बाजे में बीन की जगह उन्होंने सितार ईजाद किया. फ़ारसी में 'सेह' के मानी 'तीन' के होते हैं. शुरू में सितार में तीन ही तार होते थे और बीन मे चार. अमीर खुसरू ने देखा कि बीन बजाने में भी हब्से दम और जिस्मानी ताक़त की बेहद जरूरत है. सबसे ज्यादा चित्त को एकाग्र (यानी एक ओर लगा देना) करना जरूरी है जो योग का ही दूसरा नाम है.

उन्होने समझ लिया कि यह तो पूरी तपस्या है और हर शख्स इसे नहीं कर सकेगा. इस लिये गाने बजाने मे से उन्होने, नीरस और तपस्या वाला हिस्सा कम से कम और दिलचस्प और रंगीन हिस्से को ज्यादा से ज्यादा बढ़ा देने की कोशिश की. इसमे वह कामयाब हुये.

کا گانا ان کے بوتے کے باہر کی بات ہو چلی۔ علاءالدین خلجی کے زمانے میں ایرانی گنی امیر خسرو نے نایک گوپال کے چھندوں کی نقل تو ایک بار جان پر کھیل کر کر دی تھی، پر وہ خوب سمجھ گئے تھے کہ یہ آنے والی پیڑھیوں کے بوتے کے باہر کا کام ہوگا۔ اس لئے پرانے ہندو سنگیت کو آسان بنا دینے کی کوشش انھوں نے کی اور اس میں بیحد کامیابی انکو ملی۔ گانے میں چھ ماترے کا دادرا اور چار اور آٹھ ماترے کی قوالی انھوں نے چلائی۔ اسی قوالی نے ہی آگے چل کر 'خیال' نام کی گایکی کو جنم دیا، جو کہ ہندستانی کنٹھ سنگیت میں اس وقت سب کچھ ہے۔ آلاپ، دھرپد، چھند، پربند، مورچھنا، وغیرہ دنیا کب کی بھول چکی۔ ان کو گانے کے لائق طاقت دل اور دماغ دونوں ہی سے آگے چل کر لوپ ہونے لگی۔

باجے میں بین کی جگہ انھوں نے ستار ایجاد کیا۔ فارسی میں 'سہ' کے معنی 'تین' کے ہوتے ہیں۔ شروع میں ستار میں تین ہی تار ہوتے تھے اور بین میں چار۔ امیر خسرو نے دیکھا کہ بین بجانے میں بھی حبس دم اور جسمانی طاقت کی بیحد ضرورت ہے۔ سب سے زیادہ چت کو ایکاگر (یعنی ایک اور لگا دینا) کرنا ضروری ہے جو یوگ کا ہی دوسرا نام ہے۔

انھوں نے سمجھ لیا کہ یہ تو پوری تپسیا ہے اور ہر شخص اسے نہیں کر سکے گا۔ اس لئے گانے بجانے میں سے انھوں نے، نیرس اور تپسیا والا حصہ کم سے کم اور دلچسپ اور رنگین حصے کو زیادہ بڑھا دینے کی کوشش کی۔ اس میں وہ کامیاب ہوئے۔

उनकी इस कोशिश से प्राचीन हिन्दू संगीत की तरक़्क़ी हुई या नुक़सान, इस बहस में हम यहाँ नहीं पड़ना चाहते. पर इतिहास हमें बताता है कि उनकी ईजाद की हुई इन चीज़ों को ख़ानदानी पुराने गुनी निहायत हिक़ारत की नज़र से देखते थे. यहाँ तक कि अगले ५०० बरस तक ख़याल के गाने, सितार और तबले को दरबार मे जगह नहीं मिल सकी. मृदंग या पखावज (जो बीन और धुरपद आलाप की संगत के लिये ज़रूरी होती है) की जगह तबला भी उन्ही की ईजाद है, और इन चीज़ो के गाने बजाने वाले लुके छिपे लोगो का और अपना जी बहलाया किये, पर दरबार या गुनियो के जलसो मे यह अछूत ही समझे गये और नवाब वाजिद अली शाह के ज़माने यानी उन्नीसवीं सदी के आख़ीर तक इन चीज़ों के दरबार में जगह पाने के प्रमाण नहीं मिलते. मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार मे दरबारी बीनकार नेमत ख़ां उर्फ़ 'सदारंग' और बिलास ख़ाँ के बंस के गुलाब ख़ाँ दरबारी बीनकार थे. इन्ही सदारंग ने ही सबसे बड़ी तादाद में ख़्याल रचे. इनका आसन पहले गुलाब ख़ाँ के पीछे लगा करता था जिसका इन्हें बेहद रंज था. दरबार मे रबाबी ख़ानदान के गुनियों की इज़्ज़त ज़्यादा हुआ करती थी. इसकी ख़ास वजह एक तो यह थी कि यह तानसेन के दधियाली ख़ानदान से थे और बीनकार मिस्री सिंह की औलाद थे जो तानसेन के दामाद होने की वजह से अकबरी दरबार में हमेशा तानसेन के पीछे ही बैठा करते थे. वह गुरु के रूप में भी तानसेन की इज़्ज़त किया करते थे. बस यही परंपरा मुग़ल दरबार में आगे बराबर चलती गई. मुहम्मदशाह

ان کی اس کوشش سے پراچین ہندو سنگیت کی ترقی ہوئی یا نقصان بحث میں ہم یہاں نہیں پڑنا چاہتے . پر اتہاس ہمیں بتاتا کہ اُن کی ایجاد کی ہوئی ان چیزوں کو خاندانی پُرانے گنی حقارت کی نظر سے دیکھتے تھے . یہاں تک کہ اگلے ۵۰۰ تک خیال کے گانے ، ستار اور طبلے کو دربار میں جگہ نہیں سکی . مردنگ یا پکھاوج (جو بین اور دھرپد آلاپ کی سنگت لیے ضروری ہوتی ہے) کی جگہ طبلہ بھی انھیں کی ایجاد ہے ، ان چیزوں کے گانے بجانے والے لکے چھپے لوگوں کا اور اپنا جی لایا کئے ، پر دربار یا گنیوں کے جلسوں میں یہ اچھوت ہی سمجھے گئے نواب واجد علی شاہ کے زمانے یعنی انیسویں صدی کے آخر تک ان چیزوں کے دربار میں جگہ پانے کے پرمان نہیں ملتے . محمد شاہ کے دربار میں درباری بینکار نعمت خاں عرف 'سدارنگ' بلاس خاں کے بنس کے گلاب خاں درباری بینکار تھے . انھیں سدارنگ نے ہی سب سے بڑی تعداد میں خیال رچے . انکا آسن پہلے گلاب خاں کے پیچھے لگا کرتا تھا جس کا انھیں بیحد رنج تھا . دربار میں ربابی خاندان کے گنیوں کی عزت زیادہ ہوا کرتی تھی . اس کی خاص وجہ ایک یہ تھی کہ یہ تان سین کے ددھیالی خاندان سے تھے بین کار مصری سنگھ کی اولاد تھے جو تان سین کے داماد ہونے کی وجہ سے اکبری دربار میں ہمیشہ تان سین کے پیچھے ہی بیٹھا کرتے ۔ یہ گرو کے روپ میں بھی تان سین کی عزت کیا کرتے تھے . بس پرمپرا مغل دربار میں آگے برابر چلتی گئی . محمد شاہ

रंगीले के ज़माने तक. पर इनके ज़माने में नेमत खां ने इस परंपरा को बदल दिया. दूसरी वजह यह थी कि आदिकाल से ही गवैया तंत्रकार से बड़ा माना जाता रहा है क्योंकि बाजे की ईजाद गाने की नक़्ल या संगत के लिये और उसे सहारा देने ही के लिये शुरू शुरू में हुई थी.* पर सदारंग ने यह साबित करके दिखा दिया कि बीनकार गवैये से बड़ी चीज़ है. गुलाब ख़ाँ को अपने गाने पर बड़ा नाज़ था. सदारंग ने दरबार से दो बरस की मोहलत ली और दो भिखमंगे के लड़कों को पकड़ कर गाना सिखाना शुरू किया. दो बरस तालीम देकर उन्हें दरबार में गवाया. यह दिन और रात के सारे राग गा गये. एक का नाम सूरज ख़ाँ उन्होने रख दिया था जिसने दिन के सारे राग सुना दिये और दूसरे का चाँद ख़ाँ जिसने रात के तमाम राग सही सही सुना दिये, इतने सही कि गुलाब ख़ाँ कहीं ग़लती नहीं पकड़ सके. ऐसी हालत में मजबूरन सब को मानना पड़ा कि बीनकार गाने का भी उस्ताद होता है. पर सदारंग ने जो बात साबित की वह यह थी कि गाने में जो कुछ है

---

*संगीत की दुनिया मे पहले बाजे की ईजाद हुई या गाने की इस बारे में भी दो रायें हैं. यह मान लेने पर भी कि सब से पहले इन्सान ने गाने की ही कोशिश की होगी न कि बजाने की, लेखक यह साबित कर चुका है कि हिन्दुस्तानी संगीत के सात स्वर—स रे ग म प ध और नि सब से पहले बीन के तार की लंबाई और उसकी आंदोलनसंख्या के अनुसार ही बाँधे गये. देखिये लेखक का लेख—"श्रुति और स्वर"—'संगीत' के विशेषांक मे.

رنگیلے کے زمانے تک۔ پر ان کے زمانے میں نعمت خاں نے اس پرمپرا کو بدل دیا۔ دوسری وجہ یہ تھی کہ آدی کال سے ہی گویا تنتر کار سے بڑا مانا جاتا رہا ہے کیونکہ باجے کی ایجاد گانے کی نقل یا سنگت کے لئے اور اُسے سہارا دینے ہی کے لئے شروع شروع میں ہوئی تھی*۔ پر سدا رنگ نے یہ ثابت کر کے دکھا دیا کہ بین کار گوّیے سے بڑی چیز ہے۔ گلاب خاں کو اپنے گانے پر بڑا ناز تھا۔ سدا رنگ نے دربار سے دو برس کی مہلت لی اور دو بھک منگے کے لڑکوں کو پکڑ کر گانا سکھانا شروع کیا۔ دو برس تعلیم دے کر انھیں دربار میں گوایا۔ یہ دن اور رات کے سارے راگ گا گئے۔ ایک کا نام سورج خاں انھوں نے رکھ دیا تھا جس نے دن کے سارے راگ سُنا دئے اور دوسرے کا چاند خاں جس نے رات کے تمام راگ صحیح صحیح سُنا دئے، اتنے صحیح کہ گلاب خاں کہیں غلطی نہیں پکڑ سکے، ایسی حالت میں مجبوراً سب کو ماننا پڑا کہ بین کار گانے کا بھی استاد ہوتا ہے۔ پر سدا رنگ نے جو بات ثابت کی وہ یہ تھی کہ گانے میں جو کچھ ہے

---

*سنگیت کی دنیا میں پہلے باجے کی ایجاد ہوئی یا گانے کی اس بارے میں بھی دو رائیں ہیں۔ یہ مان لینے پر بھی کہ سب سے پہلے انسان نے گانے کی ہی کوشش کی ہوگی نہ کہ بجانے کی، لیکھک یہ ثابت کر چکا ہے کہ ہندستانی سنگیت کے سات سور سا رے گا ما پا دھا اور نی سب سے پہلے بین کے تار کی لمبائی اور اُس کی اندولن سنکھیا کے انوسار ہی باندھے گئے۔ دیکھئے لیکھک کا لیکھ — "شرُتی اور سور" — 'سنگیت' کے وشیشانک میں۔

वह पूरा सीख लेने के बाद ही आदमी को बीन पर हाथ रखने का हक़ हासिल हो सकता है. दूसरी बात यह भी साबित की कि तंत्रकार गवैये की सब हरकतों को अपने बाजे पर अदा कर सकता है और साथ ही बहुत सी ऐसी हरकतें, ऐसे अलंकार भी बजाता है जिनका गले से अदा होना ग़ैर मुमकिन है, जैसे झाला, ठोंक, कतरझार, तारपरन वग़ैरा. इस तरह सब को मजबूर होकर मानना पड़ा कि बीनकार का दर्जा सब के ऊपर है.

पुराने हिंदू युग के गाने में जो गंभीरता, गहराई और मुश्किलात थीं वह अब बूते के बाहर की चीज़ें समझ कर भुला दी गई थीं, कोई उनको करने वाला नहीं रह गया था. न तो वैसी कठोर साधना करने के लिये कोई तैयार था. और फिर दुनिया का एक दस्तूर भी है कि दिन पर दिन लोगों का रुजहान आसान, सहूलियत और कम वक़्त मे हासिल की जा सकने वाली चीज़ों की ओर ही होता है. सब बात में 'जल्दी' और 'आसान' का ख़याल पहले किया जाता है. कुछ इस वजह से भी गाने की ओर ध्यान कम दिया गया.

एक और वजह है. पुराने गीत ज़्यादातर संस्कृत में थे. उसका शास्त्र समूचा संस्कृत में था. यह एक बड़े अफ़सोस की बात हुई कि मुसलमान गवैयों ने संस्कृत साहित्य को पढ़ना मज़हबी या और कुछ कारनों से क़ाबिल एतराज़ माना. इस का नतीजा यह तो हुआ ही कि हिन्दू संगीत की बहुत सी बारीकियाँ, यह न जान पाये, उसकी पूरी गहराई तक न [illegible]

وہ پورا سیکھ لینے کے بعد ہی آدمی کو بین پر ہاتھ رکھنے کا حق حاصل ہو سکتا ہے۔ دوسری بات یہ بھی ثابت کی کہ تنترکار گویے کی سب حرکتوں کو اپنے باجے پر ادا کر سکتا ہے اور ساتھ ہی بہت سی ایسی حرکتیں، ایسے النکار بھی بجاتا ہے جن کا گلے سے ادا ہونا غیر ممکن ہے، جیسے جھالا، ٹھونک، کترجھار، تار پرن وغیرہ۔ اس طرح سب کو مجبور ہو کر ماننا پڑا کہ بینکار کا درجہ سب سے اوپر ہے۔

پرانے ہندو یگ کے گانے میں جو گمبھیرتا، گہرائی اور مشکلات تھیں وہ اب بوتے کے باہر کی چیزیں سمجھ کر بھلا دی گئی تھیں، کوئی ان کو کرنے والا نہیں رہ گیا تھا۔ نہ تو ویسی کٹھور سادھنا کرنے کے لیے کوئی تیار تھا۔ اور پھر دنیا کا ایک دستور بھی ہے کہ دن پر دن لوگوں کا رجحان آسان، سہولیت اور کم وقت میں حاصل کی جا سکنے والی چیزوں کی اور ہی ہوتا ہے۔ سب بات میں "جلدی" اور "آسان" کا خیال پہلے کیا جاتا ہے۔ کچھ اس وجہ سے بھی گانے کی اور دھیان کم دیا گیا۔

ایک اور وجہ ہے۔ پرانے گیت زیادہ تر سنسکرت میں تھے۔ ان کا شاستر سموچا سنسکرت میں تھا۔ یہ ایک بڑے افسوس کی بات ہوئی کہ مسلمان گویوں نے سنسکرت ساہتیہ کو پڑھنا مذہبی یا اور کچھ کارنوں سے قابل اعتراض مانا۔ اس کا نتیجہ یہ تو ہوا ہی کہ ہندو سنگیت کی بہت سی باریکیاں یہ نہ جان [illegible]

करने से यह महरूम रह गये. हमारा ख़याल है कि हिन्दू संगीत को जितने प्रेम से मुसलमान गुनियों ने अपनाया वैसा ही अगर संस्कृत अदब और ज़बान से भी प्रेम किया होता तो आगे चल कर आपस की यह ना इत्तेफ़ाक़ी न हुई होती जिसकी वजह से हिन्दुस्तान में पिछले दिनों इतने बड़े पैमाने पर दर्दनाक घटनायें हो गईं.

ख़ैर, यह तो हुआ ही पर संगीत के मानी में बड़ा भारी नुक़सान यह हुआ कि संगीत शास्त्र सारा भुला दिया गया जो कि समूचा संस्कृत की किताबों में ही था और न उसको अरबी या फ़ारसी में तरजुमा करने की ही कोशिश की गई. यह मानी हुई बात है कि संगीत जैसी कला जिसका सारा दारोमदार हवा में बाँधे हुये सात सुरों पर ही मुनहसर है, बिना 'थ्योरी' या शास्त्र की बुनियाद के ज़्यादा दिन नहीं टिक सकती. नतीजा यह हुआ कि जितने घराने उतने ही संगीत के मत हो चले. हर संगीत घराना अपने मनमाने ढंग से रागों को गाने और बनाने बिगाड़ने लगा. संगीत को 'आसान' बनाने की नींव जो अमीर ख़ुसरू साहब डाल चुके थे वह जड़ पकड़ती गई, यहाँ तक कि 'अपनी अपनी डफली और अपना अपना राग' वाली कहावत एक हद तक गायकी की दुनिया मे बरती जाने लगी. क़वायद या शास्त्रीय नियमों के बिना किसी भी साइंस का जो हाल होता है वही पुरानी संगीत विद्या का हुआ, ख़ासकर कंठ या गले के संगीतका.

इसके जो कुछ नतीजे हुये उनमे एक यह भी था कि मुसलमान गुनियों को गाने की बनिस्बत बजाने में ज़्यादा सहूलियत मालूम हुई. ऐसी हालत में गाने की अवनति (तनज़्ज़ुली) और तंत्र की

کرنے سے یہ محروم رہ گئے۔ ہمارا خیال ہے کہ ہندو سنگیت کو جتنے پریم سے مسلمان گنیوں نے اپنایا ویسا ہی اگر سنسکرت ادب اور زبان سے بھی پریم کیا ہوتا تو آگے چل کر آپس کی یہ نااتفاقی نہ ہوئی ہوتی جس کی وجہ سے ہندستان میں پچھلے دنوں اتنے بڑے پیمانے پر دردناک گھٹنائیں ہو گئیں۔

خیر یہ تو ہوا ہی پر سنگیت کے معنی میں بڑا بھاری نقصان یہ ہوا کہ سنگیت شاستر سارا بھلا دیا گیا جو کہ سموچا سنسکرت کی کتابوں میں ہی تھا اور نہ اس کو عربی یا فارسی میں ترجمہ کرنے کی ہی کوشش کی گئی۔ یہ مانی ہوئی بات ہے کہ سنگیت جیسی کلا جس کا سارا دارومدار ہوا میں بندھے ہوئے سات سُروں پر ہی منحصر ہے، بنا 'تھیوری' یا شاستر کی بنیاد کے زیادہ دن نہیں ٹک سکتی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جتنے گھرانے اتنے ہی سنگیت کے مت ہو چلے۔ ہر سنگیت گھرانا اپنے من مانے ڈھنگ سے راگوں کو گانے اور بنانے بگاڑنے لگا۔ سنگیت کو 'آسان' بنانے کی نیو جو امیر خسرو صاحب ڈال چکے تھے وہ جڑ پکڑتی گئی، یہاں تک کہ اپنی اپنی ڈفلی اور اپنا اپنا راگ' والی کہاوت ایک حد تک گایکی کی دنیا میں برتی جانے لگی۔ قواعد یا شاستریہ نیموں کے بنا کسی بھی سائنس کا جو حال ہوتا ہے وہی پرانی سنگیت ودیا کا ہوا، خاصکر کنٹھ یا گلے کے سنگیت کا۔

اس کے جو کچھ نتیجے ہوئے ان میں ایک یہ بھی تھا کہ مسلمان گنیوں کے گانے کی بہ نسبت بجانے میں زیادہ سہولیت معلوم ہوئی۔ ایسی حالت میں گانے کی اونتی (تنزلی) اور تنتر کی

उन्नति या तरक़्क़ी लाज़िमी थी. क्योंकि तन्त्र में भाषा, कविता और साहित्य का सवाल ही नहीं उठता. वहाँ तो सिर्फ़ स्वर से मतलब रह जाता है.

फिर यंत्र या बाजे पर जितनी तरह की 'तरकीबें' 'अलंकार' और विचित्रतायें पैदा की जा सकती हैं उतनी गले से नहीं. पर दोनों बातें हैं. एक ओर तो गले का बड़प्पन इस बात से है कि गवैया अपने गले को मर्ज़ी के मुताबिक घुमा फिरा कर मनमानी हरकतें कर सकता है और इसी से गवैया 'बादशाह' कहलाता है, पर साथ ही इन्सानी गले की सीमाएं या हदें भी हैं. उसकी एक नपी तुली 'औक़ात' या दायरा है. उसकी एक ख़ास हद तक ही क़द दौड़ है जिसके बाहर वह नहीं जा सकता. पर यंत्र या बाजे में इस तरह की कोई क़ैद नहीं है. बाजा एक बेजान चीज है, उसमें न थकावट है, न नपी तुली उसकी क़द दौड़ है. सब तरह की बारीकियाँ, अलंकार, खटके, मुरकियाँ, मोंड़, सूत, आँस, झाले, जमजमे, तानें, गमकें, आंदोलन, कृंतन, जी भर और जब तक जी चाहे करते चले जाइये. लयविस्तार, स्वरविस्तार, बढ़त वग़ैरह करने की बेइन्तिहा गुंजायश तंत्र में है. इसी से बाजे की तरक़्क़ी इतनी ज्यादा हुई. पर बाजा है तो बेजान ही. कितना ही हो, दोनों की तासीर में बहुत बड़ा फ़र्क़ है. मिसाल के लिये कह सकते हैं कि सिनेमा (ख़ामोश या मूक) और थियेटर की तासीर में जो फ़र्क़ होता है, या यों कहिये कि मोटर और घोड़े की सवारी का फ़र्क़. मोटर में बहुत बहुत सुभीते हैं. पर घोड़े की जानदार सवारी का

(१४९)

...یا ترقی لازمی تھی۔ کیونکہ تنتر میں بھاشا، کویتا اور ساہتیہ کا سوال ہی نہیں اٹھتا۔ وہاں تو صرف سور سے مطلب رہ جاتا ہے۔

پھر تنتر یا باجے پر جتنی طرح کی 'ترکیبیں'، 'النکار' اور وچترتائیں پیدا کی جا سکتی ہیں اتنے گلے سے نہیں۔ پر دونوں باتیں ہیں۔ ایک اور تو گلے کا بڑپن اس بات سے ہے کہ گویّا اپنے گلے کو مرضی کے مطابق گھما پھرا کر من مانی حرکتیں کر سکتا ہے اور اسی سے گویّا 'بادشاہ' کہلاتا ہے، پر ساتھ ہی انسانی گلے کی سیمائیں یا حدیں بھی ہیں۔ اس کی ایک نپی تلی 'اوقات' یا دائرہ ہے۔ اس کی ایک خاص حد تک ہی قد دوڑ ہے جس کے باہر وہ نہیں جا سکتا۔ پر تنتر یا باجے میں اس طرح کی کوئی قید نہیں ہے۔ باجا ایک بے جان چیز ہے، اس میں نہ تھکاوٹ ہے، نہ نپی تلی اس کی قد دوڑ ہے۔ سب طرح کی باریکیاں، النکار، کھٹکے، مرکیاں، موڑ، سوت، آمس، جھالے، زمزمے، تانیں، گمکیں، آندولن، کرنتن، جی بھر اور جب تک جی چاہے کرتے چلے جائیے۔ لے وستار، سور وستار، بڑھت وغیرہ کرنے کی بے انتہا گنجائش تنتر میں ہے، اسی سے باجے کی ترقی اتنی زیادہ ہوئی۔ پر باجا ہے تو بیجان ہی۔ کتنا ہی ہو، دونوں کی تاثیر میں بہت بڑا فرق ہے۔ مثال کیلئے وہ کہہ سکتے ہیں کہ سنیما (خاموش یا موک) اور تھیٹر کی تاثیر میں جو فرق ہوتا ہے یا یوں کہیئے کہ موٹر اور گھوڑے کی سواری کا فرق۔ ... پر گھوڑے کی جاندار سواری

तरक़्क़ी हो गई और दिन पर दिन होती जा रही है, नतीजा यह हुआ कि थियेटर करना या घोड़े की सवारी करना लोग भूल ही चले. यही हाल गाने और बजाने की दुनिया में हुआ.

यंत्र संगीत में ख़ास कर 'द्रुत' या 'जल्द' या 'तैयारी' के अंग के लिये बेहद गुंजायश है और इसी से महफ़िल में धाक जमती है. गले में इतना नहीं हो सकता. साथ ही गला अक्सर बेसुरा हो जाता है, बैठ जाता है, या ज़ुकाम खाँसी, ख़ारिश वग़ैरा की वजह से ठीक काम नहीं देता. पर यंत्र को एक बार ठीक सुर में मिला लेने पर फिर कोई झंझट नहीं, घंटों बजाते चले जाइये. इन्हीं सब झंझटों की वजह से सेनिये तंत्र की ओर ही ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देने लगे. बात यहाँ तक पहुँची कि गाना और गाने की ज़रूरत सिर्फ़ वहीं तक रह गई जहाँ तक कि तंत्र में महारत हासिल करने के लिये लाज़िमी था. सेनी उस्ताद लोग पुराने गाने घर में बैठ कर दुहरा लिया करते कि रागों का चलन और स्वरों का बर्ताव भूल न जायँ, और सीखने वालों को याद भी करा दिया करते थे, पर ख़ुद कभी जलसों में गाने को राज़ी नहीं होते थे, यंत्र ही बजाते थे. और फिर रियाज़ करके, माँज कर इस क़दर दिलकश बना रखा था कि इनके बजाने में सुनने वालों को गाने से कम आनन्द भी नहीं मिलता था.

इन्हीं कारणों से सत्तरहवीं से लेकर उन्नीसवीं सदी तक के युग को हम गाने की अवनति या तनज़्ज़ुली और तंत्र की उन्नति या तरक़्क़ी का युग सकते हैं.

ترقی ہو گئی ہے اور دن پر دن ہوتی جا رہی ہے، نتیجہ یہ ہوا کہ تھیئٹر کرنا یا گھوڑے کی سواری کرنا لوگ بھول ہی چلے۔ یہی حال گانے اور بجانے کی دنیا میں ہوا۔

ینتر سنگیت میں خاص کر 'دُرت'، یا 'جلد'، یا 'تیاری' کے انگ کے لئے بے حد گنجائش ہے اور اسی سے محفل میں دھاک جمتی ہے۔ گلے میں اتنا نہیں ہو سکتا۔ ساتھ ہی گلا اکثر بے سرا ہو جاتا ہے، بیٹھ جاتا ہے، یا زکام کھانسی، خارش وغیرہ کی وجہ سے ٹھیک کام نہیں دیتا۔ پر ینتر کو ایک بار ٹھیک سُر میں ملا لینے پر پھر کوئی جھنجھٹ نہیں، گھنٹوں بجاتے چلے جائیے۔ انہیں سب جھنجھٹوں کی وجہ سے سینیئے تنتر کی اور ہی زیادہ سے زیادہ دھیان دینے لگے۔ بات یہاں تک پہنچی کہ گانا اور گانے کی ضرورت صرف وہیں تک رہ گئی جہاں تک کہ تنتر میں مہارت حاصل کرنے کے لئے لازمی تھا۔ سینی استاد لوگ پرانے گانے گھر میں بیٹھ کر دہرا لیا کرتے کہ راگوں کا چلن اور سوروں کا برتاؤ بھول نہ جائیں اور سیکھنے والوں کو یاد بھی کرا دیا کرتے تھے، پر خود کبھی جلسوں میں گانے کو راضی نہیں ہوتے تھے، ینتر ہی بجاتے تھے۔ اور پھر ریاض کرکے، مانجھ کر اس قدر دلکش بنا رکھا تھا کہ انکے بجانے میں سننے والوں کو گانے سے کم آنند بھی نہیں ملتا تھا۔

انہیں کارنوں سے سترھویں سے لے کر انیسویں صدی کے یُگ کو ہم گانے کی اونتی یا تنزلی اور تنتر کی اُنتی یا ترقی کا یُگ کہہ سکتے ہیں۔

हैदराबाद की कुछ बातें

(भाई वजाहत अली सन्दीलवी)

मेरे एक दोस्त मौलवी साहब थे जो कांग्रेस से ख़फ़ा थे लेकिन गांधी जी के बड़े मानने वालों में थे. सदा कहा करते कि जिनाह कुछ भी कहे लेकिन गांधी धुन का पक्का और क़ौल का सच्चा है. वह किसी की बुराई नहीं चाहता और उसके लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों बराबर हैं. लेकिन यह मौलवी साहब पुराने ख़याल के आदमी थे और कई बातों के बारे में उनके ख़याल ग़लत तौर पर दिल में जम गये थे जिनका ठीक होना मुश्किल था. जैसे वह हैदराबाद को इस्लामी रियासत कहते और जब कभी निज़ाम के ख़िलाफ़ कोई बात कही जाती तो उनको बहुत बुरी लगती. मैं देखता हूँ कि उनकी सी ग़लत फ़हमी हमारे बहुत से दूसरे मुसलमान भाइयों को भी है. कुछ दिन हुए यह मौलवी साहब पाकिस्तान चले गये हैं लेकिन उनके जाने से पहले हैदराबाद के बारे में उनसे जो बात चीत हुई थी उसका ज़िक्र भी दिलचस्पी से ख़ाली नहीं है.

मौलवी साहब—हैदराबाद एक इस्लामी रियासत है.

मैं—वह कैसे ?

मौलवी साहब—वाह साहब, आप जानते नहीं कि निज़ाम हैदराबाद मुसलमान हैं.

حیدر آباد کی کچھ باتیں

(بھائی وجاہت علی سندیلوی)

میرے ایک دوست مولوی صاحب تھے جو کانگریس سے خفا تھے لیکن گاندھی جی کے بڑے ماننے والوں میں تھے۔ سدا کہا کرتے کہ جناح کچھ بھی کہے لیکن گاندھی دھن کا پکا اور قول کا سچا ہے۔ وہ کسی کی برائی نہیں چاہتا اور اس کے لئے ہندو اور مسلمان دونوں برابر ہیں۔ لیکن یہ مولوی صاحب پرانے خیال کے آدمی تھے اور کئی باتوں کے بارے میں ان کے خیال غلط طور پر دل میں جم گئے تھے جن کا ٹھیک ہونا مشکل تھا۔ جیسے وہ حیدرآباد کو اسلامی ریاست کہتے اور جب کبھی نظام کے خلاف کوئی بات کہی جاتی تو انکو بہت بری لگتی۔ میں دیکھتا ہوں کہ ان کی سی غلط فہمی ہمارے بہت سے دوسرے مسلمان بھائیوں کو بھی ہے۔ کچھ دن ہوئے یہ مولوی صاحب پاکستان چلے گئے ہیں لیکن ان کے جانے سے پہلے حیدرآباد کے بارے میں ان سے جو بات چیت ہوئی تھی اُسکا ذکر بھی دلچسپی سے خالی نہیں ہے۔

مولوی صاحب — حیدرآباد ایک اسلامی ریاست ہے۔

میں — وہ کیسے؟

مولوی صاحب — واہ صاحب، آپ جانتے نہیں کہ نظام

क्योंकि हमारा तहसीलदार एक मुसलमान है, और हमारा मिशन स्कूल भी एक इस्लामी स्कूल है क्योंकि उसका हेडमास्टर एक मुसलमान है और आज से कुछ महीने पहले हिन्दुस्तान एक ईसाई मुल्क था क्योंकि इसका गवर्नर जनरल एक ईसाई था.

मौलवी साहब— यह जेहालत की बातें बन्द कीजिये. दुनिया जानती है कि हैदराबाद एक इस्लामी रियासत है.

मैं—क्या वहाँ इस्लामी क़ानून चलते हैं ?

मौलवी साहब—हाँ, थोड़े बहुत तो चलते ही हैं.

मैं—थोड़े बहुत तो हर जगह चलते हैं. आप कोई ऐसा इस्लामी क़ानून बताइये जो हिन्दुस्तान मे न चलता हो और सिर्फ हैदराबाद मे ही चलता हो.

मौलवी साहब—आप तो मेरा इम्तहान लेने लगे. अब मुझे हैदराबाद के सब क़ानून क्या मालूम ?

मैं—हैदराबाद को इस्लामी रियासत कहने से पहले आपको कम से कम यह तो जान ही लेना चाहिये था कि वहाँ किस क़िस्म के क़ानून चलते हैं.

मौलवी साहब—मेरे लिये यह जान लेना काफ़ी है कि वहाँ का हाकिम मुसलमान है.

मैं—अच्छा, इसी को लीजिये. निज़ाम की गद्दी मौरूसी हैं न ? इस्लाम ने इसकी कहाँ इजाज़त दी है कि इस तरह बाप के बाद बेटा ही हाकिम बने जैसे निज़ाम बने हैं. इस्लाम ने तो कहा है कि हाकिम जनता का चुना हुआ सबसे अच्छा आदमी होना चाहिये.

کیونکہ ہمارا تحصیل دار ایک مسلمان ہے، اور ہمارا مشن اسکول بھی ایک اسلامی اسکول ہے کیونکہ اُس کا ہیڈ ماسٹر ایک مسلمان ہے اور آج سے کچھ مہینے پہلے ہندستان ایک عیسائی ملک تھا کیونکہ اُس کا گورنر جنرل ایک عیسائی تھا۔

مولوی صاحب — یہ جہالت کی باتیں بند کیجیے۔ دنیا جانتی ہے کہ حیدرآباد ایک اسلامی ریاست ہے۔

میں — کیا وہاں اسلامی قانون چلتے ہیں۔

مولوی صاحب — ہاں، تھوڑے بہت تو چلتے ہی ہیں۔

میں — تھوڑے بہت تو ہر جگہ چلتے ہیں۔ آپ کوئی ایسا اسلامی قانون بتائیے جو ہندستان میں نہ چلتا ہو اور صرف حیدرآباد میں ہی چلتا ہو۔

مولوی صاحب — آپ تو میرا امتحان لینے لگے۔ اب مجھے حیدرآباد کے سب قانون کیا معلوم؟

میں — حیدرآباد کو اسلامی ریاست کہنے سے پہلے آپ کو کم سے کم یہ تو جان ہی لینا چاہیے تھا کہ وہاں کس قسم کے قانون چلتے ہیں۔

مولوی صاحب — میرے لئے یہ جان لینا کافی ہے کہ وہاں کا حاکم مسلمان ہے۔

میں — اچھا، اسی کو لیجیے۔ نظام کی گدّی موروثی ہے نہ؟ اسلام نے اسکی کہاں اجازت دی ہے کہ اس طرح باپ کے بعد بیٹا ہی حاکم بنے جیسے نظام بنے ہیں۔ اسلام نے تو کہا ہے کہ حاکم جنتا کا چنا ہوا سب سے اچھا آدمی ہونا چاہیے۔

मौलवी साहब—तो इस तरह हिन्दुस्तान में मुग़ल सलतनत भी इस्लामी हुकूमत नहीं थी ?

मैं—बेशक ! मुग़ल सलतनत को इस्लामी हुकूमत कहना सख़्त ग़लती है.

मौलवी साहब—मैं इस बाल की खाल निकालने में नहीं पड़ता. कुछ भी हो. हैदराबाद में निज़ाम की हुकूमत से वहाँ के मुसलमानों को फ़ायदा है. इससे किसी को भी इनकार नहीं हो सकता.

मैं—क्या हैदराबाद में मुसलमानों से दूसरी प्रजा के मुक़ाबले में कम टैक्स लिया जाता है ?

मौलवी साहब— यह मैं नहीं जानता. हाँ यह ज़रूर जानता हूँ कि हैदराबाद के मुसलमान दूसरी जगह के मुसलमानो से अच्छी हालत में हैं.

मैं—वह कैसे ? क्या आपने हैदराबाद में मुसलमानों को भीक माँगते नहीं देखा ? क्या वहाँ ग़रीब मुसलमान आपको नहीं दिखाई दिये ? क्या वहाँ के सब मुसलमान सेठ और साहूकार ही हैं ? सिर्फ़ इतनी सी बात है कि वहाँ सरकारी नौकरियाँ ज्यादातर मुसलमानों को ही मिलती हैं... ....

मौलवी साहब—(बात काट कर) आख़िर तुमको भी मानना ही पड़ा. सच का बोल बाला हो. मैं कहता हूँ कि यही क्या कम है कि हैदराबाद में सरकारी नौकरियाँ ज़्यादातर मुसलमानों को ही मिलती हैं.

मैं—लेकिन आप एक सच्चे मुसलमान बन कर इस पर

(५२)

مولوی صاحب — تو اس طرح ہندستان میں مغل سلطنت بھی اسلامی حکومت نہیں تھی؟

میں — بیشک! مغل سلطنت کو اسلامی حکومت کہنا سخت غلطی ہے۔

مولوی صاحب — میں اس بال کی کھال نکالنے میں نہیں پڑتا کچھ بھی ہو۔ حیدرآباد میں نظام کی حکومت سے وہاں کے مسلمانوں کو فائدہ ہے۔ اس سے کسی کو بھی انکار نہیں ہو سکتا۔

میں — کیا حیدرآباد میں مسلمانوں سے دوسری پرجا کے مقابلے میں کم ٹیکس لیا جاتا ہے؟

مولوی صاحب — یہ میں نہیں جانتا۔ ہاں یہ ضرور جانتا ہوں کہ حیدرآباد کے مسلمان دوسری جگہ کے مسلمانوں سے اچھی حالت میں ہیں۔

میں — وہ کیسے؟ کیا آپنے حیدرآباد میں مسلمانوں کو بھیک مانگتے نہیں دیکھا؟ کیا وہاں غریب مسلمان آپ کو نہیں دکھائی دئیے؟ کیا وہاں کے سب مسلمان سیٹھ اور ساہوکار ہی ہیں؟ صرف اتنی سی بات ہے کہ وہاں سرکاری نوکریاں زیادہ تر مسلمانوں کو ہی ملتی ہیں ......

مولوی صاحب — (بات کاٹ کر) آخر تم کو بھی ماننا ہی پڑا۔ سچ کا بول بالا ہو۔ میں کہتا ہوں کہ یہی کیا کم ہے کہ حیدرآباد میں سرکاری نوکریاں زیادہ تر مسلمانوں کو ہی ملتی ہیں۔

میں — لیکن آپ ایک سچے مسلمان بن کر اس پر خوش نہیں

और बेईमानी पर है. इसके अलावा अगर सब सरकारी नौकरियाँ भी मुसलमानों को मिल जाती हैं तो इससे आम मुसलमानों का क्या भला होता है ? हैदराबाद की मुसलमान आबादी के इस तरह सौ में से ज्यादा से ज्यादा पाँच आदमी खप जाते हैं. लेकिन बाक़ी पंचानवे तो उसी हालत में हैं जिसमें कि वहाँ की ग़ैर मुस्लिम आबादी है. इन पाँच आदमियों की खुशी और तरक़्क़ी के लिए बाक़ी पंचानवे को चुपचाप भेंट चढ़ा देना कहाँ की समझदारी है.

मौलवी साहब कुछ देर चुप रह कर बोले—भाई, मैं कहता हूँ कि जहाँ सब डूब रहे हों वहाँ अगर सौ में पाँच ही बचा लिये जायँ तो कौन सी बुराई है ?

मैं—सवाल यह नहीं है कि सब डूब रहे हैं और पाँच ही बचा लिये जायँ बल्कि सवाल यह है कि पाँच की वजह से पंचानवे डूब रहे हैं. उनको बचाना चाहिये या नहीं ?

मौलवी साहब—क्या मतलब ?

मैं— मतलब यह है कि हैदराबाद में शख़्सी और ग़ैर ज़िम्मेदार हुकूमत है. यह हुकूमत अपने को झूट मूट इस्लामी हुकूमत कहकर मुसलमानों की हमदर्दी हासिल किये हुए है. कुछ इस्लामी क़ायदे और रस्मे बादशाही शान व शौकत से अदा कर लेने से कोई हुकूमत इस्लामी नहीं हो जाया करती. न ऐसी हुकूमत से मुसलमानों को कोई ख़ास फ़ायदा पहुँचता है. मुट्ठी भर मुसलमानों को ज्यादा नौकरियाँ मिल जाने से आम मुसलमानों की माली हालत पर क्या असर पड़ सकता है ? यह हुकूमत उसी तरह अपने आपको इस्लामी कहती है जिस तरह आप सड़कों पर इस्लामी

اور بے ایمانی پر ہی. اس کے علاوہ اگر سب سرکاری نوکریاں بھی مسلمانوں کو مل جاتی ہیں تو اس سے عام مسلمانوں کا کیا بھلا ہوتا ہی؟ حیدرآباد کی مسلمان آبادی کے اس طرح سو میں سے زیادہ سے زیادہ پانچ آدمی کھپ جاتے ہیں. لیکن باقی پچانوے تو اسی حالت میں ہیں جس میں کہ وہاں کی غیر مسلم آبادی ہی. ان پانچ آدمیوں کی خوشی اور ترقی کے لئے باقی پچانوے کو چپ چاپ بھینٹ چڑھا دینا کہاں کی سمجھداری ہی.

مولوی صاحب کچھ دیر چپ رہ کر بولے — بھائی میں کہتا ہوں کہ جہاں سب ڈوب رہے ہوں وہاں اگر سو میں پانچ ہی بچا لئے جائیں تو کون سی برائی ہی؟

میں — سوال یہ نہیں ہی کہ سب ڈوب رہے ہیں اور پانچ ہی بچا لئے جائیں بلکہ سوال یہ ہی کہ پانچ کی وجہ سے پچانوے ڈوب رہے ہیں. انکو بچانا چاہئے یا نہیں؟

مولوی صاحب — کیا مطلب؟

میں — مطلب یہ ہی کہ حیدرآباد میں شخصی اور غیر ذمہ دار حکومت ہی. یہ حکومت اپنے کو جھوٹ موٹ اسلامی حکومت کہہ کر مسلمانوں کی ہمدردی حاصل کئے ہوئے ہی. کچھ اسلامی قاعدے اور رسمیں بادشاہی شان و شوکت سے ادا کر لینے سے کوئی حکومت اسلامی نہیں ہو جایا کرتی. نہ ایسی حکومت سے مسلمانوں کو کوئی خاص فائدہ پہونچتا ہی. مٹھی بھر مسلمانوں کو زیادہ نوکریاں مل جانے سے عام مسلمانوں کی مالی حالت پر کیا اثر پڑ سکتا ہی؟ یہ حکومت اسی طرح اپنے آپ کو اسلامی کہتی ہی جس طرح آپ سڑکوں پر اسلامی

होटल देखते हैं. इन होटलों में न तो मुसलमानों को दूसरे होटलों से कम दाम देने पड़ते हैं और न उनमें खाना खाकर वह सीधे जन्नत ही चले जाते हैं. इस्लामी होटल, इस्लामी चाय, इस्लामी बीड़ी, इस्लामी बिस्कुट—यह सिर्फ़ कारबारी धोके हैं. नहीं तो इनमें कोई चीज़ भी इस्लामी नहीं होती. बिलकुल यही हाल हैदराबाद रियासत का है. मेरा तो इस बात पर पूरा यक़ीन है कि अगर हैदराबाद में आज शख़्सी और ग़ैर ज़िम्मेदार हुकूमत ख़तम होकर जनता की ज़िम्मेदार हुकूमत क़ायम हो जाय तो इससे हैदराबाद के मुसलमानों को कहीं ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा. सो में पाँच वह मुसलमान जो आज हाकिम बने बैठे हैं, उनकी तादाद तो कम हो जायगी, लेकिन बाक़ी पंचानवे मुसलमान दूसरी आबादी की तरह आराम और सुख से रहने लगेंगे.

मौलवी साहब—लेकिन फिर हैदराबाद के आम मुसलमान इसके लिये क्यों नहीं तैयार होते?

मैं—अपनी जेहालत और नासमझी से. उनको मज़हब का अन्धा जोश दिला दिया गया है. वह समझते हैं कि अगर उनके वह मुट्ठी भर मुसलमान जो आज हाकिम बने बैठे हैं, अपनी जगहों से हटा दिये गये तो वह भी ख़तम हो जायँगे. हालाँकि ऐसा नहीं हो सकता. प्रजाराज में वह डूबेंगे नहीं बल्कि अपने दूसरे भाइयों की तरह हुकूमत में साझेदार हो जायँगे.

इसके बाद मौलवी साहब कुछ बोले नहीं और चुपचाप उठकर चले गये. लेकिन उनकी सूरत से मालूम होता था कि यह बातें

[illegible]

یہی حال حیدرآباد ریاست کا ہے۔ میرا تو
اس بات پر پورا یقین ہے کہ اگر حیدرآباد میں آج شخصی اور غیر ذمہ دار
حکومت ختم ہو کر جنتا کی ذمہ دار حکومت قائم ہو جائے تو اس سے حیدرآباد
کے مسلمانوں کو کہیں زیادہ فائدہ پہونچے گا۔ سو میں پانچ وہ مسلمان
جو آج حاکم بنے بیٹھے ہیں، ان کی تعداد تو کم ہو جائے گی لیکن باقی
پچانوے مسلمان دوسری آبادی کی طرح آرام اور سکھ سے رہنے
لگیں گے۔

مولوی صاحب — لیکن پھر حیدرآباد کے عام مسلمان اس کے
لئے کیوں نہیں تیار ہوتے؟

میں — اپنی جہالت اور ناسمجھی سے۔ انکو مذہب کا اندھا جوش دلا
دیا گیا ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ اگر انکے وہ مٹھی بھر مسلمان جو آج حاکم بنے
بیٹھے ہیں، اپنی جگہوں سے ہٹا دیئے گئے تو وہ بھی ختم ہو جائیں گے۔ حالانکہ
ایسا نہیں ہو سکتا۔ پرجا راج میں وہ ڈوبیں گے نہیں بلکہ اپنے دوسرے
بھائیوں کی طرح حکومت میں ساجھے دار ہو جائیں گے۔

اسکے بعد مولوی صاحب کچھ بولے نہیں اور چپ چاپ اٹھ کر چلے
گئے لیکن انکی صورت سے معلوم ہوتا تھا کہ یہ باتیں انکے دل میں جمی نہیں۔

अपनी अमानत

(भाई मधुकर खेर)

पिछली पन्द्रह अगस्त को हमने आजादी पाई और इस पन्द्रह अगस्त को हमारी आजादी की पहली साल-गिरह पड़ती है. पिछले दिनों अपने मुल्क को जिन दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा वह हमारी तरक़्क़ी में एक रुकावट ही हैं. यहाँ हम उन सियासी मामलों का ज़िक्र नहीं करना चाहते जो नेहरू सरकार की राह में रोड़े अटकाते रहते हैं लेकिन हम यहाँ हिन्दुस्तान की शर्म नाक हालत के बारे में ही लिख रहे हैं. हमारा इशारा मुल्क में फैली हुई फ़िरक़ापरस्ती की तरफ़ है. इस फ़िरक़ापरस्ती के जो नतीजे हुए हैं वह दुनिया के सामने हमें ज़लील करते रहेंगे. फ़िरक़ापरस्ती के कारन हमने अपना राष्ट्र-पिता खो दिया और यह एक ऐसी घटना है जिसे हिन्दुस्तानियों का मज़ाक़ उड़ाने के लिये दुनिया हमेशा याद रक्खेगी. हिन्दुस्तानियों मे फ़िरक़ापरस्ती कैसे आई यह एक ऐसी बात है जिसका जवाब हर समझदार हिंदुस्तानी के मुँह पर है. हर समझदार हिदुस्तानी इसका दोष अंग्रेज़ों को ही देगा. अंग्रेज़ों ने अपनी ग़रज़ के लिये इस ज़हर को हिंदुस्तान में फैलाया और इसी ज़हर के बल पर वह इतने बरसों तक टिके रहे. आज यह ज़हर इतना फैल गया है कि अब इसे बिलकुल सहन नहीं किया जा सकता. अंग्रेज़ों ने जाते-जाते भी फूट का

اپنی امانت

हिंदुस्तान एक ऐसा मुल्क है जिसके पास बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिनपर वह फ़ख़ या गर्व कर सकता है. हिन्दुस्तान का इतिहास हीं हमारी एक ऐसी अमानत है जिस पर हर हिन्दुस्तानी को फ़ख़ होना चाहिये. हमारे बुजुर्गों ने अपनी कुरबानियों के कारण इसके एक-एक सफ़े को सुनहरा बना दिया था लेकिन अंग्रेजों ने हमारी आँखों में अपनी मक्कारी से ऐसी धूल झोंक दी कि हमें भी अपनी तवा-रीख़ में वही बातें दिखाई देने लगीं जो अंग्रेजों की तवारीख़ के सफ़े- सफ़े पर हैं. हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क रहा है जो दुनिया को शुरू से ही प्रेम, शान्ति और एकता का संदेश देता रहा है. दूसरी तरफ़ अंग्रेजों के इतिहास के पन्ने-पन्ने पर ख़ून के धब्बे लगे हुए साफ़ दिखाई देते हैं. एक तरफ़ जहाँ हमारे देश में अलग-अलग धर्म मानने वाले प्रेम से रहते थे वहीं दूसरी तरफ़ अंग्रेजों ने धर्म के नाम पर ख़ून की नदियाँ बहाई हैं. धार्मिक मतभेदों के कारण अंग्रेजों ने दूसरों पर जो शैतानी जुल्म ढाये हैं वह क़यामत तक उनके राज के इतिहास पर कलंक के रूप में जिन्दा रहेंगे. अंग्रेज इतिहासकारों ने अपना तीर हिन्दुस्तान पर भी मारा और उन्होंने हमारे सियासी मामलों को मजहबी मामलों का रूप दे दिया. अकबर ने राना प्रताप पर चढ़ाइयाँ की थीं और यह लड़ाइयाँ हुकूमत और राजकाजी बुनियादों पर लड़ी गई थीं लेकिन अंग्रेजों ने इसमें बहुत गहरे में जाने का ढोंग करते हुए उसे कुछ और रंग दे दिया है. वह यह बात भुला देते हैं कि अकबर ने मुसलमान रियासतों पर भी चढ़ाई की थी. इसी तरह हिन्दू और मुसलमान राजाओं की लड़ाई को अंग्रेज इतिहासकारों ने हिन्दू और मुसलमान

ہندستان ایک ایسا ملک ہے جس کے پاس بہت سی ایسی چیزیں ہیں جن پر وہ فخر یا گرو کر سکتا ہے۔ ہندستان کا اتہاس ہی ہماری ایک ایسی امانت ہے جس پر ہر ہندستانی کو فخر ہونا چاہئے۔ ہمارے بزرگوں نے اپنی قربانیوں کے کارن اس کے ایک ایک صفحے کو سنہرا بنا دیا تھا لیکن انگریزوں نے ہماری آنکھوں میں اپنی مکاری سے ایسی دھول جھونک دی کہ ہمیں بھی اپنی تواریخ میں وہی باتیں دکھائی دینے لگیں جو انگریزوں کی تواریخ کے صفحے صفحے پر ہیں۔ ہندستان ایک ایسا ملک رہا ہے جو دنیا کو شروع سے ہی پریم، شانتی اور ایکتا کا سندیش دیتا رہا ہے۔ دوسری طرف انگریزوں کے اتہاس کے پنے پنے پر خون کے دھبے لگے ہوئے صاف دکھائی دیتے ہیں۔ ایک طرف جہاں ہمارے دیش میں الگ الگ دھرم ماننے والے پریم سے رہتے تھے وہیں دوسری طرف انگریزوں نے دھرم کے نام پر خون کی ندیاں بہائی ہیں۔ دھارمک مدبھیدوں کے کارن انگریزوں نے دوسروں پر جو شیطانی ظلم ڈھائے ہیں وہ قیامت تک ان کے راج کے اتہاس پر کلنک کے روپ میں زندہ رہیں گے۔ انگریز اتہاسکاروں نے اپنا تیر ہندستان پر بھی مارا اور انھوں نے ہمارے سیاسی معاملوں کو مذہبی معاملوں کا روپ دے دیا۔ اکبر نے رانا پرتاپ پر چڑھائیاں کی تھیں اور یہ لڑائیاں حکومت اور راج کاجی بنیادوں پر لڑی گئی تھیں لیکن انگریزوں نے اس میں بہت گہرے میں جانے کا ڈھونگ کرتے ہوئے اسے کچھ اور رنگ دے دیا ہے۔ وہ یہ بات بھلا دیتے ہیں کہ اکبر نے مسلمان ریاستوں پر بھی چڑھائی کی تھی۔ اسی طرح ہندو اور مسلمان راجاؤں کی لڑائی کو انگریز اتہاسکاروں نے ہندو اور مسلمان

के बीच की लड़ाई का रंग दे दिया है. अंग्रेज हिन्दू और मुसलमानों के दिल में यह बात कूट-कूट कर भर देना चाहते थे कि शुरू से ही दोनों क़ौमों में लड़ाई रही है. उनकी यह चाल बहुत सफल भी हुई. जिस बंगाल में हिंदू और मुसलमान एक साथ प्रेम और शान्ति से रहते थे, जहाँ मन्दिरों के कलश और उन्हीं के सामने खड़ी मसजिदों के मीनार हमारी एकता को जाहिर करते थे वहीं हमारी बदक़िस्मती से खून की नदियाँ बहीं. हिन्दू और मुसलमानों ने जी खोल कर एक दूसरे का खून बहाया. अंग्रेजों ने फूट का जो चक्र चलाया वह बहुत ही सफल हुआ. अंग्रेज यह अच्छी तरह जानते थे कि जिस दिन हिन्दुस्तान के काले आदमी एक हो जायेंगे उसी दिन उनका तख़्ता उलट जायगा. सन् १८५७ की क्रांति के बाद उनका यह विश्वास और भी मजबूत हो गया. १८५७ में हिन्दुस्तानियों ने गुलामी का जुआ फेंकने के लिये मिला-जुला मोर्चा बनाया पर वह असफल रहा. अंग्रेजों ने इस बग़ावत को 'ग़दर' या 'बलवे' का नाम दे दिया.

इसके पहले हैदर अली और टीपू सुलतान अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर ही चुके थे. १८५७ में अंग्रेजों को एक ऐसा मोर्चा मिला जो न हिंदू का था न मुसलमानों का. यह मोर्चा आजादी के दीवानों का था. हिन्दू और मुसलमान अंग्रेजी राज को नफ़रत की नजर से देखते थे. हिन्दू और मुसलमानों के इस मिले जुले विद्रोह से अंग्रेज इतने घबरा गये कि उन्होंने हिन्दुस्तान जैसी सोने की चिड़िया को ईस्ट इंडिया कम्पनी के हाथों में रहने देना ठीक नहीं समझा. बहादुर शाह, नाना साहेब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मी

کے بیچ کی لڑائی کا رنگ دیدیا ہے. انگریز ہندو اور مسلمانوں کے دل میں یہ بات کوٹ کوٹ کر بھر دینا چاہتے تھے کہ شروع سے ہی دونوں قوموں میں لڑائی رہی ہے. اُنکی یہ چال بہت سپھل بھی ہوئی. جس بنگال میں ہندو اور مسلمان ایک ساتھ پریم اور شانتی سے رہتے تھے، جہاں مندروں کے کلش اور اُنھیں کے سامنے کھڑی مسجدوں کے مینار ہماری ایکتا کو ظاہر کرتے تھے وہیں ہماری بدقسمتی سے خون کی ندیاں بہیں. ہندو اور مسلمانوں نے جی کھول کر ایک دوسرے کا خون بہایا. انگریزوں نے پھوٹ کا جو چکر چلایا وہ بہت ہی سپھل ہوا. انگریز یہ اچھی طرح جانتے تھے کہ جس دن ہندستان کے کالے آدمی ایک ہو جائیں گے اُسی دن اُن کا تختہ اُلٹ جائے گا. سنہ ۱۸۵۷ کی کرانتی کے بعد اُن کا یہ وشواش اور بھی مضبوط ہوگیا. ۱۸۵۷ میں ہندستانیوں نے غلامی کا جوا پھینکنے کے لئے ملا جُلا مورچہ بنایا پر وہ اسپھل رہا. انگریزوں نے اس بغاوت کو غدر یا بلوے کا نام دے دیا.

اس کے پہلے حیدر علی اور ٹیپو سلطان انگریزوں کے دانت کھٹے کر ہی چکے تھے. ۱۸۵۷ میں انگریزوں کو ایک ایسا مورچہ ملا جو نہ ہندو کا تھا نہ مسلمانوں کا. یہ مورچہ آزادی کے دیوانوں کا تھا. ہندو اور مسلمان انگریزی راج کو نفرت کی نظر سے دیکھتے تھے. ہندو اور مسلمانوں کو اس ملے جلے ودروہ سے انگریز اتنے گھبرا گئے کہ انھوں نے ہندستان جیسی سونے کی چڑیا کو ایسٹ انڈیا کمپنی کے ہاتھوں میں رہنے دینا ٹھیک نہیں سمجھا. بہادر شاہ، نانا صاحب، تاتیا ٹوپے اور رانی لکشمی

बाई की रहनुमाई में अंग्रेजों के दाँत खट्टे हो चुके थे. अंग्रेजों ने इस विद्रोहमें मुसलमानों को खतरनाक समझा और सिक्खों को अपना दोस्त मान लिया. इसके पहले कभी हिन्दू और मुसलमानो में कोई गन्दी भावना नहीं आई थी. पहले जो भी हुकूमतें थीं उनका मक़सद था जनता और देश को फ़ायदा पहुँचाना. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मिल जुल कर काम करते थे. हमारे पिछले इतिहास में दंगों का जिक्र ही नहीं मिलता. आठ सौ बरस के इतिहास में सिर्फ़ दो ही दंगे हुए थे. मुसलमान राजाओं के यहाँ हिन्दू सरदार और सेनापति रहते थे, तो हिन्दू राजाओं के यहाँ भी मुसलमान सरदार और सेनापति रहते थे, यहाँ तक कि मुग़लों की हुकूमत को नादिर और पुर्तगेज़ के हमले से बचाने के लिये पेशावा ने सिन्ध्या को मिला जुला मोर्चा लेने के लिए खत लिखा था. उन दिनों जो हिन्दू संगठन या मुसलमान तंज़ीम होती थी वह भी सिर्फ़ मज़हबी बुनियादों पर. इस भावना से अंग्रेज़ों को मुँह की खानी पड़ी और उन्होंने फूट की पालिसी अपनाई.

अब मुसलमानों को कुचलने के लिये अंग्रेजों ने अपने जतन शुरू किये. और हिन्दुओं को अपनी तरफ़ खींचना शुरू किया. हिन्दुओं को तरक्क़ी की सभी सहूलियतें दी गईं. हिन्दू शिक्षित होकर तरक़्क़ी करने लगे और अंग्रेजों का बनाया हुआ 'बाबू' तबक़ा बहुत फलने फूलने लगा. फिर कांग्रेस क़ायम की गई ताकि देश के पढ़े लिखे लोग सरकारी इन्तज़ाम में मदद दें. पर कांग्रेस जल्द ही विद्रोही बन गई और इसका रूप देख कर अंग्रेजी साम्राज्य शाही की छाती पर साँप लोटने लगा. अब

بائی کی رہنمائی میں انگریزوں کے دانت کھٹے ہو چکے تھے۔ انگریزوں نے اس ودروہ میں مسلمانوں کو خطرناک سمجھا اور سکھوں کو اپنا دوست مان لیا۔ اسکے پہلے کبھی ہندو اور مسلمانوں میں کوئی گندی بھاؤنا نہیں آئی تھی۔ پہلے جو بھی حکومتیں تھیں اُن کا مقصد تھا جنتا اور دیش کو فائدہ پہونچانا۔ ہندو اور مسلمان دونوں ہی مل جل کر کام کرتے تھے۔ ہمارے پچھلے اتہاس میں دنگے کا ذکر ہی نہیں ملتا۔ آٹھ سو برس کے اتہاس میں صرف دو ہی دنگے ہوئے تھے۔ مسلمان راجاؤں کے یہاں ہندو سردار اور سیناپتی رہتے تھے، تو ہندو راجاؤں کے یہاں بھی مسلمان سردار اور سیناپتی رہتے تھے یہاں تک کہ مغلوں کی حکومت کو نادر اور پرتگیز کے حملے سے بچانے کے لئے پیشوا نے سندھیا کو ملا جلا مورچہ لینے کے لئے خط لکھا تھا۔ اُن دنوں جو ہندو سنگھٹن یا مسلمان تنظیم ہوتی تھی وہ بھی صرف مذہبی بنیادوں پر۔ اس بھاؤنا سے انگریزوں کو منہ کی کھانی پڑی اور انھوں نے پھوٹ کی پالیسی اپنائی۔

اب مسلمانوں کو کچلنے کے لئے انگریزوں نے اپنے جتن شروع کئے اور ہندوؤں کو اپنی طرف کھینچنا شروع کیا۔ ہندوؤں کو ترقی کی سبھی سہولیتیں دی گئیں۔ ہندو شکشت ہو کر ترقی کرنے لگے اور انگریزوں کا بنایا ہوا 'بابو' طبقہ بہت پھلنے پھولنے لگا۔ پھر کانگریس قائم کی گئی تاکہ دیش کے پڑھے لکھے لوگ سرکاری انتظام میں مدد دیں۔ پر کانگریس جلد ہی ودروہی بن گئی اور اس کا روپ دیکھ کر انگریزی سامراجیہ شاہی کی چھاتی پر سانپ لوٹنے لگا۔ اب

अंग्रेजों ने मुसलमानों को सहूलियतें देनी शुरू कीं और इन सहूलियतों के लिये उन्हें हिन्दुओं से लड़वा देने की साजिश की. हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे के खिलाफ़ सहूलियतें पाने के लिये अंग्रेजों के दरबार में सिर झुकाते थे. अंग्रेजों के इन हथकण्डों का असर सिर्फ़ थोड़े से लोगों पर ही पड़ा. सदियों की चलती आई हिन्दू-मुस्लिम एकता पर इन हथकण्डों का ज़रा भी असर नहीं हुआ. हिन्दुस्तान की आत्मा ज़िन्दा थी और उसको खतम करने के लिये १९०५ में अंग्रेजों ने बँटवारे का एक ज़हरीला तीर चलाया.

बंगाल के बँटवारे ने बंगाली भाषा भाषी जनता को उनकी मरज़ी के खिलाफ़ दो प्रांतों में बाँट दिया. इस बँटवारे का मक़सद था पूरबी बंगाल में मुसलमानों की ताक़त जमा करना, ताकि वह पढ़े-लिखे हिन्दुओं के खिलाफ़ मोर्चा ले सकें. पूरबी बंगाल के लेफ़्टिनेंट गवर्नर सर बैमफ़ील्ड फुलर ने मुसलमानों को अंग्रेजों का मददगार बनाने के लिये उन्हें ऊँची सरकारी नौकरियाँ देना शुरु किया और खुल कर यह एलान किया कि "यहाँ इस्लामी राज है और मुसलमान चाहे जो कर सकते हैं." कम सूद पर एक लाख पौंड का क़र्ज़ देकर उसने नवाब सलीमुल्ला को अपनी तरफ़ कर लिया. गवर्नर ने छाती फुलाकर फ़ख्र से एलान किया—"मेरी दो औरतें हैं—हिन्दू और मुसलमान. इन दोनो में मुसलमान मेरी चहेती है." एक तरफ़ बँटवारे की देन थी—ढाका के दङ्गे, कोमिल्ला और जमालपुर की लूट-पाट, मार-काट तो दूसरी तरफ़ था गुरुदेव का "सोनार बँगला" का संदेश. जुलूस, सभा

انگریزوں نے مسلمانوں کو سہولیتیں دینی شروع کیں اوران سہولیتوں کے لئے انھیں ہندوؤں سے لڑوا دینے کی سازش کی ہندو اور مسلمان دونوں ایک دوسرے کے خلاف سہولیتیں پانے کے لئے انگریزوں کے دربار میں سر جھکاتے تھے۔ انگریزوں کے ان ہتھکنڈوں کا اثر صرف تھوڑے سے لوگوں پر ہی پڑا۔ صدیوں کی چلتی آئی ہندو مسلم ایکتا پر ان ہتھکنڈوں کا ذرا بھی اثر نہیں ہوا۔ ہندستان کی آتما زندہ تھی اور اُس کو ختم کرنے کے لئے ۱۹۰۵ میں انگریزوں نے بٹوارے کا ایک زہریلا تیر چلایا۔

بنگال کے بٹوارے نے بنگالی بھاشا بھاشی جنتا کو اُنکی مرضی کے خلاف دو پرانتوں میں بانٹ دیا۔ اس بٹوارے کا مقصد تھا پوربی بنگال میں مسلمانوں کی طاقت جمع کرنا، تاکہ وہ پڑھے لکھے ہندوؤں کے خلاف مورچہ لے سکیں۔ پوربی بنگال کے لیفٹننٹ گورنر سر بیمفیلڈ فلر نے مسلمانوں کو انگریزوں کا مددگار بنانے کے لئے انھیں اونچی سرکاری نوکریاں دینا شروع کیا اور کھُل کر یہ اعلان کیا کہ "یہاں اسلامی راج ہے اور مسلمان چاہے جو کر سکتے ہیں" کم سود پر ایک لاکھ پونڈ کا قرض دے کر اُس نے نواب سلیم اللہ کو اپنی طرف کر لیا۔ گورنر نے چھاتی پھُلا کر فخر سے اعلان کیا — "میری دو عورتیں ہیں — ہندو اور مسلمان۔ ان دونوں میں مسلمان میری چہیتی ہے۔" ایک طرف بٹوارے کی دین تھی۔ ڈھاکہ کے دنگے، کومِلّا اور جمال پور کی لوٹ پاٹ، مار کاٹ تو دوسری طرف تھا گرودیو کا "سونار بنگلا" کا سندیش، جلوس، سبھا

और प्रदर्शनों का ताँता बँध गया. रवि बाबू ने खुल कर विरोध किया. पुलिस की तरफ़ से भी सख़्तियाँ होती थीं और पूरबी बंगाल में गुरखा पलटन बुलाने का एलान किया गया. बैमफ़ील्ड फुलर ने इज़्ज़तदार लोगों को बुलाकर धमकी दी कि—"मुमकिन है ख़ून ख़राबी करनी पड़े." यह सब तब हो रहा था जब जनता में हिंसा की भावना के कोई लच्छन नहीं पाये जाते थे. इस दबाने की पालसी ने जनता में जागृति ला दी और बंगाल के सवाल को हिन्दुस्तान की जनता ने अपना सवाल बना लिया. देश में एक तूफ़ान सा आ गया. "कैनाल कोलोनाइज़ेशन बिल" ने जो हलचल पैदा कर दी उसके कारण लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह को देश निकाले की सज़ा मिली. दादा भाई नौरोजी ने जब १९०६ में कलकत्ते की कांग्रेस में 'स्वराज्य' शब्द का उपयोग किया तो अंग्रेज जल उठे. एक तरफ़ बंगाल की जनता कवि रवीन्द्र की रहनुमाई में आन्दोलन कर रही थी तो दूसरी तरफ़ नौजवानों ने दहशत फैलाने वाली हलचलें मचा दी थीं. जनता की बेदारी के आधार पर ही बिपिनचन्द्र पाल ने एलान किया "अगर आज सरकार मुझसे आकर कहे कि यह लो स्वाराज्य तो मैं जवाब दूंगा-"धन्यवाद, स्वराज्य भेंट में लेने की चीज़ नहीं है. वह अपनी शक्ति से प्राप्त किया जाता है. हममें इतनी शक्ति है कि किसी भी ताक़त को जो हमारे मार्ग में आयेगी, हम सिर झुकाने के लिये मजबूर कर देंगे" अंग्रेज़ों के जुल्म देख कर गोखले ने चेतावनी दी "नौजवान हाथ से निकले जा रहे हैं और अगर हम उन्हें बस में नहीं रख सके तो हमें दोष न दीजियेगा."

اور پردرشنوں کا تانتا بندھ گیا۔ روی بابو نے کھل کر ورودھ کیا۔ پلس کی طرف سے بھی سختیاں ہوتی تھیں اور پوربی بنگال میں گورکھا پلٹن بلانے کا اعلان کیا گیا۔ بیم فیلڈ فلر نے عزت دار لوگوں کو بلا کر دھمکی دی کہ — "ممکن ہو خون خرابی کرنی پڑے۔" یہ سب تب ہو رہا تھا جب جنتا میں ہنسا کی بھاونا کے کوئی لچھن نہیں پائے جاتے تھے۔ اس دبانے کی پالیسی نے جنتا میں جاگرتی لا دی اور بنگال کے سوال کو ہندستان کی جنتا نے اپنا سوال بنا لیا۔ دیش میں ایک طوفان سا آ گیا۔ "کینال کولونائزیشن بل" نے جو ہلچل پیدا کر دی اس کے کارن لالہ لاجپت رائے اور سردار اجیت سنگھ کو دیش نکالے کی سزا ملی۔ دادا بھائی نوروجی نے جب ۱۹۰۶ میں کلکتے کی کانگریس میں "سواجیہ" شبد کا اپیوگ کیا تو انگریز جل اٹھے۔ ایک طرف بنگال کی جنتا کوی رابندر کی رہنمائی میں اندولن کر رہی تھی تو دوسری طرف نوجوانوں نے دہشت پھیلانے والی ہلچلیں مچا دی تھیں۔ جنتا کی بیداری کے آدھار پر ہی بپن چندر پال نے اعلان کیا "اگر آج سرکار مجھ سے آ کر کہے کہ یہ لو سوراجیہ تو میں جواب دوں گا۔ "دھنیہ باد" سوراجیہ بھینٹ میں لینے کی چیز نہیں ہے۔ وہ اپنی شکتی سے پراپت کیا جاتا ہے۔ ہم میں اتنی شکتی ہے کہ کسی بھی طاقت کو جو ہمارے مارگ میں آئے گی، ہم سر جھکانے کے لئے مجبور کر دیں گے" انگریزوں کے ظلم دیکھ کر گوکھلے نے چیتاونی دی "نوجوان ہاتھ سے نکلے جا رہے ہیں اور اگر ہم انہیں بس میں نہیں رکھ سکے تو ہمیں دوش نہ دیجئے گا۔"

अंग्रेजों का आसन डोलने लगा. उन्हें मालूम हो गया कि जब तक बंगाल का बँटवारा उठा नहीं लिया जायगा, तब तक शान्ति की उम्मीद नहीं. अंग्रेज यह नहीं दिखाना चाहते थे कि वह आन्दोलन के आगे झुक गये हैं, क्योंकि इस तरह उनकी साफ़ हार मानी जाती, इसलिये उन्होंने पाँचवें जार्ज के गद्दी पर बैठने की खुशी का सहारा लेकर बंगाल के बँटवारे का हुक्म रद्द कर दिया. हिन्दुस्तानियों के संगठित मोर्चे के सामने अंग्रेजों की हार तो हो गई लेकिन ....

........इस बढ़ते आन्दोलन को कुचलने के लिये १९०६ में उस वक़्त के जमींदार धनी मुसलमानों का संगठन लार्ड मिन्टो की कोशिश और देख रेख में मुस्लिम लीग के रूप में हो चुका था, और इन जमींदारों ने अंग्रेजों का साथ देने में ही अपनी खैर समझी. मुस्लिम लीग के क़ायम होने से अंग्रेजों को बहुत खुशी हुई. उन्हें ऐसा विश्वास हो गया कि भारत के साढ़े पाँच करोड़ मुसलमान कांग्रेस (जो उस समय जनता के आन्दोलनों की अकेली जमात थी) से अलग रहेंगे. उन्हें अपनी इस चाल पर खुशी थी और १९०५ के बंगाल के बँटवारे और १९०६ में लीग के बनने, दोनों का ही मक़सद जनता के बढ़ते हुए आन्दोलन को रोकना ही था. अंग्रेजों ने मुसलमानों के दिमाग़ में यह बात भरने की कोशिश की कि तादाद में कम होने के कारण वह हिन्दुओं के मुक़ाबले में कमज़ोर ही ठहरेंगे. जान स्ट्राची ने यह बात साफ़ तौर से क़ुबूल की है कि मुसलमान पूँजीपति अंग्रेजों के सहायक ही होंगे क्योंकि वह हिन्दुओं के खिलाफ़ अंग्रेजों के राज में रहना

انگریزوں کا آسن ڈولنے لگا۔ انھیں معلوم ہوگیا کہ جب تک بنگال کا بٹوارا اٹھا نہیں لیا جائے گا تب تک شانتی کی امید نہیں۔ انگریز یہ نہیں دکھانا چاہتے تھے کہ وہ اندولن کے آگے جھک گئے ہیں، کیونکہ اس طرح اُن کی صاف ہار مانی جاتی۔ اس لئے انھوں نے پانچویں جارج کے گدی پر بیٹھنے کی خوشی کا سہارا لے کر بنگال کے بٹوارے کا حکم رد کر دیا۔ ہندوستانیوں کے سنگھٹت مورچے کے سامنے انگریزوں کی ہار تو ہوگئی لیکن۔۔۔

۔۔۔۔۔۔اس بڑھتے اندولن کو کچلنے کے لئے ۱۹۰۶ میں اس وقت کے زمیندار دھنی مسلمانوں کا سنگھٹن لارڈ منٹو کی کوشش اور دیکھ ریکھ میں مسلم لیگ کے روپ میں ہو چکا تھا۔ اور ان زمینداروں نے انگریزوں کا ساتھ دینے میں ہی اپنی خیر سمجھی۔ مسلم لیگ کے قائم ہونے سے انگریزوں کو بہت خوشی ہوئی۔ انھیں ایسا وشواس ہوگیا کہ بھارت کے ساڑھے پانچ کروڑ مسلمان کانگریس (جو اس سمے جنتا کے اندولنوں کی اکیلی جماعت تھی) سے الگ رہیں گے۔ انھیں اپنی اس چال پر خوشی تھی اور ۱۹۰۵ء کے بنگال کے بٹوارے اور ۱۹۰۶ میں لیگ کے بننے، دونوں کا ہی مقصد جنتا کے بڑھتے ہوئے اندولن کو روکنا ہی تھا۔ انگریزوں نے مسلمانوں کے دماغ میں یہ بات بھرنے کی کوشش کی کہ تعداد میں کم ہونے کے کارن وہ ہندوؤں کے مقابلے میں کمزور ہی ٹھہریں گے۔ جان اسٹراچی نے یہ بات صاف طور سے قبول کی ہے کہ مسلمان پونجی پتی انگریزوں کے سہایک ہی ہونگے کیونکہ وہ ہندوؤں کے خلاف انگریزوں کے راج میں رہنا

ज्यादा पसंद करेंगे. इतना ही नहीं, बैमफ़ील्ड फुलर ने तो मुल्लाओं को हिन्दुओं के खिलाफ खुलकर प्रचार करने की पूरी छूट ही दे दी थी. उन्हीं दिनों "लाल किताब" नाम की एक किताब भी निकाली गई जिसमें ज़हरीला प्रचार था. इस किताब में हिन्दुओं के घर लूटने, जलाने, उन्हें मारने और उनकी औरतों को भगाने का खुल कर प्रचार किया गया था. इसका नतीजा ढाका के नवाब और बैमफ़ील्ड के कराये हुए दंगों के रूप में जनता के सामने आया.

अंग्रेजों को अपनी सफलता पर फ़ख्र हो रहा था. वह सोच रहे थे कि वह देश की शक्ति, हिन्दू-मुस्लिम एकता को सदा के लिये खतम कर चुके हैं लेकिन इसी बीच रेशमी ख़तो की साजिश का अंग्रेजों को पता लग गया. सरहद की ओर से हमला करके अंग्रेजों का तख्ता उलटना इसका मक़सद था.

अंग्रेज होशियार हुए और उन्होंने अपना काला क़ानून "रौलट बिल" हिन्दुस्तान पर लाद दिया लेकिन हिन्दुस्तान में इतनी जागृति आ गई थी कि उसने इसका खुलकर विरोध किया. गांधी जी ने एलान कर दिया था कि अगर रौलट कमीशन की सिफ़ारिशों को बिल का रूप दिया गया तो वह सत्याग्रह छेड़ देंगे. गांधी जी ने यह साफ़ कर दिया कि यह आन्दोलन ईमानदारी और सचाई के उसूल पर ही चलेगा. गांधीजी ने उपवास के साथ आंदोलन शुरू किया. ३० मार्च १९१९ को दिल्ली में जुलूस निकला और हड़ताल हुई और गोली भी चली. गोरों ने जुलूस के नेता स्वामी श्रद्धानंद जी को गोली से मारने की धमकी दी तो उन्होंने अपनी छाती खोल दी और कहा— "लो मारो गोली." गोरों की धमकी महज़ धमकी ही रही. ६ अप्रैल

زیادہ پسند کریں گے۔ اتنا ہی نہیں بیمفیلڈ فلر نے تو ملاؤں کو ہندوؤں کے خلاف کھل کر پرچار کرنے کی پوری چھوٹ ہی دے دی تھی۔ انھیں دنوں "لال کتاب" نام کی ایک کتاب بھی نکالی گئی جس میں زہریلا پرچار تھا۔ اس کتاب میں ہندوؤں کے گھر لوٹنے، جلانے، انھیں مارنے اور ان کی عورتوں کو بھگانے کا کھل کر پرچار کیا گیا تھا۔ اس کا نتیجہ ڈھاکا کے نواب اور بیمفیلڈ کے کرائے ہوئے دنگوں کے روپ میں جنتا کے سامنے آیا۔

انگریزوں کو اپنی سپھلتا پر فخر ہو رہا تھا۔ وہ سوچ رہے تھے کہ وہ دیش کی شکتی، ہندو مسلمان ایکتا کو سدا کے لئے ختم کر چکے ہیں۔ لیکن اس بیچ ریشمی خطوں کی سازش کا انگریزوں کو پتہ لگ گیا۔ سرحد کی اور سے حملہ کر کے انگریزوں کا تختہ الٹنا اس کا مقصد تھا۔

انگریز ہوشیار ہوئے اور انھوں نے اپنا کالا قانون رولٹ بل ہندوستان پر لاد دیا لیکن ہندوستان میں اتنی جاگرتی آ گئی تھی کہ اس نے اس کا کھل کر ورودھ کیا۔ گاندھی جی نے اعلان کر دیا تھا کہ اگر رولٹ کمیشن کی سفارشوں کو بل کا روپ دیا گیا تو وہ ستیہ گرہ چھیڑ دیں گے۔ گاندھی جی نے یہ صاف کر دیا کہ یہ اندولن ایمانداری اور سچائی کے اصول پر ہی چلے گا۔ گاندھی جی نے اپواس کے ساتھ اندولن شروع کیا۔ ۳۰ مارچ ۱۹۱۹ کو دلی میں جلوس نکلا اور ہڑتال ہوئی اور گولی بھی چلی۔ گوروں نے جلوس کے نیتا سوامی شردھانند جی کو گولی سے مارنے کی دھمکی دی تو انھوں نے اپنی چھاتی کھول دی اور کہا —— "لو مارو گولی" گوروں کی دھمکی محض دھمکی ہی رہی۔ ۶ اپریل

१९१९ को जो देश भर में प्रदर्शन या मुजाहरा हुआ उसके बारे में सरकारी रिपोर्ट में कहा गया है—"सब लोग बड़े ही जोश में थे. उस समय एक मार्के की बात दिखाई पड़ती थी और वह थी हिन्दू-मुस्लिम एकता. दोनों जातियों के नेता इसी एकता की रट लगाये थे. इस जोशो खरोश में छोटी जातियों ने भी अपने मतभेद भुला दिये. हर सभा से यही आवाज़ निकलती थी. वह एक अजीब सीन था. हिन्दू-मुसलमान दोनों खुल्लम खुल्ला एक दूसरे के हाथों से पानी लेते-देते थे. जुलूस के झंडों और नारों से दोनों का मेल टपकता था. एक जगह तो मसजिद के मेम्बर पर खड़े होकर हिन्दू नेताओं को बोलने भी दिया गया था."

अंग्रेज़ों ने दमन का चक्र चलाया. हिन्दू-मुस्लिम एकता से अंग्रेज़ों को अपनी हालत खतरे में नज़र आई. पंजाब में दमन ने जोर पकड़ा और वहाँ का जालिम गवर्नर सर माइकेल ओडायर इस बात पर तुल गया कि वह अपने प्रांत में कांग्रेसी आन्दोलन की छूत की बीमारी नहीं फैलने देगा. पुलिस भीड़ को जोश दिला देती थी और फिर भीड़ के जरिये ईंट-पत्थर फेंकने की कहानी गढ़कर वह गोलियाँ चलाती थी. गांधी जी ८ अप्रैल को स्वामी श्रद्धानन्द और डाक्टर सत्यपाल की तरफ से बुलाये जाने पर और पंजाब की दुर्घटनाओं का हाल सुन कर दिल्ली के लिये चल पड़े, पर उनके दिल्ली और पंजाब में दाखिल होने पर रोक लगा दी गई. इस रोक को मानने से इनकार करने पर वह गिरफ्तार कर लिये गये और उनको दिल्ली से कुछ दूर पलवल नाम के स्टेशन से एक स्पेशल ट्रेन में बैठाकर दस अप्रैल

۱۹۱۹ کو جو دیش بھر میں پردرشن یا مظاہرہ ہوا اُس کے بارے میں سرکاری رپورٹ میں کہا گیا ہے "یہ سب لوگ بڑے ہی جوش میں تھے. اس سمے ایک مارکے کی بات دکھائی پڑتی تھی اور وہ تھی ہندو مسلم ایکتا. دونوں جاتیوں کے نیتا ایکتا کی رٹ لگائے تھے. اس جوش خروش میں چھوٹی جاتیوں نے بھی اپنے مت بھید بھلا دیئے. ہر سبھا سے یہی آواز نکلتی تھی. وہ ایک عجیب سین تھا. ہندو مسلمان دونوں کھلم کھلا ایک دوسرے کے ہاتھوں سے پانی لیتے دیتے تھے. جلوس کے جھنڈوں اور نعروں سے دونوں کا میل ٹپکتا تھا. ایک جگہ تو مسجد کے ممبر پر کھڑے ہوکر ہندو نیتاؤں کو بولنے بھی دیا گیا تھا."

انگریزوں نے دمن کا چکر چلایا. ہندو مسلم ایکتا سے انگریزوں کو اپنی حالت خطرے میں نظر آئی. پنجاب میں دمن نے زور پکڑا اور وہاں کا ظالم گورنر سر مائیکل اوڈائر اس بات پر تل گیا کہ وہ اپنے پرانت میں کانگریسی اندولن کی چھوت کی بیماری نہیں پھیلنے دے گا. پولیس بھیڑ کو جوش دلا دیتی تھی اور پھر بھیڑ کے ذریعے اینٹ پتھر پھینکنے کی کہانی گڑھ کر وہ گولیاں چلاتی تھی. گاندھی جی ۸ اپریل کو سوامی شردھانند اور ڈاکٹر ستیہ پال کی طرف سے بلائے جانے پر اور پنجاب کی درگھٹنا کا حال سن کر دلی کے لئے چل پڑے، پر اُن کے دلی اور پنجاب میں داخل ہونے پر روک لگا دی گئی. اس روک کو ماننے سے انکار کرنے پر وہ گرفتار کر لئے گئے اور اُن کو دلی سے کچھ دور پلول نام کے اسٹیشن سے ایک اسپیشل ٹرین میں بٹھا کر دس اپریل

को बम्बई भेज दिया गया. गांधी जी की गिरफ़्तारी से जनता में और भी गुस्सा फैला.

एक तरफ़ यह हालत थी तो दूसरी ओर अमृतसर में हालत बहुत ख़राब रूप धारन करती जा रही थी. सर माइकेल ओडायर के फ़ैसले को पूरा करने का बीड़ा जनरल डायर ने उठाया. जालियाँवाले बाग़ में जो जुल्म हुए उनके बारे में हमारे पढ़ने वाले जानते ही हैं. हिन्दू-मुस्लिम एकता ने डायर को पागल बना दिया और उसने जो शैतानी जुल्म किये वह इंसानियत से परे हैं. अंग्रेज़ सरकार यह ढिंढोरा पीटती है कि १० अप्रैल से ही अमली रूप में फ़ौजी क़ानून जारी था, लेकिन असलियत यह है कि १५ अप्रैल को फ़ौजी क़ानून जारी करने का एलान किया गया था. डायर ने एक हिन्दू और एक मुसलमान को हथकड़ियाँ लगा कर उनका जुलूस बाज़ार से निकाला, उन्हें पेट के बल रेंगने पर मजबूर किया और जनता को बताया कि यही हिन्दू मुस्लिम एकता का फल है. डायर का कहना था—"मैंने और भी गोली चलाई होती अगर मेरे पास कारतूस होते. सोलह सौ बार ही गोली चलाई गई, क्योंकि कारतूस ख़तम हो गये थे. मैं एक फ़ौजी गाड़ी (आरमर्ड कार) ले गया था, लेकिन वहाँ जाकर देखा कि वह बाग़ के भीतर घुस ही नहीं सकती इसलिये उसे बाहर ही छोड़ दिया था." डायर ने यह स्वीकार किया कि भीड़ को तितर-बितर होने की आज्ञा देने के तीन मिनट बाद ही गोलियाँ चलाई गई थीं. यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि ३ मिनट में बीस हज़ार आदमी तितर बितर नहीं हो सकते थे और वह भी एक

کو بمبئی بھیج دیا گیا۔ گاندھی جی کی گرفتاری سے جنتا میں اور بھی غصہ پھیلا۔

ایک طرف یہ حالت تھی تو دوسری اور امرتسر میں حالت بہت خراب روپ دھارن کرتی جا رہی تھی۔ سر مائکل اوڈائر کے فیصلے کو پورا کرنے کا بیڑا جنرل ڈائر نے اٹھایا۔ جلیانوالے باغ میں جو ظلم ہوئے ان کے بارے میں ہمارے پڑھنے والے جانتے ہی ہیں۔ ہندو مسلم ایکتا نے ڈائر کو پاگل بنا دیا اور اس نے جو شیطانی ظلم کیا وہ انسانیت سے پرے ہیں۔ انگریز سرکار یہ ڈھنڈھورا پیٹتی ہے کہ ۱۰ اپریل سے ہی عملی روپ میں فوجی قانون جاری تھا لیکن اصلیت یہ ہے کہ ۱۵ اپریل کو فوجی قانون جاری کرنے کا اعلان کیا گیا تھا۔ ڈائر نے ایک ہندو اور ایک مسلمان کو ہتھکڑیاں لگا کر ان کا جلوس بازار سے نکالا، انھیں پیٹ کے بل رینگنے پر مجبور کیا اور جنتا کو بتایا کہ یہ ہندو مسلم ایکتا کا پھل ہے۔ ڈائر کا کہنا تھا: "میں نے اور بھی گولی چلائی ہوتی اگر میرے پاس کارتوس ہوتے۔ سوا سو بار ہی گولی چلائی گئی کیونکہ کارتوس ختم ہو گئے تھے۔ میں ایک فوجی گاڑی (آرمڈ کار) لے گیا تھا لیکن وہاں جا کر دیکھا کہ وہ باغ کے بھیتر گھس ہی نہیں سکتی اس لئے اسے باہر ہی چھوڑ دیا تھا۔" ڈائر نے یہ سویکار کیا کہ بھیڑ کو تتر بتر ہونے کی آگیا دینے کے تین منٹ بعد ہی گولیاں چلائی گئی تھیں۔ یہ بات صاف ظاہر ہے کہ ۳ منٹ میں بیس ہزار آدمی تتر بتر نہیں ہو سکتے تھے اور وہ بھی ایک

तंग गली से. डायर ने अमृतसर में नलों का पानी बंद कर दिया था और बिजली का सिलसिला काट दिया था. उसने हन्टर कमेटी के सामने कहा—"मैंने जो किया वह एक भयानक फ़र्ज़ था. मेरा ख़याल है कि वह एक दयापूर्ण काम था. मैंने सोचा कि ख़ूब अच्छी तरह गोलियाँ चलाऊँ और इतने ज़ोर के साथ चलाऊँ कि मुझे या दूसरे किसी को फिर गोली न चलानी पड़े. मैं भीड़ को सबक़ देना चाहता था. मैं बिना गोली चलाये भी भीड़ को तितर बितर कर सकता था, लेकिन मैं उन्हें एक ऐसा सबक़ देना चाहता था जिसका वह मज़ाक़ न उड़ा सकें." इस घटना के बरसों बाद डायर लंदन में एक ऐसे हिन्दुस्तानी के हाथों मारा गया जो इस घटना के समय बहुत छोटा था. अंग्रेज़ों ने डायर के काम की तारीफ़ ही की थी.

देश में जागृति फैल चुकी थी. अंग्रेज़ों की सैकड़ों कोशिशों के बाद भी हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर ख़िलाफ़त का आन्दोलन छेड़ा. गांधी जी की रहनुमाई में जनता तरक़्क़ी की राह पर बढ़ रही थी. हिन्दू और मुसलमान कन्धे से कन्धा जोड़ कर आगे बढ़ रहे थे. अंग्रेज़ो ने भी अपनी चालों में कमी नहीं आने दी. एक तरफ़ अंग्रेज़ों की चालें थीं तो दूसरी तरफ़ जनता का जोश था. गांधी जी और कांग्रेस की रहनुमाई आन्दोलन को कामयाबी से आगे बढ़ा रही थी. अंग्रेज़ो ने फूट का बीज डालने के लिये फ़िरक़े वाराना चुनाव का तरीक़ा चलाया और तब से अब तक फूट डालने की लाखों कोशिशें कीं लेकिन जनता के सहयोग के कारन उन्हें सफलता नहीं मिल सकी. हम

تنگ گلی سے۔ ڈائر نے امرتسر میں نلوں کا پانی بند کر دیا تھا اور بجلی کا سلسلہ کاٹ دیا تھا۔ اُس نے ہنٹر کمیٹی کے سامنے کہا — میں نے جو کیا وہ ایک بھیانک فرض تھا۔ میرا خیال ہے کہ وہ ایک دیا پورن کام تھا۔ میں نے سوچا کہ خوب اچھی طرح گولیاں چلاؤں اور اتنے زور کے ساتھ چلاؤں کہ مجھے یا دوسرے کسی کو پھر گولی نہ چلانی پڑے۔ میں بھیڑ کو سبق دینا چاہتا تھا۔ میں بنا گولی چلائے بھی بھیڑ کو تتر بتر کر سکتا تھا، لیکن میں انہیں ایک ایسا سبق دینا چاہتا تھا جس کا وہ مذاق نہ اُڑا سکیں۔ اس گھٹنا کے برسوں بعد ڈائر لندن میں ایک ایسے ہندوستانی کے ہاتھوں مارا گیا جو اس گھٹنا کے سمے بہت چھوٹا تھا۔ انگریزوں نے ڈائر کے کام کی تعریف ہی کی تھی۔

دیش میں جاگرتی پھیل چکی تھی۔ انگریزوں کی سینکڑوں کوششوں کے بعد بھی ہندو اور مسلمانوں نے مل کر خلافت کا اندولن چھیڑا۔ گاندھی جی کی رہنمائی میں جنتا ترقی کی راہ پر بڑھ رہی تھی۔ ہندو اور مسلمان کندھے سے کندھا جوڑ کر آگے بڑھ رہے تھے۔ انگریزوں نے بھی اپنی چالوں میں کمی نہیں آنے دی۔ ایک طرف انگریزوں کی چالیں تھیں تو دوسری طرف جنتا کا جوش تھا۔ گاندھی جی اور کانگریس کی رہنمائی اندولن کو کامیابی سے آگے بڑھا رہی تھی۔ انگریزوں نے پھوٹ کا بیج ڈالنے کے لئے فرقہ وارانہ چناؤ کا طریقہ چلایا اور تب سے اب تک پھوٹ ڈالنے کی لاکھوں کوششیں کیں لیکن جنتا کے سہیوگ کے کارن انھیں سپھلتا نہیں مل سکی۔ ہم

यहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ दे रहे हैं जो अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे करने में कामयाब हुई थीं.

३ फ़रवरी को साइमन कमीशन बम्बई में आकर उतरा. उस दिन हिन्दुस्तान भर में हड़ताल की गई और कमीशन का पूरा बाइकाट शुरू कर दिया गया. आम जनता ने कमीशन का बाइकाट किया था. कमीशन जब बम्बई में घूम रहा था, तब 'सर' का ख़िताब पाये हुए बाईस हिन्दुस्तानियों में से एक ने भी कमीशन से मिलने की तकलीफ़ गवारा न की. दिल्ली में कमीशन का क़दम पड़ते ही उसका विरोधी प्रदर्शनों के ज़रिये बाइकाट किया गया—"गो बैक, साइमन!" "साइमन वापस लौट जाओ" के झन्डे और तख़्ते दिखाये गये. लाहौर में विरोधी प्रदर्शन पर लाठी चार्ज हुआ और लाला लाजपत राय को इसी में चोट आई. लखनऊ में कुछ ताल्लुक़ेदारों ने क़ैसर बाग़ में कमीशन को पार्टी दी. पुलिस ने क़ैसरबाग़ घेर लिया और यह इन्तज़ाम किया कि विरोधी-कैम्प के लोग बाग़ की सड़कों के क़रीब भी न आने पायें, लेकिन इतने इन्तज़ामों के बाद भी "गो बैक, साइमन" और "हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिये" वग़ैरा शब्द सैकड़ों काली-काली पतंगों और गुब्बारों में लिखे हुए आकर बाग़ में गिरने लगे. बम्बई, लखनऊ, दिल्ली, पटना सब जगह कमीशन का बाइकाट किया गया. पंडित मोतीलाल नेहरू ने साफ़ कह दिया कि कमीशन के साथ हिन्दुस्तानी उसी हालत में सहयोग करेंगे जब कि उसमें हिन्दुस्तानी भी इतनी ही तादाद में शामिल किये जायँ. सरकार को लाचार होकर ख़ुद सन्ट्रल कमेटी के लिये असेम्बली

یہاں کچھ ایسی گھٹنائیں دے رہے ہیں جو انگریزوں کے دانت کھٹے کرنے میں کامیاب ہوئی تھیں۔

۳ فروری کو سائمن کمیشن بمبئی میں آکر اترا۔ اس دن ہندوستان بھر میں ہڑتال کی گئی اور کمیشن کا پورا بائی کاٹ شروع کر دیا گیا۔ عام جنتا نے کمیشن کا بائی کاٹ کیا تھا۔ کمیشن جب بمبئی میں گھوم رہا تھا، تب سر کا خطاب پائے ہوئے بائیس ہندوستانیوں میں سے ایک نے بھی کمیشن سے ملنے کی تکلیف گوارا نہ کی۔ دلی میں کمیشن کا قدم پڑتے ہی اس کا ورودھی پردرشنوں کے ذریعے بائی کاٹ کیا گیا۔ "گو بیک سائمن!" "سائمن واپس لوٹ جاؤ!" کے جھنڈے اور تختے دکھائے گئے۔ لاہور میں ورودھی پردرشن پر لاٹھی چارج ہوا اور لالہ لاجپت رائے کو اسی میں چوٹ آئی۔ لکھنؤ میں کچھ تعلقداروں نے قیصر باغ میں کمیشن کو پارٹی دی۔ پولس نے قیصر باغ گھیر لیا اور انتظام کیا کہ ورودھی کیمپ کے لوگ باغ کی سڑکوں کے قریب بھی نہ آنے پائیں، لیکن اتنے انتظاموں کے بعد بھی "گو بیک سائمن" اور "ہندوستان ہندوستانیوں کے لئے" وغیرہ شبد سینکڑوں کالی کالی پتنگوں اور غباروں میں لکھے ہوئے آکر باغ میں گرنے لگے۔ بمبئی، لکھنؤ، دلی، پٹنہ سب جگہ کمیشن کا بائی کاٹ کیا گیا۔ پنڈت موتی لال نہرو نے صاف کہہ دیا کہ کمیشن کے ساتھ ہندوستانی اسی حالت میں سہیوگ کریں گے جب کہ اس میں ہندوستانی بھی اتنی ہی تعداد میں شامل کئے جائیں۔ سرکار کو لاچار ہوکر خود سنٹرل کمیٹی کے لئے اسمبلی

के मेम्बर नामजद करने पड़े थे. इसके पहले हिन्दुस्तानियों ने १९२१ में प्रिन्स आफ़ वेल्स का सफल बाइकाट किया था.

१९३० में गांधी जी ने नमक बनाने का आन्दोलन शुरू किया और देश में आग भड़क उठी. हिन्दू और मुसलमान एक हो गये और अंग्रेज़ों के पैर लड़खड़ाने लगे. इसके पहले बहुत से इन्क़लाबी वीरों के बलिदान ने देश की एकता में सीमेन्ट लगा दिया था. चटगाँव के हथियार घर को नौजवानों ने अपने क़ब्ज़े में कर लिया. सभी जगह जनता में जोश फैला था. पेशावर में पठानों के जलूस पर गोली चलाने के लिये सरकार ने गढ़वाली पलटन को ख़ास तौर पर भेजा, क्योंकि सरकार का ख़याल था कि हिन्दुओं को पठानों पर गोली चलाने में हिचकिचाहट नहीं होगी. गढ़वाली सिपाहियों को पठानों के ख़िलाफ़ बहुत उकसाया गया लेकिन गढ़वाली सिपाहियों ने गोली चलाने से इनकार कर दिया. चन्द्रसिंह गढ़वाली को अपने भाइयों (पठानों) पर गोली चलाने से इनकार करने के कारण कई साल जेल में रहना पड़ा. सरदार भगतसिंह और गणेश शंकर विद्यार्थी के बलिदान ने भी जनता को जगाने में बड़ा काम किया.

अगस्त १९३१ में चटगाँव में भयानक साम्प्रदायिक दंगा कराने की अंग्रेज़ों की साज़िश सफल हुई. वह दंगा अंग्रेज़ अफ़सरों के इशारों पर मुसलमान पुलिस ने किया. पुलिस के इशारे और निगरानी में खूब लूट पाट हुई थी. साम्प्रदायिक दंगे की आड़ लेकर उन लोगों पर हमले कराये गये जिनसे सरकार डरती थी. जिन वकीलों ने हथियारघर पर हमला और क़ब्ज़ा करने

کے ممبر نامزد کرنے پڑے تھے۔ اس کے پہلے ہندوستانیوں نے ۱۹۲۱ء میں پرنس آف ویلس کا سپھل بائی کاٹ کیا تھا۔

۱۹۳۰ میں گاندھی جی نے نمک بنانے کا اندولن شروع کیا اور دیش میں آگ بھڑک اٹھی۔ ہندو اور مسلمان ایک ہو گئے اور انگریزوں کے پیر لڑکھڑانے لگے۔ اس کے پہلے بہت سے انقلابی ویروں کے بلیدان نے دیش کی ایکتا میں سیمنٹ لگا دیا تھا۔ چٹ گاؤں کے ہتھیار گھر کو نوجوانوں نے اپنے قبضے میں کر لیا۔ سبھی جگہ جنتا میں جوش پھیلا تھا۔ پشاور میں پٹھانوں کے جلوس پر گولی چلانے کے لئے سرکار نے گڑھوالی پلٹن کو خاص طور پر بھیجا، کیونکہ سرکار کا خیال تھا کہ ہندوؤں کو پٹھانوں پر گولی چلانے میں ہچکچاہٹ نہیں ہوگی۔ گڑھوالی سپاہیوں کو پٹھانوں کے خلاف بہت اکسایا گیا لیکن گڑھوالی سپاہیوں نے گولی چلانے سے انکار کر دیا۔ چندر سنگھ گڑھوالی کو اپنے بھائیوں (پٹھانوں) پر گولی چلانے سے انکار کرنے کے کارن کئی سال جیل میں رہنا پڑا۔ سردار بھگت سنگھ اور گنیش شنکر ودیارتھی کے بلیدان نے بھی جنتا کو جگانے میں بڑا کام کیا۔

اگست ۱۹۳۱ میں بھیانک سمپردائک دنگا کرانے کی انگریزوں کی سازش سپھل ہوئی۔ وہ دنگا انگریز افسروں کے اشاروں پر مسلمان پولس نے کیا۔ پولس کے اشارے اور نگرانی میں خوب لوٹ پاٹ ہوئی تھی، سمپردائک دنگے کی آڑ لے کر ان لوگوں پر حملے کرائے گئے جن سے سرکار ڈرتی تھی۔ جن وکیلوں نے ہتھیار گھر پر حملہ اور قبضہ کرنے

वाले मुजरिमों की तरफ़ से मुक़दमा लड़ा था उन पर हमले किये गये, उनके घर लूटे गये और जलाये गये. "पंच जन्य" के दफ़्तर पर हमला किया गया, जो गाँधी टोपी पहिनते थे उन्हें पीटा गया और सेंटपाल कालेज के प्रोफ़ेसर अक्राइड ने जब असल हाल ज़ाहिर किया तो उन्हें कालेज में नौकरी करना कठिन हो गया. एक विद्यार्थी की तलाशी में पुलिस की शैतानी पर भी अक्रायड ने एतराज़ किया था और वह इतने तंग किये गये कि उन्हें हिन्दुस्तान से चला जाना पड़ा.

सरकार का जतन ज़ोरों से चल रहा था और उसे कामयाबी भी हो रही थी. उसने हिन्दू-मुसलमानों के साथ ही साथ हिन्दुओं के बीच भी अनेक मतभेद डाल दिये थे. पिछड़ा हुआ वर्ग अपना अलग संगठन कर रहा था. सरकार बेशर्मी से किसी भी घटना को साम्प्रदायिक रंग मे रंग देती थी. मोपला विद्रोह को ही लीजिये, हिन्दू महाजन मोपला लोगों का ख़ून चूस रहे थे. मोपला बहुत ही ग़रीब थे. वह अंग्रेजों और हिन्दू महाजनों के कट्टर दुश्मन थे. जब उनकी तकलीफ़ बढ़ती ही गई तो उन्होंने दोनों के ख़िलाफ़ जिहाद छेड़ दिया. यह ग़रीब और पैसे वालों की लड़ाई थी, लेकिन इसे साम्प्रदायिक जामा पहिना दिया गया. अंग्रेजों के गुर्गों ने भी अंग्रेजों के सुर में सुर मिलाकर इसे साम्प्रदायिक दंगा ही कहा. सिंध के उपजाऊ भाग हिन्दू और सिक्ख ज़मींदारों के क़ब्ज़े में थे. पंजाब के कुछ धनी मुसलमानों ने भी कुछ ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था और ज़मींदारों की लूट में सिंध के मुसलमान ज़मींदार पीछे पड़ गये. किसानों की संगठित शक्ति से ज़मींदार डरने लगे और उन्होंने

والے مجرموں کی طرف سے مقدمہ لڑا تھا اُن پر حملے کئے گئے ان کے گھر لوٹے گئے اور جلائے گئے "پنچ جنیہ" کے دفتر پر حملہ کیا گیا، جو گاندھی ٹوپی پہنتے تھے انھیں پیٹا گیا۔ اور سینٹ پال کالج کے پروفیسر اکرائیڈ نے جب اصل حال ظاہر کیا تو انھیں کالج میں نوکری کرنا کٹھن ہو گیا۔ ایک ودیارتھی کی تلاشی میں پولیس کی شیطانی پر بھی اکرائیڈ نے اعتراض کیا تھا اور وہ اتنے تنگ کئے گئے کہ انھیں ہندوستان سے چلا جانا پڑا۔

سرکار کا جتن زوروں سے چل رہا تھا اور اسے کامیابی بھی ہو رہی تھی۔ اس نے ہندو مسلمانوں کے ساتھ ہی ساتھ ہندوؤں کے بیچ بھی انیک مت بھید ڈال دئے تھے۔ پچھڑا ہوا ورگ الگ اپنا سنگٹھن کر رہا تھا سرکار بے شرمی سے کسی بھی گھٹنا کو سمپردائک رنگ میں رنگ دیتی تھی۔ موپلا دروہ کو لیجئے ہندو مہاجن موپلا لوگوں کا خون چوس رہے تھے۔ موپلا بہت ہی غریب تھے۔ وہ انگریزوں اور ہندو مہاجنوں کے کٹر دشمن تھے۔ جب ان کی تکلیف بڑھتی ہی گئی تو انھوں نے دونوں کے خلاف جہاد چھیڑ دیا۔ یہ غریب اور پیسے والوں کی لڑائی تھی، لیکن اسے سمپردائک جامہ پہنا دیا گیا۔ انگریزوں کے گرگوں نے بھی انگریزوں کے سُر میں سُر ملا کر اسے سمپردائک دنگا ہی کہا۔ سندھ کے اپجاؤ بھاگ ہندو اور سکھ زمینداروں کے قبضے میں تھے۔ پنجاب کے کچھ دھنی مسلمانوں نے بھی کچھ زمین پر قبضہ کر رکھا تھا اور زمینداروں کی لوٹ میں سندھ کے مسلمان زمیندار پیچھے پڑ گئے کسانوں کی سنگٹھت شکتی سے زمیندار ڈرنے لگے اور انھوں نے

एक मिला जुला मोर्चा बनाया. सिंध के मुसलमान जमींदार उपजाऊ जमीन को लेना चाहते थे. जमींदारों की ग़रज़ पूरी करने के लिये जो लड़ाइयाँ हुईं उन्हें भी साम्प्रदायिक कहा गया और उनकी आड़ लेकर किसानों का संगठन कुचला जाने लगा. काश्मीर में राजा हिन्दू है और प्रजा मुसलमान. हैदराबाद में राजा मुसलमान है और प्रजा हिन्दू. जब जब इनकी प्रजा ने राजाओं के खिलाफ़ बग़ावत की, अंग्रेजों ने इन्हें फ़िरक़ेवाराना जामा पहिना दिया. अंग्रेजों ने अपना फूट का चक्कर चलाया. फ़ौज में यह चक्कर खास तौर पर चलाया गया ताकि काले जवान एक होकर खड़े न हो सकें.

अंग्रेजों की लाखों कोशिशों के बाद भी जब जनता की बेदारी में ढिलाई नहीं आई तो उन्होंने हिन्दुओं में यह भावना पैदा कर दी कि मुसलमान उनकी आज़ादी की राह के रोड़े हैं और मुसलमानों में यह भावना भर दी कि हिन्दुओं के कारन ही वह ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़े हैं. यह भावना जहरीले रूप में बढ़ती ही गई और हिन्दुओं और मुसलमानों में इतनी कड़ुवाहट आ गई कि मुसलमानो ने पाकिस्तान की माँग खड़ी की. पहले यह माँग कुछ फ़ीसदी लोगों की ही थी लेकिन इसका रूप बढ़ता ही गया. हरिजनों में हिन्दुओं के खिलाफ़ ऐसी जहरीली भावना भर दी गई कि वह हिन्दुओं को अपना दुश्मन समझने लगे.

सन् १९४२ में जनता ने आन्दोलन किया. गांधी जी ने "भारत छोड़ो" का नारा लगाया. मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा इस आन्दोलन के खिलाफ़ थीं और अंग्रेजों को लड़ाई में इन्होंने मदद

ایک ملا جلا مورچہ بنایا۔ سندھ کے مسلمان زمیندار اپجاؤ زمین کو لینا چاہتے تھے۔ زمینداروں کی غرض پوری کرنے کے لئے جو لڑائیاں ہوئیں انھیں بھی سامپردائک کہا گیا اور اُن کی آڑ لے کر کسانوں کا سنگھٹن کچلا جانے لگا۔ کاشمیر میں راجا ہندو ہے اور پرجا مسلمان۔ حیدرآباد میں راجہ مسلمان ہے اور پرجا ہندو۔ جب جب ان کی پرجا نے راجاؤں کے خلاف بغاوت کی، انگریزوں نے انھیں فرقے وارانہ جامہ پہنا دیا۔ انگریزوں نے اپنا پھوٹ کا چکر چلایا۔ فوج میں یہ چکر خاص طور پر چلایا گیا تاکہ کالے جوان ایک ہو کر کھڑے نہ ہو سکیں۔

انگریزوں کی لاکھوں کوششوں کے بعد بھی جب جنتا کی بیداری میں ڈھیلائی نہیں آئی تو اُنھوں نے ہندوؤں میں یہ بھاونا پیدا کر دی کہ مسلمان ان کی آزادی کی راہ کے روڑے ہیں اور مسلمانوں میں یہ بھاونا بھر دی کہ ہندوؤں کے کارن ہی وہ غلامی کی زنجیروں میں جکڑے ہیں۔ یہ بھاونا زہریلے روپ میں بڑھتی ہی گئی اور ہندو اور مسلمانوں میں اتنی کڑواہٹ آ گئی کہ مسلمانوں نے پاکستان کی مانگ کھڑی کی۔ پہلے یہ مانگ کچھ فیصدی لوگوں کی ہی تھی لیکن اس کا روپ بڑھتا ہی گیا، ہریجنوں میں ہندوؤں کے خلاف ایسی زہریلی بھاونا بھر دی گئی کہ وہ ہندوؤں کو اپنا دشمن سمجھنے لگے۔

۱۹۴۲ء میں جنتا نے اندولن کیا۔ گاندھی جی نے "بھارت چھوڑو" کا نعرہ لگایا۔ مسلم لیگ اور ہندو مہاسبھا اس اندولن کے خلاف تھیں اور انگریزوں کو لڑائی میں انھوں نے مدد

भी दी लेकिन जनता आन्दोलन के साथ थी. यह जन जागृत बढ़ती ही गई और अंग्रेज़ों ने एक ही सहारा लिया—दमन का. यह दमन बहुत ही हैवानी था. नेताओं को गिरफ्तार करके अंग्रेज़ों ने जनता को जोश दिलाया और इस जोश का फ़ायदा गोली चलाकर और जनता को दबाकर उठाया गया. चिमूर-आष्टी में तो हद ही हो गई.

अंग्रेज़ों ने जन आन्दोलन की शक्ति को पहचाना और उनका ज़हरीला प्रचार बढ़ता ही गया. महात्मा गांधी मिस्टर जिनाह से मिले पर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ. मुस्लिम लीग पाकिस्तान पाने के लिये उतावली हो गई. अंग्रेज़ एक तरफ़ तो आज़ादी देने का ढोंग रचते थे लेकिन दूसरी तरफ़ उनके इशारे पर मुस्लिम लीग आज़ादी की राह में रोड़े अटकाती थी.

जनता में १९४२ की क्रान्ति से आई हुई जागृति थी और इसमें पुट मिला दिया आज़ाद हिन्द फ़ौज ने. आज़ाद हिन्द फ़ौज के रूप में नेता जी सुभाष बोस ने भी हिन्दुस्तानियों को जगाने में बहुत हिस्सा लिया था. आज़ाद-हिन्द फ़ौज के सिपाहियों पर मुक़दमा चलाया गया. जनता उनकी रिहाई के लिये आन्दोलन कर रही थी. प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाई जाती थीं. कलकत्ते मे 'रशीद-दिन' के मौक़े पर गोलियाँ चलीं और हिन्दू मुसलमानों ने मिलकर ख़ून बहाया. सभी बड़े शहरों में गोलियाँ चलाई गईं और हिन्दू मुस्लिम साथ-साथ बढ़े और शहीद हुए. इसके बाद ही जहाज़ियों ने विद्रोह किया. यह विद्रोह संसार के महान सैनिक विद्रोहों में से एक था. अंग्रेज़ों ने क्रिप्स मिशन भेजा लेकिन हिन्दुस्तानी इन चालों को पहिचानते थे.

क्रिप्स मिशन पहले भी एक बार नाकामयाब हो कर लौट चुका

بھی دی لیکن جنتا اندولن کے ساتھ تھی۔ یہ جن جاگرتی بڑھتی ہی گئی اور انگریزوں نے ایک ہی سہارا لیا۔ دمن کا۔ یہ دمن بہت ہی حیوانی تھا۔ نیتاؤں کو گرفتار کرکے انگریزوں نے جنتا کو جوش دلایا اور اس جوش کا فائدہ گولی چلا کر اور جنتا کو دبا کر اٹھایا گیا۔ چمور آشٹی میں تو حد ہی ہو گئی۔

انگریزوں نے جن اندولن کی شکتی کو پہچانا اور ان کا زہریلا پرچار بڑھتا ہی گیا۔ مہاتما گاندھی مسٹر جناح سے ملے پر کچھ فائدہ نہیں ہوا۔ مسلم لیگ پاکستان پانے کے لئے اتاولی ہو گئی۔ انگریز ایک طرف تو آزادی دینے کا ڈھونگ رچتے تھے لیکن دوسری طرف ان کے اشارے پر مسلم لیگ آزادی کی راہ میں روڑا اٹکاتی تھی۔

جنتا میں ۱۹۴۲ کی کرانتی سے آئی ہوئی جاگرتی تھی اور اس میں پٹ ملا دیا آزاد ہند فوج نے۔ آزاد ہند فوج کے روپ میں نیتا جی سبھاس بوس نے بھی ہندوستانیوں کو جگانے میں بہت حصہ لیا تھا۔ آزاد ہند فوج کے سپاہیوں پر مقدمہ چلایا گیا۔ جنتا ان کی رہائی کے لئے اندولن کر رہی تھی۔ پردرشن کاریوں پر گولیاں چلائی جاتی تھیں۔ کلکتے میں 'رشید دن' کے موقعے پر گولیاں چلیں اور ہندو مسلمانوں نے مل کر خون بہایا۔ سبھی بڑے شہروں میں گولیاں چلائی گئیں اور ہندو مسلم ساتھ ساتھ بڑھے اور شہید ہوئے۔ اس کے بعد ہی جہازیوں نے ودروہ کیا۔ یہ ودروہ سنسار کے مہان سینک ودروہوں میں سے ایک تھا۔ انگریزوں نے کرپس مشن بھیجا لیکن ہندوستانی ان چالوں کو پہچانتے تھے۔

کرپس مشن پہلے بھی ایک بار ناکامیاب ہو کر لوٹ چکا

था. इस बार भी वह नाकामयाब रहा. अंग्रेजों ने डंके की चोट एलान किया कि कांग्रेस और लीग में समझौता न होने के कारण हिन्दुस्तान को आजादी नहीं दी जा सकती. जिनाह साहब अपनी माँग पर अड़े रहे. इसके साथ ही अंग्रेजों ने यह भी महसूस किया कि उनके पैर उखड़ रहे हैं. उन्होंने और जहर फैलाया और १६ अगस्त १९४६ को यह जहर कलकत्ता में फैला और बुरी तरह फैला. उसके बाद नोआखाली, बिहार, गढ़मुक्तेश्वर, पंजाब, दिल्ली की बातें लिखना बेकार है. यहाँ यही बताना जरूरी है कि कलकत्ते का क़त्ले आम अंग्रेजों और लीगियों की गुटबन्दी के कारण ही हुआ था. एक अंग्रेज फ़ौजी अफ़सर ने यह क़बूल किया—"दंगों के शुरू होते ही मुझसे फ़ौज इस्तेमाल करने का अनुरोध किया गया था लेकिन मैं इसके लिये तैयार नहीं हुआ. मुझे डर था कि अगर मैंने फ़ौज का इस्तेमाल किया तो दंगाई आपस में लड़ना छोड़ कर सरकार पर ही टूट पड़ेंगे. जिस जनता ने एक होकर बंगाल के भयानक अकाल का सामना किया था वही आपस में लड़ने लगी और बंगाल के गवर्नर गोबर गणेश बने बैठे रहे.

सरकार के खिलाफ़ नारे लगाने वाले बच्चों को पुलिस गोलियों से भून डालती थी लेकिन इस मौक़े पर वह भी तमाशा देखती रही. अंग्रेजों की चाल बढ़ती ही गई और गांधी जी और नेहरू जी की लाखों कोशिशों के बाद भी . . . .

एक दिन दुनिया ने देखा कि हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो गये. नेहरू जी ने रुँधे गले से इस बँटी हुई आजादी को मंजूर किया. अंग्रेज भारत छोड़ने को राजी हो गये पर अपने पैर रखने के लिये

تھا۔ اس بار بھی وہ ناکامیاب رہا۔ انگریزوں نے ڈنکے کی چوٹ اعلان کیا کہ کانگریس اور لیگ میں سمجھوتہ نہ ہونے کے کارن ہندوستان کو آزادی نہیں دی جا سکتی۔ جناح صاحب اپنی مانگ پر اڑے رہے۔ اس کے ساتھ ہی انگریزوں نے یہ بھی محسوس کیا کہ ان کے پیر اکھڑ رہے ہیں۔ انھوں نے اور زہر پھیلایا اور ۱۶ اگست ۱۹۴۶ کو یہ زہر کلکتہ میں پھیلا اور بری طرح پھیلا۔ اس کے بعد نواکھالی، بہار، گڑھ مکتیشور، پنجاب، دلی کی باتیں لکھنا بیکار ہے۔ یہاں یہی بتانا ضروری ہے کہ کلکتے کا قتل عام انگریزوں اور لیگیوں کی گٹھ بندی کے کارن ہی ہوا تھا۔ ایک انگریز فوجی افسر نے یہ قبول کیا۔ دنگے کے شروع ہوتے ہی مجھ سے فوج استعمال کرنے کا انورودھ کیا گیا تھا لیکن میں اس کے لئے تیار نہیں ہوا۔ مجھے ڈر تھا کہ اگر میں نے فوج کا استعمال کیا تو دنگائی آپس میں لڑنا چھوڑ کر سرکار ہی پر ٹوٹ پڑیں گے جس جنتا نے ایک ہو کر بنگال کے بھیانک کال کا سامنا کیا تھا وہی آپس میں لڑنے لگی اور بنگال کے گورنر گوبر گنیش بنے بیٹھے رہے۔

سرکار کے خلاف نعرے لگانے والے بچوں کو پولس گولیوں سے بھون ڈالتی تھی لیکن اس موقعے پر وہ بھی تماشہ دیکھتی رہی۔ انگریزوں کی چال بڑھتی ہی گئی اور گاندھی جی اور نہرو جی کی لاکھوں کوششوں کے بعد بھی......

ایک دن دنیا نے دیکھا کہ ہندوستان کے دو ٹکڑے ہو گئے۔ نہرو جی نے روندھے گلے سے اس بانٹی ہوئی آزادی کو منظور کیا۔ انگریز بھارت چھوڑنے کو راضی ہو گئے پر اپنے پیر رکھنے کے لئے

उन्होंने जगह बना ही ली. बँटवारे के बाद जो मार-काट देश में हुई उसके बारे में यहाँ लिखना जरूरी नहीं. हम उन घावों को गहरा नहीं करना चाहते. यहाँ यह बताना ठीक होगा कि दंगों की आग उन शहरों में ज्यादा भड़की जिनके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस अफ़सर अंग्रेज थे. मुसलमानों को इन अंग्रेजों ने इस्लाम के नाम पर उभारा. अंग्रेजों की फैलाई हुई यह हवा बढ़ती ही गई और एक दिन हमने अपना राष्ट्र पिता भी खो दिया.

आज ! आज जमाना बदल गया है. हिन्दुस्तान को भी तरक़्क़ी करनी है पर यह तभी मुमकिन होगा जब कि हम एक होकर रहेंगे. मुसलमानों ने जिन उम्मीदों को लेकर पाकिस्तान की माँग की थी वह खतम हो गई. पाकिस्तान की माँग की भूल वह महसूस कर रहे हैं. पाकिस्तान में अभी भी उन्हीं का बोलबाला है जो जिनाह साहब की डिक्टेटरी को मानते हैं और वहाँ अंग्रेजो के पैर अभी भी जमे हैं. सरहदी गांधी की गिरफ़्तारी, और लाखों मुसलमानों का पाकिस्तान से वापस आना इस बात का सबूत है.

हमने अपनी बेवक़ूफ़ी के कारन अपने मुल्क के दो टुकड़े करा लिये और अपने बुजुर्गों की दी हुई अमानत को बरबाद कर डाला. पर उसे बनाना भी हमारे ही हाथ में है. हमें यह देख कर बहुत ही खुशी हो रही है कि हिन्दुस्तानी मुसलमान अपनी भूलों को महसूस कर रहे हैं. पाकिस्तान के कुछ अखबारों ने हिन्द यूनियन को बदनाम करने के लिये यह झूटी खबर छापी है कि जवाहर लाल नेहरू और ईपी के फ़क़ीर मिलकर पाकिस्तान को उलटने की साजिश कर रहे हैं. चर्चिल ने भी जो बयान दिया है

انھوں نے جگہ بنا ہی لی۔ بٹوارے کے بعد جو مار کاٹ دیش میں ہوئی اس کے بارے میں یہاں لکھنا ضروری نہیں۔ ہم اُن گھاؤوں کو گہرا نہیں کرنا چاہتے۔ یہاں یہ بتانا ٹھیک ہوگا کہ دنگوں کی آگ اُن شہروں میں زیادہ بھڑکی جن کے ڈپٹی کمشنر اور پولس افسر انگریز تھے۔ مسلمانوں کو ان انگریزوں نے اسلام کے نام پر ابھارا۔ انگریزوں کی پھیلائی ہوئی یہ ہوا بڑھتی ہی گئی اور ایک دن ہم نے اپنا راشٹر پتا بھی کھو دیا۔

آج ! آج زمانہ بدل گیا ہے۔ ہندوستان کو بھی ترقی کرنی ہے پر یہ تبھی ممکن ہوگا جب کہ ہم ایک ہو کر رہیں گے۔ مسلمانوں نے جن امیدوں کو لے کر پاکستان کی مانگ کی تھی وہ ختم ہو گئیں۔ پاکستان کی مانگ کی بھول وہ محسوس کر رہے ہیں۔ پاکستان میں ابھی بھی اُنھیں کا بول بالا ہے جو جناح صاحب کی ڈکٹیٹری کو مانتے ہیں اور وہاں انگریزوں کے پیر ابھی بھی جمے ہیں۔ سرحدی گاندھی کی گرفتاری اور لاکھوں مسلمانوں کا پاکستان سے واپس آنا اس بات کا ثبوت ہے۔

ہم نے اپنی بیوقوفی کے کارن اپنے ملک کے دو ٹکڑے کرا لئے اور اپنے بزرگوں کی دی ہوئی امانت کو برباد کر ڈالا۔ پر اسے بنانا بھی ہمارے ہی ہاتھ میں ہے۔ ہمیں یہ دیکھ کر بہت ہی خوشی ہو رہی ہے کہ ہندوستانی مسلمان اپنی بھولوں کو محسوس کر رہے ہیں۔ پاکستان کے کچھ اخباروں نے ہند یونین کو بدنام کرنے کے لئے یہ جھوٹی خبر چھاپی ہے کہ جواہر لال نہرو اور ایپی کے فقیر مل کر پاکستان کو الٹنے کی سازش کر رہے ہیں۔ چرچل نے بھی جو بیان دیا ہے

उसमें मुसलमानों को उभारने की कोशिश की गई है. ब्रिगेडियर उस्मान की क़ुरबानी और सरदार पटेल के जवाब ने चर्चिल को लाजवाब कर दिया है. हैदराबाद के सवाल को भी फ़िरक़ा-परस्ती का रंग दिया जा रहा है. पाकिस्तान मुसलमानों के लिये नुक़सान देने वाला ही साबित हो रहा है. डाक्टर सैयद महमूद का 'हिन्दू-मुसलमान' लेख जिन पाठकों ने पढ़ा है और प्रोफ़ेसर हबीब की स्पीच जिन भाइयों ने पढ़ी है वह जानते हैं कि यह लेख उन चोट खाये दिलों के हैं जिन्हें अपनी अमानत लुट जाने पर रंज है, मुल्क के टुकड़े-टुकड़े होने पर अफ़सोस है. पंडित सुन्दर लाल जी की यह राय भी ठीक है कि मुल्क के फिर से एक होने की माँग मुसलमानों की तरफ़ से ही होनी चाहिये. हिन्दुओं की तरफ़ से इस तरह का आन्दोलन हमारी दिक़्क़तों को बढ़ा देगा.

पिछले साल हमने मुल्क की आज़ादी की ख़ुशी मनाई थी पर हमने जो नज़ारे देखे हैं वह हमें शर्मिन्दा करते हैं और दुनिया की निगाहों में हमें ज़लील करते हैं. हमने अपनी अमानत खो दी है पर उसे हम फिर से पा सकते हैं. अंग्रेज़ों की साज़िश से ही देश की यह हालत हुई है. क्या हमारी अमानत हमें मिलेगी ?

क्या हम उम्मीद करें कि मुसलमान, प्रोफ़ेसर हबीब और डाक्टर सैयद महमूद जैसे विद्वान नेताओं की रहनुमाई में हिन्द की अमानत वापिस पाने की कोशिश करेंगे, और क्या हिन्दू यह सोचेंगे कि उनकी किन कमज़ोरियों के कारण मुसलमानों में उनकी तरफ़ से वह बेइतमीनानी पैदा हुई जिसने आख़िर में पाकिस्तान की माँग और फिर उसके जन्म का रूप धारण कर लिया ?

اُس میں مسلمانوں کو اُبھارنے کی کوشش کی گئی ہے۔ برگیڈیئر عثمان کی قربانی اور سردار پٹیل کے جواب نے چرچل کو لاجواب کر دیا ہے۔ حیدرآباد کے سوال کو بھی فرقہ پرستی کا رنگ دیا جا رہا ہے۔ پاکستان مسلمانوں کے لئے نقصان دینے والا ہی ثابت ہو رہا ہے۔ ڈاکٹر سیّد محمود کا 'ہندو مسلمان' لیکھ جن پاٹھکوں نے پڑھا ہے اور پروفیسر حبیب کی اسپیچ جن بھائیوں نے پڑھی ہے وہ جانتے ہیں کہ یہ لیکھ اُن چوٹ کھائے دلوں کے ہیں جنھیں اپنی امانت لٹ جانے پر رنج ہے، ملک کے ٹکڑے ٹکڑے ہونے پر افسوس ہے۔ پنڈت سندر لال جی کی یہ رائے بھی ٹھیک ہے کہ ملک کے پھر سے ایک ہونے کی مانگ مسلمانوں کی طرف سے ہی ہونی چاہئے۔ ہندوؤں کی طرف سے اس طرح کا اندولن ہماری دقتوں کو بڑھا دے گا۔

پچھلے سال ہم نے ملک کی آزادی کی خوشی منائی تھی پر ہم نے جو نظارے دیکھے ہیں وہ ہمیں شرمندہ کرتے ہیں اور دنیا کی نگاہ میں ہمیں ذلیل کرتے ہیں۔ ہم نے اپنی امانت کھو دی ہے پر اسے ہم پھر سے پا سکتے ہیں۔ انگریزوں کی سازش سے ہی دیش کی یہ حالت ہوئی ہے۔ کیا ہماری امانت ہمیں ملے گی؟

کیا ہم امید کریں کہ مسلمان پروفیسر حبیب اور ڈاکٹر سیّد محمود جیسے وِدوان نیتاؤں کی رہنمائی میں ہند کی امانت واپس پانے کی کوشش کریں گے، اور کیا ہندو یہ سوچیں گے کہ ان کی کن کمزوریوں کے کارن مسلمانوں میں ان کی طرف سے وہ بے اطمینانی پیدا ہوئی جس نے آخر میں پاکستان کی مانگ اور پھر اس کے جنم کا روپ دھارن کر لیا؟

माहात्मा गांधी और टालसटाय

(धर्मों का एक विद्यार्थी)

आज के ज़माने में हम एक ही महान आत्मा को जानते हैं जिनके लेखो का बरसों पहले गांधी जी ने अभ्यास था मुताला किया था, जिनसे उन्होंने पत्रव्यवहार भी किया और जिनका उन पर गहरा असर पड़ा था. वह हैं रूस के लियो टालसटाय. ऐश व आराम और फ़ौजी जीवन बिताने के बाद उन्हें दुनिया को खुदग़रज़ी से भरी जिन्दगी से बड़ी निराशा और नफ़रत हुई और वह रस्मो-व-रिवाज से आज़ाद होकर खुले दिल से ईसाई धर्म के उपदेशों की ओर झुके. उन्होंने हज़रत ईसा के असल धर्म उपदेश को खूब पढ़ा और समझा, उस पर अमल किया और उसके मुताबिक़ अपनी जिन्दगी बनाने की कोशिश की. अपने विचार और ज़िन्दगी बदलते ही उन्होंने अपनी बड़ी जायदाद छोड़दी और साग सब्ज़ी खाने लगे. उसका उन्होंने अपनी 'फ़र्स्ट स्टेप्स' नाम की किताब में ज़िक्र किया है. वह एक किसान की तरह सादे कपड़े पहिनते थे और अपने मकान के एक सादे, बिना कुर्सी टेबुल से सजे कमरे में रहते थे, जहाँ उनका लिखने का समान, एक हल, एक कुदाली, एक कुल्हाड़ी, एक आरा और मोची के औज़ार रक्खे रहते थे. वह एक किसान की तरह हल चलाकर या आराकशों के साथ लकड़ी काट कर रहने की कोशिश करते थे. बदक़िस्मती से उनके एक लड़के और लड़की को छोड़ कर

مہاتما گاندھی اور ٹالسٹائے

(دھرموں کا ایک ودیارتھی)

آج کے زمانے میں ہم ایک ہی مہان آتما کو جانتے ہیں جن کے لیکھوں کا برسوں پہلے گاندھی جی نے ابھیاس یا مطالعہ کیا تھا، جن سے انھوں نے پتر ویوہار بھی کیا اور جن کا اُن پر گہرا اثر پڑا تھا۔ وہ ہیں روس کے لیو ٹالسٹائے. عیش و آرام اور فوجی جیون بتانے کے بعد انہیں دنیا کی خودغرضی سے بھری زندگی سے بڑی نراشا اور نفرت ہوئی اور وہ رسم و رواج سے آزاد ہو کر کھلے دل سے عیسائی دھرم کے اپدیشوں کی اور جھکے۔ انھوں نے حضرت عیسیٰ کے اصل دھرم اپدیش کو خوب پڑھا اور سمجھا- اس پر عمل کیا اور اس کے مطابق اپنی زندگی بنانے کی کوشش کی۔ اپنے وچار اور زندگی بدلتے ہی انھوں نے اپنی بڑی جائداد چھوڑ دی اور ساگ سبزی کھانے لگے۔ اسکا انھوں نے اپنی فرسٹ اسٹیپس نام کی کتاب میں ذکر کیا ہے۔ وہ ایک کسان کی طرح سادے کپڑے پہنتے تھے اور اپنے مکان کے ایک سادے، بنا کرسی ٹیبل سے سجے کمرے میں رہتے تھے، جہاں ان کا لکھنے کا سامان ایک ہل ایک کدال، ایک کلہاڑی، ایک آرا اور موچی کے اوزار رکھے رہتے تھے۔ وہ ایک کسان کی طرح ہل چلا کر یا آراکشوں کے ساتھ لکڑی کاٹ کر رہنے کی کوشش کرتے تھے۔ بدقسمتی سے ان کے ایک لڑکے اور ایک لڑکی کو چھوڑ کر

घर के ज़्यादातर लोग दूसरे खयाल के थे. उनके सबसे बड़े लड़के से मैं पेरिस में मिला था. वह तो अपने बाप से नफ़रत करता था और रूसी इन्क़लाब के लिये, जिसके कारन उनकी बहुत बड़ी जायदाद बरबाद हो गई थी, उन्हें क़ुसूरवार ठहराता था. ज़ाहिर है कि वह बिलकुल ग़लती पर था.

गांधी जी की तरह टाल्सटाय भी सब तरह की हिंसा के खिलाफ़ थे. उनका विश्वास था कि अहिन्सा और सत्याग्रह से दुनिया को ऊँचा उठाया जा सकता है. सत्याग्रह का मतलब जैसा हज़रत ईसा ने सिखाया है, बुराई की बुराई से या ताक़त से नहीं बल्कि भलाई से मुख़ालफ़त की जाय. लेकिन ईसाई मज़हबी तालीम को फिर से ज़िन्दा करने के लिये उन्होंने सिर्फ़ नर्म विरोध की ही मदद नहीं ली बल्कि हिंसा और ताक़त के साथ हर रूप में अमली तौर पर असहयोग (अदम तआवुन) भी किया. इसी बात को ईसाई भूल गये थे, या ईसाई धर्म के शुरू के दिनों के बाद समझ नहीं पाये थे. शाह कान्स्टेण्टाइन के पहले के बादशाहों ने तो ईसाई धर्म पर ख़ूब ख़ूब ज़ुल्म किया था, लेकिन जब ईसाई धर्म मान लिया तो अपने हाथ और साम्राज्य की तलवार पर बपतिस्मे की रस्म का असर नहीं होने दिया और इसीलिये धीरे धीरे ईसाई धर्म के रीत रिवाजों में हिंसा दाखिल हो गई.

टाल्सटाय ने अपना कुन्बा इसलिए छोड़ दिया कि उसके साथ वह अपने आदर्शों के मुताबिक़ नहीं रह पाते थे. क्योंकि कुन्बे के लोग ऐशो आराम की ज़िन्दगी बिताते थे और

گھر کے زیادہ تر لوگ دوسرے خیال کے تھے. ان کے سب سے بڑے لڑکے سے میں پیرس میں ملا تھا. وہ تو اپنے باپ سے نفرت کرتا تھا اور روسی انقلاب کے لئے، جس کے کارن ان کی بہت بڑی جائیداد برباد ہو گئی تھی، انہیں قصوروار ٹھہراتا تھا. ظاہر ہے کہ وہ بالکل غلطی پر تھا.

گاندھی جی کی طرح ٹالسٹائے بھی سب طرح کی ہنسا کے خلاف تھے. ان کا وشواس تھا کہ اہنسا اور سیتہ گرہ سے دنیا کو اونچا اٹھایا جا سکتا ہے. سیتہ گرہ کا مطلب جیسا حضرت عیسیٰ نے سکھایا ہے برائی کی برائی سے یا طاقت سے نہیں بلکہ بھلائی سے مخالفت کی جائے. لیکن عیسائی مذہبی تعلیم کو پھر سے زندہ کرنے کے لئے انہوں نے صرف نرم وِرودھ کی ہی مدد نہیں لی بلکہ ہنسا اور طاقت کے ساتھ ہر روپ میں عملی طور پر اسہیوگ (عدم تعاون) بھی کیا، اسی بات کو عیسائی بھول گئے تھے، یا عیسائی دھرم کے شروع کے دنوں کے بعد سمجھ نہیں پائے تھے. شاہ کانسٹینٹائن کے پہلے بادشاہوں نے تو عیسائی دھرم پر خوب خوب ظلم کیا تھا، لیکن جب عیسائی دھرم مان لیا تو اپنے ہاتھ اور سامراج کی تلوار پر بپتسمے کی رسم کا اثر نہیں ہونے دیا اور اسی لئے دھیرے دھیرے عیسائی دھرم کے ریت رواجوں میں ہنسا داخل ہو گئی.

ٹالسٹائے نے اپنا کنبہ اس لئے چھوڑ دیا کہ اس کے ساتھ وہ اپنے آدرشوں کے مطابق نہیں رہ پاتے تھے. کیونکہ کنبے کے لوگ عیش و آرام کی زندگی بتاتے تھے اور

जो जमीनें टालसटाय किसानों को लौटा देना चाहते थे, वह नहीं लौटाते थे. ठण्ड लगने के कारण वह बीमार पड़ गये. उन्हें निमोनिया हो गया और वह घर से दूर ही मर गये. इस तरह वह अपने मक़सद के लिये शहीद हुए.

उनकी ज़िन्दगी ऊँचे दर्जे की थी और हर देश के आदर्शवादियों पर उनका बहुत असर था इस लिये रूस की सरकार उन्हें क़ैद नहीं कर सकी फिर भी वह जेल मे जाने को तैयार थे. यह उस वक़्त की बात है जब उनके लेखों के किसी क़द्रदान को उनकी किताब की हाथ लिखी कापी, जिसे छापने की इजाज़त नहीं दी गई थी, बाँटते हुए पकड़ लिया था. उस पर मुक़द्मा चलाया था और उसे क़ैद की सज़ा दी थी. लेकिन हाकिमो ने जैसे हिन्दुस्तान मे महात्मा गांधी के साथ बरताव किया, उस तरह टालसटाय पर मुक़द्मा चलाने और सज़ा देने से रूस के हाकिमों ने इनकार कर दिया. क्योंकि रूस की सरकार हिन्दुस्तान जैसी परदेसी नहीं थी.

टालसटाय गांधी जी की तरह ही सच्चाई, प्रेम, ब्रह्मचर्य, दूसरे की चीजें न लेने (अस्तेय) में और जीवन को पूरी सादगी में विश्वास करते थे. टालसटाय की तरह गांधी जी भी सफ़ाई, सन्तोष, इन्द्रियनिग्रह (नफ़्सकुशी) धर्म की किताबें पढ़ने और अपने सब काम परमेश्वर को सौंप देने में विश्वास करते थे.

टालसटाय अपने कुछ जमींदार और राजकुमार दोस्तों पर बहुत बड़ा असर डालने में कामयाब हुए, जिन्होंने अपनी जायदादें किसानों को दे दीं. महात्मा गांधी ने भी कई लोगों पर असर डाला

جو زمینیں ٹالسٹائے کسانوں کو لوٹا دینا چاہتے تھے، وہ نہیں لوٹاتے تھے. ٹھنڈ لگنے کے کارن وہ بیمار پڑ گئے. انھیں نمونیا ہو گیا اور وہ گھر سے دور ہی مر گئے. اس طرح وہ اپنے مقصد کے لئے شہید ہوئے.

ان کی زندگی اونچے درجے کی تھی اور ہر دیش کے آدرشوادیوں پر ان کا بہت اثر تھا اس لئے روس کی سرکار انھیں قید نہیں کر سکی پھر بھی وہ جیل میں جانے کو تیار تھے. یہ اس وقت کی بات ہے جب ان کے لیکھوں کے کسی قدردان کو ان کی کتاب کی ہاتھ لکھی کاپی جسے چھاپنے کی اجازت نہیں دی گئی تھی، بانٹتے ہوئے پکڑ لیا تھا. اس پر مقدمہ چلایا تھا اور اسے قید کی سزا دی تھی لیکن حاکموں نے جیسے ہندوستان میں مہاتما گاندھی کے ساتھ برتاؤ کیا، اس طرح ٹالسٹائے پر مقدمہ چلانے اور سزا دینے سے روس کے حاکموں نے انکار کر دیا. کیونکہ روس کی سرکار ہندوستان جیسی پردیسی نہیں تھی.

ٹالسٹائے گاندھی جی کی طرح ہی سچائی، پریم، برہمچریہ دوسرے کی چیزیں نہ لینے (استیہ) میں اور جیون کی پوری سادگی میں وشواس کرتے تھے. ٹالسٹائے کی طرح گاندھی جی بھی صفائی سنتوش اندریہ نگرہ (نفس کشی) دھرم کی کتابیں پڑھنے اور اپنے سب کام پرمیشور کو سونپ دینے میں وشواس کرتے تھے.

ٹالسٹائے اپنے کچھ زمیندار اور راجکمار دوستوں پر بہت بڑا اثر ڈالنے میں کامیاب ہوئے، جنھوں نے اپنی جائدادیں کسانوں کو دے دیں. مہاتما گاندھی نے بھی کئی لوگوں پر اثر ڈالا

है लेकिन बहुत कम लोग उन्हे पूरी तरह समझ पाये हैं. लेकिन इससे वह निराश नहीं हुए और टालसटाय के कुछ विचारों पर तो उन्होंने खुद टालसटाय से ज्यादा कामयाबी से अमल किया. उन्होंने हिन्दुस्तान के राजकाज में सत्याग्रह की ताक़त का इस्तेमाल किया और हालाँकि लोगों ने न तो उन्हें पूरी तरह समझा न उनके कहने पर चले, फिर भी उन्होंने बड़ी कामयाबी हासिल की. उनकी हासिल की हुई इस कामयाबी के बारे मे तो किसी को शक ही नहीं. यह तो किसी भी मुल्क की आज तक की तारीख़ में बेजोड़ चीज़ है. इतिहास में सत्याग्रह की कुछ पिछली मिसालें भी मिलती हैं. जैसे सन् १८५० के आस पास हंगरी में फौजी विरोध और लड़ाई के नाकामयाब हो जाने क बाद वहाँ सत्याग्रह कुछ हद तक कामयाब हुआ था. टालसटाय ने भी अपनी किताबों में लिखा है कि गुलामों को आजाद कराने के लिये अमरीका में भी लायड गेरिजन सत्याग्रह को काम में लाना चाहते थे, लेकिन अमरीका की सरकार बीच मे आ पड़ी, और उसने उसी काम के लिये फौज इस्तेमाल की. फिर भी गांधीजी की कामयाबी के मुक़ाबले में यह तजरबे बिलकुल छोटे हैं. शुरू-शुरू मे टालसटाय ने ख़ास तौर से ईसाई ढंग पर ही लिखा, फिर भी वह न कट्टरपंथी थे और न ओछे ख़याल रखते थे. बाद मे उन्होंने देखा कि सब धर्मों के बुनियादी उसूल बिलकुल एक से हैं. वह इन उसूलों को ईश्वर के बनाये हुए मानते थे, जिनका अवतारों या पैग़म्बरों से कोई ताल्लुक़ नहीं.

महात्मा गांधी भी सच्चाई को ही अहमियत देते थे, उन कहानियों को नहीं, जिन्हें आदमी ने गढ़ा है या जो देवताओं की रची

ہے لیکن بہت کم لوگ انھیں پوری طرح سمجھ پائے ہیں۔ لیکن اس سے وہ نراش نہیں ہوئے اور ٹالسٹائے کے کچھ وچاروں پر تو انھوں نے خود ٹالسٹائے سے زیادہ کامیابی سے عمل کیا۔ انھوں نے ہندوستان کے راج کاج میں ستیہ گرہ کی طاقت کا استعمال کیا اور حالانکہ لوگوں نے نہ تو انھیں پوری طرح سمجھا نہ اُن کے کہنے پر چلے، پھر بھی انھوں نے بڑی کامیابی حاصل کی۔ اُن کی حاصل کی ہوئی اس کامیابی کے بارے میں تو کسی کو شک ہی نہیں۔ یہ تو کسی بھی ملک کی آج تک کی تاریخ میں بے جوڑ چیز ہے۔ اتہاس کی کچھ پچھلی مثالیں بھی ملتی ہیں جیسے ۱۸۵۰ء کے آس پاس ہنگری میں فوجی ویرودھ اور لڑائی کے ناکامیاب ہو جانے کے بعد وہاں ستیہ گرہ کچھ حد تک کامیاب ہوا تھا۔ ٹالسٹائے نے بھی اپنی کتابوں میں لکھا ہے کہ غلاموں کو آزاد کرانے کیلئے امریکہ میں لائڈ گیرجن ستیہ گرہ کو کام میں لانا چاہتے تھے۔ لیکن امریکہ کی سرکار بیچ میں آ پڑی، اور اُس نے اسی کام کے لئے فوج استعمال کی۔ پھر بھی گاندھی جی کی کامیابی کے مقابلے میں یہ تجربے بالکل چھوٹے ہیں۔ شروع شروع میں ٹالسٹائے نے خاص طور سے عیسائی ڈھنگ پر ہی لکھا، پھر بھی وہ نہ کٹر پنتھی تھے اور نہ اوچھے خیال رکھتے تھے۔ بعد میں انھوں نے دیکھا کہ سب دھرموں کے بنیادی اصول بالکل ایک سے ہیں۔ ان اصولوں کو ایشور کے بنائے ہوئے مانتے تھے۔ جن کا اوتاروں یا پیغمبروں سے کوئی تعلق نہیں۔

مہاتما گاندھی بھی سچائی کو ہی اہمیت دیتے تھے، اُن کہانیوں کو نہیں جنھیں آدمی نے گڑھا ہے یا جو دیوتاؤں کی رچی

हुई कही जाती हैं और जिनका नासमझ लोगों पर ही असर होता है. वह परमेश्वर को 'सत्य' कहते थे, जैसे अरब लोग उसे 'हक़' कहते हैं और सत्य को परमेश्वर कहते थे.

एक दिन एक किसान औरत, जिसके पेट में बच्चा था, यासना पालियाना के दूब के मैदान मे चली आई. इस जायदाद की मालकिन काउन्टेस टाल्सटाय ने उसका रास्ता आम लोगो के लिये बंद कर रक्खा था. इस पर चौकीदार ने उस औरत को एक ठोकर लगाई. यह देखकर टाल्सटाय रंज और गुस्से के मारे रो दिये लेकिन उन्होंने काउन्टेस को ऐसी कोई बात न कही जिससे वह नाराज़ होती. मुझे यह भी याद है कि मैंने कुछ साल पहले कहीं पढ़ा है कि कस्तूर बा ने जनता की रक़म में से कुछ रुपये अपने घरेलू काम में खर्च किये थे तो गांधी जी बर्दाश्त नहीं कर सके थे.

लियो टाल्सटाय ने दुनिया में अपने विचार ज़ाहिर करने के लिये छोटी मोटी कई किताबे लिखी है, इनके अलावा उनकी शुरू की छोटी मोटी कहानियाँ भी हैं, जिनके कारन वह साहित्य संसार में मशहूर हो गये थे लेकिन जिनकी बाद मे उन्होंने कला या फ़न की चीज़ कह कर निन्दा की थी और यह ख्वाहिश ज़ाहिर की थी कि दुनिया उन कहानियो को न पढ़ कर मज़हबी और समाजी सचाइयों के बारे में उनके विचार पढ़े, जिनको उन्होंने कला को चीज़ों की तरह सजाया सँवारा नहीं और सीधे सादे रूप में लिखा है.

महात्मा जी ने भी बहुत कुछ लिखा है लेकिन उन्होने अपना बहुत सा वक़्त और मेहनत अपने मिशन को कामयाब बनाने के

ہوئی کہی جاتی ہیں اور جن کا ناسمجھ لوگوں پر ہی اثر ہوتا ہے۔ وہ پرمیشور کو ستیہ کہتے تھے، جیسے عرب لوگ اُسے 'حق' کہتے ہیں اور ستیہ کو پرمیشور کہتے تھے۔

ایک دن ایک کسان عورت، جس کے پیٹ میں بچہ تھا، یاسنا پالیانا کے دوب کے میدان میں چلی آئی۔ اس جائداد کی مالکن کاؤنٹیس ٹالسٹائے نے اُس کا راستہ عام لوگوں کے لئے بند کر رکھا تھا۔ اس پر چوکیدار نے اُس عورت کو ایک ٹھوکر لگائی۔ یہ دیکھکر ٹالسٹائے رنج اور غصے کے مارے رو دیا لیکن اُنھوں نے کاؤنٹیس کو ایسی کوئی بات نہ کہی جس سے وہ ناراض ہوتی۔ مجھے یہ بھی یاد ہے کہ میں نے کچھ سال پہلے کہیں پڑھا ہے کہ کستوربا نے جنتا کی رقم میں سے کچھ روپئے اپنے گھریلو کام میں خرچ کئے تھے تو گاندھی جی برداشت نہیں کر سکے تھے۔

لیو ٹالسٹائے نے دنیا میں اپنے وچار ظاہر کرنے کے لئے چھوٹی موٹی کئی کتابیں لکھی ہیں، ان کے علاوہ اُن کی شروع کی چھوٹی موٹی کہانیاں بھی ہیں، جن کے کارن وہ ساہتیہ سنسار میں مشہور ہو گئے تھے لیکن جن کی بعد میں اُنھوں نے کلا یا فن کی چیز کہکر نندا کی تھی اور یہ خواہش ظاہر کی تھی دنیا ان کہانیوں کو نہ پڑھکر مذہبی اور سماجی سچائیوں کے بارے میں ان کے وچار پڑھے، جن کو اُنھوں نے کلا کی چیزوں کی طرح سجایا سنوارا نہیں اور سیدھے سادے روپ میں لکھا ہے۔

مہاتما جی نے بھی بہت کچھ لکھا ہے لیکن اُنھوں نے اپنا بہت سا وقت اور محنت اپنے مشن کو کامیاب بنانے کے

लिये अमली कोशिशों में खर्च की. यही टालसटाय का भी मक़सद था.

गांधी जी हिन्दुस्तान की हिंसा की ताक़तों और हालतो से, जिन्हें उन्होंने मिटाने की कोशिश की थी और जिनके कारण उन्हें शहीद होना पड़ा, कुछ निराश मालूम होते थे. टाल्साटाय भी अपने आस पास की दुनिया से बड़े दुखी थे. लेकिन दोनों ने अपने आपको ईश्वर की इच्छा और संसार के भविष्य पर छोड़ रक्खा था. यह भविष्य दुनिया की भली बुरी ताक़तों के संघर्ष के नतीजे से जाहिर होता है. इस भविष्य का एक अंग तो है ऐसे महान् लोगों के आचार और विचार, और दूसरा है बुराई का विरोध, जो कि अनजान में क़ुदरती तौर पर रहती है और उसे बरबाद करने की ख्वाहिश की मिली जुली ताक़त के मुताबिक़ भली ताक़त के कुछ कुछ बस में आती है.

आत्मा और चेहरे की ख़ूबसूरती

यूनानी फ़िलासफ़रों ने कहा है कि चेहरा आत्मा का आइना है. लेकिन उनका मतलब सिर्फ़ चेहरे की ख़ूबसूरती से नहीं था बल्कि उससे जाहिर होने वाले भावों और विचारों से था. नहीं तो पुराने जमाने के सुकरात और आजकल के लियो टालसटाय और गांधी जी जैसे बड़े आध्यात्मिक (रूहानी) और फ़िलासफ़र लोगों को ख़ूबसूरत होना चाहिये था, लेकिन इनमें से एक भी ख़ूबसूरत नहीं था.

मगर इनकी आँखों और चेहरे के भाव ख़ूबसूरत थे. उनमें

لئے عملی کوششوں میں خرچ کی. یہی ٹالسٹائے کا بھی مقصد تھا.

گاندھی جی ہندستان کی ہنسا کی طاقتوں اور حالتوں سے جنھیں انھوں نے مٹانے کی کوشش کی تھی اور جس کے کارن انھیں شہید ہونا پڑا، کچھ نراش معلوم ہوتے تھے. ٹالسٹائے بھی اپنے آس پاس کی دنیا سے بڑے دکھی تھے. لیکن دونوں نے اپنے آپ کو ایشور کی اچھا اور سنسار کے بھوشیہ پر چھوڑ رکھا تھا. یہ بھوشیہ دنیا کی بھلی بری طاقتوں کے سنگھرش کے نتیجے سے ظاہر ہوتا ہے. اس بھوشیہ کا ایک انگ تو ہے ایسے مہان لوگوں کے آچار اور وچار اور دوسرا ہے برائی کا ورودھ، جو کہ انجان میں قدرتی طور پر رہتی ہے اسے برباد کرنے کی خواہش کی ملی جلی طاقت کے مطابق بھلی طاقت کے کچھ کچھ بس میں آتی ہے.

آتما اور چہرے کی خوبصورتی

یونانی فلاسفروں نے کہا ہے کہ چہرہ آتما کا آئینہ ہے لیکن اُن کا مطلب صرف چہرے کی خوبصورتی سے نہیں تھا بلکہ اُس سے ظاہر ہونے والے بھاؤں اور وچاروں سے تھا. نہیں تو پرانے زمانے کے سقراط اور آجکل کے لیو ٹالسٹائے اور گاندھی جی جیسے بڑے آدھیاتمک (روحانی) اور فلاسفر لوگوں کو خوبصورت ہونا چاہئے تھا لیکن انہیں سے ایک بھی خوبصورت نہیں تھا.

مگر ان کی آنکھوں اور چہرے کے بھاؤ خوبصورت تھے. ان میں

दया, हमदर्दी, प्रेम और कुचले हुओं और दुखियों के लिये दुख उठाने की ख्वाहिश दमकती थी.

यह गांधी जी और टाल्सटाय में एक और समानता है. यह बात मैंने गांधी जी के विरोधियों से भी सुनी है.

('हरिजन सेवक' से)

ज़रूरी सुधार—'नया हिन्द' की छः माही जिल्द जनवरी से जून और जुलाई से दिसम्बर तक की होती है. पिछले नम्बर से पहला सफ़ा १ से शुरू होना चाहिये था पर भूल से ५७७ से शुरू हो गया. हम इस महीने पहला सफ़ा ९७ से शुरू कर रहे हैं. 'नया हिन्द' की फ़ाइल रखने वाले भाइयों को भी जुलाई के सफ़ों में सुधार करके ५७७ की जगह पहला सफ़ा १ से गिनना चाहिये.

—मैनेजर

دیا، ہمدردی، پریم اور کچلے ہوؤں اور دکھیوں کے لئے دکھ اٹھانے کی خواہش دمکتی تھی۔

یہ گاندھی جی اور ٹالسٹائے میں ایک اور سمانتا ہے۔ یہ بات میں نے گاندھی جی کے ورودھیوں سے بھی سنی ہے۔

(ہریجن سیوک سے)

ضروری سدھار — نیا ہند کی چھ ماہی جلد جنوری سے جون اور جولائی سے دسمبر تک کی ہوتی ہے۔ پچھلے نمبر سے پہلا صفحہ ایک سے شروع ہونا چاہئے تھا پر بھول سے ۵۷۷ سے شروع ہو گیا۔ ہم اس مہینے پہلا صفحہ ۹۷ سے شروع کر رہے ہیں۔ نیا ہند کی فائل رکھنے والے بھائیوں کو بھی جولائی کے صفحوں میں سدھار کرکے ۵۷۷ کی جگہ پہلا صفحہ ۱ سے گننا چاہئے۔

(منیجر)

साँप की शराफ़त

(भाई रामजीदर)

मैं रोज़ सुबह टहलने जाता हूँ. मगर म्यूनीसिपल्टी की पक्की सड़क पर चलना मेरी क़िस्मत में नहीं. हालाँकि कोई क़ानूनी मनाही नहीं है. मैं सुबह की ठंडी ताज़ी हवा खाना चाहता हूँ. सड़क पर मोटरों की धूल और उस लोहे की गाड़ी के दर्शन जो बंगले वालों की सेहत की हिफ़ाज़त के लिये औरों की सेहत खतरे में डालती है— इन दोनों का मुक़ाबला करना पड़ता है. यह मैं कैसे गवारा करूं.

इसलिये मै एक खुले मैदान में चहल कदमी करता हूँ.

पिछली रात गर्मी किसी कदर ज़्यादा थी. आज सुबह आँख जल्दी खुल गई. मै निकल पड़ा.

मैदान में क़दम रक्खे ही थे कि सामने दो गज़ पर साँप का शुभा हुआ. ग़ौर से देखा तो वाक़ई साँप था, मगर छोटा और पतला सा.

वह रेंगा और मेरे पैरों पर किसी ने एकाएक ब्रेक लगा दिये.

उसी दम मैं उछल कर अपने आपको बचाने के लिये बेइख़्तियार दो चार गज़ साँप से और दूर भागा.

मैं एक तरफ़ भागा और साँप दूसरी तरफ़.

मुझे ऐसा जान पड़ा कि साँप मेरे ऊपर हमला करने वाला है.

और शायद वह भी यही समझा कि मैं उसके शिकार के लिये तैयार हूँ.

मैं साँप से डरा और साँप मुझसे.

سانپ کی شرافت

(بھائی رام جی در)

مَیں روز صبح ٹہلنے جاتا ہوں. مگر میونسپلٹی کی پکّی سڑک پر چلنا میری قسمت میں نہیں. حالانکہ کوئی قانونی مناہی نہیں ہے. میں صبح کی ٹھنڈی تازی ہوا کھانا چاہتا ہوں. سڑک پر موٹروں کی دھول اور اس لوہے کی گاڑی کے درشن جو بنگلے والوں کی صحت کی حفاظت کے لئے اوروں کی صحت خطرے میں ڈالتی ہے— اِن دونوں کا مقابلہ کرنا پڑتا ہے. یہ مَیں کیسے گوارا کروں.

اس لئے میں ایک کھلے میدان میں چہل قدمی کرتا ہوں.

پچھلی رات گرمی کسی قدر زیادہ تھی. آج صبح آنکھ جلدی کھل گئی. میں نکل پڑا.

میدان میں قدم رکھے ہی تھے کہ سامنے دو گز پر سانپ کا شبہ ہوا. غور سے دیکھا تو واقعی سانپ تھا، مگر چھوٹا اور پتلا سا.

وہ رینگا اور میرے پیروں پر کسی نے ایکایک بریک لگا دئے.

اسی دم میں اُچھل کر اپنے آپ کو بچانے کے لئے بے اختیار دو چار گز سانپ سے اور دور بھاگا.

مَیں ایک طرف بھاگا اور سانپ دوسری طرف.

مجھے ایسا جان پڑا کہ سانپ میرے اوپر حملہ کرنے والا ہے.

اور شاید وہ بھی یہی سمجھا کہ میں اس کے شکار کے لئے تیار ہوں.

میں سانپ سے ڈرا اور سانپ مجھ سے.

उस समय दोनों के दिल की एक ही कैफ़ियत थी.

इन्सान की निगाह में तो साँप बदनाम है.

क्या साँप भी इन्सान को "साँप" समझते हैं? अगर नहीं तो वह साँप मुझसे क्यो भागा? मेरे दिल में उसकी तरफ़ से कोई मैल न था.

हाँ, जब मैं कुछ दूर उससे हो गया तो एक बार मेरा जी चाहा कि अपनी लाठी से उसका ख़तमा कर दूँ.

फिर मैंने सोचा "शायद यह जहरीला साँप न हो."

साँप दपकता हुआ सूखी घास मे अपनी जान बचाकर दूर निकल गया. मैं ने भी क़दम आगे बढ़ाये.

मगर फूंक फूंक कर. हर चींटी या चूहे के बिल में मुझे साँप निकलते या छिपे जान पड़ते

साँप ने मुझे नहीं डसा. यह उसकी शराफ़त थी. क्यों कि इन्सान आँमतौर पर साँप को बिना जान से मारे नहीं छोड़ता, चाहे वह जहरीला हो य बिना जहर के. चाहे वह चोट करे या नहीं.

अपने भाइयों की मौत का साँप अगर बदला लेने पर उतारू हो जाय तो वह क्या नहीं कर सकता.

ग़नीमत है कि इन्सान और साँप अलग रहते हैं.

कहने को तो साँप बदनाम है मगर आज तो इन्सान इन्सान को डस रहे हैं. साँप से तो बचना मुमकिन है क्योंकि वह अपने जहर को अपनी रक्षा के लिये ही काम में लाता है मगर जब इन्सान उस जहर को काम में लाये तो फिर भगवान ही ख़ैर कर सकता है.

اُس سمے دونوں کے دل کی ایک ہی کیفیت تھی۔

انسان کی نگاہ میں سانپ بدنام ہے۔

کیا سانپ بھی انسان کو "سانپ" سمجھتے ہیں؟ اگر نہیں تو وہ سانپ مجھ سے کیوں بھاگا؟ میرے دل میں اس کی طرف سے کوئی میل نہ تھا۔

ہاں جب میں کچھ دور اُس سے ہو گیا تو ایک بار میرا جی چاہا کہ اپنی لاٹھی سے اس کا خاتمہ کر دوں۔

پھر میں نے سوچا "شاید یہ زہریلا سانپ نہ ہو۔"

سانپ دبکتا ہوا سوکھی گھاس میں اپنی جان بچا کر دور نکل گیا۔ میں نے بھی قدم آگے بڑھائے۔

مگر پھونک پھونک کر۔ ہر چیونٹی یا چوہے کے بل میں مجھے سانپ نکلتے یا چھپے جان پڑتے۔

سانپ نے مجھے نہیں ڈسا۔ یہ اس کی شرافت تھی۔ کیونکہ انسان عام طور پر سانپ کو بنا جان سے مارے نہیں چھوڑتا، چاہے وہ زہریلا ہو یا بنا زہر کے۔ چاہے وہ چوٹ کرے یا نہیں۔

اپنے بھائیوں کی موت کا سانپ اگر بدلہ لینے پر اُتارو ہو جائے تو وہ کیا نہیں کر سکتا۔

غنیمت ہے کہ انسان اور سانپ الگ رہتے ہیں۔

کہنے کو تو سانپ بدنام ہے مگر آج تو انسان انسان کو ڈس رہے ہیں۔ سانپ سے تو بچنا ممکن ہے کیونکہ وہ اپنے زہر کو اپنی رکشا کے لئے ہی کام میں لاتا ہے مگر جب انسان اُس زہر کو کام میں لائے تو پھر بھگوان ہی خیر کر سکتا ہے۔

हमारी राय

तनख़्वाहें, भत्ते और ख़िताब

दोहरी हकूमत के तरीक़े से बहुत गहरा संबन्ध रखनेवाला और सरकार में काम करने वाले और बाहर रहने वाले कांग्रेसियों के बीच संघर्ष को बढ़ाने वाला तरीक़ा असेम्बलियों के लिये चुने हुए मेम्बरों को तनख़्वाहें और भत्ते देने का है. जितने लोग असेम्बलियों मे जाने की चाह रखते हैं उतने ओहदे और सीटें वहाँ नहीं होती. उम्मीदवारों की तादाद के मुक़ाबले मे वह बहुत सीमित (महदूद) होता है. यह जगहें चाहे आर्थिक निगाह से फ़ायदेमन्द न हों—और उन्हें पाने मे पैसा तो ख़र्च करना ही पड़ता है—तो भी उनके पाने से जो जस, इज्ज़त और अधिकार मिलते है वह बड़ाई चाहनेवाले लोगों में उन जगहों को पाने की चाह पैदा करने के लिये काफ़ी हैं. आज की तरह जब वह आर्थिक निगाह से भी फ़ायदा पहुँचाने वाली हों तब तो लोगों मे उन्हें पाने की चाह क़ुदरती तौर पर और ज़्यादा बढ़ जाती है. सचमुच असेम्बलियों के मेम्बरों और दूसरे पदों पर काम करने वाले लोगों को आज जो तनख़्वाहें, भत्ते और दूसरे सुख-सुभीते दिये जाते हैं, उन्होंने इन जगहों को क़रीब-क़रीब आर्थिक फ़ायदे की जगहें बना दिया है. इसलिये असेम्बलियों में घुसने के लिये उम्मीदवारों मे ख़ूब होड़ मचती है और इस मक़सद के लिये आदमी की

ہماری رائے

تنخواہیں، بھتّے اور خطاب

دوہری حکومت کے طریقے سے بہت گہرا سمبندھ رکھنے والا اور سرکار میں کام کرنے والے اور باہر رہنے والے کانگریسیوں کے بیچ سنگھرش کو بڑھانے والا طریقہ اسمبلیوں کے لئے چنے ہوئے میمبروں کو تنخواہیں اور بھتّے دینے کا ہے۔ جتنے لوگ اسمبلیوں میں جانے کی چاہ رکھتے ہیں اتنے عہدے اور سیٹیں وہاں نہیں ہوتیں۔ امیدواروں کی تعداد کے مقابلے میں وہ بہت سیمت (محدود) ہوتی ہیں۔ یہ جگہیں چاہے آرتھک نگاہ سے فائدہ مند نہ ہوں - اور انھیں پانے میں پیسہ تو خرچ کرنا ہی پڑتا ہے — تو بھی ان کے پانے سے جو جس، عزت اور ادھیکار ملتے ہیں وہ بڑائی چاہنے والے لوگوں میں ان جگہوں کو پانے کی چاہ پیدا کرنے کے لئے کافی ہیں۔ آج کی طرح جب وہ آرتھک نگاہ سے بھی فائدہ پہنچانے والی ہوں تب تو لوگوں میں انھیں پانے کی چاہ قدرتی طور پر زیادہ بڑھ جاتی ہے۔ سچ مچ اسمبلیوں کے میمبروں اور دوسرے پدوں پر کام کرنے والے لوگوں کو آج جو تنخواہیں بھتّے اور دوسرے سکھ سبھیتے دئے جاتے ہیں، انھوں نے ان جگہوں کو قریب قریب آرتھک فائدے کی جگہیں بنا دیا ہے۔ اس لئے اسمبلیوں میں گھسنے کے لئے امیدواروں میں خوب ہوڑ مچتی ہے اور اس مقصد کے لئے آدمی کی

हर कमजोरी या कोमल भावना का फ़ायदा उठाने की कोशिश की जाती है. इस तरह यह साबित करने के लिये कि किसी ख़ास जगह को पाने का हक़ क को ख से ज्यादा है, उम्मीदवारों या चुननेवालों के धर्म, फ़िरके, जात, रिश्तेदारी, दोस्ती, औरत-मर्द का भेद, भावनायें, डाह और बैर, अन्धविश्वास, बेवक़ूफ़ी के काम, नारे वग़ैरा सब सामने रक्खे जाते हैं.

किसी मुक़दमे मे जब गवाहों को अदालत मे बुलाया जाता है, तो उन्हें भी आने-जाने की तकलीफ उठाने और समय ख़र्च करने के लिये भत्ता दिया जाता है. लेकिन यह तजरबे की बात है कि पैसे से ख़रीदे जा सकने वाले लोगों और डाक्टरों व वकीलों को छोड़-कर, जिन्हें कोर्ट मे बुलाने के लिये काफ़ी अच्छा भत्ता दिया जाता है, मामूली आदमी गवाही देने के लिये कोर्ट के बुलावे का स्वागत नहीं करते. क्योंकि तजरबा यह है कि मामूली गवाहों को अदालत में हाजिर होने के लिये अपनी जेब से पैसा ख़र्च करना पड़ता है, साथ ही उन्हें अपना दिन भी बेकार गॅवाना पड़ता है. अदालत में उन्हें बैठने तक का सुभीता नहीं दिया जाता, और वहाँ के कर्म-चारी उनके साथ बुरा बरताव करते हैं. अगर हर गवाह को बिना किसी भेद-भाव के दस या पन्द्रह रुपये एक दिन के लिये दिये जायँ, और जब तक उसे हाकिम के सामने बुलाया न जाय, तब तक के लिये उसे आज कल के आराम देह विश्रामघर मे ठहरने और पढ़ने की सहूलियत दी जाय तो बीच के वर्ग या निचले वर्ग का आदमी गवाह के तौर पर बुलाये जाने पर दुखी नहीं होगा. इसी तरह अगर असेम्बलियों, कमेटियो वग़ैरा में हाजरी देने के लिये

ہر کمزوری یا کومل بھاونا کا فائدہ اٹھانے کی کوشش کی جاتی ہے۔ اس طرح یہ ثابت کرنے کے لئے کہ کسی خاص جگہ کو پانے کا حق ک کو کھ سے زیادہ ہے، امیدواروں یا چننے کے دھرم، فرقے ذات، رشتے داری، دوستی، عورت، مرد کا بھید، بھاؤنائیں ڈاہ اور بیر، اندھ وشواس، بیوقوفی کے کام، نعرے وغیرہ سب سامنے رکھے جاتے ہیں۔

کسی مقدمے میں جب گواہوں کو عدالت میں بلایا جاتا ہے تو انھیں بھی آنے جانے کی تکلیف اٹھانے اور سمے خرچ کرنے کے لئے بھتّا دیا جاتا ہے۔ لیکن یہ تجربے کی بات ہے کہ پیسے سے خریدے جا سکنے والے لوگوں اور ڈاکٹروں وکیلوں کو چھوڑ کر، جنھیں کورٹ میں بلانے کے لئے کافی اچھا بھتّا دیا جاتا ہے، معمولی آدمی گواہی دینے کے لئے کورٹ کے بلاوے کا سواگت نہیں کرتے۔ کیونکہ تجربہ یہ ہے کہ معمولی گواہوں کو عدالت میں حاضر ہونے کے لئے اپنی جیب سے پیسہ خرچ کرنا پڑتا ہے، ساتھ ہی انھیں اپنا دن بھی بیکار گنوانا پڑتا ہے۔ عدالت میں انھیں بیٹھنے تک کا سبھیتا نہیں دیا جاتا، اور وہاں کے کرمچاری ان کے ساتھ برا برتاؤ کرتے ہیں۔ اگر ہر گواہ کو بنا کسی بھید بھاؤ کے دس یا پندرہ روپئے ایک دن کے لئے دئے جائیں اور جب تک اسے حاکم کے سامنے بلایا نہ جائے، تب تک کے لئے اسے آج کل کے آرام دہ وشرام گھر میں ٹھہرنے اور پڑھنے کی سہولیت دی جائے تو بیچ کے ورگ یا نچلے ورگ کا آدمی گواہ کے طور پر بلائے جانے پر دکھی نہیں ہوگا۔ اس طرح اگر اسمبلیوں، کمیٹیوں وغیرہ میں حاضری دینے کے لئے

मेम्बरों को आज की तरह बड़ी-बड़ी तनख्वाहें और भत्ते न दिये जायँ, और अगर वह इतने काफ़ी न हों कि बीच के वर्ग का आदमी बिना दूसरा काम किये अपने घर का ख़र्च चला सके तो लोगों में आजकी सी होड़ और मुक़ाबला नहीं दिखाई देगा.

मेरा विश्वास है कि विदेशों में असेम्बलियों के मेम्बरों को नियम से तनख्वाहें देने का तरीक़ा इसलिये शुरू किया गया था कि मजदूर, क्लर्क या दूकानदार वर्ग के नेता पार्लियामेन्टरी काम में हिस्सा ले सकें. वह जनता का काम करते हुए अपनी रोटी नहीं पैदा कर सकते. लेकिन उनकी तनख्वाहें या भत्ते औसत फ़ैक्टरी मजदूर, क्लर्क या छोटे दूकानदार की आमदनी से ज्यादा नही होने चाहिये. मैं नहीं जानता कि दूसरे देशों मे इन लोगो को क्या तनख्वाहें दी जाती हैं लेकिन हिन्दुस्तान मे असेम्बलियों के मेम्बरों के रोजाना भत्ते का नाप बनाते समय क्लर्क, कारीगर या फ़ैक्टरी मजदूर के नाते नहीं, बल्कि आई० सी० एस० अफ़सरों, बड़े बड़े व्योपारियों, पहले दर्जे के वकीलों और डाक्टरों के नाते सोचा जाता है. लेकिन इस वर्ग के ऐसे मेम्बर बहुत थोड़े होते हैं और दूसरे वर्ग के लोगों को ऐसे ऊँचे ढंग से रहने की आदत नहीं होती या वह इस तरह का ऊँचा जीवन बिताना नहीं चाहते. यह दूसरे वर्ग के लोग अपने भत्तों की रक़म बचाने और उनसे अच्छी आमदनी करने का ही ज्यादा ध्यान रखते हैं. यह जनता की सेवा को व्योपार बना डालने के सिवा कुछ नहीं है. अगर कांग्रेस या दूसरी कोई राजकाजी संस्थायें ऊँचे आदर्शों को पूरा करने के लिये ताक़त

میمبروں کو آج کی طرح بڑی بڑی تنخواہیں اور بھتّے نہ دئے جائیں اور اگر وہ اتنے کافی نہ ہوں کہ بیچ کے ورگ کا آدمی بنا دوسرا کام کئے اپنے گھر کا خرچ چلا سکے تو لوگوں میں آج کی سی ہوڑ اور مقابلہ نہیں دکھائی دے گا۔

میرا وشواس ہے کہ ودیشوں میں اسمبلیوں کے میمبروں کو نیم سے تنخواہیں دینے کا طریقہ اس لئے شروع کیا گیا تھا کہ مزدور، کلرک یا دوکاندار ورگ کے نیتا پارلیمینٹری کام میں حصہ لے سکیں۔ وہ جنتا کا کام کرتے ہوئے اپنی روٹی نہیں پیدا کر سکتے۔ لیکن اُنکی تنخواہیں یا بھتّے اوسط فیکٹری مزدور، کلرک یا چھوٹے دوکاندار کی آمدنی سے زیادہ نہیں ہونے چاہئیں۔ میں نہیں جانتا کہ دوسرے دیشوں میں ان لوگوں کو کیا تنخواہیں دی جاتی ہیں لیکن ہندستان میں اسمبلیوں کے میمبروں کے روزانہ بھتّے کا ناپ بناتے سمے کلرک، کاریگر یا فیکٹری مزدور کے ناتے نہیں، بلکہ آئی، سی، ایس افسروں، بڑے بڑے بیوپاریوں پہلے درجے کے وکیلوں اور ڈاکٹروں کے ناتے سوچا جاتا ہے۔ لیکن اس ورگ کے ایسے میمبر بہت تھوڑے ہوتے ہیں اور دوسرے ورگ کے لوگوں کو ایسے اونچے ڈھنگ سے رہنے کی عادت نہیں ہوتی یا وہ اس طرح کا اونچا جیون بتانا نہیں چاہتے۔ یہ دوسرے ورگ کے لوگ اپنے بھتّوں کی رقم بچانے اور ان سے اچھی آمدنی کرنے کا ہی زیادہ دھیان رکھتے ہیں۔ یہ جنتا کی سیوا کو بیوپار بنا ڈالنے کے سوا کچھ نہیں ہے۔ اگر کانگرس یا دوسری کوئی راج کاجی سنستھائیں اونچے آدرشوں کو پورا کرنے کے لئے طاقت

पाने की चाह रखती हों तो उन्हें इन भत्तों में सख़्ती से काट-छाँट कर देनी चाहिये.

ख़िताब देने का तरीक़ा अच्छा नहीं था, लेकिन उसका एक फ़ायदा ज़रूर था. उसके लिये टैक्स देने वालों को कुछ पैसा ख़र्च नहीं करना पड़ता था, लेकिन ख़िताब पाने वालों को वह इतना संतोष देता था कि उसके लिये वह ऊँची क़ीमत देने के लिये तैयार रहते थे. मिसाल के लिये एक समय 'नाइट' का ख़िताब पाने की क़ीमत तीन लाख रुपया कही जाती थी. नाइटों को शायद ही कोई ख़ास अधिकार मिलते हों, लेकिन उनका दिया हुआ पैसा आम तौर पर जनता के कामों में ख़र्च किया जाता था. यही बात राय साहबों या ख़ान साहबों और राव बहादुरों या ख़ान बहादुरों पर भी लागू होती है. यह 'साहब' और 'बहादुर' ख़ुद नुक़्सान उठा कर भी गोरे साहबों के लिये ग़ुलामों की तरह काम करते थे और ख़िताब देने के लिये ज़िन्दगी भर उनका एहसान मानते थे. हो सकता है कुछ लोगों ने इन ख़िताबों से अपने आर्थिक काम-काज में फ़ायदा उठाया हो, लेकिन ज़्यादातर लोगों के लिये वह सिर्फ़ अपने अहमपन (ख़ुदी) को संतोष देने के ही ज़रीये थे.

हमने कुछ हद तक इन ख़िताबों को ख़तम कर दिया है. मैं यहाँ जान बूझकर 'कुछ हद तक' कहता हूँ क्योंकि अभी सिर्फ़ सरकारी ख़िताब ही ख़तम किये गये हैं. अब यूनिवर्सिटियों ने इज़्ज़त बढ़ाने वाली डिग्रियाँ देने का काम कुछ हद तक अपने हाथ में ले लिया है, और लोगों में उनसे 'डाक्टर' की डिग्रियाँ

پانے کی چاہ رکھتی ہوں تو انھیں ان بھتّوں میں سختی سے کاٹ چھانٹ کر دینی چاہیے۔

خطاب دینے کا طریقہ اچھا نہیں تھا، لیکن اس کا ایک فائدہ ضرور تھا۔ اس کے لئے ٹیکس دینے والوں کو کچھ پیسہ خرچ نہیں کرنا پڑتا تھا، لیکن خطاب پانے والوں کو وہ اتنا سنتوش دیتا تھا کہ اس کے لئے وہ اونچی قیمت دینے کے لئے تیار رہتے تھے۔ مثال کے لئے ایک سمے 'نائٹ' کا خطاب پانے کی قیمت تین لاکھ روپیہ کہی جاتی تھی۔ نائٹوں کو شاید ہی کوئی خاص ادھیکار ملتے ہوں، لیکن ان کا دیا ہوا پیسہ عام طور پر جنتا کے کاموں میں خرچ کیا جاتا تھا۔ یہی بات رائے صاحب یا خان صاحبوں اور رائے بہادروں یا خان بہادروں پر بھی لاگو ہوتی ہے۔ یہ 'صاحب' اور 'بہادر' خود نقصان اٹھا کر بھی گورے صاحبوں کے لئے غلاموں کی طرح کام کرتے تھے اور خطاب دینے کے لئے زندگی بھر ان کا احسان مانتے تھے۔ ہو سکتا ہے کچھ لوگوں نے ان خطابوں سے اپنے آرتھک کام کاج میں فائدہ اٹھایا ہو، لیکن زیادہ تر لوگوں کے لئے وہ صرف اپنے اہم پن (خودی) کو سنتوش دینے کے ہی ذریعے تھے۔

ہم نے کچھ حد تک ان خطابوں کو ختم کر دیا ہے۔ میں یہاں جان بوجھ کر 'کچھ حد تک' کہتا ہوں کیونکہ ابھی صرف سرکاری خطاب ہی ختم کئے گئے ہیں۔ اب یونیورسٹیوں نے عزت بڑھانے والی ڈگریاں دینے کا کام کچھ حد تک اپنے ہاتھ میں لے لیا ہے، اور لوگوں میں ان سے 'ڈاکٹر' کی ڈگریاں

पाने की चाह बढ़ रही है. यह जानना मुश्किल होता है कि किसी को डी० एस-सी० या एल-एल० डी० की डिग्री साइंस या क़ानून में ख़ास क़ाबलियत पाने के कारन दी गई है या पबलिक जीवन में ऊँचा दर्जा रखने के लिये.

लेकिन यूनिवर्सिटी की डिग्रियाँ देना और पाना अभी तो दूसरे ख़िताबों के मुक़ाबले में मुश्किल है. इसलिये लोगों ने अपने प्यारे नेताओं को इज़्ज़त बढ़ाने वाले ख़िताब देने का दूसरा रास्ता निकाल लिया है. वह नेताओं को क़ायदे आज़म, महात्मा, लोकमान्य, लोकनायक, लोकसेवक, सरदार, वीर, कर्मवीर, देशबन्धु, नेता जी, संत, तपस्वी, आचार्य, देशभक्त वग़ैरा जैसे जनप्रिय (हरदिलअज़ीज़) ख़िताब देने लगे हैं. इंगलैंड में जब लोग अपने प्यारे नेताओं का सम्मान करना चाहते हैं तो उनके नाम छोटे करके उन्हें पुकारने लगते हैं, जैसे बाब, बिल या डिक, लेकिन हिन्दुस्तान में इसे सभ्यता (तहज़ीब) के ख़िलाफ़ माना जायगा. सरकारी ख़िताबों की तरह इनमें से कुछ तो लोगों की तरफ़ से अपने आप दिये गये हैं और पानेवाले पूरी तरह उनके क़ाबिल ही ठहरे हैं, लेकिन कुछ के लिये ख़िताब पानेवालों को काफ़ी दौड़ धूप करनी पड़ी है.

कहने का मतलब यह है कि सरकारी ख़िताबों को ख़तम कर देने से लोगों की सम्मान और बड़ाई की भूक को मिटाने के दूसरे ज़रिये ख़तम नहीं हो सके हैं. नेताओं की स्वर्ण जयन्ती (गोल्डेन जुबली), हीरक जयन्ती (डायमंड जुबली) वग़ैरा मनाना और उन्हें अभिनन्दन ग्रंथ (ऐड्रेस) भेंट करना इसी तरह के दूसरे काम

پانے کی چاہ بڑھ رہی ہے۔ یہ جاننا مشکل ہوتا ہے کہ کسی کو ڈی ایس سی، یا ایل، ایل، ڈی کی ڈگری سائنس یا قانون میں خاص قابلیت پانے کے کارن دی گئی ہے یا پبلک جیون میں اونچا درجہ رکھنے کے لئے۔

لیکن یونیورسٹی کی ڈگریاں دینا اور پانا ابھی تو دوسرے خطابوں کے مقابلے میں مشکل ہے۔ اسلئے لوگوں نے اپنے پیارے نیتاؤں کی عزت بڑھانے والے خطاب دینے کا دوسرا راستہ نکال لیا ہے۔ وہ نیتاؤں کو قائداعظم، مہاتما، لوکمانیہ، لوک نایک، لوک سیوک، سردار، ویر، کرم ویر، دیش بندھو، نیتا جی، سنت، تپسوی، آچاریہ، دیش بھکت وغیرہ جیسے جن پریہ (ہردل عزیز) خطاب دینے لگے ہیں۔ انگلینڈ میں جب لوگ اپنے پیارے نیتاؤں کا سمان کرنا چاہتے ہیں تو اُن کے نام چھوٹے کرکے انھیں پکارنے لگتے ہیں، جیسے باب، بل یا ڈک، لیکن ہندستان میں اسے سبھیتا (تہذیب) کے خلاف مانا جائے گا۔ سرکاری خطابوں کی طرح ان میں سے کچھ تو لوگوں کی طرف سے اپنے آپ دئے گئے ہیں اور پانے والے پوری طرح ان کے قابل ہی ٹھہرے ہیں، لیکن کچھ کیلئے خطاب پانے والوں کو کافی دوڑ دھوپ کرنی پڑی ہے۔

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ سرکاری خطابوں کو ختم کردینے سے لوگوں کی سمان اور بڑائی کی بھوک کو مٹانے کے دوسرے ذریعے ختم نہیں ہوسکے ہیں۔ نیتاؤں کی سورن جینتی (گولڈن جوبلی) ہیرک جینتی (ڈائمنڈ جوبلی) وغیرہ منانا اور انھیں ابھینندن گرنتھ (ایڈریس) بھینٹ کرنا اسی طرح کے دوسرے کام

हैं. इसमें सिर्फ़ जनता को ही नुक़सान उठाना पड़ता है, जिसे अब अपनी हर सेवा या कुसेवा (बुरी ख़िदमत) के लिये और ऐसे सम्मान देने के लिये नक़द पैसा देना होता है.

मैं यह सब बातें यह सुझाने के लिये नहीं कह रहा हूँ कि सरकार फिर से ख़िताब देना शुरू कर दे. इसके ख़िलाफ़, सरकार को किसी आदमी के बारे में उल्लेख (ज़िक्र) करते हुए अपने दफ़्तरी काग़ज़ों और भाषनों में ऐसे किसी ख़िताब का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये, जिसे उसने ख़ुद न दिया हो. और अगर जनता किसी के लिये ऐसे ख़िताबों का इस्तेमाल करे तो सरकार को उसे छोड़ देने के लिये कहना चाहिये. अगर किसी ओहदे से ताल्लुक़ रखनेवाला या व्यक्तिगत (निजी) सम्मान को ज़ाहिर करनेवाला कोई ख़िताब देना ही हो, तो वह सरकार ही दे. आम लोग जो डिग्रियाँ, इम्तहान में पास होकर ही पा सकते हैं, उन्हें यूनिवर्सिटियाँ किसी को न दें. अलबत्ता कोई आदमी ज्ञान (इल्म) के किसी ख़ास मैदान में ख़ास क़ाबलियत रखता हो और उस मैदान में यूनिवर्सिटी के मातहत काम करता हो, तो यूनिवर्सिटी उसे ऐसी सम्मान ज़ाहिर करनेवाली डिग्री दे सकती है, और वह सिर्फ़ एक ही बार दी जानी चाहिये. मिसाल के लिये, अगर डाक्टर राधा कृष्णन् को अन्नामली यूनिवर्सिटी या बनारस यूनिवर्सिटी एकबार पी-एच० डी० की डिग्री दे तो क्या वह काफ़ी नहीं है ? हिन्दुस्तान की दूसरी यूनिवर्सिटियाँ भी बार बार वही डिग्री उन्हें देने की चाह क्यों रक्खें ?

जनता और अख़बारों को भी ऐसे ख़िताब देने में ज़्यादा

ہیں۔ اس میں صرف جنتا ہی کو نقصان اٹھانا پڑتا ہے، جسے اب اپنی ہر سیوا یا کسیوا (بُری خدمت) کے لئے اور ایسے سمّان دینے کے لئے نقد پیسہ دینا ہوتا ہے۔

میں یہ سب باتیں یہ سمجھانے کے لئے نہیں کہہ رہا ہوں کہ سرکار پھر سے خطاب دینا شروع کر دے۔ اسکے خلاف سرکار کو کسی آدمی کے بارے میں اُلیکھ (ذکر) کرتے ہوئے اپنے دفتری کاغذوں اور بھاشنوں میں ایسے کسی خطاب کا استعمال نہیں کرنا چاہئے، جسے اُس نے خود نہ دیا ہو۔ اور اگر جنتا کسی کے لئے ایسے خطابوں کا استعمال کرے تو سرکار کو اُسے چھوڑ دینے کے لئے کہنا چاہئے۔ اگر کسی عہدے سے تعلق رکھنے والا یا ویکتی گت (نجی) سمّان کو ظاہر کرنے والا کوئی خطاب دینا ہی ہو تو وہ سرکار ہی دے۔ عام لوگ جو ڈگریاں، امتحان میں پاس ہو کر ہی پا سکتے ہیں، انھیں یونیورسٹیاں کسی کو نہ دیں۔ البتہ کوئی آدمی گیان (علم) کے کسی خاص میدان میں خاص قابلیت رکھتا ہو اور اس میدان میں یونیورسٹی کے ماتحت کام کرتا ہو، تو یونیورسٹی اُسے ایسی سمّان ظاہر کرنے والی ڈگری دے سکتی ہے، اور وہ صرف ایک ہی بار دی جانی چاہئے۔ مثال کے لئے، اگر ڈاکٹر رادھا کرشن کو انّا ملی یونیورسٹی یا بنارس یونیورسٹی ایک بار پی۔ ایچ۔ ڈی کی ڈگری دے تو کیا وہ کافی نہیں ہے؟ ہندستان کی دوسری یونیورسٹیاں بھی بار بار وہی ڈگری انھیں دینے کی چاہ کیوں رکھیں؟

جنتا اور اخباروں کو بھی ایسے خطاب دینے میں زیادہ

कंजूसी करनी चाहिए. यह सब रिवाज पबलिक जीवन में काम करने वालों को और पबलिक जीवन को बिगाड़ देते हैं और गन्दा मुक़ाबला व आपसी डाह व बैर पैदा करते हैं. इसलिये तनख्वाहें, भत्तों और ख़िताबों को सख्ती से कम कर देना चाहिये. तनख्वाहें, भत्ते वग़ैरा ऐसे नहीं होने चाहियें जो इन जगहों को आर्थिक निगाह से लालच की जगहें बना दें. कुछ ही लोगों को ख़िताब देने चाहियें और कुछ ही लोगों के दिये हुए ख़िताब मंज़ूर करने चाहियें एक ठोस सुझाव के तौर पर मैं कहूँगा कि या तो सरकार को एक साफ़ ठहराव पास करके 'सरदार पटेल' जैसे आम जनता की तरफ़ से माने हुए ख़िताब को भी कायदे से मंज़ूर करना चाहिये, या उसे ज़ोरदार शब्दों में ख़तम कर देना चाहिये.

वर्धा, १९-७-'४८ —किशोरलाल मशरूवाला

सत्याग्रही का हथियार

पाठक अब जानते हैं कि श्री भंसाली जी ने अपना उपवास छोड़ दिया है. वह उपवास आज फौजी और अध फौजी लड़ाइयों में सारी दुनिया में बेगुनाह नागरिकों के घरों को आग लगाने. उन्हें लूटने, क़तल करने, तकलीफ़ देने, उनकी औरतों की बेरहमी के साथ बेइज़्ज़ती करने, उन्हें हैरान करने वग़ैरा का जो रिवाज सा पड़ गया है, उसके विरोध में था.

श्री भंसाली जी बेजवाड़ा के पास एक जगह गांधी जी की मूर्ति खोलने आंध्र गये थे. वहीं उन्हें ख़बर मिली कि रज़ाकारों

کنجوسی کرنی چاہیئے. یہ سب رواج پبلک جیون میں کام کرنے والوں کو اور پبلک جیون کو بگاڑ دیتے ہیں اور گندا مقابلہ و آپسی ڈاہ و بیر پیدا کرتے ہیں. اس لئے تنخواہیں، بھتوں اور خطابوں کو سختی سے کم کر دینا چاہیئے. تنخواہیں، بھتے وغیرہ ایسے نہیں ہونے چاہیئں جو ان جگہوں کو آرتھک نگاہ سے لالچ کی جگہیں بنا دیں. کچھ ہی لوگوں کو خطاب دینے چاہیئں اور کچھ ہی لوگوں کے دئے ہوئے خطاب منظور کرنے چاہیئں ایک ٹھوس سجھاؤ کے طور پر میں کہوں گا کہ یا تو سرکار کو ایک صاف ٹھہراؤ پاس کرکے 'سردار پٹیل' جیسے عام جنتا کی طرف سے مانے ہوئے خطاب کو بھی قاعدے سے منظور کرنا چاہیئے، یا اُسے زوردار شبدوں میں ختم کر دینا چاہیئے.

واردھا ۱۹-۷-۴۸ —کشور لال مشرو والا

ستیہ گرہ کا ہتھیار

پاٹھک اب جانتے ہیں کہ شری بھنسالی جی نے اپنا اپواس چھوڑ دیا ہے. وہ اپواس آج فوجی اور ادھ فوجی لڑائیوں میں ساری دنیا میں بے گناہ ناگرکوں کے گھروں کو آگ لگانے، انھیں لوٹنے، قتل کرنے، تکلیف دینے، انکی عورتوں کی بیرحمی کے ساتھ بے عزتی کرنے. انھیں حیران کرنے وغیرہ کا جو رواج سا پڑ گیا ہے، اُس کے ورودھ میں تھا.

شری بھنسالی جی بیزواڑہ کے پاس ایک جگہ گاندھی جی کی مورتی کھولنے آندھر گئے تھے. وہیں انھیں خبر ملی کہ رضاکاروں

ने पास के एक गाँव पर हमला किया. इस पर उन्होंने खुद ही जाकर सब कुछ देखने का फ़ैसला किया. वह बहुत ही दर्दनाक सीन था. आग और लूट की बरबादी के अलावा जिन औरतों के साथ बलात्कार हुआ था, उनके दुख को वह देख न सके. एक औरत की पाँच आदमियों ने इज्ज़त लूटी थी. उसकी हालत बहुत ख़राब थी. लोगों में डर और घबराहट फैली हुई थी. उन्हें तसल्ली और फ़ौरन मदद के अलावा ऐसे आदमी की ज़रूरत थी जो उनमें हिम्मत और ज़ुल्म का विरोध करने का जोश भर दे. इस गाँव को देखकर भंसाली जी आस-पास के सरहद के दोनों तरफ़ के गाँव देखने गये. उन्होंने देखा कि लोग सदा डरे और सहमे हुए रहते हैं और औरतें तो जैसे ही रज़ाकारों को दूर से आते हुए देखती हैं, वैसे ही बर्तन, रस्सी और कभी-कभी बच्चों तक को लेने की परवाह किये बग़ैर गाँव के कुयें पर से भाग खड़ी होती हैं.

अपने पहले छोटे से सफ़र के बाद भंसाली जी कुछ आराम करने के लिये सेवाग्राम आ गये. उन्हें ठहरना तो कुछ ज़्यादा था लेकिन बेजवाड़ा का ज़रूरी तार से बुलावा आया और वह फ़ौरन रवाना हो गये. उनके जाने के पहले मुझे उनसे कुछ बातें करने का मौक़ा मिल गया था. मैं यह तो मानता हूँ कि इस मामले में हिन्द सरकार की पालिसी की आलोचना करने में मुझे बहुत रस नहीं था. इस हालत के बारे में जितना हम जानते हैं उतना सरकार को भी मालूम होगा, और यह उम्मीद की जा सकती है कि जब वह ठीक समझेगी तब अपना काम करेगी. सरकार की

———ई से [illegible] ताकत से ही होगी. मुझे यह जानना था कि

نے پاس کے ایک گاؤں پر حملہ کیا۔ اس پر انھوں نے خود ہی جاکر سب کچھ دیکھنے کا فیصلہ کیا۔ وہ بہت ہی دردناک سین تھا۔ آگ اور لوٹ کی بربادی کے علاوہ جن عورتوں کے ساتھ بلاتکار ہوا تھا، اُن کے دُکھ کو وہ دیکھ نہ سکے۔ ایک عورت کی پانچ آدمیوں نے عزت لوٹی تھی۔ اس کی حالت بہت خراب تھی۔ لوگوں میں ڈر اور گھبراہٹ پھیلی ہوئی تھی۔ انھیں تسلّی اور فوراً مدد کے علاوہ ایسے آدمی کی ضرورت تھی جو اُن میں ہمت اور ظلم کا ورودھ کرنے کا جوش بھردے۔ اس گاؤں کو دیکھ کر بھنسالی جی آس پاس کے سرحد کے دونوں طرف کے گاؤں دیکھنے گئے۔ اُنھوں نے دیکھا کہ لوگ سدا ڈرے اور سہمے ہوئے رہتے ہیں اور عورتیں تو جیسے ہی رضاکاروں کو دور سے آتے ہوئے دیکھتی ہیں۔ ویسے ہی برتن رسی اور کبھی کبھی بچوں تک کو لینے کی پرواہ کئے بغیر گاؤں کے کنویں پر سے بھاگ کھڑی ہوتی ہیں۔

اپنے پہلے چھوٹے سے سفر کے بعد بھنسالی جی کچھ آرام کرنے کیلئے سیواگرام آگئے۔ انھیں ٹھہرنا تو کچھ زیادہ تھا لیکن بیزواڑہ کا ضروری تار سے بلاوا آیا اور وہ فوراً روانہ ہوگئے۔ اُنکے جانے کے پہلے مجھے اُن سے کچھ باتیں کرنے کا موقعہ مل گیا تھا۔ میں یہ تو مانتا ہوں کہ اس معاملے میں ہند سرکار کی پالیسی کی آلوچنا کرنے میں مجھے بہت رس نہیں تھا۔ اس حالت کے بارے میں جتنا ہم جانتے ہیں اتنا سرکار کو بھی معلوم ہوگا، اور یہ امید کیجا سکتی ہے کہ جب وہ ٹھیک سمجھے گی تب اپنا کام کرے گی۔ سرکار کی کارروائی تو ہنسک طاقت سے ہی ہوگی۔ مجھے یہ جاننا تھا کہ

हम, जो कि अहिंसा और सत्याग्रह की प्रतिज्ञा से बँधे हुए हैं, इस मामले में क्या कर सकते हैं.

इस पर भंसाली जी ने कहा—"मैं निहत्था हूँ. मैंने तो अपने जिस्म पर चादर तक नहीं ओढ़ी न मेरे पैरों मे चप्पल है. मुझसे कहा गया है कि मैं किसी वक़्त भी मार डाला जा सकता हूँ और कोई जान भी नहीं पायगा कि कब और किस तरह मुझे मार डाला गया. मेरी मर जाने की तैयारी, सबके लिये मेरी अच्छी ख्वाहिश (जिसमें एक मानी में यह ज़ालिम गुंडे भी शामिल हैं, जिनके कामों से मैं नफ़रत करता हूँ, लेकिन इंसानों के रूप मे जिनके लिये मेरे मन मे किसी तरह की भी बुरी भावना नहीं है). सताये हुए और कमज़ोरों के हक़ मे हमेशा खड़े रहने का मेरा निश्चय और उस ईश्वर मे मेरा पक्का विश्वास—यही मेरे हथियार हैं. मैं लोगों से यह तो नहीं कह सकता कि मैं आपको क़वायद सिखाऊँगा या लाठी जैसी सादी चीज़ भी चलाना सिखाऊँगा. मेरे भौतिक (माद्दी) हथियार तो हैं झाड़ू और चरखा. मैं इन्हें नियम से इस्तेमाल करता हूँ, मेरा दिन का ज़्यादा वक़्त इन्हीं मे जाता है. किसी भी तरह हो, लोग मुझसे प्यार करते हैं, मेरी बात सुनते हैं और मैं भी उनसे प्यार करता हूँ और उनके दुख मे मेरा दिल सदा उनके साथ रहता है. इन सरहदी गाँवों मे हिम्मतवाले स्वयसेवकों की सिर्फ़ हाज़िरी ही गाँववालों मे हिम्मत पैदा कर देगी."

उनका कहना सच है. डर की तरह हिम्मत की भी अकसर छूत लगती है. ख़तरा आने पर जब कुछ लोग भाग खड़े होते हैं तो दूसरे भी वैसा ही करते हैं और सब तरफ़ गड़बड़ और भाग-

ہم، جو کہ اہنسا اور ستیہ گرہ کی پرتگیا سے بندھے ہوئے ہیں۔ اس معاملے میں کیا کرسکتے ہیں۔

اس پر بھنسالی جی نے کہا ـ"میں نہتّا ہوں۔ میں نے تو اپنے جسم پر چادر تک نہیں اوڑھی نہ میرے پیروں میں چپل ہے۔ مجھ سے کہا گیا ہے کہ میں کسی وقت بھی مار ڈالا جا سکتا ہوں اور کوئی جان بھی نہیں پائیگا کہ کب اور کس طرح مجھے مار ڈالا گیا۔ میرے مرجانے کی تیاری سب کے لئے میری اچھی خواہش (جس میں ایک معنی میں یہ ظالم غنڈے بھی شامل ہیں، جن کے کاموں سے میں نفرت کرتا ہوں، لیکن انسانوں کے روپ میں جن کے لئے میرے من میں کسی طرح کی بھی بری بھاؤنا نہیں ہے) ستائے ہوئے اور کمزوروں کے حق میں ہمیشہ کھڑے رہنے کا میرا نشچے ہے اور اس ایشور میں میرا پکا وشواش ـــ یہی میرے ہتھیار ہیں۔ میں لوگوں سے یہ تو نہیں کہہ سکتا کہ میں آپ کو قواعد سکھاؤں گا یا لاٹھی جیسی سادی چیز بھی چلانا سکھاؤں گا۔ میرے بھوتک (مادی) ہتھیار تو ہیں جھاڑو اور چرخہ۔ میں انھیں نیم سے استعمال کرتا ہوں، میرا دن کا زیادہ وقت انھیں میں جاتا ہے۔ کسی بھی طرح ہو، لوگ مجھ سے پیار کرتے ہیں، میری بات سنتے ہیں اور میں بھی ان سے پیار کرتا ہوں اور انکے دکھ میں میرا دل سدا انکے ساتھ رہتا ہے۔ ان سرحدی گاؤں میں ہمت والے سویم سیوکوں کی صرف حاضری ہی گاؤں والوں میں ہمت پیدا کردے گی۔"

اُن کا کہنا سچ ہے۔ ڈر کی طرح ہمت کی بھی اکثر چھوت لگتی ہے۔ خطرہ آنے پر جب کچھ لوگ بھاگ کھڑے ہوتے ہیں تو دوسرے بھی ویسا ہی کرتے ہیں اور سب طرف گڑبڑ اور بھاگ

दौड़ मच जाती है. अगर कुछ लोग ख़तरे का सामना करने के लिये आगे बढ़ते हैं और दूसरों को भी साथ आने को कहते हैं तो उन्हें भी बहुत से साथी मिल जाते है. हिम्मत के लिये हथियार जरूरी नही है, क्योंकि इंसानों को जब डर घेर लेता है तो हथियारों से लैस फ़ौजें भी तादाद में बहुत ही कम लोगों के सामने अव्यवस्थित ढंग या बदनज़मी के साथ बुरी तरह भागती सुनी गई हैं. बरसों की क़वायद कोई भी मदद नहीं करती.

जब ऐसे कारनों की वजह से, जिनके लिये सामने वाली पार्टी जिम्मेदार है, लोगों में हिम्मत पैदा करने का काम नामुमकिन हो जाय तब उपवास को अपना आख़िरी हथियार मानकर उसका इस्तेमाल करने का मौक़ा सत्याग्रही के लिए आ सकता है.

वर्धा, २२-७-'४८

—किशोरलाल मशरूवाला

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया! क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'

دوڑ مچ جاتی ہے۔ اگر کچھ لوگ خطرے کا سامنا کرنے کے لئے آگے بڑھتے ہیں اور دوسروں کو بھی ساتھ آنے کو کہتے ہیں تو انہیں بھی بہت سے ساتھی مل جاتے ہیں۔ ہمت کے لئے ہتھیار ضروری نہیں ہے، کیوں کہ انسانوں کو جب ڈر گھیر لیتا ہے تو ہتھیاروں سے لیس فوجیں بھی تعداد میں بہت ہی کم لوگوں کے سامنے اویوستھت ڈھنگ یا بدنظمی کے ساتھ بری طرح بھاگتی سنی گئی ہیں۔ برسوں کی قواعد کوئی بھی مدد نہیں کرتی۔

جب ایسے کارنوں کی وجہ سے، جن کے لئے سامنے والی پارٹی ذمہ دار ہے، لوگوں میں ہمت پیدا کرنے کا کام ناممکن ہو جائے تب اپواس کو اپنا آخری ہتھیار مان کر اس کا استعمال کرنے کا موقع ستیہ گرہی کے لئے آ سکتا ہے۔

وردھا ۲۲-۷-۴۸

کشور لال مشروالا

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک:- پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!

قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

مینیجر "نیا ہند"

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू ; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरीपं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बे लवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरी केक़ायदों के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری— پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند۔
گورننگ باڈی کے اور ممبر—
ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس۔ کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—
جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔
بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر—
شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے - فیضی، شری یم - یچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔
ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

Registered No. A 210

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू मे दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا ارو قرآن"

لیکھک۔ پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی سند جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ ـ ڈاک خرچ الگ

مینیجر 'نیا ہند'
۴۸ ـ بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

नया हिन्द   نیا ہند



"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ सुन्दरलाल

सितम्बर १९४८

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

" نیا هند "

هندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچہ

ایڈیٹر —
تاراچند بھگوان‌دین ' مظفر حسن ' بشمبھرناتھ ' سندر لال

ستمبر ۱۹۴۸

قیمت—ہندستان میں چھہ روپیہ - باہر دس روپیہ سال
'یک پرچہ دس آنے

منیجر
' نیا ھند '
۴۸ ' بائی کا باغ الہ‌آباد

नया हिन्द — نیا ہندستان

जिल्द ५ सितम्बर '४८ नम्बर ३

جلد ۵ ستمبر ۴۸ نمبر ۳

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
نیا ہند پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

कितनी दूर किनारा

(भाई 'साहिर' लुधियानवी)

माँझी ! कितनी दूर किनारा

देता है तूफ़ाँ हचकोले

नैया डगमग डगमग डोले

हाथों से पतवार न छूटे, तेज़ है जल की धारा

माँझी ! कितनी दूर किनारा

کتنی دور کنارا

(بھائی ساحر لدھیانوی)

مانجھی! کتنی دور کنارا

دیتا ہے طوفاں ہچکولے

نیا ڈگمگ ڈگمگ ڈولے

ہاتھوں سے پتوار نہ چھوٹے، تیز ہے جل کی دھارا

میں اکثر چھوٹے [illegible]

साथी ! मन धीरज क्यों हारा

तूफ़ानों से डरना कैसा ?
जीने वालो मरना कैसा ?
हिम्मत से बढ़ने वालों को, हर लहर एक किनारा
साथी ! मन धीरज क्यों हारा

माँझी ! कितनी दूर किनारा

छोटी सी यह नाव हमारी
रस्ता दूभर, मंज़िल भारी
चाँद की ओर बढ़ा आता है देख वह बादल कारा
माँझी ! कितनी दूर किनारा

साथी ! मन धीरज क्या हारा

धारों से टकराना सीखो
लहरों से लड़ जाना सीखो
जो लहरों से खेल गया लहरों ने आप उभारा
साथी ! मन धीरज क्यों हारा

ساتھی! من دھیرج کیوں ہارا

طوفانوں سے ڈرنا کیسا؟
جینے والو مرنا کیسا؟
ہمت سے بڑھنے والوں کو، ہر لہر اک کنارا
ساتھی! من دھیرج کیوں ہارا

مانجھی! کتنی دور کنارا

چھوٹی سی یہ ناؤ ہماری
رستہ دوبھر، منزل بھاری
چاند کی اور بڑھا آتا ہے، دیکھ وہ بادل کارا
مانجھی! کتنی دور کنارا

ساتھی! من دھیرج کیوں ہارا

دھاروں سے ٹکرانا سیکھو
لہروں سے لڑ جانا سیکھو
جو لہروں سے کھیل گیا لہروں نے آپ ابھارا
ساتھی! من دھیرج کیوں ہارا

(۱۶۴)

महँगाई

(आचार्य विनोबा भावे)

आप सब लोग जानते हैं कि आजकल चीज़ों के दाम बहुत बढ़ गये हैं. इसलिये लोगों में काफ़ी परेशानी है. ख़ास कर कपड़े और अनाज के भाव जब बहुत बढ़ जाते हैं तो ग़रीबों को बहुत तकलीफ़ होती है. सरकार इस बारे में सोच रही है और कुछ उपाय भी कर रही है.

जब कपड़े का कन्ट्रोल उठाया गया तब सरकार और जनता ने मिल वालों पर विश्वास रक्खा था, लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि मिल वालों ने उस विश्वास को भङ्ग किया है. वह इसी तरह चालीस साल से मुल्क को धोका दे रहे हैं. सन् १९०६ में जब देश में स्वदेशी और बाइकाट आंदोलन चल था, तब भी मिल वालों ने ख़ूब पैसे कमाये. देश की तरफ़ ध्यान नहीं दिया. बाद में भी जब जब मौक़ा मिला, उन्होंने देश को बेच कर अपना मतलब साधा. सरकार इस बारे में जो उपाय कर रही है, वह कहाँ तक कारगर होगा, भगवान ही जाने ! क्योंकि इस तरह के उपाय कारगर होने के लिये चरित्र की सफ़ाई की ज़रूरत होती है. चरित्र की सफ़ाई न हो तो वह कम काम देते हैं.

लेकिन मेरे ख़याल में इस मसले का असली हल तो खद्दर ही है. मिलों के काम में जो दिक़्क़तें हैं, वह खद्दर में नहीं हैं. हिन्दुस्तान में अक्सर छोटे रेशे वाली कपास होती है. उसका मिलों

مہنگائی

(آچاریہ ونوبا بھاوے)

آپ سب لوگ جانتے ہیں کہ آج کل چیزوں کے دام بہت بڑھ گئے ہیں۔ اس لئے لوگوں میں کافی پریشانی ہے۔ خاص کر کپڑے اور اناج کے بھاؤ جب بہت بڑھ جاتے ہیں تو غریبوں کو بہت تکلیف ہوتی ہے۔ سرکار اس بارے میں سوچ رہی ہے اور کچھ اپائے بھی کر رہی ہے۔

جب کپڑے کا کنٹرول اٹھایا گیا تب سرکار اور جنتا نے مل والوں پر وشواس رکھا تھا، لیکن دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ مل والوں نے اس وشواس کو بھنگ کیا ہے۔ وہ اسی طرح چالیس سال سے ملک کو دھوکا دے رہے ہیں۔ سن ۱۹۰۶ء میں جب دیش میں سودیشی اور بائیکاٹ آندولن چلا تھا تب بھی مل والوں نے خوب پیسے کمائے۔ دیش کی طرف دھیان نہیں دیا۔ بعد میں بھی جب جب موقع ملا، انہوں نے دیش کو بیچ کر اپنا مطلب سادھا۔ سرکار اس بارے میں جو اپائے کر رہی ہے، وہ کہاں تک کارگر ہوگا، بھگوان ہی جانے کیوں کہ اس طرح کے اپائے کارگر ہونے کے لئے چرتر کی صفائی کی ضرورت ہوتی ہے۔ چرتر کی صفائی نہ ہو تو وہ کم کام دیتے ہیں۔

لیکن میرے خیال میں اس مسئلہ کا اصلی حل تو کھدر ہی ہے۔ ملوں کے کام میں جو دقتیں ہیں، وہ کھدر میں نہیں ہیں۔ ہندوستان میں اکثر چھوٹے ریشے والی کپاس ہوتی ہے۔ اس کا ملوں

के लिये कम इस्तेमाल होता है. इसलिये उसे बाहर के देशों में बेचना पड़ता है, बदले में बाहर से लम्बे रेशे वाली कपास ख़रीदनी पड़ती है। जो बहुत महँगी मिलती है. कभी कभी मिलती भी नहीं. ट्रान्सपोर्ट का सवाल तो है ही. बीच में कितने ही एजन्टों और प्रति एजन्टों का सम्बन्ध आता है. इन तमाम मुश्किलों से खादी हमें बचा लेती है. अगर हमारी सरकार चरखे को बढ़ावा देती है और हम उसको अपना लेते हैं तो हर देहात में, जहाँ कपास होती है, खादी बन सकती है. न तो उसमें ट्रान्सपोर्ट का सवाल रहता है न एजन्टों का. जिस कपास से मिलें मुश्किल से दस बारह नम्बर का सूत कातती हैं, उससे चरखा दुगना महीन सूत कात लेगा. इसलिये यहाँ की कपास भी चरखे के काम में आ जाती है. इस तरह से सोचें तो समझ में आयगा कि हमारे कपड़े का सवाल हल करने का अकेला आसान उपाय चरखा ही है, अलावा इसके कि हम सारी मिलों को देश की मिलकियत बनादें, जहाँ तक हो सके वैसा करना भी चाहिये, लेकिन उससे भी आज की हालत में मसले का पूरा हल नहीं होगा. ग़रीबों के स्वराज के ख़याल से तो चरखे के सिवा दूसरा कोई चारा ही नहीं है. इस बारे में एक दफ़ा मैं यहाँ बोल चुका हूँ. आज मैं उसे दोहराना नहीं चाहूँगा.

आज तो मुझे एक दूसरी ही बात कहनी है. वह है अनाज के बारे में. अनाज पर कन्ट्रोल रखते थे, तो काला बाज़ार होता था. कन्ट्रोल उठा लिया तो दाम बढ़ गये. मेरी राय में इसमें से निकलने के लिये एक ही रास्ता हो सकता है. अगर सरकार पैसे के बजाय अनाज के रूप में ही ज़मीन महसूल वसूल करे, तो यह मुश्किल

کے لئے کم استعمال ہوتا ہے۔ اس لئے اسے باہر کے دیشوں میں بیچنا پڑتا ہے۔ بدلے میں باہر سے لمبے ریشے والی کپاس خریدنی پڑتی ہے جو بہت مہنگی ملتی ہے۔ کبھی کبھی ملتی بھی نہیں۔ ٹرانسپورٹ کا سوال تو ہے ہی۔ بیچ میں کتنے ہی ایجنٹوں اور پرتی ایجنٹوں کا سمبندھ آتا ہے۔ ان تمام مشکلوں سے کھادی ہمیں بچا لیتی ہے۔ اگر ہماری سرکار چرخے کو بڑھاوا دیتی ہے اور ہم اس کو اپنا لیتے ہیں تو ہر دیہات میں، جہاں کپاس ہوتی ہے، کھادی بن سکتی ہے۔ نہ تو اس میں ٹرانسپورٹ کا سوال رہتا ہے نہ ایجنٹوں کا۔ جس کپاس سے ملیں مشکل سے دس بارہ نمبر کا سوت کاتتی ہیں، اس سے چرخہ دگنا مہین سوت کات لے گا۔ اس لئے یہاں کی کپاس بھی چرخے کے کام میں آ جاتی ہے۔ اس طرح سے سوچیں تو سمجھ میں آئے گا کہ ہمارے کپڑے کا سوال حل کرنے کا اکیلا آسان اپائے چرخہ ہی ہے، علاوہ اس کے کہ ہم ساری ملوں کو دیش کی ملکیت بنا دیں، جہاں تک ہو سکے ویسا کرنا بھی چاہئے، لیکن اس سے بھی آج کی حالت میں مسئلے کا پورا حل نہیں ہوگا۔ غریبوں کے سوراج کے خیال سے تو چرخے کے سوا دوسرا کوئی چارہ ہی نہیں ہے۔ اس بارے میں ایک دفعہ میں یہاں بول چکا ہوں۔ آج میں اسے دہرانا نہیں چاہوں گا۔

آج تو مجھے ایک دوسری ہی بات کہنی ہے۔ وہ ہے اناج کے بارے میں۔ اناج پر کنٹرول رکھتے تھے، تو کالا بازار ہوتا تھا۔ کنٹرول اٹھا لیا تو دام بڑھ گئے۔ میری رائے میں اس میں سے نکلنے کے لئے ایک ہی راستہ ہو سکتا ہے۔ اگر سرکار پیسے کے بجائے اناج کے روپ میں ہی زمین محصول وصول کرے، تو یہ مشکل

हल हो सकती है. सरकार के पास अगर अच्छे अनाज का एक भण्डार रहे तो आम बाजार भाव पर उससे आप ही आप कंट्रोल हो जाता है. किसानों को भी अनाज के रूप मे लगान चुकाने में वैसे वो सहूलियत ही होगी. और सरकार का भी उससे बहुत सहूलियत होगी. आज तो सरकार पुराने बन्दोबस्त के सहारे लगान वसूल करती है. अगर पन्द्रह साल पहले सरकार किसी किसान से दस रुपये लेती थी, तो आज भी उतना ही लेती है. लेकिन आज के दस रुपये उस जमाने के तीन रुपये की कीमत रखते है. नतीजा यह है कि आज की सरकार गरीब बन गई है. फिर यह भी सोचिये कि पैसे मे 'बन्दोबस्त' हो भी कैसे सकता है? 'बन्दोबस्त' का मतलब होता है पक्की बात. पैसे की कीमत रोज बदलती रहती है. वह (पैसा) पक्की बात क्या कर सकता है? वह तो लफंगा है. जो आज एक बात कहता है कल दूसरी कहता है, और परसो तीसरी कहता है, उसी को हम लफंगा कहते है न? वही पैसे की हालत है. उसी (पैसे) को हमने अपना कारबारी बनाया है. उसी से हमारी सरकार घाटे मे आ गई है. और लोग भी तंग हो रहे हैं. पैसे की असली कीमत तो कोई है ही नहीं इसलिये उसकी क़ीमत चढ़ा और उतरा करती है. अनाज की कीमत न चढ़ती है, न उतरती है. उसकी पोषक-शक्ति (गिज़ाई ताकत) में ही कमी बेशी हो तो दूसरी बात है लेकिन वैसा कम होता है. यह जरूर है कि इसमें सरकार को अपने कोठार और अपनी दुकानें रखनी पड़ेगी. सरकार को हर हालत में ऐसे कारबार करने ही पड़ेंगे, और वह कर भी सकती है. इस इन्तजाम पर चलने से और

حل ہو سکتی ہے۔ سرکار کے پاس اگر اچھے اناج کا ایک بھنڈار رہے تو عام بازار بھاؤ پر اس سے آپ ہی آپ کنٹرول ہو جاتا ہے۔ کسانوں کو بھی اناج کے روپ میں لگان چکانے میں ویسے تو سہولیت ہی ہوگی اور سرکار کو بھی اس سے بہت سہولیت ہوگی۔ آج تو سرکار پُرانے بندوبست کے سہارے لگان وصول کرتی ہے۔ اگر پندرہ سال پہلے سرکار کسی کسان سے دس روپے لیتی تھی تو آج بھی اتنا ہی لیتی ہے۔ لیکن آج کے دس روپے اُس زمانے کے تین روپے کی قیمت رکھتے ہیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ آج کی سرکار غریب بن گئی ہے۔ پھر یہ بھی سوچئے کہ پیسے میں 'بندوبست' ہو بھی کیسے سکتا ہے؟ بندوبست کا مطلب ہوتا ہے پکّی بات۔ پیسے کی قیمت روز بدلتی رہتی ہے۔ وہ (پیسہ) پکّی بات کیا کر سکتا ہے؟ وہ تو لفنگا ہے۔ جو آج ایک بات کہتا ہے کل دوسری کہتا ہے، اور پرسوں تیسری کہتا ہے، اسی کو ہم لفنگا کہتے ہیں نہ؟ وہی پیسے کی حالت ہے۔ اُسی (پیسے) کو ہم نے اپنا کاروباری بنایا ہے۔ اسی سے ہماری سرکار گھاٹے میں آگئی ہے، اور لوگ بھی تنگ ہو رہے ہیں۔ پیسے کی اصلی قیمت تو کوئی ہے ہی نہیں اس لئے اس کی قیمت چڑھا اور اُترا کرتی ہے۔ اناج کی قیمت نہ چڑھتی ہے، نہ اترتی ہے۔ اس کی پوشک شکتی (غذائی طاقت) میں ہی کمی بیشی ہو تو دوسری بات ہے۔ لیکن ویسا کم ہوتا ہے۔ یہ ضرور ہے کہ اس میں سرکار کو اپنے کوٹھار اور اپنی دُکانیں رکھنی پڑیں گی۔ سرکار کو ہر حالت میں ایسے کاروبار کرنے ہی پڑیں گے، اور وہ کر بھی سکتی ہے، اس انتظام پر چلنے سے اور

उसके साथ साथ देहातों में मजदूरी भी अनाज के रूप में ही दी जाने लगेगी. इस सबका नतीजा यह होगा कि आज भावों में जैसा चढ़ाव उतार होता है. वैसा कम होगा. और जो भी होगा, उसका बहुतों पर असर नहीं होगा.

(६ अगस्त ४८ को प्रार्थना सभा में दिया हुआ भाषण.)

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

اس کے ساتھ ساتھ دیہاتوں میں مزدوری بھی اناج کے روپ میں ہی دی جانے لگے گی. اس سب کا نتیجہ یہ ہوگا کہ آج بھاؤں میں جیسا چڑھاؤ اُتار ہوتا ہے۔ ویسا کم ہوگا. اور جو بھی ہوگا، اُس کا بہتوں پر اثر نہیں ہوگا.

(۶ اگست ۴۸ کو پرارتھنا سبھا میں دیا ہوا بھاشن)

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک :- پنڈت سندرلال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے، اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں انکا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں. ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے. قیمت چار آنے

منیجر "نیا ہند"

۴۸ بائی کا باغ الہ آباد

'हमारा सब से बड़ा दुश्मन'

(भाई रघुपति सहाय एम० ए०)

हमारा देश इस धरती पर एक बहुत बड़ा देश है. यहाँ तीस करोड़ हिन्दू, नौ करोड़ मुसलमान और डेढ़ करोड़ के लगभग दूसरे धर्मों के मानने वाले बसे हुए हैं ! सोचिये कि इस देश की बड़ाई किस बात में है ? इस सवाल का ठीक जवाब यह है कि यहाँ 'कोई निवासी' मर्द, औरत या बच्चा, बूढ़ा, चाहे वह हिन्दू हो, या मुसलमान, या दूसरे किसी धर्म का मानने वाला, दुखी न रहे. खाने, पीने, पहिनने, रहने, पढ़ने, लिखने, कमाने और तरक्की करने में उसे कोई रुकावट न हो. इस देश की बड़ाई इस बात में कभी नहीं है कि यहाँ के बसने वालों में किसी एक जाति या एक धर्म के मानने वाले तो सुख चैन से रहें और दूसरी जाति या दूसरे धर्म के मानने वाले दुखी और बेइज़्ज़त होकर रहें. जो सुख या धन किसी को दुखी बनाकर या किसी को निर्धन रख कर या लूट मार करके बेइन्साफी के साथ हासिल किया जायगा या जो बड़ाई किसी को नीचा दिखा कर या छोटा बना कर पाई जायगी, तो न वह सुख सच्चा सुख होगा; न वह बड़ाई सच्ची बड़ाई होगी. ऐसा सुख या ऐसी बड़ाई पाने का विचार, हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है.

इस देश मे तीस करोड़ हिन्दू बसे हुए हैं. इसमें शक नहीं कि कभी कभी और कहीं कहीं मुसलमानों ने हिन्दू और सिक्ख आबादी के एक हिस्से के साथ मार काट और दुश्मनी की. इसी तरह नौ

ہمارا سب سے بڑا دشمن

(بھائی رگھوپتی سہائے ایم۔ اے)

ہمارا دیش اس دھرتی پر ایک بہت بڑا دیش ہے۔ یہاں تیس کروڑ ہندو، نو کروڑ مسلمان اور ڈیڑھ کروڑ کے لگ بھگ دوسرے دھرموں کے ماننے والے بسے ہوئے ہیں! سوچئے کہ اس دیش کی بڑائی کس بات میں ہے؟ اس سوال کا ٹھیک جواب یہ ہے کہ یہاں 'کوئی واسی' مرد، عورت یا بچہ، بوڑھا، چاہے وہ ہندو ہو، یا مسلمان، یا دوسرے کسی دھرم کا ماننے والا، دکھی نہ رہے — کھانے، پینے، پہننے، رہنے، پڑھنے، لکھنے، کمانے اور ترقی کرنے میں اسے کوئی رکاوٹ نہ ہو۔ اس دیش کی بڑائی اس بات میں کبھی نہیں ہے کہ یہاں کے بسنے والوں میں کسی ایک جاتی یا ایک دھرم کے ماننے والے تو سکھ چین سے رہیں اور دوسری جاتی یا دوسرے دھرم کے ماننے والے دکھی اور بے عزت ہو کر رہیں۔ جو سکھ یا دھن کسی کو دکھی بنا کر یا کسی کو نردھن رکھ کر یا لوٹ مار کر کے بے انصافی کے ساتھ حاصل کیا جائیگا یا جو بڑائی کسی کو نیچا دکھا کر یا چھوٹا بنا کر پائی جائے گی، تو نہ وہ سکھ سچا سکھ ہوگا، نہ وہ بڑائی سچی بڑائی ہوگی۔ ایسا سکھ یا ایسی بڑائی پانے کا وچار ہمارا سب سے بڑا دشمن ہے۔

اس دیش میں تیس کروڑ ہندو بسے ہوئے ہیں اسمیں شک نہیں کہ کبھی کبھی اور کہیں کہیں مسلمانوں نے ہندو اور سکھ آبادی کے ایک حصے کے ساتھ مار کاٹ اور دشمنی کی۔ اسی طرح نو

करोड़ मुसलमानों के एक हिस्से के साथ कुछ हिन्दुओं और सिक्खों ने भी लूट मार और ज्यादती की. हारजीत किसी की नहीं हुई, मुसीबत और बरबादी दोनों पर आई. अब सोचना यह है कि क्या हिन्दुओं के सब से बड़े दुश्मन मुसलमान हैं ? या मुसलमानों के सब से बड़े दुश्मन हिन्दू और सिक्ख है ? या सिक्खो के सब से बड़े दुश्मन मुसलमान हैं ? जो भयानक बातें हाल ही मे इस अभागे देश में हुईं, उन्हे बाहर से देखने से तो ऐसा ही मालूम होता है कि हिन्दू का सब से बड़ा दुश्मन मुसलमान; मुसलमान का सब से बड़ा दुश्मन हिन्दू और सिक्ख; और सिक्खों का भी सब से बड़ा दुश्मन मुसलमान है. लेकिन यह बात अब निश्चित रूप से साबित हो चुकी है कि आपस की यह दुश्मनी किसी धर्म या जाति को लाभ नही पहुँचा सकती. मुसीबत और बरबादी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख तीनो पर आई है. जीत किसी की नहीं हुई, हार सब की हुई.

एक बात का समझ लेना जरूरी है. हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख बहकाये जरूर जा सकते हैं और उनके विचारों में जहर भर कर कुछ समय के लिये, उनमें आपस में दुश्मनी और लूट मार कराई जा सकती है, पर लाखो और करोड़ो की तादाद मे संसार में किसी भी धर्म को मानने वाले नीच नहीं हो सकते. यह नही हो सकता कि मुसलमान, मुसलमान होने के कारन भले और सज्जन बन जायें, और हिन्दू या सिक्ख, हिन्दू और सिक्ख होने के कारन कमीने और नीच बन जायें. न यह हो सकता है कि हिंदू और सिक्ख सब के सब या ज्यादा से ज्यादा तादाद मे, अपने धर्म के

کروڑ مسلمانوں کے ایک حصے کے ساتھ کچھ ہندوؤں اور سکھوں نے بھی لوٹ مار اور زیادتی کی۔ ہار جیت کسی کی نہیں ہوئی، مصیبت اور بربادی دونوں پر آئی۔ اب سوچنا یہ ہے کہ کیا ہندوؤں کے سب سے بڑے دشمن مسلمان ہیں؟ یا مسلمانوں کے سب سے بڑے دشمن ہندو اور سکھ ہیں؟ یا سکھوں کے سب سے بڑے دشمن مسلمان ہیں؟ جو بھیانک باتیں حال ہی میں اس ابھاگے دیش میں ہوئیں، انھیں باہر سے دیکھنے سے تو ایسا ہی معلوم ہوتا ہے کہ ہندو کا سب سے بڑا دشمن مسلمان، مسلمان کا سب سے بڑا دشمن ہندو اور سکھ، اور سکھوں کا بھی سب سے بڑا دشمن مسلمان ہے۔ لیکن یہ بات اب نشچت روپ سے ثابت ہو چکی ہے کہ آپس کی یہ دشمنی کسی دھرم یا جاتی کو لابھ نہیں پہنچا سکتی۔ مصیبت اور بربادی ہندو، مسلمان، سکھ تینوں پر آئی ہے۔ جیت کسی کی نہیں ہوئی، ہار سب کی ہوئی۔

ایک بات کا سمجھ لینا ضروری ہے۔ ہندو، مسلمان اور سکھ بہکائے ضرور جا سکتے ہیں اور ان کے وچاروں میں زہر بھر کر کچھ سمے کے لیے، ان میں آپس میں دشمنی اور لوٹ مار کرائی جا سکتی ہے، پر لاکھوں اور کروڑوں کی تعداد میں سنسار میں کسی بھی دھرم کو ماننے والے نیچ نہیں ہو سکتے۔ یہ نہیں ہو سکتا کہ مسلمان، مسلمان ہونے کے کارن بھلے اور سجن بن جائیں، اور ہندو یا سکھ، ہندو اور سکھ ہونے کے کارن کمینے اور نیچ بن جائیں۔ نہ یہ ہو سکتا ہے کہ ہندو اور سکھ سب کے سب یا زیادہ سے زیادہ تعداد میں اپنے دھرم کے

कारन भले आदमी बन जायँ, पर मुसलमान सब के सब या ज्यादा से ज्यादा तादाद में सिर्फ़ इसलाम पर ईमान रखने के कारन कमीने, नीच और जङ्गली बन जायँ. यह दोनों बातें नहीं हो सकतीं. हिन्दुओं और सिक्खों का धर्म इसका सब से बड़ा पाप समझता है कि दूसरे धर्म के मानने वालों को कमीना और नीच समझा जाय. मुसलमानो का मजहब भी इसको सबसे बड़ा पाप समझता है कि दूसरे धर्म के मानने वालों को कमीना और नीच समझा जाय. अगर हम 'इन्सान' की इज्जत नहीं कर सकते और अगर हम इन्सान की इन्सानियत पर विश्वास नहीं कर सकते, तो हम उन इन्सानों की इज्जत भी नही कर सकते. जो हमारे ही धर्म के हैं, न उनकी इन्सानियत पर हम विश्वास कर सकते हैं. अगर हम हिंदू हैं या अगर हम सिक्ख हैं, तो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारा यह विचार होगा कि मुसलमान नीच हैं और अकारन हमारे दुश्मन हैं. अगर हम मुसलमान हैं, तो हमारा सबसे बड़ा शत्रु हमारा यह विचार होगा कि हिन्दू और सिक्ख कमीने और नीच हैं, और सब मुसलमानों के दुश्मन है.

कुछ देर के लिये हिन्दू और सिक्ख की हैसियत से सोचिये :—

(१) कोई जाति, कोइ देश, किसी धर्म के मानने वाले, संसार भर से अलग होकर नहीं रह सकते. हिन्दुस्तान के पच्छिम की ओर हजारों मील तक मुसलमानो के देश हैं जिनमे करोड़ो मुसलमान बसे हुए हैं. अगर हम मुसलमानो को अपना दुश्मन समझें या मुसलमानो के दुश्मन बन जायें, या मुसलमानो को अपना दुश्मन बना लें, तो यही नहीं कि हिन्दुस्तान के नौ करोड़

کارن بھلے آدمی بن جائیں، پر مسلمان سب کے سب یا زیادہ سے زیادہ تعداد میں صرف اسلام پر ایمان رکھنے کے کارن کمینے، نیچ اور جنگلی بن جائیں۔ یہ دونوں باتیں نہیں ہو سکتیں۔ ہندوؤں اور سکھوں کا دھرم اس کو سب سے بڑا پاپ سمجھتا ہے کہ دوسرے دھرم کے ماننے والوں کو کمینہ اور نیچ سمجھا جائے۔ مسلمانوں کا مذہب بھی اس کو سب سے بڑا پاپ سمجھتا ہے کہ دوسرے دھرم کے ماننے والوں کو کمینہ اور نیچ سمجھا جائے۔ اگر ہم 'انسان' کی عزت نہیں کر سکتے اور اگر ہم انسان کی انسانیت پر وشواس نہیں کر سکتے، تو ہم ان انسانوں کی عزت بھی نہیں کر سکتے، جو ہمارے ہی دھرم کے ہیں، نہ ان کی انسانیت پر ہم وشواس کر سکتے ہیں۔ اگر ہم ہندو ہیں یا اگر ہم سکھ ہیں، تو ہمارا سب سے بڑا دشمن ہمارا یہ وچار ہوگا کہ مسلمان نیچ ہیں اور اکارن ہمارے دشمن ہیں۔ اگر ہم مسلمان ہیں، تو ہمارا سب سے بڑا شترو ہمارا یہ وچار ہوگا کہ ہندو اور سکھ کمینے اور نیچ ہیں، اور سب مسلمانوں کے دشمن ہیں۔

کچھ دیر کے لئے ہندو اور سکھ کی حیثیت سے سوچئے:-

(۱) کوئی جاتی، کوئی دیش، کسی دھرم کے ماننے والے، سنسار بھر سے الگ ہو کر نہیں رہ سکتے۔ ہندستان کے پچھم کی اور ہزاروں میل تک مسلمانوں کے دیش ہیں جن میں کروڑوں مسلمان بسے ہوئے ہیں۔ اگر ہم مسلمانوں کو اپنا دشمن سمجھیں یا مسلمانوں کے دشمن بن جائیں، یا مسلمانوں کو اپنا دشمن بنائیں، تو یہی نہیں کہ ہندستان کے نو کروڑ

मुसलमान हम पर शक करने लग जायँगे या हमसे लड़ने मरने पर तैयार हो जायँगे, बल्कि यह करोड़ों मुसलमान और फिर मुसलमानों की बहुत बड़ी दूसरी आबादी जो बर्मा, चीन, हिन्देशिया और रूस में बसी हुई है, हमारी जानी दुश्मन हो जायगी और जब तक संसार क़ायम है, तब तक हमारी दुश्मन बनी रहेगी और मौक़ा पाकर हमको मिटा देना चाहेगी. अगर आप समझे कि हम भी बत्तीस करोड़ हैं, इसलिये मुक़ाबला बराबर का रहेगा, तो यह भी मूरखतापूर्ण विचार है. अमरीका, इङ्गलिस्तान और संसार के बहुत से बड़े बड़े देश हिन्दुस्तान के कमज़ोर मुसलमानो का साथ देंगे, ताकि हिन्दू और सिक्ख कारोबार मे और तिजारत मे कभी पनपने और लहलहाने न पावें. इस तरह हिन्दू और सिक्ख जातियों के खिलाफ संसार के ताक़तवर देशों का संगठन हो जायगा, और बरबादी के अलावा हमारे हाथ कुछ न लगेगा. संसार भर के राजकाज को अपने खिलाफ कर लेना, अपने आप को मिटा देने के बराबर है.

(२) कुछ लोग बिना सोच विचार के यह कह देते हैं, कि पाकिस्तान में जो हिन्दू सिक्ख बच रहे है, वह हिन्दुस्तान चले आयँ, और हिन्दुस्तान से सब मुसलमान पाकिस्तान भगा दिये जायँ. यह लोग इतना नहीं सोचते कि जो भगदड़ अब तक मच चुकी है, उसने हिन्दुस्तानी सरकार के काम को और हमारे जीवन को कितना कठिन बना दिया है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों पर मुसीबतें टूट पड़ी हैं. और अगर अभी एक या डेढ़ करोड़ हिन्दू , जो पूर्बी और पच्छिमी पाकिस्तान मे है. हिन्दुस्तान चले

مسلمان ہم پر شک کرنے لگ جائیں گے یا ہم سے لڑنے مرنے پر تیار ہو جائیں گے، بلکہ یہ کروڑوں مسلمان اور پھر مسلمانوں کی بہت بڑی دوسری آبادی جو برما، چین، ہندیشیا اور روس میں بسی ہوئی ہے، ہماری جانی دشمن ہو جائے گی اور جب تک سنسار قائم ہے، تب تک ہماری دشمن بنی رہے گی اور موقع پاکر ہم کو مٹا دینا چاہے گی۔ اگر آپ سمجھیں کہ ہم بھی بتیس کروڑ ہیں، اس لئے مقابلہ برابر کا رہے گا، تو یہ بھی مورکھتا پورن وچار ہے۔ امریکہ، انگلستان اور سنسار کے بہت سے بڑے بڑے دیش ہندستان کے کمزور مسلمانوں کا ساتھ دینگے، تاکہ ہندو اور سکھ کاروبار میں اور تجارت میں کبھی پنپنے اور لہلہانے نہ پائیں۔ اس طرح ہندو اور سکھ جاتیوں کے خلاف سنسار کے طاقتور دیشوں کا سنگٹھن ہو جائے گا، اور بربادی کے علاوہ ہمارے ہاتھ کچھ نہ لگے گا۔ سنسار بھر کے راج کاج کو اپنے خلاف کر لینا، اپنے آپ کو مٹا دینے کے برابر ہے۔

(۲) کچھ لوگ بنا سوچ وچار کے یہ کہہ دیتے ہیں کہ پاکستان میں جو ہندو سکھ بچ رہے ہیں، وہ ہندستان چلے آئیں، اور ہندستان سے سب مسلمان پاکستان بھگا دئے جائیں۔ یہ لوگ اتنا نہیں سوچتے کہ جو بھگدڑ اب تک مچ چکی ہے، اس نے ہندستانی سرکار کے کام کو اور ہمارے جیون کو کتنا کٹھن بنا دیا ہے، ہندستان اور پاکستان دونوں پر مصیبتیں ٹوٹ پڑی ہیں اور اگر ابھی ایک یا ڈیڑھ کروڑ ہندو، جو پوربی اور پچھمی پاکستان میں ہیں، ہندستان چلے

आवें और चार करोड़ मुसलमान जो हिन्दुस्तान मे हैं, वह पाकिस्तान चले जायँ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों राज सैकड़ों बरस के लिये बरबाद होकर रह जायँगे. हमारा जो बुरा हाल अंग्रेज़ी राज में था, उससे भ कहीं ज्यादा हमारी हालत खराब हो जायगी और यह देश नरक बन जायगा. आज अगर यह भगदड़ न मचा होती, तो हमारी सरकार और हमारे देश के पास अरबों रुपया होता, जिसमे खेती-बाड़ी, कारखानो तालीम और सबको फायदा पहुँचाने वाले और हिन्दुस्तान को बड़ा देश बनाने वाले, हमारी उन्नति के सैकड़ो काम किये जा सकते थे. याद रहे कि जो भगदड़ मच चुकी है उसका यह नतीजा हुआ है कि अगली चौथाई सदी तक के लिये हमारा तरक्की रुक गई है अगर यह भगदड़ फिर मची तो हमारी सरकार का दम उखड़ कर रह जायगा और मुसलमानों का जो भी हाल हो, कम से कम हिन्दू और सिक्ख एक सौ बरस के लिये उभर न सकेंगे. मार-काट के भाव से दिल मे जोश पैदा होने का मज़ा हमे ज़रूर मिल सकता है लेकिन यह जोश और यह मज़ा बहुत देर तक कायम नहीं रह सकता और जल्द ही न सही जा सकने वाली मुसीबत, बरबादी और गिरावट की शक्ल में यह जोश और मज़ा बदल जायगा. यह अनुचित भाव, यह अनुचित जोश और इस अनुचित भाव और जोश का मज़ा हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं.

(३) कुछ लोग यह सपना भी देखते है कि पाकिस्तान को जीत कर अखंड हिन्दुस्तान क़ायम कर दिया जायगा. यह सपना जितना सुन्दर और हौसला बढ़ाने वाला है, उतना ही भयानक है. संसार

آویں اور چار کروڑ مسلمان جو ہندستان میں ہیں، وہ پاکستان
چلے جائیں تو ہندستان اور پاکستان دونوں راج سیکڑوں
برس کے لیے برباد ہوکر رہ جائیں گے۔ ہمارا جو بُرا حال انگریزی
راج میں تھا، اس سے بھی کہیں زیادہ ہماری حالت خراب
ہو جائے گی اور یہ دیش نرک بن جائے گا۔ آج اگر یہ بھگدڑ
نہ مچی ہوتی، تو ہماری سرکار اور ہمارے دیش کے پاس اربوں
روپیہ ہوتا، جس سے کھیتی باڑی، کارخانوں، تعلیم اور سب کو
فائدہ پہنچانے والے اور ہندستان کو بڑا دیش بنانے والے،
ہماری اُنتی کے سیکڑوں کام کئے جا سکتے تھے۔ یاد رہے کہ جو بھگدڑ
مچ چکی ہے، اُس کا یہ نتیجہ ہوا ہے کہ اگلی چوتھائی صدی تک کے لیے
ہماری ترقی رُک گئی ہے۔ اگر یہ بھگدڑ پھر مچی تو ہماری سرکار کا دَم
اُکھڑ کر رہ جائے گا اور مسلمانوں کا جو بھی حال ہو، کم سے کم ہندو
اور سکھ ایک سو برس کے لیے اُبھر نہ سکیں گے۔ مار کاٹ کے بھاؤ
سے دل میں جوش پیدا ہونے کا مزہ ہمیں ضرور مل سکتا ہے لیکن یہ
جوش اور یہ مزہ بہت دیر تک قائم نہیں رہ سکتا اور جلد ہی نہ سہی
جا سکنے والی مصیبت، بربادی اور گراوٹ کی شکل میں یہ جوش اور
مزہ بدل جائے گا۔ یہ انُچت بھاؤ، یہ انُچت جوش اور اس
انُچت بھاؤ اور جوش کا مزہ ہمارے سب سے بڑے دشمن ہیں۔
(۳) کچھ لوگ یہ سپنا بھی دیکھتے ہیں کہ پاکستان کو جیت
کر اکھنڈ ہندستان قائم کر دیا جائے گا۔ یہ سپنا جتنا سُندر
اور حوصلہ بڑھانے والا ہے، اتنا ہی بھیانک ہے۔ سنسار

भर की हुकूमतों ने पाकिस्तान को हुकूमत को मान लिया है और बिना किसी कारन के या झूटा झगड़ा करके पाकिस्तान पर धावा बोल देना, मानो संसार भर से लड़ाई मोल लेना है. अगर यह भी मान लिया जाय, कि संसार भर के देशो में कुछ देश हिन्दू सिक्ख जाति का साथ देंगे, और कुछ देश मुसलमानो का साथ देंगे, तो भी इस लड़ाई का नतीजा यह नहीं होगा कि "अखंड हिन्दुस्तान" क़ायम हो जाय. "अखंड हिन्दुस्तान" हिन्दुओ सिक्खों और तमाम मुसलमानों के आपसी प्रेम और मरज़ी से ही क़ायम हो सकता है. मुसलमानों को दुश्मन समझने या दुश्मन बनाने से किसी तरह और किसी समय भी "अखंड हिन्दुस्तान" क़ायम नही हो सकता.

(४) काश्मीर की आबादी में सौ पोछे पचासी मुसलमान हैं. काश्मीर का सवाल उलझ उलझ कर बहुत नाज़ुक बन गया है. अगर हम मुसलमानों को नीच, कमीना, अपने से अलग, अपने से बुरा और अपना दुश्मन समझेंगे, तो हम किस मुंह से यह बात कह सकेंगे कि काश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा बने. आज काश्मीर में जो लड़ाई हो रही है और जिसमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान एक होकर काश्मीर पर हमला करने वालों का मुक़ाबला कर रहे हैं, वह लड़ाई हम कैसे लड़ सकते हैं? हम उसमें विजय कैसे पा सकेंगे, अगर मुसलमानों को हम अपना दुश्मन मान लें. आज अपने देश काश्मीर की और हिन्दुस्तान की जो सेवा शेख़ अब्दुल्ला कर रहे हैं, वह सेवा और वैसी सेवा कोई हिन्दू या सिक्ख नहीं कर रहा है. लगे हाथों यह भी सुन लीजिये कि तीन चार लाख रुपया या इससे भी अधिक रोज़ाना काश्मीर में ख़र्च हो रहा है. अगर

بھر کی حکومتوں نے پاکستان کی حکومت کو مان لیا ہے اور بنا کسی کارن کے یا جھوٹا جھگڑا کرکے پاکستان پر دھاوا بول دینا، مانو سنسار بھر سے لڑائی مول لینا ہے۔ اگر یہ بھی مان لیا جائے کہ سنسار بھر کے دیشوں میں کچھ دیش ہندو سکھ جاتی کا ساتھ دیں گے اور کچھ دیش مسلمانوں کا ساتھ دیں گے، تو بھی اس لڑائی کا نتیجہ یہ نہیں ہوگا کہ "اکھنڈ ہندستان" قائم ہو جائے۔ "اکھنڈ ہندستان" ہندوؤں سکھوں اور تمام مسلمانوں کے آپسی پریم اور مرضی سے ہی قائم ہو سکتا ہے۔ مسلمانوں کو دشمن سمجھنے یا دشمن بنانے سے کسی طرح اور کسی سمے بھی "اکھنڈ ہندستان" قائم نہیں ہو سکتا۔

(۴) کاشمیر کی آبادی میں سو پیچھے پچاسی مسلمان ہیں۔ کاشمیر کا سوال الجھ الجھ کر بہت نازک بن گیا ہے۔ اگر ہم مسلمانوں کو نیچ، کمینہ، اپنے سے الگ، اپنے سے برا اور اپنا دشمن سمجھیں گے، تو ہم کس منہ سے یہ بات کہہ سکیں گے کہ کاشمیر ہندستان کا حصہ بنے۔ آج کاشمیر میں جو لڑائی ہو رہی ہے اور جس میں ہندو، سکھ، مسلمان ایک ہوکر کاشمیر پر حملہ کرنے والوں کا مقابلہ کر رہے ہیں، وہ لڑائی ہم کیسے لڑ سکتے ہیں؟ ہم اس میں وجے کیسے پا سکیں گے، اگر مسلمانوں کو ہم اپنا دشمن مان لیں۔ آج اپنے دیش کاشمیر کی اور ہندستان کی جو سیوا شیخ عبداللہ کر رہے ہیں، وہ سیوا اور ویسی سیوا کوئی ہندو یا سکھ نہیں کر رہا ہے۔ لگے ہاتھوں یہ بھی سن لیجئے کہ تین چار لاکھ روپیہ یا اس سے بھی ادھک روزانہ کاشمیر میں خرچ ہو رہا ہے۔ اگر

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में लड़ाई छिड़ गई, तो संसार की हुकूमतें इस लड़ाई को दस बरस और बीस बरस तक चलवायेंगी. इस आग में दुनिया की हकूमतें तो घी डालती जायँगी जिसमें हिन्दू और मुसलमान जलेंगे. हिन्दू और मुसलमान की लड़ाई दो आदमियों की कुश्ती नहीं है न दो दलों के आदमियों का साधारन मुक़द्दमा है, जिसका फ़ैसला जल्दी से हो जायगा. यह लड़ाई हमारे लिये मौत का सन्देश होगी जिसके कारन हिंदू और सिक्ख जाति का नाम, हमारी सभ्यता, हमारे धर्म और हमारी संस्कृति का नाम, संसार से सदा के लिये मिट जायगा.

(५) अगर हिन्दू और सिक्ख यह चाहते हैं कि हिन्द यूनियन के चार करोड़ मुसलमान भाग कर पाकिस्तान चले जायें या देश भर के नौ करोड़ मुसलमान भाग कर कहीं और चले जायँ, या रहें तो हिन्दुओं और सिक्खों के गुलाम बन कर रहें, तो इस से अधिक नीचता की भावना दूसरी नहीं हो सकती. यह भाव, यह जतन, यह साजिश और ऐसी लड़ाई मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने के बजाय हिन्दुओं और सिक्खों को मिटा देगी. दक्खिनी अफ़रीक़ा का यूरोप की क़ौमों ने पता चलाया, उस पर विजय प्राप्त की. वहाँ बसे और उसे बसाया. मलाया का भी पता यूरोप की क़ौमों ने लगाया. वहाँ बसे और उसे बसाया. आज दक्खिनी अफ़रीक़ा और मलाया में लाखों हिन्दू और मुसलमान बस रहे हैं पर वह आज़ाद नहीं हैं. हम यूरोप की जातियों की यह बात नहीं मानते कि दक्खिनी अफ़रीक़ा और मलाया से हिन्दू और मुसलमान भाग आयें या यूरोप की जातियों से उनके अधिकार, उनका मान और

ہندستان اور پاکستان دونوں میں لڑائی چھڑ گئی، تو سنسار کی حکومتیں اس لڑائی کو دس برس اور بیس برس تک چلوائیں گی۔ اس آگ میں دنیا کی حکومتیں تو گھی ڈالتی جائیں گی جس میں ہندو اور مسلمان جلیں گے۔ ہندو اور مسلمان کی لڑائی دو آدمیوں کی کشتی نہیں ہے نہ دو دلوں کے آدمیوں کا سادھارن مقدمہ ہے، جس کا فیصلہ جلدی سے ہو جائے گا۔ یہ لڑائی ہمارے لئے موت کا سندیش ہوگی جس کے کارن ہندو اور سکھ جاتی کا نام، ہماری سبھیتا، ہمارے دھرم اور ہماری سنسکرتی کا نام، سنسار سے سدا کے لئے مٹ جائے گا۔

(۵) اگر ہندو اور سکھ یہ چاہتے ہیں کہ ہند یونین کے چار کروڑ مسلمان بھاگ کر پاکستان چلے جائیں یا دیش بھر کے نو کروڑ مسلمان بھاگ کر کہیں اور چلے جائیں، یا رہیں تو ہندوؤں اور سکھوں کے غلام بن کر رہیں، تو اس سے ادھک نیچتا کی بھاؤنا دوسری نہیں ہو سکتی۔ یہ بھاؤ، یہ جتن، یہ سازش اور ایسی لڑائی مسلمانوں کو نقصان پہنچانے کے بجائے ہندوؤں اور سکھوں کو مٹا دے گی۔ دکھنی افریقہ کا یورپ کی قوموں نے پتہ چلایا، اس پر وجے پراپت کی، وہاں بسے اور اسے بسایا۔ ملایا کا بھی پتہ یورپ کی قوموں نے لگایا۔ وہاں بسے اور اسے بسایا۔ آج دکھنی افریقہ اور ملایا میں لاکھوں ہندو اور مسلمان بس رہے ہیں پر وہ آزاد نہیں ہیں۔ ہم یورپ کی جاتیوں کی یہ بات نہیں مانتے کہ دکھنی افریقہ اور ملایا سے ہندو اور مسلمان بھاگ آئیں یا یورپ کی جاتیوں سے ان کے ادھیکار، ان کا مان اور

उनकी इज़्ज़त किसी तरह कम रहे. वहाँ की सरकारों में हम पूरा पूरा हिस्सा चाहते हैं. वहाँ के जीवन में हम पूरा-पूरा हिस्सा चाहते हैं. धर्म, रहन-सहन, संस्कृति और भाषा का अन्तर हिन्दुओं और मुसलमानों को जाति, रूप रंग यूरोप वालों से किसी तरह कम रक्खे—हम इसे नहीं मानते, हालाँकि—दक्खिनी अफ़रीक़ा और मलाया का पता लगाने वाले, इन देशों को बनाने और बसाने वाले यूरोप वाले ही रहे हैं. अगर हम हिन्दुस्तान में एक हज़ार बरस से बसे हुए मुसलमानों के अधिकार न मानें और उन्हें देश से बाहर भगाने की ठान लें, तो दक्खिनी अफ़रीका और मलाया में हिन्दुस्तानियों को या तो मिटा दिया जायगा या उन्हें वहाँ से मार भगाया जायगा और हम कुछ बोल भी नहीं सकेंगे. हिंदू मुसलमान का सवाल संसार भर में हिंदुस्तानियों के जीवन और मान का सवाल है. इस समस्या को हिंदुस्तान में ही सीमित नहीं रक्खा जा सकता.

(६) रूस में १७ करोड़ से ज़्यादा ऐसे लोग बसते हैं जो मुसलमान नहीं हैं और वहाँ मुसलमानों की एक करोड़ से कम आबादी है. चीन में मुसलमानों की आबादी सौ पीछे पाँच छः यानी दो करोड़ के लगभग है. पर आज तक वहाँ कोई फ़िरक़ेवराना झगड़ा नहीं हुआ. वहाँ के राष्ट्रीय जीवन में, वहाँ की उन्नति और सुख में मुसलमान दूसरों के साथ बराबर भाग ले रहे हैं. रूस और चीन में मुसलमानों के धर्म, संस्कृति, भाषा और रहन-सहन के ढङ्ग की पूरी पूरी रक्षा होती है. हिन्दुस्तान की कई हज़ार साल पुरानी संस्कृति जिस पर हम नाज़ करते हैं, संसार की निगाह

ان کی عزت کسی طرح کم رہے۔ وہاں کی سرکاروں میں ہم پورا پورا حصہ چاہتے ہیں۔ وہاں کے جیون میں ہم پورا پورا حصہ چاہتے ہیں۔ دھرم، رہن سہن، سنسکرتی اور بھاشا کا انتر ہندوؤں اور مسلمانوں کو جاتی، روپ رنگ یورپ والوں سے کسی طرح کم رکھے — ہم اسے نہیں مانتے، حالانکہ دکھنی افریقہ اور ملایا کا پتہ لگانے والے، ان دیشوں کو بنانے اور بسانے والے یورپ والے ہی رہے ہیں۔ اگر ہم ہندستان میں ایک ہزار برس سے بسے ہوئے مسلمانوں کے ادھیکار نہ مانیں اور انھیں دیش سے باہر بھگانے کی ٹھان لیں۔ تو دکھنی افریقہ اور ملایا میں ہندستانیوں کو یا تو مٹا دیا جائے گا یا انھیں وہاں سے مار بھگایا جائے گا اور ہم کچھ بول بھی نہیں سکیں گے۔ ہندو مسلمان کا سوال سنسار بھر میں ہندستانیوں کے جیون اور مان کا سوال ہے۔ اس سمسیا کو ہندستان میں ہی سیمت نہیں رکھا جا سکتا۔

(۶) روس میں ۱۷ کروڑ سے زیادہ ایسے لوگ بستے ہیں جو مسلمان نہیں ہیں اور وہاں مسلمانوں کی ایک کروڑ سے کم آبادی ہے۔ چین میں مسلمانوں کی آبادی سو پیچھے پانچ چھ یعنی دو کروڑ کے لگ بھگ ہے، پر آج تک وہاں کوئی فرقہ وارانہ جھگڑا نہیں ہوا۔ وہاں کے راشٹریہ جیون میں، وہاں کی اُنتی اور سکھ میں مسلمان دوسروں کے ساتھ برابر بھاگ لے رہے ہیں۔ روس اور چین میں مسلمانوں کے دھرم، سنسکرتی، بھاشا اور رہن سہن کے ڈھنگ کی پوری پوری رکشا ہوتی ہے۔ ہندستان کی کئی ہزار سال پرانی سنسکرتی، جس پر ہم ناز کرتے ہیں، سنسار کی نگاہ

में कितनी गिरी हुई और कलंकित समझी जायगी अगर हमने मुसलमानों को यहाँ बसने और फलने फूलने न दिया और हमारे मुक़ाबले में चीन और रूस ने ऐसा करके दिखा दिया तो हिन्द संस्कृति आईने में अपना भयानक रूप देख कर शर्मिन्दा होगी, और फ़ख़्र से अपना सिर ऊँचा न रख सकेगी.

(७) मान लीजिये कि हिन्दुस्तान से बाहर, संसार के किसी हिस्से में तीन चार करोड़ हिन्दू और सिक्ख किसी कारन से जाकर बस जायँ और उस देश की आबादी में हिन्दू और सिक्ख सौ पीछे बीस पचीस उसी तरह हो जायँ, जिस तरह हिन्दुस्तान भर की आबादी मे मुसलमान सौ पीछे बीस पचीस हैं, तो ऐसी हालत मे हम क्या चाहेंगे ? अगर उस देश वाले वहाँ के सौ पीछे बीस पचीस हिन्दुओं और सिक्खों को विदेशी, नीच, कमीना और अपना दुश्मन समझें और उनको गुलाम बनाकर, दबाकर या बेइज़्ज़त करके रखना चाहें या उनको वहाँ से मार भगाना चाहें, या उनपर ज़ोर ज़बरदस्ती से अपनी भाषा, अपनी संस्कृति लादना चाहें, तो क्या हम उस देश वालों के ख़ून के प्यासे न हो जायँगे ? क्या हम उनको एक उन्नत और सभ्य जाति मानेंगे ? या संसार उनको तरक़्क़ी याफ़्ता और मुहज़्ज़ब मानेगा ? अगर हम न्याय और इन्सानियत के नाते यह चाहते हैं कि हिंदू और सिक्ख दूसरे देशों मे जाकर बसें और इज़्ज़त के साथ जीवन बितायें तो हम हिन्दुस्तान से मुसलमानों का देश निकाला या हिन्दुस्तान में मुसलमानों की बरबादी कैसे चाह सकते हैं.

(८) हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान मानव जाति के ही अंश

میں کتنی گری ہوئی اور کلنکت سمجھی جائے گی اگر ہم نے مسلمانوں کو یہاں بسنے اور پھلنے پھولنے نہ دیا اور ہمارے مقابلے میں چین اور روس نے ایسا کرکے دکھا دیا تو ہندو سنسکرتی آئینے میں اپنا بھیانک روپ دیکھ کر شرمندہ ہوگی، اور فخر سے اپنا سر اونچا نہ رکھ سکے گی

(۷) مان لیجیے کہ ہندستان سے باہر، سنسار کے کسی حصے میں تین چار کروڑ ہندو اور سکھ کسی کارن سے جاکر بس جائیں اور اس دیش کی آبادی میں ہندو اور سکھ سو پیچھے بیس پچیس اسی طرح ہو جائیں، جس طرح ہندستان بھر کی آبادی میں مسلمان سو پیچھے بیس پچیس ہیں، تو ایسی حالت میں ہم کیا چاہیں گے؟ اگر اس دیش والے وہاں کے سو پیچھے بیس پچیس ہندوؤں اور سکھوں کو ودیشی، نیچ، کمینہ اور اپنا دشمن سمجھیں اور ان کو غلام بناکر، دباکر یا بے عزت کرکے رکھنا چاہیں یا ان کو وہاں سے مار بھگانا چاہیں یا ان پر زور زبردستی سے اپنی بھاشا، اپنی سنسکرتی لادنا چاہیں، تو کیا ہم اس دیش والوں کے خون کے پیاسے نہ ہو جائیں گے؟ کیا ہم ان کو ایک اُنّت اور سبھیہ جاتی مانیں گے؟ یا سنسار ان کو ترقی یافتہ اور مہذب مانے گا؟ اگر ہم نیائے اور انسانیت کے ناتے یہ چاہتے ہیں کہ ہندو اور سکھ دوسرے دیش میں جاکر بسیں اور عزت کے ساتھ جیون بتائیں تو ہم ہندستان سے مسلمانوں کا دیش نکالا یا ہندستان میں مسلمانوں کی بربادی کیسے چاہ سکتے ہیں۔

(۸) ہندستان کے ہندو اور مسلمان مانو جاتی کے ہی انش

हैं. कम से कम ऐसा तो न समझिये कि बाक़ी दुनिया के इन्सानों से हिन्दुस्तान में बसने वाले हिन्दू और मुसलमान नीच हैं. मिस्र मुसलमानों का देश है. वहाँ एक बड़े इलाक़े में बहुत बड़ी तादाद में ईसाई बसे हुए हैं. अंग्रेज़ी सरकार ने वहाँ के मुसलमानों और ईसाइयों के बीच नफ़रत की आग भड़कानी चाही, पर वहाँ के मुसलमानों ने यह बात नहीं मानी कि मिस्र के ईसाई नीच, कमीने और देशद्रोही हैं. वहाँ के ईसाई अपने मुसलमान भाइयों पर फ़ख़्र करते हैं और वहाँ के मुसलमान अपने ईसाई भाइयों पर गर्व करते हैं, और दोनों कंधे से कंधा जोड़कर मिस्र की तरक़्क़ी और आज़ादी के लिये लड़ रहे हैं. जापान में भी लाखों की संख्या में मुसलमान हैं और उनकी राज-भक्ति या देश प्रेम किसी से कम नहीं. अब हिन्दू संस्कृति का पल्ला भारी रहा या दूसरी संस्कृतियों का ? मिस्र के मुसलमान अपने समान ईसाइयों को बराबर की जगह दिये हुए हैं. रूस, चीन और जापान वाले जो मुसलमान नहीं हैं, अपने समाज में मुसलमानों को बराबरी का स्थान दिये हुए हैं और एक हम हैं कि हिन्दू और सिक्ख समाज में मुसलमानों को इन्सानियत की जगह देना पसंद नहीं करते और उन्हें भयानक समझते हैं. ज़रा दुनिया पर नज़र डालिये, तब हिन्दू मुसलिम सवाल पर ठीक ठीक प्रकाश पड़ेगा. हम दूर क्यों जायँ. हमारे पड़ोस में बर्मा है, जो हिन्दुस्तान के बाद आज़ाद हुआ है. हमारे देश से मिला हुआ लंका है, लंका भी हिन्दुस्तान के बाद आज़ाद हुआ है. बर्मा और लंका दोनों देशों में सौ पीछे चार-पाँच मुसलमान बसे हुए हैं ! लंका के

ہیں۔ کم سے کم ایسا تو نہ سمجھئے کہ باقی دنیا کے انسانوں سے ہندستان میں بسنے والے ہندو اور مسلمان نیچ ہیں۔ مصر مسلمانوں کا دیش ہے۔ وہاں ایک بڑے علاقے میں بہت بڑی تعداد میں عیسائی بسے ہوئے ہیں۔ انگریزی سرکار نے وہاں کے مسلمانوں اور عیسائیوں کے بیچ نفرت کی آگ بھڑکانی چاہی، پر وہاں کے مسلمانوں نے یہ بات نہیں مانی کہ مصر کے عیسائی نیچ، کمینے اور دیش دروہی ہیں۔ وہاں کے عیسائی اپنے مسلمان بھائیوں پر فخر کرتے ہیں اور وہاں کے مسلمان اپنے عیسائی بھائیوں پر گرو کرتے ہیں، اور دونوں کندھے سے کندھا جوڑ کر مصر کی ترقی اور آزادی کے لئے لڑ رہے ہیں۔ جاپان میں بھی لاکھوں کی سنکھیا میں مسلمان ہیں اور ان کی راج بھگتی یا دیش پریم کسی سے کم نہیں۔ اب ہندو سنسکرتی کا پلہ بھاری رہا یا دوسری سنسکرتیوں کا؟ مصر کے مسلمان اپنے سمان عیسائیوں کو برابر کی جگہ دئے ہوئے ہیں۔ روس، چین اور جاپان والے جو مسلمان نہیں ہیں، اپنے سماج میں مسلمانوں کو برابر کا استھان دیئے ہوئے ہیں اور ایک ہم ہیں کہ ہندو اور سکھ سماج میں مسلمانوں کو انسانیت کی جگہ دینا پسند نہیں کرتے اور انھیں بھیانک سمجھتے ہیں۔ ذرا دنیا پر نظر ڈالئے، تب ہندو مسلم سوال پر ٹھیک ٹھیک پرکاش پڑے گا۔ ہم دور کیوں جائیں۔ ہمارے پڑوس میں برما ہے، جو ہندستان کے بعد آزاد ہوا ہے۔ ہمارے دیش سے ملا ہوا لنکا ہے، لنکا بھی ہندستان کے بعد آزاد ہوا ہے۔ برما اور لنکا دونوں دیشوں میں سو پیچھے چار پانچ مسلمان بسے ہوئے ہیں! لنکا کے

मुसलमानों की मातृ भाषा अरबी है, पर बर्मा और लंका वाले मुसलमानो को अपने देशों में बराबरी की जगह दिये हुए हैं !

(९) अगर आप यह कहें कि और देशों में कुछ भी हो—और देशों के मुसलमान कितने ही सज्जन हों, पर "हिन्दुस्तान के मुसलमान" सिर्फ़ नीच और कमीने हैं, तो ऐसा समझना या ऐसा कहना भारत माता के लिये और हिन्दू संस्कृति के लिये कितनी बड़ी गाली है. दूसरे देशों की मिट्टी और दूसरे देशो का जीवन और संस्कृति इतनी पवित्र है कि वहाँ मुसलमान सज्जन हो जाता है और हमारे देश की मिट्टी और संस्कृति इतनी नीच और सड़ी हुई है कि वह मुसलमानो को कमीना बना देती है ! हिन्दुस्तान की मिट्टी और हिन्दुस्तान की संस्कृति मे तो वह जादू होना चाहिये जो संसार के दिलों को मोह ले. हम इस देश में सौ पीछे ८० होते हुए, यहाँ की सौ पीछे बीस आबादी को अगर अपना दुश्मन बनाये हुए हैं, या उन्हें जङ्गली समझते हैं, तो यह बात हमारी ही सभ्यता का मुंह काला करती है. महान हिन्दुस्तान अगर इसी देश मे पैदा होने वाले मुसलमानो की दोस्ती और प्रेम न हासिल कर सका तो इसे हिन्द का ही दोष माना जायगा और इसके लिये हिन्दू संस्कृति दोषी ठहरायी जायगी.

(१०) सन् १८५७ के ग़दर मे हिन्दू और मुसलमान एक होकर विदेशी राज के ख़िलाफ लड़े थे. आजादी की इस लड़ाई मे अगर सौ पीछे ६०-७० हिन्दू अंग्रेजों के ख़िलाफ थे तो सौ पीछे ९५ मुसलमान अंग्रेजो के खिलाफ लड़ रहे थे. लेकिन इस आजादी की जङ्ग मे देशी फौजो को सफलता न मिली इसका कारन यह नही था कि

مسلمانوں کی ماتر بھاشا عربی ہے، پر برما اور لنکا والے مسلمانوں کو اپنے دیشوں میں برابری کی جگہ دیئے ہوئے ہیں!

(۹) اگر آپ یہ کہیں کہ اور دیشوں میں کچھ بھی ہو — اور دیشوں کے مسلمان کتنے ہی سجن ہوں، پر "ہندستان کے مسلمان" صرف نیچ اور کمینے ہیں، تو ایسا سمجھنا یا ایسا کہنا بھارت ماتا کے لئے اور ہندو سنسکرتی کے لئے کتنی بڑی گالی ہے۔ دوسرے دیشوں کی مٹی اور دوسرے دیشوں کا جیون اور سنسکرتی اتنی پوتر ہے کہ وہاں مسلمان سجن ہو جاتا ہے اور ہمارے دیش کی مٹی اور سنسکرتی اتنی نیچ اور سڑی ہوئی ہے کہ وہ مسلمانوں کو کمینہ بنا دیتی ہے! ہندستان کی مٹی اور ہندستان کی سنسکرتی میں تو وہ جادو ہونا چاہئے جو سنسار کے دلوں کو موہ لے۔ ہم اس دیش میں سو پیچھے ۸۰ ہوتے ہوئے، یہاں کی سو پیچھے بیس آبادی کو اگر اپنا دشمن بنائے ہوئے ہیں یا انہیں جنگلی سمجھتے ہیں، تو یہ بات ہماری ہی سبھیتا کا منہ کالا کرتی ہے۔ مہان ہندستان اگر اسی دیش میں پیدا ہونے والے مسلمانوں کی دوستی اور پریم نہ حاصل کر سکا تو اسے ہند کا ہی دوش مانا جائے گا اور اس کے لئے ہندو سنسکرتی دوشی ٹھہرائی جائیگی۔

(۱۰) ۱۸۵۷ء کے غدر میں ہندو اور مسلمان ایک ہو کر ودیشی راج کے خلاف لڑے تھے۔ آزادی کی اس لڑائی میں اگر سو پیچھے ۶۰-۷۰ ہندو انگریزوں کے خلاف تھے تو سو پیچھے ۹۵ مسلمان انگریزوں کے خلاف لڑ رہے تھے۔ لیکن اس آزادی کی جنگ میں دیشی فوجوں کو سپھلتا نہ ملی اس کا کارن یہ نہیں تھا کہ

मुसलमानों की सहायता से हिन्दू कुचल दिये गये थे बल्कि इसका कारन यह था कि हिन्दू जाति और हिन्दू गोरखों और सिक्खों के हाथों से आज़ादी के दीवाने कुचलवाये गये थे. अगर इनकी मदद अंग्रेज़ों को न मिलती, तो सन् १८५७ की बग़ावत में अंग्रेज़ो के पांव उखड़ गये होते. सोचने और समझने की बात है कि हमारे हिन्दू और सिक्ख भाइयों में से ही लाखों आदमी अंग्रेज़ो के इशारे पर देश के इतने बड़े दुश्मन बन गये थे लेकिन मुसलमान देश के दुश्मन साबित नहीं हुए. तो आख़िर कब से यह मुसलमान देश के ऐसे दुश्मन बन गये कि क़यामत तक हम उनसे लड़ाई मोल लेने के लिये तैयार होना चाहते हैं ? क्या कोई जादू हो गया कि एक हज़ार बरस से हिन्दुस्तान में बसे हुए मुसलमान संसार की सब से ख़राब, नीच और कमीनी जाति बन गये. अभी बीस पच्चीस साल की बात है कि जलयानवाला बाग़ मे हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खो के ख़ून की त्रिबेनी बह गई थी और हिन्दुओं, मुसलमानो और सिक्खों पर जनरल डायर के हुक्म से गोली चलाने वाले दिन्दू गोरखे ही थे.फिर इसके बाद जब महत्मा गांधी की रहनुमाई मे हिन्दुस्तान भर में आज़ादी का आन्दोलन पूरे ज़ोर से शुरू हुआ तो उसमें हिन्दुओ से तादाद में चौथाई होते हुए भी मुसलमानों ने हिन्दुओ के बराबर हिस्सा लिया. जेल जाने में, 'असहयोग' करने में, मार और लाठियाँ सहने में, लुटने, मरने और मिटने में, स्कूलों, कालिजों और कौंसिलों का बायकाट करने और किताबों को छोड़ने में मुसलमान हिन्दुओं से पीछे नहीं रहे ! हक़ीक़त यह है कि एक हज़ार मुसलमानों मे से चार सौ मुसलमान

مسلمانوں کی سہائتا سے ہندو کچل دیئے گئے تھے بلکہ اس کا کارن یہ تھا کہ ہندو جاتی اور ہندو گورکھوں اور سکھوں کے ہاتھوں سے آزادی کے دیوانے کچل وائے گئے تھے۔ اگر ان کی مدد انگریزوں کو نہ ملتی، تو ۱۸۵۷ء کی غدر میں انگریزوں کے پاؤں اکھڑ گئے ہوتے۔ سوچنے اور سمجھنے کی بات ہے کہ ہمارے ہندو اور سکھ بھائیوں میں سے ہی لاکھوں آدمی انگریزوں کے اشارے پر دیش کے اتنے بڑے دشمن بن گئے تھے لیکن مسلمان دیش کے دشمن ثابت نہیں ہوئے۔ تو آخر کب سے یہ مسلمان دیش کے ایسے دشمن بن گئے کہ قیامت تک ہم اُن سے لڑائی مول لینے کے لئے تیار ہونا چاہتے ہیں؟ کیا کوئی جادو ہو گیا کہ ایک ہزار برس سے ہندستان میں بسے ہوئے مسلمان سنسار کے سب سے خراب، نیچ اور کمینی جاتی بن گئے۔ ابھی بیس پچیس سال کی بات ہے کہ جلیانوالا باغ میں ہندوؤں مسلمانوں اور سکھوں کے خون کی تربینی بہہ گئی تھی اور ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں پر جنرل ڈایر کے حکم سے گولی چلانے والے ہندو گورکھے ہی تھے۔ پھر اس کے بعد جب مہاتما گاندھی کی رہنمائی میں ہندستان بھر میں آزادی کا آندولن پورے زور سے شروع ہوا تو اس میں ہندوؤں سے تعداد میں چوتھائی ہوتے ہوئے بھی مسلمانوں نے ہندوؤں کے برابر حصّہ لیا۔ جیل جانے میں، 'اسہیوگ' کرنے میں، مار اور لاٹھیاں سہنے میں، لُٹنے، مرنے اور مٹنے میں، اسکولوں، کالجوں اور کونسلوں کا بائیکاٹ کرنے اور کتابوں کو چھوڑنے میں مسلمان ہندوؤں سے پیچھے نہیں رہے! حقیقت یہ ہے کہ ایک ہزار مسلمانوں میں سے چار سو مسلمان

इस लड़ाई मे शामिल हुए. अंग्रेजों ने जब अपने पैर उखड़ते देखे तो उन्होने फिर हिन्दू मुसलमानो में फूट डाल दी और बना बनाया काम बिगड़ गया. इसके बाद फिरक़ा परस्ती का जहर सारे देश मे फैलाया गया और नफ़रत की आग देश भर में भड़क उठी, जिसे अंग्रेजो की पालिसी बराबर हवा देती रही. फिर भी पूरी मुसलमान जाति नहीं बिगड़ी. अब से दो तीन साल पहले बड़ी लड़ाई के खतम होने पर जब हमारे नेता जेलो से छूटे और सूबो की एसेम्बलियों और कौंसिलो का चुनाव हुआ तो हिन्दुओं और सिक्खो के साथ ३३ प्रतिशत मुसलमानो ने मुसलिम लीग का साथ न देकर कांग्रेस का साथ दिया. कई जगहो पर तो कांग्रेस का साथ देने वाले मुसलमान वोटर अपने सहधर्मियो के हाथो घायल किये गये और मार डाले गये. उनके बाल बच्चो को बेइज्जत किया गया, उनके मुँह पर थूका गया, उनके घर लूट लिये गये और जला दिये गये, उनके जीवन के लिये खतरा पेश हो गया, पर यह बहादुर मुसलमान देश प्रेम की राह से नहीं डिगे और सरहदी सूबा में तो ३३ प्रतिशत नहीं, सौ पीछे ८० मुसलमानो ने कांग्रेस को वोट दिया. सैकड़ों ऐसी मिसालें दी जा सकती है जिनसे चमकते हुए सूरज की तरह यह बात साफ हो जाती है कि करोड़ो मुसलमान भयानक से भयानक और गम्भीर हालत मे भी न हिंदुओ के दुश्मन बने न सिक्खो के और न देश से ग़द्दारी की अगर हिन्दू और सिक्ख मुसलमानो को अपना सबसे बडा दुश्मन समझने के बदले साम्प्रदायिकता को अपना सब से बड़ा दुश्मन समझे और साम्प्रदायिकता से बच कर उस नये हिंदुस्तान को बनायें जहाँ हिंदू , मुसलमान, सिक्ख, ईसाई,

اس لڑائی میں شامل ہوئے۔ انگریزوں نے جب اپنے پیر اکھڑتے دیکھے تو انھوں نے پھر ہندو مسلمانوں میں پھوٹ ڈال دی اور بنا بنایا کام بگڑ گیا۔ اس کے بعد فرقہ پرستی کا زہر سارے دیش میں پھیلایا گیا اور نفرت کی آگ دیش بھر میں بھڑک اٹھی، جسے انگریزوں کی پالیسی برابر ہوا دیتی رہی۔ پھر بھی پوری مسلمان جاتی نہیں بگڑی۔ اب سے دو تین سال پہلے بڑی لڑائی کے ختم ہونے پر جب ہمارے نیتا جیلوں سے چھوٹے اور صوبوں کی اسمبلیوں اور کونسلوں کا چناؤ ہوا تو ہندوؤں اور سکھوں کے ساتھ ۳۳ پرتی شت مسلمانوں نے مسلم لیگ کا ساتھ نہ دے کر کانگریس کا ساتھ دیا۔ کئی جگہوں پر تو کانگریس کا ساتھ دینے والے مسلمان ووٹر اپنے ہم مذہبوں کے ہاتھوں گھائل کیے گئے اور مار ڈالے گئے۔ ان کے بال بچوں کو بے عزت کیا گیا، ان کے منہ پر تھوکا گیا ان کے گھر لوٹ لئے گئے اور جلا دیئے گئے۔ ان کے جیون کے لئے خطرہ پیش ہو گیا، پر یہ بہادر مسلمان دیش پریم کی راہ سے نہیں ڈگے اور سرحدی صوبہ میں تو ۳۳ پرتی شت نہیں، سو پیچھے ۸۰ مسلمانوں نے کانگریس کو ووٹ دیا۔ سیکڑوں ایسی مثالیں دی جا سکتی ہیں جن سے چمکتے ہوئے سورج کی طرح یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ کروڑوں مسلمان بھیانک سے بھیانک اور گمبھیر حالت میں بھی نہ ہندوؤں کے دشمن بنے نہ سکھوں کے اور نہ دیش سے غداری کی۔ اگر ہندو اور سکھ مسلمانوں کو اپنا سب سے بڑا دشمن سمجھنے کے بدلے سامپردایکتا کو اپنا سب سے بڑا دشمن سمجھیں اور سامپردایکتا سے بچ کر اس نئے ہندستان کو بنائیں جہاں ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی

पारसी, सभी इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी बिता सकें और सब के लिये तरक़्क़ी करने के मौक़े हों, तो थोड़े ही दिनों में हिंदुस्तान और पाकिस्तान के नौ करोड़ मुसलमान इस देश की रक्षा और तरक़्क़ी के लिये एक बड़ी भारी ताक़त बन जायँगे और हिंदुओं और सिक्खों के साथ कंधे से कंधा जोड़ कर मुल्क की ज़िन्दगी की सतह को ऊँचा उठायँगे.

(११) साम्प्रदायिकता हमको अन्धा बना देती है—इतना अन्धा बना देती है कि न हम अच्छी चीज़ों को देख पाते हैं और न बुरी चीज़ों को. जब नोआखाली में और पूर्वी बंगाल के कुछ हिस्सों में हज़ारों हिन्दू, स्त्री पुरुष और बालक मार डाले गये और हज़ारों घर लूट लिये गये तो उसके बाद तुरन्त ही बिहार के हिन्दुओं ने मुसलमानों से इसका बदला लिया. हज़ारों मुसलमान मार डाले गये, और हज़ारों मुसलमानों के घर जलाये और लूट लिये गये. बहुत से नीच और बहके हुए हिन्दू इसे उचित बदला समझते रहें और इसे हिंदू जाति की ज़िन्दगी का निशान मानते रहें, लेकिन हुआ क्या ? मारे जाने वाले, अपमानित किये जाने वाले और बरबाद किये जाने वाले मुसलमानों में एक बहुत बड़ी तादाद ऐसे मुसलमानों की थी, जो जीवन भर मुस्लिम लीग से लड़ते रहे और तन, मन, धन से गांधी जी और कांग्रेस के हुक्म का पालन करते रहे. साम्प्रदायिकता के पागलपन और जोश ने यह नामुमकिन बना दिया कि देश प्रेम रखने वाले मुसलमानों को हम पहचान सकें और उनकी रक्षा कर सकें. यूँ तो नोआखाली और पूर्वी बङ्गाल के ... बिहार के मुसलमानों से लेना चाहे वह

پارسی، سبھی عزت کے ساتھ زندگی بتا سکیں اور سب کے لئے ترقی کرنے کے موقع ہوں، تو تھوڑے ہی دنوں میں ہندستان اور پاکستان کے نو کروڑ مسلمان اس دیش کی رکشا اور ترقی کے لئے ایک بڑی بھاری طاقت بن جائیں گے اور ہندوؤں اور سکھوں کے ساتھ کندھے سے کندھا جوڑ کر ملک کی زندگی کی سطح کو اونچا اٹھائیں گے۔

(۱۱) سامپردایکتا ہم کو اندھا بنا دیتی ہے - اتنا اندھا بنا دیتی ہے، کہ نہ ہم اچھی چیزوں کو دیکھ پاتے ہیں اور نہ بری چیزوں کو۔ جب نواکھالی میں اور پوربی بنگال کے کچھ حصوں میں ہزاروں ہندو، استری پرش اور بالک مار ڈالے گئے اور ہزاروں گھر لوٹ لئے گئے تو اس کے بعد ترنت ہی بہار کے ہندوؤں نے مسلمانوں سے اس کا بدلہ لیا۔ ہزاروں مسلمان مار ڈالے گئے، اور ہزاروں مسلمانوں کے گھر جلائے اور لوٹ لئے گئے - بہت سے نیچ اور بہکے ہوئے ہندو اسے اچت بدلہ سمجھتے رہیں اور اسے ہندو جاتی کی زندگی کا نشان مانتے رہیں، لیکن ہوا کیا؟ مارے جانے والے اپمانت کئے جانے والے اور برباد کئے جانے والے مسلمانوں میں ایک بہت بڑی تعداد ایسے مسلمانوں کی تھی، جو جیون بھر مسلم لیگ سے لڑتے رہے اور تن، من، دھن سے گاندھی جی اور کانگریس کے حکم کا پالن کرتے رہے۔ سامپردایکتا کے پاگل پن اور جوش نے یہ ناممکن بنا دیا کہ دیش پریم رکھنے والے مسلمانوں کو ہم پہچان سکیں اور ان کی رکشا کر سکیں۔ یوں تو نواکھالی اور پوربی بنگال کے مسلمانوں کا بدلہ، بہار کے مسلمانوں سے لینا، چاہے وہ

कांग्रेसी हों या लीगी, परले दरजे की कायरता और कमीनापन का सबूत है. पर देश प्रेम रखने वाले मुसलमानों को, जिन्हें हिन्दू धर्म और देश प्रेम के नाम पर काट डाला गया, ऐसा बड़ा पाप था, जिसके कलंक का टीका हम हिन्दुओं के माथे से मिटाया नहीं जा सकता. इससे बिल्कुल उलटा सिन्ध में हुआ. सारे हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुस्लिम दंगों का शोर मचा हुआ था. लाखों मुसलमानो ने सिन्ध में भाग कर शरन ली थी. वहाँ के असली निवासी सौ पीछे ८५ मुसलमान हैं और सौ पीछे १५ हिन्दू. पर सिंध के लाखों मुसलमानों ने पल भर के लिये भी इन्सानियत को नहीं छोड़ा. वहाँ के हिन्दू डर कर सिंध से भागना चाहते थे, सिंध के मुसलमानो ने कुरान को हाथ मे लेकर और अपनी आंखो मे आँसू भर कर अपने हिन्दू भाइयों से कहा कि तुम अपना घर न छोड़ो, सिन्ध उतना ही तुम्हारा है, जितना हमारा. पहले हम मुसलमान गुण्डों के हाथो मारे जावेंगे, तब तुम पर आँच आने पायगी. यह सच है कि पागलपन की हालत में सिंध से बहुत से हिन्दुओं और सिक्खों को भाग आना पड़ा और कुछ सिक्ख मार भी डाले गये. लकिन इस बात मे सिंध के किसी मुसलमान का हाथ नहीं था. यह हरकत थी, बाहर से पहुँचे हुए मुसलमानो की और यह बाहर से पहुँचे हुए मुसलमान भी ज्यादातर ऐसे थे, जिनका हिन्दुस्तान मे सब कुछ लुट गया था और उनके मन मे बदला लेने की भावना भड़क गई थी.

(१२) अगर हम हिन्दू या सिक्ख होने के नाते यह कहे कि मार काट, लूट दंगा न हम करते हैं, न करना चाहते हैं, बल्कि

کانگریسی ہوں یا لیگی، پرلے درجے کی کایرتا اور کمینہ پن کا ثبوت ہے۔ پر دیش پریم رکھنے والے مسلمانوں کو، جنھیں ہندو دھرم اور دیش پریم کے نام پر کاٹ ڈالا گیا، ایسا بڑا پاپ تھا، جسکے کلنک کا ٹیکہ ہم ہندوؤں کے ماتھے سے مٹایا نہیں جا سکتا۔ اس سے بالکل اُلٹا سندھ میں ہوا۔ سارے ہندستان میں ہندو مسلم دنگوں کا شور مچا ہوا تھا، لاکھوں مسلمانوں نے سندھ میں بھاگ کر شرن لی تھی۔ وہاں کے اصلی باسی سو پیچھے ۸۵ مسلمان ہیں اور سو پیچھے ۱۵ ہندو۔ پر سندھ کے لاکھوں مسلمانوں نے پل بھر کے لئے بھی انسانیت کو نہیں چھوڑا۔ وہاں کے ہندو ڈر کر سندھ سے بھاگنا چاہتے تھے، سندھ کے مسلمانوں نے قرآن کو ہاتھ میں لے کر اور اپنی آنکھوں میں آنسو بھر کر اپنے ہندو بھائیوں سے کہا کہ تم اپنا گھر نہ چھوڑو، سندھ اُتنا ہی تمہارا ہے، جتنا ہمارا۔ پہلے ہم مسلمان گنڈوں کے ہاتھوں مارے جائیں گے، تب تم پر آنچ آنے پائیگی۔ یہ سچ ہے کہ پاگل پن کی حالت میں سندھ سے بہت سے ہندوؤں اور سکھوں کو بھاگ آنا پڑا اور کچھ سکھ مار بھی ڈالے گئے۔ لیکن اس بات میں سندھ کے کسی مسلمان کا ہاتھ نہیں تھا۔ یہ حرکت تھی، باہر سے پہنچے ہوئے مسلمانوں کی اور یہ باہر سے پہنچے ہوئے مسلمان بھی زیادہ تر ایسے تھے، جن کا ہندستان میں سب کچھ لُٹ گیا تھا اور ان کے من میں بدلہ لینے کی بھاونا بھڑک گئی تھی۔

(۱۲) اگر ہم ہندو یا سکھ ہونے کے ناتے یہ کہیں کہ مار کاٹ، لوٹ دنگا نہ ہم کرتے ہیں، نہ کرنا چاہتے ہیں، بلکہ

ऐसे नीच काम पहले मुसलमान करते हैं, फिर उसका बदला लेने के लिये या उसका जवाब देने के लिये हम मजबूर हो जाते हैं, तो सोचने की बात यह है कि इस देश के किसी हिस्से मे अगर मुसलमान मार काट, लूट मार और दंगा करें और उसका जवाब हिन्दू और सिक्ख दें, चाहे देश के उसी हिस्से मे या किसी दूसरे हिस्से में, तो क्या यह सिलसिला कभी बन्द होगा? या कभी बन्द हो सकता है?—या, क्या इसमे किसी एक की जीत हो सकती है या अब तक हुई है? कलकत्ता, नोआखाली और पूर्वी बङ्गाल, बिहार, गढ़मुक्तेश्वर और हमारे सूबे के पच्छिमी ज़िलो मे फिर पूर्वी और पच्छिमी पञ्जाब मे और देश के कुछ और दूसरे हिस्सो मे भी ऐसे भयानक और शैतानी काम हुए जिनकी कल्पना करना कठिन है। तो क्या इससे एक धर्म के मानने वालो की जीत हुई? हिन्दू जीते? सिक्ख जीते? या मुसलमान जीते? या सब हारे? किसी एक धर्म के मानने वालों की बरबादी क्या दूसरे धर्म के मानने वालो की बरबादी से कम हुई? हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख–इनमें कौन है जो इन भयानक घटनाओ के हो चुकने के बाद गर्व कर सके और दूसरे धर्म के मानने वालो के मुक़ाबले में अपनी जीत का डंका पीट सके? यह भयानक लड़ाई जैसी हुई है अगर उससे सौ गुना बड़ी हो और एकसौ साल भी जारी रहे तो भी बरबाद सब हो जायंगे और अपनी जीत का झंडा कोई न फहरा सकेगा. यह बदला सफल हो ही नहीं सकता. यह लड़ाई ऐसी है, जैसे दो साँप लड़ते हैं यानी जीत किसी साँप की नहीं होती और दोनो साँप मर जाते हैं. यह पहले ही बताया जा चुका है कि यह लड़ाई एक ओर ३० करोड़ हिन्दू और

ایسے نیچ کام پہلے مسلمان کرتے ہیں، پھر اُس کا بدلہ لینے کے لئے یا اُس کا جواب دینے کے لئے ہم مجبور ہو جاتے ہیں، تو سوچنے کی بات یہ ہے کہ اس دیش کے کسی حصے میں اگر مسلمان مار کاٹ، لوٹ مار اور دنگا کریں اور اس کا جواب ہندو اور سکھ دیں، چاہے دیش کے اُسی حصے میں یا کسی دوسرے حصے میں، تو کیا یہ سلسلہ کبھی بند ہوگا؟ یا کبھی بند ہو سکتا ہے؟ — یا کیا اس میں کسی ایک کی جیت ہو سکتی ہے یا اب تک ہوئی ہے؟ کلکتہ، نواکھالی اور پوربی بنگال، بہار، گڈھ مکتیشور اور ہمارے صوبے کے پچھمی ضلعوں میں پھر پوربی اور پچھمی پنجاب میں اور دیش کے کچھ اور دوسرے حصوں میں بھی ایسے بھیانک اور شیطانی کام ہوئے جن کی کلپنا کرنا کٹھن ہے۔ تو کیا اس سے ایک دھرم کے ماننے والوں کی جیت ہوئی؟ ہندو جیتے؟ سکھ جیتے؟ یا مسلمان جیتے؟ یا سب ہارے؟ کسی ایک دھرم کے ماننے والوں کی بربادی کیا دوسرے دھرم کے ماننے والوں کی بربادی سے کم ہوئی؟ ہندو، مسلمان اور سکھ۔ ان میں کون ہے جو ان بھیانک گھٹناؤں کے ہو چکنے کے بعد گرو کر سکے؟ اور دوسرے دھرم کے ماننے والوں کے مقابلہ میں اپنی جیت کا ڈنکا پیٹ سکے؟ یہ بھیانک لڑائی جیسی ہوئی ہے اگر اس سے سو گنا بڑی ہو اور ایک سو سال بھی جاری رہے تو بھی برباد سب ہو جائیں گے اور اپنی جیت کا جھنڈا کوئی نہ پھہرا سکے گا۔ یہ بدلہ سپھل ہو ہی نہیں سکتا۔ یہ لڑائی ایسی ہے، جیسے دو سانپ لڑتے ہیں یعنی جیت کسی سانپ کی نہیں ہوتی اور دونوں سانپ مر جاتے ہیں۔ یہ پہلے ہی بتایا جا چکا ہے کہ یہ لڑائی ایک اور ۳۰ کروڑ ہندو اور

सिक्ख और दूसरी ओर ९ करोड़ मुसलमानों की लड़ाई रहने ही न पायगी और इसका नतीजा हिन्दू या मुसलमान किसी एक की जीत न होगा बल्कि दोनों की सदा के लिये गुलामी और बरबादी होगी.

यह भी खुली हुई बात है कि उस हिन्दू और सिक्ख से कमीना और नीच कोई हो ही नहीं सकता जो कुछ मुसलमानो की ज्यादती और अत्याचार का बदला दूसरे बेक़सूर मुसलमान स्त्री, पुरुष और बच्चो से ले. ऐसा करना हिन्दू और सिक्ख धर्म को कलंकित करना है, ऐसा करना हिन्दू और सिक्ख होने का सबूत नहीं बल्कि अपने आप को हैवानो से भी नीच सिद्ध करना है. गन्दे से गन्दा राष्ट्रीय स्वार्थ भी ऐसा करने से पूरा नही हो सकता. शक्ति, मान, मर्यादा, धर्म, संस्कृति और सम्पत्ति वग़ैरा किसी तरह का लाभ बदला लेने से नही हो सकता. कमीने इस तरह सोचते हैं कि हमने कहीं दूर हिन्दुओं और सिक्खो पर किये जाने वाले अत्याचारो का बदला अपने पड़ोसी मुसलमान स्त्री, पुरुषो, बच्चो को लूट कर, उनका घर जला कर, उनकी हत्या करके और उन्हे अपमानित करके लिया. हिन्दू और सिक्ख धर्म के बनाने वाले ऐसे हिन्दू और सिक्ख का मुँह तक न देखना चाहेंगे. यही नही कि धर्म के नाम पर निरपराधो से बदला लेना परले दरजे का कमीनापन है बल्कि यह भी है कि यह बदला कोई बदला भी नहीं है. न ऐसा करके मुसलमानो को कोई ऐसा सबक सिखाया जा सकता है. न उनके होश ठिकाने किये जा सकते हैं और न उनको दबाया जा सकता है. न उनकी शरारत कम की जा सकती है, न उनको कमज़ोर बनाया जा सकता है, न उनको किसी तरह का नुक़सान पहुँचाया

سکھ اور دوسری اور ۹ کروڑ مسلمانوں کی لڑائی رہنے ہی نہ پائیگی اور اس کا نتیجہ ہندو یا مسلمان کسی ایک کی جیت نہ ہوگا بلکہ دونوں کی سدا کے لئے غلامی اور بربادی ہوگی۔

یہ بھی کھلی ہوئی بات ہے کہ اس ہندو اور سکھ سے کمینہ اور نیچ کوئی ہو ہی نہیں سکتا جو کچھ مسلمانوں کی زیادتی اور اتیاچار کا بدلہ دوسرے بے قصور مسلمان استری، پرش اور بچوں سے لے۔ ایسا کرنا ہندو اور سکھ دھرم کو کلنکت کرنا ہے، ایسا کرنا ہندو اور سکھ ہونے کا ثبوت نہیں بلکہ اپنے آپ کو حیوانوں سے بھی نیچ سدھ کرنا ہے۔ گندے سے گندہ راشٹریہ سوارتھ بھی ایسا کرنے سے پورا نہیں ہو سکتا۔ شکتی، مان، مریادا، دھرم، سنسکرتی، سمپتی وغیرہ کسی طرح کا لابھ بدلا لینے سے نہیں ہو سکتا۔ کمینے اس طرح سوچتے ہیں کہ ہم نے کہیں دور ہندوؤں اور سکھوں پر کئے جانے والے اتیاچاروں کا بدلہ اپنے پڑوسی مسلمان استری، پرشوں، بچوں کو لوٹ کر، اُن کا گھر جلاکر، ان کی ہتیا کرکے اور انھیں اپمانت کرکے لیا۔ ہندو اور سکھ دھرم کے بنانے والے ایسے ہندو اور سکھ کا مُنھ تک نہ دیکھنا چاہیں گے۔ یہی نہیں کہ دھرم کے نام پر نرپرادھوں سے بدلہ لینا پرلے درجے کا کمینہ پن ہے بلکہ یہ بھی ہے کہ یہ بدلہ کوئی بدلہ بھی نہیں ہے، نہ ایسا کرکے مسلمانوں کو کوئی ایسا سبق سکھایا جا سکتا ہے، نہ اُنکے ہوش ٹھکانے کئے جا سکتے ہیں اور نہ اُن کو دبایا جا سکتا ہے۔ نہ اُن کی شرارت کم کی جا سکتی ہے، نہ اُن کو کمزور بنایا جا سکتا ہے، نہ اُن کو کسی طرح کا نقصان پہونچایا

जा सकता है. दस, बीस, पचास लाख मुसलमान घरानों की हत्या कर देने और फूँक देने से इस देश से मुसलमान जाति को मिटाया नहीं जा सकता और न मुसलमान जाति को कमजोर बनाया जा सकता है, चाहे यह काम हत्या और लूट का बदला लेने के लिये ही क्यों न किया जाय. इस बात को सिद्ध करने से भी काम नहीं चलेगा, कि मारकाट मुसलमानो की तरफ से ही शुरू होती है.

(१३) अब सवाल यह पैदा होता है, कि अगर मुसलमान कहीं लूटमार शुरू कर दें, तो क्या हम हिन्दू और सिक्ख हाथ धरे बैठे रहे ? इस सवाल का जवाब गुलाम आदमियों की तरह सोचने का जमाना अब नहीं रहा, बल्कि एक आजाद क़ौम के नाते इस सवाल का जवाब सोचना चाहिये. पाकिस्तान में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान में जो चार करोड़ मुसलमान बसे हुए हैं, उनके सम्बन्ध में हम इस सवाल पर विचार करे. इसका पहला जवाब तो यह है, कि यह सवाल उठता ही नहीं. यहाँ के सौ पीछे आठ नौ मुसलमानों को कुत्ते ने नहीं काटा है कि वह यहाँ की सौ पीछे ९० आबादी पर टूट पड़ें. अगर यह मान ही लिया जाय, कि मुसलमानों की ओर से कुछ दंगे हो सकते हैं, तो वह बहुत सीमित रूप में ही हो सकते हैं.

अब हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाने वाले अंग्रेज यहाँ नहीं रहे. यहाँ प्रजा का राज है. सेना, पुलिस, अधिकारी, अदालत जेलखाने वगैरा सब अपने हैं और अशांत वातावरण में उपद्रव करने वालों को बात की बात में रोका जा सकता है.

अब पाकिस्तान पर नजर दौड़ाइये. अगर वहाँ हिन्दू और

جا سکتا ہے۔ دس، بیس، پچاس لاکھ مسلمان گھرانوں کی ہتیا کر دینے اور پھونک دینے سے اس دیش سے مسلمان جاتی کو مٹایا نہیں جا سکتا اور نہ مسلمان جاتی کو کمزور بنایا جا سکتا ہے چاہے یہ کام ہتیا اور لوٹ کا بدلہ لینے کے لئے ہی کیوں نہ کیا جائے۔ اس بات کو سدھ کرنے سے بھی کام نہیں چلے گا، کہ مار کاٹ مسلمانوں کی طرف سے ہی شروع ہوتی ہے۔

(۱۳) اب سوال یہ پیدا ہوتا ہے، کہ اگر مسلمان کہیں لوٹ مار شروع کر دیں، تو کیا ہم ہندو اور سکھ ہاتھ دھرے بیٹھے رہیں؟ اس سوال کا جواب غلام آدمیوں کی طرح سوچنے کا زمانہ اب نہیں رہا، بلکہ ایک آزاد قوم کے ناطے اس سوال کا جواب سوچنا چاہئے۔ پاکستان میں نہیں، بلکہ ہندستان میں جو چار کروڑ مسلمان بسے ہوئے ہیں، ان کے سمبندھ میں ہم اس سوال پر وچار کریں۔ اس کا پہلا جواب تو یہ ہے، کہ یہ سوال اٹھتا ہی نہیں۔ یہاں کے سو پیچھے آٹھ نو مسلمانوں کو کتے نے نہیں کاٹا ہے کہ وہ یہاں کی سو پیچھے ۹۰ آبادی پر ٹوٹ پڑیں، اگر یہ مان ہی لیا جائے، کہ مسلمانوں کی اور سے کچھ دنگے ہو سکتے ہیں، تو وہ بہت سیمت روپ میں ہی ہو سکتے ہیں۔

اب ہندو مسلمانوں کو لڑانے والے انگریز یہاں نہیں رہے۔ یہاں پرجا کا راج ہے۔ سینا، پولیس، ادھیکاری، عدالت، جیل خانے وغیرہ سب اپنے ہیں اور اشانت واتاورن میں اپدرو کرنے والوں کو بات کی بات میں روکا جا سکتا ہے۔

اب پاکستان پر نظر دوڑائیے۔ اگر وہاں ہندو اور

सिक्खों को सताया जा रहा है, तो इसका जवाब यह तो नहीं हो सकता कि हिन्द के मुसलमानों से उसका बदला लिया जाय. हिन्द की सरकार पाकिस्तान की सरकार से उन तमाम तरीक़ों से, जो एक सरकार दूसरी सरकार के साथ करती है, इस झगड़े को सुलझायेगी. ऐसी हालत में यह कोई इलाज नहीं है कि तलवारें फौरन म्यान से बाहर निकाल ली जायँ और मुसलमानों पर हमला बोल दिया जाय, या पाकिस्तान पर धावा बोल दिया जाय. सैकड़ों उपाय हैं, जिन्हें काम में लाकर हिन्द सरकार पाकिस्तान की हुकूमत पर असर डाल सकती है. ऐसा करने में समय लगता है, सन्तोष की जरूरत होती है और अपने दिल और दिमाग़ पर काबू रखने की जरूरत होती है. अगर पाकिस्तान मे अशान्ति फैलाई जाय, तो पाकिस्तान की हुकूमत अपने घर ही में अपने लिये आफ़त मोल ले लेगी. पाकिस्तान सरकार ने अगर पकिस्तान में हज़ारों-लाखों को लूटमार करने से न रोका तो यह हज़ारों लाखों मुसलमान हिन्दुओं को लूट चुकने और मिटा चुकने के बाद पाकिस्तान ही की हुकूमत पर टूट पड़ेंगे. यह और बात है कि कुछ दिनों के लिये नतीजे को सोचे बिना ही कुछ लोग पाकिस्तान में यह चाहे कि हिन्दू-मुस्लिम लड़ाई वहाँ होती रहे, पर ऐसा होने से वहाँ ऐसी अशान्ति फैल जायगी कि ख़ुद वहाँ के मुसलमान मुस्तकिल तौर पर घटे में रहेंगे. यह बात आगे चल कर समझ मे आ जायगी. अभी इस सवाल के कुछ जरूरी पहलुओ पर हम ठण्डे दिल से विचार करेंगे.

(१४) ऐसी बात हरगिज़ नहीं है कि हिन्दुओ, मुसलमानों और सिक्खों मे किसी एक धर्म को मानने वाले दूसरों से अच्छे

سکھوں کو ستایا جارہا ہے، تو اس کا جواب یہ تو نہیں ہو سکتا کہ ہند کے مسلمانوں سے اس کا بدلہ لیا جائے۔ ہند کی سرکار پاکستان کی سرکار سے ان تمام طریقوں سے، جو ایک سرکار دوسری سرکار کے ساتھ کرتی ہے، اس جھگڑے کو سلجھائے گی۔ ایسی حالت میں یہ کوئی علاج نہیں ہے کہ تلواریں فوراً میان سے باہر نکال لی جائیں اور مسلمانوں پر حملہ بول دیا جائے۔ یا پاکستان پر دھاوا بول دیا جائے۔ سیکڑوں اُپائے ہیں جنھیں کام میں لاکر ہند سرکار پاکستان کی حکومت پر اثر ڈال سکتی ہے۔ ایسا کرنے میں سمے لگتا ہے، سنتوش کی ضرورت ہوتی ہے اور اپنے دل اور دماغ پر قابو رکھنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ اگر پاکستان میں اشانتی پھیلائی جائے، تو پاکستان کی حکومت اپنے گھر ہی میں اپنے لئے آفت مول لے لیگی۔ پاکستان سرکار نے اگر پاکستان میں ہزاروں لاکھوں کو لوٹ مار کرنے سے نہ روکا تو یہ ہزاروں لاکھوں مسلمان ہندوؤں کو لوٹ چکنے اور مٹا چکنے کے بعد پاکستان ہی کی حکومت پر ٹوٹ پڑیں گے۔ یہ اور بات ہے کہ کچھ دنوں کے لئے نتیجے کو سوچے بنا ہی کچھ لوگ پاکستان میں یہ چاہیں کہ ہندو مسلم لڑائی وہاں ہوتی رہے، پر ایسا ہونے سے وہاں ایسی اشانتی پھیل جائے گی کہ خود وہاں کے مسلمان مستقل طور پر گھاٹے میں رہیں گے۔ یہ بات آگے چل کر سمجھ میں آجائیگی۔ ابھی اس سوال کے کچھ ضروری پہلوؤں پر ہم ٹھنڈے دل سے وچار کریں گے۔

(۱۴) ایسی بات ہرگز نہیں ہے کہ ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں میں کسی ایک دھرم کو ماننے والے دوسروں سے اچھے

या बुरे हों. तीनों शान्ति चाहते हैं, तीनों सुख का जीवन चाहते हैं, तीनों जीवन की अच्छी-अच्छी चीज़ों की इज़्ज़त करते है. पर अंग्रेज़ों ने हमें ग़ुलाम बनाकर भुक्कड़, बेरोज़गार और अनपढ़ बना रखा था. यह सच है कि थोड़े से ख़ुशहाल पढ़े लिखे हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख इतने कमीने और नीच बन जाते हैं, इतने कट्टर बन जाते हैं, क्रोध और घृणा के ऐसे अवतार बन जाते है कि अपने धर्म वालों में लाखों आदमियों को भड़का देते हैं. लेकिन अगर सौ फ़ीसदी हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख उचित और ऊँची शिक्षा पा सके और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारों की सहायता से काम पर लगा दिये गये और ख़ुशहाल बना दिये गये तो ऐसे पढ़े लिखे और इज़्ज़त से जीवन बिताने वाले हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों को आपस में कभी लड़ाया नहीं जा सकता. पढ़े लिखों के बड़े से बड़े झगड़े वह रूप नहीं धारन कर सकते जिसका उदाहरन बंगाल, बिहार, पंजाब और देश के दूसरे भागों में दिखाई दिया. जो थोड़े से पढ़े लिखे, ख़ुशहाल, पर नीच हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख अपने मूरख और अनपढ़ सहधर्मियों को भड़काने में सफल होते रहे हैं, वह अपने पढ़े लिखे सहधर्मियों को नहीं भड़का सकेंगे. जो भयानक दंगे पिछले दिनों हुए हैं, उनमें शायद ही कोई एक अच्छी तरह पढ़ा लिखा हिन्दू या मुसलमान या सिक्ख शरीक हुआ हो. अपराध धर्म का नहीं है, अपराध है हमारी उस बुरी दशा का, जो अंग्रेज़ों ने बना रखी थी. उस मूरखता, बेरोज़गारी और ग़ैर ज़िम्मेवाराना ज़िन्दगी का जिसे अंग्रेज़ों ने हमारे लिये ज़रूरी

یا بُرے ہوں۔ تینوں شانتی چاہتے ہیں، تینوں سکھ کا جیون چاہتے ہیں، تینوں جیون کی اچھی اچھی چیزوں کی عزت کرتے ہیں۔ پر انگریزوں نے ہمیں غلام بنا کر بُھکّڑ، بے روزگار اور اَن پڑھ بنا رکھا تھا۔ یہ سچ ہے کہ تھوڑے سے خوشحال پڑھے لکھے ہندو، مسلمان اور سکھ اتنے کمینے اور نیچ بن جاتے ہیں، اتنے کٹر بن جاتے ہیں، کرودھ اور گھرنا کے ایسے اوتار بن جاتے ہیں کہ اپنے دھرم والوں میں لاکھوں آدمیوں کو بھڑکا دیتے ہیں۔ لیکن اگر سو فی صدی ہندو، مسلمان اور سکھ اُچت اور اونچی شکشا پا سکے اور ہندستان اور پاکستان کی سرکاروں کی سہائتا سے کام پر لگا دیئے گئے اور خوش حال بنا دیئے گئے تو ایسے پڑھے لکھے اور عزت سے جیون بِتانے والے ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں کو آپس میں کبھی لڑایا نہیں جا سکتا۔ پڑھے لکھوں کے بڑے سے بڑے جھگڑے وہ روپ نہیں دھارن کر سکتے جس کا اُداہرن بنگال، بہار، پنجاب اور دیش کے دوسرے بھاگوں میں دکھائی دیا۔ جو تھوڑے سے پڑھے لکھے، خوشحال، پر نیچ ہندو، مسلمان اور سکھ اپنے مورکھ اور اَن پڑھ سہدھرمیوں کو بھڑکانے میں سپھل ہوتے رہے ہیں، وہ اپنے پڑھے لکھے سہدھرمیوں کو نہیں بھڑکا سکیں گے۔ جو بھیانک دنگے پچھلے دنوں ہوئے ہیں، اُن میں شاید ہی کوئی ایک اچھی طرح پڑھا لکھا ہندو یا مسلمان یا سکھ شریک ہوا ہو۔ اپرادھ دھرم کا نہیں ہے، اپرادھ ہے ہماری اُس بُری دشا کا، جو انگریزوں نے بنا رکھی تھی۔ اُس مورکھتا، بے روزگاری اور غیر ذمہ دارانہ زندگی کا، جسے انگریزوں نے ہمارے لئے ضروری

बना रक्खा था. हिन्दू , मुसलमान और सिक्ख एक दूसरे को मिटा नहीं सके और इन तीनों का मिल-जुल कर रहना और इज्जत का जीवन बिताना इस तरह मुमकिन बनाया जा सकता है कि पूरा समाज और पूरी सरकार रचनात्मक कामों में लग जाय और दस पन्द्रह बरस के अन्दर देश के जीवन को रचाया जाय, बनाया जाय, सँवारा जाय और उन्नति की जाय. हमें हर धर्म के मानने वालों की इज्जत करनी चाहिये, इसलिये कि वह इन्सान हैं. इन्हीं दिनों भयानक दंगों में भी सौ पीछे दस पाँच ही हिन्दू मुसलमान या सिक्ख शरीक हुए थे, पूरी कौम मारकाट में नहीं पड़ी थी और सैकड़ो उदाहरण इस बात के मिले हैं कि हिन्दुओ, मुसलमानो और सिक्खो ने अपने सहधर्मियो के हमलों से दूसरे धर्म वालो को अपनी जान पर खेल कर बचाया है. सिन्ध के मुसलमानों का हाल हम बता ही चुके हैं और यह सब बातें हम इस लिये कह रहे हैं कि हमारे दिलों में यह बात बैठ जाय कि किसी भी क़ौम को या किसी धर्म के मानने वालो को धर्म और क़ौमियत के कारन नीच और कमीना समझना खुली हुई ग़लती है. सिर्फ मूरख ऐसा समझते हैं. हमें अपने विचारों, भावों और घटनाओ को सोच विचार की रोशनी में समझना चाहिये. यह सच है कि उतना कष्ट किसी और चीज़ से नहीं होता, जितना अपने भावो और विचारों को बदलने से होता है, पर इस कष्ट को अगर हम सह नहीं सकते, .अगर हम अपने अनुचित भावों और अनुचित विचारों को बदलने का कष्ट सहन नहीं कर सकते, तो हमारे यही आनन्द देने वाले

بنا رکھا تھا۔ ہندو، مسلمان اور سکھ ایک دوسرے کو مٹا نہیں سکے اور ان تینوں کا مل جل کر رہنا اور عزت کا جیون بتانا اس طرح ممکن بنایا جا سکتا ہے کہ پورا سماج اور پوری سرکار رچناتمک کاموں میں لگ جائے اور دس پندرہ برس کے اندر دیش کے جیون کو رچایا جائے، بنایا جائے، سنوارا جائے اور اُنتی کی جائے۔ ہمیں ہر دھرم کے ماننے والوں کی عزت کرنی چاہیے، اس لئے کہ وہ انسان ہیں۔ انہیں دنوں بھیانک دنگوں میں بھی سو پیچھے دس پانچ ہی ہندو مسلمان یا سکھ شریک ہوئے تھے، پوری قوم مار کاٹ میں نہیں پڑی تھی اور سیکڑوں اداھرن اس بات کے ملتے ہیں کہ ہندوؤں مسلمانوں اور سکھوں نے اپنے سہدھرمیوں کے حملوں سے دوسرے دھرم والوں کو اپنی جان پر کھیل کر بچایا ہے۔ سندھ کے مسلمانوں کا حال ہم بتا ہی چکے ہیں اور یہ سب باتیں ہم اس لئے کہہ رہے ہیں کہ ہمارے دلوں میں یہ بات بیٹھ جائے کہ کسی بھی قوم کو یا کسی دھرم کے ماننے والوں کو دھرم اور قومیت کے کارن نیچ اور کمینہ سمجھنا کھلی ہوئی غلطی ہے۔ صرف مورکھ ایسا سمجھتے ہیں۔ ہمیں اپنے وچاروں، بھاؤں اور گھٹناؤں کو سوچ وچار کی روشنی میں سمجھنا چاہیے۔ یہ سچ ہے کہ اتنا کشٹ کسی اور چیز سے نہیں ہوتا، جتنا اپنے بھاؤں اور وچاروں کو بدلنے سے ہوتا ہے، پر اس کشٹ کو اگر ہم سہہ نہیں سکتے، اگر ہم اپنے انوچت بھاؤں اور انوچت وچاروں کو بدلنے کا کشٹ سہن نہیں کر سکتے، تو ہمارے یہی آنند دینے والے

अनुचित विचार और अनुचित भाव हमको मिटा देंगे. साम्प्रदायिक भावना और विचार देखने में बहुत सुन्दर मालूम होते हैं, पर वह हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं. साम्प्रदायिकता हमे डस लेगी, ऐसा डसेगी कि हम हिल कर पानी न मॉंग सकेंगे. इस साँप का सूँघा हुआ लहर नहीं लेता.

(१५) जब सन् १९३७ ईस्वी में कौंसिलों और असेम्बलियों के लिये देश भर में चुनाव हुए, तो देश भर के मुसलमानों ने कांग्रेस की सहायता की. यहाँ तक कि मुस्लिम लीग के हजारों काम करने वालों ने कांग्रेस का पूरा पूरा साथ दिया. जब सन् १९४२ ई० में महात्मा गान्धी और कांग्रेस के सब नेताओं के गिरफ़्तार हो जाने के बाद देश भर में आजादी की लहर दौड़ गई और इतना बड़ा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ कि अंग्रेजी राज के पाँव उखड़ने लगे तो अंग्रेज गवर्नर जनरल, फ़ौजी अफ़सरों और बड़े बड़े अंग्रेज अधिकारियों और गुलामी चाहने वाले बहुत से हिन्दू-मुसलमान अफ़सरों की ओर से इस बात का जतन किया गया कि यह आन्दोलन हिन्दुओं और मुसलमानों की लड़ाई बन जाय. यह साजिश सफल न हुई. जिन्ना साहब ने भी एक बार नहीं बार बार इस बात को दुहराया कि सन् ४२ का आन्दोलन मुसलमानों पर हिन्दू-राज क़ायम करने के लिये है और इससे मुसलमानों को बहुत बड़ी हानि होगी तब भी देश में एक कोने से दूसरे कोने तक मुसलमानों ने आजादी के इस संग्राम में यही नहीं कि कोई रुकावट पैदा नहीं की, बल्कि सैकड़ों तरह से इस लड़ाई को आगे बढ़ाने में मदद दी.

انوچت وچار اور انوچت بھاؤ ہم کو مٹا دیں گے۔ سامپردایک بھاؤنا اور وچار دیکھنے میں بہت سُندر معلوم ہوتے ہیں، پر وہ ہمارے سب سے بڑے دُشمن ہیں۔ سامپردایکتا ہمیں ڈس لے گی، ایسا ڈسے گی کہ ہم ہل کر پانی نہ مانگ سکیں گے۔ اس سانپ کا سونگھا ہوا لہر نہیں لیتا۔

جب ۱۹۳۷ء میں کونسلوں اور اسمبلیوں کے لئے دیش بھر میں چناؤ ہوئے، تو دیش بھر کے مسلمانوں نے کانگریس کی سہائتا کی۔ یہاں تک کہ مسلم لیگ کے ہزاروں کام کرنے والوں نے کانگریس کا پورا پورا ساتھ دیا۔ جب ۱۹۴۲ء میں مہاتما گاندھی اور کانگریس کے سب نیتاؤں کے گرفتار ہو جانے کے بعد دیش بھر میں آزادی کی لہر دوڑ گئی اور اتنا بڑا آندولن اُٹھ کھڑا ہوا کہ انگریزی راج کے پاؤں اُکھڑنے لگے تو انگریز گورنر جنرل، فوجی افسروں اور بڑے بڑے انگریز ادھیکاریوں اور غلامی چاہنے والے بہت سے ہندو مسلمان افسروں کی اور سے اس بات کا جتن کیا گیا کہ یہ آندولن ہندوؤں اور مسلمانوں کی لڑائی بن جائے یہ سازش سپھل نہ ہوئی۔ جناح صاحب نے بھی ایک بار نہیں بار بار اس بات کو دُہرایا کہ ۴۲ء کا آندولن مسلمانوں پر ہندو راج قائم کرنے کے لئے ہے اور اس سے مسلمانوں کو بہت بڑی ہانی ہوگی۔ تب بھی دیش میں ایک کونے سے دوسرے کونے تک مسلمانوں نے آزادی کے اس سنگرام میں یہی نہیں کہ کوئی رکاوٹ پیدا نہیں کی، بلکہ سیکڑوں طرح سے اس لڑائی کو آگے بڑھانے میں مدد دی۔

(१६) नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फ़ौज में हिन्दू मुसलमानों ने बराबर का हिस्सा लिया. शाही हिन्दुस्तानी बेड़े में जो विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ़ हुआ और हिन्दुस्तान की आज़ादी का झण्डा फहराया गया, उसमें लाखों मुसलमान और हिन्दू साथ साथ थे. यहाँ तक कि बम्बई की तीस चालीस लाख आबादी में ऐसा मालूम होता था कि अंगरेज़ी राज ख़तम हो गया है. इसी तरह कलकत्ता की हड़ताल और देश में कई और जगह जो हड़तालें या आज़ादी के आन्दोलन हुए, उन सब में हिन्दू और मुसलमान कंधे से कंधा जोड़ कर अत्याचार का मुक़ाबला करते रहे. हमें तीस करोड़ हिन्दुओं, कई लाख सिक्खों, ९ करोड़ मुसलमानों के बारे में अन्धाधुन्ध राय नहीं क़ायम करनी चाहिये. हमें अपने सोच विचार को क्रोध और नफ़रत के भावों पर क़ुरबान नहीं कर देना चाहिये. हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों में बहुत भयानक दङ्गे हुए और नफ़रत की चिंगारियाँ देश भर में उड़ीं. देश भर में क़त्ल और ख़ून हुए पर हमें उन सैकड़ों घटनाओं को भूलना नहीं चाहिये जो इस बात का सबूत हैं कि हिन्दू मुसलमानों और सिक्खों में मिल जुल कर रहने और जीवन के पथ पर आगे बढ़ने की पूरी पूरी शक्ति है. अलग अलग धर्म के मानने वालों में जो गुत्थियाँ पैदा हो गई हैं उनको सुलझाने के लिये एक दूसरे के ख़ून में डूबी हुई उंगलियाँ काम नहीं देतीं.

(१७) इस देश में अलग-अलग धर्म के मानने वालों के जीवन आपस में किस तरह गुथे और जकड़े हुए हैं, आपस

(۱۶) نیتا جی سبھاش چندر بوس کی آزاد ہند فوج میں ہندو مسلمانوں نے برابر کا حصہ لیا۔ شاہی ہندستانی بیڑے میں جو ودروہ انگریزوں کے خلاف ہوا اور ہندستان کی آزادی کا جھنڈا پھرایا گیا، اس میں لاکھوں مسلمان اور ہندو ساتھ ساتھ تھے۔ یہاں تک کہ بمبئی کی تیس چالیس لاکھ آبادی میں ایسا معلوم ہوتا تھا کہ انگریزی راج ختم ہوگیا ہے۔ اسی طرح کلکتہ کی ہڑتال اور دیش میں کئی اور جگہ جو ہڑتالیں یا آزادی کے آندولن ہوئے، ان سب میں ہندو اور مسلمان کندھے سے کندھا جوڑکر اتیاچار کا مقابلہ کرتے رہے۔ ہمیں تیس کروڑ ہندوؤں، کئی لاکھ سکھوں، ۹ کروڑ مسلمانوں کے بارے میں اندھا دھند رائے نہیں قائم کرنی چاہیے۔ ہمیں اپنے سوچ بچار کو کرودھ اور نفرت کے بھاؤں پر قربان نہیں کردینا چاہیے۔ ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں میں بہت بھیانک دنگے ہوئے اور نفرت کی چنگاریاں دیش بھر میں اڑیں۔ دیش بھر میں قتل اور خون ہوئے پر ہمیں ان سیکڑوں گھٹناؤں کو بھولنا نہیں چاہیے جو اس بات کا ثبوت ہیں کہ ہندو مسلمانوں اور سکھوں میں مل جل کر رہنے اور جیون کے پتھ پر آگے بڑھنے کی پوری پوری شکتی ہے۔ الگ الگ دھرم کے ماننے والوں میں جو گتھیاں پیدا ہوگئی ہیں ان کو سلجھانے کے لئے ایک دوسرے کے خون میں ڈوبی ہوئی انگلیاں کام نہیں دیتیں۔

(۱۷) اس دیش میں الگ الگ دھرم کے ماننے والوں کے جیون آپس میں کس طرح گتھے اور جکڑے ہوئے ہیں، آپس

में किस तरह गोश्त और नाख़ून का सम्बन्ध है, यह जानने और समझने के लिये असली हालत पर विचार करने की जरूरत है. हम सिर्फ कुछ उदाहरण देंगे. अगर हिन्द से कुल मुसलमानों को भगा दिया गया तो बनारस के पीतल का वह काम जो सिर्फ मुसलमान करते हैं और जो संसार भर में मशहूर है और जिससे करोड़ों रुपया बिदेशों से हिन्दुस्तान में आता है, बरबाद हो जायगा. पीतल के कारीगर सब के सब मुसलमान हैं और पीतल के इस बारीक काम की दुकानें और ब्यापार सब का सब हिन्दुओं का है, जिससे हिन्दुओं के सैकड़ों घराने लाखों रुपये कमाया करते हैं और कई सौ बरसों से कमाते आ रहे हैं. मजदूर सिर्फ मुसलमान हैं पर ऐसे मजदूर, जिनका स्थान हिन्दू मजदूर नहीं ले सकते. यही हाल बनारस के रेशम और बनारसी साड़ियों का है. इसके कारीगर भी मुसलमान हैं और ब्योपारी सब हिन्दू हैं.

मुरादाबादी बर्तनों का भी यही हाल है. दुकानें सब की सब हिन्दुओं की हैं और कारीगर सब के सब मुसलमान हैं. हिन्दुस्तान में क़ालीन का काम और काश्मीर मे लकड़ी, ऊन, रेशम, सोने चाँदी और दूसरी तरह की कारीगरियाँ सौ पीछे ९० मुसलमानों के हाथ में हैं, पर कारोबार का बहुत बड़ा हिस्सा हिन्दुओं के हाथ में है. हिन्द में लाखों ऐसे मुसलमान बुनकार हैं, जिनके बनाये हुये कपड़े बहुत सुन्दर होते हैं, लेकिन सूत हिन्दुओं की मिलों से आता है या हिन्दू और मुसलमान दोनों के कते हुए सूत को यह मुसलमान बुनकार काम में लाते हैं. लखनऊ के मिट्टी के खिलौनों की निज़ाकत और सुन्दरता दूसरी जगह नहीं मिलेगी. उनके भी

میں کس طرح گوشت اور ناخون کا سمبندھ ہے، یہ جاننے اور سمجھنے کے لئے اصلی حالت پر وچار کرنے کی ضرورت ہے. ہم صرف کچھ اداہرن دیں گے. اگر ہند سے کل مسلمانوں کو بھگا دیا گیا تو بنارس کے پیتل کا وہ کام جو صرف مسلمان کرتے ہیں. اور جو سنسار بھر میں مشہور ہے اور جس سے کروڑوں روپیہ بدیشوں سے ہندستان میں آتا ہے، برباد ہو جائے گا. پیتل کے کاریگر سب کے سب مسلمان ہیں اور پیتل کے اس باریک کام کی دوکانیں اور بیوپار سب کا سب ہندوؤں کا ہے، جس سے ہندوؤں کے سیکڑوں گھرانے لاکھوں روپیہ کماتے ہیں اور کئی سو برسوں سے کماتے آرہے ہیں. مزدور صرف مسلمان ہیں پر ایسے مزدور، جن کا استھان ہندو مزدور نہیں لے سکتے. یہی حال بنارس کے ریشم اور بنارسی ساڑھیوں کا ہے. اسکے کاریگر بھی مسلمان ہیں اور بیوپاری سب ہندو ہیں.

مراد آبادی برتنوں کا بھی یہی حال ہے. دوکانیں سب کی سب ہندوؤں کی ہیں اور کاریگر سب کے سب مسلمان ہیں. ہندستان میں قالین کا کام اور کشمیر میں لکڑی کا اون، ریشم، سونے چاندی اور دوسری طرح کی کاریگریاں سو پیچھے ۹۰ مسلمانوں کے ہاتھ میں ہیں، پر کاروبار کا بہت بڑا حصہ ہندوؤں کے ہاتھ میں ہے. ہند میں لاکھوں ایسے مسلمان بن کار ہیں، جنکے بنائے ہوئے کپڑے بہت سندر ہوتے ہیں، لیکن سوت ہندوؤں کی ملوں سے آتا ہے یا ہندو اور مسلمان دونوں کے کتے ہوئے سوت کو یہ مسلمان بن کار کام میں لاتے ہیں. لکھنؤ کے مٹی کے کھلونوں کی نزاکت اور سندرتا دوسری جگہ نہیں ملے گی. ان کے بھی

बहुत से बेचने वाले हिन्दू हैं और बनाने वाले मुसलमान. आतशबाजी बनाने की कला सिर्फ मुसलमानों के हाथ में है. इत्र और तेल अच्छा से अच्छा हिन्द में ज्यादातर मुसलमान ही बनाते हैं. कपड़ा रंगने वाले भी ज्यादातर मुसलमान हैं. संगीत कला में भी मुसलमानों ने कमाल दिखाया है. इसी तरह हमारे राष्ट्रीय जीवन के सैकड़ों कारोबार मुसलमानों के सहारे चमक रहे हैं. मुसलमानों को यहाँ से मिटा देना हमारे राष्ट्रीय जीवन के इन चमकते हुए पहलुओं को मिटा देना है और ऐसा करके हम हिन्द को और हिन्दुओं को इतना नुक़सान पहुँचायँगे, जिसको हम कभी भी पूरा नहीं कर सकते. मुसलमान कारीगर तो पाकिस्तान का रास्ता लेंगे और उजड़ जायगा हिन्दुस्तान.

(१८) डर और घबराहट, गुस्सा और नफ़रत सामने की सच्चाई को भी छिपा देते हैं. कुछ लोग कहते हैं कि हिन्द में चार करोड़ मुसलमान समय पर गद्दारी कर जायँगे. हमारे देश की तारीख में जब मुसलमान यहाँ नहीं आये थे, उस समय भी कमज़ोर और लापरवाह हिन्दू हुकूमतों के खिलाफ भयानक षड्यन्त्र (साज़िश) हिन्दुओं ही ने किये. यह डर तो हर राज को रहता है कि उसकी आबादी का एक भाग हुकूमत को उलट देगा. प्रजाराज तो तभी बचा हुआ रह सकता है, जब उसकी पलक न झपके. राज संभालना खेल नहीं है. मुसलमानों को यहाँ से निकाल कर राज को जो डर है, उसे दूर नहीं किया जा सकता. हम बता चुके हैं कि पाकिस्तान काश्मीर को हड़प लेना चाहता है. पर शेख़ अबदुल्ला, काश्मीर के सौ पीछे ८० मुसलमान और हमारी सेना के मुसलमान

بہت سے بیچنے والے ہندو ہیں اور بنانے والے مسلمان. آتش بازی بنانے کی کلا صرف مسلمانوں کے ہاتھ میں ہے. عطر اور تیل اچھا سے اچھا ہند میں زیادہ تر مسلمان ہی بناتے ہیں. کپڑا رنگنے والے بھی زیادہ تر مسلمان ہیں. سنگیت کلا میں بھی مسلمانوں نے کمال دکھایا ہے. اسی طرح ہمارے راشٹریہ جیون کے سیکڑوں کاروبار مسلمانوں کے سہارے چمک رہے ہیں. مسلمانوں کو یہاں سے مٹا دینا ہمارے راشٹریہ جیون کے ان چمکتے ہوئے پہلوؤں کو مٹا دینا ہے اور ایسا کر کے ہم ہند کو اور ہندوؤں کو اتنا نقصان پہنچائیں گے، جس کو ہم کبھی بھی پورا نہیں کر سکتے. مسلمان کاریگر تو پاکستان کا راستہ لیں گے اور اجڑ جائے گا ہندستان.

(۱۸) ڈر اور گھبراہٹ، غصہ اور نفرت سامنے کی سچائی کو بھی چھپا دیتے ہیں. کچھ لوگ کہتے ہیں کہ ہند میں چار کروڑ مسلمان سمے پر غداری کر جائیں گے. ہمارے دیش کی تاریخ میں جب مسلمان یہاں نہیں آئے تھے اس سمے بھی کمزور اور لاپرواہ ہندو حکومتوں کے خلاف بھیانک شڈیتر (سازش) ہندوؤں ہی نے کئے. یہ ڈر تو ہر راج کو رہتا ہے کہ اس کی آبادی کا ایک بھاگ حکومت کو الٹ دے گا. پرجا راج تو تبھی بچا ہوا رہ سکتا ہے، جب اس کی پلک نہ جھپکے. راج سنبھالنا کھیل نہیں ہے. مسلمانوں کو یہاں سے نکال کر راج کو جو ڈر ہے، اسے دور نہیں کیا جا سکتا. ہم بتا چکے ہیں کہ پاکستان کاشمیر کو ہڑپ لینا چاہتا ہے. پر شیخ عبداللہ، کاشمیر کے سو پیچھے ۸۰ مسلمان اور ہماری سینا کے مسلمان

अफ़सर और सिपाही पाकिस्तान से क्यों नहीं जा मिलते· और हिन्दुस्तान के साथ ग़द्दारी क्यों नहीं करते. क्या यह बातें इस बात का सबूत हैं, कि मुसलमान हिन्द के प्रजाराज के ख़िलाफ़ विश्वास-घात या दुश्मनी कर रहे हैं ?

(१९) राज की जड़ें मज़बूत बनाने में समय लगता है, महात्मा गान्धी की हत्या और उसपर सैकड़ों जगह मिठाई बँटना, कांग्रेस के तमाम नेताओं की हत्या कर देने की साजिश, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा की कारस्वाइयाँ इस बात का खुला हुआ सबूत हैं कि राज के ख़िलाफ़ बग़ावत और विश्वासघात का डर हिन्दुओं और सिक्खों से भी हो सकता है.

(२०) हिन्दू समाज एक होते हुए भी छोटे-बड़े अलग अलग समुदायों से बना हुआ है. प्रांतों में लाग-डाट है. दक्खिनी और उत्तरी हिन्द में, बंगालियों और बिहारियों में, मरहठे और महाराष्ट्रियों, तमिल और आंध्र, गुजराती, राजपूत, ब्राह्मण, क्षत्री और हिन्दुओंकी बहुत सी जातियाँ, अछूत, हरिजन यह सब जातियाँ आपस में एक दूसरे से लाग डाट रखती हैं—और रखती रही हैं. हिन्दू धर्म में कोई भी ऐसा जादू नहीं है कि आपस में इन लड़ने वालों को एक कर दिया जाय. अभी कुछ ही समय हुआ ज़िला बोर्डों के चुनाव में लाखों वोट जाति पाति के आधार पर दिये गये. हमारा आगामी युग उसी हालत में चमकदार बन सकता है जब कि हम राज और शिक्षा के ज़रिये सब को मिला कर आगे बढ़ें और उस से एक ऐसी क़ौमियत बनायें जिससे साम्प्रदायिकता टकरा कर चूर-चूर हो जाय ! जर्मनी, इटली, अमरीका, इंगलिस्तान रूस और चीन के

افسر اور سپاہی پاکستان سے کیوں نہیں جا ملتے اور ہندستان کے ساتھ غدّاری کیوں نہیں کرتے۔ کیا یہ باتیں اس بات کا ثبوت ہیں، کہ مسلمان ہند کے پرجا راج کے خلاف وشواس گھات یا دشمنی کر رہے ہیں؟

(۱۹) راج کی جڑیں مضبوط بنانے میں سمے لگتا ہے، مہاتما گاندھی کی ہتیا اور اس پر سیکڑوں جگہ مٹھائی بٹنا، کانگریس کے تمام نیتاؤں کی ہتیا کر دینے کی سازش، راشٹریہ سیوک سنگھ اور ہندو مہاسبھا کی کارروائیاں اس بات کا کھلا ہوا ثبوت ہیں کہ راج کے خلاف بغاوت اور وشواس گھات کا ڈر ہندوؤں اور سکھوں سے بھی ہو سکتا ہے۔

(۲۰) ہندو سماج ایک ہوتے ہوئے بھی چھوٹے بڑے الگ الگ [illegible] والوں سے بنا ہوا ہے۔ پرانتوں میں لاگ ڈانٹ ہے۔ دکھنی اور اتری ہند میں، بنگالیوں اور بہاریوں میں، مراٹھے اور مہاراشٹریوں تامل اور آندھر، گجراتی، راجپوت، براہمن، چھتری اور ہندوؤں کی بہت سی جاتیاں، اچھوت، ہریجن یہ سب جاتیاں آپس میں ایک دوسرے سے لاگ ڈانٹ رکھتی ہیں اور رکھتی رہی ہیں۔ ہندو دھرم میں کوئی بھی ایسا جادو نہیں ہے کہ آپس میں ان لڑنے والوں کو ایک کر دیا جائے۔ ابھی کچھ ہی سمے ہوا ضلع بورڈوں کے چناؤں میں لاکھوں ووٹ جاتی پاتی کے آدھار پر دیے گئے۔ ہمارا آگامی یگ اسی حالت میں چمکدار بن سکتا ہے جب کہ ہم راج اور شکشا کے ذریعے سب کو ملا کر آگے بڑھیں اور اس سے ایک ایسی قومیت بنائیں جس سے سامپردایکتا ٹکرا کر چور چور ہو جائے! جرمنی، اٹلی، امریکہ، انگلستان، روس اور چین کے

इतिहास बता रहे हैं कि छोटे छोटे क़बीले, प्रान्त, जात-पात, धर्म और भाषा वाले उसी हालत में मिल कर राष्ट्रीयता का संगम पैदा करते हैं जब सरकार और राज और समाजी जीवन का निर्माण धर्म के नाम पर न किया जाय !

(२१) अगर हम बीस पच्चीस बरस के युग को एक इकाई मान लें तो इस युग का हजारवाँ हिस्सा शायद ऐसा हो कि इसमें केवल हिन्दुओ और मुसलमानों का जीवन आपस में टकराये. आये दिन तो जीवन मे जो टकराव पैदा होता है, वह ऐसा है कि हिन्दू, हिन्दू के खिलाफ़ ही ज्यादा तर अत्याचार करते रहे हैं. महाजन और साधारन आदमी, जमींदार और किसान, धनवान और निर्धन, मजदूर और पूंजीपति, कभी कभी स्त्री और पुरुष, एक जाति वाले और दूसरी जाति वाले, कई विभागों के अध्यक्ष और अफ़सर और उन्हीं विभागोके साधारन कर्मचारी, म्युनिसिपेल्टी और जिला बोर्डों के मेम्बर और जन साधारन—लड़ाइयाँ तो इनमे होती हैं, जीवन तो इनके टकराते हैं और हमारे जीवन की सारी मुसीबते आम तौर पर उन लड़ाइयोंसे पैदा होती हैं जिनमे हिन्दू मुसलमान का सवाल उठता ही नहीं हिन्दुओ और सिक्खो की उन्नति और उनके जीवन का फूलना फलना रोकने वाले न मुसलमान हैं, न हो सकते है. हमारे अनुचित रीत रिवाज, हमारे समाज का ग़लत ढाँचा ग़लत कानून कारोबार के ग़लत तरीके, व्योपार के नाम पर बेदरदी से नफ़ा कमाने का लालच, और खुद हमारे जीवन की ग़लतियाँ, रिश्वत, चोर-बजार निरक्षरता, भूक, और बेकारी, हमारे असली दुश्मन हैं. कभी कभी जो हिन्दू मुस्लिम झगड़े आपस में खड़े हो जाते हैं, तो उसका

اتہاس بتا رہے ہیں کہ چھوٹے چھوٹے قبیلے، پرانت، جات پات، دھرم اور بھاشا والے اسی حالت میں مل کر راشٹریتا کا سنگم پیدا کرتے ہیں جب سرکار اور راج اور سماجی جیون کا نرمان دھرم کے نام پر نہ کیا جائے!

(۲۱) اگر ہم بیس پچیس برس کے یگ کو ایک اکائی مان لیں تو اس یگ کا ہزارواں حصہ شاید ایسا ہو کہ اس میں کیول ہندوؤں اور مسلمانوں کا جیون آپس میں ٹکرائے۔ آئے دن تو جیون میں جو ٹکراؤ پیدا ہوتا ہے، وہ ایسا ہے کہ ہندو، ہندو کے خلاف ہی زیادہ تر اتیاچار کرتے رہے ہیں۔ مہاجن اور سادھارن آدمی، زمیندار اور کسان، دھنوان اور نردھن، مزدور اور پونجی پتی، کبھی کبھی استری اور پرش، ایک جاتی والے اور دوسری جاتی والے، کئی وبھاگوں کے ادھیکش اور افسر اور انھیں وبھاگوں کے سادھارن کرمچاری، میونسپلٹی اور ضلع بورڈوں کے ممبر اور جن سادھارن — لڑائیاں تو ان میں ہوتی ہیں، جیون تو ان کے ٹکراتے ہیں اور ہمارے جیون کی ساری مصیبتیں عام طور پر ان لڑائیوں سے پیدا ہوتی ہیں جن میں ہندو مسلمان کا سوال اٹھتا ہی نہیں۔ ہندوؤں اور سکھوں کی اُنتی اور اُن کے جیون کا پھولنا پھلنا روکنے والے نہ مسلمان ہیں، نہ ہو سکتے ہیں۔ ہمارے انوچت ریت رواج، ہمارے سماج کا غلط ڈھانچہ، غلط قانون، کاروبار کے غلط طریقے، بیوپار کے نام پر بے دردی سے نفع کمانے کا لالچ، اور خود ہمارے جیون کی غلطیاں، رشوت، چور بازار، نرکشرتا، بھوک اور بیکاری، ہمارے اصلی دشمن ہیں۔ کبھی کبھی جو ہندو مسلم جھگڑے آپس میں کھڑے ہو جاتے ہیں، تو اسکا

यह मतलब नहीं कि हमारे जीवन को मिटाने वाले मुसलमान हैं.

अब मुसलमान की ़सियत से सोचिये:—

(१) हम मुसलमानों को इस देश मे आये हुए और बसे हुए एक हज़ार बरस का युग ख़तम हो गया. जब तक इस देश मे हमारे अच्छे दिन थे, हम मुसलमान यहाँ के दूसरे धर्म वालो के साथ ऐसे घुल मिल गये थे, जैसे सगे सम्बन्धी मिल जुलकर रहते हैं. संसार के इतिहास मे कई धर्म मानने वालों के ऐसे संगम के बहुत कम उदाहरण मिलते हैं. मुसलमानों ने हिन्दू समाज और हिन्दुस्तान पर इतना अच्छा प्रभाव डाला कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान के लिये एक वरदान माँगना पड़ा. लड़ाइयाँ भी होती रहीं. लेकिन हर टकराव के बाद हिन्दुओं और मुसलमानों के जीवन की धारायें और अच्छी तरह मिल जाया करती थीं. इस तरह एक मिली जुली उजली सभ्यता इस देश में बनती रही और क़ौमियत का एक नया भाव मुसलमानो के दिलो में पलता रहा. भाषा, साहित्य, ललितकलाएँ, रीत रिवाज, भावनायें और हर बात में हिन्दू मुसलमान एक दूसरे पर इतना प्रभाव डाल चुके हैं, एक दूसरे से इतना ले दे चुके है, एक दूसरे से इतना पा चुके हैं कि इस मेल जोल को तोड़ा नहीं जा सकता जिस तरह किसी फूल के रंग और ख़ुशबू को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता. यहाँ का मुसलमान भी संसार का वैसा ही आदमी है जैसे यहाँ का हिन्दू. यहाँ का मुसलमान दुनिया भर की मुसलमान आबादी का एक हिस्सा ज़रूर है, पर दूर क्यों जायँ, बंगाल का मुसलमान जितना बंगाल के हिन्दू के क़रीब है उतना हिन्दुस्तान के

یہ مطلب نہیں کہ ہمارے جیون کو مٹانے والے مسلمان ہیں۔

اب مسلمان کی حیثیت سے سوچئے:-

(۱) ہم مسلمانوں کو اس دیش میں آئے ہوئے اور بسے ہوئے ایک ہزار برس کا یُگ ختم ہو گیا۔ جب تک اس دیش میں ہمارے اچھے دن تھے، ہم مسلمان یہاں کے دوسرے دھرم والوں کے ساتھ ایسے گھل مل گئے تھے، جیسے سگے سمبندھی مل جل کر رہتے ہیں۔ سنسار کے اتہاس میں کئی دھرم ماننے والوں کے ایسے سنگم کے بہت کم اُداھرن ملتے ہیں۔ مسلمانوں نے ہندو سماج اور ہندستان پر اتنا اچھا پربھاؤ ڈالا کہ مسلمانوں کو ہندستان کے لئے ایک بردان مانگنا پڑا۔ لڑائیاں بھی ہوتی رہیں۔ لیکن ہر ٹکراؤ کے بعد ہندوؤں اور مسلمانوں کے جیون کی دھارائیں اور اچھی طرح مل جایا کرتی تھیں۔ اس طرح ایک ملی جلی اُجلی سبھیتا اس دیش میں بنتی رہی اور قومیت کا ایک نیا بھاؤ مسلمانوں کے دلوں میں پلتا رہا۔ بھاشا، ساہتیہ، للت کلائیں، ریت رواج، بھاؤنائیں اور ہر بات میں ہندو مسلمان ایک دوسرے پر اتنا پربھاؤ ڈال چکے ہیں، ایک دوسرے سے اتنا لے دے چکے ہیں، ایک دوسرے سے اتنا پا چکے ہیں کہ اس میل جول کو توڑا نہیں جا سکتا، جس طرح کسی پھول کے رنگ اور خوشبو کو ایک دوسرے سے الگ نہیں کیا جا سکتا۔ یہاں کا مسلمان بھی سنسار کا ویسا ہی آدمی ہے جیسے یہاں کا ہندو۔ یہاں کا مسلمان دُنیا بھر کی مسلمان آبادی کا ایک حصّہ ضرور ہے، پر دور کیوں جائیں، بنگال کا مسلمان جتنا بنگال کے ہندو کے قریب ہے اتنا ہندستان کے

किसी दूसरे सूबे के मुसलमान के करीब नहीं है. यहीं बात हिन्दुस्तान के हर एक सूबे में बसने वाले मुसलमानो की है. वह अपने सूबे मे बसने वाले हिन्दुओं के जितना क़रीब है या अपने सूबे के सिक्खो के जितना क़रीब है, उतना दूसरे सूबों मे बसने वाले मुसलमानों के करीब नहीं. हिन्दुस्तान भर के मुसलमान इस देश के हिन्दुओं और दूसरे धर्म वालों के जितना क़रीब हैं, उतना इस्लामी देशो के मुसलमानो के भी क़रीब नहीं हैं. हत्याकांड और दगों से इस निकटता और अपनेपन का मिटाया नहीं जा सकता. यहॉं के मुसलमानो की सभ्यता, यहॉं के हिन्दुओ से जितनी करीब है, उतनी अरब, ईरान, मिस्र, और तुर्किस्तान को सभ्यताओं के करीब नहीं है. क़ुरान इतनी बड़ी किताब है और इस्लाम के पैगम्बर का इतना बड़ा व्यक्तित्व (शख़्सियत) है कि इस सोते से एक संस्कृति नहीं बल्कि कितनी ही संस्कृतियॉं और कितनी ही किस्म की सभ्यतायें पैदा हुईं. अगर यहॉं के मुसलमानो को एक ही दिन मे या धीरे धीरे हिन्दुस्तान से बाहर किसी इस्लामी देश मे भेज कर बसा दिया जाय तो इनका जीवन और उस देश के पुराने मुसलमान निवासियों के जीवन दोनों बरबाद हो जायँगे।

यह समझना या यह कहना इस्लाम धर्म और उसके पैगम्बर को झुटलाना है कि मानव जाति की वह बड़ी तादाद जो मुसलमान नहीं है या कलमा नहीं पढ़ती सब की सब काफिर या दोज़खी है. काफिर या इस्लाम का दुश्मन सिर्फ उन्हें कहा गया है जो पैगम्बरे इस्लाम के प्रचार और कोशिशों को अनुचित ढङ्ग से रोकते या बरबाद करते थे! जब संसार में इस्लाम फैल चुका है

کسی دوسرے صوبے کے مسلمان کے قریب نہیں ہے. یہی بات ہندستان کے ہر ایک صوبے میں بسنے والے مسلمانوں کی ہے. وہ اپنے صوبے میں بسنے والے ہندوؤں کے جتنا قریب ہے یا اپنے صوبے کے سکھوں کے جتنا قریب ہے، اتنا دوسرے صوبوں میں بسنے والے مسلمانوں کے قریب نہیں. ہندستان بھر کے مسلمان اس دیش کے ہندوؤں اور دوسرے دھرم والوں کے جتنا قریب ہیں، اتنا اسلامی دیشوں کے مسلمانوں کے بھی قریب نہیں ہیں. ہتیا کانڈ اور دنگوں سے اس نکٹتا اور اپنے پن کو مٹایا نہیں جا سکتا. یہاں کے مسلمانوں کی سبھیتا یہاں کے ہندوؤں سے جتنی قریب ہے، اتنی عرب، ایران، مصر اور ترکستان کی سبھیتاؤں کے قریب نہیں ہے. قرآن اتنی بڑی کتاب ہے اور اسلام کے پیغمبر کا اتنا بڑا ویکتیتو (شخصیت) ہے کہ اس سوتے سے ایک سنسکرتی نہیں بلکہ کتنی ہی سنسکرتیاں اور کتنی ہی قسم کی سبھیتائیں پیدا ہوئیں. اگر یہاں کے مسلمانوں کو ایک ہی دن میں یا دھیرے دھیرے ہندستان سے باہر کسی اسلامی دیش میں بھیج کر بسا دیا جائے تو ان کا جیون اور اس دیش کے پرانے مسلمان نواسیوں کے جیون دونوں برباد ہو جائیں گے!

یہ سمجھنا یا یہ کہنا اسلام دھرم اور اس کے پیغمبر کو جھٹلانا ہے کہ مانو جاتی کی وہ بڑی تعداد جو مسلمان نہیں ہے یا کلمہ نہیں پڑھتی سب کی سب کافر یا دوزخی ہے. کافر یا اسلام کا دشمن صرف انہیں کہا گیا ہے جو پیغمبر اسلام کے پرچار اور کوششوں کو انوچت ڈھنگ سے روکتے یا برباد کرتے تھے! جب سنسار میں اسلام پھیل چکا ہے

और दुनिया वाले जो मुसलमान नहीं भी हैं, मुसलमानों को उनके उचित अधिकार दिये हुए हैं या उनके साथ मिल जुल कर रहने को तैयार हैं तो उन्हें उस नाम से पुकारना जिस नाम से पैग़म्बर या इस्लाम की कोशिशो को ख़राब और बरबाद कर देने वालों को पुकारा गया है, इस्लाम की ख़िदमत नहीं है बल्कि इस्लाम को बदनाम करना है. इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन कलमा पढ़ने वाले वह मुसलमान हैं जो कलमा न पढ़ने वालो या दूसरे धर्मों के मानने वालों को काफ़िर या मुसलमानों का दुश्मन समझते और बताते हैं. मुसलमानो के १३ सौ साल पुराने इतिहास मे जितनी लड़ाइयाँ हुईं, मुसलमान राज जितनी बार आपस मे लड़े हैं, जितनी बार एक देश के मुसलमान बाशिन्दों को दूसरे देश के मुसलमान बाशिन्दों ने ग़ुलाम बनाया है, उतनी लड़ाइयाँ मुसलमान और हिन्दुओं में नहीं हुईं और न उतनी बार ग़ैर मुसलमानो ने मुसलमानों को ग़ुलाम बनाया है. धर्म या इतिहास, मत या राय और दुनिया की खुली हुई सच्चाई, कोई भी इस की गवाही नहीं देता कि मुसलमानो के दुश्मन ग़ैर मुस्लिम हैं, या मुसलमानो के दुश्मन हिन्दू रहे हैं.

(३) युग बदलते रहते हैं, इतिहास बदलता रहता है, मानवता (इन्सानियत) प्रगति करती जाती है. इस बात को न समझना और अपने जीवन को इस विचार के साँचे मे न ढालना किसी भी क़ौम के लिये ख़ुदकुशी का संदेश है. अब से कुछ सदी पहले तक दुनिया के कई देशों की यह हालत रही कि वहाँ के लाखों करोड़ो निवासियों पर थोड़े से मुसलमानों का राज रहा उस युग के

اور دُنیا والے جو مسلمان نہیں بھی ہیں، مسلمانوں کو اُن کے اُچت ادھیکار دیئے ہوئے ہیں یا اُن کے ساتھ مل جُل کر رہنے کو تیار ہیں تو اُنھیں اُس نام سے پکارنا جس نام سے پیغمبر یا اسلام کی کوششوں کو خراب اور برباد کر دینے والوں کو پکارا گیا ہے، اسلام کی خدمت نہیں ہے بلکہ اسلام کو بدنام کرنا ہے. اسلام کے سب سے بڑے دُشمن کلمہ پڑھنے والے وہ مسلمان ہیں جو کلمہ نہ پڑھنے والوں یا دوسرے دھرموں کے ماننے والوں کو کافر یا مسلمانوں کا دشمن سمجھتے اور بتاتے ہیں. مسلمانوں کے ۱۳ سو سال پرانے اتہاس میں جتنی لڑائیاں ہوئیں، مسلمان راج جتنی بار آپس میں لڑے ہیں، جتنی بار ایک دیش کے مسلمان باشندوں کو دوسرے دیش کے مسلمان باشندوں نے غلام بنایا ہے، اُتنی لڑائیاں مسلمان اور ہندوؤں میں نہیں ہوئیں اور نہ اتنی بار غیر مسلموں نے مسلمانوں کو غلام بنایا ہے. دھرم یا اتہاس مت یا رائے اور دُنیا کی کھلی ہوئی سچائی، کوئی بھی اس کی گواہی نہیں دیتا کہ مسلمانوں کے دُشمن غیر مسلم ہیں، یا مسلمانوں کے دشمن ہندو رہے ہیں.

(۳) یگ بدلتے رہتے ہیں، اتہاس بدلتا رہتا ہے، مانوتا (انسانیت) پرگتی کرتی جاتی ہے. اس بات کو نہ سمجھنا اور اپنے جیون کو اس وچار کے سانچے میں نہ ڈھالنا کسی بھی قوم کے لئے خود کشی کا سندیش ہے. اب سے کچھ صدی پہلے تک دُنیا کے کئی دیشوں کی یہ حالت رہی کہ وہاں کے لاکھوں کروڑوں نواسیوں پر تھوڑے سے مسلمانوں کا راج رہا. اس یگ کے

लिये ऐसा होना कोई अनुचित या बुरी बात न थी, लेकिन इस बारे में कुछ और सोचने से पहले मुसलमानो के लिये यह जान लेना जरूरी है कि किसी देश या क़ौम पर वह राज क़ायम हो जाने के बाद जिसे हम इस्लामी हुकूमत कहते हैं, हालत यहाँ तक पहुँच गई कि मुसलमानों की ज्यादा से ज्यादा तादाद भूकी, नङ्गी, मूढ़ और पीड़ित रही. हिन्दुस्तान मे हम कहते हैं कि सैकड़ो बरस तक इस्लामी राज कायम रहा लेकिन ऊँचे दरजे के मुट्ठी भर मुसलमानो के अलावा सौ पीछे ९० मुसलमानो की हालत और जिन्दगी हिन्दुओं से हरगिज अच्छी नहीं थी. यह बात अंग्रेजो के बारे में नही कही जा सकता. उनकी तादाद इस देश मे उंगलियों पर गिनी जा सकती थी और यह मुट्ठी भर अंग्रेज यहाँ के साधारन हिन्दू और मुसलमानो से ज्यादा सुखी और पढ़े लिखे थे. लेकिन हम ध्यान से सोचे तो सौ पीछे एक अंग्रेज ही यहाँ अच्छी हालत मे जीवन बिताते थे. दूसरे अंग्रेज, अंग्रेजी ही फौज के सिपाही थे, जिनको कुछ नहीं मिलता था और जो आम तौर पर मूढ़ भी होते थे. यह और बात है कि अंग्रेजी सरकार की रोटियाँ खा कर वह हिन्दुस्तानियों पर रोब जमाते थे पर अंग्रेजी राज मे भी लाखो हिन्दू मुसलमान गोरा फौज के सिपाहियो और सारजेन्टो के मुकाबले मे कही ज्यादा सुखी और शिक्षित थे. जब यह हाल लाख सवा लाख अंग्रेजो का अंग्रेजी राज मे रहा है तो इस बड़े देश की आबादी का चौथाई हिस्सा जो मुसलमान था उसे भला कौन सा जादू करके मुसलमान राजा या नवाब या ताल्लुकेदार या जागीरदार या इस्लामी हुकूमत ज्यादा मालदार और तालीमयाफ्ता बना सकती थी. आज हिन्द मे भी

لئے ایسا ہونا کوئی انوچت یا بُری بات نہ تھی. لیکن اس بارے میں کچھ اور سوچنے سے پہلے مسلمانوں کے لئے یہ جان لینا ضروری ہے کہ کسی دیش یا قوم پر وہ راج قائم ہوجانے کے بعد جسے ہم اسلامی حکومت کہتے ہیں، حالت یہاں تک پہنچ گئی کہ مسلمانوں کی زیادہ سے زیادہ تعداد بھوکی، ننگی، موڑھ اور پیڑت رہی. ہندستان میں ہم کہتے ہیں کہ سیکڑوں برس تک اسلامی راج قائم رہا لیکن اونچے درجے کے مٹھی بھر مسلمانوں کے علاوہ سو پیچھے ۹۰ مسلمانوں کی حالت اور زندگی ہندوؤں سے ہرگز اچھی نہیں تھی. یہ بات انگریزوں کے بارے میں نہیں کہی جا سکتی. اُن کی تعداد اس دیش میں انگلیوں پر گنی جا سکتی تھی اور یہ مٹھی بھر انگریز یہاں کے سادھارن ہندو اور مسلمانوں سے زیادہ سکھی اور پڑھے لکھے تھے. لیکن ہم دھیان سے سوچیں تو سو پیچھے ایک انگریز ہی یہاں اچھی حالت میں جیون بتاتے تھے. دوسرے انگریز، انگریزی ہی فوج کے سپاہی تھے، جن کو کچھ نہیں ملتا تھا اور جو عام طور پر موڑھ بھی ہوتے تھے. یہ اور بات ہے کہ انگریزی سرکار کی روٹیاں کھاکر وہ ہندستانیوں پر رعب جماتے تھے پر انگریزی راج میں بھی لاکھوں ہندو مسلمان گوری فوج کے سپاہیوں اور سارجنٹوں کے مقابلے میں کہیں زیادہ سکھی اور شکشت تھے. جب یہ حال لاکھ سوا لاکھ انگریزوں کا انگریزی راج میں رہا ہے تو اس بڑے دیش کی آبادی کا چوتھائی حصہ جو مسلمان تھا اُسے بھلا کون سا جادو کرکے مسلمان راجہ یا نواب یا تعلقدار یا جاگیردار یا اسلامی حکومت زیادہ مالدار اور تعلیم یافتہ بنا سکتی تھی. آج ہند میں بھی

का सोता समझी जाती थी. वहाँ के विद्यार्थियों ने मौलाना अबुल-कलाम आजाद या अब्दुल मजीद ख्वाजा के साथ जो भद्दा और गन्दा सलूक किया क्या उससे मुसलमानों को और इस्लाम को कोई भी फायदा पहुँचा ? क्या ऐसी हरकतें किये बग़ैर पाकिस्तान क़ायम नहीं हो सकता था ?

(७) हिन्दुस्तान के मुसलमानों का यह चाहना कि इस देश के कुछ हिस्सों मे,जहाँ मुसलमान ज्यादा तादाद में हैं,एक आजाद हुकूमत क़ायम हो जाय, ठीक हो या ग़लत, लेकिन ऐसा आजाद पाकिस्तान जिसके क़ायम होने से मुसलमानों को कम खुशी हो और अमरीका व इंगलिस्तान को ज्यादा खुशी हो, मुसलमानों के लिये कहाँ तक फायदा पहुँचाने वाला साबित होगा, यह सोचने की बात है. जो कुछ भी हो, अब पाकिस्तान बन चुका है और उसकी सरहदें तय हो चुकी हैं. वह हिन्दू, हिन्दूराष्ट्र और हिन्दुस्तान का शत्रु है, जो पाकिस्तान को संकट में फँसा हुआ देखना चाहे या पाकिस्तान की सरकार को कमजोर बनाना चाहे लेकिन वह मुसलमान भी इस्लाम, पाकिस्तान और मुसलमानों का दुश्मन है, जो पाकिस्तान मे बसे हुए हिन्दुओं और सिक्खों और ग़ैर मुसलमानों के लिये स्वर्ग बनाने में मदद न दे. अगर पाकिस्तान मे हिन्दू, सिक्ख या जो दूसरी ग़ैर मुस्लिम जातियाँ बस रही हैं और अब तक बसी हुई हैं उन्हे पाकिस्तान से भागना पड़े या पाकिस्तान मे रह कर कष्ट और अपमान का जीवन बिताना पड़े, या पाकिस्तान के मुसलमानों से उन्हें कम अधिकार दिये गये, यानी अगर उन्हें उनको तादाद के मुताबिक़ हर एक सरकारी मुहकमे में और ज़िन्दगी के हर एक मैदान में जगह न

کا سوتا سمجھی جاتی تھی۔ وہاں کے وِدّیارتھیوں نے مولانا ابوالکلام آزاد یا عبدالمجید خواجہ کے ساتھ جو بھدّا اور گندہ سلوک کیا کیا اُس سے مسلمانوں کو اور اسلام کو کوئی بھی فائدہ پہنچا؟ کیا ایسی حرکتیں کئے بغیر پاکستان قائم نہیں ہو سکتا تھا؟

(۷) ہندستان کے مسلمانوں کا یہ چاہنا کہ اس دیش کے کچھ حصّوں میں، جہاں مسلمان زیادہ تعداد میں ہیں، ایک آزاد حکومت قائم ہو جائے، ٹھیک ہو یا غلط، لیکن ایسا آزاد پاکستان جس کے قائم ہونے سے مسلمانوں کو کم خوشی ہو اور امریکہ و انگلستان کو زیادہ خوشی ہو، مسلمانوں کے لئے کہاں تک فائدہ پہنچانے والا ثابت ہوگا، یہ سوچنے کی بات ہے۔ جو کچھ بھی ہو، اب پاکستان بن چکا ہے اور اُسکی سرحدیں طے ہو چکی ہیں۔ وہ ہندو، ہندو راشٹر اور ہندستان کا شترو ہے، جو پاکستان کو سنکٹ میں پھنسا ہوا دیکھنا چاہے یا پاکستان کی سرکار کو کمزور بنانا چاہے لیکن وہ مسلمان بھی اسلام، پاکستان اور مسلمانوں کا دشمن ہے، جو پاکستان میں بسے ہوئے ہندوؤں اور سکھوں اور غیر مسلمانوں کے لئے سورگ بنانے میں مدد نہ دے۔ اگر پاکستان میں ہندو، سکھ یا جو دوسری غیر مسلم جاتیاں بس رہی ہیں اور اب تک بسی ہوئی ہیں انھیں پاکستان سے بھاگنا پڑے یا پاکستان میں رہ کر کشٹ اور اپمان کا جیون بتانا پڑے، یا پاکستان کے مسلمانوں سے اُنھیں کم ادھیکار دیئے گئے، یعنی اگر اُنھیں اُن کی تعداد کے مطابق ہر ایک سرکاری محکمے میں اور زندگی کے ہر ایک میدان میں جگہ نہ

दी गई, उन्हें अगर यह महसूस न कराया गया कि पाकिस्तान उसी तरह उनका है, जिस तरह वह मुसलमानों का है, तो यह बात थोड़े ही दिनों में पाकिस्तान और पाकिस्तान की सरकार के लिये भयानक साबित होगी. इसकी बिलकुल जरूरत न पड़ेगी कि पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिक्खों के साथ अत्याचार और अन्याय का बदला इस तरह लिया जाय कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान पर हमला कर दे. पहली बात तो यह है कि ज्यादा गिनती वाली जाति कम गिनती वाली जाति को मिटा कर न ख़ुश हो सकती है न अपने आप को ताक़तवर बना सकता है. आज तक लूट मार करके कोई जाति तरक़्क़ी नहीं कर सकी. पाकिस्तान में निर्धनों, किसानों, मजदूरों और कारीगरों व मामूली हैसियत के लोगों की तादाद सौ पीछे ९९ है और इसमें हिंदू मुसलमान की कोई क़ैद नहीं है. अगर इन निर्धनों में ग़ैर मुसलमानों को अलग करके लूट लिया गया और उनकी खेती बाड़ी और उनका कारोबार मुसलमानों में बाँट दिया गया तो मुसलमानों की हैसियत में कोई खास तरक़्क़ी नहीं होगी ज्यादा से ज्यादा यही होगा कि जिन निर्धन मुसलमानों की हैसियत २०० रुपये साल की है वह इस लूटमार से मुमकिन है २१० रुपये साल की हो जाय पर जो राष्ट्र या राज, धर्म के आधार पर या किसी कारन से कमज़ोर लोगों को सताता या मिटाता है, उसके अन्दर चोरी, बेईमानी और असभ्यता का घुन लग जाता है और फिर उस राज के लिये तरक़्क़ी करना नामुमकिन हो जाता है. पाकिस्तान के सौ पीछे २०—२५ हिन्दू अगर बुरी दशा और तबाही की हालत में वहाँ रक्खे गये

(३२१)

دی گئی، انھیں اگر یہ محسوس نہ کرایا گیا کہ پاکستان اسی طرح ان کا ہے، جس طرح وہ مسلمانوں کا ہے، تو یہ بات تھوڑے ہی دنوں میں پاکستان اور پاکستان کی سرکار کے لئے بھیانک ثابت ہوگی۔ اس کی بالکل ضرورت نہ پڑے گی کہ پاکستان میں ہندوؤں اور سکھوں کے ساتھ اتیاچار اور انیائے کا بدلہ اس طرح لیا جائے کہ ہندستان پاکستان پر حملہ کردے۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ زیادہ گنتی والی جاتی کم گنتی والی جاتی کو مٹا کر نہ خوش ہو سکتی ہے نہ اپنے آپ کو طاقت ور بنا سکتی ہے۔ آج تک لوٹ مار کرکے کوئی جاتی ترقی نہیں کر سکی۔ پاکستان میں نردھنوں، کسانوں، مزدوروں اور کاریگروں و معمولی حیثیت کے لوگوں کی تعداد سو پیچھے ۹۹ ہے اور اس میں ہندو مسلمان کی کوئی قید نہیں ہے۔ اگر ان نردھنوں میں غیر مسلمانوں کو الگ کرکے لوٹ لیا گیا اور ان کی کھیتی باڑی اور ان کا کاروبار مسلمانوں میں بانٹ دیا گیا تو مسلمانوں کی حیثیت میں کوئی خاص ترقی نہیں ہوگی۔ زیادہ سے زیادہ یہی ہوگا کہ جن نردھن مسلمانوں کی حیثیت ۲۰۰ روپیہ سال کی ہے وہ اس لوٹ مار سے ممکن ہے ۲۱۰ روپیہ سال کی ہو جائے۔ پر جو راشٹر یا راج، دھرم کے آدھار پر یا کسی کارن سے کمزور لوگوں کو ستاتا یا مٹاتا ہے، اس کے اندر چوری، بے ایمانی اور اسبھیتا کا گھن لگ جاتا ہے اور پھر اس راج کے لئے ترقی کرنا ناممکن ہو جاتا ہے۔ پاکستان کے سو پیچھے ۲۰—۲۵ ہندو اگر بری دشا اور تباہی کی حالت میں وہاں رکھے گئے

तो पाकिस्तान की सब से बड़ी 'दौलत यानी वहाँ की आबादी की शक्ति लुट जायगी या कम हो जायगी. किसी राष्ट्र और राज के लिये यह बात बड़ी भयानक है कि उस राष्ट्र के साथ या उस राज के मातहत रहने वाले लाखों करोड़ो आदमी सिर्फ दूसरा धर्म रखने के कारन, मूढ़, अनपढ़ ग़रीब और बुरी हालत मे रक्खे जायँ. किसी राज मे इन्सान की तरक़्क़ी का बँटवारा नहीं हो सकता. प्रजा के एक अंग का कमज़ोर होना सारी आबादी की निर्बलता है. दूसरो को गिरा कर अपनी तरक़्क़ी नहीं हुआ करती. इसी तरह बेइन्साफी का भी बँटवारा नामुमकिन है. पाकिस्तान के असर और एख्तियार वाले लोग अगर हिन्दुओ और सिक्खो के साथ अन्याय का व्योहार शुरू करेगे तो आख़िर मे मुसलमानो के साथ यह लोग भी वैसा ही अन्याय का व्योवहार करेगे.

(८) हम यह देख चुके हैं कि हिन्द मे पीतल, रेशम, मुरादाबादी बर्तनों का काम और कई दूसरे काम करने वाले मुसलमानो के मिटाने से किस तरह हिन्दुओ को ही नुक़सान पहुँचेगा ! अब देखिये कि पाकिस्तान मे हिन्दुओ के मिटा देने से किस प्रकार मुसलमानों को नुक़सान पहुंचा और पहुँचेगा. इन्ही दिनों जो दंगे हुए थे उनमे लाहौर में अनाज की मण्डी रखने वाले बहुत से हिन्दुओ को मार डाला गया और उनकी मण्डियाँ लुट गईं. इन मण्डियों में अनाज लाने और यहाँ से अनाज ले जाने वाले सैकड़ों, हज़ारो मुसलमान मज़दूर थे. वह सबके सब बेकार हो गये और भूकों मरने लगे. लाहौर में मुसलमान दर्ज़ियो को भी भूकों मरना पड़ा क्योंकि उनका ज्यादातर काम हिन्दुओ और सिक्खों से चलता था.

تو پاکستان کی سب سے بڑی دولت یعنی وہاں کی آبادی کی شکتی لٹ جائے گی یا کم ہو جائے گی۔ کسی راشٹر اور راج کے لئے یہ بات بڑی بھیانک ہے کہ اُس راشٹر کے ساتھ یا اُس راج کے ماتحت رہنے والے لاکھوں کروڑوں آدمی صرف دوسرا دھرم رکھنے کے کارن، موڑھ، اَن پڑھ، غریب اور بُری حالت میں رکھے جائیں۔ کسی راج میں انسان کی ترقی کا بٹوارہ نہیں ہو سکتا۔ پرجا کے ایک انگ کا کمزور ہونا ساری آبادی کی نربلتا ہے۔ دوسروں کو گرا کر اپنی ترقی نہیں ہوا کرتی۔ اسی طرح بے انصافی کا بھی بٹوارہ ناممکن ہے۔ پاکستان کے اثر اور اختیار والے لوگ اگر ہندوؤں اور سکھوں کے ساتھ انیائے کا بیوہار شروع کریں گے تو آخیر میں مسلمانوں کے ساتھ یہ لوگ بھی ویسا ہی انیائے کا بیوہار کریں گے۔

(۸) ہم یہ دیکھ چکے ہیں کہ ہند میں پیتل، ریشم، مرادآبادی برتنوں کا کام اور کئی دوسرے کام کرنے والے مسلمانوں کو مٹانے سے کس طرح ہندوؤں کو ہی نقصان پہنچے گا! اب دیکھئے کہ پاکستان میں ہندوؤں کو مٹا دینے سے کس پرکار مسلمانوں کو نقصان پہنچا اور پہنچے گا۔ انہیں دنوں جو دنگے ہوئے تھے اُن میں لاہور میں اناج کی منڈی رکھنے والے بہت سے ہندوؤں کو مار ڈالا گیا اور اُن کی منڈیاں لٹ گئیں۔ اِن منڈیوں میں اناج لانے اور یہاں سے اناج لے جانے والے سیکڑوں، ہزاروں مسلمان مزدور تھے۔ وہ سب کے سب بیکار ہو گئے اور بھوکوں مرنے لگے۔ لاہور میں مسلمان درزیوں کو بھی بھوکوں مرنا پڑا کیونکہ اُن کا زیادہ تر کام ہندوؤں اور سکھوں سے چلتا تھا۔

कपड़ों की दुकानें ज़्यादातर हिन्दुओं की थीं—वह लुट गईं और इस तरह लाहौर में दर्ज़ियों के हज़ारो घराने फ़ाक़े करने लगे. पच्छिमी पंजाब से जब हिन्दू और सिक्ख भागे तो वहाँ उर्दू किताबों और रिसालों का बिकना सौ पीछे ८० बंद हो गया क्योंकि मुसलमानो से कहीं ज़्यादा इन उर्दू किताबो और रिसालो के ख़रीदने वाले हिन्दू और सिक्ख थे. पूर्वी पंजाब और दिल्ली, जहाँ यह लोग भाग आये, वहाँ हिन्दुओ और सिक्खों ने उर्दू के छापे ख़ाने कायम किये और उर्दू पुस्तकें और पत्रिकायें निकालीं. क्या मिला मुसलमानों को ? सिवाय इसके कि पुस्तको और पत्रिकाओं और छापेख़ानों का कारोबार करने वाले हज़ारों मुसलमान घाटे मे रहे ढाके की मलमल दुनिया भर मे मशहूर है पर ढाके के जुलाहे ज़्यादातर हिन्दू हैं. उन्हें मार डालिये या मार भगाइये, पूर्वी पाकिस्तान में करोड़ो रुपये साल का घाटा हो जायगा. हज़ारों हिन्दू दुकानो और कारख़ानों में मुसलमानो का हिस्सा था और मुसलमानो की दुकानो और कारख़ानों में हिन्दुओं और सिक्खों का फ़ायदा था. हिन्दुओ और सिक्खो ने कई मुसलमान दुकानो और कारख़ानों को यह समझ कर जला दिया कि यह मुसलमानो के हैं. लेकिन बरबादी हुई मुसलमानों के साथ साथ हिन्दू और सिक्ख हिस्सेदारों की भी. मुसलमानों ने कई दुकानों को यह समझ कर जला दिया. कि हिंदू और सिक्खो को नुक़सान पहुँचे. पर इन दुकानो और कारख़ानो के मुसलमान हिस्सेदार भी बरबाद हो गये. लूट मार की आँधी से जो बरबादियाँ होती हैं वह एक धर्म वालों तक सीमित नहीं रक्खी जा सकती, चाहे यह लूट मार हिन्दुस्तान मे हो यापाकिस्तान में. फिर लूट मार से जिन

کپڑوں کی دکانیں زیادہ تر ہندوؤں کی تھیں — وہ لٹ گئیں اور اس طرح لاہور میں درزیوں کے ہزاروں گھرانے فاقے کرنے لگے۔ پچھمی پنجاب سے جب ہندو اور سکھ بھاگے تو وہاں اردو کتابوں اور رسالوں کا بکنا سو پیچھے ۸۰ بند ہو گیا کیونکہ مسلمانوں سے کہیں زیادہ ان اردو کتابوں اور رسالوں کو خریدنے والے ہندو اور سکھ تھے۔ پوربی پنجاب اور دلی، جہاں یہ لوگ بھاگ آئے، وہاں ہندوؤں اور سکھوں نے اردو کے چھاپے خانے قائم کئے اور اردو پستکیں اور پتریکائیں نکالیں۔ کیا ملا مسلمانوں کو؟ سوائے اس کے کہ پستکوں اور پتریکاؤں اور چھاپے خانوں کا کاروبار کرنے والے ہزاروں مسلمان گھاٹے میں رہے۔ ڈھاکے کی ململ دنیا بھر میں مشہور ہے پر ڈھاکے کے جولاہے زیادہ تر ہندو ہیں۔ انھیں مار ڈالئے یا مار بھگائیے، پوربی پاکستان میں کروڑوں روپیہ سال کا گھاٹا ہو جائے گا۔ ہزاروں ہندو دکانوں اور کارخانوں میں مسلمانوں کا حصہ تھا اور مسلمانوں کی دکانوں اور کارخانوں میں ہندوؤں اور سکھوں کا فائدہ تھا۔ ہندوؤں اور سکھوں نے کئی مسلمان دکانوں اور کارخانوں کو یہ سمجھ کر جلا دیا کہ یہ مسلمانوں کے ہیں۔ لیکن بربادی ہوئی مسلمانوں کے ساتھ ساتھ ہندو اور سکھ حصہ داروں کی بھی۔ مسلمانوں نے کئی دکانوں کو یہ سمجھ کر جلا دیا کہ ہندو اور سکھوں کو نقصان پہنچے۔ پر ان دکانوں اور کارخانوں کے مسلمان حصے دار بھی برباد ہو گئے۔ لوٹ مار کی آندھی سے جو بربادیاں ہوتی ہیں وہ ایک دھرم والوں تک سیمت نہیں رکھی جا سکتیں، چاہے یہ ہندستان میں ہو یا پاکستان میں، پھر لوٹ مار سے جن

تو پاکستان کی سب سے بڑی دولت یعنی

कमीने लोगों को कुछ धन मिल जाता है, वह बहुत जल्द खतम हो जाता है, क्योंकि लुटेरा थोड़े से धन को बड़ा धन बनाना नहीं जानता. वह उसे बहुत जल्द खा पीकर बराबर कर देता है. इस तरह एक जरायम पेशा समाज के अंदर पैदा हो जाता है जो अपने सहधर्मियों के लिये भी भयानक साबित होता है. पाकिस्तान मे जिन मुसलमान लुटेरो ने पहले हिन्दुओं और सिक्खों को लूटा था, उन्होंने बाद में मुसलमानों ही को लूटना शुरू कर दिया.

(९) जब देश में मुसलमानों का राज था, उस समय धन सम्पत्ति जागीर, मनसब और ज़्यादातर छोटी बड़ी नौकरियाँ मुसलमानों के हाथो में थीं, लेकिन फिर भी जैसा हम पहले बता चुके हैं, एक सौ मुसलमानों में इक्का दुक्का को छोड़ कर बाकी सब मुसलमानो की हालत उतनी ही अच्छी या उतनी ही बुरी थी, जो साधारन हिन्दुओं की थी. साधारन मुसलमानो की क़िस्मत मे इस्लामी हुकूमत के जमाने में भी सूखी रोटी, आधा पेट खाना और गन्दगी या ग़रीबी के अलावा कुछ न था. अब हिन्द मे अगरचे हिन्दुओं को उनकी तादाद के अनुसार नोकरियाँ और ओहदे मिलें तो इसमें न कोई अन्याय है न मुसलमानो के साथ कोई ज्यादती. लेकिन अब वह युग नहीं रहा कि खुशहाली, तन्दुरुस्ती, तालीम या तरक़्क़ी के लिये जिन्दगी में पनपने और लहलहाने के मौके सिर्फ उन मुट्ठी भर आदमियों को मिले, जो सरकारी अफसर हैं या जो बड़े बड़े कारोबार करते हैं. यह युग किसानो, मजदूरों, कारीगरों और साधारन आदमियो के उभरने और आगे बढ़ने का है फिर

(२३६)

کمینے لوگوں کو کچھ دھن مل جاتا ہے، وہ بہت جلد ختم ہو جاتا ہے، کیوں کہ لٹیرا تھوڑے سے دھن کو بڑا دھن بنانا نہیں جانتا۔ وہ اُسے بہت جلد کھا پی کر برابر کر دیتا ہے۔ اس طرح ایک جرائم پیشہ سماج کے اندر پیدا ہو جاتا ہے جو اپنے سہدھرمیوں کے لئے بھی بھیانک ثابت ہوتا ہے۔ پاکستان میں جن مسلمان لٹیروں نے پہلے ہندوؤں اور سکھوں کو لوٹا تھا، انہوں نے بعد میں مسلمانوں ہی کو لوٹنا شروع کر دیا۔

(۹) جب دیش میں مسلمانوں کا راج تھا، اُس سمے دھن سمپتی جاگیر، منصب اور زیادہ تر چھوٹی بڑی نوکریاں مسلمانوں کے ہاتھوں میں تھیں، لیکن پھر بھی جیسا ہم پہلے بتا چکے ہیں، ایک سو مسلمانوں میں اکا دکا کو چھوڑ کر باقی سب مسلمانوں کی حالت اتنی ہی اچھی یا اتنی ہی بری تھی، جو سادھارن ہندوؤں کی تھی۔ سادھارن مسلمانوں کی قسمت میں اسلامی حکومت کے زمانے میں بھی سوکھی روٹی، آدھا پیٹ کھانا اور گندگی یا غریبی کے علاوہ کچھ نہ تھا۔ اب ہند میں اگرچہ ہندوؤں کو اُن کی تعداد کے انوسار نوکریاں اور عہدے ملیں تو اس میں نہ کوئی انیائے ہے نہ مسلمانوں کے ساتھ کوئی زیادتی۔ لیکن اب وہ یگ نہیں رہا کہ خوشحالی، تندرستی، تعلیم یا ترقی کے لئے زندگی میں پنپنے اور لہلہانے کے موقع صرف اُن مٹھی بھر آدمیوں کو ملیں، جو سرکاری افسر ہیں یا جو بڑے بڑے کاروبار کرتے ہیں۔ یہ یگ کسانوں، مزدوروں کاریگروں اور سادھارن آدمیوں کے ابھرنے اور آگے بڑھنے کا ہے۔ پھر

अच्छी नौकरियाँ एक हज़ार थीं, तो अब अच्छी नौकरियाँ ४० और ५० हज़ार की तादाद तक पहुँचेंगी. इसी लिये अगर इस्लामी राज में एक हज़ार मुसलमान बड़े बड़े अफ़सर थे, तो अब चार-पाँच हज़ार मुसलमान बड़े बड़े अफ़सर होंगे और ४०-४५ हज़ार हिन्दू बड़े या अच्छे पदों पर होंगे। व्योपार और नौकरियों की तादाद अब बहुत बढ़ गई है और बढ़ती जायगी और मुसलमानों के जीवन की हर कमी पूरी हो जायगी. वह युग अब आ चुका है जब सरकारी नौकरियाँ और ख़िताब शोभा बढ़ाने और धन इकट्ठा करने के लिये ज़रूरी न समझे जायँ. हर हिन्दू मुसलमान अपनी लियाक़त के अनुसार तरक़्क़ी कर सकेगा. आज से ५० बरस बाद का हिन्दुस्तान ऐसा देश होगा, जिसमें बड़ी नौकरियों से लेकर मुसलमान मज़दूर और मुसलमान किसान तक ऐसी खुशहाल और तरक़्क़ी याफ़्ता ज़िन्दगी बिताते हुए दिखाई देंगे जैसा जीवन इस्लाम के सुनहरे युग में भी मुसलमानों ने न बिताया था और यही हाल हिन्दुओं का भी होगा. स्वार्थ का टकराव होने ही नहीं पायगा. एक का अधिकार छीन कर दूसरे को दे देने का समय नहीं रहा. हमें सम्पत्ति, सुख और धन की पैदावार और बटवारे का निराश करने वाला ख़याल नहीं करना चाहिये. यह चीज़ें उगती हुई, बढ़ती हुई और चलती फिरती चीज़ें हैं. धन कोई रोड़ा पत्थर नहीं है, न कोई मुर्दा और सीमित चीज़ है जो मुसलमानों से छीन कर हिन्दुओं को दे दिया जाय या हिन्दुओं से छीन कर मुसलमानों को दे दिया जाय. वह दिन गये कि सौ पीछे ९९ इंसान सौ पीछे एक उन आदमियों को ख़ुदा समझते थे जो राजा, सेनापति, मंत्री,

اچھی نوکریاں ایک ہزار تھیں، تو اب اچھی نوکریاں ۴۰ اور ۵۰ ہزار کی تعداد تک پہنچیں گی۔ اسی لئے اگر اسلامی راج میں ایک ہزار مسلمان بڑے بڑے افسر تھے، تو اب چار یا پانچ ہزار مسلمان بڑے بڑے افسر ہوں گے اور ۴۰-۴۵ ہزار ہندو بڑے یا اچھے پدوں پر ہوں گے! بیوپار اور نوکریوں کی تعداد اب بہت بڑھ گئی ہے اور بڑھتی جائے گی اور مسلمانوں کے جیون کی ہر کمی پوری ہو جائے گی۔ وہ یگ اب آچکا ہے جب سرکاری نوکریاں اور خطاب شوبھا بڑھانے اور دھن اکٹھا کرنے کے لئے ضروری نہ سمجھیں جائیں۔ ہر ہندو مسلمان اپنی لیاقت کے انوسار ترقی کر سکے گا۔ آج سے ۵۰ برس بعد کا ہندستان ایسا دیش ہوگا جس میں بڑی نوکریوں سے لے کر مسلمان مزدور اور مسلمان کسان تک ایسی خوشحال اور ترقی یافتہ زندگی بتاتے ہوئے دکھائی دیں گے جیسا جیون اسلام کے سنہرے یگ میں بھی مسلمانوں نے نہ بتایا تھا اور یہی حال ہندوؤں کا بھی ہوگا۔ سوارتھ کا ٹکراؤ ہونے ہی نہ پائے گا۔ ایک کا ادھیکار چھین کر دوسرے کو دیدینے کا سمے نہیں رہا۔ ہمیں سمپتی، سکھ اور دھن کی پیداوار اور بٹوارے کا نراش کرنے والا خیال نہیں کرنا چاہئے۔ یہ چیزیں اگتی ہوئی، بڑھتی ہوئی اور چلتی پھرتی چیزیں ہیں۔ دھن کوئی روڑا پتھر نہیں ہے، نہ کوئی مُردہ اور سیمت چیز ہے، جو مسلمانوں سے چھین کر ہندوؤں کو دیدیا جائے یا ہندوؤں سے چھین کر مسلمانوں کو دیدیا جائے۔ وہ دن گئے کہ سو پیچھے ۹۹ انسان سو پیچھے ایک اُن آدمیوں کو خدا سمجھتے تھے جو راجا، سیناپتی، منتری،

जागीरदार, महाजन या बड़े बड़े ओहदेदार होते थे. अब हर घर में वह सुख और खुशहाली भर जायगी जिसे पुराने और आजकल के रईस और महाजन और बड़े बड़े अधिकारी लालचभरी निगाहों से देखेंगे. जमींदारी. ताल्लुकेदारी. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों जगहों से मिटाई जा रही है. महाजनों और पूँजीपतियों की मनमानी नफ़ाखोरी को रोका जा रहा है. बड़े बड़े कारोबार सरकार के हाथ में आ जाने वाले हैं. आज न सही दस बरस बाद सही. ऐसी हालत मे हिन्दू मुसलमान का सवाल ही कहाँ रह जाता है. दोनों ही को खुशहाल होने और अपनी अपनी संस्कृति की तरक्क़ी करने का मौक़ा ग़ैर फिरका वाराना और ग़ैर मजहबी प्रजा राज मे हासिल होगा.

जिस तरह हिन्दुओं और सिक्खो के दिर्धन हो जाने से मुसलमान धनी नहीं बन सकते न मुसलमानों को निर्धन बना देने से हिन्दू और सिक्ख धनी हो सकते है, उसी तरह हिन्दुओ को संस्कृति नष्ट हो जाय या बेजान होकर रह जाय या यूरोप और अमरीका की ग़ैर मुस्लिमो की संस्कृति मिट जाय या चीन और जापान की संस्कृति नष्ट हो जाय तो मुस्लिम संस्कृति हरगिज़ जीती न रहेगी. उसी प्रकार यदि हिन्द, पाकिस्तान या दुनिया भर के मुसलमान ग़ैर मोहज़्ज़ब हो जायँ, और अपनी संस्कृति खो बैठें तो ग़ैर-मुस्लिम संस्कृति को भी बड़ा नुक़सान पहुँचेगा. यह सोचना ग़लत है कि हिन्दू धर्म और संस्कृति या दूसरे स्थानों के ग़ैर-मुस्लिम धर्म और संस्कृति के कमज़ोर पड़ने से सारी दुनिया मुसलमान हो जायगी

جاگیردار، مہاجن یا بڑے بڑے عہدے دار ہوتے تھے. اب ہر گھر میں وہ سکھ اور خوشحالی بھر جائے گی جسے پرانے اور آجکل کے رئیس اور مہاجن اور بڑے بڑے ادھیکاری لالچ بھری نگاہوں سے دیکھیں گے. زمینداری، تعلقداری، ہندستان اور پاکستان دونوں جگہوں سے مٹائی جا رہی ہے. مہاجنوں اور پونجی پتیوں کی من مانی نفع خوری کو روکا جا رہا ہے. بڑے بڑے کاروبار سرکار کے ہاتھ میں آجانے والے ہیں، آج نہ سہی دس برس بعد سہی. ایسی حالت میں ہندو مسلمان کا سوال ہی کہاں رہ جاتا ہے. دونوں ہی کے خوشحال ہونے اور اپنی اپنی سنسکرتی کی ترقی کرنے کا موقع غیر فرقہ وارانہ اور غیر مذہبی پرجا راج میں حاصل ہوگا.

جس طرح ہندوؤں اور سکھوں کے نردھن ہو جانے سے مسلمان دھنی نہیں بن سکتے نہ مسلمانوں کو نردھن بنا دینے سے ہندو اور سکھ دھنی ہو سکتے ہیں، اسی طرح ہندوؤں کی سنسکرتی نشٹ ہو جائے یا بیجان ہو کر رہ جائے یا یورپ اور امریکہ کی غیر مسلموں کی سنسکرتی مٹ جائے یا چین اور جاپان کی سنسکرتی نشٹ ہو جائے تو مسلم سنسکرتی ہرگز جیتی نہ رہے گی. اسی پرکار یدی ہند، پاکستان یا دنیا بھر کے مسلمان غیر مہذب ہو جائیں، اور اپنی سنسکرتی کھو بیٹھیں تو غیر مسلم سنسکرتی کو بھی بڑا نقصان پہونچے گا. یہ سوچنا غلط ہے کہ ہندو دھرم اور سنسکرتی یا دوسرے ستھانوں کے غیر مسلم دھرم اور سنسکرتی کے کمزور پڑنے سے ساری دنیا مسلمان ہو جائیگی،

या इस्लाम के प्रचार का मौका हाथ आयगा. ग़ैर-मुस्लिम संस्कृतियो की दुर्बलता इस्लाम को मिटा देगी. संसार की सौ पीछे अस्सी पचासी आबादी ग़ैर-मुस्लिम तमद्दुनी तरक्की से जो नैतिक और बौद्धिक उन्नति करती है अगर उसका यह फैलाव रुक जाय तो संसार के सौ पीछे १५ मुसलमानों के संभाले, इन्सानियत का गिरता हुआ घर सँभल न सकेगा. बात यह है कि वह युग आ चुका है जब कि संसार की संस्कृति और ससार की सभ्यता साम्प्रदायिकता और किसी खास धर्म से मुक्त होकर एक नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संस्कृति की नीव रखेगी. इस सस्कृति मे इस्लाम, हिन्दू धर्म. सिक्ख धर्म, ईसाइयत और संसार के सभी आय धर्मों का और संस्कृतियो का इत्र खिचकर आ जायगा. यह बात किसी भी धर्म के लिये मौत की खबर न होगी बल्कि जिन्दगी का पैग़ाम होगी. यह सच है कि लोग युगों तक अपने आपको हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, ईसाई, पारसी, सिक्ख, आस्तिक, नास्तिक और दूसरे दूसरे नामो से पुकारते रहेगे पर ढलते जायँगे सभी इस नई तहज़ीब के साँचे मे. इस्लाम और दुनिया के आम बड़े बड़े धर्म जो सदेश लेकर आये थे वह किसी न किसी रूप मे बहुत हद तक पूरे हो चुके हैं. इस्लाम के पैगम्बर के सदेश और कोशिशो के खिलाफ जो शक्तियाँ लड़ती थी अब वह मिट चुकी है. लोग बिना कलमा पढ़े हुए, या बिना शरीयत के मुताबिक चले हुए या इस्लाम का बाहरी जामा पहने बिना उस शराफत और तहज़ीब के नुक्त-ए-नजर को मान चुके हैं जिसके लिये इस्लाम ने जन्म लिया था. इस्लाम हिन्दू धर्म या ईसाइयत या

یا اسلام کے پرچار کا موقع ہاتھ آئے گا. غیر مسلم سنسکرتیوں کی دُربلتا اسلام کو مٹا دے گی. سنسار کی سو پیچھے اسی پچاسی آبادی غیر مسلم تمدنی ترقی سے جو نیتک اور بودھک اُنتی کرتی ہے اگر اس کا یہ پھیلاؤ رُک جائے تو سنسار کے سو پیچھے ۱۵ مسلمانوں کے سنبھالے، انسانیت کا گرتا ہوا گھر سنبھل نہ سکے گا. بات یہ ہے کہ وہ یگ آچکا ہے جب کہ سنسار کی سنسکرتی اور سنسار کی سامپردائکتا اور کسی خاص دھرم سے مکت ہو کر ایک نیتک، بودھک اور ادھیاتمک سنسکرتی کی نیو رکھے گی. اس سنسکرتی میں اسلام، ہندو دھرم، سکھ دھرم، عیسائیت اور سنسار کے سبھی آریہ دھرموں کا اور سنسکرتیوں کا [illegible] کھنچ کر آجائے گا. یہ بات کسی بھی دھرم کے لئے موت کی خبر نہ ہوگی بلکہ زندگی کا پیغام ہوگی. یہ سچ ہے کہ لوگ یگوں تک اپنے آپ کو ہندو، مسلمان، بودھ، عیسائی، پارسی، سکھ، آستک، ناستک اور دوسرے دوسرے ناموں سے پکارتے رہیں گے پر ڈھلتے جائیں گے سبھی اس نئی تہذیب کے سانچے میں. اسلام اور دنیا کے عام بڑے بڑے دھرم جو سندیش لے کر آئے تھے وہ کسی نہ کسی روپ میں بہت حد تک پورے ہو چکے ہیں. اسلام کے پیغمبر کے سندیش اور کوششوں کے خلاف جو شکتیاں لڑتی تھیں اب وہ مٹ چکی ہیں. لوگ بنا کلمہ پڑھے ہوئے، یا بنا شریعت کے مطابق چلے ہوئے یا اسلام کا باہری جامہ پہنے بنا اس شرافت اور تہذیب کے نقطۂ نظر کو مان چکے ہیں جس کے لئے اسلام نے جنم لیا تھا. اسلام ہندو دھرم یا عیسائیت یا

नास्तिकता के खिलाफ 'जिहाद' नहीं था बल्कि ग़ैर मुहज्ज़ब ज़िन्दगी की मुख़ालफ़त था. इस्लाम ने यह कभी नहीं कहा था कि कलमा पढ़नेवाले मुसलमानों के अलावा दुनिया की दुसरी सब जातियाँ ख़राब या असभ्य है और वह इस्लाम को समझने मे असमर्थ रहेंगी. यही बात मुसलमानों मे वह लोग नहीं समझते जिनकी निगाह तंग है, उन्हे तो इसकी पड़ी है कि दुनिया के ढाई अरब आदमी चाहे जैसा जीवन बितायें लेकिन कहे अपने आप को मुसलमान. इस्लाम संसार मे इसलिये हरगिज़ नहीं आया था कि संसार के सौ फीसदी इन्सानों से या दुनिया के ज्यादा से ज्यादा इन्सानों से यह कहलाये कि हम कलमा पढ़ने वाले मुसलमान हैं. इस्लाम आया था इसलिये कि दुनिया के सौ फीसदी इन्सान यह कहें कि हम भले और नेक हैं और हमे जाति, धर्म और देश का फर्क साचे बग़ैर इन्सानियत से प्रेम है—

"हम मोवहिद है, हमारा केश है तरके रसूम
मिल्लते जब मिट गई. अजज़ाए ईमाँ हो गई"

—ग़ालिब

और इन जातियों के मिटने पर यह हरगिज़ जरूरी नहीं है कि जो एक मानव-समाज संसार मे बन जाय, वह इस्लामी जाति ही कहलाये या हिन्दू जाति कहलाये. गालिब के शैर मे ईमान जो शब्द आया है उसका मतलब यह नहीं है कि ईमान वही चीज़ है जिसे मुसलमान ईमान समझते है और जिसे ग़ैर-मुस्लिम समझ ही नहीं सकते. जिस सभ्यता की नीव इस्लाम ने डाली है या हिंदू धर्म ने डाली है या दुनिया के किसी धर्म या बड़े आंदोलन ने डाली है

ناستکتا کے خلاف 'جہاد' نہیں تھا بلکہ غیر مہذب زندگی کی مخالفت تھا۔ اسلام نے یہ کبھی نہیں کہا تھا کہ کلمہ پڑھنے والے مسلمانوں کے علاوہ دنیا کی دوسری سب جاتیاں خراب یا اسبھیہ ہیں اور وہ اسلام کو سمجھنے میں اسمرتھ رہیں گی۔ یہی بات مسلمانوں میں وہ لوگ نہیں سمجھتے جن کی نگاہ تنگ ہے! انھیں تو اس کی پڑی ہے کہ دنیا کی ڈھائی ارب آبادی چاہے جیسا جیون بتائے۔ لیکن کہے اپنے آپ کو مسلمان۔ اسلام سنسار میں اس لئے ہرگز نہیں آیا تھا کہ سنسار کے سو فیصدی انسانوں سے یا دنیا کے زیادہ سے زیادہ انسانوں سے یہ کہلائے کہ ہم کلمہ پڑھنے والے مسلمان ہیں اسلام آیا تھا اس لئے کہ دنیا کے سو فی صدی انسان یہ کہیں کہ ہم بھلے اور نیک ہیں اور ہمیں جاتی، دھرم اور دیش کا فرق سوچے بغیر انسانیت سے پریم ہے —

"ہم موحد ہیں، ہمارا کیش ہے ترک رسوم
ملتیں جب مٹ گئیں، اجزائے ایماں ہو گئیں"

غالب

اور ان جاتیوں کے مٹنے پر یہ ہرگز ضروری نہیں ہے کہ جو ایک مانو-سماج سنسار میں بن جائے، وہ اسلامی جاتی ہی کہلائے یا ہندو جاتی کہلائے۔ غالب کے شعر میں ایمان جو شبد آیا ہے اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ ایمان وہی چیز ہے جسے مسلمان ایمان سمجھتے ہیں اور جسے غیر مسلم سمجھ ہی نہیں سکتے۔ جس سبھیتا کی نیو اسلام نے ڈالی ہے یا ہندو دھرم نے ڈالی ہے یا دنیا کے کسی دھرم یا بڑے آندولن نے ڈالی ہے

उसमें इस तहजीबयाफ्ता इंसान के लिये, कलमा पढ़ने की कोई कैद
नहीं. जब यहाँ अंग्रेजी राज था तो यहाँ की खेती बाड़ी, कारीगरी
और मशीनी कारखाने अधमरी हालत में जी रहे थे. हमारे जीवन
के आधार मिट रहे थे ; हमारी नसों मे तन्दुरुस्त खून का संचार
नहीं था; हमारे जीवन की चमक और गर्मी गायब हो गई थी. यह
डेढ़ सौ साल का जमाना , वह जमाना था जिसमे संसार भर के
आजाद देश कहाँ से कहाँ पहुँच गये. हमारा ध्यान बड़ी बड़ी बातों
की ओर जाता ही नहीं था. राष्ट्र और देश के बारे में ठीक तरह से
सोच विचार करना इक्का दुक्का लोगों को छोड़ कर हमारी जाति के
लिये,यहाँ तक कि पढ़े लिखे विद्वानो के लिये भी कठिन हो गया था.
आम तौर पर हमारे विचार छोटी छोटी बातों की ओर जाते थे—
गाय और बाजा, मुहर्रम और दशहरा, ईद और होली, कुछ छोटी
बड़ी नौकरियों मे सौ पीछे कितने हिंदू हैं और सौ पीछे कितने
मुसलमान ? हिंदी उर्दू के झगड़े और बेकार धार्मिक वाद-विवाद
जिनसे तू तू , मैं मैं, के अलावा और कुछ न होता था. इन्हीं छोटी
छोटी बातो में हम इस तरह उलझ कर रह गये थे जैसे मकड़ी के
जाले मे मक्खी उलझ जाती है. इन्हीं बातो के लिये हम आपस में
झगड़े करते थे, खून खराबा करते थे और लूटमार करते थे. अगर
कहीं इन सड़ी गली बातो मे अंग्रेजी सरकार ने हिंदू का साथ दिया
तो हम उसे हिंदू जाति और हिंदू संस्कृति या हिंदू धर्म की
जीत समझते थे, अगर मुसलमान का साथ दे दिया तो उसे
मुसलमानों और इस्लाम व इस्लामी—तहजीब की जीत सम-
झते थे. हम न यह सोचते थे और न यह सोच पाते थे कि इन बातों

اس میں اس تہذیب یافتہ انسان کے لئے، کلمہ پڑھنے کی کوئی قید نہیں.
جب یہاں انگریزی راج تھا تو یہاں کی کھیتی باڑی، کاریگری اور مشینی
کارخانے ادھ مری حالت میں جی رہے تھے. ہمارے جیون کے آدھار
مٹ رہے تھے! ہماری نسوں میں تندرست خون کا سنچار نہیں تھا!
ہمارے جیون کی چمک اور گرمی غائب ہو گئی تھی. یہ ڈیڑھ سو سال
کا زمانہ، وہ زمانہ تھا جس میں سنسار بھر کے آزاد دیش کہاں سے
کہاں پہنچ گئے. ہمارا دھیان بڑی بڑی باتوں کی اور جاتا ہی نہیں
تھا. راشٹر اور دیش کے بارے میں ٹھیک طرح سے سوچ وچار کرنا
اکا دکا لوگوں کو چھوڑ کر ہماری جاتی کے لئے، یہاں تک کہ پڑھے لکھے
ودوانوں کے لئے بھی کٹھن ہو گیا تھا. عام طور پر ہمارے وچار چھوٹی
چھوٹی باتوں کی اور جاتے تھے — گائے اور باجا، محرم اور دشہرہ، عید اور
ہولی، کچھ چھوٹی بڑی نوکریوں میں سو پیچھے کتنے ہندو ہیں اور سو پیچھے کتنے
مسلمان؟ ہندی اردو کے جھگڑے اور بیکار دھارمک واد وواد جن سے
تو تو، میں میں کے علاوہ اور کچھ نہ ہوتا تھا. انھیں چھوٹی چھوٹی باتوں میں
ہم اس طرح الجھ کر رہ گئے تھے جیسے مکڑی کے جالے میں مکھی الجھ جاتی ہے.
انھیں باتوں کے لئے ہم آپس میں جھگڑے کرتے تھے! خون خرابہ کرتے
تھے اور لوٹ مار کرتے تھے. اگر کہیں ان سڑی گلی باتوں میں انگریزی
سرکار نے ہندو کا ساتھ دیا تو ہم اسے ہندو جاتی اور ہندو سنسکرتی
یا ہندو دھرم کی جیت سمجھتے تھے! اگر مسلمان کا ساتھ دے دیا تو اسے
مسلمانوں اور اسلام و اسلامی تہذیب کی جیت سمجھتے تھے
ہم نہ یہ سوچتے تھے اور نہ یہ سوچ پاتے تھے کہ ان باتوں

में जीतना किसी को कोई फायदा नहीं पहुँचाता. करोड़ों हिंदू और करोड़ों मुसलमान भूके अनपढ़ और दुखी थे और इन बातों में हिंदू या मुसलमानो की जीत, जेहालत. अज्ञान, निर्धनता, बेकारी, रोग और जीवन की अनेक कठिनाइयाँ दूर नहीं कर सकती थीं. देश तड़प तड़प कर मर रहा था. अंग्रेज़ी राज की सबसे भयानक बात यही थी कि हम अपने असली दुश्मन को न पहचानें और ग़लत फ़हमी फैलाने वाली बातो मे अपनी भलाई का ख्वाब देखें. आज हम हिंदू मुसलमान आज़ाद होकर भी अगर ग़ुलामी के ख़याल और भाव रखेंगे तो हमारी आज़ादी हमे ले डूबेगी. राष्ट्र ग़लत विचारो और भावो के कारन मिटते हैं—दूसरी जातियो के हाथों नहीं मिटते. सच्चाई की रोशनी मे अगर हम सोचें तो यह बात साफ़ हो जायगी कि यह सवाल उठता ही नहीं कि इस देश मे हिंदू बड़ा या मुसलमान बड़ा, हिंदू राज है या इस्लामी राज है, हिंदुओं की जीत हुई या मुसलमानो की जीत हुई. सारे समाज मे छोटे बड़े हज़ारों काम है. हज़ारो ओहदे हैं. सवाल हिंदू मुसलमान का नहीं, सवाल तो यह है कि हर मुसलमान को और हर हिंदू को सारे समाज की ओर से और राज की ओर से खाने पीने, पढ़ने लिखने और जवान होकर अपनी हैसियत और लियाक़त के अनुसार पेशा अख्तियार करने, नौकरी और ओहदा पाने का अच्छे से अच्छा इन्तज़ाम है या नहीं. जैसे प्रकृति या क़ुदरत संसार भर में जितने पुरुष पैदा करती है क़रीब क़रीब उतनी ही स्त्रियाँ भी पैदा करती है और आदमी व औरतों में इस बात की लाग डाट नहीं होती कि संसार मे ज्यादा तादाद में मर्द रहें या औरतें. इसी तरह

میں جیتنا کسی کو کوئی فائدہ نہیں پہنچاتا۔ کروڑوں ہندو اور کروڑوں مسلمان بھوکے، اَن پڑھ اور دُکھی تھے اور ان باتوں میں ہندو یا مسلمانوں کی جیت۔ جہالت، اگیان، نردھنتا، بیکاری، روگ اور جیون کی انیک کٹھنائیاں دُور نہیں کر سکتی تھی۔ دیش تڑپ تڑپ کر مر رہا تھا۔ انگریزی راج کی سب سے بھیانک بات یہی تھی کہ ہم اپنے اصلی دشمن کو نہ پہچانیں اور غلط فہمی پھیلانے والی باتوں میں اپنی بھلائی کا خواب دیکھیں۔ آج ہم ہندو مسلمان آزاد ہو کر بھی اگر غلامی کے خیال اور بھاؤ رکھیں گے تو ہماری آزادی ہمیں لے ڈوبے گی۔ راشٹر غلط وچاروں اور بھاؤں کے کارن مٹتے ہیں۔ دوسری جاتیوں کے ہاتھوں نہیں مٹتے۔ سچائی کی روشنی میں اگر ہم سوچیں تو یہ بات صاف ہو جائے گی کہ یہ سوال اُٹھتا ہی نہیں کہ اس دیش میں ہندو بڑا یا مسلمان بڑا؛ ہندو راج ہے یا اسلامی راج ہے؛ ہندوؤں کی جیت ہوئی یا مسلمانوں کی جیت ہوئی۔ سارے سماج میں چھوٹے بڑے ہزاروں کام ہیں۔ ہزاروں عہدے ہیں۔ سوال ہندو مسلمان کا نہیں، سوال تو یہ ہے کہ ہر مسلمان کو اور ہر ہندو کو سارے سماج کی اُور سے اور راج کی اُور سے کھانے پینے، پڑھنے لکھنے، اور جوان ہو کر اپنی حیثیت اور لیاقت کے انوسار پیشہ اختیار کرنے، نوکری اور عہدہ پانے کا اچھے سے اچھا انتظام ہے یا نہیں۔ جیسے پرکرتی یا قدرت سنسار بھر میں جتنے پُرش پیدا کرتی ہے قریب قریب اتنی ہی استریاں بھی پیدا کرتی ہے اور آدمی و عورتوں میں اس بات کی لاگ ڈاٹ نہیں ہوتی کہ سنسار میں زیادہ تعداد میں مرد رہیں یا عورتیں۔ اسی طرح

प्रजा राज मे और समझदार और प्रगतिशील समाज मे, यह सवाल पैदा न होगा कि बड़ी बड़ी नौकरियाँ ज्यादातर हिन्दू पायें या मुसलमान. बड़े बड़े व्योपार, अधिकार और बड़ी बड़ी जगहे हिन्दुओं को मिलें या मुसलमानो को. तहज़ीब याफ्ता हिन्द मे इस बात का इन्तज़ाम होगा कि मुसलमानो और हिंदुओ को बचपन मे अच्छी से अच्छी तालीम दी जाय और यह तालीम अमली हो, जिसका सम्बन्ध उद्योग धंधो से हो ताकि हर बच्चे मे काम करने की लियाक़त पैदा हो. इस शिक्षा में धर्म और साम्प्रदायिकता के लिये कोई स्थान न हो बल्कि यह शिक्षा उसी भावना से दी जाय जैसे कि साइन्स और कला की शिक्षा दी जाती है, जो ऊँची शायरी की भावना होती है या जो उद्योग धन्धो मे भावना पाई जाती है. यह भावना धम और साम्प्रदायिकता से कोसो दूर है इस तरह अच्छी तरह लिख पढ़कर ही हर हिंदू और हर मुसलमान बच्चा जब जवान हो तो अपनी लियाक़त के मुताबिक बड़ी से बड़ी जगह भी पाये और मामूली से मामूली जगह पाकर भी उससे ज्यादा से ज्यादा फ़ायदा उठाये. अगर इसी बात पर मुसलमान बच्चो को तालीम पाने के पूरे मौक़े मिले और इनमे से बड़े और जिम्मेदारी के ओहदो के लायक अगर दो हज़ार मुसलमान बच्चे तैयार हो गये तो यह दो हज़ार मुसलमान बड़े पद पायेंगे. अगर दस लाख हिंदू बच्चो को वही मौका मिले और मान लिया जाय कि उनमे दो हज़ार से कम बच्चे बड़े पदो के काबिल निकले तो हिंदुओ के ज्यादा गिनती मे होते हुए भी मुसलमानो के मुक़ाबले मे इन्हे नौकरियाँ कम गिनती मे मिलेंगी. पर दिन रात बड़े बड़े पदों और बड़ी बड़ी नौकरियो के लिये

پرجا راج میں اور سمجھدار اور پرگتی شیل سماج میں، یہ سوال پیدا نہ ہوگا کہ بڑی بڑی نوکریاں زیادہ تر ہندو پائیں یا مسلمان، بڑے بڑے بیوپار، ادھیکار اور بڑی بڑی جگہیں ہندوؤں کو ملیں یا مسلمانوں کو۔ تہذیب یافتہ ہند میں اس بات کا انتظام ہوگا کہ مسلمانوں اور ہندوؤں کو بچپن میں اچھی سے اچھی تعلیم دی جائے اور یہ تعلیم عملی ہو، جس کا سمبندھ ادیوگ دھندوں سے ہو تاکہ ہر بچے میں کام کرنے کی لیاقت پیدا ہو۔ اس شکشا میں دھرم اور سامپردائکتا کے لئے کوئی استھان نہ ہو بلکہ شکشا اسی بھاؤنا سے دی جائے جیسے کہ سائنس اور کلا کی شکشا دی جاتی ہے، جو اونچی شاعری کی بھاؤنا ہوتی ہے یا جو ادیوگ دھندوں میں بھاؤنا پائی جاتی ہے۔ یہ بھاؤنا دھرم اور سامپردائکتا سے کوسوں دور ہے۔ اس طرح اچھی طرح لکھ پڑھ کر ہر ہندو اور ہر مسلمان بچہ جب جوان ہو تو اپنی لیاقت کے مطابق بڑی سے بڑی جگہ بھی پائے اور معمولی سے معمولی جگہ پاکر بھی اس سے زیادہ سے زیادہ فائدہ اٹھائے۔ اگر اسی بات پر مسلمان بچوں کو تعلیم پانے کے پورے موقعے ملیں اور ان میں سے بڑے اور ذمہ داری کے عہدوں کے لائق اگر دو ہزار مسلمان بچے تیار ہو گئے تو یہ دو ہزار مسلمان بڑے پد پائیں گے۔ اگر دس لاکھ ہندو بچوں کو وہی موقع ملے اور مان لیا جائے کہ ان میں دو ہزار سے کم بچے بڑے پدوں کے قابل نکلے تو ہندوؤں کے زیادہ گنتی میں ہوتے ہوئے بھی مسلمانوں کے مقابلے میں انھیں نوکریاں کم گنتی میں ملیں گی۔ پر دن رات بڑے بڑے پدوں اور بڑی بڑی نوکریوں کے لئے

(۸۸۸)

ललचाना या कारोबार की धाँधली से जो फ़ायदे होते हैं, और जो अब न होने पायँगे उनके लिये ललचाना अपनी क़ौम के लिये भलाई चाहना नहीं हैं. सौ पीछे ९९ हिंदू मुसलमान बच्चे इस लिये पैदा नहीं होते कि वह बड़े बड़े पदों पर रहें या बड़े बड़े महाजन बन जायँ. किसानी, मजदूरी, अच्छी और मामूली नौकरियाँ, ऐसे काम हैं जिनमे सौ पीछे ९९ हिंदू मुसलमान चमकेगे और जिन्दगी की बरकतो से माला माल होंगे. जहाँ तक बड़ी बड़ी नौकरियों का सवाल है, इसका सच्चा "शरीफ़ाना" और हिंदू मुसलमान दोनो को एक सा फ़ायदा पहुँचाने वाला हल यही है कि कोई हिंदू या कोई मुसलमान अगर सचमुच किसी बड़े पद के क़ाबिल है तो उसे उस पद से धर्म के कारन महरूम न रखा जाय. तालीम और इम्तहान या नौकरियाँ देने के दूसरे ढङ्गो मे यह बात न आने पाये कि उससे किसी एक धर्म वालों का दूसरे धर्म मानने वालो के मुक़ाबले मे ज़्यादा आसानी और फ़ायदा हो. ऐसा न होने पाये कि कोई बड़ा अधिकारी होने की लियाक़त रखता था पर सरकार के किसी हथकण्डे से उससे कम लायक आदमी को वह जगह दे दी गई. जात पात और धर्म की बिना पर, इस तरह किसी एक धर्म वालो की ज़्यादा गिनती होने के कारन दूसरे धर्म के कम गिनती के लोगो को बड़ी या छोटी नौकरी पाने से वंचित न रखा जाय. तरक़्क़ी पाये हुए हिन्द में बड़े बड़े पदो पर जितने मुसलमान होंगे उतने मुसलमान न ख़लीफ़ो के समय मे बड़े पदों पर थे और न औरङ्गजेब के समय में, न बड़ी से बड़ी इस्लामी हुकूमत के समय मे. और इतने हिंदू भी बड़े पदो पर होंगे जितने राम राज मे भी नहीं

للچانا یا کاروبار کی دھاندھلی سے جو فائدے ہوتے ہیں، اور جو اب نہ ہونے پائیں گے، اُن کے لئے للچانا اپنی قوم کے لئے بھلائی چاہنا نہیں ہے۔ سو پیچھے ۹۹ ہندو مسلمان بچے اس لئے پیدا نہیں ہوتے کہ وہ بڑے بڑے پدوں پر رہیں یا بڑے بڑے مہاجن بن جائیں۔ کسانی، مزدوری، اچھی اور معمولی نوکریاں، ایسے کام ہیں جن میں سو پیچھے ۹۹ ہندو مسلمان چمکیں گے اور زندگی کی برکتوں سے مالا مال ہوں گے۔ جہاں تک بڑی بڑی نوکریوں کا سوال ہے، اس کا سچا "شریفانہ" اور ہندو مسلمان دونوں کو ایک سا فائدہ پہنچانے والا حل یہی ہے کہ کوئی ہندو یا کوئی مسلمان اگر سچ مچ کسی بڑے پد کے قابل ہے تو اُسے اُس پد سے دھرم کے کارن محروم نہ رکھا جائے۔ تعلیم اور امتحان یا نوکریاں دینے کے دوسرے ڈھنگوں میں یہ بات نہ آنے پائے کہ اس سے کسی ایک دھرم والوں کو دوسرے دھرم ماننے والے کے مقابلے میں زیادہ آسانی اور فائدہ ہو۔ ایسا نہ ہونے پائے کہ کوئی بڑا ادھیکاری ہونے کی لیاقت رکھتا تھا پر سرکار کے کسی ہتھکنڈے سے اس سے کم لائق آدمی کو وہ جگہ دیدی گئی۔ جات پات اور دھرم کی بنا پر، اس طرح کسی ایک دھرم والوں کی زیادہ گنتی ہونے کے کارن دوسرے دھرم کے کم گنتی کے لوگوں کو بڑی یا چھوٹی نوکری پانے سے ونچت نہ رکھا جائے۔ ترقی پائے ہوئے ہند میں بڑے بڑے پدوں پر جتنے مسلمان ہوں گے اُتنے مسلمان نہ خلیفوں کے سمے میں بڑے پدوں پر تھے اور نہ اورنگ زیب کے سمے میں، نہ بڑی سے بڑی اسلامی حکومت کے سمے میں۔ اور اتنے ہندو بھی بڑے پدوں پر ہوں گے جتنے رام راج میں بھی نہیں

थे. इसी तरह ईसाई, पारसी और सिक्ख भी ज्यादा से ज्यादा तादाद में बड़े बड़े पदों पर होंगे. अगर हमने प्रजाराज के सिद्धांतो को इस देश मे जिन्दा रखा तो ज्यादा गिनती वाले कम गिनती वालो को कभी भी दबा न सकेंगे और न कम गिनती वाले ग़लत और नाजायज़ और झूटे फायदो का सपना देखेंगे.

पर बड़ी बड़ी नौकरियों और पदो के लिये हर धर्म वालो को पूरा पूरा मौक़ा और पूरी पूरी सहायता देने के बाद असली सवाल सौ पीछे ९९ हिंदू मुसलमानो का रह जाता है. यह सवाल सब से ज्यादा अहम है. यह हो ही नहीं सकता कि हिंदुओं की गिनती ज्यादा होने के कारन उनका ज्यादातर हिस्सा छोटी नौकरियो मे खप जाय और मुसलमान अपनी आबादी के मुताबिक छोटी छोटी नौकरियाँ न पायें और न यह हो सकता है कि नौकरियो मे तरक्क़ी करने के मौक़े मुसलमानों को हिंदुओं से कम मिले या इस सम्बन्ध में न्याय के परदे मे पक्षपात किया जाय. अगर तनख्वाह बढ़ेगी तो सबकी बढ़ेगी. टैक्स सबसे एकसा वसूल किया जायगा. काम और छुट्टियाँ सबको बराबर मिलेंगी. इसी तरह मज़दूरो और किसानो, कारीगरो और साधारन काम करने वालो मे यह नहीं हो सकता कि हिंदू ज्यादा फायदे मे रहें और मुसलमान कम फायदे मे रहें. हर पेशे वाले, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, छोटी जाति वाले हो या बड़ी जाति वाले, ईसाई हो, सिक्ख हो, या पारसी हो या कोई हो, अपनी ट्रेड यूनियन बनायेंगे, अपने पेशे की सभायें और पचायते बनायेंगे और मिल जुल कर उभरेंगे और दिन दूनी रात चौगनी तरक्क़ी करते जायँगे. जिस सरकार

५०९

تھے. اسی طرح عیسائی، پارسی اور سکھ بھی زیادہ سے زیادہ تعداد میں بڑے بڑے پدوں پر ہوں گے. اگر ہم نے پرجا راج کے سدھانتوں کو اس دیش میں زندہ رکھا تو زیادہ گنتی والے کم گنتی والوں کو کبھی بھی دبا نہ سکیں گے اور نہ کم گنتی والے غلط اور ناجائز اور جھوٹے فائدوں کا سپنا دیکھیں گے.

پر بڑی بڑی نوکریوں اور پدوں کے لئے ہر دھرم والوں کو پورا پورا موقع اور پوری پوری سہایتا دینے کے بعد اصلی سوال سو پیچھے ۹۹ ہندو مسلمانوں کا رہ جاتا ہے. یہ سوال سب سے زیادہ اہم ہے. یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ [illegible] زیادہ ہونے کے کارن [illegible] میں ترقی کرنے کے موقع مسلمانوں کو ہندوؤں سے کم ملیں یا اس سمبندھ میں نیائے کے پردے میں پکشپات کیا جائے. اگر تنخواہ بڑھے گی تو سب کی بڑھے گی. ٹیکس سب سے ایک سا وصول کیا جائے گا. کام اور چھٹیاں سب کو برابر ملیں گی. اسی طرح مزدوروں اور کسانوں، کاریگروں اور سادھارن کام کرنے والوں میں یہ نہیں ہو سکتا کہ ہندو زیادہ فائدہ میں رہیں اور مسلمان کم فائدہ میں رہیں. ہر پیشے والے، چاہے وہ ہندو ہوں یا مسلمان، چھوٹی جاتی والے ہوں یا بڑی جاتی والے، عیسائی ہوں، سکھ ہوں، یا پارسی ہوں یا کوئی ہوں، اپنی ٹریڈ یونین بنائیں گے، اپنے پیشے کی سبھائیں اور پنچایتیں بنائیں گے اور مل جل کر ابھریں گے اور دن دونی رات چوگنی ترقی کرتے جائیں گے. جس سرکار

की बुनियाद और जिस समाज के विचारो की नीव साम्प्रदायिकता पर होगी वह राज और समाज इतनी तरक़्क़ी कर ही नही सकता, जिसका चित्र खींचा गया है. यह मुमकिन नही है कि हिन्दुस्तान मे अगर हम सौ पीछे ९० हिन्दू आबादी को उभारें तो सौ पीछे दस मुसलमान आबादी को पस्ती में छोड़ दे, या पाकिस्तान मे सौ पीछे ७५ या ८० मुसलमान आबादी के जीवन को ढंग से सुखी और खुशहाल बनाया जाय. तो वहाँ की ग़ैरमुस्लिम आबादी को निर्धनता और अपमान का जीवन बिताने के लिये छोड़ दिया जाय.

प्रजा की तरक़्क़ी का बँटवारा नही हो सकता. झूटी चमक दमक के नाम पर मुस्लिम तरक़्क़ी और हिन्दू उन्नति का समय ख़तम हो गया, फिर साम्प्रदायिकता किस लिये ? हिन्दू राज और मुस्लिम राज के नारे किस लिये ?

यह बातें ख़याली है और हमें ज़िन्दगी की आँखो मे आँखे डाल कर आगे बढ़ने से रोकती हैं साम्प्रदायिक हिन्दू, हिन्दू जाति के लिये ख़तरनाक है, मुसलमान के लिये उतना ख़तरनाक नही है. फ़िरक़ापरस्त मुसलमान, मुसलमान फ़िरक़े के लिये ज़्यादा नुक़्सान पहुँचाने वाला है, हिन्दू के लिये उतना नहीं और यही हाल साम्प्रदायिक सिक्ख, साम्प्रदायिक पारसी, साम्प्रदायिक ऐंगलो इंडियन, साम्प्रदायिक ईसाई का है. यह सब अपनी जाति के दुश्मन हैं. साम्प्रदायिकता के आधार पर अपने सहधर्मियो की सेवा की ही नही जा सकती. साम्प्रदायिकता से बच कर ही अपने सम्प्रदाय की, अपने सहधर्मियों की तरक़्क़ी हो सकती है, या यूँ कहो कि दूसरे सम्प्रदाय वालो, दूसरे धर्म वालों की उन्नति, खुशहाली और मान के बिना अपने सम्प्रदाय वालों, अपने धर्म

کی بنیاد اور جس سماج کے وچاروں کی نیو سامپردائکتا پر ہوگی وہ راج اور سماج اتنی ترقی کر ہی نہیں سکتا، جس کا چتر کھینچا گیا ہے۔ یہ ممکن نہیں ہے کہ ہندستان میں اگر ہم سو پیچھے ۹۰ ہندو آبادی کو ابھاریں تو سو پیچھے دس مسلمان آبادی کو پستی میں چھوڑ دیں؟ یا پاکستان میں سو پیچھے ۷۵ یا ۸۰ مسلمان آبادی کے جیون کو ڈھنگ سے سکھی اور خوشحال بنایا جائے، تو وہاں کی غیر مسلم آبادی کو نردھنتا اور اپمان کا جیون بتانے کے لئے چھوڑ دیا جائے۔

پرجا کی ترقی کا بٹوارہ نہیں ہو سکتا۔ جھوٹی چمک دمک کے نام پر مسلم ترقی اور ہندو اُنتی کا سمے ختم ہو گیا، پھر سامپردائکتا کس لئے؟ ہندو راج اور مسلم راج کے نعرے کس لئے؟

(جاری)

یہ باتیں خیالی ہیں اور ہمیں زندگی کی آنکھوں میں آنکھیں ڈالکر آگے بڑھنے سے روکتی ہیں۔ سامپردائک ہندو، ہندو جاتی کے لئے خطرناک ہے، مسلمان کے لئے اتنا خطرناک نہیں ہے۔ فرقہ پرست مسلمان، مسلمان فرقے کے لئے زیادہ نقصان پہنچانے والا ہے، ہندو کے لئے اتنا نہیں اور یہی حال سامپردائک سکھ، سامپردائک پارسی، سامپردائک اینگلو انڈین، سامپردائک عیسائی کا ہے۔ یہ سب اپنی جاتی کے دشمن ہیں۔ سامپردائکتا کے آدھار پر اپنے سہدھرمیوں کی سیوا کی ہی نہیں جا سکتی۔ سامپردائکتا سے بچ کر ہی اپنے سمپردائے کی، اپنے سہدھرمیوں کی ترقی ہو سکتی ہے، یا یوں کہو کہ دوسرے سمپردائے والوں، دوسرے دھرم والوں کی اُنتی، خوش حالی اور مان کے بنا اپنے سمپردائے والوں، اپنے دھرم

वालो की तालीम, तरक्क़ी और ख़ुशहाली नामुमकिन है.

संसार इतना विशाल है कि वह एक धर्म के सँभाले संभल नही सकता. अगर हम यह मान भी लें कि हिन्दू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, बौद्ध संस्कृति बड़ी बड़ी संस्कृतियाँ होते हुए भी एक दूसरे से कुछ अलग हैं, तो भी संसार को इस अलगाव की आवश्यक्ता है. जो इस्लाम, ग़ैर-इसलामी संस्कृतियों से प्रभावित (मुतअस्सिर) नहीं हुआ, वह उस इस्लाम से कम मालामाल रहेगा, जो ग़ैर इस्लामी संस्कृतियो से भी प्रभावित हुआ है. वह हिन्दू संस्कृति, जो दुनिया भर की ग़ैर-हिन्दू संस्कृतियो से प्रभावित नही हुई. उस हिन्दू संस्कृति के मुक़ाबले मे कम ऊँची रहेगी जो इस्लाम और युरोप व दुनिया की दूसरी पुरानी और नई संस्कृतियों से प्रभावित हुई है.

आज की हिन्दू संस्कृति का स्वभाव, उसका रस और जस समझ में आ ही नही सकता, अगर हम इस बात को परख न सकें कि मौजूदा हिन्दू संस्कृति किस हद तक इस्लामी संस्कृति और योरप की दूसरी मौजूदा संस्कृतियो से प्रभावित हुई है. रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वमी विवेकानन्द, पण्डित जवाहरलाल नेहरू और सैकड़ों चोटी के हिन्दू इतनी बड़ी विभूतियाँ हो ही नहीं सकते थे अगर वह उस हिन्दू संस्कृति से फ़ायदा न उठाते. जिसमें ग़ैर हिन्दू संस्कृति भी मिल चुकी है. इसी तरह डाक्टर मुहम्मद इकबाल और बहुत से ऊँचे विचार रखने वाले मुसलमान इतने बड़े या महान् न होते, अगर उनका इस्लाम वह इस्लाम होता, जिस पर ग़ैर-मुस्लिम संस्कृति का गहरा असर नहीं पड़ा है. हजारों तत्त्व (जुज्व) मिल कर और मिट कर कीमिया की हैसियत हासिल करते हैं. और यही

والوں کی تعلیم، ترقی اور خوش حالی ناممکن ہے۔

سنسار اتنا وشال ہے کہ وہ ایک دھرم کے سنبھالے سنبھل نہیں سکتا اگر ہم یہ مان بھی لیں کہ ہندو سنسکرتی، مسلم سنسکرتی، بودھ سنسکرتی بڑی بڑی سنسکرتیاں ہوتے ہوئے بھی ایک دوسرے سے کچھ الگ ہیں، تو بھی سنسار کو اس الگاؤ کی آوشیکتا ہے۔ جو اسلام، غیر اسلامی سنسکرتیوں سے پربھاوت (متاثر) نہیں ہوا، وہ اس اسلام سے کم مالا مال رہے گا، جو غیر اسلامی سنسکرتیوں سے بھی پربھاوت ہوا ہے۔ وہ ہندو سنسکرتی جو دنیا بھر کی غیر ہندو سنسکرتیوں سے پربھاوت نہیں ہوئی اس ہندو سنسکرتی کے مقابلے میں کم اونچی رہے گی جو اسلام اور یورپ و دنیا کی دوسری پرانی اور نئی سنسکرتیوں سے پربھاوت ہوئی ہے۔

آج کی ہندو سنسکرتی کا سبھاؤ، اس کا رس اور جس سمجھ میں آ ہی نہیں سکتا، اگر ہم اس بات کو پرکھ نہ سکیں کہ موجودہ ہندو سنسکرتی کس حد تک اسلامی سنسکرتی اور یورپ کی دوسری موجودہ سنسکرتیوں سے پربھاوت ہوئی ہے۔ رویندر ناتھ ٹیگور، مہاتما گاندھی، سوامی وویکانند، پنڈت جواہر لال نہرو اور سیکڑوں چوٹی کے ہندو، اتنی بڑی وبھوتیاں ہو ہی نہیں سکتے تھے اگر وہ اس ہندو سنسکرتی سے فائدہ نہ اٹھاتے، جس میں غیر ہندو سنسکرتی بھی مل چکی ہے۔ اسی طرح ڈاکٹر محمد اقبال اور بہت سے اونچے وچار رکھنے والے مسلمان اتنے بڑے یا مہان نہ ہوتے، اگر ان کا اسلام وہ اسلام ہوتا، جس پر غیر مسلم سنسکرتی کا گہرا اثر نہیں پڑا ہے۔ ہزاروں تتو (جزو) مل کر اور مٹ کر کیمیا کی حیثیت حاصل کرتے ہیں۔ اور یہی

हाल संस्कृति की कीमिया का भी है.

अगर हमने हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में धार्मिकता, साम्प्रदायिकता की तंग और बरबादी की तरफ़ जाने वाली चार [illegible] आज़ाद होकर ग़ैर मज़हबी और ग़ैर फ़िरक़े वाराना आज़ाद प्रजाराज और तरक़्क़ी पाये हुए प्रजाराज को पनपने का मौक़ा दिया, तो अब से कुछ दिन बाद इस देश में हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज, इस्लाम और मुस्लिम समाज हर धर्म और हर संस्कृति इतना उजला स्वरूप धारन करेगी कि हर संस्कृति वालों के ज्ञान और कलाएँ, भाषा और सहित्य, फ़लसफ़ा और साइन्स उस जगमगाते हुए रूप मे दिखाई देंगे जिसका साम्प्रदायिक और मज़हबपरस्त लोग सपना भी नहीं देख सकते. हिन्दू संस्कृति को हिन्दू राज मिटाकर रख देगा. मुस्लिम संस्कृति को इस्लामी राज मिटा कर रख देगा और साम्प्रदायिक राज अपने ही सहधर्मियो को ले डूबेगा.

حال سنسکرتی کی کیمیا کا بھی ہے۔

اگر ہم نے ہندستان و پاکستان میں دھارمکتا، سامپردایکتا کی تنگ اور بربادی کی طرف لے جانے والی چار دیواری سے آزاد ہو کر غیر مذہبی اور غیر فرقہ وارانہ آزاد پرجا راج اور ترقی پائے ہوئے پرجا راج کو پنپنے کا موقع دیا، تو اب سے کچھ دن بعد اس دیش میں ہندو دھرم اور ہندو سماج، اسلام اور مسلم سماج ہر دھرم اور ہر سنسکرتی اتنا اُجلا سروپ دھارن کرے گی کہ ہر سنسکرتی والوں کے گیان اور کلائیں، بھاشا اور ساہتیہ، فلسفہ اور سائنس اُس جگمگاتے ہوئے روپ میں دکھائی دینگے جسکا سامپردایک اور مذہب پرست لوگ سپنا بھی نہیں دیکھ سکتے۔ ہندو سنسکرتی کو ہندو راج مٹا کر رکھ دے گا۔ مسلم سنسکرتی کو اسلامی راج مٹا کر رکھ دے گا اور سامپردایک [illegible] ہم دھرمیوں کو لے ڈوبے گا۔

मैं कौन हूँ

(भाई ख्वाजा अहमद अब्बास)

"हाँ, तो तुम सब जानना चाहते हो कि मैं क्यों हँस रहा हूँ. . .

"तुम जानना चाहते हो कि एक आदमी जो मरने के क़रीब हो, कैसे खिलखिला कर हँस सकता है . . . . . ?

"तुम रहने दो डाक्टर साहब क्यो तकलीफ करते हो ? अपनी डिस्पेन्सरी मे कुनैन मिक्सचर और एसिपरीन की गोलियाँ बेचो. तुम मुझे मरने से नहीं बचा सकते. बात यह है कि मुझे एक छोड़ दो घाव लगे हैं. एक पसलियों मे आर-पार कमर से ले कर कलेजे तक. दूसरा पेट मे. देखते नहीं, आतें बाहर निकल आई हैं. . . .

"हाँ, तो तुम सब जानना चाहते हो कि मरता हुआ आदमी कैसे हँस सकता है ? मैं अभी बताता हूँ...बात यह है कि मुझे याद आ गया है कि मै कौन हूँ. क्या कहा तुमने बड़े मियाँ ? इसमे हँसी की क्या बात है ? कमाल किया तुमने, हँसी की नहीं तो क्या रोने की बात है ? एक महीने से मैं यह मालूम करने की कोशिश कर रहा था कि मै कौन हूँ. हिन्दू या मुसलमान या सिक्ख, जिसके बाल और दाढ़ी जबर्दस्ती मूँड दिये गये हों और जबर्दस्ती खतना कर दिया गया हो. ब्राह्मण या अछूत ?.........अमीर या गरीब ?... पूर्वी पंजाब का रहने वाला या पच्छिमी पंजाब का ? .... लाहौर का रहने वाला या अमृतसर का ?.... ....रावल और भी पिंडी का या जालंधर का ?.........मैंने ही नहीं, बल्कि

میں کون ہوں

(بھائی خواجہ احمد عباس)

"ہاں، تو تم سب جاننا چاہتے ہو کہ میں کیوں ہنس رہا ہوں . . .

"تم جاننا چاہتے ہو کہ ایک آدمی جو مرنے کے قریب ہو، کیسے کھلکھلا کر ہنس سکتا ہے . . . . ؟

"تم رہنے دو ڈاکٹر صاحب کیوں تکلیف کرتے ہو ؟ اپنی ڈسپنسری میں کونین مکسچر اور اسپرین کی گولیاں بیچو. تم مجھے مرنے سے نہیں بچا سکتے. بات یہ ہے کہ مجھے ایک چھوڑ دو گھاؤ لگے ہیں. ایک پسلیوں میں آر پار کمر سے لیکر کلیجے تک. دوسرا پیٹ میں. دیکھتے نہیں آنتیں باہر نکل آئی ہیں . . .

"ہاں، تو تم سب جاننا چاہتے ہو کہ مرتا ہوا آدمی کیسے ہنس سکتا ہے ؟ میں ابھی بتاتا ہوں.. بات یہ ہے کہ مجھے یاد آ گیا ہے کہ میں کون ہوں. کیا کہا تم نے بڑے میاں ؟ اسمیں ہنسی کی کیا بات ہے ؟ کمال کیا تم نے ہنسی کی نہیں تو کیا رونے کی بات ہے ؟ ایک مہینے سے میں یہ معلوم کرنے کی کوشش کر رہا تھا کہ میں کون ہوں. ہندو یا مسلمان یا سکھ، جسکے بال اور داڑھی زبردستی مونڈ دیے گئے ہیں اور زبردستی ختنہ کر دیا گیا ہے. برہمن یا اچھوت ؟ . . امیر یا غریب ؟ . . . پوربی پنجاب کا رہنے والا یا پچھمی پنجاب کا ؟ . . . لاہور کا رہنے والا یا امرتسر کا ؟ . . . راول پنڈی کا یا جالندھر کا ؟ . . . . . . میں نے ہی نہیں، بلکہ

बहुत से लोगों ने यह मालूम करने की कोशिश की कि मैं कौन हूँ, मेरा धर्म क्या है, जाति क्या है, नाम क्या है ? ......पर किसी को नहीं मालूम हो सका........ खुद मुझे याद आ गया. पर याद आया तो अब. ....अब, जब कि मैं मर रहा हूँ.........

"डाक्टर साहब ! तुम इतने परेशान न हो, नहीं तो तुम्हारी शक्ल देख कर मुझे और हँसी आयगी. यक़ीन मानो कि तुम क्या, अब दुनिया का कोई डाक्टर भी मुझे नहीं बचा सकता ....मैं जानता हूँ कि तुम किस सोच-विचार में पड़े हो ? मेरे दो घाव इतनी बेढब जगहों पर लगे हैं कि तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है कि पहले किसकी मरहम-पट्टी करो. पहले चित लिटा कर आँतों को अन्दर डाल कर सीते हो तो इतनी देर में कमर वाले घाव से इतना खून बह जायगा कि एक टाँका भी न लगा सकोगे और मैं मर चुकूँगा. और अगर तुम मुझे उल्टा कर के पहले कमर के घाव की खबर लेते हो तो इतनी देर में अँतड़ियाँ तो अँतड़ियाँ सारा कलेजा बाहर निकल आ येगा...... .

"हाँ, तो बात यह है कि एक महीना हुआ जब मेरा दिमाग़ न जाने कितने दिनों के बाद एक अँधेरे सपने से बाहर निकला और मैंने अपने आप को देहली के एक सरकारी अस्पताल में पड़ा पाया तो मेरी याद एकदम ग़ायब हो चुकी थी. डाक्टर ने पूछा—

'तुम्हारा नाम ?'

"मैंने बहुत सोचा. दिमाग़ पर ज़ोर डाला. फिर कहना पड़ा—

'याद नहीं'.

"हिन्दू हो या मुसलमान ?' डाक्टर ने दूसरा सवाल किया. मुझे

بہت سے لوگوں نے یہ معلوم کرنے کی کوشش کی کہ میں کون ہوں، میرا دھرم کیا ہے، جات کیا ہے، نام کیا ہے؟ ...... پر کسی کو نہیں معلوم ہو سکا ...... خود مجھے یاد آگیا۔ پر یاد آیا تو اب...... اب جبکہ میں مر رہا ہوں...

"ڈاکٹر صاحب! تم اتنے پریشان نہ ہو، نہیں تو تمہاری شکل دیکھ کر مجھے اور ہنسی آئے گی۔ یقین مانو کہ تم کیا، اب دنیا کا کوئی ڈاکٹر بھی مجھے نہیں بچا سکتا......... میں جانتا ہوں کہ تم کس سوچ وچار میں پڑے ہو؟ میرے دو گھاؤ اتنی بےڈھب جگہوں پر لگے ہیں کہ تمہاری سمجھ میں نہیں آرہا ہے کہ پہلے کس کی مرہم پٹی کرو۔ پہلے چت لٹا کر آنتوں کو اندر ڈال کر سیتے ہو تو اتنی دیر میں کمر والے گھاؤ سے اتنا خون بہہ جائے گا کہ ایک ٹانکہ بھی نہ لگا سکوگے اور میں مر چکوں گا۔ اور اگر تم مجھے الٹا کر کے پہلے کمر کے گھاؤ کی خبر لیتے ہو تو اتنی دیر میں انتڑیاں تو انتڑیاں سارا کلیجہ باہر نکل آئے گا........

"ہاں، تو بات یہ ہے کہ ایک مہینہ ہوا جب میرا دماغ نہ جانے کتنے دنوں کے بعد ایک اندھیرے سپنے سے باہر نکلا اور میں نے اپنے آپ کو دہلی کے ایک سرکاری اسپتال میں پڑا پایا تو میری یاد ایک دم غائب ہو چکی تھی۔ ڈاکٹر نے پوچھا۔

"تمہارا نام؟"

"میں نے بہت سوچا۔ دماغ پر زور ڈالا۔ پھر کہنا پڑا۔ "یاد نہیں"۔

"ہندو ہو یا مسلمان؟" ڈاکٹر نے دوسرا سوال کیا۔ مجھے

यह भी याद नहीं था.

"कुछ भी याद नहीं था. धर्म, मजहब, जाति, जमाअत, देश, शहर, मुहल्ला, यह भी याद नहीं था कि मेरी शादी हो चुकी है या कुंआरा हूँ, या रँडुवा. और तो और मुझे अपनी उमर का भी कोई अंदाज नहीं था. न जाने क्यों होश आने पर मेरा खयाल था कि मैं काफी जवान हूँ. लेकिन जब एक नर्स ने आइना दिखाया तो मैं अपनी शक्ल देख कर डर गया. सर के आधे बाल सफेद. आठ दस दिन की बढ़ी खिचड़ी रंग की दाढ़ी. आँखें अन्दर धँसी हुई. चेहरे पर झुर्रियाँ. गरज यही हुलिया जो अब भी तुम लोग देख रहे हो. हाँ, उस वक्त सर के सफेद बालों मे ख़ून की मेंहदी नहीं लगी थी, जो अब लगी हुई है. देखा, तुम भी हँस दिये. ख़ून की मेंहदी ? औरतें हथेलियों पर लगाती हैं और बूढ़े मर्द सिर के सफेद बालों में. अब ख़ुद ही बताओ कि यह सोच कर हँसी क्यों न आये ?......

"हाँ, तो दिल्ली के डाक्टरों ने बहुत कोशिश की कि मेरा नाम, पता, धर्म, मजहब मालूम हो जाय, पर कुछ पता न चला. मैंने ख़ुद बड़ी दौड़-धूप की. क्योंकि बिना अपना नाम जाने हुए ऐसा लगता था जैसे मैं जिन्दा नहीं हूँ, मुर्दा हूँ. पूछ-ताछ करने पर पता चला कि पचास-साठ और घायलों के साथ मुझे रेल में पंजाब से लाया गया है. मैंने सवाल किया कि बाकी जख्मी हिन्दू थे या मुसलमान तो मालूम हुआ कि हिन्दू भी थे, सिख भी और मुसलमान भी. हुआ यह था कि अमृतसर और लाहौर के बीच एक-एक कर के दो रेलें पटरी से उतार दी गई थीं. एक में पच्छिमी पंजाब

یہ بھی یاد نہیں تھا۔

"کچھ بھی یاد نہیں تھا۔ دھرم، مذہب، جاتی، جماعت، دیش، شہر، محلہ، یہ بھی یاد نہیں تھا کہ میری شادی ہو چکی ہے یا کنوارا ہوں، یا رنڈوا۔ اور تو اور مجھے اپنی عمر کا بھی کوئی اندازہ نہیں تھا۔ نہ جانے کیوں ہوش آنے پر میرا خیال تھا کہ میں کافی جوان ہوں۔ لیکن جب ایک نرس نے آئینہ دکھایا تو میں اپنی شکل دیکھ کر ڈر گیا۔ سر کے آدھے بال سفید۔ آٹھ دس دن کی بڑھی کھچڑی رنگ کی داڑھی۔ آنکھیں اندر دھنسی ہوئی۔ چہرے پہ جھریاں۔ غرض یہی حلیہ جو اب بھی تم لوگ دیکھ رہے ہو۔ ہاں، اس وقت سر کے سفید بالوں میں خون کی مہندی نہیں لگی تھی، جو اب لگی ہوئی ہے۔ دیکھا، تم بھی ہنس دیے۔ خون کی مہندی؟ عورتیں ہتھیلیوں پر لگاتی ہیں اور بڈھے مرد سر کے سفید بالوں میں۔ اب خود ہی بتاؤ کہ یہ سوچ کر ہنسی کیوں نہ آئے؟ ۔۔۔۔

"ہاں، تو دلی کے ڈاکٹروں نے بہت کوشش کی کہ میرا نام، پتہ، دھرم، مذہب معلوم ہو جائے، پر کچھ پتہ نہ چلا۔ میں نے خود بڑی دوڑ دھوپ کی، کیوں کہ بنا اپنا نام جانے ہوئے ایسا لگتا تھا جیسے میں زندہ نہیں ہوں، مردہ ہوں۔ پوچھ تاچھ کرنے پر پتہ چلا کہ پچاس ساٹھ اور گھائلوں کے ساتھ مجھے ریل میں پنجاب سے لایا گیا ہے۔ میں نے سوال کیا کہ باقی زخمی ہندو تھے یا مسلمان تو معلوم ہوا کہ ہندو بھی تھے، سکھ بھی اور مسلمان بھی۔ ہوا یہ تھا کہ امرتسر اور لاہور کے بیچ ایک ایک کر کے دو ریلیں پٹری سے اتار دی گئی تھیں۔ ایک میں پچھمی پنجاب

से हिंदू अमृतसर आ रहे थे, दूसरी में पूर्वीपंजाब से मुसलमान लाहौर जा रहे थे. रात के ग्यारह बजे के करीब एक स्पेशल के नीचे बम फटा. पहिये पटरी से नीचे आ रहे, इंजन उलट गया. कितने तो वैसे ही मर गये, बाकी मुसाफिरों पर गोलियाँ बरसने लगीं. रात के अंधेरे में घायल गिरते पड़ते इधर उधर भागे. इसके बाद उस जगह से मील भर दूर दूसरी स्पेशल पर जो उल्टी तरफ से आ रही थी, हमला हुआ. इस बार बम की जरूरत नहीं पड़ी. गाड़ी जैसे ही एक मोड़ पर हल्की हुई, उस पर मशीनगन की गोलियों की बौछार पड़ी. ड्राइवर, गार्ड और बहुत से मुसाफिर जो खिड़कियों के पास बैठे थे, तुरन्त खतम हो गये. इंजन मस्त हाथी की तरह घड़घड़ाता गाड़ी को घसीटता चला गया पर थोड़ी ही दूर पर रेल की पटरी का काँटा बदल दिया गया था, इसलिए पूरी गाड़ी उलट गई. उसके घायलों ने भी रात के अँधेरे में पनाह ली ...... दूसरे दिन सवेरे जब हिन्दुस्तानी सरहदी फौजें और पाकिस्तानी सरहदी फौजें गश्त को निकलीं तो उन्होंने कितने ही हिन्दुओं और मुसलमानों को बिलकुल नई सरहद पर मुर्दा और जखमी पाया. उनमें मैं भी था. ....अब तुम्हीं कहो, हँसी न आये यह सुन कर कि कितने ही हिन्दुओं ने अंधेरे में पाकिस्तान में दम तोड़ा था और कितने ही मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में.

"और फिर भी वह इस तरह ठीक सरहद पर मिले-जुले पड़े थे कि यह कहना मुश्किल था कि कौन हिंदू है और कौन मुसलमान. कौन हिन्दुस्तान में है और कौन पाकिस्तान में. कुछ भी हो, नई सरहद की लाइन जरूर खिंच गई थी, खून से! या यों कहिये कि

سے ہندو امرتسر آرہے تھے، دوسری میں پوربی پنجاب سے مسلمان لاہور جا رہے تھے۔ رات کے گیارہ بجے کے قریب ایک اسپشل کے نیچے بم پھٹا۔ پہیے پٹری سے نیچے آرہے، انجن الٹ گیا۔ کتنے تو ویسے ہی مر گئے، باقی مسافروں پر گولیاں برسنے لگیں۔ رات کے اندھیرے میں گھائل گرتے پڑتے ادھر ادھر بھاگے۔ اس کے بعد اس جگہ سے میل بھر دور دوسری اسپشل پر جو الٹی طرف سے آرہی تھی، حملہ ہوا۔ اس بار بم کی ضرورت نہیں پڑی۔ گاڑی جیسے ہی ایک موڑ پر ہلکی ہوئی، اس پر مشین گن کی گولیوں کی بوچھار پڑی۔ ڈرائیور، گارڈ اور بہت سے مسافر جو کھڑکیوں کے پاس بیٹھے تھے، ترنت ختم ہوگئے۔ انجن مست ہاتھی کی طرح گھڑگھڑاتا گاڑی کو گھسیٹتا چلا گیا پر تھوڑی ہی دور پر ریل کی پٹری کا کانٹا بدل دیا گیا تھا، اس لئے پوری گاڑی الٹ گئی۔ اس کے گھائلوں نے بھی رات کے اندھیرے میں پناہ لی.... دوسرے دن سویرے جب ہندستانی سرحدی فوجیں اور پاکستانی سرحدی فوجیں گشت کو نکلیں تو انہوں نے کتنے ہی ہندؤوں اور مسلمانوں کو بالکل نئی سرحد پر مردہ اور زخمی پایا۔ ان میں میں بھی تھا.... اب تمہیں کہو، ہنسی نہ آئے یہ سن کر کہ کتنے ہی ہندؤوں نے اندھیرے میں پاکستان میں دم توڑا تھا اور کتنے ہی مسلمانوں نے ہندستان میں۔

"اور پھر بھی وہ اس طرح ٹھیک سرحد پر ملے جلے پڑے تھے کہ یہ کہنا مشکل تھا کہ کون ہندو ہے اور کون مسلمان۔ کون ہندستان میں ہے اور کون پاکستان میں۔ کچھ بھی ہو، نئی سرحد کی لائن ضرور کھنچ گئی تھی، خون سے! یا یوں کہئے کہ

बूढ़ी जमीन के बालों में .खून की मेंहदी लग गई थी. ....

"देखो सफ़ेद दाढ़ी वाले मौलाना, घबराओ मत. मेरा इशारा तुम्हारी दाढ़ी की तरफ बिलकुल नहीं था तुम मेरी तरफ इस तरह न घूरो. मैं जानता हूँ, तुम क्या सोच रहे हो ? मैं मर रहा हूँ न और मरते वक़्त इन्सान पर सब भेद खुल जाते हैं. हाँ तो तुम सोच रहे हो कि अगर मैं मुसलमान होने का ऐलान कर दूँ तो तुम अंजुमन .खुद्दामुल-मुसलमीन की तरफ़ से मेरे कफ़न दफ़न का बंदोबस्त अभी से शुरू कर दो. और लम्बी चोटी वाले महाशय जी ! मैं तुम्हारे विचार भी जानता हूँ, तुम इस ताक में हो कि कब मैं अपने हिन्दू होने का इकरार करूँ और कब तुम धर्म सेवक समाज की ओर से मेरे क्रिया-कर्म का इन्तज़ाम शुरू कर दो. मैंने सुना है, यहाँ बम्बई मे पारसी लोग अपने मुर्दों को मलावार हिल पर एक खुले मैदान में रख आते है जिसमे कि गिद्ध लाशों को खा जायँ. यह भी सुना है कि हज़ारो गिद्ध हर वक़्त इस इन्तज़ार में मन्डलाते रहते हैं कि कब कोई ताज़ा लाश लाई जाय. ..पर यह नही मालूम था कि ऐसे गिद्ध भी होते हैं जो मौत से पहले ही मरने वाले पर मँडलाते रहते हैं .

"किसी ने मुझे बताया कि जब मुझे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरहद पर इस तरह बेहोश पड़ापाया गया कि मेरी एक टाँग हिन्दुस्तान मे थी तो दूसरी पाकिस्तान मे. एक हाथ इधर तो दूसरा उधर. उस वक्त मेरे बदन पर एक फटी हुई शलवार और ख़ून मे लथपथ कमीज़ थी. कौन कह सकता था कि यह पंजाबी हिन्दू का लिबास है या पंजाबी मुसलमान का. ख़ैर, न जाने क्यों मुझे देहली ले आया गया.

بوڑھی زمین کے بالوں میں خون کی مہندی لگ گئی تھی......

"دیکھو سفید داڑھی والے مولانا، گھبراؤ مت. میرا اشارہ تمہاری داڑھی کی طرف بالکل نہیں تھا تم میری طرف اس طرح نہ گھورو. میں جانتا ہوں، تم کیا سوچ رہے ہو؟ میں مر رہا ہوں نہ اور مرتے وقت انسان پر سب بھید کھل جاتے ہیں. ہاں تو تم سوچ رہے ہو کہ اگر میں مسلمان ہونے کا اعلان کر دوں تو تم انجمن خدام المسلمین کی طرف سے میرے کفن دفن کا بندوبست ابھی سے شروع کر دو. اور لمبی چوٹی والے مہاشے جی! میں تمہارے وچار بھی جانتا ہوں، تم اس تاک میں ہو کہ کب میں اپنے ہندو ہونے کا اقرار کروں اور کب تم دھرم سیوک سماج کی اور سے [illegible] کا انتظام شروع کر دو. میں نے سنا ہے [illegible] بمبئی میں پارسی لوگ اپنے مردوں کو مالابار ہل پر ایک کھلے میدان میں رکھ آتے ہیں جس میں کہ گدھ لاشوں کو کھا جائیں. یہ بھی سنا ہے کہ ہزاروں گدھ ہر وقت اس انتظار میں منڈلاتے رہتے ہیں کہ کب کوئی تازہ لاش لائی جائے......پر یہ نہیں معلوم تھا کہ ایسے گدھ بھی ہوتے ہیں جو موت سے پہلے ہی مرنے والے پر منڈلاتے رہتے ہیں.

"کسی نے مجھے بتایا کہ جب مجھے ہندوستان اور پاکستان کی سرحد پر اس طرح بے ہوش پڑا پایا گیا کہ میری ایک ٹانگ ہندوستان میں تھی تو دوسری پاکستان میں. ایک ہاتھ ادھر تو دوسرا ادھر. اس وقت میرے بدن پر ایک پھٹی ہوئی شلوار اور خون میں لت پت قمیض تھی. کون کہہ سکتا تھا کہ یہ پنجابی ہندو کا لباس ہے یا پنجابی مسلمان کا. خیر نہ جانے کیوں مجھے دہلی لے آیا گیا.

मुझे घाव तो मामूली आये थे, जो जल्दी अच्छे हो गये, लेकिन डाक्टर कहते थे कि दिमाग़ मे कोई गहरी अंदरूनी चोट आई है जिससे याद गायब हो गई है......

"हॉ साहब ' तो मैं दुनिया मे एक बड़ा ही अजीब आदमी बन गया. जिसको न अपना नाम याद था, न अपना पता. न धर्म. मेरी तसवीरे हिन्दुस्तान भर के अखबारो मे छपी और पाकिस्तान के अखबारो मे भी लेकिन मेरे किसी रिश्तेदार. दोस्त या जानने वाले ने मेरी खबर न ली. शायद सब के सब खतम हो चुके थे. शायद सिरे से मेरा कोई रिश्तेदार, कोई दोस्त या कोई जानने वाला था ही नहीं. और इस बीच मे घाव अच्छे होने पर मुझे अस्पताल से निकाल दिया गया. मैंने सोचा मेरे जैसे मुसीबत के मारे के लिये कहो तो दो रोटियों का इन्तजाम हो ही जायगा.

"फिरता फिराता जामे मसजिद के पास एक कैम्प मे पहुंचा. मैंने कहा—'मैं मुसीबत का मारा हूँ, मुझे पनाह दो.' कैम्प के मैनेजर ने पूछा—हिन्दू हो या मुसलमान ?' मैंने जवाब दिया—'याद नही.' और यही सच भी था. झूठ बोलने की मेरी ख़्वाहिश ही नहीं थी. मैनेजर ने टका सा जवाब दे दिया—'यह कैम्प सिर्फ मुसलमानो के लिये है.' सड़को की ख़ाक छानता पुरानी दिल्ली से नई दिल्ली पहुँचा. वहॉ एक बहुत बड़ा कैम्प दिखाई पड़ा. दरवाज़े पर मैंने कहा—'मैं बड़ा दुखी हूँ, तीन वक़्त से दाना पेट में नहीं गया. मुझे पनाह दो.' पूछा गया—'हिन्दू हो या मुसलमान ?' मैंने फिर वही जवाब दिया—'मुझे याद नहीं.'

"'नाम ?' ......'नाम भी याद नही.' जवाब मिला—'यह कैम्प

مجھے گھاؤ تو معمولی آئے تھے، جو جلدی اچھے ہوگئے. لیکن ڈاکٹر کہتے تھے کہ دماغ میں کوئی گہری اندرونی چوٹ آئی ہے جس سے یاد غائب ہوگئی ہے........

"ہاں صاحب! تو میں دنیا میں ایک بڑا ہی عجیب آدمی بن گیا. جس کو نہ اپنا نام یاد تھا، نہ اپنا پتہ، نہ دھرم. میری تصویریں ہندستان بھر کے اخباروں میں چھپیں اور پاکستان کے اخباروں میں بھی لیکن میرے کسی رشتے دار، دوست یا جاننے والے نے میری خبر نہ لی. شاید سب کے سب ختم ہو چکے تھے. شاید سرے سے میرا کوئی رشتہ دار، کوئی دوست یا کوئی جاننے والا تھا ہی نہیں. اور اس بیچ میں گھاؤ اچھے ہونے پر مجھے اسپتال سے نکال دیا گیا. میں نے سوچا میرے جیسے مصیبت کے مارے کے لئے کہیں تو دو روٹیوں کا انتظام ہو ہی جائے گا.

"پھرتا پھراتا جامع مسجد کے پاس ایک کیمپ میں پہنچا. میں نے کہا—'میں مصیبت کا مارا ہوں، مجھے پناہ دو.' کیمپ کے منیجر نے پوچھا—'ہندو ہو یا مسلمان؟' میں نے جواب دیا—'یاد نہیں.' اور یہی سچ بھی تھا. جھوٹ بولنے کی میری خواہش ہی نہ تھی. منیجر نے ٹکا سا جواب دے دیا—'یہ کیمپ صرف مسلمانوں کے لئے ہے.' سڑکوں کی خاک چھانتا پرانی دلی سے نئی دلی پہنچا. وہاں ایک بہت بڑا کیمپ دکھائی پڑا. دروازے پر میں نے کہا—'میں بڑا دکھی ہوں، تین وقت سے دانا پیٹ میں نہیں گیا. مجھے پناہ دو.' پوچھا گیا—'ہندو ہو یا مسلمان؟' میں نے پھر وہی جواب دیا—'مجھے یاد نہیں.'

'نام؟'........'نام بھی یاد نہیں.' جواب ملا—'یہ کیمپ

सिर्फ़ हिन्दुओं के लिये है.' न जाने कितनी देर तक मैं पुरानी देहली और नई देहली की धूल फाँकता रहा. कितने ही कैम्प नज़र आये, लेकिन वह या तो हिन्दुओं और सिक्खों के लिये थे या मुसलमानों के लिये. इंसानों के लिये कोई भी नहीं था.

"उस रात मैं एक कोठी के सामने बेहोश हो कर गिर पड़ा. कोठी किसी सरदार जी की थी. वह मुझे दुखी देख कर उठा लाये. मुझे दूध पीने को दिया. जब होश आया तो उन्होंने यह भी नहीं पूछा कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान या सिक्ख. सिर्फ यह पूछा—'क्यों भाई, अच्छे तो हो ?'

"मैं कई दिन वहाँ रहा. सरदार जी, उनकी बीवी और बच्चे सब मुझसे बहुत अच्छी तरह पेश आते थे. मैंने उन्हें बता दिया कि मेरी याद जाती रहा है और मुझे पता नहीं कि मैं कौन हूँ. फिर भी उन्होंने मेरे साथ अच्छा ही बरताव किया. फिर कुछ दिन बाद उनके कितने ही संबंधी रावलपिंडी ज़िले से आ गये. उन बेचारों पर वहाँ के मुसलमानों ने बड़ा ज़ुल्म किया था. उन्होंने अपने दोस्तों, पड़ोसियों और अपने ख़ास संबंधियों को अपनी आँखों के सामने क़त्ल होते देखा था. उन सब के दिल मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत और गुस्से से भरे थे. उनकी ज़बान से रावलपिंडी के वाक़आत सुन कर ख़ुद मेरा दिल मुसलमानों से नफ़रत करने लगा. सरदार जी ने उन लोगों को मेरे बारे में बता दिया था कि मैं भी मुसीबत का मारा हुआ हूँ, जिसकी याद जाती रही है. उनमें से कई बड़े बूढ़ों ने मुझसे हमदर्दी जताई, लेकिन चन्द नौजवान मुझे … की नज़रों से देखते रहे और एक रात मैंने उनमें से एक को

صرف ہندوؤں کیلئے ہے،' نہ جانے کتنی دیر تک میں پرانی دہلی اور نئی دہلی کی دھول پھانکتا رہا۔ کتنے ہی کیمپ نظر آئے، لیکن وہ یا تو ہندوؤں اور سکھوں کیلئے تھے یا مسلمانوں کیلئے۔ انسانوں کیلئے کوئی بھی نہیں تھا۔

"اس رات میں ایک کوٹھی کے سامنے بے ہوش ہو کر گر پڑا۔ کوٹھی کسی سردار جی کی تھی۔ وہ مجھے دکھی دیکھ کر اٹھا لائے۔ مجھے دودھ پینے کو دیا۔ جب ہوش آیا تو انہوں نے یہ بھی نہیں پوچھا کہ ہندو ہوں یا مسلمان یا سکھ۔ صرف یہ پوچھا — 'کیوں بھائی، اچھے تو ہو؟'

"میں کئی دن وہاں رہا۔ سردار جی، اُن کی بیوی اور بچے سب مجھ سے بہت اچھی طرح پیش آتے تھے۔ میں نے انہیں بتا دیا کہ میری یاد جاتی رہی ہے اور مجھے پتہ نہیں میں کون ہوں۔ پھر بھی انہوں نے میرے ساتھ اچھا ہی برتاؤ کیا۔ پھر کچھ دن بعد ان کے کتنے ہی سمبندھی راولپنڈی ضلع سے آ گئے۔ ان بیچاروں پر وہاں کے مسلمانوں نے بڑا ظلم کیا تھا۔ انہوں نے اپنے دوستوں، پڑوسیوں اور اپنے خاص سمبندھیوں کو اپنی آنکھوں کے سامنے قتل ہوتے دیکھا تھا۔ ان سب کے دل مسلمانوں کے خلاف نفرت اور غصے سے بھرے تھے۔ ان کی زبان سے راولپنڈی کے واقعات سن کر خود میرا دل مسلمانوں سے نفرت کرنے لگا۔ سردار جی نے اُن لوگوں کو میرے بارے میں بتا دیا تھا کہ میں بھی مصیبت کا مارا ہوا ہوں، جس کی یاد جاتی رہی ہے۔ ان میں سے کئی بڑے بوڑھوں نے مجھ سے ہمدردی جتائی، لیکن چند نوجوان مجھے شک کی نظروں سے دیکھتے رہے اور ایک رات میں نے اُن میں سے ایک کو

कहते सुना—'क्या मालूम यह आदमी बन ही रहा हो. और अगर याद खोने की बात सची भी है तो कौन कह सकता है कि शायद यह मुसलमान ही हो. मैंने उनकी आँखों मे बदले की ख़ूनी चमक देखी और मैंने सोचा शायद मैं सचमुच मुसलमान ही हूँ. शायद जख़्मी होने से पहले मैंने भी वह सारे जुल्म किये हों जो इन बेचारों पर हुए हैं. शायद मैं इसी क़ाबिल हूँ कि मुझसे बदला लिया लिया जाय......उसी रात मे वहाँ से भाग गया.

"फिर कई दिन के फ़ाके, सड़कों की ख़ाक, यह कैम्प हिन्दुओं के लिये है. यह कैंम्प मुसलमानो के लिये है. तुम्हारा नाम क्या है. . तुम्हारा धर्म क्या है, कहाँ से आये हो ?

"जब कहीं पनाह न मिली और कमज़ोरी के मारे चलना मुश्किल हो गया तो मैं जामे मसज्जिद की सीढ़ियों पर लेट गया. सामने मैदान में हज़ारों मुसलमान पड़े हुए थे जो पूर्वी पंजाब से भाग कर आये थे. दिन भर पड़े रहने के बाद मुझे होश भी न रहा. न जाने कब तक यों ही पड़ा रहा. एक बार होश आया तो ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई मेरे पास ही खड़ा हो. आँख उठा कर देखा तो एक बच्चा था. मुश्किल से आठ बरस का होगा. कहने लगा—'लो, यह खा लो. अम्माँ ने भेजा है कि किसी भूके को खिला आओ.' बिना सहारे के मेरे लिये उठना भी मुश्किल था. उस बेचारे ने हाथ का सहारा दिया तो मैं उठ कर बैठ गया. उफ़, कितनी मज़ेदार थीं वह रोटियाँ और वह दाल. खाना खा कर मैंने बच्चे से कहा—'जीते रहो बेटा.' और मुहब्बत से उसके नन्हे हाथ को छुआ तो वह बोला—'अरे तुम्हे तो बुख़ार है, चलो मेरे अब्बा के पास

کہتے سنا — 'کیا معلوم یہ آدمی بن ہی رہا ہو۔ اور اگر یاد کھونے کی بات سچ بھی ہے تو کون کہہ سکتا ہے کہ شاید یہ مسلمان ہی ہو۔ میں نے اُن کی آنکھوں میں بدلے کی خونی چمک دیکھی اور میں نے سوچا شاید میں سچ مچ مسلمان ہی ہوں۔ شاید زخمی ہونے سے پہلے میں نے بھی وہ سارے ظلم کیے ہوں جو ان بیچاروں پر ہوئے ہیں۔ شاید میں اسی قابل ہوں کہ مجھ سے بدلہ لیا جائے......... اسی رات میں وہاں سے بھاگ گیا۔

"پھر کئی دن کے فاقے، سڑکوں کی خاک، 'یہ کیمپ ہندوؤں کے لئے ہے، یہ کیمپ مسلمانوں کے لئے ہے، تمہارا نام کیا ہے۔ تمہارا دھرم کیا ہے، کہاں سے آئے ہو؟

"جب کہیں پناہ نہ ملی اور کمزوری کے مارے چلنا مشکل ہو گیا تو میں جامع مسجد کی سیڑھیوں پر لیٹ گیا۔ سامنے میدان میں ہزاروں مسلمان پڑے ہوئے تھے جو پوربی پنجاب سے بھاگ کر آئے تھے۔ دن بھر پڑے رہنے کے بعد مجھے ہوش بھی نہ رہا۔ نہ جانے کب تک یونہی پڑا رہا۔ ایک بار ہوش آیا تو ایسا معلوم ہوا جیسے کوئی میرے پاس ہی کھڑا ہو۔ آنکھیں اُٹھا کر دیکھا تو ایک بچہ تھا۔ مشکل سے آٹھ برس کا ہوگا۔ کہنے لگا — 'لو، یہ کھالو۔ اماں نے بھیجا ہے کہ کسی بھوکے کو کھلا آؤ۔' بنا سہارے کے میرے لئے اُٹھنا بھی مشکل تھا۔ اس بےچارے نے ہاتھ کا سہارا دیا تو میں اُٹھ کر بیٹھ گیا۔ اُف، کتنی مزیدار تھیں وہ روٹیاں اور وہ دال۔ کھانا کھا کر میں نے بچے سے کہا — 'جیتے رہو بیٹا!' اور محبت سے اُس کے ننھے ہاتھ کو چھوا تو وہ بولا — 'ارے تمہیں تو بخار ہے، چلو میرے ابا کے پاس

चलो. वह हकीम हैं, तुम्हें दवा देंगे, तुम फौरन अच्छे हो जाओगे.........'

"हाँ, तो वह मुझे अपने घर ले आया. हकीम जी बेचारे बड़े भले आदमी थे. पाँच वक्त नमाज़ पढ़ते और कितने ही आदमियों का हर रोज़ मुफ्त इलाज करते. दवा अपने पास से बिना दाम देते. उन्होंने दो ही दिन मे मेरा बुखार उतार दिया. पर मेरी खोई हुई याद वह भी वापस न ला सके. मैंने उन्हें अपना पूरा हाल बता दिया था. मैंने एक दिन उनसे कहा—'हकीम जी, हो सकता है कि मैं असल में हिंदू ही होऊँ. आप कहें तो आप के घर से मैं कहीं चला जाऊँ.' वह बोले—'हिंदू है तो क्या हुआ, ख़ुदा का बन्दा तो है..........'

"और फिर एक दिन हकीम जी का लड़का किसी और भूके व लाचार को जामे मसजिद खाना खिलाने गया तो शाम तक वापस न आया. रात को पता चला कि वापसी मे दरीबे से आ रहा था कि उसे हिंदुओं ने कत्ल कर डाला. घर मे कोहराम मच गया. हकीम जी की बीवी को गश पर ग़श आने लगे. अब मेरे लिये उस घर मे रहना भी मुश्किल हो गया. हर वक्त मुझे यही खयाल खाये जाता कि कौन जाने शायद मै हिंदू ही होऊँ. शायद मैंने भी हकीम जी के बच्चे की तरह और मुसलमानो के बच्चो को कत्ल किया हो. आखिर मैं वहाँ से भी भाग निकला.

"अब देहली मे चारो तरफ कत्लेआम हो रहा था. गोलियो की बारिश हो रही थी. बचाता बचता स्टेशन पहुँचा. सुना था बम्बई में थोड़ी बहुत शांति है. बम्बई की ट्रेन में बैठ गया. बराबर में एक

چلو. وہ حکیم ہیں، تمھیں دوا دیں گے، تم فوراً اچھے ہو جاؤ گے۔.......

"ہاں، تو وہ مجھے اپنے گھر لے آیا. حکیم جی بے چارے بڑے بھلے آدمی تھے. پانچ وقت نماز پڑھتے اور کتنے ہی آدمیوں کا ہر روز مفت علاج کرتے. دوا اپنے پاس سے بنا دام دیتے. انھوں نے دو ہی دن میں میرا بخار اتار دیا. پر میری کھوئی ہوئی یاد وہ بھی واپس نہ لا سکے. میں نے انھیں اپنا پورا حال بتا دیا تھا. میں نے ایک دن ان سے کہا—' حکیم جی، ہو سکتا ہے کہ میں اصل میں ہندو ہی ہوؤں. آپ کہیں تو آپ کے گھر سے میں کہیں چلا جاؤں' وہ بولے—' ہندو ہے تو کیا ہوا، خدا کا بندا تو ہے.......'

"اور پھر ایک دن حکیم جی کا لڑکا کسی اور بھوکے و لاچار کو جامع مسجد کھانا کھلانے گیا تو شام تک واپس نہ آیا. رات کو پتہ چلا کہ واپسی میں دریبہ سے آ رہا تھا کہ اسے ہندوؤں نے قتل کر ڈالا. گھر میں کہرام مچ گیا. حکیم جی کی بیوی کو غش پر غش آنے لگے. اب میرے لئے اس گھر میں رہنا بھی مشکل ہو گیا. ہر وقت مجھے یہی خیال کھائے جاتا کہ کون جانے شاید میں ہندو ہی ہوں. شاید میں نے بھی حکیم جی کے بچے کی طرح اور مسلمانوں کے بچوں کو قتل کیا ہو. آخر میں وہاں سے بھی بھاگ نکلا.

اب دہلی میں چاروں طرف قتل عام ہو رہا تھا. گولیوں کی بارش ہو رہی تھی. بچتا بچاتا اسٹیشن پہنچا. سنا تھا بمبئی میں تھوڑی بہت شانتی ہے. بمبئی کی ٹرین میں بیٹھ گیا. برابر میں ایک

हिन्दू नौजवान बैठा था. गाड़ी चली तो वह बोला—'तुम कौन हो भाई ?' मैंने कहा—'मुझे याद नहीं कौन हूँ. शायद हिंदू हूँ, शायद मुसलमान हूँ.' उसने कहा—'सुना है रास्ते में मुसलमान मुसाफिरों पर बहुत जुल्म किया गया, तुम्हारे चेहरे पर दाढ़ी है इसलिये पूछता हूँ.' मैंने अपना पूरा हाल बता दिया. पर उसके चेहरे से मालूम होता था कि उसे यकीन नहीं आया और वह मेरी बढ़ी हुई दाढ़ी को शक की नज़र से देखता रहा. फिर उसने बताया कि लाहौर में उसकी बहुत बडी दुकान थी, जो सारी की सारी लुट गई. कितने ही सगे-संबंधी मारे गये, कितने ही लापता थे. अब वह रिलीफ कमेटी से थर्ड क्लास का किराया ले कर बम्बई में क़िस्मत आजमाने जा रहा है. हाँ, तो भरतपुर में लाइन के पास पत्थर रख कर गाड़ी रोक ली गई. डिब्बे से मुसलमान मुसाफिरों को घसीट घसीट कर निकाला गया. हमारे डिब्बे में भी हत्यारे घुस आये, लेकिन मेरे नौजवान साथी ने मुझे चादर से ढाँक दिया. जब उन्होंने पूछा कि यह कौन है, तो उसने कह दिया कि यह तो मेरा भाई है. बेचारा पहले ही लाहौर में ज़ख्मी हो चुका है. वह चले गये. गोलियाँ चलने की आवाज़ आई, फिर कुछ चीखने चिल्लाने की आवाज़ें हुईं और फिर ट्रेन रवाना हुई. मैं बम्बई पहुँच गया लेकिन यहाँ भी इस मनहूस सवाल ने मेरा पीछा न छोड़ा कि मैं हिंदू हूँ या मुसलमान. मैं सोचता—हिन्दू कौन है ? मुसलमान कौन है ? सिक्ख कौन है ? हिन्दू वह नौजवान है जिसने एक दाढ़ी वाले की जान बचाई, जिसको वह मुसलमान समझता था, या वह दरीबेवाले जिन्होंने हकीम जी के मासूम बच्चे को क़त्ल कर डाला ? मुसलमान हकीम

ہندو نوجوان بیٹھا تھا۔ گاڑی چلی تو وہ بولا — 'تم کون ہو بھائی؟' میں نے کہا — 'مجھے یاد نہیں کون ہوں۔ شاید ہندو ہوں، شاید مسلمان ہوں۔' اُس نے کہا — 'سنا ہے راستے میں مسلمان مسافروں پر بہت ظلم کیا گیا، تمہارے چہرے پر داڑھی ہے اس لئے پوچھتا ہوں۔' میں نے اپنا پورا حال بتا دیا۔ پر اُس کے چہرے سے معلوم ہوتا تھا کہ اُسے یقین نہیں آیا اور وہ میری بڑھی ہوئی داڑھی کو شک کی نظر سے دیکھتا رہا۔ پھر اُس نے بتایا کہ لاہور میں اُس کی بہت بڑی دُکان تھی، جو ساری کی ساری لُٹ گئی۔ کتنے ہی سگے سمبندھی مارے گئے، کتنے ہی لاپتہ تھے۔ اب وہ ریلیف کمیٹی سے تھرڈ کلاس کا کرایہ لے کر بمبئی میں قسمت آزمانے جا رہا ہے۔ ہاں، تو بھرت پور میں لائن کے پاس پتھر رکھ کر گاڑی روک لی گئی۔ ڈبے سے مسلمان مسافروں کو گھسیٹ گھسیٹ کر نکالا گیا۔ ہمارے ڈبے میں بھی ہتیارے گھس آئے، لیکن میرے نوجوان ساتھی نے مجھے چادر سے ڈھانک دیا۔ جب اُنھوں نے پوچھا کہ یہ کون ہے، تو اُس نے کہہ دیا کہ یہ تو میرا بھائی ہے۔ بیچارہ پہلے ہی لاہور میں زخمی ہو چکا ہے۔ وہ چلے گئے۔ گولیاں چلنے کی آواز آئی، پھر کچھ چیخنے چلانے کی آوازیں آئیں اور پھر ٹرین روانہ ہوئی۔ میں بمبئی پہنچ گیا لیکن یہاں بھی اِس منحوس سوال نے میرا پیچھا نہ چھوڑا کہ میں ہندو ہوں یا مسلمان۔ میں سوچتا — ہندو کون ہے؟ مسلمان کون ہے؟ سکھ کون ہے؟ ہندو وہ نوجوان ہے جس نے ایک داڑھی والے کی جان بچائی، جس کو وہ مسلمان سمجھتا تھا، یا وہ دریبے والے جنھوں نے حکیم جی کے معصوم بچے کو قتل کر ڈالا؟ مسلمان حکیم

जी हैं, या वह सब जिन्होंने रावलपिंडी मे सरदार जी के रिश्तेदारों को क़त्ल किया और उनकी औरतो को बेइज्ज़त कर डाला ? सिक्ख सरदार जी हैं या वह सूरमा जिन्होने अमृतसर मे सैकड़ों मुसलमानों को घरों मे भून डाला ? फिर भी वही सवाल—हिंदू हो ? मुसलमान हो ?

"एक सवाल—'तुम कौन हो ?........तुम हिंदू हो ?.......'तुम मुसलमान हो ....?'

"यह सवाल मेरे दिमाग़ में हर वक़्त गूंजते रहते—मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ? हिंदू हूँ ? मुसलमान हूँ ? सिक्ख हूँ ? मैं कौन हूँ ? चलते फिरते, उठते बैठते, सोते जागते यह सवाल मेरा पीछा करता. ख़्वाब मे मुझे दहकते हुए अंगारो जैसी आंखो वाले प्रेत घेर लेते, और आग मे तपे हुए भाले मार मार कर पूछते—तू कोन है ? बोल, तू हिंदू है या मुसलमान?' और मैं नींद मे चिल्ला उठता—मुझे नहीं मालूम मैं कौन हूँ. मुझे छोड़ दो, मैं कुछ नहीं हूँ. मैं सिर्फ एक इन्सान हूँ.'

"बम्बई मे पंजाब से आये हुए लोगो के लिये बड़े बड़े कैम्प खुले थे. सिक्ख हो तो खालसा कालिज जाओ. हिंदू हो तो रामकृष्ण आश्रम मे शरण लो, मुसलमान हो तो भिंडी बाजार मे मुस्लिम लीग के दफ़तर का रुख़ करो. पर मैं कहाँ जाऊं ? मैं हर जगह से दुतकार दिया गया था. मै, जिसको नहीं मालूम कि मै कौन हूं.

"भीक के टुकड़े भी मिलने बंद हो गये. हिंदू हो या मुसलमान, हर एक भीक देने से पहले पूछता था कि तुम कौन हो ? मैं भूका मरने लगा और फिर एकदम से यह सवाल मेरे दिमाग़ पर छा गया

جی ہیں، یا وہ سب جنھوں نے راول پنڈی میں سردار جی کے رشتے داروں کو قتل کیا اور اُن کی عورتوں کو بے عزت کر ڈالا؟ سکھ سردار جی ہیں یا وہ سورما جنھوں نے امرتسر میں سیکڑوں مسلمانوں کو گھروں میں بھون ڈالا؟ پھر بھی وہی سوال — ہندو ہو؟ مسلمان ہو؟

"ایک سوال — تم کون ہو؟ .... تم ہندو ہو؟ .... تم مسلمان ہو.......؟'

"یہ سوال میرے دماغ میں ہر وقت گونجتے رہتے — میں کون ہوں؟ میں کون ہوں؟ ہندو ہوں؟ مسلمان ہوں؟ سکھ ہوں؟ میں کون ہوں؟ چلتے پھرتے، اُٹھتے بیٹھتے، سوتے جاگتے یہ سوال میرا پیچھا کرتا۔ خواب میں مجھے دہکتے ہوئے انگاروں جیسی آنکھوں والے پریت گھیر لیتے، اور آگ میں تپے ہوئے بھالے مار مار کر پوچھتے — 'تو کون ہے؟ بول، تو ہندو ہے یا مسلمان؟' اور میں نیند میں چلا اُٹھتا — مجھے نہیں معلوم میں کون ہوں۔ مجھے چھوڑ دو، میں کچھ نہیں ہوں۔ میں صرف ایک انسان ہوں۔'

"بمبئی میں پنجاب سے آئے ہوئے لوگوں کے لئے بڑے بڑے کیمپ کھلے تھے۔ سکھ ہو تو خالصہ کالج جاؤ، ہندو ہو تو رام کرشن آشرم میں شرن لو، مسلمان ہو تو بھنڈی بازار میں مسلم لیگ کے دفتر کا رُخ کرو۔ پر میں کہاں جاؤں؟ میں ہر جگہ سے دھتکار دیا گیا تھا۔ میں، جس کو نہیں معلوم کہ میں کون ہوں۔

"بھیک کے ٹکڑے بھی ملنے بند ہو گئے۔ ہندو ہو یا مسلمان، ہر ایک بھیک دینے سے پہلے پوچھتا تھا کہ تم کون ہو؟ میں بھوکا مرنے لگا اور پھر ایک دم سے یہ سوال میرے دماغ پر چھا گیا

कि मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ. हिदू या मुसलमान ? मुसलमान या हिदू ? जब तक कि इस सवाल का जवाब न मिले जीना नामुमकिन था.

"एक भले आदमी ने कहा कि डाकूर समानी के पास जाओ. वही तुम्हारी याद वापस ला सकता है. डाकूर समानी का नाम तो तुमने सुना होगा. वह दिमाग़ी रोगो के इलाज का माहिर है. वह चीर फाड़ से नहीं, बातों से दिमाग़ी ख़राबियों का इलाज करता है.

"मुझे एक शानदार कमरे मे एक नर्म कोच पर लिटा दिया गया. ऊपर बड़े पावर का बल्ब जल रहा था. चारों तरफ़ की हर एक चीज सफेद. दीवारें, अलमारियाँ, डाकूर का कोट, नर्स की वर्दी ....

"डाकूर ने नर्मी से कहा—'आँखें बंद कर लो. दिमाग़ पर ज़ोर न डालो. ढीला छोड़ दो. फिर जो कुछ भी तुम्हे याद आये वह बोलते रहो. चाहे कितना ही बेमानी और बेकार ख़याल क्यों न हो.' यह कह कर वह काग़ज़ पेंसिल लेकर पास ही बैठ गया. मैंने आँखें बद कर लीं..........

"मैंने कहना शुरू किया—'हरे भरे लहलहाते खेत........ दूर तक फैले हुए .... नीला आसमान......' —'शाबाश !' डाकूर बोला और काग़ज़ पर पेंसिल चलने की आवाज़ आई. 'बोलते रहो.' और मैं बोलता गया —'नीला आसमान.........एक नदी........ बरसात में पानी चढ़ा हुआ ....नदी में किश्तियाँ.........एक नहर.........नहर मे नहाते हुए बच्चे...... उन बच्चों में मैं भी.' 'शाबाश ! शाबाश !' डाकूर की आवाज़ जैसे बहुत दूर से आई.

'खेत में फसल कटी हुई....... सुनहरे गेहूँ का एक ढेर.........बहुत

کہ میں کون ہوں؟ میں کون ہوں، ہندو یا مسلمان؟ مسلمان یا ہندو؟
جب تک کہ اس سوال کا جواب نہ ملے جینا ناممکن تھا۔

"ایک بھلے آدمی نے کہا کہ ڈاکٹر سمانی کے پاس جاؤ۔ وہی تمھاری یاد واپس لا سکتا ہے۔ ڈاکٹر سمانی کا نام تو تم نے سنا ہوگا۔ وہ دماغی روگوں کے علاج کا ماہر ہے۔ وہ چیر پھاڑ سے نہیں، باتوں سے دماغی خرابیوں کا علاج کرتا ہے۔

"مجھے ایک شاندار کمرے میں ایک نرم کوچ پر لٹا دیا گیا۔ اوپر بڑے پاور کا بلب جل رہا تھا۔ چاروں طرف کی ہر ایک چیز سفید۔ دیواریں، الماریاں، ڈاکٹر کا کوٹ، نرس کی وردی.......

"ڈاکٹر نے نرمی سے کہا۔۔ آنکھیں بند کرلو۔ دماغ پر زور نہ ڈالو۔ ڈھیلا چھوڑ دو۔ پھر جو کچھ بھی تمھیں یاد آئے وہ بولتے رہو۔ چاہے کتنا ہی بے معنی اور بے کار خیال کیوں نہ ہو۔' یہ کہکر وہ کاغذ پنسل لے کر پاس ہی بیٹھ گیا۔ میں نے آنکھیں بند کرلیں.......

"میں نے کہنا شروع کیا۔۔ 'ہرے بھرے لہلہاتے کھیت..... دور تک پھیلے ہوئے....... نیلا آسمان.....'۔ 'شاباش!' ڈاکٹر بولا اور کاغذ پر پنسل چلنے کی آواز آئی۔ 'بولتے رہو۔' اور میں بولتا گیا۔۔ 'نیلا آسمان....... ایک ندی....... برسات میں پانی چڑھا ہوا....... ندی میں کشتیاں...... ایک نہر....... نہر میں نہاتے ہوئے بچے....... اُن بچوں میں میں بھی۔' 'شاباش! شاباش!' ڈاکٹر کی آواز جیسے بہت دور سے آئی۔

"کھیت میں فصل کٹی ہوئی...... سنہرے گیہوں کا ایک ڈھیر بہت

बड़ा ढेर. आसमान तक........ वैसाखी का मेला........ दूर कोई बांसुरी बजा रहा है ....ढोलक की आवाज़ क़रीब होती जा रही है....नीम के तले औरतें बैठी गीत गा रही हैं'.. ....'शाबाश' डाक्टर बोला—'कौन सा गीत गा रही हैं ?'

मैंने उसे बताया—'ओंजदों माही याद आवे हाय हाये चुन दे हंजू डल डल पेंदे ने.'

"'यह गीत हिन्दू औरतें गाती है या मुसलमान औरतें ?' डाक्टर ने पूछा. मैंने कहा—'पंजाबी औरतें गाती हैं. देखो वह सब मिल कर अन्तरा उठा रही हैं.?' 'यह औरतें कौन हैं, हिन्दू या मुसलमान ?' 'पंजाबी हिन्दू भी मुसलमान भी.'

"डाक्टर की भारी साँस की आवाज़ आई. जैसे इस जवाब से उसका बना बनाया काम बिगड़ गया. फिर वह बोला—'शाबश, वोले जाओ, जो कुछ भी याद आये.'

"एक बहुत बड़ा बाग़... मेला सा लगा हुआ.........रंगीन शलवारें और कमीज़ें ..... दुपट्टे हवा में लहराते हुए... चंचल लड़कियों के ठहाके...... बच्चों का शोर...... .'

"'शाबाश. शाबाश, वोले जाओ... चुप क्यों हो गये ?'

"अब कुछ सुनाई नहीं देता, कुछ नहीं दिखाई देता.

"'क्यों क्या हुआ ?'

"मेरे सर में दर्द हो रहा है. हर तरफ अंधेरा छाया हुआ है. एक अजीव सा शोर.... ..

"'शाबाश ! शाबाश !'

"आग लग रही है. हर तरफ शोले ही शोले.........शोर बढ़ता जा

بڑا ڈھیر. آسمان تک.... بیساکھی کا میلا...... دور کوئی بانسری بجا رہا ہے ...... ڈھولک کی آواز قریب ہوتی جا رہی ہے.... نیم کے تلے عورتیں بیٹھی گیت گا رہی ہیں'... 'شاباش' ڈاکٹر بولا — 'کون سا گیت گا رہی ہیں؟'

میں نے اُسے بتایا — 'اونج دوں ماہی یاد آوے ہائے ہائے چن دی ہنجو ڈل ڈل پیندی نے'

"'یہ گیت ہندو عورتیں گاتی ہیں یا مسلمان عورتیں؟' ڈاکٹر نے پوچھا. میں نے کہا — 'پنجابی عورتیں گاتی ہیں. دیکھو وہ سب مل کر انترا اٹھا رہی ہیں؟' 'یہ عورتیں کون ہیں، ہندو یا مسلمان؟' 'پنجابی ہندو بھی مسلمان بھی.'

" ڈاکٹر کی بھاری سانس کی آواز آئی. جیسے اس جواب سے اس کا بنا بنایا کام بگڑ گیا. پھر وہ بولا — 'شاباش، بولے جاؤ، جو کچھ بھی یاد آئے.'

" ایک بہت بڑا باغ...... میلا سا لگا ہوا........ رنگین شلواریں اور قمیضیں....... دوپٹے ہواؤں میں لہراتے ہوئے.... چنچل لڑکیوں کے ٹھٹھے..... بچوں کا شور......'

"' شاباش. شاباش، بولے جاؤ..... چپ کیوں ہو گئے؟'

" اب کچھ سنائی نہیں دیتا، کچھ نہیں دکھائی دیتا.

"' کیوں کیا ہوا؟'

" میرے سر میں درد ہو رہا ہے. ہر طرف اندھیرا چھایا ہوا ہے. ایک عجیب سا شور.......

"' شاباش! شاباش!'

" آگ لگ رہی ہے. ہر طرف شعلے ہی شعلے.... شور بڑھتا جا

रहा है.

"'शाबाश !' यह फसादियो का शोर है. यह वही लोग हैं, जिनके ज़ुल्म ने तुम्हारे घर-बार को तबाह कर डाला. तुम्हारे रिश्तेदारो का ख़ून कर डाला. तुम्हारे दिमाग़ को बिगाड़ दिया. सुनो, ग़ौर से सुना. यह क्या कह रहे हैं ?'

"कुछ सुनाई नही देता. शोर बहुत है. बस एक लफ़्ज़ समझ में आता है—मारो ! मारो !! मारो !!! ...... मुझे बचाओ डाक्टर साहब !'

"'घबराओ नहीं फिर ग़ौर से सुनो. यह लोग जो आग लगा रहे हैं, शोर मचा रहे हैं यह हिन्दू हैं या मुसलमान ? अभी पता लग जाता है कि तुम कौन हो !'

"और मेरे दिमाग़ में जैसे ख़तरे की घंटी बजी. अभी मालूम हो जायगा मैं कौन हूँ. अभी मालूम हो जायगा मै कौन हूँ—मैं मुसलमान हूँ मैने सरदार जी के घर वालो का, हज़ारो बेगुनाह सिक्खों का ख़ून किया है ....'

"मैं हिन्दू हूँ.........मैने हकीम जी के बच्चे और सैकड़ों मासूम मुसलमान बच्चो को क़त्ल किया है.'

"नहीं ! नही !!' मैं चिल्लाया—'मैं नहीं मालूम करना चाहता कि मैं कौन हूँ.' मैंने आँखे खोल दी. डाक्टर की नर्म आवाज़ के जादू को तोड़ डाला. मै कोच से उठ खड़ा हुआ. मैं डाक्टर को हैरान और परेशान छोड़ कर चला आया.

"मैं हिन्दू हूँ, मै मुसलमान हूँ. मैं मुसलमान हूँ, मैं हिन्दू हूँ. मैं क्या हूँ ? कुछ भी नहीं हूँ. मैं मुसलमान हूँ, मैं हिंदू हूँ.'

رہا ہے۔

'''شاباش!' یہ فسادیوں کا شور ہے۔ یہ وہی لوگ ہیں، جن کے ظلم نے تمہارے گھر بار کو تباہ کر ڈالا۔ تمہارے رشتے داروں کا خون کر ڈالا۔ تمہارے دماغ کو بگاڑ دیا۔ سنو، غور سے سنو۔ یہ کیا کہہ رہے ہیں؟'

"کچھ سنائی نہیں دیتا۔ شور بہت ہے۔ بس ایک لفظ سمجھ میں آتا ہے — مارو! مارو!! مارو!!!......... مجھے بچاؤ ڈاکٹر صاحب!'

'''گھبراؤ نہیں پھر غور سے سنو۔ یہ لوگ جو آگ لگا رہے ہیں، شور مچا رہے ہیں یہ ہندو ہیں یا مسلمان؟ ابھی پتہ لگ جاتا ہے کہ تم کون ہو!'

"اور میرے دماغ میں جیسے خطرے کی گھنٹی بجی۔ ابھی معلوم ہو جائیگا میں کون ہوں۔ ابھی معلوم ہو جائیگا میں کون ہوں — میں مسلمان ہوں۔ میں نے سردار جی کے گھر والوں کا، ہزاروں بیگناہ سکھوں کا خون کیا ہے....'

"میں ہندو ہوں........ میں نے حکیم جی کے بچے اور سیکڑوں معصوم مسلمان بچوں کو قتل کیا ہے۔'

"نہیں! نہیں!!' میں چلایا — 'میں نہیں معلوم کرنا چاہتا کہ میں کون ہوں' میں نے آنکھیں کھول دیں۔ ڈاکٹر کی نرم آواز کے جادو کو توڑ ڈالا۔ میں کوچ سے اٹھ کھڑا ہوا۔ میں ڈاکٹر کو حیران اور پریشان چھوڑ کر چلا آیا۔

"میں ہندو ہوں، میں مسلمان ہوں۔ میں مسلمان ہوں، میں ہندو ہوں۔ میں کیا ہوں؟ کچھ بھی نہیں ہوں۔ میں مسلمان ہوں، میں ہندو ہوں'

"रास्ते भर मेरे कानों में यही आवाज़ें आती रहीं.

"न जाने मैं किस रास्ते किस इलाक़े से होकर चला जा रहा था कि किसी ने टोका—'ए किधर जाता है ? कौन है तू ?' वह एक मुसलमान मवाली था. उसकी आंखों मे ख़ून, उसके हाथ में एक छुरा था. मैंने उसका सवाल सुना, मगर समझा नहीं. उसकी तरफ़ एक नजर देख कर फिर अपने रास्ते चल पड़ा. मैं उसी तरह बड़बड़ाये जा रहा था—'मैं हिन्दू हूँ, मैं ... ..'

"अभी मैं 'मैं मुसलमान हूँ' न कह पाया था कि उसका छुरा मेरी कमर में धँस गया. यही घाव जो आप देख रहे हैं, 'काफिर का बच्चा' मैं चकराया, मगर गिरते गिरते सँभल गया. चलता ही रहा. अगरचे मेरे पीछे ख़ून की एक गहरी लकीर सड़क पर पड़ती जा रही थी, तुम्हें यक़ीन नहीं आता ? मैं मर रहा हूँ, मुझे तुमसे सच्चाई का सर्टिफिकेट नहीं चाहिये ....'

"हाँ तो गिरता पड़ता किसी और सड़क पर निकल गया. इस बार एक हिंदू गुण्डे ने मुझे रोका. 'ऐ, कौन है तू ?'

"मैं मुसलमान हूँ, मैं.........' और अभी 'हिंदू हूँ' न कह पाया था कि उसकी तेज़ धार वाली खखरी ने मेरा पेट फाड़ दिया ....'

"तो इस तरह यह दोनों घाव खाये हैं मैंने. मुझे हिंदू मुसलमान दोनो ने मारा है, तभी तो मै कहता हूँ डाक्टर साहब कि तुम मुझे नही बचा सकते और न तुम सब बचा सकते हो जो मेरे मरने की राह देख रहे हो. और सच्ची बात यह है कि तुम लोग मुझे बचाना चाहते ही नहीं. अगर मैं मरते मरते यह कह दूं कि मैं हिन्दू हूँ तो यह हिंदू वीर फ़ौरन मेरे बदले चार मुसलमानो को

"راستے بھر میرے کانوں میں یہی آوازیں آتی رہیں۔

"نہ جانے میں کس راستے کس علاقے سے ہو کر چلا جا رہا تھا کہ کسی نے ٹوکا — 'اے کدھر جاتا ہے؟ کون ہے تو؟' وہ ایک مسلمان موالی تھا۔ اس کی آنکھوں میں خون، اس کے ہاتھ میں ایک چھرا تھا۔ میں نے اس کا سوال سنا، مگر سمجھا نہیں۔ اس کی طرف ایک نظر دیکھ کر پھر اپنے راستے چل پڑا۔ میں اسی طرح بڑبڑائے جا رہا تھا — 'میں ہندو ہوں، میں......'

"ابھی میں 'میں مسلمان ہوں' نہ کہہ پایا تھا کہ اس کا چھرا میری کمر میں دھنس گیا۔ یہی گھاؤ جو آپ دیکھ رہے ہیں، 'کافر کا بچہ' میں چکرایا، مگر گرتے گرتے سنبھل گیا۔ چلتا ہی رہا۔ اگرچہ میرے پیچھے خون کی ایک گہری لکیر سڑک پر پڑتی جا رہی تھی، تمہیں یقین نہیں آتا؟ میں مر رہا ہوں، مجھے تم سے سچائی کا سرٹیفکٹ نہیں چاہیے......'

"ہاں تو گرتا پڑتا کسی اور سڑک پر نکل گیا۔ اس بار ایک ہندو گنڈے نے مجھے روکا۔ 'اے، کون ہے تو؟'

"میں مسلمان ہوں، میں......' اور ابھی 'ہندو ہوں' نہ کہہ پایا تھا کہ اس کی تیز دھار والی کھوکھری نے میرا پیٹ پھاڑ دیا......'

"تو اس طرح یہ دونوں گھاؤ کھائے ہیں میں نے۔ مجھے ہندو مسلمان دونوں نے مارا ہے، تبھی تو میں کہتا ہوں ڈاکٹر صاحب کہ تم مجھے نہیں بچا سکتے۔ اور نہ تم سب بچا سکتے ہو جو میرے مرنے کی راہ دیکھ رہے ہو۔ اور سچی بات یہ ہے کہ تم لوگ مجھے بچانا چاہتے ہی نہیں۔ اگر میں مرتے مرتے یہ کہہ دوں کہ میں ہندو ہوں تو یہ ہندو ویر فوراً میرے بدلے چار مسلمانوں کو

क़त्ल करने का बीड़ा उठा लेंगे और अगर मैं कहूँ कि मुसलमान हूँ तो यह बहादुर मुसलमान पूरी हिन्दू क़ौम से मेरा बदला लेने को तैयार हो जायँगे. और मैं हँस रहा हूँ, क्योंकि मुझे याद आ गया है कि मैं कौन हूँ. अपनी घरवाली की आँखें, अपने बच्चे की बातें, अपना खेत, अपना घर बार, जो जल चुका है. मुझे सब याद आ गया है. अब जब मैं मर रहा हूँ........तुम सब बेकार इन्तज़ार कर रहे हो. मेरी ज़बान से हरगिज़ न निकलेगा कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान, न मेरे हिन्दू क़ातिल को मालूम होगा न मुसलमान क़ातिल को कि उनमे से किसने गलती से अपनी ही क़ौम के आदमी को मार डाला. उनसे मैं यही बदला ले रहा हूँ. उनसे ही नही, उन जैसे हज़ारों हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों से जिन्होने मेरे देश पंजाब को मटियामेट कर डाला. मेरी बूढ़ी भारतमाता के सफ़ेद बालो मे ख़ून की मेंहदी मल दी. मैं हिन्दू था या मुसलमान ? मुसलमान था या हिन्दू ? यह सवाल एक भूत बन कर उनके दिमाग़ों पर मँडलाता रहेगा. यह सवाल उनके दिन का आराम और रातों की नींद उड़ा देगा. यह सवाल उनको उनकी संतान को और उनकी संतान की संतानों को कभी चैन से न बैठने देगा. मेरा बदला बहुत भयानक होगा.........जाओ भाई जाओ. अपना काम करो. मेरे मरने की राह कब तक देखोगे. मैं तो देर का मर चुका हूँ. यक़ीन नहीं होता तो सामने वाले डाक्टर को बुला कर मुआइना करा लो. अब तो मेरी लाश भी ठंडी हो चुकी है. यह और बात है कि मैं कभी नहीं मरूँगा.

"अब भी जानना चाहते हो कि मैं क्यों हँस रहा हूँ ?"

قتل کرنے کا بیڑا اُٹھا لیں گے اور اگر میں کہوں کہ مسلمان ہوں تو یہ بہادر مسلمان پوری ہندو قوم سے میرا بدلہ لینے کو تیار ہو جائیں گے۔ اور میں ہنس رہا ہوں، کیوں کہ مجھے یاد آ گیا ہے کہ میں کون ہوں۔ اپنی گھر والی کی آنکھیں، اپنے بچے کی باتیں، اپنا کھیت، اپنا گھر بار، جو جل چکا ہے، مجھے سب یاد آ گیا ہے۔ اب جب میں مر رہا ہوں.........تم سب بیکار انتظار کر رہے ہو۔ میری زبان سے ہرگز نہ نکلے گا کہ میں ہندو ہوں یا مسلمان، نہ میرے ہندو قاتل کو معلوم ہوگا نہ مسلمان قاتل کو کہ اُن میں سے کس نے غلطی سے اپنی ہی قوم کے آدمی کو مار ڈالا۔ اُن سے میں یہی بدلہ لے رہا ہوں۔ اُن سے ہی نہیں، اُن جیسے ہزاروں ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں سے جنہوں نے میرے دیش پنجاب کو مٹیا میٹ کر ڈالا۔ میری بوڑھی بھارت ماتا کے سفید بالوں میں خون کی مہندی مل دی۔ میں ہندو تھا یا مسلمان؟ مسلمان تھا یا ہندو؟ یہ سوال ایک بھوت بن کر اُن کے دماغوں پر منڈلاتا رہے گا۔ یہ سوال اُن کے دن کا آرام اور راتوں کی نیند اُڑا دے گا۔ یہ سوال اُن کو اُن کی سنتان کو اور اُن کی سنتان کی سنتانوں کو کبھی چین سے نہ بیٹھنے دے گا۔ میرا بدلہ بہت بھیانک ہوگا.........جاؤ بھائی جاؤ۔ اپنا کام کرو۔ میرے مرنے کی راہ کب تک دیکھو گے۔ میں تو دیر کا مر چکا ہوں۔ یقین نہیں ہوتا تو سامنے والے ڈاکٹر کو بُلا کر معائنہ کرا لو۔ اب تو میری لاش بھی ٹھنڈی ہو چکی ہے۔ یہ اور بات ہے کہ میں کبھی نہیں مروں گا۔

"اب بھی جاننا چاہتے ہو کہ میں کیوں ہنس رہا ہوں؟"

हिन्द में कई क़ौमियतों का उसूल

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

दुनिया राष्ट्रीयता (क़ौमियत) की सीढ़ी से गुज़र कर अंतर्राष्ट्रीयता (बैनुल अक़्वामियत) की ओर जाना चाहती है. यह चीज़ उस वक़्त ज़रूर अहम थी जब क़ौमियत तहज़ीब की उस सीढ़ी पर थी जब दुनिया में सांइस, इल्म व हुनर का इन्क़लाब शुरू हो रहा था, जिसके बिना दुनिया तरक़्क़ी की मौजूदा ऊँची सीढ़ी तक नहीं पहुँच सकती थी. मगर उस सीढ़ी से गुज़र चुकने के बाद फिर उसकी तरफ़ वापस जाना समझदारी से नासमझी और तरक़्क़ी से पतन की ओर जाना है. हिन्द में भी कई क़ौमियतों का सवाल पैदा करना इस बड़े उसूल का विरोध करना है. सिर्फ़ उसूल के ख़याल से ही नहीं, बल्कि अमली तौर पर भी ग़ौर करने से यह बात ज़रूरी साबित होगी कि हिन्द के लिये दुनिया की उन्नत या तरक़्क़ीयाफ़्ता क़ौमों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना ज़रूरी है.

क़ौमियत क्या है ?—अक्सर राष्ट्र या क़ौम कहलाने के लिये भाषा और संस्कृति की एकता, एक जाति होना, भौगोलिक (जुग़राफ़ियाई) एकता, एक धर्म, एक इरादा और एक आर्थिक बुनियाद को ज़रूरी माना जाता है. हो सकता है कि किसी ज़माने में यह सब बातें ज़रूरी रही हों, पर आज यह ज़रूरी नहीं रहा कि कोई एक क़ौम बनने के लिये यह सब बातें ज़रूरी हों. वैसे दरमियानी तबक़ो

ہند میں کئی قومیتوں کا اصول

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

دنیا راشٹریتا (قومیت) کی سیڑھی سے گزر کر انتر راشٹریتا (بین الاقوامیت) کی اور جانا چاہتی ہے۔ یہ چیز اُس وقت ضرور اہم تھی جب قومیت تہذیب کی اُس سیڑھی پر تھی جب دُنیا میں سائنس، علم و ہنر کا انقلاب شروع ہو رہا تھا، جس کے بنا دُنیا ترقی کی موجودہ اونچی سیڑھی تک نہیں پہنچ سکتی تھی۔ مگر اُس سیڑھی سے گزر چکنے کے بعد پھر اُس کی طرف واپس جانا سمجھداری سے ناسمجھی اور ترقی سے پتن کی اور جانا ہے۔ ہند میں بھی کئی قومیتوں کا سوال پیدا کرنا اِس بڑے اصول کا ورودھ کرنا ہے۔ صرف اصول کے خیال سے ہی نہیں، بلکہ عملی طور پر بھی غور کرنے سے یہ بات ضروری ثابت ہوگی کہ ہند کے لئے دُنیا کی اُنّت یا ترقی یافتہ قوموں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملا کر آگے بڑھنا ضروری ہے۔

قومیت کیا ہے؟— اکثر راشٹر یا قوم کہلانے کے لئے بھاشا اور سنسکرتی کی ایکتا، ایک جاتی ہونا، بھوگولک (جغرافیائی) ایکتا، ایک دھرم، ایک ارادہ اور ایک آرتھک بنیاد کو ضروری مانا جاتا ہے۔ ہو سکتا ہے کہ کسی زمانے میں یہ سب باتیں ضروری رہی ہوں، پر آج یہ ضروری نہیں رہا کہ کوئی ایک قوم بننے کیلئے یہ سب باتیں ضروری ہوں۔ ویسے درمیانی طبقوں

के लेखको ने इनमें से कई बातो को ग़ैर जरूरी बतलाया है. जे० एच० रोज़ का कहना है कि क़ौमियत की एक बहुत मोटी क़िस्म ही जाति पर मुनहसिर है. हेज़)का कहना है कि आज की दुनिया में शुद्धता या खालिसपन सिर्फ असभ्य पिछड़ी जातियों ही मे मिलता है. पिलसबेरी का कहना है कि क़ौमियत के लिये आम तौर पर एक जाति का होना अब बिलकुल जरूरी नहीं रह गया. किसी भी क़ौम मे कोई भी खालिस नस्ल नहीं है. हर जगह के आदमी वर्णसंकर या दोग़ले हैं. यहाँ तक कि मसोलिनी ने भी कहा है कि जाति सिर्फ एक भावना है, असलियत नहीं. स्वीटज़रलैंड और कैनाडा इस बात की मिसालें हैं कि कैसे अलग अलग जातियों के मेल से भी मजबूत क़ौम बन सकती है. भाषा भी कोई ऐसी शर्त नहीं है. स्वीटज़रलैंड मे तीन भाषायें बोली जाती हैं जब कि वहाँ के रहने वाले एक क़ौम माने जाते है. मज़हब और क़ौम का रिश्ता तो और भी कमज़ोर है क्योंकि वह इल्म व हुनर जिस पर क़ौमियत का महल बना है, अगर किसी का सबसे बड़ा दुश्मन है तो मज़हबीयत का. फ्रांस के क़ौमी इन्क़लाबियों ने मज़हब से जंग का एलान कर दिया. नई क़ौमियत ने, जो असली क़ौमियत थी, सारी बातों को पैसे से खरीदना और बेचना शुरू कर दिया. असल बात तो यह है कि क़ौमों में भाषा, तहज़ीब, संस्कृति, जाति वग़ैरह की एकता उनके आर्थिक एके के लाज़मी नतीजे हैं न कि इनमें से कोई एक भी किसी समय इसका कारण रहा है.यह ज़रूर है कि इनमें से हर एक ने क़ौम बनाने में किसी वक्त कहीं न कहीं बहुत बड़ा काम किया है. लेकिन आज के जमाने में साइंस ने मशीनों की ईजाद से आर्थिक

کے لیکھکوں نے اِن میں سے کئی باتوں کو غیر ضروری بتلایا ہے۔ جے۔ ایچ۔ روز کا کہنا ہے کہ قومیت کی ایک بہت موٹی قسم ہی جاتی پر منحصر ہے۔ ہیز کا کہنا ہے کہ آج کی دُنیا میں شُدھتا یا خالص پَن صرف اسبھیہ پچھڑی جاتیوں ہی میں ملتا ہے پلسبوری کا کہنا ہے کہ قومیت کے لئے عام طور پر ایک جاتی کا ہونا اب بالکل ضروری نہیں رہ گیا۔ کسی بھی قوم میں کوئی بھی خالص نسل نہیں ہے۔ ہر جگہ کے آدمی ورن سنکر یا دوگلے ہیں۔ یہاں تک کہ مسولینی نے بھی کہا ہے کہ جاتی صرف ایک بھاؤنا ہے، اصلیت نہیں۔ سوئٹزرلینڈ اور کناڈا اس بات کی مثالیں ہیں کہ کیسے الگ الگ جاتیوں کے میل سے بھی مضبوط قوم بن سکتی ہے۔ بھاشا بھی کوئی ایسی شرط نہیں ہے۔ سوئٹزرلینڈ میں تین بھاشائیں بولی جاتی ہیں جبکہ وہاں کے رہنے والے ایک قوم مانے جاتے ہیں۔ مذہب اور قوم کا رشتہ تو اور بھی کمزور ہے کیونکہ وہ علم و ہنر جس پر قومیت کا محل بنا ہے، اگر کسی کا سب سے بڑا دشمن ہے تو مذہبیت کا۔ فرانس کے قومی انقلابیوں نے مذہب سے جنگ کا اعلان کردیا۔ نئی قومیت نے، جو اصلی قومیت تھی، ساری باتوں کو پیسے سے خریدنا اور بیچنا شروع کردیا۔ اصل بات تو یہ ہے کہ قوموں میں بھاشا، تہذیب، سنسکرتی، جاتی وغیرہ کی ایکتا اُن کے آرتھک ایکے کے لازمی نتیجے ہیں نہ کہ ان میں سے کوئی ایک بھی کسی سمے اسکا کارن رہا ہے۔ یہ ضرور ہے کہ ان میں سے ہر ایک نے قوم بنانے میں کسی وقت کہیں نہ کہیں بہت بڑا کام کیا ہے۔ لیکن آج کے زمانے میں سائنس نے مشینوں کی ایجاد سے آرتھک

पहलू को इतना मजबूत बना दिया है कि उसके सामने इनकी
अहमियत और भी कम हो गई है. आज क़ौमियत के लिये आर्थिक
बुनियाद ज्यादा से ज्यादा अहम हो गई है. आज एक मजबूत
आर्थिक बुनियाद सभ्यता और संस्कृति के फ़र्क़ों को तोड़ने में
इतनी ज्यादा कामयाब होती है कि पुराना नस्ली ख़ालिसपन
कोई अहमियत नहीं रखता. इसका यह मतलब नहीं कि क़ौम में
जबान और तहज़ीब व तमद्दुन की एकता जरूरी नहीं बल्कि
इसका अर्थ यह है कि आज की एकता पुराने नस्ली ख़ालिसपन पर
•नहीं, बल्कि इख़्तिलाफ़ों, या भेदों के मेल पर मुनहसर होती है.
लेकिन मशीनों ने अपनी एकी करण (unification) की ताक़त
से क़ौम को ऐसे ही इख़्तिलाफ़ का मेल बना दिया है.

हिन्द की समस्यायें—ऊपर मैंने कहा है कि अंतर्राष्ट्रीयता के इस
जमाने में क़ौमियत का सवाल तरक़्क़ी के ख़िलाफ़ है. मगर यह
बात पिछड़े हुए देशों के लिये हर मानी में लागू नहीं होती भूगोल
की निगाह से: हिन्द एक देश है जो उत्तर में हिमालय जैसे पहाड़
और दूसरी दिशाओं में समुन्दरों से घिरा है. अलग अलग किस्म
की आबोहवा और क़ुदरती हिस्सों के होते हुए भी यह चहारदीवारी
सैकड़ों बरस से हिन्द के निवासियों को एक मिली जुली सभ्यता
और संस्कृति के धागे में बांधती रही है. लेकिन इतना काफ़ी नहीं
था. हिन्द के अलग-अलग हिस्सों में मेल-मिलाप, आने-
जाने और आपस के संबन्ध के लिये आज के साइंसी
जरियों, रेल, तार, डाक और मशीनों का होना जरूरी
था. साइंस ने जैसे और देशों की क़ौमी तहरीक या आन्दोलन में

پہلو کو اتنا مضبوط بنا دیا ہے کہ اس کے سامنے ان کی اہمیت اور بھی
کم ہو گئی ہے. آج قومیت کیلئے آرتھک بنیاد زیادہ سے زیادہ اہم
ہو گئی ہے. آج ایک مضبوط آرتھک بنیاد سبھیتا اور سنسکرتی
کے فرقوں کے توڑنے میں اتنی زیادہ کامیاب ہوتی ہے کہ
پرانا نسلی خالص پن کوئی اہمیت نہیں رکھتا. اس کا یہ مطلب
نہیں کہ قوم میں زبان اور تہذیب و تمدن کی ایکتا ضروری نہیں بلکہ
اس کا ارتھ یہ ہے کہ آج کی ایکتا پرانے نسلی خالص پن پر نہیں،
بلکہ اختلافوں یا بھیدوں کے میل پر منحصر ہوتی ہے. لیکن
مشینوں نے اپنی ایکی کرن (unification) کی طاقت سے
قوم کو ایسے ہی اختلاف کا میل بنا دیا ہے.

ہند کی سمسیائیں — اوپر میں نے کہا ہے کہ انترراشٹریتا
کے اس زمانے میں قومیت کا سوال ترقی کے خلاف ہے.
مگر یہ بات بچھڑے ہوئے دیشوں کے لئے ہر معنی میں لاگو نہیں ہوتی.
بھوگول کی نگاہ سے ہند ایک دیش ہے جو اُتر میں ہمالہ جیسے پہاڑ اور
دوسری دشاؤں میں سمندروں سے گھرا ہے. الگ الگ قسم کی آب و
ہوا اور قدرتی حصوں کے ہوتے ہوئے بھی یہ چہار دیواری سیکڑوں
برس سے ہند کے نواسیوں کو ایک ملی جلی سبھیتا اور سنسکرتی
کے دھاگے میں باندھتی رہی ہے. لیکن اتنا کافی نہیں تھا. ہند کے
الگ الگ حصوں میں میل ملاپ، آنے جانے اور آپس کے سمبندھ
کے لئے آج کے سائنسی ذریعوں، ریل، تار، ڈاک، اور مشینوں کا ہونا
ضروری تھا. سائنس نے جیسے اور دیشوں کی قومی تحریک یا آندولن میں

मदद पहुँचाई, या यों कहिये कि जैसे दूसरे देशों के राष्ट्रीय आन्दोलन की बुनियाद साइंस थी, वैसी ही हिन्द के लिये भी इसकी जरूरत थी. मगर इसके पहले कि हिन्द इस साइंसी और मशीनी तरक़्क़ी की ओर क़दम बढ़ा सके, योरप ने पहले ही इस दिशा में इतनी तरक़्क़ी कर ली कि उसे अपनी क़ौमियत को साम्राजवादी रूप देने की सूझी जिसके सिलसिले में उसे यहाँ उन मशीनों को चालू करना जरूरी हो गया जिनके बिना उसकी तिजारती तरक़्क़ी ग़ैर मुमकिन-सी थी. पर इस ग़ैर मुल्की ब्योपार के सिलसिले में भी जो उद्योगी या सनअती तरक़्क़ी इस देश में हुई उससे उसके क़ौमी आन्दोलन में पहले से कहीं ज्यादा मदद मिली. इस पर भी हिन्द की क़ौमियत का विकास लँगड़ा-लूला ही रहता अगर आजादी का आन्दोलन उसका साथ न देता, क्योंकि ब्रिटिश साम्राजशाही क़ौमी तरक़्क़ी की उस बुनियाद को यानी हिन्द के उद्योगी इन्क़लाब को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी. वह ज्यादा से ज्यादा उसे लुंज-पुंज हालत में देख सकती थी. इस लिये हिन्द के क़ौमी इन्क़लाब ने उसके आजादी के इन्क़लाब से मिलकर आगे बढ़ना चाहा. इस सिलसिले में दो तरह के ख़याल पेश हुए. एक के मुताबिक़ हिन्द की क़ौमियत इस मुल्क की राजकाजी आजादी के साथ पूरन हो जाती है. दूसरे के मुताबिक़ किसी पिछड़े हुए देश के क़ौमी इन्क़लाब में आज की साम्राजवादी दुनिया में इतना जोर नहीं आ सकता जितना पहिले के क़ौमी इन्क़लाबों में था. आज क़ौमी इन्क़लाब, एक पिछड़े हुए मुल्क का क़ौमी इन्क़लाब, अपनी मदद के लिये एक नया और अन्तर्राष्ट्रीय इन्क़लाब खोजता है. दूसरे

مدد پہنچائی، یا یوں کہئے کہ جیسے دوسرے دیشوں کے راشٹریہ آندولن کی بنیاد سائنس تھی، ویسی ہی ہند کے لئے بھی اس کی ضرورت تھی. مگر اس کے پہلے کہ ہند اس سائنسی اور مشینی ترقی کی اور قدم بڑھا سکے، یورپ نے پہلے ہی اس دشا میں اتنی ترقی کر لی کہ اُسے اپنی قومیت کو سامراج وادی روپ دینے کی سوجھی جس کے سلسلہ میں اُسے یہاں اُن مشینوں کو چالو کرنا ضروری ہو گیا جن کے بنا اُس کی تجارتی ترقی غیر ممکن سی تھی. پر اس غیر ملکی بیوپار کے سلسلہ میں بھی جو اُدیوگی یا صنعتی ترقی اس دیش میں ہوئی اُس سے اس کے قومی آندولن میں پہلے سے کہیں زیادہ مدد ملی. اس پر بھی ہند کی قومیت کا وکاس لنگڑا لولا ہی رہتا اگر آزادی کا آندولن اس کا ساتھ نہ دیتا، کیونکہ برٹش سامراج شاہی قومی ترقی کی اُس بنیاد کو یعنی ہند کے اُدیوگی انقلاب کو برداشت نہیں کر سکتی تھی. وہ زیادہ سے زیادہ اُسے لنج پنج حالت میں دیکھ سکتی تھی. اس لئے ہند کے قومی انقلاب نے اُس کے آزادی کے انقلاب سے مل کر آگے بڑھنا چاہا. اس سلسلہ میں دو طرح کے خیال پیش ہوئے. ایک کے مطابق ہند کی قومیت اس مُلک کی راج کاجی آزادی کے ساتھ پورن ہو جاتی ہے. دوسرے کے مطابق کسی پچھڑے ہوئے دیش کے قومی انقلاب میں آج کی سامراج وادی دنیا میں اتنا زور نہیں آ سکتا جتنا پہلے کے قومی انقلابوں میں تھا. آج قومی انقلاب، ایک پچھڑے ہوئے ملک کا قومی انقلاب، اپنی مدد کے لئے ایک نیا اور انتر راشٹری انقلاب کھوجتا ہے. دوسرے

लफ़्ज़ों में, जब तक इन पिछड़े हुए मुल्कों के इन्क़लाबी मजदूरों व किसानों के क़ौमी इन्क़लाब को, इन्हें गुलाम रखने वाले साम्राजवादियों के ख़िलाफ़ दुनिया के मजदूर अपनी अन्तर्राष्ट्रीय तहज़ीब के साथ मदद न पहुँचायें, यह ग़ैर मुमकिन है कि पिछड़ा हुआ मुल्क क्या इक़्तसादी क्या फौजी, और क्या राजकाजी दायरे में इनका मुक़ाबला कर सके. इस तरह हिन्द की क़ौमी तहरीक दुनिया के शोषित मजदूर की अन्तर्राष्ट्रीय तहरीक से मिल जाती है और इसकी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता के रूप में तब्दील हो जाती है. इसके ख़िलाफ़ जो लोग इसे महज़ क़ौमी चहार दीवारी के अन्दर ही सीमित रखना चाहते हैं, वह इस मुल्क की उन लुटेरी जमाअतों के ख़ेमे में चले जाते हैं जो ब्रिटिश साम्राज शाही के छोटे साझीदार बनकर रहने में ही अपनी आज़ादी समझते हैं. मगर जैसा कि मैंने बतलाया कि अगर हमारा मक़सद आज़ादी की इस लुञ्जपुञ्ज सूरत से न हो तो इस देश के क़ौमी इन्क़लाब में अपने आप इतनी ताकत नहीं है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके. और अगर सारे हिंद के क़ौमी इन्क़लाब में इतनी ताक़त नहीं है, तो फिर मुल्क को टुकड़े टुकड़े करके कोई ताक़त लाना ख़्वाब की बात नहीं है तो क्या है ?

देश का बँटवारा—मुल्क के बँटवारे की पाकिस्तानी स्कीम ने हिन्द को अब तक ब्रिटिश सरकार की अजीब गुलामी मे जकड़ रखा है. आज काश्मीर में,खुली जंग हो रही है.हैदराबाद की अजीब कैफ़ियत है. मुल्क अकाल की हालत से गुज़र रहा है. मुनाफ़ाख़ोरी, चोरबाज़ारी और लूट का बज़ार गर्म है. सरकार कोई भी समस्या

لفظوں میں، جب تک ان پچھڑے ہوئے ملکوں کے انقلابی مزدوروں و کسانوں کے قومی انقلاب کو، انھیں غلام رکھنے والے سامراج وادیوں کے خلاف دُنیا کے مزدور اپنی انتراشٹریہ تہذیب کے ساتھ مدد نہ پہنچائیں، یہ غیر ممکن ہے کہ پچھڑا ہوا ملک کیا اقتصادی، کیا فوجی، اور کیا راج کاجی دائرے میں ان کا مقابلہ کر سکے اس طرح ہند کی قومی تحریک دُنیا کے شوشت مزدور کی انتراشٹریہ تحریک سے مل جاتی ہے اور اس کی راشٹریتا، انتراشٹریتا کے روپ میں تبدیل ہو جاتی ہے۔ اس کے خلاف جو لوگ اِسے محض قومی چہار دیواری کے اندر ہی سیمیت رکھنا چاہتے ہیں، وہ اس ملک کی ان لٹیری جماعتوں کے خیمے میں چلے جاتے ہیں جو برٹش سامراج شاہی کے چھوٹے ساجھے دار بن کر رہنے میں ہی اپنی آزادی سمجھتے ہیں۔ مگر جیسا کہ میں نے بتلایا کہ اگر ہمارا مقصد آزادی کی اس ننگ بُچ صورت سے نہ ہو تو اس دیش کے قومی انقلاب میں اپنے آپ اتنی طاقت نہیں ہے کہ وہ اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکے۔ اور اگر سارے ہند کے قومی انقلاب میں اتنی طاقت نہیں ہے، تو پھر ملک کو ٹکڑے ٹکڑے کرکے کوئی طاقت لانا خواب کی بات نہیں ہے تو کیا ہے؟

دیش کا بٹوارہ — ملک کے بٹوارے کی پاکستانی اسکیم نے ہند کو ابتک برٹش سرکار کی عجیب غلامی میں جکڑ رکھا ہے۔ آج کشمیر میں کھلی جنگ ہو رہی ہے۔ حیدرآباد کی عجیب کیفیت ہے۔ ملک اکال کی حالت سے گزر رہا ہے۔ منافع خوری، چور بازاری اور لوٹ کا بازار گرم ہے۔ سرکار کوئی بھی سمسیا

सुलझाने में कामयाब नहीं हो रही है. फिर भी हम आज़ादी के नाम पर इन्तज़ार कर रहे हैं कि कुछ दिनों में हमारी हालत सुधर जायगी. हम नहीं सोच पाते कि जिस साम्राजशाही ने हमारे सामने मौजूदा झगड़े पेश किये हैं, वह इसी तरह के न जाने कितने झगड़े खड़े करके हमें सदा फसाये रह सकती है. और बदक़िस्मती देखिये ! जो सवाल हमारे सामने पेश हैं उन्हें तो हम हल नहीं कर पा रहे हैं उलटा नये सवाल हम पैदा कर रहे हैं. ज़रूरत है अन्तर्राष्ट्रीयता की, हम जा रहे हैं एक क़दम पीछे प्रान्तीयता की तरफ़. आज कुछ प्रान्त अलग मुल्क बनना चाहते हैं. इसमें बंगाल का सबसे पहला नम्बर आता है. आवाज़ें तो दक्खिन और महाराष्ट्र की ओर से भी उठ रही हैं, मगर बंगाल का नम्बर सबसे आगे है. बंगाल की क़रीब क़रीब सभी राजकाजी पार्टियाँ पूर्बी बिहार—उद्योगी बिहार—को हड़पने पर तुली हुई हैं. इनमें अपने को मार्क्सवादी कहने वाली पार्टियाँ भी शामिल हैं. मार्क्स ने कभी भाषा, तहज़ीब व तमद्दुन को आर्थिक बुनियाद की बाहरी बनावट बताया था. आज इस देश के नामधारी मार्क्स-वादियों के लिये यह बाहरी बनावट ही सब कुछ बन गई है. वह असलियत को टुकड़े टुकड़े करके नक़ल को हिफ़ाज़त करना चाहते हैं. दरमियानी तबक़े के तालीम याफ्ता लोग जब किसी उसूल को बिना हज़म किये हुए अख़्तियार कर लेते हैं तो यही हाल होता है. नतीजा क्या होगा ? अगर उनकी माँग मान ली गई तो मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों की तहज़ीब व तमद्दुन का जो कुछ एका हुआ है वह नष्ट हो जायगा. सूबों में नई समस्यायें पैदा हो

سلجھانے میں کامیاب نہیں ہو رہی ہے۔ پھر بھی ہم آزادی کے نام پر انتظار کر رہے ہیں کہ کچھ دنوں میں ہماری حالت سدھر جائے گی۔ ہم نہیں سوچ پاتے کہ جس سامراج شاہی نے ہمارے سامنے موجودہ جھگڑے پیش کئے ہیں، وہ اسی طرح کے نہ جانے کتنے جھگڑے کھڑے کرکے ہمیں سدا پھنسائے رہ سکتی ہے۔ اور بدقسمتی دیکھئے! جو سوال ہمارے سامنے پیش ہیں انھیں تو ہم حل نہیں کر پا رہے ہیں الٹا نئے سوال ہم پیدا کر رہے ہیں۔ ضرورت ہے انترراشٹریتا کی، ہم جا رہے ہیں ایک قدم پیچھے پرانتیتا کی طرف۔ آج کچھ پرانت الگ ملک بننا چاہتے ہیں۔ اس میں بنگال کا سب سے پہلا نمبر آتا ہے۔ آوازیں تو دکھن اور مہاراشٹر کی اور سے بھی اٹھ رہی ہیں، مگر بنگال کا نمبر سب سے آگے ہے۔ بنگال کی قریب قریب سبھی راج کاجی پارٹیاں پوربی بہار — اُدیوگی بہار — کو ہڑپنے پر تلی ہوئی ہیں۔ ان میں اپنے کو مارکس وادی کہنے والی پارٹیاں بھی شامل ہیں۔ مارکس نے کبھی بھاشا، تہذیب و تمدن کو آرتھک بنیاد کی باہری بناوٹ بتایا تھا۔ آج اس دیش کے نام دھاری مارکس وادیوں کیلئے یہ باہری بناوٹ ہی سب کچھ بن گئی ہے۔ وہ اصلیت کو ٹکڑے ٹکڑے کرکے نقل کی حفاظت کرنا چاہتے ہیں۔ درمیانی طبقے کے تعلیم یافتہ لوگ جب کسی اصول کو بنا ہضم کئے ہوئے اختیار کر لیتے ہیں تو یہی حال ہوتا ہے۔ نتیجہ کیا ہوگا؟ اگر ان کی مانگ مان لی گئی تو ملک کے مختلف حصوں کی تہذیب و تمدن کا جو کچھ ایکا ہوا ہے، وہ نشٹ ہو جائے گا۔ صوبوں میں نئی سمسیائیں پیدا ہو

जायँगी. प्रान्तीयता का मरज़ और बढ़ जायगा, क़ौमी ताक़त और घट जायगी और हमें कमज़ोर पाकर साम्राजवादियों को लूटने का और ज्यादा मौक़ा मिल जायगा.

क़ौमों का आत्म निर्णय—बंगाली एक क़ौम है, पञ्जाबी एक दूसरी क़ौम है, गुजराती एक तीसरी, महाराष्ट्री एक चौथी अन्धरा एक पाँचवी वग़ैरा. यह धारना कहाँ तक सही है, ऊपर दी हुई कसौटियों पर तौलने से इसकी बे बुनियादी का साफ़ पता चल जाता है.

अक्सर लोग भाषा और रहन सहन के भेद को ही देखने के आदी होते हैं. वह यह देखने की कोशिश नहीं करते कि इस भेद में कितनी एकता है और आगे चलकर इन भेदों को दूर करके कितना एक रूप बनाया जा सकता है. यह अलग अलग रहने का ज़हर प्रान्तीयता का सूचक है. मगर ध्यान देने की बात है, और इस पर मैंने कई पिछले लेखों के ज़रिये काफी प्रकाश डाला है कि मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के सदियों के सम्पर्क ने अपनी असली तहज़ीब और तमद्दुन में इतनी एकता पैदा की है कि हर दिशा में हमारी तबीयतें अधिक से अधिक एक होती आई हैं. यहाँ तक कि आज हिन्द का काफी बड़ा पढ़ा लिखा तबक़ा है, जो न सिर्फ क़ौमी नुक़्ता-ए-नज़र से बल्कि अन्तार्राष्ट्रीय नुक़्ता-ए-नज़र से सोचता है. फिर ग़ौर करने की बात है कि क्या मुल्क के मुख़्तलिफ़ सूबों के निवासियों के रहन सहन और तहज़ीब व तमद्दुन में अगर कुछ फ़रक़ है तो उसे एके की ओर ले जाने के बजाय उसके कारन वहाँ के उद्योगों और नगरों को तितर बितर कर दिया जाय,

جائیں گی۔ پرانتیتا کا مرض اور بڑھ جائے گا، قومی طاقت اور گھٹ جائے گی اور ہمیں کمزور پاکر سامراج وادیوں کو لوٹنے کا اور زیادہ موقع مل جائے گا۔

قوموں کا آتم نرنے — بنگالی ایک قوم ہے، پنجابی ایک دوسری قوم ہے، گجراتی ایک تیسری، مہاراشٹر ایک چوتھی، اندھرا ایک پانچویں وغیرہ۔ یہ دھارنا کہاں تک صحیح ہے، اوپر دی ہوئی کسوٹیوں پر تولنے سے اس کی بے بنیادی کا صاف پتہ چل جاتا ہے۔

اکثر لوگ بھاشا اور رہن سہن کے بھید کو ہی دیکھنے کے عادی ہوتے ہیں۔ وہ یہ دیکھنے کی کوشش نہیں کرتے کہ اس بھید میں کتنی ایکتا ہے اور آگے چل کر ان بھیدوں کو دور کرکے کتنا ایک روپ بنایا جا سکتا ہے۔ یہ الگ الگ رہنے کا زہر پرانتیتا کا سوچک ہے۔ مگر دھیان دینے کی بات ہے، اور اس پر میں نے کئی پچھلے لیکھوں کے ذریعے کافی پرکاش ڈالا ہے، کہ ملک کے مختلف حصوں کے صدیوں کے سمپرک نے اپنی اصلی تہذیب اور تمدن میں اتنی ایکتا پیدا کی ہے کہ ہر دشا میں ہماری طبیعتیں ادھک سے ادھک ایک ہوتی آئی ہیں۔ یہاں تک کہ آج ہند کا کافی بڑا پڑھا لکھا طبقہ ہے، جو نہ صرف قومی نقطۂ نظر سے بلکہ انترراشٹریہ نقطۂ نظر سے سوچتا ہے۔ پھر غور کرنے کی بات ہے کہ کیا ملک کے مختلف صوبوں کے نواسیوں کا رہن سہن اور تہذیب و تمدن میں اگر کچھ فرق ہو تو اسے ایکے کی اور لیجانے کی بجائے اس کے کارن وہاں کے اُدیوگوں اور نگروں کو تتر بتر کر دیا جائے،

और देश को टुकड़ों में बाँट कर उसकी आर्थिक, राजकाजी बुनियाद को और भी ज़्यादा कमजोर बना दिया जाय ? नहीं तो फिर क़ौमों के आत्म निर्णय के उसूल का हिन्द में लागू करने का क्या मतलब है ?

अकसर रूस की भी मिसाल पेश की जाती है. मगर इस सिलसिले में यह आम तौर से भुला दिया जाता है कि जब लेनिन ने रूस की क़ौमों को आत्मनिर्णय का हक़ देने का एलान किया था, तो पहिले तो रूस की क़ौमें महान् रूस के मातहत डोमीनियन की सूरत में रह रही थीं, जिनसे महान् रूस राज के ख़िलाफ़ उनमें भारी असन्तोष था, दूसरे उनके इस असन्तोष का इस्तेमाल करके उनमें समाजवादी आन्दोलन के लिये हमदर्दी पैदा करना मुमकिन और जरूरी था. हिन्द में ऐसी कोई बात नहीं है. हिन्द के सभी सूबे एक ही दर्जे पर ब्रिटिश सरकार के मातहत गुलाम रहे हैं. एक दूसरे के भेदभाव के चाहे जितने कारन रहे हों, पर आर्थिक लूट जैसा कोई कारन नहीं था. राजकाजी ख़याल से क़ौमी तहरीक ने मुल्क भर के निवासियों में काफ़ी क़ौमियत और क़ौमी एकता का भाव पैदा किया है. क्या कोई इससे पीछे जाने के लिये तैयार है ? नहीं, सिर्फ़ उनको छोड़ कर जो प्रान्तीयता के ज़हरीले घूँट में भी मजा महसूस करते हैं.

اور دیش کو ٹکڑوں میں بانٹ کر اُس کی آرتھک، راج کاجی بنیاد کو اور بھی زیادہ کمزور بنا دیا جائے؟ نہیں تو پھر قوموں کے آتم نرنے کے اصول کو ہند میں لاگو کرنے کا کیا مطلب ہے۔

اکثر روس کی بھی مثال پیش کی جاتی ہے. مگر اس سلسلہ میں یہ عام طور سے بھلا دیا جاتا ہے کہ جب لینن نے روس کی قوموں کو آتم نرنے کا حق دینے کا اعلان کیا تھا، تو پہلے تو روس کی قومیں مہان روس کے ماتحت ڈومینین کی صورت میں رہ رہی تھیں، جن سے مہان روس راج کے خلاف اُن میں بھاری اسنتوش تھا، دوسرے اُن کے اس اسنتوش کا استعمال کر کے اُن میں سماج وادی آندولن کے لئے ہمدردی پیدا کرنا ممکن اور ضروری تھا. ہند میں ایسی کوئی بات نہیں ہے. ہند کے سبھی صوبے ایک ہی درجے پر برٹش سرکار کے ماتحت غلام رہے ہیں. ایک دوسرے کے بھید بھاؤ کے چاہے جتنے کارن رہے ہوں، پر آرتھک لوٹ جیسا کوئی کارن نہیں تھا. راج کاجی خیال سے قومی تحریک نے ملک بھر کے واسیوں میں کافی قومیت اور قومی ایکتا کا بھاؤ پیدا کیا ہے. کیا کوئی اس سے پیچھے جانے کے لئے تیار ہے؟ نہیں، صرف اُن کو چھوڑ کر جو پرانتیتا کے زہریلے گھونٹ میں بھی مزہ محسوس کرتے ہیں۔

मौलवी अहमद शाह

(भाई रतन लाल बंसल)

सन् १८५७ की हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई की बाबत अक्सर यह कहा जाता है कि यह लड़ाई सिर्फ़ उन राजाओं, नवाबों और सामन्तों की बग़ावत थी, जिनकी जायदादें या भत्ते कम्पनी की सरकार ने ज़ब्त कर लिये थे. इसी लिये आम जनता का इस लड़ाई मे कोई ख़ास हिस्सा नहीं था.

किसी हद तक यह बात ठीक भी है, लेकिन इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि उस सामन्तवादी ज़माने मे भी हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे दूरन्देश देशभक्त मौजूद थे, जिन्होंने इस कमज़ोरी को भॉप लिया था और आम जनता का पूरा सहयोग लेने की कोशिश की थी. ऐसे दूरन्देश देशभक्त नेताओं में एक ख़ास नाम मौलवी अहमद शाह का है.

मौलवी अहमद शाह फ़ैज़ाबाद ज़िले के एक बड़े ज़मींदार थे, लेकिन ज़मींदारों की ऐश परस्ती उनको छू भी नहीं गई थी. अपने अच्छे चाल चलन और राजकाजों व मज़हबी जानकारी के लिये वह इलाक़े भर में मशहूर थे और राजाओं व नवाबों के महलों से लेकर किसानों की मामूली झोपड़ियों तक मे उनका नाम बड़ी इज़्ज़त से लिया जाता था.

मौलवी अहमद शाह न तो सिर्फ़ मज़हबी किताबों मे ही डूबे रहने वाले मौलवी थे, और न रिआया से टैक्स वसूल करके उस पर

مولوی احمد شاہ

(بھائی رتن لال بنسل)

۱۸۵۷ء کی ہندستان کی آزادی کی لڑائی کی بابت اکثر یہ کہا جاتا ہے کہ یہ لڑائی صرف اُن راجاؤں، نوابوں اور سامنتوں کی بغاوت تھی، جنکی جائدادیں یا بھتے کمپنی کی سرکار نے ضبط کر لئے تھے۔ اسی لئے عام جنتا کا اس لڑائی میں کوئی خاص حصہ نہیں تھا۔

کسی حد تک یہ بات ٹھیک بھی ہے، لیکن اس بات سے بھی انکار نہیں کیا جا سکتا کہ اُس سامنت وادی زمانے میں بھی ہندستان میں کچھ ایسے دور اندیش دیش بھگت موجود تھے، جنھوں نے اس کمزوری کو بھانپ لیا تھا اور عام جنتا کا پورا سہیوگ لینے کی کوشش کی تھی۔ ایسے دور اندیش دیش بھگت نیتاؤں میں ایک خاص نام مولوی احمد شاہ کا ہے۔

مولوی احمد شاہ فیض آباد ضلع کے ایک بڑے زمیندار تھے، لیکن زمینداروں کی عیش پرستی اُن کو چھو بھی نہیں گئی تھی۔ اپنے اچھے چال چلن اور راج کاج و مذہبی جانکاری کے لئے وہ علاقہ بھر میں مشہور تھے اور راجاؤں و نوابوں کے محلوں سے لے کر کسانوں کی معمولی جھونپڑیوں تک میں اُن کا نام بڑی عزت سے لیا جاتا تھا۔

مولوی احمد شاہ نہ تو صرف مذہبی کتابوں میں ہی ڈوبے رہنے والے مولوی تھے، اور نہ رعایا سے ٹیکس وصول کرکے اُس پر

गुलछर्रे उड़ाने वाले ज़मींदार. मुल्क की सियासत से भी उनको गहरी दिलचस्पी थी और उनको इस बात से बड़ा दुख होता था कि अंग्रेज़ों की ताक़त हिन्दुस्तान में धीरे धीरे बढ़ती चली जा रही है और कुछ अपने ही भाई स्वार्थवश हो कर अपने इस मुल्क को ग़ुलाम बनाने मे अंग्रेज़ों की मदद कर रहे हैं. वह जब तब अपने इस ख़याल को ज़ाहिर भी किया करते थे. लेकिन उस ज़माने में आम जनता को सियासत से कोई दिलचस्पी नहीं थी और राजाओं नवाबों को ऐसी बातें सुनने से भी डर लगता था.

लेकिन सन् १८५६ में जब लार्ड डलहौज़ी ने निहायत बेशर्मी के साथ अवध के इलाक़े को कम्पनी के अधिकार में ले लिया और नवाब वाजिद अली शाह को क़ैद करके कलकत्ते भेज दिया गया तो मौलवी अहमद शाह इसे बर्दाश्त नहीं कर सके. उन्होंने समझ लिया कि इस तरह एक एक करके हर एक नवाब और राजा के साथ इसी तरह का बर्ताव होगा और पूरा देश अंग्रेज़ों के आधीन हो जायगा. इसके साथ ही मौलवी साहब ने यह भी महसूस किया कि आज़ादी की लड़ाई तब तक कामयाब नहीं हो सकेगी, जब तक कि इस देश की पूरी जनता इसमें हिस्सा न ले. इसीलिये न तो उन्होंने राजाओं नवाबों की ड्योढ़ियों के चक्कर लगाये और न वलीउल्लाही जमाअत के नेताओं की तरह सिर्फ़ मुसलमान जनता तक ही अपने प्रचार को महदूद रक्खा. मौलवी अहमद शाह ने हिन्दू मुसलमानों में एक साथ देश की आज़ादी के नाम पर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ हथियार उठाने का प्रचार शुरू कर दिया. सन् १८५७ की आज़ादी की लड़ाई के दूसरे नेताओं और मौलवी अहमद शाह

گل چھرے اڑانے والے زمیندار۔ ملک کی سیاست سے بھی اُن کو گہری دلچسپی تھی اور اُن کو اِس بات سے بڑا دکھ ہوتا تھا کہ انگریزوں کی طاقت ہندستان میں دھیرے دھیرے بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کچھ اپنے ہی بھائی سوارتھ وش ہو کر اپنے اس ملک کو غلام بنانے میں انگریزوں کی مدد کر رہے ہیں۔ وہ جب تب اپنے اس خیال کو ظاہر بھی کیا کرتے تھے۔ لیکن اُس زمانے میں عام جنتا کو سیاست سے کوئی دلچسپی نہیں تھی اور راجاؤں نوابوں کو ایسی باتیں سننے سے بھی ڈر لگتا تھا۔

لیکن ۱۸۵۶ء میں جب لارڈ ڈلہوزی نے نہایت بے شرمی کے ساتھ اودھ کے علاقے کو کمپنی کے ادھیکار میں لے لیا اور نواب واجد علی شاہ کو قید کر کے کلکتے بھیج دیا گیا، تو مولوی احمد شاہ اسے برداشت نہیں کر سکے۔ انھوں نے سمجھ لیا کہ اس طرح ایک ایک کر کے ہر ایک نواب اور راجہ کے ساتھ اسی طرح کا برتاؤ ہوگا اور پورا دیش انگریزوں کے آدھین ہو جائے گا۔ اس کے ساتھ ہی مولوی صاحب نے یہ بھی محسوس کیا کہ آزادی کی لڑائی تب تک کامیاب نہیں ہو سکے گی، جب تک کہ اس دیش کی پوری جنتا اس میں حصّہ نہ لے۔ اسی لئے نہ تو انھوں نے راجاؤں اور نوابوں کی ڈیوڑھیوں کے چکر لگائے اور نہ ولی اللّٰہی جماعت کے نیتاؤں کی طرح صرف مسلمان جنتا تک ہی اپنے پرچار کو محدود رکھا۔ مولوی احمد شاہ نے ہندو مسلمانوں میں ایک ساتھ دیش کی آزادی کے نام پر انگریزوں کے خلاف ہتھیار اٹھانے کا پرچار شروع کر دیا۔ ۱۸۵۷ء کی آزادی کی لڑائی کے دوسرے نیتاؤں اور مولوی احمد شاہ

में यही खास फर्क़ है, जो उनको कुछ ज़्यादा इज़्ज़त का हक़दार बना देता है. काश, कुछ और नेता मौलवी अहमद शाह का साथ देते, तो शायद १८५७ की लड़ाई इस तरह से और इतनी जल्दी नाकामयाब नहीं होती.

मौलवी अहमद शाह के प्रचार का ढंग यह था कि वह लखनऊ से आगरा तक के बीच बराबर दौरे करते रहते थे और दस दस हज़ार आदमियों की भीड़ उनकी तक़रीर सुनने के लिये इकट्ठी होती थी. मौलवी अहमद शाह उनको बतलाते थे कि अंग्रेज किस तरह इस मुल्क में बढ़ते गये और अगर पूरा मुल्क उनके क़ब्ज़े में चला गया तो उसका नतीजा आम जनता के लिये क्या होगा. इस तरह यह तक़रीरें सौ फीसदी सियासी तक़रीरें होती थी और मौलवी अहमद शाह की जबान में कुछ ऐसा जादू था कि कई कई घंटे तक यह हज़ारों आदमी बुत बने हुए उनकी तक़रीरें सुनते रहते थे और मुल्क की बेबसी पर आँसू बहाते रहते थे. उस ज़माने में मौलवी अहमद शाह शायद पहिले आदमी थे, जिन्होंने अपने प्रचार का यह तरीक़ा अपनाया था.

इसी ज़माने में मौलवी अहमद शाह ने बहुत सी छोटी छोटी किताबें भी लिखीं, जो पढ़े लिखे हल्क़े मे बड़ी तादाद में बाँटी गईं. इन किताबों मे भी वही बात थी, जो मौलवी साहब की तक़रीरों मे होती थी. इस तरह हज़ारो लाखों आदमियो के दिल में मौलवी अहमद शाह ने देशभक्ती का सच्चा जज़्बा पैदा कर दिया.

उस ज़माने में अंग्रेज़ो के मुख़बिरो का जाल सिर्फ़ राजाओं नवाबों के राजदरबारो और महलों तक ही महदूद था, इस लिये

میں یہی خاص فرق ہے، جو اُن کو کچھ زیادہ عزّت کا حق دار بنا دیتا ہے۔ کاش، کچھ اور نیتا مولوی احمد شاہ کا ساتھ دیتے، تو شاید ۱۸۵۷ء کی لڑائی اس طرح سے اور اتنی جلدی ناکامیاب نہیں ہوتی۔

مولوی احمد شاہ کے پرچار کا ڈھنگ یہ تھا کہ وہ لکھنؤ سے آگرہ تک کے بیچ برابر دورے کرتے رہتے تھے اور دس دس ہزار آدمیوں کی بھیڑ اُن کی تقریر سننے کے لئے اکٹھی ہوتی تھی۔ مولوی احمد شاہ اُن کو بتلاتے تھے کہ انگریز کس طرح اس ملک میں بڑھتے گئے اور اگر پورا ملک اُن کے قبضہ میں چلا گیا تو اس کا نتیجہ عام جنتا کے لئے کیا ہوگا۔ اس طرح یہ تقریریں سو فیصدی سیاسی تقریریں ہوتی تھیں اور مولوی احمد شاہ کی زبان میں کچھ ایسا جادو تھا کہ کئی کئی گھنٹے تک یہ ہزاروں آدمی بُت بنے ہوئے اُن کی تقریریں سنتے رہتے تھے اور ملک کی بے بسی پر آنسو بہاتے رہتے تھے۔ اُس زمانے میں مولوی احمد شاہ شاید پہلے آدمی تھے، جنھوں نے اپنے پرچار کا یہ طریقہ اپنایا تھا۔

اسی زمانے میں مولوی احمد شاہ نے بہت سی چھوٹی چھوٹی کتابیں بھی لکھیں۔ جو پڑھے لکھے حلقے میں بڑی تعداد میں بانٹی گئیں۔ ان کتابوں میں بھی وہی بات تھی، جو مولوی صاحب کی تقریروں میں ہوتی تھی۔ اس طرح ہزاروں لاکھوں آدمیوں کے دل میں مولوی احمد شاہ نے دیش بھگتی کا سچا جذبہ پیدا کر دیا۔

اس زمانے میں انگریزوں کے مخبروں کا جال صرف راجاؤں نوابوں کے راج درباروں اور محلوں تک ہی محدود تھا، اس لئے

कर दिया गया, जिससे गुन्डे और शरारती लोग जो ऐसे ही मौक़ों की तलाश में रहते हैं, सर न उठा सकें.

इसके बाद जब लखनऊ पर अंग्रेज़ों ने फिर घेरा डाला, तो मौलवी अहमद शाह अपने हज़ारों सिपाहियों के साथ लखनऊ में जा कर जम गये. लखनऊ शहर के भीतर नवम्बर सन् १८५७ से लेकर मार्च ५८ तक आज़ादी की लड़ाई बराबर चलती रही और मौलवी अहमद शाह बराबर उसमें हिस्सा लेते रहे. ११ मार्च सन् १८५८ को जब कैम्पबेल की फ़ौज, गोरखों की फ़ौज और पूरबी हिस्से से आने वाली अंग्रेज़ी फ़ौजों ने लखनऊ पर एक साथ चढ़ाई की थी उस वक़्त भी मौलवी अहमद शाह लखनऊ के सेनापतियों में एक ख़ास हैसियत रखते थे. फ़ौज को कमान करने की उनकी क़ाबलियत कितनी बढ़ी चढ़ी थी, इसका ज़िक्र करते हुए अंग्रेज़ लेखक 'होम्स' ने लिखा है—

'फ़ैज़ाबाद का मौलवी अहमदुल्लाह एक ऐसा आदमी था, जो जज़्बात और क़ाबलियत दोनों के लिहाज़ से एक बड़ी तहरीक को चलाने और एक बड़ी फ़ौज की कमान संभालने के लिये सब तरह से योग्य था.''

लेकिन इन दिनों ही दिल्ली की तरह लखनऊ में भी हिन्दुस्तानी नेताओं में आपसी फूट और जलन फैलने लगी थी. बजाय क़ाबलियत के ऊँचे ख़ानदान और ऊँची हैसियत को तरजीह दी जाती थी और ऐसे ही लोगों के हाथों में फ़ौज की कमान रहती थी.

यह आपसी फूट और जलन इतनी बढ़ गई थी, कि एक

کردیا گیا، جس سے گنڈے اور شرارتی لوگ، جو ایسے ہی موقعوں کی تلاش میں رہتے ہیں، سر نہ اٹھا سکیں۔

اس کے بعد جب لکھنؤ پر انگریزوں نے پھر گھیرا ڈالا، تو مولوی احمد شاہ اپنے ہزاروں سپاہیوں کے ساتھ لکھنؤ میں جا کر جم گئے۔ لکھنؤ شہر کے بھیتر نومبر ۱۸۵۷ء سے لے کر مارچ ۵۸ء تک آزادی کی لڑائی برابر چلتی رہی اور مولوی احمد شاہ برابر اس میں حصہ لیتے رہے۔ ۱۱ مارچ ۱۸۵۸ء کو جب کیمبل کی فوج، گورکھوں کی فوج اور پوربی حصے سے آنے والی انگریزی فوجوں نے لکھنؤ پر ایک ساتھ چڑھائی کی تھی اس وقت بھی مولوی احمد شاہ لکھنؤ کے سیناپتیوں میں ایک خاص حیثیت رکھتے تھے۔ فوج کو کمان کرنے کی انکی قابلیت کتنی بڑھی چڑھی تھی، اس کا ذکر کرتے ہوئے انگریز لیکھک ہومس نے لکھا ہے—

"فیض آباد کا مولوی احمد اللہ ایک ایسا آدمی تھا، جو جذبات اور قابلیت دونوں کے لحاظ سے ایک بڑی تحریک کو چلانے اور ایک بڑی فوج کی کمان سنبھالنے کیلئے سب طرح سے یوگیہ تھا۔"

لیکن ان دنوں ہی دلی کی طرح لکھنؤ میں بھی ہندستانی نیتاؤں میں آپسی پھوٹ اور جلن پھیلنے لگی تھی۔ بجائے قابلیت کے اونچے خاندان اور اونچی حیثیت کو ترجیح دی جاتی تھی اور ایسے ہی لوگوں کے ہاتھوں میں فوج کی کمان رہتی تھی۔

یہ آپسی پھوٹ اور جلن اتنی بڑھ گئی تھی، کہ ایک

बार लखनऊ को बेगम ने मौलवी अहमदशाह को गिरफ्तार तक कर लिया, लेकिन जब फ़ौज और जनता की तरफ़ से इसका विरोध हुआ तो मौलवी साहब छोड़ दिये गये. इससे मौलवी साहब के दिल को धक्का तो लगा पर वह देश की जरूरत को समझते हुए अलग न हुए और बराबर लड़ाइयों में हिस्सा लेते रहे. जितनी बार हिन्दुस्तानी सेना ने आलम बाग़ पर हमला किया, मौलवी अहमदशाह घोड़े या हाथी के ऊपर हमेशा सबसे आगे लड़ते हुए देखे जाते थे.

१५ जनवरी १८५८ को मौलवी अहमद शाह के एक हाथ में गोली लगी. क़रीब एक महीने तक वह इसी वजह से चारपाई पर पड़े रहे. लेकिन १५ फरवरी को वह फिर मैदान में आकर जम गये. लेकिन अब अपने लोगों मे ही सैकड़ों ग़द्दार पैदा हो चुके थे. नतीजा यह हुआ कि १४ मार्च को लखनऊ पूरी तरह अंग्रेजों के हाथों में आगया और मौलवी अहमद शाह, नवाब बिरजीस क़द्र और बेगम हज़रत महल के साथ शहर से निकल गये.

मौलवी अहमदशाह के दिल मे लखनऊ छोड़ने का बड़ा रंज था, इस लिये थोड़े से साथियों को लेकर एक बार फिर मौलवी साहब लखनऊ पहुँचे और सआदतगंज मुहल्ले मे अपना मोर्चा जमा दिया. उस वक्त मौलवी साहब के पास सिर्फ दो तोपें थीं, फिर भी वह देर तक अंग्रेजों की बहुत बड़ी फ़ौज का जम कर मुक़ाबला करते रहे. लेकिन आख़िर में उनको हटना पड़ा. अंगरेज़ी फौज ने छै मील तक मौलवी साहब का पीछा किया, लेकिन वह उनको नहीं पासकी. मौलवी साहब

بار لکھنؤ کی بیگم نے مولوی احمد شاہ کو گرفتار تک کر لیا، لیکن جب فوج اور جنتا کی طرف سے اس کا وِرودھ ہوا تو مولوی صاحب چھوڑ دیئے گئے۔ اس سے مولوی صاحب کے دل کو دھکا تو لگا پر وہ دیش کی ضرورت کو سمجھتے ہوئے الگ نہ ہوئے اور برابر لڑائیوں میں حصہ لیتے رہے۔ جتنی بار ہندستانی سینا نے عالم باغ پر حملہ کیا، مولوی احمد شاہ گھوڑے یا ہاتھی کے اوپر ہمیشہ سب سے آگے لڑتے ہوئے دیکھے جاتے تھے۔

۱۵ر جنوری ۱۸۵۸ء کو مولوی احمد شاہ کے ایک ہاتھ میں گولی لگی۔ قریب ایک مہینہ تک وہ اسی وجہ سے چارپائی پر پڑے رہے۔ لیکن ۱۵ر فروری کو وہ پھر میدان میں آکر جم گئے۔ لیکن اب اپنے لوگوں میں ہی سیکڑوں غدّار پیدا ہو چکے تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ۱۴ر مارچ کو لکھنؤ پوری طرح انگریزوں کے ہاتھوں میں آگیا اور مولوی احمد شاہ، نواب برجیس قدر اور بیگم حضرت محل کے ساتھ شہر سے نکل گئے۔

مولوی احمد شاہ کے دل میں لکھنؤ چھوڑنے کا بڑا رنج تھا، اس لئے تھوڑے سے ساتھیوں کو لے کر ایک بار پھر مولوی صاحب لکھنؤ پہونچے، اور سعادت گنج محلے میں اپنا مورچہ جما دیا۔ اس وقت مولوی صاحب کے پاس صرف دو توپیں تھیں، پھر بھی وہ دیر تک انگریزوں کی بہت بڑی فوج کا جم کر مقابلہ کرتے رہے۔ لیکن آخر میں اُن کو ہٹنا پڑا۔ انگریزی فوج نے چھ میل تک مولوی صاحب کا پیچھا کیا، لیکن وہ اُن کو نہیں پا سکی۔ مولوی صاحب

फिर साफ़ निकल गये.

इसके बाद मौलवी साहब लखनऊ के पचास मील के अन्दर अन्दर अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़ बराबर लड़ाई चलाते रहे. कुछ दिन बाद वह नाना साहब के साथ बरेली जा पहुँचे. कुछ ही दिनो में दिल्ली और अवध के कुछ और नेता और अवध की बेगम हज़रत महल भी बरेली जा पहुँची. यह ख़बर मिलते ही सर कालिन कैम्पबेल अपनी फ़ौज के साथ बरेली जा पहुँचा. नेताओं ने फ़ैसला किया कि बरेली से निकल कर और रुहेलखण्ड में चारों ओर फैल कर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई जारी रक्खी जाय. इसी फ़ैसले के मुताबिक़ मौलवी साहब ने बरेली से निकल कर शाहजहाँपुर पर मोर्चा जमाया और कुछ ही देर मे उस पर क़ब्ज़ा कर लिया. कैम्पबेल फिर अपनी फ़ौज के साथ शाहजहाँपुर पहुँचा और एक बार तो ऐसा मालूम होने लगा कि इस बार मौलवी साहब अंग्रेज़ो के फन्दे से नहीं बच सकेंगे. लेकिन मौलवी साहब को घिरा हुआ देख कर रुहेलखंड के सभी क्रान्तिकारी नेता, नाना साहब, बेगम हज़रत महल, शाहज़ादा फ़ीरोज़ शाह और राजा तेजसिंह वग़ैरा अपनी अपनी फ़ौजें लेकर शाहजहाँपुर पहुँच गये और मौलवी साहब को निकाल लाये. यह घटना साबित करती है कि मौलवी साहब उन नेताओं की नज़र में क्या हैसियत रखते थे.

लेकिन घर के ग़द्दारों से कौन बच सकता है? मौलवी साहब जब दोबारा अवध पहुँचे और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ अपना संगठन करने लगे, तो पवन नाम की एक छोटी सी रियासत के राजा जगन्नाथ सिंह ने मौलवी साहब को अपने यहाँ बुलाया और जब

پھر صاف نکل گئے۔

اس کے بعد مولوی صاحب لکھنؤ کے پچاس میل کے اندر اندر انگریزوں کے خلاف برابر لڑائی چلاتے رہے۔ کچھ دن بعد وہ نانا صاحب کے ساتھ بریلی جا پہنچے۔ کچھ ہی دنوں میں دلی اور اودھ کے کچھ اور نیتا اور اودھ کی بیگم حضرت محل بھی بریلی جا پہنچیں۔ یہ خبر ملتے ہی سر کالن کیمبل اپنی فوج کے ساتھ بریلی جا پہنچا۔ نیتاؤں نے فیصلہ کیا کہ بریلی سے نکل کر اور روہیلکھنڈ میں چاروں اور پھیل کر انگریزوں کے خلاف لڑائی جاری رکھی جائے۔ اسی فیصلہ کے مطابق مولوی صاحب نے بریلی سے نکل کر شاہجہاں پور پر مورچہ جمایا اور کچھ ہی دیر میں اس پر قبضہ کر لیا۔ کیمبل پھر اپنی فوج کے ساتھ شاہجہاں پور پہنچا اور ایک بار تو ایسا معلوم ہونے لگا کہ اس بار مولوی صاحب انگریزوں کے پھندے سے نہیں بچ سکیں گے۔ لیکن مولوی صاحب کو گھرا ہوا دیکھ کر روہیلکھنڈ کے سبھی کرانتی کاری نیتا، نانا صاحب، بیگم حضرت محل، شہزادہ فیروز شاہ اور راجہ تیج سنگھ وغیرہ اپنی اپنی فوجیں لے کر شاہجہاں پور پہنچ گئے اور مولوی صاحب کو نکال لائے۔ یہ گھٹنا ثابت کرتی ہے کہ مولوی صاحب اُن نیتاؤں کی نظر میں کیا حیثیت رکھتے تھے۔

لیکن گھر کے غداروں سے کون بچ سکتا ہے؟ مولوی صاحب جب دوبارہ اودھ پہنچے اور انگریزوں کے خلاف اپنا سنگٹھن کرنے لگے تو پَون نام کی ایک چھوٹی سی ریاست کے راجہ جگناتھ سنگھ نے مولوی صاحب کو اپنے یہاں بلایا اور

मौलवी साहब वहाँ गये तो राजा के एक भाई ने धोका देकर उनको गोली मार दी. राजा जगन्नाथ सिंह ने फौरन मौलवी साहब का सिर काट कर पास के अंग्रेज कैम्प मे पहुँचा दिया, जिसके बदले में उसको पचास हजार रुपये अंग्रेजों से इनाम में मिले. इस तरह ५ जून सन् १८५८ को आजादी की लड़ाई का एक सच्चा देशभक्त नेता हमारे ही विश्वासघात के कारन मारा गया और उसकी मौत ने दूसरे नेताओं को भी बिल्कुल पस्त हिम्मत कर दिया.

मौलवी अहमद शाह के बारे में मशहूर इतिहास लेखक मालेसन ने अपनी किताब "इंडियन म्यूटिनी" (हिन्दुस्तान का गदर) की पहिली जिल्द, भाग चार, सफा ३८१ मे लिखा है.

"मौलवी बड़ा अजीब आदमी था + + + सेनापति की हैसियत से उसकी काबलियत के गदर मे बहुत से सुबूत मिले + + कोई भी दूसरा आदमी घमंड के साथ यह नहीं कह सकता था कि मैंने दो मर्तबा सर कालिन कैम्पबेल को मैदान में हराया है! + + + अगर एक ऐसे इन्सान को, जिसके देश की आजादी बेइन्साफी के साथ छीन ली गई हो और जो फिर से उसको आजाद करने की कोशिश करे और इसके लिये जंग करे देशभक्त कहा जा सकता है, तो इसमे जर्रा भर भी शक नहीं है कि मौलवी अहमद शाह सच्चा देशभक्त था. उसने किसी की चुपचाप हत्या करके अपनी तलवार पर कलंक नहीं लगाया. निहत्थे और बेकसूर लोगों की हत्या को उसने कभी गवारा नहीं किया, उसने मरदाना वार, आन के साथ और डट कर खुले मैदान मे उन विदेशियों के साथ जंग की, जिन्होने उसका देश छीन लिया था. हर

مولوی صاحب وہاں گئے تو راجہ کے ایک بھائی نے دھوکا دے کر اُن کو گولی مار دی۔ راجہ جگناتھ سنگھ نے فوراً مولوی صاحب کا سر کاٹ کر پاس کے انگریز کیمپ میں پہنچا دیا، جس کے بدلے میں اُس کو پچاس ہزار روپے انگریزوں سے انعام میں ملے۔ اس طرح ۵ جون ۱۸۵۸ء کو آزادی کی لڑائی کا ایک سچا دیش بھگت نیتا ہمارے ہی وشواس گھات کے کارن مارا گیا اور اُس کی موت نے دوسرے نیتاؤں کو بھی بالکل پست ہمّت کر دیا۔

مولوی احمد شاہ کے بارے میں مشہور اتہاس لیکھک مالیسن نے اپنی کتاب "انڈین میوٹنی" (ہندستان کا غدر) کی پہلی جلد، بھاگ چار، صفحہ ۳۸۱ میں لکھا ہے —

"مولوی بڑا عجیب آدمی تھا × × × سیناپتی کی حیثیت سے اُس کی قابلیت کے غدر میں بہت سے ثبوت ملے × × × × کوئی بھی دوسرا آدمی گھمنڈ کے ساتھ یہ نہیں کہہ سکتا تھا کہ میں نے دو مرتبہ سر کالن کیمبل کو میدان میں ہرایا ہے! × × × × اگر ایک ایسے انسان کو، جس کے دیش کی آزادی بے انصافی کے ساتھ چھین لی گئی ہو، اور جو پھر سے اُس کو آزاد کرنے کی کوشش کرے اور اس کے لئے جنگ کرے، دیش بھگت کہا جا سکتا ہے، تو اس میں ذرہ بھر بھی شک نہیں ہے کہ مولوی احمد شاہ سچا دیش بھگت تھا۔ اُس نے کسی کی چپ چاپ ہتیا کر کے اپنی تلوار پر کلنک نہیں لگایا، نہتے اور بے قصور لوگوں کی ہتیا کو اُس نے کبھی گوارا نہیں کیا، اُس نے مردانہ وار، آن کے ساتھ اور ڈٹ کر کھلے میدان میں اُن بدیشیوں کے ساتھ جنگ کی، جنھوں نے اُس کا دیش چھین لیا تھا۔ ہر

देश के वीर और सच्चे लोगों को मौलवी अहमद शाह का नाम इज़्ज़त के साथ लेना चाहिये."

यह शब्द एक अंग्रेज़ के है, जिनके ख़िलाफ़ मौलवी साहब लड़े थे. इससे साबित होता है कि वह कितने ऊँचे दर्जे के बहादुर और शानदार चाल चलन के इन्सान थे. सन् १८५७ की तवारीख़ में लाखों शहीदों के बीच उनका नाम हमेशा सूरज की तरह चमकता रहेगा.

دیش کے ویر اور سچے لوگوں کو مولوی احمد شاہ کا نام عزت کے ساتھ لینا چاہیے۔"

یہ شبد ایک انگریز کے ہیں، جن کے خلاف مولوی صاحب لڑے تھے۔ اس سے ثابت ہوتا ہے کہ وہ کتنے اونچے درجہ کے بہادر اور شاندار چال چلن کے انسان تھے۔ ۱۸۵۷ء کی تواریخ میں لاکھوں شہیدوں کے بیچ اُن کا نام ہمیشہ سورج کی طرح چمکتا رہے گا۔

बापू के विचार

शराब की बुरी लत

द्राक्षासव वग़ैरा नशीली चीज़ों के इस्तेमाल से शरीर और मन दोनों को नुक़सान होता है. इतना ही नहीं, उससे आदमी का नैतिक ज्ञान मर जाता है और अपने आप पर क़ाबू रखने की सारी ताक़त ख़तम हो जाती है.

× × ×

अफ़ीम वग़ैरा नशीली चीज़ें और शराब यह शैतान के दो हाथ हैं.

× × ×

भूकों मरने वाले औरत मर्द छोटी छोटी चोरियाँ करते हैं और उनपर मुक़द्दमा चलता है व सज़ा होती है. इस चोरी की निस्बत हिन्द में शराब पीने को मैं ज़्यादा बड़ा क़सूर मानता हूँ

× × ×

मेरे लड़के अगर आग में या गहरे पानी में जायँ तो मैं उन्हें जबरन रोकने से हिचकिचाता नहीं. शराब पीना जलती हुई आग में या भरपूर नदी में कूदने से भी ज़्यादा भयानक है. आग या पानी सिर्फ़ शरीर का ही नाश करते हैं. लेकिन शराब तो शरीर और आत्मा दोनो को बरबाद कर देती है.

× × ×

हमारे देश के हवा पानी मे शराब की बिलकुल ज़रूरत नहीं है. शराब की ग़ुलाम बनी हुई प्रजा का नाश ही होता है. × × × यादव लोग शराब के कारण ही कट मरे. रोम के पतन (ज़वाल) में भी शराब का हाथ रहा है. इसलिये अगर सादी और मामूली ज़िन्दगी बितानी हो तो वक़्त रहते हुए इस बुराई को बन्द कीजिये.

باپو کے وچار

شراب کی بُری لت

دراکشا سو وغیرہ نشیلی چیزوں کے استعمال سے شریر اور من دونوں کو نقصان ہوتا ہے۔ اتنا ہی نہیں اس سے آدمی کا نیتک گیان مر جاتا ہے اور اپنے آپ پر قابو رکھنے کی ساری طاقت ختم ہو جاتی ہے۔

× × ×

افیم وغیرہ نشیلی چیزیں اور شراب یہ شیطان کے دو ہاتھ ہیں۔

× × ×

[illegible]

× × ×

[illegible]

ہمارے دیش کے ہوا پانی میں شراب کی بالکل ضرورت نہیں ہے۔ [illegible] غلام بنی ہوئی پرجا کا ناش ہی ہوتا ہے [illegible] یادو لوگ شراب کے کارن ہی [illegible] روم کے [illegible] میں بھی شراب کا ہاتھ رہا ہے۔ اس لئے اگر سادی اور معمولی زندگی بتانی ہو تو وقت رہتے ہوئے اس برائی کو بند کیجئے۔

हमारी राय

अनाज के रूप में मालगुज़ारी

इसी नम्बर मे दूसरी जगह श्री विनोबा के उस भाषन की रिपोर्ट मिलेगी. जो उन्होने पिछली ६ अगस्त को राज घाट पर दिया था. उसमें उन्होने सुझाया है कि किसानो से अनाज के रूप मे मालगुज़ारी वसूल की जाय. क्योंकि अनाज के बढ़ते हुए दामों को रोकने का यही एक उपाय है.

इस सुझाव के पीछे जो दलील है वह बिलकुल सीधी और सरल है. अगर कोई आदमी किसी चीज़ की कीमत एक खास सतह पर रखना चाहता है, और अगर वह चीज़ गाहको को बाज़ार में न मिल सके, तो उसे वह चीज़ बेचने के लिये तैयार रहना चाहिये और गाहकों की मॉग पूरी करने की ताकत रखनी चाहिये. इसका मतलब यह हुआ कि उस आदमी के पास ऐसी चीज़ का काफी स्टाक होना चाहिये. हिन्द सरकार किसानो से अनाज लेकर, विदेशों से अनाज मॅगवाकर और इस तरह हासिल किये हुए अनाज को राशन की दुकानों के ज़रिये लोगो मे बॅटवा कर ऐसी कोशिश कर भी रही है. सरकार की किसानो से अनाज लेने की पालिसी लोक-पसंद नही है, क्योंकि किसान को हमेशा यह महसूस होता है कि सरकार उसके अनाज की जो क़ीमत देती है, वह उससे कम है, जो उसे खुले बाज़ार में मिल सकती है. उसके लोक-पसंद न होने का दूसरा कारन यह भी है कि किसान को

ہماری رائے

اناج کے روپ میں مالگزاری

اسی نمبر میں دوسری جگہ شری ونوبا کے اُس بھاشن کی رپورٹ ملے گی، جو اُنھوں نے پچھلی ۶ اگست کو راج گھاٹ پر دیا تھا۔ اُس میں اُنھوں نے سُجھایا ہے کہ کسانوں سے اناج کے روپ میں مالگزاری وصول کی جائے۔ کیونکہ اناج کے بڑھتے ہوئے داموں کو روکنے کا یہی ایک اُپائے ہے۔

اِس سُجھاؤ کے پیچھے جو دلیل ہے وہ بالکل سیدھی اور سرل ہے۔ اگر کوئی آدمی کسی چیز کی قیمت ایک خاص سطح پر رکھنا چاہتا ہے، اور اگر وہ چیز گاہکوں کو بازار میں نہ مل سکے، تو اُسے وہ چیز بیچنے کے لئے تیار رہنا چاہئے اور گاہکوں کی مانگ پوری کرنے کی طاقت رکھنی چاہئے۔ اِس کا مطلب یہ ہوا کہ اُس آدمی کے پاس ایسی چیز کا کافی اسٹاک ہونا چاہئے۔ ہند سرکار کسانوں سے اناج لیکر، ودیشوں سے اناج منگوا کر اور اس طرح حاصل کئے ہوئے اناج کو راشن کی دوکانوں کے ذریعہ لوگوں میں بٹوا کر ایسی کوشش کر بھی رہی ہے۔ سرکار کی کسانوں سے اناج لینے کی پالیسی لوک پسند نہیں ہے، کیونکہ کسان کو ہمیشہ یہ محسوس ہوتا ہے کہ سرکار اُس کے اناج کی جو قیمت دیتی ہے، وہ اُسے کم ہے، جو اُسے کھلے بازار میں مل سکتی ہے۔ اُس کے لوک پسند نہ ہونے کا دوسرا کارن یہ بھی ہے کہ کسان کو

अपनी जरूरतें पूरी करने के लिये जितना अनाज बेचना ठीक मालूम होता है, उससे ज्यादा अनाज जबरन खरीदा जाता है. सरकार जिस क़ीमत में अनाज खरीदती है, उससे कम क़ीमत में राशन की दुकानों के जरिये लोगों के हाथ बेचने पर भी किसानों की यह भावना बनी रहती है. इसके अलावा, इसमें दोहरा सौदा करना पड़ता है. किसान अपनी पैदावार का एक हिस्सा नक़द रकम पाने के लिये बेचता है ताकि वह ज़मीन की मालगुज़ारी चुका सके. मेरा विश्वास है कि यह हिस्सा वह या तो सीधे गाहकों के हाथ बेचता है या फिर किसी थोक ब्योपारी के हाथ. इस तरह जो पैसा उसे मिलता है, उससे वह मालगुज़ारी चुकाता है. इसी पैसे से सरकार फिर किसानों से अनाज लेती है और स्टाक करती है अगर सरकार नक़द पैसे के बजाय अनाज के रूप मे किसानो से मालगुज़ारी वसूल करे तो यह सब झंझट मिट जाय या कम हो जाय.

लेकिन मैं जानता हूँ कि अनाज के रूप मे मालगुज़ारी चुकाने के रिवाज को किसान पसंद नहीं करते कारन यह है कि इसका सम्बन्ध देश मे आमतौर पर पाये जाने वाले बटाई के उस रिवाज के साथ है, जिसमे किसानो को जमीन के मालिक का हिस्सा अनाज के रूप मे देना पड़ता है. सब कोई जानते हैं कि बटाई के रिवाज के मुताबिक़ शिकमी काश्तकार को खेती मे पैदा किया हुआ हर तरह का पूरा अनाज एक खलिहान मे लाना पड़ता है वहीं जमींदार का गुमाश्ता उसे तौलता है और समझौते के मुताबिक ज़मींदार और काश्तकार में बाँट देता है. इससे काश्तकारों को कई तरह से हैरान होना पड़ता है. अगर ज़मीन की तय की हुई मालगुज़ारी किसान

اپنی ضرورتیں پوری کرنے کے لئے جتنا اناج بیچنا ٹھیک معلوم ہوتا ہے، اُس سے زیادہ اناج جبراً خریدا جاتا ہے. سرکار جس قیمت میں اناج خریدتی ہے، اُس سے کم قیمت میں راشن کی دُکانوں کے ذریعہ لوگوں کے ہاتھ بیچنے پر بھی کسانوں کی یہ بھاؤنا بنی رہتی ہے. اِس کے علاوہ، اِس میں دُہرا سودا کرنا پڑتا ہے. کسان اپنی پیداوار کا ایک حصّہ نقد رقم پانے کے لئے بیچتا ہے تاکہ وہ زمین کی مالگزاری چُکا سکے. میرا وشواس ہے کہ یہ حصّہ وہ یا تو سیدھے گاہکوں کے ہاتھ بیچتا ہے یا پھر کسی تھوک بیوپاری کے ہاتھ. اس طرح جو پیسہ اُسے ملتا ہے، اس سے وہ مالگزاری چُکاتا ہے. اسی پیسے سے سرکار پھر کسانوں سے اناج لیتی ہے اور اسٹاک کرتی ہے. اگر سرکار نقد پیسے کے بجائے اناج کے روپ میں کسانوں سے مالگزاری وصول کرے تو یہ سب جھنجھٹ مٹ جائے یا کم ہو جائے.

لیکن میں جانتا ہوں کہ اناج کے روپ میں مالگزاری چُکانے کے رواج کو کسان پسند نہیں کرتے. کارن یہ ہے کہ اِس کا سمبندھ دیش میں عام طور پر پائے جانے والے بٹائی کے اُس رواج کے ساتھ ہے، جس میں کسانوں کو زمین کے مالک کا حصّہ اناج کے روپ میں دینا پڑتا ہے. سب کوئی جانتے ہیں کہ بٹائی کے رواج کے مطابق شکمی کاشتکار کو کھیتی میں پیدا کیا ہوا ہر طرح کا پورا اناج ایک کھلیان میں لانا پڑتا ہے. وہیں زمیندار کا گماشتہ اُسے تولتا ہے اور سمجھوتے کے مطابق زمیندار اور کاشتکار میں بانٹ دیتا ہے. اِس سے کاشتکاروں کو کئی طرح سے حیران ہونا پڑتا ہے. اگر زمین کی طے کی ہوئی مالگزاری کسان

को नक़्द पैसों में देना पड़े तो वह इन दिक़्क़तों से बच जाता है.

अब जो बात सुझाई गई है, वह ऊपर का रिवाज अपनाने के पक्ष (हक) में नहीं है. इसमे यह नहीं सुझाया गया है कि सरकार खेत मे पैदा की जाने वाली हर तरह की खाई जाने वाली चीज़ों का इतना हिस्सा किसान से वसूल करे. मिसाल के लिये. किसान ज्वार की एक एकड़ ज़मीन में ज्वार के साथ या उसके बदले में तुवर, कपास, मिर्च और दूसरी कई चीज़ें पैदा कर सकता है. सुझाव यह नहीं है कि सरकार इन सारी चीज़ों का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा वसूल करे. लेकिन जिस तरह उसने नक़्द मालगुज़ारी के बारे में किया है, उसी तरह वह अनाज के रूप मे भी कई बरसों के लिये मालगुज़ारी मुक़र्रर कर दे—जो नक़्दी की कीमत के बराबर हो. मालगुज़ारी के तौर पर सरकार चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरी, मक्का जैसे अनाज और ज़रूरत पड़े तो कपास, तुवर, चना, मूँगफली वग़ैरा चीज़ें वसूल कर सकती है, जिन पर वह राष्ट्र की अहम ज़रूरतें पूरी करने के लिये कंट्रोल रखना चाहती है.

नक़्दी के बजाय खेती की पैदावार के रूप मे मालगुज़ारी तय करते वक़्त दो बातें याद रखनी चाहियें. पहली यह कि मौजूदा माल-गुज़ारी की रक़में उस समय ठहराई गई थीं जब अनाज की कीमत बहुत ही कम थी या दूसरे शब्दों में कहें तो, जब पैसे की ख़रीदने की ताक़त आज से बहुत ज़्यादा थी. इस लिये आज को माल-गुज़ारी के एक रुपये की ख़रीद-शक्ति को लड़ाई के पहले किसी सस्ती के साल की ख़रीद-शक्ति के बराबर समझें, तो वह अन्याय नहीं होगा. दूसरी बात यह है कि सिक्के के फुलाव और

کو نقد پیسوں میں دینا پڑے تو وہ ان دقتوں سے بچ جاتا ہے.

اب جو بات سجھائی گئی ہے، وہ اوپر کا رواج اپنانے کے پکش (حق) میں نہیں ہے. اس میں یہ نہیں سجھایا گیا ہے کہ سرکار کھیت میں پیدا کی جانے والی ہر طرح کی کھائی جانے والی چیزوں کا اتنا حصہ کسان سے وصول کرے. مثال کے لیے، کسان جوار کی ایک ایکڑ زمین میں جوار کے ساتھ یا اس کے بدلے میں تور، کپاس، مرچ اور دوسری کئی چیزیں پیدا کر سکتا ہے. سجھاؤ یہ نہیں ہے کہ سرکار ان ساری چیزوں کا تھوڑا تھوڑا حصہ وصول کرے. لیکن جس طرح اس نے نقد مالگزاری کے بارے میں کیا ہے، اسی طرح وہ اناج کے روپ میں بھی کئی برسوں کے لیے مالگزاری مقرر کر دے — جو نقدی کی قیمت کے برابر ہو. مالگزاری کے طور سرکار چاول، گیہوں، جوار، باجری، مکا جیسے اناج اور ضرورت پڑے تو کپاس، تور، چنا، مونگ پھلی وغیرہ چیزیں وصول کر سکتی ہے جن پر وہ راشٹر کی اہم ضرورتیں پوری کرنے کے لیے کنٹرول رکھنا چاہتی ہے.

نقدی کے بجائے کھیتی کی پیداوار کے روپ میں مالگزاری طے کرتے وقت دو باتیں یاد رکھنی چاہئیں. پہلی یہ کہ موجودہ مالگزاری کی رقمیں اس سمے ٹھہرائی گئی تھیں جب اناج کی قیمت بہت ہی کم تھی، یا دوسرے شبدوں میں کہیں تو، جب پیسے کی خریدنے کی طاقت آج سے بہت زیادہ تھی. اس لیے آج کی مالگزاری کے ایک روپیہ کی خرید شکتی کو لڑائی کے پہلے کسی سستی کے سال کی خرید شکتی کے برابر سمجھیں، تو وہ انیائے نہیں ہوگا. دوسری بات یہ ہے کہ سکے کے پھلاؤ اور

ऊँची क़ीमतो ने देहात के क़र्ज़ का मुशकिल मसला हल कर दिया है और आर्थिक निगाह से किसानो को पहले से ख़ुशहाल बना दिया है. इसके ख़िलाफ़, सरकार अब भारी नुक़सान उठा रही है क्योंकि उसे मालगुज़ारी के रूप मे जो पैसा मिलता है, उसकी क़ीमत पहले से एक तिहाई भी मुशकिल से रह गई है. नतीजा यह है कि एक तरफ सिक्का बनाने वाली सरकार की ख़रीद-शक्ति घट गई है, क्योंकि उसके पास माल की यानी सिक्के की बहुतायत है; उसी तरह बँधी हुई तनख़्वाह या मजदूरी पाने वालों की ख़रीद-शक्ति भी बहुत घट गई है. और दूसरी तरफ कच्चे माल या तैयार माल के हर पैदा करने वाले की ख़रीद-शक्ति इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि उसे न तो अपने माल के जल्द बिकने की कोई परवाह है और न अपनी लाज़मी ज़रूरतों को बहुत ऊँचे दामों पर ख़रीदने की. पहले कारन से उसे जल्दी जल्दी माल पैदा करने या पैदावार बढ़ाने मे कोई दिलचस्पी नहीं है. और दूसरे कारन से सरकार की कंट्रोल रखने या उठाने की कोई पालिसी कारगर नहीं होती. लाखों शरणार्थियों के हिन्द यूनियन मे आने से, ख़र्चीली फ़ौजी कार्रवाईयाँ करने से और अनाज की कमी होने से, लाखों आदमियों को फिर से बसाने की अनेक स्कीमों पर अमल करने से आज सरकार सबसे बड़ी ख़रीदार है और वहाँ बाहर से भी सबसे ज़्यादा माल मँगाती है. इन सब कामों के लिये उसे सिक्के और नोट निकालने पड़ते हैं. इस तरह हर रोज़ काफ़ी पैसा पैदा किया जाता है, जो तेज़ी से किसानों या कारख़ानेदारों की जेबों और तिजोरियों मे चला जाता है. जब तक सरकार मालगुज़ारी

اونچی قیمتوں نے دیہات کے قرض کا مشکل مسئلہ حل کر دیا ہے اور آرتھک نگاہ سے کسانوں کو پہلے سے خوش حال بنا دیا ہے۔ اس کے خلاف، سرکار اب بھاری نقصان اٹھا رہی ہے، کیونکہ اسے مالگزاری کے روپ میں جو پیسہ ملتا ہے، اس کی قیمت پہلے سے ایک تہائی بھی مشکل سے رہ گئی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ ایک طرف سکہ بنانے والی سرکار کی خرید شکتی گھٹ گئی ہے، کیونکہ اس کے پاس مال کی یعنی سکے کی بہتایت ہے، اسی طرح بندھی ہوئی تنخواہ یا مزدوری پانے والوں کی خرید شکتی بھی بہت گھٹ گئی ہے۔ اور دوسری طرف کچے مال یا تیار مال کے ہر پیدا کرنے والے کی خرید شکتی اتنی زیادہ بڑھ گئی ہے کہ اسے نہ تو اپنے مال کے جلدی بکنے کی کوئی پرواہ ہے اور نہ اپنی لازمی ضرورتوں کو بہت اونچے داموں پر خریدنے کی۔ پہلے کارن سے اسے جلدی جلدی مال پیدا کرنے یا پیداوار بڑھانے میں کوئی دلچسپی نہیں ہے، اور دوسرے کارن سے سرکار کی کنٹرول رکھنے یا اٹھانے کی کوئی پالیسی کارگر نہیں ہوتی۔ لاکھوں شرنارتھیوں کے ہند یونین میں آنے سے، اناج کی کمی ہونے سے، خرچیلی فوجی کارروائیاں کرنے سے اور لاکھوں آدمیوں کو پھر سے بسانے کی انیک اسکیموں پر عمل کرنے سے آج سرکار سب سے بڑی خریدار ہے اور وہ باہر سے بھی سب سے زیادہ مال منگاتی ہے۔ ان سب کاموں کے لیے اسے سکے اور نوٹ نکالنے پڑتے ہیں۔ اس طرح ہر روز کافی پیسہ پیدا کیا جاتا ہے، جو تیزی سے کسانوں یا کارخانے داروں کی جیبوں اور تجوریوں میں چلا جاتا ہے۔ جب تک سرکار مالگزاری

या दूसरे टैक्स अनाज या दूसरी चीज़ों के रूप मे सीधे वसूल नही करती और इस तरह नया पैसा पैदा करने की ज़रूरत कम नहीं करती, तब तक यह काम बन्द नहीं हो सकता. सरकार इनकम-टैक्स के हर रुपये के बदले मे पैदा करने वालो से कपड़े, सिमेन्ट, ज़रूरी रासायनिक (कीमयावी) चीज़े वग़ैरा उतनी ही मात्रा में मॉग सकती है. इसके अलावा उसे ख़ुद भी राष्ट्रीयकरन (क़ौमी मिलकियत) और विकेन्द्रीकरन (लामरकज़ीयत) के ज़रिये कुछ तरह की चीज़ें तैयार करनी चाहिये मिलो के राष्ट्रीयकरन के ज़रिये और चर्खे के ज़रिये कपड़ा तैयार करना इस तरह का एक अहम काम होगा. गाँवो में छोटे पैमाने पर तैयार होने वाली चीज़ों को बढ़ावा दिया जाय और साथ ही उसी माल या उसी तरह के माल को बड़े पैमाने पर तैयार करने वाले कोई कारख़ाने हो तो उनका राष्ट्रीयकरन किया जाय इससे सरकार क़ीमतो और सिक्को पर जो कारगर कंट्रोल रख सकेगी, वह सिर्फ सज़ा के क़ानून बनाकर और उनके अमल के हुक्म निकाल कर क़ीमतें तै करने से नहीं रह सकेगा.

नई-दिल्ली, ११-८-'४८

किशोरलाल मशरूवाला

('हरिजन सेवक' से)

نیا ہند   ہماری رائے   ستمبر ۴۸ء

یا دوسرے ٹیکس اناج یا دوسری چیزوں کے روپ میں سیدھے وصول نہیں کرتی اور اس طرح نیا پیسہ پیدا کرنے کی ضرورت کم نہیں کرتی، تب تک یہ کام بند نہیں ہو سکتا۔ سرکار انکم ٹیکس کے ہر روپے کے بدلے میں پیدا کرنے والوں سے کپڑے، سیمنٹ، ضروری راسائنک (کیمیاوی)، چیزیں وغیرہ اتنی ہی ماترا میں مانگ سکتی ہے۔ اِس کے علاوہ اُسے خود بھی راشٹریہ کرن (قومی ملکیت) اور وکیندری کرن (لامرکزیت) کے ذریعے کچھ طرح کی چیزیں تیار کرنی چاہئیں۔ ملوں کے راشٹریہ کرن کے ذریعے اور چرخے کے ذریعے کپڑا تیار کرنا اس طرح کا ایک اہم کام ہوگا۔ گاؤں میں چھوٹے پیمانے پر تیار ہونے والی چیزوں کو بڑھاوا دیا جائے اور ساتھ ہی اُسی مال یا اُسی طرح کے مال کو بڑے پیمانے پر تیار کرنے والے کوئی کارخانے ہوں تو اُن کا راشٹریہ کرن کیا جائے۔ اس سے سرکار قیمتوں اور سکوں پر جو کارگر کنٹرول رکھ سکے گی، وہ صرف سزا کے قانون بنا کر اور اُن کے عمل کے حکم نکال کر قیمتیں طے کرنے سے نہیں رہ سکے گا۔

نئی دِلّی، ۱۱—۸—۴۸ء

کشور لال مشروالا

(’ہریجن سیوک‘ سے)

मकसद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िक़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू ; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरीपं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—o—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहांगीर वाडिया बिल्डिंग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवाला, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के [illegible]

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے فیضی، شری ایم - ایچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتا، عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور سوسائٹی کی [illegible]

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू मे दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर मे क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस मे क़ुरान का पाच सौ से ऊपर आयतो का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान मे जहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किस कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहे या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनो की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहे उन्हे इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान मे, नागरी और उर्दू दोनो लिखावटों मे अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب آسان ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ہند"

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press South Malaka, Allahabad.


नया हिन्द
نیا ہند
अक्टूबर
सन् १९४८
एक आना

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

तारावन्द भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ सुन्दरलाल

अक्तूबर १९४८

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

एक परचा दस आने.

मैनेजर

'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچہ

ایڈیٹر —

تاراچند بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھرناتھ سندر لال

اکتوبر ۱۹۴۸

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ - باہر دس روپیہ سال

ایک پرچہ دس آنے

منیجر

' نیا ہند '

۴۸ ' بائی کا باغ الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ५ अक्तूबर '४८ नम्बर ४

اکتوبر ۴۸ — نمبر ۴ ۵۸

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

ات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
نیا ہند پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

मंज़िल को पहिचान

(भाई 'क़तील' शिफाई)

मंज़िल को पहिचान
मुसाफ़िर
मंज़िल को पहिचान
कितनी आड़ी तिरछी राहें
देखेंगी मायूस निगाहें
लाना मत होठों पर आहें

منزل کو پہچان

(بھائی قتیل شفائی)

منزل کو پہچان
مسافر
منزل کو پہچان
کتنی آڑی ترچھی راہیں
دیکھیں گی مایوس نگاہیں
لانا مت ہونٹوں پر آہیں

यह नहीं तेरी शान
मुसाफिर
मंज़िल को पहिचान
फाँद के पर्वत बढ़ते जाना
दरियाओं को बूंद बनाना
सहराओं की खाक उड़ाना
बन जाना तूफ़ान
मुसाफ़िर
मंज़िल को पहचान
बिजली कड़के आँधी आये
सारी दुनिया पलटा खाये
धरती पानी में बह जाये
हार न फिर भी मान
मुसाफ़िर
मंज़िल को पहिचान

یہ نہیں تیری شان
مسافر
منزل کو پہچان
پھاند کے پربت بڑھتے جانا
دریاؤں کو بوند بنانا
صحراؤں کی خاک اڑانا
بن جانا طوفان
مسافر
منزل کو پہچان
بجلی کڑکے آندھی آئے
ساری دنیا پلٹا کھائے
دھرتی پانی میں بہہ جائے
ہار نہ پھر بھی مان
مسافر
منزل کو پہچان

वफ़ादारी का मसला

(भाई रतनलाल बंसल)

अंग्रेज़ों के हटने के बाद हमारे देश में जो बहुत से नये मसले उठ खड़े हुए हैं, उनमें से एक बहुत ही उलझा हुआ मसला वफ़ादारी का है. हिन्दुस्तान के वह संगठन और नेता, जिनके दिमाग़ में फ़िरक़ापरस्ती यानी साम्प्रदायिकता का ज़हर भरा हुआ है, कभी कभी छिपे छिपे और घुमा फिरा कर और कभी कभी साफ़ तौर पर यह प्रचार करते रहते हैं कि हिन्दुस्तान की मुसलमान जनता कभी हिन्दुस्तान के साथ वफ़ादार नहीं हो सकती. इसलिये हर एक हिन्दू को यह कोशिश करनी चाहिये कि किसी भी तरह तमाम मुसलमान हिन्दुस्तान छोड़कर चले जायँ.

ठीक यही बात पाकिस्तान में हिन्दुओं और नेशनलिस्ट यानी राष्ट्रीय मुसलमानों के बारे में कही जाती है. चूंकि पाकिस्तान की सरकार खुल्लम खुल्ला अपने को फ़िरक़ेवाराना सरकार कहती है, इसलिये वहाँ इस तरह का प्रचार सरकार की तरफ़ से भी होता है. पाकिस्तान सरकार के पास यही सबसे बड़ा हथियार है. जिसके सहारे वह अपनी नुक्ताचीनी करने वालो को आसानी से जेल में बन्द करती है. सरहद मे तो यही बहाना लगा कर न सिर्फ़ ख़ुदाई ख़िदमतगारों को बल्कि हज़ारो लीगियो तक को जेलों में बन्द कर दिया गया है. इस बारे में आल पाकिस्तान लीग कौन्सिल के एक मेम्बर ख़ान गुलाम मुहम्मद ख़ाँ ने १८ जुलाई

وفاداری کا مسئلہ

(بھائی رتن لال بنسل)

انگریزوں کے ہٹنے کے بعد ہمارے دیش میں جو بہت سے نئے
ئلے اُٹھ کھڑے ہوئے ہیں، اُن میں سے ایک بہت ہی اُلجھا ہوا مسئلہ
داری کا ہے۔ ہندستان کے وہ سنگٹھن اور نیتا، جن کے دماغ میں فرقہ پرستی یعنی
میردایکتا کا زہر بھرا ہوا ہے، کبھی کبھی چھپے چھپے اور گھما پھرا کر اور کبھی کبھی
اف طور پر یہ پرچار کرتے رہتے ہیں کہ ہندستان کی مسلمان جنتا کبھی
دستان کے ساتھ وفادار نہیں ہو سکتی، اس لئے ہر ایک ہندو کو یہ کوشش
نی چاہئے کہ کسی بھی طرح تمام مسلمان ہندستان چھوڑ کر چلے جائیں۔

ٹھیک یہی بات پاکستان میں ہندوؤں اور نیشنلسٹ یعنی راشٹریہ
لمانوں کے بارے میں کہی جاتی ہے۔ چونکہ پاکستان کی سرکار کھلم کھلا
پنے کو فرقہ دارانہ سرکار کہتی ہے، اس لئے وہاں اس طرح کا پرچار
رکار کی طرف سے بھی ہوتا ہے۔ پاکستان سرکار کے پاس یہی سب سے
ا ہتھیار ہے، جس کے سہارے وہ اپنی نکتہ چینی کرنے والوں کو آسانی
ے جیل میں بند کرتی ہے۔ سرحد میں تو یہی بہانہ لگا کر نہ صرف
ائی خدمت گاروں کو بلکہ ہزاروں لیگیوں تک کو جیلوں میں
بند کر دیا گیا ہے۔ اس بارے میں آل پاکستان لیگ
نسل کے ایک ممبر خان غلام محمد خان نے ۱۸ جولائی

१९४८ को एक बयान देते हुए कहा था—

"मैं पूरे यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि ख़ुदाई ख़िदमतगार पाकिस्तान के ख़िलाफ़ नहीं हैं. लेकिन मिनिस्ट्री के वह ज़रूर ख़िलाफ़ हैं. इसलिये नहीं कि यह मिनिस्ट्री लीग की है, बल्कि इसलिये कि वह एक निकम्मी मिनिस्ट्री है.

और ख़ुदाई ख़िदमतगार ही क्यों आम जनता और पुराने लीगी नेता भी इस मिनिस्ट्री के ख़िलाफ़ हैं. जितने लोग आजकल गिरफ़्तार हैं, उनमें से ८० फ़ीसदी लीगी हैं और सिर्फ़ बीस फ़ीसदी ख़ुदाई ख़िदमतगार हैं. सरहद की जनता को मिनिस्ट्री में रत्ती भर भी यक़ीन नहीं रह गया है. यह तो सिर्फ़ ऐसेम्बली के उन २४ मेम्बरों का मंत्रिमंडल है, जिन्हें अब्दुलक़ैयूम ख़ाँ से पैसे मिलते हैं".

यह बयान देने के कुछ ही दिन बाद पाकिस्तान के लिये जी जान से लड़ने वाले ख़ान ग़ुलाम मुहम्मद ख़ाँ को भी सरहद की सरकार ने ग़ैर वफ़ादार होने के जुर्म में गिरफ़्तार कर लिया, और वह अभी तक (सितम्बर १९४८) जेल में बन्द हैं.

यह मिसाल साबित करती है कि सरकार की मनमानी के बारे में जो लोग एतराज़ करते हैं, वह लोग पाकिस्तान में ग़ैर वफ़ादार समझ लिये जाते हैं. ठीक यही तरीक़ा जर्मनी के हिटलर ने भी अपनाया था.

हिन्दुस्तान में जो लोग मुसलमानों को ग़ैर वफ़ादार बताते हैं, वह अक्सर नीचे लिखी दलीलें देते देखे जाते हैं—

(१) मुसलमानों ने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करने की मांग की

۱۹۴۸ء کو ایک بیان دیتے ہوئے کہا تھا ــــ

" میں پورے یقین کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ خدائی خدمتگار ستان کے خلاف نہیں ہیں. لیکن منسٹری کے وہ ضرور اف ہیں. اس لئے نہیں کہ یہ منسٹری لیگ کی ہے، بلکہ اس لئے وہ ایک نکمی منسٹری ہے.

اور خدائی خدمتگار ہی کیوں عام جنتا اور پرانے لیگی ا بھی اس منسٹری کے خلاف ہیں. جتنے لوگ آج کل گرفتار ، اُن میں سے ۸۰ فی صدی لیگی ہیں اور صرف بیس فی صدی ائی خدمتگار ہیں. سرحد کی جنتا کو منسٹری میں رتی بھر بھی یقین یں رہ گیا ہے. یہ تو صرف اسمبلی کے اُن ۲۴ ممبروں کا منتری ڈل ہے، جنھیں عبدالقیوم خاں سے پیسے ملتے ہیں "

یہ بیان دینے کے کچھ ہی دن بعد پاکستان کے لئے جان سے لڑنے والے خان غلام محمد خاں کو بھی سرحد کی رکار نے غیر وفادار ہونے کے جرم میں گرفتار کرلیا، اور وہ ی تک (ستمبر ۱۹۴۸ء) جیل میں بند ہیں.

یہ مثال ثابت کرتی ہے کہ سرکار کی من مانی کے بارے ، جو لوگ اعتراض کرتے ہیں، وہ لوگ پاکستان میں غیر وفادار سمجھ لئے تے ہیں. ٹھیک یہی طریقہ جرمنی کے ہٹلر نے بھی اپنایا تھا.

ہندستان میں جو لوگ مسلمانوں کو غیر وفادار بتاتے ہیں، وہ ثر نیچے لکھی دلیلیں دیتے دیکھے جاتے ہیں ــــ

(۱) مسلمانوں نے ہندستان کے دو ٹکڑے کرنے کی مانگ کی

और मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद इसके साथ थी.

(२) मुसलमान बाहर से आई हुई एक विदेशी क़ौम हैं. उसके तीरथ स्थान मक्का-मदीना वग़ैरा दूसरे मुल्कों में हैं. इसलिये मुसलमानों की आँखें हमेशा इस्लामी मुल्कों की तरफ़ ही लगी रहती हैं.

(३) तवारीख़ यानी इतिहास बताता है कि जब भी किसी मुसलमान मुल्क की ग़ैर मुस्लिम मुल्क से लड़ाई हुई है, तो ग़ैर मुस्लिम मुल्क के मुसलमानो ने अपने देश से विश्वासघात करके मुसलमान मुल्क का साथ दिया है.

(४) मुसलमानों की शरीयत यानी मज़हब भी यह बताता है कि वह कभी मुसलमानो के ख़िलाफ़ ग़ैर मुसलमानो की मदद न करें, इसलिये पाकिस्तान से जंग शुरू होते ही हिन्दुस्तान के मुसलमान पाकिस्तान की हिमायत मे खड़े हो जायँगे.

(५) आज भी हिन्दुस्तान के बहुत से मुसलमान पाकिस्तान और हैदराबाद का प्रोपेगन्डा करते हुए देखे जाते हैं और इस जुर्म में गिरफ्तार भी हुए हैं.

आइये अब हम इन तमाम दलीलो को सिलसिलेवार तर्क की कसौटी पर कसें और बिना किसी पक्षपात के इन दलीलो की सचाई परखें.

जहाँ तक असलियत का सवाल है नं० १ दलील बिलकुल सही है. सचमुच मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद ने हिन्दुस्तान के दो हिस्से कर देने की मांग की थी और अंग्रेज़ी हुकूमत का सहारा लेकर अपनी इस मांग में कामयाब भी हुए.

مسلمانوں کی بہت بڑی تعداد اس کے ساتھ تھی۔

(۲) مسلمان باہر سے آئی ہوئی ایک ودیشی قوم ہے۔ اس کے تھ استھان مکہ مدینہ وغیرہ دوسرے ملکوں میں ہیں۔ اس لئے انوں کی آنکھیں ہمیشہ اسلامی ملکوں کی طرف ہی لگی رہتی ہیں۔

(۳) تواریخ یعنی اتہاس بتاتا ہے کہ جب بھی کسی مسلمان ملک غیر مسلم ملک سے لڑائی ہوئی ہے، تو غیر مسلم ملک کے مسلمانوں نے اپنے دیش سے وشواس گھات کرکے مسلمان ملک ساتھ دیا ہے۔

(۴) مسلمانوں کی شریعت یعنی مذہب بھی یہ بتاتا ہے کہ بھی مسلمانوں کے خلاف غیر مسلمانوں کی مدد نہ کریں، اس لئے ستان سے جنگ شروع ہوتے ہی ہندستان کے مسلمان پاکستان حمایت میں کھڑے ہو جائیں گے۔

(۵) آج بھی ہندستان کے بہت سے مسلمان پاکستان اور رآباد کا پروپگنڈا کرتے ہوئے دیکھے جاتے ہیں اور اس جرم گرفتار بھی ہوئے ہیں۔

آئیے اب ہم ان تمام دلیلوں کو سلسلہ وار ترک کی کسوٹی پر کسیں اور سی پکشپات کے ان دلیلوں کی سچائی پرکھیں۔

جہاں تک اصلیت کا سوال ہے نمبر ۱ دلیل بالکل صحیح ہے۔ چ مسلمانوں کی بہت بڑی تعداد نے ہندستان کے دو حصے دینے کی مانگ کی تھی اور انگریزی حکومت کا سہارا لے کر اپنی اس ب میں کامیاب بھی ہوئے۔

लेकिन सवाल यह उठता है कि अगर सिर्फ़ इस जुर्म मे मुसलमानो को ग़ैर वफ़ादार मान लें और उनको हिन्दुस्तान से निकालने का फ़ैसला कर लें, तब तो हमको सिक्खिस्तान की मांग करने वाले लाखों सिक्ख, अछूतिस्तान की मांग करने वाले करोड़ों अछूत, आदिबासियों के लिये अलग टुकड़े की मांग करने वाले लाखों आदिवासी भी हिन्दुस्तान से निकाल देने पड़ेंगे. शायद यह दलील दी जायगी कि यह लोग तो सिर्फ़ इसलिये अपने अपने हिस्सों की मांग कर रहे थे, जिससे कि लीग हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कराने में कामयाब न हो सके लेकिन खुली हुई सचाई यह है कि यह सभी पार्टियाँ उस वक़्त मुस्लिम लीग की हम प्याला हम निवाला बनी हुई थीं. सिक्खों के सबसे बड़े नेता मास्टर तारासिंह साहब और उनकी पार्टी सन् १९४० से ही खुल्लम-खुल्ला मुस्लिम लीग के साथ हो गई थी और यह खुला प्रचार करती थी कि पाकिस्तान की मांग जायज़ है और सिक्ख उसके साथ हैं. सिक्खों का यह दल इस बात का भी ऐलान करता था कि सिक्खों की सभ्यता हिन्दुओं के बजाय मुसलमानों से ज्यादा मिलती है और मुसलमानों के साथ उनका निबाह आसानी से हो सकता है. इस दल का सिक्खों पर कितना ज्यादा असर था यानी सिक्ख जनता कितनी बड़ी तादाद में इनके साथ थी, यह सिर्फ़ इसीसे साबित होता है कि आख़िरी चुनाव में तैंतीस में से बीस सीटें सिक्खिस्तान की मांग करने वाली इस पार्टी को मिली थीं और सिर्फ़ तेरह सीटें कॉंग्रेस को मिली थीं जो लीग का विरोध करती थी. हर एक पढ़ा लिखा आदमी यह भी जनता है कि आज भी

لیکن سوال یہ اُٹھتا ہے کہ اگر صرف اس جرم میں مسلمانوں کو
ر وفادار مان لیں اور اُن کو ہندستان سے نکالنے کا فیصلہ کر لیں،
ب تو ہم کو سکھستان کی مانگ کرنے والے لاکھوں سکھ، اچھوتستان
ی مانگ کرنے والے کروڑوں اچھوت، آدی باسیوں کے لئے
ب ٹکڑے کی مانگ کرنے والے لاکھوں آدی باسی بھی ہندستان
ے نکال دینے پڑیں گے۔ شاید یہ دلیل دی جائے گی کہ یہ
گ تو صرف اس لئے اپنے اپنے حصوں کی مانگ کر رہے تھے
س سے کہ لیگ ہندستان کے دو ٹکڑے کرانے میں کامیاب نہ ہو سکے
ن کھلی ہوئی سچائی یہ ہے کہ یہ سبھی پارٹیاں اس وقت مسلم لیگ کی
م پیالہ ہم نوالہ بنی ہوئی تھیں۔ سکھوں کے سب سے بڑے نیتا
اسٹر تارا سنگھ صاحب اور ان کی پارٹی سن ۱۹۴۰ سے ہی کھلم کھلا
سلم لیگ کے ساتھ ہو گئی تھی اور یہ کھلا پرچار کرتی تھی کہ پاکستان
انگ جائز ہے اور سکھ اُس کے ساتھ ہیں۔ سکھوں کا یہ دل اس
ت کا بھی اعلان کرتا تھا کہ سکھوں کی سبھیتا ہندوؤں کے بجائے
لمانوں سے زیادہ ملتی ہے اور مسلمانوں کے ساتھ اُن کا نباہ آسانی
سے ہو سکتا ہے۔ اس دل کا سکھوں پر کتنا زیادہ اثر تھا یعنی سکھ
تا کتنی بڑی تعداد میں ان کے ساتھ تھی، یہ صرف اسی
سے ثابت ہوتا ہے کہ آخری چناؤ میں تینتیس میں سے بیس
ٹیں سکھستان کی مانگ کرنے والی اس پارٹی کو ملی تھیں اور
ف تیرہ سیٹیں کانگریس کو ملی تھیں جو لیگ کا ورودھ کرتی
۔ ہر ایک پڑھا لکھا آدمی یہ بھی جانتا ہے کہ آج بھی

सिक्खिस्तान की मांग ख़तम नहीं हुई है और गोस्वामी गणेशदत्त जैसे हिन्दू संगठन के समर्थक नेता को भी यह शिकायत है कि पंजाब में हिन्दू हरिजनों को ज़बरदस्ती सिक्ख बनाया जा रहा है, जिससे सिक्खों की तादाद बढ़ जाय और सिक्खिस्तान बनाने में कामयाबी मिल सके.

ठीक यही बात अछूतों पर भी लागू होती है. हालाँकि चुनावों में अछूतों की वह पार्टी यानी अम्बेदकर साहब की पार्टी कामयाब नहीं हो सकी, जो मुस्लिम लीग के साथ मिला हुई थी, पर उनकी नाकामयाबी की वजह सिर्फ़ यह थी कि अछूतों और ग़ैर अछूत हिन्दुओं का मिला जुला चुनाव होता था. इस चुनाव से पहिले जितने ऐसे चुनाव हुए, जिसमे सिर्फ़ अछूत वोट दे सकते थे, उन सबमे सबसे ज्यादा वोट अम्बेदकर पार्टी के उम्मीदवार को मिलते रहे. इससे साबित होता है कि अछूतों की बड़ी तादाद अम्बेदकर पार्टी के साथ थी, जो पाकिस्तान की हामी थी, लीग से खुली मदद लेती थी, पाकिस्तान ज़िन्दाबाद के नारे लगाती थी और मि० जिन्ना को अपना क़ायदे आज़म मानती थी.

यही हालत बिहार मे आदिबासियो की और मद्रास मे द्राविड़ों की भी थी. इनका भी खुला ऐलान था कि पाकिस्ता की मांग जायज़ है. आदिबासियो के सबसे बड़े नेता जयपालसिंह ने पाकिस्तान की हिमायत मे बयान दिये और आदिबासियो की मांगो की हिमायत मे लीगी नेताओ ने बयान दिये. आगरा, नागपुर, बम्बई और कुछ दूसरे इलाक़ों में ऐसे बलवे भी हुए, जिसमें अछूतों, आदिबासियों वग़ैरा ने ऊँची जाति के हिंदुओं

(२६५)

کستان کی مانگ ختم نہیں ہوئی ہے اور گوسوامی گنیش دت جیسے ہندو نگٹھن کے سمرتھک نیتا کو بھی یہ شکایت ہے کہ پنجاب میں ہندو ہریجنوں زبردستی سکھ بنایا جا رہا ہے، جس سے سکھوں کی تعداد بڑھ جائے اور ستان بنانے میں کامیابی مل سکے۔

ٹھیک یہی بات اچھوتوں پر بھی لاگو ہوتی ہے۔ حالانکہ چناؤں ں اچھوتوں کی وہ پارٹی یعنی امبیدکر صاحب کی پارٹی کامیاب ہیں ہو سکی، جو مسلم لیگ کے ساتھ ملی ہوئی تھی۔ پر اُن کی کامیابی کی وجہ صرف یہ تھی کہ اچھوتوں اور غیر اچھوت ہندوؤں ا ملا جلا چناؤ ہوتا تھا۔ اس چناؤ سے پہلے جتنے ایسے چناؤ ہوئے ں میں صرف اچھوت ووٹ دے سکتے تھے، اُن سب میں سب سے زیادہ وٹ امبیدکر پارٹی کے امیدوار کو ملتے رہے۔ اس سے ثابت ہوتا ہے اچھوتوں کی بڑی تعداد امبیدکر پارٹی کے ساتھ تھی، جو پاکستان کی حامی ی، لیگ سے کھلی مدد لیتی تھی، پاکستان زندہ باد کے نعرے لگاتی تھی اور سٹر جناح کو اپنا قائد اعظم مانتی تھی۔

یہی حالت بہار میں آدی باسیوں کی اور مدراس میں وڑوں کی بھی تھی۔ ان کا بھی کھلا اعلان تھا کہ پاکستان کی مانگ ئز ہے۔ آدی باسیوں کے سب سے بڑے نیتا جے پال سنگھ نے پاکستان کی حمایت میں بیان دیئے اور آدی باسیوں کی وں کی حمایت میں لیگی نیتاؤں نے بیان دیئے۔ آگرہ، پور، بمبئی اور کچھ دوسرے علاقوں میں ایسے بلوے بھی ہوئے

पर चढ़ाई की और इसमें मुसलमानों की मदद ली. असलियत यह भी है कि आज भी बिहार और उड़ीसा के कुछ हल्कों में आदिबासियो को अलग टुकड़ा देने का आन्दोलन चल रहा है, जिसे सिर्फ़ ताक़त के सहारे कॉंग्रेसी सरकार दबाये हुए है.

सवाल होता है कि अगर पाकिस्तान के लिये वोट देने की बिना पर ही सब मुसलमान ग़ैर वफ़ादार हैं, तो इन सब जमातों को, जिन्होंने खुल्लम खुल्ला पाकिस्तान की हिमायत की और जिनकी बड़ी तादाद न सिर्फ़ हिन्दुस्तान में दो टुकड़े बल्कि कई टुकड़े करा देने पर तुली रही, कैसे वफ़ादार मान लिया जाय और मुसलमानों की तरह ही इन सबको हिन्दुस्तान से निकाल देने की क्यों न कोशिश की जाय ? क्योंकि इनमें से कई तो आज भी बचे खुचे हिन्दुस्तान को कई टुकड़ों में बाँट देने की कोशिश कर रही हैं.

(२) अब दूसरी दलील लीजिये. इसमें पहिली ग़लती तो यह है कि मुसलमान धर्म ज़रूर विदेशी है, लेकिन मुसलमान क़ौम विदेशी नहीं है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने भी मुसलमान रहते हैं, उनमें से शायद हज़ार में एक भी ऐसा न होगा, जिसकी नसों मे हिन्दुस्तानियों का ख़ून न हो, या जो दो, चार छः आठ पीढ़ी पहिले हिन्दू न हो. कौन कह सकता है कि हिन्दुओं में भी किसी के भी बदन में उन विदेशी शकों और दूसरों का ख़ून नहीं होगा, जो लाखों की तादाद में बाहर से आये और यहीं की जनता में घुल मिल गये. इस तरह मुसलमानों को विदेशी क़ौम कहना ही बुनियादी ग़लती है. अलबत्ता

ڑھائی کی اور اس میں مسلمانوں کی مدد لی. اصلیت یہ بھی ہے کہ آج
بہار اور اڑیسہ کے کچھ حلقوں میں آدی باسیوں کو الگ ٹکڑا دینے
آندولن چل رہا ہے، جسے صرف طاقت کے سہارے کانگریسی سرکار
ئے ہوئے ہے.

سوال ہوتا ہے کہ اگر پاکستان کے لئے ووٹ دینے کی بنا پر ہی سب
لمان غیر وفادار ہیں، تو ان سب جماعتوں کو، جنہوں نے کھلم کھلا
ستان کی حمایت کی اور جن کی بڑی تعداد نہ صرف ہندستان میں
ڑے بلکہ کئی ٹکڑے کرا دینے پر تلی رہی، کیسے وفادار مان لیا جائے
مسلمانوں کی طرح ہی ان سب کو ہندستان سے نکال دینے کی کیوں
شش کی جائے؟ کیونکہ ان میں سے کئی تو آج بھی بچے کھچے ہندستان
ی ٹکڑوں میں بانٹ دینے کی کوشش کر رہی ہیں.

(۲) اب دوسری دلیل لیجئے. اس میں پہلی غلطی تو
ہے کہ مسلمان دھرم ضرور بدیشی ہے، لیکن مسلمان
بدیشی نہیں ہے، ہندستان اور پاکستان میں جتنے بھی
ان رہتے ہیں، ان میں سے شاید ہزار میں ایک بھی ایسا نہ
، جس کی نسوں میں ہندستانیوں کا خون نہ ہو، یا جو
، چار چھ آٹھ پیڑھی پہلے ہندو نہ ہو. کون کہہ سکتا ہے
ہندوؤں میں بھی کسی کے بھی بدن میں ان بدیشی شکوں اور
روں کا خون نہیں ہوگا، جو لاکھوں کی تعداد میں باہر سے
ے اور یہیں کی جنتا میں گھل مل گئے. اس طرح
انوں کو بدیشی قوم کہنا ہی بنیادی غلطی ہے. البتہ

उनका मजहब जरूर विदेशी है और उनके तीर्थ स्थान भी विदेशों में हैं. लेकिन क्या इसी बिना पर चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, और लंका के करोड़ों बौद्धों को उनके मुल्क से निकाल दिया जाय और हिन्दुस्तान भेज दिया जाय कि वह हिन्दुस्तान के मजहब को, जो उनके लिये सौ फ़ीसदी विदेशी है, मानते हैं और यहाँ के बौद्ध तीर्थों को अपना तीर्थ मानते हैं. अगर यही उसूल इङ्गलैंड और जर्मनी या यूरोप के दूसरे मुल्क भी मानने लगें, तो शायद वहाँ कुछ इने गिने आदमी ही रह जायँ और तमाम आबादी फ़िलस्तीन भेज दी जाय, क्योंकि ईसाई मत को हजरत ईसा ने ही चलाया जो फ़िलस्तीन के थे. लेकिन इस बात का ख़याल करना भी परले सिरे का पागलपन है.

सिर्फ़ यही बात नहीं है. लोकमान्य तिलक, चिन्तामणि विनायक वैद्य, रामकृष्ण भण्डारकर जैसे बड़े बड़े इतिहास लिखने वालों की राय के मुताबिक तो आर्य जाति और आर्य धर्म भी विदेशी ही है, जो हिन्दुस्तान में बाहर से आया. कुछ लोग अब आकर यह कहने लगे हैं कि आर्य यहीं के रहने वाले थे और बाहर से नहीं आये, लेकिन यह सिर्फ़ उनकी हटधर्मी ही है, बाकी सभी ऐसे लोग भी जो इतिहास की खोज में ही दिन रात लगे रहते हैं और जिनकी खोजों का लोहा दुनिया भर में माना जाता है, आर्यों को बाहर से ही आया हुआ बताते हैं द्रविड़ और आदिवासी क़ौमें तो इसी बिना पर अपने को हिन्दुस्तान का असली मालिक बताती हैं. इस लिये अगर दूसरी दलील मान ली जाय, तब तो हिन्दुओं की एक बड़ी तादाद को भी हिन्दुस्तान छोड़ कर बीच एशिया

کا مذہب ضرور ودیشی ہے اور اُن کے تیرتھ استھان بھی ودیشوں
ہیں۔ لیکن کیا اِسی بنا پر چین، جاپان، تبت، برما، اور لنکا
کروڑوں بودھوں کو اُن کے ملک سے نکال دیا جائے اور ہندستان
دیا جائے کہ وہ ہندستان کے مذہب کو، جو اُن کے لئے سو فیصدی
ہے، مانتے ہیں اور یہاں کے بودھ تیرتھوں کو اپنا تیرتھ مانتے
۔ اگر یہی اُصول انگلینڈ اور جرمنی، یا یورپ کے دوسرے ملک
ماننے لگیں تو شاید وہاں کچھ اِنے گنے آدمی ہی رہ جائیں اور
آبادی فلسطین بھیج دی جائے، کیونکہ عیسائی مت کو حضرت
نے ہی چلایا جو فلسطین کے تھے۔ لیکن اس بات کا خیال
بھی پرلے سرے کا پاگل پن ہے۔

صرف یہی بات نہیں ہے۔ لوکمانیہ تلک، چنتامنی دنائک
رام کرشن بھنڈارکر جیسے بڑے بڑے اتہاس
نے والوں کی رائے کے مطابق تو آریہ جاتی اور آریہ دھرم
ودیشی ہی ہے، جو ہندستان میں باہر سے آیا۔ کچھ لوگ
آکر یہ کہنے لگے ہیں کہ آریہ یہاں کے رہنے والے تھے
باہر سے نہیں آئے، لیکن یہ صرف اُن کی ہٹ دھرمی ہی
، باقی سبھی ایسے لوگ بھی جو اتہاس کی کھوج ہی میں دن رات
رہتے ہیں اور جن کی کھوجوں کا لوہا دنیا بھر میں مانا جاتا ہے، آریوں
سے آیا ہوا بتاتے ہیں۔ دروڑ اور آدی باسی قومیں تو اسی بنا پر اپنے کو ہندستان
کی مالک بتاتی ہیں۔ اس لئے اگر دوسری دلیل مان لی جائے،
تو ہندوؤں کی ایک بڑی تعداد کو بھی ہندستان چھوڑ کر بیچ ایشیا

में चला जाना पड़ेगा. इस लिये देशी विदेशी की यह परिभाषा यानी तशरीह ही ग़लत है, जिसकी बिना पर आज सबसे ज़्यादा ज़हर फैलाया जा रहा है.

(३) तीसरी दलील कि मुसलमानों ने हमेशा मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के बीच जंग होने पर अपने देश के ख़िलाफ़ मुसलमानों का साथ दिया है, न जाने किन वाक़यात यानी घटनाओं को ध्यान में रखकर दी जाती है, जब कि असलियत दूसरी ही है. अभी कल की ही बात है. जब सन् १९१४ की लड़ाई में टर्की जर्मनी के साथ लड़ रहा था और अंग्रेज़ उसके ख़िलाफ़ थे. यह याद रखने लायक़ बात है कि उस वक़्त टर्की में ख़लीफ़ा की हुकूमत थी, जिसे दुनिया भर के मुसलमान मज़हबी निगाह से अपना बादशाह मानते थे और जिसके सामने पाकिस्तान की या किसी भी दूसरे इस्लामी मुल्क की कोई पोज़ीशन नहीं है. लेकिन फिर भी लाखों की तादाद में हिन्दुस्तानी मुसलमान टर्की के ख़िलाफ़ लड़ने लगे और मक्का मदीना तक पर गोलियाँ बरसा आये. सैकड़ों हिन्दुस्तानी मौलवियों ने यह फ़तवे दिये कि मज़हबी लिहाज़ से इस जंग में मुसलमानों को टर्की के ख़िलाफ़ हथियार उठाने में कोई एतराज़ नहीं होना चाहिये.

शायद कहा जाय कि हिन्दुस्तान के मुसलमान रोटियों के लालच से यह काम कर बैठे, तो अरबों की बाबत क्या कहा जायगा, जिन्होंने ठीक लड़ाई के बीच टर्की के ख़लीफ़ा का साथ छोड़ कर यानी उससे बग़ावत करके अंग्रेज़ों का साथ दिया था. वह तो उस वक़्त टर्की की प्रजा थे क्यों कि अरब मुल्कों पर टर्की की हकूमत थी.

چلا جانا پڑے گا۔ اس لئے دیشی بدیشی کی یہ پری بھاشا
تشریح ہی غلط ہے، جس کی بنا پر آج سب سے زیادہ
پھیلایا جا رہا ہے۔
(۳) تیسری دلیل کہ مسلمانوں نے ہمیشہ مسلمانوں اور غیر
انوں کے بیچ جنگ ہونے پر اپنے دیش کے خلاف
انوں کا ساتھ دیا ہے، نہ جانے کن واقعات یعنی گھٹناؤں
میان میں رکھ کر دی جاتی ہے، جب کہ اصلیت دوسری ہی
۔ ابھی کل کی ہی بات ہے، جب ۱۹۱۴ء کی لڑائی میں ٹرکی
نی کے ساتھ لڑ رہا تھا اور انگریز اس کے خلاف تھے۔ یہ یاد رکھنے
بات ہے کہ اس وقت ٹرکی میں خلیفہ کی حکومت تھی جسے
بھر کے مسلمان مذہبی نگاہ سے اپنا بادشاہ مانتے تھے اور
کے سامنے پاکستان کی یا کسی بھی دوسرے اسلامی ملک
کوئی پوزیشن نہیں ہے۔ لیکن پھر بھی لاکھوں کی تعداد
ہندستانی مسلمان ٹرکی کے خلاف لڑنے لگے اور مکہ مدینہ
پر گولیاں برسا آئے۔ سیکڑوں ہندستانی مولویوں نے
تیسے دیئے کہ مذہبی لحاظ سے اس جنگ میں مسلمانوں کو ٹرکی کے
ت ہتھیار اٹھانے میں کوئی اعتراض نہیں ہونا چاہیے۔
شاید کہا جائے کہ ہندستان کے مسلمان روٹیوں کے لالچ سے یہ کام
بیٹھے، تو عربوں کی بابت کیا کہا جائے گا، جنھوں نے ٹھیک لڑائی کے
ٹرکی کے خلیفہ کا ساتھ چھوڑ کر یعنی اس سے بغاوت کر کے انگریزوں کا ساتھ دیا تھا
اس وقت ٹرکی کی پرجا تھے کیونکہ عرب ملکوں پر ٹرکی کی حکومت تھی۔

अगर पुरानी मिसालें ही चाहियें और ऐसी मिसालें चाहियें, जो हिन्दुओं से सीधा ताल्लुक रखती हों, तो बाबर का हमला ले लिया जाय, जो १५२६ ई० में हुआ. जब बाबर मेवाड़ की तरफ बढ़ा तो सिकन्दर लोदी का लड़का मुहम्मद लोदी और मेवाती सरदार हसन खाँ भी राना साँगा के साथ थे और उनकी फ़ौज के हज़ारों मुसलमान सिपाहियों में से एक भी ऐसा नहीं था, जिसने ग़ैर वफादारी दिखाई हो.

ठीक इसी तरह शिवाजी के भी साथ, जिनका नाम फिरक़ापरती उभारने के लिये बड़े जोरों से लिया जाता है, बहुत से मुसलमान अफसर थे. सिद्दी, लाल और नूरखाँ तो बहुत बड़े अफसर थे. शिवाजी की जहाज़ी सेना मे सिद्दी सम्बल, सिद्दी मिस्री और दौलत ख़ाँ नामके तीन मुसलमान अफ़सर थे, जो आख़िर तक शिवाजी के वफादार रहे हालाँकि कुछ ऐसे हिन्दुओं का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने शिवाजी का साथ छोड़कर औरङ्गज़ेब का साथ दिया. यह तमाम बाते मरहठी इतिहास लेखको ने ही लिखी है, अंग्रेजो की या किसी और की नकल करके नही, बल्कि ख़ुद छानबीन करने के बाद.

इसी तरह गुरु गोविन्दसिंह के साथ भी हज़ारो मुसलमान थे और अनेक. बार उनकी जान मुसलमानो ने ही बचाई. सिक्ख इतिहास लेखकों ने भी यह लिखा है कि गुरु गोबिन्द सिंह के दोनों बच्चों के मारे जाने के बारे में जब राय पूछी गई, तो मालेर कोटला के मुसलमान नवाब ने उनको क़त्ल करने का (दीवार में चुनवाने की बात झूटी है) विरोध किया और

اگر پرانی مثالیں ہی چاہئیں اور ایسی مثالیں چاہئیں جو ہندوؤں
سیدھا تعلق رکھتی ہوں، تو بابر کا حملہ لے لیا جائے جو ۱۵۲۶ء
ہوا۔ جب بابر میواڑ کی طرف بڑھا تو سکندر لودی کا لڑکا محمد لودی
میواتی سردار حسن خاں بھی رانا سانگا کے ساتھ تھے اور اُن کی
کے ہزاروں مسلمان سپاہیوں میں سے ایک بھی ایسا نہیں
جس نے غیر وفاداری دکھائی ہو۔

ٹھیک اِسی طرح سیواجی کے بھی ساتھ، جن کا نام فرقہ پرستی
ابھارنے کے لئے بڑے زوروں سے لیا جاتا ہے، بہت سے
مسلمان افسر تھے۔ سدی، لال اور نورخاں تو بہت بڑے
افسر تھے۔ شیواجی کی جہازی سینا میں سدی سمبل، سدی
مصری اور دولت خان نام کے تین مسلمان افسر تھے، جو آخر تک شیواجی
کے وفادار رہے۔ حالانکہ کچھ ایسے ہندوؤں کا نام لیا جا سکتا ہے،
جنہوں نے شیواجی کا ساتھ چھوڑ کر اورنگزیب کا ساتھ دیا۔ یہ تمام
باتیں مرہٹی اتہاس لیکھکوں نے ہی لکھی ہیں، انگریزوں کی یا کسی اور
کی نقل کر کے نہیں بلکہ خود چھان بین کرنے کے بعد۔

اسی طرح گرو گوبند سنگھ کے ساتھ بھی ہزاروں مسلمان
تھے اور ایک بار اُن کی جان مسلمانوں نے ہی بچائی۔ سکھ
اتہاس لیکھکوں نے بھی یہ لکھا ہے کہ گرو گوبند سنگھ
کے دونوں بچوں کے مارے جانے کے بارے میں جب
رائے پوچھی گئی تو مالیر کوٹلہ کے مسلمان نواب نے اُن کو قتل
کرنے کا (دیوار میں چنوانے کی بات جھوٹی ہے) ورودھ کیا اور

दूसरी तरफ़ बहुत से हिन्दू राजाओं ने उनको क़त्ल कराने पर ज़ोर दिया. यह सब ऐसी बातें है, जिन पर सब इतिहास लिखने वाले बिल्कुल एक राय रखते हैं, लेकिन फ़िरक़ापरस्ती उभारने के लिये इस सच्चाई के ख़िलाफ़ आज तक प्रचार किया जा रहा है .

इसी तरह की और भी हज़ारों मिसालें दीजासकती हैं. यह भी ठीक है कि कुछ मिसाले ऐसी हैं, जब कि मुसलमानों ने हिन्दुओं या ग़ैर मुसलमानो का साथ छोड़ कर मुसलमानों का साथ दिया. लेकिन उतनी ही बल्कि उससे भी ज़्यादा मिसालें ऐसी भी हैं, जब हिन्दुओ ने हिंदुओं का साथ छोड़ कर मुसलमानों का या दूसरी क़ौमो का साथ दिया या ग़ैर हिंदुओं का साथ छोड़ कर हिंदुओं का साथ दिया. लेकिन इसी बिना पर तमाम हिंदुओं को विश्वासघाती यानी दग़ाबाज़ क़रार नही दिया जा सकता.

जिन लोगो ने इतिहास को आँख खोल कर पढ़ा है, वह जानते हैं कि महमूद ग़ज़नवी की फ़ौज में हज़ारों हिंदू सिपाही थे. उसका एक ख़ास सेनापति तिलक नामका ब्राह्मण था. यह भी इतिहास की सच्चाई है कि सन् ११९३ से १५२६ ई० के बीच में ३५ बादशाह दिल्ली के तख़्त पर बैठे, उनमें से १९ जान से मारे गये या क़त्ल कराये गये और वह सब मुसलमानों के ज़रिये ही मारे गये. इसी तरह रुपये के लिये हिंदुओं के भी नये पुराने इतिहास में भाई की गर्दन पर भाई ही तलवार चलाता रहा है और अपने साथ जनता को लेने के लिये उसने अक्सर

سری طرف بہت سے ہندو راجاؤں نے اُن کو قتل کرانے پر زور یا. یہ سب ایسی باتیں ہیں جن پر سب اتہاس لکھنے والے بالکل ک رائے رکھتے ہیں، لیکن فرقہ پرستی اُبھارنے کے لئے اس چائی کے خلاف آج تک پرچار کیا جا رہا ہے.

اسی طرح کی اور بھی ہزاروں مثالیں دی جا سکتی ہیں. یہ بھی ٹھیک ہے کہ کچھ مثالیں ایسی ہیں جبکہ مسلمانوں نے ہندوؤں غیر مسلموں کا ساتھ چھوڑ کر مسلمانوں کا ساتھ دیا. لیکن اتنی ہی ر اس سے بھی زیادہ مثالیں ایسی بھی ہیں، جب ہندوؤں نے ہندوؤں کا ساتھ چھوڑ کر مسلمانوں کا یا دوسری قوموں کا اتھ دیا یا غیر ہندوؤں کا ساتھ چھوڑ کر ہندوؤں کا اتھ دیا. لیکن اسی بناء پر تمام ہندوؤں کو وشواس گھاتی یعنی غا باز قرار نہیں دیا جا سکتا.

جن لوگوں نے اتہاس کو آنکھ کھول کر پڑھا ہے، وہ جانتے ں کہ محمود غزنوی کی فوج میں ہزاروں ہندو سپاہی تھے. اُسکا ک خاص سیناپتی تلک نام کا برہمن تھا. یہ بھی اتہاس ی سچائی ہے کہ ۱۱۹۳ء سے ۱۵۲۶ء کے بیچ میں ۳۵ دشاہ دلی کے تخت پر بیٹھے، اُن میں سے ۱۹ جان سے مارے گئے یا قتل کرائے گئے اور وہ سب مسلمانوں کے ذریعے ہی ارے گئے. اسی طرح روپے کے لئے ہندوؤں کے بھی ئے پرانے اتہاس میں بھائی کی گردن پر بھائی ہی تلوار چلاتا رہا ہے ور اپنے ساتھ جنتا کو لینے کے لئے اس نے اکثر

मजहब की भी आड़ली है, ठीक उसी तरह, जैसे आज कल चुंगी या कौंसिलों के चुनाव में ठाकुर ब्राह्मण और बनिये का सवाल पैदा कर दिया जाता है.

इस तरह से न तो नया और न पुराना इतिहास यह बताता है कि मुसलमानों ने ग़ैर मुसलमानों के मुक़ाबले में हमेशा मुसलमानों का ही पक्ष लिया हो.

(४) चौथी दलील का जवाब भी तीसरी दलील के जवाब में ही है. यह बात क़तई ग़लत है कि मुसलमान मजहबी तौर पर मुसलमान और ग़ैर मुसलमान के मुक़ाबले मे मुसलमान का साथ देने के लिये मजबूर हैं.

(५) अब पाँचवीं दलील लीजिये कि ज्यादातर मुसलमान आज भी हैदराबाद या पाकिस्तान के गीत गाते हैं और उसका प्रोपेगंडा करने के जुर्म मे गिरफ्तार भी हुए हैं. यह बात किसी हद तक ठीक है और किसी हद तक ग़लत. ठीक इस माने मे है कि मुसलमान जनता को उसके लीगी लीडरों ने जिस जगह छोड़ा है, वहाँ उसे सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा नज़र आता है. इसलिये मुसलमान अक्सर बहकी बहकी बातें भी करता है, लेकिन इसी तरह की बहकी बातें तो राजपूताने के जागीरदार भरतपुर इलाक़े के जाट और कुछ सिक्ख या और दूसरे दूसरे लोग भी कर रहे हैं. उन बेचारों की भी ठीक यही हालत है, जो मुसलमान जनता की है. यह लोग भी बहके हुए हैं और वह भी बहके हुए हैं. क्या वह तमाम राजा महाराजा जो बार बार चर्चिल के पास इस लिये दौड़े गये कि अगर वह अपने को आज़ाद ऐलान

ب کی بھی آڑ لی ہے، ٹھیک اسی طرح، جیسے آج کل چنگی
انسلوں کے چناؤ میں ٹھاکر برہمن اور بنئے کا سوال
اکر دیا جاتا ہے۔

اس طرح سے نہ تو نیا اور نہ پرانا اتہاس یہ بتاتا ہے کہ مسلمانوں
نے غیر مسلمانوں کے مقابلہ میں ہمیشہ مسلمانوں کا ہی پکش
لیا ہو۔

(۴) چوتھی دلیل کا جواب بھی تیسری دلیل کے جواب میں ہی
ہے۔ یہ بات قطعی غلط ہے کہ مسلمان مذہبی طور پر مسلمان اور غیر
مسلمان کے مقابلہ میں مسلمان کا ساتھ دینے کے لئے مجبور ہیں۔
(۵) اب پانچویں دلیل لیجئے کہ زیادہ تر مسلمان آج بھی حیدرآباد
یا پاکستان کے گیت گاتے ہیں، اور اس کا پروپگنڈہ کرنے کے
جرم میں گرفتار بھی ہوئے ہیں۔ یہ بات کسی حد تک ٹھیک ہے
اور کسی حد تک غلط۔ ٹھیک اس معنی میں ہے کہ مسلمان جنتا
کو اس کے لیگی لیڈروں نے جس جگہ چھوڑا ہے، وہاں اسے
صرف اندھیرا ہی اندھیرا نظر آتا ہے۔ اس لئے مسلمان اکثر
بہکی بہکی باتیں بھی کرتا ہے، لیکن اسی طرح کی بہکی باتیں تو راجپوتانے
کے جاگیردار، بھرت پور علاقے کے جاٹ اور کچھ سکھ یا اور
دوسرے دوسرے لوگ بھی کر رہے ہیں۔ ان بیچاروں کی بھی
ٹھیک یہی حالت ہے جو مسلمان جنتا کی ہے۔ یہ لوگ بھی بہکے ہوئے
ہیں اور وہ بھی بہکے ہوئے ہیں۔ کیا وہ تمام راجہ مہاراجہ جو بار بار چرچل
کے پاس اس لئے دوڑے گئے کہ اگر وہ اپنے کو آزاد اعلان

करदें, तो अंग्रेज़ों से उनको क्या मदद मिलेगी, हिन्दुस्तान से निकाल बाहर किये जाँय ? उन राजाओं को भी निकाल दिया जाय, जिन्होंने पाकिस्तान से साज़ बाज़ करने की कोशिश की ? क्या ट्रावनकोर के राजा और उसके हज़ारों हिमायतियों को इस लिये देश छोड़ देने को मजबूर करना चाहिये, कि उन्होंने १५ अगस्त १९४७ से पहिले ही पाकिस्तान मे अपना एक मुसलमान राजदूत मुक़र्रर कर दिया था और अपने को आज़ाद एलान कर दिया था ? और क्या ट्रावनकोर के राजा की इस हरकत पर ख़ुशी ज़ाहिर करने वाले और उसे अपना आशीर्वाद भेजने वाले श्री सावरकर और दूसरे हिन्दू फ़िरक़ा परस्त नेताओं को भी इसी जुर्म में हिन्दुस्तान से निकाल देना जायज़ होगा ? क्या इस बिना पर कि पाकिस्तान की हद में जितने लोग कपड़ा बेचते हुए पकड़े गये हैं, उनमें सौ फ़ीसदी हिन्दू और सिक्ख हैं, तमाम हिन्दू और सिक्खों को ग़ैर वफ़ादार कहा जा सकता है और क्या इस जुर्म में कि पञ्जाब को सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट ने जितना कपड़ा दिया, उसमे से ९० फ़ीसदी से भी ज्यादा कपड़ा पञ्जाब के हिन्दू-सिक्खों ने पाकिस्तान की हद में पहुँचा दिया, पूरे पंजाब को ग़ैर वफ़ादार मानना मुनासिब होगा ?

यही हालत हैदराबाद के मसले की भी है. वहाँ एक तरफ़ हज़ारों हिन्दू रज़ाकारों और दीनदारों में शरीक होकर रिज़वी को कृष्ण कह कर उसका इस्तक़बाल और स्वागत करते थे और जनता पर ज़ुल्म ढा रहे थे और दूसरी तरफ़ हाज़ारों ऐसे मुसलमान हैं, जो अपनी जान को ख़तरे में डाल कर भी रज़ाकारों की

دیں، تو انگریزوں سے اُن کو کیا مدد ملے گی، ہندستان سے ل باہر کئے جائیں ؟ اُن راجاؤں کو بھی نکال دیا جائے، وں نے پاکستان سے ساز باز کرنے کی کوشش کی؟ کیا ٹراون کور کے راجہ اور اُس کے ہزاروں حمایتیوں کو اس لئے دیش چھوڑ دینے مجبور کرنا چاہئے کہ انھوں نے ۱۵ اگست ۱۹۴۷ء سے پہلے ہی پاکستان میں ایک مسلمان راج دوت مقرر کر دیا تھا اور اپنے کو آزاد اعلان دیا تھا؟ اور کیا ٹراون کور کے راجہ کی اس حرکت پر خوشی ظاہر نے والے اور اُسے اپنا آشیرواد بھیجنے والے سری ساورکر اور سرے ہندو فرقہ پرست نیتاؤں کو بھی اس جرم میں ہندستان ے نکال دینا جائز ہوگا؟ کیا اس بنا پر کہ پاکستان کی حد میں تنے لوگ کپڑا بیچتے ہوئے پکڑے گئے ہیں، اُن میں سو صدی ہندو اور سکھ ہیں، تمام ہندو اور سکھوں کو غیر وفادار جا سکتا ہے اور کیا اس جرم میں کہ پنجاب کو سنٹرل گورنمنٹ نے نا کپڑا دیا، اُس میں سے ۹۰ فی صدی سے بھی زیادہ کپڑا پنجاب کے ہندو سکھوں نے پاکستان کی حد میں پہنچا دیا، پورے پنجاب غیر وفادار ماننا مناسب ہوگا؟

یہی حالت حیدرآباد کے مسئلے کی بھی ہے۔ وہاں ک طرف ہزاروں ہندو رضاکاروں اور دین داروں میں شریک ر رضوی کو کرشن کہہ کر اُس کا استقبال اور سواگت کرتے تھے جنتا پر ظلم ڈھا رہے تھے، اور دوسری طرف ہزاروں ایسے سلمان ہیں، جو اپنی جان کو خطرے میں ڈال کر بھی رضاکاروں کی

हरकतों का विरोध करते थे. इस सिलसिले में सब से ताजा मिसाल शोऐबुल्ला खाँ साहब की है, जो 'इमरोज़' अखबार के एडीटर थे. उनको रज़ाकारों ने धमकियाँ दीं कि अगर वह हिन्दुस्तान की हिमायत करेंगे तो क़त्ल कर दिये जायँगे, लेकिन वह तमाम खतरों को जानते हुए भी बहादुरी के साथ अपने उसूल पर जमे रहे और आखिर भरी जवानी में उनको अपनी जान से हाथ धोना पड़ा. काश्मीर में भी मक़बूल शेरवानी ने इसी तरह अपनी जान दी थी और कुछ बरस पहिले खान बहादुर अल्लाबख्श भी इसी सिलसिले मे मारे गये थे. सरहद में खान अब्दुल गफ्फार खाँ, डाक्टर खान साहब और उनके हज़ारो खुदाई खिदमतगारो ने किस तरह अपनी जान पर खेल कर हज़ारो हिन्दुओं की हिफ़ाज़त की, इसकी कहानी आपको हर एक सरहदी शरणार्थी से सुनने को मिल सकता है. दूसरी तरफ सरहद में और सिन्ध में व दूसरे पाकिस्तानी सूबों में ऐसे हिन्दू सिख भी थे, जो लीग के साथ थे और खुदाई खिदमतगारो या कांग्रेस के खिलाफ थे. इसी तरह आज तक हैदराबाद में राजा महबूबकरन, राजा कृष्णप्रसाद की औलादें और दूसरे बड़े बड़े हिन्दू जागिरदार तन मन से हिन्दुस्तान के खिलाफ निज़ाम की मदद करते रहे थे, क्योंकि उनको डर था कि अगर निज़ाम हिन्दुस्तान मे मिल गया, तो उनको अपनी जागीरो से हाथ धोना पड़ेगा. इसके अलावा बम्बई शोलापुर वग़ैरा मे ऐसे हिन्दू सेठ भी पकड़े गये हैं जो निज़ाम की मदद कर रहे थे. क्या इन सबके नाम पर सब हिंदुओं को ग़ैर वफ़ादार क़रार देना जायज़ होगा ?

ں کا ورودھ کرتے تھے۔ اس سلسلے میں سب سے تازہ مثال
ب اللہ خاں صاحب کی ہے، جو 'امروز' اخبار کے ایڈیٹر تھے۔
رضاکاروں نے دھمکیاں دیں کہ اگر وہ ہندستان کی حمایت
گے تو قتل کر دیئے جائیں گے، لیکن وہ تمام خطروں کو جانتے
ے بھی بہادری کے ساتھ اپنے اصول پر جمے رہے اور آخر
جوانی میں اُن کو اپنی جان سے ہاتھ دھونا پڑا۔ کاشمیر میں بھی
شیروانی نے اسی طرح اپنی جان دی تھی اور کچھ برس پہلے
بہادر اللہ بخش بھی اسی سلسلے میں مارے گئے تھے۔ سرحد میں
عبدالغفار خاں، ڈاکٹر خان صاحب اور اُن کے ہزاروں خدائی
ت گاروں نے کس طرح اپنی جان پر کھیل کر ہزاروں
دوں کی حفاظت کی۔ اس کی کہانی آپ کو ہر ایک سرحدی
ارتھی سے سننے کو مل سکتی ہے۔ دوسری طرف
میں اور سندھ میں و دوسرے پاکستانی صوبوں میں
ہندو سکھ بھی تھے، جو لیگ کے ساتھ تھے اور
خدمت گاروں یا کانگریس کے خلاف تھے۔ اسی طرح آج
حیدرآباد میں راجہ محبوب کرن، راجہ کرشن پرشاد کی اولادیں
دوسرے بڑے بڑے ہندو جاگیردار تن من سے ہندستان
خلاف نظام کی مدد کرتے رہے تھے، کیونکہ اُن کو ڈر تھا کہ اگر نظام
تان میں مل گیا تو اُن کو اپنی جاگیروں سے ہاتھ دھونا پڑے گا۔
اوہ بمبئی، شولاپور، وغیرہ میں ایسے ہندو سیٹھ بھی پکڑے گئے ہیں، جو نظام کی
رہے تھے۔ کیا ان سب کے نام پر سب ہندوؤں کو غیر وفادار قرار دینا جائز ہوگا؟

यह भी सब लोग जानते हैं कि हिन्दुस्तान में बहुत से ऐसे संगठन भी हैं, जो सौ फ़ीसदी हिन्दुओं के हैं, लेकिन जो ऐसा प्रचार करते हैं, जिससे सबसे ज़्यादा फ़ायदा पाकिस्तान को होता है. इन लोगों का प्रचार है कि काश्मीर मे हिन्दुस्तान की फ़ौजें हार रही हैं. हलाँकि सब लोग जानते हैं कि जब हिन्दुस्तान की फ़ौज काश्मीर पहुँची थी, तब श्री नगर से चार या पांच मील पर क़बायली थे, जब कि आज पूरी काश्मीर घाटी और जम्मू का बड़ा इलाक़ा भी क़बाइलियो से खाली करा लिया गया है.

इन सगठनों का प्रचार यह भी है कि शेख़ अब्दुल्ला और काश्मीर के राजा में आपस में नहीं पटती. ठीक यही प्रचार पाकिस्तान भी करता है, हालाँकि शेख़ अब्दुल्ला और काश्मीर महाराज दोनों ही इससे इन्कार करते हैं.

इन हिन्दू संगठनो का प्रचार यह भी है कि हिन्दुस्तान की सरकार कमज़ोर है. यह प्रचार भी पाकिस्तान दिन रात करता रहता है.

हिन्दुओं के यह संगठन इस बात की भी कोशिश करते हैं कि हिन्दू मुसलिम बलवे हों. पाकिस्तान और हैदराबाद का निज़ाम भी यही चाहता था, जिससे हिन्दुस्तान को सरकार अपनी पूरी ताक़त इन मोर्चों पर न लगा सके.

इस तरह हिंदुओ के यह संगठन जाने अनजाने पाकिस्तान के पाँचवें कालम का काम कर रहे हैं. लेकिन क्या इसी बिना पर पूरी हिंदू जनता को ग़ैर वफ़ादार कह दिया जाय ?

یہ بھی سب لوگ جانتے ہیں کہ ہندستان میں بہت سے ایسے سنگٹھن
...یں، جو سو فی صدی ہندوؤں کے ہیں، لیکن جو ایسا پرچار کرتے ہیں،
...سے سب سے زیادہ فائدہ پاکستان کو ہوتا ہے۔ ان لوگوں کا
...چار ہے کہ کاشمیر میں ہندستان کی فوجیں ہار رہی ہیں،
...لانکہ سب لوگ جانتے ہیں کہ جب ہندستان کی فوج کاشمیر
...پہنچی تھی، تب شری نگر سے چار یا پانچ میل پر قبائلی تھے۔
...ب کہ آج پوری کاشمیر گھاٹی اور جموں کا بڑا علاقہ بھی قبائلیوں
...سے خالی کرا لیا گیا ہے۔

ان سنگٹھنوں کا پرچار یہ بھی ہے کہ شیخ عبداللہ اور کاشمیر کے راجہ میں
...آپس میں نہیں پٹتی۔ ٹھیک یہی پرچار پاکستان بھی کرتا ہے، حالانکہ شیخ عبداللہ
...اور کاشمیر مہاراج دونوں ہی اس سے انکار کرتے ہیں۔

ان ہندو سنگٹھنوں کا پرچار یہ بھی ہے کہ ہندستان کی سرکار کمزور
ہے۔ یہ پرچار بھی پاکستان دن رات کرتا رہتا ہے۔

ہندوؤں کے یہ سنگٹھن اس بات کی بھی کوشش کرتے
...کہ ہندو مسلم بلوے ہوں۔ پاکستان اور حیدرآباد کا نظام بھی
...یہ چاہتا تھا، جس سے ہندستان کی سرکار اپنی پوری طاقت
...ان مورچوں پر نہ لگا سکے۔

اس طرح ہندوؤں کے یہ سنگٹھن جانے انجانے پا...
...ستان کے پانچویں کالم کا کام کر رہے ہیں۔ لیکن کیا اسی بنا پر
...ری ہندو جنتا کو غیر وفادار کہہ دیا جائے؟

हैं, वह कोई असलियत नहीं रखतीं. खुद दलीलें देने वाले भी जानते हैं कि यह बातें सही नहीं हैं. लेकिन कच्चे दिमाग़ के नौजवान और आम हिंदू जनता इस लिये इन पर आसानी से यक़ीन कर लेती है क्योंकि इन बातों मे जोश होता है, दूसरों के लिये नफ़रत होती है और धरम व जाति की दुहाई दी जाती है. हिटलर और मुसोलिनी ने भी यहूदियों और जर्मनी की सरकार के ख़िलाफ़ इसी तरह नफ़रत फैलाई थी. कुछ दिनों तक दुनिया ने देखा कि हिटलर और मुसोलिनी ने जर्मनी और इटली को ऊँचा उठाया लेकिन जिनकी आखे थीं वह जानते थे कि यह तो बालू की दीवार है. आख़िर में हिटलर और मुसोलिनी ख़ुद तो डूबे ही, अपने साथ जर्मनी और इटली को भी पूरी तरह बर्बाद कर गये. उनकी हार की सबसे बड़ी वजह यह थी कि उनकी ताक़त दूसरों की नफ़रत पर क़ायम थी.

दूसरी मिसाल रूस की है, जिसमें हिंदुस्तान से कहीं ज्यादा जातियाँ हैं. कई करोड़ तो मुसलमान ही हैं, जो मक्का मदीना के ठीक उतने ही भक्त हैं, जितने हिंदुस्तान के मुसलमान. लेकिन रूस के सामने कभी ऐसे सवाल नही आते. हिंदुस्तान की सरहद पर जिस तरह अफ़ग़ानिस्तान, ईरान वग़ैरा मुसलमान मुल्क हैं, ठीक यही मुल्क रूस के उस हिस्से की सरहद पर भी हैं, जिसमें सौ फ़ीसदी मुसलमान रहते हैं. लेकिन हिंदुस्तान के फ़िरक़ा परस्त हिंदू लीडरों की तरह रूस कभी यह फ़िक्र नहीं करता कि उसके मुसलमानी हलाक़े ईरान अफ़ग़ानिस्तान के साथ मिल कर रूस पर चढ़ाई न कर दें. इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि

وہ کوئی اصلیت نہیں رکھتیں۔ خود دلیلیں دینے والے بھی جانتے ہیں کہ یہ صحیح نہیں ہیں لیکن کچے دماغ کے نوجوان اور عام ہندو جنتا اس ان پر آسانی سے یقین کر لیتی ہے کیونکہ ان باتوں میں جوش ہے، دوسروں کے لئے نفرت ہوتی ہے اور دھرم و جاتی کی دہائی جاتی ہے۔ ہٹلر اور مسولینی نے بھی یہودیوں اور جرمنی کی سرکار خلاف اسی طرح نفرت پھیلائی تھی۔ کچھ دنوں تک دنیا نے کہ ہٹلر اور مسولینی نے جرمنی اور اٹلی کو اونچا اٹھایا لیکن [illegible] آنکھیں تھیں وہ جانتے تھے کہ یہ تو بالو کی دیوار ہے۔ آخر میں ہٹلر مسولینی خود تو ڈوبے ہی، اپنے ساتھ جرمنی اور اٹلی [illegible] پوری برباد کر گئے۔ اُن کی ہار کی سب سے بڑی وجہ یہ [illegible] اُن کی ت دوسروں کی نفرت پر قائم تھی۔

دوسری مثال روس کی ہے، جس میں ہندستان سے کہیں ہ جاتیاں ہیں۔ کئی کروڑ تو مسلمان ہی ہیں [illegible] مکہ مدینہ ٹھیک اتنے ہی بھگت ہیں، جتنے ہندستان کے مسلمان۔ روس کے سامنے کبھی ایسے سوال نہیں آتے۔ ہندستان سرحد پر جس طرح افغانستان، ایران وغیرہ مسلمان ملک ٹھیک یہی ملک روس کے اس حصے کی سرحد پر بھی ہیں، میں سو فی صدی مسلمان رہتے ہیں۔ لیکن ہندستان کے پرست ہندو لیڈروں کی طرح روس کبھی یہ فکر نہیں کہ اس کے مسلمانی علاقے ایران افغانستان کے ساتھ کر روس پر چڑھائی نہ کر دیں۔ اس کی وجہ صرف یہ ہے کہ

रूस में हिन्दुस्तान की तरह बड़े बड़े राजे महाराजे और पूँजी पति नहीं हैं, जिनको अपना ऐश आराम महफ़ूज़ रखने के लिये जनता में फ़िरक़ापरस्ती उभारने की ज़रूरत महसूस हो. इसी लिये जहाँ जर्मनी और इटली की फ़ौजों ने एक बार हारते ही पूरी तरह अपना दम तोड़ दिया, वहाँ रूस में एक एक मुहल्ले एक एक मकान के लिये भी जनता लड़ती रही और आज तो रूस पूरी दुनिया को अपनी उंगलियों पर खिलाता है.

क्या हम हिन्दुस्तान के हिन्दू इससे कुछ सबक़ लेंगे, और क्या मुसलमान भाई भी अब यह सीखेंगे कि फ़िरक़ापरस्ती यानी साम्प्रदायिकता का ज़हर हमको कितनी मुसीबतों में डाल सकता है और किसी तरह अगर हम इस ज़हर को अपने दिमाग़ से निकाल सकें, तो आज हिन्दुस्तान में भी मुसलमानों की वही पोज़ीशन हो सकती है, जो रूस में रूसी मुसलमानों की या चीन में चीनी मुसलमानों की है. इन मुल्कों में भी ग़ैर मुसलमानों की बहुतायत है, लेकिन न तो कभी वहाँ के मुसलमानों को अपने लिये अलग चुनाव कराने की ज़रूरत पड़ती है और न वहाँ की सरकारों को उनसे वफ़ादारी की क़सम लेने की. यही हालत मुसलमान मुल्कों में ग़ैर मुसलमानों की भी है. मिसाल के लिये मिश्र एक मुसलमानी देश है, लेकिन वहाँ की जनता एक बड़ी तादाद में ईसाई होगई है. ठीक उसी तरह, जैसे हिन्दुस्तान की जनता एक ख़ासी तादाद में मुसलमान हो गई है. जब मिश्र की आज़ादी का मसला खड़ा हुआ, तो अंग्रेज़ों की मेहरबानी से वहाँ भी यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि कम तादाद वाले ईसाइयों का

...ں میں ہندستان کی طرح بڑے بڑے راجے مہاراجے اور پونجی نہیں ہیں، جن کو اپنا عیش آرام محفوظ رکھنے کے لئے جنتا میں ...پرستی ابھارنے کی ضرورت محسوس ہو۔ اسی لئے جہاں ...ں اور اٹلی کی فوجوں نے ایک بار ہارتے ہی پوری طرح ...دم توڑ دیا، وہاں روس میں ایک ایک محلے ایک ایک مکان ...لئے بھی جنتا لڑتی رہی اور آج تو روس پوری دنیا کو اپنی ...وں پر کھلاتا ہے۔

کیا ہم ہندستان کے ہندو اس سے کچھ سبق لیں گے، اور کیا ...ان بھائی بھی اب یہ سیکھیں گے کہ فرقہ پرستی یعنی سامپردایکتا کا زہر ...کتنی مصیبتوں میں ڈال سکتا ہے اور کسی طرح اگر ہم اس زہر کو اپنے ...غ سے نکال سکیں، تو آج ہندستان میں بھی مسلمانوں کی وہی پوزیشن ...ی ہے، جو روس میں روسی مسلمانوں کی یا چین میں چینی مسلمانوں کی ...۔ ان ملکوں میں بھی غیر مسلمانوں کی بہتایت ہے، لیکن نہ تو کبھی وہاں ...مسلمانوں کو اپنے لئے الگ چناؤ کرانے کی ضرورت پڑتی ہے، ...ہ وہاں کی سرکاروں کو ان سے وفاداری کی قسم لینے کی۔ یہی حالت ...ان ملکوں میں غیر مسلمانوں کی بھی ہے۔ مثال کے لئے ...ایک مسلمانی دیش ہے، لیکن وہاں کی جنتا ایک بڑی ...اد میں عیسائی ہو گئی ہے۔ ٹھیک اسی طرح، جیسے ہندستان ...جنتا ایک خاصی تعداد میں مسلمان ہو گئی ہے۔ جب مصر کی ...دی کا مسئلہ کھڑا ہوا، تو انگریزوں کی مہربانی سے ...ں بھی یہ سوال اٹھ کھڑا ہوا کہ کم تعداد والے عیسائیوں کا

क्या होगा ? इस पर मिश्र के सबसे बड़े नेता जग़लूल पाशा ने ईसाइयों से अपनी माँगें लिख कर देने को कहा और जब ईसाइयों ने अपनी माँगें लिख कर दीं, तो दो मॉगें अपनी तरफ़ से उसमें और जोड़ कर उसे पूरा का पूरा मंजूर कर लिया. ईसाइयों ने इसका जवाब यह दिया कि उस शर्तनामे को फाड़ कर फेंक दिया और बिना किसी शर्त के उनके साथ हो गये. ठीक यही बात हिन्दुस्तान में गान्धी जी ने भी करने की कोशिश की और मुसलमानों को कोरा चेक देने की बात कही पर गान्धी जी को अपनी इस बात पर एक तरफ़ हिन्दुओं से गालियाँ खानी पड़ीं और दूसरी तरफ़ अंग्रेजों ने मुसलमानों को उनकी मॉग से ज्यादा देकर उनको भड़काना जारी रक्खा. नतीजा यह हुआ कि गान्धी जी सिर्फ़ कुछ लाख मुसलमानों को ही अपने साथ लेने में कामयाब हो सके .

काश ! उस वक्त हिन्दू या मुसलमानों में से कोई एक ही असल बात को समझ पाता.

लेकिन जो हुआ, सो हुआ. पाकिस्तान बना उसके बनने से हिंदुओं को कितना नुकसान हुआ और मुसलमानों को कितना नुक़सान हुआ, यह बात अगर ठंडे दिल से सोची जाय, तो नतीजा दूसरा ही निकलता है. अगर हिन्दुस्तान मे मुसलमानों से भाई चारे का बर्ताव रहे और हिन्दुस्तान के मुसलमान इसमें मदद दें, तो पाकिस्तान कितने दिन जिन्दा रहेगा, इसका अन्दाजा भी आसानी से लगाया जा सकता है. पाकिस्तान का आज अफ़ग़ानिस्तान से जो विरोध है और

ہوگا ؟ اس پر مصر کے سب سے بڑے نیتا زاغلول پاشا نے عیسائیوں سے اپنی مانگیں لکھکر دینے کو کہا اور جب عیسائیوں نے اپنی مانگیں لکھ کر دیں، تو دو مانگیں اپنی طرف سے اس میں اور جوڑ کر اُسے پورا کا پورا منظور کر لیا۔ عیسائیوں نے اسکا جواب یہ دیا کہ اُس شرط نامے کو پھاڑ کر پھینک دیا اور بنا کسی شرط کے اُن کے ساتھ ہو گئے۔ ٹھیک یہی بات ہندستان میں گاندھی جی نے بھی کرنے کی کوشش کی اور مسلمانوں کو کورا چیک دینے کی بات کہی پر گاندھی جی کو اپنی اس بات پر ایک طرف ہندوؤں سے گالیاں کھانی پڑیں اور دوسری طرف انگریزوں نے مسلمانوں کو اُن کی مانگ سے زیادہ دے کر اُن کو بھڑکانا جاری رکھا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ گاندھی جی صرف کچھ لاکھ مسلمانوں کو ہی اپنے ساتھ لینے میں کامیاب ہو سکے۔

کاش ! اُس وقت ہندو یا مسلمانوں میں سے کوئی ایک ہی اصل بات کو سمجھ پاتا۔

لیکن جو ہوا سو ہوا۔ پاکستان بنا۔ اُس کے بننے سے ہندوؤں کو کتنا نقصان ہوا اور مسلمانوں کو کتنا نقصان ہوا، یہ بات اگر ٹھنڈے دل سے سوچی جائے تو نتیجہ دوسرا ہی نکلتا ہے۔ اگر ہندستان میں مسلمانوں سے بھائی چارے کا برتاؤ رہے اور ہندستان کے مسلمان اس میں مدد دیں، تو پاکستان کتنے دن زندہ رہے گا' اس کا اندازہ بھی آسانی سے لگایا جا سکتا ہے۔ پاکستان کا آج افغانستان سے جو ورودھ ہے اور

सरहदी पठानों में पाकिस्तान के ख़िलाफ़ जो भावना पाई जाती है, वह भी इस बात का सुबूत है कि पाकिस्तान जल्दी में, ग़ुस्से में और जोश में किया हुआ एक फ़ैसला है, जिस पर करोड़ों मुसलमानों को एक दिन पछताना पड़ेगा और करोड़ों मुसलमान आज भी पछता रहे हैं. इधर से गये हुए मुसलमान शरणार्थियों के साथ पाकिस्तान जो बर्ताव कर रहा है, वह भी यह ज़ाहिर करता है कि पाकिस्तान की माली हालत कैसी है ? पाकिस्तान चाहता है कि अपनी इन तमाम कमज़ोरियों को वह दूसरे मुसलमान मुल्कों से इस्लाम के नाम पर मदद लेकर पूरी कर ले. लेकिन हिन्दुस्तान की सरकार ने यह ऐलान करके कि पाकिस्तान चाहे इस्लामी मुल्क रहे या न रहे, हिन्दुस्तान सब क़ौमों का मिला जुला मुल्क रहेगा, पाकिस्तान की इस कोशिश को बेकार कर दिया है. यही वजह है कि आज पाकिस्तान की तरफ़ से दूसरे मुल्कों, ख़ास कर इस्लामी मुल्कों में यह प्रचार किया जाता है कि हिंदुस्तान मे मुसलमानों पर बड़े ज़ुल्म हो रहे हैं. यह प्रचार इस लिये किया जाता है, जिससे इन इस्लामी मुल्कों की जनता भड़के और अपनी सरकारों पर यह दबाव डाले कि वह पाकिस्तान की मदद करे और इसी तरह हिंदुस्तान की सरकार इस्लामी मुल्कों में मुसलमान राजदूतों को भेज कर और हिंदुस्तान में मुसलमानों की हिफ़ाज़त करके पाकिस्तान के इस प्रचार को झुटला देना चाहती है. लेकिन हिंदुस्तान की सरकार के काम में सबसे बड़ी बाधा एक तरफ़ तो वह हिंदू संगठन डालते हैं, जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत फैला कर अपना मत-लब पूरा करते हैं और दूसरी तरफ़ वह मुसलमान डालते हैं, जिनकी

سرحدی پٹھانوں میں پاکستان کے خلاف جو بھاؤنا پائی جاتی ہے، وہ بھی اس بات کا ثبوت ہے کہ پاکستان جلدی میں، غصے میں اور جوش میں کیا ہوا ایک فیصلہ ہے، جس پر کروڑوں مسلمانوں کو ایک دن پچھتانا پڑے گا اور کروڑوں مسلمان آج بھی پچھتا رہے ہیں۔ ادھر سے گئے ہوئے مسلمان شرنارتھیوں کے ساتھ پاکستان جو برتاؤ کر رہا ہے، وہ بھی یہ ظاہر کرتا ہے کہ پاکستان کی مالی حالت کیسی ہے؟ پاکستان چاہتا ہے کہ اپنی ان تمام کمزوریوں کو وہ دوسرے مسلمان ملکوں سے اسلام کے نام پر مدد لے کر پوری کر لے۔ لیکن ہندستان کی سرکار نے یہ اعلان کر کے کہ پاکستان چاہے اسلامی ملک رہے یا نہ رہے، ہندستان سب قوموں کا ملا جلا ملک رہے گا، پاکستان کی اس کوشش کو بیکار کر دیا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ آج پاکستان کی طرف سے دوسرے ملکوں، خاص کر اسلامی ملکوں میں یہ پرچار کیا جاتا ہے کہ ہندستان میں مسلمانوں پر بڑے ظلم ہو رہے ہیں۔ یہ پرچار اس لئے کیا جاتا ہے، جس سے ان اسلامی ملکوں کی جنتا بھڑکے اور اپنی سرکاروں پر یہ دباؤ ڈالے کہ وہ پاکستان کی مدد کرے اور اسی طرح ہندستان کی سرکار اسلامی ملکوں میں مسلمان راجدوتوں کو بھیج کر اور ہندستان میں مسلمانوں کی حفاظت کر کے پاکستان کے اس پرچار کو جھٹلا دینا چاہتی ہے۔ لیکن ہندستان کی سرکار کے کام میں سب سے بڑی بادھا ایک طرف تو وہ ہندو سنگٹھن ڈالتے ہیں، جو مسلمانوں کے خلاف نفرت پھیلا کر اپنا مطلب پورا کرتے ہیں اور دوسری طرف وہ مسلمان ڈالتے ہیں، جن کی

आँखें अभी तक नहीं खुली हैं. इस लिये यह जरूरी है कि दोनों क़ौमें समझें. हिंदू मुसलमानों को इत्मीनान दिलायें कि उनकी जान व माल और इज्ज़त की हिंदुस्तान में पूरी तरह से हिफ़ाज़त की जायगी, चाहे पाकिस्तान में कुछ भी होता रहे. और मुसलमान यह इत्मीनान दिलायें कि चाहे हिंदुओं का उनके साथ कैसा ही बर्ताव रहे, वह हिंदुस्तान के लिये पूरी तरह वफ़ादार रहेंगे. इसके अलावा हिंदुस्तान की भलाई और हिंदू धर्म व इस्लाम की इज्ज़त को बचाने और फिर से क़ायम करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है.

लेकिन ज़िद, जोश और साम्प्रदायिकता से भरे हुए व मतलबी लोगों के उभारे हुए हिंदू मुसललानों में से कितने इस आवाज़ को सुनेंगे ?

آنکھیں ابھی تک نہیں کھلی ہیں۔ اس لئے یہ ضروری ہے کہ دونوں قومیں سمجھیں۔ ہندو مسلمانوں کو اطمینان دلائیں کہ اُن کی جان و مال اور عزت کی ہندستان میں پوری طرح سے حفاظت کی جائے گی، چاہے پاکستان میں کچھ بھی ہوتا رہے۔ اور مسلمان یہ اطمینان دلائیں کہ چاہے ہندوؤں کا اُن کے ساتھ کیسا ہی برتاؤ رہے، وہ ہندستان کے لئے پوری طرح وفادار رہیں گے۔ اس کے علاوہ ہندستان کی بھلائی اور ہندو دھرم و اسلام کی عزت کو بچانے اور پھر سے قائم کرنے کا کوئی دوسرا اُپائے نہیں ہے۔

لیکن ضد، جوش اور سامپردائکتا سے بھرے ہوئے و مطلبی لوگوں کے اُبھارے ہوئے ہندو مسلمانوں میں سے کتنے اس آواز کو سنیں گے؟

सच्चा प्रेम

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

उसके अब्बा हंडिया तहसील के निवासी थे, जिन्होंने इधर ख़ुल्दाबाद मुहल्ले में सिलाई की दूकान खोल रक्खी थी. उन्हें लड़की की तालीम का बड़ा ध्यान था. इसी का नतीजा था कि जब उसकी उम्र शादी के लायक़ हुई तो वह हाई स्कूल के नवें दरजे में पहुँच चुकी थी.

पर नूरजहाँ इसके साल दो साल पहिले से ही अपनी शादी की तैयारी कर रही थी. दीनबन्धु, जो एक कलर्क का लड़का था, नूरजहाँ के मकान में बिना किसी एतराज़ के आता था. नूरजहाँ और दीनबन्धु के माँ बाप में इतना अधिक घरेलू सम्बन्ध था कि किसी को इस बात पर एतराज़ नहीं था कि क्यों वह एक दूसरे से इतना हिल मिलकर रहते हैं. यहाँ तक कि उम्र बढ़ने पर अगर मुहल्ले के किसी आदमी ने इसे अनुचित बताने की कोशिश की तो दोनों तरफ़ से डाँट खानी पड़ी.

नौजवान लड़कों लड़कियों के इस मेल जोल का क्या नतीजा हो सकता है, इसकी कोई भी कल्पना कर सकता है. बहुत दिन नहीं लगे जब भाई बहिन के मेल ने प्रेम की शक्ल अख़्तियार कर ली. उनकी मुहब्बत के यह दिन बड़ी दिलचस्प बातों में बीतते थे.

नूरजहाँ कहती—"आपकी महब्बत की सच्चाई में शक करना

سچا پریم

(بھائی اونکارناتھ شاستری)

اس کے ابا ہنڈیا تحصیل کے نواسی تھے، جنھوں نے ادھر خلدآباد
ں سلائی کی دوکان کھول رکھی تھی۔ انھیں لڑکی کی تعلیم کا بڑا دھیان
اسی کا نتیجہ تھا کہ جب اس کی عمر شادی کے لائق ہوئی تو وہ
اسکول کے نویں درجے میں پہنچ چکی تھی۔

پر نورجہاں اس کے سال دو سال پہلے سے ہی اپنی شادی
تیاری کر رہی تھی۔ دین بندھو، جو ایک کلرک کا لڑکا تھا،
ہاں کے مکان میں بنا کسی اعتراض کے آتا تھا۔ نورجہاں اور
بندھو کے ماں باپ میں اتنا ادھک گھریلو سمبندھ تھا کہ
کو اس بات پر اعتراض نہیں تھا کہ کیوں وہ ایک دوسرے
اتنا ہل مل کر رہتے ہیں۔ یہاں تک کہ عمر بڑھنے پر اگر محلے کے
آدمی نے اسے انوچت بتانے کی کوشش کی تو دونوں طرف
ٹ کھانی پڑی۔

نوجواں لڑکوں لڑکیوں کے اس میل جول کا کیا نتیجہ ہو سکتا ہے
کی کوئی بھی کلپنا کر سکتا ہے۔ بہت دن نہیں لگے جب بھائی
کے میل نے پریم کی شکل اختیار کر لی ہے۔ ان کی محبت کے یہ

नामुमकिन है. मगर होगा क्या. हम लोगों के मज़हब तो जुदा जुदा हैं."

दीनबन्धु कहता—"दो मुहब्बत करने वालों के बीच मज़हब की दीवार हरगिज़ नहीं खड़ी हो सकती. नूरजहाँ, सच्ची मुहब्बत और मज़हबियत में कोई ताल्लुक़ नहीं. या तो यह मानो कि मेरे लिये तुम्हारी मुहब्बत झूटी है या यह कि जो मज़हब हमारी मुहब्बत के रास्ते में रोड़ा बन कर आता है वह झूटा है."

नूरजहाँ कहती—"आपकी दलीलों का जवाब देना मेरे लिये मुमकिन नहीं. मगर मज़हब को बिलकुल छोड़ना मेरे लिए ही क्यों आपके लिये भी मुश्किल है. बताइये न चाचा जी और चाची जी आपको क्या कहेंगी. क्या वह इसे जीते जी बरदाश्त कर सकेंगे ?"

दीनबन्धु कहता.—"शायद नहीं"

नूरजहाँ कहती—"शायद क्यों बिलकुल तय है कि पहिले तो इस ख़बर से उनका ज़िन्दा रहना मुश्किल होगा, और अगर वह ज़िन्दा रहे तो कम से कम आपको घर में नहीं रहने देंगे. आपको नहीं मालूम कि हम दोनों के घराने आपस मे बेहद मेल और प्यार की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, फिर भी यह मज़हब का ही डर है न कि चाचा जी, अब्बा जान के हाथ का पान भी नहीं खाते."

तब दीनबन्धु कहता—"मैं सब जानता हूँ नूरजहाँ ! पर मुझे कब एतराज़ हुआ तुम्हारी किसी चीज़ से माता जी, पिता जी से छिपा कर ही सही, मगर बताओ तो कि क्या करना मेरे लिए अब भी बाक़ी है. मैं तुम्हारे हाथ का बना ख़ुर्मा नहीं खाता; हलवे नहीं खाता, खीर नहीं खाता, बताओ क्या बाक़ी है ?"

ن ہے. مگر ہوگا کیا. ہم لوگوں کے مذہب تو جُدا جُدا ہیں."

دین بندھو کہتا— "دو محبت کرنے والوں کے بیچ مذہب کی دیوار نہیں کھڑی ہو سکتی. نورجہاں، سچی محبت اور مذہبیت میں کوئی نہیں. یا تو یہ مانو کہ میرے لئے تمہاری محبت جھوٹی ہے یا یہ کہ جو ہماری محبت کے راستے میں روڑا بن کر آتا ہے وہ جھوٹا ہے."

نورجہاں کہتی— "آپ کی دلیلوں کا جواب دینا میرے لئے ممکن. مگر مذہب کو بالکل چھوڑنا میرے لئے ہی کیوں آپ کے لئے بھی ہے. بتائیے نہ چاچا جی اور چاچی جی آپ کو کیا کہیں گی. کیا وہ جیتے جی برداشت کر سکیں گے ؟"

دین بندھو کہتا— "شاید نہیں."

نورجہاں کہتی— "شاید کیوں بالکل طے ہے کہ پہلے تو اس سے اُن کا زندہ رہنا مشکل ہوگا، اور اگر وہ زندہ رہے تو کم آپ کو گھر میں نہیں رہنے دیں گے. آپ کو نہیں معلوم دونوں کے گھرانے آپس میں بےحد میل اور پیار کی زندگی رہے ہیں، پھر بھی یہ مذہب کا ہی ڈر ہے نہ کہ چاچا جی، ان کے ہاتھ کا پان بھی نہیں کھاتے."

تب دین بندھو کہتا— "میں سب جانتا ہوں نورجہاں! کب اعتراض ہوا تمہاری کسی چیز سے. ماتا جی، پتا جی سے ہی سہی، مگر بتاؤ تو کہ کیا کرنا میرے لئے اب بھی باقی. میں تمہارے ہاتھ کا بنا خُرما نہیں کھاتا، حلوے نہیں کھاتا، نہیں کھاتا، بتاؤ کیا باقی ہے ؟"

नूरजहाँ कहती. "सब कुछ खाते हैं, मगर सब से छिपाकर ही न ?" और यह कहते हुए वह मुस्करा पड़ती. उसकी आँखों से शरारत झलकने लगती.

दीनबन्धु प्यार से उसकी उंगली दबाते हुए कहता—"चोरी, यह तो महज़ उस वक़्त तक के लिये है जब तक तुम आख़िरी फ़ैसला नहीं कर लेतीं कि हमारी शादी किसी के रोके नहीं रुक सकती."

नूरजहाँ फिर मुस्कराती हुई कहती—"बिलकुल ठीक, आप चाहते हैं कि आपकी तरह मुझे अब्बा जान और अम्मी जान से रुख़सत लेनी पड़े. आपने कभी यह भी सोचा है कि मेरे अब्बा जान और अम्मी जान की जिन्दगी की सारी ख़ुशियाँ मेरी जात पर ही मुनहसर हैं ?"

दीनबन्धु कहता—"जो भी हो, मगर जो माँ बाप अपनी औलाद की ख़ुशी का ख़याल न करके अपनी ख़ुशी का ख़याल रखते हैं, उन्हें ख़ुद ग़रज़ कहने में क्या ग़लती है ?"

इस तरह की दलीलों के सामने नूरजहाँ ज़्यादा देर तक न ठहर सकती. पर दलील का सवाल ही कहाँ था ?

यह बातें तो प्रेम के रिश्ते को और मज़बूत करने के लिये होती थीं. असलियत तो यह थी कि दीनबन्धु और नूरजहाँ दोनों हर क़ीमत पर एक दूसरे का साथ देने के लिये बहुत पहिले से पक्का फ़ैसला कर चुके थे. यहाँ यह सवाल भी नहीं था कि किसको अपना मज़हब छोड़ना पड़ेगा. दोनों ला मज़हब होकर भी मुहब्बत

نورجہاں کہتی "سب کچھ کھاتے ہیں، مگر سب سے چھپا کر ہی نہ؟"
یہ کہتے ہوئے وہ مسکرا پڑتی. اس کی آنکھوں سے شرارت
جھلکنے لگتی.

دین بندھو پیار سے اس کی انگلی دباتے ہوئے کہتا "چوری، یہ
تو اس وقت کے لئے ہے، جب تک تم آخری فیصلہ نہیں کر لیتیں
کہ ہماری شادی کسی کے روکے نہیں رک سکتی."

نورجہاں پھر مسکراتی ہوئی کہتی "بالکل ٹھیک، آپ چاہتے
ہیں کہ آپ کی طرح مجھے ابا جان اور امی جان سے رخصت لینی پڑے.
آپ نے کبھی یہ بھی سوچا ہے کہ میرے ابا جان اور امی جان کی زندگی
کی ساری خوشیاں میری ذات پر ہی منحصر ہیں؟"

دین بندھو کہتا "جو بھی ہو، مگر جو ماں باپ اپنی اولاد کی خوشی
کا خیال نہ کرکے اپنی خوشی کا خیال رکھتے ہیں، انہیں خودغرض
کہنے میں کیا غلطی ہے؟"

اس طرح کی دلیلوں کے سامنے نورجہاں زیادہ دیر تک نہ ٹھہر
سکتی. پر دلیل کا سوال ہی کہاں تھا؟

یہ باتیں تو پریم کے رشتے کو اور مضبوط کرنے کے لئے
ہوتی تھیں. اصلیت تو یہ تھی کہ دین بندھو اور نورجہاں دونوں
ہر قیمت پر ایک دوسرے کا ساتھ دینے کے لئے بہت پہلے
سے پکا فیصلہ کر چکے تھے. یہاں یہ سوال بھی نہیں تھا کہ کس کو
اپنا مذہب چھوڑنا پڑے گا. دونوں لا مذہب ہو کر بھی

दीनबन्धु और नूरजहाँ का प्रेम बढ़ता गया. दोनों ने अपनी शादी का एलान साफ़ साफ़ कर दिया. दोनों के माँ बाप इस इन्क़लाब के लिये तैयार न थे. आ.ख़र माँ बाप को छोड़कर उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उन्होंने क़ानूनी ढंग से अपनी शादी कर ली. पर यह खेल नहीं था.वातावरण ने उन्हें जल्द ही ख़ुल्दाबाद के किराये के मकान को खाली करने के लिये मजबूर किया. अब उन्होंने नये कटरे में मकान लिया. पर बात छिपी नहीं रह सकती थी. वह .ख़ुद भी किसी बात को छिपाना नहीं चाहते थे.

इधर पन्द्रह दिनों से सारे मुहल्ले में उन्हीं की चरचा होती. कोई कहता—'देखा, दीनबन्धु और नूरजहाँ की जोड़ी'' तो कोई जवाब देता—'शर्म नहीं आती तुम्हारे जैसे हिन्दू को जिसे ऐसी बातों पर मज़ाक़ सूझता है.' दूसरा कहता—'देखो न उस काफिर को, एक मुसलमान की लड़की भगा लाया है. भाई मैं साफ़ कहता हूँ, इसके लिये सारे इलाहाबाद में .ख़ून ख़च्चर मचेगा. इस्लाम धर्म ऐसा नहीं है कि काफिरों की इस शरारत को ऐसे ही बरदाश्त कर ले.'

दीनबन्धु की .ख़ुशक़िस्मती यह थी कि नये कटरे में मुसलमानो की बस्ती कम थी. इधर आर्य समाजी इस कोशिश मे थे कि अगर नूरजहाँ अपना मज़हब बदल दे तो फिर उसकी शुद्धि हो जाने से हिन्दू धर्म पर कोई आघात नहीं पहुँचेगा. सनातनी हिन्दू भी कोई उत्पात नहीं करते थे. उन्होंने महज़ अपनी कड़ी आलोचनाओं से दीनबन्धु और नूरजहाँ का चलना फिरना मुश्किल कर रखा था.

सिर्फ़ एक दिन वह बुरी तरह फँसे जब दीनबन्धु और नूरजहाँ

ن بندھو اور نورجہاں کا پریم بڑھتا گیا۔ دونوں نے اپنی شادی
اعلان صاف صاف کر دیا۔ دونوں کے ماں باپ اس انقلاب کے لئے تیار
آخر ماں باپ کو چھوڑ کر اُن کی مرضی کے خلاف انھوں نے قانونی
سے اپنی شادی کر لی۔ پر یہ کھیل نہیں تھا۔ واتاورن نے انھیں
لد آباد کے کرائے کے مکان کو خالی کرنے کے لئے مجبور کیا۔
ں نے نئے کٹڑے میں مکان لیا۔ پر بات چھپی نہیں رہ سکتی تھی۔
ی کسی بات کو چھپانا نہیں چاہتے تھے۔

ھر پندرہ دنوں سے سارے محلے میں انھیں کی چرچا ہوتی۔ کوئی کہتا
ا' دین بندھو اور نورجہاں کی جوڑی!' تو کوئی جواب دیتا ——
ہیں آتی تمھارے جیسے ہندو کو جسے ایسی باتوں پر مذاق سوجھتا
دوسرا کہتا ـــ دیکھو نہ اُس کافر کو، ایک مسلمان کی لڑکی بھگا
۔۔ بھائی میں صاف کہتا ہوں۔ اس کے لئے سارے
میں خون خچر مچے گا۔ اسلام دھرم ایسا نہیں ہے کہ کافروں کی
ارت کو ایسے ہی برداشت کر لے۔'

ن بندھو کی خوش قسمتی یہ تھی کہ نئے کٹڑے میں مسلمانوں کی بستی
اُدھر آریہ سماجی اس کوشش میں تھے کہ اگر نورجہاں اپنا مذہب
ے تو پھر اس کی شدھی ہو جانے سے ہندو دھرم پر کوئی آگھات
ہوپنچے گا۔ سناتنی ہندو بھی کوئی اُتپات نہیں کرتے تھے۔ انھوں
ن اپنی کڑی آلوچناؤں سے دین بندھو اور نورجہاں کا چلنا
شکل کر رکھا تھا۔

رف ایک دن وہ بُری طرح پھنسے جب دین بندھو اور نورجہاں

कहीं सैर को जा रहे थे. एक धर्म के ठीकेदार ने कहा—"सुनिये, महाशय दीनबन्धु आप ही तो हैं ?" दीनबन्धु ने कहा—"लोग कहते तो ऐसा ही हैं.—कहिये क्या हुक्म है ?"

"हुक्म ? क्यों नहीं. आज्ञा शब्द आपके मुंह से क्यों निकलने लगा ?"

"भाई मैं तो हुक्म और आज्ञा में कोई फ़र्क़ नहीं देखता."

"जनाब आली, मैं तो दोनों के अन्तर को समझता हूँ."

दीनबन्धु बेवजह बहस न करना चाहता था इसलिये पीछा छुड़ाने के लिये बोला—"तो फ़रमाइये, आख़िर आप चाहते क्या हैं ?"

पर शर्मा को तो उलझना ही था. इसलिये उसने कहा—"अजी तुम तो बढ़ते ही जाते हो. फ़रमायेगी तुम्हारी नूरजहाँ, मुझसे बात करना हो तो शुद्ध हिन्दी बोलो."

"और अगर शुद्ध हिन्दी आप न समझ सकें तो ?"

"बड़े निर्भीक मालूम होते हो ? हिन्दू जानकर अब भी छोड़ रहा हूँ, नहीं तो मेरे सोटे पर दृष्टि डालो."

"आख़िर आप इतने ख़फ़ा क्यों हो रहे हैं—मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?"

"दुष्ट, एक मलेच्छ के साथ विवाह करके कहता है मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है. बता, छोड़ता है इसका साथ, या तैय्यार है खोपड़ी रंगवाने को ?"

سیر کو جا رہے تھے۔ ایک دھرم کے ٹھیکیدار نے کہا — "سُنئے
شے دین بندھو آپ ہی تو ہیں؟" دین بندھو نے کہا — "لوگ کہتے
ا ہی ہیں — کہئے کیا حکم ہے؟"

"حکم؟ کیوں نہیں۔ آگیا شبد آپ کے منہ سے کیوں نکلنے لگا؟"

"بھائی میں تو حکم اور آگیا میں کوئی فرق نہیں دیکھتا۔"

"جناب عالی! میں تو دونوں کے انتر کو سمجھتا ہوں۔"

دین بندھو بے وجہ بحث نہ کرنا چاہتا تھا اس لئے پیچھا چھڑانے
لئے بولا — "تو فرمائیے آخر آپ چاہتے کیا ہیں؟"

پر شرما کو تو الجھنا ہی تھا۔ اسلئے اس نے کہا — "اجی تم تو بڑھتے
تے ہو۔ فرمائے گی تمہاری نور جہاں، مجھ سے بات کرنا ہو
شدھ ہندی بولو۔"

"اور اگر شدھ ہندی آپ نہ سمجھ سکیں تو؟"

"بڑے نربھیک معلوم ہوتے ہو؟ ہندو جان کر اب بھی چھوڑ رہا
ہوں، نہیں تو میرے سوٹے پر درشٹی ڈالو۔"

"آخر آپ اتنے خفا کیوں ہو رہے ہیں — میں نے آپ کا کیا
بگاڑا ہے؟"

"دُشٹ، ایک ملیچھ کے ساتھ بِواہ کر کے کہتا ہے میں نے
کیا بگاڑا ہے۔ بتا، چھوڑتا ہے اس کا ساتھ، یا تیار ہے
سر رنگوانے کو؟"

دین بندھو شریر سے کمزور نہ تھا۔ شرما کے ہاتھ میں سوٹا مزور
دین بندھو آسانی سے چھین سکتا تھا۔ ڈر صرف

था कि उसके चीख़ मारते ही सारा मुहल्ला दीनबन्धु और नूरजहाँ पर टूट पड़ेगा. पर यह आन की बात थी. शर्मा जब तक दीनबन्धु को खरी खोटी सुना रहा था दीनबन्धु ने बड़े धीरज से बरदाश्त किया. मगर अब उसकी पत्नी पर हमला था. यह उसके लिये सहना नामुमकिन था. शर्मा के आख़िरी शब्दों ने उसके सारे शरीर को झनझना दिया. साथ ही एक अजीब सी ख़ुददारी और स्वाभिमान की चमक उसके चेहरे पर दौड़ गई. उसने ग़ुस्से में काँपते हुए कहा—"अरे नालायक़ पोपपंथी, तू अपनी गालियों को ख़त्म करता है कि अपने सोटे से ख़ुद ही अपना सर रंगवाना चाहता है ?"

शर्मा ने जवाब में अपना सोटा तान लिया. नूरजहाँ 'या अल्लाह' कह कर झट बीच में खड़ी हो गई. पर दीनबन्धु असावधान न था. उसने झट एक हाथ से नूरजहाँ को अलग किया और दूसरे हाथ से शर्मा का तना हुआ सोटा छीनते हुए कहा—"दिखाइयेगा मरदानगी ?"

शर्मा के लिये शोर मचाने के अलावा अब दूसरा रास्ता नहीं था. शोर मचते ही सारा मुहल्ला दीनबन्धु और नूरजहाँ पर वैसे ही टूट पड़ा जैसे ग़ुस्से में मधुमक्खियाँ किसी आदमी पर टूट पड़े"

इस बला से नूरजहाँ और दीनबन्धु की जान कैसे बचे यह बहुत बड़ा सवाल था. पर हिन्दू हों या मुसलमान, पुलिस से दोनो डरते हैं. इस लाल पगड़ी में इतनी ताक़त है कि इसके नाम से शेख़ और पंडित सभी काँपने लगते हैं. बस इसी लाल पगड़ी ने उनकी भी जान बचाई.

تھا کہ اُس کے چیخ مارتے ہی سارا محلہ دین بندھو اور نور جہاں پر ٹوٹ پڑے گا. پر یہ آن کی بات تھی. شرما جب تک دین بندھو کو کھری کھوٹی سنا رہا تھا، دین بندھو نے بڑے دھیرج سے برداشت کیا. مگر اب اس کی پتنی پر حملہ تھا. یہ اُس کے لئے سہنا ناممکن تھا. شرما کے آخری شبدوں نے اُس کے سارے شریر کو جھنجھنا دیا. ساتھ ہی ایک عجیب سی خودداری اور سوابھمان کی چمک اُس کے چہرے پر دوڑ گئی. اُس نے غصے میں کانپتے ہوئے کہا. "ارے نالائق پوپ پنتھی، تو اپنی گالیوں کو ختم کرتا ہے کہ اپنے سوٹے سے خود ہی اپنا سر رنگوانا چاہتا ہے؟"

شرما نے جواب میں اپنا سوٹا تان لیا. نور جہاں 'یا اللہ' کہہ کر جھٹ بیچ میں کھڑی ہو گئی. پر دین بندھو اساودھان نہ تھا. اُس نے جھٹ ایک ہاتھ سے نور جہاں کو الگ کیا اور دوسرے ہاتھ سے شرما کا تنا ہوا سوٹا چھینتے ہوئے کہا. "دکھائیے گا مردانگی؟"

شرما کے لئے شور مچانے کے علاوہ اب دوسرا راستہ نہیں تھا. شور مچتے ہی سارا محلہ دین بندھو اور نور جہاں پر ویسے ہی ٹوٹ پڑا جیسے غصے میں مدھو مکھیاں کسی آدمی پر ٹوٹ پڑیں"

اس بلا سے نور جہاں اور دین بندھو کی جان کیسے بچے یہ بہت بڑا سوال تھا. پر ہندو ہوں یا مسلمان، پولیس سے دونوں ڈرتے ہیں. اس لال پگڑی میں اتنی طاقت ہے کہ اس کے نام سے شیخ اور پنڈت سبھی کانپنے لگتے ہیں. بس اسی لال پگڑی نے اُن کی بھی جان بچائی.

आगे की सुनिये. नूरजहाँ भारी सदमा लेकर घर पहुँची. अन्दर जाकर वह चारपाई पर धम से पड़ गई. दीनबन्धु को अपमानों का सदमा कम नहीं था, पर नूरजहाँ की यह हालत देख कर उसकी ढारस के लिये उसने बनावटी मुस्कराहट से कहा—"नूरजहाँ, तुम इतनी सी बला से घबरा सकती हो इसका मुझे ख़याल भी न था."

नूरजहाँ ने कहा—"हाँ इससे कम बला हो ही क्या सकती है. मैं मलेच्छ हूँ न. इसलिये मामूली बला ही मेरे लिये काफ़ी होती है."

दीनबन्धु प्यार भरे लहजे में बोला—"मेरे दिल की मलिका, तुम्हें कैसे यक़ीन दिलाऊं कि उस मलेच्छ ने हम दोनों ही को मलेच्छ कहा. जो तीर तुम्हें लगा वह तुमसे पहिले मुझे लगा."

नूरजहाँ ने देखा कि उसके ताने अर्थ से अनर्थ कर सकते हैं इसलिये उसने बात बदलते हुए कहा—'मगर प्यारे, तुममे इतनी ताक़त होगी कि एक ही हाथ से उस मोटे शर्मा का डंडा छीन सकोगे, इसका मुझे ख्वाब में भी ख़याल नहीं था. बताओ तुम्हारी क्या ख़िदमत करूँ ?"

दीनबन्धु ने फ़ख़्र से सर उठाकर कहा—"यही कि आज की घटना को भूल जाओ."

नूरजहाँ बोली—"कैसे भूल जाऊँ. इस तरह अपनी जान पर खेल कर तुम कब तक मेरी हिफ़ाज़त कर सकते हो. इससे क्या अच्छा हो कि तुम मुझे पाकिस्तान भेज दो. मैं वादा करती हूँ कि तुम्हारी तसवीर ताउम्र मेरे सामने रहेगी. और मैं तुम्हें इजाज़त देती हूँ कि तुम अपनी शादी किसी हिन्दू लड़की से कर लो."

آگے کی سنئے. نورجہاں بھاری صدمہ لے کر گھر پہنچی. اندر جاکر وہ چارپائی پر دھم سے پڑ گئی. دین بندھو کو اپمانوں کا صدمہ کم نہیں تھا، پر نورجہاں کی یہ حالت دیکھ کر اس کی ڈھارس کے لئے اس نے بناوٹی مسکراہٹ سے کہا "نورجہاں، تم اتنی سی بلا سے گھبرا سکتی ہو اس کا مجھے خیال بھی نہ تھا"

نورجہاں نے کہا "ہاں اس سے کم بلا ہو ہی کیا سکتی ہے. میں ملیچھ ہوں نہ. اسی لئے معمولی بلا ہی میرے لئے کافی ہوتی ہے"

دین بندھو پیار بھرے لہجے میں بولا "میرے دل کی ملکہ تمہیں کیسے یقین دلاؤں کہ اس ملیچھ نے ہم دونوں ہی کو ملیچھ کہا. جو تیر تمہیں لگا وہ تم سے پہلے مجھے لگا"

نورجہاں نے دیکھا کہ اس کے طعنے ارتھ سے انرتھ کر سکتے ہیں اس لئے اس نے بات بدلتے ہوئے کہا "مگر پیارے، تم میں اتنی طاقت ہوگی کہ ایک ہی ہاتھ سے اس موٹے شرما کا ڈنڈا چھین سکوگے، اس کا مجھے خواب میں بھی خیال نہیں تھا. بتاؤ تمہاری کیا خدمت کروں؟"

دین بندھو نے فخر سے سر اٹھا کر کہا "یہی کہ آج کی گھٹنا کو بھول جاؤ"

نورجہاں بولی "کیسے بھول جاؤں. اس طرح اپنی جان پر کھیل کر تم کب تک میری حفاظت کر سکتے ہو. اس سے کیا اچھا ہو کہ تم مجھے پاکستان بھیج دو. میں وعدہ کرتی ہوں کہ تمہاری تصویر تاعمر میرے سامنے رہے گی. اور میں تمہیں اجازت دیتی ہوں کہ تم اپنی شادی کسی ہندو لڑکی سے کر لو"

पड़ा. नूरजहाँ पंखा झलने लगी. पर दुखान्त के अन्तिम परदे
के गिरने में अभी देर थी.

नाम और भेस बदलकर दीनबन्धु और नूरजहाँ दोनों ईसाइयों
के ढंग से कलकत्ते में रहने लगे. उनमें से कोई गिरजाघर में न
जाता. इस तरफ किसी का ध्यान भी न जाता था. दीन बन्धु को
रेलवे में नौकरी मिलगई. नूरजहाँ 'रेड क्रास' में नर्स का काम
करने लगी. दीनबन्धु स्मिथ और नूरजहाँ मेरी के नाम से मशहूर
हो गई. एक विचित्र बनावटी जिन्दगी थी. पर इस बाहरी जीवन
का अन्तरतम कितना मधुर, कितना सच्चा था यह सिर्फ असलियत
जानने वाले ही जान सकते थे.

लेकिन दीनबन्धु और नूरजहाँ को मुहब्बत कितनी भी सच्ची
हो, उनका निश्चय और एक दूसरे के लिये त्याग कितना भी पवित्र
हो, उनके जीवन में सुखान्त नहीं लिखा था. दुखान्त,
कठोर दुखान्त, भयानक दुखान्त हर एक क्षण उनकी राह देखता
रहता. जमीन उनकी जिन्दगी का भार संभाल ने मे असमर्थ थी.
उनकी खुशियों से आसमान की छाती फटी जाती थी.

एक दिन की बात है. दोनों सिनेमा देखकर वापस आ रहे थे.
१२ बजे रात का समय था. जिस गली से उनके घर का रास्ता था
उसमें बिजली का इन्तजाम न था. अंधेरे के अलावा बरखा भी
शुरू हो गई थी. सोचा किसी जगह खड़े होकर पानी निकल
जाने पर आगे बढ़ें. इधर पीछे देखा तो कोई जाना पहिचाना सा

پڑا۔ نور جہاں پنکھا جھلنے لگی۔ پر دکھانت کے انتم پردے کے گرنے
میں ابھی دیر تھی۔

نام اور بھیس بدل کر دین بندھو اور نور جہاں دونوں عیسائیوں کے
ڈھنگ سے کلکتے میں رہنے لگے۔ انمیں سے کوئی گرجا گھر میں نہ جاتا۔ اس طرف کسی کا دھیان نہ
جاتا تھا۔ دین بندھو کو ریلوے میں نوکری مل گئی۔ نور جہاں 'ریڈ کراس'
میں نرس کا کام کرنے لگی۔ دین بندھو سمتھ اور نور جہاں میری کے
نام سے مشہور ہو گئی۔ ایک وچتر بناوٹی زندگی تھی۔ پر اس
باہری جیون کا انترتم کتنا مدھر، کتنا سچا تھا، یہ صرف اصلیت جاننے
والے ہی جان سکتے تھے۔

لیکن دین بندھو اور نور جہاں کی محبت کتنی بھی سچی ہو، ان کا
نشچے اور ایک دوسرے کے لیے تیاگ کتنا بھی پوتر ہو، ان کے
جیون میں سکھانت نہیں لکھا تھا۔ دکھانت، کٹھور دکھانت، بھیانک
دکھانت ہر ایک چھن ان کی راہ دیکھتا رہتا۔ زمین ان کی
زندگی کا بھار سنبھالنے میں اسمرتھ تھی۔ ان کی خوشیوں سے
آسمان کی چھاتی پھٹی جاتی تھی۔

ایک دن کی بات ہے۔ دونوں سینما دیکھ کر واپس
آ رہے تھے۔ ۱۲ بجے کا سمے تھا۔ جس گلی سے
ان کے گھر کا راستہ تھا، اس میں بجلی کا انتظام
نہ تھا۔ اندھیرے کے علاوہ برکھا بھی شروع ہو گئی تھی۔
سوچا کسی جگہ کھڑے ہو کر پانی نکل جانے پر آگے
بڑھیں۔ ادھر پیچھے دیکھا تو کوئی جانا پہچانا سا

आदमी अपने जाने पहिचाने सोटे के साथ उनको आवाज़ दे रहा है. उन्होंने परवाह नहीं की. आगे बढ़े. अबतक उनके कपड़े पानी से तर हो गये थे. अब उन्हें चाय की एक दूकान मिली. उसमें वह घुस गये. चायवाले ने कहा—"महाशय ! कपड़े निचोड़कर अन्दर आइये." उन्होंने फौरन वैसा करना शुरू किया. इसी बीच शर्मा भी दूकान में दाखिल होते हुए बोला—"कहिये मिस्टर स्मिथ और मिसेज़ मेरी, सिनेमा के तो खूब मज़े लिये."

दीनबन्धु बोला—"मिस्टर ! मैं आपको बिलकुल पहिचान नहीं रहा हूँ."

शर्मा बोला—"बैठिये न, चाय पीजिये. अभी पहिचनवाये देता हूँ. मालूम है ? कलकत्ता इलाहाबाद से दूर नहीं है." दीनबन्धु ने बिलकुल बनावटी ताज्जुब के साथ कहा—'मिस्टर आप तो ऐसी बातें करते हैं जैसे आपकी हमारी पुरानी दोस्ती हो."

" इसे ग़लत साबित करने का आपका जतन बेकार जायगा मिस्टर दीनबन्धु !"

नूरजहाँ आखिरी शब्द सुनकर सहम गई. उसने पहिले ही शर्मा को पहिचान लिया था. पर अब उसे यह निश्चित जान पड़ा कि शर्मा किसी नई शरारत के साथ उनका पीछा कर रहा है.

चायवाले ने कहा—"बाबू जी, हमारी दूकान बंद होने जा रही है. आप बातें करने के बजाय चाय पीजिये. पानी भी बन्द हो गया है." शर्मा ने कहा—"हाँ महाशय, हमें भी देर हो रही है. हमारी इनकी बातें रास्ते में होंगी, हमें इन्हें एक ही

...اپنے جانے پہچانے سوٹے کے ساتھ اُن کو آواز دے رہا ہے۔
...نے پرواہ نہیں کی۔ آگے بڑھے۔ اب تک اُن کے کپڑے
...تر ہو گئے تھے۔ اب اُنھیں چائے کی ایک دکان ملی۔ اس
میں وہ گھس گئے۔ چائے والے نے کہا۔ "مہاشے! کپڑے نچوڑ
کر اندر آئیے۔" اُنھوں نے فوراً ویسا کرنا شروع کیا۔ اسی بیچ
...بھی دکان میں داخل ہوتے ہوئے بولا۔ "کہیے مسٹر سمتھ
...میری، سینما کے تو خوب مزے لیے۔"
دین بندھو بولا۔ "مسٹر! میں آپ کو بالکل پہچان نہیں رہا ہوں۔"
شرما بولا۔ "بیٹھیے نہ، چائے پیجیے۔ ابھی پہچنوائے دیتا ہوں۔
...کلکتہ الہ آباد سے دور نہیں ہے۔" دین بندھو نے
بناوٹی تعجب کے ساتھ کہا۔ "مسٹر آپ تو ایسی باتیں کرتے
ہیں جیسے آپ کی ہماری پرانی دوستی ہو۔"
"اسے غلط ثابت کرنے کا آپ کا جتن بے کار جائے گا
دین بندھو!"
نورجہاں آخری شبد سُن کر سہم گئی۔ اُس نے پہلے ہی شرما کو پہچان
...اب اُسے یہ نشچت جان پڑا کہ شرما کسی نئی شرارت کے
ساتھ اُن کا پیچھا کر رہا ہے۔
چائے والے نے کہا۔ "بابو جی، ہماری دکان بند ہونے جا رہی
ہے۔ آپ باتیں کرنے کے بجائے چائے پیجیے۔ پانی بھی بند ہو گیا ہے۔"
شرما نے کہا۔ "ہاں مہاشے، ہمیں بھی دیر ہو رہی ہے۔ ہماری ان کی باتیں
[illegible]

इस परेशान करने वाली हालत में दीनबन्धु और नूरजहाँ चाय क्या पीते. पर ज्यों त्यों करके उन्होंने प्याला खाली किया और पैसा देकर घर की तरफ चले. शर्मा ने कहा—"अधिक तेज चलने की आवश्यकता नहीं है, न डरने की." और यह कहते हुए उसने अपनी जेब से तमञ्चा निकाल लिया. और कहा—"इससे भी डरने की आवश्यकता नहीं. पर समझ लो नूरजहाँ ! राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का जन्म केवल इसीलिये नहीं हुआ है कि उससे हर कोई जान बचा कर बनावटी जिन्दगी बसर कर सके. बता तुझे हिन्दू धर्म स्वीकार है ?"

नूरजहाँ पहले तो घबरा गई,लेकिन फिर जी कड़ा करके बोली—"मैं किसी धर्म को नहीं मानती. मेरे लिये केवल मुहब्बत ही सब से बड़ा और सच्चा धर्म है."

शर्मा बोला—"दर्शन की बातें मुझे नहीं चाहियें."

"तो क्या मैं तुम्हारे तमन्चे से डर गया हूँ ?" दीन बन्धु ने तन कर कहा.

"यह न समझना कि मैं अकेला हूँ. बोलो, नहीं सैकेन्डों में फैसला हुआ जाता है" शर्मा ने कहा. दीनबंधु को ख़याल आया कि यह मुमकिन है कि शर्मा के हाथ से तमञ्चा छीन कर वह उसे ही खत्म कर दे. लेकिन अगर उसके साथ और दुश्मन हुए तो क्या होगा ? उसे ज़रा भी शक नहीं रहा कि शर्मा की घमण्ड भरी आवाज़ का यही मतलब है.

फिर भी उसे जान बचाने का कोई इज़्ज़तदार रास्ता नहीं सूझा. इसलिये बिना समय खोये हुए उसने शर्मा का तमञ्चा छीन कर फौरन

ں پریشان کرنے والی حالت میں دین بندھو اور نورجہاں چائے
؟ پر جوں توں کرکے انھوں نے پیالہ خالی کیا اور پیسہ دے کر
رف چلے۔ شرما نے کہا " ادھک تیز چلنے کی آوشیکتا نہیں ہے
نے کی۔" اور یہ کہتے ہوئے اس نے اپنی جیب سے طمنچہ
ا اور کہا " اس سے بھی ڈرنے کی آوشیکتا نہیں۔ پر سمجھ لو
ں ! راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا جنم کیول اسی لئے نہیں
کہ اس سے ہر کوئی جان بچا کر بناوٹی زندگی بسر کر سکے۔ بتا
۔د دھرم سویکار ہے؟"
ر جہاں پہلے تو گھبرا گئی، لیکن پھر جی کڑا کرکے بولی " میں
ھرم کو نہیں مانتی۔ میرے لئے کیول محبت ہی سب سے
سچا دھرم ہے۔"
رما بولا " درشن کی باتیں مجھے نہیں چاہئیں "
تو کیا میں تمہارے طمنچے سے ڈر گیا ہوں؟" دین بندھو نے
ا۔
یہ نہ سمجھنا کہ میں اکیلا ہوں۔ بولو، نہیں سیکنڈوں میں فیصلہ
ا ہے" شرما نے کہا۔ دین بندھو کو خیال آیا کہ یہ ممکن ہے
کے ہاتھ سے طمنچہ چھین کر وہ اسے ہی ختم کر دے۔ لیکن
کے ساتھ اور دشمن ہوئے تو کیا ہوگا؟ اسے ذرا بھی شک
ا کہ شرما کی گھمنڈ بھری آواز کا یہی مطلب ہے۔
ر بھی اسے جان بچانے کا کوئی عزت دار راستہ نہیں سوجھا
: بنا سمے کھوئے ہوئے اس نے شرما کا طمنچہ چھین کر فوراً

उस पर वार कर दिया. पर इधर शर्मा का गिरना था, उधर दीनबन्धु के पीछे तीन तमञ्चे वाले नक़ाब पोश पहुंच गये. एक फ़ायर की आवाज़ हुई और दीनबन्धु भी गिर पड़ा.

उस वक़्त नूरजहाँ ने कमाल कर दिया. अपने प्यारे पति को ज़मीन पर तड़पते देख वह न रोई न चिल्लाई बल्कि सब से पहले उसने दुश्मनों के हाथ से अपनी जान और इज़्ज़त बचाने की तरकीब सोची और बिजली की सी तेज़ी से दीन बन्धु के हाथ से तमंचा छीन कर दो फ़ायर दुश्मनों पर किये और एक फ़ायर ख़ुद अपनी छाती का निशाना साध कर किया और दीनबन्धु की लाश पर गिर पड़ी. उसके मुँह से आख़िरी शब्द जो दुनिया ने सुने वह यह थे—"नाथ, आपने मुझे पाकिस्तान क्यों न भेज दिया?"

शायद उस भोली लड़की को यह पता नहीं था कि पाकिस्तान में भी मज़हब के नाम पर गुण्डागर्दी करने वालों की कमी नहीं है.

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के
चार लैकचर जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सोलियेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.
सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.
किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

وار کر دیا۔ پر ادھر شرما کا گرنا تھا، ادھر دین بندھو کے پیچھے تین طمنچے نقاب پوش پہنچ گئے۔ ایک فائر کی آواز ہوئی اور دین بندھو
پڑا۔

س وقت نور جہاں نے کمال کر دیا۔ اپنے پیارے پتی کو زمین پر
یکھ وہ نہ روئی نہ چلائی بلکہ سب سے پہلے اس نے دشمنوں کے
اپنی جان اور عزت بچانے کی ترکیب سوچی اور بجلی کی سی تیزی
ن بندھو کے ہاتھ سے طمنچہ چھین کر دو فائر دشمنوں پر کئے اور ایک
اپنی چھاتی کا نشانہ سادھ کر کیا اور دین بندھو کی لاش پر گر پڑی۔
منہ سے آخری شبد جو دنیا نے سنے وہ یہ تھے۔ "ناتھ آپ نے
ستان کیوں نہ بھیج دیا؟"

اید اس بھولی لڑکی کو یہ پتہ نہیں تھا کہ پاکستان میں بھی مذہب
پر غنڈہ گردی کرنے والوں کی کمی نہیں ہے۔

ہندو مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے
چار لکچر جو انہوں نے
سینٹرل کنسلیٹری بورڈ گوالیر
کی دعوت پر گوالیر میں دیئے
سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے
کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹ میں مل سکتی ہے

नये कशमीर के पाँच चेहरे

(भाई ख्वाजा अहमद अब्बास)

नये कशमीर की झलक मैंने पाँच अलग अलग चेहरों में देखी है. पहला चेहरा एक बच्चे का है. गोरा रंग, पके हुये सेब की तरह सुर्ख गाल, मुँह बेधुला, खेल की मिट्टी बालों मे, आँखें खूबसूरत, जिन्दगी और बचपन की बेपरवाही से भरी हुई. उसके हाथों मे एक झंडा है. सुर्ख जमीन पर सफेद हल. वह बच्चों के एक जलूस के आगे आगे चल रहा है. बच्चे सिर पर कागज की बनी हुई रंगदार टोपियाँ पहिने हुए हैं वह मिल जुल कर नारे लगा रहे हैं—"शेरे कशमीर जिन्दा बाद!" "शेरे कशमीर का क्या इरशाद ? हिंदू मुस्लिम सिक्ख इत्तहाद !" "वतन को बचायेंगे, अपना खून बहायेंगे !"

मुमकिन है कि यह बच्चे इन नारों की अहमियत को पूरी तरह न समझते हों. अगरचे मैंने इनमे से कुछ से इनके देश की राजनीति के बारे में सवाल किये तो इनकी समझ और ठीक जवाबों को सुनकर ताज्जुब में रह गया. यह भी मुमकिन है कि फौजी परेड, जो यह खिलौने की बंदूकें और लकड़ी की तलवारें लेकर कर रहे हैं, इनके लिये सिर्फ खेल हो, लेकिन कभी कभी किसी कौम के बच्चों के खेल देखकर उस कौम के नफसियाती (मनोवैज्ञानिक) और सियासी झुकाव का पता चलता है. जैसे हम अँग्रेज या अमरीकी बच्चों को ऐसा खेल खेलते देखते हैं, जिसमें वह सिपाहियों

نئے کشمیر کے پانچ چہرے

(بھائی خواجہ احمد عباس)

نئے کشمیر کی جھلک میں نے پانچ الگ الگ چہروں میں
ی ہے۔ پہلا چہرہ ایک بچے کا ہے۔ گورا رنگ، پکے ہوئے
ب کی طرح سرخ گال، منہ بے دھلا، کھیل کی مٹی بالوں میں،
ھیں خوبصورت، زندگی اور بچپن کی بے پرواہی سے بھری ہوئی۔
کے ہاتھوں میں ایک جھنڈا ہے۔ سرخ زمین پر سفید ہل، وہ بچوں
ایک جلوس کے آگے آگے چل رہا ہے۔ بچے سر پر کاغذ کی بنی ہوئی
دار ٹوپیاں پہنے ہوئے ہیں۔ وہ مل جل کر نعرے لگا رہے ہیں —
یر کشمیر زندہ باد!" "شیر کشمیر کا کیا ارشاد؟ ہندو مسلم سکھ اتحاد!"
ن کو بچائیں گے، اپنا خون بہائیں گے!"

ممکن ہے کہ یہ بچے ان نعروں کی اہمیت پوری طرح نہ سمجھتے
ں۔ اگرچہ میں نے ان میں سے کچھ سے ان کے دیش کی
نیتی کے بارے میں سوال کئے تو ان کی سمجھ اور ٹھیک جوابوں
سن کر تعجب میں رہ گیا۔ یہ بھی ممکن ہے کہ فوجی پریڈ، جو یہ کھلونے
بندوقیں اور لکڑی کی تلواریں لے کر کر رہے ہیں، ان کے لئے صرف
ل ہوں، لیکن کبھی کبھی کسی قوم کے بچوں کے کھیل دیکھ کر اس قوم کے
یاتی (منوویگیانک) اور سیاسی جھکاؤ کا پتہ چلتا ہے۔ جیسے ہم انگریز
مریکی بچوں کو ایسا کھیل کھیلتے دیکھتے ہیں۔ جس میں وہ سپاہیوں

का भेस बदल कर काली क़ौमों पर हमला करते हैं तो हम जान जाते हैं कि वह बड़े होकर बड़े कामयाब साम्राजी बनेंगे. और दुनिया की कमजोर क़ौमों पर अपना राज जमाने की कोशिश करेंगे. पर जो खेल आज श्रीनगर के बच्चे इस शहर के गली कूचों में खेल रहे हैं, उनसे वह सिर्फ़ बहादुरी, जॉनिसारी और देश-भक्ति का सबक़ ही सीख सकते हैं.

(२)

दूसरा चेहरा जरा बड़े लड़के का है, जिसके लड़कपन पर गम्भीरता की हलकी सी तह चढ़ गई है. इसकी उम्र मुश्किल से चौदह साल की होगी, और जो राइफ़ल वह हाथ में लिये हुए है वह उसके कन्धों से भी ज्यादा ऊँची है, मगर उसका इसरार (आग्रह) है कि उसकी उम्र सोलह बल्कि सत्तरह साल है, क्योंकि उसे डर है कि उसे उम्र कम होने के कारन नेशनल मिलेशाया (क़ौमी सेना) से निकाल दिया जायगा.

वह मोरचे से कुछ मील के फ़ासले पर एक पुल पर खड़ा पहरा दे रहा है और जिस फ़ख़ और जोश के साथ वह अपना यह फ़र्ज़ अदा, और जिस जाती लगाव के साथ वह पुल की देख भाल कर रहा है उससे ऐसा मालूम होता है जैसे यह पुल उसकी अपनी मिलकियत है और सच भी यही है. क्या कशमीरी क़ौम के एक फ़र्द (व्यक्ति) के नाते यह पुल ही नहीं, कशमीर की हर चीज़ इसकी मिलकियत नहीं है?

वह एक माँझी (मल्लाह) का बेटा है और 'नेशनल

بھیس بدل کر کالی قوموں پر حملہ کرتے ہیں تو ہم جان جاتے
ں کہ وہ بڑے ہو کر بڑے کامیاب سامراجی بنیں گے، اور دُنیا
کمزور قوموں پر اپنا راج جمانے کی کوشش کریں گے پر جو کھیل
سری نگر کے بچے اس شہر اور گلی کوچوں میں کھیل رہے ہیں۔ اُن سے
رف بہادری جاں نثاری اور دیش بھگتی کا سبق ہی سیکھ سکتے ہیں۔

(۲)

دوسرا چہرہ ذرا بڑے لڑکے کا ہے۔ جس کے لڑکپن پر گمبھیرتا
ہلکی سی تہ چڑھ گئی ہے۔ اِس کی عمر مشکل سے چودہ سال کی
ں، اور جو رائفل وہ ہاتھ میں لئے ہوئے ہے وہ اُس کے
ندھے سے بھی زیادہ اونچی ہے، مگر اُس کا اصرار (آگرہ) ہے
س کی عمر سولہ بلکہ سترہ سال ہے، کیونکہ اُسے ڈر ہے کہ اُسے
م ہونے کے کارن نیشنل ملیشیا (قومی سینا) سے نکال
جائے گا۔

وہ مورچے سے کچھ میل کے فاصلے پر ایک پل پر کھڑا پہرا دے
ہے اور جس فخر اور جوش کے ساتھ وہ اپنا یہ فرض ادا، اور جس
لگاؤ کے ساتھ وہ پل کی دیکھ بھال کر رہا ہے اُس سے ایسا معلوم ہوتا
جیسے یہ پل اُس کی اپنی ملکیت ہے اور سچ بھی یہی ہے۔ کیا
ری قوم کے ایک فرد (دیکتی) کے ناتے یہ پل ہی نہیں، کشمیر کی
یز اس کی ملکیت نہیں ہے؟

وہ ایک ہانجی (ملاح) کا بیٹا ہے اور نیشنل

करता था. साहबों और मेम साहबों को कभी ज़ेहलम की कभी डल की सैर कराता था. पर उस वक़्त भी उसके दिल में देश भक्ति का भाव मौजूद था.

बड़े फ़ख़्र से वह बयान करता है कि जब शेरे कशमीर को गिरफ़्तार किया गया था तो नाव वालों में से वह पहला था, जिसने हड़ताल की थी. आज वह ख़ुश है कि कशमीरी क़ौम को कई सौ साल बाद पहली बार अपने देश की रक्षा के लिये हथियार उठाने की इजाज़त मिली है. कितनी मुहब्बत से वह अपनी बन्दूक को संभाले हुए है, सूरत जैसे कह रही हो—"हमला आवर की क्या मजाल कि कशमीर की तरफ़ आँख उठा कर भी देख सके."

(३)

तीसरा चेहरा एक नौजवान का है. एक ज़हीन और हस्सास, एक प्रतिभाशाली और भावुक चेहरा. आँखों में चमक, चौड़ा माथा, नौजवान चेहरा लेकिन क़ौमी मुश्किलों के ख़याल से वक़्त से पहले गम्भीरता और ज़िम्मेदारी के निशान पाये जाते हैं. वह पैदायशी हिन्दू पंडित है लेकिन वह अपने आपको सिर्फ़ कशमीरी कहना पसन्द करता है. उसको कहानियाँ लिखने का शौक़ है. पर इससे ज़्यादा उसको अपनी क़ौम की सेवा का शौक़ है. वह कई साल से नेशनल कानफ़्रेन्स का मेम्बर है और आज क़ौमी फ़ौज में राजकाजी सेनापति की हैसियत से वह वालिन्टियरों में अपनी तरह देश प्रेम का भाव जगा रहा है. वह उनको सिखाता है और साथ ही साथ ख़ुद भी बन्दूक चलाना सीख रहा है.

تا. صاحبوں اور میم صاحبوں کو کبھی جہلم کی کبھی ڈل کی سیر کراتا تھا.
س وقت بھی اس کے دل میں دیش بھگتی کا
وجود تھا.

ڑے فخر سے وہ بیان کرتا ہے کہ جب شیر کشمیر کو
کیا گیا تھا تو ناؤ والوں میں سے وہ پہلا تھا،
نے ہڑتال کی تھی. آج وہ خوش ہے کہ کشمیری قوم
سو سال بعد پہلی بار اپنے دیش کی رکشا کے
ہتھیار اٹھانے کی اجازت ملی ہے. کتنی محبت سے
ن بندوق کو سنبھالے ہوئے ہے، صورت جیسے کہہ رہی ہو
آور کی کیا مجال کہ کشمیر کی طرف آنکھ اٹھا کر بھی دیکھ سکے۔"

(۳)

یسرا چہرہ ایک نوجوان کا ہے. ایک ذہین اور حساس، ایک
شالی اور بھاؤک چہرہ، آنکھوں میں چمک، چوڑا ماتھا، نوجوان
لن قومی مشکلوں کے خیال سے وقت سے پہلے گمبھیرتا اور
ری کے نشان پائے جاتے ہیں. وہ پیدائشی ہندو پنڈت
لیکن وہ اپنے آپ کو صرف کشمیری کہنا پسند کرتا ہے.
کہانیاں لکھنے کا شوق ہے. پر اس سے زیادہ اس کو اپنی
سیوا کا شوق ہے. وہ کئی سال سے نیشنل کانفرنس کا ممبر ہے
ج قومی فوج میں راج کاجی سینا پتی کی حیثیت سے وہ والنٹیروں
ی طرح دیش پریم کا بھاؤ جگا رہا ہے. وہ ان کو سکھاتا ہے، اور
ی ساتھ خود بھی بندوق چلانا سیکھ رہا ہے.

उसके नाजुक नक़्श (नकशिख), भावुक चेहरे और पतली कलाकार उंगलियों की तरफ देखते हुए मैंने पूछा—"तुम्हारे से कलाकार और लेखक का कलम छोड़कर बन्दूक उठाना क्या अजीब नहीं हैं ?" उसने सादगी से जवाब दिया—"अगर दुश्मन ने हमारे देश पर क़ब्ज़ा कर लिया तो न लेखक जिन्दा रह सकेंगे न साहित्य. साहित्य ही नहीं सारी संस्कृति और कलचर का खातमा हो जायगा." और यह कह कर वह बन्दूक कन्धे पर उठाकर चाँद मारी करने चलागया.

(४)

चौथा चेहरा एक बूढ़े का है. खिचड़ी दाढ़ी, मुँह पर झुर्रियाँ, मैंने पूछा—"तुम्हारी उम्र क्या है ?" पर उसे याद नहीं. "कौन जानता है. हो सकता है चालीस हो, मुमकिन है साठ हो." और फिर ज़ोर से कहकहा मारकर हाथ पर हाथ मारते हुए—"बात यह है कि अपने जन्म के वक़्त मैं मौजूद नहीं था." फिर भी उसकी उम्र पचास से ज़्यादा ही होगी. क्योंकि वह पहली बड़ी लड़ाई में भरती हुआ था और सन १९१९ मे पेंशिन पाई थी.

यह बूढ़ा जो अब नेशनल फौज में वालिन्टियरों को फौजी परेड कराता है, अपने गाँव में था. जब उसने सुना कि कशमीर पर क़बायलियों ने हमला कर दिया है तो यह खबर पाते ही वह चल खड़ा हुआ और चालीस मील पैदल चलकर श्रीनगर पहुँच गया. आते ही उसने अपने आपको फौज में भरती के लिये पेश कर दिया. पर वह अपना बिस्तर लाना भूल आया था. और जब अफ़सरों ने कहा कि उनके पास फालतू कम्बल नहीं हैं तो

اُس کے نازک نقوش (نکشِکھ)، بھاؤک چہرے اور پتلی کلاکار اُنگلیوں کی طرف دیکھتے ہوئے میں نے پوچھا "تمہارے سے کلاکار اور لیکھک کا قلم چھوڑ کر بندوق اُٹھانا کیا عجیب نہیں ہے؟" اُس نے سادگی سے جواب دیا "اگر دشمن نے ہمارے دیش پر قبضہ کر لیا تو نہ لیکھک زندہ رہ سکیں گے نہ ساہتیہ۔ ساہتیہ ہی نہیں ساری سنسکرتی اور کلچر کا خاتمہ ہو جائے گا۔" اور یہ کہہ کر وہ بندوق کندھے پر اُٹھا کر چاند ماری کرنے چلا گیا۔

(۴)

چوتھا چہرہ ایک بوڑھے کا ہے۔ کھچڑی داڑھی، منہ پر جھرّیاں، میں نے پوچھا "تمہاری عمر کیا ہے؟" پر اُسے یاد نہیں۔ "کون جانتا ہے۔ ہو سکتا ہے چالیس ہو، ممکن ہے ساٹھ ہو۔" اور پھر زور سے قہقہہ مار کر ہاتھ پر ہاتھ مارتے ہوئے "بات یہ ہے کہ اپنے جنم کے وقت میں موجود نہیں تھا۔" پھر بھی اس کی عمر پچاس سے زیادہ ہی ہوگی۔ کیونکہ وہ پہلی بڑی لڑائی میں بھرتی ہوا تھا اور ۱۹۱۹ء میں پنشن پائی تھی۔

یہ بوڑھا جو اب نیشنل فوج میں والنٹیروں کو فوجی پریڈ کراتا ہے، اپنے گاؤں میں تھا۔ جب اُس نے سنا کہ کشمیر پر قبائلیوں نے حملہ کر دیا ہے تو یہ خبر پاتے ہی وہ چل کھڑا ہوا اور چالیس میل پیدل چل کر شری نگر پہونچ گیا۔ آتے ہی اُس نے اپنے آپ کو فوج میں بھرتی کے لئے پیش کر دیا۔ پر وہ اپنا بستر لانا بھول آیا تھا اور جب افسروں نے کہا کہ اُن کے پاس فالتو کمبل نہیں ہیں تو

वह फिर पैदल चल खड़ा हुआ और पाँच दिन बाद बिस्तर समेत आमौजूद हुआ.

यह एक बूढ़े का चेहरा है, पर इसकी रूह जवान है, और इसकी बूढ़ी थकी हुई आँखों में शरारत और बहादुरी की चमक है.

" भला तुम क्यों भरती होने आगये ? " मैंने पूछा.

" तुम जानते नहीं हो कि इन क़बायलियो ने हमारे कशमीर पर हमला कर दिया है ? भरती न होता तो क्या औरतों की तरह घर मे चूड़ियाँ पहन कर बैठ जाता....... ? " उसका हर तीसरा या चौथा शब्द एक मोटी सी गाली थी.

मैने शरारत से बड़े मियाँ को और तंग करने के लिये फिर सवाल किया—" मगर सुनो तो सही. कबायलियों से तुम क्यों लड़ते हो ? वह तो तुम्हारे मुसलमान भाई हैं और तुम कशमीरियों को आज़ाद कराने आये हैं."

अब तो जैसे गालियों की मशीनगन चल पड़ी—"इन क़बायलियों को तुम मुसलमान कहते हो ? वह तो बड़े बेईमान हैं ...... मैं पूछता हूँ ; .....उन ....को किसने कहा था कि हमें मारने, लूटने, हमारे घर बार जलाने को आ जाओ ?"

इस ज़ोर शोर से उसने वह सवाल मुझसे किया, जैसे मैं भी कोई क़बायली नहीं तो कम से कम उनका तरफ़दार ज़रूर था. मैं घबरा कर भागा. अब मज़ाक़ करने की हिम्मत नहीं थी. सच-मुच बड़े मियाँ मुझे क़बायलियों का साथी समझ बैठे तो ख़ैरियत नहीं.

وہ پھر پیدل چل کھڑا ہوا اور پانچ دن بعد بستر سمیت آموجود ہوا۔

یہ ایک بوڑھے کا چہرہ ہے، پر اس کی روح جوان ہے، اور اس کی بوڑھی تھکی ہوئی آنکھوں میں شرارت اور بہادری کی چمک ہے۔

"بھلا تم کیوں بھرتی ہونے آگئے؟" میں نے پوچھا۔

"تم جانتے نہیں ہو کہ ان قبائلیوں نے ہمارے کشمیر پر حملہ کر دیا ہے؟ بھرتی نہ ہوتا تو کیا عورتوں کی طرح گھر میں چوڑیاں پہن کر بیٹھ جاتا......؟" اس کا ہر تیسرا یا چوتھا شبد ایک موٹی سی گالی تھی۔

میں نے شرارت سے بڑے میاں کو اور تنگ کرنے کے لئے پھر سوال کیا— "مگر سنو تو سہی۔ قبائلیوں سے تم کیوں لڑتے ہو؟ وہ تو تمہارے مسلمان بھائی ہیں اور تم کشمیریوں کو آزاد کرانے آئے ہیں۔"

اب تو جیسے گالیوں کی مشین گن چل پڑی— "ان قبائلیوں کو تم مسلمان کہتے ہو؟ وہ تو بڑے بے ایمان ہیں..... میں پوچھتا ہوں...... اُن...... کو کس نے کہا تھا کہ ہمیں مارنے، لوٹنے، ہمارے گھر بار جلانے کو آجاؤ؟"

اِس زور شور سے اُس نے وہ سوال مجھ سے کیا، جیسے میں بھی کوئی قبائلی نہیں تو کم سے کم اُن کا طرفدار ضرور تھا۔ میں گھبرا کر بھاگا۔ اب مذاق کرنے کی ہمت نہیں تھی۔ سچ مچ بڑے میاں مجھے قبائلیوں کا ساتھی سمجھ بیٹھے تو خیریت نہیں۔

(५)

पाँचवाँ चेहरा एक औरत का है, एक नौजवान औरत का, जिसके गालों पर हया की लाली है और जिसकी आँखें शर्म से झुकी हुई हैं. उसके हाथ में बन्दूक़ है और अगरचे उसने अपनी ज़िन्दगी में पहली दफ़ा हथियार उठाये हैं फिर भी वह बड़ी मुस्तैदी से परेड कर रही है.

यह चेहरा एक नौजवान औरत का है. सुंदर मुखड़ा, गोरा रंग, गुलाबी गाल जो पौडर और सुर्ख़ी से ख़ाली हैं. हिरन की सी ख़ूबसूरत आँखें.

ऐसा चेहरा जो शायरों को मतवाला बना सकता है. जो प्रेम करने के लिये बनाया गया है. पर आज इस चेहरे पर अजीब तेज है. इस वक़्त उसका ध्यान अपनी सुंदरता पर नहीं है, उन अख़बार नवीसों और फोटो ग्राफ़रों पर नहीं है जो उसकी तस्वीर ले रहे हैं, सामने तख़्ते सुलैमान की पहड़ी पर नहीं है. उसकी आँखें दूर, बहुत दूर कुछ देख रही हैं और उनमें एक अजीब इस्तेक़लाल (दृढ़ता) व इंतक़ाम (बदले) की अजीब चमक है.

वह दूसरी औरतो के साथ फ़ौजी परेड कर रही है.पर इस मजमे में वह अकेली है.उसका ध्यान सिर्फ़ उसकी रायफल की तरफ़ है, यह रायफल उसकी नई सहेली है, उसकी साथी है. क्योंकि यही उसकी इज़्ज़त और इसमत की हिफ़ाज़त करने वाली है.

एक नौजवान औरत का चेहरा, जो मुहब्बत करने के लिये बनाया गया था. मगर उसकी ज़िन्दगी में अब मुहब्बत नहीं रही. उसका प्यारा, उसका मँगेतर वहशी क़बायलियों के हाथों मारा

(۵)

پانچواں چہرہ ایک عورت کا ہے۔ ایک نوجوان عورت کا۔ جس کے گالوں پر حیا کی لالی ہے اور جس کی آنکھیں شرم سے جھکی ہوئی ہیں۔ اُس کے ہاتھ میں بندوق ہے اور اگرچہ اُس نے اپنی زندگی میں پہلی دفعہ ہتھیار اُٹھائے ہیں پھر بھی وہ بڑی مستعدی سے پریڈ کر رہی ہے۔

یہ چہرہ ایک نوجوان عورت کا ہے۔ سُندر مکھڑا، گورا رنگ، گلابی گال جو پوڈر اور سُرخی سے خالی ہیں۔ ہرن کی سی خوبصورت آنکھیں۔

ایسا چہرہ جو شاعروں کو متوالا بنا سکتا ہے۔ جو پریم کرنے کے لئے بنایا گیا ہے۔ پر آج اس چہرے پر عجیب تیج ہے۔ اس وقت اُس کا دھیان اپنی سُندرتا پر نہیں ہے۔ اُن اخبار نویسوں اور فوٹوگرافروں پر نہیں ہے جو اُس کی تصویر لے رہے ہیں، سامنے تختِ سلیمان کی پہاڑی پر نہیں ہے۔ اُس کی آنکھیں دور، بہت دور کچھ دیکھ رہی ہیں اور اُن میں ایک عجیب استقلال (درڑھتا) انتقام (بدلے) کی عجیب چمک ہے۔

وہ دوسری عورتوں کے ساتھ فوجی پریڈ کر رہی ہے۔ پر اس مجمع میں وہ اکیلی ہے۔ اُس کا دھیان صرف اُس کی رائفل کی طرف ہے، یہ رائفل اُس کی نئی سہیلی ہے، اُس کی ساتھی ہے۔ کیونکہ یہی اُس کی عزت اور عصمت کی حفاظت کرنے والی ہے۔

ایک نوجوان عورت کا چہرہ جو محبت کرنے کے لئے بنایا گیا تھا۔ مگر اُس کی زندگی میں اب محبت نہیں رہی۔ اُس کا پیارا، اُس کا منگیتر وحشی قبائلیوں کے ہاتھوں مارا

गया है और जिस तरह वह रायफल उठा रही है उससे जाहिर है कि न वह भूली है, न उसने माफ़ किया है. उसके चेहरे पर बदला लेने के भाव की खूनी झलक है.

.......और फिर एक वह चेहरा है, जिसमे इन तमाम चेहरों का, इनकी रूह का, इनके जज्बात और भावनाओं का निचोड़ है— "शेरे कशमीर" शेख मुहम्मद अब्दुल्ला का शेर का सा चेहरा जिसमें बच्चे की मासूमियत, लड़के की हिम्मत, नौजवान लेखक का सुंदर विचार, बूढ़े का जोश और नौजवान औरत की हया, सब जाहिर होता है, तभी तो वह "फख्रे कशमीर" ही नहीं "रूहे कशमीर" हैं.

(उर्दू 'आजकल' से)

گیا ہے اور جس طرح وہ رائفل اُٹھا رہی ہے اُس سے ظاہر ہے کہ نہ وہ بھولی ہے، نہ اُس نے معاف کیا ہے۔ اُس کے چہرے پر بدلہ لینے کے بھاؤ کی خونی جھلک ہے۔

.....اور پھر ایک وہ چہرہ ہے، جس میں اِن تمام چہروں کا، اِن کی روح کا، اِن کے جذبات اور بھاؤناؤں کا نچوڑ ہے — "شیرِ کشمیر" شیخ محمد عبداللہ کا شیر کا سا چہرہ، جس میں بچے کی معصومیت، لڑکے کی ہمت، نوجوان لیکھک کا سندر وچار، بڈھے کا جوش، اور نوجوان عورت کی حیا سب ظاہر ہوتا ہے، تبھی تو وہ "فخرِ کشمیر" ہی نہیں "روحِ کشمیر" ہیں۔

(اُردو آجکل سے)

हिन्दुस्तानी चित्रकला

आज तक

(भाई श्रवण कुमार बी० ए०)

(१)

दो सौ साल पहले दूसरे मुल्क वालों का कहना था "हिन्दुस्तान में चित्रकला या मुसव्विरी ऐसी कला के अच्छे अच्छे नमूने हैं ही नहीं. और हिन्दुस्तानी लोग तो चित्रकला को सिर्फ़ अलग अलग रंग के डोरों से कशीदा काढ़ना और कपड़ों पर ठप्पों से छपाई करने तक ही समझते हैं." योरोपीय चित्रकारों (मुसव्विरों) का यह विचार जापानी चित्रकार होकुसाई की तसवीरों को देख कर बदल गया है. बौद्ध धर्म के ख़ास मरकज़ होने के नाते उनको हिन्दुस्तान में चित्रकला के अच्छे नमूनों के होने की आशा हुई. वह अब जापानी रेखा चित्र (ऐसे चित्र जिसमें सिर्फ़ लकीरें ही लकीरें रहती है. या जो सिर्फ़ लकीरों से ही बनाया गया हो) और चीनी, तिब्बती और जावा की चित्रकला के नमूनों को एक नई नज़र से देखने लगे हैं. हिन्दुस्तान की पुरानी इमारतों के खंडहरों मे उन्होंने अजीब ख़ूबसूरती पाई. अजन्ता की गुफाओं की दीवारों पर बनी तसवीरों की ख़ूबसूरती और भावों को देख कर वह दाँतों तले उंगली दबा कर रह गये. फ़्रांसीसी और डच चित्रकला का ढंग उनकी नज़र में फीका जँचा.

हिन्दुस्तान की चित्रकला के नमूनों को देखने से ऐसा मालूम

ہندستانی چتر کلا

آج تک

(بھائی شرون کمار بی اے)

(۱)

دو سو سال پہلے دوسرے ملک والوں کا کہنا تھا "ہندستان میں چتر کلا یا مصوری ایسی کلا کے اچھے اچھے نمونے ہیں ہی نہیں. اور ہندستانی لوگ تو چتر کلا کو صرف الگ الگ رنگ کے ڈوروں سے کشیدہ کاڑھنا اور کپڑوں پر ٹھپّوں سے چھپائی کرنے تک ہی سمجھتے ہیں." یورپی چترکاروں (مصوّروں) کا یہ وچار جاپانی چترکار ہوکسائی کی تصویروں کو دیکھ کر بدل گیا ہے. بودھ دھرم کے خاص مرکز ہونے کے ناتے ان کو ہندستان میں چتر کلا کے اچھے نمونوں کے ہونے کی آشا ہوئی. وہ اب جاپانی ریکھا چتر (ایسے چتر جس میں صرف لکیریں ہی لکیریں رہتی ہیں یا جو صرف لکیروں سے ہی بنایا گیا ہو) اور چینی، تبتی اور جاوا کی چتر کلا کے نمونوں کو ایک نئی نظر سے دیکھنے لگے ہیں. ہندستان کی پرانی عمارتوں کے کھنڈروں میں انھوں نے عجیب خوبصورتی پائی. اجنتا کی گپھاؤں کی دیواروں پر بنی تصویروں کی خوبصورتی اور بھاؤں کو دیکھ کر وہ دانتوں تلے انگلی دبا کر رہ گئے. فرانسیسی اور ڈچ چتر کلا کا ڈھنگ ان کی نظر میں پھیکا جچا.

ہندستان کی چتر کلا کے نمونوں کو دیکھنے سے ایسا معلوم

होता है कि उसकी खास तरक़्क़ी मे अलग अलग धर्मों का खास हाथ रहा है. चित्रकला की शुरुआत की छानबीन करने से बड़ी हँसी सी आती है. ऐसे तो पुराणों मे एक कथा है जिसके हिसाब से ब्रह्मा ने एक ब्राह्मण के मरे हुये लड़के की तसवीर बनाकर उसमें जान डालकर उसे फिर से ज़िन्दा कर दिया था. रामायण और महाभारत मे भी कहीं कहीं चित्रों का ज़िक्र मिलता है. अजन्ता के बौद्ध चित्रकारों ने जिस ढंग से तसवीरों को गुफाओं की दीवारों पर बनाया है उन्हे देखने से ऐसा मालूम होता है कि चित्रकला के उसूल बन चुके थे. पुराणों का चित्रलेखा (जिसके नाम का मतलब तसवीर बनाने वाली होता है) अपनी कला के लिये बहुत मशहूर हो चुकी थी.

हिन्दुस्तान की चित्रकला के नमूनों से यह साफ पता चलता है कि मजबूरियों का असर उन पर बहुत पड़ा है, बौद्ध लोगों के हाथों चित्रकला ने बहुत तरक़्क़ी की. उन्होंने अपने धर्म के उसूलों को फैलाने का एक ज़रिया चित्रकला भी बना लिया था. उनकी चित्रकला की ख़ासियत अपनी दिली ख़्वाहिशों को (भावों) पतली पतली लाइनों से ज़ाहिर कर देना है.

विदेशी चित्रकला मे भावों को रंगो और साये व उजाले के ज़रिये ज़ाहिर किया जाता है. एक हद तक यह कला यथार्थवाद यानी सच्चाई को ज़ाहिर करने वाली है पर हिन्दुस्तानी चित्रकला व्यक्ति वादी यानी इनफ़रादियत पसन्द है. एक ओर तो धर्म के उसूलों की भावना और दूसरी तरफ तस्वीरों में भावों को सिर्फ़ लकीरों से ज़ाहिर कर देना, यह दो बातें हैं, जो कि सिर्फ़ हिंदुस्तान

ہوتا ہے کہ اس کی خاص ترقی میں الگ الگ دھرموں کا خاص ہاتھ رہا ہے چترکلا کی شروعات کی چھان بین کرنے سے بڑی ہنسی سی آتی ہے۔ ایسے تو پرانوں میں ایک کتھا ہے جس کے حساب سے برہما نے ایک برہمن کے مرے ہوئے لڑکے کی تصویر بنا کر اس میں جان ڈال کر اسے پھر سے زندہ کر دیا تھا۔ رامائن اور مہابھارت میں بھی کہیں کہیں چتروں کا ذکر ملتا ہے۔ اجنتا کے بودھ چترکاروں نے جس ڈھنگ سے تصویروں کو گپھاؤں کی دیواروں پر بنایا ہے انھیں دیکھنے سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چترکلا کے اصول بن چکے تھے۔ پرانوں کی چترلیکھا (جس کے نام کا مطلب تصویر بنانے والی ہوتا ہے) اپنی کلا کے لئے بہت مشہور ہو چکی تھی۔

ہندستان کی چترکلا کے نمونوں سے یہ صاف پتا چلتا ہے کہ مجبوریوں کا اثر ان پر بہت پڑا ہے۔ بودھ لوگوں کے ہاتھوں چترکلا نے بہت ترقی کی۔ انھوں نے اپنے دھرم کے اصولوں کو پھیلانے کا ایک ذریعہ چترکلا بھی بنا لیا تھا۔ ان کی چترکلا کی خاصیت اپنی دلی خواہشوں (بھاؤں) کو پتلی پتلی لائنوں سے ظاہر کر دینا ہے۔

بدیشی چترکلا میں بھاؤں کو رنگوں اور سائے و اجالے کے ذریعے ظاہر کیا جاتا ہے۔ ایک حد تک یہ کلا یتھارتھ واد یعنی سچائی کو ظاہر کرنے والی ہے پر ہندستانی چترکلا ویکتی وادی یعنی انفرادیت پسند ہے۔ ایک اور تو دھرم کے اصولوں کی بھاونا اور دوسری طرف تصویروں میں بھاؤں کو صرف لکیروں سے ظاہر کر دینا، یہ دو باتیں ہیں، جو کہ صرف ہندستان

की चित्रकला में देखने को मिलती हैं. कहने का मतलब यह है कि हिंदुस्तान की चित्रकला मे लकीरों की प्राधानता है और विदेशियो के चित्रो मे साये की और उजाले की .

हिन्दुस्तान की चित्रकला ने ख़ास कर बौद्ध धर्म और मुस्लिम राज मे तरक़्क़ी हासिल की. कहने का मतलब यह है कि हिन्दुस्तान की चित्रकला तीन भागों मे बँटी है. ऐसे तो बौद्ध धर्म के पहले की चित्रकला के नमूने भी मिलते हैं. सी० पी० की कैमूर और विन्ध्याचल की कुछ गुफाओ और जोगी मारा की गुफाओ मे जो रंगीन तसवीरें मिलती है वह ज्यादातर जानवरो के शिकार की है.

बौद्ध धर्म के प्रचार मे चित्रकला का ख़ास हाथ रहा है. बौद्ध भिक्षु दूसरे मुल्को मे गये और उन्होने वहाँ अपने धर्म के उसूलों को तसवीरो के ज़रिये समझाया. इसी सबब से चीनी और जापानी क़लम हिन्दुस्तान के बौद्ध क़लम से मिलता जुलता है. अजन्ता की तसवीरो की तरह की तसवीरें जापान के सवा हज़ार साल पुराने मन्दिर होरिउजो मे हैं ।

हिन्दुस्तान का चित्रकला के बारे मे दूसरी जगहो में जो नमूने मिलते हैं, उन्हे देख कर भी जाना जा सकता है बौद्धो ने जातक कहानियो को अजन्ता मे तसवीरों क ज़रिये आँखो के सामने कर दिया है. जिससे कहानियो का असर आदमियो पर सिर्फ सुनने के निस्बत और ज्यादा पड़ता है. अजन्ता के चित्रकारो (मुसव्विरो) मे नाग और बिम्बसार (राजा नही) ज्यादा मशहूर थे. अजन्ता की तसवीरें दूसरी और तीसरी सदियों मे बनाई गई थीं. जिससे पता चलता है कि चित्रकला का उस समय तक हिन्दुस्तान में कितना प्रचार

کی چترکلا میں دیکھنے کو ملتی ہیں۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ہندستان کی چترکلا میں لکیروں کی پردھانتا ہے اور بدیشیوں کے چتروں میں سائے کی اور اجالے کی۔

ہندستان کی چترکلا نے خاصکر بودھ دھرم اور مسلم راج میں ترقی حاصل کی۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ہندستان کی چترکلا تین بھاگوں میں بٹی ہے۔ ایسے تو بودھ دھرم کے پہلے کی چترکلا کے نمونے بھی ملتے ہیں۔ سی۔ پی کی کیمور اور وندھیاچل کی کچھ گپھاؤں اور جوگی مارا کی گپھاؤں میں جو رنگین تصویریں ملتی ہیں وہ زیادہ تر جانوروں کے شکار کی ہیں۔

بودھ دھرم کے پرچار میں چترکلا کا خاص ہاتھ رہا ہے۔ بودھ بھکشو دوسرے ملکوں میں گئے اور انھوں نے وہاں اپنے دھرم کے اصولوں کو تصویروں کے ذریعہ سمجھایا۔ اسی سبب سے چینی اور جاپانی قلم ہندستان کی بودھ قلم سے ملتا جلتا ہے۔ اجنتا کی تصویروں کی طرح کی تصویریں جاپان کے سوا ہزار سال پرانے مندر ہوری اجی میں ہیں۔

ہندستان کی چترکلا کے بارے میں دوسری جگہوں میں جو نمونے ملتے ہیں انھیں دیکھ کر جانا جا سکتا ہے۔ بودھوں نے جاتک کہانیوں کو اجنتا میں تصویروں کے ذریعہ آنکھوں کے سامنے کر دیا ہے۔ جس سے کہانیوں کا اثر آدمیوں پر صرف سننے کے نسبت اور زیادہ پڑتا ہے۔ اجنتا کے چترکاروں (مصوروں) میں ناگ و مب سار (راجہ نہیں) زیادہ مشہور تھے۔ اجنتا کی تصویریں دوسری اور تیسری صدی میں بنائی گئی تھیں۔ جس سے پتہ چلتا ہے کہ چترکلا کا اس سمے تک ہندستان میں کتنا پرچار

हो चुका था.

सातवीं सदी से लेकर, सोलहवीं सदी तक हिन्दुस्तान मे चित्रकला का प्रचार रुक गया. देश की हालत नाजुक थी. देश छोटे छोटे राजों मे बटा था और यह छोटे छोटे राजे आपस में लड़ते रहते थे. ऐसे समय मे अगर देश में चित्रकला ऐसी कला न पनप पाये तो कोई ताज्जुब की बात नहीं. सोलहवीं सदी के बीच में चित्रकला के पनपने के कुछ आसार नजर आने लगे. लेकिन जिस तरीके ने अब जोर पकड़ा वह बौद्ध तरीके से बिलकुल अलग था. ईरानी तरीके का जोर था. और तसवीरें अब ईरानी क़लम की बनने लगी थीं. देश में मुग़ल सल्तनत थी इससे इस कलम को खूब सहयोग मिला. अबदुल समद, फर्रूख मीर सैयद, दसवन्द केशव दास वग़ैरा चित्रकारो (मुसव्विरो) के बारे मे जानकारी भी मिलती है. हिन्दुस्तान की चित्रकला पर इसका काफी असर पड़ा. धर्म को इस क़लम मे कोई जगह नहीं मिली. अकबर और जहाँगीर ने इस क़लम को काफ़ी बढ़ाया.

राजपूताने के राजपूत राजाओ के यहाँ हिन्दू धर्म चित्रकला मे घुस गया. पुराणो की कथाओ पर तसवीरे उस समय और जगह के चित्रकारो ने भी बनाई और उनको इसमे बहुत सफलता भी मिली अंग्रेजों के पैर हिन्दुस्तान मे जम जाने से इस तरह की चित्रकला बिल्कुल बदल गई.

ईस्ट इन्डिया कम्पनी के पैर हिन्दुस्तान में जम गये थे और चित्रकारो (मुसव्विरो) की कोई भी जगह मुग़लों, और राजपूतों के दरबारों मे न रह गई थी. उससे यह कलाकार यहाँ वहाँ देश में फैल

ہو چکا تھا۔

ساتویں صدی سے لیکر سولہویں صدی تک ہندستان میں چترکلا کا پرچار رک گیا۔ دیش کی حالت نازک تھی۔ دیش چھوٹے چھوٹے راجوں میں بٹا تھا اور یہ چھوٹے چھوٹے راجے آپس میں لڑتے رہتے تھے۔ ایسے سمے میں اگر دیش میں چترکلا ایسی کلا نہ پنپ پائے تو کوئی تعجب کی بات نہیں۔ سولہویں صدی کے بیچ میں چترکلا کے پنپنے کے کچھ آثار نظر آنے لگے۔ لیکن جس طریقے نے اب زور پکڑا وہ بودھ طریقے سے بالکل الگ تھا۔ ایرانی طریقے کا زور تھا۔ اور تصویریں اب ایرانی قلم کی بننے لگی تھیں۔ دیش میں مغل سلطنت تھی اس سے اس قلم کو خوب سہیوگ ملا۔ عبدالصمد، فرخ، میر سید، دسونت، کیشوداس وغیرہ چترکاروں (مصوروں) کے بارے میں جان کاری بھی ملتی ہے۔ ہندستان کی چترکلا پر اس کا کافی اثر پڑا۔ دھرم کو اس قلم میں کوئی جگہ نہیں ملی۔ اکبر اور جہانگیر نے اس قلم کو کافی بڑھایا۔

راجپوتانے کے راجپوت راجاؤں کے یہاں ہندو دھرم چترکلا میں گھس گیا۔ پرانوں کی کتھاؤں پر تصویریں اس سمے اور جگہ کے چترکاروں نے بنائیں اور ان کو اس میں بہت سپھلتا بھی ملی۔ انگریزوں کے پیر ہندستان میں جم جانے سے، اس طرح کی چترکلا بالکل بدل گئی۔

ایسٹ انڈیا کمپنی کے پیر ہندستان میں جم گئے تھے اور چترکاروں (مصوروں) کو کوئی بھی جگہ مغلوں اور راجپوتوں کے درباروں میں نہ رہ گئی تھی۔ اس سے یہ کلاکار یہاں وہاں دیش میں پھیل

गये थे. जो असर पच्छिम के कलचर का यहाँ के समाज, और साहित्य पर पड़ा वही यहाँ की चित्रकला पर भी पड़ा. उन्नीसवीं सदी के पहले ही इस तरह के मिले जुले चित्रों के जो कि यूरोपीय और हिन्दुस्तानी चित्रकला से मिलकर बने थे. नमूने मिलने लगे थे. ईस्ट इंडिया कम्पनी के सौदागर इस तरह के बहुत से चित्र योरप ले गये, जो आज कल भी वहाँ के अजायबघरों मे रखे हुए हैं. तंजोर और मैसूर के राजाओं ने बहुत से चित्र लड़ाई वग़ैरा के तैयार करवाये थे जो कि आज कल भी विलायत के अजायबघरों की दीवारों की ख़ूबसूरती बढ़ा रहे हैं.

बीसवीं सदी की शुरूआत तक चित्रकला इसी तरह पड़ी रही. बीसवीं सदी की शुरुआत के दस सालों मे बंगाल में चित्रकला की कुछ कुछ तरक़्क़ी नज़र आने लगी अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का काम इस तरफ तारीफ के लायक है. उन्होने पुराने क़िस्म की चित्रकला के बारे में जानकारी हासिल की और बहुत कुछ खोज करने के बाद एक अपनी नई शैली ही बना डाली. उनकी चित्रकला में हिन्दुस्तानियत काफ़ी झलकती है. क्योंकि वह ईरानी और अजनता की चित्रकला का ढंग मिला कर बनी है. टैगोर स्कूल के सफल चित्रकार नन्दलाल बोस की शैली से चीनी और जापानी ढंग ज़्यादा मिलता है.

लखनऊ के असित कुमार हल्दार, हकीम मुहम्मद ख़ाँ और दिल्ली के शारदा चरण वकील आजकल के सफल चित्रकार हैं. हल्दार कवि भी हैं और उनके चित्रों में नयापन ख़ूब मिलता है. आर्ट एण्ड ट्रेडीशन नाम की किताब भी आपने लिखी है, हकीम मुहम्मद ईरानी ढग की चित्रकारी करते है. वकील साहब चित्रलेखा नाम

گئے تھے، جو اثر پچھم کے کلچر کا یہاں کے سماج، اور ساہتیہ پر پڑا وہی یہاں کی چترکلا پر بھی پڑا۔ انیسویں صدی کے پہلے ہی اس طرح کے ملے جلے چتروں کے جو کہ یوروپیہ اور ہندستانی چترکلا سے مل کر بنے تھے، نمونے ملنے لگے تھے۔ ایسٹ انڈیا کمپنی کے سوداگر اس طرح کے بہت سے چتر یورپ لے گئے، جو آجکل بھی وہاں کے عجائب گھروں میں رکھے ہوئے ہیں۔ تنجور اور میسور کے راجاؤں نے بہت سے چتر لڑائی وغیرہ کے تیار کروائے تھے جو کہ آجکل بھی ولایت کے عجائب گھروں کی دیواروں کی خوبصورتی بڑھا رہے ہیں۔

بیسویں صدی کی شروعات تک چترکلا اسی طرح پڑی رہی. بیسویں صدی کی شروعات کے دس سالوں میں بنگال میں چترکلا کی کچھ کچھ ترقی نظر آنے لگی۔ اونیندرناتھ ٹھاکر کا کام اس طرف تعریف کے لائق ہے۔ انھوں نے پرانی قسم کی چترکلا کے بارے میں جانکاری حاصل کی اور بہت کچھ کھوج کرنے کے بعد ایک اپنی نئی شیلی ہی بنا ڈالی۔ اُن کی چترکلا میں ہندستانیت کافی جھلکتی ہے کیونکہ وہ ایرانی اور اجنتا کی چترکلا کا ڈھنگ ملا کر بنی ہے۔ ٹیگور اسکول کے سپھل چترکار نندلال بوس کی شیلی کے چینی اور جاپانی ڈھنگ زیادہ ملتا ہے۔

لکھنؤ کے است کمار حلدار، حکیم محمد خاں اور دلی کے شارداچرن وکیل آجکل کے سپھل چترکار ہیں۔ حلدار کوی بھی ہیں اور اُن کے چتروں میں نیاپن خوب ملتا ہے۔ آرٹ اینڈ ٹریڈیشن نام کی کتاب بھی آپ نے لکھی ہے، حکیم محمد ایرانی ڈھنگ کی چترکلا کرتے ہیں۔ وکیل صاحب چترلیکھا نام

का एक रिसाला निकालते हैं. जिसमें चित्रकारी के पहलुओं पर लेख निकलते हैं. इस तरह का रिसाला हिन्दुस्तान के लिये पहला है.

गुजरात के चित्रकार छाया चित्रों के लिये मशहूर हैं. चग़ताई के चित्र ईरानी ढंग के होते है.

जयपुर के रामगोपाल विजय वर्गीय राजपूत स्कूल के मशहूर चित्रकार हैं.

इनके अलावा गगनेन्द्र नाथ ठाकुर, प्रमोद कुमार चटर्जी, मुकुल चन्द्र डे, रमेशचन्द्र मजूमदार टैगोर स्कूल के चित्रकार है, सेन्ट्रल इन्डिया के देवलालीकर, मनोहर जोशी, हरी नारायण वर्मा, सुधीर खास्तगीर अपनी शैलियों के लिये मशहूर है.

हिन्दुस्तान की चित्रकला की दुनिया में अपनी अलग जगह है. और अभी तक गवर्नमेन्ट का ध्यान इस ओर नहीं गया है. जो काम भाषा नहीं कर पाती उसे चित्रों के जरिये पूरा किया जा सकता है.

کا ایک رسالہ نکالتے ہیں۔ جس سے چترکاری کے پہلوؤں پر لیکھ نکلتے ہیں اس طرح کا رسالہ ہندستان کے لئے پہلا ہے۔

گجرات کے چترکار چھایا چتروں کے لئے مشہور ہیں۔ چغتائی کے چتر ایرانی ڈھنگ کے ہوتے ہیں۔

جے پور کے رام گوپال وجے ورگیہ راجپوت اسکول کے مشہور چترکار ہیں۔

ان کے علاوہ گگنیندر ناتھ ٹھاکر، پرمود کمار چٹرجی، مُکل چندر ڈے، رمیش چندر موزومدار ٹیگور اسکول کے چترکار ہیں۔ سنٹرل انڈیا کے دیولالی کر، منوہر جوشی، ہری نرائن ورما، سدھیر خاستگیر اپنی شیلیوں کے لئے مشہور ہیں۔

ہندستان کی چترکلا کی دنیا میں اپنی الگ جگہ ہے۔ اور ابھی تک گورنمنٹ کا دھیان اس اور نہیں گیا ہے۔ جو کام بھاشا نہیں کر پاتی اسے چتروں کے ذریعہ پورا کیا جا سکتا ہے۔

गांधी जी से पहली भेंट

(प्रोफेसर तान् युन् शान्)

मैं गांधी जी से पहली बार अप्रेल सन् १९३१ ई० में बारदोली में मिला था. पर मुझे उनके दर्शन तो तीन बरस पहले ही हो चुके थे. यह उस समय की बात है, जब दिसम्बर १९२८ में कलकत्ता मे कुल हिन्द क़ौमी कांग्रेस का जलसा हुआ था. कांग्रेस का जलसा देखने कलकत्ता रवाना होने के पहले मैं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने गया. गुरुदेव ने कहा कि मैं जलसे के मौके पर ही गांधी जी से मिल लूँ. मैंने गुरुदेव से गांधी जी के नाम एक परिचय चिट्ठी देने की दरख्वास्त की. गुरुदेव ने जबाब दिया—"परिचय चिट्ठी की ज़रूरत नहीं है, गांधी जी तुमसे मिलकर बहुत खुश होंगे."

उन दिनों कलकत्ता शहर मेरे लिये बिलकुल अनजाना था. मैंने उसे चीन से शान्तिनिकेतन आते समय एक ही बार देखा था. वहाँ मैं मुश्किल से गांधी जी का पता लगा सका. पर उस समय मैंने सोचा कि जब गांधी जी कांग्रेस के काम में लगे हैं तो उनसे मिलने का न यह मौक़ा ही ठीक है और न इस मौके पर उनका क़ीमती वक्त लेना ही ठीक होगा. इसलिये जलसे के मौक़े पर गांधी जी से मिलने का बिचार मैंने त्याग दिया. उस वक़्त कांग्रेस का जलसा शुरू होने के मौक़े पर मैंने कुछ ही फ़ासले से उनके दर्शन करके ही संतोष कर लिया. उस मौक़े का नजारा

گاندھی جی سے پہلی بھینٹ

(پروفیسر تان یون شان)

میں گاندھی جی سے پہلی بار اپریل ۱۹۳۱ء میں باردولی میں ملا تھا۔ پر مجھے اُن کے درشن تو تین برس پہلے ہی ہو چکے تھے۔ یہ اُس سمے کی بات ہے جب دسمبر ۱۹۲۸ء میں کلکتہ میں کل ہند قومی کانگریس کا جلسہ ہوا تھا۔ کانگریس کا جلسہ دیکھنے کلکتہ روانہ ہونے کے پہلے میں گورو دیو رویندر ناتھ ٹیگور سے ملنے گیا۔ گورو دیو نے کہا کہ میں جلسہ کے موقع پر ہی گاندھی جی سے مل لوں۔ میں نے گورو دیو سے گاندھی جی کے نام ایک پریچے چٹھی دینے کی درخواست کی۔ گورو دیو نے جواب دیا "پریچے چٹھی کی ضرورت نہیں ہے، گاندھی جی تم سے مل کر بہت خوش ہونگے"

اُن دنوں کلکتہ شہر میرے لئے بالکل ان جانا تھا۔ میں نے اُسے چین سے شانتی نکیتن آتے سمے ایک ہی بار دیکھا تھا۔ وہاں میں مشکل سے گاندھی جی کا پتہ لگا سکا پر اس سمے میں نے سوچا کہ جب گاندھی جی کانگریس کے کام میں لگے ہیں، تو اُن سے ملنے کا نہ یہ موقع ہی ٹھیک ہے اور نہ اس موقع پر ان کا قیمتی وقت لینا ہی ٹھیک ہوگا۔ اس لئے کے موقع پر گاندھی جی سے ملنے کا وچار میں نے تیاگ دیا۔ اس وقت کانگریس کا جلسہ شروع ہونے کے موقع پر میں نے کچھ ہی فاصلے سے اُن کے درشن کرکے ہی سنتوش کر لیا۔ اس موقع کا نظارہ

बेमिसाल था. गाँधी जी जैसे ही कॉग्रेस नगर मे दाखिल हुए, लोगो ने बड़े जोश से जयकारे लगाकर उनका स्वागत किया और फिर वह सब के सब शान्त होकर तुरन्त ही चुपचाप बैठ गये और गाँधी जी का भाषन सुनने लगे. गांधी जी शरीर से कमजोर दिखाई पड़ते थे पर उनके मुँह पर चमक और आँखो मे जोत जगमगा रही थी. वह धीरे धीरे बोल रहे थे पर उनकी आवाज़ मे मिठास और मनोहर राग भरा था. मैं उनके इस दूर के दर्शन से ही सन्तुष्ट होकर शान्ति निकेतन लौट आया.

उसके बाद गांधी जी से मिलकर आये हुए दोस्तो से अकसर मेरी मुलाक़ात होती थी. सब के सब मुझे उनसे मिलने जाने और कुछ दिन उनके साथ रहने की सलाह देते थे. मै उन सब से गांधी जी से मिलने की अपनी पुरानी ख्वाहिश ज़ाहिर करता और गांधी जी तक अपना सलाम पहुँचा देने का निवेदन करता. दर असल मैंने तो इस देश मे आने के पहले ही यह तय कर लिया था कि पहले मै कुछ बरस तक शान्ति निकेतन मे गुरुदेव की छाया में रहूँगा और फिर गांधी जी के साथ सत्याग्रह आश्रम साबरमती मे दो तीन साल बिताऊँगा. और अगर हो सका तो उन्हीं का चेला बन जाऊँगा. पर आदमी सोचता कुछ है और हालतो के बस में होकर उसे करना पड़ता है कुछ और. शान्ति निकेतन मे मुझे दो बरस से कुछ ही ज्यादा समय हुआ था कि अचानक सन् १९३० के जाड़ों मे मुझे तिब्बत जाना पड़ा. जब तिब्बत के सफ़र से हिन्दुस्तान लौट कर आया, तो घरेलू कामों के सिलसिले मे अपने देश (चीन) लौट जाना पड़ा. मेरा असली प्रोग्राम एक दम बदल

بے مثال تھا۔ گاندھی جی جیسے ہی کانگریس نگر میں داخل ہوئے، لوگوں نے بڑے جوش سے جے کارے لگا کر اُن کا سواگت کیا اور پھر وہ سب کے سب شانت ہو کر ترنت ہی چپ چاپ بیٹھ گئے اور گاندھی جی کا بھاشن سننے لگے۔ گاندھی جی شریر سے کمزور دکھائی پڑتے تھے پر ان کے منہ پر چمک اور آنکھوں میں جوت جگمگا رہی تھی۔ وہ دھیرے دھیرے بول رہے تھے پر اُن کی آواز میں مٹھاس اور منوہر راگ بھرا تھا۔ میں ان کے اس دور کے درشن سے ہی سنتشٹ ہو کر شانتی نکیتن لوٹ آیا۔

اُس کے بعد گاندھی جی سے مل کر آئے ہوئے دوستوں سے اکثر میری ملاقات ہوتی تھی۔ سب کے سب مجھے ان سے ملنے جانے اور کچھ دن ان کے ساتھ رہنے کی صلاح دیتے تھے۔ میں ان سب سے گاندھی جی سے ملنے کی اپنی پرانی خواہش ظاہر کرتا اور گاندھی جی تک اپنا سلام پہنچا دینے کا نویدن کرتا۔ دراصل میں نے تو اس دیش میں آنے کے پہلے ہی یہ طے کر لیا تھا کہ پہلے میں کچھ برس تک شانتی نکیتن میں گورو دیو کی چھایا میں رہوں گا اور پھر گاندھی جی کے ساتھ ستیہ گرہ آشرم سابرمتی میں دو تین سال بتاؤں گا، اور اگر ہو سکا تو انھیں کا چیلا بن جاؤں گا۔ پر آدمی سوچتا کچھ ہے اور حالتوں کے بس میں ہو کر اسے کرنا پڑتا ہے کچھ اور۔ شانتی نکیتن میں مجھے دو برس سے کچھ ہی زیادہ سمے ہوا تھا کہ اچانک سنہ ۱۹۳۰ء کے جاڑوں میں مجھے تبت جانا پڑا۔ جب تبت کے سفر سے ہندستان لوٹ کر آیا تو گھریلو کاموں کے سلسلے میں اپنے دیش (چین) لوٹ جانا پڑا۔ میرا اصلی پروگرام اک دم بدل

गया. फिर भी मैं गांधी जी से मिलने के बाद ही चीन लौटा.

तिब्बत में जिन्दा बुद्ध (पूज्य दलाई लामा) के साथ ही उनके राजमहल में (जो तिब्बत की राजधानी लासा शहर के बाहर है) ही ठहरा हुआ था. वहाँ मुझे स्वर्गीय तेरहवें दलाई लामा और उनके वज़ीरों को हिन्दुस्तान के बारे में तरह तरह के सवालों का जवाब देना पड़ता था. वहाँ मैं उन लोगों से गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर और गांधी जी के कारनामे बयान करता कि किस तरह उनके ज़रिये हिन्दुस्तान की क़िस्मत की धारा ही बदल जाने वाली है. पूज्य दलाई लामा ख़ास तौर से गांधी जी के रहन सहन और उनके सत्याग्रह आन्दोलन की बड़ी तारीफ़ करते थे. इस लिये हिन्दुस्तान लौटते समय उन्होंने मुझे गांधी जी से अपना निजी सन्देश पहुँचाने के लिये कहा, इस ख़ास काम के लिये मुझे गांधी जी से फ़ौरन ही मिलना और भी ज़रूरी होगया.

लासा से शान्ति निकेतन लौट आने पर मैंने गांधी जी को उनसे मिलने की अपनी पूरी इच्छा लिख भेजी और दर्शन करने का हुक्म माँगा. मुझे उनका फ़ौरन जवाब मिला कि मैं उनसे जल्द ही किसी भी तारीख़ को दिल्ली में मिल सकता हूँ. मैंने सोचा कि दिल्ली जाते हुए राह में पड़ने वाले बुद्ध-गया, राजगृह, नालन्दा, सारनाथ, कुशीनगर, लुम्बिनी, श्रावस्ती, संकिसा * वग़ैरा बौद्ध स्थानों की तीर्थ यात्रा भी क्यों न कर लूँ. इस तरह तीर्थ यात्रा करते हुए दिल्ली पहुँचने में मुझे देर हो गई. जब मैं दिल्ली पहुँचा तो

* पुराना नाम संकस्य—यह आजकल संकिसा बसंतपुर कहलाता

گیا۔ پھر بھی میں گاندھی جی سے ملنے کے بعد ہی چین لوٹا۔

تبت میں زندہ بدھ (پوجیہ دلائی لاما) کے ساتھ ہی ان کے راج محل میں (جو تبت کی راجدھانی لاسا شہر کے باہر ہے) ہی ٹھہرا ہوا تھا۔ وہاں مجھے سورگیہ تیرھویں دلائی لاما اور ان کے وزیروں کو ہندستان کے بارے میں طرح طرح کے سوالوں کا جواب دینا پڑتا تھا۔ وہاں میں ان لوگوں سے گورو دیو رویندر ناتھ ٹیگور اور گاندھی جی کے کارنامے بیان کرتا کہ کس طرح ان کے ذریعے ہندستان کی قسمت کی دھارا ہی بدل جانے والی ہے۔ پوجیہ دلائی لاما خاص طور سے گاندھی جی کے رہن سہن اور ان کے ستیہ گرہ آندولن کی بڑی تعریف کرتے تھے۔ اس لئے ہندستان لوٹتے سمے انھوں نے مجھے گاندھی جی سے اپنا نجی سندیش پہنچانے کے لئے کہا، اس خاص کام کے لئے مجھے گاندھی جی سے فوراً ہی ملنا اور بھی ضروری ہوگیا۔

لاسا سے شانتی نکیتن لوٹ آنے پر میں نے گاندھی جی کو ان سے ملنے کی اپنی پوری اچھا لکھ بھیجی اور درشن کرنے کا حکم مانگا۔ مجھے ان کا فوراً جواب ملا کہ میں ان سے جلد ہی کسی بھی تاریخ کو دلی میں مل سکتا ہوں۔ میں نے سوچا کہ دلی جاتے ہوئے راہ میں پڑنے والے بدھ گیا، راج گرہ، نالندا، سارناتھ، کشی نگر، لمبنی، سراوستی، سنکیسا وغیرہ بودھ استھانوں کی تیرتھ یاترا بھی کیوں نہ کروں۔ اس طرح تیرتھ یاترا کرتے ہوئے دلی پہنچنے میں مجھے دیر ہوگئی۔ جب میں دلی پہنچا تو

गांधी जी साबरमती आश्रम लौट गये थे. मैं साबरमती के लिये चल पड़ा. पहले ही मैं कह आया हूँ कि मेरे प्रोग्राम में साबरमती आश्रम में कुछ बरस तक ठहरने की बात थी. अगरचे वहाँ ठहरने की मैं अपनी पुरानी इच्छा पूरी न कर सका, पर उस जगह के देखने भालने का फायदा मैंने इस बार उठाना चाहा. जब मैं साबरमती आश्रम पहुँचा, तो गांधी जी किसी जरूरी बैठक मे हिस्सा लेने के लिये बारदोली चले गये थे. आश्रम के सेक्रेट्री श्री नारायण दास के० गांधी ने मेरी बड़ी आव भगत की. सारा आश्रम घुमा फिरा कर दिखाया और अपने भाई की तरह मेरा ध्यान रक्खा. उन्होंने मेरे बारे मे फौरन गांधी जी को तार दिया. गांधी जी का जवाब भी फौरन मिला कि वह अभी कुछ दिन और बारदोली मे ठहरेंगे, इसलिये मैं बारदोली जाकर उनसे मिल सकता हूँ. मै साबरमती से बारदोली के लिये चल पड़ा.

साबरमती से बारदोली जाते समय राह मे एक घटना हुई, जो मुझे अब तक अच्छी तरह याद है. यह सूरत स्टेशन की बात है, जहाँ मुझे बारदोली के लिये गाड़ी बदलनी थी. गाड़ी आने में कुछ देर थी. इसलिये मैं वेटिंग रूम की तरफ चला. अभी वेटिंग-रूम में दाखिल ही हुआ था कि मेरे पीछे पीछे एक सी० आई० डी० का आदमी भी आ पहुँचा और उसने मुझ पर सवालो की बौछार कर दी—"आप कौन हैं ?, कहाँ से आ रहे है ?, हिन्दुस्तान में क्या करते हैं ?, गांधी जी से किस लिये मिलने जा रहे हैं ?" मैंने सब बातें साफ़ साफ़ बता दीं और वह सन्तुष्ट और ख़ुश होकर चला गया. तब मैं कुछ देर आराम करने का इरादा करके मुंह धोने के

گاندھی جی سابرمتی آشرم لوٹ گئے تھے۔ میں سابرمتی کے لئے چل پڑا۔ پہلے ہی میں کہہ آیا ہوں کہ میرے پروگرام میں سابرمتی آشرم میں کچھ برس تک ٹھہرنے کی بات تھی۔ اگرچہ وہاں ٹھہرنے کی میں اپنی پرانی اچھا پوری نہ کر سکا، پر اس جگہ کے دیکھنے بھالنے کا فائدہ میں نے اس بار اٹھانا چاہا۔ جب میں سابرمتی آشرم پہونچا، تو گاندھی جی کسی ضروری بیٹھک میں حصہ لینے کے لئے باردولی چلے گئے تھے۔ آشرم کے سکریٹری شری نارائن داس کے گاندھی نے میری بڑی آؤ بھگت کی۔ سارا آشرم گھما پھرا کر دکھایا اور اپنے بھائی کی طرح میرا دھیان رکھا۔ انھوں نے میرے بارے میں فوراً گاندھی جی کو تار دیا۔ گاندھی جی کا جواب بھی فوراً ملا کہ وہ ابھی کچھ دن اور باردولی میں ٹھہریں گے، اس لئے میں باردولی جا کر ان سے مل سکتا ہوں۔ میں سابرمتی سے باردولی کیلئے چل پڑا۔

سابرمتی سے باردولی جاتے سمے راہ میں ایک گھٹنا ہوئی جو مجھے اب تک اچھی طرح یاد ہے۔ یہ سورت اسٹیشن کی بات ہے جہاں مجھے باردولی کیلئے گاڑی بدلنی تھی۔ گاڑی آنے میں کچھ دیر تھی۔ اس لئے میں ویٹنگ روم کی طرف چلا۔ ابھی ویٹنگ روم میں داخل ہی ہوا تھا کہ میرے پیچھے پیچھے ایک سی آئی ڈی کا آدمی بھی آ پہنچا اور اس نے مجھ پر سوالوں کی بوچھار کر دی "آپ کون ہیں؟ کہاں سے آ رہے ہیں؟ ہندستان میں کیا کرتے ہیں؟ گاندھی جی سے کس لئے ملنے جا رہے ہیں؟" میں نے سب باتیں صاف صاف بتا دیں اور وہ سنتشٹ اور خوش ہو کر چلا گیا۔ تب میں کچھ دیر آرام کرنے کا ارادہ کر کے منہ دھونے کے

लिये नहान घर में गया. नहान घर से निकलते ही एक दूसरे साहब ने मिलने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और अचानक पूछा—"क्या आप गांधी जी से मिलने बारदोली जा रहे हैं ?" इस अचानक मुलाक़ात और सवाल से मैं कशमकश में पड़ गया, और सोचा कि यह भी कोई सी० आई० डी० के ही आदमी हैं. पर मेरे जवाब देने के पहले ही उन्होंने बताया—"मैं भी गांधी जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने जा रहा हूँ. दस बरस से भी ज्यादा समय तक अमरीका मे रहने के बाद अभी हाल मे ही हिन्दुस्तान लौटा हूँ. पहले तो मैं वहाँ पढ़ने के लिये गया. पर पढ़ाई ख़तम करके वहीं व्योपार करने लगा. मेरा नाम दुआ है. अब हम एक साथ ही बारदोली चलेंगे". फिर उन्होंने मुझे कई परिचय चिट्ठियाँ दिखाईं. तब कहीं जाकर मेरी कशमकश दूर हुई और उनकी संगत मिल जाने से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई. हम लोग एक साथ ही गये. गाड़ी पर उन्होंने अमरीकी पोशाक उतार दी और धोती कुरता पहना. ऐसा करते हुए उन्हे शर्म नहीं आ रही थी. उन्होंने बताया कि गांधी जी से मिलने के लिये ही उन्होंने बम्बई मे धोती कुरता ख़रीदा है. मेरे सिर पर गांधी टोपी देख कर उन्होंने पूछा—"आपने भी शायद गांधी जी से मिलने के लिये ही यह टोपी ख़रीदी है ?" मैंने जवाब दिया—"नहीं, मुझे तो कल सत्याग्रह आश्रम साबरमती के सेक्रेट्री ने यह टोपी भेंट की है. पर मेरे पास बदक़िस्मती से कुरता धोती नहीं है." हम लोग हँस पड़े और फिर हँसते बोलते थोड़े समय में ही बारदोली पहुँच गये.

बारदोली स्टेशन से हम लोग घोड़ा गाड़ी पर स्वराज आश्रम

لیے نہان گھر میں گیا۔ نہان گھر سے نکلتے ہی ایک دوسرے صاحب نے ملنے کی خواہش ظاہر کی اور اچانک پوچھا "کیا آپ گاندھی جی سے ملنے باردولی جا رہے ہیں؟" اس اچانک ملاقات اور سوال سے میں کشمکش میں پڑ گیا، اور سوچا کہ یہ بھی کوئی سی۔ آئی۔ ڈی کے ہی آدمی ہیں۔ پر میرے جواب دینے کے پہلے ہی انھوں نے بتایا "میں بھی گاندھی جی کو اپنی شردھانجلی بھینٹ کرنے جا رہا ہوں۔ دس برس سے بھی زیادہ سمے تک امریکہ میں رہنے کے بعد ابھی حال میں ہی ہندوستان لوٹا ہوں۔ پہلے تو میں وہاں پڑھنے کے لیے گیا۔ پر پڑھائی ختم کرکے وہیں بیوپار کرنے لگا۔ میرا نام دُعا ہے۔ اب ہم ایک ساتھ ہی باردولی چلیں گے"۔ پھر انھوں نے مجھے کئی پریچے چٹھیاں دکھائیں تب کہیں جا کر میری کشمکش دور ہوئی اور ان کی سنگت مل جانے سے مجھے بڑی خوشی ہوئی۔ ہم لوگ ایک ساتھ ہی گئے۔ گاڑی پر انھوں نے امریکی پوشاک اتار دی اور دھوتی کرتا پہنا۔ ایسا کرتے ہوئے انھیں شرم نہیں آ رہی تھی۔ انھوں نے بتایا کہ گاندھی جی سے ملنے کے لیے ہی انھوں نے بمبئی میں دھوتی کرتا خریدا ہے۔ میرے سر پر گاندھی ٹوپی دیکھ کر انھوں نے پوچھا "آپ نے بھی شاید گاندھی جی سے ملنے کے لیے ہی یہ ٹوپی خریدی ہے؟" میں نے جواب دیا "نہیں، مجھے تو کل ستیاگرہ آشرم سابرمتی کے سکریٹری نے یہ ٹوپی بھینٹ کی ہے۔ پر میرے پاس بدقسمتی سے کرتا دھوتی نہیں ہے۔" ہم لوگ ہنس پڑے اور پھر ہنستے بولتے تھوڑے سمے میں ہی باردولی پہنچ گئے۔

باردولی اسٹیشن سے ہم لوگ گھوڑا گاڑی پر سوراج آشرم

गये. कुछ आश्रम वासियों ने फाटक पर ही हम लोगों का स्वागत किया और फिर एक कमरे में ठहरने का इन्तजाम कर दिया, जो खास तौर से मेहमानों के इस्तेमाल के लिये ही था..कमरा बड़ा साफ़ सुथरा था, पर उसमें कुछ साज सामान नहीं था. कुछ ही मिनट बाद गांधी जी के छोटे लड़के देवदास जी आये और पूछा कि हम लोग यहाँ कितने दिनो तक ठहर सकते हैं? श्री दुआ ने बताया कि उन्हें तो बम्बई में कोई जरूरी काम है, इसलिये अगर उन्हे गांधी जी के दर्शन जल्द ही हो जायँ तो वह तीसरे पहर या कल सवेरे की गाड़ी से चले जाना चाहते हैं. देवदास जी ने उनसे कहा—"बापू अभी किसी जरूरी बैठक मे हिस्सा ले रहे हैं और तीसरे पहर भी उन्हे कई काम हैं. फिर भी मै इस बात की कोशिश करूँगा कि बापू आपके लिये कुछ समय शाम को निकाल सकें." फिर उन्होंने मुझसे पूछा—"क्या आप अपना प्रोग्राम बताने की कृपा करेंगे? गांधी जी तो पिछले कई दिनों से आपका इन्तजार कर रहे हैं. क्या आप हम लोगों के साथ कुछ दिन ठहर सकेंगे?" मैंने जवाब दिया—"हाँ, हाँ, मुझे जल्दी नहीं है. मैं तो गांधी जी के दर्शन तभी करूँगा, जब उन्हे सहूलत होगी." उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की और चले गये आध घन्टे के बाद देवदास जी फिर आये और खबर दी कि श्री दुआ से गांधी जी शाम को मिलेंगे और दूसरे दिन सुबह मुझसे. लेकिन अगर मैं चाहूँ तो, उनसे शाम को भी मिल सकता हूँ. उन्होंने बताया कि रोजाना सुबह तड़के और शाम को यहाँ प्रार्थना होती है और गांधी जी खुद उसमें शरीक होते हैं. इसलिये अगर चाहूँ तो मैं भी प्रार्थना में

گئے. کچھ آشرم باسیوں نے پھاٹک پر ہی ہم لوگوں کا سواگت کیا اور پھر ایک کمرے میں ٹھہرنے کا انتظام کر دیا، جو خاص طور سے مہمانوں کے استعمال کے لئے ہی تھا. کمرہ بڑا صاف ستھرا تھا، پر اس میں کچھ ساز و سامان نہیں تھا. کچھ ہی منٹ بعد گاندھی جی کے چھوٹے لڑکے دیوداس جی آئے اور پوچھا کہ ہم لوگ یہاں کتنے دنوں تک ٹھہر سکتے ہیں؟ شری دُعا نے بتایا کہ انھیں تو بمبئی میں کوئی ضروری کام ہے، اس لئے اگر انھیں گاندھی جی کے درشن جلد ہی ہو جائیں تو وہ تیسرے پہر یا کل سویرے کی گاڑی سے چلے جانا چاہتے ہیں. دیوداس جی نے ان سے کہا "باپو ابھی کسی ضروری بیٹھک میں حصہ لے رہے ہیں اور تیسرے پہر بھی انھیں کئی کام ہیں. پھر بھی میں اس بات کی کوشش کروں گا کہ باپو آپ کے لئے کچھ سمے شام کو نکال سکیں." پھر انھوں نے مجھ سے پوچھا "کیا آپ اپنا پروگرام بتانے کی کرپا کریں گے؟ گاندھی جی تو پچھلے کئی دنوں سے آپ کا انتظار کر رہے ہیں. کیا آپ ہم لوگوں کے ساتھ کچھ دن ٹھہر سکیں گے؟" میں نے جواب دیا "ہاں، ہاں، مجھے جلدی نہیں ہے. میں تو گاندھی جی کے درشن تبھی کروں گا جب انھیں سہولت ہو گی." انھوں نے اس بات پر خوشی ظاہر کی اور چلے گئے. آدھ گھنٹے کے بعد دیوداس جی پھر آئے اور خبر دی کہ شری دُعا سے گاندھی جی شام کو ملیں گے اور دوسرے دن صبح مجھ سے. لیکن اگر میں چاہوں تو ان سے شام کو بھی مل سکتا ہوں. انھوں نے بتایا کہ روزانہ صبح تڑکے اور شام کو یہاں پرارتھنا ہوتی ہے اور گاندھی جی خود اس میں شریک ہوتے ہیں. اس لئے اگر چاہوں تو میں بھی پرارتھنا میں

शामिल हो सकता हूँ. मैंने कहा—"प्रार्थना में तो मैं जरूर शामिल हूँगा, पर उनके सामने तो मैं उनके दिये हुए वक़्त पर ही कल हाजिर हूँगा."

दूसरे दिन २७ अप्रैल १९३१ था. मैं बहुत तड़के उठा और प्रार्थना मे शामिल हुआ, जो ठीक चार बजे शुरू हुई और आध घन्टे के अन्दर ही ख़तम हो गई. अभी अँधेरा ही था. इस लिये लम्बी तीर्थ यात्रा की थकावट के कारन प्रार्थना से लौट कर मैं फिर सो गया. श्री दुआ तो उसी समय चले गये. साढ़े दस बजे देवदास जी मुझे गांधी जी के पास ले गये. आश्रम दो मंजिला था और गांधी जी ऊपर की मंज़िल मे ठहरे हुए थे. मेरे कमरे की तरह उनका कमरा भी एक दम साफ सुथरा था और उसमें भी कोई साज सामान नहीं था. एक बड़ी सी तोशक दीवार से लगी हुई फर्श पर बिछी थी और उस पर एक लम्बा सा तकिया रक्खा हुआ था. दोनो पर सफेद खद्दर चढ़ा था. गांधी जी तकिये के सहारे तोशक पर बैठे चरख़ा कात रहे थे. मैं उनके कमरे के दरवाजे पर पहुँचा ही था कि उन्होंने मुझे इशारा करते हुए मीठी आवाज में कहा—"अन्दर आइये, अन्दर आइये."

मैंने अपनी श्रद्धांजलि भेंट की और दिल से प्रणाम किया. मेरे कुछ बोलने के पहले ही उन्होंने कहा—"मैं तो आपकी बहुत दिनों से राह देख रहा था—पहले दिल्ली में फिर साबरमती में. मुझे तो चिन्ता हो गई थी कि आपको कहीं कुछ हो तो नहीं गया; लेकिन आख़िर आप आ ही गए. इससे मैं बड़ा ख़ुश हूँ."

मैंने कहा—"आपकी कृपा के लिये मैं आभारी हूँ. मुझे दुख है

شامل ہو سکتا ہوں. میں نے کہا "پرارتھنا میں تو میں ضرور شامل ہوں گا، پر ان کے سامنے تو میں ان کے دیئے ہوئے وقت پر ہی کل حاضر ہوں گا"

دوسرے دن ۲۷ اپریل ۱۹۳۱ء تھا. میں بہت تڑکے اٹھا اور پرارتھنا میں شامل ہوا جو ٹھیک چار بجے شروع ہوئی اور آدھ گھنٹے کے اندر ہی ختم ہو گئی. ابھی اندھیرا ہی تھا. اس لئے لمبی تیرتھ یاترا کی تھکاوٹ کے کارن پرارتھنا سے لوٹ کر میں پھر سو گیا. شری دعا تو اسی سمے چلے گئے. ۱۰½ بجے دیوداس جی مجھے گاندھی جی کے پاس لے گئے. آشرم دو منزلہ تھا اور گاندھی جی اوپر کی منزل میں ٹھہرے ہوئے تھے. میرے کمرے کی طرح ان کا کمرہ بھی ایک دم صاف ستھرا تھا اور اس میں بھی کوئی ساز و سامان نہیں تھا. ایک بڑی سی توشک دیوار سے لگی ہوئی فرش پر بچھی تھی اور اس پر ایک لمبا سا تکیہ رکھا ہوا تھا. دونوں پر سفید کھدر چڑھا تھا. گاندھی جی تکیہ کے سہارے توشک پر بیٹھے چرخہ کات رہے تھے. میں ان کے کمرے کے دروازے پر پہنچا ہی تھا کہ انہوں نے مجھے اشارہ کرتے ہوئے میٹھی آواز میں کہا "اندر آئیے، اندر آئیے"

میں نے اپنی شردھانجلی بھینٹ کی اور دل سے پرنام کیا. میرے کچھ بولنے کے پہلے ہی انہوں نے کہا "میں تو آپ کی بہت دنوں سے راہ دیکھ رہا تھا — پہلے دلی میں پھر سابرمتی میں. مجھے تو چنتا ہو گئی تھی کہ آپ کو کہیں کچھ ہو تو نہیں گیا! لیکن آخر آپ آ ہی گئے. اس سے میں بڑا خوش ہوں"

میں نے کہا "آپ کی کرپا کے لئے میں آبھاری ہوں. مجھے دکھ ہے

कि राह में देर हो गई. लेकिन यह देर सिर्फ बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा के कारण ही हुई है. मुझे भरोसा है कि आप देर के लिये मुझे माफ कर देंगे."

उन्होंने फौरन ही जवाब दिया—"जरूर, इसके लिये आप दुखी न हों. अब आप बताइये कि आप कितने दिनो तक यहाँ हम लोगो के साथ ठहर सकते हैं ?"

मैंने जवाब दिया—"मैं तो सिर्फ श्रद्धांजलि भेंट करने आया था सो वह काम पूरा हो गया. इसलिये अब तो मैं तीसरे पहर या कल सुबह की गाड़ी से बम्बई जा सकता हूँ ...."

उन्होने बीच में ही टोका—"और फिर ?"

मैंने कहा—"फिर बम्बई से मद्रास, मद्रास से कलकत्ता और कलकत्ता से चीन लौट जाना चाहता हूँ."

उन्होने मजाक करते हुये कहा—"क्या आपने इन सभी जगहो के लिये टिकट कटा लिया ? पर देवदास ने तो मुझे बताया था कि आपको जल्दी नहीं है. भाग्य से ही मैंने कल आपको नहीं बुलाया, नहीं तो आज सुबह ही आप चले गये होते" इस पर हम सभी हँस पड़े.

मैंने पूछा—"क्या आप सदा के लिये मुझे अपने पास रक्खेंगे ?"

उन्होंने कहा—"इतनी आशा तो मुझे आपसे नहीं है. आप यहाँ तब तक तो रहिये ही, जब तक मैं हूँ. जब मैं जाऊँ, तो आप भी जाइये."

मैंने कहा—"यह तो मेरे लिये सौभाग्य की बात है. और मैं आपके ठहरने तक जरूर यहाँ रहूँगा."

کہ راہ میں دیر ہو گئی. لیکن یہ دیر صرف بودھ تیرتھ استھانوں کی یاترا کے کارن ہی ہوئی ہے. مجھے بھروسہ ہے کہ آپ دیر کے لئے مجھے معاف کر دیں گے."

اُنھوں نے فوراً ہی جواب دیا "ضرور، اس کے لئے آپ دکھی نہ ہوں. اب آپ بتائیے کہ آپ کتنے دنوں تک یہاں ہم لوگوں کے ساتھ ٹھہر سکتے ہیں؟"

میں نے جواب دیا "میں تو صرف شردھانجلی بھینٹ کرنے آیا تھا سو وہ کام پورا ہو گیا. اس لئے اب تو میں تیسرے پہر یا کل صبح کی گاڑی سے بمبئی جا سکتا ہوں ......"

اُنھوں نے بیچ میں ہی ٹوکا "اور پھر؟"

میں نے کہا "پھر بمبئی سے مدراس، مدراس سے کلکتہ اور کلکتہ سے چین لوٹ جانا چاہتا ہوں."

اُنھوں نے مذاق کرتے ہوئے کہا "کیا آپ نے ان سبھی جگہوں کے لئے ٹکٹ کٹا لیا؟ پر دیوداس نے تو مجھے بتایا تھا کہ آپ کو جلدی نہیں ہے. بھاگ سے ہی میں نے کل آپ کو نہیں بلایا، نہیں تو آج صبح ہی آپ چلے گئے ہوتے." اس پر ہم سب ہی ہنس پڑے.

میں نے پوچھا "کیا آپ سدا کے لئے مجھے اپنے پاس رکھیں گے؟"

اُنھوں نے کہا "اتنی آشا تو مجھے آپ سے نہیں ہے. آپ یہاں تب تک تو رہیے ہی جب تک میں ہوں. جب میں جاؤں تو آپ بھی جائیے."

میں نے کہا "یہ تو میرے لئے سوبھاگیہ کی بات ہے. اور میں آپ کے ٹھہرنے تک ضرور یہاں رہوں گا."

उन्होंने मुझसे कहा—"आज सुबह तो मैं आपसे बातचीत करना चाहता था. पर पता लगा कि आप सोये हैं."

उनकी इस बात से मैं एक दम शर्मिन्दा हो गया और समझ में ही नहीं आया कि क्या और कैसे अपनी सफ़ाई दूं. मैंने दुखी होकर कहा—"आपने मुझे जगा क्यों नहीं दिया ?"

उन्होंने मेरी कठिनाई भाँप ली और फ़ौरन बोले—"आप इसके लिये दुखी न हों. हिन्दुस्तान की गर्मी में लम्बी तीर्थ यात्रा करने के बाद कुछ आराम करना ठीक ही है. फिर इतने तड़के आप कोई अच्छा सपना देख रहे होंगे इसलिये मैंने आपको और भी नहीं जगाया."

हम लोग सबके सब फिर हँस पड़े. तब मैंने बड़ी श्रद्धा के साथ पूज्य दलाई लामा का पत्र उनकी सेवा में पेश किया और उनसे बताया कि किस तरह मैं यह चिट्ठी लाया हूँ और उनसे मेरी क्या जान पहचान है. यह सब बातें सुन कर गांधी जी बहुत ख़ुश हुये और पूछा—"पूज्य भदंत जी ने इस चिट्ठी में क्या लिखा है ? क्या यह भोट (तिब्बती) भाषा में ही लिखा हुआ है ?"

मैंने जवाब दिया—"मुझे तो मालूम नहीं कि इसमें क्या लिखा है, पर होगा यह भोट भाषा में ही लिखा हुआ क्योंकि भदंत जी कोई विदेशी भाषा नहीं जानते और यह ख़त उन्होंने ख़ुद ही लिखा है. एक चिट्ठी पहुँचाने वाले की हैसियत से मुझे पूज्य भदंत जी और आप दोनों का विश्वास प्राप्त रहना चाहिये इसलिये मैंने इस चिट्ठी को न तो देखा और न देखने की हिम्मत ही कर सका."

उन्होंने कहा—"बहुत अच्छा. पर अब तो आप देख सकते हैं."

انھوں نے مجھ سے کہا۔ "آج صبح تو میں آپ سے بات چیت کرنا چاہتا تھا۔ پر پتہ لگا کہ آپ سوئے ہیں۔"

ان کی اس بات سے میں ایک دم شرمندہ ہو گیا اور سمجھ میں ہی نہیں آیا کہ کیا اور کیسے اپنی صفائی دوں۔ میں نے دکھی ہو کر کہا۔ "آپ نے مجھے جگا کیوں نہیں دیا؟"

انھوں نے میری کٹھنائی بھانپ لی اور فوراً بولے۔ "آپ اس کے لئے دکھی نہ ہوں۔ ہندستان کی گرمی میں لمبی تیرتھ یاترا کرنے کے بعد کچھ آرام کرنا ٹھیک ہی ہے۔ پھر اتنے تڑکے آپ کوئی اچھا سپنا دیکھ رہے ہوں گے اس لئے میں نے آپ کو اور بھی نہیں جگایا۔"

ہم لوگ سب کے سب پھر ہنس پڑے۔ تب میں نے بڑی شردھا کے ساتھ پوجیہ دلائی لاما کا پتر ان کی سیوا میں پیش کیا اور ان سے بتایا کہ کس طرح میں یہ چٹھی لایا ہوں اور ان سے میری کیا جان پہچان ہے۔ یہ سب باتیں سن کر گاندھی جی بہت خوش ہوئے اور پوچھا "پوجیہ بھدنت جی نے اس چٹھی میں کیا لکھا ہے؟ کیا یہ بھوٹ (تبتی) بھاشا میں ہی لکھا ہوا ہے؟"

میں نے جواب دیا۔ "مجھے تو معلوم نہیں کہ اس میں کیا لکھا ہے، پر ہوگا یہ بھوٹ بھاشا میں ہی لکھا ہوا کیونکہ بھدنت جی کوئی ودیشی بھاشا نہیں جانتے اور یہ خط انھوں نے خود ہی لکھا ہے۔ ایک چٹھی پہنچانے والے کی حیثیت سے مجھے پوجیہ بھدنت جی اور آپ دونوں کا وشواس پراپت رہنا چاہئے اس لئے میں نے اس چٹھی کو نہ تو دیکھا اور نہ دیکھنے کی ہمت ہی کر سکا۔"

انھوں نے کہا۔ "بہت اچھا، پر اب تو آپ دیکھ سکتے ہیں۔"

इतना कह कर हँसते हुए उन्होंने चिट्ठी खोली और कहा—"आपने सच कहा था, यह तो भोट भाषा में लिखा हुआ है, क्या आप इसका तरजुमा मेरे लिये कर सकते हैं ?"

मैंने जवाब दिया—"मुझे भोट भाषा नहीं आती. लासा में रहते समय सिर्फ भोट अक्षर ही सीख सका हूँ."

इस पर उन्होंने कहा—'तब तो इस चिट्ठी की बात मैं कभी नहीं जान सकूँगा." हम लोग फिर हँस पड़े .

चिट्ठी एक लम्बे साइज़ के ख़ास ढंग के तिब्बती काग़ज़ पर लिखी हुई थी और उस पर सिंदूरी रंग मे दो मुहरे लगी हुई थीं. पहली बड़ी मुहर सरकारी थी और दूसरी छोटी उनकी निजी थी. ख़त एक सफेद कपड़े मे लिपटा हुआ था, जिसे तिब्बती भाषा मे 'खतग' कहते हैं. यह 'खतग' प्रेम, मुहब्बत और इज्ज़त को जाहिर करता है. तिब्बत में जब पहली बार या किसी ख़ास मौक़े पर लोग एक दूसरे से मिलते है तो अपने 'खतग' को लेन देन करते हैं. जैसे हम लोग एक दूसरे को अपना पहिचान कार्ड देते हैं. तिब्बत के लोग जब अपने से बड़े का स्वागत करते हैं या उनकी सेवा मे हाजिर होते है तो पहले अपना 'खतग' भेंट करते है. जैसे हम लोग गले मे माला डालते है. वह लोग 'खतग' से ठीक उसी तरह पूजा करते है, जैसे हम लोग फूल से पूजा करते है .

अगरचे गांधी जी वह चिट्ठी पढ़ नहीं सके, पर चिट्ठी पाकर उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई और वह उसका आनन्द लेते रहे. यह पूछने पर कि वह उस ख़त के पाने की रसीद देंगे और इसका जवाब पूज्यं भदन्त जी को देंगे, उन्होंने कहा—"ज़रूर मैं उन्हें चिट्ठी लिखूँगा पर वह इस

اتنا کہہ کر ہنستے ہوئے اُنھوں نے چٹھی کھولی اور کہا—"آپ نے سچ کہا تھا، یہ تو بھوٹ بھاشا میں لکھا ہوا ہے، کیا آپ اس کا ترجمہ میرے لئے کر سکتے ہیں ؟"

میں نے جواب دیا—"مجھے بھوٹ بھاشا نہیں آتی. لاسا میں رہتے سمے صرف بھوٹ اچھر ہی سیکھ سکا ہوں."

اس پر اُنھوں نے کہا—"تب تو اس چٹھی کی بات میں کبھی نہیں جان سکوں گا." ہم لوگ پھر ہنس پڑے.

چٹھی ایک لمبے سائز کے خاص ڈھنگ کے تبتی کاغذ پر لکھی ہوئی تھی اور اُس پر سندوری رنگ میں دو مُہریں لگی ہوئی تھیں. پہلی بڑی مہر سرکاری تھی اور دوسری چھوٹی ان کی نجی تھی. خط ایک سفید کپڑے میں لپٹا ہوا تھا، جسے تبتی بھاشا میں 'کھتگ' کہتے ہیں. یہ 'کھتگ' پریم، محبت اور عزت کو ظاہر کرتا ہے. تبت میں پہلی بار یا کسی خاص موقع پر لوگ ایک دوسرے سے ملتے ہیں تو اپنے 'کھتگ' کی لین دین کرتے ہیں. جیسے ہم لوگ ایک دوسرے کو اپنا پہچان کارڈ دیتے ہیں. تبت کے لوگ جب اپنے سے بڑے کا سواگت کرتے ہیں یا اُن کی سیوا میں حاضر ہوتے ہیں تو پہلے اپنا 'کھتگ' بھینٹ کرتے ہیں. جیسے ہم لوگ گلے میں مالا ڈالتے ہیں. وہ لوگ 'کھتگ' سے ٹھیک اسی طرح پوجا کرتے ہیں، جیسے ہم لوگ پھول سے پوجا کرتے ہیں.

اگرچہ گاندھی جی وہ چٹھی پڑھ نہیں سکے، پر چٹھی پاکر اُنھیں بڑی خوشی ہوئی اور وہ اُس کا آنند لیتے رہے. یہ پوچھنے پر کہ وہ اُس خط کے پانے کی رسید دیں گے اور اس کا جواب پوجیہ بھدنت جی کو دیں گے، اُنھوں نے کہا—"ضرور میں اُنھیں چٹھی لکھوں گا پر وہ اس

चिट्ठी का जवाब नहीं होगा, क्योंकि मैं नहीं जानता कि इसमें क्या लिखा है, चूँकि मैं तिब्बती भाषा नहीं जानता इसलिये गुजराती में लिखूँगा, ताकि वह भी मेरी चिट्ठी न पढ़ सकें और मेरी ही तरह सिर्फ़ चिट्ठी ही पाने का आनंद उठाते रहे."

इस पर मैंने कहा—"पर आप लोग एक दूसरे को बिना उनकी भाषा जाने हुए भी ज़रूर ही जानते होंगे क्योंकि भगवान बुद्ध ने कहा है कि सभी बुद्ध एक दूसरे को उनके बोल से नहीं, मन से समझते हैं. क्या आप इस बात से सहमत नहीं है ?"

उन्होंने मुसकराते हुए मेरी तरफ़ देखा. फिर हम लोग चीन और भारत इन दोनों देशों के बीच होने वाले धर्म और संस्कृति के सम्बंध, पिछले समय की गहरी दोस्ती और इस सम्बंध और दोस्ती को आज फिर क़ायम रखने के बारे मे बाते करते रहे. उन्होंने मुझे बताया कि वह चीनी संस्कृति और तहज़ीब की बड़ी क़द्र करते हैं और चीनी जनता से उन्हे बड़ा प्रेम है. जब वह दक्खिन अफ़्रीका मे थे तो वहाँ कितने ही चीनी उनके दोस्त थे और कितनों ने उनके सत्याग्रह आंदोलन मे हिस्सा भी लिया था. मैंने उन्हें बताया कि वह और गुरुदेव ही मौजूदा हिंदुस्तान के दो आदमी हैं, जिनकी इज़्ज़त चीनी लोग सबसे ज़्यादा करते हैं और जिनसे दिल से प्रेम करते हैं और दोनों को भगवान बुद्ध के देश के दो ज़िंदा बुद्ध समझते हैं. जिस तरह गुरुदेव ने सन् १९२४ में चीन की यात्रा की, चीनी जनता की बड़ी इच्छा है कि उसी तरह आप भी एक बार चीन की यात्रा करे.

چٹھی کا جواب نہیں ہوگا کیونکہ میں نہیں جانتا کہ اس میں کیا لکھا ہے چونکہ تبتی بھاشا نہیں جانتا اس سے گجراتی میں لکھوں گا تاکہ وہ بھی میری چٹھی نہ پڑھ سکیں اور میری ہی طرح صرف چٹھی ہی پانے کا انند اُٹھاتے رہیں۔"

اس پر میں نے کہا " پر آپ لوگ ایک دوسرے کو بنا ان کی بھاشا جانے ہوئے بھی ضرور ہی جانتے ہوں گے کیونکہ بھگوان بدھ نے کہا ہے کہ سبھی بدھ ایک دوسرے کو ان کے بول سے نہیں، من سے سمجھتے ہیں۔ کیا آپ اس بات سے سہمت نہیں ہیں؟"

انھوں نے مسکراتے ہوئے میری طرف دیکھا۔ پھر ہم لوگ چین اور بھارت ان دونوں دیشوں کے بیچ ہونے والے دھرم اور سنسکرتی کے سمبندھ، پچھلے سمے کی گہری دوستی اور اس سمبندھ اور دوستی کو آج پھر قائم رکھنے کے بارے میں باتیں کرتے رہے۔ انھوں نے مجھے بتایا کہ وہ چینی سنسکرتی اور تہذیب کی بڑی قدر کرتے ہیں اور چینی جنتا سے انھیں بڑا پریم ہے۔ جب وہ دکھنی افریقہ میں تھے تو وہاں کتنے ہی چینی ان کے دوست تھے اور کتنوں نے ان کے ستیہ گرہ آندولن میں حصہ بھی لیا تھا۔ میں نے انھیں بتایا کہ وہ اور گرودیو ہی موجودہ ہندستان کے دو آدمی ہیں، جن کی عزت چینی لوگ سب سے زیادہ کرتے ہیں اور جن سے دل سے پریم کرتے ہیں اور دونوں کو بھگوان بدھ کے دیش کے دو زندہ بدھ سمجھتے ہیں۔ جس طرح گرودیو نے ۱۹۲۴ء میں چین کی یاترا کی، چینی جنتا کی بڑی اچھا ہے کہ اسی طرح آپ بھی ایک بار چین کی یاترا کریں۔

یہ سن کر انھوں نے کہا " میں بھی اس مہان دیش کی یاترا

की मन से इच्छा रखता हूँ. लेकिन एक रुकावट हमेशा मेरा रास्ता रोके खड़ी है. वह रुकावट यह है कि जब तक हिंदुस्तान आज़ाद नहीं होता, मैं कहीं नहीं जा सकता. पर मैं चाहता हूँ और मैं आशा करता हूँ कि इस जन्म में ही कम-से-कम एक बार मैं आपके देश में जा सकूँगा."

मैंने कहा—"हाँ, आप ज़रूर जा सकेंगे, हिंदुस्तान जल्दी ही आज़ाद होगा. मैं दिल से आप के लम्बे जीवन की कामना करता हूँ."

बात चीत काफ़ी लम्बी हो चुकी थी, इसलिए मैंने और ज्यादा समय लेना ठीक नहीं समझा. उनसे बिदा लेते हुए मैंने नमस्कार किया.

उन्होंने कहा—"विदा और नमस्कार! क्या आप तुरंत जा रहे हैं और यहाँ कुछ दिनों तक नहीं ठहरेंगे?"

मैंने जवाब दिया—"हाँ मैं तो ठहर रहा हूँ."

इस पर उन्होंने मज़ाक़ करते हुए कहा—"तो फिर विदा होते वक़्त विदा कहियेगा और जाने के समय नमस्कार."

शाम को किसी दूर गाँव में एक आम सभा थी. गांधी जी ने देवदास जी के ज़रिये मेरे पास ख़बर भिजवाई कि मैं भी उनके साथ सभा में चलूँ. हम लोग आधा रास्ता पैदल और आधा मोटर से गये. क्योंकि गांधी जी रोज़ाना सुबह शाम पैदल टहलते थे. जिस गाँव में सभा थी वह कुछ दूर था और वह सारा रास्ता पैदल नहीं चल सकते थे. इसलिये आधे रास्ते में एक मोटर उन्हें

کی من سے اچھا رکھتا ہوں۔ لیکن ایک رکاوٹ ہمیشہ میرا راستہ روکے کھڑی ہے۔ وہ رکاوٹ یہ ہے کہ جب تک ہندوستان آزاد نہیں ہوتا، میں کہیں نہیں جا سکتا۔ پر میں چاہتا ہوں اور میں آشا کرتا ہوں کہ اس جنم میں ہی کم سے کم ایک بار میں آپ کے دیش میں جا سکوں گا۔"

میں نے کہا "ہاں، آپ ضرور جا سکیں گے، ہندوستان جلدی ہی آزاد ہوگا۔ میں دل سے آپ کے لمبے جیون کی کامنا کرتا ہوں۔"

بات چیت کافی لمبی ہو چکی تھی، اس لئے میں نے اور زیادہ سمے لینا ٹھیک نہیں سمجھا۔ ان سے ودا لیتے ہوئے میں نے نمسکار کیا۔"

انھوں نے کہا "ودا اور نمسکار! کیا آپ ترنت جا رہے ہیں اور یہاں کچھ دنوں تک نہیں ٹھہریں گے؟"

میں نے جواب دیا "ہاں میں تو ٹھہر رہا ہوں۔"

اس پر انھوں نے مذاق کرتے ہوئے کہا "تو پھر ودا ہوتے وقت ودا کہئے گا اور جانے کے سمے نمسکار۔"

شام کو کسی دور گاؤں میں ایک عام سبھا تھی۔ گاندھی جی نے دیوداس جی کے ذریعے میرے پاس خبر بھجوائی کہ میں بھی ان کے ساتھ سبھا میں چلوں۔ ہم لوگ آدھا راستہ پیدل اور آدھا موٹر سے گئے۔ کیونکہ گاندھی جی روزانہ صبح شام پیدل ٹہلتے تھے۔ جس گاؤں میں سبھا تھی وہ کچھ دور تھا اور وہ سارا راستہ پیدل نہیں چل سکتے تھے۔ اس لئے آدھے راستے میں ایک موٹر انھیں

इस तरह पूजा जाता है. मुझे फ़ौरन ही चीनी महात्मा मनसियस का क़ौल याद आया—'जो आदमी अपने अच्छे गुणों से लोगों पर असर डालता है, उसे लोग दिल से मानते हैं'. मुझे महान चीनी फ़िलास्फ़र लावच की बात भी याद आई—'कोई भी आदमी दूसरो के लिये जितना ज़्यादा करता है दूसरे भी उसके लिये उतना ही ज़्यादा करेंगे. जो आदमी जितना ही ज़्यादा दूसरों को देता है, दूसरे भी उसे उतना ही ज़्यादा देंगे'. दो हज़ार वर्षों से भी ज़्यादा पहले कहे गये चीनी महात्माओं के यह शब्द उस दिन मैंने गांधी जी के ज़रिये अमल में लाये जाते हुए देखा, सभा दो घटे तक चलती रही और हम लोग काफ़ी रात गये आश्रम लौटे.

दूसरा दिन गांधी जी का मौन यानी ख़ामोशी का दिन था. अगरचे उस दिन वह एकदम चुप रहे. लेकिन रोज़ की तरह अपने काम में लगे रहे. किसी बहुत ज़रूरी काम के कारण अचानक उनका प्रोग्राम बदल गया. उन्हें उसी दिन तीसरे पहर सूरत जाना पड़ा. इसलिये मैं भी बारदोली से चलने को तैयार हो गया. उस दिन सुबह मैं फिर उनसे मिला और चीन के विद्यार्थियों के नाम एक संदेश देने की दरख़्वास्त की. उन्होंने लिखकर मुझे जवाब दिया कि वह थोड़े ही दिनों के अन्दर मुझे संदेश और मेरे लाये हुए पूज्य दलाई लामा के ख़त का जवाब मेरे पास भेज देंगे. इसलिये उन्होंने मेरा कलकत्ते का पता ले लिया. उन्होंने मुझे भी अपने साथ ही तीसरे पहर की गाड़ी से चलने को कहा, क्योंकि सूरत में ही मुझे बम्बई के लिये गाड़ी बदलनी थी.

हम लोग पौने छै बजे शाम को बारदोली से चले और डेढ़

اس طرح پوجا جاتا ہے۔ مجھے فوراً ہی چینی مہاتما منسیس کا قول یاد آیا۔ جو آدمی اپنے اچھے گنوں سے لوگوں پر اثر ڈالتا ہے، اسے لوگ دل سے مانتے ہیں۔ مجھے مہان چینی فلاسفر لاوچ کی بات بھی یاد آئی۔ کوئی بھی آدمی دوسروں کے لئے جتنا زیادہ کرتا ہے دوسرے بھی اس کے لئے اتنا ہی زیادہ کریں گے۔ جو آدمی جتنا ہی زیادہ دوسروں کو دیتا ہے، دوسرے بھی اُسے اتنا ہی زیادہ دیں گے۔ دو ہزار برسوں سے بھی زیادہ پہلے کہے گئے چینی مہاتماؤں کے یہ شبد اُس دن میں نے گاندھی جی کے ذریعے عمل میں لائے جاتے ہوئے دیکھا۔ سبھا دو گھنٹے تک چلتی رہی اور ہم لوگ کافی رات گئے آشرم لوٹے۔

دوسرا دن گاندھی جی کا مون یعنی خاموشی کا دن تھا۔ اگرچہ اُس دن وہ ایک دم چپ رہے۔ لیکن روز کی طرح اپنے کام میں لگے رہے۔ کسی بہت ضروری کام کے کارن اچانک ان کا پروگرام بدل گیا۔ انھیں اُسی دن تیسرے پہر سورت جانا پڑا۔ اس لئے میں بھی باردولی سے چلنے کو تیار ہو گیا۔ اس دن صبح میں پھر اُن سے ملا اور چین کے ودیارتھیوں کے نام ایک سندیش دینے کی درخواست کی۔ انھوں نے لکھ کر مجھے جواب دیا کہ وہ تھوڑے ہی دنوں کے اندر مجھے سندیش اور میرے لائے ہوئے پوجیہ دلائی لاما کے خط کا جواب میرے پاس بھیج دیں گے۔ اس لئے انھوں نے میرا کلکتہ کا پتہ لے لیا۔ انھوں نے مجھے بھی اپنے ساتھ ہی تیسرے پہر کی گاڑی سے چلنے کو کہا، کیونکہ سورت میں ہی مجھے بمبئی کیلئے گاڑی بدلنی تھی۔

ہم لوگ پونے چھ بجے شام کو باردولی سے چلے اور ڈیڑھ

घंटे के अन्दर ही सूरत पहुंच गये. स्टेशन पर तो हज़ारों की भीड़ पहले से ही इकट्ठी हो गई थी. गांधी जी के पहुंचते ही लोगों ने नारा लगाया. वहाँ के कांग्रेस के नेता गाँधी जी के स्वागत के लिये स्टेशन पर आये हुए थे. गाँधी जी तब तक भी अपने मौन व्रत में ही थे. उन्होंने जनता के नारे और नेताओं के स्वागत का जवाब मुस्कराते हुए और दोनों हाथ जोड़ कर दिया. मैंने गांधी जी से उसी समय विदा लेनी चाही पर गांधी जी के स्वागत मे आये हुए दोस्तों ने बड़े प्रेम से मुझे भी गांधी जी के साथ अपने स्थान तक कुछ वक़्त के लिये चलने पर ज़ोर दिया. चूंकि बम्बई को जाने वाली गाड़ी मे भी अभी काफ़ी देर थी इस लिये मै भी उनके साथ चला गया. स्टेशन पर दर्शन करने वालो की इतनी भीड़ थी कि हम लोग मुशकिल से बाहर निकल सके.

मैं उन लोगों के साथ क़रीब दो घंटे तक रहा और रात का भोजन भी वहीं किया उसके बाद देवदास जी और दूसरे दो दोस्त मुझे पुराना सूरत नगर घुमाने ले गये और स्टेशन तक मेरे साथ आये. सूरत से रवाना होने के पहले मैंने फिर गांधी जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए सलाम किया और उनसे पूछा—"क्या अब मैं आप से विदा माँग सकता हूँ और नमस्कार कर सकता हूँ ?" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया, सिर हिलाया और मुस्कराते हुये मेरी तरफ़ ठीक उसी तरह देखा जैसे एक बाप अपने बेटे की तरफ़ देखता है. मुझ पर उनकी उन प्रेम और दर्द भरी निगाहों का इतना असर हुआ कि मैं रो पड़ा और उदास मन से वहाँ से विदा हुआ. वहाँ और जो दोस्त थे उन सब ने भी एक आवाज़ से कहा—

گھنٹے کے اندر ہی سورت پہونچ گئے۔ اسٹیشن پر تو ہزاروں کی بھیڑ پہلے سے ہی اکٹھی ہو گئی تھی۔ گاندھی جی کے پہونچتے ہی لوگوں نے نعرہ لگایا۔ وہاں کے کانگریس کے نیتا گاندھی جی کے سواگت کے لئے اسٹیشن پر آئے ہوئے تھے۔ گاندھی جی تب تک بھی اپنے مون برت میں ہی تھے۔ انھوں نے جنتا کے نعرے اور نیتاؤں کے سواگت کا جواب مسکراتے ہوئے اور دونوں ہاتھ جوڑ کر دیا۔ میں نے گاندھی جی سے اسی سمے ودا لینی چاہی پر گاندھی جی کے سواگت میں آئے ہوئے دوستوں نے بڑے پریم سے مجھے بھی گاندھی جی کے ساتھ اپنے استھان تک کچھ وقت کے لئے چلنے پر زور دیا۔ چونکہ بمبئی کو جانے والی گاڑی میں بھی ابھی کافی دیر تھی اس لئے میں بھی ان کے ساتھ چلا گیا۔ اسٹیشن پر درشن کرنے والوں کی اتنی بھیڑ تھی کہ ہم لوگ مشکل سے باہر نکل سکے۔

میں ان لوگوں کے ساتھ قریب دو گھنٹے تک رہا اور رات کا بھوجن بھی وہیں کیا اس کے بعد دیوداس جی اور دوسرے دو دوست مجھے پرانا سورت نگر گھمانے لے گئے اور اسٹیشن تک میرے ساتھ آئے۔ سورت سے روانہ ہونے کے پہلے میں نے پھر گاندھی جی کو اپنی شردھانجلی بھینٹ کرتے ہوئے سلام کیا اور ان سے پوچھا "کیا اب میں آپ سے ودا مانگ سکتا ہوں اور نمسکار کر سکتا ہوں؟" انھوں نے میرا ہاتھ پکڑ لیا، سر ہلایا اور مسکراتے ہوئے میری طرف ٹھیک اسی طرح دیکھا جیسے ایک باپ اپنے بیٹے کی طرف دیکھتا ہے۔ مجھ پر ان کی ان پریم اور درد بھری نگاہوں کا اتنا اثر ہوا کہ میں رو پڑا اور اداس من سے وہاں سے بدا ہوا۔ وہاں اور جو دوست تھے ان سب نے بھی ایک آواز سے کہا۔

"आप फिर लौट कर जरूर आईयेगा". और फिर मैंने दूसरे सब लोगों से भी बिदा ली.

बम्बई और मद्रास होता हुआ मैं ६ मई सन् १९३१ को कलकत्ता पहुँचा. मेरे कलकत्ता पहुँचने के पहले ही चीन के विद्यार्थियों के नाम गाँधी जी का संदेश और पूज्य दलाई लामा के खत का जवाब दोनों ही मेरे कलकत्ते के पते पर पहुँच चुके थे. जैसा कि गांधी जी ने बारदोली में मुझसे कहा था. पूज्य दलाई लामा के खत का जवाब उन्होंने गुजराती में अपने हाथ से लिखा था, पर चीनी विद्यार्थियों के नाम उनका संदेश अंग्रेजी में था. उसे भी उन्होंने अपने हाथ से ही लिखा था. वह मेरे नाम एक खत के रूप में लिखा गया था. पूज्य दलाई लामा के नाम उनका खत मैंने डाक से भेज दिया और वह संदेश मैं अपने साथ चीन ले आया. चीन में वह संदेश वहाँ के सभी बड़े बड़े चीनी अखबारों में छपा और सिर्फ चीन के विद्यार्थी समाज में ही नहीं, बल्कि मेरे देश की सारी जनता ने उसका स्वागत किया. यह उनका चीन के नाम पहला संदेश था. संदेश इस तरह था:—

"प्यारे भाई,

आपका जब कभी जी चाहे फिर कभी आईयेगा. चीन के नाम मेरा यह संदेश है—'इस बात को जानिये कि चीन का उद्धार बिलकुल शुद्ध और पवित्र अहिंसा के जरिये ही होगा !

आपका हित चाहने वाला

साबरमती—४-५-३१   मो० क० गांधी

"آپ پھر لوٹ کر ضرور آیئے گا"۔ اور پھر میں نے دوسرے سب لوگوں سے بھی وِدا لی۔

بمبئی اور مدراس ہوتا ہوا میں ۶ مئی ۱۹۳۱ کو کلکتہ پہونچا۔ میرے کلکتہ پہونچنے کے پہلے ہی چین کے ودیارتھیوں کے نام گاندھی جی کا سندیش اور پوجیہ دلائی لاما کے خط کا جواب دونوں ہی میرے کلکتہ کے پتے پر پہنچ چکے تھے جیسا کہ گاندھی جی نے مجھ سے باردولی میں کہا تھا۔ پوجیہ دلائی لاما کے خط کا جواب انھوں نے گجراتی میں اپنے ہاتھ سے لکھا تھا، پر چینی ودیارتھیوں کے نام ان کا سندیش انگریزی میں تھا۔ اسے بھی انھوں نے اپنے ہاتھ سے ہی لکھا تھا۔ وہ میرے نام ایک خط کے روپ میں لکھا گیا تھا۔ پوجیہ دلائی لاما کے نام ان کا خط میں نے ڈاک سے بھیج دیا اور وہ سندیش میں اپنے ساتھ چین لے آیا۔ چین میں وہ سندیش وہاں کے سبھی بڑے بڑے چینی اخباروں میں چھپا اور صرف چین کے ودیارتھی سماج میں ہی نہیں، بلکہ میرے دیش کی ساری جنتا نے اس کا سواگت کیا۔ یہ ان کا چین کے نام پہلا سندیش تھا۔ سندیش اس طرح تھا:—

"پیارے بھائی،

آپ کا جب کبھی جی چاہے پھر کبھی آیئے گا۔ چین کے نام میرا یہ سندیش ہے۔ "اس بات کو جانئے کہ چین کا ادھار بالکل شدھ اور پوتر اہنسا کے ذریعے ہی ہوگا!

آپکا ہت چاہنے والا۔
مو۔ ک۔ گاندھی

ساورمتی - ۴ - ۵ - ۳۱

यह सिर्फ़ गांधी जी से मेरी पहली मुलाक़ात की सुखद यादगार ही नहीं, बल्कि चीन और हिंदुस्तान इन दो महान देशों के बीच की लम्बी, महान और गहरी दोस्ती को भी जाहिर करने वाली है, जो दो हज़ार साल पहले क़ायम हुई थी और आगे भी बराबर बनी रहेगी

खेत राजा

(स्वर्गीय बुद्धि भद्र दीक्षित)

जाग जाग मोरे खेत राजा,
अब काहे मुरझाने ?
तुइ दुखिया किसान की आसा,
तुइ पलटइ जीवन का पासा,
काहे मन सकुचाने ?
अब काहे मुरझाने ?
जाग जाग तुइ सब दुख हरले
सुख सम्पत से मोरा भर दे,
तुम्हरी सरन लुकाने
जाग मोरे खेत राजा राजा
अब काहे मुरझाने

یہ صرف گاندھی جی سے میری پہلی ملاقات کی سُکھد یادگار ہی نہیں، بلکہ چین اور ہندوستان اِن دو مہان دیشوں کے بیچ کی لمبی، مہان اور گہری دوستی کو بھی ظاہر کرنے والی ہے، جو دو ہزار سال پہلے قائم ہوئی تھی اور آگے بھی برابر بنی رہے گی۔

کھیت راجا

(سرگیہ بدھی بھدر ڈکشت)

جاگ جاگ مورے کھیت راجا،
اب کاہے مرجھانے؟
توئی دُکھیا کسان کی آشا،
توئی پلٹے جیون کا پاسا،
کاہے من سکچانے؟
اب کاہے مرجھانے؟
جاگ جاگ توئی سب دُکھ ہر لے
سُکھ سمپت سے مورا بھر دے،
تمہری سرن لکانے
جاگ مورے کھیت راجا راجا
اب کاہے مرجھانے

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

[भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी]

१५

अमृत सेन और उनके वंशधर

अमीर खुसरो ने सितार की ईजाद तो करदी थी पर मुहम्मद शाह रँगीले के जमाने तक सितार तबला और उसी के साथ ख्याल की गायकी को वह इज्जत न मिल सकी जो यंत्र मे बीन, रबाब और मृदंग (पखावज) को और गाने मे ध्रुपद, धमार या अलापचारी को हासिल थी. इनके मुक़ाबले मे सितार, तबला वग़ैरा बहुत नीचे दर्जे की चीजें समझी जाती थीं और इनके कलावंत गुनियो की मजलिस मे हिक़ारत की निगाह से देखे जाते थे. बड़े जलसो में किसी को सितार, तबला छूने की हिम्मत नही हो सकती थी. जो लोग इन बाजो मे किसी हद तक महारत भी हासिल कर लेते थे वह अपने घरो मे या किसी ख़ास शौक़ीन के यहाँ लुक छिप कर मुजरे कर लिया करते थे और शागिर्दो को तालीम दे दिया करते थे. पर सितार दबने वाली चीज नही थी. एक दिन उसे आगे आना था, सब को पीछे छोड़कर. और इस के लिये जरूरत थी किसी महान सितारिये की जो खुले आम बड़े से बड़े बीनकार (वीणा वादक) या रबाबिये को चुनौती दे सके. जयपुर के अमृत सेन एक ऐसे ही सितारिये हुए

ہندوستانی کلچر اور سنگیت

[بھائی گنیش پرشاد دویدی]

۱۵

امرت سین اور ان کے ونشدھر

امیر خسرو نے ستار کی ایجاد تو کر دی تھی پر محمد شاہ رنگیلے کے زمانے تک ستار طبلہ اور اُسی کے ساتھ خیال کی گائکی کو وہ عزت نہ مل سکی جو ینتر میں بین، رباب اور مردنگ (پکھاوج) کو اور گانے میں دھرپد، دھمار یا الاپ چاری کو حاصل تھی۔ اُن کے مقابلے میں ستار، طبلہ وغیرہ بہت نیچے درجے کی چیزیں سمجھی جاتی تھیں اور اِن کے کلاونت گنیوں کی مجلس میں حقارت کی نگاہ سے دیکھے جاتے تھے۔ بڑے جلسوں میں کسی کو ستار، طبلہ چھونے کی ہمت نہیں ہو سکتی تھی۔ جو لوگ ان باجوں میں کسی حد تک مہارت بھی حاصل کر لیتے تھے وہ اپنے گھروں میں یا کسی خاص شوقین کے یہاں لک چھپ کر مجرے کر لیا کرتے تھے اور شاگردوں کو تعلیم دے دیا کرتے تھے۔ پر ستار دبنے والی چیز نہیں تھی۔ ایک دن اُسے آگے آنا تھا، سب کو پیچھے چھوڑ کر اور اس کے لئے ضرورت تھی کسی مہان ستاریہ کی جو کھلے عام بڑے سے بڑے بین کار (وینا وادک) یا ربابیے کو چنوتی دے سکے۔ جے پور کے امرت سین ایک ایسے ہی ستاریہ ہوئے۔

यों तो सुरत सेन के बाद से ही इनके वंशधर सितार की तरक्की करते चले गये. पर बीनकार और रबाबी घराने की कुछ ऐसी धाक जमी हुई थी कि जयपुर के सितारियों को कोई पूछता ही नहीं था. पर इन्हे इस की रत्ती भर भी परवाह न थी, यह सितार के पीछे ऐसे पड़े कि दीन दुन्या को भूल कर उसी की तरक्की मे जुटे रहे. कोई क़द्र करे या न करे यह अपना काम करते चले गये. इनको इस बात का पूरा यक़ीन था कि एक दिन सितार की क़द्र होगी और बीन व रबाब दोनों से आगे यह निकल जायगा. ख़ानदानी तो यह थे ही. इस बात से कौन इनकार कर सकता था कि सदारंग वग़ैरा की तरह वह भी तानसेन की औलाद थे और सेनिये कहलाते थे. बल्कि 'सेनिये' इस नाम से सबसे ज्यादा शोहरत जयपुर वालों की ही हुई. या यों कहिये कि 'सेनिये' सिर्फ जयपुर वाले ही कहे जाते थे. दिल्ली या रामपुर वाले नहीं. यों तानसेन के सभी वंशज 'सेनी' या 'सेनिये' कहे जा सकते हैं, पर ख़ास तौर से यह नाम जयपुर वालो ने ही अपनाया रबाबी या बीनकार घराने मे बहुत कम लोगों के साथ हम 'सेन' पदवी लगी हुई देखते है. उनके नाम ज्यादा तर 'ख़ान' पदवी के साथ हैं जैसे-बासित ख़ॉं, छज्जूखॉं, जफ़रखां, मुहम्मद अली ख़ां, या नेमत खां, वज़ीर खां, उमराव खॉं, वग़ैरा. पर जयपुर वाले सभो ने 'सेन' पदवी अपने असली नमो के साथ जोडी. और इनके ज्यादातर नाम हिंदू नामो की तरह हैं जैसे—अमृत सेन निहाल सेन वग़ैरा, या तो ऐसे नाम हैं जो हिंदू मुसलमान दोनो मे ही पाये जाते हैं, जैसे अमीर सेन, करीम सेन, नवाब सेन वग़ैरा. यह उस जमाने के हिंदू-मुसलमानो के आपसी मेल जोल और

یوں تو سورت سین کے بعد سے ہی ان کے ونش دھر ستار کی ترقی کرتے چلے گئے۔ پر بین کار اور ربابی گھرانے کی کچھ ایسی دھاک جمی ہوئی تھی کہ جے پور کے ستاریوں کو کوئی پوچھتا ہی نہیں تھا۔ پر انھیں اس کی رتی بھر بھی پرواہ نہ تھی، یہ ستار کے پیچھے ایسے پڑے کہ دین دنیا کو بھول کر اسی کی ترقی میں جٹے رہے۔ کوئی قدر کرے یا نہ کرے۔ یہ اپنا کام کرتے چلے گئے۔ ان کو اس بات کا پورا یقین تھا کہ ایک دن ستار کی قدر ہوگی اور بین ورباب دونوں سے آگے یہ نکل جائے گا۔ خاندانی تو یہ تھے ہی۔ اس بات سے کون انکار کر سکتا تھا کہ سدا رنگ وغیرہ کی طرح وہ بھی تان سین کی اولاد تھے اور سینئے کہلاتے تھے۔ بلکہ سینئے اس نام سے سب سے زیادہ شہرت جے پور والوں کی ہی ہوئی۔ یا یوں کہئے کہ سینئے صرف جے پور والے ہی کہے جاتے تھے، دلی یا رام پور والے نہیں۔ یوں تان سین کے سبھی ونشج سینی یا سینئے کہے جا سکتے ہیں۔ پر خاص طور سے یہ نام جے پور والوں نے ہی اپنایا۔ ربابی یا بین کار گھرانے میں بہت کم لوگوں کے ساتھ ہم سین پدوی لگی ہوئی دیکھتے ہیں۔ ان کے نام زیادہ تر خاں پدوی کے ساتھ ہیں جیسے باسط خاں، چھجو خاں، ظفر خاں، محمد علی خاں، یا نعمت خاں، وزیر خاں، امراؤ خاں وغیرہ۔ پر جے پور والے سبھوں نے سین پدوی اپنے اصلی ناموں کے ساتھ جوڑی اور ان کے زیادہ تر نام ہندو ناموں کی طرح ہیں جیسے۔ امرت سین، نہال سین وغیرہ۔ یا تو ایسے نام ہیں جو ہندو مسلمان دونوں میں ہی پائے جاتے ہیں، جیسے امیر سین، کریم سین، نواب سین وغیرہ۔ یہ اس زمانے کی ہندو مسلمانوں کے آپسی میل جول اور

घुली मिली संस्कृति या कलचर की बेजोड़ मिसाल है.

हम यह भी देखते हैं, कि अंगरेजों के आने के बाद से, खास कर जयपुर जोधपुर वगैरा राजस्थानी रियासतों में जबसे अंगरेजी अफ़सरों और पालीटिकल एजेंटों का बोल बाला हो चला तब से इधर भी हवा में जहर फैलने लगा. न मालूम कहाँ से और कैसे यह सेनिये भी समझने लगे कि हिन्दू और मुसलमान दो जुदा कौमें हैं और वही 'सेन' यकायक 'हुसेन' में बदल दिया गया. कुछ नाम ऐसे भी मिलते हैं जो 'सेन' और 'हुसेन' दोनों तरह से मशहूर हैं. जैसे बहादुर सेन और बहादुर हुसेन या फ़िदा सेन और फ़िदा हुसेन वगैरा. बहादुर सेन एक बहुत बड़े संगीत नायक हो गये हैं और इनकी रची हुई तोड़ी की एक किस्म 'बहादुरी तोड़ी' नाम से मशहूर है जो कि सचमुच तोड़ी का एक बड़ा सुन्दर रूप है. फ़िदा सेन या हुसेन आख़िरी सेनिये थे जिनके दर्शन हम यहाँ इलाहाबाद की म्यूज़िक कानफरेंसों में दो, तीन बार कर चुके हैं (सन १९३३).

हम यह भी साफ देख सकते हैं कि नामों में यह कट्टर साम्प्रदायिकता या फ़िरके बंदी का भाव शुरू में कम से कम था. अकबर के ज़माने से तो हमारा यह इतिहास शुरू ही होता है. तब से लेकर मुहम्मद शाह रंगीले, बल्कि बहादुरशाह (आख़री मुग़ल बादशाह) के ज़माने तक के नाम ऐसे ही मिलते हैं जो घुली मिली संस्कृति और एक क़ौमियत का परिचय देते हैं. बल्कि ज्यादातर नाम ऐसे ही मिलते हैं जिनसे यह जानना मुश्किल है कि आया यह नाम हिंदू का है कि मुसलमान का. जैसे—मोह सेन, महा सेन, तरंग सेन

گھلی ملی سنسکرتی یا کلچر کی بے جوڑ مثال ہے۔

ہم یہ بھی دیکھتے ہیں کہ انگریزوں کے آنے کے بعد سے خاص کر جے پور جودھپور وغیرہ راجستھانی ریاستوں میں جب سے انگریزی افسروں اور پولیٹیکل ایجنٹوں کا بول بالا ہو چلا تب سے ادھر بھی ہوا میں زہر پھیلنے لگا۔ نہ معلوم کہاں سے اور کیسے یہ سینئے بھی سمجھنے لگے کہ ہندو اور مسلمان دو جدا قومیں ہیں اور وہی 'سین' یکایک 'حسین' میں بدل دیا گیا۔ کچھ نام ایسے بھی ملتے ہیں جو 'سین' اور 'حسین' دونوں طرح سے مشہور ہیں۔ جیسے بہادر سین اور بہادر حسین یا فدا سین اور فدا حسین وغیرہ۔ بہادر سین ایک بہت بڑے سنگیت نائک ہو گئے ہیں اور ان کی رچی ہوئی توڑی کی ایک قسم 'بہادری توڑی' نام سے مشہور ہے جو کہ سچ مچ توڑی کا ایک بڑا سندر روپ ہے۔ فدا سین یا حسین آخری سینئے تھے جن کے درشن ہم یہاں الہ آباد کی میوزک کانفرنسوں میں دو تین بار کر چکے ہیں۔ (سنہ ۱۹۳۳)

ہم یہ بھی صاف دیکھ سکتے ہیں کہ ناموں میں یہ کٹر سامپردائکتا یا فرقہ بندی کا بھاؤ شروع میں کم سے کم تھا۔ اکبر کے زمانے سے تو ہمارا یہ اتہاس شروع ہی ہوتا ہے۔ تب سے لے کر محمد شاہ رنگیلے، بلکہ بہادر شاہ (آخری مغل بادشاہ) کے زمانے تک کے نام ایسے ہی ملتے ہیں جو گھلی ملی سنسکرتی اور ایک قومیت کا پریچے دیتے ہیں، بلکہ زیادہ تر نام ایسے ہی ملتے ہیں جن سے یہ جاننا مشکل ہے کہ آیا یہ نام ہندو کا ہے کہ مسلمان کا جیسے۔ موہ سین، مہا سین، ترنگ سین۔

सूरत सेन, शरत् सेन. वग़ैरा. फिर जब से 'ख़ाँ' की पदवी जोड़नी किसी हद तक लाज़मी मानी जाने लगी तब भी असली नाम हिंदुओं का सा ही रहा या ऐसा रहा जो किसी का भी हो सकता था— जैसे गुलाब ख़ाँ, ज्ञान ख़ाँ, प्यार ख़ाँ, बाबू ख़ाँ. तानरस ख़ाँ, छज्जू ख़ाँ, वग़ैरा. इस से यह तो साफ़ ही है कि नामों से अपनी क़ौमियत अलग करके दिखलाना यह अच्छा नहीं समझते थे. जैसा कि देश की बदक़िस्मती से आगे चल कर समझा जाने लगा. तानसेन के चार बेटों में से तीन के नाम के अंत में 'सेन' पदवी लगी हुई है. सिर्फ़ बिलास ख़ाँ एक थे जिनके नाम के साथ 'ख़ाँ' लगा हुआ है. और तानसेन का मशहूर रबाबी घराना बिलास ख़ाँ की औलाद से ही चला. इसी से इनके वंश के लगभग सभी उस्तादों के नामों के साथ 'ख़ाँ' पदवी लगी हुई हम देखते हैं.

जिस तरह सिलसिलेवार इतिहास हमें बीनकार और रबाबी घराने का मिलता है वैसा सितारियों का नहीं मिलता. इस का हमें बड़ा दुख है कुल चार या पाँच उस्तादों का ही हाल मिलता है. जो कि बहुत मशहूर हुए हैं. इस की एक ख़ास वजह है रबाबियों और बीनकारों के मुक़ाबले में जयपुर के सेनी सितारिये सदियों तक दबे से रहे. न तो वह ख़ुद दरबारों में या आम जलसों में शरीक होने की परवाह करते थे और न किसी बाहरवाले को इन को मशहूर करने या इन का नाम और प्रचार करने की हिम्मत होती थी. बीन या रबाब के मुक़ाबले में सितार की चर्चा तक करना पाप समझा जाता था.

पर जयपुर वाले इस हालत से निरुत्साह या नाउम्मीद नहीं

سورت سین، شرت سین، وغیرہ۔ پھر جب سے 'خاں' کی پدوی جوڑنی کسی حد تک لازمی مانی جانے لگی۔ تب بھی اصلی نام ہندوؤں کا سا ہی رہا یا ایسا رہا جو کسی کا بھی ہو سکتا تھا۔ جیسے گلاب خاں گیان خان، پیار خاں، بابو خاں، تان رس خاں، چھجو خاں وغیرہ۔ اس سے یہ تو صاف ہی ہے کہ ناموں سے اپنی قومیت الگ کرکے دکھلانا یہ اچھا نہیں سمجھتے تھے۔ جیسا کہ دیش کی بدقسمتی سے آگے چل کر سمجھا جانے لگا۔ تان سین کے چار بیٹوں میں سے تین کے نام کے انت میں 'سین' پدوی لگی ہوئی ہے۔ صرف بلاس خاں ایک تھے جن کے نام کے ساتھ خاں لگا ہوا ہے اور تان سین کا مشہور ربابی گھرانا بلاس خاں کی اولاد سے ہی چلا۔ اسی سے ان کے بنش کے لگ بھگ سبھی استادوں کے ناموں کے ساتھ 'خاں' پدوی لگی ہوئی ہم دیکھتے ہیں۔

جس طرح سلسلے وار اتہاس ہمیں بین کار اور ربابی گھرانے کا ملتا ہے ویسا ستاریوں کا نہیں ملتا۔ اس کا ہمیں بڑا دکھ ہے۔ کل چار یا پانچ استادوں کا ہی حال ملتا ہے جو کہ بہت مشہور ہوئے ہیں۔ اس کی ایک خاص وجہ ہے۔ ربابیوں اور بین کاروں کے مقابلے میں جے پور کے سینی ستارئے صدیوں تک دبے سے رہے۔ نہ تو وہ خود درباروں میں یا عام جلسوں میں شریک ہونے کی پرواہ کرتے تھے اور نہ کسی باہر والے کو ان کو مشہور کرنے یا ان کا نام اور پرچار کرنے کی ہمت ہوتی تھی۔ بین یا رباب کے مقابلے میں ستار کی چرچا تک کرنا پاپ سمجھا جاتا تھا۔

پر جے پور والے اس حالت سے نروتساہ یا ناامید نہیں

हुए. इनमे से कुछ मशहूर आलापिये, धुरपदिये और बीनकार भी हुए. अमीर सेन या अमीर ख़ाँ को सितार और बीन दोनो पर एक सा कमाल हासिल था, और इनको सुने हुए या इनसे सीखे हुए कुछ लोग अभी भी मौजूद हैं. सब से पहला बड़ा नाम जो इस घराने मे हमे मिलता है वह अमृत सेन का है. असल में मौजूदा सितार और उसके 'बाज' (बजाने का तरीका या 'टेकनीक') की ईजाद करने वाले पहले गुनी यही थे.

अमीर ख़ुसरो ने जिस सितार की ईजाद की थी वह सदियों तक मुर्दे की सी हालत मे पड़ा रहा. इस मे तीन ही तार चढ़ते थे जैसा कि पहले कहा जा चुका है. अमृत सेन को यह राग रागिनियों के पूरे आलाप और गतकारी के लिये बहुत अधूरा जान पड़ा और उन्होंने तीन तार और बढ़ाये. इनके मिलाने मे भी काफी रद्दोबदल की. पहला तार यानी 'नायकी' या अग्गल. मध्यम में मिलता था और पक्के लोहे का तार होता था. इसके बाद के दो तार पीतल के होते थे जो सुर या खरज में मिलते थे. इनको 'जोड़ी' कहा गया. चौथा तार मोटा और पीतल का होता है जो मंद्र पंचम मे मिलता है और इसके बाद वाला लोहे का होता है जो पंचम मे मिलता है. इस तरह से चौथे और पाँचवें तार को पंचम की 'जोड़ी' कह सकते हैं. फ़र्क़ इतना ही है कि एक मंद्र मे मिलता है और दूसरा मध्य सप्तक में. छटा यानी आख़िरी तार सप्तक के सुर में मिलता है और यह सिर्फ़ छेड़ और झाले के काम में आता है. इसे चिकारी कहते हैं. शुरू के चारों तार पर आलाप का काम होता है, और

ہوئے ان میں سے کچھ مشہور الاپئے، دھرپدئے اور بین کار بھی ہوئے امیر سین، یا امیر خاں کو ستار اور بین دونوں پر ایک سا کمال حاصل تھا اور ان کو سنے ہوئے یا ان سے سیکھے ہوئے کچھ لوگ ابھی بھی موجود ہیں۔ سب سے پہلا بڑا نام جو اس گھرانے میں ہمیں ملتا ہے وہ امرت سین کا ہے۔ اصل میں موجودہ ستار اور اس کے باج (بجانے کا طریقہ یا ٹکنیک) کی ایجاد کرنے والے پہلے گنی یہی تھے۔

امیر خسرو نے جس ستار کی ایجاد کی تھی وہ صدیوں تک مردے کی سی حالت میں پڑا رہا۔ اس میں تین ہی تار چڑھتے تھے جیسا کہ پہلے کہا جا چکا ہے۔ امرت سین کو یہ راگ راگنیوں کے پورے الاپ اور گت کاری کے لئے بہت ادھورا جان پڑا اور انھوں نے تین تار اور بڑھائے ان کے ملانے میں بھی کافی رد و بدل کی۔ پہلا تار یعنی نائکی یا اگل، مدھم میں ملتا تھا اور پکے لوہے کا تار ہوتا تھا۔ اس کے بعد کے دو تار پیتل کے ہوا کرتے تھے جو سر یا کھرج میں ملتے تھے۔ ان کو جوڑی کہا گیا۔ چوتھا تار موٹا اور پیتل کا ہوتا ہے جو مندر پنچم میں ملتا ہے اور اسکے بعد والا لوہے کا ہوتا ہے جو پنچم میں ملتا ہے۔ اس طرح چوتھے اور پانچویں تار کو پنچم کی جوڑی کہہ سکتے ہیں۔ فرق اتنا ہی ہے کہ ایک مندر میں ملتا ہے اور دوسرا مدھیہ سپتک میں۔ یہ چھٹا یعنی آخری تار سپتک کے سر میں ملتا ہے۔ اور یہ صرف چھیڑ اور جھالے کے کام میں آتا ہے۔ اسے چکاری کہتے ہیں۔ شروع کے چار دل تار پر الاپ کا کام ہوتا ہے اور اتی مندر

ज्यादा तर काम 'नायकी' पर, यानी पहले तार पर ही होता है.

इस वक्त सितार मे आम तौर पर सात तार चढ़ते हैं, पर इसमे कोई नयापन नहीं है. सिर्फ चिकारी एक की जगह दो कर दी गई है, जब कि सुर और पंचम की जोड़ियां हैं तो चिकारी की भी जोड़ी रहे जिस से झाला और छेड़ जोरदार बोले. बस यही मतलब था.

ध्यान से देखने पर मालूम होगा कि बीन व रबाब दोनो से अमृतसेन के छ: तार वाले सितार पर काम ज्यादा हो सकता है. वीणा (बीन) और रबाब में चार ही तार या रोदे (रबाब मे) चढ़ते है और सप्तको का काम इतना नहीं हो सकता जितना कि सितार पर. सितार पर पूरे साढ़े तीन सप्तक या यदि बड़ा सितार हुआ तो अति मंद्र सप्तक पूरा, और तार सप्तक भी पूरा बज सकता है. बड़े सितार मे सुर की जोड़ी एक ही रहती है और इस के बदले मंद्र मध्यम का एक मोटा पीतल या तॉबे का तार बढ़ा दिया जाता है जिस पर मंद्र सप्तक पूरा निकल आता है, आलाप मे फिर मींड से तार सप्तक के निषाद तक लाया जा सकता है.

मींड की गुंजायश जितनी सितार पर हो सकती है उतनी बीन पर नहीं. बीन की डांड गोल और पतली होती है. और सितार की चिपटी और चौड़ी. सुर यानी मध्य खरज से तार खरज तक पूरे सात आवाजो के सुर मींड़ से निकल सकते हैं बड़े सितार में, पर बीन में इतनी जगह ही नहीं है. मसलन अच्छा सितारिया एक पर्दे पर से 'स' से 'सं' तक पूरे एक सप्तक का काम कर सकता है, जो कि और किसी भी तंत्र पर नहीं हो सकता. रबाब, सरोद या

زیادہ تر کام 'نائکی' پر یعنی پہلے تار پر ہی ہوتا ہے۔

اس وقت ستار میں عام طور پر سات تار چڑھتے ہیں، پر اس میں کوئی نیا پن نہیں ہے۔ صرف چکاری ایک کی جگہ دو کر دی گئی ہے، جب کہ سُر اور پنچم کی جوڑیاں ہیں تو چکاری کی بھی جوڑی رہے جس سے جھالا اور چھیڑ زوردار بولے، بس یہی مطلب تھا۔

دھیان سے دیکھنے پر معلوم ہوگا کہ بین و رباب دونوں سے امرت سین کے چھ تار والے ستار پر کام زیادہ ہو سکتا ہے۔ وینا (بین) اور رباب میں چار ہی تار یا رودے (رباب میں) چڑھتے ہیں اور سپتکوں کا کام اتنا نہیں ہو سکتا جتنا کہ ستار پر۔ ستار پر پورے ساڑھے تین سپتک یا بڑا ستار ہوا تو اتی مندر سپتک پورا اور تار سپتک بھی پورا بج سکتا ہے۔ بڑے ستار میں سُر کی جوڑی ایک ہی رہتی ہے اور اس کے بدلے مندر مدھیم کا ایک موٹا پیتل یا تانبے کا تار بڑھا دیا جاتا ہے جس پر مندر سپتک پورا نکل آتا ہے، الاپ میں پھر میڑ سے تار سپتک کے نشاد تک لایا جا سکتا ہے۔

میڑ کی گنجائش جتنی ستار پر ہو سکتی ہے اتنی بین پر نہیں۔ بین کی ڈانڈ گول اور پتلی ہوتی ہے۔ اور ستار کی چپٹی اور چوڑی۔ سُر یعنی مدھ کھرج سے تار کھرج تک پورے سات آوازوں کے سُر میڑ سے نکل سکتے ہیں بڑے ستار میں، پر بین میں اتنی جگہ ہی نہیں ہے۔ مثلاً اچھا ستاریا ایک پردے سے [illegible] تک پورے ایک سپتک کا کام کر سکتا ہے، جو کہ اور کسی بھی تنتر پر نہیں ہو سکتا۔ رباب، سرود یا

सुरसिँगार वग़ैरा बेपर्दे के बाजो में मींड़ होती ही नहीं. उनमें मींड की जगह 'सूत' का काम होता है. सूत एक तरह की 'घसीट' होता है जो एक स्वर से किसी दूसरे स्वर तक ली जाती है. यह सुनने मे उतनी मधुर नही होती जितनी कि मींड़. और अगर बजाने वाले का स्वरज्ञान बहुत पक्का न हुआ और उंगलियाँ निहायत सुर मे न हुई तो सारा राग बेसुरा हो जाता है. बे पर्दे के बाजो मे सब से बड़ी दिक़्क़त यही है इसी से बीन के नीचे ही रबाब का, और सितार या सुरबहार के बाद ही सरोद और सुरसिँगार का स्थान है.

अब देखना है कि सितार पर बीन के और सब काम कहाँ तक हो सकते है. बीन पर सिर्फ़ रागों का अलाप ही बजता है, गत तोड़े नही. संगत इस की सिर्फ़ मृदंग से होती है और आलाप इस पर शुद्ध ध्रुपद अंग का बजता है जब तक 'बिलंपत (विलंबित) बजता है तब तक तो पखावजी (मृदंग बजाने वाला) चुप बैठा रहता है. 'बिलपत' मे सिर्फ़ राग का एक नक्शा खींचा जाता है, उसकी एक रूपरेखा तैयार की जाती है. फिर 'मध्य' लय में नक़्शे के अंदर रंग भरे जाते हैं, राग के सब अंगो पर, जहाँ तक जिस कलाकार की पहुँच या सूझ बूझ हो, रोशनी डाली जाती है. फिर 'द्रुत' या 'जलद' की बारी आती है. यही अंग सब से ज्यादा रंगीन होता है और इसी में पखावज की संगत से सब तरह के 'अलंकार' (जिनकी तादाद ख़ास तौर से २० है, परये अनगिनत होसकते हैं) 'झाले' और 'तार (झाले) परन' वग़ैरा बजते हैं. राग की देवी की मूरत जब बन कर तैयार हो जाय तो उसे जैसे मौज़ूं ज़ेवरात से सजाया जाता हो, बस यही काम

[illegible]

سرسنگار وغیرہ بے پردے کے باجوں میں میٹھ ہوتی ہی نہیں۔ ان میں میٹھ کی جگہ سوت کا کام ہوتا ہے۔ سوت یہ ایک طرح کی گھسیٹ ہوتا ہے جو ایک سر سے کسی دوسرے سر تک لی جاتی ہے۔ یہ سننے میں اتنی مدھر نہیں ہوتی جتنی کہ میٹھ۔ اور اگر بجانے والے کا سرگیان بہت پکا نہ ہوا اور انگلیاں نہایت سر میں نہ ہوئیں تو سارا راگ بے سرا ہو جاتا ہے۔ بے پردے کے باجوں میں سب سے بڑی دقت یہی ہے۔ اسی سے بین کے نیچے ہی رباب کا اور ستار یا سربہار کے بعد ہی سرود اور سرسنگار کا استھان ہے۔

اب دیکھنا ہے کہ ستار پر بین کے اور سب کام کہاں تک ہو سکتے ہیں۔ بین پر صرف راگوں کا الاپ ہی بجتا ہے گت توڑے نہیں۔ سنگت اس کی صرف مردنگ سے ہوتی ہے اور الاپ اس پر شدھ دھرپد انگ کا بجتا ہے۔ جب تک بلمپت (ولمبت) بجتا ہے تب تک تو پکھاوجی (مردنگ بجانے والا) چپ بیٹھا رہتا ہے۔ بلمپت میں صرف راگ کا ایک نقشہ کھینچا جاتا ہے۔ اس کی ایک روپ ریکھا تیار کی جاتی ہے پھر مدھ لے میں نقشے کے اندر رنگ بھرے جاتے ہیں۔ راگ کے سب انگوں پر جہاں تک جس کلاکار کی پہونچ یا سوجھ بوجھ ہو روشنی ڈالی جاتی ہے یہی انگ سب سے زیادہ رنگین ہوتا ہے اور اسی میں پکھاوج کی سنگت سے سب طرح کے النکار جن کی تعداد خاص طور سے بیس ہے پر یہ ان گنت ہو سکتے ہیں جھالے اور تار (جھالے) پرن وغیرہ بجتے ہیں۔ راگ کی دیوی کی مورت جب بن کر تیار ہو جاوے تو اسے جیسے موزوں زیورات سے سجایا جاتا ہو بس یہی کام یہ النکار کرتے ہیں۔
ہوتا ہے (جو کہ دھرپد کا خاص تال ہے) میں

पखावज बजती चलती है और बीन कार इसी बारह मात्रे के चौताले मे क़ायम हो कर तरह तरह के छंद बदलता हुआ आड़ी (वक्र) कुआड़ी, बियाड़ी वगैरा और फिर इनकी दून, तिगून चौगुन करता हुआ राग की प्रतिमा को अपनी साधना के अनुसार पूजता चलता है. जैसे अलंकार शास्त्र या काव्य की जान वक्रोक्ति है वैसे संगीत मे भी यह 'वक्र गति' या टेढ़ी चाल या आड़ी तिरछी लये ही ख़ास चीज़ है.

जहाँ से जो छंद बीन कार पकड़ता है, या जो लय(आड़ी, कुआड़ी दुगुन, तिगुन वगैरा) वह शुरू करता है वही पखावजी के लिये पकड़ना ज़रूरी होता है, अगर तत्काल यानी तुरत साथ ही वह इसी लय को पकड़ कर न उठ सका तो गुणियों के समाज मे मानो वह शर्म से मरही जाता है. दरबारो मे लाग डॉट मे बीनकार लोग अक्सर कोई अजीबो ग़रीब छंद या लय शुरू कर जाते हैं. जो बहुत अप्रचलित होते है, और पखावजी को अगर सोचना पड़ गया तो बस उसकी मौत ही समझिये. इस तरह की लागडांट के कुछ अलंकार प्रसिद्ध हो गये हैं और उनकी सिफत के मुताबिक़ ही उनके नाम पड गये है, जैसे—लड़त, लड़लथेत, लडगु थाव, गुथ्थी, कतर भार, दुहा (धूआ या दूहा) माठा, हलका, ज़मज़मा वगैरा. ख़ुद 'लाग डॉट' नाम का ही एक अलकार है इसमे कभी कभी बीनकार और पखावजी आपस मे एक दूसरे से एसे गुथ और उलझ जाते है कि जान पड़ता है मानो 'डेथ ग्रिप' मे है और एक दूसरे का ख़ातमा कर के ही उठेगा. और अगर करतबी परवावजी हुआ तो जवाब सवाल चलने लगते हैं, यानी बीनकार ने एक छंद शुरू किया, तब तक पखावजी

پکھاوج بجتی چلتی ہے اور بین کار اسی بارہ ماترے سے چوتالے میں قائم ہو کر طرح طرح چھند بدلتا ہوا آڑی (وکر) کواڑی، بیاڑی وغیرہ اور پھر ان کی دون تگون چوگون کرتا ہوا راگ کی پرتیما کو اپنی سادھنا کے انوسار پوجتا چلتا ہے. جیسے النکار شاستر یا کاویہ کی جان وکروکتی ہے ویسے سنگیت میں بھی یہ 'وکر گتی' یا ٹیڑھی چال یا آڑی ترچھی لیں خاص چیز ہیں.

جہاں سے جو چھند بین کار پکڑتا ہے، یا جو لے (آڑی کواڑی دوگن تگن وغیرہ) وہ شروع کرتا ہے وہی پکھاوجی کے لئے پکڑنا ضروری ہوتا ہے، اگر تت کال یعنی ترت ساتھ ہی وہ اسی لے کو پکڑ کر نہ اٹھ سکا تو گنیوں کے سماج میں مانو وہ شرم سے مر ہی جاتا ہے. درباروں میں لاگ ڈانٹ میں بین کار لوگ اکثر کوئی عجیب و غریب چھند یا لے شروع کر جاتے ہیں جو بہت اپرچلت ہوتے ہیں، اور پکھاوجی کو اگر سوچنا پڑ گیا تو بس اس کی موت ہی سمجھئے. اس طرح کی لاگ ڈانٹ کے کچھ النکار پرسدھ ہو گئے ہیں اور ان کی صفت کے مطابق ہی ان کے نام پڑ گئے ہیں، جیسے - لڑنت، لڑلتھیت، لڑگتھاو، گتھی، کترجھار، دھوآ، دھوآ یا دھوہا، ماٹھا، ہلکا، زمزمہ وغیرہ - خود 'لاگ ڈانٹ' نام کا ہی ایک النکار ہے اس میں کبھی کبھی بین کار اور پکھاوجی آپس میں ایک دوسرے سے ایسے گتھ اور الجھ جاتے ہیں کہ جان پڑتا ہے مانو 'ڈیتھ گرپ' میں ہیں اور ایک دوسرے کا خاتمہ ہی کر کے اٹھے گا. اور اگر کرتبی پکھاوجی ہوا تو جواب سوال چلنے لگتے ہیں یعنی بین کار نے ایک چھند شروع کیا، تب تک پکھاوجی

सीधा रहा, फिर उसकी 'सम' आने के साथ ही पखावजी ने उसका 'जवाब' यानी उसी जाति का, पर उस से ज्यादा भड़कीला छंद शुरू किया. जब तक पखावजी का 'परन' चलती रही तब तक वीनकार सीधा रहा और उसका 'दर जवाब' यानी प्रत्युत्तर सोचता और मन में बैठाता रहा और अगर इसे याद आ गया तो पखावजी की 'सम' आने के साथ ही अपना नया छंद उठा दिया. इसको 'बारी बारी' की संगत ! कहते हैं. इस में सुनने वालों को ज्यादा आनंद और गुण को समझने का ज्यादा मौक़ा मिलता हैं. कलाकारों को भी बारी बारी से शरीर और मन को ढाल देकर ज़रा दम मार लेने और फिर ताज़े दम से नया छन्द या नई तरकीब उठाने का हौसला बढ़ता चलता है. पर इस 'डेथग्रिप' वाली संगत में तो अक्सर 'त्राहि माम्' 'त्राहि माम्' या दबी ज़बान से 'ख़ुदा ख़ैर करे' की आवाज़ पास बैठे हुए उस्तादों के मुँह से निकलने लगती है, और यह डर लगता है कि दो में एक का हाट न फेल हो जाय. और ऐसे वाक़ये हुए भी हैं. बजाते बजाते, हो नेपाल दरबार में काशी के अमर कलाकार प० बीरू मिश्र और गया के ठाकुर दर्शन सिंह कलकत्ते के मशहूर संगीत प्रेमी रईस श्री राय चाँद बड़ाल के ड्राइङ्ग रूम में स्वर्ग सिधारे. ये दोनों कला के कठोर साधक सीधे माता सरस्वती की गोद में गये इस में सन्देह नहीं.

तो हमारे कहने का मतलब यह है कि बीन के जिन कामों की चर्चा ऊपर की गई. कोई वजह नहीं कि वही सितारिया, अगर वह बजाने वाला है, अपने सितार पर न कर सके और सबसे पहले

سیدھا رہا، پھر اس کی 'سم' آنے کے ساتھ ہی پکھاوجی نے اس کا جواب یعنی اسی جاتی کا، پر اس سے زیادہ بھڑکیلا چھند شروع کیا. جب تک پکھاوجی کی 'پرن' چلتی رہی تب تک بین کار سیدھا رہا اور اس کا 'درجواب' یعنی پرتی اتر سوچتا اور من میں بیٹھاتا رہا اور اگر اُسے یاد آگیا تو پکھاوجی کی 'سم' آنے کے ساتھ ہی اپنا نیا چھند اُٹھا دیا۔ اس کو 'باری باری' کی سنگت کہتے ہیں۔ اس میں سننے والوں کو زیادہ آنند اور گُن کو سمجھنے کا زیادہ موقع ملتا ہے۔ کلاکاروں کو بھی باری باری سے شریر اور من کو ڈھیل دے کر ذرا دم مار لینے اور پھر تازے دم سے نیا چھند یا نئی ترتیب اٹھانے کا حوصلہ بڑھتا چلتا ہے۔ پر اس 'ڈیتھ گرپ' والی سنگت میں تو اکثر 'ترا ہی مام'، 'ترا ہی مام' یا دبی زبان سے 'خدا خیر کرے' کی آواز پاس بیٹھے ہوئے استادوں کے منہ سے نکلنے لگتی ہے اور یہ ڈر لگتا ہے کہ دو میں ایک کا ہارٹ نہ فیل ہو جائے۔ اور ایسے واقعے ہوئے بھی ہیں۔ بجاتے بجاتے ہی نیپال دربار میں کاشی کے امر کلاکار پنڈت بیرو مشر اور گیا کے ٹھاکر درشن سنگھ کلکتہ کے مشہور سنگیت پریمی رئیس سری رائے چاند بڑال کے ڈرائنگ روم میں سورگ سدھارے۔ یہ دونوں کلا کے کٹھور سادھک سیدھے ماتا سرسوتی کی گود میں گئے اس میں سندیہہ نہیں۔

تو ہمارے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ بین کے جن کاموں کی چرچا اوپر کی گئی، کوئی وجہ نہیں کہ وہی ستاریا، اگر وہ بجانے والا ہے، اپنے ستار پر نہ کر سکے اور سب سے پہلے

जिस सितारिये ने यह कर के दिखाया वह जयपुर के अमृत सेन थे.

पर बीन की सब हरकतों के बाद अमृत सेन ने सितार का एक ख़ास 'बाज' (वादन शैली). ईजाद किया जो संगीत की दुनिया में बिलकुल नई चीज़ थी. यह है 'गत तोड़े का बाज' ध्रुपद अंग का पूरा आलाप और मृदंग की संगत से तारपरन वग़ैरा बीसों अलङ्कार बजाने के बाद इस बाज का नम्बर आता है. इस की ख़ासियत है 'तानकारी' या तनैनी'. बीन में या रबाब वग़ैरा में लम्बी या सपाट' तानें असम्भव (ग़ैरमुमकिन) हैं. बाजे की बनावट और बजाने का ढङ्ग ही कुछ ऐसा है कि तनैनी हो ही नहीं सकती. सितार का यही ख़ास सिफ़त है जिसमें यह और सब बाजों के आगे निकल जाता है. याद रखना चाहिये कि अमृत सेन ने जो तानकारी का रिवाज सितार पर शुरू किया वह ख्याल की तानों की नकल पर नहीं गढ़ी गई थी. यह इनके दिमाग की एक बिलकुल नई उपज थी जो अभी तक गाने बजाने की दुनिया में नहीं थी

इसी ढङ्ग को मसीत ख़ां नाम के एक दूसरे सितारिये ने बहुत तरक्की दी, यहाँ तक कि यह स्टाइल ही मसीतख़ानी बाज' के नाम से अमर हो गया.

हम इस बाज की ख़ासियतें और सितार की दुनिया में मसीत ख़ां की देन का ज़िक्र आगे करेंगे.

———

اس ستاریئے نے یہ کر کے دکھایا وہ جے پور کے امرت سین تھے۔

پر بین کی سب حرکتوں کے بعد امرت سین نے ستار کا ایک خاص باج (وادن شیلی) ایجاد کیا۔ جو سنگیت کی دنیا میں بالکل نئی چیز تھی۔ یہ ہے "گت توڑے کا باج" دھرپد انگ کا پورا آلاپ اور مردنگ کی سنگت سے تارپرن وغیرہ بیسیوں النکار بجانے کے بعد اس باج کا نمبر آتا ہے۔ اس کی خاصیت ہے "تانکاری"، یا "تننانی"۔ بین میں یا رباب وغیرہ میں لمبی یا سپاٹ تانیں ناممکن (غیر ممکن) ہیں۔ باجے کی بناوٹ اور بجانے کا ڈھنگ ہی کچھ ایسا ہے کہ تننانی ہو ہی نہیں سکتی۔ ستار کی یہی خاص صفت ہے جس میں یہ اور سب باجوں کے آگے نکل جاتا ہے۔ یاد رکھنا چاہیئے کہ امرت سین سے جو تانکاری کا رواج ستار پر شروع کیا وہ خیال کی تانوں کی نقل پر نہیں گھڑی گئی تھی۔ یہ ان کے دماغ کی ایک بالکل نئی اپج تھی۔ جو ابھی تک گانے بجانے کی دنیا میں نہیں تھی۔

اسی ڈھنگ کو مسیت خاں نام کے ایک دوسرے ستاریئے نے بہت ترقی دی۔ یہاں تک کہ یہ اسٹائل ہی "مسیت خانی باج" کے نام سے امر ہو گیا۔

ہم اس باج کی خاصیتیں اور ستار کی دنیا میں مسیت خاں کی دین کا ذکر آگے کریں گے۔

———

दसहरा

(नवाब साहब रामपुर)

आई दसहरे की रुत रीत मनाये सखी
देशियो मे मित्रता और बढ़ाये सखी

(१)

राम का सन्तोप मन देखने गुइयाँ चले
आते है सजनी सजन देखने गुइयाँ चले
पत्नी पति सम्मिलन देखने गुइयाँ चले
सीता जी शुभ लग्न मे रंग रचाये सखी

(२)

नष्ट हुआ भूमि से पाप का स्थान आज
तोड़ के रावन का बल आ गये भगवान आज
राज पति से मिली राजसी सन्तान आज
राम भरत का मिलाप आओ दिखाये सखी

(३)

पाई है स्वतंत्रता क्यो न बढ़े मनउमंग
आज आनन्दित हैं सब देख के यह रंग ढंग
प्रजा है राजा के संग राजा हैं प्रजा के संग
[illegible] सखी

دسہرا

(نواب صاحب رامپور)

آئی دسہرے کی رُت ریت منائیں سکھی
دیشیوں میں مترتا اور بڑھائیں سکھی

(۱)

رام کا سنتوش من دیکھنے گئیاں چلیں
آتے ہیں سجنی سجن دیکھنے گئیاں چلیں
پتنی پتی سمِلن دیکھنے گئیاں چلیں
سیتا جی شبھ لگن میں رنگ رچائیں سکھی

(۲)

نشٹ ہوا بھوم سے پاپ کا استھان آج
توڑ کے راون کا بل آ گئے بھگوان آج
راج پتی سے ملی راجسی سنتان آج
رام بھرت کا ملاپ آؤ دکھائیں سکھی

(۳)

پائی ہے سوتنترتا کیوں نہ بڑھے من اُمنگ
آج آنندت ہیں سب دیکھ کے یہ رنگ ڈھنگ
پرجا ہے راجہ کے سنگ راجہ ہیں پرجا کے سنگ
راج کا اپنے سبھاؤ جگ کو بتائیں سکھی

(४)

प्रेमियो मे चाहिये प्रेम का ब्योहार हो
बापू के उपदेश का देश में प्रचार हो
मेला दसहरे का या ईद का त्योहार हो
हिन्दू मुसलमान सब मिल के मनायें सखी

(५)

बाँकी नदी प्रीत की चाल वह न्यारी चली
झूमती लहरो के साथ आँख हमारी चली
देखा जो मेले की ओर राज सवारी चली
मन से दुआये बढ़ी लेने बलाये सखी

(६)

मेला दसहरे का है, धूम है दरबार की
पूजा है गजराज की राजा की तलवार की
मित्रो के हाथो मे है थालियाँ उपहार की
देखने ऐसा समूह कैसे न जाये सखी

(७)

राज कन्हैया सखी सीस धरे ताज आये
राज सिंहासन पे आज हमरे महाराज आये
देखो तो सेवक सभी मन का लिये काज आये
सोये हुए भाग को हम भी जगाये सखी

(८)

राम की लीला रची धरती पे आई बहार

(۴)

پریمیوں میں چاہئے پریم کا بیوہار ہو
باپو کے اپدیش کا دیش میں پرچار ہو
میلا دسہرے کا یا عید کا تیوہار ہو
ہندو مسلمان سب مل کے منائیں سکھی

(۵)

بانکی ندی پریت کی چال وہ نیاری چلی
جھومتی لہروں کے ساتھ آنکھ ہماری چلی
دیکھا جو میلے کی اور راج سواری چلی
من سے دعائیں پڑھیں لینے بلائیں سکھی

(۶)

میلا دسہرے کا ہے دھوم ہے دربار کی
پوجا ہے گجراج کی راجہ کی تلوار کی
متروں کے ہاتھوں میں ہیں تھالیاں اپہار کی
دیکھنے ایسا سموہ کیسے نہ جائیں سکھی

(۷)

راج کنھیا سکھی سیس دھرے تاج آئے
راج سنگھاسن پہ آج ہمرے مہاراج آئے
دیکھو تو سیوک سبھی من کا لئے باج آئے
سوئے ہوئے بھاگ کو ہم بھی جگائیں سکھی

(۸)

رام کی لیلا رچی دھرتی پہ آئی بہار

प्रजा से राजन मिलन देखने आई बहार
हृदय मे संसार के आज समाई बहार
मन को उमगो की आओ थाह लगायें सखी

(९)

राम करे रामपुर ऐसा ही निर्भय रहे
हिंद के झंडे तले इसकी सदा जय रहे
एक ही हर राग हो एक हो हर लय रहे
गीत 'रजा' राज के प्रेम से गायें सखी

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन '४७ मे पच्छिमी और पूरवी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान मे उन्होने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड़ रहे है उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर मे, आजकल की मुसीबतो को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमे विश्वास है कि पजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने मे इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटों में मिल सकती है क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

پرجا سے راجن ملن دیکھنے آئی بہار
ہردے میں سنسار کے آج سمائی بہار
من کی امنگوں کی آؤ تھاہ لگائیں سکھی

(۹)

رام کرے رامپور ایسا ہی نربھے رہے
ہند کے جھنڈے تلے اس کی سدا جے رہے
ایک ہی ہر راگ ہو ایک ہی ہر لَے رہے
گیت 'رضا' راج کے پریم سے گائیں سکھی

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک :- پنڈت سُندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے

مینیجر "نیا ہند"

मिस्टर जिनाह की ज़िन्दगी का सबक़

(भाई किशोरीलाल मशरूवाला)

मिस्टर मोहम्मद अली जिनाह की जिन्दगी और कामों पर हिन्दुओं को खास कर नामधारी सवर्ण हिन्दुओं को विचार करना और उनसे सबक लेना चाहिये.

वह काठियावाड़ की खोजा जाति में पैदा हुए थे. खोजा जाति का बहुत बड़ा भाग एक खास धर्म सम्प्रदायका पालन करता है. इस फ़िरके में हिन्दू धर्म और इस्लाम के उसूलों की एक खास तरह की मिलावट है. शायद इसके कायम करने वाले का मकसद इन दो धर्मों को अपनी समझ के मुताबिक मिलाना भी रहा हो. इनके धार्मिक रीतरिवाज और समाजी रूढ़ियाँ. विरासत के कायदे भी बहुत हद तक हिन्दुओं के जैसे ही होते हैं. इनमें से बहुतों के नाम भी हिन्दुओं जैसे ही होते हैं जैसे झीना, वालजी, भगवान जी, धर्मशी पुरुषोत्तम लालजी, मोतीलाल, हरजी वगैरा. इनकी घरेलू जिन्दगी और जिन्दगी के बारे में सोचने और देखने का ढंग वगैरा भी सवर्ण हिन्दुओं जैसा ही होता है. यह कहा जा सकता है कि सवर्ण हिन्दुओं के गुरुओं के बजाय किसी दूसरे गुरु के सम्प्रदाय को मानने से यह एक अलग पड़ जाने वाली हिन्दू जाति है. सब जानते हैं कि हिन्दू समाज में इस तरह की कई जातियाँ पैदा हुई हैं.

समय बीतने पर इस अलग पड़ जाने वाली जाति को अपनी

مسٹر جناح کی زندگی کا سبق

(بھائی کشوری لال مشروالا)

مسٹر محمد علی جناح کی زندگی اور کاموں پر ہندوؤں کو خاص کر نام دھاری سورن ہندوؤں کو وچار کرنا اور اُن سے سبق لینا چاہیے۔

وہ کاٹھیاواڑ کی خوجہ جاتی میں پیدا ہوئے تھے۔ خوجہ جاتی کا بہت بڑا بھاگ ایک خاص دھرم سمپرداے کا پالن کرتا ہے۔ اس فرقہ میں ہندو دھرم اور اسلام کے اصولوں کی ایک خاص طرح کی ملاوٹ ہے۔ شاید اس کے قائم کرنے والے کا مقصد ان دو دھرموں کو اپنی سمجھ کے مطابق ملانا بھی رہا ہو۔ ان کے دھارمک ریت رواج اور سماجی رُوڑھیاں وراثت کے قاعدے بھی بہت حد تک ہندوؤں کے جیسے ہی ہوتے ہیں۔ ان میں سے بہتوں کے نام بھی ہندوؤں جیسے ہی ہوتے ہیں۔ جیسے جھینا، والجی، بھگوان جی، دھرم سی، پرشوتم، لال جی، موتی لال، ہرجی وغیرہ۔ ان کی گھریلو زندگی اور زندگی کے بارے میں سوچنے اور دیکھنے کا ڈھنگ وغیرہ بھی سورن ہندوؤں جیسا ہی ہوتا ہے۔ یہ کہا جا سکتا ہے کہ سورن ہندوؤں کے گروؤں کے بجائے کسی دوسرے گرو کے سمپرداے کو ماننے سے یہ ایک الگ پڑ جانے والی ہندو جاتی ہے۔ سب جانتے ہیں کہ ہندو سماج میں اس طرح کی کئی جاتیاں پیدا ہوئی ہیں۔

سمے بیتنے پر اس الگ پڑ جانے والی جاتی کو اپنی

हालत असुविधा भरी जरूर मालूम हुई होगी. ऐसी मिसालें भी मिलती हैं कि अठाहरवीं और उन्नीसवीं सदी में खोजा जाति के कितने ही परिवार फिर से हिन्दू धर्म को मानने लगे थे. लेकिन हिन्दू जाति में एक बार जिसे अलग किया उसे अपने में फिर रिवाज ही न होने से इन खोजों के फिर से वैष्णव बन जाने के बाद भी समाजी निगाह से इन्हें कोई फ़ायदा नहीं हुआ. किसी हिन्दू जाति ने ऐसे लोगों को अपने में शामिल नहीं किया, इसलिये वह धीरे-धीरे हिन्दुओं से ज्यादा से ज्यादा दूर ही होते गये. इसका नतीजा यह हुआ कि उनमें पूरी तरह इस्लाम की तरफ़ झुक जाने की और जितना हिन्दूपन बाक़ी रहा था उस सब को निकाल फेंकने की ख्वाहिश पैदा हुई. ऐसा करना उनके लिये बहुत आसान तो नहीं था क्योंकि हिन्दू जाति प्रथा की और मिले जुले कुम्बे की प्रथा के उनके संस्कार बहुत गहरे थे और आज भी हैं लेकिन हिन्दुओं ने अपनी आदत के मुताबिक़ उनकी तरफ से ला परवाही ही बर्ती इसलिये धीरे धीरे उनकी इस्लाम की तरफ़ ज्यादा से ज्यादा झुकने की ख़्वाहिश मज़बूत बनती गई.

मिस्टर मोहम्मद अली जिनाह् की ज़िन्दगी का लगभग पौन सौ बरस का समय इस ख्वाहिश की जीती जागती तस्वीर मानी जा सकती है. उनका नाम मुसलमानी ढंग से रक्खा जाना यह बताता है कि खोजा समाज की इस्लाम की तरफ ज्यादा झुकने की ख्वाहिश उनके जन्म से पहले ही शुरू हो चुकी होगी. लेकिन उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का आधे से ज्यादा हिस्सा सच्चे दिल से राष्ट्रीय भावना और क़ौमी एकता की हिमायत करते हुये देश सेवा मे बिताया.

حالت اسودھا بھری ضرور معلوم ہوئی ہوگی۔ ایسی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ اٹھارہویں اور انیسویں صدی میں خوجہ جاتی کے کتنے ہی پریوار پھر سے ہندو دھرم کو ماننے لگے تھے۔ لیکن ہندو جاتی میں ایک بار جسے الگ کیا اُسے اپنے میں پھر رواج ہی نہ ہونے سے ان خوجوں کے پھر سے ویشنو بن جانے کے بعد بھی سماجی نگاہ سے انھیں کوئی فائدہ نہیں ہوا۔ کسی ہندو جاتی نے ایسے لوگوں کو اپنے میں شامل نہیں کیا، اس لئے وہ دھیرے دھیرے ہندوؤں سے زیادہ سے زیادہ دور ہی ہوتے گئے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان میں پوری طرح اسلام کی طرف جھک جانے کی اور جتنا ہندوپن باقی رہا تھا اُس سب کو نکال پھینکنے کی خواہش پیدا ہوئی۔ ایسا کرنا اُن کے لئے بہت آسان تو نہیں تھا کیونکہ ہندو جاتی پرتھا کی اور ملے جلے کنبے کی پرتھا کے اُن کے سنسکار بہت گہرے تھے اور آج بھی ہیں۔ لیکن ہندوؤں نے اپنی عادت کے مطابق ان کی طرف سے لاپرواہی ہی برتی، اس لئے دھیرے دھیرے انکی اسلام کی طرف زیادہ سے زیادہ جھکنے کی خواہش مضبوط بنتی گئی۔

مسٹر محمد علی جناح کی زندگی کا لگ بھگ پون سو برس کا سمے اس خواہش کی جیتی جاگتی تصویر مانی جا سکتی ہے۔ ان کا نام مسلمانی ڈھنگ سے رکھا جانا یہ بتاتا ہے کہ خوجہ سماج کی اسلام کی طرف زیادہ جھکنے کی خواہش ان کے جنم سے پہلے ہی شروع ہو چکی ہوگی۔ لیکن انھوں نے اپنی زندگی کا آدھے سے زیادہ حصہ سچے دل سے راشٹریہ بھاونا اور قومی ایکتا کی حمایت کرتے ہوئے دیش سیوا میں بتایا۔

इससे यह मालूम होता है कि हिन्दू मुसलमानों को एक करने की भावना का जो संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी से खोजो मे चला आ रहा था वह उन्हें भी विरासत में मिला था.

लेकिन एक्ता और राष्ट्रीयता के मैदान मे जिन्दगी के लगभग पैंतालीस बरस बिताने के बाद जिनाह साहब की जिन्दगी ने पलटा खाया. वह राष्ट्रवादी (क़ौम परस्त) न रह कर फिरका परस्त बने. इतना ही नहीं, वह पाकिस्तानवाद के यानी जिस जिस बात मे हिन्दूपन की बू आये उसकी मुख़ालफत और त्याग करने पर ज़ोर देने वाले आन्दोलन के नेता बने. उनकी जिन्दगी मे ऐसी तबदीली होने का कारण क्या है ? मुझे नहीं मालूम कि इस सवाल पर हमने कभी गहराई से सोच विचार किया हो. मिस्टर जिनाह के कट्टर से कट्टर मुख़ालिफने भी उनपर कभी पैसेके लालच या स्वार्थ के लिये डिगजाने वाले आदमी होनेका इलज़ाम नहीं लगाया. तब यह कैसे हुआ ? मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि कौमियत और फिरका वाराना एकता की बातो मे उन्हें कुछ खोखला पन मालूम हुआ, कुछ भरम मिटने जैसा लगा और इससे वह निराशावादी बन गये. अपने पिछले कौमी विचारों की याद दिलाने पर कई बार उन्होंने जो जवाब दिये थे, उनसे इस बात का पता लगता है. हिन्दू कॉग्रेसी की राष्ट्रीयता पर से उनकी श्रद्धा उठ गई थी. एक बार उन्होंने कहा था—'किसी कॉग्रेसी (हिन्दू) को थोड़ा कुरेदो, और उसका सवर्ण हिन्दूपन ज़ाहिर हो जायेगा" जब किसी ने उनसे पूछा— "इतने बरस तो आप कॉग्रेस मे ही थे न ?" तो उन्होंने जवाब दिया—"एक बार मैं प्राइमरी स्कूल में भी था !" इस तरह उनके

اس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ ہندو مسلمانوں کو ایک کرنے کی بھاونا کا جو سنسکار پیڑھی در پیڑھی سے خوجوں میں چلا آرہا تھا یہ انھیں بھی وراثت میں ملا تھا۔

لیکن ایکتا اور راشٹریتا کے میدان میں زندگی کے لگ بھگ پینتالیس ورش بتانے کے بعد جناح صاحب کی زندگی نے پلٹا کھایا۔ وہ راشٹروادی (قوم پرست) نہ رہ کر فرقہ پرست بنے۔ اتنا ہی نہیں، وہ پاکستان واد کے یعنی جس جس بات میں ہندوپن کی بو آئے، اس کی مخالفت اور تیاگ کرنے پر زور دینے والے آندولن کے نیتا بنے۔ ان کی زندگی میں ایسی تبدیلی ہونے کا کارن کیا ہے؟ مجھے نہیں معلوم کہ اس سوال پر ہم نے کبھی گہرائی سے سوچ بچار کیا ہو۔ مسٹر جناح کے کٹر سے کٹر مخالف نے بھی ان پر کبھی پیسے کی لالچ یا سوارتھ کے لئے ڈگ جانے والے آدمی ہونے کا الزام نہیں لگایا۔ تب یہ کیسے ہوا؟ میں اس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ قومیت اور فرقہ وارانہ ایکتا کی باتوں میں انھیں کچھ کھوکھلا پن معلوم ہوا، کچھ بھرم مٹنے جیسا لگا اور اس سے وہ نراشا وادی بن گئے۔ اپنے پچھلے قومی وچاروں کی یاد دلانے پر کئی بار انھوں نے جو جواب دیئے تھے، اس سے اس بات کا پتہ لگتا ہے۔ ہندو کانگریسی کی راشٹریتا پر سے ان کی شردھا اٹھ گئی تھی۔ ایک بار انھوں نے کہا تھا "کسی کانگریسی (ہندو) کو تھوڑا کریدو، اور اس کا سورن ہندو پن ظاہر ہو جائے گا"۔ جب کسی نے ان سے پوچھا "اتنے برس تو آپ کانگریس میں ہی تھے نہ؟" تو انھوں نے جواب دیا "ایکبار میں پرائمری اسکول میں بھی تھا!" اس طرح ان کے

विचारों में तबदीली हो गई थी.

मैंने अकसर यह पता लगाने की कोशिश की है कि कौन सी निराशा या भ्रम के दूर होने ने जिनाह साहब की ज़िन्दगी मे इतना बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया ? क्या इस प्रतिक्रिया (रद्दे अमल) के लिये उनके अपने ही मन का कीड़ा जिम्मेदार था, या कॉंग्रेसी और फ़िरक़ापरस्त हिन्दू भी इसके लिये कुछ ज़िम्मेदार थे ? हिन्दू जाति प्रथा और हिन्दू सगठन के आन्दोलन की पृष्ठ भूमि (पसे मंज़र) पर पाकिस्तान वाद को रखने से कैसी तस्वीर दिखाई देगी, इस पर हमे सोचना होगा. ऐसा करने से मालूम होगा कि हिन्दू जाति और जिनाह साहब की जन्म जाति—खोजा—दोनो मे जाति प्रथा और मिले जुले कुनबे की प्रथा के एक रूप से रहने वाले संस्कारों का सीधा नतीजा पाकिस्तानवाद हो सकता है

इस तरह देखे, तो सचमुच यह कहा जा सकता है कि जिस तरह हिन्दू मानस मे जाति प्रथा धर्म के साथ जुड़ी हुई है, उसी तरह पाकिस्तान हिन्दू जाति प्रथा की बड़ी से बड़ी कामयाबी है हिन्दुस्तान के मुसलमान अपने इस महान नेता के असर से जाति प्रथा का विरोध करने वाले न रह कर बड़े फ़िरकापरस्त बन गये. हिन्दू मिले जुले कुनबे की प्रथा का यह कायदा है कि उसमे कुनबे का कोई भी आदमी भोजन, पूजन और जायदाद का हिस्सा माँग सकता है. इस नियम को मुसलमान समाज ने मान लिया. उसने हिन्दू जाति प्रथा की इस खासियत को भी पूरा तरह अपना लिया कि जिन्हें अपने से ऊंचा या बराबरी का न समझा जाय उनसे

دچاروں میں تبدیلی ہو گئی تھی۔

میں نے اکثر یہ پتہ لگانے کی کوشش کی ہے کہ کون سی نراشا یا بھرم کے دور ہونے نے جناح صاحب کی زندگی میں اتنا بڑا کرانتی کاری پریورتن کر دیا؟ کیا اس پرتی کریا (ردِ عمل) کے لئے اُن کے اپنے ہی من کا کیڑا ذمہ دار تھا، یا کانگریسی اور فرقہ پرست ہندو بھی اس کے لئے کچھ ذمہ دار تھے؟ ہندو جاتی پرتھا اور ہندو سنگٹھن کے آندولن کی پرشٹ بھومی (پسِ منظر) پر پاکستان واد کو رکھنے سے کیسی تصویر دکھائی دے گی، اس پر ہمیں سوچنا ہوگا۔ ایسا کرنے سے معلوم ہوگا کہ ہندو جاتی اور جناح صاحب کے جنم جاتی — خوجہ — دونوں میں جاتی پرتھا اور ملے جلے کنبے کی پرتھا کے ایک روپ سے رہنے والے سنسکاروں کا سیدھا نتیجہ پاکستان واد ہو سکتا ہے۔

اس طرح دیکھیں، تو سچ مچ یہ کہا جا سکتا ہے کہ جس طرح ہندو مانس میں جاتی پرتھا دھرم کے ساتھ جڑی ہوئی ہے، اُسی طرح پاکستان ہندو جاتی پرتھا کی بڑی سے بڑی کامیابی ہے۔ ہندوستان کے مسلمان اپنے اس مہان نیتا کے اثر سے جاتی پرتھا کا ورودھ کرنے والے نہ رہ کر بڑے فرقہ پرست بن گئے۔ ہندو ملے جلے کنبے کی پرتھا کا یہ قاعدہ ہے کہ اس میں کنبے کا کوئی بھی آدمی بھوجن، پوجن اور جائداد کا حصہ مانگ سکتا ہے۔ اس نیم کو مسلمان سماج نے مان لیا۔ اُس نے ہندو جاتی پرتھا کی اس خاصیت کو بھی پوری طرح اپنا لیا کہ جنہیں اپنے سے اونچا یا برابری کا نہ سمجھا جائے اُن سے

बिलकुल अलग रहा जाय और जिन्हें अपने से नीचा माना जाय, उनके साथ घमंड और नफ़रत का बर्ताव किया जाय.

हिन्दू देहातो और शहरो की बनावट मे अलग-अलग जातियाँ अपने अलग अलग मुहल्लो, रास्तो और पोलो मे रहती है. कभी-कभी तो गाँव के गाँव: जातिवार होते हैं. दूसरों से अलग रहना, जायदाद वग़ैरा का बटवारा करना, दूसरी जातियो के साथ रोटी बेटी व्योहार न रखना—यह हिन्दू समाजी ज़िन्दगी के ख़ास लच्छन हैं. मिस्टर जिनाह ऐसे निराशावादी नतीजे पर पहुँचे कि कॉग्रेस धर्म, जाति वग़ैरा के भेद भाव से अलग रहने वाली प्रजातन्त्र वादी (जम्हूरी) राष्ट्रीयता के कितने ही ठहराव क्यो न पास करे, लेकिन हिन्दू हमेशा जातिवादी ही रहेंगे और जाति के पीछे ऊँच नीच का भाव और उसके कारण एक दूसरे से अलग रहने की ख्वाहिश पैदा होने से व्योहार मे हिन्दुस्तान का राज लोकशाही नही बल्कि जातिशाही के उसूलो पर ही चलेगा. कौमियत और लोक शाही के उसूलो पर हिन्दुस्तान मे कभी अमल नही होगा इस बारे मे जिनाह साहब ने बार बार अपना अविश्वास ज़ाहिर किया था उनकी यह पक्की राय हो गई थी कि पच्छिम की लोकशाही हिन्दुस्तान के लिये बेकार है

इसके अलावा उन्होंने हिन्दू सगठन के आन्दोलन को, उसके खोखलेपन को, और उसके आख़िरी मकसद को समझ लिया था. उसका खोखला पन इस बात मे था कि उसने जाति प्रथा और अछूत पन के ख़िलाफ़ कभी ज़ोरदार मोर्चा खड़ा नहीं किया था इसलिये वह सारे हिन्दुओ को ही अन्दर से इकट्ठा नही कर सकता

بالکل الگ رہا جائے اور جنھیں اپنے سے نیچا مانا جائے، اُن کے ساتھ گھمنڈ اور نفرت کا برتاؤ کیا جائے۔

ہندو دیہاتوں اور شہروں کی بناوٹ میں الگ الگ جاتیاں اپنے الگ الگ محلّوں، راستوں اور پولوں میں رہتی ہیں۔ کبھی کبھی تو گاؤں کے گاؤں جاتی وار ہوتے ہیں۔ دوسروں سے الگ رہنا، جائداد وغیرہ کا بٹوارہ کرنا، دوسری جاتیوں کے ساتھ روٹی بیٹی بیوہار نہ رکھنا — یہ ہندو سماجی زندگی کے خاص لچھن ہیں۔ مسٹر جناح ایسے نراشا وادی نتیجے پر پہنچے کہ کانگریس دھرم، جاتی وغیرہ کے بھید بھاؤ سے الگ رہنے والی پرجا تنتر وادی (جمہوری) راشٹریت کے کتنے ہی ٹھہراؤ کیوں نہ پاس کرے، لیکن ہندو ہمیشہ جاتی وادی ہی رہیں گے اور جاتی کے پیچھے اونچ نیچ کا بھاؤ اور اس کے کارن ایک دوسرے سے الگ رہنے کی خواہش پیدا ہونے سے بیوہار میں ہندستان کا راج لوک شاہی نہیں بلکہ جاتی شاہی کے اصولوں پر ہی چلے گا۔ قومیت اور لوک شاہی کے اصولوں پر ہندستان میں کبھی عمل نہیں ہوگا۔ اس بارے میں جناح صاحب نے بار بار اپنا اوشواس ظاہر کیا تھا۔ اُنکی یہ پکّی رائے ہوگئی تھی کہ پچھم کی لوک شاہی ہندستان کے لئے بیکار ہے۔

اس کے علاوہ انھوں نے ہندو سنگٹھن کے آندولن کو، اس کے کھوکھلے پن کو، اور اس کے آخری مقصد کو سمجھ لیا تھا۔ اس کا کھوکھلا پن اس بات میں تھا کہ اس نے جاتی پرتھا اور اچھوت پن کے خلاف کبھی زوردار مورچہ نہیں کھڑا کیا تھا۔ اسلئے وہ سارے ہندوؤں کو ہی اندر سے اکٹھا نہیں کر سکتا

था. और उसका आख़िरी मकसद इस्लाम के ख़िलाफ़ हिन्दू राज क़ायम करने का था.

जिनाह साहब की तेज़ अक्ल ने यह समझ लिया कि हिन्दुओं की इस कमज़ोरी, उनके कुछ 'ऊँचे उडने वाले' नेताओं की ग़लत फ़हमियों और दूसरे चतुर नेताओं की चालाकी और घमड से फ़ायदा उठा लेना चाहिये. उन्हें मुसलमान संस्कारों के बजाय हिन्दू संस्कार ही ज़्यादा मिले थे. इसलिये उन्होंने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को संगठित करने में हिन्दू मनोवृत्ति (जेहनियत) से ही काम लिया. इस्लाम के चाहे जो उसूल हों, फिर भी उन्होंने मुसलमान दिल को हिन्दू बना डाला. यह करना मुश्किल नहीं था. क्योंकि हिन्दुस्तान के मुसलमानों का बहुत बडा हिस्सा मज़हब के अलावा दूसरी सब बातों में उस उस जगह के हिन्दुओं जैसा ही है. जाति वार नुमाइन्दिगी, हिन्दुस्तान का पूरा बँटवारा और हिन्दू व मुसलमान बस्तियों का भी पूरा अलगाव वग़ैरा की माँगों में हिन्दू जेहनियत की परछाईं ही दिखाई देती है. यह हिन्दू जेहनियत है इस बात का सबूत यह है कि बृटिश प्रधान मण्डल की तीन सूबों के गिरोह बनाने की योजना को मंज़ूर करते ही पंजाब और बंगाल के कॉग्रेसी और ग़ैर कॉग्रेसी हिन्दू और सिक्ख नेताओं ने इन दो सूबों का बँटवारा करने की ज़ोरदार हल चल खडी की.

जिस तरह हिन्दुओं की सारी रूढियाँ धर्म और संस्कृति के साथ जुड़ी होती हैं, उसी तरह जिनाह साहब ने भी पाकिस्तान की माँग

نیا ہند مسٹر جناح کی زندگی کا سبق اکتوبر ۱۹۴۸

تھا۔ اور اس کا آخری مقصد اسلام کے خلاف ہندو راج قائم کرنے کا تھا۔

جناح صاحب کی تیز عقل نے یہ سمجھ لیا کہ ہندوؤں کی اس کمزوری، انکے "اونچے اڑنے والے" نیتاؤں کی غلط فہمیوں اور دوسرے چتر نیتاؤں کی چالاکی اور گھمنڈ سے فائدہ اٹھا لینا چاہئے۔ انھیں مسلمان سنسکاروں کے بجائے ہندو سنسکار ہی زیادہ ملے تھے اس لئے انھوں نے ہندوستان کے مسلمانوں کو سنگھٹت کرنے میں ہندو منوورتی (ذہنیت) سے ہی کام لیا اسلام کے چاہے جو اصول ہوں پھر بھی انھوں نے مسلمان دل کو ہندو بنا ڈالا۔ یہ کرنا مشکل نہیں تھا۔ کیونکہ ہندوستان کے مسلمانوں کا بہت بڑا حصہ مذہب کے علاوہ دوسری سب باتوں میں اس اس جگہ کے ہندوؤں جیسا ہی ہے۔ جات وار نمائندگی، ہندوستان کا پورا بٹوارہ، اور ہندو و مسلمان بستیوں کا بھی پورا الگاؤ وغیرہ کی مانگوں میں ہندو ذہنیت کی پرچھائیں ہی دکھائی دیتی ہے۔ یہ ہندو ذہنیت ہے۔ اس بات کا ثبوت یہ ہے کہ برٹش پردھان منڈل کی تین صوبوں کے گروہ بنانے کی یوجنا کو منظور کرتے ہی پنجاب اور بنگال کے کانگرسی اور غیر کانگرسی ہندو اور سکھ نیتاؤں نے ان دو صوبوں کا بٹوارہ کرنے کی زوردار ہلچل کھڑی کی۔

جس طرح ہندوؤں کی ساری روڑھیاں دھرم اور سنسکرت سے جڑی ہوتی ہیں، اسی طرح جناح صاحب نے بھی پاکستان کی

संगठित करने मे हिन्दुओं के बजाय उन्हे ज्यादा कामयाबी हुई.

हिन्दू नेताओं और जिनाह साहब के बीच एक और बात मे भी समानता थी. दोनो होशियार वकील थे. दोनो ने चालाकी और मक्कारी तक पहुँचने वाली होशयारी सीख ली थी. कागज पर दोनो पार्टियों को मंज़ूर हो सकने वाली ज़बान मे फैसले लिखना, मन मे उसके अर्थ के बारे मे दूसरी राय या चोरी रखना और जब अमल करते वक्त यह पता चले की ख़ुद को अच्छा न लगने वाला कदम उठाना पड़ेगा तो एक दूसरे के साथ फैसले के मानी पर झगड़न लगना, बाद मे एक दूसरे पर इलजाम लगाकर और उनका जवाब देकर गर्मी हवा बना डालना कि दोनो का मज़ूर किया हुआ फैसला ही छोड़ना पड़े और नये सिरे से बात चीत शुरू करनी पड़े—यह उस वकाल बुद्धि या समझ की बुरी निशानी है. जिनाह साहब भी इस विद्या मे पक्के थे. उन्होंने हिन्दुओं पर 'जिसका जूता उसका सर' की बात आजमाई. जिनाह साहब हमेशा हिन्दुओं का ही दोष साबित करने मे चाहे कामयाब न हुए हों फिर भी एक बे तरफ़दार आदमी के मन मे हिन्दुओं की सिधाई और न्याय बुद्धि के बारे मे शक पैदा करने मे उन्हे कई बार कामयाबी हुई.

इस तरह सोचते हुए मुझे कई बार महसूस हुआ है कि मिस्टर जिनाह और पाकिस्तान हिन्दू समाज के ही पके हुए फल है. हम पाकिस्तान के अपने दोस्त या भाई की तरह फिर से हिन्दुस्तान मे मिलने की ख़्वाहिश करे या न करे लेकिन जिन जेहनियतों, संस्कारो, रूढ़ियो वग़ैरा ने पाकिस्तान को जन्म दिया. उन दोषो को

سنگھٹن کرنے میں ہندوؤں کے بجائے انھیں زیادہ کامیابی ہوئی۔

ہندو نیتاؤں اور جناح صاحب کے بیچ ایک اور بات میں بھی سمانتا تھی۔ دونوں ہوشیار وکیل تھے۔ دونوں نے چالاکی اور مکاری تک پہنچنے والی ہوشیاری سیکھ لی تھی۔ کاغذ پر دونوں پارٹیوں کو منظور ہو سکنے والی زبان میں فیصلے لکھنا، من میں اس کے ارتھ کے بارے میں دوسری رائے یا چوری رکھنا اور جب عمل کرتے وقت یہ پتہ چلے کہ خود کو اچھا نہ لگنے والا قدم اٹھانا پڑے گا تو ایک دوسرے کے ساتھ فیصلے کے معنی پر جھگڑنے لگنا، بعد میں ایک دوسرے پر الزام لگا کر اور ان کا جواب دے کر ایسی ہوا بنا ڈالنا کہ دونوں کا منظور کیا ہوا فیصلہ ہی چھوڑنا پڑے اور نئے سرے سے بات چیت شروع کرنی پڑے۔ یہ اس وکیل بدھی یا سمجھ کی بری نشانی ہے۔ جناح صاحب بھی اس ودیا میں پکے تھے۔ انھوں نے ہندوؤں پر جس کا جوتا اس کا سر کی بات آزمائی۔ جناح صاحب ہمیشہ ہندوؤں کا ہی دوش ثابت کرنے میں چاہے کامیاب نہ ہوئے ہوں پھر بھی ایک بے طرفدار آدمی کے من میں ہندوؤں کی سیدھائی اور نیائے بدھی کے بارے میں شک پیدا کرنے میں انھیں کئی بار کامیابی ہوئی۔

اس طرح سوچتے ہوئے مجھے کئی بار محسوس ہوا ہے کہ مسٹر جناح اور پاکستان ہندو سماج کے ہی پکے ہوئے پھل ہیں۔ ہم پاکستان کے اپنے دوست یا بھائی کی طرح پھر سے ہندوستان میں ملنے کی خواہش کریں یا نہ کریں لیکن جن ذہنیتوں، سنسکاروں، رُوڑھیوں وغیرہ نے پاکستان کو جنم دیا، اُن دوشوں کو

तो अपनी जिन्दगी से निकाल देने मे ही ख़ैरियत है. हमे यह नहीं मान लेना चाहिये कि पाकिस्तान बनने से जितना बिगाड़ होना था हो चुका. वक्त गुज़रने पर जिना साहब की चेतावनी के मुताबिक़ यह दोष हमे हर एक घर, गली, मोहल्ले, गाँव और ताल्लुके के बँटवारे तक खीच ले जाय तो नामुमकिन नहीं. और वह बँटवारा सिर्फ़ हिन्दू मुसलमानो का ही नही होगा. यह छूत की बिमारी हिन्दुस्तान के सारे अलग अलग समाजो या मुक़ामी गिरोहो को लगेगी. अगर हमें एक राष्ट्र के रूप मे अपनी तरक़्क़ी करना है, तो हमे अपनी ओछी समाजी दृष्टि का नाश करना हो होगा.

('हरिजन सेवक' से)

تو اپنی زندگی سے نکال دینے میں ہی خیریت ہے۔ ہمیں یہ نہیں مان لینا چاہئے کہ پاکستان بننے سے جتنا بگاڑ ہونا تھا ہو چکا۔ وقت گزرنے پر جناح صاحب کی چیتاؤنی کے مطابق یہ دوش ہمیں ہر ایک گھر، گلی، محلے، گاؤں اور تعلقے کے بٹوارے تک کھینچ لے جائے تو ناممکن نہیں۔ اور وہ بٹوارہ صرف ہندو مسلمانوں کا ہی نہیں ہوگا۔ یہ چھوت کی بیماری ہندستان کے سارے الگ الگ سماجی یا مقامی گروہوں کو لگے گی۔ اگر ہمیں ایک راشٹر کے روپ میں اپنی ترقی کرنا ہے تو ہمیں اپنی اوچھی سماجی درشٹی کا ناش کرنا ہی ہوگا۔

('ہریجن سیوک' سے)

हमारी राय

कायदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह

दिसम्बर सन् १८७६ में कराची में पैदा हुये और वहीं से गवरनर जनरल की हैसियत से सितम्बर सन् १९४८ में चल बसे.

बड़े आदमियों की जिन्दगी से लोगों को सबक़ सीखना चाहिये.

बड़ा आदमी कौन ?

जिसको उसके घरवाले बड़ा मानते हों और शहर वाले इज्ज़त करते हों. क्योंकि यह दोनों किसी को जब ही बड़ा मानते हैं जब वह सचमुच बड़ा होता है.

कायदे आज़म इन दोनो कसौटियो पर पूरे उतरते हैं. इसलिये वह बड़े आदमी थे और उनकी जीवनी से पाठ सीखा जा सकता है और हरेक हिन्दुस्तानी को सीखना भी चाहिए.

दोस्ती दुश्मनी, बुराई भलाई यह अपने आप कुछ हैं ही नहीं, मुकाबले की चीज़े हैं, मानने की हैं. जो मेरा दोस्त है वह बहुतों का दुश्मन हो सकता है जो मुझे दुश्मन मालूम होता है वह लाखो का दोस्त रह सकता है. यही हाल भले बुरे का है. दुश्मन समझने पर बुरा समझने का रिवाज चल पड़ा है पर समझदार साफ दिल ईश्वर-परस्त रिवाज के गुलाम नहीं होते. वह सचाई के कायल होते हैं और सच को ही खुदा मानते हैं. हिन्द यूनियन में अनेकों ऐसे हो सकते हैं जो कायदे आज़म को यूनियन का दुश्मन मानते

ہماری رائے

قائداعظم محمد علی جناح

دسمبر ۱۸۷۶ء میں کراچی میں پیدا ہوئے اور وہیں سے گورنر جنرل کی حیثیت سے ستمبر ۱۹۴۸ء میں چل بسے۔

بڑے آدمیوں کی زندگی سے لوگوں کو سبق سیکھنا چاہیئے۔

بڑا آدمی کون ؟

جس کو اس کے گھر والے بڑا مانتے ہوں اور شہر والے عزت دیتے ہوں۔ کیونکہ یہ دونوں کسی کو جب ہی بڑا مانتے ہیں جب وہ سچ مچ بڑا ہوتا ہے۔

قائداعظم ان دونوں کسوٹیوں پر پورے اترتے ہیں۔ اس لئے وہ بڑے آدمی تھے اور ان کی جیونی سے پاٹھ سیکھا جا سکتا ہے اور ہر ایک ہندستانی کو سیکھنا بھی چاہیئے۔

دوستی دشمنی، برائی بھلائی یہ اپنے آپ کچھ ہیں ہی نہیں۔ مقابلہ کی چیزیں ہیں، ماننے کی ہیں۔ جو میرا دوست ہے وہ بہتوں کا دشمن ہو سکتا ہے۔ جو مجھے دشمن معلوم ہوتا ہے وہ لاکھوں کا دوست رہ سکتا ہے۔ یہی حال بھلے برے کا ہے۔ دشمن سمجھنے پر برا سمجھنے کا رواج چل پڑا ہے پر سمجھدار صاف دل ایشور پرست رواج کے غلام نہیں ہوتے۔ وہ سچائی کے قائل ہوتے ہیں اور سچ کو ہی خدا مانتے ہیں۔ ہند یونین میں انیکوں ایسے ہو سکتے ہیں جو قائداعظم کو یونین کا دشمن مانتے

हो, पर उनको बुरा हरगिज़ न समझते हो. भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य पाण्डवो की नज़रो मे दुश्मन थे पर बुरे नहीं थे, पूजा के क़ाबिल थे हिन्द यूनियन मे अनेको ऐसे भी होंगे जो कायदे आज़म को न तो हिन्द यूनियन का दुश्मन मानते हों और न उनको बुरा ही समझते हो दुश्मनी और बुराई जब मानी हुई चीजे है और बहुत दिन टिकने वाली भी नहीं तो हमे उनसे क्या लेना हमे फूल चुनने है काटो से क्या काम.

गुलिस्ताने जहाँ मे
फूल भी हैं और काँटे भी,
मगर जो गुल के जोया हैं
उन्हे क्या ख़ार से लेना.

कायदे आज़म के साथियो ने उनको ख़ुदा या पैगम्बर नही बनाया. इसे ख़ुदा का फज़ल ही समझिये अगर वह ऐसा कर गुज़रते तो कायदे आज़म कोरी पूजा परस्तिश की चीज बन जाते, तकलीद के काबिल इन्सान न रह जाते. अनुकरणीय मानवी जीवन उन्ही का होता है जो मामूली आदमी रह कर ज़िदगी बिताते हैं और बड़ा काम कर जाते हैं. बड़ा काम वह जो एक आदमी हज़ारो लाखो से करा ले जब कि वह हज़ारो लाखो उसे न ठीक समझते हो और न यह समझते हो कि वह हो सकने के काबिल हैं, यही बात तो कायदे आज़म ने की. यानी लाखो से ना ममकिन पाकिस्तान

ہوں، پر ان کو برا ہرگز نہ سمجھتے ہوں. بھیشم پتامہا اور درونا چاریہ پانڈوں کی نظروں میں دشمن تھے پر برے نہیں تھے پوجا کے قابل تھے. ہند یونین میں انیکوں ایسے بھی ہوں گے جو قائد اعظم کو نہ تو ہند یونین کا دشمن مانتے ہوں اور نہ اُن کو برا ہی سمجھتے ہوں. دشمنی اور برائی جب مانی ہوئی چیزیں ہیں اور بہت دن ٹکنے والی بھی نہیں تو ہمیں ان سے کیا لینا. ہمیں پھول چننے ہیں کانٹوں سے کیا کام.

گلستان جہاں میں
پھول بھی ہیں اور کانٹے بھی
مگر جو گل کے جویا ہیں
انھیں کیا خار سے لینا

قائد اعظم کے ساتھیوں نے اُن کو خدا یا پیغمبر نہیں بنایا. اسے خدا کا فضل ہی سمجھئے. اگر وہ ایسا کر گزرتے تو قائد اعظم کوری پوجا پرستش کی چیز بن جاتے، تقلید کے قابل انسان نہ رہ جاتے. انوکرنیہ مانوی جیون انھیں کا ہوتا ہے جو معمولی آدمی رہ کر زندگی بتاتے ہیں اور بڑا کام کر جاتے ہیں. بڑا کام وہ جو ایک آدمی ہزاروں لاکھوں سے کرا لے جبکہ وہ ہزاروں لاکھوں اسے نہ ٹھیک سمجھتے ہوں اور نہ یہ سمجھتے ہوں کہ وہ ہو سکنے کے قابل ہیں. یہی بات تو قائد اعظم نے کی. یعنی لاکھوں

न अवतार थे, न ऋषि नबी. उनकी जिंदगी है जिससे हर आदमी, हर मुल्क और हर युग पाठ ले सकता है. हाँ. उनके कारनामे नहीं दोहराये जा सकते, उन की स्प्रिट अपनाकर नये कारनामे पेश किये जा सकते हैं और यही है उनके कदमों पर कदम रख कर चलना या दूसरे लफ्जों में दुनिया में अपनी खास जगह छोड़ जाना दुनिया में अपने कदमों के निशान छोड़ जाना ही कायदे आजम की नकल करना है.

कायदे आजम ने पाकिस्तान को सोचा. नकशा तैयार किया. और खड़ा कर दिया यह कम काम नहीं. बड़े कामों से भी बड़ा काम कहा जा सकता है पाकिस्तान बनना अच्छा काम था या बुरा इस पर और इस वक्त बहस की जरूरत नहीं

होता कि, काश्मीर की लड़ाई न हो रही होती और हैदराबाद का झमेला न खड़ा होता तब आप देखते कि हिन्द यूनियन ने अपने प्यारे हिन्दी कायदे आजम की शान में उनकी मौत पर क्या क्या किया होता पर वैसा होना बदा न था

जिस सड़क पर हिन्द यूनियन का घोड़ा इस वक्त दौड़ा चला जा रहा है. होता कि पाकिस्तान न बना होता और होता कि, कायदे आजम उस घोड़े पर सवार होते, जैसी हिन्दी सन्त की ख्वाहिश भी थी, तो आज हिन्दुस्तान का रंग ही और होता और आज अफरीका के हिन्दुस्तानी सर ऊँचा किये और छाती फुलाये घूम रहे होते, पर वैसा होना बदा न था

अगर यह सच है कि खुदा के पास इन्सानी रूह को जगह मिलती है तो कायदे आजम की रूह को वह जगह जरूर मिली,

نہ اوتار تھے، نہ رشی نبی۔ ان کی زندگی ہے جس سے ہر آدمی، ہر ملک اور ہر یگ پاٹھ لے سکتا ہے۔ ہاں، ان کے کارنامے نہیں دُہرائے جا سکتے، ان کی سپرٹ اپنا کر نئے کارنامے پیش کئے جا سکتے ہیں اور یہی ہے ان کے قدموں پر قدم رکھ کر چلنا یا دوسرے لفظوں میں دنیا میں اپنی خاص جگہ چھوڑ جانا۔ دنیا میں اپنے قدموں کے نشان چھوڑ جانا ہی قائد اعظم کی نقل کرنا ہے۔

قائد اعظم نے پاکستان کو سوچا، نقشہ تیار کیا، اور کھڑا کر دیا۔ یہ کم کام نہیں۔ بڑے کاموں سے بھی بڑا کام کہا جا سکتا ہے۔ پاکستان بننا اچھا کام تھا یا بُرا اس پر اور اس وقت بحث کی ضرورت نہیں۔

ہوتا کہ، کاشمیر کی لڑائی نہ ہو رہی ہوتی اور حیدرآباد کا جھمیلا نہ کھڑا ہوتا تب آپ دیکھتے کہ ہند یونین نے اپنے پیارے ہندی قائد اعظم کی شان میں ان کی موت پر کیا کیا کیا ہوتا، پر ویسا ہونا بدا نہ تھا۔

جس سڑک پر ہند یونین کا گھوڑا اس وقت دوڑا چلا جا رہا ہے، ہوتا کہ، پاکستان نہ بنا ہوتا اور ہوتا کہ، قائد اعظم اس گھوڑے پر سوار ہوتے، جیسی ہندی سنت کی خواہش بھی تھی، تو آج ہندستان کا رنگ ہی اور ہوتا اور آج افریقہ کے ہندستانی سر اونچا کئے اور چھاتی پھلائے گھوم رہے ہوتے، پر ویسا ہونا بدا نہ تھا۔

اگر یہ سچ ہے کہ خدا کے پاس انسانی روح کو جگہ ملتی ہے تو قائد اعظم کی روح کو وہ جگہ ضرور ملی،

क्योंकि खुदा इतना छोटे दिल वाला नहीं है कि जो यह देखता फिरे कि किसने क्या किया. वह तो सिर्फ यह देखता है कि उसने जो दिल इन्सान को दिया है उससे वह कितना ऊँचा काम ले सकता है, और इस खयाल से कायदे आज़म ने अब तक के नम्बर पाने वालों में सब से ज्यादा नम्बर पाये.

खुदा के वह प्यारे बने और उनके अपनों पर खुदा का हाथ बना रहे.

हम इस काबिल बन सकें कि उनका ऐसा दिल दिमाग बनाये और दुनिया का कुछ भला कर जाये.

ओम् आमीन.

—भगवान दीन

गांधी का श्राद्ध

महापुरुषों के साथ जो अन्याय होता आया है, वही अन्याय बीसवीं सदी के महात्मा के साथ भी होना था और हुआ. अचरज इतना है कि आँख बन्द होने के दूसरे मिनट ही उस 'अहिंसा' के सिद्धान्त को ताक पर उठा कर रख दिया गया, जिसके लिये उस महात्मा ने जान की बाज़ी लगा रखी थी और अन्त में जान ही दे दी. रहा दूसरा सिद्धान्त 'सचाई,' उसके साथ भी फिर कैसे न्याय हो सकता था ? सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. एक के खतम होने पर दूसरा रह ही नहीं सकता. जिस महात्मा को अपनी जीवित देह के लिये किसी पहरे दार की ज़रूरत नहीं थी, उसके बेजान जिस्म की नंगी तलवार लेकर चौकीदारी करना

کیونکہ خدا اتنا چھوٹے دل والا نہیں ہے کہ جو یہ دیکھتا پھرے کہ کس نے کیا کیا۔ وہ تو صرف یہ دیکھتا ہے کہ اس نے جو دل انسان کو دیا ہے اس سے وہ کتنا اونچا کام لے سکتا ہے اور اس خیال سے قائدِ اعظم نے اب تک کے نمبر پانے والوں میں سب سے زیادہ نمبر پائے ہیں۔

خدا کے وہ پیارے بنے اور ان کے اپنوں پر خدا کا ہاتھ بنا رہے۔ ہم اس قابل بن سکیں کہ ان کا ایسا دل دماغ بنائیں اور دنیا کا کچھ بھلا کر جائیں۔

اوم آمین۔

— بھگوان دین

گاندھی کا شرادھ

مہاپرشوں کے ساتھ جو انیائے ہوتا آیا ہے، وہی انیائے بیسویں صدی کے مہاتما کے ساتھ بھی ہونا تھا اور ہوا۔ اچرج اتنا ہے کہ آنکھ بند ہونے کے دوسرے منٹ ہی اس 'اہنسا' کے سدھانت کو طاق پر اٹھا کر رکھ دیا گیا، جس کے لئے اس مہاتما نے جان کی بازی لگا رکھی تھی اور انت میں جان ہی دے دی۔ رہا دوسرا سدھانت 'سچائی'، اسکے ساتھ بھی پھر کیسے نیائے ہو سکتا تھا؟ ستیہ اور اہنسا ایک ہی سکے کے دو پہلو ہیں۔ ایک کے ختم ہونے پر دوسرا رہ ہی نہیں سکتا۔ جس مہاتما کو اپنی جیوت دیہہ کے لئے کسی پہرے دار کی ضرورت نہیں تھی، اس کے بے جان جسم کی ننگی تلوار لے کر [illegible]

यह माना कि बेजान देह का मालिक अब न महात्मा था और न उसके घरवाले. अब मालिक थी हिन्दुस्तान की सरकार, और उसे हक था कि वह उसकी चौकीदारी अपने तरीके से करती. यह ठीक है, और सचमुच हमें कहने के लिये कुछ न रह जाता अगर यह काम अंग्रेज़ी सरकार ने किया होता, या किसी अ-कॉंग्रेसी सरकार के हाथों हुआ होता, या किसी ऐसे कॉंग्रेसी दल के हाथों हुआ होता जिसे महात्मा के चेला या पक्के अनुयायी होने का दावा न होता. पर जब यह उन आदमियों के हाथों हुआ जो उनके बहुत करीबी समझे जाते थे, तब हमें यह कहते हुए ज़रा झिझक नहीं होती कि अहिंसा और सचाई की सच्ची लगन महात्मा अपने साथ ही ले गया.

कोई यह न समझे कि हम ऊपर की पंक्तियों में आज की सरकार की समालोचना कर रहे हैं. हम तो सिर्फ यह बताना चाहते हैं कि महात्मा के सिद्धान्तों का अपने आपको भक्त बतला कर आज के ढंग में सरकार चलाना उन सिद्धान्तों का अनुयायी होना नहीं है. स्टालिन की यह साफगोई हमें बहुत पसन्द है कि लेनिन के तरीके लेनिन के लिये थे लेनिन के वक्त के लिये थे, स्टालिन के लिये नहीं. और न स्टालिन के वक्त के लिये. आज की सरकार बिलकुल आज़ाद है कि वह अपने ढंग से राज चलाये और उसे वैसा ही करना चाहिये पर अगर वह गांधी या गांधी वाद का हवाला देगी तो हम इस कड़वी कहावत से काम लेंगे. वह हमारी अपनी कहावत यह है कि जो धर्म का हवाला दे, वह शैतान.

یہ مانا کہ بے جان دیہہ کا مالک اب نہ مہاتما تھا اور نہ اُس کے گھر والے. اب مالک تھی ہندستان کی سرکار، اور اسے حق تھا کہ وہ اُس کی چوکیداری اپنے طریقے سے کرتی. یہ ٹھیک ہے، اور سچ مچ ہمیں کہنے کے لئے کچھ نہ رہ جاتا اگر یہ کام انگریزی سرکار نے کیا ہوتا، یا کسی اکانگریسی سرکار کے ہاتھوں ہوا ہوتا، یا کسی ایسے کانگریسی دَل کے ہاتھوں ہوا ہوتا جسے مہاتما کے چیلا یا پکّے انویائی ہونے کا دعوےٰ نہ ہوتا. پر جب یہ اُن آدمیوں کے ہاتھوں ہوا جو اُس کے بہت قریبی سمجھے جاتے تھے، تب ہمیں یہ کہتے ہوئے ذرا جھجک نہیں ہوتی کہ اہنسا اور سچّائی کی سچّی لگن مہاتما اپنے ساتھ ہی لے گیا.

کوئی یہ نہ سمجھے کہ ہم اوپر کی پنکیتوں میں آج کی سرکار کی سمالوچنا کر رہے ہیں. ہم تو صرف یہ بتلانا چاہتے ہیں کہ مہاتما کے سدھانتوں کا اپنے آپ کو بھگت بتلا کر آج کے ڈھنگ سے سرکار چلانا اُن سدھانتوں کا انویائی ہونا نہیں ہے. اسٹالن کی یہ صاف گوئی ہمیں بہت پسند ہے کہ لینن کے طریقے لینن کے لئے تھے، لینن کے وقت کے لئے تھے، اسٹالن کے لئے نہیں، اور نہ اسٹالن کے وقت کے لئے. آج کی سرکار بالکل آزاد ہے کہ وہ اپنے ڈھنگ سے راج چلائے اور اُسے ویسا ہی کرنا چاہیئے. پر اگر وہ گاندھی یا گاندھی واد کا حوالہ دے گی تو ہم اس کڑوی کہاوت سے کام لیں گے وہ ہماری اپنی کہاوت یہ ہے کہ جو دھرم کا حوالہ دے، وہ شیطان.

यह उस अंग्रेज़ी कहावत से बिलकुल उलटी है, जो यों है कि लो, शैतान भी धर्म का हवाला देता है. महात्मा अपने को वैष्णव कहता था और रहन सहन में भी वैष्णव था. पर उसने जब भी जो बात समाज के सामने अमल करने के लिये पेश की, उसके लिये धर्म का हवाला नहीं दिया, बल्कि हवाला दिया अपनी अन्तरात्मा का और इस बात का कि वह उसको सच्ची जंचती है. जिनको ग़रज़ पड़ी उन्होंने हवाले ढूँढ निकाले. आज भी महात्मा के साथियों और शिष्यों मे हमें दो आदमी ऐसे जँचते हैं. जिन्हें हम यह कह सकते हैं कि वह सचमुच महात्मा की आतमा की शान बढ़ा रहे हैं और हिन्दुस्तान को दुनिया की नज़रों में ऊँचा उठा रहे हैं क्योंकि वह बात बात में गांधी या गांधीवाद का हवाला नहीं देते वह कुछ भी करें गांधी के कदम पर कदम रखने वाले समझे जायेंगे. महापुरुषों के क़दम पर कदम रखकर चलने का मतलब होता है अपनी अन्तरात्मा की पुकार को सुनकर चलना. और दुनिया में अपने क़दम के निशान छोड़ जाना. ऐसे दो आदमी हैं. श्री विनोवाभावे और श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य. हम यह नहीं कहते कि उन जैसे और नहीं हैं. हाँ हमारी नज़र में नहीं आये.

थोड़े लफ़्ज़ों में हम यही कहना चाहते हैं कि जो गांधी का कमसे कम हवाला देकर भारत की सेवा में लगा हुआ है, वही महात्मा का सच्चा श्राद्ध कर रहा है और वही उसके क़दमों पर क़दम रख कर चल रहा है याने ईश्वर को निगाह के सामने रख कर दुनिया की भलाई के लिये आगे बढ़ता चला जा रहा है.

गांधी को दुनिया के कोने कोने मे पहुँचाना या गांधीवाद को

یہ اُس انگریزی کہاوت سے بالکل اُلٹی ہے، جو یوں ہے کہ لو شیطان بھی دھرم کا حوالہ دیتا ہے۔ مہاتما اپنے کو ویشنو کہتا تھا اور رہن سہن میں بھی ویشنو تھا۔ پر اُس نے جب بھی جو بات سماج کے سامنے عمل کرنے کے لئے پیش کی، اس کے لئے دھرم کا حوالہ نہیں دیا، بلکہ حوالہ دیا اپنی انتر آتما کا اور اس بات کا کہ وہ اس کو سچی جچتی ہے۔ جن کو غرض پڑی انھوں نے حوالے ڈھونڈ نکالے۔ آج بھی مہاتما کے ساتھیوں اور شاگردوں میں ہمیں دو آدمی ایسے جچتے ہیں، جنھیں ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ سچ مچ مہاتما کی آتما کی شان بڑھا رہے ہیں اور ہندستان کو دُنیا کی نظروں میں اونچا اُٹھا رہے ہیں کیونکہ وہ بات بات میں گاندھی یا گاندھی واد کا حوالہ نہیں دیتے۔ وہ کچھ بھی کریں گاندھی کے قدم پر قدم رکھنے والے سمجھے جائیں گے۔ مہاپرشوں کے قدم پر قدم رکھ کر چلنے کا مطلب ہوتا ہے اپنی انتر آتما کی پکار کو سن کر چلنا، اور دُنیا میں اپنے قدم کے نشان چھوڑ جانا۔ ایسے دو آدمی ہیں۔ شری ونوبا بھاوے اور شری چکرورتی راج گوپال آچاریہ۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ اُن جیسے اور نہیں ہیں، ہاں ہماری نظر میں نہیں آئے۔

تھوڑے لفظوں میں ہم یہی کہنا چاہتے ہیں کہ جو گاندھی کا کم سے کم حوالہ دے کر بھارت کی سیوا میں لگا ہوا ہے، وہی مہاتما کا سچا شرادھ کر رہا ہے اور وہی اس کے قدموں پر قدم رکھ کر چل رہا ہے یعنی ایشور کو نگاہ کے سامنے رکھ کر دنیا کی بھلائی کے لئے آگے بڑھتا چلا جا رہا ہے۔

گاندھی کو دنیا کے کونے کونے میں پہنچانا یا گاندھی واد کو

दुनिया की तमाम बोलियो मे लिखकर छापना और बाँटाना बड़े भले काम हो सकते हैं और अगर स्वर्ग जैसी कोई जगह है तो उसमें स्थान भी मिल सकता है . पर यह दोनो काम किसी तरह भी गांधी के क़दम पर क़दम रखकर चलने वाले नही कहे जा सकते. इनसे गांधी की शोहरत हो सकती है, उसके धर्म की शोहरत नही. याने धर्म की शोहरत नहीं क्योकि धर्म के पीछे गांधी का लेबिल लगाना गांधी की महान आत्मा को दुःख पहुँचाना है.

हमे तो इसमे भी व र पूजा नही जँचती कि गांधी के नाम पर बड़े बड़े मन्दिर खड़े किये जाये या और किस्म की यादगारे कायम की जाये. उसकी वीरपूजा तो यही है कि उसकी छोटी सी कच्ची कुटिया, जिसमे वह ईश्वर को याद करता हुआ हिन्दुस्तान की आजादी और दुनिया को एक कुटुम्ब बनाने की बात सोचा करता था, ज्यों की त्यो बनी रहे. उसे कोई सच्ची मीरा लीपती पोतती रहे और यो उसके ऊचे आदर्श को बनाये रखे.

गांधी का श्राद्ध यही है और गांधी का अनुकरण इसी मे है कि दुनिया के मुल्क किसी हिन्दुस्तानी को अपने मुल्क में देखकर उस पर पूरा विश्वास कर सके और यह कह कर उसके हाथों अपनी जान माल, अपनी बेटा-बेटे सौंप सके कि 'यह गांधी के मुल्क का वासी है.'

क्या हिम्मत है इस तरह का श्राद्ध करने की ? वह जन्मा था कनागत (कन्यागत सूर्य) की एकादशी को.

१. १० ४८ —भगवानद न

دُنیا کی تمام بولیوں میں لکھ کر چھاپنا اور بانٹنا بڑے بھلے کام ہو سکتے ہیں اور اگر سورگ جیسی کوئی جگہ ہے تو اس میں استھان بھی مل سکتا ہے. پر یہ دونوں کام کسی طرح بھی گاندھی کے قدم پر قدم رکھ کر چلنے والے نہیں کہے جا سکتے. ان سے گاندھی کی شہرت ہو سکتی ہے، اس کے دھرم کی شہرت نہیں. یعنی دھرم کی شہرت نہیں کیونکہ دھرم کے پیچھے گاندھی کا لیبل لگانا گاندھی کی مہان آتما کو دکھ پہونچاتا ہے.

ہمیں تو اس میں بھی ویر پوجا نہیں جچتی کہ گاندھی کے نام پر بڑے بڑے مندر کھڑے کئے جائیں یا اور قسم کی یادگاریں قائم کی جائیں. اس کی ویر پوجا تو یہی ہے کہ اس کی چھوٹی سی کچی کٹیا جس میں وہ ایشور کو یاد کرتا ہوا ہندستان کی آزادی اور دنیا کو ایک کٹمب بنانے کی بات سوچا کرتا تھا، جیوں کی تیوں بنی رہے. اسے کوئی سچی میرا لیپتی پوتی رہے اور یوں اس کے اونچے آدرش بنائے رکھے.

گاندھی کا [illegible] کسی ہندستانی [illegible] کر سکیں اور [illegible] سونپ سکیں کہ یہ گاندھی کے [illegible]

کیا ہمت ہے اس طرح کا [illegible] (کنیاگت سورج) کی ایکادشی کو.

۱—۱۰—۴۸ء — [illegible]

हिन्दुस्तानी को यूं देखिये

हिन्दुस्तान में आज अंग्रेज़ी के जानकार बहुत ही कम है, यानी सौ में एक भी नहीं. और अंगरेज़ी में खुल कर लिख बोल सकने वालों की तादाद तो इतनी कम है कि हज़ार मे एक बताने की भी हमारी हिम्मत नहीं होती. फिर भी अंगरेज़ी सरकारी आसन पर निधड़क जमी बैठी है वजह यह है कि असेम्बली में ज्यादा तादाद ऐसे आदमियों की है जो अगरेज़ी ज़ोर लगा कर समझ बोल लेते हैं, पर जिन के हाथ मे राज की बागडोर है वह सब नहीं तो क़रीब करीब सब अगरेज़ी के माहिर हैं वह जी से नहीं चाहते कि अंगरेज़ी सरकारी आसन छोड़ कर चल दे. अतातुर्क की तरह रात भर में क्रान्ति कर डालने की हिम्मत भी किसी मे नहीं है. जाने अनजाने बागडोर थामने वाले अपनी इस कमज़ोरी का।कि वह हिन्दुस्तानी मे सरकारी काम नहीं चला सकते, असेम्बली के मेम्बरों पर असर डालते रहते हैं. और वह उन पर तरस खाकर अगरेज़ी को बना रखने मे मदद देते रहते हैं. समझा और समझाया यह जाता है कि जब असेम्बली अभी अंगरेज़ी को नहीं हटाना चाहती तो सारा देश भी उसे नहीं हटाना चाहता. क्यों कि असेम्बली के मेम्बर सारे देश के ही तो भेजे हुए है.

ठीक इसी तरह से हिन्दी यानी वह हिन्दी ,जो संस्कृत के शब्दो

ہندستانی کو یوں دیکھیے

ہندستان میں آج انگریزی کے جانکار بہت ہی کم ہیں، یعنی سو میں ایک بھی نہیں۔ اور انگریزی میں کھل کر لکھ بول سکنے والوں کی تعداد تو اتنی کم ہے کہ ہزاروں میں ایک بتانے کی بھی ہماری ہمت نہیں ہوتی۔ پھر بھی انگریزی سرکاری آسن پر نڈھڑک جمی بیٹھی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ اسمبلی میں زیادہ تعداد ایسے آدمیوں کی ہے جو انگریزی زور لگا کر سمجھ بول لیتے ہیں، پر جن کے ہاتھ میں راج کی باگ ڈور ہے وہ سب نہیں تو قریب قریب سب انگریزی کے ماہر ہیں۔ وہ جی سے نہیں چاہتے کہ انگریزی سرکاری آسن چھوڑ کر چل دے۔ اتاترک کی طرح رات بھر میں کرانتی کر ڈالنے کی ہمت بھی کسی میں نہیں ہے۔ جانے ان جانے باگ ڈور تھامنے والے اپنی اس کمزوری کا کہ وہ ہندستانی میں سرکاری کام نہیں چلا سکتے، اسمبلی کے ممبروں پر اثر ڈالتے رہتے ہیں، اور وہ ان پر ترس کھا کر انگریزی کو بنا رکھنے میں مدد دیتے رہتے ہیں۔ سمجھا اور سمجھایا یہ جاتا ہے کہ جب اسمبلی ابھی انگریزی کو نہیں ہٹانا چاہتی تو سارا دیش بھی اسے نہیں ہٹانا چاہتا۔ کیونکہ اسمبلی کے ممبر سارے دیش کے ہی تو بھیجے ہوئے ہیں۔

ٹھیک اسی طرح سے ہندی یعنی وہ ہندی، جو سنسکرت کے شبدوں

लफ्ज ठुसे रहते है उंगली पर गिने जाने वाले लोगों की बोली हैं. इस वक्त अचानक हिन्दुस्तानी यूनियन मे ऐसे कुछ लोगों का बोल बाला है जो संस्कृत लदी हिन्दी पर लट्टू हैं. ऐसी हिन्दी बोलते चालते वह भी नहीं और पाकिस्तान में शायद ऐसे लोगों का बोल बाला है जो फारसी अरबी लदी उर्दू पर लट्टू हैं. यही वजह है कि हिन्द यूनियन में वह बोली जो घरेलू बोली नहीं है लोगों पर लादी जा रही है और ऐसा ही पाकिस्तान में किये जाने की कोशिश है. हो सकता है कि हिंदी उर्दू चाहने वालों की नीयतें बिलकुल साफ हों और वह जी से यह समझते हों कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का इसी मे भला है. पर अगर वह जरा अपने आप को अन्दर से टटोले तो उनको आसानी से पता लग सकता है कि उनकी इस सच्ची चाह की जड़ में एक जोर की नफरत मौजूद है थोड़ी देर के लिये हम यह मान भी ले कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का नफा इसी मे है कि एक संस्कृत लदी हिन्दी में सरकारी काम चलाए और दूसरा फारसी अरबी लदी उर्दू मे, तब भी हम दोनो को यह सलाह देंगे कि वह इस अच्छी चीज से अभी बचे रहें, जैसे हलवा ताकतवर चीज होते हुए भी बीमार को देने से उसको नुकसान ही करता है. वैसे ही यह हिंदी और उर्दू जिनको हमने दलील की खातिर अच्छा मान लिया है दोनो का नुकसान ही करेंगी क्योंकि दोनो इस वक्त जोर की नफरत का बीमार हैं.

हम हिन्दी उर्दू नहीं ऊंची हिन्दी उर्दू के खिलाफ है, क्योंकि वह जनता की बोली नहीं है. और अगर यह सरकारी दफ्तरों में जगह पा गई तो सरकार और जनता के बीच खाई का काम करेगी

لفظ ٹھنسے رہتے ہیں انگلی پر گنے جانے والے لوگوں کی بولی ہے۔ اس وقت اچانک ہندستانی یونین میں ایسے کچھ لوگوں کا بول بالا ہے جو سنسکرت لدی ہندی پر لٹو ہیں۔ ایسی ہندی بولتے چالتے وہ بھی نہیں اور پاکستان میں شاید ایسے لوگوں کا بول بالا ہے جو فارسی عربی لدی اُردو پر لٹو ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ ہند یونین میں وہ بولی جو گھریلو بولی نہیں ہے، لوگوں پر لادی جارہی ہے اور ایسا ہی پاکستان میں کئے جانے کی کوشش ہے۔ ہوسکتا ہے کہ ہندی اُردو چاہنے والوں کی نیتیں بالکل صاف ہوں اور وہ جی سے یہ سمجھتے ہوں کہ ہندستان اور پاکستان کا اسی میں بھلا ہے۔ پر اگر وہ ذرا اپنے آپ کو اندر سے ٹٹولیں تو اُن کو آسانی سے پتہ لگ سکتا ہے کہ اُن کی اس سچی چاہ کی جڑ میں ایک زور کی نفرت موجود ہے۔ تھوڑی دیر کے لئے ہم یہ مان بھی لیں کہ ہندستان اور پاکستان کا نفع اسی میں ہے کہ ایک سنسکرت لدی ہندی میں سرکاری کام چلائے اور دوسرا فارسی عربی لدی اُردو میں، تب بھی ہم دونوں کو یہی صلاح دیں گے کہ وہ اس اچھی چیز سے ابھی بچے رہیں، جیسے حلوہ طاقت ور چیز ہوتے ہوئے بھی بیمار کو دینے سے اُس کو نقصان ہی کرتا ہے۔ ویسے ہی یہ ہندی اور اُردو جن کو ہم نے دلیل کی خاطر اچھا مان لیا ہے، دونوں کا نقصان ہی کریں گی کیونکہ دونوں اس وقت زور کی نفرت کی بیمار ہیں۔

ہم ہندی اردو نہیں اونچی ہندی اردو کے خلاف ہیں کیونکہ وہ جنتا کی بولی نہیں ہے۔ اور اگر یہ سرکاری دفتروں میں جگہ پاگئی تو سرکار اور جنتا کے بیچ کھائی کا کام کرے گی

और जनराज जैसी चीज़ से हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों बहुत दूर पड़ जायेंगे.

हिन्दी, हिंदुस्तानी ही है अगर उसमें संस्कृत लफ़्ज़ न ठूंसे गये हों और काम मे आने वाले लफ़्ज़ निकाले न गए हों. यही बात उर्दू के लिए भी कही जा सकती है. हिंदुस्तानी बोली और नागरी उर्दू दोनों लिखावटों की ज़रूरत पर हम कई बार लिख चुके हैं. इस वक़्त तो हम उन दोनों सवालों का जवाब देना चाहते हैं जो हाल में किसी पत्र मे हमारी आंख के सामने आए हैं. एक यह कि अब पाकिस्तान बन गया यानी मुसलमानों का बँटवारा हो गया तो उर्दू लिखावट कैसी. दूसरा यह कि बंगाली, गुजराती, तामिल, तैलगू हिंदुस्तानी यूनियन की सारी बोलियाँ संस्कृत प्रधान हिंदी ही कुल हिंद सरकारी दफ़्तरों की बोली होनी चाहिये.

पहले सवाल के जवाब मे हम यह कहना चाहते हैं कि उर्दू लिखावट सारे हिंदुस्तान के मुसलमानों की न कभी रही और न अब है. सी. पी. के ज़्यादा मुसलमान नागरी लिखावट में उर्दू की चिट्ठियाँ लिखते हैं. गवालियर राज की सरकारी लिखावट नागरी है. पर इबारत मे ऊंचे दरजे की उर्दू मिलेगी. गुजरात, करनाटक, तामिलनाद, उड़ीसा, बंगाल के बहुत से मुसलमान उर्दू लिखावट, बिलकुल नहीं जानते. वह गुजराती, तामिल, उड़िया और बंगला लिखावटों मे अपने काम करते हैं. ठीक इसी तरह से बहुत से हिंदू नागरी लिखावट नहीं जानते. यही वजह है कि हिंदी की कई धर्म पुस्तकें उर्दू लिखावट मे छपी हुई मिलती हैं. इतना ही

اور جن راج جیسی چیز سے ہندستان اور پاکستان دونوں بہت دور پڑ جائیں گے۔

ہندی، ہندستانی ہی ہے اگر اس میں سنسکرت لفظ نہ ٹھونسے گئے ہوں اور کام میں آنے والے لفظ نکالے نہ گئے ہوں۔ یہی بات اردو کے لئے بھی کہی جا سکتی ہے۔ ہندستانی بولی اور ناگری اردو دونوں لکھاوٹوں کی ضرورت پر ہم کئی بار لکھ چکے ہیں۔ اس وقت تو ہم ان دونوں سوالوں کا جواب دینا چاہتے ہیں جو حال میں کسی پتر میں ہماری آنکھ کے سامنے آئے ہیں۔ ایک یہ کہ اب پاکستان بن گیا یعنی مسلمانوں کا بٹوارہ ہو گیا تو اردو لکھاوٹ کیسی۔ دوسرا یہ کہ بنگالی، گجراتی، تامل، تیلگو ہندستانی یونین کی ساری بولیاں سنسکرت پردھان ہندی ہی کل ہند سرکاری دفتروں کی بولی ہونی چاہیے۔

پہلے سوال کے جواب میں ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ اردو لکھاوٹ سارے ہندستان کے مسلمانوں کی نہ کبھی رہی اور نہ اب ہے۔ سی پی کے زیادہ مسلمان ناگری لکھاوٹ میں اردو کی چٹھیاں لکھتے ہیں۔ گوالیر راج کی سرکاری لکھاوٹ ناگری ہے۔ پر عبارت میں اونچے درجے کی اردو ملے گی۔ گجرات، کرناٹک، تامل ناد، اڑیسہ، بنگال کے بہت سے مسلمان اردو لکھاوٹ بالکل نہیں جانتے۔ وہ گجراتی، تامل، اڑیا اور بنگلہ لکھاوٹوں میں اپنے کام کرتے ہیں۔ ٹھیک اسی طرح سے بہت سے ہندو ناگری لکھاوٹ نہیں جانتے۔ یہی وجہ ہے کہ ہندی کی کئی دھرم پستکیں اردو لکھاوٹ میں چھپی ہوئی ملتی ہیں۔ اتنا

तर उर्दू में ही होता था और हो रहा है थोड़े शब्दों में हमारा कहना यह है कि उर्दू लिखावट गुजराती बंगला लिखावटों की तरह हिंदुस्तान की एक लिखावट बन गई है. वह हिंदू या मुसलमानी लिखावट नहीं समझी जा सकती. लिखावटों का कोई धर्म नहीं होता. ए. बी. सी. डी. अंग्रेजी लिखावट भी नहीं कही जाती, ईसाई लिखावट तो वह किसी तरह भी नहीं. उसका नाम है रूमी लिखा-लिखावट तो वह किसी तरह भी नहीं. उसका नाम है रूमी लिखा-
वट और तुरकी के उसे अपना लेने से वह रूमी लिखावट ही बनी रहेगी. मतलब यह कि यह समझना भूल से खाली नहीं कि उर्दू लिखावट मुसलमानों की है. असल में इसका नाम फारसी लिखा-वट है और हिंदुस्तान इस को मुद्दत से अपनाए हुए हैं. नागरी लिखावट खुद ब्राह्मी लिखावट का मँजा हुआ रूप है. इसलिये यह दलील पोच दलील है कि हिंदुस्तान के बँटवारे के बाद उर्दू लिखावट की क्या जरूरत. इस को जरूरत क्यों है, यह हम जुलाई अंक में लिख चुके हैं. दोबारा लिखने की जरूरत नहीं.

दूसरे सवाल के जवाब में हमें यह कहना है कि जिन संस्कृत प्रधान गुजराती, करनाटकी, तामिल, बंगला की दोहाई पीटी जाती है वह भी संस्कृत प्रधान नहीं हैं. और जितने अंश में वह संस्कृत प्रधान हैं उतने अंश में संस्कृत प्रधान हिन्दी ही जनता की बोली रह गई है. संस्कृत प्रधान 'हिन्दी गुजरात करनाटक, मद्रास, बङ्गाल के इने गिने आदमी ही समझ सकते हैं. और वहाँ की आम जनता भी समझ सकती है. वजह यह है कि जो हिन्दी, उर्दू या हिन्दुस्तानी पूरब, उत्तर, पच्छिम, दक्खिन में पहुँची वह [illegible] के जरिये या मामूली मुसलमानों के जरिये और

تر اردو میں ہی ہوتا تھا اور ہو رہا ہے ۔ تھوڑے شبدوں میں ہمارا کہنا یہ ہے کہ اردو لکھاوٹ گجراتی بنگلہ لکھاوٹوں کی طرح ہندستان کی ایک لکھاوٹ بن گئی ہے ۔ وہ ہندو یا مسلمانی لکھاوٹ نہیں سمجھی جا سکتی ۔ لکھاوٹوں کا کوئی دھرم نہیں ہوتا ۔ اے ۔ بی ۔ سی ۔ ڈی ۔ انگریزی لکھاوٹ بھی نہیں کہی جاتی عیسائی لکھاوٹ تو وہ کسی طرح بھی نہیں ۔ اس کا نام ہے رومی لکھاوٹ اور ترکی کے اسے اپنا لینے سے وہ رومی لکھاوٹ ہی بنی رہے گی مطلب یہ کہ یہ سمجھنا بھول سے خالی نہیں کہ اردو لکھاوٹ مسلمانوں کی ہے ۔ اصل میں اس کا نام فارسی لکھاوٹ ہے اور ہندستان اس کو مدت سے اپنائے ہوئے ہے ۔ ناگری لکھاوٹ خود براہمی لکھاوٹ کا منجا ہوا روپ ہے ۔ اس لیے یہ دلیل پوچ دلیل ہے کہ ہندستان کے بٹوارے کے بعد اردو لکھاوٹ کی کیا ضرورت ۔ اس کی ضرورت کیوں ہے، یہ ہم جولائی انک میں لکھ چکے ہیں ۔ دوبارہ لکھنے کی ضرورت نہیں ۔

دوسرے سوال کے جواب میں ہمیں یہ کہنا ہے کہ جن سنسکرت پردھان گجراتی، کرناٹکی، تامل، بنگلہ کی دُہائی پیٹی جاتی ہے، وہ بھی سنسکرت پردھان نہیں ہیں ۔ اور جتنے انش میں وہ سنسکرت پردھان ہیں اتنے انش میں سنسکرت پردھان ہندی ہی جنتا کی بولی رہ گئی ہے ۔ سنسکرت پردھان ہندی گجرات، کرناٹک، مدراس، بنگال کے اِنے گِنے آدمی ہی سمجھ سکتے ہیں ۔ اور وہاں کی عام جنتا بھی سمجھ سکتی ہے ۔ وجہ یہ ہے کہ جو ہندی، اردو یا ہندستانی پورب، اُتر، پچھم، دکھن میں پہنچی وہ پہنچی مارواڑیوں کے ذریعے یا معمولی مسلمانوں کے ذریعے اور

वह न संस्कृत ठुसी हिन्दी जानते थे और न फारसी अरबी ठुसी उदू॔. मारवाड़ी पहुँचे थे व्योपारी की हैसियत से. लोग उनसे उधार लेते थे और अपने आप साहूकारी बोली सीखते थे. मुसलमान पहुँचे थे सिपाही की हैसियत से इसलिये सरकारी बोली के नाम पर हिन्दुस्तानी सीखनी पड़ती थी. उन दिनो हिन्दी उदू॔ का यह भेद न था. हिन्दुस्तान भर मे समझी जाने वाली एक बोली हिन्दुस्तानी थी. उसका यही नाम भी था. और इसी लिये फोर्ट विलयम कालेज मे और बोलियो के साथ सिर्फ हिन्दुस्तानी को जगह मिली थी, हिन्दी और उदू॔ को नही. यह दोनो अंगरेजो ने फूट डालने के लिये पीछे ईजाद की.

हम एक लिखा सबूत देकर इस लेख को खतम करते है. वह यह है कि फोर्ट विलयम कालेज की लाइब्रेरी की मोहर पर चार लिखावटे है—अंगरेजी, बंगला, नागरी और उदू॔. बंगला में लिखा है 'पुस्तकालय' और नागरी और उदू॔ मे लिखा है 'किताब घर'

और बातें फिर.

—भगवानदीन

وہ نہ سنسکرت ٹھوسی ہندی جانتے تھے اور نہ فارسی عربی ٹھوسی اردو۔ مارواڑی پہنچے تھے بیوپاری کی حیثیت سے۔ لوگ ان سے ادھار لیتے تھے اور اپنے آپ ساہوکاری بولی سیکھتے تھے۔ مسلمان پہنچے تھے سپاہی کی حیثیت سے اس لئے سرکاری بولی کے نام پر ہندستانی سیکھنی پڑتی تھی۔ ان دنوں ہندی اردو کا یہ بھید نہ تھا۔ ہندستان بھر میں سمجھی جانے والی ایک بولی ہندستانی تھی۔ اس کا یہی نام بھی تھا اور اسی لئے فورٹ ولیم کالج میں اور بولیوں کے ساتھ صرف ہندستانی کو جگہ ملی تھی، ہندی اور اردو کو نہیں۔ یہ دونوں انگریزوں نے پھوٹ ڈالنے کے لئے پیچھے ایجاد کیں۔

ہم ایک لکھا ثبوت دے کر اس لیکھ کو ختم کرتے ہیں۔ وہ یہ ہے کہ فورٹ ولیم کالج کی لائبریری کی مہر پر چار لکھاوٹیں ہیں — انگریزی، بنگلہ، ناگری اور اردو۔ بنگلہ میں لکھا ہے 'پستکالیہ' اور ناگری اور اردو میں لکھا ہے 'کتاب گھر'

اور باتیں پھر۔

— بھگوان دین

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्चो—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मज़र अली सोख्ता श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

— ۰ —

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو، وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندر لال، خزانچی — ڈاکٹر تارا چند ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ

— ۰ —

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر —

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی ۔

بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر —

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے - فیضی، شری ایم - ایچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتہ، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی ہیں ۔

Registerd No. A 210

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों का बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دیکر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

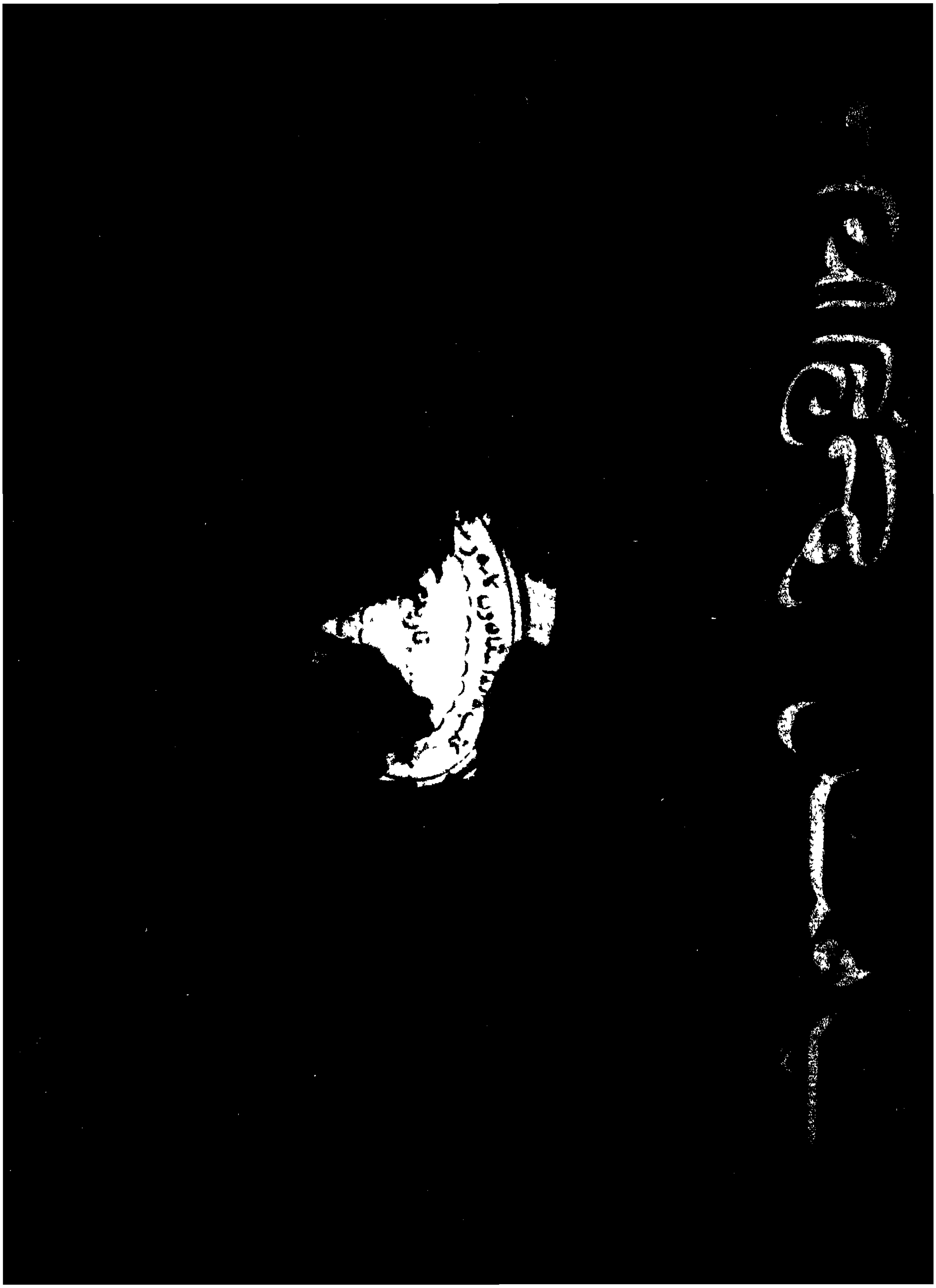
آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب آسان ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر 'نیا ہند'

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد



[illegible], [illegible], मुजफ्फर हुसैन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

नवम्बर १९५८

सफ़ा

[illegible] सुन्दर लाल، [illegible]، مظفر حسین، بشمبھرناتھ، سندر لال

نومبر ۱۹۳۸

صفحہ

[illegible] سال

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ५   नवम्बर '४८   नम्बर ५

جلد ۵   نومبر ۴۸   نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

दीवाली

(नवाब रज़ा अली ख़ाँ 'रज़ा' रामपुर)

आई दीवाली सखी, दीप घरों में जलाओ
भूमि का सुन्दर सिंगार, आज गगन को दिखाओ

(१)

सुख का समय आगया, दुख का भयो नाश आज
धरती की रचनाओं में, घिर गया आकाश आज
दिन पे है छाया हुआ, रात्रि प्रकाश आज
धर्मियों में है पुकार, लक्ष्मी पूजा को आओ

دیوالی

(نواب رضا علی خاں رضاؔ، رامپور)

آئی دیوالی سکھی، دیپ گھروں میں جلاؤ
بھومی کا سندر سنگار، آج گگن کو دکھاؤ

(۱)

سکھ کا سمے آگیا، دکھ کا بھیو ناش آج
دھرتی کی رچناؤں میں گھر گیا آکاش آج
دن پہ ہے چھایا ہوا، راتری پرکاش آج
دھرمیوں میں ہے پکار، لکشمی پوجا کو آؤ

... दर्द और यह टीस हमारा ध्यान

ٹیس کی بات کون نہیں جانتا! یہ درد اور یہ ٹیس ہمارا دھیان

(२)

किन्तु अलग ही अजग, भाग जगायें तो क्या
अपने घरों में सखी, दीप जलायें तो क्या
रीत मनायें तो क्या, रंग रचायें तो क्या
जब लों न हृदयों में ही, सम्मति का प्रेम भाव

(३)

नित यह सम्मिलन रहे, सब की हो इच्छा यही
देश में हो एकता, कोई न हो निर्दयी
सारे जगत में अमर, गांधी की हो कीर्ती
मिल के नगर बासियो, औरों को अपना बनाओ

(४)

देसियों के सामने, प्रेम शिवाला रहे
नयनों में सुशीलता, मन में उजाला रहे
प्रेम-सुधा से भरा, समता का प्याला रहे
नष्ट हो यह दुर्दशा, चाहिये ऐसा सुभाव

(५)

आज सभी एक साथ, शुद्र ब्रह्मन मिले
मिलने को तो हैं 'रजा', सजनों से सज्जन मिले
मूल मिलन है यही, मन से यदि मन मिले
जातियों में देस की, प्रेम का हो रख रखाओ

(۲)

کنتو الگ ہی الگ، بھاگ جگائیں تو کیا
اپنے گھروں میں سکھی، دیپ جلائیں تو کیا
ریت منائیں تو کیا، رنگ رچائیں تو کیا
جب لوں نہ ہردیوں میں ہو، سمتی کا پریم بھاؤ

(۳)

نت یہ سمیلن رہے، سب کی ہو اچھا یہی
دیش میں ہو ایکتا، کوئی نہ ہو نردئی
سارے جگت میں امر، گاندھی کی ہو کیرتی
مل کے نگر باسیو، اوروں کو اپنا بناؤ

(۴)

دیشیوں کے سامنے، پریم شوالا رہے
نینوں میں سوشیلتا، من میں اجالا رہے
پریم سدھا سے بھرا، سمتا کا پیالا رہے
نشٹ ہو یہ دُردشا، چاہیے ایسا سبھاؤ

(۵)

آج سبھی ایک ساتھ، شُدر برہمن ملے
ملنے کو تو ہے 'رجا'، سجنوں سے سجن ملے
مول ملن ہے یہی، من سے یدی من ملے
جاتیوں میں دیس کی، پریم کا ہو رکھ رکھاؤ

समाज का ढाँच

(महात्मा भगवान दीन)

आदमी रूढ़ी यानी रीत रिवाजसे चिपके रह कर जो दुख पाता है वह उसको सुख जँचता है. अब कहिये, वह रूढ़ी जाल को कैसे तोड़े ?

मैंने हिन्दू धर्म न कभी अपनाया और न ठीक-ठीक जानता हूँ कि हिन्दू धर्म क्या है, पर हूँ मैं हिन्दू. मैं मुसलमान हूँ, क्योकि मैं इस्लाम के असूलो मे नावाकिफ हूँ. मैं वेदो की दुहाई पोटूँगा, क्योकि न मैंने संस्कृत पढ़ी है और न नागरी सीखी है. मैं कुरान पर जान दे सकता हूँ, क्योंकि न मैं अरबी जानता हूँ और न कुरान ही पढ़ सकता हूँ.

यह हैं जड़े, जो हमारे हिन्दुस्तानी समाज के जैयद दरख्त को सम्भाले हुए हैं. हमारी यह खासियत बन गई है और सुभीता इसमें है कि उस समाजी मशीन का पुर्ज़ा बने रहें, जो कुछ चलते नियमो, कायदो, ज़रूरतो, रिश्तेदारियो, सम्बन्धो, वहमो और न जाने क्या-क्या को जोड़-तोड़कर खड़ी कर दी गई है. हकूमत का ढाँच समाज के ढाँच से हमेशा मिलता जुलता होता है. उसके बुरे भले से भी हमें क्या लेना देना ? वह दुख देता है, दे. बुरा लगता है, लगे. हमें तो उससे चिपके रहना है. चिपके-चिपके दुख मे रस आने लगता है. मीठा-मीठा दरद और मीठी-मीठी टीस की बात कौन नहीं जानता ! यह दरद और यह टीस हमारा ध्यान

سماج کا ڈھانچ

(مہاتما بھگوان دین)

آدمی روڑھی یعنی ریت رواج سے چپکے رہ کر جو دکھ پاتا ہے وہ اُس کو سکھ جنچتا ہے۔ اب کہیے، وہ روڑھی جال کو کیسے توڑے؟

میں نے ہندو دھرم نہ کبھی اپنایا اور نہ ٹھیک ٹھیک جانتا ہوں کہ ہندو دھرم کیا ہے، پر ہوں میں ہندو، میں مسلمان ہوں، کیونکہ میں اسلام کے اصولوں سے ناواقف ہوں۔ میں ویدوں کی دہائی پیٹوں گا، کیونکہ نہ میں نے سنسکرت پڑھی ہے اور نہ ناگری سیکھی ہے۔ میں قرآن پر جان دے سکتا ہوں، کیونکہ نہ میں عربی جانتا ہوں اور نہ قرآن ہی پڑھ سکتا ہوں۔

یہ ہیں جڑیں، جو ہمارے ہندستانی سماج کے جیّد درخت کو سنبھالے ہوئے ہیں۔ ہماری یہ خاصیت بن گئی ہے اور سبھیتا اس میں ہے کہ اُس سماجی مشین کا پرزا بنے رہیں۔ جو کچھ چلتے نیموں، قاعدوں، ضرورتوں، رشتہ داریوں، سمبندھوں، وہموں اور نہ جانے کیا کیا کو جوڑ توڑ کر کھڑی کر دی گئی ہے۔ حکومت کا ڈھانچ سماج کے ڈھانچ سے ہمیشہ ملتا جلتا ہوتا ہے۔ اُس کے بُرے بھلے سے بھی ہمیں کیا لینا دینا؟ وہ دکھ دیتا ہے دے۔ برا لگتا ہے، لگے۔ ہمیں تو اُس سے چپکے رہنا ہے۔ چپکے چپکے دکھ میں رس آنے لگتا ہے۔ میٹھا میٹھا درد اور میٹھی میٹھی ٹیس کی بات کون نہیں جانتا! یہ درد اور یہ ٹیس ہمارا دھیان

खींचती हैं, पर हम उनको हटाने की कभी नहीं सोचते. इस हालत को हम 'चिपकाव' कहते हैं और अंगरेज इसको कंजरवेटिज्म नाम देते हैं. पंडित लोग इसका अनुवाद रूढ़ी पालकता करते हैं. चिपकाव का यह जटाधारी बरगद का पेड़ हमेशा हरा रहता है. मुरझाना और सूखना तो जानता ही नहीं.

बदलाव यानी बदलते रहना हर चीज और हर प्रानी की जान है. बदलता यह चिपकाव भी है. नई हालतों मे, नये विचार, नये तरीक़े चुपके-चुपके अपनाता रहता है. हथौड़ी नई, चोटें भी नई होंगी. पर वही हाल कि चोटी रहेगी, फिर चाहे रहे एक बाल. वैष्णव धर्म की चोटी पहचान है, गाय के खुर जितनी मोटी चोटी की जगह एक बाल वाली चोटी के आ जाने का नाम है बढ़वारी, जिसे पंडित लोग कहते हैं प्रगति और जिसे आज के हिन्दुस्तानी सरकारी पुरोहित और मुल्ला कहेंगे प्रोग्रेस.

बढ़वारी मे टांग जरूरी, और वह होनी, कम से कम, चाहियें दो. समाज की दो टाँगें हैं—सरकार और पैसा. पैसे के बिना खड़ी रह जाये इकटंगी सरकार. सरकार के बिना पैसे बेकार. पैसे को जोखम ही जोखम बिना चौकीदार. यों यह दोनों बहुत क़रीबी रिश्तेदार और नागरों की ज़िन्दगी का इन ही पर दारोमदार. सरकार, यानी समाज का सर, यानी पुरोहित. हाकिम और मुनसिफ. पैसा, यानी समाज का धड़ और टांग, यानी अनाज, कपड़ा और मकान. अब समाज पूँजीवादी हो या समाजवादी, पैसे को, अपनी जान बचाने के लिये, सरकार का मुंह ताकना पड़ेगा.

کھینچتی ہیں، پر ہم ان کو ہٹانے کی کبھی نہیں سوچتے۔ اس حالت کو ہم 'چپکاؤ' کہتے ہیں اور انگریز اس کو کنزرویٹزم نام دیتے ہیں۔ پنڈت لوگ اس کا انوواد روڑھی پالکتا کرتے ہیں۔ چپکاؤ کا یہ جٹا دھاری برگد کا پیڑ ہمیشہ ہرا رہتا ہے۔ مرجھانا اور سوکھنا تو جانتا ہی نہیں۔

بدلاؤ یعنی بدلتے رہنا ہر چیز اور ہر پرانی کی جان ہے۔ بدلتا یہ چپکاؤ بھی ہے۔ نئی حالتوں میں، نئے وچار، نئے طریقے چپکے چپکے اپناتا رہتا ہے۔ ہتھوڑی نئی، چوٹیں بھی نئی ہوں گی۔ پر وہی حال کہ چوٹی رہے گی، پھر چاہے رہے ایک بال۔ وشنو دھرم کی چوٹی پہچان ہے، گائے کے کھر جتنی موٹی چوٹی کی جگہ ایک بال والی چوٹی کے آجانے کا نام ہے بڑھواری، جسے پنڈت لوگ کہتے ہیں پرگتی اور جسے آج کے ہندستانی سرکاری پروہت اور مُلا کہیں گے پروگریس۔

بڑھواری میں ٹانگ ضروری، اور وہ ہونی، کم سے کم، چاہئیں دو۔ سماج کی دو ٹانگیں ہیں — سرکار اور پیسہ۔ پیسے کے بنا کھڑی رہ جائے اک ٹنگی سرکار۔ سرکار کے بنا پیسے بیکار۔ پیسے کو جوکھم ہی جوکھم بنا چوکیدار۔ یوں یہ دونوں بہت قریبی رشتے دار اور ناگروں کی زندگی کا انہی پر دارو مدار۔ سرکار، یعنی سماج کا سر، یعنی پروہت، حاکم اور منصف۔ پیسہ، یعنی سماج کا دھڑ اور ٹانگ، یعنی اناج، کپڑا اور مکان۔ اب سماج پونجی وادی ہو یا سماج وادی، پیسے کو، اپنی جان بچانے کے لئے، سرکار کا منہ تاکنا پڑے گا۔ سماج سرکار سہی، پر جب پیٹ میں چوہے کلبلاتے ہوں تو سر

खुले न रहते, कुलबुली मच उठती है. यानी कोई सरकार बिना पैसा ऐंठ नहीं सकती और ऐंठ ही तो आज की सरकार या सरकारों की शान है. मतलब यह कि पैसा सरकार को देखता है और सरकार पैसे को.

अब बन ही जायेंगे, दो दल—पैसुआ और बे पैसुआ. पैसुए फँसा लेते हैं अपने को जमीन के खन्डर में, कारखानों के चक्कर में, तिजारत के भंवर में, साहूकारी के ठठर में. अब बनेंगे पैसुए के दो दल,—बढ़-पैसुए और छुट-पैसुए. मतलब यह कि समाज तरह-तरह के विचारों का बनता चला जायेगा और एक विचार की टक्कर दूसरे विचार से होने लगेगी. टक्कर हुई और सरकार की बन आई. तरह-तरह के कानून एहरन पर गढ़ने शुरू हो जायेंगे. सरकार में भी दलबन्दियाँ हो जायेंगी और फिर समाज समाजी जीवन का आनन्द खो बैठेगा. अब उठेगा सुधार का शोर. सुधार, यानी सरकार का बदलाव; सुधार, यानी पैसे का ठीक बँटवारा; यानी कुछ दिन के लिये मार काट. यानी अराजकता. इस अराजकता में से निकलेगा राज, जिसे अंगरेज कहता है स्टेट.

राज किसे कहते हैं ? यह बताना टेढ़ी खीर है. सब अपनी अपनी हाँकते हैं. इसको समझाने में सब ने अपने राग अलापे हैं, पर थोड़े में यहाँ यह समझ लीजिये कि राज (स्टेट) वह राजनीतिक स्वाधीन इकाई है, जो किसी देश की तरफ से, किसी और राज के दबाव के बिना सब कुछ कर सके.

अब सरकार और पैसा दोनों गिरते पड़ते पनपते रहते हैं, बदलते रहते हैं, विकसते रहते हैं और इस पनपने-बदलने-विकसने

کھلے نہ رہتے، کلبلی مچ اُٹھتی ہے۔ یعنی کوئی سرکار بنا پیسہ اینٹھ نہیں سکتی اور اینٹھ ہی تو آج کی سرکار یا سرکاروں کی شان ہے۔ مطلب یہ کہ پیسہ سرکار کو دیکھتا ہے اور سرکار پیسے کو۔

اب بن ہی جائیں گے، دو دل — پیسوا اور بے پیسوا۔ پیسوے پھنسا لیتے ہیں اپنے کو زمین کے کھنڈر میں، کارخانوں کے چکر میں، تجارت کے بھنور میں، ساہوکاری کے ٹھٹھر میں۔ اب بنیں گے پیسوے کے دو دل — بڑھ پیسوے اور چھٹ پیسوے۔ مطلب یہ کہ سماج طرح طرح کے وچاروں کا بنتا چلا جائے گا اور ایک وچار کی ٹکر دوسرے وچار سے ہونے لگے گی۔ ٹکر ہوئی اور سرکار کی بن آئی۔ طرح طرح کے قانون اہرن پر گڑھنے شروع ہو جائیں گے۔ سرکار میں بھی دل بندیاں ہو جائیں گی اور پھر سماج سماجی جیون کا آنند کھو بیٹھے گا۔ اب اُٹھے گا سدھار کا شور۔ سدھار یعنی سرکار کا بدلاؤ، سدھار یعنی پیسے کا ٹھیک بٹوارہ، یعنی کچھ دن کے لئے مار کاٹ، یعنی اَراجکتا۔ اس اَراجکتا میں سے نکلے گا راج، جسے انگریز کہتا ہے اسٹیٹ۔

راج کسے کہتے ہیں؟ یہ بتانا ٹیڑھی کھیر ہے۔ سب اپنی اپنی ہانکتے ہیں۔ اس کو سمجھانے میں سب نے اپنے راگ الاپے ہیں، پر تھوڑے میں یہاں یہ سمجھ لیجئے کہ راج (اسٹیٹ) وہ راجنیتک سوادھین اکائی ہے، جو کسی دیش کی طرف سے، کسی اور راج کے دباؤ کے بنا سب کچھ کر سکے۔

اب سرکار اور پیسہ دونوں گرتے پڑتے پنپتے رہتے ہیں، بدلتے رہتے ہیں، وکستے رہتے ہیں اور اس پنپنے بدلنے وکسنے

खींचती हैं, पर हम उनको हटाने की कभी नहीं सोचते. इस हालत
को हम 'चिपकाव' कहते हैं और अंगरेज़ इसको कंज़रवेटिज़्म
नाम देते हैं. पंडित लोग इसका अनुवाद रूढ़ी पालकता करते हैं.
चिपकाव का यह जटाधारी बरगद का पेड़ हमेशा हरा रहता है.
मुरझाना और सूखना तो जानता ही नहीं.

बदलाव यानी बदलते रहना हर चीज़ और हर प्राणी की जान
है. बदलता यह चिपकाव भी है. नई हालतों में, नये विचार, नये
तरीक़े चुपके-चुपके अपनाता रहता है. हथौड़ी नई, चोटें भी नई
होंगी. पर वही हाल कि चोटी रहेगी, फिर चाहे रहे एक बाल. वैष्णव
धर्म की चोटी पहचान है, गाय के खुर जितनी मोटी चोटी की
जगह एक बाल वाली चोटी के आ जाने का नाम है बढ़वारी,
जिसे पंडित लोग कहते हैं प्रगति और जिसे आज के हिन्दुस्तानी
सरकारी पुरोहित और मुल्ला कहेंगे प्रोग्रेस.

बढ़वारी में टांग ज़रूरी, और वह होनी. कम से कम, चाहियें
दो. समाज की दो टाँगें हैं—सरकार और पैसा. पैसे के बिना
खड़ी रह जाये इकटंगी सरकार. सरकार के बिना पैसे बेकार.
पैसे को जोखम ही जोखम बिना चौकीदार. यों यह दोनों बहुत
क़रीबी रिश्तेदार और नागरों की ज़िन्दगी का इन ही पर दारो-
मदार. सरकार, यानी समाज का सर, यानी पुरोहित, हाकिम और
मुनसिफ़. पैसा, यानी समाज का धड़ और टांग, यानी अनाज,
कपड़ा और मकान. अब समाज पूँजीवादी हो या समाजवादी, पैसे
को, अपनी जान बचाने के लिये, सरकार का मुंह ताकना पड़ेगा.
समाज सरकार सही, पर जब पेट में चूहे कुलबुलाते हों तो सर में,

کھینچتی ہیں، پر ہم ان کو ہٹانے کی کبھی نہیں سوچتے۔ اس حالت کو ہم
'چپکاؤ' کہتے ہیں اور انگریز اس کو کنزرویٹزم نام دیتے ہیں۔ پنڈت لوگ
اس کا انوواد روڑھی پالکتا کرتے ہیں۔ چپکاؤ کا یہ جٹا دھاری برگد کا پیڑ ہمیشہ
ہرا رہتا ہے۔ مرجھانا اور سوکھنا تو جانتا ہی نہیں۔

بدلاؤ یعنی بدلتے رہنا ہر چیز اور ہر پرانی کی جان ہے۔ بدلتا
یہ چپکاؤ بھی ہے۔ نئی حالتوں میں، نئے وچار، نئے طریقے چپکے چپکے اپناتا
رہتا ہے۔ ہتھوڑی نئی، چوٹیں بھی نئی ہوں گی۔ پر وہی حال کہ چوٹی
رہے گی، پھر چاہے رہے ایک بال۔ وشنو دھرم کی چوٹی پہچان ہے،
گائے کے کھر جتنی موٹی چوٹی کی جگہ ایک بال والی چوٹی کے آجانے کا
نام ہے بڑھواری، جسے پنڈت لوگ کہتے ہیں پرگتی اور جسے آج کے
ہندستانی سرکاری پروہت اور ملا کہیں گے پروگریس۔

بڑھواری میں ٹانگ ضروری، اور وہ ہونی، کم سے کم، چاہئیں
دو۔ سماج کی دو ٹانگیں ہیں — سرکار اور پیسہ۔ پیسے کے بنا
کھڑی رہ جائے اک ٹنگی سرکار۔ سرکار کے بنا پیسے بیکار۔
پیسے کو جوکھم ہی جوکھم بنا چوکیدار۔ یوں یہ دونوں بہت
قریبی رشتے دار اور ناگروں کی زندگی کا انہی پر دارومدار۔
سرکار، یعنی سماج کا سر، یعنی پروہت، حاکم اور
منصف۔ پیسہ، یعنی سماج کا دھڑ اور ٹانگ، یعنی اناج،
کپڑا اور مکان۔ اب سماج پونجی وادی ہو یا سماج وادی،
پیسے کو، اپنی جان بچانے کے لیے، سرکار کا منہ تاکنا
پڑے گا۔ سماج سرکار سہی، پر جب پیٹ میں چوہے کلبلاتے ہوں تو سر میں،

खुँटे न रहते, खुलबुली मच उठती है. यानी कोई सरकार बिना पैसा ऐंठ नहीं सकती और ऐंठ ही तो आज की सरकार या सरकारों की शान है. मतलब यह कि पैसा सरकार को देखता है और सरकार पैसे को.

अब बन ही जायेंगे, दो दल—पैसुआ और बे पैसुआ. पैसुए फँसा लेते हैं अपने को जमीन के खन्दर में, कारखानों के चक्कर में, तिजारत के भंवर में, साहूकारी के ठठर में. अब बनेंगे पैसुए के दो दल,—बढ़-पैसुए और छुट-पैसुए. मतलब यह कि समाज तरह-तरह के विचारों का बनता चला जायेगा और एक विचार की टक्कर दूसरे विचार से होने लगेगी. टक्कर हुई और सरकार की बन आई. तरह-तरह के क़ानून एहरन पर गढ़ने शुरू हो जायेंगे. सरकार में भी दलबन्दियाँ हो जायेंगी और फिर समाज समाजी जीवन का आनन्द खो बैठेगा. अब उठेगा सुधार का शोर. सुधार, यानी सरकार का बदलाव, सुधार, यानी पैसे का ठीक बँटवारा; यानी कुछ दिन के लिये मार काट, यानी अराजकता. इस अराजकता में से निकलेगा राज, जिसे अंगरेज कहता है स्टेट.

राज किसे कहते हैं? यह बताना टेढ़ी खीर है. सब अपनी अपनी हाँकते हैं. इसको समझाने में सब ने अपने राग अलापे हैं, पर थोड़े में यहाँ यह समझ लीजिये कि राज (स्टेट) वह राजनीतिक स्वाधीन इकाई है, जो किसी देश की तरफ से, किसी और राज के दबाव के बिना सब कुछ कर सके.

अब सरकार और पैसा दोनों गिरते पड़ते पनपते रहते हैं, बदलते रहते हैं, बिकसते रहते हैं और इस पनपने-बदलने-बिकसने

کھونٹے نہ رہتے، کلبلی مچ اٹھتی ہے. یعنی کوئی سرکار بنا پیسہ اینٹھ نہیں سکتی اور اینٹھ ہی تو آج کی سرکار یا سرکاروں کی شان ہے. مطلب یہ کہ پیسہ سرکار کو دیکھتا ہے اور سرکار پیسے کو.

اب بن ہی جائیں گے، دو دل— پیسوا اور بے پیسوا. پیسوئے پھنسا لیتے ہیں اپنے کو زمین کے کھنڈر میں، کارخانوں کے چکر میں، تجارت کے بھنور میں، ساہوکاری کے ٹھٹھر میں. اب بنیں گے پیسوئے کے دو دل،— بڑھ پیسوئے اور چھٹ پیسوئے. مطلب یہ کہ سماج طرح طرح کے وچاروں کا بنتا چلا جائے گا اور ایک وچار کی ٹکر دوسرے وچار سے ہونے لگے گی. ٹکر ہوئی اور سرکار کی بن آئی. طرح طرح کے قانون اہرن پر گڑھنے شروع ہو جائیں گے. سرکار میں بھی دل بندیاں ہو جائیں گی اور پھر سماج سماجی جیون کا آنند کھو بیٹھے گا. اب اٹھے گا سدھار کا شور. سدھار یعنی سرکار کا بدلاؤ، سدھار، یعنی پیسے کا ٹھیک بٹوارہ، یعنی کچھ دن کے لئے مار کاٹ، یعنی اراجکتا. اس اراجکتا میں سے نکلے گا راج، جسے انگریز کہتا ہے اسٹیٹ.

راج کسے کہتے ہیں؟ یہ بتانا ٹیڑھی کھیر ہے. سب اپنی اپنی ہانکتے ہیں. اس کو سمجھانے میں سب نے اپنے راگ الاپے ہیں، پر تھوڑے میں یہاں یہ سمجھ لیجئے کہ راج (اسٹیٹ) وہ راجنیتک سوادھین اکائی ہے، جو کسی دیش کی طرف سے، کسی اور راج کے دباؤ کے بنا سب کچھ کر سکے.

اب سرکار اور پیسہ دونوں گرتے پڑتے پنپتے رہتے ہیں، بدلتے رہتے ہیں، بکستے رہتے ہیں اور اس پنپنے بدلنے وکسنے

का किसी को पता नहीं चलता. इसको कहते हैं उठान या विकास. यह उठान (विकास) होता है तब, जब वह लोग, जिनके हाथ में सरकार की बागडोर होती है, काफी समझदार और साफ़ नीयत हों और उनकी निगाहें अपनी तरफ़ न रह कर उनकी तरफ़ हों, जिनकी देख-भाल की ज़िम्मेदारी उन्होंने अपने सिर ले रखी है. अगर हुकूमत के मुखिया वैसे न हुए और समय समय पर बदलाव न करते रहे, तो मामला अन्दर ही अन्दर सुलगता रहता है और फिर एक दम उथल पुथल मच जाती है. इसको कहते हैं उफान यानी क्रान्ति या रेवोल्यूशन.

उफान क्यों उठते हैं? क्या करना चाहते हैं? जो कुछ करना चाहते हैं उसको किस तरह करना चाहते हैं? इन सवालों के जवाब यह हैं—(१) उठने का यह जवाब है कि जब सरकार और पैसे की कड़ी आलोचना होने लगती है और बदलाव होता नहीं है, तब जानता किसी ज़ोरदार नेता की मातहती मे बदलाव का काम अपने हाथ में ले लेती है. जैसा सन १९२० में हिन्दुस्तान में गांधी जी की मातहती में हुआ. (२) क्या चाहने का यह जवाब है कि कोई तहरीक यह बताये बिना उठती ही नहीं कि वह क्या चाहती है? हर तहरीक की चाह यही होती है कि सरकार अपने रवैये बदले या हट कर औरों को जगह दे. जैसा, सन् १९४२ में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के ज़रिये कांग्रेस ने अंग्रेज़ी सरकार को चुनौती दी. (३) किस तरह सरकार या सरकारें बदलने में अहिन्सा से लेकर घोर हिन्सा तक के सब तरीक़े शामिल हैं. जैसे हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी सरकार के ख़िलाफ़ सत्याग्रह से काम लिया गया और

کا کسی کو پتہ نہیں چلتا. اس کو کہتے ہیں اُٹھان یا وکاس. یہ اُٹھان (وکاس) ہوتا ہے تب، جب وہ لوگ، جن کے ہاتھ میں سرکار کی باگ ڈور ہوتی ہے، کافی سمجھدار اور صاف نیت ہوں اور اُن کی نگاہیں اپنی طرف نہ رہ کر اُن کی طرف ہوں، جن کی دیکھ بھال کی ذمہ داری اُنھوں نے اپنے سر لے رکھی ہے. اگر حکومت کے مکھیا ویسے نہ ہوئے اور سمے سمے پر بدلاؤ نہ کرتے رہے، تو معاملہ اندر ہی اندر سلگتا رہتا ہے اور پھر ایک دم اُتھل پتھل مچ جاتی ہے. اس کو کہتے ہیں اُپھان یعنی کرانتی یا ریولیوشن.

اُپھان کیوں اُٹھتے ہیں؟ کیا کرنا چاہتے ہیں؟ جو کچھ کرنا چاہتے ہیں اس کو کس طرح کرنا چاہتے ہیں؟ ان سوالوں کے جواب یہ ہیں— (۱) اُٹھنے کا یہ جواب ہے کہ جب سرکار اور پیسے کی کڑی آلوچنا ہونے لگتی ہے اور بدلاؤ ہوتا نہیں ہے تب جنتا کسی زوردار نیتا کی ماتحتی میں بدلاؤ کا کام اپنے ہاتھ میں لے لیتی ہے. جیسا ۱۹۲۰ء میں ہندستان میں گاندھی جی کی ماتحتی میں ہوا. (۲) کیا چاہنے کا یہ جواب ہے کہ کوئی تحریک یہ بتائے بنا اُٹھتی ہی نہیں کہ وہ کیا چاہتی ہے؟ ہر تحریک کی چاہ یہی ہوتی ہے کہ سرکار اپنے رویے بدلے یا ہٹ کر اوروں کو جگہ دے. جیسا ۱۹۴۲ء میں 'بھارت چھوڑو' پرستاؤ کے ذریعے کانگریس نے انگریزی سرکار کو چنوتی دی. (۳) کس طرح سرکار یا سرکاریں بدلنے میں اہنسا سے لے کر گھور ہنسا تک کے سب طریقے شامل ہیں. جیسے ہندستان میں انگریزی سرکار کے خلاف ستیہ گرہ سے کام لیا گیا اور

इण्डोनेशिया में डच सरकार के खिलाफ तलवार काम में लाई गई. उफान को अच्छी तरह समझने के लिये जानता और जनराज को समझना निहायत जरूरी है. यह जनराज की इच्छा ही होती है, जो समाज में जान बनाये रखती है और समाज को समय के मुताबिक़ बनाये रखने में मदद देती रहती है.

आज कल की तहरीक (आन्दोलन) की जड़ मिलेगी ठाकुर-शाही में. पैसाशाही ने उसी की जगह ली है. मुग़लराज के बिखरने पर भारत में एक राज का अन्त हो गया. उसी के साथ साथ तिजारत का शीराज़ा बिखर गया. सूबे सूबे में आपाधापी मच गई. सबको अपनी अपनी पड़ गई. एक सरकार न रहने से आने जाने के साधन, सड़कों नदियों की सँभाल और देखभाल बन्द हो गई, यानी तिजारत की नसें कट गईं, समाज में खलबली मचे मचे कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सीधे ना सीधे राज संभाल लिया. वह थी विदेशी कम्पनी और नीयत की बेहद ख़राब. सन् १८५७ में उसको हटना पड़ा और राज संभाला बरतानिया की रानी ने और उसके बाद उसके बेटे पोते ने, पर, विदेशी राज नीयत ठीक न रख सका और सन १९०५ से सन १९४७ तक भारत ने जोर लगा कर उसको भी उखाड़ फेंका और अब हिन्दी क़ौमी कांग्रेस राज की बागडोर संभाले हुए है. राज और पैसे की हालत अब भी जैसी चाहिये, वैसी नहीं है यानी जनराज अभी क़ायम नहीं हो पाया. उठान या विकास चल रहा है, पर पूरी चाल से नहीं. अगर यही चाल रही, तो उफान आ जायेगा.

कांग्रेस के हाथ में बागडोर थमाई गई, क्योंकि वह धर्म

انڈونیشیا میں ڈچ سرکار کے خلاف تلوار کام میں لائی گئی. اُپھان کو اچھی طرح سمجھنے کے لئے جنتا اور جنراج کو سمجھانا نہایت ضروری ہے. یہ جنراج کی اِچھا ہی ہوتی ہے، جو سماج میں جان بنائے رکھتی ہے اور سماج کو سمے کے مطابق بنائے رکھنے میں مدد دیتی رہتی ہے.

آج کل کی تحریک (آندولن) کی جڑ ملے گی ٹھاکر شاہی میں. پیسہ شاہی نے اُسی کی جگہ لی ہے. مغل راج کے بکھرنے پر بھارت میں ایک راج کا انت ہوگیا. اُسی کے ساتھ ساتھ تجارت کا شیرازہ بکھر گیا. صوبے صوبے میں آپا دھاپی مچ گئی. سب کو اپنی اپنی پڑ گئی. ایک سرکار نہ رہنے سے آنے جانے کے سادھن، سڑکوں ندیوں کی سنبھال اور دیکھ بھال بند ہوگئی، یعنی تجارت کی نسیں کٹ گئیں، سماج میں کھلبلی مچے مچے کہ ایسٹ انڈیا کمپنی نے سیدھے نا سیدھے راج سنبھال لیا. وہ تھی ودیشی کمپنی اور نیت کی بے حد خراب. ۱۸۵۷ء میں اس کو ہٹنا پڑا اور راج سنبھالا برطانیہ رانی نے اور اُس کے بعد اُس کے بیٹے پوتے نے، پر، ودیشی راج نیت ٹھیک نہ رکھ سکا اور ۱۹۰۵ء سے ۱۹۴۷ء تک بھارت نے زور لگا کر اُس کو بھی اُکھاڑ پھینکا اور اب ہندی قومی کانگریس راج کی باگ ڈور سنبھالے ہوئے ہے. راج اور پیسے کی حالت اب بھی جیسی چاہئے، ویسی نہیں ہے یعنی جنراج ابھی قائم نہیں ہو پایا. اُٹھان یا وکاس چل رہا ہے پر پوری چال سے نہیں. اگر یہی چال رہی، تو اُپھان آ جائے گا.

کانگریس کے ہاتھ میں باگ ڈور تھمائی گئی، کیونکہ وہ دھرم

परायन जमात थी, पर गांधी जी की हत्या न रोक सकने के और वह भी एक हिन्दू ब्राह्मण के हाथ होने के कारण कांग्रेस की धर्म परायनता पर उगली उठने लगी है. अब अगर वह अपनी नेक नीयती न साबित कर सकी तो ज्यादा दिन न टिक सकेगी. समाज मे जनराज की इच्छा इस तरह समाज को गिरने नही देती और अगर गिरने लगे तो उठाती रहती है.

बनिज-व्यापार, कला-कौशल और उद्योग धन्धों में भी उफान आते रहते हैं. एक दिन था जब भारत में मिलें देखने को न थी और भारत अपनी जरूरत पूरी करता था. योरप का नङ्गापन भी ढकता था. ईस्ट इण्डिया कम्पनी के राज के साथ साथ इस व्यापार को धक्का लगा और विदेशी मिलों का कपड़ा भारत में आने लगा. इसने भारत के मज़दूरों को भूका मारना शुरू कर दिया. अब विदेशी कपड़े जलाये गये और चरखों-करघों मे फिर से जान डाली गई. गांधी जी की आंख बन्द होते ही देशी मिलों ने जोर पकड़ लिया, पर वह कपड़ा पूरा-पूरा नहीं तैयार कर पा रही. उनमें उठान (विकास) होना नामुमकिन. उनमें उफान आयेगा और तब ही सब को मनमाना कपड़ा मिल सकेगा. इस उफान की तरफ़ अभी समाज की आँख नहीं गई.

इसी बनिज-व्यापार ने ठाकुरशाही के क़िले को ढा दिया और पहले मुल्कों को एक किया और आज सारी दुनिया को एक करने की फ़िकर में है. नया युग खड़ा हुआ, पर खड़ा करने वाले जान तक न पाये कि वह खड़ा करने वाले थे—साहूकार, सौदागर, मारवाड़ी, बंजारे और इसी तरह के हिम्मती लोग .

پرائن جماعت تھی، پر گاندھی جی کی ہتیا نہ روک سکنے کے اور وہ بھی ایک ہندو براہمن کے ہاتھ ہونے کے کارن کانگریس کی دھرم پرائنتا پر انگلی اٹھنے لگی ہے۔ اب اگر وہ اپنی نیک نیتی نہ ثابت کر سکی تو زیادہ دن نہ ٹک سکے گی۔ سماج میں جنراج کی اچھا اس طرح سماج کو گرنے نہیں دیتی اور اگر گرنے لگے تو اٹھاتی رہتی ہے۔

بنج بیوپار، کلا کوشل اور ادیوگ دھندوں میں بھی اپھان آتے رہتے ہیں۔ ایک دن تھا جب بھارت میں ملیں دیکھنے کو نہ تھیں اور بھارت اپنی ضرورت پوری کرتا تھا۔ یورپ کا ننگا پن بھی ڈھکتا تھا۔ ایسٹ انڈیا کمپنی کے راج کے ساتھ ساتھ اس بیوپار کو دھکا لگا اور ودیشی ملوں کا کپڑا بھارت میں آنے لگا۔ اس نے بھارت کے مزدوروں کو بھوکا مارنا شروع کر دیا۔ اب ودیشی کپڑے جلائے گئے اور چرخوں کرگھوں میں پھر سے جان ڈالی گئی۔ گاندھی جی کی آنکھ بند ہوتے ہی دیشی ملوں نے زور پکڑ لیا، پر وہ کپڑا پورا پورا نہیں تیار کر پا رہیں۔ اُن میں اُٹھان (وکاس) ہونا ناممکن۔ اُن میں اُپھان آئے گا اور تب ہی سب کو من مانا کپڑا مل سکے گا۔ اس اُپھان کی طرف ابھی سماج کی آنکھ نہیں گئی۔

اسی بنج بیوپار نے ٹھاکر شاہی کے قلعہ کو ڈھا دیا اور پہلے ملکوں کو ایک کیا اور آج ساری دنیا کو ایک کرنے کی فکر میں ہے۔ نیا یگ کھڑا ہوا، پر کھڑا کرنے والے جان تک نہ پائے کہ وہ کھڑا کرنے والے تھے — ساہوکار، سوداگر، مارواڑی، بنجارے اور اسی طرح کے ہمتی لوگ۔

इसी बनिज-ब्यापार ने जहाजों को भाप से चलवाया, गाड़ियों को लोहे की सड़क पर लोहे के घोड़ों से खिचवाया. तेल गाड़ियाँ ईजाद कीं, बिजली से बैल, घोड़े, आदमी सभी का काम लिया, अब चील गाड़ियों से आसमान के रास्ते ब्यापार हो रहा है. अब दुनिया मे चप्पा भर जमीन नही है, जिसका कोई मालिक न हो, हाँ, समुन्दर के बड़े-बड़े हिस्से हैं, जो सबके लिये खुले हैं. जिनका कोई मालिक नही है या जिनके मालिक सभी हैं.

आज आदमी जो तरक्की कर गया है, उसका सौ दो सौ बरस पहले खयाल भी न था. आज की सच्ची बातो ने पुरान की खयाली कथाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है पुरानो ने एक कुबेर तैयार किया, पर आज तो कुबेरों का मुहल्ला बसाया जा सकता है. थोड़े शब्दों में मालदार और भी मालदार हो गया है.

उद्योग धन्धो ने इकट्ठी चीजे तैयार करके दुनिया मे भूचाल ला दिया. यह हुआ उद्योग-उफान का युग. शोर तो इस सिद्धान्त का मचा कि उद्योग धन्धो ने सबको स्वतन्त्र कर दिया, पर इससे फायदा उठा सके सिर्फ पैसुए.

मजदूर अपैसुए अब नाखुश होने ही थे और हड़ताल का युग आना ही था. मजदूर अब तक न राय दे सकते और न अपनी पचायत बना सकते थे. पर अब उनको दोनो हक मिल गये देश मे धन तो इकट्ठा हुआ, पर मजदूरो का खून पसीना एक करके और उन्हीं को पूरा हिस्सा न देकर. इसका जो नतीजा होना था. हो रहा है और आगे भी होता रहेगा.

पैसा-शास्त्री सबसे पहले खुल कर बोले और बोले कि पैसुओं

اسی بنج بیوپار نے جہازوں کو بھاپ سے چلوایا، گاڑیاں لوہے کی سڑک پر لوہے کے گھوڑوں سے کھنچوایا، تیل گاڑیاں ایجاد کیں، بجلی سے بیل، گھوڑے، آدمی سبھی کا کام لیا، اب چیل گاڑیوں سے آسمان کے راستے بیوپار ہو رہا ہے۔ اب دنیا میں چپہ بھر زمین نہیں ہے جس کا کوئی مالک نہ ہو، ہاں، سمندر کے بڑے بڑے حصے ہیں، جو سب کے لئے کھلے ہیں، جن کا کوئی مالک نہیں ہے یا جن کے مالک سبھی ہیں۔

آج آدمی جو ترقی کر گیا ہے، اُس کا سو دو سو برس پہلے خیال بھی نہ تھا۔ آج کی سچی باتوں نے پُران کی خیالی کتھاؤں کو بہت پیچھے چھوڑ دیا ہے۔ پُرانوں نے ایک کُبیر تیار کیا، پر آج تو کُبیروں کا محلہ بسایا جا سکتا ہے۔ تھوڑے شبدوں میں مالدار اور بھی مالدار ہو گیا ہے۔

اُدیوگ دھندھوں نے اکٹھی چیزیں تیار کرکے دنیا میں بھونچال لا دیا۔ یہ ہوا اُدیوگ اُپھان کا یُگ۔ شور تو اس سدّھانت کا مچا کہ ادیوگ دھندھوں نے سب کو سوتنتر کر دیا، پر اس سے فائدہ اٹھا سکے صرف پیسوئے۔

مزدور اَپیسوئے اب ناخوش ہونے ہی تھے اور ہڑتال کا یگ آنا ہی تھا۔ مزدور اب تک نہ رائے دے سکتے اور نہ اپنی پنچایت بنا سکتے تھے۔ پر اب انکو دونوں حق مل گئے۔ دیش میں دھن تو اکٹھا ہوا، پر مزدوروں کا خون پسینہ ایک کرکے اور اُن ہی کو پورا حصہ نہ دے کر۔ اس کا جو نتیجہ ہونا تھا، ہو رہا ہے اور آگے بھی ہوتا رہے گا۔

پیسہ شاستری سب سے پہلے کھل کر بولے اور بولے کہ پیسوؤں

की रगों में राजाओं का ख़ून है, जो ज़्यादातर सुभाव से नानाशाह हुआ करते थे.

........समाज के ढांच को समाज ही संभालेगा, तब संभलेगा.

کی رگوں میں راجاؤں کا خون ہے، جو زیادہ تر سبھاؤ سے نانا شاہ ہوا کرتے تھے.

سماج کے ڈھانچ کو سماج ہی سنبھالے گا، تب سنبھلے گا.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर मे, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाईबाग, इलाहाबाद.

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک۔ پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا، اس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے. آخر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں. ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے. قیمت چار آنے

منیجر 'نیا ہند'

۴۸، بائی کا باغ الٰہ آباد

साम्प्रदायिकता की विष-बेल के ज़हरीले फल

(भाई रतन लाल बंसल)

बापू अपने आख़िरी दिनों में दिन रात साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ जिस तरह बोलते रहते थे, उसको बहुत से लोग, यहाँ तक कि गान्धी जी के कुछ ख़ास भक्त तक सिर्फ़ बापू की एक झक समझ बैठे थे और यह भी एक सच्चाई है कि छोटे मोटे कांग्रेसी तो दूर, बड़े बड़े मशहूर कॉंग्रेसी भी उस वक़्त ऐसे कामो मे लगे हुए थे या ऐसे ख़याल रखते थे, जिससे साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा-परस्ती के उभार में मद मिलती थी. यही वजह है कि गान्धी जी की हत्या की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी हम कांग्रेस वालो पर ही है और इतिहास के मशहूर विद्वान पंडित जयचन्द्र विद्यालंकार का यह कहना बिल्कुल सही है कि जिस तरह राना सांगा के साथ जब उनके साथी नही चल सके, तब उन्होने राना सांगा को जहर दे दिया था, ठीक उसी तरह जब गान्धी जी के साथ उनके साथी नहीं चल सके, तब उन्होने गान्धी जी को मौत के मुँह में छोड़ दिया था. लेकिन बापू की जान लेने के बाद भी क्या हमारे दिमाग़ कुछ सुधरे हैं ?

बापू कहा करते थे कि फ़िरक़ेवाराना दंगों में जो ख़ून ख़राबी होती है, उसके लिये मुझे इतना रंज नहीं होता, जितना यह बात

سامپردائیکتا کی وِش بیل کے زہریلے پھل

(بھائی رتن لال بنسل)

باپو اپنے آخری دنوں میں دن رات سامپردائیکتا کے خلاف جس طرح بولتے رہتے تھے، اُس کو بہت سے لوگ، یہانتک کہ گاندھی جی کے کچھ خاص بھگت تک صرف باپو کی ایک جھک سمجھ بیٹھے تھے اور یہ بھی ایک سچائی ہے کہ چھوٹے موٹے کانگریسی تو دور بڑے بڑے مشہور کانگریسی بھی اُس وقت ایسے کاموں میں لگے ہوئے تھے یا ایسے خیال رکھتے تھے، جس سے سامپردائیکتا یعنی فرقہ پرستی کے اُبھار میں مدد ملتی تھی. یہی وجہ ہے کہ گاندھی جی کی ہتیا کی سب سے بڑی ذمہ داری ہم کانگریس والوں پر ہی ہے، اور اِتہاس کے مشہور وِدوان پنڈت جے چندر ودیالنکار کا یہ کہنا بالکل صحیح ہے کہ جس طرح رانا سانگا کے ساتھ جب اُن کے ساتھی نہیں چل سکے، تب اُنھوں نے رانا سانگا کو زہر دے دیا تھا، ٹھیک اُسی طرح جب گاندھی جی کے ساتھ اُن کے ساتھی نہیں چل سکے، تب اُنھوں نے گاندھی جی کو موت کے مُنھ میں چھوڑ دیا تھا. لیکن باپو کی جان لینے کے بعد بھی کیا ہمارے دماغ کچھ سُدھرے ہیں؟

باپو کہا کرتے تھے کہ فرقہ وارانہ دنگوں میں جو خون خرابی ہوتی ہے، اُس کے لیے مجھے اتنا رنج نہیں ہوتا، جتنا یہ بات

देख कर होता है कि इससे इन्सानियत नीचे गिरती जा रही है. जो लोग मारे जाते हैं, उनको तो नुक़सान पहुँचता ही है, या तक-लीफ़ उठानी पड़ती ही है, लेकिन जो लोग मारते हैं, वह खुद अपनी इन्सानियत पर तलवार चला रहे हैं, जिसका नतीजा उनको और पूरे समाज को जल्दी ही भुगतना पड़ेगा. उस वक़्त हम सोचते थे कि अपनी बात मनवाने के लिये बापू ने यह अनोखी दलील निकाली है. इसीलिये उस ज़माने मे हम उन लोगों को बहादुर और अपनी क़ौम का हीरो समझते थे, जो दूसरी क़ौम के बेक़सूर और कमज़ोर लोगों का ख़ून बहाते थे. मासूम बच्चों को क़त्ल करते थे और माँ बहिनों की इज़्ज़त लूटते थे, जब इस बात पर कोई सही दिमाग़ का आदमी एतराज़ करता था, तो हममें से ही बीसियों आदमी उन गुन्डों की हिमायत में आगे बढ़ कर कहने लगते थे— "क्या आपको मालूम है कि पाकिस्तान मे मुसलमानों ने या हिंदु-स्तान में हिन्दुओं ने हमारे ऊपर इससे भी ज़्यादा ज़ुल्म ढाये हैं." गुन्डों को सहारा देने की यह आदत हममे इतनी ज़्यादा बढ़ी कि गुन्डों को इज़्ज़त मिलते देख कर हमारे बहुत से अच्छे नौजवान भी इन गुन्डों और क़ातिलों में शरीक होगये. इन्सान का ख़ून बहाने के ख़िलाफ़ हमारे दिलों में जो एक क़ुदरती झिझक है, वह उनके दिलों से बिलकुल जाती रही. बेबस औरतें तक रेलों से उठा उठा कर फेंकी गईं और छोटे छोटे भोले बच्चे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में कीलों से दीवारों में जड़े गये और ऐसा करते वक़्त करने वालों ने और देखने वालों ने समझा कि वह हिन्दू धरम का, इस्लाम का या सिक्ख धरम का नाम उजागर कर रहे हैं

دیکھکر ہوتا ہے کہ اس سے انسانیت نیچے گرتی جا رہی ہے. جو لوگ مارے جاتے ہیں، اُن کو تو نقصان پہنچتا ہی ہے، یا تکلیف اُٹھانی پڑتی ہی ہے، لیکن جو لوگ مارتے ہیں، وہ خود اپنی انسانیت پر تلوار چلا رہے ہیں، جس کا نتیجہ اُن کو اور پورے سماج کو جلد ہی بھگتنا پڑے گا. اُس وقت ہم سوچتے تھے کہ اپنی بات منوانے کے لئے باپو نے یہ انوکھی دلیل نکالی ہے. اسی لئے اُس زمانے میں ہم اُن لوگوں کو بہادر اور اپنی قوم کا ہیرو سمجھتے تھے، جو دوسری قوم کے بے قصور اور کمزور لوگوں کا خون بہاتے تھے، معصوم بچوں کو قتل کرتے تھے اور ماں بہنوں کی عزت لوٹتے تھے. جب اس بات پر کوئی صحیح دماغ کا آدمی اعتراض کرتا تھا، تو ہم میں سے ہی بیسیوں آدمی اُن گنڈوں کی حمایت میں آگے بڑھ کر کہنے لگتے تھے — "کیا آپ کو معلوم ہے کہ پاکستان میں مسلمانوں نے یا ہندستان میں ہندوؤں نے ہمارے اوپر اس سے بھی زیادہ ظلم ڈھائے ہیں." گنڈوں کو سہارا دینے کی یہ عادت ہم میں اتنی زیادہ بڑھی کہ گنڈوں کو عزت ملتے دیکھکر ہمارے بہت سے اچھے نوجوان بھی اِن گنڈوں اور قاتلوں میں شریک ہوگئے. انسان کا خون بہانے کے خلاف ہمارے دلوں میں جو ایک قدرتی جھجک ہے، وہ اُن کے دلوں سے بالکل جاتی رہی. بیکس عورتیں تک ریلوں سے اُٹھا اُٹھا کر پھینکی گئیں اور چھوٹے چھوٹے بھولے بچے پاکستان اور ہندستان میں کیلوں سے دیواروں میں جڑے گئے اور ایسا کرتے وقت کرنے والوں نے اور دیکھنے والوں نے سمجھا کہ وہ ہندو دھرم کا، اسلام کا یا سکھ دھرم کا نام اُجاگر کر رہے ہیں.

आम लोगों ने ऐसा करने वालों की पीठ तो ठोकी ही.

इसका एक नतीजा यह भी निकला कि जिस तरह जनता से वाहवाही लेने के लिये बहुत से भले और तबियत के मज़बूत नौजवान इन राक्षसी कामो मे शरीक होगये, उसी तरह बहुत से पेशेवर गुन्डे और क़ातिल अब फिरक़ेवाराना नक़ाब डाल कर आगे आये और उन्होने हिन्दुस्तान मे सिर्फ मुसलमानों को और पाकिस्तान में सिर्फ हिन्दुओं या सिक्खो को लूटने और क़त्ल करने का ऐलान किया. इसके बदले में हमने उनको इज्ज़त दी और उनको हर तरह से मदद देने का वायदा किया. ज़िला मैनपुरी की एक तहसील में जब वहाँ के एक मशहूर डाकू को जल्द गिरफ्तार करने की माँग करने के लिये एक सभा की गई, तो उस सभा मे अच्छे भले घरो के हिन्दू नौजवानो ने शोर मचाया और सभा तोड़ देने की कोशिश की. इसके बाद जो आदमी सभा का सदर बना था, उसका घर दिन दहाड़े उस इलाक़े की हिन्दू जनता ने लूट लिया. इसकी वजह सिर्फ यह थी कि उस डाकू ने उस वक्त फिरक़ेवाराना नक़ाब ओढ़ लिया था और आम जनता बिना इसका नतीजा सोचे हुए उसकी सराहना करने लगी थी. लेकिन आज हमको अपने उन पापों का नतीजा पूरी तरह भुगतना पड़ रहा है.

अगर आप यू० पी० सरकार के पुलिस महकमे की हाल मे निकली हुई रिपोर्ट देखे, तो आप को पता लगेगा कि इस साल सूबे मे जितनी डकैतियाँ हुई, उतनी इससे पहिले कभी नहीं हुई थी और इसमें भी सबसे ज्यादा डकैतियाँ आगरा ज़िले मे हुई. इसकी वजह बताते हुए रिपोर्ट मे साफ़ तौर पर लिखा हुआ है कि

عام لوگوں نے ایسا کرنے والوں کی پیٹھ تو ٹھونکی ہی۔

اس کا ایک نتیجہ یہ بھی نکلا کہ جس طرح جنتا سے واہ واہی لینے کے لئے بہت سے بھلے اور طبیعت کے مضبوط نوجوان ان راکشسی کاموں میں شریک ہوگئے، اسی طرح بہت سے پیشے ور گنڈے اور قاتل اب فرقہ وارانہ نقاب ڈال کر آگے آئے اور اُنھوں نے ہندستان میں صرف مسلمانوں کو اور پاکستان میں صرف ہندوؤں یا سکھوں کو لوٹنے اور قتل کرنے کا اعلان کیا۔ اس کے بدلے میں ہم نے اُن کو عزت دی اور اُن کو ہر طرح سے مدد دینے کا وعدہ کیا۔ ضلع مین پوری کی ایک تحصیل میں جب وہاں کے ایک مشہور ڈاکو کو جلد گرفتار کرنے کی مانگ کرنے کے لئے ایک سبھا کی گئی، تو اس سبھا میں اچھے بھلے گھروں کے ہندو نوجوانوں نے شور مچایا اور سبھا توڑ دینے کی کوشش کی۔ اس کے بعد جو آدمی سبھا کا صدر بنا تھا، اُس کا گھر دن دہاڑے اُس علاقے کی ہندو جنتا نے لوٹ لیا۔ اس کی وجہ صرف یہ تھی کہ اُس ڈاکو نے اُس وقت فرقہ وارانہ نقاب اوڑھ لیا تھا اور عام جنتا بنا اسکا نتیجہ سوچے ہوئے اُسکی سراہنا کرنے لگی تھی۔ لیکن آج ہم کو اپنے اُن پاپوں کا نتیجہ پوری طرح بھگتنا پڑ رہا ہے۔

اگر آپ یو۔پی سرکار کے پولیس محکمے کی حال میں نکلی ہوئی رپورٹ دیکھیں، تو آپ کو پتہ چلے گا، کہ اس سال صوبے میں جتنی ڈکیتیاں ہوئیں، اتنی اس سے پہلے کبھی نہیں ہوئی تھیں اور اس میں بھی سب سے زیادہ ڈکیتیاں آگرہ ضلع میں ہوئیں۔ اس کی وجہ بتاتے ہوئے رپورٹ میں صاف طور پر لکھا ہوا ہے کہ

इस हलक़े में एक मशहूर फ़िरक़ेवाराना संगठन ने डकैतों के साथ अपना ताल्लुक़ जोड़ लिया था और उनको खुली मदद दी थी. यह डाकू वही है, जिसका जिक्र ऊपर आचुका है. वह अब भी पकड़ा नहीं गया है, लेकिन उसके साथ अब आम जनता की हमदर्दी नही है क्योंकि अब वह पहिले की तरह हिन्दुओं को ही ज्यादातर लूटता और सताता है, क्योंकि उसे रुपया चाहिये और ज्यादातर मालदार लोग हिन्दुओ मे ही हैं.

लेकिन कुछ दिनो तक फ़िरक़ेवाराना नक़ाब चढ़ाये रखने से उसे अपने दल को बढ़ाने का पूरा मौका मिल गया. मुसलमानो से बदला लेने को हविस मे बहुत से अच्छे नौजवान उसके साथ हो गये और अब उनको डकैती और क़त्ल करने की लत लग चुकी है, इस लिये वह वापस आने से मजबूर हैं. इस तरह हिन्दुओ ने उस वक़्त के जोश मे उस डाकू की मदद करके जितने मुसलमानों को क़त्ल कराया, उससे ज्यादा हिन्दू नौजवानों को फाँसी के तख़्ते पर भेजने का इन्तज़ाम कर दिया और आज वह नौजवान ही अपने इलाक़े की हिन्दू जनता को बेहद परेशान कर रहे हैं.

इसी तरह अगर आप पूरे हिन्दुस्तान या पूरे पाकिस्तान की रिपोर्ट पढ़े तो आप को आसानी से पता लग जायगा कि जिन इलाक़ो में फ़िरक़ेवाराना मारकाट ज्यादा हुई, वहीं अब ख़ून और डकैती की वारदातें ज्यादा हो रही हैं. हिन्दुस्तान मे मद्रास का सूबा इस बीमारी से किसी हद तक बचा रहा और इसी लिये

اس حلقے میں ایک مشہور فرقہ وارانہ سنگٹھن نے ڈکیتوں کے ساتھ اپنا تعلق جوڑ لیا تھا اور اُن کو کھلی مدد دی تھی۔ یہ ڈاکو وہی ہے جس کا ذکر اوپر آچکا ہے۔ وہ اب بھی پکڑا نہیں گیا ہے، لیکن اُس کے ساتھ اب عام جنتا کی ہمدردی نہیں ہے کیونکہ اب وہ پہلے کی طرح ہندوؤں کو ہی زیادہ تر لوٹتا اور ستاتا ہے۔ کیونکہ اُسے روپیہ چاہیئے اور زیادہ تر مالدار لوگ ہندوؤں میں ہی ہیں۔

لیکن کچھ دنوں تک فرقہ وارانہ نقاب چڑھائے رکھنے سے اُسے اپنے دَل کے بڑھانے کا پورا موقع مل گیا۔ مسلمانوں سے بدلہ لینے کی ہوس میں بہت سے اچھے نوجوان اُس کے ساتھ ہو گئے اور اب اُن کو ڈکیتی اور قتل کرنے کی لت لگ چکی ہے، اِس لئے وہ واپس آنے سے مجبور ہیں۔ اس طرح ہندوؤں نے اُس وقت کے جوش میں اُس ڈاکو کی مدد کر کے جتنے مسلمانوں کو قتل کرایا، اُس سے زیادہ ہندو نوجوانوں کو پھانسی کے تختے پر بھیجنے کا انتظام کر دیا اور آج وہ نوجوان ہی اپنے علاقے کی ہندو جنتا کو بے حد پریشان کر رہے ہیں۔

اسی طرح اگر آپ پورے ہندستان یا پورے پاکستان کی رپورٹ پڑھیں تو آپ کو آسانی سے پتہ لگ جائے گا کہ جن علاقوں میں فرقہ وارانہ مارکاٹ زیادہ ہوئی، وہیں اب خون اور ڈکیتی کی وارداتیں زیادہ ہو رہی ہیں۔ ہندستان میں مدراس کا صوبہ اِس بیماری سے کسی حد تک بچا رہا اور اِسی لئے وہاں اِن وارداتوں کی تعداد بھی زیادہ نہیں بڑھی۔ اِسکے خلاف

पूरबी और पच्छिमी पञ्जाब की हालत यह है कि वहाँ बहुत से इलाक़ों में तो अब भी जैसे कोई हुकूमत ही नहीं है. पूरबी पंजाब में अब न तो मुसलमान हैं और न पच्छिमी पंजाब में हिन्दू या सिक्ख. इस लिये यह वारदातें करने वाले और जिनके साथ वारदातें होती हैं, एक ही क़ौम के लोग होते हैं और करने वाले ज्यादातर वही लोग होते हैं, जिनको हम बलवो के वक़्त अपना हीरो समझते थे.

कभी कभी तो ऐसी भयानक वारदातें सामने आती हैं कि देख सुन कर होश गुम हो जाते हैं. अभी पिछली होली पर दिल्ली में एक सरदार जी पर किसी छोटे बच्चे ने रङ्ग डाल दिया. सरदार जी ने फौरन अपनी तलवार निकाली और उस मासूम बच्चे के दो टुकड़े कर दिये. लाज़िमी तौर पर उस सिक्ख ने बलवो के ज़माने में बहुत से मुसलमान बच्चो को क़त्ल किया होगा, इसी लिये उसे उस हिन्दू बच्चे को भी क़त्ल कर देने मे हिचक नहीं हुई. बल्कि यह कहा जा सकता है कि उसके मन की हालत ऐसी बन चुकी थी कि अगर उसका अपना बच्चा कभी उसे ग़ुस्सा दिलादेता तो वह उस को भी क़त्ल कर सकता था.

उसी होली के मौके पर अलीगढ़, ग़ाज़ियाबाद और बहुत सी दूसरी जगहों में भी सिक्ख और हिन्दुओ के बीच इसी तरह की वारदातें हुई. इसके बाद अमृतसर में एक सिक्ख ने एक मामूली से झगड़े पर दूसरे चार सिक्खों का सर काट दिया. मारे जाने वाले चारों सिक्ख आपस मे सगे भाई थे. फिर इसके कुछ ही दिन बाद दिल्ली में सरेशाम ट्राम के भीतर तीन सिक्खों ने एक हिन्दू

پوربی اور پچھمی پنجاب کی حالت یہ ہے کہ وہاں بہت سے حلقوں میں تو اب بھی جیسے کوئی حکومت ہی نہیں ہے۔ پوربی پنجاب میں اب نہ تو مسلمان ہیں اور نہ پچھمی پنجاب میں ہندو یا سکھ۔ اس لئے یہ وارداتیں کرنے والے اور جن کے ساتھ وارداتیں ہوتی ہیں، ایک ہی قوم کے لوگ ہوتے ہیں اور کرنے والے زیادہ تر وہی لوگ ہوتے ہیں، جن کو ہم بلووں کے وقت اپنا 'ہیرو' سمجھتے تھے۔

کبھی کبھی تو ایسی بھیانک وارداتیں سامنے آتی ہیں کہ دیکھ سن کر ہوش گم ہو جاتے ہیں۔ ابھی پچھلی ہولی پر دلی میں ایک سردار جی پر کسی چھوٹے بچے نے رنگ ڈال دیا۔ سردار جی نے فوراً اپنی تلوار نکالی اور اس معصوم بچے کے دو ٹکڑے کر دیئے۔ لازمی طور پر اس سکھ نے بلووں کے زمانے میں بہت سے مسلمان بچوں کو قتل کیا ہوگا، اسی لئے اسے اس ہندو بچے کو بھی قتل کر دینے میں ہچک نہیں ہوئی۔ بلکہ یہ کہا جا سکتا ہے کہ اس کے من کی حالت ایسی بن چکی تھی کہ اگر اس کا اپنا بچہ کبھی اسے غصہ دلا دیتا تو وہ اس کو بھی قتل کر سکتا تھا۔

اسی ہولی کے موقع پر علی گڈھ، غازی آباد اور بہت سی دوسری جگہوں میں بھی سکھ اور ہندوؤں کے بیچ اسی طرح کی وارداتیں ہوئیں۔ اس کے بعد امرت سر میں ایک سکھ نے ایک معمولی سے جھگڑے پر دو دوسرے چار سکھوں کا سر کاٹ دیا۔ مارے جانے والے چاروں سکھ آپس میں سگے بھائی تھے۔ پھر اس کے کچھ ہی دن بعد دلی میں سرِ شام ٹرام کے بھیتر تین سکھوں نے ایک ہندو

का सर काट लिया. क्योंकि उन सिक्खों ने जब उस आदमी की औरत को छेड़ा था, तब उसने कुछ सख़्त लफ़्ज़ कह दिये थे.

हमारा दिमाग़ फिरक़ापरस्ती की तरफ़ बहुत जल्द मुड़ जाता है, इस लिये ऊपर की घटनायें पढ़ कर सिक्खों को ही हम इस वहशीपन का दोषी न समझें. हाल में ही कानपुर में सेठ राधाकिशन के क़त्ल में जिस वहशीपन का सुबूत दिया गया, उसकी मिसाल कम ही मिलेगी. सेठ राधा किशन एक जीप में बैठे हुए अपनी बीबी बच्चों के साथ जा रहे थे, रास्ते मे एक जगह जीप को रुकना पड़ा, बस फ़ौरन ही क़ातिल निकले और उन्होंने सेठ जी को उनकी बीबी बच्चों के सामने ही छुरे मार मार कर क़त्ल कर दिया. तमाम बाज़ार में सेठ जी और उनके बीबी बच्चों की चीख़ें गूँजती रहीं, लेकिन उनको कोई मदद नहीं मिल सकी. उस क़त्ल में जो लोग गिरफ्तार हुए हैं, वह सब के सब हिन्दू ही हैं, जिनमें कई तो बड़े बड़े सेठ हैं.

इस मसले पर पूरबी पंजाब की सरकार के एक बड़े अफ़सर ने २५ जुलाई को अपना बयान देते हुए कहा था—

"पूरबी पंजाब में बेशुमार जुर्म बढ़ रहे हैं. गुज़रे हुए ज़माने में कभी इतने जुर्म नहीं हुए. क़त्ल, डकैती, राहज़नी और चोरियों की वारदातें सूबे भर में हो रही हैं. फ़ीरोज़पुर और अमृतसर ज़िलों में क़त्लों की तादाद बहुत ज़्यादा है."

ठीक यही शिकायत पच्छिमी पंजाब के सरकारी अफ़सरों को है. हाल में ही मेवों के शरणार्थी कैम्प से कुछ लड़कियाँ उड़ाई ... हमला किया और

کا سر کاٹ لیا کیونکہ اِن سکھوں نے جب اُس آدمی کی عورت کو چھیڑا تھا تب اُس نے کچھ سخت لفظ کہہ دیئے تھے ۔

ہمارا دماغ فرقہ پرستی کی طرف بہت جلد مُڑ جاتا ہے، اِس لئے اوپر کی گھٹنائیں پڑھ کر سکھوں کو ہی ہم اس وحشی پن کا دوشی نہ سمجھیں ۔ حال میں ہی کانپور میں سیٹھ رادھا کشن کے قتل میں جس وحشی پن کا ثبوت دیا گیا اُس کی مثال کم ہی ملے گی ۔ سیٹھ رادھا کشن ایک جیپ میں بیٹھے ہوئے اپنے بیوی بچوں کے ساتھ جا رہے تھے، راستہ میں ایک جگہ جیپ کو رُکنا پڑا، بس فوراً ہی قاتل نکلے اور اُنھوں نے سیٹھ جی کو اُن کے بی بی بچوں کے سامنے ہی چھرے مار مار کر قتل کر دیا ۔ تمام بازار میں سیٹھ جی اور اُن کے بی بی بچوں کی چیخیں گونجتی رہیں لیکن اُن کو کوئی مدد نہیں مل سکی ۔ اُس قتل میں جو لوگ گرفتار ہوئے ہیں وہ سب کے سب ہندو ہی ہیں، جن میں کئی تو بڑے بڑے سیٹھ ہیں ۔

اِس مسئلے پر پوربی پنجاب کی سرکار کے ایک بڑے افسر نے ۲۵ جولائی کو اپنا بیان دیتے ہوئے کہا تھا ــــ

"پوربی پنجاب میں بے شمار جُرم بڑھ رہے ہیں ۔ گزرے ہوئے زمانے میں کبھی اتنے جُرم نہیں ہوئے ۔ قتل، ڈکیتی، راہزنی، اور چوریوں کی وارداتیں صوبہ بھر میں ہو رہی ہیں ۔ فیروزپور اور امرتسر ضلعوں میں قتلوں کی تعداد بہت زیادہ ہے ۔"

ٹھیک یہی شکایت پچھمی پنجاب کے سرکاری افسروں کو ہے ۔ حال میں ہی میوؤں کے شرنارتھی کیمپ سے کچھ لڑکیاں اُڑائی گئیں، جس کے بدلے میں میوؤں نے پاس کے گاؤں پر حملہ کیا اور

काफ़ी ख़ून ख़राबी हुई. इसका साफ़ मतलब यह है कि जो लोग पच्छिमी पंजाब में पहिले इस्लाम के नाम पर वहाँ के हिन्दू सिक्खों को लूटते थे, वही इस्लाम के मानने वाले अब बेकस मुसलमान शरणार्थियों को लूट रहे हैं. यही वाक़यात पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू सिक्ख शरणार्थियों के साथ हिन्दुस्तान में हुए थे और भरतपुर में, जो उन दिनों फ़िरकेवारना झगड़ों का बहुत बड़ा सैन्टर था, हिन्दू सिक्ख शरणार्थियों को लूटा गया था और उनकी औरतों की इज़्ज़त भी लूटी गई थी. भरतपुर के बनिये ब्राह्मण तो वहाँ से भाग ही आये थे, ठीक उसी तरह से. जिस तरह से अमृतसर से सभी मालदार हिन्दू सिक्ख हिन्दू और सिक्खों के डर से ही भाग आये हैं.

इस तरह साम्प्रदायिकता की विष-बेल का पहिला ज़हरीला फल हमको यह मिला है कि समाज में गुन्डागर्दी बढ़ गई है. बहुत से भले नौजवान इस दौरान में गुन्डे और क़ातिल बन गये हैं और अब उनका संभलना मुश्किल ही है. समाज की व्यवस्था यानी निज़ाम करीब करीब टूट गया है और इन्सान को क़त्ल कर देना एक मामूली सी बात होगई है. जो लोग ज़रा सी बात पर फ़िरकेवाराना बलवे उभारने के लिये तैयार हो जाते हैं, क्या वह इस हक़ीक़त पर ग़ौर करेंगे ?

फ़िरक़ापरस्ती की विष बेल का दूसरा फल यह है कि अब मुसलमान मुसलमानों के बीच और हिन्दू हिन्दुओं के बीच या हिन्दू सिक्खों के बीच जितनी फ़िरक़ापरस्ती बढ़ गई है, उतनी पहिले कभी नहीं बढ़ी. अभी कुछ दिन पहिले जब मुसलमानों के ख़िलाफ़

کافی خون خرابی ہوئی ۔ اس کا صاف مطلب یہ ہے کہ جو لوگ پچھمی پنجاب میں پہلے اسلام کے نام پر وہاں کے ہندو سکھوں کو لوٹتے تھے، وہی اسلام کے ماننے والے اب بیکس مسلمان شرنارتھیوں کو لوٹ رہے ہیں ۔ یہی واقعات پاکستان سے آنے والے ہندو سکھ شرنارتھیوں کے ساتھ ہندستان میں ہوئے اور بھرت پور میں، جو ان دنوں فرقہ وارانہ جھگڑوں کا بہت بڑا سنٹر تھا، ہندو سکھ شرنارتھیوں کو لوٹا گیا تھا اور ان کی عورتوں کی عزت لوٹی گئی تھی ۔ بھرت پور کے بنیئے برہمن تو وہاں سے بھاگ ہی آئے تھے، ٹھیک اسی طرح سے، جس طرح سے امرت سر سے سبھی مالدار ہندو سکھ ہندو اور سکھوں کے ڈر سے ہی بھاگ آئے ہیں۔

اس طرح سامپردایکتا کی وش بیل کا پہلا زہریلا پھل ہم کو یہ ملا ہے کہ سماج میں گنڈہ گردی بڑھ گئی ہے ۔ بہت سے بھلے نوجوان اس دوران میں گنڈے اور قاتل بن گئے ہیں اور اب ان کا سنبھلنا مشکل ہی ہے۔ سماج کی ویوستھا یعنی نظام قریب قریب ٹوٹ گیا ہے، اور انسان کو قتل کر دینا ایک معمولی سی بات ہو گئی ہے۔ جو لوگ ذرا سی بات پر فرقہ وارانہ بلوے ابھارنے کے لئے تیار ہو جاتے ہیں، کیا وہ اس حقیقت پر غور کریں گے؟

فرقہ پرستی کی وش بیل کا دوسرا پھل یہ ہے کہ اب مسلمان مسلمانوں کے بیچ اور ہندو ہندوؤں کے بیچ یا ہندو سکھوں کے بیچ جتنی فرقہ پرستی بڑھ گئی ہے اتنی پہلے کبھی نہیں بڑھی ۔ ابھی کچھ دن پہلے جب مسلمانوں کے خلاف

आम हिन्दू सिक्खों में नफ़रत थी, तब हिन्दू संगठन का नारा बड़े जोरों से लगाया जा रहा था. कुछ लोगों को उम्मीद थी कि इस झगड़े का शायद एक अच्छा नतीजा यह निकले कि हिन्दू सिक्खों के बीच और तमाम हिन्दुओं के बीच आपसी एकता होजाय, लेकिन हाल में ही यू० पी० में जब डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के एलेक्शन हुए तो मालूम हुआ कि हिन्दू हिन्दुओं में फूट बढ़ ही रही है. जो लोग 'तमाम हिन्दू एक हैं' का नारा लगाते देखे जाते थे, वही अब 'अहीर अहीर को वोट दे', 'ब्राह्मण ब्राह्मण को वोट दे' और 'बनिये बनियों की हिमायत करें' का प्रचार करते हुए देखे गये. भरतपुर के जाट महाराजा ने ठीक उन दिनों जब वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की रैली के प्रधान बन कर हिन्दू एकता का झंडा उठाये हुए थे, तमाम राजपूतों को अपनी फ़ौजों से निकाल दिया और इसके जवाब में एक राजपूत राजा ने तमाम जाटों को अपनी फ़ौज से निकाल बाहर किया. महाराष्ट्र में मरहठा और ग़ैर मरहठा व ब्राह्मण और ग़ैर ब्राह्मण के बीच जितना द्वेष आज है, उतना इससे पहिले कभी नहीं देखा गया. हिन्दू और सिक्खों के बीच भी आज पंजाब में अच्छे सम्बंध नहीं हैं. गोस्वामी गणेशदत्त जैसे हिन्दू सिक्ख एकता के मानने वाले लीडर को शिकायत है कि पंजाब में हिन्दू हरिजन जबरन सिक्ख बनाये गये हैं और सिक्ख नेताओं को शिकायत है कि हिन्दू उनके साथ ठीक बर्ताव नहीं करते.

पाकिस्तान में भी यही हालत है, सरहद के लीगी नेता भी

عام ہندو سکھوں میں نفرت تھی، تب ہندو سنگٹھن کا نعرہ بڑے زوروں سے لگایا جارہا تھا۔ کچھ لوگوں کو اُمید تھی کہ اِس جھگڑے کا شاید ایک اچھا نتیجہ یہ نکلے کہ ہندو سکھوں کے بیچ اور تمام ہندوؤں کے بیچ آپسی ایکتا ہوجائے، لیکن حال میں ہی یوپی میں جب ڈسٹرکٹ بورڈوں کے الیکشن ہوئے تو معلوم ہوا کہ ہندو ہندوؤں میں پھوٹ بڑھ ہی رہی ہے۔ جو لوگ 'تمام ہندو ایک ہیں' کا نعرہ لگاتے دیکھے جاتے تھے وہی اب 'اہیر اہیر کو ووٹ دے'، 'برہمن برہمن کو ووٹ دے'، اور 'بنئے بنیوں کی حمایت کریں' کا پرچار کرتے ہوئے دیکھے گئے۔ بھرت پور کے جاٹ مہاراجہ نے ٹھیک اُن دنوں جب وہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کی ریلی کے پردھان بن کر ہندو ایکتا کا جھنڈا اُٹھائے ہوئے تھے، تمام راجپوتوں کو اپنی فوجوں سے نکال دیا اور اُس کے جواب میں ایک راجپوت راجہ نے تمام جاٹوں کو اپنی فوج سے نکال باہر کیا۔ مہاراشٹر میں مرہٹہ اور غیر مرہٹہ و برہمن اور غیر برہمن کے بیچ جتنا دویش آج ہے، اُتنا اس سے پہلے کبھی نہیں دیکھا گیا۔ ہندو اور سکھوں کے بیچ بھی آج پنجاب میں اچھے سمبندھ نہیں ہیں۔ گوسوامی گنیش دت جیسے ہندو سکھ ایکتا کے ماننے والے لیڈر کو شکایت ہے کہ پنجاب میں ہندو ہریجن جبراً سکھ بنائے گئے ہیں اور سکھ نیتاؤں کو شکایت ہے کہ ہندو اُن کے ساتھ ٹھیک برتاؤ نہیں کرتے۔

پاکستان میں بھی یہی حالت ہے۔ سرحد کے لیگی نیتا بھی خان عبدالقیوم خاں کو پرائم منسٹر بنانے کے ...

इसलिये ख़िलाफ़ हैं कि वह पठान न होकर काश्मीरी हैं. सिन्ध में ग़ैर सिन्धियों की मिट्टी ख़राब है और पाकिस्तानी बंगाल की यह बात तो सबको मालूम है कि जब वहाँ उर्दू चालू की गई, तो लीगी मुसलमानों ने ही इसकी मुख़ालफ़त की और पाकिस्तान सरकार को हार कर वहाँ बंगला चालू करनी पड़ी. मद्रास में हिन्दी की मुख़ालफ़त हिन्दू ही कर रहे हैं और महाराष्ट्र में हिन्दू मरहठे हिन्दी की मुख़ालफ़त में कमर कसे तैयार हैं. बिहार के उन हल्क़ों में, जहाँ बंगाली बोली जाती है, हिन्दी का इतना सख़्त विरोध है कि 'हरिजन सेवक' के सम्पादक श्री मशरूवाला तक को उसकी वजह से गालियाँ खानी पड़ीं.

मतलब यह है कि जो लोग फ़िरक़ापरस्ती के सहारे हिन्दू सिक्खों को, तमाम हिन्दुओं को, तमाम सिक्खों को और तमाम मुसलमानों को एक करने चले थे, उन्होंने इन क़ौमों में आपसी फूट का ज़हर ही बोया है. फ़िरक़ापरस्ती एक तरह की ख़ुदग़रज़ी ही तो है. लेकिन जहाँ एक दफ़ा आदमी ख़ुदग़रज़ हुआ, बस वह नीचे ही गिरता चला जाता है. पहिले दूसरी क़ौम के ख़िलाफ़ फिर अपनी ही क़ौम के दूसरे फ़िरक़ों के ख़िलाफ़, फिर अपने ही फ़िरक़े के दूसरे गिरोहों के ख़िलाफ़ और आख़िर में वह अपने भाई तक के ख़िलाफ़ हो जाता है. यही वजह है कि चोर बाज़ार करने वाले बड़े बड़े पूंजीपति, अपनी ही प्रजा को जोंक की तरह चूसने वाले ज़मींदार और राजा महाराजा, मुफ़्त का माल खाने वाले महन्त, पंडा, पुजारी और मुल्ला, मौलवी ही ज़्यादातर फ़िरक़ापरस्त संगठनों के लीडर दिखाई देते हैं. कभी कभी यही

اِس لئے خلاف ہیں کہ وہ پٹھان نہ ہو کر کشمیری ہیں۔ سندھ میں غیر سندھیوں کی مٹی خراب ہے اور پاکستانی بنگال کی یہ بات تو سب کو معلوم ہے کہ جب وہاں اردو چالو کی گئی، تو لیگی مسلمانوں نے ہی اس کی مخالفت کی اور پاکستان سرکار کو […] ہار کر وہاں بنگلہ چالو کرنی پڑی۔ مدراس میں ہندی کی مخالفت ہندو ہی کر رہے ہیں اور مہاراشٹر میں ہندو مرہٹے ہندی کی مخالفت میں کمر کسے تیار ہیں۔ بہار کے اُن حلقوں میں، جہاں بنگالی بولی جاتی ہے، ہندی کا اتنا سخت ورودھ ہے کہ 'ہریجن سیوک' کے سمپادک شری مشروالا تک کو اس کی وجہ سے گالیاں کھانی پڑیں۔

مطلب یہ ہے کہ جو لوگ فرقہ پرستی کے سہارے ہندو سکھوں کو، تمام ہندوؤں کو، تمام سکھوں کو اور تمام مسلمانوں کو ایک کرنے چلے تھے، انہوں نے ان قوموں میں آپسی پھوٹ کا زہر ہی بویا ہے۔ فرقہ پرستی ایک طرح کی خود غرضی ہی تو ہے۔ لیکن ایک دفعہ آدمی خود غرض ہوا، بس وہ نیچے ہی گرتا چلا جاتا ہے۔ پہلے دوسری قوم کے خلاف، پھر اپنی ہی قوم کے دوسرے فرقوں کے خلاف، پھر اپنے ہی فرقے کے دوسرے گروہوں کے خلاف اور آخیر میں وہ اپنے بھائی تک کے خلاف ہو جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ چور بازار کرنے والے بڑے بڑے پونجی پتی، اپنی ہی پرجا کو جونک کی طرح چوسنے والے زمیندار اور راجہ مہاراجہ، مفت کا مال کھانے والے مہنت، پنڈا، پجاری اور مُلّا مولوی ہی زیادہ تر فرقہ پرست سنگٹھنوں کے لیڈر دکھائی دیتے ہیں۔ کبھی کبھی یہی

लोग कांग्रेस वगैरा में भी पहुँचते हैं, लेकिन वहाँ इनका निबाह होना मुश्किल हो जाता है.

चोर बाजार करने वालों और ख़ास तौर पर पूंजीपतियों व राजाओं और जागीरदारों ने फ़िरक़ेवाराना बलवों का कितना फ़ायदा उठाया है, इसका अन्दाज़ा राजपूताने का व दूसरी देशी रियासतों का दौरा किये बिना नहीं लगाया जा सकता. यह तो सभी जानते हैं कि इन रियासतों की हिन्दू-मुसलमान प्रजा सदियों से दोहरी गुलामी में सिसक रही थी. इन रियासतों में कोई क़ानून तो था ही नहीं. ब्रिटिश हुकूमत तो सिर्फ यह देखती थी कि यह राजा नवाब अपने अंग्रेज़ हाकिमों के जूते चाटने में कितने मुस्तैद हैं. इसके बाद राजाओं नवाबों को अख़्तियार था कि वह अपनी प्रजा पर कितने ही जुल्म करें और अपनी प्रजा की बहू बेटियों की कितनी ही इज़्ज़त लूटें. इस सिलसिले में कभी कभी जब मामला हद से गुज़र जाता था, तो बड़ी बड़ी सनसनी ख़ेज़ बातें रोशनी में आती थीं. पटियाला के पहिले महाराज के ख़िलाफ़ अपने ही सरदारों की कई सिक्ख औरतों को ज़िन्दा जला देने का और पचीसों औरतों की इज़्ज़त बिगाड़ने का इल्ज़ाम उनकी प्रजा ने लगाया था. इन्दौर के महाराजा तो इसी जुर्म में गद्दी से उतार दिये गये थे. क्योंकि उन्होंने एक वेश्या के लिये एक धनी व्योपारी को क़त्ल करा दिया था. इसी तरह की बातें बहुत से राजाओं के ख़िलाफ़ आईं और बहुत सों के ख़िलाफ़ नहीं आ सकीं. इधर कुछ दिनों से बाहर रियासती जनता भी अपने अधिकार के लिये लड़ने लगी थी और

لوگ کانگریس وغیرہ میں بھی پہنچتے ہیں، لیکن وہاں ان کا نباہ ہونا مشکل ہو جاتا ہے۔

چور بازار کرنے والوں اور خاص طور پر پونجی پتیوں و راجاؤں اور جاگیرداروں نے فرقہ وارانہ بلووں کا کتنا فائدہ اٹھایا ہے، اس کا اندازہ راجپوتانے کا و دوسری دیشی ریاستوں کا دورہ کئے بنا نہیں لگایا جا سکتا۔ یہ تو سبھی جانتے ہیں کہ ان ریاستوں کی ہندو مسلمان پرجا صدیوں سے دوہری غلامی میں سسک رہی تھی۔ ان ریاستوں میں کوئی قانون تو تھا ہی نہیں۔ برٹش حکومت تو صرف یہ دیکھتی تھی کہ یہ راجہ نواب اپنے انگریز حاکموں کے جوتے چاٹنے میں کتنے مستعد ہیں۔ اس کے بعد راجاؤں نوابوں کو اختیار تھا کہ وہ اپنی پرجا پر کتنے ہی ظلم کریں اور اپنی پرجا کی بہو بیٹیوں کی کتنی ہی عزت لوٹیں۔ اس سلسلے میں کبھی کبھی جب معاملہ حد سے گزر جاتا تھا، تو بڑی بڑی سنسنی خیز باتیں روشنی میں آتی تھیں۔ پٹیالہ کے پہلے مہاراج کے خلاف اپنے ہی سرداروں کی کئی سکھ عورتوں کو زندہ جلا دینے کا اور پچیسوں عورتوں کی عزت بگاڑنے کا الزام اُن کی پرجا نے لگایا تھا۔ اندور کے مہاراجہ تو اسی جرم میں گدی سے اُتار دیئے گئے تھے، کیونکہ اُنہوں نے ایک ویشیا کے لئے ایک دھنی بیوپاری کو قتل کرادیا تھا۔ اسی طرح کی باتیں بہت سے راجاؤں کے خلاف آئیں اور بہت سوں کے خلاف نہیں آسکیں۔ اِدھر کچھ دنوں سے برابر ریاستی جنتا بھی اپنے ادھیکار کے لئے لڑنے لگی تھی اور

मुस्लिम बलवे शुरू हुए और अंग्रेज हिन्दुस्तान से हटे, यह सभी राजा, जो अभी तक अपनी हिन्दू प्रजा पर भी तरह-तरह के जुल्म करते रहे थे, पक्के हिन्दू बन गये. ज्यादातर रियासतों में बलवे हुए और प्रजा का आन्दोलन बिलकुल कुचल दिया गया. इन रियासतों ने गुन्डो को खुले आम हथियार दिये और कम से कम एक दफा तो, खास तौर पर दिल्ली पर, अपना झंडा फहराने की कोशिश की. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ इन राजाओं के जो सम्बन्ध रहे, वह तो जग जाहिर हैं. लेकिन कांग्रेस की सरकार कुछ ज्यादा मजबूत साबित हुई और राजाओं को एक एक करके इस सरकार के झंडे के नीचे आना पड़ा. लेकिन राजपूताने के कुछ जागीरदार और छुट फुट राजे अब भी अपनी कोशिशो मे लगे हुए है. राजपूताने के जागीरदारों का रुख आज कल क्या है, इसका नमूना सेठ डालमिया के हिन्दू संगठन के पक्ष-पाती अखबार 'नव भारत' की नीचे लिखी ख़बर है. 'नव भारत' ने लिखा है—

पोकरण में जागीरदारों व सिन्धी मुसलमानों की गुप्त सभा

"जोधपुर (डाक से) पिछली १६ अगस्त को पोकरण ठाकुर के निजी निवास स्थान मे फलोदी परगना के ख़ास-ख़ास जागीरदारों की मीटिंग हुई. सभा में भाग लेने वालो में ख़ास पली का ठाकुर, सामराऊ ठाकुर, जेसलो ठाकुर, जैसल मेर व लाहौर के ठाकुर वगैरा थे. जांभा भँवर का ख़ास प्रतिनिधि रमजू ख़ाँ भी इस सभा में शामिल हुआ था. रमजू ख़ाँ फलोदी परगने के सिन्धी मुसलमानों का नेता है और पिछले कई महीनों से वह जैसलमेर और मारवाड़ के मुसलमानों में पाकिस्तानी प्रचार कर रहा है.

مسلم بلوے شروع ہوئے اور انگریز ہندستان سے ہٹے، یہ سبھی راجہ، جو ابھی تک اپنی ہندو پرجا پر بھی طرح طرح کے ظلم کرتے رہے تھے، پکے ہندو بن گئے۔ زیادہ تر ریاستوں میں بلوے ہوئے اور پرجا کا آندولن بالکل کچل دیا گیا۔ اِن ریاستوں نے گنڈوں کو کھلے عام ہتھیار دیئے اور کم سے کم ایک دفعہ تو خاص طور پر دلّی پر اپنا جھنڈا پھہرانے کی کوشش کی۔ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے ساتھ اِن راجاؤں کے جو سمبندھ رہے، وہ تو جگ ظاہر ہیں۔ لیکن کانگریس کی سرکار کچھ زیادہ مضبوط ثابت ہوئی، اور راجاؤں کو ایک ایک کرکے اِس سرکار کے جھنڈے کے نیچے آنا پڑا۔ لیکن راجپوتانے کے کچھ جاگیردار اور چھٹ پُٹ راجے اب بھی اپنی کوششوں میں لگے ہوئے ہیں۔ راجپوتانے کے جاگیرداروں کا رُخ آج کل کیا ہے، اِس کا نمونہ سیٹھ ڈالمیا کے ہندو سنگٹھن کے پکچھ پاتی اخبار 'نو بھارت' کی نیچے لکھی خبر ہے۔ 'نو بھارت' نے لکھا ہے —

پوکرن میں جاگیرداروں و سندھی مسلمانوں کی گپت سبھا

"جودھپور (ڈاک سے) پچھلی ۱۶ اگست کو پوکرن ٹھاکر کے نجی نواس استھان میں پھلودی پرگنہ کے خاص خاص جاگیرداروں کی میٹنگ ہوئی۔ سبھا میں بھاگ لینے والوں میں خاص پلی کا ٹھاکر، سامراؤ ٹھاکر، جیسلو ٹھاکر، جیسلمیر و لاہور کے ٹھاکر وغیرہ تھے۔ جانبھا بھنور کا خاص پرتی ندھی رمضو خاں بھی اِس سبھا میں شامل ہوا تھا۔ رمضو خاں پھلودی پرگنہ کے سندھی مسلمانوں کا نیتا ہے اور پچھلے کئی مہینوں سے وہ جیسلمیر اور مارواڑ کے مسلمانوں میں پاکستانی پرچار کر رہا ہے۔

जांभा भँवर और रमजू खां मारवाड़ से लाखों रुपये का कपड़ा पाकिस्तान को चोरी-चोरी पार कर चुके हैं.

ऐसा बताया जाता है कि इस बैठक में मारवाड़ काँग्रेस के विरोध में स्कीमें बनाई गई हैं. जब कि मारवाड़ भर में जागीरदार लूट पाट, हत्यायें और जुल्म कर रहे है, इस तरह फलोदी परगने के जागीरदारों का मिलना रहस्य (राज़) से खाली नहीं है. यह भी ध्यान रहे कि फलोदी परगना पाकिस्तान की सरहद के पास है. फलोदी और जैसलमेर में बहुत बड़ी गिनती में सिन्धी मुसलमान फैले हुए हैं."

यह तो सिर्फ़ एक खबर है, लेकिन असलियत तो यह है कि हर एक जागीर और हर एक ठिकाने में ऐसी ही साज़िशें चल रही हैं. बीकानेर में तो राजा और जागीरदार मुसलमानों को फिर अपनी छाती से लगा रहे हैं, जिससे कि वह रियासत को हिन्द यूनियन से अलग रखने की मुआफ़िक़त में अपना वोट दे सकें. इस तरह जागीरदारों और राजाओं का 'हिन्दू हित' अब नङ्गी शक्ल में दिखाई देने लगा है.

फिरक़ापरस्ती की विष बेल का तीसरा फल ग़रीब जनता को यह मिला कि किसानों, मज़दूरों और रियासती जनता की तहरीकें बिलकुल दब गईं और ज़मींदारों, पूंजीपातियों और राजाओं नवाबों को मनमानी करने का मौक़ा मिल गया. यह अच्छा हुआ कि जनता के इन दुश्मनों को पूरी कामयाबी नहीं हुई और बापू के बलिदान ने ठीक वक़्त पर जनता को चेता दिया. पर यह चेतावनी

جانبھا بھنور اور رمضو خاں مارواڑ سے لاکھوں روپے کا کپڑا پاکستان کو چوری چوری پار کر چکے ہیں۔

ایسا بتایا جاتا ہے کہ اس بیٹھک میں مارواڑ کانگریس کے وِرودھ میں اسکیمیں بنائی گئی ہیں۔ جب کہ مارواڑ بھر میں جاگیردار لوٹ پاٹ، ہتیائیں اور ظلم کر رہے ہیں، اس طرح پھلودی پرگنے کے جاگیرداروں کا ملنا رہسیہ (راز) سے خالی نہیں ہے۔ یہ بھی دھیان رہے کہ پھلودی پرگنہ پاکستان کی سرحد کے پاس ہے پھلودی اور جیسلمیر میں بہت بڑی گنتی میں سندھی مسلمان پھیلے ہوئے ہیں۔"

یہ تو صرف ایک خبر ہے، لیکن اصلیت تو یہ ہے کہ ہر ایک جاگیر اور ہر ایک ٹھکانے میں ایسی ہی سازشیں چل رہی ہیں بیکانیر میں تو راجہ اور جاگیردار مسلمانوں کو پھر اپنی چھاتی سے لگا رہے ہیں، جس سے کہ وہ ریاست کو ہند یونین سے الگ رکھنے کی موافقت میں اپنا ووٹ دے سکیں۔ اس طرح جاگیرداروں اور راجاؤں کا "ہندو ہت" اب ننگی شکل میں دکھائی دینے لگا ہے۔

فرقہ پرستی کی وِش بیل کا تیسرا پھل غریب جنتا کو یہ ملا کہ کسانوں، مزدوروں، اور ریاستی جنتا کی تحریکیں بالکل دب گئیں اور زمینداروں، پونجی پتیوں اور راجاؤں نوابوں کو من مانی کرنے کا موقع مل گیا۔ یہ اچھا ہوا کہ جنتا کے ان دشمنوں کو پوری کامیابی نہیں ہوئی اور باپو کے بلیدان نے ٹھیک وقت پر جنتا کو چیتا دیا۔ پر یہ چیتاونی کتنی مہنگی پڑی ہے اس پر بھی تو ہم سوچیں۔

यही कुछ बातें हैं, जिनकी वजह से दूरन्देश बापू हमको फ़िरक़ापरस्ती से लड़ने के लिये कहते थे, लेकिन हमने उनकी बात नहीं सुनी. हमारे सिर पर उस वक़्त ख़ून सवार था. बेकस लोगों का ख़ून करते करते हम ऐसे बन गये थे कि हमको बापू का भी ख़ून करने में हिचक नहीं हुई. मौलाना आज़ाद ने कहा था कि जब मैं अपनी हथेली देखता हूँ, तो उस पर मुझे बापू के ख़ून के छींटे नज़र आते हैं. भाई किशोरलाल मशरूवाला, जो गान्धी जी के ख़ास साथी और गान्धीवाद के बहुत बड़े पंडित हैं, कहते हैं कि गान्धी जी को तो हमने बहुत पहिले ही मार डाला था. लेकिन अगर अब भी हम संभल जाये, तो बहुत है वरना अगर इन्सान का इसी तरह हम ख़ून बहाते रहे, तो वह दिन दूर नहीं है, जब हम ज़रा ज़रा सी बात पर अपने ही बच्चों को क़त्ल करने लगेंगे, अपनी ही बहिन और बेटियों की इज्ज़त लूटने में हमको हिचक नहीं होगी और सिवा अपने हम सबको अपना दुश्मन मानेंगे.

सोचिये, क्या हम इसी तरफ़ तो नहीं बढ़े जा रहे हैं ?

(४०६)

یہی کچھ باتیں ہیں، جن کی وجہ سے دوراندیش باپو ہم کو فرقہ پرستی سے لڑنے کے لئے کہتے تھے، لیکن ہم نے اُن کی بات نہیں سُنی. ہمارے سر پر اس وقت خون سوار تھا. بے کس لوگوں کا خون کرتے کرتے ہم ایسے بن گئے تھے کہ ہم کو باپو کا بھی خون کرنے میں ہچک نہیں ہوئی. مولانا آزاد نے کہا تھا کہ جب میں اپنی ہتھیلی دیکھتا ہوں، تو اُس پر مجھے باپو کے خون کے چھینٹے نظر آتے ہیں. بھائی کشور لال مشروالا، جو گاندھی جی کے خاص ساتھی اور گاندھی واد کے بہت بڑے پنڈت ہیں، کہتے ہیں کہ گاندھی جی کو تو ہم نے بہت پہلے ہی مار ڈالا تھا. لیکن اگر اب بھی ہم سنبھل جائیں، تو بہت ہے. ورنہ اگر انسان کا اِسی طرح ہم خون بہاتے رہے، تو وہ دن دور نہیں ہے، جب ہم ذرا ذرا سی بات پر اپنے ہی بچّوں کو قتل کرنے لگیں گے. اپنی ہی بہن اور بیٹیوں کی عزّت لوٹنے میں ہم کو ہچک نہیں ہوگی اور سوا اپنے ہم سب کو اپنا دشمن مانیں گے.

سوچیے، کیا ہم اِسی طرف تو نہیں بڑھے جا رہے ہیں؟

(۴۰۶)

हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत

(१६)

(सितार के ख़ास घराने)

(भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी)

मसीत ख़ाँ नाम के एक बड़े सितार के उस्ताद हो गये है. यह सेनिये थे. इन्होंने सितार बजाने का एक ख़ास स्टाइल चलाया जो अब तक भी सितार का बेहतरीन 'टेकनीक' या 'पद्धति' माना जाता है. इस टेकनीक या पद्धति को उस्तादी दुनिया में 'बाज' (यानी बजाने की विधि) कहा जाता है. आगे हम टेकनीक' या स्टाइल को 'बाज' नाम से ही पुकारेंगे. मसीत ख़ाँ का बाज— 'दिल्ली बाज' या 'पछाहीं बाज' नाम से भी मशहूर है, इसलिये कि यह दिल्ली के रहने वाले थे और कुछ अर्से तक रामपुर व जयपुर दरबार की मुलाज़मत भी की थी. इनका बाज इतना हर दिलअज़ीज़ साबित हुआ कि मसीत ख़ाँ का सितार का एक अलग 'स्कूल' ही मान लिया गया. इनके बाज को ख़ास तौर से हासिल करने वाले आगे के सब उस्ताद मसीत ख़ानी स्कूल (या बादन कौशल) के गुनी माने जाने लगे.

मसीत ख़ानी बाज की ख़ासियत थी उसकी सादगी. इसकी गतें आम तौर से धीमें (तिताले) में बँधी होती हैं और उसके बोल होते हैं—दिर दा दिर दा रा दा दा रा—बस. यही बोल दो

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(۱۶)

ستار کے خاص گھرانے

(بھائی گنیش پرشاد دویدی)

مسیت خاں نام کے ایک بڑے ستار کے اُستاد ہو گئے ہیں. یہ سینئے تھے. انھوں نے ستار بجانے کا ایک خاص اسٹائل چلایا جو اب تک بھی ستار کا بہترین 'ٹیکنک' یا 'پدھتی' مانا جاتا ہے. اِس ٹیکنک یا پدھتی کو اُستادی دُنیا میں 'باج' (یعنی بجانے کی ودھی) کہا جاتا ہے. آگے ہم ٹیکنک یا اسٹائل کو 'باج' نام سے ہی پکاریں گے. مسیت خاں کا باج — 'دلی باج' یا 'پچھاہیں باج' نام سے بھی مشہور ہے، اس لئے کہ یہ دلی کے رہنے والے تھے اور کچھ عرصے تک رامپور و جے پور دربار کی ملازمت بھی کی تھی. اِن کا باج اتنا ہر دل عزیز ثابت ہوا کہ مسیت خاں کا ستار کا ایک الگ 'اسکول' ہی مان لیا گیا. اِن کے باج کو خاص طور سے حاصل کرنے والے آگے کے سب اُستاد مسیت خانی اسکول (یا بادن کوشل) کے گنی مانے جانے لگے.

مسیت خانی باج کی خاصیت تھی اِس کی سادگی. اِس کی گتیں عام طور سے دھیمے (تی تالے) میں بندھی ہوتی ہیں اور اُس کے بول ہوتے ہیں — دِر دا دِر دا را دا دا را — بس. یہی بول دو آورتیں (آورتی) میں دھیمے کے ۱۶ ماترے پورے کرتا ہے اور ہم،

खाली पहली व पिछली तालों के बोल हमेशा 'दा' पर पड़ते हैं. 'दिर' का 'मोहड़ा' या 'मुखड़ा' लेकर गत उठती है.

इस बाज की दूसरी ख़ासियत है इसकी तानें, और हमेशा गत का मुहड़ा लेकर गत की सम पर आने की पद्धति. इसकी गत धीमे या 'बिलंपत' लय में ही बजती है और तनकारी (तनैती या 'तान-क्रिया') आम तौर से चौगुन में होती है. पहले कुछ छोटी 'निकास' या मुखड़े की तानें बजती हैं जो आम तौर से चार या छः मात्रे की होती हैं. फिर धीरे धीरे तानें लंबी होती चलती हैं. तानें ८ या १० अवर्ते तक की होती हैं, पर मसीत खानी बाज में तानें सीधे गत की सम पर कभी नहीं 'न्यास' या ख़तम की जातीं. इसको आम तौर से ११ वीं मात्रा पर तोड़ देते हैं, और १२ वीं से गत का 'दिर दा' से मुहड़ा लेकर सम पर आते हैं. यही ठीक भी है. क्योंकि गत और तानों में सामंजस बैठाने का, जिस से वह दोनों राग के एक ही जिस्म के दो कुदरती अंग मालूम हों, इससे अच्छा कोई तरीक़ा नहीं है.

आम तौर से जो 'सेनीबाज' या 'सेनी पद्धति' नाम से मशहूर है वह 'मसीतख़ानी' बाज का ही दूसरा नाम है, क्योंकि मसीत ख़ाँ सेनिये थे. अर्से तक इस बाज की शोहरत रही फिर 'रज़ाख़ानी' बाज के ज़्यादा प्रचार में आने के बाद यह बाज दबसा गया.

गुलाम रज़ा खाँ

गुलाम रज़ा ख़ाँ नाम के एक बहुत बड़े उस्ताद १९ वीं सदी के पिछले हिस्से में हो गये हैं. इनका मकान पूरब में जौनपुर के पास था. यह किसी तानसेन बंसी रबाबिये के शागिर्द थे पर बजाया इन्होंने सितार ही रबाब नहीं. जहाँ

خالی پہلی و پچھلی تالوں کے بول ہمیشہ 'دا' پر پڑتے ہیں. 'دِر' کا 'مُہڑا' یا 'مکھڑا' لے کر گت اُٹھتی ہے.

اس باج کی دوسری خاصیت ہے اس کی تانیں، اور ہمیشہ گت کا مُہڑا لے کر گت کی سَم پر آنے کی پدھتی. اس کی گت دھیمی یا 'بلمپت' لَے میں ہی بجتی ہے اور تنکاری (تنوتی یا 'تان کریا') عام طور سے چوگُن میں ہوتی ہے. پہلے کچھ چھوٹی 'نکاس'، یا مکھڑے کی تانیں بجتی ہیں جو عام طور سے چار یا چھ ماترے کی ہوتی ہیں. پھر دھیرے دھیرے تانیں لمبی ہوتی چلتی ہیں. تانیں ۸ یا ۱۰ آورتیں تک کی ہوتی ہیں، پر مسیت خانی باج میں تانیں سیدھے گت کی سَم پر کبھی نہیں 'نیاس' یا ختم کی جاتیں. اس کو عام طور سے ۱۱ ویں ماترے پر توڑ دیتے ہیں اور ۱۲ ویں سے گت کا 'دِر دا' سے مُہڑا لے کر سَم پر آتے ہیں. یہی ٹھیک بھی ہے. کیونکہ گت اور تانوں میں سامنجس بٹھانے کا، جس سے وہ دونوں راگ کے ایک ہی جسم کے دو قدرتی انگ معلوم ہوں، اس سے اچھا کوئی طریقہ نہیں ہے.

عام طور سے جو 'سینی باج'، یا 'سینی پدھتی' نام سے مشہور ہے وہ 'مسیت خانی' باج کا ہی دوسرا نام ہے، کیونکہ مسیت خاں سینیے تھے. عرصے تک اس باج کی شہرت رہی پھر 'رضا خانی' باج کے زیادہ پرچار میں آنے کے بعد یہ باج دب سا گیا.

غلام رضا خاں

غلام رضا خاں نام کے ایک بہت بڑے اُستاد ۱۹ ویں صدی کے پچھلے حصے میں ہو گئے ہیں. ان کا مکان پورب میں جونپور کے پاس تھا. یہ کسی تان سین بنسی ربابیے کے شاگرد تھے پر بجایا انھوں نے ستار ہی رباب نہیں. جہاں

तक पता चलता है यह छज्जू ख़ाँ रबाबिये के शागर्द थे. पर निश्चय रूप से हम नहीं कह सकते कि यह किसके शागर्द थे. मसीत ख़ाँ की तरह यह ख़ानदानी उस्ताद नहीं थे. अपने ख़ानदान में यही पहले शख़्स थे जिन्होंने तंत्र और संगीत सीखा पर इस में महारत, ऐसी हासिल की और इतने एक़बाली उस्ताद साबित हुए कि सेनियों के मुक़ाबले में इन का 'बाज' चल निकला, यहाँ तक कि सेनी बाज एक हद तक इस के सामने दब गया और आज दिन हालत यह है कि सेनी बाज को दुनिया भूल चली; क्या उस्ताद क्या शौक़ीन सितार, सरोद सब जगह रज़ाख़ानी गत ही सुनने को मिलती है.

रज़ाख़ानी गतों की बंदिश ज़्यादा जटिल, पेचीदी और गठी हुई होती है और तानों की जगह इस में रागांगी 'तोड़े' बजते हैं, जो गत और राग की बंदिश के मुताबिक़ ही पहले से बांधे जाते हैं. मसीतख़ानी तानों की तरह इनका इच्छानुसार (Extempore) मनमाना विस्तार नहीं किया जा सकता. बात यह है—दुनिया दिन ब दिन इख़्तेसार, संक्षेप व जल्दी की ओर बढ़ रही है. मसीत ख़ानी एक गत के लिये कम से कम एक घंटे का वक़्त चाहिये. यह बिलंपत लय में बड़े इतमीनान के साथ बजती थी. उस सुख और समृद्धि के पुराने युग में नन, तेल, लकड़ी की फ़िक्र कम थी, शौक़ीन लोग इतमीनान के साथ रोज़ाना कुछ घंटे संगीत चर्चा में दे सकते थे और इसी तरह से हिन्दुस्तानी संगीत की इतनी तरक़्क़ी हो सकी है. पर ज्यों ज्यों ज़माना बदलता गया, त्यों त्यों लोगों में संगीत के लिये धीरज कम होने लगा. गुलामरज़ा ख़ाँ की

تک پتہ چلتا ہے یہ چھجو خاں ربابیئے کے شاگرد تھے. پر نشچے روپ سے ہم نہیں کہہ سکتے کہ یہ کس کے شاگرد تھے. مسیت خاں کی طرح یہ خاندانی استاد نہیں تھے. اپنے خاندان میں یہی پہلے شخص تھے جنہوں نے تنتر اور سنگیت سیکھا پر اس میں مہارت ایسی حاصل کی اور اتنے اقبالی استاد ثابت ہوئے کہ سینیوں کے مقابلے میں ان کا 'باج' چل نکلا، یہاں تک کہ سینی باج ایک حد تک اس کے سامنے دب گیا اور آج دن حالت یہ ہے کہ سینی باج کو دنیا بھول چلی؛ کیا استاد کیا شوقین ستار، سرود سب جگہ رضا خانی گت ہی سننے کو ملتی ہے.

رضا خانی گتوں کی بندش زیادہ ژٹل، پیچیدہ اور گٹھی ہوئی ہوتی ہے اور تانوں کی جگہ اس میں راگانگی 'توڑے' بجتے ہیں، جو گت اور راگ کی بندش کے مطابق ہی پہلے سے باندھے جاتے ہیں. مسیت خانی تانوں کی طرح ان کا اچھا نسار (Extempore) من مانا وستار نہیں کیا جا سکتا. بات یہ ہے— دنیا دن بدن اختصار، سنکشیپ و جلدی کی اور بڑھ رہی ہے. مسیت خانی ایک گت کے لئے کم سے کم ایک گھنٹے کا وقت چاہئے. یہ بلمپت لے میں بڑے اطمینان کے ساتھ بجتی تھی. اس سکھ اور سمردھی کے پرانے یگ میں نون، تیل، لکڑی کی فکر کم تھی، شوقین لوگ اطمینان کے ساتھ روزانہ کچھ گھنٹے سنگیت چرچا میں دے سکتے تھے اور اسی طرح سے ہندستانی سنگیت کی اتنی ترقی ہو سکی ہے. پر جیوں جیوں زمانہ بدلتا گیا، تیوں تیوں لوگوں میں سنگیت کے لئے دھیرج کم ہونے لگا. غلام رضا خاں کی

पैदायश तब हुई जब कि दिल्ली दरबार के साथ साथ संगीत के रक्षक और रजवाड़े भी टूट रहे थे. देश मे अंग्रेजों का सिक्का जम रहा था और देश में सब जगह लड़ाई और अशान्ति फैल रही थी अंग्रेज़ी अमलदारी की शुरूआत हमारी संस्कृति और संगीत के लिये घातक थी. अंग्रेज़ो मे यह विश्वास था कि कलचर की शक्ल में दुनिया मे अगर कोई चीज़ है तो वह यूरोपी कलचर ही हो सकता है और इन्होने इस देश की तालीम और यहाँ के रजवाड़ो के कुवँरो की तालीम कुछ इस ढर्रे पर चलाई जिस से कि यहाँ के आम फहम और ख़ास कर रजवाड़े, यहाँ के साहित्य, अदब कलचर, चित्रकला, कविता, संगीत सब को बहुत छोटा या जंगली समझ कर हिकारत की निगाह से देखें और विलायती, ख़ासकर अंग्रेज़ी साहित्य, कला, संगीत वग़ैरा के भक्त बने. एक बहुत बड़ी हद तक इन की नीति कारगर भी हुई. कोशिश तो यह थी कि सारा हिन्दुस्तान अफ्रीका की तरह ईसाई बना लिया जाता, पर यहाँ की सभ्यता बहुत पुरानी थी. आख़िर को उन्ही को इस देश को छोड़ कर चला जाना पड़ा.

ख़ैर, तो ग़ुलाम रज़ा ख़ाँ ऐसे वक्त में हुए जब कि रजवाड़े बीन, रबाब की जगह मोटर, पोलो, जाज़ बैंड और बाल डान्स (अंग्रेज़ी नाच) के शौक़ीन हो रहे थे. पर इन्होंने अपने बाज का प्रचार मामूली जनता मे ही किया. जौनपुर, बनारस, गया, इलाहाबाद वग़ैरा शहरो मे मुहम्मद अली ख़ाँ वग़ैरा सेनी रबाबियों के अर्से तक रहने की वजह से यहाँ के आम लोगो में संगीत का शौक़ बहुत बढ़ गया था. बीन और रबाब अगर

پیدائش تب ہوئی جب کہ دلّی دربار کے ساتھ ساتھ سنگیت کے رکشک اور رجواڑے بھی ٹوٹ رہے تھے۔ دیش میں انگریزوں کا سکہ جم رہا تھا اور دیش میں سب جگہ لڑائی اور اشانتی پھیل رہی تھی۔ انگریزی عملداری کی شروعات ہماری سنسکرتی اور سنگیت کے لئے گھاتک تھی۔ انگریزوں میں یہ وشواس تھا کہ کلچر کی شکل میں دنیا میں اگر کوئی چیز ہے تو وہ یوروپی کلچر ہی ہو سکتا ہے اور انھوں نے اس دیش کی تعلیم اور یہاں کے رجواڑوں کے کنوروں کی تعلیم کچھ اس ڈھرّے پر چلائی جس سے کہ یہاں کے عام فہم اور خاص کر رجواڑے، یہاں کے ساہتیہ، ادب، کلچر، چترکلا، کویتا، سنگیت سب کو بہت چھوٹا یا جنگلی سمجھ کر حقارت کی نگاہ سے دیکھیں اور ولائتی، خاص کر انگریزی ساہتیہ، کلا، سنگیت وغیرہ کے بھکت بنیں۔ ایک بہت بڑی حد تک ان کی نیتی کارگر بھی ہوئی۔ کوشش تو یہ تھی کہ سارا ہندستان افریقہ کی طرح عیسائی بنا لیا جاتا، پر یہاں کی سبھیتا بہت پرانی تھی۔ آخیر کو انھیں کو اس دیش کو چھوڑ کر چلا جانا پڑا۔

خیر، تو غلام رضا خاں ایسے وقت میں ہوئے جب کہ رجواڑے بین، رباب کی جگہ موٹر، پولو، جاز بینڈ اور بال ڈانس (انگریزی ناچ) کے شوقین ہو رہے تھے۔ پر انھوں نے اپنے باج کا پرچار معمولی جنتا میں ہی کیا۔ جون پور، بنارس، گیا، الہ آباد وغیرہ شہروں میں محمد علی خاں وغیرہ سینی ربابیوں کے عرصے تک رہنے کی وجہ سے یہاں کے عام لوگوں میں سنگیت کا شوق بہت بڑھ گیا تھا۔ بین اور رباب اگر

दरबारी बाजे थे तो सितार जनता (Masses) का बाजा साबित हुआ. इसकी बनावट सादी है और इतनी खर्चीली भी नहीं. सेनी बाज सितार में ही खप सका पर रज़ाख़ानी बाज ('पूरब बाज') सितार और सरोद दोनो के लिये यकसाँ ठीक उतरा. सरोद पर मसतीख़ानी गत आमतौर से नहीं ही बजती ! हफीज़ अली और अलाउद्दीन ख़ाँ ऐसे दो एक एक़बाली सरोदियों को छोड़कर मसीत ख़ानी सरोद पर बजाने की हिम्मत किसी की नहीं पड़ती. वजह है सेनी बाज की लयदारी की कठिनाई. बिलंपत की लय में गत को क़ायम रखना और चौगुन, अठगुन तक की तान कारी करना बहुत कठिन काम है. सरोद में सीधी व लंबी तान यों भी बहुत मुश्किल है. हाँ रज़ाख़ानी छोटी गतें व छोटे बंदिशी तोड़े सरोद, सितार दोनों पर बहुत अच्छे आते हैं. रज़ाख़ानी गत के ख़ास बोल यों हैं—

(१) दा दिर दिर दिर दार दार दा दा—दा—र दा दा रा, दा रा दिर दिर दार दार दा

या

(२) दिर दिर दा दार दिर दारा दिर दिर दा

इसी तरह के, इन से मिलते जुलते बीसों क़िस्म के बोल चल पड़े. इनकी बंदिश बहादुर सेन वग़ैरा के तरानों से बहुत मिलती जुलती है. यह कहा जा सकता है कि रज़ाख़ानो गतें ज्यादा तर तरानों या ठुमरियों की बंदिश पर बांधी गई हैं. इस बाज के सब से बड़े उस्ताद हुए बरक्तुल्ला ख़ाँ, जो जयपुर के रहने वाले एक डेरे दार

درباری باجے تھے تو ستار جنتا (Masses) کا باجا ثابت ہوا۔ اسکی بناوٹ سادی ہے اور اتنی خرچیلی بھی نہیں۔ سینی باج ستار میں ہی کھپ سکا پر رضا خانی باج ('پورب باج') ستار اور سرود دونوں کے لئے یکساں ٹھیک اترا۔ سرود پر مسیت خانی گت عام طور سے نہیں ہی بجتی! حفیظ علی اور علاء الدین خاں ایسے دو ایک اقبالی سرودیوں کو چھوڑ کر مسیت خانی سرود پر بجانے کی ہمت کسی کی نہیں پڑتی۔ وجہ ہے سینی باج کی لے داری کی کٹھنائی۔ بلنبت کی لے میں گت کو قائم رکھنا اور چوگون، آٹھ گون تک کی تان کاری کرنا بہت کٹھن کام ہے۔ سرود میں سیدھی و لمبی تان یوں بھی بہت مشکل ہے۔ ہاں رضا خانی چھوٹی گتیں و چھوٹی بندشیں توڑے سرود، ستار دونوں پر بہت اچھے آتے ہیں۔ رضا خانی گت کے خاص بول یوں ہیں —

(۱) دا دِر دِر دِر دار دار دا دا—دا—ر دا دا را، دا را دِر دِر دار دار دا

یا

(۲) دِر دِر دا دار دِر دارا دِر دِر دا

اسی طرح کے، ان سے ملتے جلتے بیسوں قسم کے بول چل پڑے۔ ان کی بندش بہادر سین وغیرہ کے ترانوں سے بہت ملتی جلتی ہے۔ یہ کہا جا سکتا ہے کہ رضا خانی گتیں زیادہ تر ترانوں یا ٹھمریوں کی بندش پر باندھی گئی ہیں۔ اس باج کے سب سے بڑے استاد ہوئے برکت اللہ خاں، جو جے پور کے رہنے والے ایک ڈیرے دار

बरकत तुल्लाह खां थे. यह शागिर्द थे अमीर ख़ाँ सेनिये के. निहाल सेनके बेटे अमीर खां ! यह बहुतबड़े लोग थे और बीन व सितार दोनों पर यकसाँ कमाल रखते थे. हिन्दुस्तान के सब से बड़े तंत्रकारों में हो गये हैं निहाल सेन. यह लोग मामूली लोगों को शागिर्द नहीं बनाते थे. और डेरेदार या सपर्दों को तो अछूत मानते थे. पर बरकततुल्ला की हमशीर बहुत गुनी गायिका थीं, और महाराज जयपुर तक उनकी बहुत क़द्र करते थे. इन्हो ने बड़ी खुशामद बरामद से ख़ाँ साहब को राज़ी किया और इस बात पर तैयार किया कि वह इनके भाई को सितार की तालीम दें. आख़िर दी तालीम उन्होने, पर अपना असली बाज यानी सेनी पद्धति उन्हे नहीं बताई. यह तो उन्होंने अपने बच्चों, फज़ल हुसेन, फ़िदा हुसेन और पोते अहमद के लिये ही अलग रक्खी हुई थी. पर भगवान की कुछ ऐसी माया कि बरकततुल्ला का नाम इन सब से ऊपर हो गया और फिर तब से सेनी बाज का नाम लेना तक बन्द हो गया. अमीर ख़ाँ के ख़ानदान में अब कोई नहीं है. बरकततुल्ला को सेनी बाज न सिखाने के दो मक़सद हो सकते थे. एक तो यह कि सेनी बाज ख़ानदान के बाहर नहीं जा सकता, दूसरे यह कि सेनिये रज़ाख़ानी बाज भी सिखला सकते हैं, या रज़ाख़ानी बाज उनके लिये खेल सा है, जैसे धुरपदिये बीनकारों के लिये ख़याल की तालीम देना, जैसी 'सदारंग' ने दी थी. खुद बीन कार और धुरपदिये होते हुए भी इन्हों ने ही सब से बड़ी तादाद में ख़याल रचे और चाँद ख़ाँ व सूरज ख़ाँ नाम के दो ग़ैर ख़ानदानी आवारा लड़कों को सब याद करवा कर दरबार में सुनवा दिया और फिर

برکت اللہ خاں تھے۔ یہ شاگرد تھے امیر خاں سینئے کے۔ نہال سین کے بیٹے امیر خاں! یہ بہت بڑے لوگ تھے اور بین و ستار دونوں پر یکساں کمال رکھتے تھے۔ ہندستان کے سب سے بڑے تنتر کاروں میں ہو گئے ہیں نہال سین۔ یہ لوگ معمولی لوگوں کو شاگرد نہیں بناتے تھے۔ اور ڈیرے دار یا سپردوں کو تو اچھوت مانتے تھے۔ پر برکت اللہ کی ہمشیر بہت گنی گائکہ تھیں، اور مہاراج جے پور تک اُن کی بہت قدر کرتے تھے۔ انھوں نے بڑی خوشامد برامد سے خانصاحب کو راضی کیا اور اِس بات پر تیار کیا کہ وہ اِن کے بھائی کو ستار کی تعلیم دیں۔ آخر دی تعلیم اُنھوں نے، پر اپنا اصلی باج یعنی سینی پدھتی انھیں نہیں بتائی۔ یہ تو اُنھوں نے اپنے بچوں، فضل حسین، فدا حسین اور پوتے احمد کے لئے ہی الگ رکھی ہوئی تھی۔ پر بھگوان کی کچھ ایسی مایا کہ برکت اللہ کا نام اِن سب سے اوپر ہو گیا اور پھر تب سے سینی باج کا نام لینا تک بند ہو گیا۔ امیر خاں کے خاندان میں اب کوئی نہیں ہے۔ برکت اللہ کو سینی باج نہ سکھانے کے دو مقصد ہو سکتے تھے۔ ایک تو یہ کہ سینی باج خاندان کے باہر نہیں جا سکتا، دوسرے یہ کہ سینئے رضا خانی باج بھی سکھلا سکتے ہیں، یا رضا خانی باج اُن کے لئے کھیل سا ہے، جیسے دُھرپدیئے بین کاروں کیلئے خیال کی تعلیم دینا، جیسے 'سدارنگ' نے دی تھی۔ خود بین کار اور دُھرپدیئے ہوتے ہوئے بھی انھوں نے ہی سب سے بڑی تعداد میں خیال رچے اور چاند خاں و سورج خاں نام کے دو غیر خاندانی آوارہ لڑکوں کو سب یاد کروا کر دربار میں سنوا دیا اور پھر

यही दोनों खयाल के सब से बड़े उस्ताद हुए. इनका घराना चला जो अब भी है. बहुत कुछ इसी ढंग का हाल बरकतुल्ला का हुआ. सेनी बाज इनको नहीं दिया गया इस लिये कि यह 'कुलीन' या ऊँचे खानदान (उस्तदी मानी में) के न होने की वजह से इस के लायक़ नही समझे गये. पर जो इन्हें मिला उसी को इन्हों ने इतना ऊँचा उठा दिया कि सेनी बाज का खातमा ही हो गया. बरकतुल्ला के औलाद नहीं थी. इनके खास शागिर्द हुए आशिक़ अली खाँ गवैये, बनारस वाले. इनकी तालीम में दूसरा

आशिक़अली खाॅ

गुल खिला. अमीर खाँने 'सेनी बाज' बरकतुल्ला को सिखाया तो नहीं पर बीसों बरस तक सेनियो के गढ़ जयपुर मे रह कर बरकतुल्ला ने सेनी बाज की हर एक हरकत को बखूबी समझ न लिया हो यह ग़ैर मुमकिन है. जयपुर मे अपने गुट घराने के सामने बरकतुल्ला ने कभी सेनी बाज आम जलसे में नही बजाया, पर उसकी मश्क़ यह अपने मकान पर कमरा बन्द करके कर लिया करते थे. फिर बाद को 'अपने' घराने मे सुरक्षित या महफ़ूज कर देने के लिये इन्होने आशिक़ अली खाॅ को मसीतखानी कला मे ही जाहिर किया. मशहूर है कि सेनियों के बाद इतना अच्छा मसीतखानी बाज किसी ने नहीं बजाया जितना कि आशिक़ अली खाॅ ने. यह सेनी बाज में पारंगत हो गये थे. पर इनके लड़के मुश्ताक़ अली खाँ के मामले में फिर क़िस्मत ने पलटा खाया.' मुश्ताक़ अली ९ बरस की उम्र मे ही कलकत्ते चले गये

یہی دونوں خیال کے سب سے بڑے اُستاد ہوئے۔ ان کا گھرانا چلا جو اب بھی ہے۔ بہت کچھ اسی ڈھنگ کا حال برکت اللہ کا ہوا۔ سینی باج ان کو نہیں دیا گیا اس لئے کہ یہ 'کلین' یا اونچے خاندان (استادی معنی میں) کے نہ ہونے کی وجہ سے اس کے لائق نہیں سمجھے گئے۔ پر جو انہیں ملا اسی کو انھوں نے اتنا اونچا اٹھا دیا کہ سینی باج کا خاتمہ ہی ہو گیا۔ برکت اللہ کے اولاد نہیں تھی۔ ان کے خاص شاگرد ہوئے عاشق علی خاں گویئے، بنارس والے، ان کی تعلیم میں دوسرا

عاشق علی خاں

گل کھلا۔ امیر خاں نے 'سینی باج' برکت اللہ کو سکھایا تو نہیں پر بیسوں برس تک سینیوں کے گڑھ جے پور میں رہ کر برکت اللہ نے سینی باج کی ہر ایک حرکت کو بخوبی سمجھ نہ لیا ہو یہ غیر ممکن ہے۔ جے پور میں اپنے گٹ گھرانے کے سامنے برکت اللہ نے کبھی سینی باج عام جلسے میں نہیں بجایا، پر اس کی مشق یہ اپنے مکان پر کمرا بند کر کے کر لیا کرتے تھے۔ پھر بعد کو 'اپنے' گھرانے میں سورکشت یا محفوظ کر دینے کے لئے انھوں نے عاشق علی خاں کو مسیت خانی کلا میں ہی ظاہر کیا۔ مشہور ہے کہ سینیوں کے بعد اتنا اچھا مسیت خانی باج کسی نے نہیں بجایا۔ جتنا کہ عاشق علی خاں نے۔ یہ سینی باج میں پارنگت ہو گئے تھے۔ پر ان کے لڑکے مشتاق علی خاں کے معاملے میں پھر قسمت نے پلٹا کھایا۔ مشتاق علی نو برس کی عمر میں ہی کلکتہ چلے گئے

مشتاق علی خاں

اور بیچ بیچ میں بنارس آتے جاتے رہے۔

इनको १४ १५ साल का ही छोड़कर आशिक़ अली खाँ कूच कर गये. अपनी पूरी विद्या यह बच्चे मुश्ताक को न सिखा पाये. इनकी तालीम ज्यादातर अमीर खाँ सरोदिये से हुई जो कलकत्ते में रहते थे. फिर छोटे खाँ सरंगिये और अनाथ नाथ बोस नाम के एक तबले के शौक़ीन की सोहबत में यह अरसे तक रहे और इन लोगों की बहुत सी हरकतें इनके हाथ में आई. पर जो लोग इनके वालिद के बाज को अच्छी तरह सुने हुए हैं उनका कहना यही है कि आशिक अली का बाज इनके हाथ मे नहीं के बराबर है. यह आमतौर से रज़ाखानी बाज ही बजाते हैं. यह अभी जवान है और हिन्दुस्तान के अच्छे सितारियों मे इनकी गिनती है. इलाहाबाद की कानफ्रेंसो मे बहुत बार आ चुके हैं.

इमदाद ख़ाँ अब हम सितार के एक दूसरे ख़ास घराने का ज़िक्र करते हैं. उमराव ख़ाँ बीनकार का हाल हम लिख चुके हैं. इनके दोनों बेटे अमीर और रहीम ख़ाँ तो बड़े गुनी बीनकार थे ही. इनके दो शागिर्द नवाब क़ुतुबुद्दौला और गुलाम मुहम्मद भी बहुत मशहूर हैं.यह अयोध्या के राजा के वज़ीर थे किसी वजह से राजा साहब उमराव ख़ाँ पर बहुत ख़फ़ा हो गये थे, आसार तो यह थे कि शायद इनको वह मरवा ही डालते. नवाब क़ुतुबुद्दौला ने ही बड़ी हिकमत से उमराव ख़ाँ की जान बचाई इसके एहसान में ख़ाँ साहब ने जी खोल कर क़ुतुबुद्दौला को बीन और सितार की तालीम दी. क़ुतुबुद्दौला ने बहुत सी अच्छी-अच्छी गतें बनाई जो अब तक उस्ताद लोग बजाते हैं.

गुलाम मुहम्मद उमराव ख़ाँ साहब के सब से प्यारे शागिर्द

ان کو ۱۴-۱۵ سال کا ہی چھوڑ کر عاشق علی خاں کوچ کر گئے۔ اپنی پوری ودّیا یہ بچے مشتاق کو نہ سکھا پائے۔ ان کی تعلیم زیادہ تر امیر خاں سرودیے سے ہوئی جو کلکتہ میں رہتے تھے۔ پھر چھوٹے خاں سرنگیے اور اناتھ ناتھ بوس نام کے ایک طبلے کے شوقین کی صحبت میں یہ عرصے تک رہے اور ان لوگوں کی بہت سی حرکتیں ان کے ہاتھ میں آئیں۔ پر جو لوگ ان کے والد کے باج کو اچھی طرح سنے ہوئے ہیں ان کا کہنا یہی ہے کہ عاشق علی کا باج ان کے ہاتھ میں نہیں کے برابر ہے۔ یہ عام طور سے رضا خانی باج ہی بجاتے ہیں۔ یہ ابھی جوان ہیں اور ہندستان کے اچھے ستاریوں میں ان کی گنتی ہے۔ الہ آباد کی کانفرنسوں میں بہت بار آ چکے ہیں۔

امداد خاں اب ہم ستار کے ایک دوسرے خاص گھرانے کا ذکر کرتے ہیں۔ امراؤ خاں بین کار کا حال ہم لکھ چکے ہیں۔ ان کے دونوں بیٹے امیر اور رحیم خاں تو بڑے گنی بین کار تھے ہی، ان کے دو شاگرد نواب قطب الدولہ اور غلام محمد بھی بہت مشہور ہیں۔ یہ اَیودھیا کے راجہ کے وزیر تھے۔ کسی وجہ سے راجہ صاحب امراؤ خاں پر بہت خفا ہو گئے تھے، آثار تو یہ تھے کہ شاید ان کو نہ مروا ہی ڈالتے۔ نواب قطب الدولہ نے ہی بڑی حکمت سے امراؤ خاں کی جان بچائی۔ اس کے احسان میں خاں صاحب نے جی کھول کر قطب الدولہ کو بین اور ستار کی تعلیم دی۔ قطب الدولہ نے بہت سی اچھی اچھی گتیں بنائیں جو اب تک استاد لوگ بجاتے ہیں۔

غلام محمد امراؤ خاں صاحب کے سب سے پیارے شاگرد

थे. सबसे पहले इन्हीं को बड़े सितार पर बीन अंग की तालीम मिली और यही बड़ा सितार आगे चलकर सुरबहार नाम से मशहूर हुआ. बात कुछ यों है कि तानसेन बंस के यह बड़े उस्ताद क्या बीनकार, क्या रबाबिये और क्या सितारिये अपने ख़ास बाजे की तालीम अपनी औलाद के सिवा दूसरे को नहीं देना पसन्द करते थे. अपनी सारी उस्तादी अक्सर यह अपनी खानदानी विद्या को गुप्त व पोशीदा रखने में ही ख़र्च कर देते थे, और अगर बताते भी थे तो किसी दूसरे बाजे पर जिससे तंत्र का रहस्य ख़ानदान के बाहर न जाने पावे. उमराव ख़ाँ पहले बीनकार थे जिन्होंने अपने ख़ानदान के बाहर अपनी विद्या का प्रचार किया, पर बीणा नहीं सिखलाई, एक नये ढंग के सितार पर आलाप सिखलाया. इसी रबाबी घराने के छन्दू ख़ाँ वग़ैरा ने अपने ख़ादान के बाहर वालों—नियामततुल्ला ख़ाँ वग़ैरा को सरोद सिखाया. ग़ुलाम रज़ा को सितार सिखाया, पर रबाब किसी को नहीं छूने दिया. जयपुर वालों ने सेनी बाज घर के बाहर वालों को नहीं सिखाया. पर इस पोशीदापन और छिपाने की नीति का नतीजा क्या हुआ? सरोद ने रबाब को ख़तम कर दिया, सुर बहार और सितार ने बीन को ख़तम कर दिया, और बरकततुल्ला के रज़ाख़ानी बाज ने सेनी बाज को नेस्तनाबूद कर दिया. बीन और रबाब शायद सदा के लिये गये. सितार सरोद पर सब जगह रज़ाख़ानी बाज का बोल बाला है. हमें अफ़सोस है कि यह बाहरी घराने भी अपनी [illegible] वालों को नहीं बताते. अब भी सेनियों की

تھے، سب سے پہلے انھیں کو بڑے ستار پر بین انگ کی تعلیم ملی اور یہی بڑا ستار آگے چل کر سُر بہار نام سے مشہور ہوا۔ بات کچھ یوں ہے کہ تان سین بنس کے یہ بڑے استاد کیا بین کار، کیا رباییے اور کیا ستاریے اپنے خاص باجے کی تعلیم اپنی اولاد کے سوا دوسرے کو نہیں دینا پسند کرتے تھے۔ اپنی ساری استادی اکثر یہ اپنی خاندانی ودّیا کو گپت و پوشیدہ رکھنے میں ہی خرچ کر دیتے تھے، اور اگر بتاتے بھی تھے تو کسی دوسرے باجے پر جس سے تنتر کا رہسیہ خاندان کے باہر نہ جانے پاوے۔ امراؤ خاں پہلے بین کار تھے جنھوں نے اپنے خاندان کے باہر اپنی ودّیا کا پرچار کیا، پر بینا نہیں سکھلائی، ایک نئے ڈھنگ کے ستار پر آلاپ سکھلایا۔ اسی ربابی گھرانے کے چھندو خاں وغیرہ نے اپنے خاندان کے باہر والوں — نعمت اللہ خاں وغیرہ کو سرود سکھایا، غلام رضا کو ستار سکھایا، پر رباب کسی کو نہیں چھونے دیا۔ جے پور والوں نے سینی باج گھر کے باہر والوں کو نہیں سکھایا۔ پر اس پوشیدہ پن اور چھپانے کی نیتی کا نتیجہ کیا ہوا؟ سرود نے رباب کو ختم کر دیا، سر بہار اور ستار نے بین کو ختم کر دیا، اور برکت اللہ کے رضا خانی باج نے سینی باج کو نیست و نابود کر دیا۔ بین اور رباب شاید سدا کے لئے گئے۔ ستار سرود پر سب جگہ رضا خانی باج کا بول بالا ہے۔ ہمیں افسوس ہے کہ یہ باہری گھرانے بھی اپنی خاص چیز باہر والوں کو نہیں بتاتے۔ اب بھی سینیوں کی قسمت، اور اُن کی اس [illegible] سختی سے آجکل کے موجودہ سنگیت

घरानों ने कोई सबक़ नहीं लिया. औलाद सबकी गैरतदार और लायक़ नहीं होती. कुछ बाप का नाम बरकरार रखने का माद्दा रखते हैं, कुछ आगे भी बढ़ जाते हैं, पर कुछ नालायक़ भी होते हैं, और ऐसी हालत मे बाहर का कोई प्रतिभावान, ज़हीन शागिर्द हाथ पसारता है विद्या के लिये तो उसको धोके मे डाल कर कुछ का कुछ और ग़लत सलत बताना महापाप, बहुत भारी गुनाह है, जिसे माता सरस्वती कभी माफ़ नहीं करती. मिसालें हमारे आप के सामने हैं, इस नीत वाले सब घराने मिट गये, कोई दिया जलाने वाला, नाम लेवा तक नही रहा. इनके बाजों को भी दुनिया भूल चली.

सेनी घराने के बाहर के उस्ताद भी इसी ग़लत रास्ते पर चल रहे है. हमारे उस्ताद करामतउल्ला खॉ सरोद नवाज ने बाहर के बहुत से लोगो को तालीम दी. पर सरोद किसी को नहीं बताया, मुनीम जी को हारमोनियम. गगन बाबू को बेला (वायलिन) मुझे सितार, चुन्ने खॉ को सितार और कई लोगो को हारमोनियम. उस्ताद अलाउद्दीन खॉ इस वक्त सरोद के एक चोटी के उस्ताद हैं. इन्हो ने बीसों, पचासों, बाहर के लोगों को खासकर बङ्गालियो को बाजा सिखाया, पर सरोद सिर्फ़ अपने पुत्र अली अकबर को ही बताया और किसी को नही. इनके बारे मे मशहूर है कि किसी को निरास नहीं करते. पर लेने वाला केसर कस्तूरी की गरज़ से जाता है और सोंठ मिर्च देकर अगर आप टाल देते हैं तो इसके क्या मानी ? उसे तो आप जो ही देंगे वही लेकर वह चला जायगा, वह तो यह समझता है कि इतने बड़े उस्ताद स जो ही मिल जाय सो ही सही. पर विद्या इसी तरह खतम होगी अगर

گھرانوں نے کوئی سبق نہیں لیا۔ اولاد سب کی غیرت دار اور لائق نہیں ہوتی۔ کچھ باپ کا نام برقرار رکھنے کا مادّہ رکھتے ہیں، کچھ آگے بھی بڑھ جاتے ہیں، پر کچھ نالائق بھی ہوتے ہیں، اور ایسی حالت میں باہر کا کوئی پرتبھاوان، ذہین شاگرد ہاتھ پسارتا ہے ودّیا کیلئے تو اُس کو دھوکے میں ڈال کر کچھ کا کچھ اور غلط سلط بتانا مہا پاپ بہت بھاری گناہ ہے، جسے ماتا سرسوتی کبھی معاف نہیں کرتیں۔ مثالیں ہمارے آپ کے سامنے ہیں، اِس نیت والے سب گھرانے مٹ گئے، کوئی دیا جلانے والا، نام لیوا تک نہیں رہا۔ اِنکے باجوں کو بھی دنیا بھول چلی۔

سینی گھرانے کے باہر کے اُستاد بھی اِسی غلط راستے پر چل رہے ہیں۔ ہمارے اُستاد کرامت اللہ خاں سرود نواز نے باہر کے بہت سے لوگوں کو تعلیم دی، پر سرود کسی کو نہیں بتایا، مُنیم جی کو ہارمونیم، گگن بابو کو بیلا (وائیلن) مجھے ستار، چُنّے خاں کو ستار اور کئی لوگوں کو ہارمونیم۔ اُستاد علاءالدین خاں اِس وقت سرود کے ایک چوٹی کے اُستاد ہیں۔ اِنھوں نے بیسوں، پچیسوں، باہر کے لوگوں کو خاص کر بنگالیوں کو باجا سکھایا، پر سرود صرف اپنے پُتر علی اکبر کو ہی بتایا اور کسی کو نہیں۔ اِن کے بارے میں مشہور ہے کہ کسی کو نراس نہیں کرتے۔ پر لینے والا کیسر کستوری کی غرض سے جاتا ہے اور سونٹھ مرچ دے کر اگر آپ ٹال دیتے ہیں تو اِس کے کیا معنی ہ اُسے تو آپ جو ہی دیں گے وہی لے کر وہ چلا جائے گا، وہ تو یہ سمجھتا ہے کہ اِتنے بڑے اُستاد سے جو ہی مل جائے سو ہی سہی۔ پر ودّیا اِسی طرح ختم ہوگی اگر

समय रहते वह गुमराह उस्ताद अपनी नीत तुरन्त नहीं बदलते.

तो ग़ुलाम मुहम्मद ख़ाॅ को उमराव ख़ाॅ ने अलापकी तालीम सुरबहार पर दी न कि बीन पर. इन्हीं (ग़ुलाम मुहम्मद खाॅ) के बेटे सज्जाद मुहम्मद ख़ाँ हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सुरबहारिये हुए और इन्हीं के शागिर्द इमदाद ख़ाॅ इस देश के सबसे बड़े सितारिये हुए. सज्जाद मुहम्मद ख़ाँ साहब एक लंबे अर्से तक महाराजा जितेन्द्र मोहन टैगोर के यहाँ दरबारी गुनी थे इमदाद ख़ाँ नौजवान उम्र मे इनके पास सीखने की ग़रज़ से गये पर चूंकि यह बहुत ग़रीब और मामूली ख़ानदान के थे, ख़ाँ साहब ने इन्हे कोरा जवाब दे दिया. इमदाद ख़ाँ रात में छिप कर इनकी खिड़की के नीचे बैठकर. नाली के नाचे, जहाॅ से भी मौका पाते, इनका रियाज़ सुनते. इस तरह १० बरस सुना और दिन भर बारह बारह घन्टे रियाज़ किया. आख़िर को यह टैगोर के दरबार में बजाने के इरादे से हाज़िर हुए और इनको इजाज़त मिली मुजरा करने की. ख़ाॅ साहब से इन्होंने कह दिया कि मैं वही हूँ जिसे आपने १० बरस पहले लौटाल दिया था.

ख़ैर इमदाद ख़ाँ का सितार बजा और इन्होंने सज्जाद ख़ाँ के बाज की हू बहू नकल करके रख दी. सब लोग परेशान थे. आख़िर ख़ाँ साहब ने पूछा भाई तुमको यह तालीम कहाँ मिली. इमदाद ख़ाँ वहीं सज्जाद ख़ाँ के पांव पर गिरे, और कहा कि 'मेरे गुरू आप ही हैं,' और फिर सब किस्सा उन्होंने भरे दरबार में सुनाया. अपने कमरे मे सज्जाद ख़ाॅ की एक तसवीर यह रखते था

سمے رہتے وہ گمراہ اُستاد اپنی نیت ترنت نہیں بدلتے۔

تو غلام محمد خاں کو اُمراؤ خاں نے آلاپ کی تعلیم سُر بہار پر دی نہ کہ بین پر۔ انھیں (غلام محمد خاں) کے بیٹے سجّاد محمد خاں ہندستان کے سب سے بڑے سُر بہاریئے ہوئے اور انھیں کے شاگرد امداد خاں اس دیش کے سب سے بڑے ستاریئے ہوئے۔ سجّاد محمد خاں صاحب ایک لمبے عرصے تک مہاراجہ جتیندر موہن ٹیگور کے یہاں درباری گُنی تھے۔ امداد خاں نوجوان عمر میں ان کے پاس سیکھنے کی غرض سے گئے۔ پر چونکہ یہ بہت غریب اور معمولی خاندان کے تھے، خاں صاحب نے انھیں کورا جواب دے دیا۔ امداد خاں رات میں چھپ کر ان کی کھڑکی کے نیچے بیٹھ کر، نالی کے نیچے، جہاں سے بھی موقع پاتے، ان کا ریاض سنتے۔ اس طرح ۱۰ برس سنا اور دن بھر بارہ بارہ گھنٹے ریاض کیا۔ آخر کو یہ ٹیگور کے دربار میں بجانے کے ارادے سے حاضر ہوئے اور ان کو اجازت ملی مجرا کرنے کی۔ خاں صاحب سے انھوں نے کہہ دیا کہ میں وہی ہوں جسے آپ نے ۱۰ برس پہلے ٹال دیا تھا۔

خیر امداد خاں کا ستار بجا اور انھوں نے سجّاد خاں کے باج کی ہو بہو نقل کر کے رکھ دی۔ سب لوگ پریشان تھے۔ آخر خاں صاحب نے پوچھا بھائی تم کو یہ تعلیم کہاں ملی۔ امداد خاں وہیں سجّاد خاں کے پاؤں پر گرے، اور کہا کہ 'میرے گرو آپ ہی ہیں'، اور پھر سب قصہ انھوں نے بھرے دربار میں سُنایا۔ اپنے کمرے میں سجّاد خاں کی ایک تصویر یہ رکھے

करते. आखिर को खाँ साहब के आँसू भर आये उन्होंने इनको गले लगाया. और वायदा किया कि अब मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ मुझे मालूम है और इन्शा अल्लाह तुम्हारे ऊपर हिन्दुस्तान में किसी का सितार न बजेगा, और हुआ भी ऐसा ही.

यह किस्सा द्रोणाचार्य और उनके बहेलिये शागिर्द एकलव्य की याद दिलाता है जिसे उन्होंने अछूत कहकर धनुर्विद्या की तालीम नहीं दी पर जो उनकी मिट्टी की मूरत बना कर उसके सामने रोज़ रियाज़ करता और निशाने बाज़ी और धनुष वाण चलाने के फन में अर्जुन को उसने नीचा दिखा दिया था, पर गुरू-दक्षिणा के तौर पर गुरू द्रोणा ने उसका अंगूठा कटवा लिया था, पर सज्जाद खाँ ने इमदाद खाँ की उंगली नहीं कटवाई बल्कि बड़े प्रेम से तालीम दी—यही इतना फ़र्क़ था.

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.
सौ सफ़े की किताब की कीमत सिर्फ़ बारह आने
किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है
—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

کرتے. آخر کو خانصاحب کے آنسو بھر آئے، اُنھوں نے اُن کو گلے لگایا، اور وعدہ کیا کہ اب میں تمھیں بتاؤں گا جو کچھ مجھے معلوم ہے اور انشاء اللہ تمھارے اوپر ہندستان میں کسی کا ستار نہ بجے گا، اور ہوا بھی ایسا ہی.

یہ قصہ درونا چاریہ اور اُن کے بہیلیے شاگرد ایکلویہ کی یاد دلاتا ہے جسے اُنھوں نے اچھوت کہہ کر دھنروِدیا کی تعلیم نہیں دی پر جو اُن کی مٹی کی مورت بنا کر اُس کے سامنے روز ریاض کرتا اور نشانے بازی اور دھنش وان چلانے کے فن میں ارجن کو اُس نے نیچا دکھا دیا تھا، پر گرو دکشنا کے طور پر گرو درونا نے اُس کا انگوٹھا کٹوا لیا تھا، پر سجاد خاں نے امداد خاں کی اُنگلی نہیں کٹوائی بلکہ بڑے پریم سے تعلیم دی — یہی اتنا فرق تھا.

'ہندو مسلم ایکتا'

پنڈت سُندر لال کے

چار لکچر جو اُنھوں نے
سنٹرل کنسلیٹری بورڈ گوالیر
کی دعوت پر گوالیر میں دیئے.
سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے.
کتاب ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے
مینیجر 'نیا ہند' ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

गांधी जी की पूजा

(भाई मधुकर खेर)

दो अक्तूबर को पूरे मुल्क में गान्धी-जयन्ती मनायी गई. यह पहला मौका था जब उस दिन बापू हमारे बीच में नहीं थे और हमने उनके न रहते हुए उनकी जयंती मनाई. पिछले साल ख़ुद बापू ने कहा था कि ऐसी जयंती मनाकर क्या फायदा जब मुल्क मेरी बातों पर अमल नहीं करता. इस साल भी ऐसा लगता था कि बापू की आत्मा कह रही है कि ऐसी जयंती मनाकर क्या फायदा जब कि मुल्क मेरी बातों पर अमल नहीं करता. गान्धी-जयंती के दिन हर एक शहर में सभाएँ हुईं, बापू के चित्र को मालाएँ पहिनाई गईं, कविताएँ पढ़ी गईं, राष्ट्रीय यादगार फ़ंड के लिये पैसा वसूल किया गया और जाने क्या-क्या किया गया. कुछ जगहों पर गान्धी-सप्ताह मनाया गया और उसमें यह प्रोग्राम रक्खा गया कि लोग मुहल्लों में जाकर सफाई करें और ऐसे ही कुछ और काम करें. इतना होने के बाद भी शायद ही ऐसी कोई जगह रही हो जहाँ लम्बे-चौड़े लेक्चर न हुए हों. यह सब तो किया गया लेकिन ऐसे कितने काम किये गये जो बापू की आत्मा को शन्ति दे ? साफ़ बात है कि हम लोग उनकी पूजा तो करते हैं लेकिन उनकी बातों पर अमल नहीं करते.

गान्धी जी को हम लोगों ने देवता बना लिया है. उनकी फोटो

گاندھی جی کی پوجا

(بھائی مدھوکر کھیر)

دو اکتوبر کو پورے ملک میں گاندھی جینتی منائی گئی۔ یہ پہلا موقع تھا جب اُس دن باپو ہمارے بیچ میں نہیں تھے اور ہم نے اُن کے نہ رہتے ہوئے اُن کی جینتی منائی۔ پچھلے سال خود باپو نے کہا تھا کہ ایسی جینتی منا کر کیا فائدہ جب ملک میری باتوں پر عمل نہیں کرتا۔ اس سال بھی ایسا لگتا تھا کہ باپو کی آتما کہہ رہی ہے کہ ایسی جینتی منا کر کیا فائدہ جب کہ ملک میری باتوں پر عمل نہیں کرتا۔ گاندھی جینتی کے دن ہر ایک شہر میں سبھائیں ہوئیں، باپو کے چتر کو مالائیں پہنائی گئیں، کویتائیں پڑھی گئیں، راشٹریہ یادگار فنڈ کے لئے پیسہ وصول کیا گیا اور جانے کیا کیا کیا گیا۔ کچھ جگہوں پر گاندھی سپتاہ منایا گیا اور اس میں یہ پروگرام رکھا گیا کہ لوگ محلّوں میں جا کر صفائی کریں اور ایسے ہی کچھ اور کام کریں۔ اتنا ہونے کے بعد بھی شاید ہی ایسی کوئی جگہ رہی ہو جہاں لمبے چوڑے لکچر نہ ہوئے ہوں۔ یہ سب تو کیا گیا لیکن ایسے کتنے کام کئے گئے جو باپو کی آتما کو شانتی دیں؟ صاف بات ہے کہ ہم لوگ اُن کی پوجا تو کرتے ہیں لیکن اُن کی باتوں پر عمل نہیں کرتے۔

گاندھی جی کو ہم لوگوں نے دیوتا بنا لیا ہے۔ اُن کی فوٹو

हम उनसे अपना पीछा छुड़ा लेते हैं. आजकल जो रवैया दिखता है उस से ऐसा लगता है कि ज्यादातर लोग यही सोचते हैं कि गान्धी जी एक अवतार थे जो भूल-भटक कर इस लोक मे आ गये और जाहिर है कि आदमी वह सब नहीं कर सकता जो देवता करते हैं. गान्धी जी का और हमारा रिश्ता एक देवता और पुजारी का सा हो गया है और हम उनकी पूजा करते हैं, जयंतियाँ मनाते है. पुजारी का फर्ज इतने से ही खतम हो जाता है

इतना ही नही मुझे ऐसी और भी कई शर्मनाक बाते देखने का मौक़ा मिला है. "नया हिन्द" मे ही किसी दूसरे लेख मे मैने पूजा के सस्ते तरीके पर अफसोस जाहिर किया था. अब फिर मुझे यहाँ लिखना पड़ रहा है कि हम बापू के नाम की छीछालेदार छोड़ दे. आजकल बापू के नाम का उपयोग दलबन्दी तथा चुनाव के सिलसिले मे बहुत किया जाता है. कुछ राजकाजी पार्टियो को बापू के नाम का बेजा फायदा उठाते देख मुझे अफसोस होता है लेकिन जब मै कांग्रेसियो को भी यही करते देखता हूँ तो मेरा सिर शर्म से झुक जाता है क्योंकि मुझे कांग्रेस से मुहब्बत है और मेरे दिल मे उसका आदर है और उसी के राजनैतिक संगठन पर मेरा यक़ीन है कुछ ही दिन पहले मुझे एक जगह का चुनाव देखने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ. चुनाव में कांग्रेसी नारा लगाते थे "महात्मा गान्धी का सफेद पेटी मे वोट दो" और दूसरी तरफ समाजवादी जवाब देते थे— "बापू की लाल पेटी में वोट दो" गान्धी-जयंती के समय जो सभाएँ हुईं उनमें भी जम कर प्रचार किया गया. कुछ जगहों पर राजकाजी दलों ने अलग-अलग जयन्तियाँ मनाईं. गान्धी जी के नाम

ہم اُن سے اپنا پیچھا چھڑا لیتے ہیں۔ آج کل جو رَوَیّہ دِکھتا ہے اُس سے ایسا لگتا ہے کہ زیادہ تر لوگ یہی سوچتے ہیں کہ گاندھی جی ایک اوتار تھے جو بھول بھٹک کر اس لوک میں آگئے اور ظاہر ہے کہ آدمی وہ سب نہیں کر سکتا جو دیوتا کرتے ہیں۔ گاندھی جی کا اور ہمارا رشتہ ایک دیوتا اور پُجاری کا سا ہو گیا ہے اور ہم اُن کی پوجا کرتے ہیں؛ جینتیاں مناتے ہیں۔ پُجاری کا فرض اتنے سے ہی ختم ہو جاتا ہے۔

اتنا ہی نہیں مجھے ایسی اور بھی کئی شرمناک باتیں دیکھنے کا موقع ملا ہے۔ "نیا ہند" میں ہی کسی دوسرے لیکھ میں میں نے پوجا کے سستے طریقے پر افسوس ظاہر کیا تھا۔ اب پھر مجھے یہاں لکھنا پڑ رہا ہے کہ ہم باپو کے نام کی چھیچھا لیدر چھوڑ دیں۔ آج کل باپو کے نام کا اُپیوگ دل بندی تتھا چناؤ کے سلسلے میں بہت کیا جاتا ہے۔ کچھ راج کاجی پارٹیوں کو باپو کے نام کا بیجا فائدہ اُٹھاتے دیکھ مجھے افسوس ہوتا ہے لیکن جب میں کانگریسیوں کو بھی یہی کرتے دیکھتا ہوں تو میرا سر شرم سے جھک جاتا ہے کیونکہ مجھے کانگریس سے محبت ہے اور میرے دل میں اُس کا آدر ہے اور اُسی کے راج نیتک سنگٹھن پر میرا یقین ہے۔ کچھ ہی دن پہلے مجھے ایک جگہ کا چناؤ دیکھنے کا دُربھاگیہ پراپت ہوا۔ چناؤ میں کانگریسی نعرہ لگاتے تھے "مہاتما گاندھی کی سفید پیٹی میں ووٹ دو" اور دوسری طرف سماج وادی جواب دیتے تھے— "باپو کی لال پیٹی میں ووٹ دو" گاندھی جینتی کے سمے جو سبھائیں ہوئیں، اُن میں بھی جم کر پرچار کیا گیا۔ کچھ جگہوں پر راج کاجی دلوں نے الگ الگ جینتیاں منائیں۔ گاندھی جی کے نام

पर बुलाई हुई सभाओं मे पार्टी-प्रचार किया गया. मैंने अपने शहर मे जो शर्मनाक नज़ारा देखा उससे मुझे बहुत ही दुख हुआ. गान्धी जयन्ती मे ख़ास मेहमान को बापू के सिद्धांतो पर बोलने के बजाय अपनी पार्टी का प्रचार करते देख किसे अफ़सोस न होगा ? गान्धी जयन्ती में यह पार्टी-प्रचार दुःख से भर देता है. अगले चुनाव के उम्मीदवार गान्धी-जयन्ती के बहाने, गाँवो मे रचनात्मक कार्यक्रम के बहाने जाते हैं लेकिन वहाँ चुनाव का प्रचार करते है. गान्धी यादगार फंड को हमने अपनी मूर्खता से "वार फंड" जैसा बना लिया है. मैं ऐसे लोगो को जानता हूँ जो गांधी यादगार फंड मे बहुत चन्दा देते हैं लेकिन यह बड़ी-बड़ी रकमे चोर बाज़ार से ही आती हैं. गाँधी जी की यह निकम्मी पूजा उनकी आत्मा को न जाने कितनी तकलीफ़ देती होगी ? गाँधी जी को हम सब बड़ी-बड़ी श्रद्धांजलियाँ देते हैं पर हमने उनकी किसी भी बात पर अमल नहीं किया. दिन पर दिन हमारा पतन होता जा रहा है, और मुल्क की नैया डगमगा रही है. गाँधी जी की आड़ लेकर हम अपनी स्वार्थ-सिद्धि कर रहे है. जिस तरह पूँजीपति गाँधी-बटन और गाँधी-सोप बेचते है और बापू का नाम कलंकित करते हैं उसी तरह हमारे राजकाजी नेता चुनावों मे गाँधी जी को घसीटकर उनके राष्ट्र-पिता के पद पर कीचड़ उड़ाते हैं. गान्धी जी राष्ट्र-पिता थे इसलिये उन पर हिन्दुस्तान के हर बच्चे का पैदायशी हक है. उनका नाम हमे अपनी दलबंदी मे नहीं घसीटना चाहिये. यहाँ एक जलसे का हाल बता देता हूँ जलसे मे एक विद्यार्थी ने भाई शमीम

پر بلائی ہوئی سبھاؤں میں پارٹی پرچار کیا گیا۔ میں نے اپنے شہر میں جو شرمناک نظارہ دیکھا اس سے مجھے بہت ہی دکھ ہوا۔ گاندھی جینتی میں خاص مہمان کو باپو کے سدھانتوں پر بولنے کے بجائے اپنی پارٹی کا پرچار کرتے دیکھ کسے افسوس نہ ہوگا؟ گاندھی جینتی میں یہ پارٹی پرچار دکھ سے بھر دیتا ہے۔ اگلے چناؤ کے امیدوار گاندھی جینتی کے بہانے، گاؤوں میں رچناتمک کاریہ کرم کے بہانے جاتے ہیں لیکن وہاں چناؤ کا پرچار کرتے ہیں۔ گاندھی یادگار فنڈ کو ہم نے اپنی مورکھتا سے "وار فنڈ" جیسا بنا لیا ہے۔ میں ایسے لوگوں کو جانتا ہوں جو گاندھی یادگار فنڈ میں بہت چندہ دیتے ہیں لیکن یہ بڑی بڑی رقمیں چور بازار سے ہی آتی ہیں۔ گاندھی جی کی یہ نکمی پوجا ان کی آتما کو نہ جانے کتنی تکلیف دیتی ہوگی؟ گاندھی جی کو ہم سب بڑی بڑی شردھانجلیاں دیتے ہیں پر ہم نے ان کی کسی بھی بات پر عمل نہیں کیا۔ دن پر دن ہمارا پتن ہوتا جا رہا ہے، اور ملک کی نیا ڈگمگا رہی ہے۔ گاندھی جی کی آڑ لے کر ہم اپنی سوارتھ سدھی کر رہے ہیں۔ جس طرح پونجی پتی گاندھی بٹن اور گاندھی سوپ بیچتے ہیں اور باپو کا نام کلنکت کرتے ہیں اسی طرح ہمارے راج کاجی نیتا چناؤ میں گاندھی جی کو گھسیٹ کر ان کے راشٹر پتا کے پد پر کیچڑ اڑاتے ہیں۔ گاندھی جی راشٹر پتا تھے اس لئے ان پر ہندستان کے ہر بچے کا پیدائشی حق ہے۔ ان کا نام ہمیں اپنی دل بندی میں نہیں گھسیٹنا چاہیے۔ یہاں ایک جلسے کا حال بتا دیتا ہوں۔ جلسے میں ایک ودیارتھی نے بھائی

पड़ी. उसके कुछ बाद जलसे के सदर (एक प्रमुख कांग्रेसी मठाधीश) बोलने खड़े हुए. उन्होंने जो भाषण वहाँ दिया उससे वहाँ दलबंदी की जो भावना फैल गई उसने भाई शमीम किरहानी की नज़्म से बनी हुई अच्छी हवा को बिगाड़ दिया. ऐसा लगता था जैसे हम गान्धी जंयती नहीं मना रहे हैं बल्कि चुनाव का प्रचार सुन रहे हैं. इतना पतन शायद और किसी मुल्क का नहीं हुआ है. राष्ट्र-पिता की हत्या के बाद भी हमने उनका उपदेश न मान हिंसा के काम किये थे आज भी मुल्क की हालत वही है जो गान्धी जी के बलिदान के पहले थी. उनकी यह जंयती मुल्क ने केवल एक जश्न या त्योहार समझकर मनाई जिसका महत्व सिर्फ एक ही दिन रहा. यह पूजा का अंध-भाव असलियत में, उनकी इच्छा पूरी नहीं कर सकता. यहाँ अपनी हुकूमत की बाबत भी कुछ लिख देता हूँ. हुकूमत के लिये मेरे दिल में मुहब्बत है और उसे अपनी मान कर ही उसकी बाबत अपने खयाल जाहिर करना मैं अपना फर्ज़ समझता हूँ. हुकूमत ने गान्धी टिकिट निकाल कर एक बहुत बड़ी ग़लती की. गान्धी जी खुद इस तरह की बातों के खिलाफ थे और एक दफा उन्होंने श्री एस० के० पाटिल की अपने पुतले खड़े करने की योजना की "हरिजन" में सख्त आलोचना भी की थी. इन टिकिटों को लेकर हमारी अनुशासन हीन जनता ने उनका जो खिलवाड़ किया वह कभी भी नहीं भुलाया जा सकता. मैंने उन टिकिटों के जो सीन देखे हैं उनका वर्णन मैं यहाँ नहीं करना चाहता.

बापू की हत्या के बाद पूरा देश चीख़-चीख़ कर रोया था और हम सब ने उनके सपने को पूरा करने का निश्चय किया था. आज

پڑی۔ اُس کے کچھ دیر بعد جلسے کے صدر (ایک پرمکھ کانگریسی مٹھادھیش) بولنے کھڑے ہوئے۔ اُنھوں نے جو بھاشن وہاں دیا اُس سے وہاں دل بندی کی جو بھاؤنا پھیل گئی اُس نے بھائی شمیم کرہانی کی نظم سے بنی ہوئی اچھی ہوا کو بگاڑ دیا۔ ایسا لگتا تھا جیسے ہم گاندھی جینتی نہیں منا رہے ہیں بلکہ چناؤ کا پرچار سن رہے ہیں۔ اتنا پتن شاید اور کسی ملک کا نہیں ہوا ہے۔ راشٹر پتا کی ہتیا کے بعد بھی ہم نے اُن کا اپدیش نہ مان ہنسا کے کام کئے تھے۔ آج بھی ملک کی حالت وہی ہے جو گاندھی جی کے بلیدان سے پہلے تھی۔ اُن کی یہ جینتی ملک نے کیول ایک جشن یا تیوہار سمجھ کر منائی جس کا مہتو صرف ایک ہی دن رہا۔ یہ پوجا کا اندھ بھاؤ اصلیت میں، اُن کی اچھا پوری نہیں کر سکتا۔ یہاں اپنی حکومت کی بابت بھی کچھ لکھ دیتا ہوں۔ حکومت کیلئے میرے دل میں محبت ہے اور اُسے اپنی مان کر ہی اُسکی بابت اپنے خیال ظاہر کرنا میں اپنا فرض سمجھتا ہوں۔ حکومت نے گاندھی ٹکٹ نکال کر ایک بہت بڑی غلطی کی۔ گاندھی جی خود اس طرح کی باتوں کے خلاف تھے اور ایک دفعہ اُنھوں نے شری ایس۔ کے۔ پاٹل کی اپنے پتلے کھڑے کرنے کی یوجنا کی "ہریجن" میں سخت آلوچنا بھی کی تھی۔ ان ٹکٹوں کو لے کر ہماری انوشاسن ہین جنتا نے اُن کا جو کھلواڑ کیا وہ کبھی بھی نہیں بھلایا جا سکتا۔ میں نے اُن ٹکٹوں کے جو سین دیکھے ہیں اُن کا ورنن میں یہاں نہیں کرنا چاہتا۔

باپو کی ہتیا کے بعد پورا دیش چیخ چیخ کر رویا تھا اور ہم سب نے اُن کے سپنے کو پورا کرنے کا نشچے کیا تھا۔ آج

इतने दिनो के बाद भी वही हालत है. हमने यह आज़ादी गान्धी जी की ही रहनुमाई में पाई है पर आज हम यह नहीं कह सकते कि यह आज़ादी गान्धी जी की इच्छा को पूरी कर सकी है. किसी भी देहाती से आप बातें कीजिये. गॉव वालो की धारणा हो गई है कि गांधी जी की हत्या के बाद गांधी राज भी डूब गया और अब जिस तरह गांधी जी वापस नहीं आ सकते उसी तरह गांधीराज भी वापस नहीं आ सकता. गॉवों का उद्धार करना बापू के जीवन का एक खास मकसद था. अपना देश असलियत मे गॉवो में ही बसा है. गांवो मे जाने पर पता लगता है कि हम अभी भी कितने पिछड़े हुए हैं. देहातियो की सामाजिक और आर्थिक हालत अभी भी इतनी ख़राब है कि उसने उनकी जिन्दगी को बदतर बना रखा है. एक तरफ आर्थिक कष्टो के कारन बेचारो को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता तो दूसरी तरफ शिक्षा न होने के कारन गंदगी और बीमारियॉ उन्हे घेरे रहती है. बापू ने अपने आश्रम को एक आदर्श गॉव बना रखा था और उन्हें शहरो से अधिक देहातो से प्रेम था. आज सत्ता पाने के कारन हमारा घोर पतन हो गया है. हम अपने हर एक काम में अपने निजी नफा की बाते देखते हैं. आज लाखो गाँव और उनके प्राण करोड़ों किसान अपनी बरबादी और तबाही की तस्वीरों से हमारी गांधी जी की पूजा की नाकामयबी जाहिर कर रहे हैं. इन गाँवों पर अगर हमने नज़र न डाली तो हमारे पास ऐसी कोई भी चीज न रह पायेगी जिसे हम अपनी कह सकें. हमारा कलचर अभी भी गॉवों मे मौजूद है और

اتنے دنوں کے بعد بھی وہی حالت ہے۔ ہم نے یہ آزادی گاندھی جی کی ہی رہنمائی میں پائی ہے پر آج ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ یہ آزادی گاندھی جی کی اِچھا کو پوری کر سکی ہے۔ کسی بھی دیہاتی سے آپ باتیں کیجیے، گاؤں والوں کی دھارنا ہوگئی ہے کہ گاندھی جی کی ہتیا کے بعد گاندھی راج بھی ڈوب گیا اور اب جس طرح گاندھی جی واپس نہیں آسکتے اُسی طرح گاندھی راج بھی واپس نہیں آسکتا۔ گاؤں کا اُدّھار کرنا باپو کے جیون کا ایک خاص مقصد تھا۔ اپنا دیش اصلیت میں گاؤں میں ہی بسا ہے۔ گاؤں میں جانے پر پتہ لگتا ہے کہ ہم ابھی بھی کتنے پچھڑے ہوئے ہیں۔ دیہاتیوں کی سماجک اور آرتھک حالت ابھی بھی اتنی خراب ہے کہ اُس نے اُن کی زندگی کو بدتر بنا رکھا ہے۔ ایک طرف آرتھک کشٹوں کے کارن بیچاروں کو بھرپیٹ بھوجن بھی نہیں ملتا تو دوسری طرف شکشا نہ ہونے کے کارن گندگی اور بیماریاں اُنھیں گھیرے رہتی ہیں۔ باپو نے اپنے آشرم کو ایک آدرش گاؤں بنا رکھا تھا اور اُنھیں شہروں سے ادھک دیہاتوں سے پریم تھا۔ آج ستا پانے کے کارن ہمارا گھور پتن ہوگیا ہے۔ ہم اپنے ہر ایک کام میں اپنے نجی نفع کی باتیں دیکھتے ہیں۔ آج لاکھوں گاؤں اور ان کے پران کروڑوں کسان اپنی بربادی اور تباہی کی تصویروں سے ہماری گاندھی جی کی پوجا کی ناکامیابی ظاہر کر رہے ہیں۔ ان گاؤں پر اگر ہم نے نظر نہ ڈالی تو ہمارے پاس ایسی کوئی بھی چیز نہ رہ جائے گی جسے ہم اپنی کہہ سکیں۔ ہمارا کلچر ابھی بھی گاؤں میں موجود ہے اور

सुधार करना अपनी जिन्दगी का एक मक़सद बना लें.

हमारे राष्ट्र-पिता का नाम उसी हालत में अमर हो सकता है जब कि हमारी क़ौम भी दुनिया में अपना आदर्श रक्खे. किसी भी क़ौम का नाम उसके कैरेक्टर से ही ऊँचा हो सकता है. इस पहलू पर सोचा जाय तो हम इसी नतीजे पर पहुँचेंगे कि हमारा कैरेक्टर अब बहुत नीचे गिर रहा है. मैं काँग्रेस का क़ायल हूँ और इसलिये उसके पतन पर मुझे अफ़सोस होता है. विनोबा जी, मशरू वाला भाई, कुमारप्पा, कृपलानी जी जैसे विद्वानो का कॉंग्रेस के पतन पर नोट या लेख जब मै पढ़ता हूँ तो मेरा दिल रो पड़ता है. आज देश की सरकार पाकर हमने अपने आपको लालच पर बेच दिया है. आज़ादी के पहले कॉंग्रेस देश भक्तो की एक ऐसी संस्था थी जिसकी मिसाल दुनिया मे नहीं मिल सकती. लेकिन आज ! आज कांग्रेस में ऐसे राज काजी लोग भर गये है जो उसकी नैतिकता को मिटा रहे है. आज हमारे अधिकांश कांग्रेसी भाइयो ने अपने आप को परमिट लेने और ऐसी ही तुच्छ बातो पर बेच दिया है. एक दिन हमने अपनी ताकत से अंग्रेज़ी राज को उखाड़ फेंका पर आज हम कोशिश करने पर भी चोर बाज़ारी और मुनाफ़ाखोरों को नही मिटा पाते और इसका नतीजा यह होता है कि हमारा अन्नदाता, हमारा किसान आज भी भूकों मरता है. हम मुल्क की तरक्क़ी मे रोड़े अटका कर अपना घर भर रहे हैं. कोई ८ हज़ार की मोटर परमिट से ख़रीद कर १२ हज़ार मे बेच रहा है तो कोई इसी तरह कुछ और जालसाज़ी कर रहा है. अपनी हुकूमत होने पर भी दफ़्तरों में अब भी वही घूस ख़ोरी चल रही है और ताज्जुब

سدھار کرنا اپنی زندگی کا ایک مقصد بنا لیں۔

ہمارے راشٹر پتا کا نام اُسی حالت میں امر ہو سکتا ہے جب کہ ہماری قوم بھی دنیا میں اپنا آدرش رکھے۔ کسی بھی قوم کا نام اُس کے کیرکٹر سے ہی اونچا ہو سکتا ہے۔ اِس پہلو پر سوچا جائے تو ہم اسی نتیجے پر پہنچیں گے کہ ہمارا کیرکٹر اب بہت نیچے گر رہا ہے۔ میں کانگریس کا قائل ہوں اور اس لئے اُس کے پتن پر مجھے افسوس ہوتا ہے۔ ونوبا جی، مشرو والا بھائی، کمارپا، کرپلانی جی جیسے ودوانوں کا کانگریس کے پتن پر نوٹ یا لیکھ جب میں پڑھتا ہوں تو میرا دل رو پڑتا ہے۔ آج دیش کی سرکار پاکر ہم نے اپنے آپ کو لالچ پر بیچ دیا ہے۔ آزادی کے پہلے کانگریس دیش بھکتوں کی ایک ایسی سنستھا تھی جس کی مثال دنیا میں نہیں مل سکتی۔ لیکن آج! آج کانگریس میں ایسے راج کاجی لوگ بھر گئے ہیں جو اس کی نیتکتا کو مٹا رہے ہیں۔ آج ہمارے ادھیکانش کانگریسی بھائیوں نے اپنے آپ کو پرمٹ لینے اور ایسی ہی تچھ باتوں پر بیچ دیا ہے۔ ایک دن ہم نے اپنی طاقت سے انگریزی راج کو اُکھاڑ پھینکا پر آج ہم کوشش کرنے پر بھی چور بازاری اور منافع خوری کو نہیں مٹا پاتے اور اس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ہمارا ان داتا، ہمارا کسان آج بھی بھوکوں مرتا ہے۔ ہم ملک کی ترقی میں روڑے اٹکا کر اپنا گھر بھر رہے ہیں۔ کوئی ۸ ہزار کی موٹر پرمٹ سے خرید کر ۱۲ ہزار میں بیچ رہا ہے تو کوئی اسی طرح کچھ اور جعل سازی کر رہا ہے۔ اپنی حکومت ہونے پر بھی دفتروں میں اب بھی وہی گھوس خوری چل رہی ہے اور تعجب

नहीं अगर पहले से ज्यादा बढ़ गई हो. यही हाल सादगी के बारे मे हो गया है. पहले हम जेलो की काली कोठरियों में रहना ज्यादा पसंद करते थे पर आज ..आज हमारे मंत्रियों से लेकर साधारन से साधारन कांग्रेसी भी अपने घर और बंगले बनाने की फ़िक्र मे हैं. हमारे मंत्री, गवर्नर, गवर्नर जनरल, राजदूत सभी हर बात मे गान्धी जी की दुहाई देते है पर आज यह जाहिर हो रहा है कि इनमें से कितने गान्धी जी के उसूलों पर चल रहे हैं. हमारे राजदूत इस बात के लिये मचल पड़ते हैं कि उन्हे फ़र्नीचर चाहिये, मोटर चाहिये और जाने क्या-क्या चाहिये. जब कि बापू ने यही कहा था कि हमारे राजदूतो को मुल्क की ग़रीबी का ख़याल रख कर ग़रीब मुल्क के राजदूतो की तरह रहना चाहिये. आज कांग्रेसी एम० एल० ए० और साधारन कांग्रेसी भी इसी तरह जनता का लूटने मे भिड़े हैं. दूसरी पर्टियॉ केवल विरोध के लिये विरोध का ख़याल रख कर कांग्रेस का बीमार और गंदा विरोध कर रही हैं. बापू ने हमे सदा मुहब्बत और सहनशीलता का पाठ पढ़ाया पर आज हम पार्टी बंदी के चक्कर में पड़े फिर नफ़रत की फ़िज़ा क़ायम कर रहे हैं. बापू का हत्यारा वह एक गुमराह सर-फिरा नौजवान ही नहीं है हम सब भी हैं. हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ लोगो के दिल मे जो नफ़रत भरी थी वह उस एक आदमी के हाथों इस बेरहमी से फूटी कि उसने हमारे राष्ट्र-पिता को अपनी चपेट में ले लिया. आज बापू के बाद वनोबा जी, कुमारप्पा जी,

نہیں اگر پہلے سے زیادہ بڑھ گئی ہو۔ یہی حال سادگی کے بارے میں ہوگیا ہے۔ پہلے ہم جیلوں کی کالی کوٹھریوں میں رہنا زیادہ پسند کرتے تھے پر آج........ آج ہمارے منتریوں سے لے کر سادھارن سے سادھارن کانگریسی بھی اپنے گھر اور بنگلے بنانے کی فکر میں ہیں۔ ہمارے منتری، گورنر، گورنر جنرل، راج دوت سبھی ہر بات میں گاندھی جی کی دُہائی دیتے ہیں پر آج یہ ظاہر ہو رہا ہے کہ ان میں سے کتنے گاندھی جی کے اُصولوں پر چل رہے ہیں۔ ہمارے راج دوت اس بات کے لئے مچل پڑتے ہیں کہ انھیں فرنیچر چاہیئے، موٹر چاہیئے اور جانے کیا کیا چاہیئے۔ جب کہ باپو نے یہی کہا تھا کہ ہمارے راج دوتوں کو ملک کی غریبی کا خیال رکھ کر غریب ملک کے راج دوتوں کی طرح رہنا چاہیئے۔ آج کانگریسی ایم۔ ایل۔ اے۔ اور سادھارن کانگریسی بھی اسی طرح جنتا کو لوٹنے میں بھڑے ہیں۔ دوسری پارٹیاں کیول ورودھ کے لئے ورودھ کا خیال رکھ کر کانگریس بیمار اور گندا ورودھ کر رہی ہیں۔ باپو نے ہمیں سدا محبت اور سہنشیلتا کا پاٹھ پڑھایا پر آج ہم پارٹی بندی کے چکر میں پڑے پھر نفرت کی فضا قائم کر رہے ہیں۔ باپو کا ہتیارا وہ ایک گمراہ سرپھرا نوجوان ہی نہیں ہے ہم سب بھی ہیں۔ ہندستان کے چالیس کروڑ لوگوں کے دل میں جو نفرت بھری تھی وہ اُس ایک آدمی کے ہاتھوں اس بے رحمی سے پھوٹی کہ اس نے ہمارے راشٹرپتا کو اپنی چپیٹ میں لے لیا۔ آج باپو کے بعد ونوبا جی، کمارپّا جی، مشرو والا بھائی، سندر لال جی جیسے اُن کے چیلوں کے رہتے ہوئے

की कमज़ोरी. यह कमज़ोरी किसी खास आदमी की ही नहीं पूरे मुल्क की है. शराब बन्दी को ही लीजिये. बापू ज़िन्दगी भर जिस चीज़ के लिये कोशिश करते रहे उसकी पूर्ति आज हमारी सरकार बनने पर भी नहीं हो रही है. आज़ाद हिन्द यूनियन की फौजो में अभी भी शराब का वही दौर-दौरा चलता है और उसके अफ़सर बड़ी सरलता से इसकी जरूरत मानते हैं. ख़ुशी के मौक़ों पर फौज के सिपाहियों को ख़ासतौर पर शराब दी जाती है. हमार नेता पहले जिन दावतो की निन्दा करते थे आज मंत्री बनकर उन्ही दावतों के लिये मचल पड़ते हैं और हज़ारो रुपये इन दावतों में उड़ा दिये जाते हैं जब कि वह किसान, वह मज़दूर, वह साधारन हैसियत का हिन्दुस्तानी जिन्हें बापू रामराज देना चाहते थे, एक बार भर पेट खाना भी नही पाता. चरित्रवान होने पर ही हम बापू की आत्मा को संतोष दे पायेंगे वरना नही.

बापू के बलिदान पर हमने यह प्रतिज्ञा की थी कि हम बापू का संदेश दुनिया को देंगे लेकिन सिर्फ़ कहने से काम नहीं चलेगा, हमे संदेश देने के क़ाबिल बनना है. बापू के पुतले या मूर्तियाँ खड़ी करने से, उनके नाम पर करोड़ो रुपये जमा करने से, उनकी महानता पर लेक्चर देने से उनकी सच्ची पूजा नही होगी. उनकी पूजा के लिये जरूरी है कि हम चरित्रवान बनकर तामीरी कामों में लग जाये नही तो ऐसी सैकड़ो गान्धी जयंतियाँ मनाने पर भी उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी. बापू की रहनुमाई मे हमने नफरत के राक्षस से टक्कर ली और इसमे हमारा अमर सेनापति शहीद हो गया. अब हमे नफरत, लालच, हिंसा और ग़ुस्से से टक्कर लेनी है पर यह तभी मुमकिन होगा जब हम उनकी बताई हुई राह पर ही चलें.

کی کمزوری۔ یہ کمزوری کسی خاص آدمی کی ہی نہیں پورے ملک کی ہے۔ شراب بندی کو ہی لیجئے۔ باپو زندگی بھر جس چیز کے لئے کوشش کرتے رہے اُس کی پورتی آج ہماری سرکار بننے پر بھی نہیں ہو رہی ہے۔ آزاد ہند یونین کی فوجوں میں ابھی بھی شراب کا وہی دور دورا چلتا ہے اور اُس کے افسر بڑی سرلتا سے اُس کی ضرورت مانتے ہیں۔ خوشی کے موقعوں پر فوج کے سپاہیوں کو خاص طور پر شراب دی جاتی ہے۔ ہمارے نیتا پہلے جن دعوتوں کی نندا کرتے تھے آج منتری بن کر انہیں دعوتوں کے لئے مچل پڑتے ہیں اور ہزاروں روپئے ان دعوتوں میں اُڑا دیئے جاتے ہیں جب کہ وہ کسان، وہ مزدور، وہ سادھارن حیثیت کا ہندستانی جنہیں باپو رام راج دینا چاہتے تھے، ایک بار بھر پیٹ کھانا بھی نہیں پاتا۔ چرتر وان ہوتے پر ہی ہم باپو کی آتما کو سنتوش دے پائیں گے ورنہ نہیں۔

باپو کے بلیدان پر ہم نے یہ پرتگیا کی تھی کہ ہم باپو کا سندیش دنیا کو دیں گے لیکن صرف کہنے سے کام نہیں چلے گا، ہمیں سندیش دینے کے قابل بننا ہے، باپو کے پتلے یا مورتیاں کھڑی کرنے سے، اُن کے نام پر کروڑوں روپئے جمع کرنے سے اُنکی مہانتا پر لکچر دینے سے اُنکی سچی پوجا نہیں ہوگی۔ اُنکی پوجا کیلئے ضروری ہے کہ ہم چرتر وان بنکر تعمیری کاموں میں لگ جائیں نہیں تو ایسی سیکڑوں گاندھی جینتیاں منانے پر بھی اُن کی آتما کو شانتی نہیں ملے گی۔ باپو کی رہنمائی میں ہم نے نفرت کے راکشس سے ٹکر لی اور اس میں ہمارا امر سیناپتی شہید ہو گیا۔ اب ہمیں نفرت، لالچ، ہنسا، اور غصے سے ٹکر لینی ہے پر یہ تبھی ممکن ہوگا جب ہم اُن کی بتائی ہوئی راہ پر ہی چلیں۔

मोहम्मद अली जिनाह

(भाई वजाहत अली संदीलवी बी० ए०, एल- एल० बी०)

जिनाह साहब के एक बड़े आदमी होने में कोई शक नहीं किया जा सकता. वह धुन के पक्के और निडर थे. अपने आदेश की सचाई के लिये उनके पास मजबूत दलीलें थीं. विरोध की बड़ी बड़ी कठिनाइयों मे भी उनकी हिम्मत नहीं टूटी और उन्होने अपने मानने वालों और भक्तों को पाकिस्तान बनाने का जो बचन दिया था वह अन्त में पूरा ही कर दिखाया. पाकिस्तान उनको सदा अपना सबसे बड़ा उपकारी समझेगा. उसके जन्म-दाता वही थे और यह उन्हीं की कोशिशो का फल था जो सात करोड़ इन्सानों का एक ऐसा देश, जो इतिहास में पहले कभी नहीं था, बन गया.

लेकिन जिनाह साहब के चित्र का एक दूसरा रुख भी है. उन्होंने एक नये देश को बनाने से पहले एक बने बनाये देश के टुकड़े टुकड़े कर दिये. हिन्दुस्तान के बँटवारे के समय आग और खून का जो तूफान उठा उसकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी जिनाह साहब पर ही आती है. यह उन्हीं की फैलाई हुई साम्प्रदायिक हवा थी जिसने हजारों की जानें लीं, लाखों को घर से बे घर किया और करोड़ों के दिलों में नफ़रत और बदले का जहर भर दिया. पाकि-

محمد علی جناح

(بھائی وجاہت علی سندیلوی بی۔اے، ایل۔ایل۔بی)

جناح صاحب کے ایک بڑے آدمی ہونے میں کوئی شک نہیں کیا جا سکتا۔ وہ دُھن کے پکے اور نڈر تھے۔ اپنے آدرش کی سچائی کے لئے اُن کے پاس مضبوط دلیلیں تھیں۔ وِرودھ کی بڑی بڑی کٹھنائیوں میں بھی اُن کی ہمت نہیں ٹوٹی اور اُنھوں نے اپنے ماننے والوں اور بھکتوں کو پاکستان بنانے کا جو وچن دیا تھا وہ انت میں پورا ہی کر دکھایا۔ پاکستان اُن کو سدا اپنا سب سے بڑا اُپکاری سمجھے گا۔ اُس کے جنم داتا وہی تھے اور یہ اُنھیں کی کوششوں کا پھل تھا جو سات کروڑ انسانوں کا ایک ایسا دیش، جو اِتہاس میں پہلے کبھی نہیں تھا، بن گیا۔

لیکن جناح صاحب کے چتر کا ایک دوسرا رُخ بھی ہے۔ اُنھوں نے ایک نئے دیش کو بنانے سے پہلے ایک بنے بنائے دیش کے ٹکڑے ٹکڑے کر دیئے۔ ہندستان کے بٹوارے کے سمے آگ اور خون کا جو طوفان اُٹھا اُس کی بہت بڑی ذمہ داری جناح صاحب پر ہی آتی ہے۔ یہ اُنھیں کی پھیلائی ہوئی سامپردایک ہوا تھی جس نے ہزاروں کی جانیں لیں، لاکھوں کو گھر سے بے گھر کیا اور کروڑوں کے دلوں میں نفرت اور بدلے کا زہر بھر دیا۔ پاکستان

जा सकती. उन्होंने नफरत और डर को अपना हथियार बनाया और अपने पीछे चलने वालों के जिन विचारों को भड़काया और उभारा वह ऊँचे नहीं थे. वह खुले शब्दों में कहते थे कि वह हिन्दुस्तान और हिन्दुओ की भलाई नहीं चाहते थे. लेकिन मेरा पक्का विचार है कि उन्होंने पाकिस्तान बनाकर ख़ुद उन मुसलमानों के साथ, जिनके वह कायदे आज़म और सबसे बड़े नेता थे, बहुत बड़ी बुराई की. पाकिस्तान बनाते समय शायद वह यह भूल गये थे कि हिन्दुस्तान तो बॅटेगा लेकिन साथ ही साथ उसके मुसलमान भी तो बॅट जायेंगे.

लेकिन जिनाह साहब अच्छे थे या बुरे, यह बहस अब निपफल होकर रह गई है. बड़ा आदमी बनने के लिये अच्छा या बुरा होना जरूरी नही. बड़ाई तो सिर्फ बड़े काम से मिलती है. जिनाह साहब ने पाकिस्तान बना कर वह बड़ा काम कर दिखाया और इतिहास के बड़े आदमियो की सभा मे अपनी एक ऊँची जगह ले ली. आने वाले युग मे अगर करोड़ो आदमी उन्हे बुरा समझेंगे तो करोड़ो उन्हे अच्छा भी जानेंगे. इतिहास लेखक के लिये उन की विषेशता एक पहेली ही बनी रहेगी. वह एक ऐसी चीज मालूम होगे जो एक तरफ से बिलकुल सफेद होगी और दूसरी तरफ से बिलकुल काली. लेकिन जब इन्सानियत इतना आगे बढ़ जायेगी कि वह पुराने पक्षपातों को बिलकुल ही भूल जायेगी और हर मनुष्य और हर बात को सिर्फ इन्सानियत ही की तराजू पर तौलने लगेगी उस वक्त जरूर जिनाह साहब की विशेषता का ठीक अंदाजा लगाया जा सकेगा और दुनिया समझेगी कि उन्होंने पाकिस्तान बनाकर इन्सानों और

جاسکتی۔ اُنھوں نے نفرت اور ڈر کو اپنا ہتھیار بنایا۔ اور اپنے پیچھے چلنے والوں کے جن وچاروں کو بھڑکایا اور اُبھارا وہ اونچے نہیں تھے۔ وہ کھلے شبدوں میں کہتے تھے کہ وہ ہندستان اور ہندوؤں کی بھلائی نہیں چاہتے تھے۔ لیکن میرا پکا وچار ہے کہ اُنھوں نے پاکستان بناکر خود اُن مسلمانوں کے ساتھ، جن کے وہ قائدِ اعظم اور سب سے بڑے نیتا تھے، بہت بڑی بُرائی کی۔ پاکستان بناتے سمے شاید وہ یہ بھول گئے تھے کہ ہندستان تو بٹے گا لیکن ساتھ ہی ساتھ اُس کے مسلمان بھی تو بٹ جائیں گے۔

لیکن جناح صاحب اچھے تھے یا بُرے، یہ بحث اب نشپھل ہوکر رہ گئی ہے۔ بڑا آدمی بننے کے لئے اچھا یا بُرا ہونا ضروری نہیں۔ بڑائی تو صرف بڑے کام سے ملتی ہے۔ جناح صاحب نے پاکستان بناکر وہ بڑا کام کر دکھایا اور اِتہاس کے بڑے آدمیوں کی سبھا میں اپنی ایک اونچی جگہ لے لی۔ آنے والے یُگ میں اگر کروڑوں آدمی اُنھیں بُرا سمجھیں گے تو کروڑوں اُنھیں اچھا بھی جانیں گے۔ اِتہاس لیکھک کے لئے اُن کی وشیشتا ایک پہیلی ہی بنی رہے گی۔ وہ ایک ایسی چیز معلوم ہوں گے جو ایک طرف سے بالکل سفید ہوگی اور دوسری طرف سے بالکل کالی۔ لیکن جب انسانیت اتنی آگے بڑھ جائے گی کہ وہ پُرانے پکشپاتوں کو بالکل ہی بھول جائے گی اور ہر منش اور ہر بات کو صرف انسانیت ہی کی ترازو پر تولنے لگے گی اُس وقت ضرور جناح صاحب کی وشیشتا کا ٹھیک اندازہ لگایا جاسکے گا اور دنیا سمجھے گی کہ اُنھوں نے پاکستان بناکر انسانوں اور

इन्सानियत को फायदा पहुँचाया या नुक़्सान.

जिनाह साहब तो चले गयें लेकिन हर बड़े आदमी की तरह वह अपने पीछे कुछ सिद्धान्त और ढंग छोड़ गये और सच पूछिये तो अपने शरीर के मिट्टी में मिल जाने के बाद भी जब तक उनके वह सिद्धान्त और ढंग बाकी रहेंगे, जिनाह साहब भी ज़िन्दा रहेंगे.

इन्सान का असली जीवन उसके शरीर में नहीं बल्कि उसके विचारों मे हुआ करता है. जिनाह साहब और गांधी जी दो बहुत बड़ी विरोधी शक्तियाँ थी. जिनाह साहब बाँटने के कायल थे और गांधी जी मिलाने के. एक का हथियार नफ़रत था और दूसरे का प्रेम. एक का सिद्धान्त आपस के भेदों को उजागर करना था और दूसरे का आपस की एकता को ज्यादा बढ़ाना एक का विचार इन्सानियत को छोटे छोटे मंडलो मे बन्द कर देना था और दूसरे का इन मंडलों को तोड़ कर कुल इन्सानियत का एक बड़ा मंडल बनाना. अब हमे ठंडे दिल से देखना है कि आज हम हिन्दुस्तानी जिनाह साहब के सिद्धान्त और तरीकों की तरफ जा रहे हैं या गांधी जी के सिद्धान्त और तरीक़ों की तरफ. हम जिनाह साहब को अपने बीच में ज़िन्दा कर रहे हैं या गांधी जी का.

पाकिस्तान के राष्ट्र पिता कहते थे कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग क़ौमें हैं और उनके अलग अलग कलचर है. हिन्दुस्तान के राष्ट्र पिता कहते थे कि नहीं हिन्दू और मुसलमान एक ही देश में रहने के कारन एक ही क़ौम हैं और उनका मौलिक

انسانیت کو فائدہ پہنچایا یا نقصان ۔

جناح صاحب تو چلے گئے لیکن ہر بڑے آدمی کی طرح وہ اپنے پیچھے کچھ سدھانت اور ڈھنگ چھوڑ گئے اور سچ پوچھئے تو اپنے شریر کے مٹی میں مل جانے کے بعد بھی جب تک اُن کے وہ سدھانت اور ڈھنگ باقی رہیں گے، جناح صاحب بھی زندہ رہیں گے۔

انسان کا اصلی جیون اُس کے شریر میں نہیں بلکہ اُس کے وچاروں میں ہوا کرتا ہے۔ جناح صاحب اور گاندھی جی دو بہت بڑی ورودھی شکتیاں تھیں۔ جناح صاحب بانٹنے کے قائل تھے اور گاندھی جی ملانے کے۔ ایک کا ہتھیار نفرت تھا اور دوسرے کا پریم۔ ایک کا سدھانت آپس کے بھیدوں کو اُجاگر کرنا تھا اور دوسرے کا آپس کی ایکتا کو زیادہ بڑھانا۔ ایک کا وچار انسانیت کو چھوٹے چھوٹے منڈلوں میں بند کر دینا تھا اور دوسرے کا ان منڈلوں کو توڑ کر کل انسانیت کا ایک بڑا منڈل بنانا۔ اب ہمیں ٹھنڈے دل سے دیکھنا ہے کہ آج ہم ہندستانی جناح صاحب کے سدھانت اور طریقوں کی طرف جا رہے ہیں یا گاندھی جی کے سدھانت اور طریقوں کی طرف۔ ہم جناح صاحب کو اپنے بیچ میں زندہ کر رہے ہیں یا گاندھی جی کو۔

پاکستان کے راشٹرپتا کہتے تھے کہ ہندو اور مسلمان دو الگ الگ قومیں ہیں اور اُن کے الگ الگ کلچر ہیں۔ ہندستان کے راشٹرپتا کہتے تھے نہیں ہندو اور مسلمان ایک [illegible]

हिन्दू भाइयों के मुँह से सुन रहे हैं कि मुसलमान हमारी कौम नहीं हैं, वह हमसे अलग हैं और उनका कलचर हिन्दुस्तानी नहीं है. बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन जैसे राजऋषि भी कई बार कह चुके हैं कि हिन्दुस्तान में एक कौम और एक कलचर होना चाहिये. मुसलमानों को अपने अलग कलचर की बाते छोड़ देनी चाहियें. इसका खुला हुआ मतलब यह हुआ कि टंडन जी मे भी यह दुबिधा बाकी है कि हिन्दू और मुसलमान एक ही कौम नहीं है और उनका कलचर अलग-अलग है. जिनाह साहब ने अगर ऐसी बातें सुनी होंगी या सुनते तो वह जरूर खुश हुए होंगे या होते. उन्हे अपनी बातो का एक बड़ा पक्का सबूत मिल जाता.

जिनाह साहब कहते थे कि हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा तो उर्दू को कान पकड़ कर निकाल दिया जायगा और ठेठ संस्कृत मिली हुई हिन्दी को ज़बरदस्ती लाद दिया जायगा. गांधी जी और कांग्रेस कहती थी कि ऐसा नहीं होगा हिन्दी की तरह उर्दू को भी फलने फूलने का मौका दिया जायेगा. हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी होगी जो न संस्कृत से भरपूर हिन्दी होगी और न फ़ारसी अरबी से भरपूर उर्दू होगी, बल्कि वह हिन्दी उर्दू का एक सरल और सादा रूप होगी जिसको सब लोग आसानी से समझ लें और जिसे नागरी और फारसी लिपियों मे लिखे. लकिन आज हम क्या देख रहे हैं ? यू० पी० के इसी प्रात मे, जिसको एक तरह से उर्दू की जन्मभूमि कहना चाहिये, सरकारी हुक्म यह है कि किसी दफ्तर मे उर्दू मे लिखी हुई अर्ज़ी न ली जाय. कचहरियो मे अगर कोई अर्ज़ी उर्दू में दी जाती है तो वह सिर्फ इस लिये वापस कर

ہندو بھائیوں کے منھ سے سُن رہے ہیں کہ مسلمان ہماری قوم نہیں ہیں، وہ ہم سے الگ ہیں اور اُن کا کلچر ہندستانی نہیں ہے۔ بابو پرشوتم داس ٹنڈن جیسے راج رشی بھی کئی بار کہہ چکے ہیں کہ ہندستان میں ایک قوم اور ایک کلچر ہونا چاہیئے۔ مسلمانوں کو اپنے الگ کلچر کی باتیں چھوڑ دینی چاہیئں۔ اس کا کھلا ہوا مطلب یہ ہوا کہ ٹنڈن جی میں بھی یہ دُبدھا باقی ہے کہ ہندو اور مسلمان ایک ہی قوم نہیں ہیں اور اُن کا کلچر الگ الگ ہے۔ جناح صاحب نے اگر ایسی باتیں سُنی ہوں گی یا سُنتے تو وہ ضرور خوش ہوئے ہوں گے یا ہوتے۔ اُنھیں اپنی باتوں کا ایک بڑا پکا ثبوت مل جاتا۔

جناح صاحب کہتے تھے کہ ہندستان آزاد ہو جائے گا تو اُردو کو کان پکڑ کر نکال دیا جائے گا اور ٹھیٹھ سنسکرت ملی ہوئی ہندی کو زبردستی لاد دیا جائے گا۔ گاندھی جی اور کانگریس کہتی تھی کہ ایسا نہیں ہوگا۔ ہندی کی طرح اُردو کو بھی پھلنے پھولنے کا موقع دیا جائے گا۔ ہندستان کی راشٹر بھاشا ہندستانی ہوگی جو نہ سنسکرت سے بھرپور ہندی ہوگی اور نہ فارسی عربی سے بھرپور اردو ہوگی، بلکہ وہ ہندی اُردو کا ایک سرل اور سادا روپ ہوگی جس کو سب لوگ آسانی سے سمجھ لیں اور جسے ناگری اور فارسی لپیوں میں لکھیں۔ لیکن آج ہم کیا دیکھ رہے ہیں؟ یو. پی. کے اسی پرانت میں جس کو ایک طرح سے اردو کی جنم بھومی کہنا چاہیئے، سرکاری حکم یہ ہے کہ کسی دفتر میں اردو میں لکھی ہوئی عرضی نہ لی جائے۔ کچہریوں میں اگر کوئی عرضی اردو میں دی جاتی ہے تو وہ صرف اس لیے واپس کر

दी जाती है कि वह उर्दू में है और सोचने की बात यह भी है कि अंग्रेजी के साथ ऐसा व्योहार नहीं किया जाता. सरकारी मोहकमों में अंग्रेजी अब भी चालू है. स्कूलों में उर्दू का जोड़ अंग्रेजी रक्खी गई है. विद्यार्थी चाहे उर्दू पढ़े और चाहे अंग्रेजी. लेकिन चूंकि नवे दरजे से अंग्रेजी पढ़ना जरूरी है इसलिये आज सौ में ९९ विद्यार्थी अंग्रेजी ही पढ़ रहे हैं. मुझे कहने दीजिये कि यह खुले तौर से उर्दू का गला घोटना है. और फिर हिन्दी बड़ी कठिन बनाई जा रही है और उसमें से जाने पहचाने उर्दू के शब्द निकाल कर अनजान और बेजोड़ संस्कृत के शब्द भरे जा रहे हैं. यह आखिर क्या है ?

मैं फिर टंडन जी का कहना दोहराऊँगा. उन्होंने कहा है कि मुसलमानों को उर्दू के लिये चीखना चिल्लाना बन्द कर देना चाहिये. उर्दू को बाक़ी नहीं रक्खा जा सकता क्योंकि इसी के कारन एक बार पाकिस्तान बन चुका है. टंडन जी की बात झूट हो या सच, लेकिन मैं यह जरूर कहूँगा कि उन्होंने उर्दू के सम्बन्ध में जिनाह साहब को बिलकुल सच्चा साबित कर दिया. अभी लखनऊ में हिन्दुस्तानी भाषा के लिये—उस हिन्दुस्तानी के लिये, जिसके लिये मरते मरते हमारे राष्ट्रपिता ने आवाज उठाई—एक सभा की गई तो खद्दर पहिनने वाले और देखने में बापू के आदर्शों का पालन करने वालों ने ही उस सभा के सदर पंडित सुन्दरलाल को काले झंडे दिखलाये. दूसरे दिन जब मौलाना सैयद सुलैमान नदवी इस जलसे के सदर थे तो वह काले झंडे वाले नहीं आये. शायद उनका गुस्सा पंडित सुन्दरलाल पर इसलिये

دی جاتی ہے کہ وہ اُردو میں ہے اور سوچنے کی بات یہ بھی ہے کہ انگریزی کے ساتھ ایسا بیوہار نہیں کیا جاتا۔ سرکاری محکموں میں انگریزی اب بھی چالو ہے۔ اسکولوں میں اردو کا جوڑ انگریزی رکھی گئی ہے۔ ودیارتھی چاہے اُردو پڑھے اور چاہے انگریزی۔ لیکن چونکہ نویں درجے سے انگریزی پڑھنا ضروری ہے اس لئے آج سو میں ۹۹ ودیارتھی انگریزی ہی پڑھ رہے ہیں۔ مجھے کہنے دیجئے کہ یہ کھلے طور سے اردو کا گلا گھونٹنا ہے۔ اور پھر ہندی بڑی کٹھن بنائی جا رہی ہے اور اس میں سے جانے پہچانے اردو کے شبد نکال کر انجان اور بے جوڑ سنسکرت کے شبد بھرے جا رہے ہیں۔ یہ آخر کیا ہے؟

میں پھر ٹنڈن جی کا کہنا دوہراؤنگا۔ انہوں نے کہا ہے کہ مسلمانوں کو اردو کے لئے چیخنا چلانا بند کر دینا چاہئے۔ اردو کو باقی نہیں رکھا جا سکتا کیونکہ اسی کے کارن ایک بار پاکستان بن چکا ہے۔ ٹنڈن جی کی بات جھوٹ ہو یا سچ، لیکن میں یہ ضرور کہوں گا کہ انھوں نے اردو کے سمبندھ میں جناح صاحب کو بالکل سچا ثابت کر دیا۔ ابھی لکھنؤ میں ہندستانی بھاشا کے لئے اُس ہندستانی کے لئے، جس کے لئے مرتے مرتے ہمارے راشٹرپتا نے آواز اُٹھائی—ایک سبھا کی گئی تو کھدر پہننے والے اور دیکھنے میں باپو کے آدرشوں کا پالن کرنے والوں نے ہی اُس سبھا کے صدر پنڈت سندر لال کو کالے جھنڈے دکھلائے۔ دوسرے دن جب مولانا سید سلیمان ندوی اس جلسے کے صدر تھے تو وہ کالے جھنڈے والے نہیں آئے۔ شاید اُن کا غصہ پنڈت سندر لال پر اس لئے

था कि वह हिन्दू थे और जिनाह साहब के दो क़ौमो के सिद्धान्त के मुताबिक़ उन्हे सुलैमान साहब के साथ कोई सहयोग न करना चाहिये था. सोचने की बात है कि इन बातो से हम जिनाह साहब की बताई हुई राह पर चल रहे हैं या गांधी जी के बतलाये हुए मार्ग पर ?

अगर आज हम वही सब बातें कर रहे है जो जिनाह साहब ने बताई थीं कि हम करेंगे, तो हम कैसे कह सकते हैं कि वह जो कुछ कह गये है वह झूट था. हमको तो कहना पड़ेगा कि हमको गांधी जी ने नहीं बल्कि जिनाह साहब ने ठीक पहिचाना था.

पाकिस्तान बन चुका. अब झूट मूट के बडे देश प्रेमी बनकर यह कहना कि पाकिस्तान बना तो बुरा हुआ, केवल अपने आप को धोका देना है. हम जानते हैं जिनाह साहब ने हमारे बारे मे किन किन बातो का प्रचार करके पाकिस्तान बनवाया था. क्या हमने उन बातो को झूटा साबित कर दिया ? क्या हमने उन आशंकाओ को जिन पर जिनाह साहब ने पाकिस्तान कायम किया. दूर कर दिया ? अगर नहीं तो फिर हम किस मुँह से कह सकते हैं कि उन्होंने जो कुछ किया वह ग़लत किया. अगर हम प्रेम शान्ति और न्याय के रास्ते को छोड़कर अपनी मनमानी करने लगे तो फिर हम उस मनुष्य को, जो हमसे पहिले यही कर रहा था, दोष नहीं दे सकते. चोर को चोर पापी नहीं कहा करता

खाली जीभ हिला देना काफी नहीं है. हमे अपने बरताव से दुनिया को जतला देना है कि पाकिस्तान व्यर्थ बना और इसकी नीव झूट पर थी और इसके लिये हमें उन सब बातों को छोड़

تھا کہ وہ ہندو تھے اور جناح صاحب کے دو قوموں کے سدھانت کے مطابق اُنھیں سلیمان صاحب کے ساتھ کوئی سہیوگ نہ کرنا چاہیئے تھا۔ سوچنے کی بات ہے کہ اِن باتوں سے ہم جناح صاحب کی بتائی ہوئی راہ پر چل رہے ہیں یا گاندھی جی کے بتلائے ہوئے مارگ پر؟

اگر آج ہم وہی سب باتیں کر رہے ہیں جو جناح صاحب نے بتائیں تھیں کہ ہم کریں گے تو ہم کیسے کہہ سکتے ہیں کہ وہ جو کچھ کہہ گئے ہیں وہ جھوٹ تھا۔ ہم کو تو کہنا پڑے گا کہ ہم کو گاندھی جی نے نہیں بلکہ جناح صاحب نے ٹھیک پہچانا تھا۔

پاکستان بن چکا۔ اب جھوٹ موٹ کے بڑے دیش پریمی بن کر یہ کہنا کہ پاکستان بنا تو بُرا ہوا، کیول اپنے آپ کو دھوکا دینا ہے۔ ہم جانتے ہیں جناح صاحب نے ہمارے بارے میں کن کن باتوں کا پرچار کر کے پاکستان بنوایا تھا۔ کیا ہم نے اُن باتوں کو جھوٹا ثابت کر دیا؟ کیا ہم نے اُن آشنکاؤں کو جن پر جناح صاحب نے پاکستان قائم کیا، دور کر دیا؟ اگر نہیں تو پھر ہم کس منہ سے کہہ سکتے ہیں کہ اُنھوں نے جو کچھ کیا وہ غلط کیا؟ اگر ہم پریم، شانتی اور نیائے کے راستے کو چھوڑ کر اپنی من مانی کرنے لگیں تو پھر ہم اُس منش کو، جو ہم سے پہلے یہی کر رہا تھا، دوش نہیں دے سکتے۔ چور کو چور پاپی نہیں کہا کرتا۔

خالی جیبھ ہلا دینا کافی نہیں ہے۔ ہمیں اپنے برتاؤ سے دنیا کو جتلا دینا ہے کہ پاکستان ویرتھ بنا اور اِس کی نیو جھوٹ پر تھی اور اِس کے لیئے ہمیں اُن سب باتوں کو چھوڑ

देना होगा जो जिनाह साहब की बताई हुई या की हुई हैं.

जो लोग आज आज़ाद हिन्दुस्तान में भी साम्प्रदायिक खेल खेलना चाहते हैं वह बिलकुल उसी तरह, जैसे जिनाह साहब अंग्रेज़ों का खेल खेला करते थे, जिनाह साहब का खेल खेलेंगे. उनकी ना समझी की बातों से पाकिस्तान कमज़ोर नहीं बल्कि और भी मज़बूत होगा. वह पाकिस्तान को नहीं बल्कि हिन्दुस्तान को हानि पहुँचायेंगे.

पाकिस्तान पर विजय पाने का एक और सिर्फ़ एक तरीक़ा है और वह वही तरीका है जो हमें हमारे राष्ट्रपिता ने बताया था और जिसके लिये उन्होंने अपने अनमोल जीवन को भी भेंट चढ़ा दिया था. और वह तरीका यह है कि हम अपने सब मतभेद और पक्षपात पीछे डाल दें और हिन्दुस्तान के सारे निवासियों को एक जैसा समझते हुए उन सब को आगे बढ़ाने के लिये तन मन धन से जुट जायें. ऐसा करने पर एक दिन आवेगा और ज़रूर आवेगा जब हिन्दुस्तान के सभी बसने वालों की अच्छी हालत देखकर पाकिस्तान के बसने वाले यह मानने के लिये मजबूर हो जायेंगे कि उन्होंने पाकिस्तान बनाकर भारी ग़लती की और उस समय उनके हृदय को यही पुकार होगी कि हमने अपनी नासमझी से जो भूल की है उसका सच्चे दिल से सुधार करना चाहिये. और अब तक जिनाह साहब के सिद्धान्तो की जो जीत होती आई है वह उनकी हार मे बदल जायगी.

دینا ہوگا جو جناح صاحب کی بتائی ہوئی یا کی ہوئی ہیں۔

جو لوگ آج آزاد ہندستان میں بھی سامپردایک کھیل کھیلنا چاہتے ہیں وہ بالکل اسی طرح، جیسے جناح صاحب انگریزوں کا کھیل کھیلا کرتے تھے جناح صاحب کا کھیل کھیلیں گے۔ اُنکی ناسمجھی کی باتوں سے پاکستان کمزور نہیں بلکہ اور بھی مضبوط ہوگا۔ وہ پاکستان کو نہیں بلکہ ہندستان کو ہانی پہنچائیں گے۔

پاکستان پر وجے پانے کا ایک اور صرف ایک طریقہ ہے اور وہ وہی طریقہ ہے جو ہمیں ہمارے راشٹر پتا نے بتایا تھا اور جس کے لئے اُنھوں نے اپنے انمول جیون کو بھی بھینٹ چڑھا دیا تھا۔ اور وہ طریقہ یہ ہے کہ ہم اپنے سب مت بھید اور پکشپات پیچھے ڈال دیں اور ہندستان کے سارے نواسیوں کو ایک جیسا سمجھتے ہوئے ان سب کو آگے بڑھانے کے لئے تن من دھن سے جُٹ جائیں۔ ایسا کرنے پر ایک دن آویگا اور ضرور آویگا جب ہندستان کے سبھی بسنے والوں کی اچھی حالت دیکھکر پاکستان کے بسنے والے یہ ماننے کے لئے مجبور ہو جائیں گے کہ اُنھوں نے پاکستان بنا کر بھاری غلطی کی اور اُس سمے اُن کے ہردے کی یہی پُکار ہوگی کہ ہم نے اپنی ناسمجھی سے جو بھول کی ہے اُس کا سچے دل سے سُدھار کرنا چاہئے۔ اور اب تک جناح صاحب کے سدھانتوں کی جو جیت ہوتی چلی آئی ہے وہ اُن کی ہار میں بدل جائے گی۔

भारत में अपनों की दुरगत

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

हमारा भारत ! कला और साहित्य में किसी से पीछे नहीं—राजनीति मे भी कमती नहीं और संस्कृति में तो यह मशहूर !

तहज़ीब और कलचर में इसका नाम—ज्ञान ध्यान में इसका ऊँचा मक़ाम !

अध्यात्म में यह महात्माओं का घर और विद्या में विद्वानो का यह मन्दिर !

क़ुतुब, वली, ऋषि, मुनि और महन्तों का यह स्थान—यानी हमारा यह हिन्दुस्तान

रीत और रिवाज का मालिक, यह भारत !
भीक और इफ़लास का पालक, यह भारत !
आज़ादी का बालक, यह भारत !
इन्क़लाब का प्रचारक, यह भारत !
बात चीत मे किसी से यह दब कर नहीं.
राज नीति में किसी से यह हटकर नहीं.
दुनिया के भाग भाग में इसका दूत.
संसार के हर कोने में इसके महात्मा की जोत.
सन्देश और भाषा में यह सबसे ख़ूब !
चित्रकारी में मुल्क मुल्क इसकी शोहरत—खेल कूद में देश

بھارت میں اپنوں کی دُرگت

(بھائی عبد الحلیم انصاری)

ہمارا بھارت ! کلا اور ساہتیہ میں کسی سے پیچھے نہیں — راج نیت میں بھی کمتی نہیں اور سنسکرتی میں تو یہ مشہور !

تہذیب اور کلچر میں اس کا نام — گیان دھیان میں اس کا اونچا مُقام !

ادھیاتم میں یہ مہاتماؤں کا گھر اور ودّیا میں وِدوانوں کا یہ مندر !

قطب، ولی، رِشی، مُنی اور مہنتوں کا یہ استھان — یعنی ہمارا یہ ہندستان

ریت اور رواج کا مالک، یہ بھارت !
بھیک اور اِفلاس کا پالک، یہ بھارت !
آزادی کا بالک، یہ بھارت !
انقلاب کا پرچارک، یہ بھارت !
بات چیت میں کسی سے یہ دب کر نہیں۔
راج نیتی میں کسی سے یہ ہٹ کر نہیں۔
دنیا کے بھاگ بھاگ میں اس کا دُت۔
سنسار کے ہر کونے میں اسکے مہاتما کی جوت۔
سندیش اور بھاشا میں یہ سب سے خوب !
چترکاری میں ملک ملک اِس کی شہرت — کھیل کود میں دیش

देश में इसकी चरचा.संगीत में इसकी तारीफ,राजनीति में इसकी जीत'

प्रेम प्यार में यह अच्छा, परम्परा में यह अच्छा—और एकता इसका न्योता !

सदाचार में इसके सुन्दरता और सुन्दर इसकी उदारता !

इन्सानियत मे यह किसी से कमतर नहीं और बरबरता में भी किसी से यह घट कर नहीं.

यहाँ का मनुष्य गोली खाने में हेटा नहीं. यहाँ का आदमी लाठी झेलने में कच्चा नहीं.

सर फुटौव्वल इसका काम. बिना लड़े भिड़े इसको जीना हराम !

जब प्रेम पर यह आये तो बड़ा ही प्रेमी और जब यह आफत ढाये तो शैतान इससे घबराये.

—गोया प्रेम और बैर का यह एक अच्छा संजोग !

बेशक, बेशक, बड़ा ही अहिंसक यहाँ का मनुष्य !

जानवर की जान बचाने पर ख़ुद यह कुरबान—देखा देखा, इस का त्याग और ईसार ! इन्सान को कच्चा खाने पर यह तैयार !—देखो देखो, कितना हिंसक यहाँ का मनुष्य. हाँ, हाँ ! बड़े से बड़ा त्यागी यहाँ, बड़े से बड़ा प्रेमी यहाँ !

हर धर्म और हर श्रद्धा के लोग हमारे आज़ू बाज़ू. जिन में कोई नहरू तो कोई बापू. कोई आजाद * तो कोई राजा*—और एक बाबू—बाबू राजेन्द्र, कांग्रेस के केन्द्र !

मानो हमने भारत में हर धर्म के इन्सान देखे और हर इल्म के विद्वान—हर राष्ट्र के विचारवान देखे और हर जाति के

*मौलाना आजाद *श्री राजा गोपालाचार्य.

دیش میں اِس کی چرچا۔ سنگیت میں اِس کی تعریف، راج نیتی میں اِس کی جیت !

پریم پیار میں یہ اچھا، پرمپرا میں یہ اچھا — اور ایکتا اِس کا نیوتا !

سداچار میں اِس کے سندرتا اور سندر اِس کی اُدارتا !

انسانیت میں یہ کسی سے کمتر نہیں اور بربرتا میں بھی کسی سے یہ گھٹ کر نہیں۔

یہاں کا منشیہ گولی کھانے میں ہیٹا نہیں۔ یہاں کا آدمی لاٹھی جھیلنے میں کچا نہیں۔

سر پھٹوّل اِس کا کام۔ بِنا لڑے بھڑے اِس کو جینا حرام !

جب پریم پر یہ آئے تو بڑا ہی پریمی اور جب یہ آفت ڈھائے تو شیطان اِس سے گھبرائے۔

— گویا پریم اور بیر کا یہ ایک اچھا سنجوگ !

بیشک، بیشک، بڑا ہی اہنسک یہاں کا منشیہ !

جانور کی جان بچانے پر خود یہ قربان — دیکھا دیکھا، اِس کا تیاگ اور ایثار ! انسان کو کچا کھانے پر یہ تیار ! — دیکھو دیکھو، کتنا ہنسک یہاں کا منشیہ۔ ہاں، ہاں ! بڑے سے بڑا تیاگی یہاں، بڑے سے بڑا پریمی یہاں !

ہر دھرم اور ہر شردھا کے لوگ ہمارے آزو بازو۔ جن میں کوئی نہرو تو کوئی باپو۔ کوئی آزاد[1] تو کوئی راجا[2] — اور ایک بابو — بابو راجیندر، کانگریس کے کیندر !

مانو ہم نے بھارت میں ہر دھرم کے انسان دیکھے اور ہر علم کے وِدّان — ہر راشٹر کے وچاروان دیکھے اور ہر جاتی کے

[1] مولانا آزاد [2] شری راج گوپال آچاریہ۔

बुद्धिमान ! हमने यहाँ धार्मिक भी देखे, अधार्मिक भी. मुख़लिस भी देखे और मुनाफ़िक़ भी ! सच्चे भी देखे और झूटे भी ! हर क़ौम के अच्छे भी देखे, बुरे भी. हर धर्म के नेक भी देखे और बद भी !

ग़रज़ कि हमने यहाँ हर तरह के इन्सान देखे और हर तरह के मुसलमान देखे.

हमने इस तारीख़ी देश के तारीख़ी मन्दिर देखे, मसजिद देखी गिरजा देखे, गुरुद्वारे देखे—गोया तरह तरह के रूहानी मकान देखे—और भूत काल के हमने पुराने पुराने बरगद देखे . पीपल देखे , पत्थर देखे—और तरह तरह के भगवान देखे.

हमने हर भारत वासी के मन मन मे उठता भाव देखा.

हमने भारत भूमि के कन कन मे पड़ती जान देखी.

और आध्यात्मिक भारत के हमने पंडित देखे, शास्त्री*देखे. मौलवी*देखे, मुल्ला*देखे. फ़ाज़िल*देखे. कामिल*देखे. पादरी देखे. पुजारी देखे. कुछ कम हमने मुँशी * देखे, अलबत्ता अधिक हमने डिग्री धारी देखे. बेशक हमने क़ाबिल से क़ाबिल देखे और क़ाबिल से क़ाबिल जाहिल देखे.

और भारत आकाश के नीचे हमने :—

मसजिद देखी, मन्दिर देखा. गीता देखी, क़ुरान देखा.

मन्डप देखा, झंडी देखी. मीनार देखा, कलसी देखी.

नोट—जिन शब्दो के बाद सितारे (*),लगे हैं वह सब उर्दू, फ़ारसी, अरबी और संस्कृति की डिग्रियाँ हैं.

بُدھی مان! ہم نے یہاں دھارمک بھی دیکھے، ادھارمک بھی. مخلص بھی دیکھے اور مُنافق بھی! سچے بھی دیکھے اور جھوٹے بھی! ہر قوم کے اچھے بھی دیکھے، بُرے بھی. ہر دھرم کے نیک بھی دیکھے اور بد بھی!

غرض کہ ہم نے یہاں ہر طرح کے انسان دیکھے اور ہر طرح کے مسلمان دیکھے.

ہم نے اِس تاریخی دیش کے تاریخی مندر دیکھے، مسجد دیکھی. گرجے دیکھے، گُردوارے دیکھے — گویا طرح طرح کے روحانی مکان دیکھے — اور بھوت کال کے ہم نے پُرانے پُرانے برگد دیکھے پیپل دیکھے، پتھر دیکھے — اور طرح طرح کے بھگوان دیکھے.

ہم نے ہر بھارت واسی کے من من میں اُٹھتا بھاؤ دیکھا.

ہم نے بھارت بھومی کے کن کن میں پڑتی جان دیکھی.

اور آدھیاتمک بھارت کے ہم نے پنڈت دیکھے، شاستری* دیکھے. مولوی* دیکھے، مُلّا* دیکھے. فاضل* دیکھے، کامل* دیکھے. پادری دیکھے، پُجاری دیکھے، کچھ کم ہم نے منشی* دیکھے، البتہ اَدھِک ہم نے ڈگری دھاری دیکھے. بیشک ہم نے قابل سے قابل دیکھے اور قابل سے قابل جاہل دیکھے.

اور بھارت اکاش کے نیچے ہم نے :—

مسجد دیکھی، مندر دیکھا. گیتا دیکھی، قرآن دیکھا.

منڈپ دیکھا، جھنڈی دیکھی. منار دیکھی، کلسی دیکھے.

نوٹ — جن شبدوں کے بعد ستارے (*) لگے ہیں وہ سب اردو، فارسی، عربی اور سنسکرت کی ڈگریاں ہیں.

गोया हमने भाँति भाँति के धार्मिक निशान देखे और तरह तरह के रूहानी प्रचार देखे.

और—भारत में हमने ज्ञान और विज्ञान का बड़ा भंडार देखा. प्रथमा* देखे, मध्यमा*देखे,उत्तमा*देखे, रत्न*देखे, भूषण*देखे.

—और साहित्याचार्य* देखे.

बी० ए० देखे, एम० ए० देखे और प्रभाकर के स्कालर देखे. अच्छे अच्छे स्पीकर देखे, कच्चे पक्के लीडर देखे और पक्के इतिहासकार !

साथ ही साथ, बहुत से हमने फ़िरक़ा परस्त देखे और बहुत से ख़ुद ग़रज़ और मतलब परस्त ! बहुत से चुपके चुपके ख़िदमत करते देखे, बहुत से छिपे छिपे लेखक और बेलौस सेवक देखे. बहुत से ख़ामोश ख़मोश कलाकार देखे और बहुत से चुप चुप चित्रकार !

ग़रज़ कि हमने भारतवर्ष में :—

बड़े बड़े महन्त देखे, महा महा कलावन्त देखे.

तार्किक (मनतक़ी) देखे, दार्शनिक (फ्लास्फ़र) देखे. आत्मिक देखे, वैज्ञानिक देखे, धार्मिक देखे और विधायक देखे.

मतलब यह कि आज़ाद भारत मे हर फ़न के माहिर मौजूद और हर कला के कलाकार, मगर बेकार ! हर इल्म के विद्वान मौजूद और हर काम के दिमाग़ मौजूद, मगर बे मसरफ़ ! बेशक यहाँ एक से बढ़कर एक उस्ताद और एक से बढ़कर एक विद्वान, मगर कहाँ हैं इनके क़द्रदान ?

यह सब कुछ हमने यहाँ देखा—मगर—

इनमे कुछ कुछ हमने ख़ुशहाल देखे और अक्सर करके बदहाल देखे. यानी यह कि इस देश मे हमने कलाकारों की नाक़दरी देखी और विद्वानों की बदहाली देखी—मुख़्तसर यह कि भारत में हमने अपानों की दुरगत देखी !

گویا ہم نے بھانت بھانت کے دھارمک نشان دیکھے اور طرح طرح کے روحانی پرچار دیکھے۔

اور — بھارت میں ہم نے گیان اور وگیان کا بڑا بھنڈار دیکھا۔ پرتھما * دیکھے، مدھیما * دیکھے، اُتما * دیکھے، رتن * دیکھے، بھوشن * دیکھے۔

بی۔ اے۔ دیکھے، ایم۔ اے۔ دیکھے اور ساہتیاچار * دیکھے۔ پربھاکر کے اسکالر دیکھے۔ اچھے اچھے اسپیکر دیکھے، کچے پکے لیڈر دیکھے اور پکے اتہاس کار!

ساتھ ہی ساتھ، بہت سے ہم نے فرقہ پرست دیکھے اور بہت سے خود غرض اور مطلب پرست! بہت سے چپکے چپکے خدمت کرتے دیکھے، بہت سے چھپے چھپے لیکھک اور بے لوث سیوک دیکھے۔ بہت سے خاموش خاموش کلاکار دیکھے اور بہت سے چپ چپ چترکار!

غرض کہ ہم نے بھارت ورش میں :—

بڑے بڑے مہنت دیکھے، مہا مہا کلاونت دیکھے۔

تارکک (منطقی) دیکھے، درشنک (فلاسفر) دیکھے۔ آتمک دیکھے، وگیانک دیکھے، دھارمک دیکھے اور ودھایک دیکھے۔

مطلب یہ کہ آزاد بھارت میں ہر فن کے ماہر موجود اور ہر کلا کے کلاکار، مگر بیکار! ہر علم کے ودوان موجود اور ہر کام کے دماغ موجود، مگر بے مصرف! بے شک یہاں ایک سے بڑھ کر ایک اُستاد اور ایک سے بڑھ کر ایک ودوان، مگر کہاں ہیں اِن کے قدردان؟

یہ سب کچھ ہم نے یہاں دیکھا — مگر —

اِن میں کچھ کچھ ہم نے خوشحال دیکھے اور اکثر کر کے بدحال دیکھے، یعنی یہ کہ اس دیش میں ہم نے کلاکاروں کی ناقدری دیکھی اور ودوانوں کی بدحالی دیکھی — مختصر یہ کہ بھارت میں ہم نے اپنوں کی دُرگت دیکھی!

प्रेम के फाटक

प्रेम के फाटकों और शान्ति के दरवाज़ों से जिन घरों में हम आप कुछ दिन पहले बेखटके दाखिल हुआ करते थे, अब बहुत कुछ वह दरवाज़े उखड़ उखड़ा गये हैं. रवादारी के बंधन भी जगह जगह से टूट फूट चुके हैं. सदाचार की दीवारें भी जगह जगह से गिरी पड़ी हैं—भला ऐसी दशा में सुख शान्ति की हवा बने भी तो कैसे ?

अफसोस ! खुद ग़रज़ी और स्वार्थ के इस युग में कोई इन्सान का स्वागत करने वाला नहीं !

मातम ! आज़ादी के इस राज में कोई प्रेम का जवाब प्रेम से देने वाला नहीं !

मज़लूम और दलित की आवाज़ तक सुनने वाला नहीं !

ग़रीब और बेकस पर नज़र डालने वाला तक नहीं !

प्रेम तो खतम हुआ ही सही पर क्या प्रेम के साथ अब सदाचार भी खतम !

अगर प्रेम और सदाचार दोनो खतम, तो यह है कौम के लिये सबसे बड़ा मातम !

ऐसी हालत में क़ौम की उठान की आशा बहुत बहुत कम !

जिस क़ौम का एखलाक़ गिरा हो. जिस राष्ट्र का आदर्श ऊँचा न हो, उसका भविष्य उत्तम नहीं. उत्तम भविष्य बनाने के

پریم کے پھاٹک

پریم کے پھاٹکوں اور شانتی کے دروازوں سے جن گھروں میں ہم آپ کچھ دن پہلے بے کھٹکے داخل ہوا کرتے تھے، اب بہت کچھ وہ دروازے اُکھڑ اُکھڑا گئے ہیں۔ رواداری کے بندھن بھی جگہ جگہ سے ٹوٹ پھوٹ چکے ہیں۔ سداچار کی دیواریں بھی جگہ جگہ سے گری پڑی ہیں— بھلا ایسی دشا میں سکھ شانتی کی ہوا بنے بھی تو کیسے ؟

افسوس ! خودغرضی اور سوارتھ کے اس یُگ میں کوئی انسان کا سواگت کرنے والا نہیں !

ماتم ! آزادی کے اس راج میں کوئی پریم کا جواب پریم سے دینے والا نہیں !

مظلوم اور دلت کی آواز تک سننے والا نہیں !

غریب اور بےکس پر نظر ڈالنے والا تک نہیں !

پریم تو ختم ہوا ہی سہی پر کیا پریم کے ساتھ اب سداچار بھی ختم !

اگر پریم اور سداچار دونوں ختم، تو یہ ہے قوم کے لئے سب سے بڑا ماتم !

ایسی حالت میں قوم کی اُٹھان کی آشا بہت بہت کم !

جس قوم کا اخلاق گرا ہو، جس راشٹر کا آدرش اونچا نہ ہو، اُس کا بھوشیہ اُتم نہیں۔ اُتم بھوشیہ بنانے کے

लिये पहले उसको ऊँचा आदर्श और सुन्दर सदाचार पैदा करने की आवश्यकता है. वरना आज जो हालत है वह जाहिर है—सम्मान भरी खोपड़ियाँ ठोंकरें खाती फिर रही हैं, इज्ज़तदार हस्तियाँ ज़िल्लत उठा रही हैं और मारे ग़ैरत के आप ही आप ज़मीन में गड़ी जा रही हैं—इस लिये ज़रूरत और सख्त ज़रूरत है कि उदारता और इन्सानियत के नाम पर एक नया राष्ट्र जन्म ले जिसका असली नाम हो इन्सानी समाज ! जो एक गोल हलक़ा खींच कर और उसके अंदर इन्सानियत की नीव रखकर उदारता की दीवारें खड़ी करे, सदाचार की शिक्षा दे, मानवता का नाम रोशन करे और इन्सानियत को सेवा की भेंट दे ! अन्त यह कि तुरन्त वह दिलों से अदावत के ताले तोड़े और प्रेम के फाटक खोले !

इज्ज़त आदर का तबादला

आदमी चाहे हिन्दू हो, मुसलिम हो, सिक्ख हो या पारसी !

आदमी नामी आदमी चाहे वह ईसाई हो या कोई भी कलीसाई भाई !

भाई भाई होने के रिश्ते से सब का नाता एक !

आदमी आदमी होने के लिहाज़ से सब का दरजा बराबर !

इसलिये एक को दूसरे का आदर करना और आदर देना इन्सान का इन्सानी कर्त्तव्य है और आदमी का आदमी पन !

इज्ज़त करने का मतलब यह है कि वह इससे और यह उससे अपनी इज्ज़त कराना चाहता है—इज्ज़त आदर का तबादला सब

لئے پہلے اُس کو اونچا آدرش اور سُندر سدا چار پیدا کرنے کی آوشکتا ہے۔ ورنہ آج جو حالت ہے وہ ظاہر ہے—سمان بھری کھوپڑیاں ٹھوکریں کھاتی پھر رہی ہیں۔ عزت دار ہستیاں ذلت اُٹھا رہی ہیں اور مارے غیرت کے آپ ہی آپ زمین میں گڑی جا رہی ہیں— اس لئے ضرورت اور سخت ضرورت ہے کہ اُدارتا اور انسانیت کے نام پر ایک نیا راشٹر جنم لے جس کا اصلی نام ہو انسانی سماج ! جو ایک گول حلقہ کھینچ کر اور اُس کے اندر انسانیت کی نیو رکھ کر اُدارتا کی دیواریں کھڑی کرے، سدا چار کی شکشا دے، مانوتا کا نام روشن کرے اور انسانیت کو سیوا کی بھینٹ دے ! انت یہ کہ تُرنت وہ دلوں سے عداوت کے تالے توڑے اور پریم کے پھاٹک کھولے !

عزت آدر کا تبادلہ

آدمی چاہے ہندو ہو، مسلم ہو، سکھ ہو یا پارسی!

آدمی نامی آدمی چاہے وہ عیسائی ہو یا کوئی بھی کلیسائی بھائی !

بھائی بھائی ہونے کے رشتے سے سب کا ناتا ایک !

آدمی آدمی ہونے کے لحاظ سے سب کا درجہ برابر !

اِس لئے ایک کو دوسرے کا آدر کرنا اور آدر دینا انسان کا انسانی کرتویہ ہے اور آدمی کا آدمی پن !

عزت کرنے کا مطلب یہ ہے کہ وہ اِس سے اور یہ اُس سے اپنی عزت کرانا چاہتا ہے— عزت آدر کا تبادلہ سب

से अच्छा समाजी व्योहार है और सज्जन आदमी के सुभाव का खूबसूरत पन।

यही वह चीज़ है जिसको हम दूसरे शब्दों में कहते हैं "अपनी इज़्ज़त आप करो."

याद रहे जो आदमी दूसरे की इज़्ज़त नहीं करता उसको यह भी शोभा नहीं देता कि वह दूसरे से अपनी इज़्ज़त की आशा रक्खे.

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनको राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और इनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुई भी अंग्रेज़ी हकूमत का मुकाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायेंगे.

किताब दोनों लिखावटों में छप रही है.

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

سے اچھا سماجی ویوہار ہے اور سجن آدمی کے سبھاؤ کا خوبصورت پن!

یہی وہ چیز ہے جس کو ہم دوسرے شبدوں میں کہتے ہیں "اپنی عزت آپ کرو"

یاد رہے جو آدمی دوسرے کی عزت نہیں کرتا اُس کو یہ بھی شوبھا نہیں دیتا کہ وہ دوسرے سے اپنی عزت کی آشا رکھے۔

مسلم دیش بھگت

[لیکھک شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُن کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی اِن کے راج کی بُرائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اِن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی۔

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنھوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپ رہی ہے۔

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

अनोखे नज़ारे

(भाई ख्वाजा अहमद अब्बास)

मैं समझता हूँ कि सारे हिन्द में सबसे अनोखा शहर श्रीनगर है. सबसे अनोखा ही नहीं, सबसे अच्छा भी.

इसलिये नहीं कि यह शहर झेलम नदी के किनारे किनारे कई मील तक बसा हुआ है, न इसलिये कि सूरज डूबने के वक़्त झील डल पर बड़ा सुन्दर समाँ होता है, और न इसलिये कि यहाँ के शालामार और निशात बाग़ सारी दुनिया में मशहूर हैं.

श्रीनगर सारे भारत में सबसे अनोखा और सबसे अच्छा शहर इस लिये है कि जब तमाम मुल्क में नफ़रत और मार-धाड़ फैली हुई थी, जब हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो रहे थे, जब पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बहुत से शहरों में लहू की नदियाँ बह रही थीं.........उस वक़्त श्रीनगर और बस श्री नगर ही एक शहर था, जहाँ ऐसी एक भी वारदात न हुई और जहाँ हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख अमन और शान्ति के साथ एक दूसरे से मिल जुलकर रहते रहे और आज भी रहते है.

पिछले साल भर में जो कोई भी हिन्दुस्तान से कशमीर गया वह यह देखकर अचंभे में रह गया कि श्रीनगर के बाज़ारों और गलियों में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख बड़े इतमीनान से घूमते-फिरते, बातें करते, मजाक करते, हँसते खेलते एक दूसरे से खरीदते-बेचते दिखाई देते हैं.

انوکھے نظارے

(بھائی خواجہ احمد عباس)

میں سمجھتا ہوں کہ سارے ہند میں سب سے انوکھا شہر شری نگر ہے۔ سب سے انوکھا ہی نہیں، سب سے اچھا بھی۔

اس لئے نہیں کہ یہ شہر جہلم ندی کے کنارے کنارے کئی میل تک بسا ہوا ہے، نہ اس لئے کہ سورج ڈوبنے کے وقت جھیل ڈل پر بڑا سندر سماں ہوتا ہے، اور نہ اس لئے کہ یہاں کے شالامار اور نشاط باغ ساری دنیا میں مشہور ہیں۔

شری نگر سارے بھارت میں سب سے انوکھا اور سب سے اچھا شہر اس لئے ہے کہ جب تمام ملک میں نفرت اور مار دھاڑ پھیلی ہوئی تھی، جب ہندو اور مسلمان ایک دوسرے کے خون کے پیاسے ہو رہے تھے، جب پاکستان اور ہندستان کے بہت سے شہروں میں لہو کی ندیاں بہہ رہی تھیں......اس وقت شری نگر اور بس شری نگر ہی ایک شہر تھا، جہاں ایسی ایک بھی واردات نہ ہوئی اور جہاں ہندو، مسلمان اور سکھ امن اور شانتی کے ساتھ ایک دوسرے سے مل جل کر رہتے رہے اور آج بھی رہتے ہیں۔

پچھلے سال بھر میں جو کوئی بھی ہندستان سے کشمیر گیا وہ یہ دیکھ کر اچنبھے میں رہ گیا کہ شری نگر کے بازاروں اور گلیوں میں ہندو، مسلمان اور سکھ بڑے اطمینان سے گھومتے پھرتے، باتیں کرتے، مذاق کرتے، ہنستے کھیلتے ایک دوسرے سے خریدتے بیچتے دکھائی دیتے ہیں۔

हिन्दुस्तानी फ़ौज के हिन्दू और सिक्ख सिपाही श्रीनगर की सड़कों पर बिना खटके घूमते फिरते हैं. न श्रीनगर के मुसलमान उनसे डरते हैं और न यह सिपाही कशमीरी मुसलमानों को देखकर घबराते हैं.

कशमीर की अपनी क़ौमी फौज या नेशनल मिलेशिया के नवजवान सूरमा दिखाई देते हैं जो कालिजों, स्कूलों, कारख़ानों और दूकानों को छोड़कर अपने देश की रक्षा करने भरती हुए हैं और हिन्दुस्तानी सिपाहियो के साथ कंधे से कंधा लगाकर हर मोर्चे पर दुश्मन का मुक़ाबला कर रहे है उनमें मुस्लिम, हिन्दू और सिक्ख तीनों पाये जाते हैं. एक दिन मैंने मिलेशिया के तीन नौजवानो को साथ देखा. उनके नाम पूछे तो उन्होने बताया —मुहम्मद रमज़ान, अनूपसिंह, शम्भूनाथ.

है न अनोखी बात ?

इस अनोखे शहर मे सबसे अनोखी जगह "गांधी शरणार्थी सेवा-सदन" है।जो एक स्कूल की बिलडिंग मे है.

दिन मे किसी वक्त भी आप इस सेवा सदन में जाये तो वहाँ एक बड़े हाल कमरे मे सौ सवा सौ औरतो को चरख़ा कातते, ऊनी स्वेटर या मफ़लर बुनते, सिलाई या कढ़ाई का काम करते देखेंगे.

यह सब बेचारी शरणार्थी हैं. इनमें से बहुत सी विधवा हैं. सब की सब दुख की मारी हुई हैं. उनके चेहरों की गहरी लकीरों में उनकी बिपता लिखी हुई है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के शरणार्थी कैम्पों में ऐसी लाखों औरतें मिलेंगी.

ہندستانی فوج کے ہندو اور سکھ سپاہی شری نگر کی سڑکوں پر بنا کھٹکے گھومتے پھرتے ہیں۔ نہ شری نگر کے مسلمان اُن سے ڈرتے ہیں اور نہ یہ سپاہی کشمیری مسلمانوں کو دیکھ کر گھبراتے ہیں۔

کشمیر کی اپنی قومی فوج یا نیشنل ملیشیا کے نوجوان سورما دکھائی دیتے ہیں جو کالجوں، اسکولوں، کارخانوں اور دُکانوں کو چھوڑ کر اپنے دیش کی رکشا کرنے بھرتی ہوئے ہیں اور ہندستانی سپاہیوں کے ساتھ کندھے سے کندھا لگا کر ہر مورچے پر دشمن کا مقابلہ کر رہے ہیں، اُن میں مسلم، ہندو اور سکھ تینوں پائے جاتے ہیں۔ ایک دن میں نے ملیشیا کے تین نوجوانوں کو ساتھ دیکھا۔ اُن کے نام پوچھے تو اُنھوں نے بتایا— محمد رمضان، انوپ سنگھ، شمبھو ناتھ۔

ہے نہ انوکھی بات؟

اِس انوکھے شہر میں سب سے انوکھی جگہ "گاندھی شرنارتھی سیوا سدن" ہے جو ایک اسکول کی بلڈنگ میں ہے۔

دن میں کسی وقت بھی آپ اس سیوا سدن میں جائیں تو وہاں ایک بڑے ہال کمرے میں سو سوا سو عورتوں کو چرخا کاتتے، اونی سوئٹر یا مفلر بُنتے، سلائی یا کڑھائی کا کام کرتے دیکھیں گے۔

یہ سب بےچاری شرنارتھی ہیں۔ ان میں سے بہت سی ودھوا ہیں۔ سب کی سب دُکھ کی ماری ہوئی ہیں۔ اُن کے چہروں کی گہری لکیروں میں اُن کی بپتا لکھی ہوئی ہے۔ ہندستان اور پاکستان کے شرنارتھی کیمپوں میں ایسی لاکھوں عورتیں ملیں گی۔

फिर इस सेवा सदन की शरणार्थी औरतों में अनोखी बात क्या है ?

वह यह है—कि इनमें हिन्दू भी हैं, सिक्ख भी हैं—और मुसलमान भी हैं. वह भी, जिन्होंने मुसलमान नाम के ख़ूनी लुटेरों के हाथों दुख उठाया है और वह भी, जिन्होंने हिन्दू और सिक्ख नाम के अत्याचारियो के हाथों—और ऐसी मुसलमान औरतें भी हैं जिनके घरवाले मुसलमान होते हुए भी मुसलमान नाम के पाकिस्तानी लुटेरों के हाथ से मारे गये.

हाँ, तो यह हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख—तीन अलग-अलग धर्मों को मानने वाली कशमीरी औरतें सवेरे से शाम तक साथ-साथ बैठ कर काम करती हैं, एक दूसरे का हाथ बटाती हैं, एक दूसरे को अपने दुख-सुख मे शरीक करती हैं. और आपके लिये यह बताना मुश्किल है कि इनमें कौन सी हिन्दू या सिक्ख है और कौन सी मुसलमान. दुख और मुसीबत ने इन सबको एक कर दिया है. और अब यह अलग-अलग धर्म के लेबुल लगाने के बजाय सिर्फ शरणार्थी बहनें हो गई हैं.

है न अनोखी बात ?

एके और मिलाप के इस अनोखे कारनामे का सेहरा श्रीमती कृष्णा मेहता के सर है जो इस सेवा सदन की कर्ता-धर्ता हैं.

बहन कृष्णा मेहता की अपनी कहानी बड़ी दुखभरी होने के साथ-साथ आशा और हौसला बढाने वाली भी है. वह ख़ुद भी एक शरणार्थी विधवा हैं. उनके स्वर्गवासी पति कशमीर के ज़िला मुज़फ्फराबाद के डिप्टी कमिश्नर थे. जब क़बायली लुटेरों ने

پھر اس سیواسدن کی شرنارتھی عورتوں میں انوکھی بات کیا ہے ؟

وہ یہ ہے — کہ ان میں ہندو بھی ہیں، سکھ بھی ہیں — اور مسلمان بھی ہیں۔ وہ بھی، جنھوں نے مسلمان نام کے خونی لٹیروں کے ہاتھوں دکھ اٹھایا ہے اور وہ بھی، جنھوں نے ہندو اور سکھ نام کے اتیاچاریوں کے ہاتھوں — اور ایسی مسلمان عورتیں بھی ہیں جن کے گھر والے مسلمان ہوتے ہوئے بھی مسلمان نام کے پاکستانی لٹیروں کے ہاتھ سے مارے گئے۔

ہاں، تو یہ ہندو، مسلمان اور سکھ — تین الگ الگ دھرموں کو ماننے والی کشمیری عورتیں سویرے سے شام تک ساتھ ساتھ بیٹھ کر کام کرتی ہیں، ایک دوسرے کا ہاتھ بٹاتی ہیں، ایک دوسرے کو اپنے دکھ سکھ میں شریک کرتی ہیں۔ اور آپ کے لئے یہ بتانا مشکل ہے کہ ان میں کون سی ہندو یا سکھ ہیں اور کون سی مسلمان۔ دکھ اور مصیبت نے ان سب کو ایک کر دیا ہے۔ اور اب یہ الگ الگ دھرم کے لیبل لگانے کے بجائے صرف شرنارتھی بہنیں ہو گئی ہیں۔

ہے نا انوکھی بات ؟

ایکے اور ملاپ کے اس انوکھے کارنامے کا سہرا شریمتی کرشنا مہتا کے سر ہے جو اس سیواسدن کی کرتا دھرتا ہیں۔

بہن کرشنا مہتا کی اپنی کہانی بڑی دکھ بھری ہونے کے ساتھ ساتھ آشا اور حوصلہ بڑھانے والی بھی ہے۔ وہ خود بھی ایک شرنارتھی ودھوا ہیں۔ ان کے سورگ واسی پتی کشمیر کے ضلع مظفرآباد کے ڈپٹی کمشنر تھے۔ جب قبائلی لٹیروں نے

मुज़फ़्फ़राबाद (जो कशमीर की सरहद पर है) पर हमला किया तो मेहता साहब उनका मुक़ाबला करते हुए मारे गये.

कृष्णा मेहता ने विधवा होकर भी अपने मन को मज़बूत रक्खा. जब क़बायली उन्हें उनके पति की लाश दिखाने ले गये तो वह अपने आँसू पी गईं और कहा—"मैं सौभाग्यवती हूँ कि मेरे पति ने अपने आदर्श और फ़र्ज़ के लिये अपनी जान दे दी, मगर अन्याय और अहिंसा के आगे सर न झुकाया."

उस मुसीबत के समय कृष्णा मेहता की हिम्मत और निडर पन ने ही उनकी लाज और उनके बच्चों की जान बचाई. चूँकि वह और उनके बच्चे मरने से न डरते थे इसलिये कबायली उनका कुछ न बिगाड़ सके. बल्कि उस देवी की शक्ति के सामने उनके सर झुक गये. उनका सरदार मिसेज़ मेहता को बड़ी बहन कह कर पुकारने लगा.

मैंने बहन कृष्णा मेहता से पूछा—"आप में उन डाकुओ, हत्यारो का मुक़ाबला करने की शक्ति कहाँ से आई?" उन्होंने बताया—"बहुत बरस हुए मैं एक बार महात्मा गांधी के दर्शन करने गई थी. बापू ने मेरे सर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया. बस उस दिन से मैं अपने हृदय में एक अजीब शक्ति पाती हूँ."

गांधी जी का कहना था कि बुरे की बुराई का जवाब भलाई से, हिंसा का जवाब अहिंसा से, झूट का जवाब सच से दिया जाय तो भलाई और सच की जीत होती है. कृष्णा मेहता का कहना है कि उनके और उनके बच्चों को अपने आदर्श पर अटल देख कर

مظفرآباد (جو کشمیر کی سرحد پر ہے) پر حملہ کیا تو مہتا صاحب ان کا مقابلہ کرتے ہوئے مارے گئے۔

کرشنا مہتا نے ودھوا ہو کر بھی اپنے من کو مضبوط رکھا۔ جب قبائلی انھیں اُن کے پتی کی لاش دکھانے لے گئے تو وہ اپنے آنسو پی گئیں اور کہا— "میں سوبھاگیہ وتی ہوں کہ میرے پتی نے اپنے آدرش اور فرض کے لئے اپنی جان دے دی، مگر انیائے اور ہنسا کے آگے سر نہ جھکایا۔"

اُس مصیبت کے سمے کرشنا مہتا کی ہمت اور نڈر پن نے ہی اُن کی لاج اور اُن کے بچوں کی جان بچائی۔ چونکہ وہ اور اُن کے بچے مرنے سے نہ ڈرتے تھے اس لئے قبائلی اُن کا کچھ نہ بگاڑ سکے۔ بلکہ اُس دیوی کی کے سامنے اُنکے سر جھک گئے۔ اُنکا سردار مسز مہتا کو بڑی بہن کہہ کر پکارنے لگا۔

میں نے بہن کرشنا مہتا سے پوچھا— "آپ میں اُن ڈاکوؤں، ہتیاروں کا مقابلہ کرنے کی شکتی کہاں سے آئی؟" اُنھوں نے بتایا— "بہت برس ہوئے میں ایک بار مہاتما گاندھی کے درشن کرنے گئی تھی۔ باپو نے میرے سر پر ہاتھ رکھ کر آشیرواد دیا۔ بس اُس دن سے میں اپنے ہردے میں ایک عجیب شکتی پاتی ہوں۔"

گاندھی جی کا کہنا تھا کہ بُرے کی بُرائی کا جواب بھلائی سے، ہنسا کا جواب اہنسا سے، جھوٹ کا جواب سچ سے دیا جائے تو بھلائی اور سچ کی جیت ہوتی ہے۔ کرشنا مہتا کا کہنا ہے کہ اُن کو اور اُن کے بچوں کو اپنے آدرش پر قائم دیکھ کر

क़बायलियों के पत्थर दिल भी इन्सानियत की गर्मी से पिघल गये. वह कहती हैं—"वह बड़े ज़ालिम, बड़े अत्याचारी थे, मगर इन्सानियत उनके हृदय में भी ज़रूर थी. आख़िर उन्हीं में से कई ने कई बार मेरी लाज और मेरे बच्चो की जान बचाई और हमें लहौर के रास्ते हिन्दुस्तान भेजवाया."

हिन्दुस्तान वापस आकर मिसेज़ मेहता प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू से मिलीं. उस शरणार्थी विधवा बहन की कहानी सुनकर पंडित जी ने उन्हें अपनी मुँहबोली बहन बना लिया और उनके बच्चों को अपना समझकर अपने ख़र्च पर नैनीताल के एक स्कूल में पढ़ने भेज दिया. फिर उन्होंने अपनी नई बहन से पूछा कि वह कहाँ रहना और क्या करना चाहती हैं. कृष्णा मेहता ने कई महीने जो दुख उठाये थे, उससे उनके बाल सफ़ेद हो गये थे. वह दुबली और कमज़ोर हो गई थीं. मगर उन्होंने सुख और आराम का बेकार जीवन बिताना नामंज़ूर किया. अपने मुँह बोले भाई से कहा—"मैं अपनी जैसी शरणार्थी बहनों की सेवा करना चाहती हूँ."

सो कृष्णा मेहता को श्रीनगर भेजा गया, कशमीर में शरणार्थी औरतों के लिये एक सेवा-सदन खोलने. श्रीनगर के मुहल्ले वज़ीर बाग़ में कई सौ शरणार्थी मर्द औरत रहते हैं. उनमें से बहुत-सी हिन्दू और सिक्ख औरतें "गांधी शरणार्थी सेवासदन" में काम सीखने और काम करने आने लगीं. वह अपना सब कुछ खोकर निराश हो चुकी थीं, हिम्मत हार चुकी थीं. उनके घायल मनो को फिर से अच्छा करने के लिये कृष्णा मेहता ने चाहा कि सवेरे काम से पहले गांधी जी वाली रामधुन किया करे. सो सबने मिलकर

قبائلیوں کے پتھر دل بھی انسانیت کی گرمی سے پگھل گئے۔ وہ کہتی ہیں — "وہ بڑے ظالم، بڑے اتیاچاری تھے، مگر انسانیت اُن کے ہردے میں بھی ضرور تھی۔ آخر اُنہیں میں سے کئی نے کئی بار میری لاج اور میرے بچوں کی جان بچائی اور ہمیں لاہور کے راستے ہندستان بھجوایا۔"

ہندستان واپس آکر مسز مہتا پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو سے ملیں۔ اُس شرنارتھی ودھوا بہن کی کہانی سن کر پنڈت جی نے اُنہیں اپنی منہ بولی بہن بنا لیا اور اُن کے بچوں کو اپنا سمجھ کر اپنے خرچ پر نینی تال کے ایک اسکول میں پڑھنے بھیج دیا۔ پھر اُنہوں نے اپنی نئی بہن سے پوچھا کہ وہ کہاں رہنا اور کیا کرنا چاہتی ہیں۔ کرشنا مہتا نے کئی مہینے جو دکھ اٹھائے تھے، اُس سے اُن کے بال سفید ہو گئے تھے۔ وہ دُبلی اور کمزور ہو گئی تھیں۔ مگر اُنہوں نے سکھ اور آرام کا بیکار جیون بتانا نامنظور کیا۔ اپنے منہ بولے بھائی سے کہا — "میں اپنی جیسی شرنارتھی بہنوں کی سیوا کرنا چاہتی ہوں۔"

سو کرشنا مہتا کو شری نگر بھیجا گیا، کشمیر میں شرنارتھی عورتوں کے لئے ایک سیوا سدن کھولنے۔ شری نگر کے محلے وزیر باغ میں کئی سو شرنارتھی مرد عورت رہتے ہیں۔ اُن میں سے بہت سی ہندو اور سکھ عورتیں "گاندھی شرنارتھی سیوا سدن" میں کام سیکھنے اور کام کرنے آنے لگیں۔ وہ اپنا سب کچھ کھو کر نراش ہو چکی تھیں، ہمت ہار چکی تھیں۔ اُن کے گھائل منوں کو پھر سے اچھا کرنے کے لئے کرشنا مہتا نے چاہا کہ سویرے کام سے پہلے گاندھی جی والی رام دُھن کیا کریں۔ سو سب نے مل کر

उनके साथ मन को भगवान की तरफ़ लगाकर गाना शुरू किया:—

रघुपति राघव राजा राम
पतीत पावन सीता राम.

कृष्णा मेहता बोलती थीं और फिर सब मिलकर उनके साथ गाती थीं:—

रघुपति राघव राजा राम
पतीत पावन सीता राम.

पर जब अगली लाइन आई.....

ईश्वर अल्ला तेरा नाम

तो कृष्णा मेहता का साथ किसी और आवाज ने न दिया सौ के लगभग शरणार्थी औरतें और सब की सब चुपचाप थीं. यह क्या हुआ ?. ....रामधुन बंद करके कृष्णा जी ने पूछा तो औरतों ने कहा कि मुसलमानों ने जो जुल्म हम पर ढाये हैं उसके बाद हम मुसलमानों के अल्लाह का नाम अपनी ज़बान से कैसे ले सकते हैं.

कृष्णा मेहता ने उन्हें इस बार में गांधी जी के बोल सुनाये. यह बताया कि लुटेरे और जालिम नाम के ही मुसलमान थे. उनके करम इसलाम से फिरे हुए थे. शेख़ अब्दुल्ला की मिसाल बताई कि वह और उनके मुसलमान कशमीरी साथी किस तरह तन-मन-धन से हिन्दू सिक्ख शरणार्थियों की सेवा मे लगे हुए हैं पर उन शरणार्थी औरतों की जबान से "ईश्वर अल्ला" के शब्द न निकले.

रामधुन बंद कर दी गई पर बिना रामधुन के कृष्णा मेहता का जी काम मे न लगा. बार-बार उन्हें यह फिक्र लगी रहती थी कि किस तरह मैं इन बहनो के घायल मन में से क्रोध और नफरत निकालदूँ.

اُن کے ساتھ من کو بھگوان کی طرف لگا کر گانا شروع کیا:-

رگھوپتی راگھو راجا رام
پتت پاون سیتا رام

کرشنا مہتا بولتی تھیں اور پھر سب مل کر اُن کے ساتھ گاتی تھیں:-

رگھوپتی راگھو راجا رام
پتت پاون سیتا رام

پر جب اگلی لائن آئی........

ایشور اللہ تیرا نام

تو کرشنا مہتا کا ساتھ کسی اور آواز نے نہ دیا۔ سو کے لگ بھگ شرنارتھی عورتیں اور سب کی سب چپ چاپ تھیں۔ یہ کیا ہوا؟...... رام دھن بند کرکے کرشنا جی نے پوچھا تو عورتوں نے کہا کہ مسلمانوں نے جو ظلم ہم پر ڈھائے ہیں اُس کے بعد ہم مسلمانوں کے اللہ کا نام اپنی زبان سے کیسے لے سکتے ہیں۔

کرشنا مہتا نے اُنھیں اس بارے میں گاندھی جی کے بول سنائے۔ یہ بتایا کہ لٹیرے اور ظالم نام کے ہی مسلمان تھے۔ اُن کے کرم اسلام سے پھرے ہوئے تھے۔ شیخ عبداللہ کی مثال بتائی کہ وہ اور اُن کے مسلمان کشمیری ساتھی کس طرح تن من دھن سے ہندو سکھ شرنارتھیوں کی سیوا میں لگے ہوئے ہیں۔ پر اُن شرنارتھی عورتوں کی زبان سے "ایشور اللہ" کے شبد نہ نکلے۔

رام دھن بند کر دی گئی پر بنا رام دھن کے کرشنا مہتا کا جی کام میں نہ لگا۔ بار بار اُنھیں یہ فکر لگی رہتی تھی کہ کس طرح میں ان بہنوں کے گھائل من میں سے کرودھ اور نفرت نکال دوں۔

फिर उन्हें पता लगा कि पास ही मुस्लिम शरणार्थी औरतें भी रहती हैं. उनमें से कुछ तो जम्मू से आई थीं, जहाँ हिन्दू नाम के हत्यारों ने उनके घर-बार को तबाह किया था और कुछ कशमीरी थीं और मुसलमान नाम के ही पाकिस्तानी लुटेरों के हाथों उन्होंने अपने मर्दों को क़त्ल होते और अपने घरबार को लुटते और जलते देखा था. कृष्णा मेहता उनको भी अपने सेवा-सदन में ले आईं.

कई दिन मुसलमान औरतें एक तरफ़ अलग कोने में बैठी रहीं. न वह हिन्दू सिक्ख औरतों से बोलीं, न उनसे कोई बोला. बीच में नफ़रत और क्रोध की खाई जो थी.

फिर एक-एक दो-दो करके बातचीत शुरू हुई—"क्यों बहन तुम पर क्या गुज़री ?" एक दूसरे से पूछा गया.

फिर एक दूसरे को अपनी विपता सुनाई गई.

फिर सब मिलकर रोईं.

और इन आँसुओं में नफ़रत बह गई. दिलों का मैल धुल गया. मन उजले हो गये. अगले दिन यह हिन्दू मुसलमान सिक्ख शरणार्थी औरतें मिलकर बड़ी लगन से गा रही थीं—

ईश्वर अल्ला तेरा नाम
सबको सन्मति दे भगवान

और कृष्णा मेहता की आँखों में ख़ुशी के आँसू थे.

है न श्रीनगर एक अनोखा शहर ?

پھر انھیں پتہ لگا کہ پاس ہی مسلم شرنارتھی عورتیں بھی رہتی ہیں۔ اُن میں سے کچھ تو جموں سے آئی تھیں، جہاں ہندو نام کے ہتیاروں نے اُن کے گھر بار کو تباہ کیا تھا اور کچھ کشمیری تھیں اور مسلمان نام کے ہی پاکستانی لٹیروں کے ہاتھوں اُنھوں نے اپنے مردوں کو قتل ہوتے اور اپنے گھر بار کو لٹتے اور جلتے دیکھا تھا۔ کرشنا مہتا اُن کو بھی اپنے سیوا سدن میں لے آئیں۔

کئی دن مسلمان عورتیں ایک طرف الگ کونے میں بیٹھی رہیں۔ نہ وہ ہندو سکھ عورتوں سے بولیں، نہ اُن سے کوئی بولا۔ بیچ میں نفرت اور کرودھ کی کھائی جو تھی۔

پھر ایک ایک دو دو کر کے بات چیت شروع ہوئی — "کیوں بہن تم پر کیا گزری؟" ایک دوسرے سے پوچھا گیا۔

پھر ایک دوسرے کو اپنی بپتا سنائی گئی۔

پھر سب مل کر روئیں۔

اور اِن آنسوؤں میں نفرت بہہ گئی۔ دلوں کا میل دُھل گیا۔ مَن اُجلے ہو گئے۔ اگلے دن یہ ہندو مسلمان سکھ شرنارتھی عورتیں مل کر بڑی لگن سے گا رہی تھیں —

ایشور اللہ تیرا نام
سب کو سنمتی دے بھگوان

اور کرشنا مہتا کی آنکھوں میں خوشی کے آنسو تھے۔

ہے نہ شری نگر ایک انوکھا شہر؟

मिलाप

(भाई अली अब्बास हुसैनी)

सन् १८५७ के ग़दर के बाद जब फिर से अंग्रेज़ी राज शुरू हुआ तो जहाँ बहुत से ख़ानदान बरबाद हुए, वहाँ बहुत से बन भी गये. इन नये ख़ानदानों में ठाकुर लखपतसिंह का ख़ानदान भी था. यह ग़दर के समय साधारन सिपाही से तरक्क़ी करके रिसालदार हो गये थे. भले नौकर की तरह नमक का हक़ अदा किया और सैकड़ों मोर्चों मे गोरों पर से अपने को काले दाने की तरह न्योछावर किया. मलका विक्टोरिया की सरकार ने उनकी वफ़ादारी की क़द्र की और तीन पूरे गांव और कुछ हिस्से महमूदपुर मे इनाम दिये. उन्होंने सरकार की जानमाल को दुआ दी, तलवार का क़बज़ा हाथ से छूटा और हल की मूठ हाथ मे आ गई.

महमूदपुर लखपतसिंह के गांव के बगल ही मे था. यहाँ के पुराने ज़मींदार मीर ज़मीर हुसैन बड़ी आन बान के आदमी थे. ग़दर के पहले क़रीब क़रीब सारा ज़िला उन्ही का था. लेकिन ग़दर मे यह चुपके बैठे रहे और न इन्होंने बाग़ियों का साथ दिया न कम्पनी का. जब बाग़ी भगा दिये गये और उनके हमदर्दों की खोज हुई तो यह भी शक की नज़र से देखे गये. कलक्टर साहब ने कहा—"इतना बड़ा ज़मींदार और योंही बैठा रहे, नामुमकिन है." वकीलों मुख़्तारों ने बहुत समझाया लेकिन मीर ज़मीर हुसैन ख़ुद न गये और न कोई ख़ास सफ़ाई दी. आधी जायदाद ज़ब्त

ملاپ

(بھائی علی عباس حسینی)

سنہ ۱۸۵۷ کے غدر کے بعد جب پھر سے انگریزی راج شروع ہوا تو جہاں بہت سے خاندان برباد ہوئے، وہاں بہت سے بن بھی گئے۔ ان نئے خاندانوں میں ٹھاکر لکھپت سنگھ کا خاندان بھی تھا۔ یہ غدر کے سمے سادھارن سپاہی سے ترقی کرکے رسالدار ہوگئے تھے۔ بھلے نوکر کی طرح نمک کا حق ادا کیا اور سیکڑوں مورچوں میں گوروں پر سے اپنے کو کالے دانے کی طرح نچھاور کیا۔ ملکہ وکٹوریہ کی سرکار نے اُن کی وفاداری کی قدر کی اور تین پورے گاؤں اور کچھ حصے محمود پور میں انعام دیئے۔ اُنھوں نے سرکار کی جان مال کو دعا دی، تلوار کا قبضہ ہاتھ سے چھوٹا اور ہل کی موٹھ ہاتھ میں آگئی۔

محمود پور لکھپت سنگھ کے گاؤں کے بغل ہی میں تھا۔ یہاں کے پرانے زمیندار میر ضمیر حسین بڑی آن بان کے آدمی تھے۔ غدر کے پہلے قریب قریب سارا ضلع انھیں کا تھا۔ لیکن غدر میں یہ چپکے بیٹھے رہے اور نہ انھوں نے باغیوں کا ساتھ دیا نہ کمپنی کا۔ جب باغی بھگا دیئے گئے اور اُن کے ہمدردوں کی کھوج ہوئی تو یہ بھی شک کی نظر سے دیکھے گئے۔ کلکٹر صاحب نے کہا ـــ "اتنا بڑا زمیندار اور یونہی بیٹھا رہے، ناممکن ہے۔" وکیلوں مختاروں نے بہت سمجھایا لیکن میر ضمیر حسین خود نہ گئے اور نہ کوئی خاص صفائی دی۔ آدھی جائداد ضبط

कर ली गई. यह उसी का एक हिस्सा था जो लखपतसिंह को मिला था.

अब लखपतसिंह से इनसे कैसे बन सकती थी ? यह पुराने वह नया, यह ख़ानदानी वह आप बना हुआ. झगड़े हुए और बुरी तरह. महमूद पुर. जिसमे दोनो का हिस्सा था, पानीपत का मैदान बना और पृथ्वीराज और महमूद गज़नवी की लड़ाइयाँ फिर से छोटे पैमाने पर होने लगी. साथ के उठने बैठने वाले दोनों तरफ आग लगाने में एक से. जीत किसी की हो, हार किसी की, गीदड़ सदा फायदे ही में रहते हैं.

इसीलिये कभी फौजदारी की नौबत आई तो कभी दीवानी की, कभी मीर साहब हारे तो कभी ठाकुर साहब, लेकिन आपस में न समझौता हुआ न दोस्ती. और होती कैसे ? इधर वाले कहते—"सैयद कभी ठाकुर से दबा है ?" उधर वाले जवाब देते—"राजपूत कभी किसी तुर्क से डरा है ?"

ग़रज़ जब तक दोनो बूढ़े जीते रहे, योंही झगड़े जारी रहे. जब मरे तो ख़ानदानी झगड़े आपस के सैकड़ों मुकदमों के साथ साथ बेटों के लिये विरासत छोड़ गये.

(२)

नये मीर साहब और नये ठाकुर साहब दोनों अपने अपने बाप के बेटे थे. वह बूढ़े थे यह जवान, उनके ख़ून में ठंडक थी इनके यहाँ गर्मी. उन्होने ख़ुद फौजदारियों में हिस्सा न लिया, झगड़े की जगहों पर आप कभी न गये, यह दोनों हर जगह आप पहुँच जाते. हर झगड़े मे ख़ुद हिस्सा लेते. इतना ही नहीं बल्कि शरीर

کرلی گئی۔ یہ اُسی کا ایک حصّہ تھا جو لکھپت سنگھ کو ملا تھا۔

اب لکھپت سنگھ سے اِن سے کیسے بن سکتی تھی؟ یہ پُرانے وہ نیا، یہ خاندانی وہ آپ بنا ہوا۔ جھگڑے ہوئے اور بُری طرح۔ محمود پور، جس میں دونوں کا حصّہ تھا، پانی پت کا میدان بنا اور پرتھوی راج اور محمود غزنوی کی لڑائیاں پھر سے چھوٹے پیمانے پر ہونے لگیں۔ ساتھ کے اُٹھنے بیٹھنے والے دونوں طرف آگ لگانے میں ایک سے۔ جیت کسی کی ہو، ہار کسی کی، گیدڑ سدا فائدے ہی میں رہتے ہیں۔

اسی لئے کبھی فوجداری کی نوبت آئی تو کبھی دیوانی کی، کبھی میر صاحب ہارے تو کبھی ٹھاکر صاحب، لیکن آپس میں نہ سمجھوتا ہوا نہ دوستی۔ اور ہوتی کیسے؟ اِدھر والے کہتے — "سیّد کبھی ٹھاکر سے دبا ہے؟" اُدھر والے جواب دیتے — "راجپوت کبھی کسی تُرک سے ڈرا ہے؟"

غرض جب تک دونوں بوڑھے جیتے رہے، یونہی جھگڑے جاری رہے۔ جب مرے تو خاندانی جھگڑے آپس کے سیکڑوں مقدموں کے ساتھ ساتھ بیٹوں کے لئے وراثت چھوڑ گئے۔

(۲)

نئے میر صاحب اور نئے ٹھاکر صاحب دونوں اپنے اپنے باپ کے بیٹے تھے۔ وہ بوڑھے تھے یہ جوان، اُن کے خون میں ٹھنڈک تھی اِن کے یہاں گرمی۔ انھوں نے خود فوجداریوں میں حصّہ نہ لیا، جھگڑے کی جگہوں پر آپ کبھی نہ گئے، یہ دونوں ہر جگہ آپ پہنچ جاتے۔ ہر جھگڑے میں خود حصّہ لیتے۔ اتنا ہی نہیں بلکہ شریر

में ताक़त और दिल मे हिम्मत होने के कारन बड़े बड़े मजमों में बेधड़क घुस जाते और एक दूसरे को टोक कर दो दो हाथ लड़ने को तैयार रहते.

एक दिन ऐसा संजोग हुआ कि नये मीर साहब, मीर कादीर हुसैन के एक खेत मे कुएँ से 'पुर' के ज़रिये पानी पहुँचाया जा रहा था. नालियाँ जिन खेतो से होकर जाती थी, वह नये ठाकुर साहब धनपतसिह के थे. धनपतसिह को जो यह मालूम हुआ तो उन्होने नालियाँ अपने खेत में चुपके से कटवा दीं. पानी मीर साहब के खेत मे पहुँचने की जगह ठाकुर साहब के खेत मे भर आया मीर साहब के आदमियो ने जो यह देखा तो नाली बन्द करने पहुँचे. धनपत सिह के आदमी लाठी लेकर खड़े हो गये कि अगर तुमने हमारे खेत मे पाँव रक्खा तो हम सर तोड़ देंगे ! नाली काटी इस तरह गई थी कि बिना खेत में गये बन्द नही हो सकती थी. मीर साहब के आदमी अजीब कशमकश मे थे. नाली बन्द नहीं हो सकती, पानी रुक नहीं सकता. जोश बढ़ा, बात बढ़ी, लाठियाँ उठ गई लेकिन मीर साहब के एक बूढ़े नौकर ने आगे बढ़कर सब को रोका. मालिक की इजाज़त जरूरी थी.'पुर' बन्द कर दिया गया. पानी रुक गया. मीर साहब को खबर देने के लिये आदमी दौड़ाया गया. पता लगा कि वह शहर गये हैं. इधर धनपतसिह को खबर हुई. वह खुद मौक़े पर आ पहुँचे और खेत की मेड़ पर आकर बैठ गये कि देखें कौन हमारे खेत में आता है.

हो सकता है कि उस दिन बात न बढ़ती लेकिन मौत के

میں طاقت اور دل میں ہمت ہونے کے کارن بڑے بڑے مجموں میں بے دھڑک گھس جاتے اور ایک دوسرے کو ٹوک کر دو دو ہاتھ لڑنے کو تیار رہتے۔

ایک دن ایسا سنجوگ ہوا کہ نئے میر صاحب، میر قادر حسین کے ایک کھیت میں کوئیں سے 'پُر' کے ذریعے پانی پہنچایا جا رہا تھا۔ نالیاں جن کھیتوں سے ہو کر جاتی تھیں، وہ نئے ٹھاکر صاحب دھنپت سنگھ کے تھے۔ دھنپت سنگھ کو جو یہ معلوم ہوا تو اُنھوں نے نالیاں اپنے کھیت میں چپکے سے کٹوا دیں۔ پانی میر صاحب کے کھیت میں پہنچنے کی جگہ ٹھاکر صاحب کے کھیت میں بھر آیا۔ میر صاحب کے آدمیوں نے جو یہ دیکھا تو نالی بند کرنے پہنچے۔ دھنپت سنگھ کے آدمی لاٹھی لیکر کھڑے ہو گئے کہ اگر تم نے ہمارے کھیت میں پاؤں رکھا تو ہم سر توڑ دیں گے ! نالی کاٹی اس طرح گئی تھی کہ بنا کھیت میں گئے بند نہیں ہو سکتی تھی۔ میر صاحب کے آدمی عجیب کشمکش میں تھے۔ نالی بند نہیں ہو سکتی۔ پانی رُک نہیں سکتا۔ جوش بڑھا، بات بڑھی، لاٹھیاں اُٹھ گئیں لیکن میر صاحب کے ایک بوڑھے نوکر نے آگے بڑھ کر سب کو روکا۔ مالک کی اجازت ضروری تھی۔ 'پُر' بند کر دیا گیا۔ پانی رُک گیا۔ میر صاحب کو خبر دینے کے لئے آدمی دوڑایا گیا۔ پتہ لگا کہ وہ شہر گئے ہیں۔ اِدھر دھنپت سنگھ کو خبر ہوئی، وہ خود موقع پر آ پہنچے اور کھیت کی مینڈ پر آکر بیٹھ گئے کہ دیکھیں کون ہمارے کھیت میں آتا ہے۔

ہو سکتا ہے کہ اُس دن بات نہ بڑھتی لیکن موت کے

मारे मीर साहब के नये मुख़तार आ गये. उन्हें अपनी क़ानून दानी पर नाज़ था और कारगुज़ारी पर बड़ा दावा. सोचा कि मीर साहब को जहाँ मालूम हुआ कि खेत में पानी न जा सका और धनपतसिंह ने रोक दिया तो पूछेंगे—"तुम ज़िन्दा कैसे हो? मर गये होते." आते ही ठाकुर साहब से बोले—"आप अपनी ठकुराई तो तह कर रखिये, पानी जायगा और ज़रूर जायगा."

ठाकुर तो छोटे आदमी को मुँह लगाने के ख़याल से चुप रहे पर उनके एक साथी ने लाठी तान कर कहा—"अरे जा रे तुर्क, घर में रोने वालियों के आँसू पोंछ, नहीं तो वह लाठी पड़ेगी कि लाश फड़कती होगी."

मुख़तार साहब गुस्से से होंठ चबाकर बोले—"अच्छा, पानी तो मीर साहब के खेत में जायगा, पर तुम्हारे ख़ून में रंगीन!" फिर नौकरों को डाँटा—"तुम सब के सब घर मे चूड़ियाँ पहिन कर बैठो. अगर मुसलमान तुम्हारे ही जैसे बोदे होते तो फिर काहे को हिन्दुस्तान मे क़दम टिकता."

जोश में भरे हुए लोगों को धर्म और मर्दानगी के नाम पर उभारना जलती हुई लकड़ियों पर मिट्टी का तेल छिड़कना है. सभी ने लाठियाँ उठालीं और पिल पड़े. ठाकुर धनपतसिंह ने आदमियों से तो लड़ने का इशारा कर दिया पर आप लाठी लिये अलग खड़े रहे. शेर और लोमड़ी का मुक़ाबला नहीं होता. मालिक टके के नौकरों से क्या लड़ते. मीर साहब होते तो दिलेरी से हमले होते, वीरों का सा बचाव होता और नियम पूर्वक लड़ाई होती. यह छोटों की लड़ाई थी, ठाकुर का इस मे कौन सा मौक़ा? लेकिन छोटों को

مارے میر صاحب کے نئے مختار آگئے۔ اُنھیں اپنی قانون دانی پر ناز تھا اور کارگزاری پر بڑا دعویٰ۔ سوچا کہ میر صاحب کو جہاں معلوم ہوا کہ کھیت میں پانی نہ جا سکا اور دھنپت سنگھ نے روک دیا تو پوچھیں گے — "تم زندہ کیسے ہو؟ مرگئے ہوتے۔" آتے ہی ٹھاکر صاحب سے بولے — "آپ اپنی ٹھکرائی تو تہہ کر رکھیے، پانی جائے گا اور ضرور جائے گا۔"

ٹھاکر تو چھوٹے آدمی کو منہ لگانے کے خیال سے چُپ رہے پر اُن کے ایک ساتھی نے لاٹھی تان کر کہا — "ارے جا رے تُرک، گھر میں رونے والیوں کے آنسو پونچھ، نہیں تو وہ لاٹھی پڑے گی کہ لاش پھڑکتی ہوگی۔"

مختار صاحب غصّے سے ہونٹ چبا کر بولے — "اچھا، پانی تو میر صاحب کے کھیت میں جائے گا، پر تمھارے خون میں رنگین!" پھر نوکروں کو ڈانٹا — "تم سب کے سب گھر میں چوڑیاں پہن کر بیٹھو، اگر مسلمان تمھارے ہی جیسے بودے ہوتے تو پھر کاہے کو ہندستان میں قدم ٹکتا۔"

جوش میں بھرے ہوئے لوگوں کو دھرم اور مردانگی کے نام پر اُبھارنا جلتی ہوئی لکڑیوں پر مٹی کا تیل چھڑکنا ہے۔ سبھی نے لاٹھیاں اُٹھالیں اور پل پڑے۔ ٹھاکر دھنپت سنگھ نے آدمیوں سے تو لڑنے کا اشارہ کر دیا پر آپ لاٹھی لئے الگ کھڑے رہے۔ شیر اور لومڑی کا مقابلہ نہیں ہوتا۔ مالک ٹکے کے نوکروں سے کیا لڑتے۔ میر صاحب ہوتے تو دلیری سے حملے ہوتے، ویروں کا سا بچاؤ ہوتا اور نیم پوروک لڑائی ہوتی۔ یہ چھوٹوں کی لڑائی تھی، ٹھاکر کا اس میں کون سا موقع ہے لیکن چھوٹوں کو

बड़ों से लड़ने में ही मजा आता है. नौकर जब मालिक के बराबर के दुश्मन का अपमान करले तब उसकी आबरू बढ़ती है. इसलिये मीर साहब के एक आदमी ने ठाकुर को ताना मारा—"बड़े मर्द हैं, नौकरों की जान जाय, आप औरतों की तरह डर से दूर खड़े हैं."

काले को टोक देना जितना खतरनाक है उतना ही राजपूत को. ठाकुर की आँखें लाल होगई, नथने फैल गये और छलॉग मार कर मजमे मे घुस गया. पहले जहाँ घायल और बेकार करने का इरादा था, अब जान लेने और जान देने का पक्का निश्चय कर लिया. इस लिये जहॉ पहले हाथ पॉव टूट रहे थे. वहॉ अब सर फटने लगे. थोड़ी देर मे घायलो और मरने वालो के ढेर लग गये. मुख़तार साहब ने बात पर जान देदी. मर कर गिरे तो ठाकुर ही के खेत में, लेकिन नाली पर क़ब्ज़ा ठाकुर ही का रहा. पानी भी ख़ून से रंगीन था, लेकिन ठाकुर की जगह उन्हीं के ख़ून से और जा भी रहा था, पर मीर साहब की जगह धनपत सिंह के खेत में ?

(३)

मुक़दमा चला और बड़े ज़ोर शोर से चला. ठाकुर धनपतिसिंह पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया गया. ज़मानत भी मंज़ूर नहीं हुई. मामूली मुजरिमो की तरह पकड़ कर बंद कर दिये गये. दोनो तरफ से नामी से नामी वकील बुलाये गये. रुपया पानी की तरह बहाया जाने लगा. पहले घर की जमा से शुरुआत हुई फिर उधार शुरू हुआ. थोड़े दिनों में 'गोरू बछेरू' बिकने लगे. फिर गॉव मे हाथ लगा. एक के बाद दूसरे की बारी आई और दूसरे के बाद तीसरे की. सिर्फ वह

بڑوں سے لڑنے میں ہی مزہ آتا ہے۔ نوکر جب مالک کے برابر کے دشمن کا اپمان کرلے تب اُس کی آبرو بڑھتی ہے۔ اس لئے میر صاحب کے ایک آدمی نے ٹھاکر کو طعنہ مارا— "بڑے مرد ہیں، نوکروں کی جان جائے، آپ عورتوں کی طرح ڈر سے دور کھڑے ہیں۔"

کالے کو ٹوک دینا جتنا خطرناک ہے اُتنا ہی راجپوت کو۔ ٹھاکر کی آنکھیں لال ہو گئیں، نتھنے پھیل گئے اور چھلانگ مار کر مجمع میں گھس گیا۔ پہلے جہاں گھائل اور بیکار کرنے کا ارادہ تھا، اب جان لینے اور جان دینے کا پکا نشچے کر لیا۔ اس لئے جہاں پہلے ہاتھ پاؤں ٹوٹ رہے تھے۔ وہاں اب سر پھٹنے لگے۔ تھوڑی دیر میں گھائلوں اور مرنے والوں کے ڈھیر لگ گئے۔ مختار صاحب نے بات پر جان دیدی۔ مر کر گرے تو ٹھاکر ہی کے کھیت میں، لیکن نالی پر قبضہ ٹھاکر ہی کا رہا۔ پانی بھی خون سے رنگین تھا، لیکن ٹھاکر کی جگہ اُنہیں کے خون سے اور جا بھی رہا تھا، پر میر صاحب کی جگہ دھنپت سنگھ کے کھیت میں!

(۳)

مقدمہ چلا اور بڑے زور شور سے چلا۔ ٹھاکر دھنپت سنگھ پر قتل کا الزام لگایا گیا۔ ضمانت بھی منظور نہیں ہوئی۔ معمولی مجرموں کی طرح پکڑ کر بند کر دیئے گئے۔ دونوں طرف سے نامی سے نامی وکیل بُلائے گئے۔ روپیہ پانی کی طرح بہایا جانے لگا۔ پہلے گھر کی جمع سے شروعات ہوئی پھر اُدھار شروع ہوا۔ تھوڑے دنوں میں 'گورو بچھرو' بکنے لگے۔ پھر گاؤں میں ہاتھ لگا۔ ایک کے بعد دوسرے کی باری آئی اور دوسرے کے بعد تیسرے کی۔ صرف وہ

भाग रह गया जिस पर झगड़ा चल रहा था और माँ व पत्नी के गहने. फिर भी मुक़दमे की सूरत बिगड़ी ही रही. सारे गवाहों का बयान हो चुका था, सिर्फ़ मीर साहब का बयान बाक़ी था. अगर उन्हों ने भी सख़्ती से ठाकुर के ख़िलाफ़ बयान दे दिया तो फिर ठाकुर की जान की ख़ैर नहीं थी.

बूढ़ी माँ और जवान पत्नी यही बातें कर रही थीं. दोनों को धनपत प्यारा था, दोनों का हृदय इस आने वाली विपता से टुकड़े टुकड़े हो रहा था. एक की कोख जलती थी, दूसरे का सुहाग जाता था. घर मे बैठने वाली औरतें क्या करें जो अपने प्यारे को बचा लायें. सिवाय चुपके चुपके रोने और एक दूसरे को राम की दया का विश्वास दिलाने के और बस ही क्या था.

एकाएक बूढ़ी ठकुराइन ने कुछ सोचा. बहू से अपने गहनों का सन्दूक़ मंगवाया, फिर उस से सारे गहने उतारने को कहा. उन गहनों को भी उसी में रक्खा और पीनस तैयार करने का हुक्म दिया. बहू ने पूछा—"कहाँ जाइयेगा ?"

ठकुराइन बोलीं—"आकर बताऊँगी." और पीनस मे बैठकर सीधी मीर क़दीर हुसैन के घर पहुँची.

कहारों ने जिस समय पीनस ड्योढ़ी मे उतारी तो मीर साहब बाहर ही थे. ठकुराइन बग़ल मे सदूक़ दबाये, मामाओं से पूछती, वहाँ पहुँचीं जहाँ बूढ़ी सैदानी बैठी थीं. सलाम करके बराबर मे बैठ गईं. मीर क़दीर की माँ भी ज़माना देखे थीं. एक नज़र मे ताड़ गईं कि कौन है और किस गरज़ से आई है पूछा— 'आप धनपतसिंह [illegible]

بھاگ رہ گیا جس پر جھگڑا چل رہا تھا اور ماں و پتنی کے گہنے۔ پھر بھی مقدمہ کی صورت بگڑی ہی رہی۔ سارے گواہوں کا بیان ہو چکا تھا، صرف میر صاحب کا بیان باقی تھا۔ اگر انھوں نے بھی سختی سے ٹھاکر کے خلاف بیان دیدیا تو پھر ٹھاکر کی جان کی خیر نہیں تھی۔

بوڑھی ماں اور جوان پتنی یہی باتیں کر رہی تھیں۔ دونوں کو دھنپت پیارا تھا، دونوں کا ہردے اس آنے والی بپتا سے ٹکڑے ٹکڑے ہو رہا تھا۔ ایک کی کوکھ جلتی تھی، دوسرے کا سہاگ جاتا تھا۔ گھر میں بیٹھنے والی عورتیں کیا کریں جو اپنے پیارے کو بچا لائیں۔ سوا چپکے چپکے رونے اور ایک دوسرے کو رام کی دیا کا وشواس دلانے کے اور بس ہی کیا تھا۔

ایکاایک بوڑھی ٹھکرائن نے کچھ سوچا۔ بہو سے اپنے گہنوں کا صندوق منگوایا، پھر اس سے سارے گہنے اتارنے کو کہا۔ ان گہنوں کو بھی اسی میں رکھا اور پینس تیار کرنے کا حکم دیا۔ بہو نے پوچھا— "کہاں جائیے گا؟"

ٹھکرائن بولیں— "آ کر بتاؤں گی۔" اور پینس میں بیٹھ کر سیدھے میر قدیر حسین کے گھر پہنچیں۔

کہاروں نے جس سمے پینس ڈیوڑھی میں اتاری تو میر صاحب باہر ہی تھے۔ ٹھکرائن بغل میں صندوق دبائے، ماماؤں سے پوچھتی، وہاں پہنچیں جہاں بوڑھی سیدانی بیٹھی تھیں۔ سلام کر کے برابر میں بیٹھ گئیں۔ میر قدیر کی ماں بھی زمانہ دیکھے تھیں، ایک نظر میں تاڑ گئیں کہ کون ہے اور کس غرض سے آئی ہے۔ پوچھا "آپ دھنپت سنگھ کی ماں ہیں؟" انھوں نے سر ہلا کر اقرار کیا۔ سیدانی نے اب

और भी नर्मी और हमदर्दी से पूछा—"ठकुराइन साहिबा. आप कैसे आईं ?"

उनकी हमदर्दी भरी बात कलेजे पर तीर की तरह लगी. लेकिन राजपूतनी ने आँख से आँसू न निकलने दिये. गंम्भीरता से बोली—"हमारे आप के घर की लड़ाई आज कोई नई बात नहीं. स्वामियों के समय से चली आती है. फिर भी न हमारी इज्जत पर हमला हुआ न आपकी, लेकिन अब तो इज्जत भी जाया चाहती है और जान भी."

मीर साहब की माँ बोलीं—"तो बीबी इसमें कसूर किस का है, न आप के बेटे ने दूसरे की जान ली होती और न आज जान पर बनती."

ठाकुर की मां ग़रज़ वाली थी इसलिये नम्रता से बोली—"मेरे हुए फिर से जी न उठेंगे, धनपत आप के कदीर की तरह मेरा एकलौता है, उसकी जान बचा कर मुझे भी जिलाइये."

एक दिल की कैफ़ियत दूसरे दिल ने महसूस की. बड़ी बी ने सर झुका लिया. बेटे सब के बराबर होते हैं, सब की माएं एक ही तरह प्यार करती हैं. अगर आज कदीर पर यही समय पड़ता तो ? सोचने से ही काँपने लगीं. एक मामा की तरफ़ पलट कर बोलीं—"क़दीर को बुलाओ "

मीर साहब उस समय वकीलों के मजमे में बैठे हुए अपने बयान की तैयारी में लगे थे. फ़िक्र यह थी कि जिरह में कोई ऐसा लफ्ज़ ज़बान से न निकलने पाये जिससे धनपत सिंह फाँसी से बच सके. बस सदा के लिये यह झगड़ा ही मिट जाय. पच्चीस बरस से

اور بھی نرمی اور ہمدردی سے پوچھا — "ٹھکرائن صاحبہ، آپ کیسے آئیں؟"

اُن کی ہمدردی بھری بات کلیجے پر تیر کی طرح لگی، لیکن راجپوتنی نے آنکھ سے آنسو نہ نکلنے دیئے۔ گمبھیرتا سے بولی — "ہمارے آپ کے گھر کی لڑائی آج کوئی نئی بات نہیں، سوامیوں کے سمے سے چلی آتی ہے۔ پھر بھی نہ ہماری عزت پر حملہ ہوا نہ آپ کی، لیکن اب تو عزت بھی جایا چاہتی ہے اور جان بھی۔"

میر صاحب کی ماں بولیں — "تو بی بی اس میں قصور کس کا ہے، نہ آپ کے بیٹے نے دوسرے کی جان لی ہوتی اور نہ آج جان پر بنتی۔"

ٹھاکر کی ماں غرض والی تھی اس لئے نمرتا سے بولی — "مرے ہوئے پھر سے جی نہ اُٹھیں گے، دھنپت آپ کے قدیر کی طرح میرا اکلوتا ہے، اُس کی جان بچا کر مجھے بھی جلائیے۔"

ایک دل کی کیفیت دوسرے دل نے محسوس کی۔ بڑی بی نے سر جھکا لیا۔ بیٹے سب کے برابر ہوتے ہیں، سب کی مائیں ایک ہی طرح پیار کرتی ہیں، اگر آج قدیر پر یہی سمے پڑتا تو؟ سوچنے سے ہی کانپنے لگیں۔ ایک ماما کی طرف پلٹ کر بولیں — "قدیر کو بلاؤ۔"

میر صاحب اُس سمے وکیلوں کے مجمع میں بیٹھے ہوئے اپنے بیان کی تیاری میں لگے تھے۔ فکر یہ تھی کہ جرح میں کوئی ایسا لفظ زبان سے نہ نکلنے پائے جس سے دھنپت سنگھ پھانسی سے بچ سکیں۔ بس سدا کے لئے یہ جھگڑا ہی مٹ جائے۔ پچیس برس سے

अधिक का खानदानी खटक दिल से निकल जाय. वकील कहते थे ऐसा ही होगा. क्या मजाल जो बच जाय फाँसी तो यकीनी है इसमें कोई शक ही नहीं. माँ ने जो बुलाया तो खुश खुश अन्दर आये यहाँ एक हिन्दू स्त्री को बैठे देखकर पूछा—

"यह कौन है ?"

मां ने कहा—"यह मेरी बहन है. सलाम करो !"

मीर साहब ने बंदगी की और मां के इशारे पर पास ही खामोश बैठ गये. बड़ी बी थोड़ी देर चुप रही फिर बोली—"क्यों कदीर बदला लेना अच्छा है या माफ करना ? इसलाम ने क्या बताया है ?"

मीर साहब ने इस सवाल पर घबराकर मां का मुँह देखा फिर ठकुराइन पर नजर की वह बोली—"मियाँ मैं अपने बेटे धनपत की सिफारिश लेकर आई हूँ"

धनपत का नाम सुनते ही मीर साहब आग हो गये. कुछ नर्म गर्म कहना ही चाहते थे कि मां ने हाथ के इशारे से रोक कर कहा—"बेटे तुमने मेरी बात का जवाब न दिया ! बदला लेना अच्छा है या माफ करना ?"

मीर साहब ने गुस्सा पीने के लिये सर झुका लिया फिर बोले—"जी, माफ करना."

वह मुसकरा कर मोहब्बत से बोली—"बेटा धनपत की खता माफ कर दो !"

मीर साहब ने कहा—"अम्मांजान आप इस मामले में दखल न दीजिये, यह नामुमकिन है. आखिर मेरे मुखतार की जान मुफ्त

ادھک کی خاندانی کھٹک دل سے نکل جائے۔ وکیل کہتے تھے ایسا ہی ہوگا۔ کیا مجال جو بچ جائے۔ پھانسی تو یقینی ہے اس میں کوئی شک ہی نہیں۔ ماں نے جو بلایا تو خوش خوش اندر آئے۔ یہاں ایک ہندو استری کو بیٹھے دیکھ کر پوچھا—

"یہ کون ہیں؟"

ماں نے کہا— "یہ میری بہن ہیں، سلام کرو!"

میر صاحب نے بندگی کی اور ماں کے اشارے پر پاس ہی خاموش بیٹھ گئے۔ بڑی بی تھوڑی دیر چپ رہیں پھر بولیں— "کیوں قدیر، بدلہ لینا اچھا ہے یا معاف کرنا؟ اسلام نے کیا بتایا ہے؟"

میر صاحب نے اس سوال پر گھبرا کر ماں کا منہ دیکھا۔ پھر ٹھکرائن پر نظر کی۔ وہ بولیں— "میاں، اپنے بیٹے دھنپت کی سفارش لے کر آئی ہوں۔"

دھنپت کا نام سنتے ہی میر صاحب آگ ہو گئے۔ کچھ نرم گرم کہنا ہی چاہتے تھے کہ ماں نے ہاتھ کے اشارے سے روک کر کہا— "بیٹے تم نے میری بات کا جواب نہ دیا! بدلہ لینا اچھا ہے یا معاف کرنا؟"

میر صاحب نے غصہ پینے کے لئے سر جھکا لیا پھر بولے— "جی، معاف کرنا۔"

وہ مسکرا کر محبت سے بولیں— "بیٹا دھنپت کی خطا معاف کر دو!"

میر صاحب نے کہا— "اماں جان آپ اس معاملے میں دخل نہ دیجئے، یہ ناممکن ہے۔ آخر میرے مختار کی جان مفت

की तो नहीं थी. उसके भी तो बाल बच्चे है, भला मै उनको क्या मुँह दिखाऊँगा."

ठकुराइन आजिजी से बोली—'मियाँ आज पच्चीस बरस से हमारा तुम्हारा खानदान एक दूसरे को जानता है. भला किसी के यहाँ तुमने यह भी सुना कि मै कोई गरज लेकर गई हूँ. आज ऐसी ही विपता पड़ी है जो दौड़ी आई कुछ मेरे आने की लाज रक्खो. मै तुमसे विनती करती हूँ. यह सन्दूक गहनों से भरा है. जो कुछ मेरे और धनपत की दुल्हन के पास था वह सब इसी मे है. इसे मुख्तार के घर वालों को दे दो और धनपत की जान बचा दो।"

मीर साहब ने गुस्से मे कहा—'जान का बदला गहने नहीं हो सकते.'

ठकुराइन ने फिर गिड़गिडा कर कहा—'मै तो आज भिखारिन बनकर आई हूँ मै बदला देने नहीं आई मै मां हूँ, अगर तुम धनपत की जगह मेरी जान लेना चाहो तो मुझे खुशी से मंजूर. बस मेरा धनपत बच जाय इतना ही चाहती हूँ. सैयद दयालू होते हैं, क्या तुम मेरी सी भिखारिन को यूंही खाली हाथ लौटा दोगे ?"

मीर साहब ने गर्दन झुका ली बड़ी बी ने हाथ बढ़ाकर करीब खींच लिया और बोली— बेटे, सोच काहे का है ? मै ठकुराइन को बहन पुकार चुकी फिर भी तुम सोच विचार मे पड़े हो. जब धनपत इसी तरह अपनी मा की छाती से लग के बैठेगा तब मेरा कलेजा ठंडा होगा "

मीर साहब की झुकी हुई गर्दन और झुक गई. गुस्सा और बदला लेने के जोश को दबाने की कोशिश ने आँखो मे मिर्चें सी

تو نہیں تھی۔ اُس کے بھی تو بال بچے ہیں، بھلا میں اُن کو کیا مُنہ دکھاؤں گا۔"

ٹھکرائن عاجزی سے بولیں — "میاں آج پچیس برس سے ہمارا تمھارا خاندان ایک دوسرے کو جانتا ہے۔ بھلا کسی کے یہاں تم نے یہ بھی سُنا کہ میں کوئی غرض سے کر گئی ہوں۔ آج ایسی ہی بپتا پڑی ہے جو دوڑی آئی۔ کچھ میرے آنے کی لاج رکھو۔ میں تم سے بنتی کرتی ہوں۔ یہ صندوق گہنوں سے بھرا ہے، جو کچھ میرے اور دھنپت کی دلہن کے پاس تھا وہ سب اسی میں ہے۔ اِسے مختار کے گھر والوں کو دیدو اور دھنپت کی جان بچا دو!"

میر صاحب نے غصے میں کہا — "جان کا بدلہ گہنے نہیں ہو سکتے۔"

ٹھکرائن نے پھر گڑگڑا کر کہا — "میں تو آج بھکارن بن کر آئی ہوں، میں بدلہ دینے نہیں آئی۔ میں ماں ہوں، اگر تم دھنپت کی جگہ میری جان لینا چاہو تو مجھے خوشی سے منظور۔ بس میرا دھنپت بچ جائے اِتنا ہی چاہتی ہوں۔ سیّد دیالو ہوتے ہیں۔ کیا تم میری سی بھکارن کو یونہی خالی ہاتھ لوٹا دوگے؟"

میر صاحب نے گردن جھکالی۔ بڑی بی نے ہاتھ بڑھا کر قریب کھینچ لیا اور بولیں — "بیٹے، سوچ کاہے کا ہے؟ میں ٹھکرائن کو بہن پکار چکی پھر بھی تم سوچ وچار میں پڑے ہو۔ جب دھنپت اسی طرح اپنی ماں کی چھاتی سے لگ کر بیٹھے گا تب میرا کلیجہ ٹھنڈا ہوگا۔"

میر صاحب کی جھکی ہوئی گردن اور جھک گئی۔ غصہ اور بدلہ لینے کے جوش کو دبانے کی کوشش نے آنکھوں میں مرچیں سی

लगा दी थीं. शिकारी जानवर शिकार को गिरफ्तार कर के फिर नहीं छोड़ते. अगर कोई छीनने की कोशिश कर बैठता है तो उसी पर हमला कर देते हैं. इन्सान भी दुश्मन को क़ब्जे मे पाकर हैवान बन जाता है. मीर साहब के यहॉ भी अगर एक तरफ एख़लाक़ (शिष्टाचार), मुरौअत, इन्सानियत और मां के हुक्म के पालन का ख़याल था तो दूसरी तरफ वही हैवानियत. मुकाबला सख्त था. देर तक रोशनी और अंधेरे के देवताओ में लड़ाई हुई, फिर बिजली की सी लहर चेहरे पर दौड़ने लगी. ठकुराइन घूँघट से सब कुछ देख रही थीं. आशा भरे लहजे मे बोलीं—"सैयद अब भिखारिन को दान दे डालो."

मीर साहब ने सिर उठाया और कांपते हाथ जोड़ कर कहा—"ख़ाला ! जो तुम चाहती हो वही होगा !"

(४)

तीन दिन के बाद ठाकुर धनपत सिह बेदाग़ छूट कर घर पलटे. उन्हे बड़ा अचम्भा था कि मीर साहब सबूत की जगह सफ़ाई के गवाह कैसे बन गये. ख़ुश लेकिन ताज्जुब मे भरे घर पहुँचे. मां आंगन मे खड़ी दिखाई दीं. चरन छूने के लिये झुके तो उन्होंने उनका सिर ममता भरी छाती से लगा लिया और थोड़ी देर चुप खड़ी रोती रहीं. फिर सिर उठा कर आँखें मिलाकर बोलीं—"अभी सीधे मीर क़दीर के यहॉ जाओ और उनसे माफी मॉगो. वह बड़े दयालू हैं. उन्हीं ने तुम्हारी जान मुझे दान दी है."

धनपत सिह का चेहरा गुस्से से लाल हो गया, लेकिन मां का

لگا دی تھیں۔ شکاری جانور شکار کو گرفتار کر کے پھر نہیں چھوڑتے اگر کوئی چھیننے کی کوشش کر بیٹھتا ہے تو اُسی پر حملہ کر دیتے ہیں۔ انسان بھی دشمن کو قبضہ میں پاکر حیوان بن جاتا ہے۔ میر صاحب کے یہاں بھی اگر ایک طرف اخلاق (شِشٹاچار)، مُروّت، انسانیت اور ماں کے حکم کے پالن کا خیال تھا تو دوسری طرف وہی حیوانیت۔ مقابلہ سخت تھا۔ دیر تک روشنی اور اندھیرے کے دیوتاؤں میں لڑائی ہوئی، پھر بجلی کی سی لہر چہرے پر دوڑنے لگی۔ ٹھکرائن گھونگھٹ سے سب کچھ دیکھ رہی تھیں۔ آشا بھرے لہجے میں بولیں — "سید اب بھکارن کو دان دے ڈالو۔"

میر صاحب نے سر اُٹھایا اور کانپتے ہاتھ جوڑ کر کہا — "خالہ! جو تم چاہتی ہو وہی ہوگا!"

(۴)

تین دن کے بعد ٹھاکر دھنپت سنگھ بے داغ چھوٹ کر گھر پلٹے۔ اُنھیں بڑا اچنبھا تھا کہ میر صاحب ثبوت کی جگہ معافی کے گواہ کیسے بن گئے۔ خوش لیکن تعجب میں بھرے گھر پہنچے۔ ماں آنگن میں کھڑی دکھائی دیں۔ چرن چھونے کے لئے جھکے تو اُنھوں نے اُن کا سر ممتا بھری چھاتی سے لگا لیا اور تھوڑی دیر چپ کھڑی روتی رہیں۔ پھر سر اُٹھا کر آنکھیں ملا کر بولیں — ابھی سیدھے میر قدیر کے یہاں جاؤ اور اُن سے معافی مانگو۔ وہ بڑے دیالو ہیں۔ اُنھیں نے تمھاری جان مجھے دان دی ہے۔"

دھنپت سنگھ کا چہرہ غصّہ سے لال ہو گیا۔ لیکن ماں کا

रोब उसे ज़ाहिर करने से रोके रहा. धीरे से पूछा—"क्या मामला है ? मैं नही समझा ."

एक मुँह लगी कहारिन. जो पास ही खड़ी थी, जल्दी से बोल उठी—"बाबू ठकुराइन मीर साहब के घर गई रहीं. उनकी माता से सिफारिस करके तुमका छुड़ाइन हैं !"

अभिमानी राजपूत मां की तरफ पलट पड़ा—"आप उनके घर गई थी ?"

ठकुराइन ने कहा—"हाँ !"

वह क्रोध से बल खाकर बोला—"आपको पिता जी की इज़्ज़त का ख़याल न रहा ?"

मां ने प्रेम भरे लहजे में जवाब दिया—"मुझे बेटे की जान का ज्यादा ख़याल था."

ठाकुर होठ चबाता उल्टे पांव बाहर चला गया. अभिमानी राजपूत के लिये मुक़दमे की बदनामी ही क्या कम थी, माँ के दुश्मन के घर जाने की ख़बर ने उसे पागल बना दिया. अरब घोड़े की तरह न उसे ऊँचा दिखाई देता था न नीचा और न अब बालू और पानी मे फ़र्क़ देखने की समझ रह गई थी. ग़ुस्सा था, शर्म थी. अपने अभिमान पर चोट पहुँचने का सदमा था !

उसने उसी समय मुख़तार को भेज कर स्टाम्प मंगवाया और बाक़ी जायदाद का हब्बा नामा तैयार करके घोड़े पर बैठा और काग़ज़ समेत मीर साहब की कोठी पर पहुँचा.

मीर साहब देहाती रईसों की तरह तख़्त पर बैठे थे. आस पास गाँव के दूसरे लोगों का मजमा था. हुक़्क़े का दौर था, गप

رُعب اُسے ظاہر کرنے سے روکے رہا۔ دھیرے سے پوچھا "کیا معاملہ ہے؟ میں نہیں سمجھا۔"

ایک مُنہ لگی کہارن، جو پاس ہی کھڑی تھی، جلدی سے بول اُٹھی— "بابو ٹھکرائن میر صاحب کے گھر گئی رہیں۔ اُن کی ماتا سے سپھارس کرکے تم کا چھڑائن ہیں!"

ابھمانی راجپوت ماں کی طرف پلٹ پڑا— "آپ اُنکے گھر گئی تھیں؟"

ٹھکرائن نے کہا— "ہاں!"

وہ کرودھ سے بَل کھا کر بولا— "آپ کو پتا جی کی عزت کا خیال نہ رہا؟"

ماں نے پریم بھرے لہجے میں جواب دیا— "مجھے بیٹے کی جان کا زیادہ خیال تھا۔"

ٹھاکر ہونٹ چباتا اُلٹے پاؤں باہر چلا گیا۔ ابھمانی راجپوت کے لیے مقدمے کی بدنامی ہی کیا کم تھی، ماں کو دشمن کے گھر جانے کی خبر نے اُسے پاگل بنا دیا۔ عرب گھوڑے کی طرح نہ اُسے اونچا دکھائی دیتا تھا نہ نیچا اور نہ اب بالو اور پانی میں فرق دیکھنے کی سمجھ رہ گئی تھی۔ غصہ تھا، شرم تھی، اپنے ابھمان پر چوٹ پہنچنے کا صدمہ تھا!

اُس نے اُسی سمے مختار کو بھیج کر اسٹامپ منگوایا اور باقی جائداد کا ہبّہ نامہ تیار کرکے گھوڑے پر بیٹھا اور کاغذ سمیت میر صاحب کی کوٹھی پر پہنچا۔

میر صاحب دیہاتی رئیسوں کی طرح تخت پر بیٹھے تھے۔ آس پاس گاؤں کے دوسرے لوگوں کا مجمع تھا۔ حُقّے کا دور تھا، گپ

लड़ रही थी कि धनपतसिंह घोड़े पर सवार उनके पास पहुँचे और घोड़े पर बैठे ही बैठे कागज़ उनके सामने फेंक कर बोले—"यह लीजिये ! यह आपके नाम मेरी बची खुची जायदाद का हिब्बानामा है. आप समझते थे कि मैं एहसान करके राजपूत की गर्दन नीची कर दूँगा. जब बराबरी ही न रहेगी तो मुकाबला क्या खाक करेगा, पर धनपत इतना गिरा नहीं कि वह आपका एहसान मुफ्त ले. वह जिस तरह लाठी का बदला लाठी से लेता है उसी तरह एहसान के बदले में एहसान भी कर सकता है. आपने अगर मेरी जान बचाई तो मैंने भी आपको अपनी सारी जायदाद दे दी !"

मीर साहब उसके इस तरह एकाएक आने से घबरा गये थे. चुपके मुँह ही देखते रहे. लेकिन एक साथ के बैठने वाले बोले—"ठाकुर कुछ दीवाने हो गये हो ?"

वह बोला—"ठाकुर दीवाना हो या पागल. वह ठाकुर है ! वह किसी का एहसान नहीं ले सकता !" यह कहा और घोड़े को एड़ लगा कर निकल गया.

बस हलके फुलके बादल की तरह एक छन ठहरा. दो छींटे दिये और फिर हवा के साथ था !

(५)

मीर साहब वह कागज़ लिये मां के पास पहुँचे, उनसे सारा किस्सा बयान किया और पूछा—'अब क्या हुक्म होता है ?"

वह थोड़ी देर सोच कर बोली—"पीनस मँगाओ, मैं खुद चलूँगी और तुम भी साथ चलो शरीफ़ बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, तुम्हें उससे सफ़ाई करनी होगी !"

لڑ رہی تھی کہ دھنپت سنگھ گھوڑے پر سوار اُن کے پاس پہنچے اور گھوڑے پر بیٹھے ہی بیٹھے کاغذ اُن کے سامنے پھینک کر بولے — "یہ لیجئے! یہ آپ کے نام میری بچی کھچی جائداد کا ہبہ نامہ ہے. آپ سمجھتے تھے کہ میں احسان کرکے راجپوت کی گردن نیچی کر دوں گا. جب برابری ہی نہ رہے گی تو مقابلہ کیا خاک کرے گا، پر دھنپت اتنا گرا نہیں کہ وہ آپ کا احسان مُفت لے. وہ جس طرح لاٹھی کا بدلہ لاٹھی سے لیتا ہے اُسی طرح احسان کے بدلے میں احسان بھی کر سکتا ہے. آپنے اگر میری جان بچائی تو میں نے بھی آپ کو اپنی ساری جائداد دیدی!"

میر صاحب اُس کے اِس طرح یکایک آنے سے گھبرا گئے تھے. چپکے مُنہ ہی دیکھتے رہے. لیکن ایک ساتھ کے بیٹھنے والے بولے — "ٹھاکر کچھ دیوانے ہو گئے ہو؟"

وہ بولا — "ٹھاکر دیوانہ ہو یا پاگل، وہ ٹھاکر ہے! وہ کسی کا احسان نہیں لے سکتا!" یہ کہا اور گھوڑے کو ایڑ لگا کر نکل گیا.

بس ہلکے پھلکے بادل کی طرح ایک چھن ٹھہرا، دو چھینٹے دیئے اور پھر ہوا کے ساتھ تھا!

(۵)

میر صاحب وہ کاغذ لئے ماں کے پاس پہنچے، اُن سے سارا قصہ بیان کیا اور پوچھا — "اب کیا حکم ہوتا ہے؟"

وہ تھوڑی دیر سوچ کر بولیں — "پینس منگاؤ، میں خود چلونگی اور تم بھی ساتھ چلو. شریف بڑی مشکل سے ملتے ہیں، تمھیں اُس سے صفائی کرنی ہوگی!"

पीनस मे बूढ़ी माँ और साथ मे घोड़े पर मीर साहब, दोनो एक घंटे बाद धनपत सिंह के यहाँ पहुँचे. वह गुस्से मे भरे हुए अब तक बाहर ही टहल रहे थे. मीर साहब को देख कर मुँह फेर लिया उन्हों ने करीब जाकर नर्मी से कहा—"मेरी मा आई है" यह सुनते ही धनपतसिंह के बदन मे कॅपकपी सी पड़ गई. उन्हो ने मीर साहब को अजीब बेबसी से देखा और वहीं पलग पर सर नीचा कर के बैठ गये.

उधर ड्योढ़ी मे जब पीनस लगी तो ठकुराइन ने बड़ी बी का बड़े तपाक से स्वागत करके उनसे आने का कारन पूछा. वह बोली—'धनपत और कदर को ड्योढ़ी पर बुलाओ' दोनो बुलाये गये और किवाड़ से लगकर खड़े हो गये.

मीर साहब की माँ ने दरवाज़े से हाथ निकाल कर कागज धनपत सिंह की तरफ बढ़ाया और बोली—'धनपत! तुम्हारी माँ कदिर के पास भिखारिन बन कर गई थी, आज मैं तुम्हारे पास आई हूँ'

राजपूत की आँखो से गर्म गर्म आँसू टप टप जमीन पर गिरने लगे. हाथ जोड़ कर बोला— माता! आप चाहती क्या है?'

वह बोली—'दिलो की सफाई.'

उसने कहा—"परमेश्वर जानता है. अब मेरे दिल मे कोई खोट नही."

उन्होने हब्बानामा को हरकत देकर कहा—"तो फिर इसे ले लो. तुम्हे तुम्हारी जायदाद मुबारक हो. इतने बचे खुचे हिस्से से फिर फलो फूलो."

پینس میں بوڑھی ماں اور ساتھ میں گھوڑے پر میر صاحب، دونوں ایک گھنٹے بعد دھنپت سنگھ کے یہاں پہنچے۔ وہ غصے میں بھرے ہوئے اب تک باہر ہی ٹہل رہے تھے۔ میر صاحب کو دیکھ کر منہ پھیر لیا۔ انھوں نے قریب جا کر نرمی سے کہا "میری ماں آئی ہیں۔" یہ سنتے ہی دھنپت سنگھ کے بدن میں کپکپی سی پڑ گئی۔ انھوں نے میر صاحب کو عجیب بے بسی سے دیکھا اور وہیں پلنگ پر سر نیچا کر کے بیٹھ گئے۔

اُدھر ڈیوڑھی میں جب پینس لگی تو ٹھکرائن نے بڑی بی کا بڑے تپاک سے سواگت کر کے اُن سے آنے کا کارن پوچھا۔ وہ بولیں "دھنپت اور قدیر کو ڈیوڑھی پر بلاؤ۔" دونوں بلائے گئے اور کواڑ سے لگ کر کھڑے ہو گئے۔

میر صاحب کی ماں نے دروازے سے ہاتھ نکال کر کاغذ دھنپت سنگھ کی طرف بڑھایا اور بولیں "دھنپت! تمھاری ماں قدیر کے پاس بھکارن بن کر گئی تھیں، آج میں تمھارے پاس آئی ہوں۔"

راجپوت کی آنکھوں سے گرم گرم آنسو ٹپ ٹپ زمین پر گرنے لگے۔ ہاتھ جوڑ کر بولا "ماتا! آپ چاہتی کیا ہیں؟"

وہ بولیں "دلوں کی صفائی۔"

اس نے کہا "پرمیشور جانتا ہے۔ اب میرے دل میں کوئی کھوٹ نہیں۔"

انھوں نے حبہ نامہ کو حرکت دے کر کہا "تم پھر اسے لے لو۔ تمھیں تمھاری جائداد مبارک ہو۔ اتنے بچے کھچے حصے سے پھر پھلو پھولو۔"

उसने अभिमान से सर उठा कर कहा—"माता राजपूत किसी को चीज़ देकर वापस नहीं लेता."

बड़ी बी ने मोहब्बत से जवाब दिया—"हाँ सच है, तुमने अपने भाई को दिया था, अब मेरे हाथ से पाते हो. देखो' तुमने मुझे माता कहा है. मेरा हुक्म मानो !"

ठकुराइन ने बढ़ कर कहा—"बेटा, अब इन्कार करने का समय नहीं है, कागज़ ले लो. क़दीर मियाँ से मिल जाओ, अरे 'बड़ा मज़ा उस मिलाप मे है जो सुलह हो जाय जंग होकर !"

ठाकुर ने काँपते हाथों से कागज़ लिये, फिर झुक कर मीर साहब की मां के पाँव की धूल सर से लगा ली.

—:o:—

اُس نے ابھمان سے سر اٹھا کر کہا ـــ "راجپوت کسی کو چیز دیکر واپس نہیں لیتا۔"

بڑی بی نے محبت سے جواب دیا ـــ "ہاں سچ ہے، تم نے اپنے بھائی کو دیا تھا، اب میرے ہاتھ سے پاتے ہو۔ دیکھو! تم نے مجھے ماتا کہا ہے۔ میرا حکم مانو!"

ٹھکرائن نے بڑھ کر کہا ـــ "بیٹا، اب انکار کرنے کا سمے نہیں ہے، کاغذ لے لو۔ قدیر میاں سے مل جاؤ، ارے 'بڑا مزہ اُس ملاپ میں ہے جو صلح ہو جائے جنگ ہو کر!"

ٹھاکر نے کانپتے ہاتھوں سے کاغذ لئے، پھر جھک کر میر صاحب کی ماں کے پاؤں کی دھول سر سے لگا لی۔

—:o:—

गांधी जी और एक चीनी युवक

(भाई जी० रामचन्द्रन्)

सन १९२५ की बात है. एक चीनी विद्यार्थी भारत आया. उसने गांधी और रवीन्द्र का नाम सुना था. वह खुद भी एक होनहार लेखक और कवि था शान्तिनिकेतन मे गुरुदेव की विश्वभारती मे वह दाखिल हो गया और जल्द ही वह सब मे घुल मिल गया. उसी समय. जब सारी बाते सफलता के साथ चलती जा रही थीं, उसे एक मुसीबत का शिकार होना पड़ा उस पर जासूस होने का शक किया गया. नतीजा यह हुआ कि उसके ऊपर निगरानी की जाने लगी. इससे वह इतना घबरा गया कि उसने तय कर लिया कि वह विश्वभारती छोड़ देगा. पर एक अजनबी देश मे वह कहाँ जाता, किसके पास जाता ?

उसने गांधी जी को एक खत लिखा जिसमे अपना सारा दुख दर्द और सारी घटनाएँ साफ़ साफ़ लिख दीं. गांधी जी उन दिनो कलकत्ते मे थे और श्री चितरंजनदास के यादगार फंड के लिये चन्दा जमा कर रहे थे चीनी युवक को ठीक वक़्त पर महादेव भाई का लिखा जवाब मिला. उसमे लिखा था कि वह कलकत्ते आकर गांधी जी से मिले. और वह जल्द ही कलकत्ते पहुँच कर गांधी जी के पास हाजिर हुआ.

बापू ने उसकी आँखो मे देखते हुए हमदर्दी भरे लहजे मे कहा—"शान्तिनिकेतन के लोग मेरे अच्छे दोस्त हैं. वह हमेशा

گاندھی جی اور ایک چینی یووک

(بھائی جی۔ رامچندرن)

سنہ ۱۹۲۵ء کی بات ہے۔ ایک چینی ودیارتھی بھارت آیا۔ اُس نے گاندھی اور روبندر کا نام سنا تھا۔ وہ خود بھی ایک ہونہار لیکھک اور کوی تھا۔ شانتی نکیتن میں گرو دیو کی وشو بھارتی میں وہ داخل ہوگیا اور جلد ہی وہ سب میں گھل مل گیا۔ اسی سمے، جب ساری باتیں سپھلتا کے ساتھ چلتی جا رہی تھیں، اُسے ایک مصیبت کا شکار ہونا پڑا اُس پر جاسوس ہونے کا شک کیا گیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اُس کے اوپر نگرانی کی جانے لگی۔ اس سے وہ اتنا گھبرا گیا کہ اُس نے طے کر لیا کہ وہ وشو بھارتی چھوڑ دے گا۔ پر ایک اجنبی دیش میں وہ کہاں جاتا، کس کے پاس جاتا؟

اُس نے گاندھی جی کو ایک خط لکھا جس میں اپنا سارا دکھ درد اور ساری گھٹنائیں صاف صاف لکھ دیں۔ گاندھی جی ان دنوں کلکتہ میں تھے اور شری چترنجن داس کے یادگار فنڈ کے لئے چندہ جمع کر رہے تھے۔ چینی یووک کو ٹھیک وقت پر مہادیو بھائی کا لکھا جواب ملا۔ اس میں لکھا تھا کہ وہ کلکتہ آکر گاندھی جی سے ملے۔ اور وہ جلد ہی کلکتہ پہنچ کر گاندھی جی کے پاس حاضر ہوا۔

باپو نے اُس کی آنکھوں میں دیکھتے ہوئے ہمدردی بھرے لہجے میں کہا۔ "شانتی نکیتن کے لوگ میرے اچھے دوست ہیں۔ وہ ہمیشہ

दूसरे देशों के लोगों का स्वागत करते हैं. उन्होंने तुम पर संदेह क्यों किया ? क्या तुम भेदिये हो ?"

चीनी युवक ने प्रभाव डालने वाले निश्चय भरे लहजे में जवाब दिया—"वह अच्छे लोग हैं, मै शान्तिनिकेतन मे रहना भी चाहता हूँ. उन्हें जरूर कोई ग़लतफ़हमी हो गई है मेरे बारे मे. पर उनके सन्देहो से मेरे दिल को बड़ा सदमा पहुँचा है. मैं जासूस या मुख़बिर कुछ भी नहीं हूँ, मैं सिर्फ़ एक विद्यार्थी हूँ और भारत का अध्ययन (मुताला) करने का शौक़ मेरे दिल मे है."

"मै तुम्हारे कहने को सच मानता हूँ." बापू ने कहा—"क्या मैं तुम्हारा जिम्मेदारी लेकर तुम्हे शान्तिनिकेतन वापस भेज दूँ ? तुम्हारी निजी सच्चाई के बारे मे मेरे आश्वासन का वह पूरा सम्मान करेगे ?"

बापू ने उस युवक के अन्दर पैठ कर उसे समझ लिया था और उन्हें उससे कुछ स्नेह भी हो गया.

युवक का भी जी भर आया और उसकी आँखो मे आँसू झलकने लगे.

"मेहरबानी करके मुझे अपने ही साथ रहने दीजिये." उसने बिनती की. "और मुझे अपने आश्रम में दाख़िल कर लीजिये, ताकि मैं आपके क़रीब रह सकूँ."

बापू ने मुस्कराते हुए कहा—"लेकिन मेरा आश्रम शान्तिनिकेतन से ज्यादा कठिन जगह है. अपनी पढ़ाई के अलावा तुम्हे यहाँ काफी शारीरिक मेहनत भी करना होगी."

उसने जवाब दिया—"चीनी मेहनत के काम करने के आदी

دوسرے دیشوں کے لوگوں کا سواگت کرتے ہیں۔ انھوں نے تم پہ سندیہہ کیوں کیا؟ کیا تم بھیدئے ہو؟"

چینی یووک نے پربھاؤ ڈالنے والے نشچے بھرے لہجے میں جواب دیا " وہ اچھے لوگ ہیں، میں شانتی نکیتن میں رہنا بھی چاہتا ہوں۔ انھیں ضرور کوئی غلط فہمی ہوگئی ہے میرے بارے میں۔ پر ان کے سندیہوں سے میرے دل کو بڑا صدمہ پہونچا ہے۔ میں جاسوس یا مخبر کچھ بھی نہیں ہوں، میں صرف ایک ودیارتھی ہوں اور بھارت کا ادھین (مطالعہ) کرنے کا شوق میرے دل میں ہے۔"

"میں تمہارے کہنے کو سچ مانتا ہوں" باپو نے کہا۔ "کیا میں تمہاری ذمہ داری لے کر تمہیں شانتی نکیتن واپس بھیج دوں؟ تمہاری نجی سچائی کے بارے میں میرے آشواسن کا وہ پورا سمان کریں گے؟"

باپو نے اس یووک کے اندر پیٹھ کر اسے سمجھ لیا تھا اور انہیں اس سے کچھ اسنیہہ بھی ہوگیا۔

یووک کا بھی جی بھر آیا اور اس کی آنکھوں میں آنسو جھلکنے لگے۔

"مہربانی کرکے مجھے اپنے ساتھ ہی رہنے دیجئے۔" اس نے بنتی کی۔ "اور مجھے اپنے آشرم میں داخل کر لیجئے تاکہ میں آپ کے قریب رہ سکوں۔"

باپو نے مسکراتے ہوئے کہا۔ "لیکن میرا آشرم شانتی نکیتن سے زیادہ کٹھن جگہ ہے۔ اپنی پڑھائی کے علاوہ تمہیں یہاں کافی شاریرک محنت بھی کرنا ہوگی۔"

اس نے جواب دیا۔ "چینی محنت کے کام کرنے کے عادی

होते हैं और मुझे इसका ज़रा भी डर नहीं है."

गांधी जी ने मंज़ूरी देदी और चूँकि वह उसको चीनी नाम से सही तरह पुकार न पाते थे, इसलिये उन्होंने उसे दो हिन्दुस्तानी नाम बताकर पूछा कि वह उनमें से किस नाम से पुकारा जाना पसन्द करेगा.

युवक ने शान्ति नाम पसन्द किया और वह जब तक भारत में रहा, उसका यही नाम चलता रहा. शान्ति साबरमती आश्रम में दाख़िल हो गया. यहाँ भी वह बहुत जल्द ही सब में हिलमिल गया. उसका हृदय बिलकुल बालकों जैसा था और सुभाव का भी विनोदी था. बच्चे उसको बहुत चाहने लगे थे, क्योंकि वह उनके लिये छोटी छोटी चीज़ों से भी अनगिनत खिलौने बना दिया करता था.

उसे कपड़ा धोने और रसोई-घर के लिये पानी लाने का काम सौंपा गया था. चरख़ा चलाना तो उसने बहुत ही जल्द सीख लिया. जैसे जैसे महीने बीतते गये, उसमें एक अजीब परिवर्तन सा होने लगा. उसने दिन पर दिन अधिक परिश्रम करना शुरू कर दिया. ऐसा कोई काम न था जो वह न करता. यहाँ तक कि उसने पेशाब पाख़ाना साफ़ करने वाले दल के साथ भी काम किया.

गांधी जी की रचनाओं को वह बड़ी सावधानी से पढ़ता. और फिर एक दिन वह लिखने बैठा. सफ़े पर सफ़े लिखता चला गया और उसके सामने लिखे हुए काग़ज़ों का ढेर तेज़ी से बढ़ चला. वह क्या लिख रहा था? दिन और रात मेहनत करके वह काग़ज़ पर क्या गढ़ रहा था? आख़िर एक दिन उसका लिखना ख़तम

ہوتے ہیں اور مجھے اس کا ذرا بھی ڈر نہیں ہے۔"

گاندھی جی نے منظوری دیدی اور چونکہ وہ اس کو چینی نام سے صحیح طرح پکار نہ پاتے تھے، اس لئے انھوں نے اُسے دو ہندستانی نام بتا کر پوچھا کہ وہ اُن میں سے کس نام سے پکارا جانا پسند کرے گا۔

یووک نے شانتی نام پسند کیا اور وہ جب تک بھارت میں رہا، اس کا یہی نام چلتا رہا۔ شانتی سابرمتی آشرم میں داخل ہوگیا۔ یہاں بھی وہ بہت جلد ہی سب میں ہل مل گیا۔ اُس کا ہردے بالکل بالکوں جیسا تھا اور سبھاؤ کا بھی ونودی تھا۔ بچے اُس کو بہت چاہنے لگے تھے، کیونکہ وہ ان کے لئے چھوٹی چھوٹی چیزوں سے بھی ان گنت کھلونے بنا دیا کرتا تھا۔

اُسے کپڑا دھونے اور رسوئی گھر کے لئے پانی لانے کا کام سونپا گیا تھا۔ چرخہ چلانا تو اس نے بہت ہی جلد سیکھ لیا۔ جیسے جیسے مہینے بیتتے گئے، اس میں ایک عجیب پریورتن سا ہونے لگا۔ اُس نے دن پر دن ادھک پرشرم کرنا شروع کردیا۔ ایسا کوئی کام نہ تھا جو وہ نہ کرے۔ یہاں تک کہ اُس نے پیشاب پاخانہ صاف کرنے والے دل کے ساتھ بھی کام کیا۔

گاندھی جی کی رچناؤں کو وہ بڑی ساودھانی سے پڑھتا، اور پھر ایک دن وہ لکھنے بیٹھا۔ صفحے پر صفحے لکھتا چلا گیا اور اس کے سامنے لکھے ہوئے کاغذوں کا ڈھیر تیزی سے بڑھ چلا۔ وہ کیا لکھ رہا تھا؟ دن اور رات محنت کرکے وہ کاغذ پر کیا گڑھ رہا تھا؟ آخر ایک دن اس کا لکھنا ختم

हुआ. उसने सफाई से काग़ज़ों को सलीक़े से जमाया और नत्थी कर के सीधा बापू के कमरे में जा पहुँचा.

युवक ने गांधी जी से कहा—"यह है थोड़े में मेरे जीवन की कहानी. हिन्दुस्तान आने के पहले मैं सिंगापुर में दूसरे सैकड़ों चीनियों की तरह गन्दा जीवन बिताया करता था.

"मुझे बड़ी तेज़ी से यह ख़याल आया कि मैं अपनी सारी बातें आपके सामने खोल कर रख दूं. कृपा कर इसे पढ़ लीजिये और मुझे हुक्म दीजिये कि मैं दस दिन का उपवास करूँ—अपने को शुद्ध करने के लिये. उपवास के ख़ातमे पर मैं आपको गवाह बना कर कुछ प्रतिज्ञाएँ करना चाहता हूँ."

गांधी जी को बड़ा अचरज हुआ. वह समझ गये कि शान्ति एक आध्यात्मिक या रूहानी कशमकश में से गुज़र रहा है. वह बोले—"मैं समय निकाल कर तुम्हारी रचना ज़रूर पढ़ूँगा. लेकिन तुम उपवास उस समय तक मत शुरू करो जब तक कि मैं इसे पढ़ न लूँ. उपवास एक बड़ा पवित्र काम है और उसे करने वाले का उसके लायक होना बहुत ज़रूरी है. पहले मुझे यह जान लेने दो कि तुम चाहते क्या हो और तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है ?"

गांधी जी ने वक़्त निकाल कर सब पढ़ा. वह उस युवक की साफ और निष्कपट आत्मस्वीकृति (एतराफ़) से प्रभावित हुए. आश्रम की ज़िन्दगी के असर ने उस युवक को अपने को जाँचने, पश्चात्ताप और अपने को सुधारने के लिये थोड़े ही समय में मजबूर कर दिया था.

बापू ने शान्ति को बुलवाया और बड़ी हमदर्दी के साथ उससे

ہوا۔ اس نے صفائی سے کاغذوں کو سلیقہ سے جمایا اور نتھی کرکے سیدھا باپو کے کمرے میں جا پہونچا۔

یووک نے گاندھی جی سے کہا "یہ ہے تھوڑے میں میرے جیون کی کہانی۔ ہندستان آنے کے پہلے میں سنگاپور میں دوسرے سیکڑوں چینیوں کی طرح گندہ جیون بتایا کرتا تھا۔

"مجھے بڑی تیزی سے یہ خیال آیا کہ میں اپنی ساری باتیں آپ کے سامنے کھول کر رکھ دوں۔ کرپا کر اسے پڑھ لیجئے اور مجھے حکم دیجئے کہ میں دس دن کا اپواس کروں — اپنے کو شدھ کرنے کے لئے اپواس کے خاتمے پر میں آپ کو گواہ بناکر کچھ پرتگیائیں کرنا چاہتا ہوں۔"

گاندھی جی کو بڑا اچرج ہوا۔ وہ سمجھ گئے کہ شانتی ایک آدھیاتمک یا روحانی کشمکش میں سے گزر رہا ہے۔ وہ بولے "میں سمے نکال کر تمہاری رچنا ضرور پڑھوں گا۔ لیکن تم اپواس اس سمے تک مت شروع کرو جب تک کہ میں اسے پڑھ نہ لوں۔ اپواس ایک بڑا پوتر کام ہے اور اسے کرنے والے کا اس کے لائق ہونا بہت ضروری ہے۔ پہلے مجھے یہ جان لینے دو کہ تم چاہتے کیا ہو اور تمہیں کس چیز کی ضرورت ہے؟"

گاندھی جی نے وقت نکال کر سب پڑھا۔ وہ اس یووک کی صاف اور نشکپٹ آتم سویکرتی (اعتراف) سے پربھاوت ہوئے۔ آشرم کی زندگی کے اثر نے اس یووک کو اپنے کو جانچنے، پشچاتاپ اور اپنے کو سدھارنے کے لئے تھوڑے ہی سمے میں مجبور کردیا تھا۔

باپو نے شانتی کو بلوایا اور بڑی ہمدردی کے ساتھ اس سے

बातें कीं. उन्होने उसे उपवास करने की इजाज़त दे दी. युवक ने दस दिन सिर्फ पानी के सहारे बिताये. उपवास चीन के रहने वालो के लिये एक बहुत कठिन इम्तहान है, क्योंकि चीनी लोग सुभाव से ही बड़े भोजन प्रेमी होते हैं. पर शान्ति ने हिम्मत के साथ अपने उपवास को निभाया. गांधी जी रोज़ाना उसके क़रीब बैठ कर पन्द्रह बीस मिनट उससे बातें करने में लगाते. वह बातें किस विषय की होतीं या क्यो होतीं, यह तो कोई नहीं जानता पर शान्ति काफी ख़ुश होता. बापू ने शायद उसे प्रतिज्ञा की पवित्रता और अच्छे चरित्र की अहमियत समझाई होगी. गांधी जी का विश्वास था कि कोई संकल्प या प्रतिज्ञा उस समय तक मुनासिब नहीं, जब तक अन्दर से अपने आप उसकी प्रेरणा (तहरीक) न हो. पछतावे की तीव्र अनुभूति (शदीद एहसास) से प्रभावित होकर ही इन्सान को पवित्र प्रतिज्ञाएँ करनी चाहियें. वक़्ती जोश में आकर की जाने वाली प्रतिज्ञाएँ बेकार होती हैं.

उपवास के दस दिन बीत जाने पर शान्ति ने कुछ प्रतिज्ञाएँ कीं, पर प्रतिज्ञा करते समय वह ख़ूब होशियार था. उसकी आँखों के सामने कोई परदा न था. प्रतिज्ञाएँ काग़ज़ पर दोहरी लिखी गईं. दोनों मसविदों पर शान्ति ने दस्तख़त किये और गांधी जी ने गवाही लिखी. एक कापी बापू के पास रह गई और दूसरी शान्ति अपने साथ ले गया. बाद में शान्ति कहा करता था कि उसे ऐसा महसूस होता है जैसे उसके कंधों से बड़ा भारी बोझ उतर गया हो.

कुछ दिन बाद वह चीन लौट गया. वहाँ जाकर वह एक अख़बार

باتیں کیں۔ انھوں نے اُسے اپواس کرنے کی اجازت دیدی۔ یووک نے دس دن صرف پانی کے سہارے بتائے۔ اپواس چین کے رہنے والوں کے لئے ایک بہت کٹھن امتحان ہے، کیونکہ چینی لوگ سبھاؤ سے ہی بڑے بھوجن پریمی ہوتے ہیں۔ پر شانتی نے ہمت کے ساتھ اپنے اپواس کو نبھایا۔ گاندھی جی روزانہ اُسکے قریب بیٹھکر پندرہ بیس منٹ اُس سے باتیں کرنے میں لگاتے۔ وہ باتیں کس وِشئے کی ہوتیں یا کیوں ہوتیں، یہ تو کوئی نہیں جانتا پر شانتی کافی خوش ہوتا۔ باپو نے شاید اُسے پرتگیا کی پوترتا اور اچھے چرتر کی اہمیت سمجھائی ہوگی۔ گاندھی جی کا وشواس تھا کہ کوئی سنکلپ یا پرتگیا اُس سمے تک مناسب نہیں، جب تک اندر سے اپنے آپ اُس کی پریرنا (تحریک) نہ ہو۔ پچھتاوے کی تیور انو بھوتی (شدید احساس) سے پربھاوت ہوکر ہی انسان کو پوتر پرتگیائیں کرنی چاہئیں وقتی جوش میں آکر کی جانے والی پرتگیائیں بیکار ہوتی ہیں۔

اپواس کے دس دن بیت جانے پر شانتی نے کچھ پرتگیائیں کیں، پر پرتگیا کرتے سمے وہ خوب ہوشیار تھا۔ اُس کی آنکھوں کے سامنے کوئی پردہ نہ تھا۔ پرتگیائیں کاغذ پر دوہری لکھی گئیں۔ دونوں مسوّدوں پر شانتی نے دستخط کئے اور گاندھی جی نے گواہی لکھی۔ ایک کاپی باپو کے پاس رہ گئی اور دوسری شانتی اپنے ساتھ لے گیا۔ بعد میں شانتی کہا کرتا تھا کہ اُسے ایسا محسوس ہوتا ہے جیسے اُس کے کندھوں سے بڑا بھاری بوجھ اتر گیا ہو۔

کچھ دن بعد وہ چین لوٹ گیا۔ وہاں جاکر وہ ایک اخبار

की एडीटरी करने लगा. एडीटर की हैसियत से उसने हमेशा अपना दस्तखत 'शान्ति' ही किया. महात्मा गांधी के सिद्धान्त चीन के सामने रखने की उसको बड़ी आरज़ू थी.

('गांधी गाथा' से)

अनमोल सीख

(भाई 'शाद' मलीहाबादी)

(१)

भले मनई का हरदम चाही मन मे न राखै खोट.
अस बात कहे न लोगन का जो हृदय लागे चोट

(२)

दुनिया है यू ऐस निकम्मी यह कर है यू हाल.
पापी भरे हैं यह माँ लाखन अच्छन केरा काल.

(३)

उन केर कृपा हरदम चाही कभौं न उनका सताय.
माता पिता के चरनन नीचे बैकुन्ठ रूप दिखाय.

(४)

घर केर पूँजी ऐस है पूँजी जेहका चोर चुराय.
इलिम की माया ऐस है माया कभौं न चोरी जाय.

(५)

वह ते माँगे का पइहो जो हाथ क्या खुद फैलाय.
वह का पूजो जेहसे तुमका बे माँगे मिल जाय.

کی اڈیٹری کرنے لگا۔ اڈیٹر کی حیثیت سے اس نے ہمیشہ اپنا دستخط 'شانتی' ہی کیا۔ مہاتما گاندھی کے سدّھانت چین کے سامنے رکھنے کی اس کو بڑی آرزو تھی۔

(گاندھی گاتھا سے)

انمول سیکھ

(بھائی شاد ملیح آبادی)

(۱)

بھلے منئی کا ہردم چاہی من ماں نہ راکھے کھوٹ۔
اس بات کہے نہ لوگن کا جو ہردے لاگے چوٹ۔

(۲)

دنیا ہے یو ایس نکمّی یہ کیر ہے یو حال۔
پاپی بھرے ہیں یہ ماں لاکھن اچھن کیرا کال۔

(۳)

اُن کیر کرپا ہردم چاہی کبھوں نہ ان کا ستائے۔
ماتا پتا کے چرنن نیچے بیکنٹھ روپ دکھائے۔

(۴)

گھر کیر پونجی ایس ہے پونجی جہ کا چور چرائے۔
علم کی مایا ایس ہے مایا کبھوں نہ چوری جائے۔

(۵)

وہ تے مانگے کا پیہو جو ہاتھ کا کھود پھیلائے۔
وہ کا پوجو جہ سے تم کا بے مانگے مل جائے۔

(६)

धरम की माया बढ़ती जइहे धरम का बढ़िहे जोश.
राम का माला जो जो जपिहो मन मा न आई दोष.

(७)

यही मा तुमका राम मिली और भक्ती होई पूर
साधू तीरा जाय के बैठो बुरन से भागो दूर

(८)

हँसी खुसी दिन रात कटें और सुख घर मा सोय
सच बोले ते राम मिलें ससार मा इज्जत होय

(९)

लाख जतन से वह का ढू ंढियो कभौं न निकसी काम
हृदय मा तुम प्रेम जो रखियो ओहि मा मिलिहे राम

(१०)

माया पर तुम फूले फिरत हो और नहीं कुछ होत
उह बेरिया फिर का करिहो जब आय दबोची मौत

(११)

जब मूड़ झुकई हो राम के चरनन कभौं न होई पीर
दुख का सुख से ओही बदली मन मा जो रखियो धीर

(१२)

मनई का चाही ओही का पूजे ओही का राखे ध्यान
दुख से राखे सुख से राखे यू मरजी भगवान

(१३)

इलिम पढ़े से बुद्धी बाढ़िहे कहें यू 'साद' पुकार
बिना इलिम कुछ काम न चलिहे रहियो पूर गंवार

(۶)

دھرم کی مایا بڑھتی جیہے دھرم کا بڑھیئے جوش۔
رام کا مالا جو جو جپیہو من ماں نہ آئی دوش۔

(۷)

یہی ماں تم کا رام ملی اور بھگتی ہوئی پور۔
سادھو تیرا جائیکے بیٹھو برن سے بھاگو دور۔

(۸)

ہنسی کھشی دن رات کٹیں اور سکھ گھر ماں سوئے۔
سچ بولے تے رام ملیں سنسار ماں عزت ہوئے۔

(۹)

لاکھ جتن سے وہ کا ڈھنڈھیو کبھوں نہ نکسی کام۔
ہردے ماں تم پریم جو رکھیو وہی ماں ملیہے رام۔

(۱۰)

مایا پر تم پھولے پھرت ہو اور نہیں کچھ ہوت۔
اوہ بریا پھر کا کرہیو جب آئے دبوچی موت۔

(۱۱)

جب مونڈ جھکیہو رام کے چرنن کبھوں نہ ہوئی پیر۔
دکھن کا سکھ سے وہی بدلی من ماں جو رکھیو دھیر۔

(۱۲)

منئی کا چاہی وہی کا پوجے وہی کا راکھے دھیان۔
دکھ سے راکھے سکھ سے راکھے یہ مرجی بھگوان۔

(۱۳)

علم پڑھے سے بدھی بڑھیئے کہیں یہ سادھ پکار۔
بنا علم کچھ کام نہ چلیئے رہیو پور گنوار۔

हमारी राय

हरिजन मन्दिर प्रवेश

हिन्दू-मुसलमानो के भयंकर दंगों से आज भी हम बड़ी मुश्किल से छुटकारा पा रहे हैं. उनके दुख देने वाले नतीजे तो हम भोग ही रहे हैं. इस साम्प्रदायिक वैर के जहर को शान्त करने का आग्रह रखने वाले सत्पुरुष महात्मा गांधी को—जिनके जोड़ का दुनिया में दूसरा कोई नही था—भी हमने इन दंगों की वेदी पर क़ुरबान कर दिया. और इस झगड़े और वैर का आग को सुलगती रखने मे मजा लेने वाला नेता भी इस दुनिया का अपना सफर पूरा करके चला गया. उसके बाद अब कुछ इतमिनान की सांस लेने का मौक़ा आया है, लेकिन शैतान कभी दंगे-फसाद से ऊबता नहीं और उन्हे पैदा करने का एक भी मौक़ा बेकार नही जाने देता. अब हरिजनो के सवाल के बारे मे यह आग सुलग उठने की सभावना पैदा हो रही है.

यह देखकर अफसोस होता है कि हरिजनों के मंदिर में जाने का बहाना लेकर कई गंदी राजकाजी आकांक्षाओं को पालने-पोसने के लिये आज हिन्दू समाज में धाँधली और झगड़ पैदा करने की कोशिश हो रही है. इसमें दो मे से एक भी पार्टी मे मैं पूरी सच्चाई और ईमानदारी नही पाता. गायकवाड़ राज के कलोल नाम के स्थान में और राजस्थान की कई रियासतो मे हरिजनो को जिस तरह सताया जाता है और काठियावाड़ में जिस तरह उन्हें कुछ

ہماری رائے

ہریجن مندر پرویش

ہندو مسلمانوں کے بھینکر دنگوں سے آج بھی ہم بڑی مشکل سے چھٹکارا پا رہے ہیں۔ اُن کے دکھ دینے والے نتیجے تو ہم بھوگ ہی رہے ہیں۔ اس سامپردایک ویر کے زہر کو شانت کرنے کا آگرہ رکھنے والے ست پرش مہاتما گاندھی کو — جن کے جوڑ کا دنیا میں دوسرا کوئی نہیں تھا — بھی ہم نے ان دنگوں کی ویدی پر قربان کر دیا۔ اور اس جھگڑے اور ویر کی آگ کو سلگتی رکھنے میں مزہ لینے والا نیتا بھی اس دنیا کا اپنا سفر پورا کر کے چلا گیا۔ اس کے بعد اب کچھ اطمینان کی سانس لینے کا موقع آیا ہے لیکن شیطان کبھی دنگے فساد سے اوبتا نہیں اور انہیں پیدا کرنے کا ایک بھی موقع بیکار نہیں جانے دیتا۔ اب ہریجنوں کے سوال کے بارے میں یہ آگ سلگ اٹھنے کی سمبھاونا پیدا ہو رہی ہے۔

یہ دیکھ کر افسوس ہوتا ہے کہ ہریجنوں کے مندر میں جانے کا بہانہ لے کر کئی گندی راج کاجی آکانشاؤں کو پالنے پوسنے کے لئے آج ہندو سماج میں دھاندھلی اور جھگڑے پیدا کرنے کی کوشش ہو رہی ہے۔ اس میں دو میں سے ایک بھی پارٹی میں میں پوری سچائی اور ایمانداری نہیں پاتا۔ گائیکواڑ راج کے کلول نام کے استھان میں اور راجستھان کی کئی ریاستوں میں ہریجنوں کو جس طرح ستایا جاتا ہے اور کاٹھیاواڑ میں جس طرح انہیں کچھ

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सच्चाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

[illegible] کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے [illegible] کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے [illegible] ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

[illegible] بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، [illegible] کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتایا گیا ہے

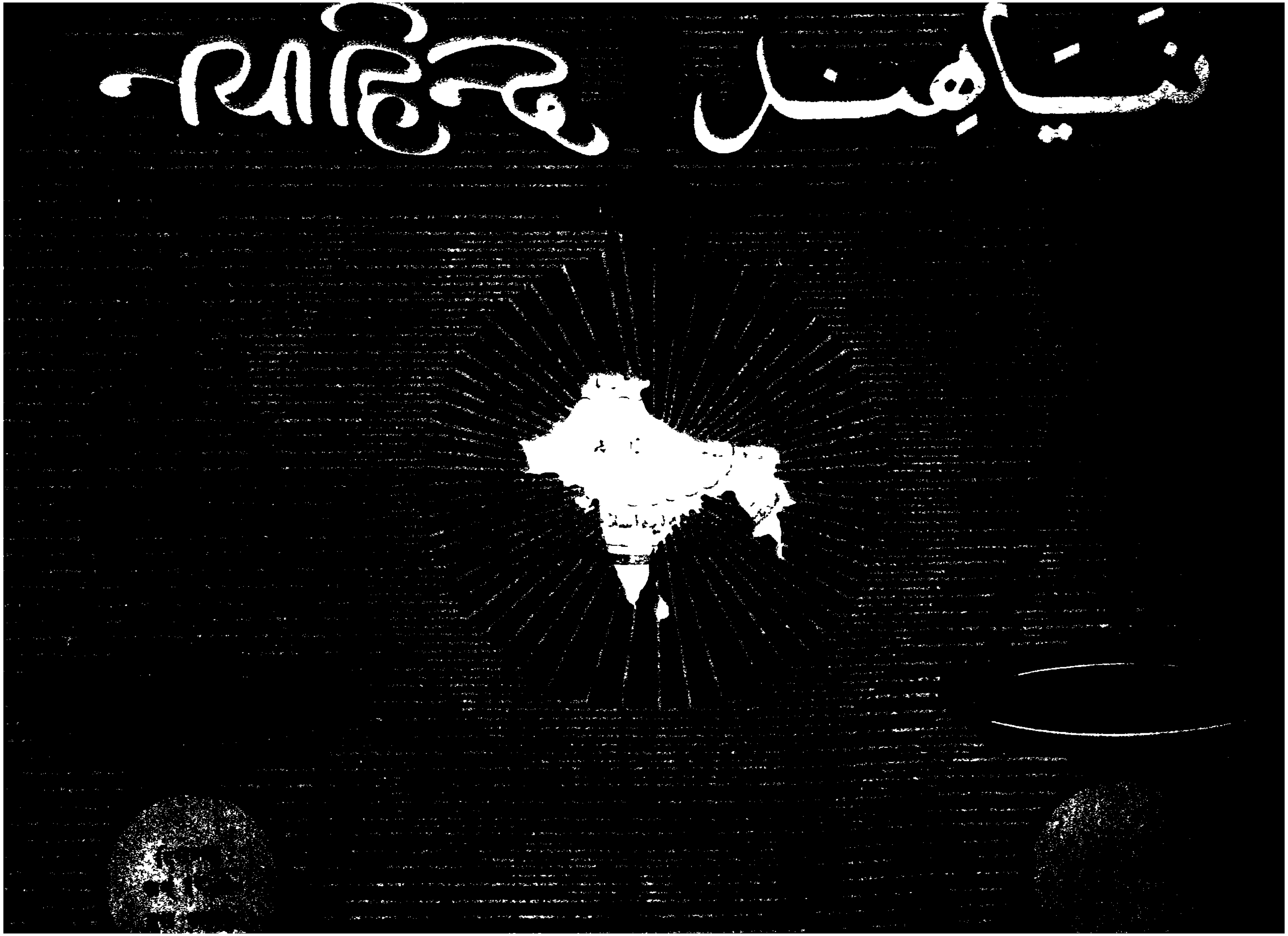
[illegible] میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور [illegible] ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں [illegible] آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ [illegible] بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، [illegible] وغیرہ کسے کہا گیا ہے

[illegible] سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو [illegible] اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری [illegible] چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

[illegible] زبان میں ناگری اور اردو دونوں [illegible] مل سکتی ہے پونے تین سو صفحے کی سند[illegible] کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwamitra Press, South Malaka, Allahabad.


नया हिन्द
نیا ہند

No. 1646

नया हिन्द / نیا ہند

जिल्द ६ दिसम्बर '४८ नम्बर ६

جلد ۶ دسمبر ۴۸ نمبر ۶

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی.
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

(भाई असरारुलहक 'मजाज़')

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल

बादल, बिजली, रैन अंधियारी दुख की मारी परजा सारी
बच्चे बूढ़े सब दुखिया हैं दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है सब बनिये हैं, सब व्योपारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल

بول! اری او دھرتی بول!

(بھائی اسرارالحق مجاز)

بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

بادل، بجلی، رین اندھیاری دکھ کی ماری پرجا ساری
بچے بوڑھے سب دکھیا ہیں دکھیا نر ہیں، دکھیا ناری
بستی بستی لوٹ مچی ہے سب بنئے ہیں، سب بیوپاری

بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

कलजुग मे जग के रखवाले   चाँदी वाले, सोने वाले
देसी हों या परदेसी हो   नीले पीले, गोरे काले
मक्खी, भुंगे भिन भिन करते   ढूंडते हैं मकड़ी के जाले
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिघासन डाँवा डोल

क्या अफरंगी क्या तातारी   आँखबची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी   कब तक जनता की बेजारी
कब तक सरमाये के धंदे   कब तक यह सरमाया दारी
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिघासन डाँवा डोल

नामी और मग़हूर नही हम   लेकिन क्या मजदूर नही हम
धोका और मज़दूरो को दे   ऐसे तो मजबूर नही हम
मजिल अपने पाँव के नीचे   मजिल से अब दूरनही हम
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिघासन डाँवा डोल

बोल ! कि तेरी ख़िदमत की है   बोल ! कितेरा काम किया है
बोल ! कि तेरे फल खाये है   बोल ! कि तेरा दूध पिया है
बोल ! कि हमने हश्र उठाया   बोल ! कि हमसे हश्रउठा है
बोल ! कि हमसे जागी दुनिया
बोल ! कि हमसे जागी धरती
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिघासन डाँवा डोल

کل جگ میں جگ کے رکھوالے   چاندی والے، سونے والے
دیسی ہوں یا پردیسی ہوں   نیلے پیلے، گورے کالے
مکھی، بھنگے بھن بھن کرتے   ڈھونڈتے ہیں مکڑی کے جالے
بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

کیا افرنگی کیا تاتاری   آنکھ بچی اور برچھی ماری
کب تک جنتا کی بے چینی   کب تک جنتا کی بیزاری
کب تک سرمائے کے دھندے   کب تک یہ سرمایہ داری
بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

نامی اور مشہور نہیں ہم   لیکن کیا مزدور نہیں ہم
دھوکا اور مزدوروں کو دیں   ایسے تو مجبور نہیں ہم
منزل اپنے پاؤں کے نیچے   منزل سے اب دور نہیں ہم
بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

بول! کہ تیری خدمت کی ہے   بول! کہ تیرا کام کیا ہے
بول! کہ تیرے پھل کھائے ہیں   بول! کہ تیرا دودھ پیا ہے
بول! کہ ہم نے حشر اٹھایا   بول! کہ ہم سے حشر اٹھا ہے
بول! کہ ہم سے جاگی دنیا
بول! کہ ہم سے جاگی دھرتی
بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

हमारी आज़ादी की लड़ाई
में
सरहदी पठानों का हिस्सा

(भाई रतनलाल बसल)

(१)

हमारे देश की आज़ादी की लड़ाई मे मुसलमानों ने जो हिस्सा लिया है, उसकी कहानी को पूरा करने के लिये यह जरूरी है कि इस सिलसिले मे सरहद के बहादुर पठानो ने जो कुछ किया, उस पर भी हम एक सरसरी सी नज़र डाल ले, क्यो कि हमारी आज़ादी की लडाई मे सरहद ने जो हिस्सा लिया है, बंगाल के कुछ हलक़ों को छोड कर उसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती.

सरहदी हलको मे चलने वाली आज़ादी की लडाई को अगर हम दो हिस्सो मे बाँट दे तो हमको उसका इतिहास बनाने और समझने मे बहुत आसानी हो जावेगी. इसमे पहला हिस्सा वह है, जिसमे हथियारों के जरिये आज़ाद होने की कोशिश की गई और दूसरा हिस्सा—सरहद मे आज़ादी के लिये लडी गई अहिसक लड़ाई से ताल्लुक रखता है.

यह भी क़िस्मत का ही खेल है कि सरहद के जिन बहादुर **पठानों ने कॉंग्रेस में शरीक होकर उसकी** ताक़त को बे इतनहा बढ़ा

ہماری آزادی کی لڑائی
میں
سرحدی پٹھانوں کا حصہ

(بھائی رتن لال بنسل)

(۱)

ہمارے دیش کی آزادی کی لڑائی میں مسلمانوں نے جو حصہ لیا ہے، اُس کی کہانی کو پورا کرنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ اس سلسلہ میں سرحد کے بہادر پٹھانوں نے جو کچھ کیا، اُس پر بھی ہم ایک سرسری سی نظر ڈال لیں، کیوں کہ ہماری آزادی کی لڑائی میں سرحد نے جو حصہ لیا ہے، بنگال کے کچھ حلقوں کو چھوڑ کر اُس کی کوئی دوسری مثال نہیں ملتی۔

سرحدی حلقوں میں چلنے والی آزادی کی لڑائی کو اگر ہم دو حصوں میں بانٹ دیں تو ہم کو اُس کا اِتہاس بنانے اور سمجھنے میں بہت آسانی ہو جاوے گی۔ اِس میں پہلا حصہ وہ ہے، جس میں ہتھیاروں کے ذریعہ آزاد ہونے کی کوشش کی گئی اور دوسرا حصہ — سرحد میں آزادی کے لئے لڑی گئی اہنسک لڑائی سے تعلق رکھتا ہے۔

یہ بھی قسمت کا ہی کھیل ہے کہ سرحد کے جن بہادر پٹھانوں نے کانگریس میں شریک ہو کر اُس کی طاقت کو بے انتہا بڑھا

दिया था, वही पठान वक्त आने पर बेबस छोड़ दिये गये और उनको अपने उसूलों के लिये आज भी उन तकलीफ़ों से गुज़रना पड़ रहा है, जिनकी याद आते ही दिल काँपने लगता है.

हिंसा की लड़ाई

सरहद में आज़ादी के लिये हथियारों की लड़ाई तो ठीक तभी से शुरू होती है, जब अंग्रेज़ों ने अपने दोस्त राजा रजीत सिंह की ताक़त को धोके, कपट, और तरह तरह की चालबाज़ियों से तहस नहस करके सन् १८४९ में सरहद पर अपना क़ब्ज़ा जमाया. कब्ज़ा जमाने के दिन से ही अंगरेज़ों ने यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि अब हमने पठानों को सिक्खों की ज़ालिम हुकूमत से आज़ाद कर दिया है. इसलिये अब पठानों को भी हम अंग्रेज़ों के साथ दोस्ताना बर्ताव करना चाहिये यानी हमारी ग़ुलामी के इस तौक़ को बिना उज़्र किये ख़ुशी ख़ुशी पहिन लेना चाहिये. लेकिन पठानी स्वभाव की यह सबसे बड़ी सिफ़त रही है कि कोई भी ऐसी बात उसके दिल पर कभी असर नहीं करती, जो उसकी आज़ादी पर आँच लाती हो. इससे पहले जब औरंगज़ेब ने इस्लाम की दुहाई देकर पठानों को ग़ुलाम बनाना चाहा था, तो उसका भी पठानों ने डट कर मुक़ाबला किया था और अपने बहादुर सरदार ख़ुशहाल खाँ की रहबरी में, (जो जितना बड़ा सिपहसालार था, उतना ही बड़ा शायर भी था,) अपनी आज़ादी के लिये औरंगज़ेब से बराबर जंग करते रहे थे. इतिहास यह भी बताता है कि पठानों की इस आज़ादी की लड़ाई को जीतने के लिये औरंगज़ेब की तरफ़ से जो सरदार गये थे, उनको कभी

دیا تھا، وہی پٹھان وقت آنے پر بے بس چھوڑ دیے گئے اور اُن کو اپنے اصولوں کے لئے آج بھی اُن تکلیفوں سے گزرنا پڑ رہا ہے، جن کی یاد آتے ہی دل کانپنے لگتا ہے۔

ہنسا کی لڑائی

سرحد میں آزادی کے لئے ہتھیاروں کی لڑائی تو ٹھیک تبھی سے شروع ہوتی ہے، جب انگریزوں نے اپنے دوست راجہ رنجیت سنگھ کی طاقت کو دھوکے، کپٹ، اور طرح طرح کی چال بازیوں سے تہس نہس کر کے ۱۸۴۹ء میں سرحد پر اپنا قبضہ جمایا۔ قبضہ جمانے کے دن سے ہی انگریزوں نے یہ پرچار کرنا شروع کر دیا کہ اب ہم نے پٹھانوں کو سکھوں کی ظالم حکومت سے آزاد کر دیا ہے۔ اس لئے اب پٹھانوں کو بھی ہم انگریزوں کے ساتھ دوستانہ برتاؤ کرنا چاہیئے یعنی ہماری غلامی کے اس طوق کو بنا عُذر کئے خوشی خوشی پہن لینا چاہیئے۔ لیکن پٹھانی سوبھاؤ کی یہ سب سے بڑی صفت رہی ہے کہ کوئی بھی ایسی بات اُس کے دل پر کبھی اثر نہیں کرتی، جو اُس کی آزادی پر آنچ لاتی ہو۔ اس سے پہلے جب اورنگ زیب نے اسلام کی دُہائی دے کر پٹھانوں کو غلام بنانا چاہا تھا، تو اُس کا بھی پٹھانوں نے ڈٹ کر مقابلہ کیا تھا اور اپنے بہادر سردار خوشحال خاں کی رہبری میں، (جو جتنا بڑا سپہ سالار تھا، اُتنا ہی بڑا شاعر بھی تھا) اپنی آزادی کے لئے اورنگ زیب سے برابر جنگ کرتے رہے تھے۔ اتہاس یہ بھی بتاتا ہے کہ پٹھانوں کی اس آزادی کی لڑائی کو جیتنے کے لئے اورنگ زیب کی طرف سے جو سردار گئے تھے، اُن کو کبھی

कामयाबी नहीं मिल सकी. यह वाक़या इसलिये बयान किया जा रहा है कि पठानों के दिल में आज़ादी के लिये जो भाव है, उसे हम सही तौर पर समझ लें. साथ ही हम अपने दिल से इस वहम को भी निकाल दें कि राजा रंजीतसिंह से पठानों की जो लड़ाई थी, वह इसलिये थी कि राजा रंजीतसिंह सिख थे और पठान मुसलमान. बल्कि वह लड़ाई सिर्फ़ इसलिये थी कि जिस तरह रंजीतसिंह हिन्दुस्तान के किसी भी दूसरे हिन्दू-मुसलमान राजा के मातहत नहीं रहना चाहते थे, उसी तरह पठान सरदार और पठान जनता भी रंजीतसिंह की हुकूमत मे नहीं रहना चाहती थी. जिस अखण्ड हिन्दुस्तान का आज हम नारा लगाते हैं, उसका ख़याल उस वक़्त किसी भी हिन्दुस्तानी के दिल मे नहीं था, फिर सरहद पर बसे हुए पठानों से तो उसकी उम्मीद ही कैसे की जा सकती है.

शुरू ही शुरू मे अंग्रेज़ों ने जब सरहद पर कब्ज़ा किया तो मैदानों मे, जिन्हे आजकल 'सैटिल्ड डिस्ट्रिक्ट' कहा जाता है, उनको कोई ख़ास दिक्कत नहीं हुई, क्यों कि अंग्रेज़ों के पास जो भारी भारी तोपें थीं, उनका मुक़ाबला वहाँ की जनता नहीं कर सकती थी. लेकिन पहाड़ो मे बसे हुए पठानों ने फौरन अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ हथियार उठा लिये और जिस लड़ाई को हम आज की ज़बान में 'गुरिल्ला लड़ाई' कहते हैं, कुछ इसी ढंग की लड़ाई अंग्रेज़ों और पठानों के बीच शुरू हो गई. यहाँ पर यह बता देना बहुत ज़रूरी है कि इस लड़ाई में वलीउल्लाही जमात के उन हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने ख़ास हिस्सा लिया, जो सय्यद अहमद

کامیابی نہیں مل سکی۔ یہ واقعہ اِس لئے بیان کیا جا رہا ہے کہ پٹھانوں کے دل میں آزادی کے لئے جو بھاؤ ہے، اُسے ہم صحیح طور پر سمجھ لیں۔ ساتھ ہی ہم اپنے دل سے اس وہم کو بھی نکال دیں کہ راجہ رنجیت سنگھ سے پٹھانوں کی جو لڑائی تھی، وہ اس لئے تھی کہ راجہ رنجیت سنگھ سکھ تھے اور پٹھان مسلمان۔ بلکہ وہ لڑائی صرف اس لئے تھی کہ جس طرح رنجیت سنگھ ہندستان کے کسی بھی دوسرے ہندو مسلمان راجہ کے ماتحت نہیں رہنا چاہتے تھے، اُسی طرح پٹھان سردار اور پٹھان جنتا بھی رنجیت سنگھ کی حکومت میں نہیں رہنا چاہتی تھی۔ جس اکھنڈ ہندستان کا آج ہم نعرہ لگاتے ہیں، اُس کا خیال اُس وقت کسی بھی ہندستانی کے دل میں نہیں تھا، پھر سرحد پر بسے ہوئے پٹھانوں سے تو اُس کی امید ہی کیسے کی جا سکتی ہے۔

شروع ہی شروع انگریزوں نے جب سرحد پر قبضہ کیا تو میدانوں میں، جنھیں آج کل 'سٹلڈ ڈسٹرکٹ' کہا جاتا ہے اُن کو کوئی خاص دقت نہیں ہوئی، کیوں کہ انگریزوں کے پاس جو بھاری بھاری توپیں تھیں، اُن کا مقابلہ وہاں کی جنتا نہیں کر سکتی تھی۔ لیکن پہاڑوں میں بسے ہوئے پٹھانوں نے فوراً انگریزوں کے خلاف ہتھیار اٹھا لئے اور جس لڑائی کو ہم آج کی زبان میں 'گوریلا لڑائی' کہتے ہیں، کچھ اسی ڈھنگ کی لڑائی انگریزوں اور پٹھانوں کے بیچ شروع ہو گئی۔ یہاں پر یہ بتا دینا بہت ضروری ہے کہ اسی لڑائی میں ولی اللٰہی جماعت کے ہندستانی مسلمانوں نے خاص حصہ لیا، جو سید احمد

बरेलवी साहब को नेता बना कर अंग्रेजों की दोस्त सिख हुकूमत से लड़ने के लिये काबुल होते हुए सरहद पर पहुँचे थे. उस वक्त उनका खास मरकज़ सरहद्दी पहाड़ों से घिरा हुआ एक गाँव था जिसका नाम सतियाना है. एक खास बात यह भी जानने लायक है कि इस सतियाना कैम्प के बहुत से मददगार हिन्दुस्तान की दूसरी सीमा यानी बिहार और बंगाल तक फैले हुए थे, जो हर महीने सतियाना कैम्प के लिये बेशुमार रुपया और रंगरूट भर्ती करके भेजते रहते थे.यहाँ पर यह साफ कर देना भी निहायत जरूरी है कि इस तमाम आन्दोलन की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि इस पर एक खास तरह का मज़हबी जामा होने की वजह से इसमें कोई गैर मुसलमान शरीक नहीं था. लेकिन उस वक्त शायद हमारे सोचने का ढंग ही यह था और इसीलिये जबहम एक तरफ पंजाब की 'कूकाबगावत' को,जिसमे खालिस सिख ही थे,अपनी आजादी की लड़ाई का ही एक हिस्सा मानते हैं, तो समझ में नहीं आता कि इस तहरीक को आजादी की लड़ाई का हिस्सा मानने से हम कैसे इन्कार कर सकते हैं?

सतियाना कैम्प और पठानों के दूसरे गिरोहों ने अंग्रेजों से जो मुकाबला किया, उसका कोई सिलसिले वार इतिहास नहीं मिलता. फिर भी वह मुकाबला कितना सख्त था, इसका अन्दाजा सिर्फ इसी से लगाया जा सकता है कि सरहद पर कब्जा करने के सालभर बाद से ही यानी सन् १८५० से सन् १८५७ तक, अंग्रेज सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक, सरहद में सोलह बार बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हुई, जिनमे अंग्रेज हुकूमत के तैंतीस हजार सिपाहियों ने हिस्सा लिया. इसके बाद तो पूरे हिन्दुस्तान में ही यह आग फैल

بریلوی صاحب کو نیتا بناکر انگریزوں کی دوست سکھ حکومت سے لڑنے کے لئے، کابل ہوتے ہوئے سرحد پر پہنچے تھے. اُس وقت اُن کا خاص مرکز سرحدی پہاڑیوں سے گھرا ہوا ایک گاؤں تھا جس کا نام ستیانا ہے۔ ایک خاص بات یہ بھی جاننے لائق ہے کہ اس ستیانا کیمپ کے بہت سے مددگار ہندستان کی دوسری سیما یعنی بہار اور بنگال تک پھیلے ہوئے تھے، جو ہر مہینے ستیانا کیمپ کے لئے بے شمار روپیہ اور رنگروٹ بھرتی کرکے بھیجتے رہتے تھے. یہاں پر یہ صاف کردینا بھی نہایت ضروری ہے کہ اس تمام آندولن کی سب سے بڑی کمزوری یہ تھی کہ اس پر ایک خاص طرح کا مذہبی جامہ ہونے کی وجہ سے اِس میں کوئی غیرمسلمان شریک نہیں تھا. لیکن اُس وقت شاید ہمارے سوچنے کا ڈھنگ ہی یہ تھا اور اِسی لئے جب ہم ایک طرف پنجاب کی کوکا بغاوت، کو، جس میں خالص سکھ ہی تھے، اپنی آزادی کی لڑائی کا ہی ایک حصہ مانتے ہیں، تو سمجھ میں نہیں آتا کہ اس تحریک کو آزادی کی لڑائی کا حصہ ماننے سے ہم کیسے انکار کرسکتے ہیں.

ستیانا کیمپ اور پٹھانوں کے دوسرے گروہوں نے انگریزوں سے جو مقابلہ کیا، اُس کا کوئی سلسلے وار اتہاس نہیں ملتا، پھر بھی وہ مقابلہ کتنا سخت تھا، اس کا اندازہ صرف اِسی سے لگایا جا سکتا ہے کہ سرحد پر قبضہ کرنے کے سال بھر بعد سے ہی یعنی سنہ ۱۸۵۰ سے سنہ ۱۸۵۷ تک، انگریز سرکار کی رپورٹ کے مطابق، سرحد میں سولہ بار بڑی بڑی لڑائیاں ہوئیں، جن میں انگریز حکومت کے تینتیس ہزار سپاہیوں نے حصہ لیا. اس کے بعد تو پورے ہندستان میں ہی یہ آگ پھیل

गई और वलीउल्लाही जमात के दूसरे हलके ने, जो दिल्ली में था, उस वक्त सरहद से अपना सिलसिला कायम करने और उनसे मदद लेने की कोशिश की.

१८५७ के इन्क़लाब में

१८५७ का इन्कलाब जैसे ही शुरू हुआ, वैसे ही अंग्रेज़ सरकार समझ गई कि अगर यह आग सरहद में किसी तरह फैल गई, तो मामला उसके क़ाबू से बाहर हो जायगा. अंग्रेज़ हाकिमों ने इसका फौरन इन्तज़ाम किया और सैकडों मुल्ला मौलवियों को नौकर रख कर सरहद में यह प्रचार कराना शुरू कर दिया कि इस वक्त अंग्रेज़ों के खिलाफ हथियार उठाना बेवकूफी होगी. इसका ठीक वक्त जब आवेगा, तब सय्यद अहमद साहब बरेलवी खुद ज़ाहिर होकर हमारी रहबरी करेंगे. यह कहा जा सकता है कि इस प्रचार ने अंग्रेज़ों को अपने मन्सूबे पूरे करने और पठानों व हिन्दुस्तानी इन्कलाबियों के आपस में सम्बन्ध न होने देने में बहुत बड़ी मदद की.

अंग्रेज़ों को दूसरी सुविधा यह थी कि सरहद का पडोसी पंजाब का सूबा था, जिसके ज़्यादातर सिख सरदार अंग्रेज़ों के साथ मिले हुए थे. दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह 'ज़फर' और उस इन्कलाब के दूसरे हिन्दू-मुस्लिम नेताओं ने, जिनमें महारानी लक्ष्मी बाई और नाना धुन्धू पन्त पेशवा भी थे, आपस में सलाह करके अपने एक खास दूत को, जिसका नाम ताजुद्दीन था, सिख सरदारों के पास यह सन्देश लेकर भेजा था कि सिख भी हिन्दुस्तान की आज़ादी की लडाई में मदद करें. ताजुद्दीन इस सिलसिले में नाभा और झिन्द के राजाओं व कुछ दूसरे सिख नेताओं से मिला.

گئی اور ولی اللّٰہی جماعت کے دوسرے حلقے نے، جو دلّی میں تھا، اُس وقت سرحد سے اپنا سلسلہ قائم کرنے اور اُن سے مدد لینے کی کوشش کی۔

۱۸۵۷ء کے انقلاب میں

۱۸۵۷ء کا انقلاب جیسے ہی شروع ہوا ویسے ہی انگریز سرکار سمجھ گئی کہ اگر یہ آگ سرحد میں کسی طرح پھیل گئی، تو معاملہ اُس کے قابو سے باہر ہو جائے گا۔ انگریز حاکموں نے اِس کا فوراً انتظام کیا اور سیکڑوں مُلّا مولویوں کو نوکر رکھ کر سرحد میں یہ پرچار کرانا شروع کر دیا کہ اِس وقت انگریزوں کے خلاف ہتھیار اُٹھانا بےوقوفی ہوگی۔ اِس کا ٹھیک وقت جب آوے گا، تب سیّد احمد صاحب بریلوی خود ظاہر ہو کر ہماری رہبری کریں گے۔ یہ کہا جا سکتا ہے کہ اِس پرچار نے انگریزوں کو اپنے منصوبے پورے کرنے اور پٹھانوں و ہندستانی انقلابیوں کے آپس میں سمبندھ نہ ہونے دینے میں بہت بڑی مدد کی۔

انگریزوں کو دوسری سویدھا یہ تھی کہ سرحد کا پڑوسی پنجاب کا صوبہ تھا، جس کے زیادہ تر سکھ سردار انگریزوں کے ساتھ ملے ہوئے تھے۔ دلّی کے بادشاہ بہادر شاہ 'ظفر' اور اُس انقلاب کے دوسرے ہندو مسلم نیتاؤں نے، جن میں مہارانی لکشمی بائی اور نانا دھودھو پنت پیشوا بھی تھے، آپس میں صلاح کر کے اپنے ایک خاص دوت کو، جس کا نام تاج الدین تھا، سکھ سرداروں کے پاس یہ سندیش لیکر بھیجا تھا کہ سکھ بھی ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں مدد کریں۔ تاج الدین اِس سلسلے میں نابھا اور جھند کے راجاؤں و کچھ دوسرے سکھ نیتاؤں سے ملا۔

लेकिन उसका जो नतीजा निकला, उसका सही नक्शा उस ख़त से समझा जा सकता है, जो ताजुद्दीन ने सिख सरदारों से मिलने के बाद बादशाह को लिखा था. इस ख़त में ताजुद्दीन लिखता है— "यह लोग फिरङ्गियों के हाथों का खिलौना बने हुए हैं. मैं ख़ुद इन लोगों से अकेले में मिला. मैंने उनसे बातचीत की और उनके सामने अपना कलेजा पानी कर दिया. मैंने उनसे कहा आप लोग फिरङ्गियों का क्यों साथ देते हैं और मुल्क की आज़ादी के साथ क्यों दग़ा करते हैं. क्या स्वराज्य में आप इससे अच्छे न रहेंगे ? इस लिये कम से कम अपने फ़ायदे के लिये ही आप को दिल्ली के बादशाह का साथ देना चाहिये." इस पर उन सबने जवाब दिया, 'देखिये, हम मौक़े का इन्तज़ार कर रहे हैं. ज्यों ही हमको बादशाह का हुक्म मिलेगा. हम एक दिन के अन्दर इन काफ़िरों को मार डालेंगे,' × × +लेकिन मेरा ख़याल है कि इन पर कतई एतबार नहीं किया जा सकता."

आख़िर ताजुद्दीन की ही बात ठीक निकली. क्यों कि कुछ दिन बाद ही जब इन्कलाबी फ़ौज के कुछ घुड़ सवार इन राजाओं के पास इन्क़लाब में शामिल होने की दावत लेकर पहुँचे, तो उन राजाओं ने उन सवारों को मरवा डाला. उस वक़्त तक सर जान लारेन्स और लार्ड केनिंग के तीर इन राजाओं के दिलों और दिमाग़ों पर चल चुके थे.

पंजाब के इन राजाओं के अलावा पंजाब की जनता भी सन् १८५७ के इन्कलाब से अलग अलग सी ही रही.

لیکن اُس کا جو نتیجہ نکلا، اُس کا صحیح نقشہ اُس خط سے سمجھا جا سکتا ہے، جو تاج الدین نے سکھ سرداروں سے ملنے کے بعد بادشاہ کو لکھا تھا۔ اِس خط میں تاج الدین لکھتا ہے۔ "یہ لوگ فرنگیوں کے ہاتھوں کا کھلونا بنے ہوئے ہیں۔ میں خود ان لوگوں سے اکیلے میں ملا۔ میں نے اُن سے بات چیت کی اور اُن کے سامنے اپنا کلیجہ پانی کر دیا۔ میں نے اُن سے کہا آپ لوگ فرنگیوں کا کیوں ساتھ دیتے ہیں اور ملک کی آزادی کے ساتھ کیوں دغا کرتے ہیں۔ کیا سوراجیہ میں آپ اِس سے اچھے نہ رہیں گے؟ اِس لئے کم سے کم اپنے فائدے کے لئے ہی آپ کو دلی کے بادشاہ کا ساتھ دینا چاہیئے۔" اس پر اُن سب نے جواب دیا 'دیکھیے، ہم موقع کا انتظار کر رہے ہیں۔ جیوں ہی ہم کو بادشاہ کا حکم ملے گا، ہم ایک دن کے اندر اِن کافروں کو مار ڈالیں گے،' × × * لیکن میرا خیال ہے کہ ان پر قطعی اعتبار نہیں کیا جا سکتا۔"

آخر تاج الدین کی ہی بات ٹھیک نکلی۔ کیونکہ کچھ دن بعد ہی جب انقلابی فوج کے کچھ گھوڑ سوار ان راجاؤں کے پاس انقلاب میں شامل ہونے کی دعوت لے کر پہنچے تو اِن راجاؤں نے اُن سواروں کو مروا ڈالا۔ اُس وقت تک سر جان لارنس اور لارڈ کیننگ کے تیر اِن راجاؤں کے دلوں اور دماغوں پر چل چکے تھے۔

پنجاب کے اِن راجاؤں کے علاوہ پنجاب کی جنتا بھی سنہ ۱۸۵۷ کے انقلاب سے الگ الگ سی ہی رہی۔

इसकी वजह यह थी कि सर जान लारेन्स ने कम्पनी के नाम पर पंजाब के छोटे बड़े हज़ारों साहूकारों से ६फीसदी पर एक बहुतबड़ा क़र्ज़ ले रक्खा था. अब साहूकारों को यह ख़तरा होने लगा कि अगर इस इन्क़लाब को कामयाबी मिल गई और अंग्रेज़ हिन्दुस्तान से चले गये तो उनकी रकमे भी डूब जावेगी.इसलिये उन्होंने पंजाब की जनता में इस बात का ख़ूब प्रचार किया कि अंग्रेज़ की इस संकट के समय खूब मदद करनी चाहिये.पूँजीवाद मुल्क की तरक्क़ी और आज़दी में किस तरह रोड़ा अटकाता है और अपने मतलब के लिये कितना नीचे गिर सकता है, यह हकीकत इसकी एक अच्छी मिसाल है.

इस तरह पंजाब के सूबे ने अंग्रेज़ों की तरफ़दारी करके सरहद के आजादी पसन्द पठानों और हिन्दुस्तान के इन्कलाबियों के बीच एक दीवारखडी कर दी,जिसने पठानों को बेहद पस्त हिम्मत कर दिया. फिर भी उनके कुछ नेताओं ने अपना काम जारी रक्खा, जिसका नतीजा यह हुआ कि पेशावर व उसके आस पास कम्पनी की जो २४, २७ और ५१ नम्बर की पलटने थी, उन्होंने ४ नम्बर की घुड सवार सेना के साथ मिल कर यह साज़िश की कि २२ मई सन् १८५७ को हमको भी आज़ादी का झंडा फहरा देना चाहिये. लेकिन यह बात किसी तरह अंग्रेज़ अफसरों को मालूम हो गई और उन्हों ने २२ मई को सुबह ही इन सेनाओं को घेर कर उनसे हथियार रखवाना शुरू कर दिया.

२

اس کی وجہ یہ تھی کہ سر جان لارنس نے کمپنی کے نام پر پنجاب کے چھوٹے بڑے ہزاروں ساہوکاروں سے ۶ فی صدی پر ایک بہت بڑا قرض لے رکھا تھا. اب ساہوکاروں کو یہ خطرہ ہونے لگا کہ اگر اس انقلاب کو کامیابی مل گئی اور انگریز ہندستان سے چلے گئے تو ان کی رقمیں بھی ڈوب جاویں گی. اس لئے انھوں نے پنجاب کی جنتا میں اس بات کا خوب پرچار کیا کہ انگریز کی اس سنکٹ کے سمے خوب مدد کرنی چاہئے. پونجی واد ملک کی ترقی اور آزادی میں کس طرح روڑا اٹکاتا ہے اور اپنے مطلب کے لئے کتنا نیچے گر سکتا ہے، یہ حقیقت اس کی ایک اچھی مثال ہے.

اس طرح پنجاب کے صوبے نے انگریزوں کی طرفداری کر کے سرحد کے آزادی پسند پٹھانوں اور ہندستان کے انقلابیوں کے بیچ ایک دیوار کھڑی کر دی، جس نے پٹھانوں کو بیحد پست ہمت کر دیا. پھر بھی اُن کے کچھ نیتاؤں نے اپنا کام جاری رکھا، جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ پشاور و اُس کے آس پاس کمپنی کی جو ۲۴، ۲۷ اور ۵۱ نمبر کی پلٹنیں تھیں، اُنھوں نے ۴ نمبر کی گھوڑ سوار سینا کے ساتھ مل کر یہ سازش کی کہ ۲۲ مئی سنہ ۱۸۵۷ کو ہم کو بھی آزادی کا جھنڈا پھہرا دینا چاہئے. لیکن یہ بات کسی طرح انگریز افسروں کو معلوم ہو گئی اور انھوں نے ۲۲ مئی کو صبح ہی ان سیناؤں کو گھیر کر اُن سے ہتھیار رکھوانا شروع کر دیا.

भयानक अत्याचार

अँग्रेजों ने हथियार रखवाने के बाद इन निहत्थी सेनाओं को अपनी बारिकों में रहने का हुक्म दिया. कुछ अंग्रेज़ों ने लिखा है कि बाईस तारीख की रात को इनमें से कुछ ने शहर की तरफ जाने की इजाज़त माँगी, लेकिन उनको रोक दिया गया और इजाज़त माँगने के जुर्म में उनमें से तेरह या चौदह सिपाहियों को फौरन फाँसी पर लटका दिया गया जिससे कि दूसरे लोग ऐसी गुस्ताखी न करें. इसके बाद भी कुछ लोगों को फाँसियाँ दी गईं और कुछ लोग तोपों के मुँह पर बाँध कर उड़ा दिये गये.

लेकिन पेशावर की सेना को जो कुछ भुगतना पड़ा उससे कम से कम सौ गुने ज़ुल्म होती-मरदान की सेना को भुगतने पड़े. वहाँ पर ५५ नम्बर की सेना थी और उसे जब यह मालूम हुआ कि पेशावर से अँग्रेजों की एक बड़ी टुकड़ी उसके हथियार रखवाने आई है, तो उन्होंने मरदान के क़िले से निकल कर भाग जाना चाहा. लेकिन कम्पनी की सेना ने, जो अपने साथ भारी भारी तोपें लिये हुए थी, उसे चारों तरफ से घेर लिया और उन पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं. इसके नतीजे में करीब १५० सिपाही वहीं पर मारे गये और बाकी गिरफ़तार कर लिये गये. मालसन ने अपनी मशहूर किताब 'इंडियन रिवोल्ट' में एक ऐसे अंग्रेज़ सिपाही का ख़त दिया है, जो इस मौके पर मौजूद था. उस ख़त से यह मालूम होता है कि इन अभागे सिपाहियों के साथ कैसा बर्ताव किया गया. उस अफसर ने लिखा है—

بھیانک اتیاچار

انگریزوں نے ہتھیار رکھوانے کے بعد ان نہتی سیناؤں کو اپنی بارکوں میں رہنے کا حکم دیا۔ کچھ انگریزوں نے لکھا ہے کہ بائیس تاریخ کی رات کو ان میں سے کچھ نے شہر کی طرف جانے کی اجازت مانگی، لیکن اُن کو روک دیا گیا اور اجازت مانگنے کے جرم میں اُن میں سے تیرہ یا چودہ سپاہیوں کو فوراً پھانسی پر لٹکا دیا گیا جس سے کہ دوسرے لوگ ایسی گستاخی نہ کریں۔ اس کے بعد بھی کچھ لوگوں کو پھانسیاں دی گئیں اور کچھ لوگ توپوں کے منہ پر باندھ کر اُڑا دیئے گئے۔

لیکن پشاور کی سینا کو جو کچھ بھگتنا پڑا اُس سے کم سے کم سو گنے ظلم ہوتی مردان کی سینا کو بھگتنے پڑے۔ وہاں پر ۵۵ نمبر کی سینا تھی اور اُسے جب یہ معلوم ہوا کہ پشاور سے انگریزوں کی ایک بڑی ٹکڑی اُس کے ہتھیار رکھوانے آئی ہے، تو اُنھوں نے مردان کے قلعہ سے نکل کر بھاگ جانا چاہا۔ لیکن کمپنی کی سینا نے، جو اپنے ساتھ بھاری بھاری توپیں لئے ہوئے تھی، اُسے چاروں طرف سے گھیر لیا اور اُن پر گولیاں چلانی شروع کر دیں۔ اس کے نتیجے میں قریب ۱۵۰ سپاہی وہیں پر مارے گئے اور باقی گرفتار کر لئے گئے۔ مالسن نے اپنی مشہور کتاب 'انڈین ریوولٹ' میں ایک ایسے انگریز سپاہی کا خط دیا ہے، جو اس موقع پر موجود تھا۔ اس خط سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ ان ابھاگے سپاہیوں کے ساتھ کیسا برتاؤ کیا گیا۔ اس افسر نے لکھا ہے —

"उस दिन की परेड का एक अजीब नजारा था. परेड पर क़रीब नौ हज़ार सिपाही थे××× एक चौरस मैदान मे तीन तरफ फ़ौज खड़ी थी और चौथी तरफ दस तोपें थी.××× पहिले दस क़ैदी तोपों के मुँह से बाँध दिये गये. इसके बाद तोपखाने के अफ़सर ने अपनी तलवार हिलाई. फौरन तोपो की गरज सुनाई दी और धुएँ के ऊपर हाथ पैर और सर चारो ओर हवा मे उड़ते हुए दिखाई देने लगे."

कई हफ्तो मे इसी तरह सब के सब सिपाही अपने मुल्क को आजादी की चाह रखने के जुर्म मे तोपो के मुँह से उड़ा दिये गये. इसके बाद सरहद के जिस आदमी पर यह शक हुआ कि वह इन्कलाब फैलाने की कोशिश करता है, उसी को तरह तरह की तकलीफें देकर मारा गया. एक अँग्रेज ने इसका जिक्र करते हुए लिखा है—"हाँलाकि मेरे पास ऐसे बहुत से ख़त मौजूद है जिनमे यह बयान किया गया है कि हमारे अफसरो ने किस तरह की कठिन से कठिन और घिनौनी तकलीफें लोगो को पहुँचाई, फिर भी अब मै इस बारे मे एक लफ्ज भी नही लिखता जिससे कि अब यह बात ही दुनिया के सामने न रहे."

सन् १८५७ मे सरहद मे जो कुछ हुआ और उसे जिस तरह से, दबाया गया, उसकी यह एक हल्की सी झाँकी है. इन फौजो में हालाँकि सब पठान ही नहीं थे, फिर भी पठानों ने इन फौजो को उभारने मे बहुत बड़ा हिस्सा लिया था और उसके बाद उनके कन्धे से कन्धा मिला कर सब तरह के जुल्म भी सहे थे.

" اُس دن کی پریڈ کا ایک عجیب نظارہ تھا. پریڈ پر قریب نو ہزار سپاہی تھے ××× ایک چورس میدان میں تین طرف فوج کھڑی تھی اور چوتھی طرف دس توپیں تھیں.××× پہلے دس قیدی توپوں کے منہ سے باندھ دیئے گئے. اس کے بعد توپخانے کے افسر نے اپنی تلوار ہلائی. فوراً توپوں کی گرج سنائی دی اور دھوئیں کے اوپر ہاتھ پیر اور سر چاروں اور ہوا میں اُڑتے ہوئے دکھائی دینے لگے."

کئی ہفتوں میں اسی طرح سب کے سب سپاہی اپنے ملک کی آزادی کی چاہ رکھنے کے جرم میں توپوں کے منہ سے اُڑا دیئے گئے. اِس کے بعد سرحد کے جس آدمی پر یہ شک ہوا کہ وہ انقلاب پھیلانے کی کوشش کرتا ہے، اُسی کو طرح طرح کی تکلیفیں دے کر مارا گیا. ایک انگریز نے اِس کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے— "حالانکہ میرے پاس ایسے بہت سے خط موجود ہیں جن میں یہ بیان کیا گیا ہے کہ ہمارے افسروں نے کس طرح کی کٹھن سے کٹھن اور گھنونی تکلیفیں لوگوں کو پہنچائیں، پھر بھی اب میں اِس بارے میں ایک لفظ بھی نہیں لکھتا جس سے کہ اب یہ بات ہی دُنیا کے سامنے نہ رہے."

سنہ ۱۸۵۷ میں سرحد میں جو کچھ ہوا اور اُسے جس طرح سے دبایا گیا، اُس کی یہ ایک ہلکی سی جھانکی ہے. ان فوجوں میں حالانکہ سب پٹھان ہی نہیں تھے، پھر بھی پٹھانوں نے ان فوجوں کو اُبھارنے میں بہت بڑا حصہ لیا تھا اور اُس کے بعد اُن کے کندھے سے کندھا ملا کر سب طرح کے ظلم بھی سہے تھے.

इसके अलावा सरहद से बाहर भी हिन्दुस्तान मे जहाँ भी पठान थे, वहाँ उन्होंने इस इन्क़लाब मे एक खास हिस्सा लिया. इतना तो सभी को मालूम है कि महारानी लक्ष्मीबाई के साथ एक टुकड़ी पठानो की भी थी, जो बिलकुल आखीर तक पूरी वफादारी के साथ महारानी का साथ देती रही. महारानी ने लड़ाई के मैदान मे घायल होकर जब प्रान छोड़े, तब भी उनके साथ एक पठान ही था, जिसका नाम गुल मोहम्मद था. उसने यह ज़िम्मा लिया था कि महारानी की चिता को अँग्रेज़ सिपाहियो के हाथो नापाक नहीं होने देगा और उसने इस काम को पूरा भी कर दिखाया था.

सन् १८५७ के बाद

१८५७ की आज़ादी की लड़ाई कुचल दी गई और बहुत से इन्क़लाबियो को फाँसी पर चढ़ा कर और बहुतो को माफी देकर सरकार ने अपनी जानकारी में आज़ादी का एक भी नाम लेवा हिन्दुस्तान मे नही रहने दिया. इसके बाद हुकूमत का भी रुख कुछ बदला और कम्पनी सरकार की जगह अब इंग्लैंड की सरकार ने हिन्दुस्तान की हुकूमत की बागडोर अपने हाथ मे ली. इससे हिन्दुस्तान को थोड़ी सी तसल्ली हुई, लेकिन सरहदी पठानों की किस्मत में अब और भी ज्यादा दुख बदे थे. वह किसी भी कीमत पर ब्रिटिश हुकूमत को मानने के लिये तय्यार नहीं थे. इसीलिये १८५९ से लेकर १८६३ के बीच मे लगभग चार दफा अँग्रेजी फौजों को पठानों के मुल्क मे जाना पड़ा, जिसमे कुल मिला कर साठ हजार सरकारी सिपाहियों ने हिस्सा लिया इसके बाद गवर्नमेन्ट को पता

اس کے علاوہ سرحد سے باہر بھی ہندستان میں جہاں بھی پٹھان تھے، وہاں اُنھوں نے اس انقلاب میں ایک خاص حصہ لیا۔ اتنا تو سبھی کو معلوم ہے کہ مہارانی لکشمی بائی کے ساتھ ایک ٹکڑی پٹھانوں کی بھی تھی، جو بالکل آخیر تک پوری وفاداری کے ساتھ مہارانی کا ساتھ دیتی رہی۔ مہارانی نے لڑائی کے میدان میں گھائل ہوکر جب پران چھوڑے، تب بھی اُن کے ساتھ ایک پٹھان ہی تھا، جس کا نام گل محمد تھا۔ اُس نے یہ ذمہ لیا تھا کہ مہارانی کی چتا کو انگریز سپاہیوں کے ہاتھوں ناپاک نہیں ہونے دے گا اور اُس نے اس کام کو پورا بھی کر دکھایا تھا۔

سنہ ۱۸۵۷ کے بعد

۱۸۵۷ کی آزادی کی لڑائی کچل دی گئی اور بہت سے انقلابیوں کو پھانسی پر چڑھا کر اور بہتوں کو معافی دے کر سرکار نے اپنی جانکاری میں ایک بھی نام لیوا ہندستان میں نہیں رہنے دیا۔ اس کے بعد حکومت کا بھی رُخ کچھ بدلا اور کمپنی سرکار کی جگہ اب انگلینڈ کی سرکار نے ہندستان کی حکومت کی باگ ڈور اپنے ہاتھ میں لی۔ اس سے ہندستان کو تھوڑی سی تسلی ہوئی، لیکن سرحدی پٹھانوں کی قسمت میں اب اور بھی زیادہ دکھ بدے تھے۔ وہ کسی بھی قیمت پر برٹش حکومت کو ماننے کے لئے تیار نہیں تھے۔ اسی لئے ۱۸۵۹ سے لے کر ۱۸۶۳ کے بیچ میں لگ بھگ چار دفعہ انگریزی فوجوں کو پٹھانوں کے ملک میں جانا پڑا، جس میں کل ملا کر ساٹھ ہزار سرکاری سپاہیوں نے حصہ لیا۔ اس کے بعد گورنمنٹ کو پتہ

लगा कि पटना के दो भाई जिनका नाम मौलवी विलायत अली और मौलवी इनायत अली है, इस तमाम तहरीक की जान हैं. सरकार ने इन दोनों भाइयो को दबाव डाल कर हिन्दुस्तान मे वापस बुला लिया, लेकिन कुछ ही दिन बाद यह तमाम खानदान अपनी जायदाद बेचकर वापस सतियाना चला गया. इसके बाद सरकार ने १८६४ से लेकर सन् १८७० के बीच मे पाँच बड़े बड़े मुकदमे चलाये. जिसमे एक मुकदमा 'अम्बाला की साजिश' के नाम से बहुत मशहूर हुआ. इस मुकदमे मे पटना और पजाब व दिल्ली के कुछ बड़े-बड़े मौलवी और मुसलमान जमींदार थे. जिन पर यह इलजाम लगाया गया था कि वह सतियाना कैम्प को रुपया पैसा और आदमी भेजा करते थे. यह हकीकत भी आँखे खोल देने लायक है कि एक तरफ अगर इस मुकदमे के तमाम मुलजिम मुसलमान थे, तो दूसरी तरफ जितने भी सरकारी गवाह थे, वह भी मुसलमान और मुसलमानो मे भी मुल्ला-मौलवी थे. इन सरकारी गवाहो मे एक साहब, जिनका नाम गज्जन खाँ था, सिर्फ यही काम करते थे कि बेकसूर मुसलमानो को मुकदमे मे फँसा देते थे और फिर उनको तरह-तरह से परेशान कराते थे. मौलाना मुहम्मद जाफर थानेश्वरी ने, जिनको इस मुकदमे मे कालेपानी की सजा हुई थी, इन तमाम वाकायात को अपनी किताब 'कालापानी' मे बहुत तफसील से लिखा है, जिनको पढ़ कर उन लोगो पर बेहद हँसी और गुस्सा आता है, जो दिन रात यही प्रचार करते रहते हैं, कि हिन्दू कभी दगा नही देता या मुसलमान कभी दगा नही देता. हम न जाने कब इस सचाई को समझेंगे कि हर

لگا کہ پٹنہ کے دو بھائی جن کا نام مولوی ولایت علی اور مولوی عنایت علی ہے، اِس تمام تحریک کی جان ہیں. سرکار نے اِن دونوں بھائیوں کو دباؤ ڈال کر ہندستان میں واپس بُلا لیا، لیکن کچھ ہی دن بعد یہ تمام خاندان اپنی جائداد بیچ کر واپس ستیانا چلا گیا. اِس کے بعد سرکار نے سنہ ۱۸۶۴ء سے لے کر سنہ ۱۸۷۰ء کے بیچ میں پانچ بڑے بڑے مقدمے چلائے، جس میں ایک مقدمہ 'انبالہ کی سازش' کے نام سے بہت مشہور ہوا. اس مقدمے میں پٹنہ اور پنجاب و دلّی کے کچھ بڑے بڑے مولوی اور مسلمان زمیندار تھے، جن پر یہ الزام لگایا گیا تھا کہ وہ ستیانا کیمپ کو روپیہ پیسہ اور آدمی بھیجا کرتے تھے. یہ حقیقت بھی آنکھیں کھول دینے لائق ہے کہ ایک طرف اگر اس مقدمے کے تمام ملزم مسلمان تھے، تو دوسری طرف جتنے بھی سرکاری گواہ تھے، وہ بھی مسلمان اور مسلمانوں میں بھی مُلّا مولوی تھے. ان سرکاری گواہوں میں ایک صاحب، جن کا نام غزن خاں تھا، صرف یہی کام کرتے تھے کہ بے قصور مسلمانوں کو مقدمے میں پھنسا دیتے تھے اور پھر اُن کو طرح طرح سے پریشان کراتے تھے. مولانا محمد جعفر تھانیسری نے، جن کو اس مقدمے میں کالے پانی کی سزا ہوئی تھی. ان تمام واقعات کو اپنی کتاب 'کالا پانی' میں بہت تفصیل سے لکھا ہے، جن کو پڑھ کر اُن لوگوں پر بیحد ہنسی اور غصہ آتا ہے، جو دن رات یہی پرچار کرتے رہتے ہیں، کہ ہندو کبھی دغا نہیں دیتا یا مسلمان کبھی دغا نہیں دیتا. ہم نہ جانے کب اس سچائی کو سمجھیں گے کہ ہر

एक क़ौम मे सभी तरह के आदमी होते है, और देश भक्ति, वफ़ादारी या इसी तरह के दूसरे गुण किसी खास फ़िर्के की बपौती नहीं है. यह मुकद्से किसी तरह खतम हुए और फिर उसके बाद भी सरहद मे छुट-पुट हमले तो होते ही रहे, जो कि उस इलाक़े के लिये कोई खास बात नहीं है, लेकिन ऐसी बड़ी लड़ाई जिसने अँग्रेज सरकार को थर्रा दिया हो, १८९७ मे फिर शुरू हुई लेकिन इस लड़ाई मे एक कमज़ोरी यह थी. कि पठानो के कबीले एक एक करके अँग्रेजो के मुकाबले मे आये और अपनी इस गलती के नतीजे मे उनको हार जाना पड़ा. यहाँ यह याद कर लेना चाहिये कि दिल्ली मे मुसलमानो का वह वलीउल्लाही सगठन, जो पिछली एक सदी से हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये कोशिश कर रहा था और सरहद का मशहूर सतियाना कैम्प, जिसकी एक शाख था, सन् १८५७ के इन्कलाब मे पूरी तरह पीसे जाने के बाद भी देवबन्द मे अपना सगठन कायम कर चुका था और उस वक़्त मौलाना महमूदुलहसन साहब को नेता बना कर पूरे ज़ोर शोर से काम कर रहा था. दूसरी तरफ सतियाना कैम्प के बचे खुचे लोगों ने मुल्ला हुद्दा साहब को अपना नेता मान कर फिर से अपना संगठन शुरू कर दिया था.

इन्डियन नेशनल काँग्रेस की हमदर्दी

यह बात मालूम करके आप लोगों को तो हैरत ही होगी कि सन् १८९७ के उस ज़माने मे जब हमारे बड़े बड़े नेता पहिले सरकार की वफ़ादारी की सौ-सौ कसमें खाते थे और

ایک قوم میں سبھی طرح کے آدمی ہوتے ہیں، اور دیش بھکتی، وفاداری یا اسی طرح کے دوسرے گن کسی خاص فرقے کی بپوتی نہیں ہے۔ یہ مقدمے کسی طرح ختم ہوئے اور پھر اس کے بعد بھی سرحد میں چھٹ پُٹ حملے تو ہوتے ہی رہے، جو کہ اس علاقے کے لئے کوئی خاص بات نہیں ہیں، لیکن ایسی بڑی لڑائی جس نے انگریز سرکار کو تھرا دیا ہو، ۱۸۹۷ میں پھر شروع ہوئی. لیکن اس لڑائی میں ایک کمزوری یہ تھی کہ پٹھانوں کے قبیلے ایک ایک کرکے انگریزوں کے مقابلے میں آئے اور اپنی اس غلطی کے نتیجے میں اُن کو ہار جانا پڑا۔ یہاں یہ یاد کر لینا چاہیئے کہ دلّی میں مسلمانوں کا وہ ولی اللّٰہی سنگٹھن، جو پچھلی ایک صدی سے ہندستان کی آزادی کے لئے کوشش کر رہا تھا اور سرحد کا مشہور ستیانا کیمپ، جس کی ایک شاخ تھا، سنہ ۱۸۵۷ کے انقلاب میں پوری طرح پیسے جانے کے بعد بھی دیوبند میں اپنا سنگٹھن قائم کر چکا تھا اور اُس وقت مولانا محمود الحسن صاحب کو نیتا بنا کر پورے زور شور سے کام کر رہا تھا۔ دوسری طرف ستیانا کیمپ کے بچے کھچے لوگوں نے ملا ہدّے صاحب کو اپنا نیتا مان کر پھر سے اپنا سنگٹھن شروع کر دیا تھا۔

انڈین نیشنل کانگریس کی ہمدردی

یہ بات معلوم کرکے آپ لوگوں کو تو حیرت ہی ہوگی کہ سنہ ۱۸۹۷ کے اس زمانے میں جب ہمارے بڑے بڑے نیتا پہلے سرکار کی وفاداری کی سو سو قسمیں کھاتے تھے اور

उसके बाद अपनी कुछ मामूली सी माँगें दबी ज़बान से जनता के सामने रखते थे, कम से कम सरहद के मामले मे अपना दिमाग़ साफ़ रखते थे. सन् १८९७ मे अमरावती मे कॉग्रेस का जो जलसा हुआ था, उसमे सर दिनशा एदल जी वाचा ने बड़ी साफ़गोई के साथ सरहद पर अँग्रेज़ी फौजो को भेजने का विरोध किया था. इसके दूसरे साल सन् १८९८ मे श्री सुब्रहण्य अय्यर ने भी मद्रास के जलसे मे सरहद पर फौजी कारवाई करने की सख्त लफ्जों मे निन्दा की थी और हमारे पाठक इस हक़ीक़त को भी आँख खोल कर पढ़ ले कि उसी वक्त जब कि कॉग्रेस उन पठानो के ख़िलाफ फौजें भेजने की मुखालफत कर रही थी, जिनको अंग्रेज़ अफसर हिन्दू और सिक्खों के लिये एक बड़ा हौआ बताते थे, सर सय्यद की सरपरस्ती मे चलने वाली मोहमडन औरिन्टियल डिफेन्स ऐसोसियेशन' के मुसलमान मेम्बरो ने अपने १८९८ के एक जलसे मे एक रेज्यूलेशन के जरिये सरकार से यह माँग की थी कि सरहद पर ज्यादा फौजें बढ़ाई जायँ, जिससे वहाँ के पठानो को काबू मे लाया जा सके. इस रेज्यूलेशन को खुद सर सय्यद अहमद साहब ने रक्खा था और इसकी ताईद मे उन्होने जो तकरीर की थी, उसमे उन्होने कहा था, कि मेरे ख़याल से सरहद पर उतने अंग्रेज़ सिपाही नहीं हैं, जितने होने चाहियें और एक मौके पर मैंने ख़ुद यह बात लार्ड डफरिन को अच्छी तरह समझा दी थी.

इस तरह उस वक़्त यह एक दिलचस्प नज़ारा था कि सरहदी **पठानों की बाबत एक तरफ तो सरकार यह** प्रचार करती थी कि

اُس کے بعد اپنی کچھ معمولی سی مانگیں دبی زبان سے جنتا کے سامنے رکھتے تھے، کم سے کم سرحد کے معاملے میں اپنا دماغ صاف رکھتے تھے. سنہ ۱۸۹۷ میں امراوتی میں کانگریس کا جو جلسہ ہوا تھا، اُس میں سر دنشا ایدل جی واچا نے بڑی صاف گوئی کے ساتھ سرحد پر انگریزی فوجوں کو بھیجنے کا وِرودھ کیا تھا. اِس کے دوسرے سال سنہ ۱۸۹۸ میں شری سُبرہمنیہ ایّر نے بھی مدراس کے جلسہ میں سرحد پر فوجی کارروائی کرنے کی سخت لفظوں میں نِندا کی تھی اور ہمارے پاٹھک اِس حقیقت کو بھی آنکھ کھول کر پڑھ لیں کہ اُسی وقت جب کہ کانگریس اُن پٹھانوں کے خلاف فوجیں بھیجنے کی مخالفت کر رہی تھی، جن کو انگریز افسر ہندو اور سکھوں کے لئے ایک بڑا ہوّا بتاتے تھے، سر سیّد کی سرپرستی میں چلنے والی محمڈن اورینٹیل ڈیفنس ایسوسی ایشن، کے مسلمان ممبروں نے اپنے ۱۸۹۸ کے ایک جلسے میں ایک ریزولیوشن کے ذریعے سرکار سے یہ مانگ کی تھی کہ سرحد پر زیادہ فوجیں بڑھائی جائیں، جس سے وہاں کے پٹھانوں کو قابو میں لایا جا سکے. اِس ریزولیوشن کو خود سر سیّد احمد صاحب نے رکھا تھا اور اِس کی تائید میں اُنھوں نے جو تقریر کی تھی، اُس میں اُنھوں نے کہا تھا، کہ میرے خیال سے سرحد پر اتنے انگریز سپاہی نہیں ہیں، جتنے ہونے چاہئیں اور ایک موقع پر میں نے خود یہ بات لارڈ ڈفرن کو اچھی طرح سمجھا دی تھی.

اِس طرح اُس وقت یہ ایک دلچسپ نظارہ تھا کہ سرحدی پٹھانوں کی بابت ایک طرف تو سرکار یہ پرچار کرتی تھی کہ

पठान हिन्दू और सिक्खों के लिये एक भयानक ख़तरा हैं, और इस्लाम का मज़हबी जोश उनमे भरा हुआ है और दूसरी तरफ सर सय्यद अहमद जैसे मुसलमान और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द जैसे हिन्दू सरकार के इशारे पर यह माँग कर रहे थे कि इन बाग़ी पठानो के खिलाफ सख़्त से सख़्त कारवाई की जाय. जब कि कॉम्रेस मे शामिल देश भक्त हिन्दू-मुसलमान-पारसी और ईसाई सरकारी पालिसी की मुख़ालफत करके पठानो के साथ हमदर्दी ज़ाहिर कर रहे थे. हमारा खयाल है कि अगर हम इस वाकये पर ज़रा गहराई के साथ गौर करें, तो हिन्दुस्तान की पिछले दो सौ बरस की पूरी सियासत आसानी से हमारी समझ मे आ सकती है.

सन् १८९७ की पठानों की यह आजादी की लड़ाई कुचल तो दी गई, लेकिन अँग्रेज़ो ने यह महसूस किया कि कुछ ऐसा काम करने की भी जरूरत है, जिससे पठानो के दिल मे हमारे लिये कुछ यकीन पैदा हो सके या कम से कम वह सरहदी सरदार जो किसी लालच या दबाव से हमारे साथ आ गये हैं, हमारी हिमायत मे आम पठान जनता से कुछ कह सकें. इसी लिये सन् १९०१ में सरहदी सूबे को एक अलग सूबा बनाया गया, जब कि अभी तक वह और सिन्ध के चार ज़िले पंजाब सूबे के ही हिस्से बने हुए थे. अब सरहद एक अलग सूबा बना और उस के लिये अलग क़ानून बनाये गये. इसमे अँग्रेज़ों को एक बड़ी सहूलियत यह हो गई कि अब वह कुछ बड़े बड़े पठानों को ऊँची ऊँची जगह देकर उनसे हमदर्दी हासिल कर सकते थे और सचमुच हुआ भी यही. यह

پٹھان ہندو اور سکھوں کے لئے ایک بھیانک خطرہ ہیں، اور اسلام کا مذہبی جوش اُن میں بھرا ہوا ہے اور دوسری طرف سرسیّد احمد جیسے مسلمان اور راجہ شیو پرساد ستارۂ ہند جیسے ہندو سرکار کے اشارے پر یہ مانگ کر رہے تھے کہ ان باغی پٹھانوں کے خلاف سخت سے سخت کارروائی کی جائے. جب کہ کانگریس میں شامل دیش بھکت ہندو مسلمان پارسی اور عیسائی سرکاری پالیسی کی مخالفت کرکے پٹھانوں کے ساتھ ہمدردی ظاہر کر رہے تھے۔ ہمارا خیال ہے کہ اگر ہم اس واقعہ پر ذرا گہرائی کے ساتھ غور کریں، تو ہندستان کی پچھلے دو سو برس کی پوری سیاست آسانی سے ہماری سمجھ میں آسکتی ہے.

سنہ ۱۸۹۷ کی پٹھانوں کی یہ آزادی کی لڑائی کچل تو دی گئی، لیکن انگریزوں نے یہ محسوس کیا کہ کچھ ایسا کام کرنے کی بھی ضرورت ہے، جس سے پٹھانوں کے دل میں ہمارے لئے کچھ یقین پیدا ہوسکے یا کم سے کم وہ سرحدی سردار جو کسی لالچ یا دباؤ سے ہمارے ساتھ آگئے ہیں، ہماری حمایت میں عام پٹھان جنتا سے کچھ کہہ سکیں. اسی لئے سنہ ۱۹۰۱ میں سرحدی صوبے کو ایک الگ صوبہ بنایا گیا، جب کہ ابھی تک وہ اور سندھ کے چار ضلع پنجاب صوبے کے ہی حصے بنے ہوئے تھے. اب سرحد ایک الگ صوبہ بنا اور اُس کے لئے الگ قانون بنائے گئے. اس میں انگریزوں کو ایک بڑی سہولیت یہ ہوگئی کہ اب وہ کچھ بڑے بڑے پٹھانوں کو اونچی اونچی جگہ دیکر اُن سے ہمدردی حاصل کرسکتے تھے اور سچ مچ ہوا بھی یہی. یہ

कहा जा सकता है कि इसी जमाने से सरहद मे ऐसे पठानो की पैदावार ज्यादा बढ़ गई, जो अँग्रेजी हुकूमत के हाथो मे खुल कर खेलने लगे और उसके हर काम की आँख मूँद कर ताईद करने लगे.

तुरंगज़ई के हाजी साहब

लेकिन इसी जमाने मे पठानो को एक ऐसा लीडर भी मिला जिसने पठानो की आजादी की लड़ाई मे एक नई जान डाल दी. यह थे हाजी फजल वाहिद साहब, जिनका ज़िक्र सरकारी रिपोर्टों मे तुरगजई के हाजी साहब के नाम से किया गया है. पीरी मुरीदी के सिलसिले से हाजी सहाब भी वलीउल्लाही खानदान से ताल्लुक रखते थे और अपनी आजादी के लिये जग करते रहने की विरासत उनको अपने पीर मौलाना नजमुद्दीन साहब से मिली थी, जो सरहद की तवारीख मे मुल्ला हुद्दा के नाम से मशहूर हैं. एक बड़ी बात यह हुई कि तुरगजई के हाजी साहब और देवबन्द के मदरसे का आपस मे ताल्लुक कायम होगया और मदरसा देवबन्द के हेड मुदर्रिस जनाब मौलाना महमूदुलहसन साहब को हाजी साहब ने भी अपना लीडर मान लिया और उनके ही कहने के मुताबिक काम करने लगे इस तरह सन् १८२५-२६ मे वलीउल्लाही जमात की सरहदी शाख और दिल्ली के मदरसे का जो रिश्ता टूट गया था वह सन् १९०७-८ मे यानी करीब ८४ साल बाद फिर कायम हो गया और इसका असर यह पड़ा कि पठानो की आजादी की लड़ाई जो एक घरेलू शक्ल अख्तियार करती जा रही थी, वह फिर

کہا جا سکتا ہے کہ اسی زمانے سے سرحد میں ایسے پٹھانوں کی پیداوار زیادہ بڑھ گئی، جو انگریزی حکومت کے ہاتھوں میں کھل کر کھیلنے لگے اور اس کے ہر کام کی آنکھ موند کر تائید کرنے لگے۔

ترنگ زئی کے حاجی صاحب

لیکن اسی زمانے میں پٹھانوں کو ایک ایسا لیڈر بھی ملا جس نے پٹھانوں کی آزادی کی لڑائی میں ایک نئی جان ڈال دی۔ یہ تھے حاجی فضل واحد صاحب، جن کا ذکر سرکاری رپورٹوں میں ترنگ زئی کے حاجی صاحب کے نام سے کیا گیا ہے۔ پیری مریدی کے سلسلے سے حاجی صاحب بھی ولی اللہی خاندان سے تعلق رکھتے تھے اور اپنی آزادی کے لئے جنگ کرتے رہنے کی وراثت ان کو اپنے پیر مولانا نجم الدین صاحب سے ملی تھی، جو سرحد کی تواریخ میں ملا ہڈا کے نام سے مشہور ہیں۔ ایک بڑی بات یہ ہوئی کہ ترنگ زئی کے حاجی صاحب اور دیوبند کے مدرسے کا آپس میں تعلق قائم ہو گیا اور مدرسہ دیوبند کے ہیڈ مدرس جناب مولانا محمود الحسن صاحب کو حاجی صاحب نے بھی اپنا لیڈر مان لیا اور ان کے ہی کہنے کے مطابق کام کرنے لگے۔ اس طرح ۱۸۲۵-۲۶ء میں ولی اللہی جماعت کی سرحدی شاخ اور دلی کے مدرسے کا جو رشتہ ٹوٹ گیا تھا وہ ۱۹۰۷-۸ء میں یعنی قریب ۸۴ سال بعد پھر قائم ہو گیا اور اس کا اثر یہ پڑا کہ پٹھانوں کی آزادی کی لڑائی جو ایک گھریلو شکل اختیار کرتی جا رہی تھی، وہ پھر

हार दी. अगर कहीं उस वक़्त काबुल के उस ज़माने के अमीर हबीबुल्ला साहब अंग्रेज़ों की दोस्ती से हाथ खींच लेते, तो जर्मनी में हिन्दुस्तानी इन्क़लाबियों की कमेटी के कहने पर जर्मनी और टर्की भी इस रास्ते अपनी फ़ौजें भेजने को तय्यार थे और सरहदी पठानों का सगठन हाजी साहब ने कर ही रक्खा था, इसके बाद पंजाब का सूबा था जिसके गाँव-गाँव में ग़दर पार्टी के सिख मौक़े की तलाश में तमाम तय्यारियों से लैस बैठे हुए थे और फिर इसके बाद यू० पी० से लेकर बंगाल तक हिन्दुस्तान के मशहूर इन्क़लाबी श्री रास बिहारी बोस का दल था और बंगाल की 'अनुशीलन समिति' व दूसरी इन्क़लाबी जमातें थीं, जिनका आपस में काफ़ी मज़बूत सगठन था. लेकिन क़िस्मत की बात थी कि अमीर हबीबुल्ला साहब एक तरफ़ तो राजा महेन्द्र प्रताप वग़ैरा से मिले रहे और दूसरी तरफ़ इनके तमाम इरादों की इत्तिला अंग्रेज़ों को भी देते रहे. इसके बाद कृपाल सिंह नाम के एक मुख़बिर ने ग़दर पार्टी का पञ्जाब वाला सगठन भी नेस्तनाबूद करा दिया और उधर काबुल से भेजे गये वह ख़त भी पकड़ लिये गये, जो काबुल की आज़ाद हिन्द सरकार के होम मिनिस्टर मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी ने एक रेशमी थान पर फूलों की शक्ल में लिखवाये थे और आचार्य कृपलानी के बड़े भाई साहब के पास एक आदमी के ज़रिये भिजवाये थे कि वह उनको मौलाना महमूदुलहसन साहब के पास या तो .ख़ुद मक्का ले जायँ या किसी तरह भिजवादें. इन ख़तों के पकड़ जाने की वजह से सरकार चौकन्नी हो गई और सन् १९१४ मे सन् १८५७ की जो कहानी दुहराई जाने वाली थी,

ہار دی۔ اگر کہیں اس وقت کابل کے اس زمانے کے امیر حبیب اللہ صاحب انگریزوں کی دوستی سے ہاتھ کھینچ لیتے تو جرمنی میں ہندستانی انقلابیوں کی کمیٹی کے کہنے پر جرمنی اور ٹرکی بھی اس راستے اپنی فوجیں بھیجنے کو تیار تھے اور سرحدی پٹھانوں کا سنگٹھن حاجی صاحب نے کر ہی رکھا تھا، اس کے بعد پنجاب کا صوبہ تھا جس کے گاؤں گاؤں میں غدر پارٹی کے سکھ موقع کی تلاش میں تمام تیاریوں سے لیس بیٹھے ہوئے تھے اور پھر اس کے بعد یو۔پی سے لیکر بنگال تک ہندستان کے مشہور انقلابی سری راس بہاری بوس کا دل تھا اور بنگال کی 'انوشیلن سمیتی' و دوسری انقلابی جماعتیں تھیں، جن کا آپس میں کافی مضبوط سنگٹھن تھا۔ لیکن قسمت کی بات تھی کہ امیر حبیب اللہ صاحب ایک طرف تو راجہ مہندر پرتاپ وغیرہ سے ملے رہے اور دوسری طرف ان کے تمام ارادوں کی اطلاع انگریزوں کو بھی دیتے رہے۔ اس کے بعد کرپال سنگھ نام کے ایک مخبر نے غدر پارٹی کا پنجاب والا سنگٹھن بھی نیست نابود کرا دیا اور ادھر کابل سے بھیجے گئے وہ خط بھی پکڑ لئے گئے جو کابل کی آزاد ہند سرکار کے ہوم منسٹر مولانا عبیداللہ سندھی نے ایک ریشمی تھان پر پھولوں کی شکل میں لکھوائے تھے اور آچاریہ کرپلانی کے بڑے بھائی صاحب کے پاس ایک آدمی کے ذریعہ بھجوائے تھے کہ وہ ان کو مولانا محمود الحسن صاحب کے پاس یا تو۔ خود مکّہ لے جائیں یا کسی طرح بھجوا دیں۔ ان خطوں کے پکڑے جانے کی وجہ سے سرکار چوکنی ہو گئی اور ۱۹۱۴ء میں ۱۸۵۷ء کی جو کہانی دہرائی جانے والی تھی،

उसकी तमाम स्कीम धूल में मिला दी गई. हाँ, इतना ज़रूर हुआ कि सरहदी इलाक़े में तुरंगज़ई के हाजी साहब की रहनुमाई में जो जंग चलती रही, उसमें कई हज़ार अंग्रेज़ी फ़ौज के सिपाही और कई हज़ार पठान मारे गये. लेकिन आज हम अपने देश के इन पठान शहीदों की तवारीख़ से बिलकुल ही बे ख़बर हैं.

अफ़ग़ानिस्तान का हमला और उसके बाद

अफ़ग़ानिस्तान के उस ज़माने के अमीर हबीबुल्ला साहब ने उस वक़्त अंग्रेज़ों का जो साथ दिया, उसी का यह नतीजा हुआ कि कुछ ही दिन बाद वह क़त्ल कर दिये गये. यह कहा जाता है कि इस क़त्ल मे हिन्दुस्तान के कुछ उन इन्क़लाबियो का भी हाथ था, जो उस वक़्त काबुल मे थे और काबुल की मदद से हिन्दुस्तान को आज़ाद करना चाहते थे.

इसके बाद अमीर अमानुल्ला ख़ाँ अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर बैठे. अमानुल्ला ख़ाँ शुरू से ही अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़ थे और उन पर हिन्दुस्तानी इन्कलाबियो का भी गहरा असर था. इसका नतीजा यह हुआ कि सन् १९१९ मे उन्होंने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दी. इस चढ़ाई का असल मंशा ही यह था कि काबुल की फ़ौजों की मदद से तुरंगज़ई के हाजी साहब की पठान फ़ौजे आगे बढ़ जयँ और फिर पंजाब के सिखों की मदद लेकर पूरे हिन्दुस्तान को आज़ाद कर दें. उस वक़्त काबुल मे हिन्दुस्तान के जो क्रान्तिकारी थे, उन्होंने अमीर अमानुल्ला ख़ाँ को यह उम्मीद दिलाई थी कि रौलट ऐक्ट से नाराज़ हिन्दुस्तान अफ़ग़ान फ़ौजो

اس کی تمام اسکیم دھول میں ملا دی گئی۔ ہاں، اتنا ضرور ہوا کہ سرحدی علاقوں میں ترنگ زئی کے حاجی صاحب کی رہنمائی میں جو جنگ چلتی رہی، اس میں کئی ہزار انگریزی فوج کے سپاہی اور کئی ہزار پٹھان مارے گئے۔ لیکن آج ہم اپنے دیش کے ان پٹھان شہیدوں کی تواریخ سے بالکل ہی بے خبر ہیں۔

افغانستان کا حملہ اور اس کے بعد

افغانستان کے اس زمانے کے امیر حبیب اللہ صاحب نے اس وقت انگریزوں کا جو ساتھ دیا، اسی کا یہ نتیجہ ہوا کہ کچھ ہی دن بعد وہ قتل کر دئے گئے۔ یہ کہا جاتا ہے کہ اس قتل میں ہندستان کے کچھ ان انقلابیوں کا بھی ہاتھ تھا، جو اس وقت کابل میں تھے اور کابل کی مدد سے ہندستان کو آزاد کرنا چاہتے تھے۔

اس کے بعد امیر امان اللہ خاں افغانستان کی گدی پر بیٹھے۔ امان اللہ خاں شروع سے ہی انگریزوں کے خلاف تھے اور ان پر ہندستانی انقلابیوں کا بھی گہرا اثر تھا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ۱۹۱۹ء میں انھوں نے ہندستان پر چڑھائی کر دی۔ اس چڑھائی کا اصل منشا ہی یہ تھا کہ کابل کی فوجوں کی مدد سے ترنگ زئی کے حاجی صاحب کی پٹھان فوجیں آگے بڑھ جائیں اور پھر پنجاب کے سکھوں کی مدد لے کر پورے ہندستان کو آزاد کر دیں۔ اس وقت کابل میں ہندستان کے جو کرانتکاری تھے، انھوں نے امیر امان اللہ خاں کو یہ امید دلائی تھی کہ رولٹ ایکٹ سے ناراض ہندستان افغان فوجوں

के आगे बढ़ते ही अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बग़ावत कर देगा. लेकिन ऐसा नहीं हो सका और उधर अंग्रेज़ों ने फ़ुर्ती से अफ़ग़ानिस्तान के साथ समझौता कर लिया. इस तरह उन पठानों को एक बार फिर गहरी नाउम्मीदी का सामना करना पड़ा, जो हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये अपना सब कुछ दाँव पर लगा चुके थे.

यह कितने दुख की बात है कि हालाँ कि इस तहरीक मे राजा महेन्द्र प्रताप जी जैसे हिन्दू और डाक्टर मथुरा सिंह जी (जिनको बाद मे फाँसी हो गई) जैसे सच्चे सिख शामिल थे, फिर भी कुछ फ़िरक़ापरस्त हिन्दू जमातों ने अंग्रेज़ो की नकल करते हुए इसे फ़िरका वाराना रंग में रंग दिया है और इस सिलसिले मे महात्मा गांधी तक को काफ़ी बदनाम किया गया है. हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े हिन्दू फ़िरकापरस्त लीडर ने तो इसी वाक़ये की बिना पर 'गान्धी मुस्लिम कान्सप्रेसी' नाम की एक मोटी किताब ही लिख डाली है, जिसका गान्धी जी के क़त्ल से कुछ ही दिन पहिले धुआँ धार प्रचार किया गया था. इस किताब मे यह दिखाया गया है कि गान्धी जी ने मौलाना मुहम्मद अली वग़ैरा से साज़िश करके हिन्दुस्तान के ऊपर काबुल की हुकूमत लादने की कोशिश की थी और इसी लिये उन्होने अमीर अमानुल्ला को यह तार दिया था कि वह अंग्रेज़ो के साथ समझौता न करें. यह ठीक है कि गान्धी जी ने इस मज़मून का तार दिया था; लेकिन उसमें उनकी भावना यह थी, कि एक पड़ोसी के नाते अफ़ग़ानिस्तान को अंग्रेज़ सरकार पर यह दबाव डालना चाहिये कि वह हिन्दुस्तान के मामले में इन्साफ़ से काम ले. समझ

کے آگے بڑھتے ہی انگریزوں کے خلاف بغاوت کر دے گا۔ لیکن ایسا نہیں ہو سکا اور ادھر انگریزوں نے پھرتی سے افغانستان کے ساتھ سمجھوتہ کر لیا۔ اس طرح ان پٹھانوں کو ایک بار پھر گہری ناامیدی کا سامنا کرنا پڑا، جو ہندستان کی آزادی کے لئے اپنا سب کچھ داؤں پر لگا چکے تھے

یہ کتنے دکھ کی بات ہے کہ حالانکہ اس تحریک میں راجہ مہندر پرتاب جی جیسے ہندو اور ڈاکٹر متھرا سنگھ جی (جن کو بعد میں پھانسی ہو گئی) جیسے سچے سکھ شامل تھے، پھر بھی کچھ فرقہ پرست ہندو جماعتوں نے انگریزوں کی نقل کرتے ہوئے اسے فرقہ وارانہ رنگ میں رنگ دیا ہے اور اس سلسلے میں مہاتما گاندھی تک کو کافی بدنام کیا گیا ہے۔ ہندستان کے ایک بہت بڑے ہندو فرقہ پرست لیڈر نے تو اسی واقعہ کی بنا پر 'گاندھی مسلم کانسپریسی' نام کی ایک موٹی کتاب ہی لکھ ڈالی ہے، جس کا گاندھی جی کے قتل سے کچھ ہی دن پہلے دھواں دھار پرچار کیا گیا تھا۔ اس کتاب میں یہ دکھایا گیا ہے کہ گاندھی جی نے مولانا محمد علی وغیرہ سے سازش کر کے ہندستان کے اوپر کابل کی حکومت لا دنے کی کوشش کی تھی اور اسی لئے انھوں نے امیر امان اللہ کو یہ تار دیا تھا کہ وہ انگریزوں کے ساتھ سمجھوتہ نہ کریں۔ یہ ٹھیک ہے کہ گاندھی جی نے اس مضمون کا تار دیا تھا؛ لیکن اس میں ان کی بھاؤنا یہ تھی، کہ ایک پڑوسی کے ناتے افغانستان کو انگریز سرکار پر یہ دباؤ ڈالنا چاہیئے کہ وہ ہندستان کے معاملے میں انصاف سے کام لے۔ سمجھ

में नहीं आता कि इस तरह की माँग करना क्या बेजा था ? इतना तो सभी जानते हैं कि सन् १८५७ में नाना धू धू पन्त पेशवा का दूत अजीमुल्ला खाँ रूस, टर्की और इसी तरह के दूसरे दूसरे मुल्कों में अंग्रेजों के खिलाफ मदद हासिल करने गया था और नाना साहब वग़ैरा ने काबुल के अमीर दोस्त मुहम्मद से भी मदद हासिल करने की कोशिश की थी. इसके बाद ला० हरदयाल जी वग़ैरा न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की और वहाँ से हथियार वग़ैरा भी भिजवाये और अगर मुसलमान मुल्कों पर ही एतराज हो, तो यह सभी जानते हैं कि पंजाब के बहादुर देश-भक्त सरदार अजीत सिंह जी और सूफी अम्बा प्रसाद जी सन् १९०९-१० मे जब हिन्दुस्तान से भागे थे तो ईरान पहुँचे थे और उन्होंने ईरानियों की मदद लेने की कोशिश की थी. हाल मे ही सुभाष बाबू ने भी जापान की मदद से हिन्दुस्तान को आजाद कराने की कोशिश की थी, लेकिन हम इन तमाम देश भक्तों को अपना हीरो मानते हैं. फिर अगर मौलाना महमूदुलहसन साहब और मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी साहब और तुरगज़ई के हाजी साहब ने काबुल की मदद लेने की कोशिश की थीं, तो हम न जाने क्यो उन पर शक करने लगते हैं. भगवान् जाने, इस बेहूदा तग दिली से हमारा कब पीछा छूटेगा.

काबुल के इस हमले के बाद यह कहा जा सकता है कि पठानों की वह जमात जो हथियारो के जरिये पूरे हिन्दुस्तान को आजाद करा देना चाहती थी, एक तरह से खत्म सी हो गई, या यह कहना ज्यादा मुनासिब होगा कि उसने अपने काम को एक छोटे से हलक़े

یں نہیں آتا کہ اس طرح کی مانگ کرنا کیا بے جا تھا؟ اتنا تو سب ہی جانتے ہیں کہ سنہ ۱۸۵۷ء میں نانا دھو دھو پنت پیشوا کا دوت عظیم اللہ خان روس، ترکی اور اسی طرح کے دوسرے دوسرے ملکوں میں انگریزوں کے خلاف مدد حاصل کرنے گیا تھا اور نانا صاحب وغیرہ نے کابل کے امیر دوست محمد سے بھی مدد حاصل کرنے کی کوشش کی تھی۔ اس کے بعد لالہ ہردیال جی وغیرہ نہ جانے کتنے کرانتکاریوں نے جرمنی سے مدد لینے کی کوشش کی اور وہاں سے ہتھیار وغیرہ بھی بھجوائے اور اگر مسلمان ملکوں پر ہی اعتراض ہو، تو یہ سبھی جانتے ہیں کہ پنجاب کے بہادر دیش بھگت سردار اجیت سنگھ جی اور صوفی امبا پرشاد جی سنہ ۱۰-۱۹۰۹ء میں جب ہندستان سے بھاگے تھے تو ایران پہنچے تھے اور انھوں نے ایرانیوں کی مدد لینے کی کوشش کی تھی حال میں ہی سبھاش بابو نے بھی جاپان کی مدد سے ہندستان کو آزاد کرانے کی کوشش کی تھی، لیکن ہم ان تمام دیش بھگتوں کو اپنا ہیرو مانتے ہیں، پھر اگر مولانا محمود الحسن صاحب اور مولانا عبید اللہ سندھی صاحب اور ترنگ زئی کے حاجی صاحب نے کابل کی مدد لینے کی کوشش کی تھی، تو ہم نہ جانے کیوں ان پر شک کرنے لگتے ہیں. بھگوان جانے، اس بیہودہ تنگ دلی سے ہمارا کب پیچھا چھوٹے گا۔

کابل کے اس حملے کے بعد یہ کہا جا سکتا ہے کہ پٹھانوں کی وہ جماعت جو ہتھیاروں کے ذریعہ پورے ہندستان کو آزاد کرا دینا چاہتی تھی، ایک طرح سے ختم سی ہو گئی، یا یہ کہنا زیادہ مناسب ہو گا کہ اس نے اپنے کام کو ایک چھوٹے سے حلقے

में ही फिर महदूद कर लिया. तुरंगज़ई के हाजी साहब मेहमन्द इलाक़े से वापस नहीं लौटे और वह वहीं अपना काम करते रहे. पठानों मे आज़ादी की आग को बनाये रखने के लिये 'चिंगारी' नाम का वह एक अख़बार भी निकालते थे और हिन्दुस्तान के जो फ़रार क्रान्तिकारी काबुल के रास्ते होकर रूस जाते थे, उनकी वह काफ़ी मदद करते रहते थे. इसके बाद वह सिर्फ़ एक बार और अँग्रेज़ों के मुकाबले के लिये लड़ाई के मैदान मे उतरे. वह ज़माना सन् १९३० का था और उनके पुराने साथी और एक तरह से तो शागिर्द ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ अपने हज़ारों ख़ुदाई ख़िदमतगारों के साथ गिरफ़्तार हो चुके थे और अँग्रेज़ों ने पूरे सरहदी इलाक़े में जी भर के अत्याचार करने शुरू कर दिये थे. हाजी साहब इसे सहन नहीं कर सके और अपने लश्कर के साथ पेशावर पर चढ़ आये. उसके बाद सन् १९३५-३६ में तो उनका इन्तिक़ाल ही हो गया.

यह कहा जा सकता है कि हाजी साहब की कमी को किसी क़दर इपी के फ़क़ीर साहब ने पूरा किया, जो आज भी पठानों की आज़ादी के लिये सख़्त जद्दोजहद कर रहे हैं. सन् १९३६-३७ में फ़क़ीर साहब ने अँग्रेज़ों को जिस तरह छकाया था, उसकी याद शायद ही कभी अँग्रेज़ भूलेंगे. दुख की बात यह है कि फ़क़ीर साहब की बावत भी अँग्रेज़ों ने जो प्रोपेगन्डा किया, उसके हम सब शिकार हो गये हैं और ख़ास तौर पर हिन्दुस्तान के हिन्दू यह समझते रहे हैं कि इपी का फ़क़ीर एक बड़ा फ़िरक़ापरस्त डाकू है, जो हिन्दुओं का ख़ून बहाना और उनको बेइज़्ज़त करना अपना फ़र्ज़

میں ہی پھر محدود کر لیا۔ ترنگ زئی کے حاجی صاحب مہمند علاقے سے واپس نہیں لوٹے اور وہ وہیں اپنا کام کرتے رہے۔ پٹھانوں میں آزادی کی آگ کو بنائے رکھنے کے لئے 'چنگاری' نام کا وہ ایک اخبار بھی نکالتے تھے اور ہندستان کے جو فرار کرانتکاری کابل کے راستے ہو کر روس جاتے تھے، ان کی وہ کافی مدد کرتے رہتے تھے۔ اس کے بعد وہ صرف ایک بار اور انگریزوں کے مقابلے کے لئے لڑائی کے میدان میں اترے۔ وہ زمانہ ۱۹۳۰ء کا تھا اور ان کے پرانے ساتھی اور ایک طرح سے تو شاگرد خان عبدالغفار خاں اپنے ہزاروں خدائی خدمتگاروں کے ساتھ گرفتار ہو چکے تھے اور انگریزوں نے پورے سرحدی علاقوں میں جی بھر کے اتیاچار کرنے شروع کر دئے تھے۔ حاجی صاحب اسے سہن نہیں کر سکے اور اپنے لشکر کے ساتھ پشاور پر چڑھ آئے۔ اس کے بعد ۱۹۳۵-۳۶ء میں تو ان کا انتقال ہی ہو گیا۔

یہ کہا جا سکتا ہے کہ حاجی صاحب کی کمی کو کسی قدر اپی کے فقیر صاحب نے پورا کیا، جو آج بھی پٹھانوں کی آزادی کے لئے سخت جد وجہد کر رہے ہیں۔ ۱۹۳۶-۳۷ء میں فقیر صاحب نے انگریزوں کو جس طرح چھکایا تھا، اس کی یاد شاید ہی کبھی انگریز بھولیں گے۔ دکھ کی بات یہ ہے کہ فقیر صاحب کی بابت بھی انگریزوں نے جو پروپیگنڈا کیا، اس کے ہم سب شکار ہو گئے ہیں اور خاص طور پر ہندستان کے ہندو یہ سمجھتے رہے ہیں کہ اپی کا فقیر ایک بڑا فرقہ پرست ڈاکو ہے، جو ہندوؤں کا خون بہانا اور ان کو بے عزت کرنا اپنا فرض

समझता है. लेकिन बेहतर होगा कि आप इस सिलसिले मे बन्नू शहर से आये हुए किसी हिन्दू शरणार्थी से मिलें और तब वह आप को बतायेगा कि फ़क़ीर ने किस तरह क़रीब दो महीने तक हजारों बेबस हिन्दू और सिक्ख, को उन गुन्डों से हिफाज़त की जो फिरक़ापरस्ती मे अन्धे होकर उनके ख़ून के प्यासे हो रहे थे. इस सिलसिले में बन्नू के एक कॉंग्रेसी वकील ने, जिनका नाम देना मुनासिब नहीं होगा, और जो सरहदी सरकार के पार्लियामेन्ट्री सेक्रेट्री भी रह चुके हैं, इस लेख के लेखक को अपने ख़त में लिखा था—

"इपी का फकीर न लीग के साथ है और न कॉंग्रेस के. लेकिन वह कॉंग्रेस का मद्दाह ज़रूर है. क्योंकि यही जमात अंग्रेजो से हिन्द की मुखिलसी कराने पर तुली हुई है. वह इन ख़तरनाक दिनों मे बन्नू शहर को लूट मार से बचाने मे ख़ास तौर पर इमदादी रहा है और जब कुछ जिर्गे कबायली इलाके मे इस अम्र के फैसले के लिये बेकरार थे कि हमारा रुख़ क्या होना चाहिये, तो हाजी साहब फकीर इपी ने अपने ख़ासुलख़ास नुमाइन्दे वहाँ भेजे और वहाँ तजवीज़ भी पास हुई कि हमको हिन्दू और सिख को नहीं लूटना है. हमको अंग्रेज़ को अपने इलाके से निकालना है. इन दिनों मे काफी से ज्यादा कोशिश की गई कि कबायली बन्नू या डेरा इस्माईल खॉं शहर पर चढ़ाई करें और लूटमार करके वापस चले जायँ, लेकिन वह लोग अपने इरादों मे कामयाब नहीं हो सके और जब तक हाजी साहब फकीर इपी जिन्दा हैं, कभी वह ऐसा नहीं होने देंगे."

سمجھتا ہے۔ لیکن بہتر ہوگا کہ آپ اس سلسلے میں بنّوں شہر سے آئے ہوئے کسی ہندو شرنارتھی سے ملیں اور تب وہ آپ کو بتائے گا کہ فقیر نے کس طرح قریب دو مہینے تک ہزاروں بے بس ہندو اور سکھوں کی ان گنڈوں سے حفاظت کی جو فرقہ پرستی میں اندھے ہوکر ان کے خون کے پیاسے ہو رہے تھے۔ اس سلسلے میں بنّوں کے ایک کانگریسی وکیل نے، جن کا نام دینا مناسب نہیں ہوگا، اور جو سرحدی سرکار کے پارلیمنٹری سکریٹری بھی رہ چکے ہیں، اس لیکھ کے لیکھک کو اپنے خط میں لکھا تھا—

"ایپی کا فقیر نہ لیگ کے ساتھ ہے اور نہ کانگریس کے۔ لیکن وہ کانگریس کا مدّاح ضرور ہے۔ کیونکہ یہ جماعت انگریزوں سے مخلصی کرانے پر تلی ہوئی ہے۔ وہ ان خطرناک دنوں میں بنّوں شہر کو لوٹ مار سے بچانے میں خاص طور پر امدادی رہا ہے اور جب کچھ جرگے قبائلی علاقوں میں اس امر کے فیصلے کے لئے بیقرار تھے کہ ہمارا رخ کیا ہونا چاہیے، تو حاجی صاحب فقیر ایپی نے اپنے خاص الخاص نمائندے وہاں بھیجے اور وہاں تجویز بھی پاس ہوئی کہ ہم کو ہندو اور سکھ کو نہیں لوٹنا ہے۔ ہم کو انگریز کو اپنے علاقوں سے نکالنا ہے۔ ان دنوں میں کافی سے زیادہ کوشش کی گئی کہ قبائلی بنّوں یا ڈیرہ اسمٰعیل خاں شہر پر چڑھائی کریں اور لوٹ مار کر کے واپس چلے جائیں، لیکن وہ لوگ اپنے ارادوں میں کامیاب نہیں ہو سکے اور جب تک حاجی صاحب فقیر ایپی زندہ ہیں، کبھی وہ ایسا نہیں ہونے دینگے۔"

"इपी के फ़क़ीर आज कल गुरदख्त मे रहते हैं. वहाँ उनके पास हिन्दुओं के लिये खास हिफ़ाजत का इन्तिजाम है. मीरान शाह बन्नू से चालीस मील दूर है वहाँ तक लारी का सफर है. मीरानशाह से २५ मील दूर छत्ता खेल है, जो एजेन्सी मे है वहाँ से गुरदख्त पाँच घंटे का सफ़र है"

इस खत के बाद अब सिर्फ़ इतना ही लिखना काफी होगा कि आज कल पाकिस्तान और खास तौर पर सरहद की मुस्लिम लीगी सरकार दिन रात यही प्रचार कर रही है कि इपी का फ़क़ीर हिन्दुओं से मिला हुआ है. अभी कुछ दिन पहिले पाकिस्तान के खास अखबार 'डान' ने तो एक खत का फोटो भी छाप दिया था, जो फ़क़ीर की तरफ़से प० जवाहरलाल जी के नाम था और इस तरफ़ हमारी यह हालत है कि अपने दामन पर नजर डाले बिना हम सभी को फिरकापरस्त क़रार दे देते हैं और फ़क़ीर को आज भी हिन्दुस्तान के लिये या हिन्दुओं के लिये हौआ समझते हैं. इस ग़लतफ़हमी का भी कोई ठिकाना है.

इस तरह हिन्दुस्तान की आजादी के लिये सरहद मे जो हिंसा भरी तहरीकें चलीं, उनकी यह एक मुख्तसर सी तवारीख है. इस तवारीख का लफ्ज लफ्ज खून में डूबा हुआ है, फिर भी अभी तक हमारे मुल्क के बहुत कम लोगो का इस तरफ़ ध्यान गया है और इसकी बाबत सैकड़ों ग़लतफ़हमियाँ आम जनता में फैली हुई हैं. काश ! अब आजाद होने के बाद हम इसके सही रूप को पहिचान सकें

(बाकी फिर)

"اپی کے فقیر آج کل گرودخت میں رہتے ہیں۔ وہاں ان کے پاس ہندوؤں کے لئے خاص حفاظت کا انتظام ہے۔ میران شاہ بنّوں سے چالیس میل دور ہے، وہاں تک لاری کا سفر ہے۔ میران شاہ سے ۲۵ میل دور چھتہ خیل ہے، جو ایجنسی میں ہے۔ وہاں سے گرودخت پانچ گھنٹے کا سفر ہے۔"

اس خط کے بعد اب صرف اتنا ہی لکھنا کافی ہوگا کہ آج کل پاکستان اور خاص طور پر سرحد کی مسلم لیگی سرکار دن رات یہی پرچار کر رہی ہے کہ اپی کا فقیر ہندوؤں سے ملا ہوا ہے۔ ابھی کچھ دن پہلے پاکستان کے خاص اخبار "ڈان" نے تو ایک خط کا فوٹو بھی چھاپ دیا تھا، جو فقیر کی طرف سے پنڈت جواہر لال جی کے نام تھا۔ اور اس طرف ہماری یہ حالت ہے کہ اپنے دامن پر نظر ڈالے بنا ہم سبھی کو فرقہ پرست قرار دیدیتے ہیں اور فقیر کو آج بھی ہندستان کے لئے یا ہندوؤں کے لئے ہوّا سمجھتے ہیں۔ اس غلط فہمی کا بھی کوئی ٹھکانہ ہے۔ (۲۰۸)

اس طرح ہندستان کی آزادی کے لئے سرحد میں جو ہنسا بھری تحریکیں چلیں، ان کی یہ ایک مختصر سی تواریخ ہے۔ اس تواریخ کا لفظ لفظ خون میں ڈوبا ہوا ہے، پھر بھی ابھی تک ہمارے ملک کے بہت کم لوگوں کا اس طرف دھیان گیا ہے اور اس کی بابت سیکڑوں غلط فہمیاں عام جنتا میں پھیلی ہوئی ہیں۔ کاش! اب آزاد ہونے کے بعد ہم اس کے صحیح روپ کو پہچان سکیں۔

(باقی پھر)

शिव का बाग़

(भाई अली अब्बास हुसैनी)

शिव ने माथे से पसीना पोंछ कर कहा—"थक गया भगवान !" ब्रह्मा हँसे ! आकाश, धरती, सूरज, चाँद, तारे, पहाड़, समुद्र सब उनके ठट्ठे की आवाज़ से गूँज उठे. सामने खड़े शिव भी इस तरह हिलने लगे जैसे कोई सितार के तार पर जोर से उँगली मार दे.

ब्रह्मा ने उनकी दशा देखी. "क्यों ?" उन्होंने गरज कर पूछा.

"मैंने तुम्हारे हुक्म से इतने ब्रह्माण्ड तैयार किये और उनमें इतनी शक्तियाँ रहने बसने वाली, उनको आबाद और बरबाद करने वाली भर दी है कि उनकी गिनती अब मुझे भी नहीं मालूम. बस तू ही, जिससे गिनती शुरू और जिस पर खतम होती है—उनको गिन सकता है" उन्होंने काँप कर कहा.

ब्रह्मा की आँखे चमकी. चाँद, सूरज, तारो और ब्रह्माण्डो मे ऐसी बिजली कौंध गई कि सब ने एका एक आँखें बन्द कर लीं और सब के हृदय से 'ब्रह्मा ! ब्रह्मा !!' की आवाज़ निकली

सब के पालने वाले ब्रह्मा ने आँखे बन्द कर के पूछा—"फिर ?" फिर शिव ने डरते डरते कहा, "बस मै तुमसे इतनी आज्ञा लेने आया कि मै अपने लिये एक बाग़ लगाऊँ और उसके एक कोने में बैठकर तुम्हारे ध्यान मे सब कुछ भूल जाऊँ.

ब्रह्मा ने शिव को प्यार से देखा. देवियाँ गाने लगी, देवता नाचने लगे और आसमान ने ओस के मोती बरसाये. जमीन को

شیو کا باغ

(بھائی علی عباس حسینی)

شیونے ماتھے سے پسینہ پونچھ کر کہا — "تھک گیا بھگوان!" برہما ہنسے آکاش، دھرتی، سورج، چاند، تارے، پہاڑ، سمندر، سب ان کے ٹھٹھے کی آواز سے گونج اٹھے۔ سامنے کھڑے شیو بھی اس طرح ہلنے لگے جیسے کوئی ستار کے تار پر زور سے انگلی مار دے۔

برہمانے ان کی دشا دیکھی۔ "کیوں؟" انھوں نے گرج کر پوچھا۔

"میں نے تمہارے حکم سے اتنے برہمانڈ تیار کیے اور ان میں اتنی شکتیاں رہنے بسنے والی، ان کو آباد اور برباد کرنے والی بھر دی ہیں کہ ان کی گنتی اب مجھے بھی نہیں معلوم۔ بس تو ہی، جس سے گنتی شروع اور جس پر ختم ہوتی ہے — ان کو گن سکتا ہے۔" انھوں نے کانپ کر کہا۔

برہما کی آنکھیں چمکیں۔ چاند، سورج، تاروں اور برہمانڈوں میں ایسی بجلی کوندھ گئی کہ سب نے ایکا ایک آنکھیں بند کر لیں اور سب کے ہردے سے 'برہما! برہما!!' کی آواز نکلی۔

سب کے پالنے والے برہمانے آنکھیں بند کر کے پوچھا — "پھر؟" پھر شیونے ڈرتے ڈرتے کہا، "بس میں تم سے اتنی آگیا لینے آیا کہ میں اپنے لئے ایک باغ لگاؤں اور اس کے ایک کونے میں بیٹھ کر تمہارے دھیان میں سب کچھ بھول جاؤں۔"

برہمانے شیو کو پیار سے دیکھا۔ دیویاں گانے لگیں، دیوتا ناچنے لگے اور آسمان نے اوس کے موتی برسائے۔ زمین کو

कमल, मोतिया, चमेली, जूही के फूलों ने ढक लिया. वह बहुत धीरे से बोले,—"तुमको आज्ञा है."

शिव ने अपने बनाये हुए ब्रह्माण्डों मे से एक स्थान बहुत देख भाल कर चुन लिया जिसके एक भाग मे कड़ी धूप होती थी, एक भाग में बड़ी बर्फ़ गिरती थी. उसके एक ओर बहुत बड़ा ऊँचा टोला था, दूसरी तरफ़ जल से भरे हुए खड्ड थे. उसके एक कोने मे रेगिस्तान था, दूसरे भागों मे घास और हरियाली से ढके हुए मैदान. वहाँ की हवा के झोंकों मे गरमी भी थी, सर्दी और खुश्की भी थी. तरावट भी उसके किसी न किसी कोने मे थी. हर एक वह चीज़ मौजूद थी जो शिव ने सृष्टि रचना के समय कहीं न कहीं पैदा की थी. शिव का हृदय आनन्द से भर गया. ब्रह्मा का दिया यहाँ सब कुछ मौजूद था. उन्होंने उस खण्ड के चारों ओर एक दीवार सी खींची और आप सबसे ऊँचे टीले पर जाकर बैठ गये. उन्होने फिर इस धरती पर एक निगाह डाली. हाथ से इशारा किया और आसन जमा कर ब्रह्मा के ध्यान में आँखें बन्द कर लीं.

धरती की छाती जगह जगह से फट गई कहीं से आम के पेड़ निकले, कहीं से सेब और आड़ू के पेड़, हर तरफ़ फूलों, मेवों और फलों के पौदे उग आये. खड्डों का पानी कुछ पका, कुछ सड़ा, धरातल पर एक झिल्ली सी पड़ी, फिर उनमें हरकत सी

तो वहीं पानी में रहीं,

कुछ लहरों ने भूमि पर फेंका, उछलीं, तड़पीं और मर गई या फिर कुछ मे कुछ हो गई रेंगने वाले कीड़े, बड़े जानवर,

کمل، موتیا، چنبیلی، جوہی کے پھولوں نے ڈھک لیا۔ وہ بہت دھیرے سے بولے ــــ "تم کو آگیا ہے۔"

شیو نے اپنے بنائے ہوئے برہمانڈوں میں سے ایک استھان بہت دیکھ بھال کر چن لیا جس کے ایک بھاگ میں کڑی دھوپ ہوتی تھی، ایک بھاگ میں بڑی برف گرتی تھی۔ اس کے ایک اور بہت بڑا اونچا ٹیلہ تھا، دوسری طرف جل سے بھرے ہوئے کھڈ تھے۔ اس کے ایک کونے میں ریگستان تھا، دوسرے بھاگوں میں گھاس اور ہریالی سے ڈھکے ہوئے میدان۔ وہاں کی ہوا کے جھونکوں میں گرماہٹ تھی، سردی اور خشکی بھی تھی۔ تراوٹ بھی اس کے کسی نہ کسی کونے میں تھی۔ ہر ایک وہ چیز موجود تھی جو شیو نے سرشٹی رچنا کے سمے کہیں نہ کہیں پیدا کی تھی۔ شیو کا ہردے آنند سے بھر گیا۔ برہما کا دیا یہاں سب کچھ موجود تھا۔ انھوں نے اس کھنڈ کے چاروں اور ایک دیوار سی کھینچی اور آپ سب سے اونچے ٹیلے پر جا کر بیٹھ گئے۔ انھوں نے پھر اس دھرتی پر ایک نگاہ ڈالی۔ ہاتھ سے اشارہ کیا اور آسن جما کر برہما کے دھیان میں آنکھیں بند کر لیں۔

دھرتی کی چھاتی جگہ جگہ سے پھٹ گئی۔ کہیں سے آم کے پیڑ نکلے، کہیں سے سیب اور آڑو کے پیڑ۔ ہر طرف پھولوں، میووں اور پھلوں کے پودے اگ آئے۔ کھڈوں کا پانی کچھ پکا، کچھ سڑا، دھرتل پر ایک جھلی سی پڑی، پھر ان میں حرکت سی ہوئی۔ چھوٹی بڑی مچھلیاں بنیں، کچھ تو وہیں پانی میں رہیں، کچھ کو لہروں نے بھومی پر پھینکا، اچھلیں، تڑپیں اور مر گئیں یا پھر کچھ سے کچھ ہو گئیں۔ رینگنے والے کیڑے، بڑے جانور، بڑے

चले, फिरे, उचके, फाँदे, पंख जमे और हवामें उड़ने वाली चिड़ियाँ भी चहचहा कर पेड़ों पर आ बैठीं.

शिव ने आँखें बन्द कीं तो फिर न खोलीं मौसम बदलते रहे, नजारे बदलते रहे कभी वर्षा हुई, कभी ओले गिरे, कभी खेतों ने सोना उगला और कभी जवाहरात. कभी काल पड़ा, बड़े बड़े टुकड़े सूख गये लाखों जानदार ढँगर होकर मर गये कहीं भूचाल आया हजारों पेड़ गिर पड़े डालियाँ टूट गिरीं और ठुंठ खड़े रहे. जानवरों ने एक दूसरे को खदेड़ा, नोचा, खसोटा, काटा और मार डाला बलवान ने बलहीन को खा डाला बड़े गिरोह वालों ने छोटे गिरोह वालों को दबा लिया राज और सरकारें कायम हुईं पर शिव ने बन्द आँखें न खोलीं खोलते ही क्यों: उन्होंने तो यह मारी लड़ने वाली शक्तियाँ अपने दिमाग में भर दी थीं वह जानते थे कि मशीन उन्होंने बना दी है. उसके सारे पुर्ज़े अपना अपना काम करते रहेंगे बाग के जानवरों में सब से चपल वीर एक जानवर था. उसका नाम था बन्दर औरों को तो अपनी शक्ति अपने शरीर, अपने डील डौल और अपने दांत और पंजों पर भरोसा था पर उसे केवल अपने दिमाग पर घमण्ड था जैसे जैसे समय बीता, उसकी बुद्धि और उसकी सूझ बूझ बढ़ती गई उसने दूसरे जानवरों को फँसाने के लिए फंदे बनाये. उसने शिकार खेलने के लिये नुकीले हथियार तैयार किये उसकी आँखें तेज थीं उसको पैंतरे खूब आते थे. वह जड़ी-बूटियों का माहिर था. उसने अपनी प्रतिभा से बाग के सारे जानवरों को दबा लिया और उनका मालिक बन बैठा.

چلے، پھرے، اُچکے، پھاندے، پنکھ جمے اور ہوا میں اُڑنے والی چڑیاں بھی چہچہا کر پیڑوں پر آ بیٹھیں۔

شیو نے آنکھیں بند کیں تو پھر نہ کھولیں۔ موسم بدلتے رہے، نظارے بدلتے رہے۔ کبھی ورشا ہوئی، کبھی اولے گرے، کبھی کھیتوں نے سونا اگلا اور کبھی جواہرات۔ کبھی کال پڑا، بڑے بڑے ٹکڑے سوکھ گئے، لاکھوں جاندار ڈانگر ہو کر مر گئے۔ کہیں بھونچال آیا، ہزاروں پیڑ گر پڑے، ڈالیاں ٹوٹ گریں اور ٹھنٹھ کھڑے رہے۔ جانوروں نے ایک دوسرے کو کھدیڑا، نوچا، کھسوٹا، کاٹا اور مار ڈالا۔ بل وان نے بل ہین کو کھا ڈالا۔ بڑے گروہ والوں نے چھوٹے گروہ والوں کو دبا لیا۔ راج اور سرکاریں قائم ہوئیں۔ پر شیو نے بند آنکھیں نہ کھولیں۔ کھولتے ہی کیوں، انھوں نے تو یہ ساری لڑنے والی شکتیاں اپنے دماغ میں بھر دی تھیں۔ وہ جانتے تھے کہ مشین انھوں نے بنا دی ہے۔ اس کے سارے پرزے اپنا اپنا کام کرتے رہیں گے۔ باغ کے جانوروں میں سب سے چپل ویر ایک جانور تھا۔ اس کا نام تھا بندر۔ اوروں کو تو اپنی شکتی، اپنے شریر، اپنے ڈیل ڈول اور اپنے دانت اور پنجوں پر بھروسہ تھا پر اسے کیول اپنے دماغ پر گھمنڈ تھا۔ جیسے جیسے سمے بیتا، اس کی بدھی اور اس کی سوجھ بوجھ بڑھتی گئی۔ اس نے دوسرے جانوروں کو پھنسانے کے لئے پھندے بنائے، اس نے شکار کھیلنے کے لئے نوکیلے ہتھیار تیار کئے، اس کی آنکھیں تیز تھیں۔ اس کو پینترے خوب آتے تھے۔ وہ جڑی بوٹیوں کا ماہر تھا۔ اس نے اپنی پرتبھا سے باغ کے سارے جانوروں کو دبا لیا اور ان کا مالک بن بیٹھا۔

जगहों में जा छिपे पर ख़ुद उसकी संख्या बराबर बढ़ती गई. जैसे जैसे उसकी जाति में नये नये युवक निकले, उन्होंने अपनी अपनी टोलियाँ बनाना आरम्भ कर दी. वह एक दूसरे का भाग नोच खसट कर खा डालते और एक दूसरे से खों खों करके खूब लड़ते. बूढ़े बन्दरों ने जब रोक थाम की तो उनमे से कुछ बिगड़कर बाग़ की दिवारें फाँद कर दूसरे बागो, जगलो और खेतो मे जा बसे. उन स्थानो के हवा पानी के प्रभाव से उनकी सूरत शकल और उनका रग रूप भी बदल गया और वह बिलकुल विदेशी हो गये.

× × ×

बहुत सा समय बीता. शिव के बाग़ का नाम दूर दूर फैला. यहाँ के मेवों की ताज़गी, यहाँ के जल की मिठास और यहाँ के फलों की सुगधि की चरचा सारी दुनिया मे होने लगी. ऐसी दशा में भूखे नंगे जहाँ जहाँ थे, सिमट सिमट कर इधर बढ़े. सबसे पहले उत्तर पच्छिम से एक गिरोह आया. वह भूरे बन्दरों का था. यह बाग़ वालों को काला बन्दर कहते और इस पर बहुत घमण्ड करते कि यह काले न हमारे जैसे सूझ बूझ के हैं और न हमारी तरह तगड़े और फुर्तीले. फिर इस पर भी अकड़ते थे कि हमने कई इंसान पैदा किये हैं, यानी ऐसे जानवर जिनकी दुम गिर गई थी और दो पैरों पर खड़े होकर चलते थे. वह इसके आगे इन्सान की व्याख्या नहीं समझते थे. अगरचे वह लोग जिसकी ओर सकेत करते थे वह इन्सान ही न थे बल्कि इन्सान बनाने वाले, इन्सानियत को बढ़ाने वाले थे. काले, गोरे, भूरे, पीले रंग मिटाने वाले, ब्रह्मा के

جگہوں میں جا چھپے پر خود اس کی سنکھیا برابر بڑھتی گئی۔ جیسے جیسے اس کی جاتی میں نئے نئے یووک نکلے، انھوں نے اپنی اپنی ٹولیاں بنانا آرمبھ کر دیں۔ وہ ایک دوسرے کا بھاگ نوچ کھسوٹ کر کھا ڈالتے اور ایک دوسرے سے کھوں کھوں کر کے خوب لڑتے۔ بوڑھے بندروں نے جب روک تھام کی تو ان میں سے کچھ بگڑ کر باغ کی دیواریں پھاند کر دوسرے باغوں، جنگلوں اور کھیتوں میں جا بسے۔ ان استھانوں کے ہوا پانی کے پربھاؤ سے ان کی صورت شکل اور ان کا رنگ روپ بھی بدل گیا اور وہ بالکل بدیشی ہو گئے۔

× × ×

بہت سا سمے بیتا۔ شیو کے باغ کا نام دور دور پھیلا۔ یہاں کے میووں کی تازگی، یہاں کے جل کی مٹھاس اور یہاں کے پھلوں کی سگندھی کی چرچا ساری دنیا میں ہونے لگی۔ ایسی دشا میں بھوکے ننگے جہاں جہاں تھے، سمٹ سمٹ کر ادھر بڑھے۔ سب سے پہلے اتر پچھم سے ایک گروہ آیا۔ وہ بھورے بندروں کا تھا۔ یہ باغ والوں کو کالا بندر کہتے اور اس پر بہت گھمنڈ کرتے کہ یہ کالے نہ ہمارے جیسے سوجھ بوجھ کے ہیں اور نہ ہماری طرح تگڑے اور پھرتیلے۔ پھر اس پر بھی اکڑتے تھے کہ ہم نے کئی انسان پیدا کئے ہیں، یعنی ایسے جانور جن کی دم گر گئی تھی اور دو پیروں پر کھڑے ہو کر چلتے تھے۔ وہ اس کے آگے انسان کی ویاکھیا نہیں سمجھتے تھے۔ اگرچہ وہ لوگ جس کی اور سنکیت کرتے تھے وہ انسان ہی نہ تھے بلکہ انسان بنانے والے، انسانیت کو بڑھانے والے تھے۔ کالے، گورے، بھورے، پیلے رنگ مٹانے والے، برہما کے

पहिचानने वाले उसी के भेजे हुए ब्रह्माण्डों के चाँद, सूरज. इन भूरों ने अपने इन्सानों से कुछ न सीखा. काले बन्दरों को नीच समझा. देशी बन्दरों की आपस की फूट ने उन्हें भी कभी एक न होने दिया. इसी कारन भूरे बन्दरों ने उन्हें मार-काट कर पूरे बाग़ पर अधिकार जमा लिया. काले बन्दरों के मन में यह बात धीरे धीरे जम गई कि भूरे बन्दर सचमुच कोई नई किस्म की नसल हैं. उन्हें भ्रम था कि वह इनका मुकाबला करने की किसी तरह ताक़त नहीं रखते. उनका पूरा पूरा झुण्ड भूरे बन्दरों को देखते ही खीस निकालकर गरदन झुका कर बैठ जाता और जल्दी जल्दी आँखें झपकाने लगता जैसे वह कहता हो, 'हुजूर माँ बाप हैं, हुजूर ज हुक्म देंगे हम सिर आँखों से बजा लायेंगे."

भूरे बन्दरों ने इन देशी बन्दरों को अपनाया नहीं बल्कि उन्होने अपनी धाक बनाये रखने के लिये अपने ही साथियों में सारे अच्छे काम बाँट लिये, और देशी बन्दरों से नीच काम लेने लगे. काम काज के इस बँटवारे से अगरचे काले बन्दर सदा के लिये नीचे की ओर चले गये, पर यह लाभ जरूर हुआ कि हर एक को अपने अपने कर्तव्य का ज्ञान हो गया और वह उनकी पूर्ति में लग गये. इस तरह बाग़ दिन पर दिन सँवरता गया और उसका नाम और तारीफ और भी फैलती गई. दूसरे स्थानों के बन्दरों ने जैसे जैसे यहाँ के फलों की मिठास की तारीफ सुनी, उन्होने अपने जत्थे इकट्ठे किये और बार बार बाग़ पर अधिकार करने का जतन करते रहे. इन नये आने वालों मे से कुछ पहले बन्दरों ने सफलता

پہچاننے والے، اسی کے بھیجے ہوئے برہمانڈوں کے چاند، سورج۔ ان بھوروں نے اپنے انسانوں سے کچھ نہ سیکھا۔ کالے بندروں کو نیچ سمجھا۔ دیشی بندروں کی آپس کی پھوٹ نے انھیں بھی کبھی ایک نہ ہونے دیا۔ اسی کارن بھورے بندروں نے انھیں مار کاٹ کر پورے باغ پر ادھیکار جما لیا۔ کالے بندروں کے من میں یہ بات دھیرے دھیرے جم گئی کہ بھورے بندر سچ مچ کوئی نئی قسم کی نسل ہیں۔ انھیں بھرم تھا کہ وہ ان کا مقابلہ کرنے کی کسی طرح طاقت نہیں رکھتے۔ ان کا پورا پورا جھنڈ بھورے بندروں کو دیکھتے ہی کھیس نکال کر گردن جھکا کر بیٹھ جاتا اور جلدی جلدی آنکھیں جھپکانے لگتا۔ جیسے وہ کہتا ہو "حضور ماں باپ ہیں، حضور جو حکم دیں گے ہم سر آنکھوں سے بجا لائیں گے۔"

بھورے بندروں نے ان دیشی بندروں کو اپنایا نہیں بلکہ انھوں نے اپنی حجاب بنائے رکھنے کے لئے اپنے ہی ساتھیوں میں سارے اچھے کام بانٹ لئے، اور دیشی بندروں سے نیچ کام لینے لگے۔ کام کاج کے اس بٹوارے سے اگرچہ کالے بندر سدا کے لئے نیچے کی اور چلے گئے، پر یہ لابھ ضرور ہوا کہ ہر ایک کو اپنے کرتویہ کا گیان ہو گیا اور وہ ان کی پورتی میں لگ گئے۔ اس طرح باغ دن پر دن سنورتا گیا اور اس کا نام اور تعریف اور بھی پھیلتی گئی۔ دوسرے استھانوں کے بندروں نے جیسے جیسے یہاں کے پھلوں کی مٹھاس کی تعریف سنی، انھوں نے اپنے جتھے اکٹھے کئے اور بار بار باغ پر ادھیکار کرنے کا جتن کرتے رہے۔ ان نئے آنے والوں میں سے کچھ پہلے بندروں نے سپھلتا پراپت کی اور وہ ایک یگ تک باغ کے نچلے بھاگ پر ادھیکار رکھ

बने रहे. पर धीरे धीरे भूरों ने उन्हें बाहर निकाल दिया और जो न भाग सके उन्हें खतम कर डाला. फिर भी बाग़ की हरियाली बनी रही. पर जीवन की जरूरी चीज़ों के काफ़ी होने से धीरे धीरे वह विलासी बनते गये. वह परिश्रम से घबराने लगे. उनका अधिक समय ऊँघने और सोने मे बीतने लगा. उनकी इस सुस्ती और बेपरवाही से लाभ उठाकर बिल्कुल ही नई तरह के बन्दर बाग़ मे घुस आये. यह कत्थई रंग वाले बन्दर थे. इन नये बन्दरों को दो बातों का घमण्ड था. वह कहते थे कि हमने दुनिया की सारी बन्दर आबादी से अधिक इन्सान पैदा किये हैं. और हम से अधिक न किसी के तेज़ नाखून हैं न दांत. इनसे और भूरे बन्दरों से खूब लड़ाइयाँ हुईं. वह लड़ाई की कला मे भूरो से सचमुच अधिक चतुर साबित हुए. इसी कारन उन्होने बाग़ पर अधिकार पा लिया. उन्होने चतुराई यह की कि कालों को बहुत कुछ अपना भी लिया और कुछ ऐसी चालें चलीं कि काफ़ी संख्या टूट कर उनसे मिल गई. उन्होंने भूरों को भी अधिक नाराज़ नहीं किया बल्कि बाग़ के इन्तज़ाम में उन्हें भी लगाये रक्खा. फिर भी दोनों तरफ़ दिलों में यह बात ज़रूर छिपी हुई थी कि हम इन भूरों से तगड़े हैं, और हम भूरे हैं और ब्रह्मा के प्यारे हैं और इस बाग़ के ख़ास रखवाले हैं. कत्थई म्लेछ हैं, हमारा इनका क्या मुक़ाबला.

अब बाग़ का फल भूरे बन्दरों को कम मिलने लगा. एक तो खाने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती थी. दूसरे सारे अच्छे फल कत्थई छीन छीन कर खा जाते थे. इसका नतीजा दोनों गिरोहों पर एक दूसरे के उलटा पड़ा. पहले के काहिल भूरे अ

بنے رہے۔ پر دھیرے دھیرے بھوروں نے انھیں باہر نکال دیا اور جو نہ بھاگ سکے انھیں ختم کر ڈالا۔ پھر بھی باغ کی ہریالی بنی رہی۔ پر جیون کی ضروری چیزوں کے کافی ہونے سے دھیرے دھیرے وہ ولاسی بنتے گئے۔ وہ پریشرم سے گھبرانے لگے۔ ان کا ادھیک سمے اونگھنے اور سونے میں بیتنے لگا۔ ان کی اس سستی اور بے پرواہی سے لابھ اٹھاکر بالکل ہی نئی طرح کے بندر باغ میں گھس آئے۔ یہ کتھئی رنگ والے بندر تھے۔ ان نئے بندروں کو دو باتوں کا گھمنڈ تھا۔ وہ کہتے تھے کہ ہم نے دنیا کی ساری بندر آبادی سے ادھیک انسان پیدا کئے ہیں۔ اور ہم سے ادھیک نہ کسی کے تیز ناخون ہیں نہ دانت۔ ان سے اور بھورے بندروں سے خوب لڑائیاں ہوئیں۔ وہ لڑائی کی کلا میں بھوروں سے سچ مچ ادھیک چتر ثابت ہوئے۔ اسی کارن انھوں نے باغ پر ادھیکار پایا۔ انھوں نے چترائی یہ کی کہ کالوں کو بہت کچھ اپنا بھی لیا اور کچھ ایسی چالیں چلیں کہ کافی سنکھیا ٹوٹ کر ان سے مل گئی۔ انھوں نے انھوں نے بھوروں کو بھی ادھیک ناراض نہیں کیا بلکہ باغ کے انتظام میں انھیں بھی لگائے رکھا۔ پھر بھی دونوں طرف دلوں میں یہ بات ضرور چھپی ہوئی تھی کہ ہم ان بھوروں سے تگڑے ہیں اور ہم بھورے ہیں اور برہما کے پیارے ہیں اور اس باغ کے خاص رکھوالے ہیں۔ یہ کتھئی ملیچھ ہیں، ہمارا ان کا کیا مقابلہ۔

اب باغ کا پھل بھورے بندروں کو کم ملنے لگا۔ ایک تو کھانے والوں کی سنکھیا دن پر دن بڑھتی جاتی تھی۔ دوسرے سارے اچھے پھل کتھئی چھین چھین کر کھا جاتے تھے۔ اسکا نتیجہ دونوں گروہوں پر ایک دوسرے کے الٹا پڑا۔ پہلے کے کاہل بھورے

महनत करने लगे और पिछले फ़ाक़ा कश कत्थई सुस्त और आराम पसन्द होने लगे. फिर भी पेट भर सब को मिल ही जाता और आपस में खो खो इतनी ही होती जितनी कि प्रकृति या फ़ितरत मजबूर करती बाहर के और बन्दरों को भी यह ख़याल सताता रहा कि ऐसा बाग़, जहाँ इस तरह हुन बरसता है, वह हमारे अधिकार मे क्यों नही ? इसी कारण बन्दरों का एक ख़ास गिरोह, जिन्हे लाल बन्दर कहते थे, भेस बदल कर इस बाग़ में आया. उन्हों ने यहाँ की दशा देखी और अपने भाइयों को यहाँ की ख़बर दी- इन लोगो ने बहुत सोच कर एक खास तरह की लकड़ी बनाई जिसे हाथ मे लेकर जिसकी तरफ़ कर देते बस धाँय-धाँय की आवाज़ होती और उसकी छाती मे छेद हो जाता. लाल बन्दर यह लकड़ियाँ लेकर इस बाग़ मे आये और उन्होंने कभी कत्थई बन्दरों के साथ हो कर भूरो की छाती में छेद किया, कभी भूरों के साथ मिल कर कत्थई बन्दरों को छेदा. उनकी लकड़ी का डर धीरे धीरे सब के दिल मे समा गया और उन्हो ने थोड़े दिनों मे सारे भूरे और कत्थई बन्दरो पर अपना राज जमा लिया.

× × ×

लाल बन्दर सब से अधिक चालाक निकले. उन्होंने बाग़ को अपनी मातृभूमि नही बनाया. उन्होने अपना पिछला देश नहीं भुलाया वह शिव के बाग़ मे कुछ ही दिन टिकते और यहाँ जो अच्छी से अच्छी चीज पाते उसे अपने देश जरूर भेज देते. उन्होने बाग़ को लूट कर इसके सारे फल, मेवे और तरकारियाँ घर भेज दीं. वही बाग जहाँ की धरती सोना उगलती थी, जहाँ के मेवे

محنت کرنے لگے اور پچھلے فاقہ کش کتھئی سست اور آرام پسند ہونے لگے. پھر بھی پیٹ بھر سب کو مل ہی جاتا اور آپس میں کھوں کھوں اتنی ہی ہوتی جتنی کہ پرکرتی یا فطرت مجبور کرتی. باہر کے اور بندروں کو بھی یہ خیال ستاتا رہا کہ ایسا باغ جہاں اس طرح ہن برستا ہے وہ ہمارے ادھیکار میں کیوں نہیں ؟ اسی کارن بندروں کا ایک خاص گروہ جنھیں لال بندر کہتے تھے، بھیس بدل کر اس باغ میں آیا۔ انھوں نے یہاں کی دشا دیکھی اور اپنے بھائیوں کو یہاں کی خبر دی۔ ان لوگوں نے بہت سوچ کر ایک خاص طرح کی لکڑی بنائی جسے ہاتھ میں لیکر جس کی طرف کر دیتے بس دھائیں دھائیں کی آواز ہوتی اور اس کی چھاتی میں چھید ہو جاتا۔ لال بندر یہ لکڑیاں لے کر اس باغ میں آئے اور انھوں نے کبھی کتھئی بندروں کے ساتھ ہو کر بھوروں کی چھاتی میں چھید کیا، کبھی بھوروں کے ساتھ مل کر کتھئی بندروں کو چھیدا۔ ان کی لکڑی کا ڈر دھیرے دھیرے سب کے دل میں سما گیا اور انھوں نے تھوڑے دنوں میں سارے بھورے اور کتھئی بندروں پر اپنا راج جما لیا۔

× × ×

لال بندر سب سے ادھک چالاک نکلے، انھوں نے باغ کو اپنی ماتر بھومی نہیں بنایا، انھوں نے اپنا پچھلا دیش نہیں بھلایا۔ وہ شیو کے باغ میں کچھ ہی دن ٹکتے اور یہاں جو اچھی سے اچھی چیز پاتے اپنے دیش ضرور بھیج دیتے۔ انھوں نے باغ کو لوٹ کر اس کے سارے پھل، میوے اور ترکاریاں گھر بھیج دیں۔ وہی باغ جہاں کی دھرتی سونا اگلتی تھی، جہاں کے میوے

और फल भूमि में गिर कर सड़ते और अच्छी खाद बनते, वही बाग़ जहाँ का हर एक निवासी मोटा ताज़ा आनन्द की बन्सी बजाता दिखाई देता था, कंगालों का देश और सूखे ढाँचों का खण्डहर हो गया. एक ऐसा मुल्क जहाँ के रहने वाले भूक से बिल-बिलाते और गिरे पड़े दानो पर आपस मे कुत्तों की तरह लड़ते थे. इस पेट के कारण भूरे और कत्थई सारी अकड़ को भूल गये. उन्हों ने हर घड़ी लाल बन्दरो का मुँह ताकना और उनके इशारों पर चलना शुरू किया. शिव के बाग़ की यह दशा देख कर वह आत्माएँ जो इन्सान बनने का गौरव प्राप्त कर चुकी थीं, दुख से चीख़ उठीं. उनकी आवाज़ में इतनी करुणा और दर्द था कि वह आकाश को पार कर गईं. उसने ब्रह्मा के चरणों को छू लिया. चूंकि शिव का ध्यान उन्हीं कमल पदों से लग रहा था, उन्हों ने व्याकुल होकर आँखें खोल दीं. उनके मस्तक पर तीन खड़ी खड़ी लकीरें पड़ गईं. उन्होंने बाग़ के एक कोने को तेज़ निगाह से देखा बाग़ का एक रज कण कसमसाया, उभरा, उड़ा और उसने गुलाब और लाला के थालों में करवटें लीं. वहाँ की सुगन्धि से उसका ख़मीर बना. जूही, चमेली. चम्पा का रस उसमे टपका. शहद की एक बूँद उसमे गिर कर जज़्ब हो गई और वह नर्मी. मिठास और सुगन्धों का एक पुतला सा बन गया. पार्वती ने उसे गोद में उठा लिया, देवताओं ने बढ़कर मत्र जगाया और वह पुतला एक दुबले पतले इन्सान की सूरत में उठकर खड़ा हुआ. शिव ने सन्तोष की साँस ली और फिर आँखें बन्द कर लीं.

इस इन्सान ने अपने नरम और मीठे बोल मे काले, भूरे और

اور پھل بھومی میں گر کر سڑتے اور اچھی کھاد بنتے، وہی باغ جہاں کا ہر ایک نواسی موٹا تازہ آنند کی بنسی بجاتا دکھائی دیتا تھا، کنگالوں کا دیش اور سوکھے ڈھانچوں کا کھنڈہر ہو گیا۔ ایک ایسا ملک جہاں کے رہنے والے بھوک سے بلبلاتے اور گرے پڑے دانوں پر آپس میں کتوں کی طرح لڑتے تھے۔ اس پیٹ کے کارن بھورے اور کتھئی ساری اکڑ کو بھول گئے۔ انھوں نے ہر گھڑی لال بندروں کا منہ تاکنا اور ان کے اشاروں پر چلنا شروع کیا۔ شیو کے باغ کی یہ دشا دیکھ کر وہ آتمائیں جو انسان بننے کا گورو پراپت کر چکی تھیں، دکھ سے چیخ اٹھیں۔ ان کی آوازیں اتنی کرونا اور درد تھا کہ وہ آکاش کو پار کر گئیں۔ اس نے برہما کے چرنوں کو چھو لیا۔ چونکہ شیو کا دھیان انھیں کمل پدوں سے لگ رہا تھا، انھوں نے بیاکل ہو کر آنکھیں کھول دیں۔ ان کے مستک پر تین کھڑی کھڑی لکیریں پڑ گئیں۔ انھوں نے باغ کے ایک کونے کو تیز نگاہ سے دیکھا باغ کا ایک رج کن کسمسایا، ابھرا، اڑا اور اس نے گلاب اور لالہ کے تھالوں میں کروٹیں لیں۔ وہاں کی سگندھ سے اس کا خمیر بنا۔ جوہی، چمبیلی، چمپا کا رس اس میں ٹپکا۔ شہد کی ایک بوند اس میں گر کر جذب ہو گئی اور وہ نرمی مٹھاس اور سگندھوں کا ایک پتلا سا بن گیا۔ پاروتی نے اسے گود میں اٹھا لیا، دیوتاؤں نے بڑھ کر منتر جگایا اور وہ پتلا ایک دبلے پتلے انسان کی صورت میں اٹھ کر کھڑا ہوا۔ شیو نے سنتوش کی سانس لی اور پھر آنکھیں بند کر لیں۔

اس انسان نے اپنے نرم اور میٹھے بول میں کالے بھورے اور

कत्थई सारे बन्दरो को ललकारा—"क्या करते हो मूर्खो ? अगर इसी तरह आपस मे लड़ते रहे तो शिव का बाग़ सदा के लिये उजड़ जायगा. इस बाग़ के रक्षक तुम हो: लाल बन्दर विदेशी हैं इनके क़दम यहाँ उसी समय तक हैं जब तक तुम आपस मे झगड़ते हो. जरा एक बार एका करके देखो. लाल बन्दरो से डरना छोड़ दो. यह बाग़ से .खुद न भाग जायें तो तुम्ही कहना." पर किसी ने उसकी बातो पर ध्यान न दिया. काले, भूरे, और कत्थई सब हँसते रहे. "कैसी ना समझी की बातें करता है हमारे मिल जाने से क्या होगा ? हम निहत्थे है, लाल बन्दरो के पास दगने वाली छड़ियाँ है वह हमको अकड़ते देखकर हमारे शरीर भर मे छेद कर देंगे" फिर भी वह इन्सान अपनी ही सी कहे गया मुट्ठी भर बन्दर उसका कहना मानने पर तैयार हो गये. लाल बन्दरो ने छड़ियाँ उठाईं—धाँय-धाँय-धाँय' मगर उस इन्सान के मानने वालोने हँस-हँस कर छातियो मे छेद करा लिया. धरती काँप उठी, हर तरफ शोर हुआ—निहत्थो पर इस तरह का अत्याचार ! भूरे बन्दरो मे जोश भरने लगा. थोड़े से लाल बन्दर किस-किस के सीने मे छेद करेंगे ? हम इन जान देने वालो से पीछे क्यो रहे ? लाल बन्दर इनके तेवर देखकर घबरा गये उन्होने कई बागो मे राज क़ायम कर लिया था अगर इसी तरह हर जगह सीनो मे छेद कराने वालो का गिरोह पैदा हो गया तो वह किस-किस के खून से अपना हाथ रंगेंगे. उनके .खुर्राट जुग़ादरी जमा हुए उन्होने कत्थई बन्दरों मे से ऐसों को चुनकर अपने पास बुलाया जिन्हे वह पहले ही शीशे में उतार चुके थे, जो उनका दम भरते थे, जो

کتھئی سارے بندروں کو للکارا — "کیا کرتے ہو مورکھو؟ اگر اسی
طرح آپس میں لڑتے رہے تو شیو کا باغ سدا کے لئے اجڑ جائے
گا۔ اس باغ کے رکشک تم ہو، لال بندر بدیشی ہیں۔ ان کے قدم
یہاں اسی سمے تک ہیں جب تک تم آپس میں جھگڑتے ہو۔ ذرا ایکا کر کے دیکھو۔ لال بندروں
سے ڈرنا چھوڑ دو۔ یہ باغ سے خود نہ بھاگ جائیں تو تمہیں کہنا۔" پر کسی نے اس
کی باتوں پر دھیان نہ دیا۔ کالے، بھورے اور کتھئی سب ہنستے رہے
"کیسی ناسمجھی کی باتیں کرتا ہے۔ ہمارے مل جانے سے کیا ہوگا؟ ہم نہتے
ہیں، لال بندروں کے پاس دغنے والی چھڑیاں ہیں۔ وہ ہم کو اکڑتے
دیکھ کر ہمارے شریر بھر میں چھید کر دیں گے۔" پھر بھی وہ انسان اپنی
ہی سی کہے گیا۔ مٹھی بھر بندر اس کا کہنا ماننے پر تیار ہو گئے۔ لال بندروں
نے چھڑیاں اٹھائیں — دھائیں۔ دھائیں۔ دھائیں! مگر اس انسان کے
ماننے والوں نے ہنس ہنس کر چھاتیوں میں چھید کرا لیا۔ دھرتی کانپ اٹھی،
ہر طرف شور ہوا "نہتوں پر اس طرح کا اتیاچار!" بھورے بندروں
میں جوش بھرنے لگا۔ تھوڑے سے لال بندر کس کس کے سینہ
میں چھید کریں گے؟ ہم ان جان دینے والوں سے پیچھے کیوں رہیں؟
لال بندر ان کے تیور دیکھ کر گھبرا گئے۔ انھوں نے کئی باغوں میں راج
قائم کر لیا تھا۔ اگر اس طرح ہر جگہ سینوں میں چھید کرانے
والوں کا گروہ پیدا ہو گیا تو وہ کس کس کے خون سے
اپنا ہاتھ رنگیں گے۔ ان کے خرّاٹ جُغادری جمع ہوئے۔ انھوں
نے کتھئی بندروں میں سے ایسوں کو چن کر اپنے پاس بلایا جنھیں وہ
پہلے ہی شیشے میں اتار چکے تھے، جو ان کا دم بھرتے تھے، جو

उनका जाम पीते थे. उन्होंने ने कहा—"हम तुम एक दूसरे को बहुत दिनों से जानते हैं. हमसे तुम से सैकड़ों बरस से लड़ाई चली आ रही है. न जाने कितने बाग़ों से हम तुम्हें मारकर निकाल चुके हैं हम तुम्हारी 'वीरता को मानते हैं और तुम हमारे कौशल को मानते हो. इस कारन अगर हमारे बाद कोई राज कर सकता है तो वह तुम्हीं हो यह भूरे सदा के ग़ुलाम रहे. यह गूलर के कीड़े है. इनको कभी कुछ न आया फिर भी आज इस मूर्ख इन्सान के बहकाने से हमारे सामने आ खड़े हुए हैं. हम भी इस बाग़ को छोड़ना ही चाहते हैं. हमारा अब यहाँ जी नहीं लगता. हमने इसका सारा रस निकाल लिया है. अब यह सिर्फ छिलका ही छिलका है. फिर भी अगर तुम चाहो तो हम तुम्हे यहाँ का राज दिलवा दें."

उन्होंने कहा—"ऊपर ईश्वर है नीचे आप हैं. आप हम सबके माँ बाप हैं. आप जो कुछ हुक्म देंगे हम सर आँखो से उसका पालन करेंगे."

लाल बन्दरो ने कहा—"बस तुम भी अपनी जाति को उकसाओ. उनसे कहो झूट मूट शोर मचावें. देखो तो हम कितने अच्छे फल और मेवे उन भूरों से छीन कर तुम्हे दे देते है.

लाल बन्दरों ने जो इतनी शह दी तो कत्थई बन्दरो ने वह शोरं मचाया कि कान पड़ी आवाज़ न सुनाई दी. उनका एक साथ मुँह खुला रहता और सिवाय इसके कुछ न सुनाई पड़ता, "बाग़ बांट दो, हमारा हिस्सा अलग कर दो" इन्सान ने बार बार समझाया, "यह लाल बन्दर तुम्हे बहका कर अपना उल्लू सीधा करता

ان کا جام پیتے تھے۔ انھوں نے کہا۔ "ہم تم ایک دوسرے کو بہت دنوں سے جانتے ہیں۔ ہم سے تم سے سیکڑوں برس سے لڑائی چلی آرہی ہے۔ نہ جانے کتنے باغوں سے ہم تمہیں مار کر نکال چکے ہیں۔ ہم تمہاری ویرتا کو مانتے ہیں اور تم ہمارے کوشل کو مانتے ہو۔ اس کارن اگر ہمارے بعد کوئی راج کر سکتا ہے تو وہ تم ہی ہو۔ یہ بھورے سدا کے غلام رہے۔ یہ گولر کے کیڑے ہیں۔ ان کو کبھی کچھ نہ آیا پھر بھی آج اس مورکھ انسان کے بہکانے سے ہمارے سامنے آکھڑے ہوئے ہیں۔ ہم بھی اس باغ کو چھوڑنا ہی چاہتے ہیں۔ ہمارا اب یہاں جی نہیں لگتا۔ ہم نے اس کا سارا رس نکال لیا ہے۔ اب یہ صرف چھلکا ہی چھلکا ہے۔ پھر بھی اگر تم چاہو تو ہم تمہیں یہاں کا راج دلوا دیں۔"

انھوں نے کہا۔ "اوپر ایشور ہے۔ نیچے آپ ہیں۔ آپ ہم سب کے ماں باپ ہیں۔ آپ جو کچھ حکم دیں گے ہم سر آنکھوں سے اس کا پالن کریں گے۔"

لال بندروں نے کہا۔ "بس تم بھی اپنی جاتی کو اکسا دو۔ ان سے کہو جھوٹ موٹ شور مچا دیں۔ دیکھو تو ہم کتنے اچھے پھل اور میوے ان بھوروں سے چھین کر تمہیں دے دیتے ہیں۔"

لال بندروں نے جو اتنی شہ دی تو کتھئی بندروں نے وہ شور مچایا کہ کان پڑی آواز نہ سنائی دی۔ ان کا ایک ساتھ منھ کھلا رہتا اور سوائے اس کے کچھ نہ سنائی پڑتا "باغ بانٹ دو، ہمارا حصہ الگ کر دو۔" انسان نے بار بار سمجھایا۔ "یہ لال بندر تمہیں بہکا کر اپنا الو سیدھا کرتا

चाहते है. आज बाग के हर फल और हर मेवे मे तुम्हारा हिस्सा है. जब यह बॅट जायगा तो तुम्हे बहुत थोड़ा मिलेगा इतना भी तो न होगा कि तुम पेट भर खा सको, क्यो अपने पैर मे कुल्हाड़ी मारते हो ? अपने हाथो से अपना ही नुकसान करते देख कर मेरा दिल फटता है. भूरे कत्थई दोनो एक है. जब से तुम इस बाग मे आये तुमने इसे अपना घर समझा तुमने यहॉ के पौदो से कोई विदेशी बाग नहीं बसाया. तुम बाहरी कत्थई बंदरों से इस बाग के लिये बहुत लडे तुम्हारे कई बसो की हड्डियॉ गल कर यहॉ की भूमि का खमीर बन गई है तुमने भूरे बन्दरो से रिश्ता नाता किया तुम इस बाग के इसी तरह वासी हो जिस तरह भूरे बन गये है तुम मे से अलग होने का विचार छोड़ दो तुम अपने हिस्से से अधिक फल ले लो, मेवे लेलो, तरकारियॉ ले लो पर आपस मे एक हो जाओ भाई भाई की तरह रहो और इस समय मुट्ठी बॉध कर लाल बन्दरो के मुँह पर अहिंसा का मुक्का मार दो."

यह बात कत्थई बन्दरो की समझ मे ऊँची थी वह अपनी नसल के बुजुर्ग इन्सानो की तालीम भूल चुके थे. उन्हे तो सिर्फ लाल बन्दरो की चापलूसी करना आती थी उनके लिये तो सबसे बड़ी बात इसी मे थी कि लोग उन्हे देख कर धोका खा जायें और कत्थई की जगह लाल पुकार उठे ऐसी हालत मे वह भला इन्सान की कहॉ सुनते. उन्हो ने कान बन्द कर लिये, ऑखे बन्द कर ली. बस मुँह खोल दिया—"हम अलग होंगे ! हम अलग होंगे !! हम अलग होंगे !!! " लाल बन्दर पीठ ठोकते रहे. शाबाश ! इसी तरह

چاہتے ہیں۔ آج باغ کے ہر پھل اور ہر میوے میں تمہارا حصہ ہے۔ جب یہ بٹ جائے گا تو تمہیں بہت تھوڑا ملے گا۔ اتنا بھی تو نہ ہوگا کہ تم پیٹ بھر کھا سکو، کیوں اپنے پیر میں کلہاڑی مارتے ہو؟ اپنے ہاتھوں سے اپنا ہی نقصان کرتے دیکھ کر ہمارا دل پھٹتا ہے۔ بھورے کتھئی دونوں ایک ہیں۔ جب سے تم اس باغ میں آئے تم نے اسے اپنا گھر سمجھا۔ تم نے یہاں کے پودوں سے کوئی بدیشی باغ نہیں بسایا۔ تم باہری کتھئی بندروں سے اس باغ کے لئے بہت لڑے۔ تمہارے کئی بنسوں کی ہڈیاں گل کر یہاں کی بھومی کی خمیر بن گئی ہیں۔ تم نے بھورے بندروں سے رشتہ ناتہ کیا۔ تم اس باغ کے اسی طرح باسی ہو جس طرح بھورے بن گئے ہیں۔ ایسے میں الگ ہونے کا وچار چھوڑ دو۔ تم اپنے حصہ سے ادھک پھل لے لو، میوے لے لو، ترکاریاں لے لو پر آپس میں ایک ہو جاؤ۔ بھائی بھائی کی طرح رہو۔ اور اس سمے مٹھی باندھ کر لال بندروں کے منہ پر اہنسا کا مکا مار دو۔"

یہ بات کتھئی بندروں کی سمجھ سے اونچی تھی۔ وہ اپنی نسل کے بزرگ انسانوں کی تعلیم بھول چکے تھے۔ انھیں تو صرف لال بندروں کی چاپلوسی کرنا آتی تھی۔ ان کے لئے تو سب سے بڑی بات اسی میں تھی کہ لوگ انھیں دیکھ کر دھوکا کھا جائیں اور کتھئی کی جگہ لال پکار اٹھیں۔ ایسی حالت میں وہ بھلا انسان کی کہاں سنتے۔ انھوں نے کان بند کر لئے۔ آنکھیں بند کر لیں۔ بس منہ کھول دیا — "ہم الگ ہوں گے! ہم الگ ہوں گے!! ہم الگ ہوں گے!!!" لال بندر پیٹھ ٹھونکتے رہے۔ شاباش! اسی طرح

चीख़ते रहो. हम तुम्हें पिछली सारी लड़ाइयो और सारी दुश्मनियों का ऐसा बदला देंगे, तुम्हारे साथ ऐसा नेक सलूक करेगे कि तुम भी याद करोगे कि किसी भले आदमी से पाला पड़ा था."

इन्सान समझाता रहा. कत्थई बन्दर गीदड़ो की तरह एक साथ चिल्लाते रहे, भूरे थक गये. उन्होने कहा—"अच्छा तुम अपना हिस्सा ले लो और हमारी जान छोड़ दो. अगर तुम्हारे अलग होने से यह लाल बन्दर यहाँ से चले जाते हैं तो यह भी सही. भाई छूट जाय, माँ के शरीर का एक अंग भग हो जाय, यह लाल बन्दर तो किसी तरह पिण्ड छोड़ें."

हिस्सा बँटने लगा. मेवे और फल ही का नही बल्कि बाग़ का बँटवारा होने लगा. बन्दर तो बन्दर, नोच खसोट शुरू हुई. नौबत तू तू, मै मै, हाथापाई तक पहुँची. लाल बन्दरों ने छिपे छिपे इस झगड़े को भड़काया. अपनी लाई हुई छड़ियाँ भूरे और कत्थई बन्दरों को बाँट दी. इन दोनों ने एक दूसरे के सीनो मे ख़ूब छेद किये और लाखो की सख्या मे न सूखने वाले ख़ूनी फौवारे जारी हो गये. अजीब बात थी कि जहाँ कहीं भी इन लड़ने वालों के लहू की एक बूँद भी गिरती, तो बाग़ मे आग सी लगती. फल और मेवे सूख कर गिर पड़ते. पेड़ जल कर ख़ाक हो जाते देखते ही देखते बाग़ के हर एक हिस्से से लपटें लपक लपक कर उठने लगीं. जलने और मरने वालों की चिराइन और बदबू सारे बाग़ में इस तरह फैली कि दम घुटने लगा. जहाँ कहीं भी भूरे और कत्थई थे एक दूसरे को भँभोड़ने और काटने लगे. एक दूसरे के ख़िलाफ़ इस तरह नफ़रत भरी काररवाई करते थे जो न कभी देखी

چیختے رہو۔ ہم تمہیں پچھلی ساری لڑائیوں اور ساری دشمنیوں کا ایسا بدلہ دیں گے، تمہارے ساتھ ایسا نیک سلوک کریں گے کہ تم بھی یاد کروگے کہ کسی بھلے آدمی سے پالا پڑا تھا۔"

انسان سمجھاتا رہا۔ کتھئی بندر گیدڑوں کی طرح ایک ساتھ چلاتے رہے، بھورے تھک گئے۔ انھوں نے کہا۔ "اچھا تم اپنا حصہ لے لو اور ہماری جان چھوڑ دو۔ اگر تمہارے الگ ہونے سے یہ لال بندر یہاں سے چلے جاتے ہیں تو یہ بھی سہی۔ بھائی چھوٹ جائے، ماں کے شریر کا ایک انگ بھنگ ہو جائے، یہ لال بندر تو کسی طرح پنڈ چھوڑیں۔"

حصہ بٹنے لگا۔ میوے اور پھل ہی کا نہیں بلکہ باغ کا بٹوارہ ہونے لگا۔ بندر تو بندر، نوچ کھسوٹ شروع ہوئی۔ نوبت تو تو، میں میں، ہاتھاپائی تک پہونچی۔ لال بندروں نے چھپے چھپے اس جھگڑے کو بھڑکایا اپنی لائی ہوئی چھڑیاں بھورے اور کتھئی بندروں کو بانٹ دیں۔ ان دونوں نے ایک دوسرے کے سینوں میں خوب چھید کئے اور لاکھوں کی سنکھیا میں نہ سوکھنے والے خونی فوارے جاری ہو گئے۔ عجیب بات تھی کہ جہاں کہیں بھی ان لڑنے والوں کے لہو کی ایک بوند بھی گرتی، تو باغ میں آگ سی لگتی۔ پھل اور میوے سوکھ کر گر پڑتے۔ پیڑ جل کر خاک ہو جاتے۔ دیکھتے ہی دیکھتے باغ کے ہر ایک حصہ سے لپٹیں لپک لپک کر اٹھنے لگیں جلنے اور مرنے والوں کی چرائن اور بدبو سارے باغ میں اس طرح پھیلی کہ دم گھٹنے لگا۔ جہاں کہیں بھی بھورے اور کتھئی تھے ایک دوسرے کو بھنبوڑنے اور کاٹنے لگے۔ ایک دوسرے کے خلاف اس طرح نفرت بھری کارروائی کرتے تھے جو نہ کبھی دیکھی

गई थी और न कभी सुनी गई थी. बस चारों ओर 'मारो मारो, काटो काटो और बरबाद करो." की आवाज़ थी. ख़ून था, दुगन्ध थी, सड़न थी.

ऐसे मे भूरों का नेता सब से ऊँचे पेड़ पर चढ़ कर पूरी आवाज़ मे चीखा "ठहरो ! सुनो !" जान पड़ा किसी ने मंत्र फूँक दिया, क़त्ल के लिये उठे हुए हाथ रुक गये और लूट के लिये बढ़े हुए क़दम थम गये.

उसने भूरों से पूछा—'तुम किसे मार रहे हो ?"

उन्होंने कहा—"कत्थई बन्दरों को"

"क्यों ?"

"इस लिये कि यह दुष्ट हैं, कमीने हैं, राक्षस हैं ! यह बाग़ के हर कोने मे जहाँ इनकी संख्या अधिक है, भूरे बन्दरों की बोटियाँ काट कर फेंक रहे हैं."

उसने कहा—"अच्छा यह भी सही. पर यह तो बताओ वहाँ के कत्थई बन्दर दुष्ट हुए, अपराधी हुए. यहाँ वाले कैसे हो गये ? इनको निर्दोष मारना तो कोई धर्म नहीं"

"अरे यह सब साँप के बच्चे हैं आज इनके ज़हर के दाँत नहीं निकले हैं, कल यह भी डसने लगेंगे" वह मीठे स्वर मे बोला—"पर मुझे तो इस बाग़ के रखवालों ने यही बतलाया है कि साँप को भी न मारो उसे भी दूध चावल खिलाकर अपना बना लो. अच्छा इसको भी छोड़ो, तुम भूरे बन्दर इसका दावा करते हो कि हमने सबसे अधिक इन्सान पैदा किये. कत्थई कहते हैं हममे सबसे अधिक इन्सान हुए. और जानते हो इन्सान किसे कहते हैं. ? उसे जो दुनिया

گئی تھی اور نہ کبھی سنی گئی تھی۔ بس چاروں اور "مارو، مارو، کاٹو، اور برباد کرو۔" کی آواز تھی۔ خون تھا، بو تھی، سڑن تھی۔

ایسے میں بھوروں کا نیتا سب سے اونچے پیڑ پر چڑھ کر پوری آواز میں چیخا "ٹھہرو! سنو!" جان پڑا کسی نے منتر پھونک دیا، قتل کے لئے اٹھے ہوئے ہاتھ رک گئے اور لوٹ کے لئے بڑھتے ہوئے قدم تھم گئے۔

اس نے بھوروں سے پوچھا "تم کسے مار رہے ہو؟"

انھوں نے کہا "کتھئی بندروں کو۔"

"کیوں؟"

"اس لئے کہ وہ دشٹ ہیں، کمینے ہیں، راکشس ہیں! وہ باغ کے ہر کونے میں جہاں ان کی سنکھیا ادھک ہے، بھورے بندروں کی بوٹیاں کاٹ کر پھینک رہے ہیں۔"

اس نے کہا "اچھا یہ بھی سہی، پر یہ تو بتاؤ وہاں کے کتھئی بندر دشٹ ہوئے، اپرادھی ہوئے، یہاں والے کیسے ہو گئے؟ ان کو نردوش مارنا تو کوئی دھرم نہیں۔"

"ارے یہ سب سانپ کے بچے ہیں۔ آج ان کے زہر کے دانت نہیں نکلے ہیں، کل یہ بھی ڈسنے لگیں گے۔" وہ میٹھے سُر میں بولا "پر مجھے تو اس باغ کے رکھوالوں نے یہی بتلایا ہے کہ سانپ کو بھی نہ مارو۔ اسے بھی دودھ چاول کھلا کر اپنا بنا لو۔ اچھا اس کو بھی چھوڑو، تم بھورے بندر اس کا دعویٰ کرتے ہو کہ ہم نے سب سے ادھک انسان پیدا کئے، کتھئی کہتے ہیں ہم میں سب سے ادھک انسان ہوئے۔ اور جانتے ہو انسان کسے کہتے ہیں؟ اسے جو دنیا

में सब से अधिक प्रेम और मुहब्बत करता है, जिसकी नज़र में काले, भूरे, कत्थई का भेद नहीं, जो हर एक को भाई समझे, जो गिरे पड़े दुर्बल को अपने से शक्ति शाली और बलवान समझे और अपने से अच्छा जाने, जो हत्यारे को भी दूध का प्याला दे, जो सीने पर सवार क़त्ल करने वाले के लिये भी निर्वाण की प्रार्थना करे, वह जो सूली पर चढ़ाने वाले की भी भलाई चाहे. तुम कत्थई बन्दरों को दुष्ट कहते हो और वह तुम्हें कमीना. बताओ इसमें से इन्सान कौन है ?"

कुछ समझदार कत्थई और भूरों ने, जो इन्सान की संगत में रहते थे, उसकी बोली समझते थे, उसकी बात मान ली और आग के बुझाने में लग गये पर समूची भीड़ सिर खुजलाने लगी. उनका दिल कुछ और कहता, उनका इन्सान कुछ और. उनकी समझ में नहीं आता कि क्या करें पर उन में से बहुत से नौजवान यह कह कर उठ गये कि यह भी कत्थई बन्दरों से मिल गया है. जो कुछ कहता है उसमें उन्हीं का लाभ होता है. इस की बात पर कान धरने में सरासर घाटा है. यह लोग बड़े बड़े जत्थों के रूप में गुप्त स्थानों में बैठकर कत्थई बन्दरों का शिकार खेलने लगे. इन्होंने इन्सान की पुकार की ओर से अपने कान बन्द कर लिये.

बूढ़े इन्सान ने यह सारी हरकतें बहुत ध्यान के साथ देखीं. उसने कुछ सोचा और कुछ को सुना कर कहा—"मैं देखता हूँ तुम शिव के बाग़ को उजाड़ कर ही छोड़ोगे. ऐसी हालत में मुझे जीते रहने की ज़रूरत नहीं है. मैंने निश्चय कर लिया है कि तुम या

میں سب سے اَدھِک پریم اور محبت کرتا ہے، جس کی نظر میں کالے، بھورے کتھئی کا بھید نہیں، جو ہر ایک کو بھائی سمجھے، جو گرے پڑے دُربل کو اپنے سے شکتی شالی اور بلوان سمجھے اور اپنے سے اچھا جانے، جو ہتیارے کو بھی دودھ کا پیالہ دے، جو سینہ پر سوار قتل کرنے والے کیلئے بھی نروان کی پرارتھنا کرے، وہ جو سولی پر چڑھانے والے کی بھی بھلائی چاہے۔ تم کتھئی بندروں کو دُشٹ کہتے ہو اور وہ تمہیں کمینہ۔ بتاؤ اس میں سے انسان کون ہے؟"

کچھ سمجھ دار کتھئی اور بھوروں نے، جو انسان کی سنگت میں رہتے تھے، اس کی بولی سمجھتے تھے، اس کی بات مان لی اور آگ کے بجھانے میں لگ گئے۔ پر سموچی بھیڑ سر کھجانے لگی۔ ان کا دل کچھ اور کہتا، ان کا انسان کچھ اور۔ ان کی سمجھ میں نہیں آتا کہ کیا کریں پر ان میں سے بہت سے نوجوان یہ کہکر اٹھ گئے کہ یہ بھی کتھئی بندروں سے مل گیا ہے۔ جو کچھ کہتا ہے اس میں انھیں کا لابھ ہوتا ہے۔ اس کی بات پر کان دھرنے میں سراسر گھاٹا ہے۔ یہ لوگ بڑے بڑے جتھوں کے روپ میں گپت استھانوں میں بیٹھ کر کتھئی بندروں کا شکار کھیلنے لگے۔ انھوں نے انسان کی پکار کی اُور سے اپنے کان بند کر لئے۔

بوڑھے انسان نے یہ ساری حرکتیں بہت دھیان کے ساتھ دیکھیں۔ اس نے کچھ سوچا اور کچھ کو سنا کر کہا "میں دیکھتا ہوں تم شیو کے باغ کو اجاڑ کر ہی چھوڑو گے۔ ایسی حالت میں مجھے جیتے رہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ میں نے نشچے کر لیا ہے کہ تم یا

तो मेरा कहना मानोगे, आज से काले, भूरे, कत्थई का भेद भूल जाओगे, थप्पड़ के जवाब मे दूसरा गाल बढ़ा दोगे, कत्थई की गोली सीने पर खाओगे और उसकी ओर फूल फेंकोगे या फिर मैं आज से उपवास करके मर जाऊँगा. तुम इस बाग़ के फल के लिये एक दुसरे को मारते हो. मेरे लिये वह फल विष है जिसके लिये किसी का ख़ून बहे." उसने उस दिन से भूका रहना आरम्भ कर दिया बाग़ भर मे तहलका मच गया. जिस मुँह मे निवाला जाता, गले मे अटक जाता. मीठे से मीठे फल कड़वे जान पड़ते. पानी का घूँट ठीक तरह से न उतरता हर एक ने दौड़ना शुरू किया काले, भूरे, कत्थई सबने ख़ुशामद की कि व्रत तोड़िये. अब हम आपस मे नहीं लड़ेंगे. आप ही के कहने पर चलेंगे. हम भगवान को, ईश्वर को साखी देते हैं. हम आप ही की कसम खाते हैं.

जब लाखों करोड़ों बन्दरों ने प्रतिज्ञा की और बात पर जमे रहने का वचन दिया तो अमन और शान्ति के देवता ने व्रत तोड़ा, और मुस्करा कर थोड़ा सा फलो का रस पी लिया.

हर एक ने सन्तोष की साँस ली. बाग़ का रंग बदलने लगा. लड़ने वाले गले मिलने लगे. पर लुटेरो का गिरोह नाख़ुश ही रहा. वह बड़बड़ाता रहा. इस इन्सान ने तो हमारे सारे किये धरे पर पानी फेर दिया. यह चाहता है कि हमने जो लूट मार कर हासिल किया है वह लौटा दें. न हमारा बाग़ रहे न हमारे फल. सब कुछ फिर से दूसरो का हो जाय. यह हमें अपना ही जैसा मूर्ख इन्सान बनाना चाहता है. हम तो अब इसी को मार कर साँस लेंगे.

تو میرا کہنا مانوگے، آج سے کالے، بھورے، کتھئی کا بھید بھول جاؤگے، تھپڑ کے جواب میں دوسرا گال بڑھا دوگے، کتھئی کی گولی سینے پر کھاؤگے اور اس کی اور پھول پھینکوگے یا پھر میں آج سے اپواس کرکے مرجاؤں گا۔ تم اس باغ کے پھل کے لئے ایک دوسرے کو مارتے ہو۔ میرے لئے وہ پھل وش ہے جس کے لئے کسی کا خون بہے۔" اس نے اس دن سے بھوکا رہنا آرمبھ کر دیا۔ باغ بھر میں تہلکا مچ گیا جس منھ میں نوالا جاتا گلے میں اٹک جاتا۔ میٹھے سے میٹھے پھل کڑوے جان پڑتے۔ پانی کا گھونٹ ٹھیک طرح سے نہ اترتا۔ ہر ایک نے دوڑنا شروع کیا۔ کالے، بھورے، کتھئی سب نے خوشامد کی کہ برت توڑیئے اب ہم آپس میں نہیں لڑیں گے۔ آپ ہی کے کہنے پر چلیں گے۔ ہم بھگوان کو، ایشور کو ساکھی دیتے ہیں۔ ہم آپ ہی کی قسم کھاتے ہیں۔"

جب لاکھوں کروڑوں بندروں نے پرتگیا کی اور بات پر جمے رہنے کا وچن دیا تو امن اور شانت کے دیوتا نے برت توڑا۔ اور مسکرا کر تھوڑا سا پھلوں کا رس پی لیا۔

ہر ایک نے سنتوش کی سانس لی۔ باغ کا رنگ بدلنے لگا۔ لڑنے والے گلے ملنے لگے۔ پر لٹیروں کا گروہ ناخوش ہی رہا۔ وہ بڑبڑاتا رہا۔ اس انسان نے تو ہمارے سارے کئے دھرے پر پانی پھیر دیا۔ یہ چاہتا ہے کہ ہم نے جو لوٹ مار کر حاصل کیا ہے وہ لوٹا دیں۔ نہ ہمارا باغ رہے نہ ہمارے پھل۔ سب کچھ پھر سے دوسروں کا ہو جائے۔ یہ ہمیں اپنا ہی جیسا مورکھ انسان بنانا چاہتا ہے۔ ہم تو اب اسی کو مار کر سانس لیں گے۔

उन्होंने निर्जन स्थानों में बैठ कर सभाएँ कीं और उनमें का एक पागल जान पर खेल गया.

बूढ़ा इन्सान हर रोज़ नन्ही टहनियों का सहारा लेकर एक ऊँचे स्थान पर बैठता था. लोगों को ध्यान और ज्ञान की बातें बताता था. आँख वाले उसे देखते थे और कान वाले उसे सुनते थे. एक दिन जैसे ही उसने उस पवित्र स्थान पर पाँव रक्खा, एक भूरे बन्दर ने लाल बन्दरों की लाई हुई छड़ी उठायी और धाँय! धाँय!! धाँय!!! उसके सीने पर दाग़ दी.

इस ज़ोर का हाहाकार मचा कि शिव ने आँखें खोल दीं. उन्होंने देखा भूरे इन्सान के छिदे हुए सीने से ख़ून का फ़ौवारा निकल रहा है और उसकी आत्मा सफ़ेद परों के सहारे हवा में उड़ रही है. उन्होंने मुस्करा कर दोनों हाथ फैला दिये और उसे अपने में समेट लिया.

बाग़ में जले हुए पेड़ों की जड़ों से नये पौदे निकले. ठुंठ हरे हो गये, गुलाब खिल उठे, कमल की चादर पानी पर दौड़ गई. आकाश और अंगूर की बेलें आपस में गुँथ कर एक हुईं और आकाश गंगा से आँखें मिलाने लगीं.

انھوں نے نرجن استھانوں میں بیٹھ کر سبھائیں کیں اور ان میں کا ایک پاگل جان پر کھیل گیا۔

بوڑھا انسان ہر روز ننھی ٹہنیوں کا سہارا لیکر ایک اونچے استھان پر بیٹھتا تھا۔ لوگوں کو دھیان اور گیان کی باتیں بتاتا تھا۔ آنکھ والے اسے دیکھتے تھے اور کان والے اسے سنتے تھے۔ ایک دن جیسے ہی اس نے اس پوتر استھان پر پاؤں رکھا، ایک بھورے بندر نے لال بندروں کی لائی ہوئی چھڑی اٹھائی اور دھائیں! دھائیں!! دھائیں!!! اس کے سینے پر داغ دی۔

اس زور کا ہاہاکار مچا کر شیو نے آنکھیں کھول دیں۔ انھوں نے دیکھا بھورے انسان کے چھدے ہوئے سینے سے خون کا فوارا نکل رہا ہے اور اس کی آتما سفید پنکھوں کے سہارے ہوا میں اڑ رہی ہے۔ انھوں نے مسکرا کر دونوں ہاتھ پھیلا دئے اور اسے اپنے میں سمیٹ لیا۔

باغ میں جلے ہوئے پیڑوں کی جڑوں سے نئے پودے نکلے۔ ٹھنٹھ ہرے ہو گئے، گلاب کھل اٹھے، کمل کی چادر پانی پر دوڑ گئی۔ آکاش اور انگور کی بیلیں آپس میں گندھ کر ایک ہوئیں اور آکاش گنگا سے آنکھیں ملانے لگیں۔

फ़िलिस्तीन की समस्या

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

फ़िलिस्तीन की समस्या साम्राजशाही जरूरतों की समस्या है. उसका जन्म साम्राजशाही जरूरतो को पूरा करने के लिये एख्तयार की जाने वाली बर्तानी भेदनीति का नतीजा है, ताकि लोग यह भूल जायँ कि ब्रिटिश सरकार को अब भी बीच पूरब की जरूरत है, ताकि लोगो को यह यकीन हो जाय कि इंग्लैंड की मौजूदा 'मजदूर सरकार' जमहूरियत के उसूलो पर चल रही है. अब वह साम्राजवादी नही रही, बल्कि वह हर एक जाति को उसका वाजिब हक़ देने की कोशिश कर रही है. उसने फ़िलिस्तीन को जाहिर तौर से खाली करने का निश्चय किया. मगर इस खाली करने के पहले ही उसने फ़िलिस्तीन की समस्या इतनी जटिल बना दी थी, यहूदियो और अरबो का झगड़ा इतना अधिक बढ़ा दिया था कि उसका फ़िलिस्तीन को खाली करना एक बे मानी सी बात हो जाती है. फ़िलिस्तीन मे बर्तानिया और उसका साथी अमरीकी साम्राज पहले से भी अधिक खौफ़नाक ढग से अब भी मौजूद है. अगर बर्तानी साम्राजशाही को अपने स्वार्थों की रक्षा के लिये यहूदी सरमायादारों की जरूरत न होती, अगर वह देखती कि अरबों का क़ौमी आंदोलन कमज़ोर है. लेकिन अरबो के इस कौमी आन्दोलन की मज़बूती उसे मजबूर करती है कि वह यहूदी बनियों की मदद

فلسطین کی سمسیا

(بھائی اُنکار ناتھ شاستری)

فلسطین کی سمسیا سامراج شاہی ضرورتوں کی سمسیا ہے۔ اس کا جنم سامراج شاہی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے اختیار کی جانے والی برطانی بھید نیتی کا نتیجہ ہے، تاکہ لوگ یہ بھول جائیں کہ برٹش سرکار کو اب بھی بیچ پورب کی ضرورت ہے، تاکہ لوگوں کو یہ یقین ہو جائے کہ انگلینڈ کی موجودہ "مزدور سرکار" جمہوریت کے اصولوں پر چل رہی ہے، اب وہ سامراج وادی نہیں رہی، بلکہ وہ ہر ایک جاتی کو اس کا واجب حق دینے کی کوشش کر رہی ہے۔ اس نے فلسطین کو ظاہر طور سے خالی کرنے کا نشچے کیا۔ مگر اس خالی کرنے کے پہلے ہی اس نے فلسطین کی سمسیا اتنی زٹل بنا دی تھی، یہودیوں اور عربوں کا جھگڑا اتنا اَدھک بڑھا دیا تھا کہ اس کا فلسطین کو خالی کرنا ایک بے معنی سی بات ہو جاتی ہے۔ فلسطین میں برطانیہ اور اس کا ساتھی امریکی سامراج پہلے سے بھی اَدھک خوفناک ڈھنگ سے اب بھی موجود ہے۔ اگر برطانی سامراج شاہی کو اپنے سوارتھوں کی رکھشا کے لئے یہودی سرمایہ داروں کی ضرورت نہ ہوتی، اگر وہ دیکھتی کہ عربوں کا قومی آندولن کمزور ہے۔ لیکن عربوں کے اس قومی آندولن کی مضبوطی اُسے مجبور کرتی ہے کہ وہ یہودی بنیوں کی مدد

ले. यहूदी बनिये—जो क़ौमियत के नाम पर यहूदी जनता को भी बहका सकते हैं.

साम्राजवादी भेदनीति

ब्रिटिश साम्राजशाही की भेदनीति के संबन्ध मे रोशनी डालना ग़ैर ज़रूरी है. इसी भेदनीति के ज़रीये उसने हिन्द के हिंदुओं और मुसलमानों को बरसों लड़ाने के बाद जब उस पर माउण्ट बेटेन स्कीम लादी तो यह ज़रूरी न समझा गया कि पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी सरकारें इतमीनान से राज सँभाल लें तब वह अपने को हिन्दुस्तान की ज़िम्मेदारी से सुबुकदोश करे. कांग्रेस के नेताओं ने उसे इसके लिये इसलिये मजबूर नहीं किया क्योंकि वह चाहते थे कि जिस तरह भी हो, वह जल्दी से जल्दी मुल्क की हुकूमत छोड़ दे. साथ ही उन्हे उसकी शरारतों का भी पूरा अन्दाज़ा नहीं था. नतीजा यह हुआ कि इसी जल्दी के कारण हिन्दुस्तान के माथे पर पंजाब के इन्सानियत को शर्मिन्दा करनेवाले भयानक दंगों का कलंक लगा. ठीक यही हाल फ़िलिस्तीन मे भी हुआ. बिल्कुल ऐसी ही मजबूरियों से, जिनसे ब्रिटिश साम्राजशाही को हिन्द मे अप्रत्यक्ष (बिलावास्ता) हुकूमत पर ही क़नाअत करने की ज़रूरत महसूस हुई, फ़िलिस्तीन को भी उसने ख़ाली करने का स्वांग रच डाला, पहली बड़ी लड़ाई के समय से ही ब्रिटिश सरकार अरबों और यहूदियों से एक दूसरे के ख़िलाफ़ वायदे करती रही. जनवरी सन् १९१६ को क़ाहिरा के रेज़ीडेण्ट सर हेनरी मैकमीहन ने वादा किया कि ब्रिटिश सरकार पूरब मे फ़ारस की खाड़ी, उत्तर मे दजला,

لے۔ یہودی بنئے ـــ جو قومیت کے نام پر یہودی جنتا کو بھی بہکا سکتے ہیں۔

سامراج وادی بھید نیتی

برٹش سامراج شاہی کی بھید نیتی کے سمبندھ میں روشنی ڈالنا غیر ضروری ہے۔ اسی بھید نیتی کے ذریعے اس نے ہند کے ہندوؤں اور مسلمانوں کو برسوں لڑانے کے بعد جب اس پر ماؤنٹ بیٹن اسکیم لادی تو یہ ضروری نہ سمجھا گیا کہ پاکستانی اور ہندستانی سرکاریں اطمینان سے راج سنبھال لیں تب وہ اپنے کو ہندستان کی ذمہ داری سے سبکدوش کرے۔ کانگریس کے نیتاؤں نے اسے اس کے لئے اس لئے مجبور نہیں کیا کیوں کہ وہ چاہتے تھے کہ جس طرح بھی ہو، وہ جلدی سے جلدی ملک کی حکومت چھوڑ دے۔ ساتھ ہی انھیں اس کی شرارتوں کا بھی پورا اندازہ نہیں تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اسی جلدی کے کارن ہندستان کے ماتھے پر پنجاب کے انسانیت کو شرمندہ کرنے والے بھیانک دنگوں کا کلنک لگا۔ ٹھیک یہی حال فلسطین میں بھی ہوا۔ بالکل ایسی ہی مجبوریوں سے، جن سے برٹش سامراج شاہی کو ہند میں اپرتیکش (بلا واسطہ) حکومت پر ہی قناعت کرنے کی ضرورت محسوس ہوئی، فلسطین کو بھی اس نے خالی کرنے کا سوانگ رچ ڈالا، پہلی بڑی لڑائی کے سمے سے ہی برٹش سرکار عربوں اور یہودیوں سے ایک دوسرے کے خلاف وعدے کرتی رہی۔ جنوری 1914ء کو قاہرہ کے ریزیڈنٹ سر ہنری میک میہن نے وعدہ کیا کہ برٹش سرکار پورب میں فارس کی کھاڑی، اتر میں دجلہ

फरात, अलेप्पो और मोसल की सीमाओं और पच्छिम मे लाल सागर, मिस्र और मेडिट्रेनियन सागर, से घिरे हुए अरब राज को पूरी आज़ादी देगी. इसके खिलाफ २ नवम्बर सन् १९१७ को ब्रिटिश विदेश मंत्री बालफोर ने फिलिस्तीन में यहूदियों को उनका अपना घर बसाने का वचन दिया. लड़ाई खतम होने पर किसी वादे को पूरा न करके ब्रिटिश सामराजशाही ने फिलिस्तीन पर अपनी मातहत सरकार बना दी. लेकिन २५ बरसो की इस हुकूमत के बाद वह फिलिस्तीन को भी हिन्द की तरह ज़ाहिरा तौर से खाली करने को मजबूर हुई. यहाँ भी उसने अपने ऊपर इस तरह की कोई ज़िम्मेदारी नहीं ली कि अरबों और यहूदियों मे कोई सच्चा समझौता कराये. कोई सच्चा समझौता न हो सकता था और न वह कराना चाहती थी. अगर वह ऐसी कोशिश करती तो सुरक्षा कौंसिल के ज़रिये उसे फिलिस्तीन मे घुसे रहने का अवसर कैसे मिलता. इसलिये यहूदियों और अरबों की मौजूदा लड़ाई ब्रिटिश सरकार की भेद नीति का ठीक वैसी ही मिसाल है, जैसी हम हिन्द मे देख रहे हैं हिन्द मे ब्रिटिश सरकार 'कामन वेल्थ' और देश की रक्षा के नाम पर बनी रहना चाहती है. फिलिस्तीन मे आपसी झगड़ों के हल के लिये सुरक्षा कौंसिल की 'ट्रस्टी शिप' की अमरीकी योजना का समर्थन करने लगी है. हिन्द मे अनेक तिजारतों मे लगी हुई उसकी पूंजी का तकाज़ा है कि वह पूरे तौर से आज़ाद न हो, उधर उसे अरब देशों के तेल का लालच है. इसलिये जो लोग फिलिस्तीन के आज के झगड़ों, उसकी मौजूदा लड़ाई और साम्राज-शाही की भेद नीति को लूट खसोट से अलग किसी और उसूल

فرات، الیپو اور موصل کی سیماؤں اور پچھم میں لال ساگر، مصر اور میڈی ٹرینین ساگر، سے گھرے ہوئے عرب راج کو پوری آزادی دے گی۔ اس کے خلاف ۲ نومبر ۱۹۱۷ء کو برٹش بدیش منتری بال فور نے فلسطین میں یہودیوں کو ان کا اپنا گھر بسانے کا وچن دیا۔ لڑائی ختم ہونے پر کسی وعدے کو پورا نہ کر کے برٹش سامراج شاہی نے فلسطین پر اپنی ماتحت سرکار بنادی۔ لیکن ۲۵ برسوں کی اس حکومت کے بعد وہ فلسطین کو بھی ہند کی طرح ظاہرہ طور سے خالی کرنے کو مجبور ہوئی۔ یہاں بھی اس نے اپنے اوپر اس طرح کی کوئی ذمہ داری نہیں لی کہ عربوں اور یہودیوں میں کوئی سچا سمجھوتہ کرائے۔ کوئی سچا سمجھوتہ نہ ہو سکتا تھا اور نہ وہ کرانا چاہتی تھی۔ اگر وہ ایسی کوشش کرتی تو سرکشا کونسل کے ذریعہ اسے فلسطین میں گھسے رہنے کا اوسر کیسے ملتا۔ اس لئے یہودیوں اور عربوں کی موجودہ لڑائی برٹش سرکار کی بھید نیتی کی ٹھیک ویسی ہی مثال ہے، جیسی ہم ہند میں دیکھ رہے ہیں۔ ہند میں برٹش سرکار "کامن ولتھ" اور دیش کی رکشا کے نام پر بنی رہنا چاہتی ہے۔ فلسطین میں آپسی جھگڑوں کے حل کے لئے سرکشا کونسل کی "ٹرسٹی شپ" کی امریکی یوجنا کا سمرتھن کرنے لگی ہے۔ ہند میں انیک تجارتوں میں لگی ہوئی اس کی پونجی کا تقاضا ہے کہ وہ پورے طور سے آزاد نہ ہو، ادھر اسے عرب دیشوں کے تیل کا لالچ ہے۔ اسلئے جو لوگ فلسطین کے آج کے جھگڑوں، اس کی موجودہ لڑائی اور سامراج شاہی کی بھید نیتی کو لوٹ کھسوٹ سے الگ کسی اور اصول

या मक़सद के सहारे समझना चाहते हैं, वह असलियत से दूर ही रहेंगे.

क़ौमी आन्दोलन

दर असल इस साम्राजवादी भेदनीति का मकसद अरब देशों के तेल और सारे एशिया की राजनीति पर साम्राजवादी कंट्रोल रखना है, जिसके सिलसिले में अरबों का क़ौमी आन्दोलन दबाये रखना, उनकी तिजारती और उद्योगी तरक़्क़ी को रोकना लाज़िमी हो जाता है. लेकिन अरबों की क़ौमी तहरीक एक प्रगतिशील लड़ाई है, जो साम्राज शाही स्वर्थों को गहरा धक्का पहुंचाते हुए वहाँ के मज़दूरों किसानों को सदियों की ग़ुलामी से छुटकारे का रास्ता दिखलाती है.

इसके ठीक बिलकुल उलटा यहूदियों का दावा है. साम्राजशाही चालों से फ़ायदा उठा कर यहूदी इधर कुछ बढ़ चले हैं. पर इससे उनके दावे सही साबित नहीं होते. अक्सर लोगों को यहूदियों के साथ इसलिये हमदर्दी हो जाती है कि दुनिया में उनकी जाति के लिये कोई मातृ भूमि नहीं है. उनके हमदर्दों का कहना है कि सन् ७० से, जब से जेरुसलम का पतन हुआ, वह दुनिया में इधर उधर भटकते रहे और कहीं उनका ठौर ठिकाना नहीं लगा. और उनकी इस सारी मुसिबतों का कारण उनके इतिहासी देश का उनके हाथ से निकल जाना है. मगर यह बेमानी सी बात है. अगर यह बात होती तो क्या वजह थी कि क़रीब २००० वर्षों तक यहूदियों को अपने देश में लौटने की बात नहीं सूझती ? क्या वजह है कि ... सदी के आखिर में ही पैदा हुआ और इसके

یا مقصد کے سہارے سمجھنا چاہتے ہیں، وہ اصلیت سے دور ہی رہینگے۔

قومی آندولن

دراصل اس سامراج وادی بھید نیتی کا مقصد عرب دیشوں کے تیل اور سارے ایشیا کی راج نیتی پر سامراج وادی کنٹرول رکھنا ہے، جس کے سلسلے میں عربوں کا قومی اندولن دبائے رکھنا، ان کی تجارتی اور اُدیوگی ترقی کو روکنا لازمی ہو جاتا ہے۔ لیکن عربوں کی قومی تحریک پرگتی شیل لڑائی ہے، جو سامراج شاہی سوارتھوں کو گہرا دھکا پہنچاتے ہوئے وہاں کے مزدوروں کسانوں کو صدیوں کی غلامی سے چھٹکارے کا راستہ دکھلاتی ہے۔

اس کے ٹھیک بالکل الٹا یہودیوں کا دعوا ہے۔ سامراج شاہی چالوں سے فائدہ اٹھا کر یہودی ادھر کچھ بڑھ چلے ہیں۔ پر اس سے ان کے دعوے صحیح ثابت نہیں ہوتے۔ اکثر لوگوں کو یہودیوں کے ساتھ اسلئے ہمدردی ہو جاتی ہے کہ دنیا میں ان کی جاتی کے لئے کوئی ماتر بھومی نہیں ہے۔ ان کے ہمدردوں کا کہنا ہے کہ سنہ ۷۰ سے، جب سے زیروشلم کا پتن ہوا، وہ دنیا میں اِدھر اُدھر بھٹکتے رہے اور کہیں ان کا ٹھور ٹھکانہ نہیں لگا۔ اور ان کی اس ساری مصیبتوں کا کارن ان کے اِتہاسی دیش کا ان کے ہاتھ سے نکل جانا ہے۔ مگر یہ بے معنی سی بات ہے۔ اگر یہ بات ہوتی تو کیا وجہ تھی کہ قریب ۲۰۰۰ ورشوں تک یہودیوں کو اپنے دیش میں لوٹنے کی بات نہیں سوجھتی؟ کیا وجہ ہے کہ یہ سوال اُنیسویں صدی کے آخر ...

पहले जब किसी ने आवाज़ उठाई, जैसे सेबेताई ज़ेवी, तो उसे झूटा मेसिया (मुक्ति दिलाने वाला) कहा गया और उसके मानने वालों को बुरी तरह सताया गया.

सच्ची बात तो यह है कि यहूदियों की नामधारी क़ौमी तहरीक की कोई साइन्सी बुनियाद नहीं है. दुनिया के अलग-अलग देशों में बसे हुये यहूदी हज़ारों बरस से अपने-अपने ढग से रहते आये हैं. इसलिये हाल की यहूदी क़ौमियत की तहरीक का जन्म किसी पुरानी दबी हुई बगावत के फूट निकलने का नतीजा नहीं. यहूदी क़ौमियत की जान आजकल 'ज़िओनिज़्म' माना जाता है ज़िओनिज़्म का जन्म रूस और फ्रांस की दो घटनाओं से हुआ. सन १८६३ में रूस के आर्थिक सुधारों के कारन वहां के छोटे शहरों में रहने वाली जनता को धक्का लगा. पच्छिम में बड़े बड़े पूँजीपतियों की जमा की हुई पूँजी के कारन बिचले तबके के व्योपारियों को धक्का लगना शुरू हुआ. इन बिचले तबक़े के लोगों का मुक़ाबला करने वाले यहूदी थे. इस मुक़ाबले की मार से यहूदी तिलमिला उठे इसलिये ज़ियोन प्रेमियों की संस्था का जन्म हुआ. थोड़े दिनों के बाद फ्रांस में बैरन राल्स चाईल्ड नाम के यहूदी पूँजीपति को, जो यह नहीं चाहता था कि पच्छिमी देशों में बहुत से यहूदी आवें, फ़िलिस्तीन को यहूदियों का देश बनाने की सूझी. उसने इन 'बदकिस्मत भाइयों' की मदद के लिये एक किताब लिखी. इसके थोड़े ही समय बाद बोडापेस्ट के एक अखबार नवीस ने, जिसका नाम थ्योडोर हार्ज़िल था, बेसल में 'वर्ल्ड ज़िओनिस्ट' संस्था कायम की. हार्ज़िल के इस संस्था के बनाने का कारन उस समय पेरिस की वह बगावत

پہلے جب کسی نے آواز اٹھائی، جیسے سیوتیائی زیوی تو اسے جھوٹا میلیا (مکتی دلانے والا) کہا گیا اور اس کے ماننے والوں کو بُری طرح ستایا گیا۔

سچی بات تو یہ ہے کہ یہودیوں کی نام دھاری قومی تحریک کی کوئی سائنسی بنیاد نہیں ہے۔ دنیا کے الگ الگ دیشوں میں بسے ہوئے یہودی ہزاروں برس سے اپنے اپنے ڈھنگ سے رہتے آئے ہیں۔ اس لئے حال کی یہودی قومیت کی تحریک کا جنم کسی پرانی دبی ہوئی بغاوت کے پھوٹ نکلنے کا نتیجہ نہیں۔ یہودی قومیت کی جان آج کل وزیونزم مانا جاتا ہے۔ زیونیزم کا جنم روس اور فرانس کی دو گھٹناؤں سے ہوا۔ ۱۸۶۳ء میں روس کے آرتھک سدھاروں کے کارن وہاں کے چھوٹے شہروں میں رہنے والی جنتا کو دھکا لگا۔ پچھم میں بڑے بڑے پونجی پتیوں کی جمع کی ہوئی پونجی کے کارن بچلے طبقے کے بیوپاریوں کو دھکا لگنا شروع ہوا۔ ان بچلے طبقے کے لوگوں کا مقابلہ کرنے والے یہودی تھے۔ اس مقابلے کی مار سے یہودی تلملا اٹھے اس لئے زیون پریمیوں کی سنستھا کا جنم ہوا۔ تھوڑے دنوں کے بعد فرانس میں ویرن رالس چائلڈ نام کے یہودی پونجی پتی کو، جو یہ نہیں چاہتا تھا کہ پچھمی دیشوں میں بہت سے یہودی آویں، فلسطین کو یہودیوں کا دیش بنانے کی سوجھی۔ اس نے ان 'بدقسمت بھائیوں' کی مدد کیلئے ایک کتاب لکھی۔ اس کے تھوڑے ہی سمے بعد بوڈاپسٹ کے ایک اخبار نویس نے، جس کا نام تھیوڈور ہارزل تھا، بیسل میں، 'ورلڈ زیونسٹ' سنستھا قائم کی۔ ہارزل کے اس سنستھا کے بنانے کا کارن اس سمے پیرس کی وہ بغاوت

थी जो यहूदियों के ख़िलाफ़ की गई थी. पर यह सब तारीख़ इतनी ताज़ी है कि इसका दो हजार बरसों के यहूदियों के आर्थिक और राजनीतिक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था. और इस तहरीक में पहली बड़ी लड़ाई के बाद तक भी इतना दम नहीं था जितना आज दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद आ गया है. नहीं तो सन् १८८१ और सन् १९२५ के अन्दर चालीस लाख यहूदियों ने अपनी ख़ुशी से अपनी मातृभूमि छोड़ दी जिसका नतीजा यह हुआ कि योरप में उनकी संख्या साठ लाख से बढ़कर अस्सी लाख हो गई.

कहा जा सकता है कि यहूदी क़ौमी आन्दोलन कितना भी ताज़ा हो, पर इसलिये ही उसे बे मानी नहीं कहा जा सकता. यह सही है लेकिन यहूदी क़ौमी आन्दोलन इसलिये बेमानी है कि किसी भी जाति का जो हज़ारों बरस से बाहर रही हो, किसी देश पर अधिकार करने का हक़ नहीं है. अगर ऐसा है तो हिन्द के बहुतेरे हिस्सों के आदी वासी 'आर्यों' से कह सकते हैं कि तुम बाहर से आये हो इस देश को ख़ाली करो. इसी तरह योरप के अनेक हिस्सों में बाहर से आये हुए आर्य बसे हुये हैं. इस दावे के मुताबिक़ उन्हें भी देश छोड़ना पड़ेगा. क़ौमियत और जातीयता में फ़रक है. हर देश का क़ौमी आन्दोलन वहाँ की सामन्तवादी जिन्दगी के ख़िलाफ़ एक ऐसी आवाज़ है जो अपने साथ पूंजीवादी तहज़ीब लाती है. शुरू में पूँजी वाद में ऐसी ताक़त थी कि वह एक देश की चारदिवारी तक फैल कर उसकी अलग अलग सामन्तवादी रियासतों, अलग अलग जातियों, संस्कृतियों को एक करके उन्हें क़ौमियत के बंधन में बाँध दे. आज पूंजीवाद

تھی جو یہودیوں کے خلاف کی گئی تھی۔ پر یہ سب تاریخ اتنی تازی ہے کہ اس کا دو ہزار برسوں کے یہودیوں کے آرتھک اور راج نیتک جیون سے کوئی سمبندھ نہیں تھا۔ اور اس تحریک میں پہلی بڑی لڑائی کے بعد تک بھی اتنا دم نہیں تھا جتنا آج دوسری بڑی لڑائی کے بعد آ گیا ہے۔ نہیں تو ۱۸۸۱ء اور ۱۹۲۵ء کے اندر چالیس لاکھ یہودیوں نے اپنی خوشی سے اپنی ماترِبھومی چھوڑ دی جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ یورپ میں ان کی سنکھیا ساٹھ لاکھ سے بڑھ کر اسی لاکھ ہو گئی۔

کہا جا سکتا ہے کہ یہودی قومی آندولن کتنا بھی تازہ ہو، پر اس لئے ہی اسے بے معنی نہیں کہا جا سکتا۔ یہ صحیح ہے لیکن یہودی قومی آندولن اسلئے بے معنی ہے کہ کسی بھی جاتی کا جو ہزاروں برس سے باہر رہی ہو، کسی دیش پر ادھیکار کرنے کا حق نہیں ہے۔ اگر ایسا ہے تو ہند کے بہتیرے حصوں کے آدی باسی 'آریوں' سے کہہ سکتے ہیں کہ تم باہر سے آئے ہو اس دیش کو خالی کرو۔ اسی طرح یورپ کے انیک حصوں میں باہر سے آئے ہوئے آریہ بسے ہوئے ہیں۔ اس دعوے کے مطابق انھیں بھی دیش چھوڑنا پڑے گا۔ قومیت اور جاتیتا میں فرق ہے۔ ہر دیش کا قومی آندولن وہاں کی سامنت وادی زندگی کے خلاف ایک ایسی آواز ہے جو اپنے ساتھ پونجی وادی تہذیب لاتی ہے۔ شروع میں پونجی واد میں ایسی طاقت تھی کہ وہ ایک دیش کی چار دیواری تک پھیل کر اس کی الگ الگ سامنت وادی ریاستوں، الگ الگ جاتیوں، سنسکرتیوں کو ایک کرکے انھیں قومیت کے بندھن میں باندھ دے۔ آج پونجی واد

में यह ताक़त नहीं. पूँजीवाद साम्राज्यवाद में बदल चुका है. जो उसके पतन और बरबादी का जमाना है, निर्माण और तामीर का जमाना नहीं. यह साम्राजवाद किसी पिछड़े हुए देश की क़ौमियत का सख़्त-दुशमन है. अरब क़ौमियत का वह जितना दुशमन है, यहूदी कौमियत का वह उससे कम दुशमन नहीं. मगर उस दूसरी कौमियत को वह बाहर से ला कर फिलिस्तीन में लादना चाहता है. जिसमे कि अरबो की कौमी तहरीक को धक्का लगे और अरब जनता का ध्यान कौमीयत से हटकर साम्प्रदायिकता की ओर चला जाय. इसलिये यहूदी कौमी आन्दोलन की कोई साइन्सी बुनियाद नहीं है. उसे तो कौमी आन्दोलन कहना ही ग़लत है. वह उन पूँजीपतियों की तरफ से चलाया जा रहा है जो ब्रिटिश साम्राज शाही के हाथों कठपुतली बनने के लिये तैयार है.

शरणार्थियों की समस्या

यहूदियों के किसी सवाल पर बहस करने से पहले यहूदी सरमायादारों और यहूदी जनता को अलग करना होगा यहूदी पूंजीपति साम्राजवादियों के हाथ की कठपुतली बनकर कम से कम अरब देशों को लूटने का अवसर चाहते है मगर अभागी यहूदी जनता के सामने लूट का सवाल नहीं है उसे शासन की जरूरत है इसी बात से प्रभावित होकर एक साहब कहते हैं:— "सचमुच सवाल अरब दावे का. बालफोर का, बरतानी हुकूमत का, या फिलिस्तीन का नहीं है बलिक असल सवाल यह है कि एक करोड दस लाख यहूदियों का मसला किस तरह हल किया जाय, जिन्होंने संसार का बड़े बड़े तोहफे दिये है और

میں یہ طاقت نہیں۔ پونجی واد سامراج واد میں بدل چکا ہے۔ جو اس کے پتن اور بربادی کا زمانہ ہے، نرمان اور تعمیر کا زمانہ نہیں۔ یہ سامراج واد کسی پچھڑے ہوئے دیش کی قومیت کا سخت دشمن ہے۔ عرب قومیت کا وہ جتنا دشمن ہے، یہودی قومیت کا وہ اس سے کم دشمن نہیں۔ مگر اس دوسری قومیت کو وہ باہر سے لاکر فلسطین میں لادنا چاہتا ہے۔ جس میں کہ عربوں کی قومی تحریک کو دھکا لگے اور عرب جنتا کا دھیان قومیت سے ہٹکر سامپردایکتا کی اور چلا جائے۔ اس لئے یہودی قومی آندولن کی کوئی سائنسی بنیاد نہیں ہے۔ اُسے تو قومی اندولن کہنا ہی غلط ہے: وہ ان پونجی پتیوں کی طرف سے چلایا جا رہا ہے جو برٹش سامراج شاہی کے ہاتھوں کٹھپتلی بننے کے لئے تیار ہے۔

شرنارتھیوں کی سمسیا

یہودیوں کے کسی سوال پر بحث کرنے سے پہلے یہودی سرمایہ داروں اور یہودی جنتا کو الگ کرنا ہوگا۔ یہودی پونجی پتی سامراج وادیوں کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بنکر کم سے کم عرب دیشوں کو لوٹنے کا اوسر چاہتے ہیں۔ مگر ابھاگی یہودی جنتا کے سامنے لوٹ کا سوال نہیں ہے۔ اُسے شاسن کی ضرورت ہے۔ اسی بات سے پربھاوت ہوکر ایک صاحب کہتے ہیں: "سچ مچ سوال عرب دعوے کا، بالفور کا، برطانی حکومت کا، یا فلسطین کا نہیں ہے بلکہ اصل سوال یہ ہے کہ ایک کروڑ دس لاکھ یہودیوں کا مسئلہ کس طرح حل کیا جائے، جنھوں نے سنسار کو بڑے بڑے تحفے دئے ہیں اور

जिसमें सबसे बड़ा उपहार ईसाई धर्म हैं.' पर सवाल यह है कि यह शरण दे कौन ? फ़िलिस्तीन में इतनी ताक़त कहाँ है कि वह दुनिया के इतने यहूदियों को जगह दे सके. आज फ़िलिस्तीन में कुल आठ लाख के क़रीब यहूदी हैं, जो कुल आबादी के आधे के क़रीब हैं. सन् १९१९ मे जब कुल आबादी साढ़े छै लाख के लगभग थी, उस समय वहाँ सिर्फ़ ६५ हज़ार यहूदी थे. सन् १९२९ तक जब आबादी बढ़कर १५ लाख हुई तो यहूदी साढ़े चार लाख के लगभग थे. इस तरह क्या फ़िलिस्तीन की उदारता का इम्तहान पहले ही नहीं हो चुका है. और फिर क्या वजह है कि जिस उदारता के लिये दुनिया के आगे बढ़े हुए धनी देश तैयार नहीं हैं उसके लिये फ़िलिस्तीन जैसा पिछड़ा हुआ देश तैयार हो. दरअसल साम्राजवादियों के सामने यहूदियों को शरण देने का सवाल नहीं है. बल्कि सवाल उस बेकार जनता से किसी तरह छुटकारा पाने का है, जो पूंजीवाद के बढ़ते हुए आर्थिक संकट का नतीजा है. आज के साम्राजवादी लुटेरो ने हिटलर को नाज़ीवाद के लिये कोसा था, क्योंकि उसने यहूदियों को जर्मनी से ज़बरदस्ती निकाला. फिर क्या कारन है कि यह साम्राजवादी आज अपने यहाँ उनके लिये जगह नहीं दे पाते. दरअसल उनके सामने क़ौमीयत या जाति का कोई सवाल नहीं है. लेकिन अगर वह आसानी से इसका इस्तेमाल कर सकते हैं तो इसमें कोई हर्ज नहीं समझते. वह देखते हैं कि इस आन्दोलन के सहारे बेकार यहूदियो की बेकारी की समस्या हल करने से बच जायें गे और साथ ही उनके देशों की जनता भी इसकी ... यह उनकी भूल है दुनिया के आगे

جس میں سب سے بڑا اُپہار عیسائی دھرم ہے۔" پر سوال یہ ہے کہ یہ شرن دے کون؟ فلسطین میں اتنی طاقت کہاں ہے کہ وہ دنیا کے اتنے یہودیوں کو جگہ دے سکے. آج فلسطین میں کل آٹھ لاکھ کے قریب یہودی ہیں، جو کل آبادی کے آدھے کے قریب ہیں. سن ۱۹۱۹ میں جب کل آبادی ساڑھے چھ لاکھ کے لگ بھگ تھی، اس سمے وہاں صرف ۶۵ ہزار یہودی تھے. سن ۱۹۲۹ تک جب آبادی بڑھ کر ۱۵ لاکھ ہوئی تو یہودی ساڑھے چار لاکھ کے لگ بھگ تھے. اس طرح کیا فلسطین کی اُدارتا کا امتحان پہلے ہی نہیں ہو چکا ہے. اور پھر کیا وجہ ہے کہ جس اُدارتا کے لئے دنیا کے آگے بڑھے ہوئے دھنی دیش تیار نہیں ہیں اس کے لئے فلسطین جیسا پچھڑا ہوا دیش تیار ہو. دراصل سامراج وادیوں کے سامنے یہودیوں کو شرن دینے کا سوال نہیں ہے. بلکہ سوال اس بیکار جنتا سے کسی طرح چھٹکارا پانے کا ہے، جو پونجی واد کے بڑھتے ہوئے آرتھک سنکٹ کا نتیجہ ہے. آج کے سامراج وادی لٹیروں نے ہٹلر کو نازی واد کے لئے کوسا تھا، کیونکہ اس نے یہودیوں کو جرمنی سے زبردستی نکالا. پھر کیا کارن ہے کہ یہ سامراج وادی آج اپنے یہاں اُن کے لئے جگہ نہیں دے پاتے. دراصل ان کے سامنے قومیت یا جاتی کا کوئی سوال نہیں ہے. لیکن اگر وہ آسانی سے اس کا استعمال کر سکتے ہیں تو اس میں کوئی حرج نہیں سمجھتے. وہ دیکھتے ہیں کہ اس اندولن کے سہارے بے کار یہودیوں کی بے کاری کی سمیا حل کرنے سے بچ جائیں گے اور ساتھ ہی اُن کے دیشوں کی جنتا بھی اس کی مخالفت نہیں کرے گی. مگر یہ ان کی بھول ہے. دنیا کے جاگے

हुए मजदूर इस साम्राजशाही अत्याचार का जोरों से विरोध कर रहे हैं और उन सब की हमदर्दी फिलिस्तीन के अरबों के साथ है.

शरणार्थियों की समस्या का हल इसी मे है कि यहूदियों का इसकी आजादी हो कि वह जिस देश में बसना चाहे बसें. किसी एक देश मे बसने का सवाल ही न पैदा किया जाय. इसमे यहूदियत के विरोध का भी सवाल नही पैदा होता. जातीयता का जहर संसार की जनता से जिस क़दर जल्द निकल सके, अच्छा है. राष्ट्रीयता आगे बढ़कर अंतर राष्ट्रीयता की जगह ले न कि उसके नाम पर एक बढ़ती हुई क़ौमी तहरीक को रोका जाय. यहूदी जहाँ अब तक रह रहे थे वहीं बने रहें. उन्हें शरणार्थी बनने की भी जरूरत नही. बेकारी का मसला दुनिया के सभी मजदूरो का मसला है अकेले यहूदियो का ही नहीं. साम्राजवादी इस बेकारी को किसी तरह दूर नही कर सकते. मगर इस तरह की शरारतो के जरिये वह मजदूरो का ध्यान असल सवालों से हटाकर फिरक़ेवाराना दंगो में उलझा सकते हैं. फिलिस्तीन का झगड़ा शरणार्थियो की समस्या हल करने के लिये पैदा किया गया है. क्या साम्राजवादी इसे नही समझते कि फिलिस्तीन का बँटवारा हो जाने से भी यहूदी शरणार्थियो की समस्या हल नहीं होगी फिर वह शरारत क्यों करते है. ऊपर बतलाया जा चुका है कि साम्राजशाही को अरबो की क़ौमी तहरीक के रास्ते मे बाधा डालना मंजूर है. यहूदी पूँजीपतियो को मजबूत करके नहीं, उन्हे इतना बढ़ाकर कि कम से कम और ज्यादा से ज्यादा वह अड़ंगा डालने की ताक़त रख सकें. जो कुछ भी हो, यहूदी शरणार्थी जनता की समस्या संसार के बाक़ी मजदूरो की

ہوئے مزدور اس سامراج شاہی اتیاچار کا زوروں سے ورودھ کر رہے ہیں اور اُن سب کی ہمدردی فلسطین کے عربوں کے ساتھ ہے۔

شرنارتھیوں کی سمیا کا حل اسی میں ہے کہ یہودیوں کو اس کی آزادی ہو کہ وہ جس دیش میں بسنا چاہیں بسیں۔ کسی ایک دیش میں بسنے کا سوال ہی نہ پیدا کیا جائے۔ اس میں یہودیت کے ورودھ کا بھی سوال نہیں پیدا ہوتا۔ جاتیتا کا زہر سنسار کی جنتا سے جس قدر جلد نکل سکے، اچھا ہے۔ راشٹریتا آگے بڑھ کر انتر راشٹریتا کی جگہ لے نہ کہ اس کے نام پر ایک بڑھتی ہوئی قومی تحریک کو روکا جائے۔ یہودی جہاں اب تک رہ رہے تھے وہیں بنے رہیں۔ انھیں شرنارتھی بننے کی بھی ضرورت نہیں۔ بے کاری کا مسئلہ دنیا کے سبھی مزدوروں کا مسئلہ ہے اکیلے یہودیوں کا ہی نہیں سامراج وادی اس بے کاری کو کسی طرح دور نہیں کرسکتے۔ مگر اس طرح کی شرارتوں کے ذریعے وہ مزدوروں کا دھیان اصل سوالوں سے ہٹاکر فرقہ وارانہ دنگوں میں اُلجھا سکتے ہیں۔ فلسطین کا جھگڑا شرنارتھیوں کی سمیا حل کرنے کے لئے پیدا کیا گیا ہے۔ کیا سامراج وادی اسے نہیں سمجھتے کہ فلسطین کا بٹوارہ ہو جانے سے بھی یہودی شرنارتھیوں کی سمیا حل نہیں ہوگی پھر وہ شرارت کیوں کرتے ہیں۔ اُوپر بتلایا جا چکا ہے کہ سامراج شاہی کو عربوں کی قومی تحریک کے راستے میں بادھا ڈالنا منظور ہے۔ یہودی پونجی پتیوں کو مضبوط کرکے نہیں، انھیں اتنا بڑھاکر کہ کم سے کم اور زیادہ سے زیادہ وہ اڑنگا ڈالنے کی طاقت رکھ سکیں۔ جو کچھ بھی ہو، یہودی شرنارتھی جنتا کی سمیا سنسار کے باقی مزدوروں کی

समस्या से अलग नहीं है. इनक़लाब और साम्राजवाद को खतम करने के अलावा इसका दूसरा कोई रास्ता नही.

ज़िवोनिज़्म का प्रतिगामी रूप

साम्राजशाही सहायता पर निर्भर इस जिवानिज्म का रोल सरासर प्रतिगामी है. यह किसान क्रान्ति का सबसे बड़ा दुशमन है. किसानों को ज्यादा से ज्यादा ग़रीब बनाना और यहूदी सूद खोरों की तादाद बढ़ाना इसका खास काम है. अरब जमींदारों से खरीदी हुई जमीनों मे यहूदी किसानों को कोई हिस्सा नही मिलता. यहूदी जनता की जातीयता का इस्तेमाल यहूदी महाजनों, सूदखोरों के अपने मुनाफे के लिये होता है. फिर जातीयता खुद एक ऐसा जहर है जो ग़रीब किसानों की बग़ावतों का रोकता और उन्हें सदा सामन्ताशाही ढाँचे मे बाँधे रखता है. इस जातीयता मे इतना जरूर ध्यान रक्खा जाता है कि यहूदी यह कह सकें कि उनका रहन सहन का दर्जा अरबों के मुक़ाबले मे ऊँचा है. लेकिन यह बनावटी ज़िंदगी टिकने वाली चीज़ नही.

फिर यहूदी पूँजीपति ब्रिटिश साम्राजशाही का छोटा साझेदार होने के लिये तैयार है. कुछ दिन हुए जब यहूदी ऐजेन्सी के एक मेम्बर ने लिखा—"ब्रिटिश पालिसी का एक बुरा उसूल यह है कि ब्रिटिश अधिकारी महज उनसे समझौता करते हैं जो उनकी शान्ति को भंग करना जानते हैं. लेकिन यह अधिकारी अपने शान्ति चाहने वाले और धीरज रखने वाले साथी की परवाह नही करते, उसे धोका देते हैं. लेकिन अगर ब्रिटेन से समझौता करने का यही तरीका है तो हम इस रास्ते पर चलने के लिये मजबूर है. क्यों कि हमारी

سمسیا سے الگ نہیں ہے۔ انقلاب اور سامراج واد کو ختم کرنے کے علاوہ اس کا دوسرا کوئی راستہ نہیں۔

زیونیزم کا پرتی گامی روپ

سامراج شاہی سہایتا پر نربھر اس زیونیزم کا رول سراسر پرتی گامی ہے۔ یہ کسان کرانتی کا سب سے بڑا دشمن ہے۔ کسانوں کو زیادہ سے زیادہ غریب بنانا اور یہودی سود خوروں کی تعداد بڑھانا اس کا خاص کام ہے۔ عرب زمینداروں سے خریدی ہوئی زمینوں میں یہودی کسانوں کو کوئی حصہ نہیں ملتا۔ یہودی جنتا کی جاتیتا کا استعمال یہودی مہاجنوں، سود خوروں کے اپنے منافع کے لئے ہوتا ہے۔ پھر جاتیتا خود ایک ایسا زہر ہے جو غریب کسانوں کی بغاوتوں کو روکتا اور انھیں سدا سامنت شاہی ڈھانچے میں باندھے رکھتا ہے۔ اس جاتیتا میں اتنا ضرور دھیان رکھا جاتا ہے کہ یہودی یہ کہہ سکیں کہ ان کا رہن سہن کا درجہ عربوں کے مقابلے میں اونچا ہے۔ لیکن یہ بناوٹی زندگی ٹکنے والی چیز نہیں۔

پھر یہودی پونجی پتی برٹش سامراج شاہی کا چھوٹا سا حصے دار ہونے کے لئے تیار ہے۔ کچھ دن ہوئے جب یہودی ایجنسی کے ایک ممبر نے لکھا "برٹش پالیسی کا ایک برا اصول یہ ہے کہ برٹش ادھیکاری محض ان سے سمجھوتہ کرتے ہیں جو ان کی شانتی کو بھنگ کرنا جانتے ہیں۔ لیکن یہ ادھیکاری اپنے شانتی چاہنے والے اور دھیرج رکھنے والے ساتھی کی پرواہ نہیں کرتے، اسے دھوکا دیتے ہیں۔ لیکن اگر برٹین سے سمجھوتہ کرنے کا یہی طریقہ ہے تو ہم اس راستے پر چلنے کے لئے مجبور ہیں، کیوں کہ ہماری

गरज़ का तक़ाज़ा है कि हम ब्रिटेन की दोस्ती हासिल करें... ... हम इस बात में कोई हर्ज नहीं देखते कि यहूदियों को उनका एक क़ौमी राज मिले जिसमें वह अधिक से अधिक आबाद हो सकें, साथ ही ब्रिटेन को इस राज में एक बड़ा और मज़बूत अड्डा मिले. इसके बरख़िलाफ़ हम इसकी बड़ी हिमायत करेंगे." यहूदी पूँजीपति अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़िलिस्तीन में बस जाने पर साम्राज शाही से छुटकारा पाना नहीं चाहता.

रूस और फ़िलिस्तीन

रूस ने फ़िलिस्तीन के बँटवारे का स्वागत किया. उसका जो मतलब है वह साफ़ है. स्टालिन का रूस (यानी रूसी सरकार) किसी ख़ास उसूल पर अमल करने को तैयार नहीं. उसकी ज़ेहनियत इन्क़लाबी नहीं. वह इन्क़लाब को ज़्यादा से ज़्यादा छीन झपट की चीज़ समझता है उसकी विदेश नीति फैलने की है. उसी तरह जैसे साम्राजवादी फैलना चाहते हैं. फैलने के लिये कोई देश उतना ही मुआफ़िक़ पड़ेगा जितना वह टुकड़ों में बँटा रहेगा. रूस को अरबों की क़ौमी क्रान्ति से जो हमदर्दी है वह सिर्फ़ ज़बानी है. अरब और दूसरे बीच पूरब के देशों के पूँजीपतियों और कम्यूनिस्ट पार्टियों का गँठबंधन इस बात का सबूत है कि रूस को वहाँ की क़ौमी तहरीक से कोई सच्चा प्रेम नहीं है. फ़िलिस्तीन के बँटवारे का समर्थन तो यह साफ़ ज़ाहिर कर देता है कि रूस अरब क़ौमी तहरीक का विरोधी है. साम्राजवादी रूस की नियत को समझते हैं. इसलिये वह

غرض کا تقاضہ ہے کہ ہم برطین کی دوستی حاصل کریں .... ہم اس بات میں کوئی حرج نہیں دیکھتے کہ یہودیوں کو ان کا ایک قومی راج ملے جس میں وہ ادھک سے ادھک آباد ہو سکیں، ساتھ ہی برطین کو اس راج میں ایک بڑا اور مضبوط اڈّا ملے۔ اس کے برخلاف ہم اس کی بڑی حمایت کریں گے۔" یہودی پونجی پتی اپنی مرضی کے مطابق فلسطین میں بس جانے پر سامراج شاہی سے چھٹکارا پانا نہیں چاہتا۔

روس اور فلسطین

روس نے فلسطین کے بٹوارے کا سواگت کیا۔ اس کا جو مطلب ہے وہ صاف ہے۔ اسٹالن کا روس (یعنی روسی سرکار) کسی خاص اصول پر عمل کرنے کو تیار نہیں۔ اس کی ذہنیت انقلابی نہیں۔ وہ انقلاب کو زیادہ سے زیادہ چھین جھپٹ کی چیز سمجھتا ہے۔ اس کی بدیش نیتی پھیلنے کی ہے۔ اسی طرح جیسے سامراج وادی پھیلنا چاہتے ہیں۔ پھیلنے کے لئے کوئی دیش اتنا ہی موافق پڑے گا جتنا وہ ٹکڑوں میں بٹا رہے گا۔ روس کو عربوں کی قومی کرانتی سے جو ہمدردی ہے وہ صرف زبانی ہے۔ عرب اور دوسرے بیچ پورب کے دیشوں کے پونجی پتیوں اور کمیونسٹ پارٹیوں کا گٹھ بندھن اس بات کا ثبوت ہے کہ روس کو وہاں کی قومی تحریک سے کوئی سچا پریم نہیں ہے۔ فلسطین کے بٹوارے کا سمرتھن تو یہ صاف ظاہر کر دیتا ہے کہ روس عرب قومی تحریک کا ورودھی ہے۔ سامراج وادی روس کی نیت کو سمجھتے ہیں۔ اس لئے وہ

अमरीका की ट्रस्टीशिप की योजना का समर्थन कर रहे हैं. यह सवाल उठ सकता है कि बीच पूरब में अगर साम्राजवादी बने रहते हैं तो रूस का ही रहना इससे अच्छा होगा. यह ठीक है कि रूस साम्राजवादियो के मुक़ाबले मे अच्छा रहेगा लेकिन इससे रूस की विदेश नीति का समर्थन नही हो सकता, जो उसूल से हट कर उसी नफ़रत और फूट डालने वाली पालिसी का समर्थन कर रहा है जिसे साम्राजवादियो के सिलसिले मे "लड़ाओ और हुकूमत करो" की पालिसी कहा जाता है. यही नहीं बल्कि दुनिया में जहाँ कहीं इस तरह की पेचीदा हालत पैदा होती है, रूस का रुख उसूल के ख़िलाफ़ होता है. हिन्द मे भी उसने इसी तरह का रवैया बता है. कम लोग जानते हैं कि फ़िलिस्तीन मे यहूदियो और अरबो की दो अलग अलग कम्यूनिस्ट पार्टियाँ है. जाति या फ़िरक़े के आधार पर कम्यूनिस्ट पार्टियाँ स्टालिन की लीडरी को ही शोभा देती हैं.

क्या होगा और क्या होना चाहिये ?

इस समय भी अरब अपने दावे को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं. उनका आख़िर दम तक लड़ने का निश्चय ठीक ही है. साम्राजवादियों ने यहूदियों को इतना मज़बूत बना दिया है कि वह अरबों से लड़कर उनकी क़ौमी तहरीक को धक्का पहुँचाते रहें और साम्राजवाद को मदद देते रहें. ऐसी हालत मे अमरीका की ट्रस्टीशिप की स्कीम का विरोध यहूदियों की तरफ़ से एक हद के अन्दर ही होने की सम्भावना (इमकान) है. पर शक्ति राजनीति (Power politics) इतनी जटिल है कि इसके बारे मे

امریکہ کی ٹرسٹی شپ کی یوجنا کا سمرتھن کر رہے ہیں۔ یہ سوال اٹھ سکتا ہے کہ بیچ پورب میں اگر سامراج وادی بنے رہتے ہیں تو روس کا ہی رہنا اس سے اچھا ہوگا۔ یہ ٹھیک ہے کہ روس سامراج وادیوں کے مقابلے میں اچھا رہے گا لیکن اس سے روس کی بدیش نیتی کا سمرتھن نہیں ہو سکتا، جو اصول سے ہٹ کر اسی نفرت اور پھوٹ ڈالنے والی پالیسی کا سمرتھن کر رہا ہے جسے سامراج وادیوں کے سلسلے میں "لڑاؤ اور حکومت کرو" کی پالیسی کہا جاتا ہے۔ یہی نہیں بلکہ دنیا میں جہاں کہیں اس طرح کی پیچیدہ حالت پیدا ہوتی ہے، روس کا رخ اصول کے خلاف ہوتا ہے۔ ہند میں بھی اس نے اسی طرح کا رویہ برتا ہے۔ کم لوگ جانتے ہیں کہ فلسطین میں یہودیوں اور عربوں کی دو الگ الگ کمیونسٹ پارٹیاں ہیں۔ جاتی یا فرقہ کے آدھار پر کمیونسٹ پارٹیاں اسٹالن کی لیڈری کو ہی شوبھا دیتی ہیں۔

کیا ہوگا اور کیا ہونا چاہیئے؟

اس سمے بھی عرب اپنے دعوے کو چھوڑنے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ ان کا آخر دم تک لڑنے کا نشچے ٹھیک ہی ہے۔ سامراج وادیوں نے یہودیوں کو اتنا مضبوط بنا دیا ہے کہ وہ عربوں سے لڑ کر ان کی قومی تحریک کو دھکا پہنچاتے رہیں اور سامراج واد کو مدد دیتے رہیں۔ ایسی حالت میں امریکہ کی ٹرسٹی شپ کی اسکیم کا ورودھ یہودیوں کی طرف سے ایک حد کے اندر ہی ہونے کی سمبھاؤنا (امکان) ہے۔ پر شکتی راج نیتی (Power Politics) اتنی جٹل ہے کہ اس کے بارے میں

आगे के लिये विश्वास के साथ कोई बात नहीं कही जा सकती. यह तो जाहिर ही है कि यहूदियों को लाकर साम्राजवादी उनके जरिये फिलिस्तीन में अपना राज क़ायम रखने में कामयाब हो गये हैं. न तो यहूदी साम्राजवादी चंगुल से छूट सकते हैं और न साम्राजवादी ऐसे अच्छे हथियार को छोड़ कर अरब के तेल की क़ीमती खानों से मुँह मोड़ सकते हैं.

इतना और कह देना है कि अरब के पूंजीपति साम्राजवादी चंगुल से आजाद नहीं हैं. इसलिये अरब की क़ौमी तहरीक वहाँ के मजदूरों किसानो की तहरीक है जो एशिया के दूसरे देशों के मजदूरों किसानो की तहरीक की तरह सरमायादारी के खिलाफ समाजवादी तहरीक का रुप एख्तियार कर चुकी है. अरब के मजदूर व किसान इस बात को जितनी जल्द और जितना ही अधिक समझेंगे, कामयाबी उनके लिये उतनी ही करीब आती जायगी.

हिन्दू, मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.
सौ सफ़े की किताब की कीमत सिर्फ़ बारह आने.
किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

آگے کے لئے وشواش کے ساتھ کوئی بات نہیں کہی جا سکتی۔ یہ تو ظاہر ہی ہے کہ یہودیوں کو لا کر سامراج وادی ان کے ذریعہ فلسطین میں اپنا راج قائم رکھنے میں کامیاب ہو گئے ہیں۔ نہ تو یہودی سامراج وادی چنگل سے چھوٹ سکتے ہیں اور نہ سامراج وادی ایسے اچھے ہتھیار کو چھوڑ کر عرب کے تیل کی قیمتی کھانوں سے منھ موڑ سکتے ہیں۔

اتنا اور کہہ دینا ہے کہ عرب کے پونجی پتی سامراج وادی چنگل سے آزاد نہیں ہیں۔ اس لئے عرب کی قومی تحریک وہاں کے مزدوروں کسانوں کی تحریک ہے جو ایشیا کے دوسرے دیشوں کے مزدوروں کسانوں کی تحریک کی طرح سرمایہ داری کے خلاف سماج وادی تحریک کا روپ اختیار کر چکی ہے۔ عرب کے مزدور و کسان اس بات کو جتنی جلد اور جتنا ہی ادھک سمجھیں گے، کامیابی ان کے لئے اتنی ہی قریب آتی جائے گی۔

ہندو، مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لیکچر جو انھوں نے سنٹرل کنسلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے۔ سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے۔ کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔

— منیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الٰہ آباد

हिन्दुस्तानी कल्चर और संगीत

(१७)

(सितार के कुछ और मशहूर घराने)

(भाई गणेश प्रसाद द्विवेदी)

अभी हम उस्ताद इमदाद हुसेन और उनके गुरू सज्जाद मुहम्मद खाँ सुरबहारिये की चर्चा कर रहे थे. उस घटना के बाद खाँ साहब ने क़रीब दस बरस तक इमदाद खाँ को जी खोलकर तालीम दी और रियाज़ी तो शायद उनसे बढ़ कर कोई हुआ ही नहीं आज तक. बारह घटे रोज़ाना रियाज़ करते थे इमदाद खाँ साहब कहीं सफ़र करते वक़्त अगर गाड़ी के इंतज़ार में स्टेशन पर कुछ देर रुकना पड़ता तो यह वहीं वेटिंग रूम, अगर हुआ तो, उसी मे नहीं तो प्लेटफ़ार्म पर ही बैठ कर अपना रियाज़ शुरू कर देते कौन सुन रहा है, कौन देख रहा है. कौन क्या कह रहा है, इस की इन्हें परवाह नहीं रहती थी. बजाते वक़्त तो इनकी समाध सी लग जाती थी और यह दीन दुनिया से बिलकुल अलग हो जाते थे अपने घर पर इनके अभ्यास करने का जो वक़्त मुक़र्रर रहता उस मे कोई इनके पास जा नहीं सकता था, चाहे कितना ही ज़रूरी काम क्यों न हो, और जो कोई भी हो, इनके कमरे मे नही जा सकता था, और न किसी नौकर या घर के बच्चे को इत्तला करने का ही हुक्म था.

इस सिलसिले मे इनके जीवन की एक बड़ी दर्दनाक घटना

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(۱۷)

ستار کے کچھ اور مشہور گھرانے

(بھائی گنیش پرشاد دویدی)

ابھی ہم استاد امداد حسین اور ان کے گرو سجاد محمد خاں سُربہاریے کی چرچا کر رہے تھے۔ اس گھٹنا کے بعد خاں صاحب نے قریب دس برس تک امداد خاں کو جی کھول کر تعلیم دی اور ریاضی تو شاید ان سے بڑھ کر کوئی ہوا ہی نہیں آج تک۔ بارہ گھنٹے روزانہ ریاض کرتے تھے امداد خاں صاحب کہیں سفر کرتے وقت اگر گاڑی کے انتظار میں اسٹیشن پر کچھ دیر رکنا پڑتا تو یہ وہیں ویٹنگ روم، اگر ہوا تو، اسی میں نہیں تو پلیٹ فارم پر ہی بیٹھ کر اپنا ریاض شروع کر دیتے۔ کون سن رہا ہے، کون دیکھ رہا ہے، کون کیا کہہ رہا ہے، اس کی انھیں پرواہ نہیں رہتی تھی۔ بجاتے وقت تو ان کی سمادھ سی لگ جاتی تھی اور یہ دین دنیا سے بالکل الگ ہو جاتے تھے۔ اپنے گھر پر ان کے ابھیاس کرنے کا جو وقت مقرر رہتا اس میں کوئی ان کے پاس جا نہیں سکتا تھا، چاہے کتنا ہی ضروری کام کیوں نہ ہو، اور جو کوئی بھی ہو، ان کے کمرے میں نہیں جا سکتا تھا، اور نہ کسی نوکر یا گھر کے بچے کو اطلاع کرنے کا ہی حکم تھا۔

اس سلسلے میں ان کے جیون کی ایک بڑی دردناک گھٹنا

का जिक्र कर देना बे मौक़े न होगा. इनकी बीवी बीमार थीं, महीनों से हकीम का इलाज चल रहा था. ख़ाँ साहब ने सब इंतज़ाम कर दिया था, पर अपने रियाज़ के वक़्त तो कमरा बंद कर बैठ ही जाते थे और उसमे किसी दिन ख़लल नहीं पड़ने देते थे. बेगम साहिबा की हालत बिगड़ती ही जा रही थी, आख़िर एक दिन हालत नाज़ुक हो गई. ख़ाँ साहब उस वक़्त अपने ख़ास कमरे में रियाज़ कर रहे थे. डरते डरते उनके बेटे इनायत ख़ाँ कमरे मे गये और बोले "अब्बा, अम्माँ की तबीयत बहुत ख़राब हो रही है, आप को याद कर रही हैं" उन्हो ने कहा—"चलो बेटा आया, दो तानें बाकी हैं, इन्हे कह लूँ, तब तक हकीम साहब को तो बुलवा लो." इनायत ख़ाँ ने कहा—"हकीम साहब अर्से से बैठे हुए हैं, कोई दवा या तरकीब काम नहीं दे रही है. आप को सिर्फ एक बार देखने के लिये बुलाया है." इनायत ख़ाँ सिसकियाँ ले रहे थे इमदाद ख़ाँ छन भर को पसीजे, पर साथ ही बोले—"बेटा परीशान न हो, अल्लाह की अगर यही मरजी है तो इसमे हम और तुम या कोई कर ही क्या सकता है. अच्छा चलो उन्हे ढारस दो मै आया" इनायत ख़ाँ बाहर गये, और इधर फिर रियाज शुरू हो गया. थोड़ी ही देर बाद घर मे से रोने. पीटने की आवाज़ें आना शुरू हुईं. इनायत ख़ाँ ज़ोर ज़ोर से रोते हुए कमरे मे दौड़ कर आये, बोले—"अब्बा अब तो छोड़ो सितार, अम्माँ गईं, एक बार चल के देख तो लो." उन्हो ने गभीर स्वर मे सितार बजाते बजाते ही कहा—"वह चली गईं तो फिर अब मैं वहाँ जाकर क्या करूगा ? कफ़न वग़ैरा

کا ذکر کر دینا بے موقعہ نہ ہوگا۔ ان کی بیوی بیمار تھیں، مہینوں سے حکیم کا علاج چل رہا تھا۔ خاں صاحب نے سب انتظام کر دیا تھا، پر اپنے ریاض کے وقت تو کمرہ بند کر بیٹھ ہی جاتے تھے اور اس میں کبھی دن خلل نہیں پڑنے دیتے تھے۔ بیگم صاحبہ کی حالت بگڑتی ہی جا رہی تھی، آخر ایک دن حالت نازک ہو گئی۔ خاں صاحب اس وقت اپنے خاص کمرے میں ریاض کر رہے تھے۔ ڈرتے ڈرتے ان کے بیٹے عنایت خاں کمرے میں گئے اور بولے "ابا، اماں کی طبیعت بہت خراب ہو رہی ہے، آپ کو یاد کر رہی ہیں" انھوں نے کہا "چلو بیٹا آیا، دو تانیں باقی ہیں، انھیں کہہ لوں، تب تک حکیم صاحب کو تو بلوا لو" عنایت خاں نے کہا "حکیم صاحب عرصہ سے بیٹھے ہوئے ہیں، کوئی دوا یا ترکیب کام نہیں دے رہی ہے، آپ کو صرف ایک بار دیکھنے کے لئے بلایا ہے" عنایت خاں سسکیاں لے رہے تھے۔ امداد خاں چھن بھر کو پسیجے، پر ساتھ ہی بولے "بیٹا پریشان نہ ہو، اللہ کی اگر یہی مرضی ہے تو اس میں ہم اور تم یا کوئی کر ہی کیا سکتا ہے، اچھا چلو انھیں ڈھارس دو میں آیا" عنایت خاں باہر گئے، اور ادھر پھر ریاض شروع ہو گیا۔ تھوڑی ہی دیر بعد گھر میں سے رونے، پیٹنے کی آوازیں آنی شروع ہوئیں۔ عنایت خاں زور زور سے روتے ہوئے کمرے میں دوڑ کر آئے، بولے۔ "ابا اب تو چھوڑو ستار، اماں گئیں، ایک بار چل کے دیکھ تو لو" انھوں نے گمبھیر سر میں ستار بجاتے بجاتے ہی کہا "وہ چلی گئیں تو پھر اب میں وہاں جا کر کیا کروں گا؟ کفن وغیرہ کا انتظام کرو، میں آتا ہوں" غرض کہ ان کی بی بی مر گئیں،

एक निगाह चलते चलते उन्हे देखने को उनकी आँखें खुली ही रह गईं, पर इमदाद खाँ ने अपना रोज का रियाज अधूरा नही छोड़ा, पूरा करके ही उठे, और तब कफ़न मिट्टी वग़ैरा के इतजाम में लगे. वह बड़े कठोर साधक थे, योगी थे.

इमदाद खाँ के इस बर्ताव के बारे मे दो राये हो सकती है. पर इस बात मे किसी को शुबहा नही हो सकता कि कोई भी फन बिना इसी तरह के प्रेम के बखूबी हासिल नही हो सकता.

सज्जाद मुहम्मद खाँ की बुढ़ौती के दिनो इनायत खाँ ने भी कुछ दिन (दो तीन साल) उनसे अलाप की तालीम ली थी, पर ज्यादातर इन्होने अपने वालिद से ही सीखा. इनायत खाँ के सगे भाई वहीद खाँ, जो अभी जिन्दा है और मैसूर राज मे दरबारी गुनी है, अलाप मे ज्यादा मशहूर है. इन्होने सज्जाद मुहम्मद खाँ और अपने वालिद से सिर्फ अलाप ही की खास तौर से तालीम ली. हमे अफसोस है कि यह इधर उत्तर भारत मे कभी आये ही नही और न हम लोगो को इनका सगीत सुनने का इत्तिफ़ाक़ हुआ.

सज्जाद मुहम्मद खाँ एक अरसे तक अहरोरा (मिर्जापुर) के मशहूर ब्राह्मण रईस और सगीत गुणी पडित श्री निवास पांडे के यहाँ भी रहे. पांडे जी सुर बहार और बीन बेहतरीन बजाते थे, ब्राह्मणों मे इतना बड़ा शौकीन कोई नही हुआ. उस समय के सभी बड़े बड़े उस्ताद बारी बारी से सालो इनके यहाँ पड़े रहा करते थे; महीनों लगातार जलसे हुआ करते थे. हमारे उस्ताद करामतुल्ला खाँ सरोदिये, आशिक अली सितारिये, इमदाद खाँ, इनायत खाँ,

ایک نگاہ چلتے چلتے انھیں دیکھنے کو ان کی آنکھیں کھلی ہی رہ گئیں، پر امداد خاں نے اپنا روز کا ریاض ادھورا نہیں چھوڑا، پورا کر کے ہی اٹھے، اور تب کفن مٹی وغیرہ کے انتظام میں لگے۔ وہ بڑے کٹھور سادھک تھے، یوگی تھے۔

امداد خاں کے اس برتاؤ کے بارے میں دو رائیں ہو سکتی ہیں، پر اس بات میں کسی کو شبہہ نہیں ہو سکتا کہ کوئی بھی فن بنا اسی طرح کے پریم کے بخوبی حاصل نہیں ہو سکتا۔

سجاد محمد خاں کی بڑھوتی کے دنوں عنایت خاں نے بھی کچھ دن (دو تین سال) ان سے الاپ کی تعلیم لی تھی، پر زیادہ تر انھوں نے اپنے والد سے ہی سیکھا۔ عنایت خاں کے سگے بھائی وحید خاں، جو ابھی زندہ ہیں اور میسور راج میں درباری گنی ہیں، الاپ میں زیادہ مشہور ہیں۔ انھوں نے سجاد محمد خاں اور اپنے والد سے صرف الاپ ہی کی خاص طور سے تعلیم لی۔ ہمیں افسوس ہے کہ یہ ادھر اتر بھارت میں کبھی آئے ہی نہیں اور نہ ہم لوگوں کو ان کا سنگیت سننے کا اتفاق ہوا۔

سجاد محمد خاں ایک عرصے تک اہرورا (مرزا پور) کے مشہور براہمن رئیس اور سنگیت گنی پنڈت شری نواس پانڈے کے یہاں بھی رہے۔ پانڈے جی سر بہار اور بین بہترین بجاتے تھے، براہمنوں میں اتنا بڑا شوقین کوئی نہیں ہوا۔ اس سمے کے سبھی بڑے بڑے استاد باری باری سے سالوں ان کے یہاں پڑے رہا کرتے تھے؛ مہینوں لگاتار جلسے ہوا کرتے تھے۔ ہمارے استاد کرامت اللہ خاں سرودیے، عاشق علی ستاریے، امداد خاں، عنایت خاں،

सज्जाद मुहम्मद खॉ. वगैरा इनके यहॉ बहुत रहा करते थे. पांडे जी सिर्फ़ कनरसिये नहीं थे, खुद भी नियम से रोजाना ६ घटे सुरबहार और बीन का अभ्यास किया करते थे सज्जाद मुहम्मद खॉ का सुरबहार अब भी इनके यहॉ पड़ा हुआ है इनके बड़े पुत्र पडित सदापतन जी सगीत के बडे प्रेमी है

बरकतुल्ला और इमदाद खॉ के बाद इनायत खॉ का ही नाम हिंदुस्तान मे सबसे ज्यादा हुआ. इनमे रियाज के अलावा. कलाकार की तबीयत और अनोखी सूझ बूझ या मौलिक प्रतिभा भी बहुत बड़े पैमाने पर थी रियाज़ और तैयारी मे तो यह अपने वालिद के नीचे ही रहे पर प्रतिभा बहुत जबरदस्त होने की वजह से इन्होने अपना एक नया ही 'बाज' चालू कर लिया और हिंदुस्तान के ज्यादातर सितारिये, सरोदिये, या सुरसिंगिये तक इनके बाज की नकल करने लग गये. इन्होने अपने बाज मे ठुमरी अग की हरकतो को ज्यादा मिलाया जिसमे मिठास और रगीलापन ज्यादा आ गया. ध्रुपद अग का बीन के ढग का अलाप इन्होने कम बजाया और इसीमे घरानेदार पुराने तत्रकारो ने इनायत खॉ को नहीं माना, पर इसकी उन्होंने रत्ती भर परवाह नहीं की इनकी मसीत .खानी गते तिहाइयो. कायदो और बन्दिशी तोड़ो से भरी हुई होती थीं जिनका जवाब अच्छे से अच्छे तबलिये नही दे पाते थे. तबलियो को भरे जलसे मे नीचा दिखाने की एक खास आदत सी थी इनायत खॉ मे इलाहाबाद मे सन् १९२८ से लेकर ३८ तक हर साल आया करते थे, और यही प्रयाग संगीत सम्मति की कानफ्रेन्स मे बुरी तरह बीमार हो कर कलकत्ते

سجاد محمد خاں وغیرہ ان کے یہاں بہت رہا کرتے تھے۔ پانڈے جی صرف کن رسئے نہیں تھے، خود بھی نیم سے روزانہ ۶ گھنٹے سُر بہار اور بین کا ابھیاس کیا کرتے تھے۔ سجاد محمد خاں کا سُر بہار اب بھی ان کے یہاں پڑا ہوا ہے۔ ان کے بڑے پتر پنڈت سداپتن جی سنگیت کے بڑے پریمی ہیں۔

برکت اللہ اور امداد خاں کے بعد عنایت خاں کا ہی نام ہندستان میں سب سے زیادہ ہوا۔ ان میں ریاض کے علاوہ، کلاکار کی طبیعت اور انوکھی سمجھ بوجھ یا مولک پرتبھا بھی بہت بڑے پیمانے پر تھی۔ ریاض اور تیاری میں تو یہ اپنے والد کے نیچے ہی رہے پر پرتبھا بہت زبردست ہونے کی وجہ سے انھوں نے اپنا ایک نیا ہی 'باج' چالو کر لیا، اور ہندستان کے زیادہ تر ستاریئے، سرودیئے، یا سر سنگئے تک ان کے باج کی نقل کرنے لگ گئے۔ انھوں نے اپنے باج میں ٹھمری انگ کی حرکتوں کو زیادہ ملایا جس سے مٹھاس اور رنگیلا پن زیادہ آ گیا۔ دھرپد انگ کا بین کے ڈھنگ کا الاپ انھوں نے کم بجایا اور اسی سے گھرانے دار پرانے تنترکاروں نے عنایت خاں کو نہیں مانا، پر اس کی انھوں نے رتی بھر پرواہ نہیں کی۔ ان کی مسیت خانی گتیں تہائیوں، قاعدوں اور بندشی توڑوں سے بھری ہوئی ہوتی تھیں جن کا جواب اچھے سے اچھے طبلئے نہیں دے پاتے تھے۔ طبلیوں کو بھرے جلسے میں نیچا دکھانے کی ایک خاص عادت سی تھی عنایت خاں میں۔ الہ آباد میں ۱۹۲۸ء سے لیکر ۳۸ تک ہر سال آیا کرتے تھے، اور یہیں پریاگ سنگیت سمتی کی کانفرنس میں بری طرح بیمار ہو کر کلکتہ

पहुँचते पहुँचते गुज़र गये. उस समय इनकी उम्र ५०-५५ से ज़्यादा नहीं थी. अभी उनके मरने के दिन नहीं थे.

उनके बेटे विलायत ख़ाँ अभी नौजवान हैं और अच्छा नाम कर रहे हैं, बहुत मुमकिन है आगे चल कर हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सितारिये यही माने जायँ.

इन लोगों का वतन इटावे मे है और इमदाद ख़ॉ इंदौर महराज के यहाँ पहले मुलाज़िम थे, पर बाद मे यह घराना बगाल में जम गया. पूर्वी बंगाल के गौरी पुर, मैमन सिह के जमींदार ब्रजेंद्र किशोर राय चौधरी और उनके बेटे बीरेन्द्र किशोर राय चौधरी ने इनायत ख़ॉ की बहुत असें तक क़द्र की और उनसे ख़ूब ख़ूब इल्म हासिल किया. उनके भाई वहीद ख़ॉ साहब सुना है कि आज कल हैदराबाद मे हैं.

कुछ लोगों की राय में सुर बहार की ईजाद सबसे पहले इमदाद ख़ॉ ने की थी जो कि अव्वल तो ख़यालिये थे और मशहूर ख़यालिये हद्दू हस्सू ख़ॉ भाइयो (ग्वालियरी) के ख़ास शागिर्द थे.

इमदाद ख़ाँ के शागिर्दों मे उस्ताद रहीम ख़ाँ * बेहतर (पंजाब) वाले सुरबहारिये, और उस्ताद शम्मन ख़ॉ पटियाले वाले सारंगी नेवाज़ का बहुत नाम है. उस्ताद रहीम ख़ाँ को सुर-बहार पर इतनी मश्क़ हो गई थी कि एक पर्दे पर मीड़ से पूरे एक

---

*रहीम ख़ाँ और रहीम सेन सेनिये में फ़र्क था. रहीम सेन अमृत सेन के वालिद थे और सितार में एक बहुत बड़ी हस्ती हो

پہنچتے پہنچتے گذر گئے۔ اس سمے ان کی عمر ۵۰-۵۵ سے زیادہ نہیں تھی۔ ابھی ان کے مرنے کے دن نہیں تھے۔

ان کے بیٹے ولایت خاں ابھی نوجوان ہیں اور اچھا نام کر رہے ہیں، بہت ممکن ہے آگے چل کر ہندستان کے سب سے بڑے ستارئیے یہی مانے جائیں۔

ان لوگوں کا وطن اٹاوہ میں ہے اور امداد خاں اندور مہاراج کے یہاں پہلے ملازم تھے، پر بعد میں یہ گھرانا بنگال میں جم گیا۔ پوربی بنگال کے گوری پور، میمن سنگھ کے زمیندار برجیندر کشور رائے چودھری اور ان کے بیٹے بریندر کشور رائے چودھری نے عنایت خاں کی بہت عرصے تک قدر کی اور ان سے خوب خوب علم حاصل کیا۔ ان کے بھائی وحید خاں صاحب سنا ہے کہ آج کل حیدرآباد میں ہیں۔

کچھ لوگوں کی رائے میں سُربہار کی ایجاد سب سے پہلے امداد خاں نے کی تھی جو کہ اوّل تو خیالئے تھے اور مشہور خیالئے حدّو حسّو خاں بھائیوں (گوالیاری) کے خاص شاگرد تھے۔

امداد خاں کے شاگردوں میں استاد رحیم خاں * بہتر (پنجاب) والے سُربہارئیے، اور استاد شمّن خاں پٹیالہ والے سارنگی نواز کا بہت نام ہے۔ استاد رحیم خاں کو سربہار پر اتنی مشق ہوگئی تھی کہ ایک پردے پر میڑ سے پورے ایک

---

* رحیم خاں اور رحیم سین سینئے میں فرق تھا۔ رحیم سین امرت سین کے والد تھے اور ستار میں ایک بہت بڑی ہستی ہو گئے ہیں۔

समक का काम करते थे महाराज पूछ (काश्मीर) के यह दरबारी गुनी थे और एक बार यह प्रयाग पधार चुके हैं. इन के बेटे मुहम्मद शरीफ़ भी अच्छे गुनी हैं और अब लाहोर रेडियो से अक्सर बजाते हैं. यह लोग सुरबहार पर पूरा बीन का काम करते हैं.

मैरिस कालेज लखनऊ के सितार शिक्षक उस्ताद हामिद हुसेन ख़ॉ का घराना भी बहुत इज्ज़त दार, मान्य और मशहूर है. इनके दादा सँवलिया ख़ॉ (नाम पर ग़ौर फ़रमाइये) अपने ज़माने मे सितार के बहुत बड़े उस्ताद हो गये हैं. उन्होने प्यार ख़ॉ साहब (तानसेन के वंशज जिनकी चर्चा बीनकार घराने मे हो चुकी है) से यह विद्या पाई थी. सँवलिया ख़ॉ साहब के बाद उनके भाई पीर ख़ॉ और इनके बेटे इज्ज़त ख़ॉ गद्दी नशीन हुए इज्ज़त ख़ॉ के बेटे थे—तुल्लन ख़ॉ और तुराब ख़ॉ. इनमे से तुराब ख़ॉ बहुत बड़े उस्ताद हुए तुराब ख़ॉ के बेटे रहमत हुसेन ख़ॉ और तुल्लन ख़ॉ के पुत्र हामिद हुसेन ख़ॉ हैं यह सन् १९२८ से मैरिस कालेज मे काम कर रहे है.

इस घराने के सिलसिले मे तुराब ख़ॉ सम्बन्धी एक घटना बयान करने लायक़है एक मरतबा यह लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार मे सितार सुनाने की ग़रज़ से हाजिर हुए यह बिलकुल तनहा थे और बहुत सीधे साधे भेस मे. फ़कीराना लिबास मे एक छोटी सी सितारी बग़ल मे दबाये महल के दरवाज़े पर चक्कर काट रहे थे. लोगो से कहा कि मै सरकार को सितार सुनाना चाहता हूँ, जो सुनता वही इन्हे भिखमगा समझ कर हँस देता. नवाब साहब के यहाँ उन दिनो बहादुर ख़ॉ रबाबिये,

سپنک کا کام کرتے تھے۔ مہاراج پونچھ (کشمیر) کے یہ درباری گنی تھے اور ایک بار یہ پریاگ پدھار چکے ہیں۔ ان کے بیٹے محمد شریف بھی اچھے گنی ہیں اور اب لاہور ریڈیو سے اکثر بجاتے ہیں۔ یہ لوگ سرہبار پر پورا بین کا کام کرتے ہیں۔

میرس کالج لکھنؤ کے ستار شکشک استاد حامد حسین خاں کا گھرانا بھی بہت عزت دار، مانیہ اور مشہور ہے۔ ان کے دادا سنویا خاں (نام پر غور فرمائیے) اپنے زمانے میں ستار کے بہت بڑے استاد ہو گئے ہیں۔ انھوں نے پیار خاں صاحب (تان سین کے ونشج جن کی چرچا بین کار گھرانے میں ہو چکی ہے) سے یہ ودیا پائی تھی۔ سنویا خاں صاحب کے بعد ان کے بھائی پیر خاں اور ان کے بیٹے عزت خاں گدی نشین ہوئے۔ عزت خاں کے بیٹے تھے۔ تلن خاں اور تراب خاں۔ ان میں سے تراب خاں بہت بڑے استاد ہوئے۔ تراب خاں کے بیٹے رحمت حسین خاں اور تلن خاں کے پتر حامد حسین خاں ہیں۔ یہ سنہ ۱۹۲۸ء سے میرس کالج میں کام کر رہے ہیں۔

اس گھرانے کے سلسلے میں تراب خاں سمبندھی ایک گھٹنا بیان کرنے لائق ہے۔ ایک مرتبہ یہ لکھنؤ کے نواب واجد علی شاہ کے دربار میں ستار سنانے کی غرض سے حاضر ہوئے۔ یہ بالکل تنہا تھے اور بہت سیدھے سادے بھیس میں، فقیرانہ لباس میں ایک چھوٹی سی ستاری بغل میں دبائے محل کے دروازے پر چکر کاٹ رہے تھے۔ لوگوں سے کہا کہ میں سرکار کو ستار سنانا چاہتا ہوں، جو سنتا وہی انھیں بھیک منگا سمجھ کر ہنس دیتا۔ نواب صاحب کے یہاں ان دنوں بہادر خاں رباب‌ئے،

महाराज बिन्दादीन नचैये, ठाकुर कोदऊ सिंह पखावजी और खलीफा बड़े-मुन्ने खाँ वग़ैरा जैसे तबलिये मुलाजिम थे कई रोज यह मँडराते रहे पर सुनवाई होने की नौबत नहीं आई आखिर किसी तरह नवाब वाजिद अली के कानों तक खबर पहुँच ही गई कि कोई गरीब सितारिया सितार सुनाना चाहता है उन्होंने इन्हें बुलवाया पर उनके यहाँ के मुलाजिम जितने बड़े बड़े गुनी थे, सभी की पूरी कोशिश आखिर तक यही रही कि इनका सितार दरबार में न बजने पावे खैर अपनी छोटी सी सितारी लेकर यह बैठ गये बजाने का हुक्म हुआ. हिन्दुस्तान ऊपर रबाबिये उस्ताद बहादुर हुसेन खाँ बैठे हुए नवाब साहब को बातों मे लगाये हुए थे, और सुनने नहीं देना चाहते थे. पर आखिर को नवाब साहब को मुखातिब होना पड़ा. धीरे धीरे जब राग का आलाप बिलमपत से जोड़ अंग मे पहुँचा तो सभी धीरे धीरे मुखातिब होगये और बारादरी मे सन्नाटा छा गया. उस छोटी सी सितारी पर यह बीन और रबाब अंग का पूरा आलाप बजा गये. दरबार मे कई बीन और रबाब धरे हुए थे. नवाब वाजिदअली ने देखा कि तानसेन के वंशज रबाब और बीनकारो का मुँह सूख गया है. नवाब साहब ने बीनों की तरफ इशारा करते हुए चोबदार को हुक्म दिया कि "इन घडियालो को दरियाय गोमती मे डाल दो."

फिर आलाप के बाद तुराब खाँ गत बजाने बैठे. इनके हाथ में बेहद तैयारी देख किसी खलीफा की हिम्मत नहीं हो रही थी इनके साथ बैठने की. आखिर को ठाकुर कोदऊ सिंह की ओर नवाब साहब का इशारा हुआ इसके मानी थे मृदंग के साथ सितार

مہاراج بندادین نچیے، ٹھاکر کودؤ سنگھ پکھاوجی اور خلیفہ بڑے منے خاں وغیرہ جیسے طبلئے ملازم تھے۔ کئی روز یہ منڈراتے رہے پر سنوائی ہونے کی نوبت نہیں آئی۔ آخر کسی طرح نواب واجد علی کے کانوں تک خبر پہنچ ہی گئی کہ کوئی غریب ستاریا ستار سنانا چاہتا ہے۔ انھوں نے انھیں بلوایا۔ پر ان کے یہاں کے ملازم جتنے بڑے بڑے گنی تھے، سبھوں کی پوری کوشش آخر تک یہی رہی کہ ان کا ستار دربار میں نہ بجنے پاوے۔ خیر اپنی چھوٹی سی ستاری لیکر یہ بیٹھ گئے، بجانے کا حکم ہوا۔ ہندستان اوپر ربابیے استاد بہادر حسین خاں بیٹھے ہوئے نواب صاحب کو باتوں میں لگائے ہوئے تھے، اور سننے نہیں دینا چاہتے تھے۔ پر آخر کو نواب صاحب کو مخاطب ہونا پڑا۔ دھیرے دھیرے جب راگ کا الاپ ولمپت سے جوڑ انگ میں پہنچا تو سبھی دھیرے دھیرے مخاطب ہو گئے اور بارہ دری میں سناٹا چھا گیا۔ اس چھوٹی سی ستاری پر یہ بین اور رباب انگ کا پورا الاپ بجا گئے۔ دربار میں کئی بین اور رباب دھرے ہوئے تھے۔ نواب واجد علی نے دیکھا کہ تانسین کے ونشج رباب اور بین کاروں کا منہ سوکھ گیا ہے۔ نواب صاحب نے بینوں کی طرف اشارا کرتے ہوئے چوبدار کو حکم دیا کہ "ان گھڑیالوں کو دریائے گومتی میں ڈال دو"۔

پھر الاپ کے بعد تراب خاں گت بجانے بیٹھے۔ ان کے ہاتھ میں بے حد تیاری دیکھ کسی خلیفہ کی ہمت نہیں ہو رہی تھی ان کے ساتھ بیٹھنے کی۔ آخر کو ٹھاکر کودؤ سنگھ کی اور نواب صاحب کا اشارا ہوا۔ اس کے معنی تھے مردنگ کے ساتھ ستار بجے اور بین یا رباب انگ سے ستار بجے۔ خبر کودؤ سنگھ

बैठे, रबाब अंग से सितार बजा और .खूब बजा, फिर तबले से गत तोड़े भी बजे.

नवाब साहब दस हज़ार रुपये इनाम दे रहे थे, इन्होंने हाथ जोड़ कर लेने से इनकार किया. जब उन्होंने वजह पूछी तो इन्होंने कहा, 'जान मरवाओगे मेरी ? मैं क्या करूँगा रुपये ? तो फिर पूछा, 'क्या चाहते हो ?' बारादरी के फौवारे मे राजहंस खेल रहे थे, इन्होने कहा, 'एकाध यही दे दो, बड़े अच्छे लगते हैं' बस फिर यह चले गये हामिद हुसेन ख़ाँ साहब ने ज्यादातर इन्ही से तालीम पाई है

लखनऊ के एक दूसरे उस्ताद यूसुफ़ अली .खाँ साहब का घराना भी बहुत मशहूर है वह अब्दुलगनी खाँ साहब कालपी वालो के शागिर्द है जो एक ज़माने मे बहुत बेहतरीन सितार बजाते थे अब्दुलगनी साहब ने तानसेन वंश के धुरपदियो और बीनकारो से तालीम पाई है इनके बाज की खासियत यही है कि खालिस ध्रुपद और बीन अंग से इनका सितार बजता है ठुमरी या सारंगी की हरकतें जिनकी रंगत उस्ताद इनायत खाँ और हामिद .खाँ के सितार मे बहुत ज्यादा आ गई थी, और जिसकी वजह से उनका बाज पुराने तन्त्रकारो के बीच बदनाम पर पब्लिक मे बहुत हर दिलअजीज़ हो रहा था उस्ताद युसुफ के घराने मे कुफ्र या हराम समझी जाती है इन सतरो के लिखने वाले को आप से भी कुछ तालीम मिली है

राजा नवाब अली साहब के एक उस्ताद खलीफा अहमद ख़ाँ ख्यालिये है. इनके भाई मुहम्मद खाँ बीनकार है और इनके बेटे रहमत ख़ाँ अच्छा सितार बजाते है. लखनऊ का यह सबसे

بیٹھے، رباب انگ سے ستار بجا اور خوب بجا، پھر طبلے سے گت توڑے بھی بجے۔

نواب صاحب دس ہزار روپئے انعام دے رہے تھے، انھوں نے ہاتھ جوڑ کر لینے سے انکار کیا۔ جب انھوں نے وجہ پوچھی تو انھوں نے کہا، 'جان مرواؤ گے میری؟ میں کیا کروں گا روپئے؟' تو پھر پوچھا، 'کیا چاہتے ہو؟' بارہ دری کے فوارے میں راج ہنس کھیل رہے تھے، انھوں نے کہا، 'ایک آدھ یہی دے دو، بڑے اچھے لگتے ہیں۔' بس پھر یہ چلے گئے۔ حامد حسین خاں صاحب نے زیادہ تر انھیں سے تعلیم پائی ہے۔

لکھنؤ کے ایک دوسرے استاد یوسف علی خاں صاحب کا گھرانا بھی بہت مشہور ہے۔ یہ عبدالغنی خاں صاحب کالپی والوں کے شاگرد ہیں، جو ایک زمانے میں بہت بہترین ستار بجاتے تھے۔ عبدالغنی صاحب نے تانسین بنش کے دھرپدیوں اور بین کاروں سے تعلیم پائی ہے۔ ان کے باج کی خاصیت یہی ہے کہ خالص دھروپد اور بین انگ سے ان کا ستار بجتا ہے۔ ٹھمری یا سارنگی کی حرکتیں جن کی رنگت استاد عنایت خاں اور حامد خاں کے ستار میں بہت زیادہ آ گئی تھی، اور جس کی وجہ سے ان کا باج پرانے تنترکاروں کے بیچ بدنام، پر پبلک میں بہت ہر دلعزیز ہو رہا تھا، استاد یوسف کے گھرانے میں کفر یا حرام سمجھی جاتی ہے۔ ان سطروں کے لکھنے والے کو آپ سے بھی کچھ تعلیم ملی ہے۔

راجہ نواب علی صاحب کے ایک استاد خلیفہ احمد خاں خیالئے ہیں۔ ان کے بھائی محمد خاں بین کار ہیں اور ان کے بیٹے رحمت خاں اچھا ستار بجاتے ہیں۔ لکھنؤ کا یہ سب سے

बड़ा और पुराना घराना है. उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ इस घराने के शागिर्द हैं.

पूरब में बनारस और दरभंगा मे कुछ मशहूर हिन्दू घराने भी हैं. दरभंगा के पंडित रामेश्वर पाठक हिन्दुओं में इस समय सबसे बड़े सितारिये हैं. यह इनायत .ख़ाँ की टक्कर के बजाने वाले हैं. पर बाज मे ठुमरी अंग का पुट कम होने की वजह से पबलिक में इनका बाज उतना नहीं जमता था. पर उस्तादी दुनिया इन्हें किसी मानी मे इनायत .ख़ाँ से कम नहीं समझती. वह इलाहाबाद कई बार आये हैं और अब बहुत बूढ़े हो गये हैं. इनका काम है महाराजाधिराज दरभंगा को रोजाना रात को सितार सुनाना. महाराजा साहब इनका सितार सुनते-सुनते ही सोते हैं और इनको अब रियासत से बाहर कहीं जाने नहीं देते.

उस्ताद इनायत .ख़ाँ के शागिर्दों में लखनऊ के पंडित ध्रुवतारा जोशी एम०-ए० सबसे प्रधान हैं. इनका आलाप बहुत सुरीला, समझदारी से भरा हुआ और क़ायदे का होता है. लखनऊ, देहली और कभी कभी कलकत्ता, नागपुर वग़ैरा रेडियो स्टेशनों से आप को अक्सर सुना जाता है. नये लोगों में इस वक़्त आप हिन्दुस्तान में बहुत आगे बढ़ गये हैं. पटियाले मे महबूब अली नाम के एक बहुत बड़े सुरबहारिये और सितारिये हो गये हैं. इनका सुरबहार इमदाद ख़ाँ से भी बड़ा था. इतना बड़ा और भारी सुरबहार हिन्दुस्तान में किसी ने नहीं बजाया, एक छोटा मोटा दरख़्त ही मालूम होता था मैंने दिल्ली

بڑا اور پرانا گھرانا ہے۔ استاد علاؤالدین خاں اس گھرانے کے شاگرد ہیں۔

پورب میں بنارس اور دربھنگہ میں کچھ مشہور ہندو گھرانے بھی ہیں۔ دربھنگہ کے پنڈت رامیشور پاٹھک ہندوؤں میں اس سمے سب سے بڑے ستاریے ہیں۔ یہ عنایت خاں کی ٹکر کے بجانے والے ہیں۔ پر باج میں ٹھمری انگ کا پُٹ کم ہونے کی وجہ سے پبلک میں ان کا باج اتنا نہیں جمتا تھا۔ پر استادی دنیا انھیں کسی معنی میں عنایت خاں سے کم نہیں سمجھتی۔ یہ الہ آباد کئی بار آئے ہیں اور اب بہت بوڑھے ہو گئے ہیں۔ ان کا کام ہے مہاراج دھراج دربھنگہ کو روزانہ رات کو ستار سنانا۔ مہاراجہ صاحب ان کا ستار سنتے سنتے ہی سوتے ہیں اور ان کو اب ریاست سے باہر کہیں جانے نہیں دیتے۔

استاد عنایت خاں کے شاگردوں میں لکھنؤ کے پنڈت دھرو تارا جوشی ایم۔اے سب سے پردھان ہیں۔ ان کا الاپ بہت سریلا سمجھداری سے بھرا ہوا اور قاعدے کا ہوتا ہے۔ لکھنؤ، دہلی اور کبھی کبھی کلکتہ، ناگپور وغیرہ ریڈیو اسٹیشنوں سے آپ کو اکثر سنا جاتا ہے۔ نئے لوگوں میں اس وقت آپ ہندستان میں بہت آگے بڑھ گئے ہیں پٹیالے میں محبوب علی نام کے ایک بہت بڑے سُربہاریے اور ستاریے ہو گئے ہیں۔ ان کا سُربہار امداد خاں سے بھی بڑا تھا۔ اتنا بڑا اور بھاری سُربہار ہندستان میں کسی نے نہیں بجایا، ایک چھوٹا موٹا درخت ہی معلوم ہوتا تھا۔ میں نے دلی کانفرنس میں اس سُربہار کو دیکھا اور سنا ہے۔ یہ واقعی ایک

अच्छे और बहुत भोले मिज़ाज के गुनी थे. इतना बड़ा क़रीब १ .फुट चोड़ी डाँड़ का सुरबहार बजाने के लिये जिस्म में बेहद क़ूवत चाहिये जो उनमें थी. उस्ताद इमदाद खाँ साहब चार मुर्गे का शोरबा आधे दर्जन अण्डों का नाश्ता करते थे. कहते थे कि अगर इतना भी न करूँगा तो सुरबहार के तार क्या खींचूँगा. उस्ताद महबूब अली की .खूराक इनसे भी बढ़ी चढ़ी हुई थी.

महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह, राम नगर (बनारस) के दरबार मे बाजपेयी जी नाम के एक बहुत जबरदस्त सितारिये रहते थे जो अपने सामने इमदाद खाँ या बरकतुल्ला को भी कोई चीज नही समझते थे बनारस के पुराने लोगो मे अभी भी यह किस्सा सुनने मे आता है कि एक बार बरकतुल्ला अपने खास शागिद आशिक अली से मिलने बनारस आये हुए थे यहाँ उन्होने जब आशिक अली से पूछा कि क्या यहाँ कोई शख्स सुनने लायक है? तब आशिक अली ने बाजपेयी जी का जिक्र किया था बरकतुल्ला ने उन्हे बुलवाने को कहा इस पर आशिक अली ने कहा कि वह आज तक कही गये ही नही और अपने घर या महराज का दरबार छोड़ कर और कही जिन्दगी मे सितार बजाया नही उन्होने. अगर उन्हे सुनना है तो उनके घर पर ही चलना होगा आखिर हिन्दुस्तान ऊपर सितारिये जयपुर वाले बरकतुल्ला खां उस्ताद बाजपेयी जी के यहाँ गये बनारस के गाने बजाने वालो मे बेहद मनसनी फैल रही थी, बहुत से लोग वहाँ इकट्ठे हो गये बाजपेयी जी उस वक्त सन्ध्या पूजा मे लगे हुए थे, एक घटे बाद आये, बड़ी खातिर की और अपना अहोभाग्य प्रगट किया कि इतने बड़े

اچھے اور بہت بھولے مزاج کے گنی تھے۔ اتنا بڑا قریب ۱ فٹ چوڑی ڈانڈ کا سُر بہار بجانے کے لئے جسم میں بے حد قوت چاہئیے جو ان میں تھی۔ اُستاد امداد خاں صاحب چار مرغے کا شوربا آدھے درجن انڈوں کا ناشتہ کرتے تھے۔ کہتے تھے کہ اگر اتنا بھی نہ کروں گا تو سُر بہار کے تار کیا کھینچوں گا۔ اُستاد محبوب علی کی خوراک ان سے بھی بڑھی چڑھی ہوئی تھی۔

مہاراجہ ایشوری نرائن سنگھ، رام نگر (بنارس) کے دربار میں باجپئی جی نام کے ایک بہت زبردست ستارئے رہتے تھے جو اپنے سامنے امداد خاں یا برکت اللہ کو بھی کوئی چیز نہیں سمجھتے تھے۔ بنارس کے پرانے لوگوں میں ابھی بھی یہ قصہ سننے میں آتا ہے کہ ایک بار برکت اللہ اپنے خاص شاگرد عاشق علی سے ملنے بنارس آئے ہوئے تھے۔ یہاں انھوں نے جب عاشق علی سے پوچھا کہ کیا یہاں کوئی شخص سننے لائق ہے تب عاشق علی نے باجپئی جی کا ذکر کیا تھا۔ برکت اللہ نے انھیں بلوانے کو کہا۔ اس پر عاشق علی نے کہا کہ وہ آج تک کہیں گئے ہی نہیں [illegible] اپنے گھر یا مہاراج کا دربار چھوڑ کر اور کہیں زندگی میں ستار بجایا نہیں انھوں نے۔ اگر انھیں سننا ہے تو ان کے گھر پر ہی چلنا ہوگا۔ آخر ہندستان اوپر ستارئے جے پور والے برکت اللہ خاں اُستاد باجپئی جی کے یہاں گئے۔ بنارس کے گانے بجانے والوں میں بے حد سنسنی پھیل رہی تھی، بہت سے لوگ وہاں اکٹھے ہو گئے۔ باجپئی جی اس وقت سندھیا پوجا میں لگے ہوئے تھے، ایک گھنٹے بعد آئے، بڑی خاطر کی اور اپنا اہو بھاگیہ پرگٹ کیا کہ اتنے بڑے

गुणी के दर्शन घर बैठे हुए. ख़ाँ साहब पर उनके साधु-स्वभाव का बड़ा असर पड़ा और बड़ी नम्रता से इन्होंने सितार सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की. बाजपेयी जी ने कहा आप मेरे यहाँ पधारे हैं तो मैं अवश्य ही आप की सेवा करूँगा, हालाँ कि मै जानता कुछ नहीं, पर शर्त यह रही कि मेरा बजाना पूरा होने पर आपको भी मेरे कान पवित्र करने होंगे. ख़ाँ साहब ने .ख़ुशी से मज़ूर किया. पंडित जी ने राग ईमन का अलाप शुरू किया. एक हफ्ते तक सिर्फ़ स्थायी की अलाप बजती रही. आख़िर को बरकतुल्ला साहब आठवें रोज़ फिर रामनगर नहीं गये और जयपुर वापस चले गये इतना पांडित्य और विस्तार कर सकने वाला दिमाग़ इन्हें नहीं मिला था.

राम नगर में ही बंदन पाठक नाम के एक दूसरे सितार के माहिर भी थे. राम नगर की राम लीला मशहूर है. दशहरे पर वहाँ दरबार और गवर्नर की डिनर पार्टी थी जिसमे. पाठक जी को लाट साहब को सितार सुनाना था, महाराज ईश्वरी नारायण सिंह जी के ज़माने मे. और राजा का हुक्म. यह बैठे तख़्त पर लाट साहब के सामने सितार लेकर, शुरू हुआ आलाप. कुछ मिनट बजाने के बाद पाठक जी ने देखा कि लाट साहब राजा साहब से बातें करने मे लग गये हैं. बस यह फ़ौरन उठ खड़े हुए और महाराज से रुख़सत माँग कर चलने को हुए. पूछने पर बताया कि यह (लाट साहब) इस संगीत की क़द्र नहीं जानते. इन्हें सुनाने में मेरा जी नहीं लगेगा, माता सरस्वती का अपमान होगा मुझे मुआफ़ फरमाया जाय. यह कह कर जवाब का इतज़ार

گُنی کے درشن گھر بیٹھے ہوئے۔ خاں صاحب پر اِن کے سادھو سُبھاؤ کا بڑا اثر پڑا اور بڑی نمرتا سے انھوں نے ستار سننے کی خواہش ظاہر کی۔ باجپئی جی نے کہا آپ میرے یہاں پدھارے ہیں تو میں اوشیہ ہی آپ کی سیوا کروں گا، حالانکہ میں جانتا کچھ نہیں، پر شرط یہ رہی کہ میرا بجانا پورا ہونے پر آپ کو بھی میرے کان پوتر کرنے ہوں گے۔ خاں صاحب نے خوشی سے منظور کیا۔ پنڈت جی نے راگ ایمن کا آلاپ شروع کیا۔ ایک ہفتے تک صرف ستھائی کی الاپ بجتی رہی۔ آخر کو برکت اللہ صاحب آٹھویں روز پھر رام نگر نہیں گئے اور جے پور واپس چلے گئے۔ اتنا پانڈتیہ اور وستار کر سکنے والا دماغ انھیں نہیں ملا تھا۔

رام نگر میں ہی بندن پاٹھک نام کے ایک دوسرے ستار کے ماہر بھی تھے۔ رام نگر کی رام لیلا مشہور ہے۔ دشہرے پر وہاں دربار اور گورنر کی ڈنر پارٹی تھی جس میں پاٹھک جی کو لاٹ صاحب کو ستار سنانا تھا، مہاراج ایشوری نرائن سنگھ جی کے زمانے میں۔ اور راجا کا حکم، یہ بیٹھے تخت پر لاٹ صاحب کے سامنے ستار لیکر، شروع ہوا الاپ۔ کچھ منٹ بجانے کے بعد پاٹھک جی نے دیکھا کہ لاٹ صاحب راجا صاحب سے باتیں کرنے میں لگ گئے ہیں۔ بس یہ فوراً اُٹھ کھڑے ہوئے اور مہاراج سے رخصت مانگ کر چلنے کو ہوئے۔ پوچھنے پر بتایا کہ یہ (لاٹ صاحب) اس سنگیت کی قدر نہیں جانتے۔ انھیں سنانے میں میرا جی نہیں لگے گا، ماتا سرسوتی کا اپمان ہوگا، مجھے معاف فرمایا جائے۔ یہ کہکر جواب کا انتظار

किये बिना ही वह चल पड़े. लोगों ने समझा था कि लाट साहब का अपमान हुआ है और अब ग़ज़ब ही हो जायगा. पर लाट साहब ने पंडित जी से माफ़ी का संदेसा भिजवाया, और राजा साहब को भी उन पर गर्व ही हुआ.

रीवाँ में स्वर्गीय महाराज (वर्तमान महाराज के दादा) के समय पंडित नँदलाल नाम के एक बहुत बड़े सितारिये थे. यह भी दरबार के बाहर कहीं आते जाते नहीं थे   लोगो को नाम की परवाह नहीं थी. इसीसे बहुत से हिन्दू गुनियो का पता हमे नहीं चल सका.

अब आगे हमे सरोद के घरानो के रे मेंब कहना है.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पं डन सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फिरका परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर मे देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच मे न रहने दिया !   कीमत बारह आना .

किताब नागरी और उर्दू लिखावटो मे अलग अलग मल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

کئے بنا ہی وہ چل پڑے۔ لوگوں نے سمجھا تھا کہ لاٹ صاحب کا اپمان ہوا ہے اور اب غضب ہی ہو جائے گا۔ پر لاٹ صاحب نے پنڈت جی سے معافی کا سندیش بھجوایا، اور راجا صاحب کو بھی ان پر گرو ہی ہوا۔

ریواں میں سورگیہ مہاراج (ورتمان مہاراج کے دادا) کے سمے پنڈت نند لال نام کے ایک بہت بڑے ستاریے تھے۔ یہ بھی دربار کے باہر کہیں آتے جاتے نہیں تھے۔ ان لوگوں کو نام کی پرواہ نہیں تھی۔ اسی سے بہت سے ہندو گنیوں کا پتہ ہمیں نہیں چل سکا۔

اب آگے ہمیں سرود کے گھرانے کے بارے میں کہنا ہے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک:- پنڈت سندر لال

ساپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!   قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

مینیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

दुनिया का हाल दूसरी लड़ाई के बाद से अब तक सुधर नहीं सका है दरअसल उसके सुधारने की ईमानदारी के साथ कोई कोशिश भी नहीं हो रही है. इस काम के लिये यू० एन० ओ० के नाम से जो संस्था बनी थी, वह बड़ी ताक़तों की लाग डॉट का शिकार हो गई है. इसलिये वह अभी तक कोई बड़ा सवाल नहीं तय कर सकी है. हर सवाल पर दो रायें हो जाती हैं. एक तरफ बरतानिया, अमरीका और उनके असर वाले देश होते हैं और दूसरी तरफ रूस और उसके साथी. दोनों गिरोह एक दूसरे की हर तजवीज़ को सन्देह की नज़र से देखते हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहते हैं. यू० एन० ओ० के तीसरे जलसे की कारवाई मे, जो २१ सितम्बर से शुरू हुई थी और दिसम्बर तक रहेगी, यह चीज़ साफ़ तौर से झलकती है.

फ़ौजों में कमी कैसे हो ?

इस बैठक के शुरू में रूस ने यह प्रस्ताव रक्खा कि पाँचों बड़ी ताक़तें यानी बरतानिया, अमरीका, फ्रांस, चीन और रूस अपनी अपनी फ़ौजों में एक साल के अन्दर एक तिहाई की कमी कर दें, ऐटम बम की मनाही कर दी जाय और बड़ी ताक़तें अपनी फौज और हथियारों का कुल हाल एक ऐसे कमीशन के सामने पेश कर

ڈنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

دنیا کا حال دوسری لڑائی کے بعد سے اب تک سدھر نہیں سکا ہے۔ دراصل اس کے سدھارنے کی ایمانداری کے ساتھ کوئی کوشش بھی نہیں ہو رہی ہے۔ اس کام کے لئے یو۔این۔او کے نام سے جو سنستھا بنی تھی، وہ بڑی طاقتوں کی لاگ ڈانٹ کا شکار ہو گئی ہے۔ اس لئے وہ ابھی تک کوئی بڑا سوال نہیں طے کر سکی ہے۔ ہر سوال پر دو رائیں ہو جاتی ہیں۔ ایک طرف برطانیہ، امریکہ اور ان کے اثر والے دیش ہوتے ہیں اور دوسری طرف روس اور اس کے ساتھی۔ دونوں گروہ ایک دوسرے کی ہر تجویز کو سندیہہ کی نظر سے دیکھتے ہیں اور ایک دوسرے کو نیچا دکھانے کی کوشش کرتے رہتے ہیں۔ یو۔این۔او کے تیسرے جلسے کی کارروائی میں، جو ۲۱ ستمبر سے شروع ہوئی تھی اور دسمبر تک رہے گی، یہ چیز صاف طور سے جھلکتی ہے۔

فوجوں میں کمی کیسے ہو؟

اس بیٹھک کے شروع میں روس نے یہ پرستاو رکھا کہ پانچوں بڑی طاقتیں یعنی برطانیہ، امریکہ، فرانس، چین اور روس اپنی اپنی فوجوں میں ایک سال کے اندر ایک تہائی کی کمی کر دیں، ایٹم بم کی مناہی کر دی جائے اور بڑی طاقتیں اپنی فوج اور ہتھیاروں کا کل حال ایک ایسے کمیشن کے سامنے پیش کر

हैं जो हिफाजती कौन्सिल यानी सुरक्षा समिति की मातहती में काम करे. अमरीका और उसके साथ वाली ताक़तों ने इस तजवीज को ना मंजूर करके उसकी जगह एक दूसरा प्रस्ताव मंजूर करा लिया, जो दर असल रूस की तजवीज का एक टुकड़ा था. इस प्रस्ताव का मतलब यह है कि यू० एन० ओ० मे शामिल होने वाली ताक़तें यानी सब देश अपनी फौजी ताक़त का हाल एक कमीशन को बता दें और यह कमीशन इस हाल की जाँच करे. पच्छिमी ताक़तों के प्रस्ताव में न तो फौज और हथियारों की कमी की कोई बात है और न ऐटम बम की मनाही का कोई बन्दोबस्त. इन ताक़तों ने रूस की तजवीज को इस तरह से देखा कि उसकी फौजी ताकत इनसे ज्यादा है और अपनी ताकत मे कमी कर देने से उसके मुकाबले मे कमजोर हो जायेंगे. बरतानिया के नुमाइन्दे ने इस शक को साफ साफ जाहिर भी कर दिया. चीन के नुमाइन्दे ने कहा कि फौज और हथियारों को कमी से कोई लाभ नहीं होगा, जब तक पाँचवाँ कालम भी खतम न कर दिया जाय. यानी एक ताकत दूसरे देश मे अपने कारिन्दे न रक्खे. अमरीका के पास ऐटम बम की इजारादारी है और उसे डर है कि अगर उसने ऐटम बम के भण्डार को बरबाद कर दिया और तैयारी बन्द भी कर दी तो रूस पर उसे अभी जो बड़ाई हासिल है वह खतम हो जायगी. ऐटम बम के मामले पर बहुत दिनों से बहस हो रही है. अमरीका यह चाहता है कि पहले इस बात का फैसला हो जाय कि कोई दूसरा देश, खास कर रूस, ऐटम बम या इस तरह का कोई दूसरा हथियार नहीं बना सकेगा. इसके लिये उसने

ہیں جو حفاظتی کونسل یعنی سُرکشا سمیتی کی ماتحتی میں کام کرے. امریکہ اور اس کے ساتھ والی طاقتوں نے اس تجویز کو نا منظور کر کے اس کی جگہ ایک دوسرا پرستاو منظور کرا لیا، جو دراصل روس کی تجویز کا ایک ٹکڑا تھا. اس پرستاو کا مطلب یہ ہے کہ یو. این. او. میں شامل ہونے والی طاقتیں یعنی سب دیش اپنی فوجی طاقت کا حال ایک کمیشن کو بتا دیں. اور یہ کمیشن اس حال کی جانچ کرے. پچھمی طاقتوں کے پرستاو میں نہ تو فوج اور ہتھیاروں کی کمی کی کوئی بات ہے اور نہ ایٹم بم کی مناہی کا کوئی بندوبست. ان طاقتوں نے روس کی تجویز کو اس طرح سے دیکھا کہ اُس کی فوجی طاقت ان سے زیادہ ہے اور اپنی طاقت میں کمی کر دینے سے اس کے مقابلے میں کمزور ہو جائیں گے. برطانیہ کے نمائندے نے اس شک کو صاف صاف ظاہر بھی کر دیا. چین کے نمائندے نے کہا کہ فوج اور ہتھیاروں کی کمی سے کوئی لابھ نہیں ہوگا جب تک پانچواں کالم بھی ختم نہ کر دیا جائے. یعنی ایک طاقت دوسرے دیش میں اپنے کارندے نہ رکھے. امریکہ کے پاس ایٹم بم کی اجارہ داری ہے اور اسے ڈر ہے کہ اگر اس نے ایٹم بم کے بھنڈار کو برباد کر دیا اور تیاری بند بھی کر دی تو روس پر اسے ابھی جو بڑائی حاصل ہے وہ ختم ہو جائے گی. ایٹم بم کے معاملے پر بہت دنوں سے بحث ہو رہی ہے. امریکہ یہ چاہتا ہے کہ پہلے اس بات کا فیصلہ ہو جائے کہ کوئی دوسرا دیش، خاص کر روس، ایٹم بم یا اس طرح کا کوئی دوسرا ہتھیار نہیں بنا سکے گا. اس کے لئے اس نے

एक कंट्रोल कमीशन बनाना तजवीज़ किया था. पर रूस को डर है कि यह कमीशन अमरीका के असर में रहेगा और जाँच पड़ताल के बहाने उसके घरेलू मामलों में दखल देगा. इसी डर से रूस ने अपनी तजवीज़ वाले कमीशन को सुरक्षा समिति के अधीन रक्खा था. इस कौन्सिल का एक क़ायदा यह है कि कारवाई का कोई फ़ैसला उस वक़्त तक लागू नहीं हो सकता, जब तक पाँचों बड़ी ताक़तें उसका समर्थन न करें. और हर बड़ी तक़ात अपने अकेले वोट से ऐसे हर फ़ैसले को, चाहे वह जितने अधिक वोटों से मंज़ूर हुआ हो, काट सकती है.

रूस का राज काजी हथियार

इसी हक़ के ज़रिये जिसे 'विटो पावर' कहा जाता है, रूस ने अट्ठाईस ऐसे फ़ैसलों को काट दिया है जो हिन्दुस्तान और दुनिया की हर पार्लिमेन्ट में मन्ज़ूर और लागू समझे जाते. ऐसा ही एक मसला यूनान का है. वहाँ बग़ावत हो रही है और यूनानी सरकार का कहना है कि इस बग़ावत में जिसकी बाग डोर कम्यूनिस्टों के हाथ में है, उसके पड़ोस के देश अलबानिया, बलग़ारिया और योगोसलाविया, जहाँ कम्यूनिस्ट और रूस दोस्त सरकारें क़ायम हैं, मदद दे रही हैं. यू० एन० ओ० के एक कमीशन ने भी जाँच करके यही राय दी है. लेकिन सुरक्षा समिति इस सहायता की रोक थाम की कोई कारवाई नहीं कर सकती, इसलिये कि रूस उसकी राह में 'विटो' की दीवार खड़ी कर देता है. ऐसी ही दीवार खड़ी करके उसने यू० एन० ओ० में कुछ नये देशों, जैसे आयरलैंड

ایک کنٹرول کمیشن بنانا تجویز کیا تھا۔ پر روس کو ڈر ہے کہ یہ کمیشن امریکہ کے اثر میں رہے گا اور جانچ پڑتال کے بہانے اس کے گھریلو معاملے میں دخل دے گا۔ اسی ڈر سے روس نے اپنی تجویز والے کمیشن کو سُرکشا سمیتی کے ادھین رکھا تھا۔ اس کونسل کا ایک قاعدہ یہ ہے کہ کارروائی کا کوئی فیصلہ اس وقت تک لاگو نہیں ہو سکتا، جب تک پانچوں بڑی طاقتیں اس کا سمرتھن نہ کریں اور ہر بڑی طاقت اپنے اکیلے ووٹ سے ایسے ہر فیصلے کو، چاہے وہ جتنے ادھک ووٹوں سے منظور ہوا ہو، کاٹ سکتی ہے۔

روس کا راج کاجی ہتھیار

اسی حق کے ذریعہ جسے 'ویٹو پاور' کہا جاتا ہے، روس نے اٹھائیس ایسے فیصلوں کو کاٹ دیا ہے جو ہندستان اور دنیا کی ہر پارلیمنٹ میں منظور اور لاگو سمجھے جاتے۔ ایسا ہی ایک مسئلہ یونان کا ہے۔ وہاں بغاوت ہو رہی ہے اور یونانی سرکار کا کہنا ہے کہ اس بغاوت میں جس کی باگ ڈور کمیونسٹوں کے ہاتھ میں ہے، اس کے پڑوس کے دیش البانیہ، بلغاریہ اور یوگوسلاویہ، جہاں کمیونسٹ اور روس دوست سرکاریں قائم ہیں، مدد دے رہی ہیں۔ یو۔این۔او کے ایک کمیشن نے بھی جانچ کر کے یہی رائے دی ہے۔ لیکن سُرکشا سمیتی اس سہایتا کی روک تھام کی کوئی کارروائی نہیں کر سکتی، اس لئے کہ روس اس کی راہ میں 'ویٹو' کی دیوار کھڑی کر دیتا ہے۔ ایسی ہی دیوار کھڑی کر کے اس نے یو۔این۔او میں کچھ نئے دیشوں، جیسے آئرلینڈ

ट्रान्स जार्डन और सीलौन का दाखला रोक रक्खा है, जो उसके खिलाफ़ गिरोह से सम्बंध रखते हैं. दूसरी तरफ़ उसकी विरोधी ताक़तों ने भी इसी तरकीब से अलबानिया, बलग़ारिया और मंगोलिया जैसे देशों को, जो रूस के साथी हैं, यू० एन० ओ० में आने से रोक दिया है. अभी तक रूस एकता के उसूल की आड़ लेकर विटो की तरफ़दारी करता था लेकिन आख़ीर नवम्बर में जब यू० एन० ओ० की राजनीतिक कमेटी में मेम्बरी के उम्मीदवार देशों की दरख्वास्तों पर विचार किया जा रहा था तो रूस के नुमाइन्दे ने साफ़ तौर से कह दिया कि आज की सियासी कशमकश में विटो एक ज़बरदस्त हथियार है और एक भोला भाला आदमी भी ऐसे हथियार को अपने हाथ से गिरा देना पसन्द नहीं करेगा.

विटो पर वार

पच्छिमी ताकतें इस हथियार के इस्तेमाल पर पाबन्दी लगाने की बहुत दिनो से कोशिश कर रही हैं. पिछले साल उन्हो ने एक कमेटी बनवा ली थी जिसमे यू० एन० ओ० मे शामिल होने वाले सब देशो का एक एक नुमाइन्दा था. इस तरह इसकी सूरत जनरल असेम्बली की ऐसी हो गई थी जिस का जलसा साल मे सिर्फ़ एक बार होता था. इसका काम सुरक्षा समीति से मिल्ता जुलता था. हाँ, इसके फ़ैसले ज़्यादा वोटो से होते थे और इन फ़ैसलो पर विटो इस्तेमाल नही किया जा सकता था. इसी बुनियाद पर रूस और उसके साथ वाले देशों ने इस कमेटी मे आने से इनकार कर दिया. जनरल असेम्बली (जो यू० एन० ओ० में लोक सभा

ٹرانسجارڈن اور سیلون کا داخلہ روک رکھا ہے، جو اس کے خلاف گروہ سے سمبندھ رکھتے ہیں۔ دوسری طرف اس کی وِرودھی طاقتوں نے بھی اسی ترکیب سے البانیہ، بلغاریہ اور منگولیا جیسے دیشوں کو جو روس کے ساتھ ہیں، یو. این. او. میں آنے سے روک دیا ہے۔ ابھی تک روس ایکتا کی آڑ لیکر ویٹو کی طرف داری کرتا تھا لیکن آخر نومبر میں جب یو. این. او. کی راج نیتک کمیٹی میں ممبری کے امیدوار دیشوں کی درخواستوں پر وچار کیا جا رہا تھا تو روس کے نمائندے نے صاف طور سے کہہ دیا کہ آج کی سیاسی کشمکش میں ویٹو ایک زبردست ہتھیار ہے اور ایک بھولا بھالا آدمی بھی ایسے ہتھیار کو اپنے ہاتھ سے گرا دینا پسند نہیں کریگا۔

ویٹو پر وار

پچھمی طاقتیں اس ہتھیار کے استعمال پر پابندی لگانے کی بہت دنوں سے کوشش کر رہی ہیں پچھلے سال انھوں نے ایک کمیٹی بنوالی تھی جس میں یو. این. او. میں شامل ہونے والے سب دیشوں کا ایک ایک نمائندہ تھا۔ اس طرح اس کی صورت جنرل اسمبلی کی ایسی ہو گئی تھی جس کا جلسہ سال میں صرف ایک بار ہوتا تھا۔ اس کا کام سُرکشا سمیتی سے ملتا جلتا تھا۔ ہاں، اس کے فیصلے زیادہ ووٹوں سے ہوتے تھے اور ان فیصلوں پر ویٹو استعمال نہیں کیا جا سکتا تھا۔ اسی بنیاد پر روس اور اس کے ساتھ والے دیشوں نے اس کمیٹی میں آنے سے انکار کر دیا۔ جنرل اسمبلی (جو یو. این. او. میں لوک سبھا

की तरह है) के मौजूदा जलसे में इस असेम्बली की जिन्दगी एक साल के लिये और बढ़ा दी गई है. पर रूस के अलग रहने पर इसके सब काम बेकार हैं और इसके सब फैसले बेअसर हो जायँगे. शायद इसी लिये पच्छिमी ताक़तों ने विटो पर सामने से हमला किया. यू० एन० ओ० की एक कमेटी मे उन्हो ने एक प्रस्ताव रक्खा कि विटो को सिर्फ़ खास खास मामलो में इस्तेमाल किया जाय. यह प्रस्ताव ज्यादा रायों से पास तो होगया पर लागू नहीं हो सकेगा. इस लिये कि रूस इसको भी विटो के जोर से काट देगा. इसी बिना पर पच्छिमी गिरोह की एक सरकार आस्ट्रेलिया के नुमाइन्दे ने इस प्रस्ताव को बेमानी कहा था. इस बहस मे हिन्द के एक नुमाइन्दे श्री शिवराव ने भी हिस्सा लिया. उन्होने कहा कि सुरक्षा समिति का दारो मदार इस बात पर है कि पाँचो बड़ी ताक़तें एक राय हों. अगर आज इनकी एकता में रुकावट है· तो उस रुकावट को दूर करने की कोशिश करनी चाहिये. मतलब यह है कि विटो के बारे मे बहुमत (कसरत राय) के बल पर कोई फैसला कराने की जगह आपस में समझौता कर लिया जाय. पर मुश्किल यह है कि पच्छिमी ताक़ते बीच बीच में दूसरी चालें चल कर रूस को भड़का देती हैं. इसके अलावा दुनिया के दूसरे बड़े मसलो के कारन भी बड़ी ताक़तों का आपस में भेद भाव बना रहता है, जिनके दूर हुए बिना विटो के बारे में कोई समझौता नहीं हो सकता.

बर्लिन में तनातनी

[illegible] बर्लिन का है. जर्मनी की यह राजधानी

کی طرح ہے) کے موجودہ جلسے میں اس اسمبلی کی زندگی ایک سال کے لئے اور بڑھا دی گئی ہے۔ پر روس کے الگ رہنے پر اس کے سب کام بے کار ہیں اور اس کے سب فیصلے بے اثر ہو جائیں گے۔ شاید اسی لئے پچھمی طاقتوں نے ویٹو پر سامنے سے حملہ کیا۔ یو۔این۔او۔ کی ایک کمیٹی میں انھوں نے ایک پرستاو رکھا کہ ویٹو کو صرف خاص خاص معاملوں میں استعمال کیا جائے۔ یہ پرستاو زیادہ رایوں سے پاس تو ہوگیا پر لاگو نہیں ہو سکے گا۔ اس لئے کہ روس اس کو بھی ویٹو کے زور سے کاٹ دے گا۔ اسی بنا پر پچھمی گروہ کی ایک سرکار آسٹریلیا کے نمائندہ نے اس پرستاو کو بے معنی کہا تھا۔ اس بحث میں ہند کے ایک نمائندہ شری شیوراؤ نے بھی حصہ لیا۔ انھوں نے کہا کہ سُرکشا سمیتی کا دار و مدار اس بات پر ہے کہ پانچوں بڑی طاقتیں ایک رائے ہوں۔ اگر آج ان کی ایکتا میں رکاوٹ ہے تو اس رکاوٹ کو دور کرنے کی کوشش کرنی چاہئے مطلب یہ ہے کہ ویٹو کے بارے میں بہومت (کثرت رائے) کے بل پر کوئی فیصلہ کرانے کی جگہ آپس میں سمجھوتہ کر لیا جائے۔ پر مشکل یہ ہے کہ پچھمی طاقتیں بیچ بیچ میں دوسری چالیں چل کر روس کو بھڑکا دیتی ہیں۔ اس کے علاوہ دنیا کے دوسرے بڑے مسئلوں کے کارن بھی بڑی طاقتوں کا آپس میں بھید بھاؤ بنا رہتا ہے، جن کے دور ہوئے بنا ویٹو کے بارے میں کوئی سمجھوتہ نہیں ہو سکتا۔

برلن میں تناتنی

ایسا ہی ایک مسئلہ برلن کا ہے۔ جرمنی کی یہ راجدھانی

अमरीका, बरतनिया और रूस के इन्तज़ाम मे है. जर्मनी के लड़ाई में हारने के बाद इसका इन्तज़ाम भी इसी तरह बॅट गया था. रूस और पच्छिमी ताक़तों ने अपने अपने हिस्सो मे ऐसी कारखाइयाँ की जिन्हों ने दोनो हिस्सों को एक दूसरे के लिये अजनबी बना दिया और इस झगड़े का असर भी बर्लिन पर पड़ा. वहाँ पच्छिमी ताकतो ने अपने हिस्से मे पच्छिमी जर्मनी की तरह अपना सिक्का जारी कर दिया. इस पर रूस ने इस हिस्से से आने जाने वाली चीज़ो और लोगों पर पाबन्दी लगा दी. चूंकि बर्लिन चारो तरफ से जर्मनी के रूसी इलाके से घिरा हुआ है, इसलिये पच्छिमी ताकतों को अपने हिस्से की बीस लाख आबादी की जरूरत का सारा सामान हवाई जहाज मे लाना पड रहा है. उन्हों ने इस मामले को यू० एन० ओ० के सामने भी रक्खा था. वहाँ फैसला उनके मोवाफिक हो गया. पर रूस ने उसे भी विटो की तलवार से काट दिया. अब सुरक्षा समिति के एक पिछले सदर की तजवीज के मुताबिक सिक्के के मसले पर सोच विचार करने के लिये और समझौते की कोई सूरत निकालने के लिये माहिरों की एक कमेटी मुकर्रर हुई है. रूस ने और पच्छिमी ताकतो ने उससे सहयोग का वादा किया है, लेकिन दोनो ने हर तरह की काररवाई के लिये अपने आप को आज़ाद रक्खा है इस तरह कमेटी की कामयाबी के लिये बहुत ही कम उम्मीद है. इस आशा की कमी का एक और कारन भी है बर्लिन की म्योनिस्पेलटी मे पच्छिमी ताकतो को हिमायत करने वाले जर्मनो की गिनती ज्यादा है रूस के हिमायती इस पर कब्ज़ा करने का कई बार जतन कर चुके हैं. अब उन्होने अपनी अलग

امریکہ، برطانیہ اور روس کے انتظام میں ہے۔ جرمنی کے لڑائی میں ہارنے کے بعد اس کا انتظام بھی اسی طرح بٹ گیا تھا۔ روس اور پچھمی طاقتوں نے اپنے اپنے حصّوں میں ایسی کارروائیاں کیں جنھوں نے دونوں حصّوں کو ایک دوسرے کے لئے اجنبی بنا دیا اور اس جھگڑے کا اثر بھی برلن پر پڑا۔ وہاں بھی پچھمی طاقتوں نے اپنے حصے میں پچھمی جرمنی کی طرح اپنا سکّہ جاری کر دیا۔ اس پر روس نے اس حصّے سے آنے جانے والی چیزوں اور لوگوں پر پابندی لگا دی۔ چوں کہ برلن چاروں طرف سے جرمنی کے روسی علاقے سے گھرا ہوا ہے، اس لئے پچھمی طاقتوں کو اپنے حصّے کی بیس لاکھ آبادی کی ضرورت کا سارا سامان ہوائی جہاز سے لانا پڑ رہا ہے۔ انھوں نے اس معاملہ کو یو۔ این۔ او۔ کے سامنے بھی رکھا تھا۔ وہاں فیصلہ اُن کے موافق ہو گیا۔ پر روس نے اُسے بھی ویٹو کی تلوار سے کاٹ دیا۔ اب سُرکشا سمیتی کے ایک پچھلے صدر کی تجویز کے مطابق سکّے کے مسئلے پر سوچ وچار کرنے کے لئے اور سمجھوتے کی کوئی صورت نکالنے کے لئے ماہروں کی ایک کمیٹی مقرر ہوئی ہے۔ روس نے اور پچھمی طاقتوں نے اُس سے سہیوگ کا وعدہ کیا ہے۔ لیکن دونوں نے ہر طرح کی کارروائی کے لئے اپنے آپ کو آزاد رکھا ہے۔ اس طرح کمیٹی کی کامیابی کے لئے بہت ہی کم امید ہے۔ اس آشا کی کمی کا ایک اور کارن بھی ہے۔ برلن کی میونسپلٹی میں پچھمی طاقتوں کی حمایت کرنے والے جرمنوں کی گنتی زیادہ ہے۔ روس کے حمایتی اس پر قبضہ کرنے کا کئی بار جتن کر چکے ہیں۔ اب انھوں نے اپنی الگ

म्योनिस्पेलटी बना ली है. दूसरी तरफ पच्छिमी ताक़तों के अफसरों ने म्योनिस्पेलटी के नये मेम्बरों के चुनाव के लिये एलान कर दिया है. रूस के असर वाली पार्टियाँ इस चुनाव का बाइकाट कर रही हैं. इस तरह बर्लिन के इन्तज़ाम के लिये दो म्योनिस्पेलटियाँ बन जायँगी. ऐसी हालत में मुमकिन है कि पच्छिमी ताक़तें, ख़ासकर अमरीका, रूसी सिक्के को पूरे बर्लिन मे जारी करने के अपने फ़ैसले को बदल डाले या उसके साथ ऐसी शर्तें लगा दें कि रूस उनको मानने से इनकार कर दे.

बँटवारे की बीमारी फ़िलिस्तीन तक

बँटवारा तो ऐसा मालूम होता है कि लड़ाई के बाद एक वबाई बीमारी की तरह फैलता जा रहा है. पच्छिम में जर्मनी का बँटवारा हुआ और बर्लिन का बँटवारा हुआ. यही हाल पूरब में कोरिया का हुआ. यह देश पहले तो रूस और अमरीका के बीच बँटा और अब रूस के हट जाने पर इसके आधे हिस्से में उसके असर वाली सरकार और आधे में अमरीकी फ़ौजों को टिकाये रखने वाली सरकार बन गई है. हिन्द का बँटवारा जर्मनी और कोरिया के बँटवारे से अलग है, और फिलिस्तीन का बँटवारा हिन्द के बँटवारे से बहुत कुछ मिलता जुलता है. दोनों जगह बँटवारे से पहले एक ही साम्राजी हुकूमत थी. यानी अंग्रेज़ों की. इसके अलावा जिस तरह पाकिस्तान के दोनों टुकड़े हज़ारों मील दूर हैं उसी तरह यू० एन० ओ० ने फिलिस्तीन का जो बँटवारा मन्ज़ूर किया है उसमें अरबों और यहूदियों के इलाक़े एक सिलसिले में नहीं हैं.

میونسپلٹی بنا لی ہے۔ دوسری طرف پچھمی طاقتوں کے افسروں نے میونسپلٹی کے نئے ممبروں کے چناؤ کے لئے اعلان کر دیا ہے۔ روس کے اثر والی پارٹیاں اس چناؤ کا بائیکاٹ کر رہی ہیں۔ اس طرح برلن کے انتظام کے لئے دو میونسپلٹیاں بن جائیں گی۔ ایسی حالت میں ممکن ہے کہ پچھمی طاقتیں، خاص کر امریکہ، روسی سکے کو پورے برلن میں جاری کرنے کے اپنے فیصلے کو بدل ڈالیں یا اس کے ساتھ ایسی شرطیں لگا دیں کہ روس ان کو ماننے سے انکار کر دے۔

بٹوارے کی بیماری فلسطین تک

بٹوارا تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ لڑائی کے بعد ایک وبائی بیماری کی طرح پھیلتا جا رہا ہے۔ پچھم میں جرمنی کا بٹوارا ہوا اور برلن کا بٹوارا ہوا۔ یہی حال پورب میں کوریا کا ہوا۔ یہ دیش پہلے تو روس اور امریکہ کے بیچ بٹا اور اب روس کے ہٹ جانے پر اس کے آدھے حصے میں اس کے اثر والی سرکار اور آدھے میں امریکی فوجوں کو ٹکائے رکھنے والی سرکار بن گئی ہے۔ ہند کا بٹوارا جرمنی اور کوریا کے بٹوارے سے الگ ہے، اور فلسطین کا بٹوارا ہند کے بٹوارے سے بہت کچھ ملتا جلتا ہے۔ دونوں جگہ بٹوارے سے پہلے ایک ہی سامراجی حکومت تھی۔ یعنی انگریزوں کی۔ اس کے علاوہ جس طرح پاکستان کے دونوں ٹکڑے ہزاروں میل دور ہیں اسی طرح یو۔ این۔ او نے فلسطین کا جو بٹوارہ منظور کیا ہے اس میں عربوں اور یہودیوں کے علاقے ایک سلسلے میں نہیں ہیں۔

अरब इस बँटवारे के ख़िलाफ़ हैं. वह पूरे फ़िलिस्तीन को अपना मुल्क कहते हैं और यह ठीक भी है. पड़ोस के अरब मुल्कों ने फ़िलिस्तीन वालों की हिमायत के लिये यहूदी राज पर चढ़ाई कर दी थी. पर यहूदियों की फ़ौज ने, जो गिनती में कम है लेकिन हथियारों और लड़ाई की कला में ज़्यादा माहिर है, और जिसको एक तरफ़ अमरीका और दूसरी तरफ़ रूस के असर वाले देशों से मदद मिल रही थी, इनको पीछे ढकेल दिया. अरबों की एक मुशकिल और यह है कि उनमे फूट पड़ गई है. ट्रान्सजार्डन के बादशाह अबदुल्ला इस लालच में कि फ़िलिस्तीन का अरब हिस्सा उनके राज मे मिला दिया जायगा, लड़ाई बन्द करने की बातें करने लगे. दूसरे अरब देशों में इतना दम नहीं है कि वह शाह अब्दुल्ला के अलग हो जाने के बाद भी यहूदियों से लड़ते रहें.

फिर इनका मुकाबला अकेले यहूदियों से नहीं बल्कि बर्तानिया, अमरीका और रूस से भी है. इसलिये उन सब ने फ़िलिस्तीन के बँटवारे का सुझाव मान लिया है और चूँकि फ़िलिस्तीन के यहूदी इलाक़े मे तेल के कारख़ाने, हवाई अड्डे, समुन्दरी अड्डे और बन्दरगाहें हैं इसलिये यह तीनो एक दूसरे से बढ़ बढ़ कर इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि यहूदियों को अपना दोस्त बना लें. इन तीनों मे शुरू मे बर्तानिया थोड़ा बहुत अरबों की तरफ़ झुका हुआ था. इसलिये कि वह दूसरे अरब देशों जैसे मिस्र, इराक और ट्रान्सजार्डन वग़ैरा से दोस्ती बनाये रखना चाहता था. इन देशों में सबसे ज़्यादा उसे ट्रान्सजार्डन के बादशाह का ख़याल था, जिनके पिता ... लड़ाई में ख़लीफ़ा और उनके तर्की

عرب اس بٹوارے کے خلاف ہیں۔ وہ پورے فلسطین کو اپنا ملک کہتے ہیں اور یہ ٹھیک بھی ہے۔ پڑوس کے عرب ملکوں نے فلسطین والوں کی حمایت کے لئے یہودی راج پر چڑھائی کر دی تھی۔ پر یہودیوں کی فوج نے، جو گنتی میں کم ہے لیکن ہتھیاروں اور لڑائی کی کلا میں زیادہ ماہر ہے، اور جس کو ایک طرف امریکہ اور دوسری طرف روس کے اثر والے دیشوں سے مدد مل رہی تھی، ان کو پیچھے ڈھکیل دیا۔ عربوں کی ایک مشکل اور یہ ہے کہ ان میں پھوٹ پڑ گئی ہے۔ ٹرانسجارڈن کے بادشاہ عبداللہ اس لالچ میں کہ فلسطین کا عرب حصہ ان کے راج میں ملا دیا جائے گا، لڑائی بند کرنے کی باتیں کرنے لگے۔ دوسرے عرب دیشوں میں اتنا دم نہیں ہے کہ وہ شاہ عبداللہ کے الگ ہو جانے کے بعد بھی یہودیوں سے لڑتے رہیں۔

پھر اُن کا مقابلہ اکیلے یہودیوں سے نہیں بلکہ برطانیہ، امریکہ اور روس سے بھی ہے۔ اس لئے اُن سب نے فلسطین کے بٹوارے کا سجھاؤ مان لیا ہے اور چونکہ فلسطین کے یہودی علاقے میں تیل کے کارخانے، ہوائی اڈے، سمندری اڈے اور بندرگاہیں ہیں اس لئے یہ تینوں ایک دوسرے سے بڑھ بڑھ کر اس بات کی کوشش کر رہے ہیں کہ یہودیوں کو اپنا دوست بنا لیں۔ ان تینوں میں شروع میں برطانیہ تھوڑا بہت عربوں کی طرف جھکا ہوا تھا اس لئے کہ وہ دوسرے عرب دیشوں جیسے مصر، عراق اور ٹرانسجارڈن وغیرہ سے دوستی بنائے رکھنا چاہتا تھا۔ ان دیشوں میں سب سے زیادہ اسے ٹرانسجارڈن کے بادشاہ کا خیال تھا، جن کے پتا شریف حسین نے پہلی بڑی لڑائی میں خلیفہ اور اُن کے ترکی

साम्राज के खिलाफ़ बग़ावत करके बर्तानिया का साथ दिया था. ख़ुद अब्दुल्ला आज़ादी के पहले और उसके बाद हमेशा बर्तानिया के साथ रहे. शायद इसीलिये बर्तानिया ने फिलिस्तीन के बँटवारे के सुझाव मे यह बात रख दी थी कि फिलिस्तीन का अरब इलाक़ा शाह अब्दुल्ला को दे दिया जाय. मगर दिसम्बर के शुरू में जब सुरक्षा समिति ने अरबों और यहूदियो में समझौता कराने के लिये एक कमेटी बनाई तो उसने इस बात को नामंज़ूर कर दिया. इसके बाद भी बर्तानिया का रुख़ बदलने की बहुत कम आशा है क्योंकि वह अमरीका की मदद का म्हुताज है और अमरीका यहूदियों का तरफ़दार है.

एक पंथ दो काज

एक बर्तानिया क्या दुनिया के कुछ गिने चुने देशों को छोड़ कर सभी को अमरीका की सहायता की ज़रूरत है. इसलिये कि यह देश लड़ाई के ज़माने मे या तो बुरी तरह तबाह हो गये या अगर तबाही से बचे तो आर्थिक मुसीबतो मे गिरफ़्तार हो गये. अमरीका इन दोनों बातों से बचा रहा. लड़ाई उसके घर से बहुत दूर दूर रही और लड़ाई के बाद उसके कारख़ाने और खेत खलिहान सही सलामत रहे. हाँ एक मुशकिल यह ज़रूर थी कि जो कारख़ाने लड़ाई के समय गोला बारूद और तोप बन्दूक़ बनाते थे वह लड़ाई के बाद रोज़ के इस्तेमाल में आने वाली चीज़ें बनाने लगे. अब सवाल यह है कि यह चीज़ें जो अमरीका के लोगों की ज़रूरत से ज़्यादा है कहाँ खपें. इस सवाल को अमरीकी सरकार ने एक पंथ दो

سامراج کے خلاف بغاوت کر کے برطانیہ کا ساتھ دیا تھا۔ خود عبداللہ آزادی کے پہلے اور اُس کے بعد ہمیشہ برطانیہ کے ساتھ رہے۔ شاید اسی لئے برطانیہ نے فلسطین کے بٹوارے کے سجھاؤ میں یہ بات رکھ دی تھی کہ فلسطین کا عرب علاقہ شاہ عبداللہ کو دے دیا جائے۔ مگر دسمبر کے شروع میں جب سرکشا سمیتی نے عربوں اور یہودیوں میں سمجھوتہ کرانے کے لئے ایک کمیٹی بنائی تو اُس نے اِس بات کو نامنظور کر دیا۔ اِس کے بعد بھی برطانیہ کا رُخ بدلنے کی بہت کم آشا ہے کیوں کہ وہ امریکہ کی مدد کا محتاج ہے اور امریکہ یہودیوں کا طرفدار ہے۔

ایک پنتھ دو کاج

ایک برطانیہ کیا دنیا کے کچھ گنے چُنے دیشوں کو چھوڑ کر سبھی کو امریکہ کی سہایتا کی ضرورت ہے۔ اس لئے کہ یہ دیش لڑائی کے زمانے میں یا تو بُری طرح تباہ ہو گئے یا اگر تباہی سے بچے تو آرتھک مصیبتوں میں گرفتار ہو گئے۔ امریکہ اِن دونوں باتوں سے بچا رہا۔ لڑائی اس کے گھر سے بہت دُور دُور رہی اور لڑائی کے بعد اُس کے کارخانے اور کھیت کھلیان صحیح سلامت رہے۔ ہاں ایک مشکل یہ ضرور تھی کہ جو کارخانے لڑائی کے سمے گولا بارود اور توپ بندوق بناتے تھے وہ لڑائی کے بعد روز کے استعمال میں آنے والی چیزیں بنانے لگے۔ اب سوال یہ ہے کہ یہ چیزیں جو امریکہ کے لوگوں کی ضرورت سے زیادہ ہیں، کہاں کھپیں۔ اس سوال کو امریکی سرکار نے ایک پنتھ دو

काज की तरकीब से हल किया है. अमरीका के विदेश मंत्री जार्ज मार्शल ने योरप की सहायता करने की एक योजना या प्लान तैयार किया है, जिसे मार्शल प्लान कहा जाता है. इस प्लान के अनुसार योरप के देशों को माल भेजा जाने लगा है. इस तरह अमरीका को माल का बाज़ार मिल ग " । न देशों की ज़रूरत पूरी करके इन्हें अपने गिरोह में शामिल कर लिया है. यह मदद देखने में तो बहुत सस्ती या मुफ्त मालूम होती है लेकिन दरअसल यह बहुत मंहगी है, इसलिये कि इसके साथ जो शर्तें हैं उनके अनुसार इन देशों को अपने व्योपार और राजकाज पर बहुत सी जकड़ बन्दियाँ भी माननी पड़ी हैं. जैसे वह किसी ऐसे मामले मे रूस का साथ नहीं दे सकते जिसमे अमरीका के ख़िलाफ़ कुछ हो. इसी तरह जो सामान अमरीका से मिल सकता है वह उसे कहीं और से नही मँगा सकते. और अमरीका से जो सामान मँगवाये उसमे से आधा अमरीका के जहाजों पर मँगाना होगा

इन बन्धनों की मार सिर्फ योरप के देशों पर नहीं पड़ती बल्कि इससे एशिया के देशों को भी नुकसान पहुँचता है और एशिया के आर्थिक मसलों पर सोच विचार करने वाले यू० एन० ओ० के कमीशन से हिन्दुस्तान, लंका और दूसरे देशों ने इस बात की शिकायत की है. यह बात नहीं कि अमरीका एशियाई देशों की सहायता नहीं करना चाहता. चीन भी इन्हीं देशों मे से है और उसकी सहायता अमरीका योरप के देशों से बहुत पहले से कर रहा है. योरप की तरह चीन की मदद भी वह बेग़रज़ी से नहीं कर रहा है. इसमें उसकी एक ग़रज़ तो यह है कि चीन के बाज़ार उसके माल

کاج کی ترکیب سے حل کیا ہے۔ امریکہ کے ودیشی منتری جارج مارشل نے یورپ کی سہایتا کرنے کی ایک یوجنا یا پلان تیار کیا ہے، جسے مارشل پلان کہا جاتا ہے۔ اس پلان کے انوسار یورپ کے دیشوں کو مال بھیجا جانے لگا ہے اس طرح امریکہ کو مال کا بازار مل گیا ہے۔ دوسرے اس نے اُن دیشوں کی ضرورت پوری کر کے انھیں اپنے گروہ میں شامل کر لیا ہے۔ یہ مدد دیکھنے میں تو بہت سستی یا مفت معلوم ہوتی ہے لیکن دراصل یہ بہت مہنگی ہے، اس لئے کہ اس کے ساتھ جو شرطیں ہیں اُن کے انوسار ان دیشوں کو اپنے بیوپار اور راج کاج پر بہت سی جکڑ بند یاں بھی ماننی پڑی ہیں۔ جیسے وہ کسی ایسے معاملے میں روس کا ساتھ نہیں دے سکتے جس میں امریکہ کے خلاف کچھ ہو۔ اسی طرح جو سامان امریکہ سے مل سکتا ہے وہ اُسے کہیں اور سے نہیں منگا سکتے۔ اور امریکہ سے جو سامان منگوائیں اُس میں سے آدھا امریکہ کے جہازوں پر منگانا ہوگا۔

اِن بندھنوں کی مار صرف یورپ کے دیشوں پر نہیں پڑتی بلکہ اس سے ایشیا کے دیشوں کو بھی نقصان پہنچتا ہے اور ایشیا کے آرتھک مسئلوں پر سوچ وچار کرنے والے یو۔ این۔ او۔ کے کمیشن سے ہندستان، لنکا اور دوسرے دیشوں نے اس بات کی شکایت کی ہے۔ یہ بات نہیں کہ امریکہ ایشیائی دیشوں کی سہایتا نہیں کرنا چاہتا۔ چین بھی انھیں دیشوں میں سے ہے اور اُس کی سہایتا امریکہ یورپ کے دیشوں سے بہت پہلے سے کر رہا ہے۔ یورپ کی طرح چین کی مدد بھی وہ بے غرضی سے نہیں کر رہا ہے۔ اس میں اُس کی ایک غرض تو یہ ہے کہ چین کے بازار اُسکے مال

और पैसे की खपत के लिये खुले रहें और दूसरे यह कि चीन में कम्यूनिस्ट, जिनको वह रूस का एजेन्ट समझता है, ज़ोर न पकड़ने पायँ. इन दोनों बातो के लिये वह चीन को अरबों रूपये का सामान दे चुका है और चीन के प्रेसिडेन्ट जनरलिसमो च्यॉग काई शेक कम्यूनिस्टो को कुचलने के लिये इस ताक़त को इस्तेमाल भी कर चुके हैं.

चीन की बग़ावत

यह बग़ावत चीन की पिछली लड़ाई से शुरू हुई थी और अभी तक चल रही है और अब तो कामयाब होती दिखाई दे रही है. अगरचे चीन की सरकारी फ़ौजें गिनती और सामान मे कम्यूनिस्ट फ़ौज से कहीं ज्यादा हैं लेकिन चीनी जनता आर्थिक संकट की लाई हुई मँहगाई से परेशान है और इस संकट को दूर करने के लिये पैसे और माल से ज्यादा इन्तज़ाम की ज़रूरत है. सरकार के पास ईमानदार और अच्छे आदमियों की बड़ी कमी है. जनता और फ़ौज के आदमी एक तरफ तो अपनी यह हालत देखते हैं और अपने सामने कोई अच्छा आदर्श नहीं पाते और दूसरी तरफ कम्यूनिस्ट उनको अपने इलाक़े का हाल बताते और किसान राज के सच्चे सब्ज़ बाग़ दिखाते हैं. इसी का नतीजा यह हुआ है कि फ़ौज को कई पलटनें बाग़ियों से जाकर मिल गई हैं और जो नहीं मिलीं वह जम कर मुक़ाबला नहीं कर रही हैं. सरकारी इन्तज़ाम की ख़राबी और जनता की परेशानी आसानी मे दूर [illegible] कामयाबी अब टल नहीं सकती.

اور پیسے کی کھپت کے لئے کھلے رہیں اور دوسرے یہ کہ چین میں کمیونسٹ، جن کو وہ روس کا ایجنٹ سمجھتا ہے، زور نہ پکڑنے پائیں۔ ان دونوں باتوں کے لئے وہ چین کو اربوں روپیہ کا سامان دے چکا ہے اور چین کے پریزیڈنٹ جنرلسمو چیانگ کائی شیک کمیونسٹوں کو کچلنے کے لئے اس طاقت کو استعمال بھی کر چکے ہیں۔

چین کی بغاوت

یہ بغاوت چین کی پچھلی لڑائی سے شروع ہوئی تھی اور ابھی تک چل رہی ہے اور اب تو کامیاب ہوتی دکھائی دے رہی ہے۔ اگرچہ چین کی سرکاری فوجیں گنتی اور سامان میں کمیونسٹ فوج سے کہیں زیادہ ہیں لیکن چینی جنتا آرتھک سنکٹ کی لائی ہوئی مہنگائی سے پریشان ہے اور سنکٹ کو دور کرنے کے لئے پیسے اور مال سے زیادہ انتظام کی ضرورت ہے۔ سرکار کے پاس ایماندار اور اچھے آدمیوں کی بڑی کمی ہے۔ جنتا اور فوج کے آدمی ایک طرف تو اپنی یہ حالت دیکھتے ہیں اور اپنے سامنے کوئی اچھا آدرش نہیں پاتے اور دوسری طرف کمیونسٹ اُن کو اپنے علاقے کا حال بتاتے اور کسان راج کے سچے سبز باغ دکھاتے ہیں۔ اسی کا نتیجہ یہ ہوا ہے کہ فوج کی کئی پلٹنیں باغیوں سے جا کر مل گئی ہیں اور جو نہیں ملیں وہ جم کر مقابلہ نہیں کر رہی ہیں۔ سرکاری انتظام کی خرابی اور جنتا کی پریشانی آسانی سے دور نہیں سکتی۔ کمیونسٹوں کی کامیابی اب ٹل نہیں سکتی۔

खुद अमरीका और बर्तानिया के लोगों और अखबारों ने भी यही विचार जाहिर किया है कि जब तक चीनी सरकार में कोई बड़ा परिवर्त्तन नहीं होता तब तक सरकार की कामयाबी की कोई आशा नहीं की जा सकती है.

लेकिन खबरों से पता चलता है कि चीनी सरकार चीन की घरेलू लड़ाई का मसला यू० एन० ओ० में लाने की सोच रही है और वहाँ इस बात की शिकायत करना चाहती है कि रूस कम्यूनिस्टो की मदद कर रहा है. इस शिकायत में कोई जान नही है इस लिये कि रूस ने एक तो कम्यूनिस्टों को कोई मदद दी नहीं और अगर उनको रूसी इलाके से थोड़े बहुत हथियार मिल भी गये तो यह मदद चीनी सरकार को अमरीका से मिलने वाली सहायता के हजारवे दर्जे से भी कम है. इस शिकायत से लड़ाई के मौजूदा बहाव पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा. हाँ यह जरूर होगा कि इससे रूस और अमरीका को एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का एक मौका और मिल जावेगा. शायद चीन यही चाहता भी है. क्यों कि इस तरह हो सकता है कि अमरीका रूस के जवाबी इलजामो से ताव खाकर चीनी सरकार को और ज्यादा मदद देने लगे. लेकिन चीनी सरकार की जड़े इतनी खोखली हो चुकी हैं कि इस मदद से भी उसके पैर बहुत दिनो तक जमे नहां रह सकते. और यू० एन० ओ० से यह उम्मीद बेकार है कि वह लड़ाई बन्द करा देगा. इसी तरह की लड़ाई यूनान मे भी हो रही है और वह उसे बन्द नही करा सका. कशमीर की लड़ाई भी उसके रोके

خود امریکہ اور برطانیہ کے لوگوں اور اخباروں نے بھی یہی وچار ظاہر کیا ہے کہ جب تک چینی سرکار میں کوئی بڑا پریورتن نہیں ہوتا تب تک سرکار کی کامیابی کی کوئی آشا نہیں کی جا سکتی ہے۔

لیکن خبروں سے پتہ چلتا ہے کہ چینی سرکار چین کی گھریلو لڑائی کا مسئلہ یو۔ این۔ او۔ میں لانے کی سوچ رہی ہے اور وہاں اس بات کی شکایت کرنا چاہتی ہے کہ روس کمیونسٹوں کی مدد کر رہا ہے۔ اس شکایت میں کوئی جان نہیں ہے اس لئے کہ روس نے ایک تو کمیونسٹوں کو کوئی مدد دی نہیں اور اگر ان کو روسی علاقے سے تھوڑے بہت ہتھیار مل بھی گئے تو یہ مدد چینی سرکار کو امریکہ سے ملنے والی سہایتہ کے ہزارویں درجے سے بھی کم ہے۔ اس شکایت سے لڑائی کے موجودہ بہاؤ پر بھی کوئی اثر نہیں پڑے گا۔ ہاں یہ ضرور ہوگا کہ اس سے روس اور امریکہ کو ایک دوسرے پر کیچڑ اچھالنے کا ایک موقعہ اور مل جاوے گا۔ شاید چین یہی چاہتا بھی ہے۔ کیوں کہ اس طرح ہو سکتا ہے کہ امریکہ روس کے جوابی الزاموں سے تاؤ کھا کر چینی سرکار کو اور زیادہ مدد دینے لگے۔ لیکن چینی سرکار کی جڑیں اتنی کھوکھلی ہو چکی ہیں کہ اس مدد سے بھی اس کے پیر بہت دنوں تک جمے نہیں رہ سکتے اور یو۔ این۔ او۔ سے یہ امید بیکار ہے کہ وہ لڑائی بند کرا دے گا۔ اسی طرح کی لڑائی یونان میں بھی ہو رہی ہے اور وہ اسے بند نہیں کرا سکا۔ کشمیر کی لڑائی بھی اس کے روکے

नहीं रुक सकी और लड़ाई तो लड़ाई वह दक्खिनी अफरीक़ा और हिन्दुस्तान के झगड़े तक तो चुका नहीं सका.

दक्खिनी अफ़रीक़ा की ढिठाई

इन दोनों मसलों पर यू० एन० ओ० का कमीशन और जेनरल एसेम्बली एक तरह से अपना फ़ैसला दे चुके हैं. जनरल एसेम्बली अब से दो साल पहले यह बात मान चुकी है कि दक्खिनी अफरीक़ा में हिन्दुस्तानियो के साथ यूरोपियनों से अलग बर्ताव नहीं होना चाहिये और इस बारे में हिन्दुस्तान और दक्खिनी अफरीका में समझौता हो जाना चाहिये. मगर दक्खिनी अफरीका हिन्दुस्तानियों को बराबर के नागरिक अधिकार देने से अभी तक इन्कार कर रहा है. यही नहीं बल्कि वह एक और मसले में भी ढिठाइ के साथ यू० एन० ओ०के फ़ैसले के खिलाफ़ जा रहा है. यह मसला दक्खिनी पच्छिमी अफरीक़ा का है जो पहली बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी के अधिकार से निकाल कर उसकी निगरानी में दे दिया गया था और जिसे दक्खिनी अफरीक़ा अपने राज में मिला लेना चाहता है. यू० एन० ओ० ने तीन साल हुए जब यह फ़ैसला किया था कि यह इलाक़ा यू० एन० ओ० की निगरानी में दे दिया जाय और दक्खिनी अफरीक़ा इस संस्था के एजेन्ट की तरह उसका कारबार देखे. पर उसने ऐसा नहीं किया और यू० एन० ओ० इन दोनों मसलों पर पिछले तीन साल से अपने फैसलों को दोहराने के अलावा कुछ भी नहीं कर सका. फैसले दोहराने में भी उसने हर दूसरे साल पहले साल से नर्म शब्द इस्तेमाल किये. इसका

نہیں رک سکی اور لڑائی تو لڑائی وہ دکھنی افریقہ اور ہندستان کے جھگڑے تک تو چکا نہیں سکا۔

دکھنی افریقہ کی ڈھٹائی

ان دونوں مسئلوں پر یو۔ این۔ او۔ کا کمیشن اور جنرل اسمبلی ایک طرح سے اپنا فیصلہ دے چکے ہیں۔ جنرل اسمبلی اب سے دو سال پہلے یہ بات مان چکی ہے کہ دکھنی افریقہ میں ہندستانیوں کے ساتھ یورپینوں سے الگ برتاؤ نہیں ہونا چاہیے اور اس بارے میں ہندستان اور دکھنی افریقہ میں سمجھوتہ ہو جانا چاہیے۔ مگر دکھنی افریقہ ہندستانیوں کو برابر کے ناگرک ادھیکار دینے سے ابھی تک انکار کر رہا ہے۔ یہی نہیں بلکہ وہ ایک اور مسئلے میں بھی ڈھٹائی کے ساتھ یو۔ این۔ او۔ کے فیصلے کے خلاف جا رہا ہے۔ یہ مسئلہ دکھنی پچھمی افریقہ کا ہے جو پہلی بڑی لڑائی کے بعد جرمنی کے ادھیکار سے نکال کر اس کی نگرانی میں دے دیا گیا تھا اور جسے دکھنی افریقہ اپنے راج میں ملا لینا چاہتا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ نے تین سال ہوئے جب یہ فیصلہ کیا تھا کہ یہ علاقہ یو۔ این۔ او۔ کی نگرانی میں دے دیا جائے اور دکھنی افریقہ اس سنستھا کے ایجنٹ کی طرح اس کا کاروبار دیکھے۔ پر اس نے ایسا نہیں کیا اور یو۔ این۔ او۔ ان دونوں مسئلوں پر پچھلے تین سال سے اپنے فیصلوں کو دہرانے کے علاوہ کچھ بھی نہیں کر سکا۔ فیصلے دہرانے میں بھی اس نے ہر دوسرے سال پہلے سال سے نرم شبد استعمال کیا۔ اس کا

कारन कुछ तो यह है कि यू० एन० ओ० में गोरे चमड़े वाले गिनती में ज्यादा हैं और दक्खिनी अफरीक़ा में भी ऐसे ही लोगों, का राज है और इसकी शिकायत करने वाले 'काले' लोग हैं. मगर इससे बड़ा कारन यह है कि यू० एन० ओ० की बड़ी बड़ी ताक़तें अपनी तनातनी के कारन इधर उधर अधिक ध्यान नहीं दे पातीं और जब ध्यान देतीं भी हैं तो बेलाग नहीं रहती. इसीलिये पच्छिमी ताकतें हालाँ कि दक्खिनी अफरीक़ा के व्योहार को सही नहीं मानती मगर उसे सीधी राह पर आने के लिये मजबूर नहीं करती. ताकि उनको रूस के मुक़ाबले मे उसकी ताईद मिलती रहे.

कशमीर की लड़ाई

कशमीर की लड़ाई के अभी तक जारी रहने का यही कारन है. इस रियासत मे हिन्दुस्तान. पाकिस्तान, रूस और अफ़ग़ानिस्तान की सरहदे मिलती हैं और यहाँ से बीच पूरब के देशो पर असर डाला जा सकता है. और इसीलिये बड़ी ताकतो के दोनो गिरोह इसके बन्दोबस्त से दिलचस्पी ले रहे है दोनो को यह डर है कि शान्ति हो जाने पर कहीं यह रियासत उसके विरोधी गिरोह के असर मे न चली जाय हिन्दुस्तान ने जनवरी १९४८ मे यू० एन० ओ० से इसकी शिकायत की थी कि पाकिस्तान लड़ाई मे हिस्सा ले रहा है. पाकिस्तान ने इससे इन्कार किया था और यू० एन० ओ० ने शिकायत की जाँच करने और दोनो देशो मे समझौता कराने के लिये पिछली जुलाई मे अपना एक कमीशन कशमीर भेजा था. इसके सामने पाकिस्तान ने यह बात मान ली कि वह लड़ाई में

کارن کچھ تو یہ ہے کہ یو۔ این۔ او۔ میں گورے چمڑے والے گنتی میں زیادہ ہیں اور دکھنی افریقہ میں بھی ایسے ہی لوگوں کا راج ہے اور اس کی شکایت کرنے والے 'کالے' لوگ ہیں۔ مگر اس سے بڑا کارن یہ ہے کہ یو۔ این۔ او۔ کی بڑی بڑی طاقتیں اپنی تناتنی کے کارن ادھر ادھر ادھک دھیان نہیں دے پاتیں اور جب دھیان دیتی بھی ہیں تو بے لاگ نہیں رہتیں۔ اسی لئے پچھمی طاقتیں حالانکہ دکھنی افریقہ کے بیوہار کو صحیح نہیں مانتیں مگر اسے سیدھی راہ پر آنے کے لئے مجبور نہیں کرتیں۔ تاکہ اُن کو روس کے مقابلے میں اس کی تائید ملتی رہے۔

کشمیر کی لڑائی

کشمیر کی لڑائی کے ابھی تک جاری رہنے کا یہی کارن ہے۔ اس ریاست میں ہندستان، پاکستان، روس اور افغانستان کی سرحدیں ملتی ہیں اور یہاں سے بیچ پورب کے دیشوں پر اثر ڈالا جا سکتا ہے۔ اور اسی لئے بڑی طاقتوں کے دونوں گروہ اس کے بندوبست سے دلچسپی لے رہے ہیں۔ دونوں کو یہ ڈر ہے کہ شانتی ہو جانے پر کہیں یہ ریاست اُس کے وِرودھی گروہ کے اثر میں نہ چلی جائے۔ ہندستان نے جنوری ۱۹۴۸ میں یو۔ این۔ او۔ سے اس کی شکایت کی تھی کہ پاکستان لڑائی میں حصہ لے رہا ہے۔ پاکستان نے اس سے انکار کیا تھا اور یو۔ این۔ او۔ نے شکایت کی جانچ کرنے اور دونوں دیشوں میں سمجھوتہ کرانے کے لئے پچھلی جولائی میں اپنا ایک کمیشن کشمیر بھیجا تھا۔ اس کے سامنے پاکستان نے یہ بات مان لی کہ وہ لڑائی میں

हिस्सा ले रहा है. मगर कमीशन ने समझौते के लिये जो प्रस्ताव रक्खे उनको पाकिस्तान ने नहीं माना. यह बात कमीशन ने अपनी रिपोर्ट मे बता दी है लेकिन वह लड़ाई बन्द कराने की कोई सूरत नही बता सका. ऐसी सूरत वह बताता तो तब जब उसके पास अपना फ़ैसला मनवाने के लिये कोई बल होता या जब बड़ी ताक़ते बेग़रज़ी के साथ इस झगड़े को चुकाना चाहतीं. इन ताक़तो और ख़ास कर पच्छिमी ताक़तो को यू० एन ओ० का साख की इतनी चिन्ता नही है जितनी कि अपने मतलब की. वह पाकिस्तान में पैसा लगाना चाहती है और इसलिये उसे नाराज़ नही करना चाहतीं. यही मतलब उनका हिन्दुस्तान से भी है लेकिन कुछ तो इसलिये कि वह बहुत बड़ा देश है और उसके पास थोड़ा बहुत पैसा भी है, और कुछ इसलिये कि वह साम्राज के ख़िलाफ़ लड़ता रहा है. उन ताक़तो की तरफ ज्यादा नही झुक सकता. फिर भी यह ताक़ते हिन्दुस्तान को नाराज़ और इन्साफ का दिन दहाड़े ख़ून करते डरती हैं कि कहीं और अधिक बदनाम न हो जायँ और हिन्दुस्तान, जो अभी तक बेलाग है, रूस के साथ न मिल जाय. जो अदालत या पंचायत दावा करने वाले और जिस पर दावा हो, दोनों को ख़ुश रखना चाहे वह कोई साफ फ़ैसला नही कर सकती और इसीलिये कश्मीर का झगड़ा यू० एन० ओ० मे तय होता नही मालूम होता. हिन्दुस्तान को वहाँ जाने से मुमकिन है एक फ़ायदा यह हुआ हो कि उसने अपनी अमन पसन्दी साबित कर दी, हालाँकि बड़ी ताकतो की निगाह मे इस चीज की कोई ---- है एक और अच्छी बात शायद यह हो गई कि लड़ाई

حصہ لے رہا ہے. مگر کمیشن نے سمجھوتے کے لئے جو پرستاو رکھے ان کو پاکستان نے نہیں مانا. یہ بات کمیشن نے اپنی رپورٹ میں بتا دی ہے لیکن وہ لڑائی بند کرانے کی کوئی صورت نہیں بتا سکا. ایسی صورت وہ بتاتا تو تب جب اس کے پاس اپنا فیصلہ منوانے کے لئے کوئی بل ہوتا یا جب بڑی طاقتیں بے غرضی کے ساتھ اس جھگڑے کو چکانا چاہتیں. ان طاقتوں اور خاص کر پچھمی طاقتوں کو یو. این. او. کی ساکھ کی اتنی چنتا نہیں ہے جتنی کہ اپنے مطلب کی. وہ پاکستان میں پیسہ لگانا چاہتی ہیں اور اس لئے اسے ناراض نہیں کرنا چاہتیں. یہی مطلب ان کا ہندستان سے بھی ہے لیکن کچھ تو اس لئے کہ وہ بہت بڑا دیش ہے اور اس کے پاس تھوڑا بہت پیسہ بھی ہے، اور کچھ اس لئے کہ وہ سامراج کے خلاف لڑتا رہا ہے، ان طاقتوں کی طرف زیادہ نہیں جھک سکتا. پھر بھی یہ طاقتیں ہندستان کو ناراض اور انصاف کا دن دہاڑے خون کرتے ڈرتی ہیں کہ کہیں اور ادھک بدنام نہ ہو جائیں اور ہندستان، جو ابھی تک بے لاگ ہے، روس کے ساتھ نہ مل جائے. جو عدالت یا پنچائت دعوا کرنے والے اور جس پر دعوا ہو، دونوں کو خوش رکھنا چاہے وہ کوئی صاف فیصلہ نہیں کر سکتی اور اسی لئے کشمیر کا جھگڑا یو. این. او. میں طے ہوتا نہیں معلوم ہوتا. ہندستان کو وہاں جانے سے ممکن ہے ایک فائدہ یہ ہوا ہو کہ اس نے اپنی امن پسندی ثابت کر دی، حالانکہ بڑی طاقتوں کی نگاہ میں اس چیز کی کوئی قدر نہیں ہے. ایک اور اچھی بات شاید یہ ہو گئی کہ لڑائی

कशमीर से बाहर नहीं फैलने पाई. लेकिन इसमे यू० एन० ओ० की उतनी तारीफ नहीं जितनी हिन्दुस्तान की ईमानदारी, रवादारी (सहिष्णुता) और बर्दाश्त की है. इन फायदों के मुकाबले मे नुकसान यह हुआ है कि यह मामला अंतर्राष्ट्रीय तनातनी मे फस कर पहले से भी अधिक उलझ गया है. और पाकिस्तान को अपने जले दिल के फफोले फोड़ने के लिये एक बड़ा प्लेट फार्म मिल गया है.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान

कशमीर पर कबायलियों और पाकिस्तानियों के धावे के समय हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को एक दूसरे पर जो गुस्सा और शक था, उसे देखते हुए यू० एन० ओ० मे जाने के सिवा दूसरी सूरत सिर्फ लड़ाई की थी. इस तरह देखा जाय तो हिन्दुस्तान का जाना ठीक ही हुआ. लेकिन अब हालत उतनी खराब नहीं है. दोनों देशों मे ब्योपार के कई समझौते हो चुके है और दोनों के नेता बहुत बार मिल कर मिली जुली समस्याओं पर बात चीत कर चुके है. और ६ दिसम्बर से नई दिल्ली मे जो कानफ्रेन्स शुरू हुई है उसमे दोनो तरफ के कई एक वज़ीर और बहुत से दूसरे प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं. इस कानफ्रेन्स के एजन्डा मे कशमीर का मसला नहीं है. लेकिन अगर बंटवारे से पैदा होने वाले सवालों, लेन देन के मसलों, शरणार्थियों की जायदाद सरहद की झड़पों और पूरबी बङ्गाल मे हिन्दुओं की परेशानी और उनकी भगदड़ के बारे मे समझौते हो गये और दूसरे मामलों मे भी कुछ समझौते और सफाई हो गई तो दोनों का भेदभाव पहले से बहुत

کشمیر سے باہر نہیں پھیلنے پائی۔ لیکن اس میں یو۔ این۔ او۔ کی اتنی تعریف نہیں جتنی ہندستان کی ایمانداری، رواداری (سہشنتا) اور برداشت کی ہے۔ ان فائدوں کے مقابلے میں نقصان یہ ہوا ہے کہ یہ معاملہ انترراشٹریہ تناتنی میں پھنسکر پہلے سے بھی ادھک الجھ گیا ہے۔ اور پاکستان کو اپنے جلے دل کے پھپھولے پھوڑنے کے لئے ایک بڑا پلیٹ فارم مل گیا ہے۔

ہندستان اور پاکستان

کشمیر پر قبائلیوں اور پاکستانیوں کے دھاوے کے سمے ہندستان اور پاکستان کو ایک دوسرے پر جو غصہ اور شک تھا، اسے دیکھتے ہوئے یو۔ این۔ او۔ میں جانے کے سوا دوسری صورت صرف لڑائی کی تھی۔ اس طرح دیکھا جائے تو ہندستان کا جانا ٹھیک ہی ہوا۔ لیکن اب حالت اتنی خراب نہیں ہے۔ دونوں دیشوں میں بیوپار کے کئی سمجھوتے ہو چکے ہیں اور دونوں کے نیتا بہت بار مل کر ملی جلی سمسیاؤں پر بات چیت کر چکے ہیں۔ اور ۶ دسمبر سے نئی دلی میں جو کانفرنس شروع ہوئی ہے اس میں دونوں طرف کے کئی ایک وزیر اور بہت سے دوسرے پرتینیدھی حصہ لے رہے ہیں۔ اس کانفرنس کے ایجنڈا میں کشمیر کا مسئلہ نہیں ہے۔ لیکن اگر بٹوارے سے پیدا ہونے والے سوالوں، لین دین کے مسئلوں، شرنارتھیوں کی جائداد، سرحد کی جھڑپوں اور پوربی بنگال میں ہندوؤں کی پریشانی اور ان کی بھگدڑ کے بارے میں سمجھوتے ہو گئے اور دوسرے معاملوں میں بھی کچھ سمجھوتے اور صفائی ہو گئی تو دونوں کا بھید بھاؤ پہلے سے بہت

कम हो जायगा. और फिर शायद दोनों तरफ के प्रतिनिधि कशमीर के पेचीदा मसले पर भी ठंडे दिल से बात चीत कर सकें, और इस बात चीत में इस चीज़ पर ध्यान दे सकें कि लड़ाई में उनका कितना रुपया खर्च हो रहा है, दोनों तरफ़ की जनता के कितने काम अधूरे या बिलकुल ही अछूते पड़े हैं, दोनों सरकारो के लिये आपस में मेल जोल रखना कितना जरूरी हैं, दोनों के कितने घरेलू मसले ऐसे हैं जो इस मेल जोल के बिना तै नहीं हो सकते और मेल जोल न होने से उनको कितना नुक़सान और दूसरों को कितना फ़ायदा पहुँच रहा हैं.

इस लेख का मक़सद किसी देश या किसी फिर्के को दोष देना नहीं है लेकिन यह एक खुली हुई बात है कि पूरबी पाकिस्तान से हिन्दुओं की भगदड़ बिना किसी कारन के नहीं हो सकती और यू० एन० ओ० में पाकिस्तानी प्रतिनिधि हिन्दुस्तान पर जैसे ओछे हमले करते रहते हैं (जिनकी एक मिसाल हैदराबाद की बहस को फिर से शुरू कराने की कोशिश है) उनसे दोनो देशों के मेल जोल में मदद नहीं मिल सकती. मैं यह तो नहीं कहूँगा कि पाकिस्तान किसी दूसरे के इशारे पर नाच रहा है लेकिन यह जरूर कहूँगा कि हिन्दुस्तान को बदनाम और परेशान करने की कोशिश में वह अपने अच्छे अच्छे लीडरों का क़ीमती समय, जो जनता की आर्थिक और सामाजिक हालत सुधारने में ज्यादा अच्छी तरह खर्च हो सकता था, बेकार गँवा रहा है. साथ ही साथ इस बात को भी ध्यान में रखने की जरूरत है कि पाकिस्तान और वहाँ के मुसलमानों को सीधी

کم ہو جائے گا۔ اور پھر شاید دونوں طرف کے پرتیندھی کشمیر کے پیچیدہ مسئلے پر بھی ٹھنڈے دل سے بات چیت کر سکیں، اور اس بات چیت میں اس چیز پر دھیان دے سکیں کہ لڑائی میں ان کا کتنا روپیہ خرچ ہو رہا ہے، دونوں طرف کی جنتا کے کتنے کام ادھورے یا بالکل ہی اچھوتے پڑے ہیں، دونوں سرکاروں کے لئے آپس میں میل جول رکھنا کتنا ضروری ہے، دونوں کے کتنے گھریلو مسئلے ایسے ہیں جو اس میل جول کے بنا طے نہیں ہو سکتے اور میل جول نہ ہونے سے ان کو کتنا نقصان اور دوسروں کو کتنا فائدہ پہنچ رہا ہے۔

اس لیکھ کا مقصد کسی دیش یا کسی فرقہ کو دوش دینا نہیں ہے لیکن یہ ایک کھلی ہوئی بات ہے کہ پوربی پاکستان سے ہندوؤں کی بھگدڑ بنا کسی کارن کے نہیں ہو سکتی اور یو۔ این۔ او۔ میں پاکستانی پرتیندھی ہندستان پر جیسے اچھے حملے کرتے رہتے ہیں (جنکی ایک مثال حیدرآباد کی بحث کو پھر سے شروع کرانے کی کوشش ہے) ان سے دونوں دیشوں کے میل جول میں مدد نہیں مل سکتی۔ میں یہ تو نہیں کہوں گا کہ پاکستان کسی دوسرے کے اشارے پر ناچ رہا ہے لیکن یہ ضرور کہوں گا کہ ہندستان کو بدنام اور پریشان کرنے کی کوشش میں وہ اپنے اچھے اچھے لیڈروں کا قیمتی سمے، جو جنتا کی آرتھک اور سماجک حالت سدھارنے میں زیادہ اچھی طرح خرچ ہو سکتا تھا بیکار گنوا رہا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ اس بات کو بھی دھیان میں رکھنے کی ضرورت ہے کہ پاکستان اور وہاں کے مسلمانوں کو سیدھی راہ پر لانے کی ترکیب صرف یہ ہے کہ اس کی دھمکی کے جواب

में हिम्मत के साथ दोस्ती भी दिखाई जाय और यहाँ के मुसलमानों के साथ कोई ज्यादती न की जाय. ऐसा करना पराए शगून में अपनी नाक कटवाना और पाकिस्तान के इलजामों को दुनिया की नजरों में सच्चा कर दिखाना होगा और ऐसा न करना हिन्दुस्तान की साख को बढ़ाना और उसकी शान में चार चाँद लगाना होगा. यह चाँद प्रोपेगैन्डा की बदली से थोड़े दिनों तक चाहे छिपा रहे लेकिन यह बदली सदा यो ही नहीं बनी रह सकती और वैसे भी चाँद की किरनें बदली से छन छन कर बराबर आती रहेंगी.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् '४७ मे पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान मे उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड़ रहे है उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर मे, आजकल की मुसीबतों का हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने मे इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटो मे मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

میں ہمت کے ساتھ دوستی بھی دکھائی جائے اور یہاں کے مسلمانوں کے ساتھ کوئی زیادتی نہ کی جائے۔ ایسا کرنا پرائے شگن میں اپنی ناک کٹوانا اور پاکستان کے الزاموں کو دنیا کی نظروں میں سچا کر دکھانا ہوگا اور ایسا نہ کرنا ہندستان کی ساکھ کو بڑھانا اور اس کی شان میں چار چاند لگانا ہوگا۔ یہ چاند پروپیگنڈہ کی بدلی سے تھوڑے دنوں تک چاہے چھپا رہے لیکن یہ بدلی سدا یونہی نہیں بنی رہ سکتی اور ویسے بھی چاند کی کرنیں بدلی سے چھن چھن کر برابر آتی رہیں گی۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک :- پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھیانک بربادی اور آپسی مار کاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں، ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔
قیمت چار آنے۔

— منیجر 'نیا ہند'
۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد۔

हमारी राय

सत्याग्रह बनाम राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ

मुसलमान घराने मे पैदा हो कर अपने आप को मुसलमान कहने लगना जैसे बेमानी बात है वैसे ही बिना तलवार के किसी से भिड़ कर अपने आप को सत्याग्रही कह बैठना बेमानी बात है इसलाम एक धर्म है सत्याग्रह भी एक धर्म है. धर्म का सम्बन्ध दिल और दिमाग से होता है. दिल और दिमाग की एक खास हालत हो जाने पर ही एक आदमी सत्याग्रही हो जाता है. सत्याग्रह के लिए जिस दिली और दिमागी हालत की जरूरत है वह राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ को न कभी हासिल हुई और न इस वक़्त हासिल है राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ जो लड़ाई इस समय सरकार से लड़ रहा है वह सत्याग्रह नहीं है. सत्याग्रह की अपनी तकनीक है. वह तकनीक हो सकता है राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ जानता हो पर वह न उसे मानता है और न उस पर अमल करना ठीक समझता है. सत्याग्रह इन दिनों लोकप्रिय शब्द बन गया है. इसलिए बड़े से बड़ा दुराग्रही अपने आप को सत्याग्रही कह कर जनता की हमदर्दी को अपनी तरफ खींचने की कोशिश करता है. यही तरीक़ा राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ ने अपनाया है. सत्याग्रह करने का वही हक़दार है जो पहले अपने सारे ताश सरकार के सामने खोल कर रख दे. और हर मुनासिब तरीके से जो वह चाहता है उसे हासिल करने की कोशिश

ہماری رائے

ستیاگرہ بنام راشٹریہ سیوم سیوک سنگھ

مسلمان گھرانے میں پیدا ہو کر اپنے آپ کو مسلمان کہنے لگنا جیسے بے معنی بات ہے ویسے ہی بنا تلوار کے کسی سے بھڑ کر اپنے آپ کو ستیا گرہی کہہ بیٹھنا بے معنی بات ہے۔ اسلام ایک دھرم ہے ستیاگرہ بھی ایک دھرم ہے۔ دھرم کا سمبندھ دل اور دماغ سے ہوتا ہے۔ دل اور دماغ کی ایک خاص حالت ہو جانے پر ہی ایک آدمی ستیاگرہی ہو جاتا ہے۔ ستیا گرہ کے لئے جس دلی اور دماغی حالت کی ضرورت ہے وہ راشٹریہ سیوم سیوک سنگھ کو نہ کبھی حاصل ہوئی اور نہ اس وقت حاصل ہے۔ راشٹریہ سیوم سیوک سنگھ جو لڑائی اس سمے سرکار سے لڑ رہا ہے وہ ستیاگرہ نہیں ہے۔ ستیاگرہ کی اپنی تکنیک ہے۔ وہ تکنیک ہو سکتا ہے راشٹریہ سیوم سیوک سنگھ جانتا ہو پر وہ نہ اُسے مانتا ہے اور نہ اس پر عمل کرنا ٹھیک سمجھتا ہے ستیا گرہ ان دنوں لوک پریہ شبد بن گیا ہے۔ اس لئے بڑے سے بڑا دُراگرہی اپنے آپ کو ستیاگرہی کہہ کر جنتا کی ہمدردی کو اپنی طرف کھینچنے کی کوشش کرتا ہے۔ یہی طریقہ راشٹریہ سیوم سیوک سنگھ نے اپنایا ہے۔ ستیہ گرہ کرنے کا وہی حقدار ہے جو پہلے اپنے سارے تاش سرکار کے سامنے کھول کر رکھ دے۔ اور ہر مناسب طریقے سے جو وہ چاہتا ہے اُسے حاصل کرنے کی کوشش

करे. जब उस के सब मुनासिब तरीके नाकाम साबित हों तब और तब ही वह सत्याग्रह का अधिकारी हो जाता है. पर ऐसी कोई बात राष्ट्रिय स्वयं सेवक ने नहीं की. पत्रों के जरिये से तो हमें यह पता चलता है कि उनकी सरकार ने उनको हर तरह मनाने की कोशिश की पर वह मनने के लिए तय्यार न हुए. सरकार की बात मान कर अगर वह अपनी मनचाही चीज न पा सकते तब वह बेशक सत्या-.ग्रह के अधिकारी हो जाते पर आज का उनका आंदोलन तो किसी तरह सत्याग्रह नहीं कहा जा सकता उनके आंदोलन को सत्याग्रह कहना जनता को धोके मे डालना है. एक बार मशहूर सेनापति बापट ने सत्याग्रह को अपनाया था पर उनकी तकनीक वह नहीं थी जो उन दिनों जनता के जी पर चढ़ी हुई थी. इसलिए उन्होंने अपने सत्याग्रह का नाम शुद्ध या विशुद्ध सत्याग्रह रखा था और उसकी परिभाषा भी खोल कर बता दी थी असल मे वह सच्चे बहादुर है और तभी तो लोग उन्हे सेनापति कहते है. सत्याग्रह शब्द पर, हम यह मानते है, किसी का इजारा नहीं है. कोई भी उसे अपना सकता है. यहाँ तक कि कोई भी अपने घोर दुराग्रह को सत्याग्रह के नाम से पुकार सकता है पर ऐसी हालत मे उसे चाहिये कि वह अपने सत्याग्रह की व्याख्या आम आदमियों के सामने रख दे. लोगों को धोके में रखने से आखिर मे वही नुकसान मे रहेगा.

हम यह बात भी साफ कर देना चाहते है कि सन् २१ के सत्या-ग्रह को छोड़ कर कांग्रेस के सत्याग्रह भी पूरे मानों मे सत्याग्रह नहीं थे. पर उन सत्याग्रहों का नेता सच्चाई की मूरती होने की वजह से

کرے. جب اس کے سب مناسب طریقے ناکام ثابت ہوں تب اور تب ہی وہ ستیہ گرہ کا ادھیکاری ہو جاتا ہے. پر ایسی کوئی بات راشٹریہ سویم سیوک نے نہیں کی. پتروں کے ذریعے سے تو ہمیں یہ پتہ چلتا ہے کہ اُن کی سرکار نے اُن کو ہر طرح منانے کی کوشش کی پر وہ ماننے کے لئے تیار نہ ہوئے. سرکار کی بات مان کر اگر وہ اپنی من چاہی چیز نہ پا سکتے تب وہ بے شک ستیاگرہ کے ادھیکاری ہو جاتے پر آج کا اُن کا آندولن تو کسی طرح ستیاگرہ نہیں کہا جا سکتا. اُن کے آندولن کو ستیاگرہ کہنا جنتا کو دھوکے میں ڈالنا ہے. ایک بار مشہور سیناپتی باپٹ نے ستیاگرہ کو اپنایا تھا پر اُن کی ٹکنک وہ نہیں تھی جو اُن دنوں جنتا کے جی پر چڑھی ہوئی تھی. اس لئے انھوں نے اپنے ستیاگرہ کا نام شدھ یا وشدھ ستیاگرہ رکھا تھا اور اس کی پری بھاشا بھی کھول کر بتا دی تھی. اصل میں وہ سچے بہادر ہیں اور تبھی تو لوگ انھیں سیناپتی کہتے ہیں. ستیاگرہ شبد پر، ہم یہ مانتے ہیں، کسی کا اجارہ نہیں ہے، کوئی بھی اُسے اپنا سکتا ہے. یہاں تک کہ کوئی بھی اپنے گھور دُراگرہ کو ستیاگرہ کے نام سے پکار سکتا ہے پر ایسی حالت میں اُسے چاہیے کہ وہ اپنے ستیاگرہ کی ویاکھیا عام آدمیوں کے سامنے رکھ دے. لوگوں کو دھوکے میں رکھنے سے آخر میں وہی نقصان میں رہے گا.

ہم یہ بات بھی صاف کر دینا چاہتے ہیں کہ ۲۱ء کے ستیاگرہ کو چھوڑ کر کانگریس کے ستیاگرہ بھی پورے معنوں میں ستیاگرہ نہیں تھے. پر اُن ستیاگرہوں کا نیتا سچائی کی مورتی ہونے کی وجہ سے

सत्याग्रह की तकनीक मे पूरा उतरता था. और इस वास्ते वह सत्याग्रह पूरे मानों में सत्याग्रह थे. उन सात्याग्रहों में सिपाही से भूल हो सकती थी, सेना नायक से नहीं. सिपाही की भूल की रोकथाम थी और इसलिए वह सत्याग्रह थे. राष्ट्रिय स्वयं सेवक के सत्याग्रह में सेना नायक सचाई का क़ायल होने का दावा नहीं करता. गुप्त कारवाइयाँ करने से बचे रहने का वचन नहीं देता. फिर उस के सिपाही का क्या हाल होगा, इनका अंदाज़ा तो लगाया नहीं जा सकता. जो आदमी हथेली पर सिर लिए फिरता है उसका अपना कुछ विश्वास हो सकता है. वह उस विश्वास के लिए मरे, पर वह उस विश्वास को दुनिया के सामने साफ साफ रखे और अपने साथियों की तादाद बढ़ाए. पर जब वह सत्याग्रह के नाम से लोगों को धोका देता है तो हमारी राय में वह ख़ुद अपने को धोका देता है और अपने विश्वास और सिद्धान्त को कमज़ोर बनाता है. उस को दिक़्क़त में पड़ना ही पड़ेगा और नुक़सान उठाना ही होगा.

हम तो यहाँ तक कहने के लिए तय्यार हैं कि आज हिन्दुस्तान की कैबिनैट का कोई भी मैम्बर सत्याग्रह करने का हक़दार नहीं है. सत्याग्रह करने से पहले उसे हजारों की तनख़ाह का मोह छोड़ना पड़ेगा और भी कितनी ही तरह की तपस्या करनी पड़ेगी तब वह सत्याग्रह करने के योग्य हो सकेगा. क्योंकि सत्याग्रह, जैसा हम ऊपर बता आए हैं, दिली और दिमाग़ी हालत का नाम है. उस वैसी हालत हुए बिना सत्याग्रह हो ही नहीं सकता. देखने में सच्चाई की कसौटी पर हर तरह पूरा उतरने वाला सत्याग्रह भी दुराग्रह समझा जायगा अगर उसका करने वाला पूरा अहिंसावादी और सत्यवादी

ستیاگرہ کی تکنک میں پورا اترتا تھا۔ اور اس واسطے وہ ستیاگرہ پورے معنوں میں ستیاگرہ تھے۔ اُن ستیاگرہوں میں سپاہی سے بھول ہو سکتی تھی، سینہ نائک سے نہیں۔ سپاہی کی بھول کی روک تھام تھی اور اس لئے وہ ستیاگرہ تھے۔ راشٹریہ سویم سیوک کے ستیاگرہ میں سینہ نائک سچائی کا قائل ہونے کا دعوا نہیں کرتا۔ گپت کارروائیاں کرنے سے بچے رہنے کا وچن نہیں دیتا۔ پھر اُس کے سپاہی کا کیا حال ہوگا۔ اس کا اندازہ تو لگایا نہیں جا سکتا۔ جو آدمی ہتھیلی پر سر لئے پھرتا ہے اس کا اپنا کچھ وشواس ہو سکتا ہے۔ وہ اُس وشواس کے لئے مرے، پر وہ اُس وشواس کو دنیا کے سامنے صاف صاف رکھے اور اپنے ساتھیوں کی تعداد بڑھائے۔ پر جب وہ ستیاگرہ کے نام سے لوگوں کو دھوکا دیتا ہے تو ہماری رائے میں وہ خود اپنے کو دھوکا دیتا ہے اور اپنے وشواس اور سدّھانت کو کمزور بناتا ہے اس کو دقت میں پڑنا ہی پڑیگا اور نقصان اٹھانا ہی ہوگا۔

ہم تو یہاں تک کہنے کے لئے تیار ہیں کہ آج ہندستان کی کیبنٹ کا کوئی بھی ممبر ستیاگرہ کرنے کا حقدار نہیں ہے۔ ستیاگرہ کرنے سے پہلے اُسے ہزاروں کی تنخواہ کا موہ چھوڑنا پڑے گا اور بھی کتنی ہی طرح کی تپسیا کرنی پڑے گی تب وہ ستیاگرہ کرنے کے یوگیہ ہو سکے گا۔ کیوں کہ ستیاگرہ، جیسا ہم اوپر بتا آئے ہیں، دلی اور دماغی حالت کا نام ہے۔ جس ویسی حالت ہوئے بنا ستیاگرہ ہو ہی نہیں سکتا۔ دیکھنے میں سچائی کی کسوٹی پر ہر طرح پورا اُترنے والا ستیاگرہ بھی دُراگرہ سمجھا جائے گا اگر اس کا کرنے والا پورا اہنسا وادی اور ستیاوادی

नहीं है. ठीक इसी तरह से लोगों की नजर में जचने वाला दुराग्रह और कसौटी पर भी पूरा पूरा न उतरने वाला सत्याग्रह पक्का सत्याग्रह समझा जायेगा अगर उसका करने वाला परखा हुआ अहिंसावादी और सत्यवादी है.

हमें सिरफ़ इतना कहना है कि राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ का आन्दोलन सत्याग्रह नहीं है. फिर वह और चाहे कुछ हो.

भगवान दीन

११-१२-४८

सरकार से

लीग की तरह राष्ट्रिय स्वय सेवक संघ किसी वजह से ऐसी जगह पहुँच गया है जहां से उसे पीछे हटाना आसान काम नही रह गया. उस की कारवाइयाँ यूंही उड़ा देने की चीज नही. नफरत की बुनियाद पर खड़ी की हुई संस्थायें शुरू मे बेहद कमजोर होती हैं पर कुछ ही दिनो मे वह बहुत जोरदार बन जाती हैं. असल मे होता यह है कि नफरत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है और वह होती है संस्था की जड़. उस सस्था के अंकुर रूप मैम्बर चाहे दस पाच ही हों पर लम्बी जड़ होने की वजह से वह मरने पर भी झट पैदा हो जाती है. लीग भी नफरत की जड़ पर उगी थी. तभी तो इतनी बड़ी टक्कर झेल गई और जीती बच रही. मुसलमान टोटे मे रहे हों. वह कब टोटे मे रही. सन् २० से लेकर सन् ४७ तक की कांग्रेस की जड़ में भी नफरत थी. पर इतना अच्छा था कि वह नफरत इतनी ज़ियादा अंगरेज़ कौम से नही थी जितनी ज़ियादा उस कौम के

نہیں ہے۔ ٹھیک اسی طرح سے لوگوں کی نظر میں جچنے والا دُراگرہ اور کسوٹی پر بھی پورا پورا نہ اترنے والا ستیاگرہ پکا ستیاگرہ سمجھا جائے گا اگر اس کا کرنے والا پرکھا ہوا اہنسا وادی اور ستیہ وادی ہے۔

ہمیں صرف اتنا کہنا ہے کہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا آندولن ستیاگرہ نہیں ہے۔ پھر وہ اور چاہے کچھ ہو۔

بھگوان دین

۱۱.۱۲.۴۸

سرکار سے

لیگ کی طرح راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کسی وجہ سے ایسی جگہ پہنچ گیا ہے جہاں سے اُسے پیچھے ہٹانا آسان کام نہیں رہ گیا۔ اس کی کارروائیاں یونہی اُڑا دینے کی چیز نہیں۔ نفرت کی بنیاد پر کھڑی کی ہوئی سنستھائیں شروع میں بیحد کمزور ہوتی ہیں پر کچھ ہی دنوں میں وہ بہت زوردار بن جاتی ہیں۔ اصل میں ہوتا یہ ہے کہ نفرت دن دونی رات چوگنی بڑھتی ہے اور وہ ہوتی ہے سنستھا کی جڑ۔ اس سنستھا کے انکر روپ ممبر چاہے دس پانچ ہی ہوں پر لمبی جڑ ہونے کی وجہ سے وہ مرنے پر بھی جھٹ پیدا ہو جاتی ہے۔ لیگ بھی نفرت کی جڑ پر اُگی تھی۔ تبھی تو اتنی بڑی ٹکر جھیل گئی اور جیتی بچ رہی۔ مسلمان ٹوٹے میں رہے ہوں، وہ کب ٹوٹے میں رہی۔ سن ۲۰ سے لیکر سن ۴۷ تک کی کانگریس کی جڑ میں بھی نفرت تھی۔ پر اتنا اچھا تھا کہ وہ نفرت اتنی زیادہ انگریز قوم سے نہیں تھی جتنی زیادہ اس قوم کے

۱۲

कारखानों की बनी हुई चीजों से. इस की वजह यह थी कि उन दिनों की कांगरेस की बाग डोर जिस देवता पुरुष के हाथ में थी वह इन्सानी नफरत से कोसों दूर था. पर वह यह खूब जानता था कि राग का पेड़ द्वेष की ही जड़ पर खड़ा रह सकता है. मुहब्बत के फूल की डाली नफरत की जड़ पर ही जमती है. तभी तो उसने जान बूझ कर विलायती कपड़े की होली कराने में लोगों को लगा दिया था. लोगों के नफरत के घोड़े की लगाम उसने एक दम ढीली छोड़ दी थी और वह बगटुट दौड़ा चला जा रहा था. वह फुलवाड़ी को रौंदता था पर एक बच्चे को भी खुरसट नहीं आने देता था. हिन्दुस्तान की जनता अपनी सारी नफरत विदेशी कपड़ा जलाने में लगा रही थी. चलते आदमी का टोप उतार कर जला देना मामूली खेल था. रास्ते चलते के कोट पतलून जला दिए जाते थे और एक लंगोटा बांधने के लिए दे दिया जाता था मतलब यह कि नफरत चीजों से थी चीज़ के मालिक से नहीं. नफरत ऐबों से थी ऐबियों से नहीं.

मतलब यह कि नफरत थी. तभी तो देश प्रेम की फुलवाड़ी खिली. वतन की मुहब्बत का पेड़ बढ़ा. इन्सानी मुहब्बत का रूख उगा. फिरक़ेवारी की दीवार ढाई गई और कांगरेस हिन्दुस्तान भर की एक जमात बन बैठी. नफरत में जो काम किए गए वह बहुत से समझदार लोगों की नजर में बेवक़ूफ़ी से भरे और टोटे के थे. यह बात कांगरेस के सरदार उस देवता पुरुष को भी मालूम थी. पर वह करता क्या. उसे गुलार के फूलों की खातिर कांटों की झाड़ी पसंद करना ही थी. इन्सानी प्राणों की जगह उसे टोप, कोट,

(५७०)

کارخانوں کی بنی ہوئی چیزوں سے۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ اُن دنوں کی کانگریس کی باگ ڈور جس دیوتا پُرش کے ہاتھ میں تھی وہ انسانی نفرت سے کوسوں دور تھا۔ پر وہ یہ خوب جانتا تھا کہ راگ کا پیڑ دویش کی ہی جڑ پر کھڑا رہ سکتا ہے۔ محبت کے پھول کی ڈالی نفرت کی جڑ پر ہی جمتی ہے۔ تبھی تو اس نے جان بوجھ کر ولائتی کپڑے کی ہولی کرانے میں لوگوں کو لگا دیا تھا۔ لوگوں کے نفرت کے گھوڑے کی لگام اس نے ایک دم ڈھیلی چھوڑ دی تھی اور وہ بگ ٹٹ دوڑا چلا جا رہا تھا۔ وہ پھلواڑی کو روندتا تھا پر ایک بچے کو بھی خرسٹ نہیں آنے دیتا تھا۔ ہندستان کی جنتا اپنی ساری نفرت بدیشی کپڑا جلانے میں لگا رہی تھی۔ چلتے آدمی کا ٹوپ اُتار کر جلا دینا معمولی کھیل تھا۔ راستہ چلتے کے کوٹ پتلون جلا دئے جاتے تھے اور ایک لنگوٹا باندھنے کے لئے دے دیا جاتا تھا۔ مطلب یہ کہ نفرت چیزوں سے تھی چیز کے مالک سے نہیں۔ نفرت عیبوں سے تھی عیبیوں سے نہیں۔

مطلب یہ کہ نفرت تھی۔ تبھی تو دیش پریم کی پھلواڑی کھلی۔ وطن کی محبت کا پیڑ بڑھا۔ انسانی محبت کا روکھ اُگا۔ فرقہ واری کی دیوار ڈھائی گئی اور کانگریس ہندستان بھر کی ایک جماعت بن بیٹھی۔ نفرت میں جو کام کئے گئے وہ بہت سے سمجھدار لوگوں کی نظر میں بیوقوفی سے بھرے اور ٹوٹے کے تھے۔ یہ بات کانگریس کے سردار اس دیوتا پُرش کو بھی معلوم تھی۔ پر وہ کرتا کیا۔ اُسے گولار کے پھولوں کی خاطر کانٹوں کی جھاڑی پسند کرنا ہی تھی۔ انسانی پرانوں کی جگہ اُسے ٹوپ، کوٹ،

पतलून और बड़े बड़े थानो के प्रान लेने ही थे. और कोई चारा ही न था.

कांगरेस की बात हमने ऊपर इसलिए कही है कि कोई नफरत जिन्दा नहीं रह सकती या दूर दूर तक नहीं फैल सकती जब तक कि उसका दूसरा पहलू, मुहब्बत, उसी हिसाब से न फैल रहा हो. यही हाल राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ का है. वह मुसलमानों से बेहद नफरत करती है पर हिन्दुओं से बेहद प्रेम भी करती है. तभी तो बहुत से हिन्दू उस पर आफत आने पर तड़प उठते हैं. और जिनको उसने हाल के दंगों मे सीधे मदद की है वह तो उबल उठते है और जान जोखम मे डालने के लिए तय्यार हो जाते है. जैसे दरखत की जड़ देखने मे किसी काम की नहीं होती पर प्यारी लगती है वैसे ही राष्ट्रिय स्वयंसेवक की मुसलमानो से नफरत वाली जड़ राष्ट्र के लिये बेहद घातक होने पर भी आम जनता को नजरो मे अच्छी ही मालूम देती है और वह उसको हर तरह बचाये रखने की कोशिश भी करती है.

अब तक हमने वह बताया जो है. अब हम यह बताना चाहते हैं कि क्या किया जाए जो यह हिन्दुस्तानी राष्ट्रियता की खेती को खा जा जाने वाली घास खेत में उगी भी रहे और खेती को नुकसान पहुँचाने भी न पाए. अब कांगरेस को चाहिये कि वह हिन्दुस्तानियो की नफरत का प्रयोग अंगरेजो और अंगरेजीयत को दूर करने मे लगा दे. और हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानीयत का प्रेम जगादे. और सरकार उन ओहदेदारो की तनखाहें पाँच सौ और हजार के बीच मे कर दे, जिन ओहदेदारो को आम जनता चुनती है. जैसे वजीर, गवरनर वगैरा.

پتلون اور بڑے بڑے تھانوں کے پران لینے ہی تھے۔ اور کوئی چارہ ہی نہ تھا۔

کانگریس کی بات ہم نے اُوپر اس لئے کہی ہے کہ کوئی نفرت زندہ نہیں رہ سکتی یا دُور دُور تک نہیں پھیل سکتی جب تک کہ اس کا دوسرا پہلو محبت، اسی حساب سے نہ پھیل رہا ہو۔ یہی حال راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا ہے۔ وہ مسلمانوں سے بیحد نفرت کرتی ہے پر ہندوؤں سے بیحد پریم بھی کرتی ہے۔ تبھی تو بہت سے ہندو اس پر آفت آنے پر تڑپ اٹھتے ہیں۔ اور جن کو اس نے حال کے دنگوں میں سیدھے مدد کی ہے وہ تو اُبل اُٹھتے ہیں اور جان جوکھم میں ڈالنے کے لئے تیار ہو جاتے ہیں۔ جیسے درخت کی جڑ دیکھنے میں کسی کام کی نہیں ہوتی پر پیاری لگتی ہے ویسے ہی راشٹریہ سویم سیوک کی مسلمانوں سے نفرت والی جڑ راشٹر کے لئے بےحد گھاتک ہونے پر بھی عام جنتا کی نظروں میں اچھی ہی معلوم دیتی ہے اور وہ اسکو ہر طرح بچائے رکھنے کی کوشش بھی کرتی ہے۔

اب تک ہم نے وہ بتایا جو ہے۔ اب ہم یہ بتانا چاہتے ہیں کہ کیا کیا جائے جو یہ ہندستانی راشٹریتا کی کھیتی کو کھا جانے والی گھاس کھیت میں اُگی بھی رہے اور کھیتی کو نقصان پہنچانے بھی نہ پائے۔ اب کانگریس کو چاہیئے کہ وہ ہندستانیوں کی نفرت کا پریوگ انگریزی اور انگریزیت کو دُور کرنے میں لگا دے۔ ہندستانی اور ہندستانیت کا پریم جگا دے۔ اور سرکار ان عہدے داروں کی تنخواہیں پانچ سو اور ہزار کے بیچ میں کر دے، جن عہدے داروں کو عام جنتا چنتی ہے۔ جیسے وزیر، گورنر وغیرہ۔

हमारा ख़याल है कि यह छोटा सा नुस्ख़ा बहुत असरदार साबित होगा और वह घास जिसे उखाड़ फेंकने की बात सोची जा रही है आपी आप पास खड़े पौदों की मददगार बन जायगी और धीरे धीरे उस की जड़ कांगरेस की जड़ से रस लेने लगेगी और उसी के अनुरूप हो जायगी.

भगवान दीन

११. १२. ४८.

खाना कपड़ा और कंट्रोल

बीड़ी जब मुंह को लग जाती है और चाय की जब आदत हो जाती है तब मन सचाई के साथ यह सोचने लगता है कि बिना बीड़ी और चाय ज़िंदा भी कैसे रहा जा सकता है. यही हाल कंट्रोल का हो गया है सरकार तो सरकार जनता भी यही समझती है कि कंट्रोल के बिना सब भूक रहेंगे और जाड़ों में नंगे मर जायेंगे. पर न जाने क्यों हमारा जी यह नहीं मानता. हम तो कंट्रोल को नशा समझते रहे. समझ रहे हैं, और समझते रहेंगे.

सन् १८९९ में जोरों का अकाल पड़ा था. गेहूँ एक रूपये के आठ सेर मिलते थे. तिस पर भी देश तड़प गया था. जगह जगह डाके पड़ने शुरू हो गए थे. मारवाड़ का तो एक हिस्सा पानी न मिलने की वजह से भाग निकला था. पर उन दिनों कंट्रोल की किसी को न सूझी. लोगों का दुख दूर करने की बात धर्मात्मा पैसे वालों के दिल मे जरूर आई और उन्होने फौरन अपने अपने शहरो मे ऐसी दुकाने खोल दी जिन दुकानो से गेहूँ काफी सस्ता

ہمارا خیال ہے کہ یہ چھوٹا سا نسخہ بہت اثردار ثابت ہوگا اور وہ گھاس جسے اُکھاڑ پھینکنے کی بات سوچی جا رہی ہے آپی آپ پاس کھڑے پودوں کی مددگار بن جائے گی اور دھیرے دھیرے اُس کی جڑ کانگریس کی جڑ سے رس لینے لگے گی اور اُسی کے انوروپ ہو جائیگی۔

بھگوان دین

۱۱.۱۲.۴۸

کھانا کپڑا اور کنٹرول

بیڑی جب مُنہ کو لگ جاتی ہے اور چائے کی جب عادت ہو جاتی ہے۔ تب مَن سچائی کے ساتھ یہ سوچنے لگتا ہے کہ بنا بیڑی اور چائے زندہ بھی کیسے رہا جا سکتا ہے۔ یہی حال کنٹرول کا ہو گیا ہے۔ سرکار تو سرکار جنتا بھی یہی سمجھتی ہے کہ کنٹرول کے بنا سب بھوکے رہیں گے اور جاڑوں میں ننگے مر جائیں گے۔ پر نہ جانے کیوں ہمارا جی یہ نہیں مانتا۔ ہم تو کنٹرول کو نشہ سمجھتے رہے، سمجھ رہے ہیں، اور سمجھتے رہیں گے۔

سنہ ۱۸۹۹ میں زوروں کا اکال پڑا تھا۔ گیہوں ایک روپیے کے آٹھ سیر ملتے تھے۔ تِس پر بھی دیش تڑپ گیا تھا۔ جگہ جگہ ڈاکے پڑنے شروع ہو گئے تھے۔ مارواڑ کا تو ایک حصہ پانی نہ ملنے کی وجہ سے بھاگ نکلا تھا۔ پر ان دنوں کنٹرول کی کسی کو نہ سوجھی۔ لوگوں کا دُکھ دُور کرنے کی بات دھرماتما پیسے والوں کے دل میں ضرور آئی اور انھوں نے فوراً اپنے اپنے [illegible]

मिल सकता था. पर मिलता था एक वक़्त में सिर्फ़ एक रुपया का. इस शर्त को भी न कड़ाई से पालन किया जाता था और न उसके लिए कोई टिकट बांटे जाते थे. उन दिनों आदमियों का आत्मा इतना ऊंचा था कि ऐसी चालाकी बहुत कम लोग करते थे कि एक दिन में दो बार गेहूँ ले आएँ. क्या आज गवरनमैंट इस तरह की जगह जगह दुकानें खोल कर कंट्रोल के कलंक से नहीं बच सकती और क्या इस तरकीब से काला बाजार वालों को जहर की जगह गुड दे कर खतम नहीं कर सकती ?

अब कपड़े पर आइये.

कुछ घरानों में आज तक यह रिवाज है कि अगर किसी घराने में जवान मौत हो जाए या कोई मारके की मौत हो जाए तो साल भर कपडा नहीं खरीदते. ठीक इसी तरह से महात्मा जी की मौत के बाद दिखावे की रस्मो के बजाए यह रस्म पाली गई होती तो क्या कपड़े का सवाल अपने आप हल न हो गया होता? हमारा तजुर्बा है कि कपडे के राशनिंग के दिनों में ऐसे लोग भी मिल का कपड़ा खरीदते थे जो एक दिन मिल के कपड़े को घर मे आने देने से अपने आप को गुनाहगार मानते थे वह ऐसा सिर्फ़ इसलिए करते थे कि राशनिंग के ज़रिये आया हुआ कपड़ा अपने किसी रिश्तेदार को देकर पुण्य कमायेंगे.

शहरों मे बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे कि जिन्हें अगर एक साल कपड़ा खरीदने से रोक दिया जाए तो किसी क़िस्म की तकलीफ़ हो. पचीस फी सदी घराने तो ऐसे मिलेंगे कि वह अगर चार बरस ... ... तो उन्हें किसी तरह की दिक़्क़त नहीं हो सकती.

مل سکتا تھا۔ پر ملتا تھا ایک وقت میں صرف ایک روپیہ کا۔ اس شرط کو بھی نہ کڑائی سے پالن کیا جاتا تھا اور نہ اُس کے لئے کوئی ٹکٹ بانٹے جاتے تھے۔ اُن دنوں آدمیوں کا آتما اتنا اُونچا تھا کہ ایسی چالاکی بہت کم لوگ کرتے تھے کہ ایک دن میں دو بار گیہوں لے آئیں۔ کیا آج گورنمنٹ اس طرح کہ جگہ جگہ دکانیں کھول کر کنٹرول کے کلنک سے نہیں بچ سکتی اور کیا اس ترکیب سے کالا بازار والوں کو زہر کی جگہ گُڑ دیکر ختم نہیں کر سکتی ؟

اب کپڑے پر آئیے۔

کچھ گھرانوں میں آج تک یہ رواج ہے کہ اگر کسی گھرانے میں جوان موت ہو جائے یا کوئی معرکے کی موت ہو جائے تو سال بھر کپڑا نہیں خریدتے۔ ٹھیک اسی طرح سے مہاتما جی کی موت کے بعد دکھاوے کی رسموں کے بجائے یہ رسم پالی گئی ہوتی تو کیا کپڑے کا سوال اپنے آپ حل نہ ہو گیا ہوتا؟ ہمارا تجربہ ہے کہ کپڑے کے راشننگ کے دنوں میں ایسے لوگ بھی مل کا کپڑا خریدتے تھے جو ایک دن مل کے کپڑے کو گھر میں آنے دینے سے اپنے آپ کو گنہگار مانتے تھے۔ وہ ایسا صرف اس لئے کرتے تھے کہ راشننگ کے ذریعہ آیا ہوا کپڑا اپنے کسی رشتہ دار کو دیکر پُنیہ کمائیں گے۔

شہروں میں بہت کم لوگ ایسے ملینگے کہ جنہیں اگر ایک سال کپڑا خریدنے سے روک دیا جائے تو کسی قسم کی تکلیف ہو۔ پچیس فی صدی گھرانے تو ایسے ملینگے کہ وہ اگر چار برس کپڑا نہ خریدیں تو انہیں کسی طرح کی دقت نہیں ہو سکتی۔

क्या सरकार शहरों में एक साल कपड़े की ख़रीद बन्द करने की बात पर ध्यान दे सकती है ? हमें तो ऐसा मालूम होता है कि इस तरीक़े से कपड़े की दिक़्क़त बहुत कुछ रफ़ा हो जावेगी. जो दिक़्क़त बच रही वह बारीक कपड़े को बनने से रोक देने से दूर हो सकती है. सरकार को यह तय तो कर ही देना चाहिये कि तीस या चालीस नम्बर से ऊपर का कपड़ा मिलें नहीं तय्यार कर पायेंगी. ऐसा करने से मोटे कपड़े की गजत बढ़ जायेगी और कपड़े की कमी दूर हो जायगी.

भगवान दीन
९-१२-४८

(५७४) **उर्दू हिन्दी है**

हमारी बोली मे बहुत से शब्द ऐसे हैं जो आसानी को ध्यान में रख कर आधे बोले जाते हैं जैसे कारुरा, मुनक्का, माता, सिलहट, मौसम्मी, मालटा वग़ैरा. कारुरा के मानी बोतल के हैं. असल में था पेशाब का कारुरा. अब कारुरा के मानी पेशाब हो गया. मुनक्का के मानी हैं नुकाया हुआ मुवेज़ मुनक्का (द्राक्षा नुकारा हुए.) अब मुनक्का के मानी द्राक्षा बन गया. माता से मतलब था, मां के पेट से लाई हुई गर्मी से उभरी हुई फुंसियां, अब सिर्फ़ माता कहने से फुंसियां समझी जाने लगीं. सिलहट, मौसम्मी और मालटा असल में हैं सिलहट का संगतरा, मौज़मबीक का संगतरा, मालटा का संगतरा. पर अब सिलहट, मौसम्मी और मालटा कहने से ख़ास ख़ास तरह का संगतरा समझा जाता है. ठीक यही हाल उर्दू का है. उर्दू के मानी है लश्करी मुगलो के लश्कर मे जो बोलो बोली

کیا سرکار شہروں میں ایک سال کپڑے کی خرید بند کرنے کی بات پر دھیان دے سکتی ہے؟ ہمیں تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اس طریقے سے کپڑے کی دقت بہت کچھ رفع ہو جاویگی۔ جو دقت بچ رہی وہ باریک کپڑے کو بننے سے روک دینے سے دور ہو سکتی ہے۔ سرکار کو یہ طے تو کر ہی دینا چاہیئے کہ تیس یا چالیس نمبر سے اوپر کا کپڑا ملیں نہیں تیار کر پائیں گی۔ ایسا کرنے سے موٹے کپڑے کی کھپت بڑھ جائے گی اور کپڑے کی کمی دور ہو جائے گی۔

بھگوان دین
۹-۱۲-۴۸

(۵۷۶) **اُردو ہندی ہے**

ہماری بولی میں بہت سے شبد ایسے ہیں جو آسانی کو دھیان میں رکھ کر آدھے بولے جاتے ہیں جیسے کارورا، منکّا، ماتا، سلہٹ، موسمّی، مالٹا وغیرہ۔ کارورا کے معنی بوتل کے ہیں۔ اصل میں تھا پیشاب کا کارورا۔ اب کارورا کے معنی پیشاب ہوگیا۔ منکّا کے معنی ہیں نکایا ہوا مویز منکّا (دراکشا نکارا ہوئے) اب منکّا کے معنی دراکشا بن گیا۔ ماتا سے مطلب تھا، ماں کے پیٹ سے لائی ہوئی گرمی سے ابھری ہوئی پھنسیاں، اب صرف ماتا کہنے سے پھنسیاں سمجھی جانے لگیں۔ سلہٹ، موسمّی اور مالٹا اصل میں ہے سلہٹ کا سنگترا، موزمبیک کا سنگترا، مالٹا کا سنگترا۔ پر اب سلہٹ، موسمّی اور مالٹا کہنے سے خاص خاص طرح کا سنگترا سمجھا جاتا ہے۔ ٹھیک یہی حال اردو کا ہے۔ اردو کے معنی ہیں لشکری۔ مغلوں کے لشکر میں جو بولی بولی

जाती थी वह कहलाती थी लश्कर हिन्दी यानी उर्दू हिन्दी. हिन्दी हिस्सा घिस गया उर्दू बच रहा और अब उर्दू के मानी बन बैठे एक अलग बोली. मुग़लों के लश्कर में जो लश्करी बोली बोली जाती थी वह कम ज़ियादा वही बोली थी जो हिन्दुस्तान भर मे समझी बोली जाती थी. इस लिए वह हिन्दुस्तानी थी. उसी हिन्दुस्तानी को फ़ारसी अरबी का जामा पहना कर उर्दू बना लिया गया और उसी को संस्कृत का जामा पहना कर हिन्दी नाम दे दिया गया. अगर उर्दू मुसलमानो की बोली होती या विदेशी बोली होती तो सारे मुसलमान बोलते होते पर हिन्दुस्तान से बाहर भी कहीं मिलती. इसलिए उर्दू हर तरह देशी है. यहीं पैदा हुई है और इन नाते किसी एक दल की नहीं समझी जा सकती. कोई विदेशी जो बिलकुल उर्दू जानने वालों की सोहबत मे रहा हो और वह यहां के झगड़ो से नावाक़िफ हो और अचानक मथुरा आकर किसी चौबे से बात चीत करने लगे तो वह चौबे की बोली को भी उर्दू कह बैठेगा. क्योंकि बोली की जांच सिरफ उसकी क्रियाओं से होती है, यही हाल हिन्दी वालों की सोहबत मे रहे हुए विदेशी का होगा. वह उर्दू को हिन्दी कह बैठेगा.

बात असल मे यह है कि हम पर अगर कहीं नफ़रत का नशा न छाया हुआ होता तो हम उर्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तानी मे कोई भेद ही न देख पाते. उर्दू कहने से हिन्दी भी मतलब होता और हिन्दुस्तानी भी.

भगवान दीन

جاتی تھی وہ کہلاتی تھی لشکر ہندی یعنی اُردو ہندی۔ ہندی حصّہ گھِس گیا اُردو بچ رہا اور اب اُردو کے معنی بن بیٹھے ایک الگ بولی۔ مغلوں کے لشکر میں جو لشکری بولی بولی جاتی تھی وہ کم زیادہ وہی بولی تھی جو ہندستان بھر میں سمجھی بولی جاتی تھی۔ اس لئے وہ ہندستانی تھی۔ اُسی ہندستانی کو فارسی عربی کا جامہ پہنا کر اُردو بنا لیا گیا اور اُسی کو سنسکرت کا جامہ پہنا کر ہندی نام دے دیا گیا۔ اگر اُردو مسلمانوں کی بولی ہوتی یا ودیشی بولی ہوتی تو سارے مسلمان بولتے ہوتے پر ہندستان سے باہر بھی کہیں ملتی۔ اس لئے اُردو ہر طرح دیشی ہے۔ یہیں پیدا ہوئی ہے اور اس ناتے کسی ایک دل کی نہیں سمجھی جا سکتی۔ کوئی ودیشی جو بالکل اُردو جاننے والوں کی صحبت میں رہا ہو اور وہ یہاں کے جھگڑوں سے ناواقف ہو اور اچانک متھرا آکر کسی چوبے سے بات چیت کرنے لگے تو وہ چوبے کی بولی کو بھی اُردو کہہ بیٹھے گا۔ کیوں کہ بولی کی جانچ صرف اس کی کریاؤں سے ہوتی ہے، یہی حال ہندی والوں کی صحبت میں رہتے ہوئے ودیشی کا ہوگا۔ وہ اُردو کو ہندی کہہ بیٹھے گا۔

بات اصل میں یہ ہے کہ ہم پر اگر کہیں نفرت کا نشہ نہ چھایا ہوا ہوتا تو ہم اُردو، ہندی، ہندستانی میں کوئی بھید ہی نہ دیکھ پاتے اُردو کہنے سے ہندی بھی مطلب ہوتا اور ہندستانی بھی۔

بھگوان دین

आज के शहीद

[सम्पादक—श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में आप उन बहादुर देश भक्तों का हाल पढ़ेंगे जो फिरक़ा परस्ती से जंग करते हुए मारे गये. इस किताब की खास खूबी यह है कि इसके ज़्यादा तर लेख उन शहीदों के खास दोस्तों या नज़दीकी रिश्तेदारों के लिखे हुए हैं जो उन शहीदों की ज़िन्दगी पर पूरी रोशनी डाल सकते थे.

अगर आपको बापू के मिशन से प्रेम है तो आप न सिर्फ़ खुद यह किताब पढ़ें बल्कि अपने दोस्तों को भेंट भी दें. इसे पढ़कर आपको ढारस होगी कि इन्सानियत अभी खतम नहीं हुई, न खतम हो सकती है.

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामें बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेजों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अंदाज़ा कर लिया था और सन् १८५७ के पहले से जान जोखम में डाल कर इनसे हमेशा जंग करते रहे.

मुसलमान आलिमों ने किस तरह हिन्द में और हिन्द के बाहर रह कर अंगरेजों से लड़ाई जारी रक्खी, यह सब पढ़ कर आप दंग रह जायँगे.

दोनों किताबें उर्दू हिन्दी लिखावटों में छप रही हैं. अपना आर्डर जल्द ही नोट करा दीजिये.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

آج کے شہید

[سمپادک ۔ شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں آپ ان بہادر دیش بھکتوں کا حال پڑھیں گے جو فرقہ پرستی سے جنگ کرتے ہوئے مارے گئے۔ اس کتاب کی خاص خوبی یہ ہے کہ اس کے زیادہ تر لیکھ ان شہیدوں کے خاص دوستوں یا نزدیکی رشتہ داروں کے لکھے ہوئے ہیں جو ان شہیدوں کی زندگی پر پوری روشنی ڈال سکتے تھے۔

اگر آپ کو باپو کے مشن سے پریم ہے تو آپ نہ صرف خود یہ کتاب پڑھیں بلکہ اپنے دوستوں کو بھینٹ بھی دیں۔ اسے پڑھ کر آپ کو ڈھارس ہوگی کہ انسانیت ابھی ختم نہیں ہوئی، نہ ختم ہو سکتی ہے۔

مسلم دیش بھکت

[لیکھک شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال اور ان کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنہوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی ان کے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ۱۸۵۷ کے پہلے سے جان جوکھم میں ڈال کر ان سے ہمیشہ جنگ کرتے رہے۔

مسلمان عالموں نے کس طرح ہند میں اور ہند کے باہر رہ کر انگریزوں سے لڑائی جاری رکھی، یہ سب پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

دونوں کتابیں اردو، ہندی لکھاوٹوں میں چھپ رہی ہیں۔ اپنا آرڈر جلدی نوٹ کرا دیجئے۔

منیجر "نیا ہند"
۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد

[illegible] हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाना, फैलाना और [illegible] [illegible] जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ्रेन्सों, लेक्चरों से सब [illegible]ओं, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एम० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—o—

सोसाइटी की बम्बई शाख का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला ब्रेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब [illegible] वगैरह दो तिहाई दाम पर मिलती हैं।

---

(۱) ایسی ہندستانی کلچر کو بڑھانا، پھیلانا اور [illegible] جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا [illegible]

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں [illegible] سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری پنڈت سندر لال؛ خزانچی — ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر —

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر —

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے - فیضی، شری ایم - ایچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی ہیں۔

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान का पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जिहाद, आक़बत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किस कहा गया है

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो ख़ास पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी [illegible] की क़ीमत [illegible] डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

[illegible]

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان خاص پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی [illegible] جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف [illegible] روپیہ [illegible] ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ہند"

[illegible]